

॥ श्रीरामजयम् ॥

॥ श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम् ॥

॥ उत्तरकाण्डम् ॥



धर्मालयसंस्करणम् ।

The Dharmalaya Edition.

Text in Sanskrit with word for word
Tamil Translation in Prose Order.

By

The Late Rao Sahib P. S. KRISHNASWAMI IYER,
Dharmalaya, Mylapore.

Published with the aid of

Sri. M. N. RAMASWAMI IYER,
Banker, Palghat.

BY

R. SUBRAHMANYA VADHYAR & SONS,
BOOK-SELLERS & PUBLISHERS,
KALPATHI—PALGHAT

PRINTED AT
THE SCHOLAR PRESS,
PALGHAT

॥ श्रीः ॥

॥ विषयानुक्रमणिका ॥

| सर्गः | विषयः | श्लोकसंख्या | पृष्ठम् |
|------------------------------|---|-------------|---------|
| 1. | श्रीरामप्रश्नः ... | 36 | 1 |
| 2. | पौलस्त्यजन्म ... | 32 | 9 |
| 3. | वैश्रवणोत्पत्तिः लङ्कादिप्राप्तिश्च ... | 35 | 17 |
| 4. | सुकेशराक्षसोत्पत्तिः ... | 32 | 25 |
| 5. | माल्यवदाद्युत्पत्तिः ... | 45 | 32 |
| 6. | विष्णुमाल्यवदादियुद्धम् ... | 61 | 42 |
| 7. | मालिवधः ... | 52 | 55 |
| 8. | सुमाल्यादिपराजयः ... | 26 | 66 |
| 9. | रावणाद्युत्पत्तिः ... | 43 | 72 |
| 10. | रावणादिवरप्राप्तिः ... | 47 | 81 |
| 11. | रावणस्य लङ्काप्राप्तिः ... | 50 | 91 |
| 12. | रावणादिविवाहः ... | 31 | 103 |
| 13. | कुबेरदूतवधः ... | 41 | 110 |
| 14. | यक्षराक्षसयुद्धम् ... | 28 | 120 |
| 15. | पुष्पकापहरणम् ... | 32 | 126 |
| 16. | रावणनामप्राप्तिः ... | 41 | 132 |
| 17. | वेदवतीशापः ... | 39 | 142 |
| 18. | मरुत्तविजयः ... | 36 | 150 |
| 19. | अनरण्यशापः ... | 30 | 159 |
| 20. | नारदरावणसंवादः ... | 30 | 166 |
| पङ्क्तिश्लोकाः गीताः श्लोकाः | | | 767 |
| 21. | यमरावणसेनायुद्धम् ... | 43 | 173 |
| 22. | यमविजयः ... | 51 | 182 |
| 23. | वरुणविजयः ... | 53 | 193 |
| 24. | दण्डकायां खरादिनिवासनम् ... | 39 | 205 |
| 25. | मधुसल्यम् ... | 53 | 214 |
| 26. | नलकूबरशापः ... | 59 | 226 |
| 27. | सुमालिवधः ... | 49 | 239 |
| 28. | ज्यन्तापवाहनं इन्द्ररावणयुद्धं च ... | 48 | 250 |

| सर्गः | विषयः | श्लोकसंख्या | पृष्ठम् |
|-----------------------------|---|-------------|---------|
| 29. | इन्द्रग्रहणम् ... | 41 | 260 |
| 30. | मेघनादस्य इन्द्रजिन्नामप्राप्तिः ... | 57 | 270 |
| 31. | रावणनर्मदावगाहः ... | 42 | 283 |
| 32. | रावणबन्धनम् ... | 73 | 292 |
| 33. | रावणमोचनम् ... | 23 | 308 |
| 34. | वालिरावणसख्यम् ... | 46 | 313 |
| 35. | हनुमदुत्पत्त्यादि ... | 65 | 323 |
| 36. | हनुमद्वरप्राप्तिः ... | 60 | 337 |
| 37. | पौरोपस्थानम् ... | 26 | 351 |
| 38. | जनकादिप्रतिप्रयाणम् ... | 31 | 356 |
| 39. | सुग्रीवादिसम्माननम् ... | 20 | 363 |
| 40. | सुग्रीवादिविसर्जनम् ... | 25 | 367 |
| सप्तविंशोऽङ्क गीताः श्लोकाः | | | 904 |
| 41. | पुष्पकविसर्जनम् ... | 19 | 373 |
| 42. | सीतया पुनर्गङ्गातीरगमनप्रार्थनम् ... | 32 | 378 |
| 43. | पौरजनकुत्सननिवेदनम् ... | 23 | 385 |
| 44. | लक्ष्मणाद्यानयनम् ... | 20 | 390 |
| 45. | सीतापरित्यागनियोगः ... | 24 | 394 |
| 46. | सीताया गङ्गातीरनयनम् ... | 32 | 400 |
| 47. | श्रीरामनियोगनिवेदनम् ... | 18 | 407 |
| 48. | सीतापरित्यागः ... | 26 | 412 |
| 49. | सीतायाः वाल्मीक्याश्रमप्रवेशः ... | 23 | 418 |
| 50. | दुर्घासोवचनानुवादचोदना ... | 19 | 424 |
| 51. | भृगुशापः ... | 38 | 428 |
| 52. | श्रीरामसमाधानम् ... | 18 | 436 |
| 53. | नृगशापः ... | 22 | 441 |
| 54. | नृगस्य कृकलासत्वप्राप्तिः ... | 18 | 446 |
| 55. | निमिचसिष्ठयोः परस्परं शापः ... | 20 | 450 |
| 56. | उर्वशीशापः ... | 24 | 454 |
| 57. | चसिष्ठस्य मैत्रावरुणित्वेनोत्पत्तिः ... | 20 | 460 |
| 58. | ययातिचरितम् ... | 23 | 464 |
| 59. | पूरो राज्याभिषेकः ... | 22 | 470 |
| 60. | महर्षिसमागमः ... | 18 | 475 |

| सर्गः | विषयः | श्लोकसंख्या | पृष्ठम् |
|------------------------------|--|-------------|---------|
| 61. | लवणपीडानिवेदनम् ... | 23 | 479 |
| 62. | लवणवधार्थं शत्रुघ्नप्रेषणम् ... | 22 | 484 |
| 63. | शत्रुघ्नाभिषेकः दिव्यास्त्रदानं च ... | 32 | 489 |
| 64. | शत्रुघ्नप्रस्थानम् ... | 17 | 496 |
| 65. | सौदासचरितम् ... | 35 | 499 |
| 66. | कुशलवोत्पत्तिः ... | 15 | 507 |
| 67. | मान्धातुवधः ... | 23 | 510 |
| 68. | लवणशत्रुघ्नविवादः ... | 19 | 515 |
| 69. | लवणवधः ... | 40 | 519 |
| 70. | मधुपुर्यां प्रजापालनम् ... | 16 | 528 |
| 71. | वाल्मीकिना शत्रुघ्नप्रशंसनम् ... | 24 | 531 |
| 72. | श्रीरामशत्रुघ्नसमागमः ... | 20 | 536 |
| 73. | मृतबालकद्विजविलापः ... | 19 | 541 |
| 74. | नारदवाक्यम् ... | 33 | 545 |
| 75. | शूद्रमुन्यन्वेषणम् ... | 18 | 551 |
| 76. | शम्बुकवधः ... | 37 | 555 |
| 77. | स्वर्गप्रश्नः ... | 20 | 564 |
| 78. | श्वेतराजोपाख्यानम् ... | 30 | 568 |
| 79. | दण्डराज्यनिवेशकथनम् ... | 19 | 575 |
| 80. | शुक्रकन्याधर्षणम् ... | 18 | 579 |
| एकोनविंशोऽङ्कः गीताः श्लोकाः | | | 480 |
| 81. | दण्डशापः ... | 21 | 583 |
| 82. | श्रीरामस्यायोध्यां प्रत्यागमनम् ... | 20 | 588 |
| 83. | राजसूयाकरणनिर्धारणम् ... | 20 | 592 |
| 84. | वृत्राख्यानवर्णनम् ... | 18 | 597 |
| 85. | वृत्रासुरवधः ... | 22 | 600 |
| 86. | इन्द्रस्य ब्रह्महत्यातरणम् ... | 20 | 605 |
| 87. | इलोपाख्यानम् ... | 29 | 609 |
| 88. | किंपुरुषोत्पत्तिः ... | 24 | 616 |
| 89. | पुरूरवस उत्पत्तिः ... | 25 | 621 |
| 90. | अश्वमेधेनेलस्य सार्वकालिकपुंस्त्वप्राप्तिः ... | 25 | 626 |
| 91. | श्रीरामस्याश्वमेधसंविधानम् ... | 26 | 632 |
| 92. | हयचर्या ... | 18 | 637 |

| सर्गः | विषयः | श्लोकसंख्या | पृष्ठम् |
|--------------------------------|---|-------------|-------------|
| 93. | वाल्मीकिना रामायणगाननियोगः ... | 18 | 641 |
| 94. | कुशलवाभ्यां रामायणगानम् ... | 29 | 646 |
| 95. | वाल्मीक्ये दूतप्रेषणम् ... | 15 | 653 |
| 96. | वाल्मीकिना सीताप्रत्ययदानकथनम् ... | 22 | 657 |
| 97. | सीताया रसातलप्रवेशः ... | 26 | 662 |
| 98. | श्रीरामत्रोधशमनम् ... | 27 | 667 |
| द्विशोऽङ्कि गीताः श्लोकाः | | | 405 |
| 99. | कौसल्यादिवर्गमनम् ... | 18 | 674 |
| 100. | भरतस्य गन्धर्वविजययात्रा ... | 25 | 678 |
| 101. | भरतपुत्रयो राज्याभिषेकः ... | 18 | 683 |
| 102. | लक्ष्मणपुत्रयो राज्याभिषेकः ... | 17 | 687 |
| 103. | कालरुद्रागमनम् ... | 17 | 691 |
| 104. | ब्रह्मसन्देशकथनम् ... | 19 | 695 |
| 105. | दुर्वासस्समागमः ... | 19 | 699 |
| एकत्रिंशोऽङ्कि गीताः श्लोकाः | | | 133 |
| 106. | लक्ष्मणत्यागः लक्ष्मणस्वर्गमनं च ... | 18 | 704 |
| 107. | कुशलवयोरभिषेकः ... | 20 | 708 |
| 108. | शत्रुघ्नपुत्रयोरभिषेकः हनुमदाद्यादेशश्च ... | 30 | 713 |
| 109. | श्रीरामस्य महाप्रस्थानम् ... | 22 | 720 |
| 110. | श्रीरामस्य वैष्णवतेजःप्रवेशः, फलनिरूपणं च ... | 38 | 725 |
| द्वात्रिंशोऽङ्कि गीताः श्लोकाः | | | 128 |
| | | | <u>3276</u> |



॥ अथ स्मार्तानां श्रीरामायणपठनोपक्रमेऽनुसन्धेयाः श्लोकाः ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ १ ॥
वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे । यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम् ॥

दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिमयीमक्षमालां दधाना
हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण ।

भासा कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकमणिनिभा भासमानाऽसमाना
सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना ॥ ३ ॥

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् । आरूढ कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥
वाल्मीकेर्मुनिर्सिंहस्य कवितावनचारिणः । शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम् ॥
यः पिबन् सततं रामचरितामृतसागरम् । अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतसमकल्मषम् ॥ ६ ॥
गोष्पदीकृतवारार्शि मशकीकृतराक्षसम् । रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥ ७ ॥
अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम् । कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥ ८ ॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवर्हिं जनाकात्मजायाः ।

आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥ ९ ॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम् ।

पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम् ॥ १० ॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।

बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥ ११ ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥ १२ ॥

यः कर्णाञ्जलिसंपुटैरहरहः सम्यक् पिबत्यादरात्

वाल्मीकेर्वेदनारविन्दगलितं रामायणाख्यं मधु ।

जन्मव्याधिजराविपत्तिमरणैरत्यन्तसोपद्रवं

संसारं स विहाय गच्छति पुमान्विष्णोः पदं शाश्वतम् ॥ १३ ॥

तदुपगतसमाससन्धियोगं सममधुरोपनतार्थवाक्यबद्धम् ।

रघुवरचरितं मुनिप्रणीतं दशशिरसश्च वधं निशामयध्वम् ॥ १४ ॥

वाल्मीकिगिरिसंभूता रामसागरगामिनी । पुनातु भुवनं पुण्या रामायणमहानदी ॥ १५ ॥

श्लोकसारजलाकीर्णं सर्गकलोलसङ्कुलम् । काण्डग्राहमहाभीनं वन्दे रामयणार्णवम् ॥
वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे । वेदः प्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना ॥ १७ ॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे

मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम् ।

अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं

न्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम् ॥ १८ ॥

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात्सुमित्रासुतः

शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादिकोणेषु च ।

सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्

मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम् ॥ १९ ॥

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै ।

नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः ॥ २० ॥



॥ पारायणसमापनसमये अनुसन्धेयश्लोकक्रमः ॥

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येन मार्गेण महीं महींशाः ।

गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥ १ ॥

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी । देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणास्सन्तु निर्भयाः ॥

अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः ।

अधनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम् ॥ ३ ॥

चरितं रघुनादस्य शतकोटिप्रविस्तरम् । एकैकमक्षरं प्रोक्तं महापातकनाशनम् ॥ ४ ॥

शृण्वन् रामायणं भक्त्या यः पादं पदमेव वा । स याति ब्रह्मणः स्थानं ब्रह्मणा पूज्यते सदा ॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वैशसे । रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥ ६ ॥

यन्मङ्गलं सहस्राक्षे सर्वदेवनमस्कृते । वृत्रनाशे समभवत्तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥ ७ ॥

यन्मङ्गलं सुपर्णस्य विनताऽकल्पयत्पुरा । अमृतं प्रार्थयानस्य तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥ ८ ॥

अमृतोत्पादने दैत्यान् घ्नतो वज्रधरस्य यत् । अदितिर्मङ्गलं प्रादात्तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥

त्रीन्विक्रमान् प्रक्रमतो विष्णोरमिततेजसः । यदासीन्मङ्गलं राम तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥ १० ॥

ऋतवः सागरा द्वीपा वेदा लोका दिशश्च ते । मङ्गलानि महाबाहो दिशन्तु तव सर्वदा ॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात् ।

करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥ १२ ॥



॥ श्रीवैष्णवानां श्रीरामायणपठनोपक्रमेऽनुसन्धेयाः श्लोकाः ॥

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् । आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥
 वाल्मीकेर्धुनिर्सिंहस्य कवितावनचारिणः । शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम् ॥
 यः पिबन् सततं रामचरितामृतसागरम् । अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतसमकल्पम् ॥ ३ ॥
 गोष्पदीकृतवाराशिं मशकीकृतराक्षसम् । रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥ ४ ॥
 अञ्जनानन्दने वीरं जानकीशोकनाशनम् । कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥ ५ ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥ ६ ॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनाकात्मजायाः ।

आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥ ७ ॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम् ।

पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम् ॥ ८ ॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।

वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥ ९ ॥

वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे । वेदः प्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना ॥ १० ॥

तदुपगतसमाससन्धियोगं समप्रधुरोपनतार्थवाक्यवद्धम् ।

रघुरचरितं मुनिप्रणीतं दशशिरसश्च वधं निशामयध्वम् ॥ ११ ॥

श्रीराघवं दशरथात्मजमप्रमेयं सीतापतिं रघुकुलान्वयरत्नदीपम् ।

आजानवाहुमरविन्ददलायताक्षं रामं निशाचरीविनाशकरं नमामि ॥ १२ ॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे

मध्ये पुष्पक्रमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम् ।

अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं

व्याख्यानं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम् ॥ १३ ॥



॥ पारायणसमापनक्रमः ॥

एवमेतत्पुरावृत्तमारुख्यानं भद्रमस्तु वः । प्रव्याहरत विस्रब्धं बलं विष्णोः प्रवर्धताम् ॥ १ ॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराभवः । येषामिन्दीवरश्यामो हृदये सुप्रतिष्ठितः ॥ २ ॥

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी क्षस्यशालिनी । देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणास्सन्तु निर्भयाः ॥

कावेरी वर्धतां काले काले वर्षतु वासवः । श्रीरङ्गनाथो जयतु श्रीरङ्गश्रीश्च वर्धताम् ॥ ४ ॥

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः ।

गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥ ५ ॥

मङ्गलं कोसलेन्द्राय महनीयगुणाब्धये । चक्रवर्तितनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम् ॥ ६ ॥
 वेदवेदान्तवेद्याय मेघश्यामलमूर्तये । पुंसां मोहनरूपाय पुण्यश्लोकाय मङ्गलम् ॥ ७ ॥
 विश्वामित्रान्तरङ्गाय मिथिलानगरीपतेः । भाग्यानां परिपाकाय भव्यरूपाय मङ्गलम् ॥
 पितृभक्ताय सततं भ्रातृभिः सह सीतया । नन्दिताखिललोकाय रामभद्राय मङ्गलम् ॥
 त्यक्तसाकेतवासाय चित्रकूटविहारिणे । सेव्याय सर्वयमिनां धीमोदाराय मङ्गलम् ॥ १० ॥
 सौमित्रिणा च जानक्या चापबाणासिधारिणे । संसेव्याय सदा भक्त्या स्वामिने मम मङ्गलम् ॥
 दण्डकारण्यवासाय खण्डितामरशत्रवे । शृध्रराजाय भक्ताय मुक्तिदायास्तु मङ्गलम् ॥
 सादरं शवरीदत्तफलमूलाभिलाषिणे । सौलभ्यपरिपूर्णाय सत्त्वोद्विक्ताय मङ्गलम् ॥
 हनुमत्समवेताय हरीशाभीष्टदायिने । वाल्मिप्रमथनायास्तु महाधीराय मङ्गलम् ॥ १४ ॥
 श्रीमते रघुवीराय सेतूल्लङ्घितसिन्धवे । जितराक्षसराजाय रणधीराय मङ्गलम् ॥ १५ ॥
 आसाद्य नगरीं दिव्यामभिषिक्ताय सीतया । राजाधिराजराजाय रामभद्राय मङ्गलम् ॥
 मङ्गलाशासनपरैर्मदाचार्यपुरोगमैः । सर्वैश्च पूर्वैराचार्यैः सत्कृतायास्तु मङ्गलम् ॥ १७ ॥



॥ अथ माध्वानां रामायणपठनोपक्रमेऽनुसन्धेयाः श्लोकाः ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदने ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ १ ॥
 लक्ष्मीनारायणं वन्दे तद्भक्तप्रवरो हि यः । श्रीमानानन्दतीर्थारख्यो गुरुस्तं च नमाम्यहम् ॥
 वेदे रामायणे चैव पुराणे भारते तदा । आदावन्ते च मध्ये च विष्णुः सर्वत्र गीयते ॥
 सर्वविघ्नप्रशमनं सर्वसिद्धिकरं परम् । सर्वजीवप्रणेतारं वन्दे विजयतं हरिम् ॥ ४ ॥
 सर्वाभीष्टप्रदं रामं सर्वारिष्टनिवारकम् । जानकीजानिनिशं वन्दे महद्गुरुवन्दितम् ॥ ५ ॥
 अभ्रमं भङ्गरहितमजडं विमलं सदा । आनन्दतीर्थमुलुं भजे तापत्रयापहम् ॥ ६ ॥
 भवति यदनुभावादेडमूकोऽपि वाग्मी जडमतिरपि जन्तुर्जायते प्राज्ञमौलिः ।
 सकलवचनचेतादेवता भारती स मम वचसि विद्यत्तां सन्निधिं मानसे च ॥ ७ ॥
 मिथ्यासिद्धान्तदुर्ध्वान्तविध्वंसनविचक्षणः । जयतीर्थारख्यातरणिर्भासतां नो हृद्म्वरे ॥ ८ ॥
 चित्रैः पदैश्च गाम्भीर्यैक्यैर्मानैरखण्डितैः । गुरुभावं व्यञ्जयन्ती भाति श्रीजयतीर्थवाक् ॥
 क्लृप्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् । आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥
 वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः । शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम् ॥
 यः पिबन् सततं रामचरितामृतसागरम् । अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतममकल्पपम् ॥ १२ ॥
 गोष्पदीकृतवाराशिं मशकीकृतराक्षसम् । रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥ १३ ॥
 अञ्जनानन्दने वीरं जानकीशोकनाशनम् । कपीशमसहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥ १४ ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥ १५ ॥
उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवर्द्धिं जनाकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥ १६ ॥
आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम् ।
पारिजातरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम् ॥ १७ ॥
यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मार्हति नमत राक्षसान्तकम् ॥ १८ ॥
वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे । वेदः प्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना ॥ १९ ॥
आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् । लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥
तदुपगतसमाससन्धियोगं समपधुरोपनतार्थवाक्यबद्धम् ।
रघुवरचरितं मुनिप्रणीतं दशशिरसश्च वधं निशामयध्वम् ॥ २१ ॥
वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम् ।
अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं
व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम् ॥ २२ ॥
वन्दे वन्द्यं विधिभवमहेन्द्रादिबृन्दारकेन्द्रैः
व्यक्तं व्याप्तं स्वगुणगणतो देशतः कालतश्च ।
धृतावद्यं सुखचितिमयैर्मङ्गलैर्युक्तपङ्क्तैः
सानाध्यं नो विदधदधिकं ब्रह्म नारायणाख्यम् ॥ २३ ॥
भूषारत्नं भुवनवलयस्याखिलैश्चरत्नं
लीलारत्नं जलधिदुहितुर्देवतामौलिरत्नम् ।
चिन्तारत्नं जगति भजतां सत्सरोजधुरत्नं
कौसल्याया लसतु मम हृन्मण्डले पुत्ररत्नम् ॥ २४ ॥
महान्याकरणाम्भोधिमन्थमानसमन्दरम् । कवयन्तं रामकीर्त्या इनुमन्तमुपास्महे ॥ २५ ॥
मुख्यप्राणाय भीमाय नमो यस्य भुजान्तरम् । नानावीरसुवर्णानां निकषास्त्रमायितं बभौ ॥
स्वान्तस्थानन्तशय्याय पूर्णज्ञानमहार्णसे । उत्तुङ्गवाक्तरङ्गाय मध्वदुग्धाब्धये नमः ॥ २७ ॥
वाल्मीकेगौः पुनीयान्नो महीधरपदाश्रया । यद्गुग्धमुपजीवन्ति कवयस्तर्णका इव ॥ २८ ॥
सूक्तिरत्नाकरे रम्ये मूलरामायणार्णवे । विहरन्तो महीयांसः प्रीयन्तां गुरवो मम ॥ २९ ॥
हयग्रीव हयग्रीव हयग्रीवैति यो वदेत् । तस्य निःसरते वाणी जहुकन्याप्रवाहवत् ॥ ३० ॥



॥ पारायणसमापनक्रमः ॥

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः ।

गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥ १ ॥

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सत्यशालिनी । देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणास्तनु निर्भयाः ॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराभवः । येषामिन्दीवरश्यामो हृदये सुप्रतिष्ठितः ॥ ३ ॥

मङ्गलं कोसलेन्द्राय महनीयगुणाब्धये । चक्रवर्तितनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम् ॥ ४ ॥

इत्यादिश्लोकाः श्रीवैष्णवपद्धतिवदनुसन्धेयाः ॥



॥ श्रीमद्रामायणपूजाक्रमः ॥

शुक्लांबरधरं + शान्तये । ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरो । ममोपात्त + प्रीत्यर्थं सीता
लक्ष्मणभरतशत्रुघ्नहनुमत्समेतश्रीरामचन्द्रप्रसादसिद्ध्यर्थं श्रीरामचन्द्रप्रसादेन सर्वाभीष्ट-
सिद्ध्यर्थं श्रीरामचन्द्रपूजां करिष्ये ; यावच्छक्ति पूजां पारायणं च करिष्ये ; तदङ्गं
कलशशङ्खात्मपीठपूजां च करिष्ये ॥

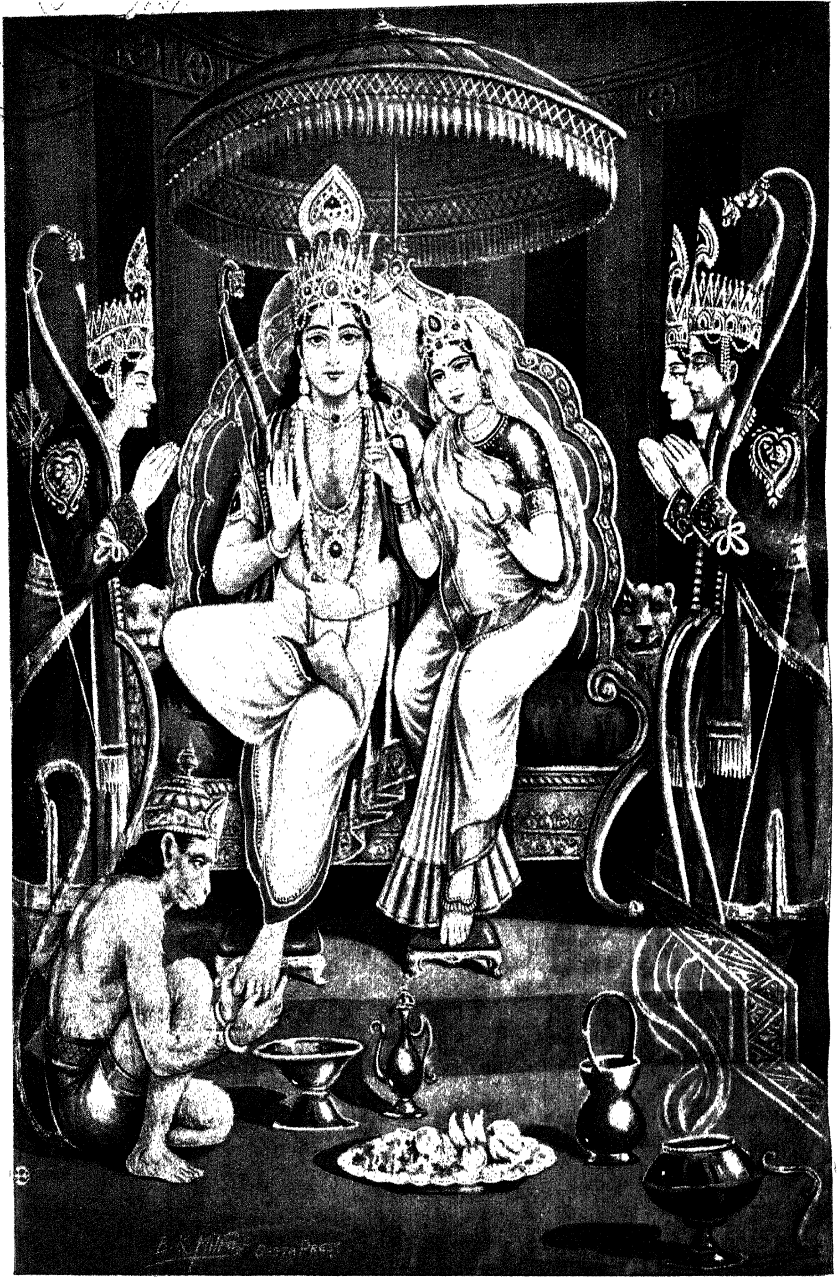
अस्मिन् पुस्तके सीतालक्ष्मणभरतशत्रुघ्नहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्रं ध्यायामि, आवा-
हयामि, रत्नसिंहासनं समर्पयामि, पाद्यं समर्पयामि, अर्घ्यं समर्पयामि, आचमनीयं
समर्पयामि, स्नानं समर्पयामि, स्नानान्तरमाचमनीयं समर्पयामि, वस्त्रं समर्पयामि, यज्ञोप-
वीतोत्तरीयाभरणार्थं पुष्पाणि समर्पयामि । गन्धान् धारयामि, अक्षतान् समर्पयामि,
पुष्पाणि समर्पयामि ॥

ॐ अच्युताय नमः ॐ नारायणाय नमः ॐ मधुसूदनाय नमः ॐ हृषीकेशाय नमः
अनन्ताय नमः माधवाय नमः त्रिविक्रमाय नमः दामोदराय नमः
गोविन्दाय नमः गोविन्दाय नमः वामनाय नमः पद्मनाभाय नमः
केशवाय नमः विष्णवे नमः श्रीधराय नमः श्रीरामचन्द्राय नमः

समस्तोपचारान् समर्पयामि ।

धूपमात्रापयामि, दीपं दर्शयामि, कदलीफलं निवेदयामि । ताम्बूलं समर्पयामि ।
कर्पूरनीराजनं दर्शयामि । छत्रचामरादि समस्तोपचारान् समर्पयामि । प्रदक्षिणनम-
स्कारान् समर्पयामि ॥





ॐ

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

श्रीसीतालक्ष्मणभरतशत्रुघ्नहनुमत्समेतश्रीरामचन्द्रस्वामिने नमः ॥

॥ श्रीमद्द्वाल्मीकिरामायणम् ॥

॥ उत्तरकाण्डम् ॥



[पुरा कुशलवाभ्यां श्रीरामसन्निधावश्वमेधयज्ञवाटे द्वात्रिंशति दिनेषु गीते श्रीमद्रामायणे षड्विंशतितमेऽङ्के उत्तरकाण्डे प्रथमसर्गमारभ्य विंशसर्गपर्यन्तं (20725—21491 श्लोकाः) गीतम् । तस्मिन् दिने गीताः श्लोकाः 767]

[ஆதியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமஸந்நிதியில் அசுவமேதயாகசாலையில் முப்பத்திரண்டு தினங்களில் கானம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில் இருபத்தாறாவது தினத்தில் உத்தரகாண்டத்தில் முதலாவது ஸர்க்கம் முதல் இருபதாவது ஸர்க்கம் வரை (20725—21491) கானம் செய்யப்பட்டது.

அன்று கானம் செய்யப்பட்ட சலோக சங்கியை 767]

प्रथमः सर्गः—முதல் ஸர்க்கம் ॥ १ ॥

श्रीरामप्रश्नः—ஸ்ரீராமரது கேள்வி.

प्रासराज्यस्य रामस्य राक्षसानां वधे कृते । आजामुर्कृषयः सर्वे राघवं प्रतिनन्दितुम् ॥

राक्षसानां अरक्करகளின்
वधे ஸம்ஹாரம்
कृते ஆனபிறகு
प्रासराज्यस्य ராஜ்யபரிபாலனத்
தைப்புரியும்
रामस्य ஸ்ரீராமரிடம்

ऋषयः முனிவர்கள்
सर्वे அனைவரும்
राघवं ஸ்ரீராகவரை
प्रतिनन्दितुं கொண்டாடுதற்
பொருட்டு
आजामुः வந்தார்கள்.

कौशिकोऽथ यवक्रीतो गार्ग्यो गालव एव च ।

कण्वो मेधातिथेः पुत्रः पूर्वस्यां दिशि ये श्रिताः

॥ २ ॥

स्वस्त्यात्रेयोऽथ भगवान्प्रमुचिः प्रमुचिस्तथा ।

अगस्त्योऽत्रिश्च भगवान् सुमुखो विमुखस्तथा ॥

आजमुस्ते सहागस्त्या ये स्थिता दक्षिणां दिशम्

॥ ३ ॥

| | |
|------------|--------------|
| पूर्वस्यां | கிழக்கு |
| दिशि | திசையில் |
| श्रिताः | உள்ளவர்கள் |
| ये | எவர்களோ, |
| अथ | அவர்களாகிய |
| कौशिकः | கௌசிகரும் |
| यवक्रीतः | யவக்ரீதரும் |
| गार्ग्यः | காரக்கியரும் |
| गालवः एव | காலவரும் |
| मेधातिथेः | மேதாதிதியின் |
| पुत्रः | புத்திரரான |
| कण्वः च | கண்வரும் |
| तथा | ஆவ்வாறே |
| दक्षिणां | தென் |
| दिशं | திசையில் |
| स्थिताः | உள்ளவர்கள் |

| | |
|---------------|----------------|
| ये | எவர்களோ |
| ते अथ | அவர்களாகிய |
| स्वस्ति | ஸ்வஸ்தியும் |
| आवेयः | ஆதீரேயரும் |
| नमुचिः | நமுசியும் |
| प्रमुचिः | பிரமுசியும் |
| अगस्त्यः | அகஸ்திய |
| भगवान् | பகவானும் |
| अत्रिः | அத்திரி |
| भावान् | பகவானும் |
| सुमुखः | சுமுகரும் |
| विमुखः | விமுகரும் |
| तथा | அவ்வண்ணமே |
| सहागस्त्याः च | அகஸ்தியரோடுகூட |
| | இருப்பவர்களும் |
| आजमुः | வந்தார்கள். |

नृषद्गुः कवषो धौम्यो रौद्रेयश्च महानृषिः ।

तेऽप्याजमुः सशिष्या वै ये श्रिताः पश्चिमां दिशम्

॥ ४ ॥

वसिष्ठः कश्यपोऽथात्रिर्विश्वामित्रः सगौतमः ।

जमदग्निर्भरद्वाजस्तेऽपि सप्तर्षयस्तथा ॥

उदीच्यां दिशि ये विप्रा नित्यमेव निवासिनः

॥ ५ ॥

| | |
|----------|----------------|
| पश्चिमां | மேற்கு |
| दिशं | திக்கில் |
| श्रिताः | உள்ளவர்கள் |
| ये | எவர்களோ |
| ते | அவர்களாகிய |
| नृषद्गुः | ந்ருஷ்ட்குவும் |
| कवषः | கவஷரும் |
| धौम्यः | தௌம்யரும் |

| | |
|-----------------|-----------------|
| रौद्रेयः | ரௌதீரேயரென்ற |
| महान् ऋषिः च | மஹரிஷியும் |
| सशिष्याः अपि वै | சிஷ்யர்களோடுகூட |
| | வர்களாகவும் |
| उदीच्यां | வடக்கு |
| दिशि | திக்கில் |
| नित्यं एव | நித்யமாகவே |
| निवासिनः | வவலிப்பவர்களான |

| | |
|--------|----------------|
| விபிர: | பிராம்மணர்கள் |
| யே | எவர்களோ |
| தே | அந்த |
| வசிப: | வவியிஷ்டர் |
| கடியப: | கச்யபர் |
| அவி: | அத்திரி |
| சமீதம: | கௌதமருடன்கூடிய |

| | |
|-----------------|-----------------|
| விசுவாமித்திரர் | விசுவாமித்திரர் |
| ஜமதக்னி | ஜமதக்னி |
| பரதவாஜர், என்ற | பரதவாஜர், என்ற |
| ஸப்தரிஷிகளும் | ஸப்தரிஷிகளும் |
| அபி | அப்பொழுது |
| தயா | அவ்வண்ணமாகவே |
| அஜமு: | வந்தார்கள். |

सम्प्राप्य ते महात्मानो राघवस्य निवेशनम् । विष्टिताः प्रतिहारार्थं हुताशनसमप्रभाः ॥

| | |
|------------|----------------------|
| हुताशन- | } அக்கினிக்குச் சமமா |
| समप्रभाः } | |
| ते | அந்த [களான |
| महात्मानः | மஹாத்மாக்கள் |
| राघवस्य | பூதிராகவருடைய |

| | |
|---------------|--------------------|
| निवेशनं | மாளிகையை |
| संप्राप्य | அடைந்து |
| प्रतिहारार्थं | வாயில்காப்பவனுக்கு |
| | காக |
| विष्टिताः | தாமதித்தார்கள். |

द्वाःस्थं प्रोवाच धर्मात्मा ह्यगस्त्यो मुनिसत्तमः । निवेद्यतां दाशरथेर्ऋषयो वयमागताः ॥

| | |
|-------------|------------------|
| मुनिसत्तमः | முனிச்சீரேஷ்டரான |
| धर्मात्मा | தர்மா த்மாவான |
| अगस्त्यः हि | அகஸ்தியரே |
| द्वाःस्थं | வாயில்காப்பவனைப் |
| | பார்த்து |
| ऋषयः | “முனிவர்களாகிய |

| | |
|------------|---------------------|
| वयं | நாங்கள் |
| आगताः | இங்கு வந்திருப்பதாக |
| दाशरथेः | தாசரதிக்கு |
| निवेद्यतां | தெரிவிக்கவேண்டியது” |
| प्रोवाच | என்று சொன்னார். |

प्रतीहारस्ततस्तूर्णमगस्त्यवचनोदितः । समीपं राघवस्यैव प्रविशेश महात्मनः ॥ ८ ॥

| | |
|-----------------|----------------------|
| प्रतीहारः | வாயில்காப்போன் |
| अगस्त्यवचनोदितः | அகஸ்தியர் வாக்கினால் |
| | ஏவப்பட்டவரால் |
| ततः | அங்கிருந்து |
| महात्मनः | மஹாத்மாவான |

| | |
|----------|---------------------|
| राघवस्य | பூதிராகவருடைய |
| समीपं | ஸன்னிதிக்கு |
| तूर्ण एव | வெகு தீவிரத்துடனேயே |
| प्रविशेश | சென்றான். |

स रामं दृश्य सहसा पूर्णचन्द्रसमद्युतिम् । अगस्त्यं कथयामास सम्प्राप्तमृषिभिः सह ॥ ९ ॥

| | | |
|----------------------|---------------------|-----------------|
| सः | அவன் | |
| पूर्णचन्द्रसमद्युतिं | { பூர்ணசந்திரனுக்கு | |
| | | வமானமான தே |
| | | ஜஸ்ஸுடனிருக்கிற |
| रामं | பூதிராமரை | |
| दृश्य | கண்டு | |
| ऋषिभिः | ரிஷிகளோடு | |

| | |
|-------------|-----------------|
| सह | கூட |
| अगस्त्यं | அகஸ்தியரை |
| सम्प्राप्तं | வந்திருப்பதாய் |
| सह वा | உடனே |
| कथयामास | விண்ணப்பஞ்செய்த |
| | என். |

श्रुत्वा प्राप्तान् मुनींस्तांस्तु प्रत्युत्थाय कृताञ्जलिः ।
रामोऽभिवाद्य प्रयत आसनान्यादिदेश ह

॥ १० ॥

| | |
|------------|-----------------------------|
| रामः तु | ஸ்ரீராமரும் |
| मुनीन् | ரிஷிகளும் |
| वान् | அவர்கள் |
| प्राप्तान् | வந்திருப்பதை |
| श्रुत्वा | கேட்டு |
| प्रयतः | பார்க்க அவர் கொண் டவராய் |

| | |
|--------------|-----------------|
| प्रत्युत्थाय | ஆஸனத்தினின்று |
| | மெழுக்து |
| कृताञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ்தராய் |
| अभिवाद्य | நல்வரவுகொண்டாடி |
| आसनानि | ஆஸனங்களை |
| आदिदेश ह | அளித்தனர். |

तेषु काञ्चनचित्त्रेषु महत्सु च वरेषु च । यथाहृमुपविष्टास्त आसनेष्वपिपुङ्गवाः ॥ ११ ॥

| | |
|------------------|--|
| ते | அந்த |
| अपिपुङ्गवाः च | ரிஷிச்சீரேஷ்டர்களும் |
| तेषु | அந்த |
| काञ्चनचित्त्रेषु | தங்கத்தால்விசிற்ப் ய் வேலைசெய்யப்பட்ட |

| | |
|-----------|------------------------|
| वरेषु | உத்தமமான |
| महत्सु | சிறந்த |
| आसनेषु | ஆஸனங்களில் |
| यथाहृ च | அவரவர்க்கேற்ற படியே |
| उपविष्टाः | உட்கார்ந்தார்கள். |

रामेण कुशलं पृष्टाः सशिष्याः सपुरोगमाः । महर्षयो वेदविशो रामं वचनमब्रुवन् ॥ १२ ॥

| | |
|-----------|--------------------------------|
| सशिष्याः | சிஷ்யர்களுடனிருப் பவர்களும் |
| सपुरोगमाः | தலைவர்களுடனிருப் பவர்களுமான |
| वेदविद्: | வேதவித்துக்களாகிய |
| महर्षयः | மஹர்ஷிகள் |

| | |
|----------|----------------------|
| रामेण | ஸ்ரீராமரால் |
| कुशलं | குசலம் |
| पृष्टाः | வினாவப்பட்டவர் |
| रामं | ஸ்ரீராமருக்கு [களாய் |
| वचनं | உத்தரம் |
| अब्रुवन् | உரைத்தார்கள்: |

कुशलं नो महाबाहो सर्वत्र रघुनन्दन । त्वां तु दिष्ट्या कुशलिं पश्यामो हतशात्रवम् ॥

| | |
|----------|----------------|
| महाबाहो | “மஹாபாகுவே, |
| रघुनन्दन | ரகுநந்தனரே, |
| सर्वत्र | ஸகலவிதத்திலும் |
| नः | எங்களுக்கு |
| कुशलं तु | குசலமே. |
| त्वां | தேவீரை |

| | |
|-----------|--------------------------------------|
| हतशात्रवं | சத்ருக்களை நாசம் செய்துவிட்டவராய் |
| कुशलिं | சுகமாயெழுந்தருளி யிருப்பவராய் |
| पश्यामः | காணப்பெற்றோம். |
| दिष्ट्या | ஓமது பெரும் பாக்கி யமிது. |

न हि भारः स ते राम रावणः पुत्रपौत्रवान् ॥ १४ ॥

| | |
|----------------|------------------|
| राम | “ஸ்ரீராம! |
| पुत्रपौत्रवान् | புதர்பௌத்தர்களுட |
| सः | அந்த [னிருக்கும் |
| रावणः | ராவணன் |

| | |
|------|------------|
| ते | தேவீருக்கு |
| हि | மாத் திரம் |
| भारः | ஒருபாரமாக |
| न | ஆகான். |

सधनुस्त्वं हि लोकांस्त्रीन् विजयेथा न संशयः । दिष्ट्या त्वया हतो राम रावणो राक्षसेश्वरः॥

| | | | |
|----------|---------------|--------------|---------------------|
| सधनुः | “கோதண்டபாணியா | राम | ஸ்ரீராம, |
| स्वं हि | தேவரீரோ | राक्षसेश्वरः | ராக்கூலேசுவரான |
| स्त्रीन् | முன்று | रावणः | ராவணன் |
| लोकान् | உலகங்களையும் | त्वया | தேவரீரால் |
| विजयेथाः | வெல்லவல்லீர். | हतः | கொலையுண்டது |
| संशयः न | ஐயமில்லை. | दिष्ट्या | எங்களது அதிர்ஷ்டம். |

दिष्ट्या विजयिनं त्वाऽद्य पश्यामः सह सीतया ॥ १६ ॥

| | | | |
|---------|------------|----------|----------------|
| दृश | “தேவரீரை | अद्य | இப்பொழுது |
| सीतया | வலிதையுடன் | दिष्ट्या | பாக்கியத்தால் |
| सह | கூட | पश्यामः | காணப்பெற்றோம். |
| विजयिनं | ஐயசீலராய் | | |

दिष्ट्या प्रहस्तो विकटो विरूपाक्षो महोदरः । अकम्पनश्च दुर्धर्षो निहतास्ते निशाचराः ॥

| | | | |
|------------|---------------|-----------|-------------------|
| ते | “அந்த | महोदरः | மஹோதரனும் |
| निशाचराः | அரக்கர்களாகிய | दुर्धर्षः | இறுமாப்புக் கொண்ட |
| प्रहस्तः | ப்ரஹஸ்தனும் | अकम्पनः च | அகம்பனனும் |
| विकटः | விகடனும் | निहताः | கொலையுண்டார்கள். |
| विरूपाक्षः | விருபாக்ஷனும் | दिष्ट्या | எங்களுடைய |
| | | | அதிர்ஷ்டமே. |

यस्य प्रमाणाद्विपुलं प्रमाणं नेह विद्यते । दिष्ट्या ते समरे राम कुम्भकर्णो निपातितः ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|------------|-------------------|
| राम | “ஸ்ரீராம, | न विद्यते | இல்லையோ, அப்படிப் |
| यस्य | எவனுடைய | कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் [பட்ட |
| प्रमाणात् | தேஹப்ரமாணத்தைக் | ते | தேவரீரால் |
| | காட்டினும் | समरे | போரில் |
| विपुलं | பெரிய | निपातितः | கொலையுண்டான். |
| प्रमाणं | ப்ரமாணம் | दिष्ट्या | எங்கள் அதிர்ஷ்டமா |
| इह | இவ்வுலகில் | | கவே கொண்டோம். |

त्रिशिराश्चातिकायश्च देवान्तकनरान्तकौ । दिष्ट्या ते निहता राम महावीर्या निशाचराः ॥

| | | | |
|------------|---------------|-------------------------|-----------------------------|
| राम | “ஸ்ரீராம, | देवान्तक- नरान्तकौ च | தேவாந்தகனும் நராந்தகனும் |
| ते | அந்த | | |
| महावीर्याः | மஹாவீர்யமுள்ள | निहताः | கொலையுண்டார்கள். |
| निशाचराः | அரக்கர்களான | दिष्ट्या | அதனும் எங்களுக் |
| विशिराः च | த்ரிசிரஸ்ஸும் | | கு பெரும்சந்தோஷம். |
| अतिकायः | அதிகாயனும் | | |

कुम्भश्चैव निकुम्भश्च राक्षसौ भीमदर्शनौ । दिष्ट्या तौ निहतौ राम कुम्भकर्णसुतौ मृधे ॥

| | | | |
|------------------|-----------------|-----------|--------------------|
| ராம | “ ஸ்ரீராம! | நிகும: ச | நிகும்பனென்பவனு |
| भीमदर्शनौ | பயங்கரமான தோற்ற | तौ | அந்த இரண்டு [மரண |
| | முடையவர்களும் | राक्षसौ च | அரக்கர்களும் |
| कुम्भकर्णसुतौ एव | கும்பகர்ணனின் | मृधे | போரில் |
| | குமாரர்களுமாகிய | निहतौ | மாண்டார்கள். |
| कुम्भः | கும்பனென்பவனும் | दिष्ट्या | இதிலும் எங்களுக்கு |
| | | | சந்தோஷம். |

युद्धोन्मत्तश्च मत्तश्च कालान्तक्यमोपमौ । यज्ञकोपश्च धूम्राक्षो जम्बुमाली महोदरः ॥२१॥

कुर्वन्तः कदनं घोरमेते शस्त्रास्त्रपारगाः । अन्तकप्रतिभैषाणैर्दिष्ट्या विनिहतास्त्वया ॥२२॥

| | | | |
|---------------------------|------------------------|-----------------|--------------------|
| एने | “ இந்த | महोदरः च | மஹோதரனும் |
| शस्त्रास्त्र- पारगाः } | सास्त्रिश्च अस्त्रिश्च | कालान्तक्यमोपमौ | பிரளயகாலயமனும் |
| | வித்தைகளை கரை | | கொப்பாகிய |
| | கண்டுணர்ந்தவர் | युद्धोन्मत्तः | யுத்தோன்மத்தனும் |
| | களும் | मत्तः च | மத்தனும் |
| घोरं | கொடும் | त्वया | தேவரீரால் |
| कदनं | பாபத்தொழில் | अन्तकप्रतिभैः | யமனை நிகர்த்த |
| कुर्वन्तः च | செய்துகொண்டிருந்த | बाणैः | பாணங்களால் |
| | வர்களுமான | विनिहताः | மாள்விக்கப்பட்டார் |
| यज्ञकोपः | யக்ளுகோபனும் | | கள். |
| धूम्राक्षः | தூம்ராக்ஷனும் | दिष्ट्या | இதுவும் எங்களது |
| जम्बुमाली | ஜம்புமாலியும் | | பாக்கியமே. |

दिष्ट्या त्वं राक्षसेन्द्रेण द्वन्द्वयुद्धसुपागतः । देवतानामवध्येन विजयं प्राप्तवानसि ॥ २३ ॥

| | | | |
|----------------|------------------|-----------------|------------------|
| एवं | “ தேவரீர் | उपागतः | உண்டாக்கிக்கொண் |
| देवतानां | தேவதைகளுக்கும் | विजयं | ஜயத்தை [டவராய் |
| अवध्येन | வெவ்வதற்கரியான | प्राप्तवान् असि | அடைந்தவராகிறீர். |
| राक्षसेन्द्रेण | ராக்ஷஸேந்திரனோடு | दिष्ट्या | இதுவும் எங்களது |
| द्वन्द्वयुद्धं | மல்லயுத்தத்தை | | பாக்கியமே. |

सहमेतन्महाबाहो रावणस्य निवर्हणम् । असहमेतत्संप्राप्तं रावणैर्यन्निवर्हणम् ॥ २४ ॥

| | | | |
|----------|-------------------|------------|------------------------|
| महाबाहो | “ மஹாபாகுவே! | रावणेः | ராவணன் புதல்வனுக் |
| रावणस्य | ராவணனுடைய | संप्राप्तं | கு (இந்திராஜித்துக்கு) |
| एतत् | இந்த | निवर्हणं | ஸம்பலித்த |
| निवर्हणं | அழிவு | यत् | எதுவோ |
| सहं | ஒரு பெரியகாரியமல் | एतत् | இது |
| | லாதது. | असहम् | ஒருபெரியகாரியம். |

सङ्ख्ये तस्य न किञ्चित्तु रावणस्य पराभवः । द्रन्द्रयुद्धमनुप्राप्तो दिष्ट्या ते रावणिर्हतः ॥

| | | | |
|----------------|------------------|----------|-----------------|
| संख्ये | “ யுத்தத்தில் | रावणिः | ராவணன் புதல்வன் |
| तस्य | அந்த | | (இந்திரஜித்தன்) |
| रावणस्य | ராவணனுடைய | हतः | கொலையுண்டது |
| पराभवः | அழிவு | तु | மாத்திரம் |
| किञ्चित् न | பொருட்டாக ஆகாது; | ते | தேவரீருக்கு |
| द्रन्द्रयुद्धं | மல்லயுத்தத்தை | दिष्ट्या | கொண்டாடவேண்டிய |
| अनुप्राप्तः | கைப்பற்றிய | | விஷயமாகிறது. |

दिष्ट्या तस्य महाबाहो कालस्येवाभिधावतः । मुक्तः सुररिपोर्वीर प्राप्तश्च विजयस्त्वया ॥

| | | | |
|----------|-----------------|----------|-------------------------------------|
| महाबाहो | “ மஹாபாகுவே! | मुक्तः | அஸ்திரபந்தத்திலிருந்து விடுபட்டார். |
| वीर | வீரரே! | स्वया | தேவரீரால் |
| कालस्य | யமனுக்கு | विजयः च | ஜயமும் |
| इव | சமனும் | प्राप्तः | அடையப்பட்டது. |
| अभिधावतः | தெரியாமல் வரும் | दिष्ट्या | இதை நாங்களனைவரும் கொண்டாடுகிறோம். |
| सुररिपोः | தேவகண்டகனான | | |
| तस्य | அவனுடைய | | |

सोऽवध्यः सर्वभूतानां महामायाधरो युधि । विस्मयस्त्वेष चास्माकं तच्छ्रुत्वेन्द्रजितं हतम् ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|---------------|----------------------------|
| सः च | “ அவனே | इन्द्रजितं तु | இந்திரஜித்தையும் |
| युधि | போரில் | हतं | மாணமடைந்தவனாக |
| महामायाधरः | பெரிய மாயாவி. | श्रुत्वा | கேட்டு, |
| सर्वभूतानां | எல்லா பிராணிகளுக்கும் | अस्माकं | எங்களுக்கு |
| अवध्यः | வெல்வதற்கரியன். | एषः | இது |
| तत् | ஆதலால் | विस्मयः | அதிக ஆச்சரியமாயிருக்கிறது. |

एते चान्ये च बहवो राक्षसाः कामरूपिणः । दिष्ट्या त्वया हता वीरा रघूणां कुलवर्धन ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------------|----------|---------------------------|
| रघूणां | “ ரகுக்களின் | अन्ये | வேறு |
| कुलवर्धन | குலத்தை விருத்தி செய்பவரே! | बहवः | அனேக |
| कामरूपिणः | சமயத்திற்கேற்ற உருவமெடுக்கக்கூடிய | वीराः च | வீரர்களும் |
| राक्षसाः | அரக்கர்களான | स्वया | தேவரீரால் |
| एते च | இவர்களும் | हताः | கொல்லப்பட்டார்கள். |
| | | दिष्ट्या | என்ன ஸந்தோஷம் எங்களுக்கு. |

दत्त्वा पुण्यामिमां वीर सौम्यामभयदक्षिणाम् । दिष्ट्या वर्षसि काकुत्स्थ जयेनामित्रकर्शना ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|-------------|--|
| अमितकर्शन | “ பகைவரை அழிப்பவரே! | अभयदक्षिणां | { யாவராலும் பயம் வேண்டாமென்ற நம்பிக்கையை செய்துகொடுத்து ஜயத்தோடு விளங்குகின்றீர் பரம ஸந்தோஷம்.” |
| वीर | வீரரே! | दत्त्वा | |
| काकुत्स्थ | காகுஸ்தரே! | जयेन | |
| पुण्यां | புண்ணியமானதும் | वर्षसि | |
| सौम्यां | மேலானதுமான | दिष्ट्या | |
| इमां | இந்த | | |

श्रुत्वा तु तेषां वचनमृषीणां भावितात्मनाम् । विस्मयं परमं गत्वा रामः प्राञ्जलिरब्रवीत् ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------|------------|------------------|
| भावितात्मनां | ஆதம்பஸ்வரூபத்தை நன்றாயறிந்த | विस्मयं | ஆச்சரியத்தை |
| ऋषीणां | ரிஷிகளின் | गत्वा | அடைந்து |
| वचनं | வாசீந்தையை | रामः | பூராமர் |
| श्रुत्वा | கேட்டதும் | तेषां | அவர்களுக்கு |
| परमं | வெகு | प्राञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ்தராய் |
| | | तु | இப்பொழுது இப்படி |
| | | अब्रवीत् | பதிலுரைத்தார் : |

भगवन्तः कुम्भकर्णं रावणं च निशाचरम् । अतिक्रम्य महावीर्यौ किं प्रशंसथ रावणिम् ॥

| | | | |
|------------|---------------------|-----------------|----------------|
| भगवन्तः | “ நீங்கள் | रावणं निशाचरं च | ராவணராசூஸ |
| महावीर्यौ | மஹாவீர்யவந்தர்க ளான | अतिक्रम्य | விட்டு [னையும் |
| कुम्भकर्णं | கும்பகர்ணனையும் | रावणिं | இந்திரஜித்தை |
| | | प्रशंसथ | பிரசம்ஸிப்பது |
| | | किम् | யாதுகாரணம் ? |

महोदरं प्रहस्तं च विरूपाक्षं च राक्षसम् । मत्तोन्मतौ च दुर्धर्षौ देवान्तकनरान्तकौ ॥ अतिकायं त्रिशिरसं धूम्राक्षं च निशाचरम् । अतिक्रम्य महावीर्यान् किं प्रशंसथ रावणिम् ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------|------------------|------------------------------|
| महावीर्यान् | “ பிரபலமான வீர்யங் களுள்ள | देवान्तकनरान्तकौ | தேவாந்தகனையும் நராந்தகனையும் |
| महोदरं | மஹோதரனையும் | अतिकायं | அதிகாயனையும் |
| प्रहस्तं | பிரஹஸ்தனையும் | त्रिशिरसं च | த்ரிசிரஸையும் |
| विरूपाक्षं | விரூபாக்ஷனென்ற | धूम्राक्षं | தூம்ராக்ஷனென்ற |
| राक्षसं च | அரக்கனையும் | निशाचरं च | அரக்கனையும் |
| दुर्धर्षौ | இறுமாப்புக்கொண்ட | अतिक्रम्य | விட்டு |
| मत्तोन्मतौ च | மத்தனையும் உன்மத் தனையும் | रावणिं | இந்திரஜித்தை |
| | | प्रशंसथ | ஏற்றமாகக்கூறுவது |
| | | किम् | யாதுகாரணம் ? |

कीदृशो वै प्रभावोऽस्य किं बलं कः पराक्रमः । केन वा कारणेनैष रावणादतिरिच्यते ॥

| | |
|-----------|------------------|
| अस्य | “ இவனது |
| प्रभावः | பிரபாவம் |
| कीदृशः वै | எத்தன்மையது ? |
| बलं | வலி |
| किं | எவ்வளவாயது ? |
| पराक्रमः | பராக்ரமம் |
| कः | எப்படிப்பட்டது ? |

| | |
|------------|--|
| एषः | இவன் |
| रावणात् | ராவணானிலும் |
| अतिरिच्यते | மேற்பட்டவனானது |
| केन | எந்த |
| कारणेन | காரணத்தால் ? |
| वा | நான் தெரிந்துகொள் ள விரும்புகிறேன். |

शक्रोऽपि विजितस्तेन कथं लव्ववरश्च सः । कथं च बलवान् पुत्रो न पिता तस्य रावणः ॥

| | |
|-----------|-------------------|
| तेन | “ அவனால் |
| शक्रः अपि | இந்திரனும் |
| विजितः च | ஜயிக்கப்பட்டதும் |
| सः | அவன் |
| लव्ववरः | வரம்பெற்றவனானதும் |
| कथं | எப்படி ? |
| तस्य | அவனது |

| | |
|---------|---------------------------------|
| पिता | தந்தை |
| रावणः च | ராவணனும் |
| न | அப்படியில்லாமல், |
| पुत्रः | பிள்ளை |
| बलवान् | அவனிலும்மேம்பட்ட பலிஷ்டனானது |
| कथम् | எப்படி ? |

शक्यं यदि मया श्रोतुं न खल्वज्ञापयामि वः ।

यदि गुह्यं न चेद्गुह्यं श्रोतुमिच्छामि कथ्यताम्

॥ ३६ ॥

| | |
|---------------|-----------------|
| वः | “ தேவர்களுக்கு |
| भाज्ञापयामि न | ஆகக் கூறவில்லை. |
| मया | என்னால் |
| श्रोतु | கேட்க |
| शक्यं यदि | கூடியதேயாயின், |
| वक्तुं | சொல்ல |

| | |
|------------|------------------|
| गुह्यं | ரஹச்யமானதாக |
| यदि न चेत् | இராதபகூத்தில், |
| श्रोतुं | செவிக்கொள்ள |
| इच्छामि | விரும்புகிறேன். |
| खलु | அப்படியாகில் |
| कथ्यताम् | சொல்லப்பட்டும்.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे प्रथमः सर्गः

नादितः श्लोकाः 20760



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 36

द्वितीयः सर्गः—இரண்டாவது ஸர்க்கம். ॥ २ ॥

पौलस्त्यजन्म—பௌஸ்தியோத்பத்தி.

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राघवस्य महात्मनः । कुम्भयोनिर्महातेजा राममेतदुवाच ह ॥ १ ॥

| | |
|----------|---------------|
| तस्य | அந்த |
| महात्मनः | மஹாத்மாவான |
| राघवस्य | ஸ்ரீராகவருடைய |
| तत् | அந்த |
| वचनं | மொழியை |
| श्रुत्वा | கேட்டு |

| | |
|------------|---------------------|
| महातेजाः | மிக்கதேஜஸ்வியான |
| कुम्भयोनिः | அகஸ்தியர் |
| रामं | ஸ்ரீராமரைப்பார்த்து |
| एतत् | பின்வருவதை |
| उवाच | சொன்னார், |
| ह | காண். |

शृणु राम यथावृत्तं तस्य तेजो बलं महत् । जघान शत्रून् येनासौ न च वध्यः स शत्रुभिः ॥

| | | | |
|----------|----------------|-----------|--------------------|
| ராம | “ஸ்ரீராமா! | येन | காரணமாக |
| असौ | இவன் | तस्य | அவனது |
| शत्रून् | சுத்ருக்களை | महत् | மஹத்தான |
| जघान | வென்றமைக்கும், | तेजः | தேஜஸையும் |
| च | அதுவுமன்றி | बलं | பலத்தையும் |
| सः | அவன் | यथावृत्तं | விஸ்தாரமாய்க் கூறு |
| शत्रुभिः | சுத்ருக்களால் | | கிறேன், |
| न वध्यः | வெல்லப்படாமைக் | शृणु | கேட்டருள்க. |
| | கும் | | |

जयं ते रावणस्याहं कुलं जन्म च राघव । वरप्रदानं च तथा तस्मै दत्तं ब्रवीमि ते ॥३॥

| | | | |
|---------|-------------------|-----------|----------------|
| राघव | “ஸ்ரீராகவா! | तथा | அப்படியே |
| रावणस्य | ராவணனது | तस्मै | அவனுக்கு |
| कुलं | குலத்தையும் | वरप्रदानं | வரமளித்ததையும் |
| जन्म | பிறப்பையும் | दत्तं च | கிடைத்ததையும் |
| जयं च | காரியஸித்தியையும் | ते | தேவீருக்கு |
| ते | தேவீருக்கு | अहं | நான் |
| | | ब्रवीमि | சொல்லுகிறேன். |

पुरा कृतयुगे राम प्रजापतिसुतः प्रभुः । पुलस्त्यो नाम ब्रह्मर्षिः साक्षादिव पितामहः ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------|-----------|--------------------|
| राम | “ஸ்ரீராமா! | पुलस्त्यः | புலஸ்தியர் |
| पुरा | பூர்வம் | नाम | என்று (ஒருவர் |
| कृतयुगे | கருதயுகத்தில் | | இருந்தார்). |
| प्रभुः | பிரபுவும் | साक्षात् | ஸாக்ஷாத் |
| ब्रह्मर्षिः | பிரம்மரிஷியுமாகிய | पितामहः | பிரம்மா |
| प्रजापतिसुतः | பிரம்மாவின் புத்திரர் | इव | எப்படியோ, அப்படிப் |
| | | | பட்டவர். |

नानुकीर्त्या गुणास्तस्य धर्मतः शीलतस्तथा । प्रजापतेः पुत्र इति वक्तुं शक्यं हि नामतः ॥

| | | | |
|----------------|---------------|-----------|------------------|
| धर्मतः | “தருமத்திலும் | प्रजापतेः | பிரம்மாவின் |
| तथा | அதுபோலவே | पुत्रः | குமாரர் |
| शीलतः | சீலத்திலும் | इति | என்று |
| तस्य | அவருடைய | वक्तुं | சொல்வது |
| गुणाः | குணங்கள் | नामतः | என்பதிலேயே |
| अनुकीर्त्याः न | எடுத்துரைத் | शक्यं हि | அவை தாமே விளங்கு |
| | தல் முடியாது. | | மன்றோ. |

स तु धर्मप्रसङ्गेन मेरोः पार्थे महागिरेः । तृणविन्द्राश्रमं गत्वा न्यवसन्मुनिपुङ्गवः ॥ ६ ॥

| | | | |
|---------------|--|---------------------|-------------------|
| धर्मप्रसङ्गेन | தருமத்தைக் குறை வற அனுஷ்டிக்கத்தால் | महागिरेः | மஹாகிரியின் |
| सः | அந்த | पार्थे | தாழ்வரையில் |
| मुनिपुङ्गवः | முனிச்சீரேஷ்டர் | तृणविन्द्राश्रमं तु | திருணடிர்து ஆசிரா |
| मेरोः | மேரு | गत्वा | சென்று [மத்திற்கே |
| | | न्यवसत् | வளித்தார். |

तपस्तेपे स धर्मात्मा स्वाध्यायनियतेन्द्रियः

॥ ७ ॥

| | | | |
|-----------------------------|---|------|---------------------|
| सः धर्मात्मा | “ அந்த தர்மா த்மா வேதமோ துவதிலே யே ஐம்பொறிகளையு மடக்கியவராய் | तपः | தவத்தை |
| स्वाध्याय- नियतेन्द्रियः | | तेपे | அனுஷ்டித்துவந்தார். |

देवपन्नगकन्याश्च राजर्षितनयाश्च याः । क्रीडन्त्योऽपसरसश्चैव तं देशमुपपेदिरे ॥ ८ ॥

| | | | |
|----------------|--|-------------|------------------------------------|
| देवपन्नगकन्याः | “ தேவகன்னிகை களும் பன்னக கன்னிகைகளும் ராஜரிஷிகன்னிகை களும் | याः च | எவர்களோ அவர் களும் |
| राजर्षितनयाः च | | क्रीडन्त्यः | உல்லாஸமாய் காலங் கழிப்பவர்களாய் |
| अपसरसः च | தேவலோகத்து அபஸரஸ்தீர்களும் | तं | அந்த |
| | | देश एव | இடத்திற்கே |
| | | उपपेदिरे | வருவதுண்டு. |

सर्वर्तुषुपभोग्यत्वाद्भ्रम्यत्वात् काननस्य च । नित्यशस्तास्तु तं देशं गत्वा क्रीडन्ति कन्यकाः॥
गायन्त्यो वादयन्त्यश्च लासयन्त्यस्तथैव च । मुनेस्तपस्विनस्तस्य विघ्नं चक्रुरनिन्दिताः ॥

| | | | |
|---------------|--|-------------------|-----------------|
| अनिन्दिताः | “ புத்திபூர்வகமான தோஷரஹிதர்களாகிய | काननस्य | சோலையின் |
| ताः कन्यकाः | அந்த கன்னிகைகள் | रम्यत्वात् च | ரமணியத்தாலும் |
| गायन्त्यः | பாடுகிறவர்களாயும் | तं | அந்த |
| वादयन्त्यः च | வீணைமுதலிய வாத் தியங்களை வாசிப் பவர்களாயும் | देशं | இடத்திற்கு |
| तथा एव | | அவ்வண்ணமே | नित्यशः |
| लासयन्त्यः च | உலாவியும், குதித் தும், ஓடியும் பலவித மாய்க் காலங்கழிப் பவர்களாயும் | गत्वा | போய் |
| सर्वर्तुषु | | ஸகல ருதுக்களிலும் | क्रीडन्ति |
| उपभोग्यत्वात् | ஆனந்தமாய் அனுப விக்கக் கூடியதாயி ருந்தமையாலும் | तु | இப்பொழுது |
| | | | तपस्विनः |
| | | तस्य | அந்த |
| | | मुनेः | ரிஷிக்கு |
| | | विघ्नं | இடைபூறு |
| | | चक्रुः | செய்யலானார்கள். |

अथ क्रुद्धो महातेजा व्याजहार महामुनिः । या मे दर्शनमागच्छेत् सा गर्भं धारयिष्यति ॥

| | | | |
|----------|------------------|------------|------------------|
| अथ | “ அப்பொழுது | दर्शनं | கட்புலனாய் |
| महातेजाः | மிக்க தேஜஸ்வியான | आगच्छेत् | ஆகிரூளோ |
| महामुनिः | மஹரிஷி | सा | அவள் |
| क्रुद्धः | கோபித்தவராய் | गर्भं | கர்ப்பத்தை |
| या | ‘எவள் | धारयिष्यति | தரித்தவளாவாள்’ |
| मे | எனக்கு | व्याजहार | என்று சபித்தார். |

तास्तु सर्वाः प्रतिश्रुत्य तस्य वावयं महात्मनः । ब्रह्मशापभयाद्भीतास्तं देशं नोपचक्रमुः ॥

| | | | |
|--------------|--------------|----------------|--------------------|
| ताः | “ அவர்கள் | ब्रह्मशापभयात् | பிரம்ஹணசாபம் |
| सर्वाः तु | எல்லாருமே | | என்ற பயத்தினால் |
| तस्य | அந்த | भीताः | திகிலடைந்தவர்களாய் |
| महात्मनः | மஹாத்மாவின் | तं | அந்த |
| वावयं | வாக்கியத்தை | देशं | இடத்திற்கு |
| प्रतिश्रुत्य | மனதிற்கொண்டு | उपचक्रमुः न | போவதில்லை. |

तृणविन्दोस्तु राजर्षेस्तनया न षृणोति तत् ॥ १३ ॥

गत्वाऽऽश्रमपदं तत्र विचचार मुनिर्भया ॥ १४ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|-----------|-------------------|
| तृणविन्दोः | “ திருணபிந்து என்ற | मुनिर्भया | அச்சமற்றவளாய் |
| राजर्षेः | ராஜரிஷியின் | आश्रमपदं | ஆசிராமத்திற்கு |
| तनया तु | மகளோ | गत्वा | சென்று |
| तत् | அதை | विचचार | உலாவிக்கொண்டிருந் |
| न षृणोति | கேட்டிலள். | | தான். |
| तत्र | விஷயமிப்படி இருந்த | | |
| | தால் | | |

तस्मिन् काले महातेजाः प्राजापत्यो महानृषिः ।

स्वाध्यायमकरोत्तत्र तपसा भावितः स्वयम् ॥ १५ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------|------------|---|
| तत्र | “ அவ்வீடத்தில் | स्वयं | தன் இஷ்டப்படி |
| तस्मिन् | அதே | तपसा | தபத்தால் |
| काले | சமயத்தில் | | } இந்திரியங்களையும் மனமையும் ஒருமை ப்படுத்தி தவநிஷ்ட டை பூண்டவராய் |
| प्राजापत्यः | பிரஜாபதியின் குமார ரும் | भावितः | |
| महातेजाः | மிக்க தேஜோவானு மான | स्वाध्यायं | |
| महानृषिः | மஹரிஷியானவர் | अकरोत् | |

ईदृशं
येन
कारणं
न जाने
किं तु
पूर्वं
स्वसखीजनं
अन्वेष्टुं
भावितामनः
पुरुस्त्यस्य
महर्षेः
दिव्यं
आश्रमं
एका
गता अस्मि

இப்படியிருக்கிறது
எதனாலோ அதன்
காரணத்தை
நான் அறியேன்.
ஆயின் ஒன்று :
இதற்குமுந்தி
என் தோழிஜனத்தை
தேடிக்கொண்டு
ஆத்மஞானியாகிய
புலஸ்திய
மஹரிஷியின்
திவ்ய
ஆசிரமத்திற்கு
தனியாய்
நான் போயிருந்தேன்.

तृणविन्दुस्तु राजर्षिस्तपसा द्योतितप्रभः ।

तपसा
द्योतितप्रभः
तृणविन्दुः
राजर्षिः
तु
भ्यान्

“தபஸால்
விளங்கும் ஞானதிரு
வ்ஷயையுடைய
திருணாபிந்து என்ற
ராஜரிஷி
இப்பொழுது
யோகதிருவ்ஷயை

स तु विज्ञाय तं शापं महर्षेर्भावितात्मनः ।

सः
भावितामनः
महर्षेः
तं शापं
विज्ञाय
तनयां तु

“அவர்
ஆத்மஞானியாகிய
மஹரிஷியின்
அச்சாபத்தை
கண்டுகொண்டு
குமாரத்தியையும்

भगवंस्तनयां मे त्वं गुणैः स्वैरेव भूषिताम् ।

भगवन्
महर्षे
मे तनयां
स्वैः
गुणैः एव
भूषितां

“ஸ்வாமியே!
ரிஷிபுங்கவரே!
எனது குமாரத்தியும்
தனது
உத்தமகுணங்களா
லேயே
அலங்கரிக்கப்பட்டிரு
க்கிறவளும்

तव
काञ्चित्
सर्लो च
अभ्यागतां
न पश्यामि
रूपस्य
विपर्यांत्रं तु
वृष्ट्या
बालात्
इह
अहं
आगता
उवाच

அங்கே
ஒரு
தோழியையும்
அங்கு வந்திருப்பவ
ளாக
நான் காணவில்லை.
மேனியின்
மாறுபாட்டை மாத்
திரம்
கண்டு
பயத்தால்
இங்கு
நான்
ஒடிவந்தேன்' என்று
சொன்னான்.

ध्यानं विवेश तच्चापि ह्यपश्यदृषिकर्मजम् ॥

विवेश
अपि च
तत्
ऋषिकर्मजं
हि
अपश्यत्

பற்றினார்.
அதின் பயலாய்
அது
ரிஷியின் செய்கையால்
வினோந்ததாகிறது
என்று
நிச்சயமாய்
அறிந்துகொண்டார்.

गृहीत्वा तनयां गत्वा पुलस्त्यमिदमब्रवीत् ॥

गृहीत्वा
गत्वा
पुलस्त्यं
इदं
अब्रवीत्

அழைத்துக்கொண்டு
போய்
புலஸ்தியரைப்
பார்த்து
பின்வருமாறு
சொன்னார்:

भिक्षां प्रतिगृहाणोमां महर्षे स्वयमुद्यताम् ॥

स्वयं एव
उद्यतां
इमां
त्वं
भिक्षां
प्रतिगृहाण

தானாகவே
கிட்டி வந்திருக்கிற
வளுமான
இவளை
தேவரீர்
பிசைகூயாக
பெற்றுக்கொள்ளும்.

तपश्चरणयुक्तस्य श्रम्यमाणेन्द्रियस्य ते । शुश्रूषणपरा नित्यं भविष्यति न संशयः ॥२५॥

श्रम्यमाणेन्द्रियस्य “இந்திரியங்களான
வருத்தி
தவம் புரிதலிலேயே
ஏகாக்ராசித்தராயிரு
க்கும்
தேவரீருக்கு

नित्यं
शुश्रूषणपरा
भविष्यति
संशयः न
எப்பொழுதும்
சுச்சூறையை செய்வதில்
ஆஸக்தியுடையவனாக
இருப்பார்.
இதில் ஐயமில்லை.’

तं ब्रुवाणं तु तद्वाक्यं राजर्षिं धार्मिकं तदा । जिघृक्षुरब्रवीत् कन्यां वाढमित्येव स द्विजः ॥

इति
ब्रुवाणं
धार्मिकं
राजर्षिं
तं
तद्वाक्यं तु
कन्यां
“இப்படி
சொல்லுகிற
தருமிஷ்டரும்
ராஜரிஷியுமான
அவரையும்
அவரது வாக்கியத்
தையும்
கன்னிகையையும்

जिघृक्षुः
सः
द्विजः
तदा
वाढं एव
अब्रवीत्
அங்குகரிக்ககிறும்பிய
வராய்
அந்த
பிராம்மணர்
அப்பொழுது
‘அப்படியே ஆகுக’
என்று பதிலுரைத்
தார்.

दत्त्वा तु तनयां राजा स्वमाश्रमपदं गतः । साऽपि तत्रावसत् कन्या तोषयन्ती पतिं गुणैः ॥

राजा
तु
तनयां
दत्त्वा
स्व
आश्रमपदं
गतः
“அரசர்
அப்பொழுது
குமாரத்தியை
பானிக்கிரஹணஞ்
செய்துகொடுத்து
தமது
ஆசிரமத்திற்கு
திரும்பிச்சென்றார்.

सा
कन्या अपि
पतिं
गुणैः
तोषयन्ती
तत्र
अवसत्
அந்த
கன்னிகையும்
நாயகரை
நல்லகுணங்களால்
சந்தோஷப்படுத்திக்
கொண்டு
அங்கு
வஸித்துவந்தாள்.

तस्यास्तु शीलवृत्ताभ्यां तुतोष मुनिपुङ्गवः । श्रीतः स तु महातेजा वाक्यमेतदुवाच ह ॥

तस्याः
शीलवृत्ताभ्यां तु
मुनिपुङ्गवः
तुतोष
“அவளது
சிலத்தினுலும் கரியை
களாலுமே
ரிஷிச்சீரோஷ்டர்
ஸந்தோஷமடைந்தார்.

श्रीतः
महातेजाः
सः ह
एतत् वाक्यं तु
उवाच
ஸந்துஷ்டியடைந்த
மஹாதேஜஸ்வியான
அவரே
பின்வரும் வார்த்தை
சொன்னார். [யையும்

परितुष्टोऽस्मि सुश्रोणि गुणानां सम्पदा भृशम् । तस्माद्देवि ददाम्यद्य पुत्रमात्मसमं तव ॥

उभयोर्वेशकतारं पौलस्त्य इति विश्रुतम्
सुश्रोणि
गुणानां
संपदा
भृशं
“அழகான இடையு
டையவளே !
உன் குணங்களின்
மேன்மையால்
அதிகமாக

॥ २९ ॥
परितुष्टः
अस्मि
तस्मात्
अद्य
ஸந்தோஷமடைந்தவ
ளுக
ஆகிறேன்;
ஆதலால்
இப்பொழுது

| | | | |
|-----------|--------------------|----------|-------------------|
| देवि | தேவியே, | विश्रुतं | பெருமையுடையோனு |
| तव | உனக்கு | | மாகிய |
| उभयोः | இருவர்களுடைய | पौलस्यः | பௌஸஸ்தியன் |
| वंशकतारं | வம்சங்களை விளங்கச் | इति | என்ற |
| | செய்பவனாய் | सुतं | ஒரு புத்திரனை |
| ६ आत्मसमं | எனக்கு இணையான | ददामि | அனுகூலமிக்கிறேன். |

यस्मात् विश्रुतो वेदस्त्वयैषोऽध्ययतो मम । तस्मात् स विश्रवा नाम भविष्यति न संशयः ॥

| | | | |
|---------|---------------|------------|-----------------|
| यस्मात् | “எதனால் | श्रुतः | கேட்கப்பட்டதோ ; |
| अध्ययतः | வேதாத்தியயனம் | तस्मात् तु | அதனாலேயே |
| | பண்ணிக்கொண்ட | सः | அவன் |
| मम | எனது [ருந்த | विश्रवाः | விசுவன் |
| एषः | இந்த | नाम | என்ற பெயருடன் |
| वेदः | வேதம் | भविष्यति | விளங்குவான். |
| त्वया | உன்னால் | न संशयः | இதில் ஐயமில்லை. |

एवमुक्त्वा तु सा देवी प्रहृष्टेनान्तरात्मना । अचिरेणैव कालेनासूत विश्रवसं सुतम् ॥ ३१ ॥

| | | | |
|-------------|--------------|---------------|-------------------|
| एवं | இவ்வாறு | कालेन एव | காலத்திலேயே |
| उक्त्वा | சொல்லப்பட்ட | यशोधर्म- | கீர்த்தியாலும் |
| सा | அந்த | समन्वितं तु | தர்மவீட்டையுமுள்ள |
| देवी | தேவி | त्रिषु लोकेषु | மூவுலகங்களிலும் |
| प्रहृष्टेन | மனத்திருப்தி | विख्यातं | பெயர்பெற்ற |
| | கொண்ட | विश्रवसं | விசுவஸென்ற |
| अन्तरात्मना | உள்ளறிவோடு | सुतं | புதல்வனை |
| अचिरेण | ஸ்வல்ப | असूत | பெற்றாள். |

श्रुतिमान् समदर्शी च व्रताचाररतस्तथा । पितेव तपसा युक्तो ह्यभवद्विश्रवा मुनिः ॥३२॥

| | | | |
|------------------|-------------------|-------------|----------------------|
| विश्रवाः मुनिः च | “விசுவஸென்ற | व्रताचाररतः | { விதங்களையும், நியம |
| | முனியும் | | ங்களையும் சரியாய் |
| श्रुतिमान् | வேதாத்தியயனம் | पिता | { அனுஷ்டிப்பவர் ; |
| | செய்தவர் ; | इव तथा | தந்தை |
| | ஸகல ப்ராணிகளையும் | तपसा हि | எப்படியோ அப்படியே |
| समदर्शी | { தன்னைப்போல் பா | युक्तः | தவத்தாலேயே |
| | விப்பவர் ; | अभवत् | காலங்கழிப்பவராய் |
| | | | இருந்தார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे द्वितीयः सर्गः ॥



तृतीयः सर्गः—முன்றாவது ஸர்க்கம். ॥ ३ ॥

वैश्रवणोत्पत्तिः लङ्कादिप्राप्तिश्च—குபேரனது உத்பத்தியும் லங்கை முதலியதையடைவதும்.

अथ पुत्रः पुलस्त्यस्य विश्रवा मुनिपुङ्गवः । अचिरणैव कालेन पितेव तपसि स्थितः ॥१॥
 सत्यवाञ्छीलवाञ्छान्तः स्वाध्यायनिरतः शुचिः । सर्वभोगेभ्यसंस्क्तां नित्यं धर्मपरायणः ॥

अथ “இப்படி
 पुलस्त्यस्य புலஸ்தியருடைய
 पुत्रः புத்திரரான
 विश्रवा: விசுவஸ் என்ற
 मुनिपुङ्गवः முனிபுங்கவடர்
 सत्यवान् ஸத்யவானும்
 शीलवान् சீலவானும்
 शान्तः சாந்தியுடையவராய்
 स्वाध्यायनिरतः { வேதாத்தியயனமே
 காரியமாய்க்கொண்டவராய்

शुचिः பரிசுத்தராய்
 सर्वभोगेषु எவ்வித சுகானுவந்
 असंसक्तः ஆசையை ஒழித்தவராய்
 धर्मपरायणः தர்மானுட்படானபர
 अचिरण कालेन एव வெகு சீக்கிரமே [ராய்
 पिता इव தந்தைபோல்
 तपसि தவத்தில்
 नित्यं எப்பொழுதுமே
 स्थितः நிலையாய் இருந்தார்.

ज्ञात्वा तस्य तु तद्वत् भरद्वाजो महासुनिः । ददौ विश्रवसे भार्यां स्वसुतां देववर्णिनीम् ॥

तु “இப்படியிருக்கையில்
 भरद्वाजः பரத்வாஜ
 महःसुनिः மஹரிஷி
 तस्य அவருடைய
 तत् वृत्तं அப்படிப்பட்ட சீலத்தின் மஹிமையை
 ज्ञात्वा கண்டு

देववर्णिनीं தெய்வப்பெண்போன்ற
 स्वसुतां தன் குமாரியை
 विश्रवसे விசுவஸை-வுக்கு
 भार्या பராயையாக
 ददौ கன்னிகாதானம் செய்தார்.

प्रतिशृष्ट तु धर्मेण भरद्वाजसुतां तदा । मुदा परमया युक्तो विश्रवा मुनिपुङ्गवः ॥ ४ ॥

विश्रवा: “விசுவஸ் என்ற
 मुनिपुङ्गवः तु முனிபுங்கவரும்
 भरद्वाजसुतां பரத்வாஜரின் குமாரத்த
 तदा அப்பொழுது [தியை
 धर्मेण விதிமுறைப்படி

प्रतिशृष्ट பாணிக்கிரஹணம்
 मुदा செய்துகொண்டு
 परमया மேலான
 युक्तः ஸந்துஷ்டியுடன்
 युक्तः இருந்தார்.

स तस्यां वीर्यसम्पन्नमपत्यं परमाद्भुतम् । जनयामास धर्मज्ञः सर्वैर्ब्रह्मगुणैर्युतम् ॥ ५ ॥

सः धर्मज्ञः “தர்மங்களறிந்த அவர்
 सर्वैः எல்லா
 ब्रह्मगुणैः { பிராம்மணர்களிடம்
 இருக்கவேண்டிய
 समम् तमम् முதலிய
 नற்கुणनङ्कनराल்
 युतं விளங்குபவனும்

वीर्यसम्पन्नं மஹாபாக்கிரம
 सर्वैर्ब्रह्मगुणैर्युतम् சாலியும்
 परमाद्भुतं இதுவரையில் கண்டி
 रात அற்புதனுமாகிய
 अपत्यं ஒரு புத்தனை
 तस्यां அவளிடத்தில்
 जनयामास பெற்றார்.

तस्मिञ्जाते तु संहृष्टः सम्बभूव पितामहः । प्रजान्शेषिकया बुद्ध्या श्रेयो ह्यस्य विचिन्तयन् ॥
 दृष्ट्वा श्रेयस्करां बुद्धिं धनाध्यक्षो भविष्यति । नाम तस्याकरोत् प्रीतः सार्धं देवर्षिभिस्तदा ॥
 यस्माद्विश्रवसोऽपत्यं सादृश्याद्विश्रवा इव । तस्माद्वैश्रवणो नाम भविष्यत्येष विश्रुतः ॥८॥

| | | | |
|----------------|---|-------------------|-----------------------|
| तस्मिन् | “அவர் | अस्य | இவரது |
| जाते तु | பிறந்ததும் | श्रेय. | சீரேயவை |
| पितामहः | பாட்டனர் (புலஸ்தியர்) | विचिन्तयन् हि | இப்போதே மனதிற்கொண்டு |
| प्रजान्शेषिकया | ஜனகாலத்து கிரகஸ்திதியைக்கண்டறியும் | संहृष्टः | மிக்க மகிழ்ச்சிகொண்ட |
| बुद्ध्या | நுண்ணறிவால் | संबभूव | இருந்தார். [உவராய் |
| तस्य | அவருக்கு | प्रीतः | மனஸந்துஷ்டிகொண்டவராய் |
| श्रेयस्करां | { கிருகங்கள் சீரேயவை அளிக்கத்தக்க தாயுள்ள | देवर्षिभिः सार्धं | தேவரிஷிகளோடுகூடி |
| बुद्धिं | | विश्रवसः | விசுவஸின் |
| एषः | அமைப்பையும் | अपत्यं | புதல்வர் |
| धनाध्यक्षः | இவர் | यस्मात् तस्मात् | என்பதினாலும் |
| नाम | தனாதிபதியாய் (கனாத்தியக்ஷன்) என்ற | विश्रवाः | விசுவஸின் |
| भविष्यति | பெயருடன் | इव | எப்படியோ அப்படியே |
| विश्रुतः | விளங்கப்போகிறார் | सादृश्यात् | ஸகல குணங்களிலும் |
| भविष्यति | என்பதையும் | तदा | ஒத்திருத்தலாலும் |
| दृष्ट्वा | பெயர்பெற்றவர் | वैश्रवणः | தற்காலம் |
| | ஆகப்போகிறார் என்ப | नाम | வைசுவணனென |
| | கண்டு [தையும் | अकरोत् | நாமகரணம் |
| | | | செய்தனர். |

स तु वैश्रवणस्तत्र तपोवनगतस्तदा । अवर्धताहुतिहुतो महातेजा यथाऽनलः ॥ ९ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-----------|---------------|
| सः | “அந்த | आहुतिहुतः | ஆஜ்யாகுதியால் |
| वैश्रवणः तु | வைசுவணனும் | अनलः यथा | வளர்க்கப்பட்ட |
| तपोवनगतः | தபோவனத்தையே | महातेजाः | அக்னியென |
| तत्र | அதில் [நாடியவராய் | अवर्धत | மஹாதேஜோவாராய் |
| तदा | அப்பொழுது | | விளங்கினான். |

तस्याश्रमपदस्थस्य बुद्धिर्ज्ञे महात्मनः । चरिष्ये परमं धर्मं धर्मो हि परमा गतिः ॥१०॥

| | | | |
|---------------|---------------------|---------|-----------------|
| आश्रमपदस्थस्य | “ஆசிரமத்திலேயே | परमं | ஸர்வோத்திருஷ்ட |
| तस्य | அந்த [நிலையாபிருந்த | धर्मं | டமான் |
| महात्मनः | மஹாத்மாவுக்கு | चरिष्ये | பரத்யானமொன்றையே |
| धर्मः | தருமமே | बुद्धिः | அனுஷ்டிப்பேன் |
| परमा | கடைத்தேறும் | ज्ञे | உறுதி [என்னும் |
| गतिः | உபாயம். | | உண்டாயிற்று. |
| हि | ஆதலின் | | |

ச து வர்ஷசஹஸ்தாணி தபஸ்தப்வா ஢ாஹவநே । யந்ரீதூ நியமீரூரூதூகார ஢ுமஹத்பப: ॥ 11 ॥

஢ாஹவநே “பெருங்காட்டில்
ச: ஃவர
வர்ஷசஹஸ்தாணி ஃயிரவருஷங்கள்
தப: தரவா தவம்பூரிந்து
து ஃப்பொழுது

ஃரூ: உக்கிர஢ான
நியமீ: நிய஢ங்களுடன்
யந்ரீதூ: இந் தீரியநிக்கிரக஢்
செய்தவராய்
஢ுமஹத்பப: கடுந்தவத்தை
சஹர செய்யலாயினூர்.

பூரீ வர்ஷசஹஸ்தான்தே த் த் விதிக஢கலபயத் । ஜலாசீ ஢ாருதாஹரூ நிராஹாரஸ்ததீவ ச ॥

ஃவ் வர்ஷசஹஸ்தாணி ஜ஢ுஸ்தான்யேகவர்ஷவத்

॥ 12 ॥

வர்ஷசஹஸ்தான்தே “ஃயிர஢ாண்டுகள்஢ுழு
பூரீ கழிந்தபின்னரீ [வத஢்
ஃவ் இப்படி
ஜலாசீ { ஜலத்தை ஢ாத்திர஢்
ஃயிர஢ாருகக்
காண்டவராகவ஢்
ததா ஃப்படியே
஢ாருதாஹரூ: ச { வாயுவை஢ாத்திர஢்
ஃயிர஢ாருகக்
காண்டவராகவ஢்

நிராஹா: ஃவ நிராஹார஢ானவரூ
கவ஢்
த் த் ஃததற்கூரிய
விதி சங்கற்ப஢ாய்
ஃகலபயத் ஏற்படுத்திக்காண்டார்.
தானி ஃந்த
வர்ஷசஹஸ்தாணி ஃயிர஢ாண்டுகள்
ஃகவர்ஷவத் ஃவ ஃராண்டுபுல
ஜ஢ு: கழிந்தன.

ஃத பூதூ ஢ாஹதேஜா: செந்ரீ: ஢ுரரூ: சஹ । ஢ாருதா தஸ்யா஢ர஢படம் ஢்ரஹேட வாக்ய஢஢வீத் ॥

஢ாஹதேஜா: “஢ஹாதேஜஸ்வியா
஢்ரஹா பிரு஢஢தேவர் [கிய
ஃத இப்பொழுது
பூதூ: ப்ரீதியடைந்தவராகி,
செந்ரீ: இந் திர஢ுள் ளிட்ட
஢ுரரூ: தேவகணங்களுடன்
சஹ கூட

தஸ்ய ஃவருடைய
ஃஃர஢படம் ஃசுர஢த்திற்கு
ரூ: வந்து
இடம் பின்வரு஢்
வாக்யம் வாக்கியத்தை
ஃ஢வீத் சொன்னூர்:

பரிதுஷ்டஸி஢ீ தே வதச கர்஢ாணானே஢ ஢ுரவத் । வரீ வூணிஷவ ஢்ர஢் தே வரஹீஸ்த்வ஢் ஢ா஢தே ॥ 13 ॥

஢ா஢தே “஢ஹாபுத்தி஢ா஢ாய்
஢ுரவத் உத்த஢விரதங்களை
ஃவ் ஃனுஷ்டித்து ஢ுடித்த
தே ஃன் செல்வனே!
தே உனது
ஃனே஢ இப்படிப்பட்ட
கர்஢ாண ஃசுரணத்தால்
பரிதுஷ்ட: பூர்ணதிருப்தியடைந்த
வனாக

ஃரி஢ ஃயினேன்.
தே உனக்கு
஢்ர஢் சே஢஢஢ுண்டாகட்ட஢்.
ஃவ் நீ
வரஹீ: { கேட்கு஢் வரங்களைப்
பெற உரியவனாகி
விட்டாய்.
வரீ கோரியது ஃதுவூ
வூணிஷவ ஃதைவேண்டுகு.

| | |
|---------|-------------------|
| தே | உனக்கு |
| ஸ்வரீத | மங்கலம் |
| அஸ்து | உண்டாகுக. |
| தாத | மிகு நட்புக்குரிய |
| தவ | உனக்கு [வனே, |
| வரத்யம் | வரமரண்டையும் |
| த்வா | தந்து |

| | |
|----------|------------------|
| கூதகூயா: | கிருதகிருத்தியர் |
| வயம் | நாங்கள் [கனாகி |
| சவ் | அனைவரும் |
| யாநர் | வந்தபடியே |
| கமியாம: | செல்லுகின்றோம். |
| தந் | ஆதலால் |
| ககூ | நீயும் போ.' |

इत्युत्वा स गतो ब्रह्मा स्वस्थानं त्रिदशैः सह ॥ २१ ॥

| | |
|-------------|------------------|
| इति | “இவ்விதம் |
| उत्त्वा | சொல்லிவிட்டு |
| त्रिदशैः सह | தேவர்களுடன் கூடி |

| | |
|-----------|-----------------|
| स: | அந்த |
| ब्रह्मा | பிரம்மா |
| स्वस्थानं | தமது இருப்பிடம் |
| गतः | சென்றனர். |

गतेषु ब्रह्मपूर्वेषु देवैष्वथ नभःस्थलम् । धनेशः पितरं प्राह प्राञ्जलिः प्रयतात्मवान् ॥ २२ ॥
निवासनं न मे देवो विदधे स प्रजापतिः । भगवन् लब्धवानस्मि वरमिष्टं पितामहात् ॥
तं पश्य भगवन् कश्चिन्निवासं साधु मे प्रभो । न च पीडा भवेद्यत्र प्राणिनो यस्य कस्यचित् ॥

| | |
|----------------|-----------------------------------|
| ब्रह्मपूर्वेषु | “பிரம்மாவை முதன் மையாய்க்கொண்ட |
| देवेषु | தேவர்கள் |
| नभःस्थलं | விண்ணிலகத்திற்கு |
| गतेषु | சென்ற |
| अथ | பிறகு |
| धनेशः | தனேசன் (சுபேரன்) |
| प्रयतात्मवान् | அடக்கமொடுக்கமாய் |
| प्राञ्जलिः | கைகூப்பிக்கொண்டு |
| पितरं | தந்தையைப்பார்த்து |
| भगवन् | ‘பகவானே ! |
| पितामहात् | பிரம்மாவினிடம் மிருந்து |
| इष्टं | இஷ்டமான |
| वरं | வரத்தை |
| लब्धवान् अस्मि | நான் பெற்றுக்கொண் டேன். |
| स: | அந்த |
| प्रजापतिः देवः | பிரம்மதேவர் |
| मे | எனக்கு |

| | |
|---------------|-------------------------------|
| निवासनं | வவலிக்குமிடத்தை |
| न विदधे | கற்பிக்கவில்லை. |
| च | ஆதலின் |
| प्रभो | பரபுவே, |
| भगवन् | பகவானே, |
| यत् | எந்தவிடத்தில் |
| यस्य कस्यचित् | எந்த |
| प्राणिनः | பிராணிகளும் |
| पीडा | கஷ்டம் |
| न भवेत् | உண்டாகாதே |
| तं | அப்படிப்பட்டதாய், |
| मे | எனக்கு |
| साधु | ஏற்றதான |
| निवासं | வாஸஸ்தானம் |
| कश्चित् | ஒன்றை |
| पश्य | விதித்தருள்புரியும்’ என்று |
| प्राह | விண்ணப்பம் செய்தார். |

एवमुक्तस्तु पुत्रेण विश्रवा मुनिपुङ्गवः । वचनं प्राह धर्मज्ञः श्रूयतामिति सत्तमः ॥ २५ ॥
 दक्षिणस्योदधेस्तीरे त्रिकूटो नाम पर्वतः । तस्याग्निं तु विशाला सा महेन्द्रस्य पुरी यथा ॥
 लङ्का नाम पुरी रम्या निर्मिता विश्वकर्मणा ॥ २६ ॥
 राक्षसानां निवासार्थं यथेन्द्रस्यामरावती । हेमप्राकारपरिघा यन्त्रशस्त्रसमावृता ॥
 रमणीया पुरी सा हि स्वभवैर्हृयंतोरणा ॥ २७ ॥
 राक्षसैः सा परित्यक्ता पुरा विष्णुभयार्दितैः । शून्या रत्नोगणैः सर्वै रसातलतलं गतैः ॥
 शून्या सम्प्रति लङ्का सा प्रभुस्तस्या न विद्यते । स त्वं तत्र निवासाय गच्छ पुत्र यथासुखम् ॥
 निर्दोषस्तत्र ते वासो न बाधा तत्र कस्यचित् ॥ ३० ॥

धर्मज्ञः “தருமங்கள நிற்கவ
 சத்தம: மஹாபூஜ்யரும் [ரும்
 முனிபுங் : ரிஷிச்சேரேஷ்டரும்
 புலேண புத்திரனூல்
 एवं மேற்சொல்லியவண்
 ணம்
 उक्तः तु விண்ணப்பஞ்செய்யப்
 பட்டவருமான
 विश्रवा: விசுவஸ்,
 श्रुयतां விளம்புகிறேன் கேள்.
 दक्षिणस्य தெற்கு
 उदधे: கடலின்
 तीरे கரையில்
 त्रिकूटः திரிகூடமென் னும்த
 पर्वतः பர்வதம்
 नाम ஒன்றிருக்கிறது.
 तस्य அதின்
 अग्ने உச்சியில்
 महेन्द्रस्य இந்திரனுடைய
 पुरी यथा तु பட்டணம்போன்ற
 विशाला விசாலமான
 लङ्का லங்கை என்ற
 पुरी நகரம்
 नाम ஒன்று உள்ளது.
 सा அது
 राक्षसानां அரக்கர்களின்
 निवासार्थं இருப்பிடத்திற்காக
 विश्वकर्मणा விசுவகர்மனூல்

इन्द्रस्य இந்திரனுடைய
 अमरावती அமராவதி
 यथा எப்படியோ, அப்படியே
 रम्या ஸகல லக்ஷணங்களும்
 அமைந்ததாய்
 निर्मिता நிர்மிக்கப்பட்டது.
 सा அந்த
 पुरी हि நகரமோ
 हेमप्राकार- } தங்கமயமான ப்ரா
 परिघा } காரங்கள், அகழிகள்
 यन्त्रशस्त्र- } இவைகளுள்ளது;
 समावृता } யந்திரஸூபங்களான
 स्वभवैर्हृयं } சஸ்திரங்களால்
 तोरणा } நிறையப்பெற்றது;
 रमणीया } பொன், வைரீயம்,
 सा } இவற்றாலான தோர
 पुरा } ணங்களை யுடையது;
 विष्णुभयार्दितैः } ரமணீயமானது.
 गतैः } அது
 सर्वैः } முன்பு
 } விஷ்ணுவால் கலக்க
 } முற்றதால் நெஞ்ச
 } ழிந்தவர்களாய்
 } பாதாளலோகத்தில்
 } நான்காவதாகிய ரஸா
 } தலமென்னுமுலகுக்கு
 } ஒடிப்போய்ச்சேர்ந்த
 } எல்லா

| | |
|------------|-------------------------------|
| ராக்ஷஸீ: | அரக்கர்களாலும் |
| ரக்ஷொரூ: | ராக்ஷஸபரீவாரங்க ளாலும் |
| சூர்யா | சூர்யமாய் செய்யப் பட்டதாய் |
| பரீத்யக்தா | விட்டுவிடப்பட்டது. |
| சா | அந்த |
| லக்ஷ்ணம் | இலங்கை |
| சம்ப்ரதீ | இப்பொழுது |
| சூர்யா | சூர்யமாயிருக்கிறது. |
| தஸ்யா: | அதற்கு |
| ப்ரஸூ: | நாதனெவனும் |
| ந வித்யை | இல்லை. |
| புத்ர | குழந்தாய், |
| ச: | அந்த |
| ஸ்வ | ஈ |

| | |
|-----------|------------------------|
| த: | அங்கு |
| யய:புஷ் | சுகமாய் |
| நிவாசய | வாஸம்பண்ணா |
| ர-சு | போய்ச்சேர். |
| தஸ | அங்கு |
| தே | உனது |
| வாஸ: | வாஸம் |
| நிர்ஔீய: | குறையற்றதாயிருக்கும்; |
| தஸ | அங்கு |
| வஸ்யசீத்ர | எவர்க்கும் |
| வாஸா | எவ்விதமான உபத்திரவமும் |
| ந | உண்டாக இடமில்லை, |
| ஔதீ | என்ற இந்த |
| வசந் | ஆக்களுயை |
| பாஔ | விதித்தருளினார். |

एवमुक्तस्तु धर्मात्मा पित्रा धर्म्यमिदं वचः ।
 नैर्ऋतानां सहस्रैस्तु हृष्टैः प्रमुदितैः सह
 अचिरेणैव कालेन संपूर्णा तस्य शासनात्

निवेशयामास तदा लङ्कां पर्वतमूर्धनि ॥
 ३१ ॥
 ३२ ॥

| | |
|--------------|--|
| விதா | “தந்தையினால் |
| ஔதம் | இந்த |
| புவ் | இப்படிப்பட்ட |
| தர்யம் | தருமத்தோடிசைந்த |
| வச: | ஆக்களுயை |
| உக்த: து | கேட்டதுமே |
| ததா | அப்பொழுது |
| தர்மாத்தமா | தர்மாத்மா |
| நைர்ஔ்தானாம் | { (தீயதொழில்களில் புராகத) நைரிதர் களென்னும் பிசாசர் களின் |
| ஔதீ: | மனத்திருப்திகொண்டவர்களாய் |

| | |
|-------------------|---|
| து | அதினால் |
| ப்ரஸூதீவீ: | மனஸந்துஷ்டியுடையவர்களான |
| சஔசு: | அனுகர்களால் |
| சஔ | சூழப்பட்டவராய் |
| பர்வதமூர்धनि | மலைசிகரத்திலுள்ள |
| லக்ஷ்ணம் | இலங்கையில் |
| நிவெசயாமாஸ | குடிபுகுந்தார். |
| தஸ்ய | அவரது |
| சாஸநாத் | ஆளுகை என்பதால் |
| அசீரெண காலென புவ் | சீக்கிரமே |
| சம்பூர்ணாம் | { ஸகல ஸம்பத்தாக் களும், ஸம்பூர்ண மாக இருந்தன. |

स तु तत्रावसत् प्रीतो धर्मात्मा नैर्ऋतर्षभः । समुद्रपरिघायां तु लङ्कायां विश्रवात्मजः ॥

विश्रवात्मजः “विश्रवावஸின்
குமாரரும்
धर्मात्मा तु தர்மா த்மாவுமான
सः அவர்
तल அந்த
समुद्रपरिघायां तु ஸமுத்திரத்தையே
அகிழாகவுடைய

लङ्कायां இலங்கையில
नैर्ऋतर्षभः நைரி தர்களின் அதி
பதியாய்
प्रीतः மிகுந்த ஸந்துஷ்
டராய்
अवसत् வாழ்ந்துவந்தார்.

काले काले तु धर्मात्मा पुष्पकेण धनेश्वरः । अभ्यागच्छत्सुसंहृष्टः पितरं मातरं च हि ॥

सुसंहृष्टः “மன திருப்தியால்
பூர்ணக்களிப்புற்ற
धर्मात्मा தர்மா த்மாவான
धनेश्वरः தனாதிபர்
काले काले அடிக்கடி

मातरं च தாயையும்
पितरं तु தந்தையையும்
पुष्पकेण हि புஷ்பகவிமானத்
திலேறிக்கொண்டே
अभ्यागच्छत् போய் தரிசித்துவரு
வதுண்டு.

स देवगन्धर्वगणैरभिष्टुतस्तथैव सिद्धैः सह चारणैरपि ।

गभस्तिभिः सूर्य इवौजसा वृतः पितुः समीपं प्रययौ श्रिया वृतः ॥ ३५ ॥

सः “அவர்
श्रिया ஸகல ஸம்பத்து
களால்
वृतः நிறையப்பெற்றவ
ராயும்

देवगन्धर्वगणैः एव { தேவர்கள், கந்தர்வர்
கள், இவர்களின்
கூட்டங்களாலும்
तथा அவ்வண்ணமே
सहचारणैः சாரணர்களோடுகூடிய

सिद्धैः अपि வலித்தர்களாலும்
अभिष्टुतः போற்றிப்புக்கழப்பெற்
सूर्यः ஸூர்யன் [நவராயும்
गभस्तिभिः கிரணங்களால்
इव எப்படியோ,
அப்படியே
ओजसा ஒளியால்
वृतः விளங்குகிறவராயும்
पितुः தந்தையின்
समीपं ஸந்திதிக்கு
प्रययौ போவதுண்டு.”

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे तृतीयः सर्गः ॥



चतुर्थः सर्गः—நான்காவது ஸர்க்கம். ॥ ४ ॥

सुकेशराक्षसोत्पत्तिः—ஸுகேசன் என்ற அரக்கனின் உற்பத்தி.

श्रुत्वाऽगस्त्यैरितं वाक्यं रामो विस्मयमागतः । कथमासीत् लङ्कायां रक्षसामिति सम्भवः ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------|----------|------------------|
| ராம: | ஸ்ரீராமர் | कथं | எப்படிப்பட்டதென் |
| अगस्त्यैरितं | அகஸ்தியரால் சொல் லப்பட்டதும் | इति | பற்றியதுமான [பதை |
| लङ्कायां | இலங்கையில் | वाक्यं | மொழிக்கு |
| रक्षसां | அரக்கர்களின் | श्रुत्वा | செவ்சாய்த்து |
| संभवः | பூர்வ உற்பத்தி | तु | இப்பொழுது |
| आसीत् | இருந்தது | विस्मयं | ஆச்சரியம் |
| | | आगतः | அடைந்தார். |

ततः शिरः कम्पयित्वा त्रेताग्निसमविग्रहम् । तमगस्त्यं सुहृद्दृष्ट्वा स्वयमानोऽभ्यभाषत ॥

| | | | |
|-----------------|--|----------|-----------------------------------|
| ततः | அதனால் | अगस्त्यं | அகஸ்தியரை |
| शिरः कम्पयित्वा | தலையை அசைத்து | सुहृः | அடிக்கடி |
| वेताग्नि- | } தகூறினாக்கனி, கார்ஹ பத்தியம், ஆஹவ வீயம் என்ற மூன்று அக்னிகளை நிகர்த்த | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| समविग्रहं | | स्वयमानः | புன்னகை கொண்டவ ராகி |
| तं | அந்த | अभ्यभाषत | இப்படி விரிவாய் கேட்கலுற்றார். |

भगवन्पूर्वमप्येषा लङ्काऽऽसीत्पिशिताशिनाम् । श्रुत्वेदं भगवद्वाक्यं जातो मे विस्मयः परः ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|--------------|----------------|
| भगवन् | “ஸ்வாமியே! | भगवद्वाक्यं | தங்கள் மொழியின |
| पूर्व अपि | முற்காலத்திலும் | इदं श्रुत्वा | இதைக் கேட்டு, |
| एषा | இந்த | मे | எனக்கு |
| लङ्का | இலங்கை | परः | அதிக |
| पिशिताशिनां | பிசிதாசனர்களுக்கு | विस्मयः | ஆச்சரியம் |
| आसीत् | இருந்தது என்ற | जातः | உண்டாயிற்று. |

पुलस्त्यवंशाद्भूता राक्षसा इति नः श्रुतम् । इदानीमन्यतश्चापि संभवः कीर्तितस्त्वया ॥

| | | | |
|----------------|-------------------------------|------------|-----------------|
| राक्षसाः | “அரக்கர்கள் | श्रुतं | கேள்வி. |
| पुलस्त्यवंशात् | புலஸ்தியர்வம்சத்தி னினன்று | संभवः | பூர்வீகஉற்பத்தி |
| उन्भूताः | உண்டானார்கள் | इदानीं | இப்பொழுது |
| इति | என்று | त्वया च | தங்களாலோ |
| नः | எங்களுக்கு | अन्यतः अपि | வேறுவிதமாயே |
| | | कीर्तितः | கூறப்படுகிறது. |

रावणात्कुम्भकर्णाच्च प्रहस्ताद्विकटादपि । रावणस्य च पुत्रेभ्यः किं नु ते बलवत्तराः ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|--------------|---------------------|
| ते | “அவர்கள் | விகடாத் அபி | விசுடனைக்காட்டிலும் |
| रावणात् | ராவணனைக்காட்டி | रावणस्य | ராவணனுடைய |
| | ஆம் | पुत्रेभ्यः च | புத்திரர்களைக்காட் |
| कुम्भर्णात् च | கும்பகர்ணனைக்காட் | | டி ஆம் |
| | டி ஆம் | बलवत्तराः | அதிக பலசாலிகளா |
| प्रहस्तात् | பிரஹஸ்தனைக்காட் | किं नु | என்ன ? |
| | டி ஆம் | | |

क एषां पूर्वको ब्रह्मन् किं नाम च बलोत्कटः ।

अपराधं च कं प्राप्य विष्णुना द्राविताः कथम्

॥ ६ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|------------|---------------------|
| ब्रह्मन् | “பிராம்மணரே! | कं | என்ன |
| एषां | இவர்களுக்கு | अपराधं | அபராதத்தை |
| पूर्वकः कः | மூலபுருஷன் யாவன் ? | प्राप्य | கண்டு |
| नाम किं | பெயர் என்ன ? | विष्णुना च | விஷ்ணுவாலேயே |
| बलोत्कटः च | ஆற்றலின் மஹத்வம் | कथं | எவ்வண்ணம் |
| | எத்தன்மையது ? | द्राविताः | ஓழிக்கப்பட்டார்கள். |

एतद्विस्तरतः सर्वं कथयस्व ममानघ । कौतूहलमिदं मह्यं नुद भानुर्यथा तमः ॥ ७ ॥

| | | | |
|----------|----------------|---------|----------------------------------|
| अनघ | “தோஷரஹிதரே, | इदं | இந்த |
| एतत् | இதை | कौतूहलं | { அறிந்துகொள்ள வேண்டுமென்ற ஆசையை |
| सर्वं | எல்லாம் | भानुः | சூரியன் |
| मम | எனக்கு | तमः | இருளை |
| विस्तरतः | விவரமாக | यथा | எப்படியோ அப்படி |
| कथयस्व | எடுத்துரையும். | नुद | தீர்த்துவிடும்.” |
| मह्यं | என்னுடைய | | |

राघवस्य वचः श्रुत्वा संस्कारालंकृतं शुभम् । ईषद्विस्मयमानस्तमगस्त्यः प्राह राघवम् ॥

| | | | |
|----------------|---------------|------------|----------------------|
| राघवस्य | ஸ்ரீராகவருடைய | ईषत् | கொஞ்சம் |
| संस्कारालंकृतं | நாகுக்காயும் | विस्मयमानः | ஆச்சர்யப்பட்டவராய் |
| शुभं | அழகாயிருக்கிற | तं | இந்த |
| वचः | வார்த்தையை | राघवं | ஸ்ரீராகவரைப்பார்த்து |
| श्रुत्वा | கேட்டு | प्राह | இப்படி உத்தரவு |
| अरास्त्यः | அகஸ்தியர் | | ரைத்தார்: |

प्रजापतिः पुरा सृष्ट्वा ह्यपः सलिलसंभवः । तासां गोपायने सत्त्वानसृजत्यन्नसंभवः ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|-----------|----------------|
| प्रजापतिः | “ஜலத்திலுண்டான | अपः | ஐலத்தை |
| पुरा | வரும் | सृष्ट्वा | ஸருஷ்டித்து |
| | { மஹாவிஷ்ணுவின் து | तासां | அவற்றின் |
| पञ्चसंभवः हि | நாபிகமலத்தினின்று | गोपायने | ரக்ஷணத்திற்காக |
| | முண்டானவருமான | सत्त्वान् | பிரானிகளை |
| प्रजापतिः | பிரம்மா | असृजत् | படைத்தார். |
| पुरा | முதலில் | | |

ते सत्त्वाः सत्त्वकर्तारं विनीतवदुपस्थिताः । किं कुर्म इति भाषन्तः क्षुत्पिपासाभयादिताः ॥

| | | | |
|-----------------------------|---|--------------------------------------|---|
| ते | “அந்த | स्वकर्तारं | { பிரானிகளைப் படைத் தவரை (பிரம்மதே வரை) |
| सत्त्वाः | பிரானிகள் | किं कुर्मः | என்னசெய்யவேண் |
| क्षुत्पिपासा- भयादिताः } | பசிதாகத்தால் வாட் டமுற்றவர்களாயும் கவலையால் மட்டும் பாதைப்படுகிறவர் களாயும் | इति विनीतवद् भाषन्तः उपस्थिताः | என்று [ஊம்? மிக்கவணக்கத்துடன் கேட்கின்றவர்களாய் கிட்ப்புநின்றார்கள். |

प्रजापतिस्तु तान्याह सत्त्वानि प्रहसन्निव । आभाष्य वाचा यत्नेन रक्षध्वमिति मानदः ॥

| | | | |
|-----------|------------------|-----------|--------------------------|
| प्रजापतिः | “பிரம்மா | आभाष्य | முதலில் ஸம்பா |
| तानि | அந்த | वु | கேட்டதற்கு [ஊத் து |
| सत्त्वानि | பிரானிகளை | यत्नेन इव | ‘ஹீனமான சிரத்தை யுடன் |
| मानदः | வெகுமானிப்பவராய் | रक्षध्वं | காப்பாற்றுங்கள்’ |
| वाचा | முகவரைப்பேச்சை | इति | என்று |
| प्रहसन् | புன்னகையுடன் | आह | பதில் கூறினார். |

रक्षामेति च तत्रान्ये जक्षाम इति चापरे । भुक्षिताभुक्षितैरुक्तस्ततस्तानाह भूतकृत् ॥

| | | | |
|--------------------------|--|--------------------------|---|
| भुक्षिता- भुक्षितैः } | “பசியுடனிருப்பவர் கள், பசியில்லாதவர் கள், இவ்விருவகைப் பட்டவர்களால் | अपरं | மற்றவர்கள் (பசியுட னிருப்பவர்கள்) |
| तत्र | அதில் | जक्षाम इति च उक्तः | ‘பகழிக்கிறோம்’ என்றும் சொல்லியதற்குச் செவ்சாய்த்த ஸ்ருஷ்டிகர் த்தா (பிரம்மா) |
| अन्ये | { இரண்டாவதாயிருக் கின்றவர்கள் (பசி யில்லாதவர்கள்) | भूतकृत् | அப்படியிருந்ததினால் பின்கண்டபடி |
| रक्षाम इति च | ‘காப்பாற்றுகிறோம்’ என்றும் | ततः | அவர்களுக்கு விதித்தருளினார் : |

रक्षामेति च यैरुक्तं राक्षसास्ते भवन्तु वः । जक्षाम इति यैरुक्तं यक्षा एव भवन्तु वः ॥

| | | | |
|------------------------|--|------------------------|--|
| वः | “உங்களில் | वः | உங்களில் |
| रक्षाम इति उक्तं | காப்பாற்றுகிறோம் என்று சொல்லப்பட்டது | जक्षाम इति उक्तं | பகழிக்கிறோம் என்று சொல்லப்பட்டது |
| यैः ते | எவர்களாலோ அவர்கள் | यैः | எவர்களாலோ, அவர் கள் |
| राक्षसाः च भवन्तु | ராக்ஷஸர்களாகவே இருக்கவேண்டும். | यक्षाः एव भवन्तु | யக்ஷர்களாகவே இருக்கவேண்டும்.’ |

तत्र हेतिः प्रहेतिश्च भ्रातरौ राक्षसाधिपौ । मधुकैटभसङ्काशौ बभूवतुररिन्दमौ ॥ १४ ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|------------|-------------------|
| सख | “ अश्वர்களில் | हेतिः | வேறி என்றும் |
| राक्षसाधिपौ | राक्षसाधिपர்களாய் | प्रहेतिः च | பிரவேறி என்பவனும் |
| मधुकैटभसङ्काशौ | மதுகைடபர்களை | भ्रातरौ | இரண்டு சகோதரர்கள் |
| | ஒத்த | | |
| अरिन्दमौ | ஜயசாஸிகளாய் | बभूवतुः | இருந்தார்கள். |

प्रहेतिर्धार्मिकस्तत्र तपोवनगतस्तदा । हेतिर्दारक्रियार्थे तु परं यत्रमथाकरोत् ॥ १५ ॥

| | | | |
|----------|----------------------|---------------|----------------|
| तत्र | “ अश्वர்களில் | अथ | இப்பொழுது |
| प्रहेतिः | பிரவேறி என்பவன் | हेतिः तु | வேறி என்பவனே |
| धार्मिकः | தருமிஷ்டனாய் | दारक्रियार्थं | கல்யாணஞ்செய்து |
| तदा | இருந்தபடியால் | | கொள்வதில் |
| | { துறவிகளின் ஆசிரமம் | परं | கூடுமான |
| तपोवनगतः | { களில் காலத்தை | यत्नं | முயற்சியை |
| | { கழித்துவிட்டான். | अकरोत् | செய்தான். |

स कालभगिनीं कन्यां भयां नाम भयावहाम् । उदावहदमेयात्मा स्वयमेव महामतिः ॥

| | | | |
|-----------|---------------|-----------|-----------------|
| महामतिः | “மஹாசாதூர்யமு | नाम | எனப்பெயர் பூண்ட |
| | டைய | कालभगिनीं | யமன் சோதரியாகிய |
| अमेयात्मा | சலியாமனத்தனான | कन्यां | கன்னிகையை |
| सः | அவன் | स्वयं एव | தானே |
| भयावहां | பிரபலமான | उदावहव् | பரணிக்கிரஹணஞ் |
| भयां | பயை | | செய்துகொண்டான். |

स तस्यां जनयामास हेती राक्षसपुङ्गवः । पुत्रं पुत्रवतां श्रेष्ठो विद्युत्केश इति श्रुतम् ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|--------------|---------------|
| राक्षसपुङ्गवः | “ राक्षसाச்சரேஷ்ட | तस्यां | அவளிடத்தில் |
| हेतिः | வேறி என்ற [னான | विद्युत्केशः | வித்யுக்கேசன் |
| सः | அவன் | इति | என்ற |
| पुत्रवतां | புத்திரவான்களில் | श्रुतं | பிரஸித்தனான |
| श्रेष्ठः | சிறந்தவனாய் | पुत्रं | புத்திரனை |
| | | जनयामास | பெற்றான். |

विद्युत्केशो हेतिपुत्रः स दीप्तार्कसमप्रभः । व्यवर्धत महातेजास्तोयमध्य इवाम्बुदः ॥१८॥

| | | | |
|------------------|---------------------|----------|-----------------|
| हेतिपुत्रः | “ வேறிபின் குமார | महातेजाः | மஹாதேஜோவானாய் |
| सः | அந்த [னாகிய | तोयमध्ये | ஜலமத்தியிலுள்ள |
| विद्युत्केशः | வித்யுக்கேசன் | अम्बुदः | மேகம் |
| | { ஜவலிக்கின்ற ஸூர் | इव | போல் |
| दीप्तार्कसमप्रभः | { யனை நிகர்த்த கார் | व्यवर्धत | விருத்தியடைந்து |
| | தியுடைய | | விளங்கினான். |

स यदा यौवनं भद्रमनुप्राप्तो निशाचरः । ततो दारक्रियां तस्य कर्तुं व्यवसितः पिता ॥

சு: "அந்த
 நிशाசர: ராக்ஷஸன்
 மட் சரியான
 யௌவன் யௌவனவயதை
 யதா எப்பொழுது
 அனுபாச: அடைந்தனனோ

தது: அப்போதிருந்தே
 தாரக்ரியா கல்யாணத்தை
 கர்து செய்துவைக்க
 தசுய அவனுடைய
 பிதா தந்தை
 வ்ரவசித: தீர்மானித்தார்.

सन्ध्यायास्तनयां सोऽथ सन्ध्यातुल्यां प्रभावतः । वरयामास पुत्रार्थं हेती राक्षसपुङ्गवः ॥

ஹேதி: "ஹேதி என்ற
 சு: அந்த
 ராக்ஷஸுச்சேரவந்தன்
 அய அப்பொழுது
 புலாதி குமாரனுக்காக
 ப்ரபாவத: பிரபாவத்தால்

சந்ஹ்யாதுல்யா ஸந்தியைக்கு நிகரான
 சந்ஹ்யா: ஸந்தியைபின்
 தனயா குமாரத்தியை
 வரயாமாச விவாஹஞ்செய்துகொ
 டுக்கவேண்டினான்.

अवश्यमेव दातव्या परस्मै सेति सन्ध्याया । चिन्तयित्वा सुता दत्ता विद्युत्केशाय राघव ॥

ராஹவ "ஹீராகவ,
 சா அவள்
 பரஸ்மே எவ பிறர்க்கே
 டாத்தவ்யா { பாணிக்கிரஹணஞ்
 செய்துகொடுக்
 கவேண்டியது
 அவச்யம் அவச்யம்

ஐதி என்பதை
 சிந்தயித்வா உள்ளபடி அறிந்து
 சுதா மகள்
 சந்ஹ்யா ஸந்தியையால்
 வித்யுக்ஷைய வித்யுக்கேசனுக்கு
 ததா விவாஹம்செய்துகொ
 டுக்கப்பட்டார்.

सन्ध्यायास्तनयां लब्ध्वा विद्युत्केशो निशाचरः । रमते स्म तथा सार्धं पौलोम्या मघवानिव ॥

வித்யுக்ஷை: "வித்யுக்கேசன் என்ற
 நிशाசர: அரக்கன்
 சந்ஹ்யா: ஸந்தியைபின்
 தனயா மகளை
 லக்ஷ்வா பெற்று
 தயா சாதி அவனோடுகூட

மஹவா இந் திரன்
 பௌலோம்யா இந் திராணியோடு
 ஐவ எப்படியோ அப்படி யே
 ரமதே ச ஆனந்தமாய்க்காலந்
 கழித்துவந்தான்.

केनचित्त्वथ कालेन राम सालकटङ्कटा । विद्युत्केशाद्भर्माप घनराजिस्विर्वाणवात् ॥ २३ ॥

ராம "ஹீராம!
 அய இப்படி
 கேனசித் சில
 காலேன து காலம் செல்லுகையில்
 சாலகடங்கடா ஸாலகடங்கட
 என்ற அவள்,

அணிவா கடலினின்று
 ஘னராஜி: மேகக்கட்டம்
 ஐவ விளைவது எப்படியோ
 அப்படியே
 வித்யுக்ஷை வித்யுக்கேசனிடமி
 ருந்து
 ரம் அப கர்ப்பவதி ஆயினள்.

ततः सा राक्षसी गर्भं घनगर्भसमप्रभम् । प्रसूता मन्दरं गत्वा गङ्गा गर्भमिवाग्निजम् ॥२४॥

ततः “अुप்படியாகவே
सा राक्षसी अந்த ராக்ஷஸி
मन्दरं मந்தரமலைக்கு
गङ्गा சென்று
अग्निं கங்கை
பெற்ற

गर्भं கருவை
इव எப்படியோ அப்படியே
घनगर्भसमप्रभं மின்னல்போன்ற
மேனியுள்ள
गर्भं ஓர் ஆண்சிசுவை
प्रसूता பெற்றெடுத்தார்.

तस्यसृज्य तु सा गर्भं विद्युत्केशरतार्थिनी । रेमे तु सार्धं पतिना विस्मृत्य सुतमात्मजम् ॥

सा “அவள்
तं அந்த
गर्भं அப்போது பிறந்த
तु தானே [சிசுவை
उत्सृज्य எறிந்து விட்டு
विद्युत्केश- } வித்யுத்தேசனிடம்
रतार्थिनी } காமலிகரத்திலா
சையுடையவளாய்

आसृजं தனக்குப்பிறந்த
सुतं तु சிசுவையே
विस्मृत्य முற்றிலும் மறந்து
पतिना கணவனுடனே
सार्धं கூடி
रेमे காமத்தில் முழுகிப்
போயினள்.

उत्सृष्टस्तु तदा गर्भो घनशब्दसमस्वनः । निधायास्ये स्वयं मुष्टिं खरोद शनकैस्तदा ॥

तदा “அப்பொழுது
उत्सृष्टः தேடாது விட்டெறிந்
गर्भः சிசு [து விடப்பட்ட
तदा அப்படியிருந்தமை
स्वयं तु தானாகவே [யால்
आस्ये வாயில்

मुष्टिं விரலை
निधाय வைத்துக்கொண்டு
घनशब्दसमस्वनः மேகத்தவனியை ஒத்த
குரலுடையதாய்
शनकैः விட்டுவிட்டு
खरोद கதறிற்று.

ततो वृषभमास्थाय पार्वत्या सहितः शिवः । वायुमार्गेण गच्छन्वै शुश्राव रुदितस्वनम् ॥

ततः “அதேசமயத்தில்
पार्वत्या ஸ்ரீபார்வதியோடு
सहितः கூடினவராக
वृषभं விருஷபத்தில்
आस्थाय எறி

वायुमार्गेण ஆகாயமார்க்கமாய்
गच्छन् சஞ்சரித்துக் கொண்டி
ருந்த
शिवः वै பரமசிவபெருமான்
रुदितस्वनं அழுகுரலை
शुश्राव கேட்டார்.

अपश्यदुमया सार्धं रुदन्तं राक्षसात्मजम् । कारुण्यभावात्पार्वत्या भवस्त्रिपुरसूदनः ॥२८॥

पार्वत्याः “பார்வதியின்
காஹ்யமாவார் { அமரனுஷமான காரு
ணயசக்தியால்,
(பிரார்த்தனைக்
கிணங்கியதால்)
उमया सार्धं உமையுடன் கூடினவ
ராய்

विपुरसूदनः திரிபுரமழித்த
भवः ஸ்ரீருத்ரபகவான்
रुदन्तं கதறிக்கொண்டிருந்த
राक्षसात्मजं ராக்ஷஸிபெற்றசிசுவை
अपश्यत् நேரில்போய்ப்பார்
தார்.

तं राक्षसात्मजं चक्रे मातुरेव वयःसमम् । अमरं चैव तं कृत्वा महादेवोऽक्षरोऽव्ययः ॥२९॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------------|-------------|----------------------------|
| अक्षरः | “நித்தியமானவரும் தவர்படாத பலன் | अमरं कृत्वा | மரனாமில்லாததாய்ச் |
| अव्ययः | { களை அளிக்க வல் லருமாகிய | च | அதுடன் [செய்து |
| महादेवः एव | ஸ்ரீமஹாதேவரே | तं | அவனை |
| तं | அந்த | मातुः | தாயாருக்கு |
| राक्षसा-मजं | ராக்ஷஸிபெற்ற சிசுவை | वयः समं एव | ஸமமான வயதுள்ள வனாகவும் |
| | | चक्रे | அனுக்கிரகித்தருளி னார்- |

पुरमाकाशं प्रादात्पार्वत्याः प्रियकाम्यया । उभयाऽपि वरो दत्तो राक्षसानां नृपात्मज ॥

सद्योपलब्धिर्गर्भस्य प्रसूतिः सद्य एव च । सद्य एव वयःप्राप्तिर्मातुरेव वयः समम् ॥३१॥

| | | | |
|--------------|---|-----------------|------------------------|
| पार्वत्याः | “ஸ்ரீபார்வதி தேவியா ருக்கு | राक्षसानां | அரக்கர்களுக்கு |
| प्रियकाम्यया | { பிரியமானதைச்செய் துமுடிக்கவேண்டு மென்கிற விருப்பத் தால் | गर्भस्य | கருவின் |
| आकाशां | ஆகாயத்தில் எழுந்து செல்லவல்ல | सद्योपलब्धिः | உடனே தரித்தலும் |
| पुरं | நகரமொன்றை | सद्यः | உடனே |
| प्रादात् | தந்தருளினார். | प्रसूतिः च | பிரசவித்தலும் |
| नृपात्मज | சக்கரவர்த்தித் திருமகனரே, | सद्यः एव | அதேசமயத்தில் |
| उभया अपि | உமாதேவியாரா லும் | मातुः | தாயின் |
| | | समं वयः | ஸமானமான வயதையும் |
| | | वयःप्राप्तिः एव | அதேவயதைப் பெறுதலும் |
| | | वरः | ஆக்கினையாக |
| | | दत्तः | விதித்தருளப்பட்டது. |

ततः सुकेशो वरदानगर्वितः श्रियं प्रभोः प्राप्य हरस्य पार्ष्वतः ।

चचार सर्वत्र महान्महामतिः खगं पुरं प्राप्य पुरन्दरो यथा ॥ ३२ ॥

| | | | |
|-----------|---|--------------|--|
| सुकेशः | “ஸுகேசன் (வித்யுத் கேசன் குமாரனும், சுகேசனென்ற பெய ருடன் விளங்கியவ னுமான, அவன்) | श्रियं | பெரும் பாக்கியத் |
| प्रभोः | பிரபுவாகிய | प्राप्य | அடைந்து [தையும் |
| हरस्य | பரமசிவபெருமானது | ततः | அதனால் |
| पार्ष्वतः | கருணைகடாட்சத் திலிருந்து | वरदानगर्वितः | { அனுக்கிரஹத்தால், அஹங்காரங்கொண் டவனாய் |
| खगं | ஆகாயத்தில் செல்லக் | महान् | மஹானும் |
| पुरं | பட்டணத்தை [கூடிய | महामतिः | மஹாமதியனுமான |
| प्राप्य | அடைந்து | पुरन्दरः | இந்திரன் |
| | | यथा | எப்படியோ, அப் |
| | | सर्वत्र | எங்கும் [படியே |
| | | चचार | ஸஞ்சரிக்கவாயினன். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे चतुर्थः सर्गः ॥



பஞ்சம: சரீ:—ஐந்தாவது ஸர்க்கம். ॥ ௨ ॥

மாலயவதாஹுத்பி:—மால்யவான் முதலியவர்களுடைய உற்பத்தி.

சுகேசம் ஧ாமிகம் த்ரூஷ்டா வரலக்ஷம் ச ராக்ஷசம் । ஧ாமணிநாம ஧ந்ரவீ விஸ்ரவசுசமமம: ॥ 1 ॥

சுகேசம் "ஸு-கேசனென்ற
ராக்ஷசம் ராக்ஷஸனை
வரலக்ஷம் மேன்மையான வரங்க
஧ாமிகம் ச ரைப் பெற்றவனாகவும்
த்ரூஷ்டா தர்மிஷ்டனாகவும்
஧ாமணி: அறிந்து
க்ராமணி க்ராமணி

நாம என்ற பெயருள்ள
வனும்
விஸ்ரவசுசமமம: விசுவாவஸு என்ற
கந்தர்வனுக்கு சமா
னமான மகிமைபெற்
றவனுமான
஧ந்ரவீ: ஒரு கந்தர்வனிருந்
தான்.

தஸ்ய தேவதீ நாம த்ரீதீதீயா ஶ்ரீரீவாத்மஜா । த்ரீஷு லுக்ஷேஷு விஸ்ரவதா ரூபயீவநசாலினீ ॥

தஸ்ய "அவனுடைய
த்ரீதீயா இரண்டாவது
ஶ்ரீ: குமாரத்தியாயும்
ஶ்ரீ: ஶ்ரீமஹாலக்ஷ்மீ
ஶ்ரீ: போன்ற
ரூபயீவநசாலினீ ரூபமும் யௌவன
மும் வாய்ந்தவனென

த்ரீஷு மூன்று
லுக்ஷேஷு உலகங்களிலும்
விஸ்ரவதா பெயர்பெற்றவளாயும்
தேவதீ தேவதீ
நாம என்ருருவனிருந்
தான்.

தாம் சுகேசாய த்ரீமேண த்ரீ: ரக்ஷ: ஶ்ரீயம் யதா ॥ 2 ॥

தாம் "அவளை
சுகேசாய ஸு-கேசனுக்கு
ரக்ஷ: ஶ்ரீயம் யதா அரக்கர்களின்பெரு
மைக்காகவென்றே

த்ரீமேண ஶித்முறைப்படி
த்ரீ: ஶிவாகஞ்செய்துகொ
டுத்தான்.

வரதானக்ருதீஸ்ரீயம் சா தம் ஶ்ராய்ய ஶ்ரீதி ஶ்ரீயம் । ஶாஸீதீவதீ துஷ்டா த்ரீயம் ஶ்ராய்ய துரீ: ॥ 3 ॥

சா "அந்த
தேவதீ தேவதீ
வரதானக்ருதீஸ்ரீயம் { வரதானத்தால் கிடை
த்த ஐசுவரியத்தை
யுடைய
த்ரீயம் இஷ்டனான
தம் அந்த
த்ரீ: பரத்தாவை
த்ரீ: பெற்று

துரீ: செல்வமிழந்து கஷ்ட
மனுபவிப்பவன்
த்ரீயம் செல்வத்தை
த்ரீ: அடைந்தால் எப்படி
யோ, அப்படிப்பட்ட
துஷ்டா சந்தோஷமுடையவ
ளாக
ஶாஸீ: இருந்தான்.

स तथा सह संयुक्तो रराज रजनीचरः । अञ्जनादभिनिष्क्रान्तः करेणैव महागजः ॥५॥

| | | | |
|-----------------|------------------------------------|---------|-----------------------------------|
| अञ्जनात् | “அஞ்சனமென்ற திக் கஜத்திலிருந்து | इव | எங்கனமிருக்குமோ |
| अभिनिष्क्रान्तः | பிறந்த | सः | அந்த [அங்கனமே |
| महागजः | மேன்மையான ஆண் யானை | रजनीचरः | யா துதானன் (ராக்ஷ |
| करेणैव | பெண்யானையோடு | तथा | அவனோடு [ஸன்] |
| संयुक्तः | சேர்ந்தால் | सह | கூட |
| | | रराज | மிகப்பெருமைபெற்று விளங்கினான். |

देववत्यां सुकेशस्तु जनयामास राघव । त्रींस्त्रिनेत्रसमान्पुत्रान्राक्षसान्राक्षसाधिपः ॥

माल्यवन्तं सुमालिं च मालिं च बलिनां वरम् ॥ ६ ॥

| | | | |
|-------------|------------------------------|----------------|---------------------|
| राघव | “ஸ்ரீராகவ, ராக்ஷஸா திபனான | सुमालिं च | ஸுமாலி என்பவனும் |
| राक्षसाधिपः | ஸுக்ஷேசன் | मालिं च | மாலி என்பவனுமான |
| सुकेशः | பலமுடையோர்களுக்க குள் | त्रिनेत्रसमान् | மூன்று கண்களுக்குச் |
| बलिनां तु | சிறந்த | धीन् | மூன்று [சமமான |
| वरं | மால்யவந்தன் என்ப வனும் | राक्षसान् | ராக்ஷஸ |
| माल्यवन्तं | | पुत्रान् | குமாரர்களை |
| | | देववत्यां | தேவவதியிடம் |
| | | जनयामास | பெற்றான். |

त्रयः सुकेशस्य सुतास्त्रैतायिसमतेजसः । विवृद्धिमगमस्तत्र व्याधयोपेक्षिता इव ॥ ७ ॥

| | | | |
|---------------|---|------------|--------------------|
| तव | “அங்கே | उपेक्षिताः | கவனித்துபாராமல் |
| सुकेशस्य | ஸுக்ஷேசனுடைய | | விடப்பட்ட |
| सयः सुताः | மூன்று குமாரர்கள் | व्याधयः | வியாதிகள் |
| | திரைதாக்கினிகள் | इव | போல் |
| शैतायिसमतेजसः | (காஹபத்தியம், ஆஹவரீயம், தக்ஷி ணக்கினி) போல் | विवृद्धिं | விரிசெஷ்விரூத்தியை |
| | தேஜோவான்களாய் | अगर् | அடைந்தார்கள். |

वरप्राप्तिं पितुस्ते तु ज्ञावेश्वरतपोबलात् । तपस्तप्तुं गता मेरं आतरः कृतनिश्चयाः ॥ ८ ॥

| | | | |
|----------------------|--|-------------|---------------------------|
| ते | “அந்த | तु | அப்படியே அவர் |
| आतरः | சகோதரர்கள் | | களும் |
| ईश्वरतपोबलात् | { பரமேச்வரருக்குப்புரி ந்த தவத்தின் மஹ த்வத்தால் | तपः तप्तुं | தவம்புரிய |
| पितुः | தந்தைக்கு | कृतनिश्चयाः | மனவுறுதிகொண்ட வர்களாய் |
| वरप्राप्तिं ज्ञात्वा | வரபாக்கியம் உண்டா யிருத்தலை அறிந்து | मेरं | மேருமலைக்கு |
| | | गताः | போய்ச்சேர்ந்தார்கள். |

प्रगृह्य नियमान्वोरात्राक्षसा नृपसत्तम । विचेरुस्ते तपो घोरं सर्वभूतभयावहम् ॥ ९ ॥

| | | | |
|----------|-----------------------|---------------|---------------------------------|
| नृपसत्तम | “மன்னர்களில் உத்தமரே! | प्रगृह्य | ஏற்படுத்திக்கொண்டு |
| ते | அந்த | सर्वभूतभयावहं | ஸகலபிராணிகளும் நடுங்கும்படி. |
| राक्षसाः | ராக்ஷஸர்கள் | घोरं | கடும் |
| घोरान् | கடுமையான | तपः | தபத்தை |
| नियमान् | நியமங்களை | विचेरुः | அனுஷ்டித்தார்கள். |

सत्यार्जवशमोपेतैस्तपोभिरतिदुष्करैः । सन्तापयन्तस्त्रींलोकान्सदेवासुरमानुषान् ॥ १० ॥

| | | | |
|--------------------------|--|------------------|--------------------------------|
| अतिदुष्करैः | “பிறருக்கு அஸாத்யமானவைகளும் | सदेवासुरमानुषान् | தேவர், அஸுரர், மனிதர் உள்பட |
| सत्यार्जव- शमोपेतैः } | ஸத்யம், நேர்மை, பொறை நிறைந்தவை களுமான | वीन् | மூன்று |
| तपोभिः | தவங்களால் | लोकान् | உலகங்களையும் |
| | | सन्तापयन्तः | வருத்தினார்கள். |

ततो विभुश्चतुर्वक्त्रो विमानवरमास्थितः । सुकेशपुत्रानामन्य वरदोऽस्मीत्यभाषत ॥ ११ ॥

| | | | |
|---------------|----------------------|--------|---------------------------|
| ततः | “அப்பொழுது | भामन्य | நேரில் கூப்பிட்டு |
| चतुर्वक्त्रः | நான் முகக்கடவுளா | वरदः | ‘வரமளிக்கிறவனாக |
| विभुः | பிரம்மதேவர் [கிய | अस्मि | தோன்றியிருக்கின் றேன்’ |
| विमानवरं | சிறந்த விமானத்தின் | इति | என்று |
| आस्थितः | ஏறிவந்து [மீது | अभाषत | அறிவித்தனர். |
| सुकेशपुत्रान् | ஸுகேசனின் குமாரர்களை | | |

ब्रह्माणं वरदं ज्ञात्वा सेन्द्रैर्देवगणैर्द्वैतम् । ऊचुः प्राञ्जलयः सर्वे वेपमाना इव द्रुमाः ॥ १२ ॥

तपसाऽऽराधितो देव यदि नो दिशसे वरम् । अजेयाः शत्रुहन्तारस्तथैव चिरजीविनः ॥

प्रभविष्णवो भवामेति परस्परमनुव्रताः

॥ १३ ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------------|------------|-------------------------------------|
| सेन्द्रैः | “இந்திரன் உள்பட | प्राञ्जलयः | அஞ்சலிஹஸ்தர் களாகி |
| देवगणैः | தேவகணங்களோடு | देव | ‘தேவ, தவத்தால் |
| वृत्तं | சேர்ந்துவந்திருக்கும் | तपसा | தபத்தால் |
| ब्रह्माणं | பிரம்மாவை | भाराधितः | திருப்தியடைந்த |
| वरदं | வரமளிக்கும் சமயத் தீவிரூப்பவராய் | नः | எங்களுக்கு [வராய் |
| ज्ञात्वा | கண்டு | वरं | வரத்தை |
| द्रुमाः इव | அசைகின்ற விருக்தங் களென | दिशसे | அளிக்கப்போகிறீர் |
| वेपमानाः | நடுங்கிக்கொண்டு | यदि | என்றால் |
| सर्वे | எல்லோருமாய் | अजेयाः | எவராலும் வெல்வதற் கரியவர்களாயும் |

| | |
|------------|-----------------------------------|
| தथा | அப்படியே |
| शलुहन्तारः | பகைவர்களை வெல்ல வல்லவர்களாயும் |
| परस्परं | ஒருவருக்கொருவர் |
| अनुवताः | அன்புமாறாதவர்க ளாயும் |

| | |
|--------------|-------------------------------------|
| प्रभविष्यवः | மிஞ்சாத பராக்ரமமு டையவர்களாகவும் |
| चिरजीदिनः एव | சீரஞ்சிவிகளாயும் |
| भवामः | விளங்கவேண்டும்' |
| इति | என்று |
| ऊचुः | வேண்டிக்கொண் டார்கள். |

एवं भविष्यतीत्युक्त्वा सुकेशतनयान्विभुः । स ययौ ब्रह्मलोकाय ब्रह्मा ब्राह्मणवत्सलः ॥

| | |
|----------------|---|
| ब्राह्मणवत्सलः | “பிரம்ஹத்தை உள்ள படி அறிந்தவர்களி டத்தில் வா தஸ்ய முடையவரும் |
| विभुः | சாக்ஷதருமான |
| सः | அந்த |
| ब्रह्मा | பிரம்ஹதேவர் |

| | |
|-------------|--------------------|
| सुकेशतनयान् | சுகேசனது புதல்வர் |
| एवं | ‘அப்படியே [கருக்கு |
| भविष्यति | ஆகட்டும்’ |
| इति | என்று |
| उचवा | பதில்கூறி |
| ब्रह्मलोकाय | பிரம்ஹலோகத்திற்கு |
| ययौ | போய்ச்சேர்ந்தார். |

वरं लब्ध्वा तु ते सर्वे राम रात्रिञ्चरास्तदा । सुरासुरान्प्रबाधन्ते वरदानसुनिर्भयाः ॥

| | |
|------------|-------------|
| राम | “ஸ்ரீராம, |
| ते | அந்த |
| राक्षिःराः | நிசாசரர்கள் |
| सर्वे | அனைவரும் |
| वं | வாததை |
| लब्ध्वा | அடைந்து |
| तदा | அப்பொழுது |

| | |
|-----------------|---|
| वरदानसुनिर्भयाः | { வரம்பெற்றதால் எவ ரிடத்தும் அச்சமொ ழிந்தவர்களாய் |
| सुरासुरान् तु | தேவர்களையும் |
| | அசுரர்களையும் கூட |
| प्रबाधन्ते | மிக்கஉபத்திரவீத் தார்கள். |

तैर्विध्यमानास्त्रिदशाः सर्पिसङ्घाः सचारणाः । त्रातारं नाधिगच्छन्ति निरयस्था यथा नराः ॥

| | |
|-------------|--|
| सचारणाः | “சாரணர்களோடு கூடினவர்களும் |
| सर्पिसङ्घाः | { ரிஷிக்கூட்டங்களோ டுகூடினவர்களு மான |
| त्रिदशाः | தேவர்கள் |
| तैः | அவர்களால் |

| | |
|---------------|--------------------------|
| विध्यमानाः | வதைபுண்டவர்க ளாய் |
| निरयस्थाः | நரகத்திலிருக்கிற |
| नराः यथा | ஜனங்கள் போல் |
| वातारं | கைகொடுத்துக்காப் பவரை |
| न अधिगच्छन्ति | காணாதிருந்தார்கள். |

अथ ते विश्वकर्माणं शिल्पिनां वरमव्ययम् । ऊचुः समेत्य संहृष्टा राक्षसा रघुसत्तम ॥

| | |
|-------------|---|
| रघुसत्तम | “ரகுத்தமரே, ஸுமானமானவர்க ளும், மேலானவர்க ளும், இல்லாமலிரு க்கவேண்டுமென்ற ஆசையால் உத்ஸா ஹங்கொண்ட |
| संहृष्टाः | அந்த அரக்கர்கள் |
| ते राक्षसाः | |

| | |
|--------------|------------------|
| ऊचुः समेत्य | ஒன்றுகூடி |
| अव्ययं | சாக்ஷதமானவனும் |
| शिल्पिनां | சில்பிகளில் |
| वरं | சிறந்தவனுமான |
| विश्वकर्माणं | விசுவகருமாவை |
| अथ | இப்படி [விளித்து |
| ऊचुः | விதித்தார்கள்; |

गृहकर्ता भवानेव देवानां हृदयेऽस्मितम्

भवान् एव

“நீயே

देवानां

தேவர்களுக்கு

॥ १८ ॥

हृदयोऽस्मितं
गृहकर्ता

அவரவர் விரும்பியவாறு
மாளிகைகள் விருமிக்
கும் சில்பி.

अस्माकमपि तावच्चं गृहं कुरु महामते । हिमवन्तमपाश्रित्य मेरुं मन्दरमेव वा ॥

महेश्वरगृहप्रख्यं गृहं नः क्रियतां महत्

महामते

“ஸகூழ்மடபுத்தியு
டையோனே,

तावत्

ஆதலின்

इहं

நீ

अस्माकं अपि

எங்களுக்கும்

गृहं

மாளிகை ஒன்றை

कुरु

நிருமி.

हिमवन्तं

இமயமலையையோ

मेरुं

மேருமலையையோ

॥ १९ ॥

मन्दरं एव वा

மந்தரமலையையோ

अपाश्रित्य

அவலம்பித்து

महत्

மஹத்தானதும்

महेश्वरगृहप्रख्यं

{ மதேவர்ச்வரனது
மாளிகைக்கொப்பா
னதுமாகிய

गृहं

ஒரு மாளிகையை

नः

எங்களுக்கு

क्रियताम्

சிருஷ்டிக்கவேண்டும்.

विश्वकर्मा ततस्तेषां राक्षसानां महाभुजः ।

ततः

“அப்பொழுது

महाभुजः

கைத்திறமுடையவ

னான

विश्वकर्मां

விச்வகர்மா

तेषां

அந்த

राक्षसानां

ராக்ஷஸர்களுக்கு

निवासं कथयामास शक्रस्त्वामरावतीम् ॥

शक्रस्य

இந்திரனுடைய

अमरावतीं

அமராவதியை

इव

போன்ற

निवासं

வாஸஸ்தானமொன்

றை

कथयामास

கூறினான்.

दक्षिणस्योदधेस्तीरे त्रिकूटो नाम पर्वतः । सुवेल इति चाप्यन्यो द्वितीयस्तत्र सत्तमाः ॥

सत्तमाः

“நல்லோர்களே!

दक्षिणस्य

தெற்கு

उदधेः

கடலின்

तीरे

கரையில்

दिकूटः

தீரிக்கூடம்

नाम

என்ற

पर्वतः

பர்வதமுளது.

अपि च

இன்னும்

तत्र

அங்கேயே

अन्यः

மற்றொரு

द्वितीयः

அயலிவிருக்கிறது

மான

सुवेलः इति

ஸுவேலமென்கிற

பர்வதமுளது.

शिवरे तस्य शैलस्य मध्यमेऽम्बुदसन्निभे । शकुनैरपि दुष्प्रापे ढङ्कच्छिन्नचतुर्दिशि ॥

त्रिशद्योजनविस्तीर्णा शतयोजनामायता । स्वर्णप्राकारसंवीता हेमतोरणसंवृता ॥

मया लङ्केति नगरी शक्राज्ञप्तेन निर्मिता

तस्य

“அந்த

शैलस्य

மலையின்

मध्यमे

நடு,

॥ २३ ॥

अम्बुदसन्निभे

மேகமண்டலத்திற்

கொப்பானதும்

शकुनैः अपि

பக்திகளாலும்

| | |
|--------------------------|--|
| துஷாபே | உட்புகுதற்கரியது மான |
| டக்ஷிண- } சகுர்திசி } | நான்கு புறங்களும் உளிகளால் செதுக் கப்பட்டு வழவழப் பாயிருக்கிற துமான |
| சிவரே | சுகரத்தல் |
| தி் சத்யோஜனவிரதீயா | முப்பது யோஜனை அகலமுள்ள தும் |
| சதயோஜனம் ஶயதா | தூறு யோஜனை நீள முள்ள தும் |
| ஸ்வரீபாகாரஸ்வீதா | பொன்மயமான மதில் களால் சூழப்பெற்ற தும் |

तस्यां वसत दुर्धर्षा यूयं राक्षसपुङ्गवाः

| | |
|----------------|---------------------------|
| राक्षसपुङ्गवाः | “ராசுஷஸ்ச்ரேஷ்டர் களே! |
| तस्यां | அதில் |
| यूयं | நீங்கள் |

सेन्द्रा दिवौकस इव समासाद्यामरावतीम् ।
भविष्यथ दुराधर्षाः शत्रूणां शत्रुसूदनाः

| | |
|-------------|----------------------------------|
| सेन्द्राः | “இந்திரனுள் ளிட்ட தேவர்கள் |
| दिवौकसः | அமராவதியை |
| भमरावतीं | அடைந்திருத்தல் |
| समासाद्य | எவ்வண்ணமோ, அவ் வண்ணமே |
| इव | இலங்காபுரியாகிறதூர் க்கத்தில் |
| लङ्कादुर्गं | புகுந்து |
| सपासाद्य | |

विश्वकर्मवचः श्रुत्वा ततस्ते राक्षसोत्तमाः ।

| | |
|---------------|---------------------------|
| ते | “அந்த |
| राक्षसोत्तमाः | இராக்கதத்தலைவர்கள் |
| विश्वकर्मवचः | விசுவகர்மா உரை செய்ததை |
| श्रुत्वा | கேட்டு |
| ततः | அதினால் |

| | |
|----------------|--|
| हेमतोरणसंवृतता | { பொன்தோரணவாயி ல்களால் அலங்காரிக் கப்பட்டதுமான |
| लङ्का | இலங்கை |
| इति | என்ற |
| नगरी | ஒரு பட்டணம் |
| शक्राज्ञसेन | இந்திரனது கட்டளை யைப்பெற்ற |
| मया | என்னால் |
| निर्मिता | சிருஷ்டிக்கப்பட்டிருக் கிறது. |

॥ २४ ॥

| | |
|------------|--|
| दुर्धर्षाः | { பிறரால் அணுகப்படு வதுகூட அசாத்திய மாய் |
| वसत | வளியுங்கள். |

लङ्कादुर्गं समासाद्य राक्षसैर्वहुभिर्दृताः ॥

॥ २५ ॥

| | |
|-------------|------------------------------|
| शत्रूणां | சத்துருக்களுக்கு |
| दुराधर्षाः | அணுகுதல்கூட அசா த்தியமாய் |
| बहुभिः | அனேக |
| राक्षसैः | அரக்கர்களால் |
| वृताः | சூழப்பட்டவர்களாய் |
| शत्रुसूदनाः | சத்துருநாசகர்களாய் |
| भविष्यथ | இருங்கள். |

सहस्रानुचरा भूत्वा गत्वा तामवसन्पुरीम् ॥

| | |
|--------------|---|
| सहस्रानुचराः | { எண்ணிறந்தபரிவார ங்களையுடையவர்க ளாய் |
| भूत्वा | ஆகி |
| तां पुरीं | அப்புரியில் |
| गत्वा | புகுந்து |
| अवसन् | வளிக்கலாயினர். |

दृष्टाकारपरिखां हैमैर्गृहशतैर्युताम् । लङ्कामवाप्य ते हृष्टा न्यवसन्नजनीचराः ॥ २७ ॥

| | | | |
|--------------------------|---|---------|---------------------|
| ते रजनीचराः | “அந்த அரக்கர்கள் | लङ्कां | இலங்கையை |
| हैमैः | ஸ்வாந்ணமயமான | अवाप्य | அடைந்து |
| गृहशतैः | பலமாஸிகைகளால் | हृष्टाः | மிக்கமகிழ்ச்சிகொண் |
| युतां | நிறையப்பெற்றதும் | | டவர்களாய் |
| दृष्टाकार- } परिखां } | வலுவான மதில்களை யும், ஆழமான அக ழிகளை யுமுடையது மான | न्यवसन् | வாழ்ந்துவந்தார்கள். |

एतस्मिन्नेव काले तु यथाकामं च राघव । नर्मदा नाम गन्धर्वी बभूव रघुनन्दन ॥ २८ ॥

| | | | |
|------------|--|------------------|----------------------|
| राघव | “ஒராகவ! | एतस्मिन् काले एव | இதேகாலத்திலேயே, |
| रघुनन्दन | ஒராகுந்தனரே, | नर्मदा | நர்மதை |
| यथाकामं तु | { அவர்களுடைய மனோ பிஷ்டமெல்லாம் சம் பவமாகிய | नाम | என்கிற |
| | | गन्धर्वी च | கந்தர்வஸ்தரீ ஒருத்தி |
| | | बभूव | இருந்தனள். |

तस्याः कन्यात्रयं ह्यासीद्द्रीश्रीकीर्तिसमद्युति ॥ २९ ॥

| | | | |
|------------------------------------|--|------------|-------------------|
| तस्याः | “இவளுக்கு | कन्यात्रयं | மூன்று கன்னிகைகள் |
| श्रीश्रीकीर्ति- } समद्युति हि } | தையலகூழ்மி தன லகூழ்மி, கீர்த்தி லகூழ்மி இவர்களுக்கு நிகராய் விளங்கும் | आसीत् | இருந்தனர். |

ज्येष्ठक्रमेण सा तेषां राक्षसानामराक्षसी । कन्यास्ताः प्रददौ हृष्टा पूर्णचन्द्रनिभाननाः ॥
त्रयाणां राक्षसेन्द्राणां तिस्रो गन्धर्वकन्यकाः ॥ ३० ॥

| | | | |
|------------------------------|---|------------------|-----------------------------------|
| भराक्षसी | “ராக்கூஸஜாதியில் பிறவாத | कन्याः | கன்னிகைகளை |
| सा | அவள் | राक्षसेन्द्राणां | இராக்கூஸத்தலைவர் களான |
| हृष्टा | மனபொப்பியவளாய் | तेषां | அந்த |
| पूर्णचन्द्र- } निभाननाः } | முழுமதிக்கொப்பான முகமண்டலமுடை யோர்களும் | त्रयाणां | மூன்று |
| गन्धर्वकन्यकाः | கந்தர்வஜாதிப் பெண் களுமான | राक्षसानां | அரக்கர்களுக்கு |
| ताः | அந்த | ज्येष्ठक्रमेण | முறையே முத்தவ னுக்கு முத்தவளென |
| तिस्रः | மூன்று | प्रददौ | கன்னிகாதானம் செய்துகொடுத்தனள். |

दत्ता मात्रा महाभागा नक्षत्रे भगदैवते

॥ ३१ ॥

महाभागा: "महोपासक्यवति
भगदैवते உத்திரபல்குணி [கள்
नक्षत्रे நகூத்திரத்தில்

मात्रा தாயினால்
दत्ता: மணம்புரிந்துகொடுக்
கப்பட்டார்கள்.

कृतदारास्तु ते राम सुकेशतनयास्तदा । चिक्रीडुः सह भार्याभिरप्सरोभिरिवामराः ॥

राम "श्रीराम!
ते அந்த
सुकेशतनया: तु சுகேசனுடைய தனயர்
கரும்
तदा அப்பொழுது
कृतदारा: மணம்புரிந்துகொண்
டவர்களாய்
अमरा: தேவர்கள்

अप्सरोभि: அப்ஸரஸுகளுடன்
इव எப்படியோ அப்படி
யே
भार्याभि: வாழ்க்கைத்துணவி
களுடன்
सह கூட
चिक्रीडु: ஆனந்தமாய் வாழ்ந்து
வந்தார்கள்.

ततो माल्यवतो भार्या सुन्दरी नाम सुन्दरी ॥ ३३ ॥

तत: "अप्यप्यप्य
माल्यवत: மால்யவானுக்கு
भार्या மணியாட்டி

सुन्दरी ரூபவதி.
सुन्दरी ஸுந்தரி
नाम எண்பெயர் பூண்ட
வள்.

स तस्यां जनयामास यदपत्यं निबोध तत् ॥ ३४ ॥

स: 'अवन्
तस्यां அவளிடத்தில்
यत् अपत्यं எந்தசந்தானத்தை

जनायामास பெற்றானே
तत् அதை
निबोध உற்றுக்கொளும்.

वज्रमुष्टिर्विरूपाक्षो दुर्मुखश्चैव राक्षसः । सुसप्तो यज्ञकोपश्च मत्तोन्मत्तौ तथैव च ॥

अनला चाभवत्कन्या सुन्दर्या राम सुन्दरी ॥ ३५ ॥

तथा एव च "अवर्कन्यावरो
निल
वज्रमुष्टि: வஜ்ரமுஷ்டி
विरूपाक्ष: வீரூபாகூன்
दुर्मुख: துர்முகனென்ற
राक्षस: அரக்கன்
सुसप्त: ஸுப்தகன்ன
यज्ञकोर: யக்னகோபன்

मत्तोन्मत्तौ மத்தன், உன்மத்தன்
என்பவர்களாம்.
सुन्दर्या च एव ஸுந்தரியினிடத்தி
லேயே
सुन्दरी சிறந்தனெளந்தர்ய
முடயவளென
अनला அனலைன்ற
कन्या च ஓரூபத்திரியும்
अभवत् உத்பலித்தனள்.

सुमालिनोऽपि भार्याऽऽसीत्पूर्णचन्द्रनिभानना । नाम्ना केतुमती नाम प्राणेभ्योऽपि गरीयसी ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------|---------------------------|--|
| सुमालिनः | “ஸுமா லியின் | पूर्णचन्द्रनिभानना अपि | } முழுமதிக்கொப்பான முகமண்டலமுடைய வளாயும் |
| भार्या | பாரியையான | | |
| नाम्ना | பெயரால் | प्राणेभ्यः | பிராணனிலும் |
| केतुमती नाम | கேதுமதி என்றழைக்கப்பட்டவள், | गरीयसी अपि | பிரியமானவளாயும் |
| | | आसीत् | இருந்தாள். |

सुमाली जनयामास यदपत्यं निशाचरः । केतुमत्यां महाराज तन्निबोधानुपूर्वशः ॥३७॥

| | | | |
|------------|--------------------|------------|--------------|
| महाराज | “ஹே மஹாராஜ! | जनयामास | பெற்றோலை |
| सुमाली | ஸுமாலியென்ற | तत् | அதை |
| निशाचरः | அரக்கன் | अनुपूर्वशः | முறையே |
| केतुमत्यां | கேதுமதியினிடத்தில் | निबोध | கூறுகின்றேன் |
| यत् अपत्यं | எந்த ஸந்தானத்தை | | கேளும். |

प्रहस्तोऽकम्पनश्चैव विकटः कालकार्मुकः । धूम्राक्षश्चैव दण्डश्च सुपार्श्वश्च महाबलः ॥३८॥
संह्रादिः प्रघसश्चैव भासकर्णश्च राक्षसः । राका पुष्पोत्कटा चैव कैकसी च शुचिस्मिता ॥
कुम्भीनसी च इत्येते सुमालेः प्रसवाः स्मृताः ॥ ४० ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------------|---------------|----------------------|
| सुमालेः | “ஸுமா லியின் | दण्डः एव | தண்டன் |
| प्रसवाः इति | குமாரர்கள், குமாரி களென | सुपार्श्वः च | சுபார்ச்வன் |
| स्मृताः | ஒப்புக்கொள்ளப்பட்ட டவர்கள் | संह्रादिः एव | ஸஹ்ராதீ |
| एते च | இவர்களே. | प्रघसः च | பிரகஸன் |
| प्रहस्तः | பிரஹஸ்தன் | राक्षसः | துஷ்டஸ்வபாவ முடைய |
| अकम्पनः च | அகம்பனன் | भासकर्णः च | பாஸகர்ணன் |
| विकटः च | விகடன் | राका एव | ராகை |
| कालकार्मुकः च | காலகார்முகன் | पुष्पोत्कटा च | புஷ்போத்கடைய |
| महाबलः | மஹாபலிஷ்டனான | शुचिस्मिता | நகைமுகமுடைய |
| धूम्राक्षः | தூம்ராக்ஷன் | कैकसी एव | கைகலீ [வளான |
| | | कुम्भीनसी च | கும்பீனலீ. |

मालेस्तु वसुधा नाम गन्धर्वी रूपशालिनी । भार्याऽऽसीत्पद्मपत्राक्षी स्वक्षी यक्षीवरोपमा ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------|---------------|---|
| मालेः | “மாலியினது | पद्मपत्राक्षी | } தாமரையிதழ் போன்ற கண்களை யுடையவளாய் |
| भार्या तु | மனையாட்டியே | | |
| वसुधा | வஸுதை | स्वक्षी | } ஸூக்ஷ்மபுத்தியுடையவள். |
| नाम | என்பெயர் பூண்டவள். | | |
| गन्धर्वी | தெய்வபத்தியுள்ள பெண். | यक्षीवरोपमा | } குபேரனது பரிவார மகளிர்களின் யஜ மாட்டிக்கு நிகராய் விளங்கினாள். |
| रूपशालिनी | வடிவழகி. | | |
| | | आसीत् | |

सुमालेरनुजस्तस्यां जनयाप्रास यत्प्रभो । अपत्यं कथ्यमानं तु मया त्वं शृणु राघव ॥

| | | | |
|--|---------------------------------|----------------|---|
| प्रभो | “ பிராபுவே! | मया | என்னால் |
| राघव | ஸ்ரீராகவா! | तु | இப்பொழுது |
| सुमाले: | ஸுமாலியினது | कथ्यमानं | } விவரித்துச் சொல்லப் படுகிறதமாகிய அதற்கு |
| अनुज: | தம்பி | | |
| तस्यां | அவளிடத்தில் | | |
| यत् अपत्यं | எந்த ஸந்தானத்தை | त्वं | தேவரீர் |
| जनयामास | பெற்றானே, | शृणु | செவிசாற்றும். |
| अनिलश्चानलश्चैव हरः सम्पातिरेव च । एते विभीषणामात्या मालेयास्तु निशाचराः ॥ | | | |
| मालेयाः च | “ மாலிக்குப்பிறந்த வர்களாகிய | संपातिः च | ஸம்பாதி என்பவனு |
| अनिलः एव | அனிலனைப்பவனும் | एते | இந்த [மாகிய |
| अनलः च | அனலனைப்பவனும் | निशाचराः तु | அரக்கர்கள் தான் |
| हरः एव | ஹரனைப்பவனும் | विभीषणामात्याः | விபிஷணருடைய அமைச்சர்கள். |

तस्तु ते राक्षसपुङ्गवास्त्रयो निशाचरैः पुत्रशतैश्च संवृताः ।

सुरान्सहेन्द्रानृषिनागयक्षान्ववाधिरे तान्वलवीर्यदर्पिताः ॥ ४४ ॥

जगद्भ्रमन्तोऽनिलवदुरासदा रणेषु मृत्युप्रतिमाः समाहिताः ।

वरप्रदानादतिगर्विता भृशं क्रतुक्रियाणां प्रशमङ्कराः सदा ॥ ४५ ॥

| | | | |
|----------------|------------------------------|-----------------|--|
| ततः | “ அப்பொழுது | ऋतुक्रियाणां | யாகங்களுக்கு |
| ते | அந்த | सदा | எப்பொழுதும் |
| राक्षसपुङ्गवाः | ராக்ஷஸத்தலைவர்கள் | भृशं | பெரும் |
| वयः तु | மூவரும் | प्रशमङ्कराः | தீங்கு விளைவிப்பவர்கள் |
| अनिलवत् | வாயுபோல் | | களாய் |
| जगत् | ஜகமெங்கும் | निशाचरैः | அரக்கர்களுடனும் |
| भ्रमन्तः | திரிபவராய் | पुत्रशतैः | பலகுமாரர்களுடனும் |
| दुरासदाः | அணுகமுடியாதவ ராய் | संवृताः | கூடியிருப்பவர்களாய் |
| रणेषु | யுத்தங்களில் | बलवीर्यदर्पिताः | } பலத்தாலும் வீர்யத் தாலும் செருக்குற்ற வர்களாய் |
| मृत्युप्रतिमाः | யமனுக்கொப்பான | | |
| समाहिताः | விருத்தியுடையவர் களாய் | सहेन्द्रान् | இந்திரனுள்ளிட்ட |
| वरप्रदानान् | வரங்களைப்பெற்ற தால் | तान् | இந்த |
| अतिगर्विताः | அஹங்காரமதிகரித்த வர்களாய் | सुरान् | தேவர்களையும் |
| | | ऋषिनागयक्षान् च | ரிஷிகளையும் நாகர்களை யும் யக்ஷர்களையும் |
| | | बवाधिरे | உபதரவித்துவந்தார் கள். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे पञ्चमः सर्गः ॥

षष्ठः सर्गः—ஆறுவது ஸர்க்கம் || 6 ||

विष्णुमाल्यवदादियुद्धम्—விஷ்ணுவக்கும் மால்யவான் முதலியவர்க்கும் நடந்த யுத்தம்.

तैर्विध्यमाना देवाश्च ऋषयश्च तपोधनाः । भयार्ताः शरणं जग्मुर्देवदेवं महेश्वरम् ॥ १ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|----------|-----------------|
| तैः | “அவர்களால் | भयार्ताः | பாதையை ஸஹிக்க |
| वध्यमानाः | துன்புறுத்தப்பட்ட | देवदेव | மாட்டாதவர்களாய் |
| देवाः च | தேவர்களும் | | தேவர்களுக்கும் |
| तपोधनाः | தபோதனர்களான | महेश्वरं | தேவராகிய |
| ऋषयः च | முனிவர்களும் | शरणं | மஹேசுவரரை |
| | | जग्मुः | சரணமாக |
| | | | அண்டினார்கள். |

ते समेत्य तु कामारिं त्रिपुरारिं त्रिलोचनम् । उचुः प्राञ्जलयो देवा भयगद्दभाषिणः ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|--------------|-----------------------|
| ते | “அந்த | प्राञ्जलयः | கைகூப்பிக்கொண்டு |
| देवाः | தேவர்கள் | | பயத்தால் தட்டித்தட்டு |
| समेत्य | ஒன்றுகூடி | भयगद्दभाषिणः | மாறுகின்ற குரலு |
| कामारिं | மன்மதனைஜயித்த | | டனே |
| | வரும் | तु | இப்படி |
| त्रिपुरारिं | திருபுராந்தகருமான | उचुः | விண்ணப்பஞ்செய் |
| विलोचनं | முக்கண்ணரைப் | | தார்கள். |
| | பார்த்து | | |

सुकेशपुत्रैर्भगवन्पितामहवरोद्धतैः । प्रजाध्यक्ष प्रजाः सर्वा बाध्यन्ते रिपुबाधनैः ॥ ३ ॥

| | | | |
|-----------------|----------------------|--------------|----------------------|
| प्रजाध्यक्ष | “பிராஜைகளின் அத்தி | रिपुबाधनैः | { சத்ருக்களில்லாதபடி |
| भगवन् | ஸ்வாமி! [பகூராகிய | | செய்வதில் ஆதார |
| प्रजाः | பிராணிகள் | | களாயிருக்கும் |
| सर्वाः | எல்லாமும் | सुकेशपुत्रैः | ஸுகேசனது |
| | | | புத்திரர்களால் |
| पितामहवरोद्धतैः | { பிரமதேவரிடமிருந்து | बाध्यन्ते | துன்புறுத்தப் |
| | பெற்ற வரங்களினால் | | படுகின்றார்கள். |
| | கர்வமதிகரித்தவர | | |
| | களாய் | | |

शरण्यान्यशरण्यानि ह्याश्रमाणि कृतानि नः । स्वर्गाच्च देवान्प्रच्याव्य स्वर्गे क्रीडन्ति देववत्॥

| | | | |
|-----------|-------------------|------------|--------------------|
| नः | “எங்களது | स्वर्गात् | சுவர்க்கத்தினின்று |
| शरण्यानि | இருப்பிடங்களான | प्रच्याव्य | அடித்துத்தரத்தி |
| आश्रमाणि | ஆசிரமங்கள் | | விட்டு |
| अशरण्यानि | குடியிருக்க யோக்ய | स्वर्गे हि | சுவர்க்கலோகத்திலே |
| | மற்றவைகளாக | देववत् | தேவர்களென [யும் |
| कृतानि | அழிக்கப்பட்டன. | क्रीडन्ति | ஆனந்தமாய் வாழ் |
| देवान् च | தேவர்களையும் | | கின்றனர். |

अहं विष्णुरहं रुद्रो ब्रह्माहं देवराढहम् । अहं यमश्च वरुणश्चन्द्रोऽहं रविरप्यहम् ॥ ५ ॥
 इति ते राक्षसा देवान् वरदानेन दर्पिताः । बाधन्ते समरोद्धर्षा ये च तेषां पुरस्सराः ॥

| | | | |
|---------------------------------|---|-----------------------------|---|
| वरदानेन दर्पिता: | “வரங்கள் பெற்றதால் செருக்குற்றவர் களாய் | ब्रह्मा अहं देवराट् | பிரம்ஹ்னும் நானே ; தேவேந்திரனும் |
| समरोद्धर्षा: | போர்புரியப் போராவல் கொண்டவர்களான | अहं यमः अहं | நானே ; யமனும் நானே ; |
| ते तेषां | அவர்களும் அவர்களுக்கு | वरुणः चन्द्रः अपि अहं | வருணனும் சந்திரனும் நானே ; |
| पुरस्सरा: | முன்னணியாகச் செல் | रविः च अहं | ஸூரியனும் நானே |
| राक्षसाः ये च | அரக்கர்கள் [லும் எவர்களோ அவர்களும் | इति देवान् बाधन्ते | என்றுகொண்டு தேவர்களை உடத்திரவப்படுத்து கின்றனர். |
| विष्णुः अहं रुद्रः अहं | விஷ்ணுவும் நானே ; ருத்திரனும் நானே ; | | |

तन्नो देव भयार्तानामभयं दातुमर्हसि । अशिवं वपुरास्थाय जहि वै देवकण्टकान् ॥ ७ ॥

| | | | |
|--|---|--|---|
| तत् देव भयार्तानां नः अभयं | “ஆதலால் ஹே தேவ! பயத்தால் மெய்மறந்தி எங்களுக்கு [ருக்கும் எவராலும் பயமின் மை என்ற நம்பிக் கையை | दातुं अहंति अशिवं वपुः आस्थाय देवकण्टकान् जहि वै | வினா விக்க அருள்புரியவேண்டும். குரூரமான ரூபத்தை தரித்து தேவசத்துருக்களை வதஞ்செய்யவேண்டும்.’ |
|--|---|--|---|

इत्युक्तस्तु सुरैः सर्वैः कपर्दी नीललोहितः । सुकेशं प्रति सापेक्षः प्राह देवगणान्प्रभुः ॥

| | | | |
|---|--|--|---|
| सर्वैः सुरैः इति उक्तः प्रभुः कपर्दी | “எல்லா தேவர்களாலும் மேற்கண்டவாறு உரைசெய்யப்பட்ட தற்குச்செவிசாய்த்த பிரபுவும் சடைப்பின்னலுடைய வருமாகிய | नीललोहितः देव।गान् सुकेशं प्रति सापेक्षः तु प्राह | சிவபெருமான் தேவகணங்களைப் பார்த்து ஸுகேசனிடத்தில் தாக்கீண்யமுடையவ ராதலால் இப்படி பதிலளித்தார் ; |
|---|--|--|---|

अहं तान्न हनिष्यामि मयाऽवध्या हि तेऽसुराः ।
किंतु मन्त्रं प्रदास्यामि यो वै तान्निहनिष्यति

॥ ९ ॥

अहं " 'நான்
तान् அவர்களே
न हनिष्यामि வதைக்கமாட்டேன்.
हि ஏனென்றால்
ते அந்த
असुराः அஸுரர்கள்
मया என்னால்

अवध्या: கொல்லத்தகா
किं तु ஆயினும் [தவர்கள்.
यः எவர்
तान् அவர்களை
निहनिष्यति वै கொல்லுவாரோ,
அதற்குவேண்டிய
मन्त्रं உபாயத்தை
प्रदास्यामि உபதேசிக்கிறேன்.

युयमिन्द्रं महाभागं पुरस्कृत्य सुरर्षयः । गच्छध्वं शरणं विष्णुं हनिष्यति स तान्भुः ॥

सुरर्षयः " 'தேவரிஷிகளாள்,
यूयं நீங்கள்
महाभागं மஹாபாக்கியவா
इन्द्रं இந் திரளை [னாகிய
पुरस्कृत्य முன்னிட்டிடுக்கொண்டு
विष्णुं ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணுவை

शरणं சரணமாக
गच्छध्वं அடையுங்கள்.
सः அந்த
प्रभुः பிரபு
तान् அவர்களை
हनिष्यति ஸம்ஹரிப்பார்.'

ततस्तु जयशब्देन प्रतिनन्द्य महेश्वरम् । विष्णोः समीपमाजगमुर्निशाचरभयार्दिताः ॥

निशाचर- } " அரக்கர்களிடம்
भयार्दिताः } அஞ்சிநடுங்கிய
அவர்கள்
तु இப்பொழுது
महेश्वरं பாமேசுவரரை
जयशब्देन 'ஜயவிஜய்பவ' என்று

प्रतिनन्द्य வாழ்த்தி
ततः அதன்மேல்
विष्णोः ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணு
வினது
समीपं ஸந்நிதானத்திற்கு
आजगमुः போய்ச்சேர்ந்தார்கள்.

शङ्खचक्रधरं देवं प्रणम्य बहुमान्य च । ऊचुः संभ्रान्तवद्वाक्यं सुकेशतनयान्प्रति ॥ १२ ॥

शङ्खचक्रधरं "சங்கசக்கரதாரியாகிய
देवं தேவரை
प्रणम्य அடிபணிந்து
च பின்னர்
बहुमान्य போற்றி

सम्भ्रान्तवत् நடுங்கி
सुकेशतनयान् சுகேசனது தனயர்
प्रति பற்றிய [களை
वाक्यं பேச்சை
ऊचुः கூறினார்கள்.

सुकेशतनयैर्देवं त्रिभिस्त्रेताग्निसन्निभैः । आक्रम्य वरदानेन स्थानान्यपहृतानि नः ॥ १३ ॥

देवं " 'ஆண்டவனே!
नः எங்களது
स्थानानि இருப்பிடங்கள்
वरदानेन வரம் பெற்றதால்
सुकेशतनयैः சுகேசனது தனயர்

वेताग्निभिः த்ரேதாக்கனிகளுக்கு
சமாளர்களுமான
त्रिभिः மூவர்களால்
आक्रम्य பலாத்கரித்து
अपहृतानि அபஹரிக்கப்

களும்

பட்டன.

लङ्का नाम पुरी दुर्गा त्रिकूटशिखरे स्थिता । तत्र स्थिताः प्रवाधन्ते सर्वात्रः क्षणदाचराः॥

| | |
|--------------------------------|--|
| त्रिकूटशिखरे दुर्गा | “ த்ரிகூடசிஶர த்தில் சத்ருக்கள் றெருங்க முடியரததான |
| लङ्का नाम पुरी स्थिता | இலங்கை என்ற புரி இருக்கிறது. |

| | |
|---|---|
| क्षणदाचराः तत्र स्थिताः नः सर्वात्र प्रवाधन्ते | அரக்கர்கள் அதில் வாஸஞ்செய்பவர் எங்கள் [களாய் எல்லோரையும் அதிகமாய் உபத்திர வப்படுத்துகின்றனர். |
|---|---|

स त्वमस्मद्धिताथीय जहि तान्मधुसूदन । शरणं त्वां वयं प्राप्ता गतिर्भव सुरेश्वर ॥१५॥

| | |
|--|---|
| सुरेश्वर त्वां वयं शरणं प्राप्ताः मधुसूदन सः | “ எல்லா தேவர் களுக்கும் தேவரே! தங்களை நாங்கள் சரணமாய் அடைந்தோம். ஓ மதுசூதன! அப்படிப்பட்ட |
|--|---|

| | |
|---|--|
| एवं अस्मद्धिताथीय तान् जहि गतिः भव | தங்கள் எங்களுடைய சேஷமத்திற்காக அவர்களை ஸம்ஹரியும். அடைக்கலம் ஆகுக. |
|---|--|

चक्रकृत्तास्यकमलान्विवेदय यमाय वै । भयेष्वभयदोऽस्माकं नान्योऽस्ति भवता विना ॥
राक्षसान्समरे दुष्टान्सानुबन्धान्मदोद्धतान् । नुद त्वं नो भयं देव नीहारमिव भास्करः ॥

| | |
|--|---|
| अस्माकं भयेषु अभयदः भवता विना अन्यः न अस्ति वै मदोद्धतान् दुष्टान् राक्षसान् सानुबन्धान् समरे | “எங்களுக்கு ஆபத்துநேரும் காலங்களில் அபயமளித்துக் காப் பவர் தேவரீரை ஒழிய வேறெருவர் இல்லையே. மதங்கொண்டு செருக்குற்ற துஷ்டர்களான ராக்ஷஸர்களை பரிவாரங்களுடன் கூடினவர்களாய் யுத்தத்தில் |
|--|---|

| | |
|---|---|
| चक्रकृत्तास्य- कमलान् यमाय विवेदय देव एवं भास्करः नीहारं इव नः भयं नुद | } சக்ராயுத்தினால் அ றுப்புண்ட முகங்க ளையும், நுரையீரல் களையுமுடையவர் களாய் யமனுக்கு விருந்தளிக்க, ஆண்டவரே! தேவரீர் பகலவன் பனியை எப்படியோ அப்படி யே எங்களது ஆபத்தை ஒழித்தருள்க. |
|---|---|

इत्येवं दैवतैरुक्तो देवदेवो जनार्दनः । अभयं भयदोऽरीणां दत्त्वा देवानुवाच ह ॥ १८ ॥

| | | | |
|---------|---|-----------|---------------------|
| दैवतैः | “தேவர்களால் | दे-देवः ह | தேவதேவரும் மகிய |
| इति एवं | இவ்வண்ணம் | जनादेः न | ஜனாத்தனன் |
| उक्तः | { விண்ணப்பஞ்செய்யப் பட்டதற்கு செவி சாய்த்தவரும் | अभयं | அஞ்சலென்று அப |
| अरीणां | சத்ருக்களுக்கு | दत्त्वा | அளித்து [யத்தை |
| भयदः | பயகர்த்தாவும் | देवान् | தேவர்களைப் பார்த்து |
| | | उवाच | சொல்லி அருளிணர் : |

सुकेशं राक्षसं जान ईशानवरदपितम् । तांश्वस्य तनयाञ्जाने येषां ज्येष्ठः स माल्यवान् ॥

| | | | |
|-------------|---|-----------|----------------|
| सुकेशं | “ஸுகேசனென்ற | तनयान् | புதர்களாகிய |
| राक्षसं | அரக்களை | येषां | எவர்களுக்கு |
| ईशानवरदपितं | { சிவனாரளித்த வரத் தால் செருக்குற்றி ருப்பவனாய் | सः | அந்த |
| जाने | நான் அறிவேன். | माल्यवान् | மால்யவான் |
| अस्य | இவனுடைய | ज्येष्ठः | மூத்தவனோ, அந்த |
| | | तान् च | அவர்களையும் |
| | | जाने | நான் அறிவேன். |

तानहं समतिक्रान्तमर्यादांनराक्षसाधमान् । निहनिष्यामि संक्रुद्धः सुरा भवत विज्वराः ॥

| | | | |
|----------------------|-----------------------------------|--------------|-----------------------------|
| सुराः | “தேவர்கள் ! | तान् | அந்த |
| अहं | நான் | राक्षसाधमान् | ராக்ஷஸாதமர்களை |
| संक्रुद्धः | கோபத்தை வருவித் துக்கொண்டவனாய் | निहनिष्यामि | அதஞ்செய்துவிடுகின் றேன். |
| समतिक्रान्तमर्यादान् | மட்டு, மரியாதைகளைக் கடந்த | विज्वराः | கவலையொழிந்தவர் |
| | | भवत | இருங்கள். [களாய் |

इत्युक्तास्ते सुराः सर्वे विष्णुना प्रभविष्णुना । यथावासं ययुर्हृष्टाः प्रशंसन्तो जनार्दनम् ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|------------|---------------------|
| प्रभविष्णुना | “எல்லாம் வல்லவரான | सर्वे | அனைவரும் |
| विष्णुना | விஷ்ணுமூர்த்தியால் | हृष्टाः | அகமகிழ்ந்தவர்களாய் |
| इति | இவ்வண்ணம் | जनार्दनं | ஜனாத்தனனை |
| उक्ताः | சொல்லப்பட்டதைக் | प्रशंसन्तः | போற்றிப்புகழ்ந்து |
| ते | அந்த [கேட்ட | यथावाः | அவரவர் இருப்பிடத் |
| सुराः | தேவர்கள் | ययुः | சென்றார்கள். [தற்கு |

विबुधानां समुद्योगं माल्यवांस्तु निशाचरः । श्रुत्वा तौ भ्रातरौ वीराविदं वचनमब्रवीत् ॥

| | | | |
|-------------|----------------|----------|--------------------------|
| विबुधानां | “தேவர்களின் | तौ | அந்த |
| समुद्योगं | பிரயத்தனத்தை | भ्रातरौ | ஸஹோதரர்களைப் பார்த்து |
| माल्यवान् | மால்யவான் என்ற | इदं | பின்வரும் |
| निशाचरः | அரக்கன் | वचनं | வார்த்தையை |
| श्रुत्वा तु | கேட்டதுமே | अब्रवीत् | சொன்னான் : |
| वीरौ | வீரர்களாகிய | | |

அமரா ளுபயயுதீவ ச஑ுமய கில ளு஑ுரமு | அஸ்மதூவ் பரீபஸ்நத இத் வசனமத்ருவந || 23 ||

அமரா: ச "தேவர்களும்
ளுபய: புவ முனிவர்களும்
ச஑ுமய ஒன்றுகூடி
அஸ்மதூவ் நம்மை வதைக்க
பரீபஸ்நத: விருப்பங்கொண்டவர்
களாகி

ளு஑ுர் கி 3 சங்கராவிடத்திலேயே
இத் பின்வரும்
வசனம் வார்த்தையை
அத்ருவந் சொன்னார்கள்.

சுகேசதநயா தேவ வரதானவலோ஑ுதா: | வா஑ந்தேஸ்சாந்ஸமு஑ு஑ுதா ஑ுரரூபா: பதே பதே || 24 ||

தேவ "஑ுேறே தேவ!
஑ுரரூபா: ஑ுேரரரூபங்கொண்ட
சுகேசதநயா: சுகேசனது புத்திரர்
கள்
வரதானவலோ஑ுதா: வரம்பெற்று வீரியம்
திகரித்தவர்களாய்

சமு஑ு஑ுதா: செருக்குற்றவர்களாய்
பதே பதே ஒய்வின்றி
அரந் எங்களை
வா஑ந்தே துன்புறுத்துகின்
றனர்.

ரா஑ுசுரேரபி஑ுதா: சஸ ந ளுக்தா: சஸ ப்ராபதே | சுவேஸு ச஑ுஸு சஸ்யாதும் ஑ுயாசுபாம் ஑ுரா஑ுநாஸு ||

ப்ராபதே "பிரஜாநாதரே!
ரா஑ுசுரே: அரக்கர்களால்
அபி஑ுதா: சஸ ஜயிக்கப்பட்டோம்.
஑ுரா஑ுநாஸு துராத்மாக்களான
சுபாஸு அவர்களது

஑ுய-வ பயத்தால்
சுவேஸு தத்தம்
ச஑ுஸு வீடுகளில்
சஸ்யாதும் வலிக்க
ந ளுக்தா: சஸ முடியாதிருக்கின்
றும்.

ததஸ்சாக் ஑ுதா஑ுய ஜ஑ி தாஸு த்ரிலோசன | ரா஑ுசாந்஑ுக்ருதேவ த஑ு ப்ர஑ுதாஸு வர || 25 ||

த்ரிலோசன "முக்கண்படைத்த
ம஑ுேறசுவர,
ப்ர஑ுதாஸு எரிப்பவர்களில்
வர உத்தமரே,
தத் ஆதலால்
அஸ்சாக் எங்களுடைய

஑ுதா஑ுய ச ஑ுே஑ுமத்திற்காகவே
தாந் அந்த
ரா஑ுசாந் அரக்கர்களை
஑ுக்ருதேந புவ ஑ுறும்காரம் செய்வ
ஜ஑ி ஜயியும்; [தினாலேயே
த஑ு எரியும்.

இத்யேவ் த்ரிதசுரே஑ுதா நிஸும்யாந்஑ுக்ருதந: | ளிர: கரம் ச ஑ுந்வாந இத் வசனமத்ருவந || 26 ||

திதசுரே: "தேவதைகளால்
஑ுதி ப்ர஑ு இவ்வண்ணம்
உக்த: சொல்லப்பட்டதற்கு
செவிசாய்த்த

நிஸுமய விஷயத்தைப்பார்த்து
ளிர: தலையையும்
கரம் ச கையையும்

அந்஑ு- } (1,000 கைகளையும்,
சூதந: } கால்களையும் உடைத்
த) அந்தகனென்ற
அஸுரனைக்கொ
ன்ற, சிவபெருமான்

஑ுந்வாந: அசைத்துக்கொண்டு
இத் பின்வரும்
வசனம் மறுமொழியை
அத்ருவந் சொல்லியருளினார்:

अवध्या मम ते देवाः सुकेशतनया रणे । मन्त्रं तु वः प्रदास्यामि यस्तान्यै निहनिष्यति ॥

देवाः “தேவர்களாள் !
 ते अन्त
 सुकेशतनयाः சுகேசனது புத்திரர்
 रणे போர்க்களத்தில் [கள்
 मम எனக்கு
 अवध्याः கொல்லமுடியாதவர்
 यः எவர் [கள்.

तान् அவர்களை
 निहनिष्यति वै கொன்றுவிடுவரோ
 तु அதற்குவேண்டிய
 मन्त्रं உபாயத்தை
 वः உங்களுக்கு
 प्रदास्यामि உரைசெய்கின்றேன்.

योऽसौ चक्रगदापाणिः पीतवासा जनार्दनः । हरिनारायणः श्रीमान्छरणं तं प्रपद्यथ ॥

यः “எவரோ
 असौ அவரே
 नारायणः ஸ்ரீமந்நாராயணன்;
 जनार्दनः ஜனார்த்தனன்;
 हरिः ஹரி;
 पीतवासाः பிதகவாடைபிரான்;

चक्रगदापाणिः { சக்ரத்தையும் கதை
 श्रीमान् { யையும் கையிலேந்
 तं { தியவன்;
 शरणं { ஸ்ரீலக்ஷ்மீஸமேதன்.
 प्रपद्यथ { அவரை
 { சரணமாக
 { அடையுங்கள்.

हरादवाप्य ते मन्त्रं कामारिमभिवाद्य च । नारायणालयं प्राप्य तस्मै सर्वं न्यवेदयन् ॥

ते “அவர்கள்
 हरात् சிவபெருமானிட
 மிடுத்து
 मन्त्रं உபாயத்தை
 अवाप्य கண்டுகொண்டு
 कामारिं மன்மதார்த்தகளை,
 (சிவனரை)

नारायणालयं प्राप्य तस्मै सर्वं न्यवेदयन् ॥
 अमिवाद्य வணங்கி விடைபெற்று
 नारायणालयं ஸ்ரீமந்நாராயணனது
 ஸநிதானத்திற்கு
 प्राप्य சென்று
 तस्मै அவர்க்கு
 सर्वं च வரலாறுகளைத்
 न्यवेदयन् விண்ணப்பஞ்செய்தனர்.

ततो नारायणेनोक्ता देवा इन्द्रपुरोगमाः । सुरारिंस्तान्हनिष्यामि सुरा भवत विज्वराः ॥

इन्द्रपुरोगमाः “இந்திரா திகளான
 देवाः தேவர்கள்
 नारायणेन நாராயணமூர்த்தியால்
 ततः அதன்மேல்
 उक्ताः இப்படி சொல்லப்
 பட்டார்கள்;
 सुराः ‘தேவர்களே,

सुरारिन् தேவசத்தருக்களான
 तान् அவர்களை
 हनिष्यामि அதஞ்செய்துவிடு
 கிறேன்.
 विज्वराः மனக்கவலையொழித்
 தவர்களாய்
 भवत சுகமாயிருங்கள்.

देवानां भयभीतानां हरिणा राक्षसर्षभौ । प्रतिज्ञातो वधोऽस्माकं चिन्त्यतां यदिह क्षमम् ॥

भयभीतानां “பயத்தால் திகில்கொ
 देवानां தேவர்களுக்கு [ண்ட
 अस्माकं நமது
 वधः வதை
 हरिणा ஸ்ரீஹரியால்
 प्रतिज्ञातः பிரதிக்கூறப்பண்ணப்
 பட்டிருக்கிறது.

इह ஆகலின், இப்பொழு
 क्षमं செய்யத்தகுவது [து
 यत् யாதோ, அது
 राक्षसर्षभौ ராக்ஷஸோத்
 தமர்களே!
 चिन्त्यताम् ஆலோசிக்கப்பட்டும்.

ततः सुमाली माली च श्रुत्वा मादयवती वचः । ऊचुर्भ्रातरं ज्येष्ठं भगान्शिविव वासवम् ॥

சுமாலி "ஸு-மாலியும்
மாலி ச மாலியும்
மாடயவத: மாலியவானின்
வச: வார்த்தையை
சுருவா கேட்டு
தர: அதன்மேல்
ஜ்யேष्ठ ஜ்யேஷ்ட

भ्रातरं பிராநா வைப்பார்ந்து
वासवं தேவநந்தரனிடத்தில்
भगान्शौ அசுவனீ தேவர்கள்,
इव எப்படியோ,
ऊचतु: இப்படி உரைசெய்தார்கள்.

स्वधीतं दत्तमिष्टं तु चैश्वर्यं परिपालितम् । आयुर्निरामयं प्राप्तं सुधर्मः प्रापितः पथि ॥३४॥

स्वधीतं "கற்பன கற்கப்பட்ட
दत्तं வேண்டுவன
ऐश्वर्यं च அடையப்பட்டிருக்
परिपालितं ஐசுவர்யமும் [கிறது.
பாதுகாத்துவைக்கப்பட்டிருக்கிறது.

विरामयं அழியாத
आयुः तु ஆயுளும்
प्राप्तं அடையப்பட்டிருக்
पथि நல்லழியில் [கிறது.
सुधर्मः நல்ல தருமமும்
प्रापितः சேர்த்துவைக்கப்பட்டிருக்கிறது.

देवसागरमक्षोभ्यं शल्लैः समवगाह्य च । जिता द्विषो ह्यप्रतिमास्तन्नो मृत्युकृतं भयम् ॥३५॥

शक्षोभ्यं "எவராலும் கலக்
देवसागरं தேவர்களாகிற
शल्लैः சல்திரங்களைக்
समवगाह्य நன்றாய் முழுக் உட்புகுந்து

अप्रतिमा: நிகரற்ற
द्विषः च சத்துருக்களும்
जिता: வெல்லப்பட்டார்கள்.
तत् ஆதலின்
न: நமக்கு
मृत्युकृतं மரணமுண்டென்கிற
भयं हि பயமுண்டாகுமோ?

नारायणश्च रुद्रश्च शक्रश्चापि यमस्तथा । अस्माकं प्रमुखे स्थातुं सर्वे विभ्यति सर्वदा ॥

सर्वे "எல்லோரும்
रुद्रः च ருத்திரனும்
शक्रः च சக்கரனும்
यमः च யமனும்
तथा அப்படியே

नारायणः अपि நாராயணனும் கூட
सर्वदा எப்பொழுதும்
अस्माकं நமது
प्रमुखे எதிரில்
स्थातुं எதிர்த்துநிற்க
विभ्यति அஞ்சுவார்.

विष्णोर्द्वेषस्य नास्त्येव कारणं राक्षसेश्वर । देवानामेव दोषेण विष्णोः प्रचलितं मनः ॥

राक्षसेश्वर "ராக்ஷஸேசுவர!
विष्णो: ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணு
द्वेषस्य த்வேஷத்திற்கு
कारणं एव பிரசுத்தியே
न अस्ति இல்லை.

देवानां தேவர்களுடைய
दोषेण एव தோஷத்தினாலேயே
विष्णो: விஷ்ணுவின்
मनः மனம்
प्रचलितम् மாறுபட்டிருக்கின்றது.

तस्माद्य समुद्युक्ताः सर्वसैन्यसमावृताः । देवानेव जिघांसाम एभ्यो दोषः समुत्थितः ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|------------------------|---|
| एभ्यः एव | “இவர்களிடமிருந்தே | सर्वसैन्य- समावृताः | ஸகல சைன்யங்க ளால் புடை சூழப் பட்டவர்களாய் |
| दोषः | விரோதம் | समुद्युक्ताः | புத்தஸன்னாஹம் கொண்டவர்களாய் |
| समुत्थितः | விளைந்தது. | देवान् जिघांसाम | தேவர்களை வதைசெய்யப் பாடு படுவோம். |
| तस्मात् | ஆதலால் | | |
| अद्य | இப்பொழுது | | |

उद्योगं घोषयित्वा तु सर्वे नैर्ऋतपुङ्गवाः । युद्धाय निययुः क्रुद्धा जृम्भवृत्रबला इव ॥

| | | | |
|----------------|-------------------------|----------------|--------------------------------|
| नैर्ऋतपुङ्गवाः | “ராசூஸ்ச்ரேஷ்டர் கள் | युद्धाय | புத்தத்திற்கு |
| सर्वे तु | எல்லோருமே | जृम्भवृत्रबलाः | ஜும்பன், விருத்தி ரன், பலன் |
| क्रुद्धाः | கேடுகளாய் | इव | என்ற (அசூரர்களை) |
| उद्योगं | போர் முயற்சியை | निययुः | வெளிப்புறப்பட்டார் கள். |
| घोषयित्वा | பறைபறைந்து | | |

स्यन्दनैर्वारणैश्चैव ह्यैश्च गिरिसन्निभैः । खरैर्गोभी रयोष्टैश्च शिशुमारैर्भुजङ्गमैः ॥ ४० ॥

मकरैः कच्छपैर्भीनैर्वहङ्गैर्गण्डोपमैः । सिंहैर्व्याघ्रैर्वराहैश्च समरैश्चमरैरपि ॥ ४१ ॥

रथैर्हयैरुह्यमानाः शतधा च सहस्रधा । प्रयाता राक्षसास्तूर्ण देवलोकजिघांसवः ॥ ४२ ॥

| | | | |
|----------------|---|-----------|------------------------------------|
| देवलोकजिघांसवः | “தேவலோகத்தை ஜயிக்க எண்ணங் கொண்டவர்களாய் | शिशुमारैः | சிம்சுமாரமென்கிற மிருகங்களோடும் |
| राक्षसाः | ஆரக்கர்கள் | भुजङ्गमैः | நாகங்களோடும் |
| शतधा | நூற்றுக்கணக்காகவும் | मकरैः | சுராமீன்களோடும் |
| सहस्रधा च | ஆயிரக்கணக்காகவும் | कच्छपैः | ஆமைகளோடும் |
| हयैः | குதிரைகளாலும் | मीनैः | மச்சங்களோடும் |
| रथैः | ரதங்களாலும் | गण्डोपमैः | கருடனுக்கொப்பான |
| उह्यमानाः च | சுமந்துபோகப்பட்ட வர்களாய் | विहङ्गैः | பகழிகளோடும் |
| स्यन्दनैः | புத்தரதங்களோடும் | सिंहैः | லிம்ஹங்களோடும், |
| वारणैः एषु | யானைகளோடும் | व्याघ्रैः | வேங்கைகளோடும் |
| हयैः च | குதிரைகளோடும் | वराहैः च | காட்டுப்பன்றி களோடும் |
| गिरिसन्निभैः | மலைகள் போன்ற | सुरैः | ஸ்ருமரமென்கிற மான்களோடும் |
| खैः | கோவேறுகழுதை களோடும் | चमरैः अपि | சாமரமென்கிற மான்களோடும் |
| गोभिः | பசுங்களோடும் | तूर्णैः | வேகமாய் |
| रथोष्टैः च | ரதங்களை இழுக்கும் ஓட்டகங்களோடும் | प्रयाताः | சென்றார்கள். |

त्यक्त्वा लङ्कां गताः सर्वे राक्षसा बलगर्विताः । प्रयाता देवलोकाय योद्धुं दैवतशत्रवः ॥

லகூ “இலங்கையை
त्यक्त्वा விட்டு
देवलोकाय தேவலோகத்திற்கு
योद्धुं போர்புரிய
प्रयाताः சென்றவர்களும்
दैवतशत्रवः தைவசத்துருக்களும்

बलगर्विताः பலத்தால் தலை
கொழுத்தவருமான
राक्षसाः அரக்கர்கள்
सर्वे எல்லோரும்
गताः போய்ச்சேர்ந்தார்கள்.

लङ्काविपर्ययं दृष्ट्वा यानि लङ्कालयान्यथ । रक्षसामेव मार्गेण दैवतान्यपचक्रमुः ॥ ४४ ॥

अथ “இப்பொழுது
लङ्कालयानि இலங்கையில் குடி
கொண்டிருந்த
दैवतानि தேவதைகள்
यानि எவர்களோ அவர்கள்

लङ्काविपर्ययं இலங்கையினழிவை
दृष्ट्वा உணர்ந்து
रक्षसां मार्गेण एव ராக்ஷஸர்கள் சென்ற
वयुष्ये வழியே
अपचक्रमुः பிண்டொடர்ந்தார்கள்.

भूतानि भयदर्शानि विषमस्थानि सर्वशः । भौमाश्रैवान्तरिक्षाश्च कालाज्ञप्ता भयावहाः ॥

उत्पाता राक्षसेन्द्राणामभावाय समुत्थिताः
भयदर्शानि “ஆபத்தை ஸூசிப்
பிக்கும்

॥ ४५ ॥

भूतानि பூதங்கள்
सर्वशः எல்லாத்திசைகளிலும்
विषमस्थानि பிரதிகூலமாய்
நின்றன.

कालज्ञप्ता: { காலமூர்த்தியினால்
கட்டளையிடப்பட்ட
வைகளும்,
भयावहाः एव பயத்தைத்
தருபவைகளும்
भौमाः च இவ்வுலகத்திற்
குரியனவும்

राक्षसेन्द्राणां ராக்ஷஸோத்தமர்க
ளுடைய
अभावाय நாசத்தின்பொருட்டு

अन्तरिक्षाः च ஆகாயத்திற்குரியனவு
उत्पाताः அபசகுனங்கள் [மான
समुत्थिताः உண்டாயின.

अस्थानि मेघा वृष्टुर्हणं शोणितमेव च । वेलं समुद्राश्चोत्क्रान्ताश्चैलुश्चाप्यथ भूधराः ॥

अथ “அப்பொழுது
मेघाः மேகங்கள்
अस्थानि च எலும்புகளையும்,
उणं உஷ்ணமான
शोणितं एव ரக்தத்தையும்
वृष्टुः பொழிந்தன.

समुद्राः च கடல்களும்
वेडां கரையை
उत्क्रान्ताः மீறிப்பொக்கின.
अपि இதுவுமின்றி
भूधराः च மலைகளும்
चेलुः ஆசைந்தன.

अट्टहासान्विमुञ्चन्तो घननादसमस्वनाः । वाश्यन्त्यश्च शिवास्त्र दारुणं घोरदर्शनाः ॥

तस्य “அங்கு
घोरदर्शनाः கொடிய தோற்ற
शिवाः குள்ளநரிகள் [முள்ள
घननाद- } இடிமுழக்கத்தை
समस्वनाः } நிகர்த்த த்வனி
யுடையவைகளாய்

अट्टहासान् அட்டஹாஸங்களை
विमुञ्चन्तः च செய்துகொண்டும்
दारुणं பயங்கரமாயும்
वाश्यत्यः ஊளைபிட்டன,

गृध्रचक्रं महच्चत्रं ज्वलनोद्गारिभिर्मुखैः । रक्षोगणस्योपरिष्ठात्परिवभ्राम कालवत् ॥४८॥

அஃது “அக்காலத்தினால்
மஹத் பெரிய
गृध्रचक्रं च கழுஞ்சுக்கூட்டமும்
कालवत् च யம்னைப்போலவே
ज्वलनोद्गारिभिः நெருப்பைக்கக்குகிற

मुखैः வாய்களுடன்
रक्षोगणस्य அரசர்க்க்கூட்டத்
तिर्भुक्
उपरिष्ठात् மேலே
परिवभ्राम வட்டமிட்டது.

काका वाश्यन्ति तत्रैव विडाला वै द्विपादयः । कपोता रक्तपादाश्च शारिका विद्वता ययुः ॥

தஃது “அச்சமயத்திலேயே
काका: காக்கங்கள்
वाश्यन्ति கோரமாகக்கூவின.
रक्तपादा: ரக்தவாணமுள்ள
पा तन्कैवायुद्वय

कपोता: புறக்களும்
शारिका: சாரிகைகளென்ற
द्विपादयः च ययुः பக்ஷிகளும் பறந்தன.
विडाला: वै பூனைகளும்
विद्वता: குறுக்கிட்டன.

उत्पातांस्ताननादृत्य राक्षसा बलगर्विताः । यान्त्येव न निवर्तन्ते मृत्युपाशावपाशिताः ॥

बल गर्विता: “செளர்யத்தினால்
सेरुக்குற்ற
राक्षसा: அரசர்க்கர்கள்
तान् उत्पातान् அந்த அபசுருனக்களை
भनादृत्य एव லக்ஷியம்செய்யாமலே

यान्ति போகிறார்கள்.
मृत्युपाशा- } மிருத்தியுபாசத்தி
वपाशिता: } னால் கட்டியிழுக்கப்
பட்டவர்களாய்
न निवर्तन्ते திரும்பவில்லை.

माल्यवांश्च सुमाली च माली च सुमहाबलाः । आसन्पुरःसरास्तेषां क्रतूनामिव पावकाः ॥

तेषां “அவர்களின்
पुरस्तरा: முன்சொல்லுபவர்
களும்
सुमहाबला: மிக்க பலிஷ்டர்களு
माल्यवान् च மால்யவானும் [மான

सुमाली च ஸுமாலியும்,
माली च மாலியும்,
क्रतूनां யாகங்களின்
पावका: इव அகனிகளபோல்
आसन् விளங்கினார்கள்.

माल्यवन्तं च ते सर्वे माल्यवन्तमिवाचलम् । निशाचरा ह्याश्रयन्ति धातारमिव देवताः ॥

ते “அந்த
निशाचरा: இராசநஸர்கள்
सर्वे ஆனைவரும்
देवता: தேவதைகள்
धातारं பிரம்மதேவரை
इव எப்படியோ அப்படி
யே

माल्यवन्तं इव மால்யவானென்ற
பர்வதத்தைபோல்
अचलं हि எதற்கும் சலியாத
வளு
माल्यवन्तं च மால்யவந்தனையே
आश्रयन्ति முதன்மையாகப்
பற்றினின்றனர்.

तद्वलं राक्षसेन्द्राणां महाभ्रघननादितम् । जयेत्सया देवलोकं ययौ मालिवशे स्थितम् ॥

राक्षसेन्द्राणां “ராசநஸவீரர்களின்
तव अந்த
बलं ளையம்
मालिवशे மாலியின்வசத்தில்

स्थितं நிற்பதாய்
जयेत्सया ஜயம்பெறவேணும்
என்கிற எண்ணத்தால்

மஹாபவன- } மஹாபேககர்ஜனை
நாதிதீ } போன்ற பெரும்
கோஷமுடையதாய்

ராஶ்சானா஢் சமூ஢்யோ஢் தீ து நாராயண: ப்ர஢ு: | ஢ேவதூதாபுஷுத்ய சக்ரே யுதே தடா மன: || ௩௪ ||

ராஶ்சானா஢் "அரக்கர்களின்
தீ அந்த
சமூ஢்யோ஢் போர்முற்சியை
஢ேவதூதா தேவதூதனிட
மிருந்து

஢ேவலோக தேவலோகத்திற்கு
யதீ வந்துசேர்ந்ததூ.

ப்ர஢ு: ஸகலலோகேச்வரா
ரான
நாராயண: து ஸ்ரீமந்தாராயணரும்
தடா அப்பொழுது
யுதே போர்புரிவதில்
மன: சக்ரே திருவுள்ளங்கொண்
டார்.

உபுஷுத்ய கேட்டறிந்து

ச சஜ்ஜாயுததூணீரோ வனதேயோபரி ஶ்யித: | ஆசஜ்ய கவச்சீ ஢ிவ்யீ ஶஶ்ரீக்சமயுதி || ௩௩ ||

ச: "அவார்
அம்புகள் நிறைந்த
சஜ்ஜாயுததூணீர: அம்பருத்தூணிகளை
தரித்தவராய்
ச஢்வாஶீ- } ஆயிரம் சூர்யர்களுக்கு
சமயுதி } சமமான கார்புதிள்
ளதும்

஢ிவ்யீ திவ்யமுமான
கவச்சீ கவசத்தை
ஆசஜ்ய அணிந்து
஢ீனதேயோபரி கருடன்மீது
ஷ்யித: ஏறியருளிணர்.

ஆவ஢்ய ஶரஸம்பூரீ ஢ுஷுதீ விமலே தடா | ஶ்ரோணீஸூத்ரீ ச ஶ்ரஶ்ரீ ச விமலீ கமலேஷண: ||

ஶஶ்ரீசக்ர஢டாஶஶ்ரீஸ்வஶ்ரீஸிபந்ராயுத: | ராஶ்சானாப஢ாவாய யதீ தூரீதர் ப்ர஢ு: || ௩௩ ||

கமலேஷண: "தாமரைக்கண்ணரும்
ஶஶ்ரீசக்ர஢டாஶஶ்ரீ- } சங்கம், சக்கிரம், க
ஸ்வஶ்ரீஸிபந்ராயுத: } ளை, சார்ங்கம், கட
கம் என்னும் இந்த
ஶ்ரஶ்ரீ திவ்யாயுதங்க
ளை பூண்டவருமான
ப்ர஢ு: ஸர்வலோகேச்வார்
(ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணு)
ஶரஸம்பூரீ சரங்கள் நிறைந்துள்
ளதும்
விமலே தோஷரஹி தங்களு
மான

஢ுஷுதீ அம்பருத்தூணிகள்
இரண்டையும்
விமலீ பளபளவென
இருக்கும்
ஸ்வஶ்ரீ ச கத்தியையும்
ஶ்ரோணீஸூத்ரீ ச அரைக்கச்சையையும்
ஆவ஢்ய கட்டிக்கொண்டு
ராஶ்சானா஢் அரக்கர்களின்
ஶ஢ாவாய அழிவின்பொருட்டு
தூரீதர் அதிவேகமாய்
தடா அப்பொழுது
யதீ புறப்படலாணர்.

ஸுபரீஷுதே ச ப஢ீ ஶ்யாம: பீதா஢்ரோ ஶரி: | காஷ்நஸ்ய கிரே: ப்ரஶ்ரீ சத஢ிசுதேயதோ யதா ||

ஸுபரீஷுதே "கருடன்முதுகில்
ச: அந்த
ஷ்யாம: தாயாம்பூமேனியரும்
பீதா஢்ரோ: பீதகவரடையுடுத்த
வருமான
ஶரி: ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணு

காஷ்நஸ்ய சவரீணமயமான
கிரே: பர்வதத்தின்
ப்ரஶ்ரீ சிகரத்தில்
சத஢ித் மின்னலோடுகடிய
தேயத: யதா நீலமேகமென
ப஢ீ விளங்கினர்.

स सिद्धदेवर्षिमहोरगैश्च गन्धर्वयक्षैरुपगीयमानः ।

समाससादासुरसैन्यशत्रूश्चक्रासिशाङ्गायुधशङ्खाणिः

॥ ५९ ॥

सः } “अवर्
सिद्धदेवर्षि- } சித்தர்களாலும்,
மஹரௌ: } தேவர்களாலும்,
ரிஷிகளாலும்,
மஹோரக்களாலும்
गन्धर्वयक्षैः च } கந்தர்வர்களாலும்,
யக்ஷர்களாலும்
उपगीयमानः } புழந்தாபோற்றப்
பட்டவராய்

चक्राशिशाङ्गायुध- } சக்கிரம், கத்தி, சார்ங்
शङ्खाणि: } கம், சங்கம், என்ற
ஆயுதங்களை கரித்
தவராய்
असुरसैन्यशत्रून् } அஸுரஸையமா
கும் சத்ருக்களை
समाससाद } சிட்டினார்.

सुपर्णपक्षानिलनुन्नपक्षं भ्रमत्पताकं प्रविकीर्णशस्त्रम् ।

चचाल तद्राक्षसराजसैन्यं चलोपलं नील इवाचलेन्द्रः

॥ ६० ॥

तत् } “அந்த
राक्षसराजसैन्यं } அரக்கமன்னவர்
களினலேனை
सुपर्णपक्षानिल- } கருடன்கிறகிஷிருந்து
नुन्नपक्षं } உண்டாகிய காற்றி
னால் சிதறிய படை
யின் ஓர் பாகமு
டையதால்
भ्रमत्पताकं } த்வஜங்கள் சிதறிய
தாய்

प्रविकीर्णशस्त्रं } ஆயுதங்கள் நழுவி
தாய்
नीलः } நீலமெனப்பெயர்
பூண்ட
अचलेन्द्रः } பர்வதச்ச்ரேஷ்டம்
व } போல்
चलोपलं } சபலமான மேகமென
चचाल } தத்தளித்தது.

ततः शरैः शोणितमांसरूपितैर्युगान्तवैश्वानरतुल्यविग्रहैः ।

निशाचराः संपरिवार्य माधवं वरायुधैर्निर्विभिदुः सहस्रशः

॥ ६१ ॥

ततः } “ஆனதுபற்றி
निशाचराः } அரக்கர்கள்
सहस्रशः } ஆயிரக்கணக்காய்
माधवं } ஸ்ரீயப்பதியை
संपरिवार्य } நான் குபுறமும்
சூழ்ந்துகொண்டு
शोणितमांसरूपितैः } உதிரமும், மாம்ஸமும்
படிந்தவைகளும்

युगान्तवैश्वानर- } யுগாந்தவீசுவானர்- } ஊழிக்காலத்து எறிக்
तुल्यविग्रहैः } கொப்பான வடிவ
முள்ளனவுமான
वरायुधैः } மிகச்சிறந்த படைக்
கலங்களாலும்
शरैः } பகழிகளாலும்
निर्विभिदुः } தாக்கினார்கள்.

इत्यापि श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे षष्ठः सर्गः ॥



சதம: சரீ:—ஸ்தாவது ஸர்க்கம். || 3 ||

மாலிவத:—மாலிவதம்

நாராயணகிரி தெ து கர்ஜந்தோ ராக்ஷஸாம்புதா: | வர்பு: ஶரவர்பேண வர்பேணவாத்ரிமம்புதா: || 1 ||

| | | | |
|---------------|---------------------------|----------------|-------------------|
| அம்புதா: | “மேகங்கள் | தெ | அந்த |
| அதி | மலைத்து | ராக்ஷஸாம்புதா: | ராக்ஷஸர்க்காகிய |
| வர்பேண | மழையால் | | மேகங்கள் |
| இவ | எப்படியோ அப்படியே | கர்ஜந்த: | ஆரவாரிப்பவர்களாய் |
| நாராயணகிரி தெ | சூரியநாராயணாகைய மலைத்தும் | ஶரவர்பேண | சரவர்புத்தால் |
| | | வர்பு: | வருஷித்தார்கள். |

ஷ்யாமாவதாதஸ்தீர்விஷ்ணுநீர்நீர்நீர்நீர்: | துதோஶ்ஜநகிரிவாஸிதூர்மார்பை: பயோதரீ: || 2 ||

| | | | |
|--------------|----------------------|--------------|-------------------|
| நீலீ: | “முதிர்நிறமான நீலவர் | ஷ்யாமாவதாத: | நிர்மலகாயம்பூ வர் |
| | ணமுடையவர்களும் | விஷ்ணு: | விஷ்ணு [ணராகிய |
| நக்ச்சைசுதீ: | ராக்ஷஸோத்தமரு | வர்புமார்பை: | மழைபொழியும் |
| | மரண | பயோதரீ: | மேகங்களால் |
| தீ: | அவர்களால் | அஶ்ஜநகிரி | அஞ்சனமலை |
| தூத: | சூழப்பட்டுநிற் | இவ | எப்படியோ அப்படியே |
| | பவரும் | ஆஸித் | விளங்கினார். |

ஶலமா இவ கீதாரம் மஶகா இவ பர்பதம் | யதாஶ்மூதததம் த்ஷா மகரா இவ சார்பவம் || 3 ||
ததா ரக்ஷோதஸூக்தா வஜ்ரானிலமனோஜவா: | ஶரி விஶந்தி ஶ்ஷ ஶரா லோகா இவ விபர்பயே ||

| | | | |
|------------------------|--|-------------|-----------------------|
| ரக்ஷோதஸூக்தா: | “இராக்ஷதர்கள் விற்க ளில்தொடுத்து வி டப்பட்டவைகளும் | மஶகா: இவ | மசகங்கள் போலவும் |
| வஜ்ரானில- மனோஜவா: } | | அஸூதவதம் | தேன்சூடத்தை |
| | வஜ்ராயுதத்தின் வீர் | த்ஷா: யதா | தேனீக்கள் போலவும் |
| | யமுடையவைகளும் | அர்ணவ் | ஸமுதரத்தை |
| | வாயுவேகமுடைய | மகரா: இவ ச | மகரங்கள் போலவும் |
| | வைகளுபான | விபர்பயே | பிரளயத்தில் |
| ஶரா: | சரங்கள் | லோகா: | மானிடர்கள் |
| கீதாரம் | நெல்வயலை | ஶரி | சூரிமந் நாராயண |
| ஶலமா: இவ | வெட்டுக்களிகள் | | னிடத்தில் |
| | போலவும் | இவ ததா ச | எப்படியோ, அப்படியே |
| பர்பதம் | மலையை | விஶந்தி ஶ்ஷ | வந்துவிழுந்தன. |

स्यन्दनैः स्यन्दनगता गजैश्च गजवृष्टगाः । अश्वारोहास्तथाऽथैश्च पादाताश्वाम्बरे स्थिताः॥
राक्षसेन्द्रा गिरिनिभाः शरैः शक्त्यृष्टितोमरैः । निरुच्छ्वासं हरिं चक्रुः प्राणायामा इव द्विजम्॥

| | |
|-------------|-----------------------------|
| स्यन्दनगताः | “ரதங்களிற் சென்றவர்கள் |
| स्यन्दनैः | ரதங்களாலும் |
| गजवृष्टगाः | கஜங்களிற்சென்ற வர்கள் |
| गजैः च | கஜங்களாலும் |
| अश्वारोहाः | துரகங்களிற்சென்ற வர்கள் |
| अश्वैः च | துரகங்களாலும் |
| तथा | அவ்வாறே |
| पादाताः | காலாட்களாகச் சென்றவர்கள் |
| अम्बरे च | விண்ணடியிலேயே |
| स्थिताः | நிற்பவர்களாயும் |

| | |
|------------------------|---|
| गिरिनिभाः | மலைகளைப்போன்ற |
| राक्षसेन्द्राः | ராக்ஷஸோத்தமர்கள் |
| शरैः | பாணங்களாலும் |
| शक्त्यृष्टि- तोमरैः | சக்தி, இருபக்கமும் கருக்குள்ளவாள், தோமரமென்ற ஆயுதங்களாலும் |
| हरिं | ஸ்ரீஹரியை |
| प्राणायामाः | பிராணாயாமங்கள் |
| द्विजं | பிராமணனை |
| इव | எப்படியோ அப்படி யே |
| निरुच्छ्वासं | மூச்சுவிடமுடியாதபடி |
| चक्रुः | செய்தார்கள். |

निशाचरैस्ताड्यमाने मीनैरिव महोदधिः । शार्ङ्गमायम्य दुर्धर्षो राक्षसेभ्योऽसृजच्छरान्॥

| | |
|-----------|--------------------------------------|
| दुर्धर्षः | “எவராலும் ஜடிக்க முடியாத அச்சுதன் |
| महोदधिः | மஹோததி |
| मीनैः | மீன்களால் |
| इव | எப்படியோ அப்படி |
| निशाचरैः | அரக்கர்களால் [யே |

| | |
|-------------|---------------------|
| ताड्यमाने | தாக்கப்பட்டவளவில் |
| शार्ङ्गं | சாரங்கமென்ற வில்லை |
| आयम्य | வளைத்து |
| शरान् | அம்புகளை |
| राक्षसेभ्यः | ராக்ஷஸர்களைநோக்கி |
| असृजत् | தொடுத்துவிடுத்தனர். |

शरैः पूर्णायतोत्सृष्टैर्वज्रवक्त्रैर्मनोजवैः । चिच्छेद विष्णुर्निशितैः शतशोऽथ सहस्रशः ॥८॥

| | |
|-------------------------|--|
| विष्णुः | “ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணு |
| पूर्णा- यतोत्सृष्टैः | } எதுவரையில் இழுக்க முடியாமோ அது வரையில் இழுத்து விடப்பட்டவைகளும் |
| वज्रवक्त्रैः | { வஜ்ராயுதம்போன்ற முனையுள்ளவை களும் |

| | |
|---------|-------------------------|
| मनोजवैः | மனோவேகமுடைய வைகளும் |
| निशितैः | சாணைபிடித்தவை களுமான |
| शरैः | களைகளால் |
| शतशः | நூற்றுக்கணக்காகவும் |
| अथ | இன்னும் |
| सहस्रशः | ஆயிரக்கணக்காகவும் |
| चिच्छेद | ஒட்டித் துரத்தினார். |

வித்ராவ்ய ஶரவர்பேண வர்பே வாயுரிவாத்யிதம் | பாவ்ஜனயே மஹாஷங்ங் ப்ரத஢்மோ புரூபுத்தம: || 9 ||

புரூபுத்தம: “புருஷோத்தமர்
வாயு: பெருங்காற்று
உத்யிதம் மேல்விழுந்த
வர்பே மழையை
ஐவ எப்படியோ அப்படி

ஶரவர்பேண பாணவருஷத்தால்
வித்ராவ்ய பறக்கடித்து
பாவ்ஜனயே பாக்ஷஜன்யமென்ற
மஹாஷங்ங் மஹாசங்கத்தை
ப்ரத஢்மோ ஊதினர்.

ஸோஸ்துஜோ ஹரிணா த்மாத: சர்வபிராணேன ஶங்ங்ராத் | ரரஸ பீமநிஹீதஸ்த்ரீலோக்யே வ்யயதயந்நிவ ||

அஸ்துஜ: “ஜலத்திலுண்டான
ச: அந்த
ஶங்ங்ராத் சங்கசிரேஷ்டம்
ஹரிணா ஹரியினால்
சர்வபிராணேன பூர்ணபலத்துடன்
த்மாத: ஊதப்பட்டதாய்

பீமநிஹீத: பயங்கரமான த்வனி
யுடையதாய்
ஸ்த்ரீலோக்யே மூவுலகத்தையும்
வ்யயந் ஐவ நடுக்கமுறச் செய்வது
போல்
ரரஸ ஒலித்தது.

ஶங்ங்ராஜரவ: ஸோஸ்த த்ரஸயாமாஸ ராக்ஷஸான | மூரராஜ ஐவாரயே சமதானிவ குங்ங்ரான ||

அத “அப்போது
ச: அந்த
ஶங்ங்ராஜரவ: சங்கசிரேஷ்டத்
தின் த்வனி

சமதான மதம்பிடித்த
குங்ங்ரான யானைகளை
ஐவ எப்படியோ
அப்படியே

மூரராஜ: சிங்கமானது
அரயே கானில்

ராக்ஷஸான அரக்கர்களை
ஸாஸயாமாஸ நடுங்கச்செய்தது.

ந ஶேகூர்ஷ்வா: சஸ்த்யாதுத் விமதா: குங்ங்ராஸதவந | ஸ்யந்தநேஶ்யஶத்யுதா வீரா: ஶங்ங்ராவிததுர்வீலா: ||

ஶங்ங்ராவிததுர்வீலா: “சங்கத்தால் தளர்ந்து
போன

விமதா: உற்சாகமழிந்த
வைகளாய்

அஷ்வா: குதிரைகள்
சஸ்த்யாதுத் நிற்பதற்கும்
ந ஶேகூ: சக்தியற்றனவாயின.
குங்ங்ரா: யானைகள்

அதவந ஆயின.
வீரா: வீரர்கள்
ஸ்யந்தநேஶ்ய: தேர்களினின்று
த்யுதா: நழுவிவிழுந்தனர்.

ஶாங்ங்ஶ்வாபவிநிஸ்துக்தா வஜ்ரதுல்யானநா: ஶரா: | விதார்ய தானி ரக்ஷாஸி சுபுங்ங்ஶா விவிஷு: ஶ்நிதிம் ||

ஶாங்ங்ஶ்வா- } “சார்ங்கமென்னும்
விநிஸ்துக்தா: } சாபத்தினின்றும்
எழுந்தவைகளும்
வஜ்ரதுல்யானநா: { வஜ்ராயுதத்துக்கொப்
பான கூருடைய
வைகளும்
சுபுங்ங்ஶா: { அழகிய இறகுகள்
அமையப்பெற்ற
முனைகூடியுடைய
வுமான

ஶரா: பாணங்கள்
தானி அந்த
ரக்ஷாஸி ராக்ஷஸர்களை
விதார்ய பிளந்து
ஷ்நிதி பூமியில்
விவிஷு: புகுந்தன.

भिद्यमाना; शरैः सङ्घे नारायणकरच्युतैः । निपेतू राक्षसा भूमौ शैला वज्रहता इव ॥

सङ्घे "போரில்
 "ஸ்ரீமன் நாராயணனது
 नारायणकरच्युतैः { கைகளினின்று
 { கிளப்பி
 शरैः பாணங்களால்
 भिद्यमाना: பிளப்புண்ட

राक्षसा: அரக்கர்கள்
 वज्रहता: வஜ்ராயுதத்தினால்
 { வெட்டுண்ட
 शैला: इव மலைகளென
 भूमौ பூமியில்
 निपेतुः வீழ்ந்தனர்.

व्रणानि परगात्रेभ्यो विष्णुचक्रकृतानि वै । असूक् क्षरन्ति धाराभिः स्वर्णधारा इवाचलाः॥

विष्णुचक्रकृतानि "விஷ்ணுசக்கிரத்தி
 { னை அண்டான
 व्रणानि வீரணங்கள்
 अचला: பார்வதங்கள்
 धाराभिः பிளவுகளால்
 स्वर्णधारा: ஸுவர்ணதாரைகளை

इव எப்படியோ அப்படி
 पागात्रेभ्यः சத்ருக்களது தேகங்
 { களினின்று
 असूक् உதிரத்தை
 क्षरन्ति वै பெருக்குகின்றன.

शङ्कराजरवश्चापि शार्ङ्गचापरवस्तथा । राक्षसानां रवांश्चापि प्रसते वैष्णवो रवः ॥ १६ ॥

अपि च "இதுவுமன்றி
 शङ्कराजरवः अपि சங்கசிரேஷ்டத்
 { தினெலியும்
 तथा அவ்வண்ணமே
 शार्ङ्गचापरवः சார்ங்கமெனும் வில்லி
 { னெலியும்

वैष्णवः விஷ்ணுவின்னது
 रवः च அட்டஹாஸசப்தமும்
 राक्षसानां அரக்கர்களின்
 रवान् கோஷங்களை
 प्रसते அடக்கவிட்டது.

तेषां शिरोधरान्धूताञ्छरध्वजधनुषि च । रथान्पताकास्तूणीरांश्चिच्छेद स हरिः शरैः ॥

सः हरिः "அந்த ஹரி
 शरैः பாணங்களால்
 तेषां அவர்களது
 शिरोधरान् கழுத்துக்களையும்
 धूतान् அசைந்தாடிய
 तूणीरान् அம்பரூத்துணிக
 { னையும்,

पताका: பதாகைகளையும்,
 { பாணங்களையும், தவ
 शरध्वजधनुषि { ஐங்களையும், விற்க
 { னையும்,
 रथान् இரதங்களையும்
 चिच्छेद அறுத்துத்தள்ளினார்.

सूर्यादिव करा घोरा ऊर्मयः सागरादिव । पर्वतादिव नागेन्द्रा धारौघा इव चाम्बुदात् ॥

तथा शार्ङ्गविनिर्मुक्ताः शरा नारायणेरिताः । निर्धावन्तीषवस्तूर्ण शतशोऽथ सहस्रशः ॥
 शार्ङ्गविनिर्मुक्ताः "சார்ங்கத்தினின்று
 शरा: சாங்களும் [மெழுந்த
 तथा அவ்வண்ணமே
 नारायणेरिताः ஸ்ரீமன் நாராயணரால்
 { விடப்பட்ட
 इषवः பாணங்களும்

अथ இப்பொழுது
 सूर्यात् சூர்யனிடத்தினின்று
 घोरा: உக்கிரமான
 करा: கிரணங்கள்
 इव எப்படியோ அப்படி
 { யும்,

| | |
|-----------|----------------------|
| சாகராத் | கடலினின்று |
| ஊர்மய: | அலைகள் |
| ஹ | எப்படியோ அப்படியும், |
| பர்வதாத் | பர்வதத்தினின்று |
| நா஑ெந்ரா: | பாம்புகள் |
| ஹ | எப்படியோ அப்படியும், |
| அ஡்஡ுதாத் | மேகத்தினின்று [யும், |

शरभेण यथा सिंहा: सिंहेन द्विरदा यथा । द्विरदेन यथा व्याघ्रा व्याघ्रेण द्वीपिनो यथा ॥
 द्वीपिनेव यथा श्वान: शुना मार्जारका यथा । मार्जारेण यथा सर्पा: सर्पेण च यथाऽऽखव: ॥
 तथा ते राक्षसा: सर्वे विष्णुना प्रभविष्णुना । द्रवन्ति द्राविताश्चान्ये शायिताश्च महीतले ॥

| | |
|---------------|--------------------|
| பர஡ிஷ்ணுநா | “ஸர்வலோகேச்வரராகிய |
| விஷ்ணு | விஷ்ணுவினால் |
| திராவிதா: | வெருட்டப்பட்ட |
| தே | அந்த |
| ராஷ்ஸா: | அரக்கர்கள் |
| சர஡ெண | சரபயிருகத்தினால் |
| சி஡்஡ா: யதா | சிங்கங்களெனவும் |
| சி஡்஡ெ | சிங்கத்தினால் |
| திரிரதா: யதா | யானைகளெனவும் |
| திரிரதெ | யானைகளால் |
| வ்யா஡்ரா: யதா | வேங்கைகளெனவும் |
| வ்யா஡்ரெண | வேங்கையினால் |
| திரீபின: யதா | சிறுபுலிகளெனவும் |

राक्षसानां सहस्राणि निहत्य मधुसूदन: । वारिजं पूरयामास तोयदं सुरराडिव ॥ २३ ॥

| | |
|-----------|--------------|
| ம஡ுஸூதன: | “மதுஸூதனன் |
| ராஷ்ஸானா் | அரக்கர்களின் |
| ச஡்஡்ராணி | பலரை |
| நி஡்஡்ய | மடித்து |

नारायणशरत्रस्तं शङ्खनादसुविह्वलम् । ययौ लङ्कामभिमुखं प्रभयं राक्षसं बलम् ॥ २४ ॥

| | |
|------------------|--|
| நாராயணசரத்ரஸ்த் | “நாராயணனது சரங்களுக்கு பயந்ததும் |
| ச஡்஡்நா஡ுவி஡்஡ல் | சங்கநாதத்துக்கு வெருண்டதும் |
| பர஡ய் | { தோல்விப்பட்டு ஓழிக்கில்லாமல் ஓடிப்போனதுமான |

| | |
|----------------|---------------------|
| தாரீவா: | தாரைகளின் |
| ஹ | ஸமுடகங்கள் |
| ஹ | எப்படியோ அப்படியும் |
| தூர் | வெகு விரைவாய் |
| சா: சா: | தூறுதூறுகவும் |
| ஃ஡்஡ா: | ஆயிரமாயிரமாகவும் |
| நிர்஡ா:வி: | வெளிக்கிளம்பின. |
| திரீபினா | சிறுபுலியினால் |
| ஷ்வான: யதா ஹ | நாய்களெனவும் |
| ஷுநா | நாயினால் |
| மார்ஜாரகா: யதா | பூனைகளெனவும் |
| மார்ஜாரெண | பூனையினால் |
| சர்பா: யதா | பாம்புகளெனவும் |
| சர்பெண | பாம்பினால் |
| அ஡்஡வ: யதா | எலிகளெனவும் |
| திரவந்தி | அஞ்சியோடலாயினர். |
| ததா | அவ்வண்ணமே |
| அ஡்யே | இதர |
| சர்பே | எல்லோருமே |
| ம஡ீதலே | மண்மீது |
| சாயிதா: | மடிந்தனர். |

| | |
|----------|---------------------|
| சுரராத் | தேவேந்திரன் |
| தூயத் | மேகத்தை |
| ஹ | எப்படியோ அப்படியும் |
| வாரிஜ் | சங்கத்தை |
| பூரயாமாச | முழக்கினார். |

| | |
|---------|----------|
| ராஷ்ஸ் | அரக்கர் |
| பல் | படை |
| ல஡் | இலங்கையை |
| அ஡ி஡ுக் | நோக்கி |
| யயூ | சென்றது. |

प्रभये राक्षसवले नारायणशराहते । सुमाली शरवर्षेण निववार रणे हरिम् ॥ २५ ॥

सुमाली "ஸுமாலி
रणे போரில்
राक्षसवले அரசர்காப்படை
नारायणशराहते { நாராயணரது சரங்க
ளால் அடியுண்ட
வளவிலும்

प्रभये சிதறித்தடுமாறியோ
டியவளவிலும்
हरिं ஹரியை
शरवर्षेण பாணவருஷத்தால்
निववार தடுத்தான்.

उत्क्षिप्य लम्बाभरणं धुन्वन्करमिव द्विपः । रास राक्षसो हर्षात्सतडिचोयदो यथा ॥

राक्षसः "அரக்கன்
हर्षात् குதூஹலத்தால்
द्विपः யானை
लम्बाभरणं தொங்குமாபரணத்
தை

करं துதிக்கையை
धुन्वन् इव ஆட்டிக்கொண்டிருப்
பதுபோலவும்
सतडित् மின்னலுடன்கூடிய
तोयदः यथा மேகம் போலவும்
राक्षस प्रुழங்கினான்.

उत्क्षिप्य கழற்றி வீசி எறிந்து

सुमालेर्नर्दतस्तस्य शिरो ज्वलितकुण्डलम् । चिच्छेद यन्तुरश्वाश्च भ्रान्तास्तस्य तु रक्षसः॥

नर्दतः "கோஷமிட்டுக்கொண்
டிருக்கிற
तस्य அந்த
सुमाले: ஸுமாலியின்
यन्तु: ஸாரதியின்
ज्वलितकुण्डलं ஜ்வலிக்கின்ற குண்ட
லங்களோடிருக்கிற

चिच्छेद அறுத்துத் தள்ளினார்.
तु அப்பொழுது
तस्य அந்த
रक्षसः அரக்கனின்
भशा: च குதிரைகளும்
तिக்குதிசை தெரியா
भ्रान्ता: { தவண்வாகித்
தடுமாறின.

शिरः முடியை

तैरश्वैर्भ्राम्यते भ्रान्तैः सुमाली राक्षसेश्वरः । इन्द्रियाश्वैः परिभ्रान्तैर्धृतिहीनो यथा नरः॥

राक्षसेश्वरः "ராக்கசேசுவரனான
सुमाली ஸுமாலி
तै: அந்த
भ्रान्तै: அல்லாடுகின்ற
अश्वै: குதிரைகளுடனே
परिभ्रान्तै: சபலப்பட்டு அல்லா
டுகின்ற

इन्द्रियाश्वै: இந்திரியங்களாகிற
अश्ववन्कण्डुடன்
धृतिहीनः नरः தைரியமற்ற மனிதன்
यथा எவ்வண்ணமோ
अश्ववண்ணमே,
भ्राम्यते யாதும் தோன்றாது
மயங்கி நின்றான்.

हते सुमालेश्वैश्च रथे विष्णुरथं प्रति । माली चाभ्यद्रवद्युक्तः प्रगृह्य सशरं धनुः ॥ २९ ॥

युक्तः "ஸாமர் ததியசாலி
माली माली [யாகிய
सुमाले: ஸுமாலியின்
रथे இரதம்
अश्वै: च குதிரைகளோடேயே
हते அழிவடைந்தவளவில்

स.रं பாணத்துடனிருக்கும்
धनुः வில்லை
प्रगृह्य எடுத்துக்கொண்டு
विष्णुरथं च விஷ்ணுரத்தத்தையே
प्रति நோக்கி
अभ्यद्रवत् எதிர்த்துவந்தனன்.

மாலேநுச்சயுதா வாணா: கர்த்ஸ்வரவிபூபிதா: | விவிசுஹ்ரிமாஸாசு க்ரௌஷ்ணம் பந்ரதா இவ ||

| | | | |
|--------------------|-----------------------|-----------|--------------------|
| மாலே: | “மாலேயின் | க்ரௌஷ்ணம் | கர்வா ஶ்ரீ பர்வதத் |
| பந்ரதா: | தனுஸீலிருந்து வந்த | இவ | எப்படியோ அப்படி |
| கர்த்ஸ்வரவிபூபிதா: | வைகளும்த | ஹ்ரி | ஹ்ரியை |
| வாணா: | தங்கத்தால் அலங்கரிக்க | அஸாசு | அடைந்து |
| பந்ரதா: | கப்பட்டவைகளுமான | விஷ்ணு: | புகுந்தன. |
| | பாணங்கள் | | |
| | பறவைகள் | | |

அர்த்தமான: சரீ: சோஸ்த மாலிமுக்த: சஹஸ்ரஸ: | சூக்ஷ்மே ந ரணே விஷ்ணுஜிநேந்ரித்ய இவாபிபி: ||

| | | | |
|------------|--------------------|--------------|-----------------------|
| ரணே | “போரீல் | விஷ்ணு: | விஷ்ணு |
| மாலிமுக்த: | மாலியால் விடப்பட்ட | அத | அப்படியிருக்கையி |
| | வைகளாகிய | | ஹம் |
| சஹஸ்ரஸ: | ஆயிரக்கணக்கான | ஜிநேந்ரித்ய: | ஜிநேந்திரியன் |
| சரீ: | பாணங்களால் | அபிபி: | துன்பங்களால் |
| அர்த்தமான: | அடியுண்ட | இவ | எப்படியோ அப்படி |
| ச: | அந்த | சூக்ஷ்மே ந | சிறிதும் கலங்கவில்லை. |

அத மௌர்வீஸ்வந் ஶ்ருதவா பஶ்வானபூதபாவந: | மாலிந் ப்ரிதா பானௌஸஸசர்ஜாரிநிபூதந: ||

| | | | |
|------------|-------------------|---------------|--------------|
| அத | “அப்படியிருக்கையி | மௌர்வீஸ்வந் | நாறேசையை |
| | ஹம் | ஸூஸா | கேட்டு |
| அரிநிபூதந: | சத்ருஸம்ஹாரகரும் | பானௌஸா | பாணஸபூஹங்களை |
| பூதபாவந: | பூதங்களைப்படைப் | மாலிந் ப்ரிதா | மாலியின்மீது |
| | பவருமான | ஸஸர்ஜ | பொழிந்தார். |
| பஶ்வான | ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணு | | |

தே மாலிதேஹமாஸாசு வஜ்ரவித்யுத்பஶா: சரா: | பிவந்ரி ஶுதிரம் தஸ்ய நாஶா இவ ஶுதாரஸம் ||

| | | | |
|------------------|----------------------|----------|-----------------|
| தே | “அந்த | தஸ்ய | அவனுடைய |
| வஜ்ரவித்யுத்பஶா: | { வஜ்ராயுதம் மின்னல் | ஶுதிரம் | உதிரத்தை |
| | { இவைகளைப்போன்ற | நாஶா: | பாம்புகள் |
| | பிரபையுடைய | ஸுதாரஸம் | அமிருதரஸத்தை |
| சரா: | பாணங்கள் | இவ | எப்படியோ அப்படி |
| மாலிதேஹ் | மாலியின் சரீரத்தை | பிவந்ரி | பருகின. |
| அஸாசு | அடைந்து | | |

மாலிந் விஸுக்ஷ் க்ருதவா ஶக்ஷ்ஞகாடாஶர: | மாலிமௌர்லி த்வஜ்ந் சாபம் வாகிந்ஷாப்யபாதயத் ||

| | | | |
|------------------|--------------------|------------|----------------------|
| ஶக்ஷ்ஞகாடாஶர: | “சங்கசக்கிரகதாதாரி | மாலிமௌர்லி | மாலியின் மருதத்தை |
| மாலிந் | மாலியை | த்வஜ்ந் | கொடியையும், [யும், |
| விஸுக்ஷ் க்ருதவா | வாட்டமடையச் | சாபம் அபி | வில்லையும், |
| | செய்து | வாகிந்: ச | குதிரைகளையும் |
| | | அபாதயத் | அறுத்துத்தள் ளினார். |

विरथस्तु गदां गृह्य माली नक्तश्चरोत्तमः । आपुपुवे गदापाणिर्गिथ्यादिव केसरी ॥३५॥

| | | | |
|----------------|------------------------|----------|---------------------|
| नक्तश्चरोत्तमः | “राक्षसेषु तं தமனான | गृह्य | கையில்கொண்டு |
| माली | माली | गदापाणिः | கதாபாணியாய் |
| विरथः तु | राथमिभूत्तवतुनान् | गिथ्यात् | பர்வதசிகரத்தினின்று |
| गदां | கதையை | केसरी इव | சிங்கம்போல் |
| | | आपुपुवे | துள் ளிஓடிவந்தான். |

गद्या गरुडेशनमीशानमिव चान्तकः । ललाटदेशेऽभ्यहनद्रजेन्द्रो यथाऽचलम् ॥३६॥

| | | | |
|----------|--------------------------|----------|-------------------------|
| गरुडेशनं | “कण्टकवर्णैः இந்திரன் | इन्द्रः | இந்திரன் |
| ललाटदेशे | நெற்றியில் | वज्रेण | வஜ்ராயுதத்தால் |
| गद्या | கதையால் | अचलं | பர்வதத்தை |
| अन्तकः | யமன் | यथा च | எப்படியோ, அப்படியும் |
| ईशानं | சிவபெருமானை | अभ्यहनन् | மோதினன். |
| इव | எப்படியோ, அப்படியும் | | |

गद्याऽभिहतस्तेन मालिना गरुडो भृशम् । रणात्पराङ्मुखं देवं कृतवान्वेदनातुरः ॥३७॥

| | | | |
|--------|---------------|-----------|--|
| तेन | “अन्त அந்த | वेदनातुरः | வேதனையைப்பொறுக்க கமுடியாதவராய் |
| मालिना | மாலியால் | रणात् | போர்க்களத்தினின்று |
| गद्या | கதையால் | देवं | பரமாத்மாவை |
| अभिहतः | புடைக்கப்பட்ட | पराङ्मुखं | பின்புறம் பார்த்துக் கொண்டிருக்கிறவராய் |
| गरुडः | கருடர் | कृतवान् | செய்தார். |
| भृशं | அதிக | | |

पराङ्मुखे कृते देवे मालिना गरुडेन वै । उदतिष्ठन्महाञ्छब्दो रक्षसामभिनर्दताम् ॥३८॥

| | | | |
|-----------|--|------------|---------------------------------|
| मालिना | “मालियால் ஆனந்தப்பட்டடுத்த துள்ளுகின்ற | अभिनर्दतां | அனந்தப்பட்டடுத்த துள்ளுகின்ற |
| गरुडेन वै | கருடராலும் | रक्षसां | அரக்கர்களின் |
| देवे | தேவர் | महान् | பெருந்த |
| पराङ्मुखे | பின்புறம் பார்த்துக் கொண்டிருப்பவராக | शब्दः | கோஷம் |
| कृते | ஆனதும் | उदतिष्ठत् | உண்டாயிற்று. |

रक्षसां रवतां रावं श्रुत्वा हरिहयानुजः । तिर्यगास्थाय संकुद्धः पक्षीशे भगवान्हरिः ॥

पराङ्मुखोऽप्युत्सर्ज मालेश्चक्रं जिवांसया ॥ ३९ ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------|----------|---------------------|
| रवतां | “கூச்சலிடுகின்ற அரக்கர்களின் | हरिः | ஸ்ரீஹரி |
| रक्षसां | அரக்கர்களின் | भगवान् | பகவான் |
| रावं | பேரொலியை | संकुद्धः | கோபங்கொண்டவ ராய் |
| श्रुत्वा | கேட்டு | पक्षीशे | கருடன்மேல் |
| हरिःयानुजः | இந்திரனது ஸஹோ தரராகிய | तिर्यक् | குறுக்காய் |

| | |
|---------|---------------------------|
| ஆஸ்தாய | உட்கார்ந்து |
| மாலே: | மாலியின் |
| ஜிதாஸயா | வதையின் ஸங்கல்பத் தால் |

| | |
|---------------|------------------------|
| பராஹ்முல: அரி | பாஹ்முலாயிப்பவ ராயே |
| சக்ரம் | சக்கிராயுதத்தை |
| ஊஸஸஜே | விடுத்தார். |

தத்யூர்யமண்டலாஸாஸ் ஸ்வாஸா ஹாஸயந்நஹ: |

காலசக்ரநிஹம் சக்ரம் மாலே: ஶீர்பிமபாதயத் ||

| | |
|-----------------|---|
| சூர்யமண்டலாஸாஸ் | “சூர்யமண்டலம் போ ன்ற சோபையுடை யதும் |
| ஸ்வாஸா | |
| நஹ: | தன் கார்தியால் |
| ஹாஸயந் | ஆகாயத்தை பிரகாஸிக்கச்செய்வ தும் |

| | |
|--------------|---------------------------------|
| காலசக்ரநிஹம் | காலசக்கிரத்துக் கொப்பானதுமான |
| தத் | அந்த |
| சக்ரம் | சக்கிரம். |
| மாலே: | மாலியின் |
| ஶீர்பி | தலையை |
| அபாதயத் | அறுத்துத்தள்ளிற்று. |

தச்சிஶ்ரோ ராஶஸேந்ரஸ்ய சக்ரகூத் விஹிஷமம் |

பபாத ஶுஶிரோஹாரி புரா ராஹுஶிரோ யதா ||

| | |
|-------------|------------------------------------|
| ராஶஸேந்ரஸ்ய | “ராஶஸேநாத்தம னுடைய |
| தத் | அந்த |
| ஶிர: | தலை |
| சக்ரகூத் | சக்கிரத்தால் சேதிக்க ப்பட்டதாய் |
| விஹிஷம் | மிக்க பயங்கரமாய் |

| | |
|------------|--------------------------------|
| ஶுஶிரோஹாரி | உதிரத்தைப் பெருக் சூகிரதாய் |
| புரா | முன்னொருகால் |
| ராஹுஶிர: | ராஶுவினது முடி |
| யதா | எவ்வண்ணயானதோ அவ்வண்ணமே |
| பபாத | பூமியில் வீழ்ந்தது. |

தத: சூரே: சூஸஹ்ரே: ஶர்வபிராஶஸமீரீத: |

ஸிஹநாடரவோந்முக்: ஶாஹு டேவீதீ வாதிஹி: ||

| | |
|----------|---|
| தத: | “அதனால் |
| சூஸஹ்ரே: | மிக்க மகிழ்ச்சி கொண்ட |
| வாதிஹி: | “எற்கனவே முறை யிட்டுக்கொண்டிருந் தவர்களுமான |
| சூரே: | |

| | |
|------------------|-------------------------------------|
| ஶாஹு | ‘மங்களம். |
| டேவ ஶீதீ | தேவ!’ என்கிற |
| ஶர்வபிராஶஸமீரீத: | ஸர்வப்ரகாரத்தாலும் கோஷிக்கப்பட்ட |
| ஸிஹநாடரவ: | சிம்மநாதகோஷம் |
| ஊஸ்முக்: | வினைந்தது. |

மாஸிந் நிஹத் ட்ரஹ் ஶுமாலீ மாஸ்யவானபி |

ஸவலு ஶோகஸந்தஸு லக்ஷாஹேவ பராவீதீ ||

| | |
|---------------|-------------|
| சுமாஸீ | “ஸுமாலியும் |
| மாஸ்யவான் அபி | மால்யவானும் |
| மாஸிந் | மாலியை |
| நிஹத் | மடிந்தவனாய் |
| ட்ரஹ் | கண்டு |

| | |
|----------|----------------------------------|
| ஸவஸந்தஸு | சோகத்தால் மிக்கதள ந்தவர்களாய் |
| லக்ஷாஶ்வ | இலங்கையை நோக்கியே |
| ஸவலு | ஸையஸமேதர் களாய் |
| பராவீதீ | திரும்பிஊறான்கள். |

गरुडस्तु समाश्वस्तः सन्निवृत्य यथा पुरा । राक्षसान्द्रावयामास पक्षवातेन कोपितः ॥

| | | | |
|------------|------------------------|-------------|------------------------------------|
| तु | “இந்தஸ்திதியில் | यथा पुरा | முன்போலவே |
| गरुडः | கருடர் | सन्निवृत्य | திரும்பி |
| समाश्वस्तः | விடாய்தீர்ந்தவராய் | पक्षवातेन | இறகுசுளினின்றூ உண்டானகாற்றினால் |
| कोपितः | உக்கிரம்கொண் டவராய் | राक्षसान् | அரக்கர்களை |
| | | द्रावयामा । | அடித்து ஒட்டினார். |

नारायणो बाणवराशनीभिर्विदारयामास धनुर्विसुकैः ।

नक्तञ्चरान्मुक्तविधूतकेशान्यथाऽशनीभिः सतडिन्महाभ्राः ॥ ४५ ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------|--------------------------|-----------------------------|
| नारायणः | “ஸ்ரீமண் நாராயணன் | सत डम्हाभ्राः } यथा } | மின்னலுடன்கூடிய |
| धनुर्विसुकैः | வில்வினின்றுபுறப் பட்ட | | பெரும்மேகங் களைப்போல |
| बाणवराशनीभिः | பாணைத்தமங்களா கிறஇடிகளால் | नक्तञ्चरान् | ராக்ஷஸர்களை |
| अशनीभिः | இடித்தீகளால் | मुक्तविधूतकेशान् | தலைவிநிகோலமுடைய வர்களாய் |
| | | विदारयामास | சிதற அடித்தார். |

भिन्नातपत्रं पतमानमस्त्रं शरैरपध्वस्तविनीतवेषम् ।

विनिस्तुतान्त्रं भयलोलनेत्रं बलं तदुन्मत्तरं बभूव ॥ ४६ ॥

| | | | |
|-------------------------|---|------------------|--------------------------------------|
| तत् बलं | “அந்த ஸேனை | विनिस्तुतान्त्रं | சரிந்த குடலுடைய |
| शरैः | பாணங்களால் | | தாய் |
| भिन्नातपत्रं | குடைகள் முறிந்த | भयलोलनेत्रं | அச்சத்தினால் மிரண்ட கண்களுடையதாய் |
| अस्त्रं | ஆயுதம் [தாய் | उन्मत्तरं | யாதும் தோன்றாது |
| पतमानं | நழுவியதாய் | बभूव | மதிமயக்கமுற்றதாய் |
| अध्वस्त- विनीतवेषं } | மானம் குலைந்து, கொட்டமடங்கிய வேஷமுடையதாய் | | ஆயிற்று. |

सिंहार्दितानामिव कुञ्जराणां निशाचराणां सहकुञ्जराणाम् ।

रवाश्च वेगाश्च समं बभूवुः पुराणसिंहेन विमर्दितानाम् ॥ ४७ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------------|------------|-----------------|
| पुराणसिंहेन | “முன்காலத்திய | वेगाः च | கலவரங்களும் |
| विमर्दितानां | நாவலிம்மழூர்த்தியில் | | सिंहार्दितानां |
| सहकुञ्जराणां | பொடிபட்டவர்களும் | कुञ्जराणां | யானைகளுடையதற்கு |
| निशाचराणां | யானைகளை யுடையது | समं इव | ஸமமாகவே |
| रवाः च | அரக்கர்களின் [மான பெரும்கூச்சலும் | बभूवुः | இருந்தன. |

सम्बाध्यमाना हरिवाणजालैः सवाणजालानि समुत्सृजन्तः ।

धावन्ति नक्तञ्चरकालमेघा वायुप्रभिन्ना इव कालमेघाः

॥ ४८ ॥

| | | | |
|------------------|---|----------------|---------------------------------|
| ஹரிவாணஜலை: | “ஸ்ரீஹரியின் பாண ஸமூகங்களால் | समुत्सृजन्तः | தூற்த்தெறிந்துகிட்ட வர்களாய் |
| सम्बाध्यमाना: | தூன்புறுத்தப்பட்ட | वायुप्रभिन्ना: | வாயுவினால் கலக்கப் பட்ட |
| नक्तञ्चरकालमेघा: | அரக்கர்களாகிய காலமேகங்கள் | कालमेघाः इव | காலமேகங்களென |
| सवाणजालानि | { அம்புகள் பூட்டியபடி யேயிருக்கிற பாணங் களை | धावन्ति | பறந்தன |

चक्रप्रहारैर्विनिकृत्तशीषाः संचूर्णिताङ्गाश्च गदाप्रहारैः ।

असिप्रहारैर्द्विविधा विभिन्नाः पतन्ति शैला इव राक्षसेन्द्राः

॥ ४९ ॥

| | | | |
|----------------|--------------------------------------|-----------------|---|
| राक्षसेन्द्राः | “ராஷ்டிரோத்தமர் கள் | संचूर्णिताङ्गाः | { பிண்டமாக நசுக்குண் டசீரமுடையவர்க ளாயும் |
| चक्रप्रहारैः | சக்ராயுதத்தினடிக ளால் | असिप्रहारैः | கத்திகளின் குத்துக |
| विनिकृत्तशीषाः | சேதிக்கப்பட்ட சிர முடையவர்களாயும் | द्विविधाः | இரண்டாய் [ளால் |
| गदाप्रहारैः | கதையினடிகளால் | विभिन्नाः च | வெட்டுண்டவர்களா மலைகளென [யும் |
| | | शैलाः इव | விழுந்தார்கள். |
| | | पतन्ति | |

चक्रकृत्तास्यकम गदासंचूर्णितोरसः । लाङ्गुलशपितप्रीवा मुसलैर्भिन्नमस्तकाः ॥ ५० ॥

केचिच्चासिना छिन्नास्तथाऽन्ये शरपीडिताः । निपेतुरम्बराचूर्णं राक्षसाः सागराम्भसि ॥

| | | | |
|-----------------------------|--|-------------|---------------------------------------|
| केचिच् | “சில | तथा | அவ்வண்ணமே |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | अन्ये | சிலர் |
| चक्रकृत्तास्य- } कमलाः } | சக்கிரத்தால் அறுப் புண்ட முக்கமலங்க ளையுடையவர்களாயும் | शरपीडिताः च | சாங்களால் பீடிக்கப் பட்டவர்களாயும் |
| गदासंचूर्णितोरसः | { கதையால் பிண்டமாய் நசுக்குண்ட மார்புக ளையுடையவர்களாயும் | असिना | கத்தியால் |
| लाङ्गुलशपित- } प्रीवाः } | கலப்பைகளால் சேதிக் கப்பட்ட கழுத்துக ளையுடையவர்களாயும் | छिन्नाः एव | வெட்டுண்டவர்க ளாயும் |
| मुसलैः | உலக்கைகளால் | अम्बरात् | ஆகாயத்தினின்ற ஸமுத்திரஜலத்தில் |
| भिन्नमस्तकाः | சுதறிய மண்டைகளை யுடையவர்களாயும் | सागराम्भसि | விரைவில் |
| | | तूर्णं | விழுந்து முழுக்கிப் போனார்கள். |
| | | निपेतुः | |

विलम्बमानैर्मणिहारकुण्डलैर्निशाचरैर्नीलबलाहकोपमैः ।

निपात्यमानैर्दृशो निरन्तरं निपात्यमानैरिव नीलपर्वतैः

॥ ५२ ॥

| | | | |
|----------------|---|---------------|----------------------------------|
| निरन्तरं | “இடைவெளியில்லாத பரதேசம் | नीलबलाहकोपमैः | கறுத்தமேகங்களை யொத்தவர்களுமான |
| मणिहारकुण्डलैः | { மணிமாலையை குண்டலங்களையு முடையவர்களும் | निशाचैः | அரக்கர்களால் |
| विम्बमानैः | | निपात्यमानैः | பூமியில்வீழ்ந்த |
| निपात्यमानैः | தொங்கிக்கொண்டி ருக்கிறவர்களும் தறையிலவந்துவிழுந் தவர்களும் | नीलपर्वतैः | நீலமலைகளால் |
| | | इव | எப்படியோ, அப்படி |
| | | दृशो | காணப்பட்டது. |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे सप्तमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 21017

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 293

अष्टमः सर्गः—எட்டாவது ஸர்க்கம் ॥ ८ ॥

माल्यादिपराजयः—மாலி முதலியவர்களின் தோல்வி.

हृन्यमाने बले तस्मिन्पद्मनाभेन पृष्ठतः । माल्यवान्सनिवृत्तोऽथ वेलामेत्य महार्णवः ॥१॥

| | | | |
|--------------|---------------|-------------|-------------------------|
| पद्मनाभेन | “பத்மநாபரால் | बलां | ஸமுத்திரக்கரையை |
| तस्मिन् | அந்த | एत्य | அடைந்து |
| बले | ஸைன்யம் | पृष्ठतः | பின்புறமாய் |
| हृन्यमाने अथ | அழிவடைந்தபோது | इव | எவ்வண்ணமோ, அவ்வண்ணமே |
| माल्यवान् | மால்யவான் | सन्निवृत्तः | திரும்பினான். |
| महार्णवः | ஸமுத்திரஅலை | | |

संरक्तनयनः कोपाच्चलन्मौलिर्निशाचरः । पद्मनाभमिदं प्राह वचनं पुरुषोत्तमम् ॥ २ ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|-------------|---------------------|
| निशाचरः | “அரக்கன் | पुरुषोत्तमं | புருஷோத்தமரான |
| कोपात् | கோபத்தினால் | पद्मनाभं | பத்மநாபரைப் |
| संरक्तनयनः | சிவந்தகண்களை யுடையவனாய் | इदं | பின்வரும் [பார்த்து |
| चलन्मौलिः | அசையும்தலையனாய் | वचनं | மொழியை |
| | | प्राह | உரைசெய்தான் : |

नारायण न जानीषे क्षात्रधर्मं पुरातनम् । अयुद्धमनसो भीतानस्मान्हंसि यथेतरः ॥ ३ ॥

| | | | |
|--------------|---|---------|----------------------------|
| नारायण | “ஓ நாராயண, | भीतान् | அஞ்சிநடுங்கிக் |
| पुरातनं | அனாதியான | भस्मान् | எங்களை [கிடக்கும் |
| क्षात्रधर्मं | கூத்தரியதருமத்தை | इतरः | அவிவேகி |
| न जानीषे | நீ அறியவில்லை. | यथा | எவ்வண்ணமோ, அவ்வண்ணமே |
| अयुद्धमनसः | { போர்புரியும் எண்ணத்தைவிட் டவர்களால் | हंसि | அடித்துக்கொல்லு கிராய். |

पराञ्जुखवधं पापं यः करोत्यसुरेतरः । स हन्ता न गतः स्वर्गं लभते पुण्यकर्मणाम् ॥ ४ ॥

| | | | |
|-------------|---|------------|----------------|
| असुरेतरः | “ ‘அசுரனைத்தவிராமற்ற | हन्ता | கொலைபுரிபவனும் |
| यः | எவனொருவன் | पापं | பாபத்தில் |
| पराञ्जुखवधं | } பராங்குமகமாய் இருப்பவர்களின் வதைத்தலை | गः | வீழ்ந்தவனும் |
| करोति | | செய்கிறானே | पुण्यकर्मणः |
| सः | அவன் | स्वर्गं | சுவர்க்கத்தை |
| | | न लभते | பெறான். |

युद्धश्रद्धाऽथवा तेऽस्ति शङ्खचक्रगदाधर । अहं स्थितोऽस्मि पश्यामि बलं दर्शय यत्तव ॥

| | | | |
|--|--|---|--|
| शङ्खचक्र- गदाधर } ते युद्धश्रद्धा अस्ति अथवा अहं | “ ‘சங்கம், சக்கிரம், கதை இவைகளை உனக்கு[தரித்தவனே! போரில் பக்தி உண்டு என்கிறபக்தத்தில் நான் | स्थितः अस्मि तव बलं यत् दर्शय पश्यामि | எதிர்த்துநிற்பவனும் ஆகிறேன். உனது சௌர்யத்தை எப்படிப்பட்டதென காட்டு; கண்டறிகிறேன்.’ |
|--|--|---|--|

माल्यवन्तं स्थितं दृष्ट्वा माल्यवन्तमिवाचलम् । उवाच राक्षसेन्द्रं तं देवराजानुजो बली ॥

| | | | |
|---|---|--|--|
| बली देवराजानुजः माल्यवन्तं अचलं इव राक्षसेन्द्रं | “ ‘மறாபலிவீட்டரான உபேந்திரர் மால்யவானென்கிற மலையை போன்றவனும் ராசுஷஸோத்தமனும் | तं माल्यवन्तं स्थितं दृष्ट्वा उवाच | அந்த மால்யவானை போருக்குத்தயாராய் எதிர்த்துநிற்பவனும் கண்டு பின்கண்டபடி சொல்லியருளினார் : |
|---|---|--|--|

युष्मत्तो भयभीतानां देवानां वै मयाऽभयम् । राक्षसोत्सादनं दत्तं तदेतदनुपाल्यते ॥

| | | | |
|---|--|--|--|
| युष्मत्तः भयभीतानां देवानां मया वै राक्षसोत्सादनं | “ ‘உங்களிடத்தில் அஞ்சிநடுங்கிய தேவர்களுக்கு என்னாலேயே ராசுஷஸர்களை நிரமூல மாக்குகிறதாக்கிர | अभयं दत्तं तत् एतत् अनुपाल्यते | அபயமானது வாக்களிக்கப்பட்ட ருக்கிறது. அந்த இது பரிபாலிக்கப்படுகிறது. |
|---|--|--|--|

प्राणैरपि प्रियं कार्यं देवानां हि सदा मया । सोऽहं वो निहनिष्यामि रसातलगतानपि ॥

| | | | |
|-----------------------|---|-----------------------|--|
| मया सदा देवानां | “ ‘என்னால் எப்போதும் தேவர்களுக்கு | प्राणैः अपि प्रियं | பிராணன்களைவிட்டா கிலும் ஹிதமானது |
|-----------------------|---|-----------------------|--|

| | | | |
|------|--------------------------------|-----------------|--|
| कायं | செய்து முடிக்கவேண்டிய காரியம். | रसातल- गताम् | ரஸாதலமென்கிற கீழுலகங்களில் நான் காவதாகிய உலகத் தையடைந்தவர்க |
| हि | என்கிறபடியால் | अपि | ஆனபோதிலும் [ளாய் கொல்வேன்.] |
| सः | அந்த | निहिन्यामि | |
| अहं | நான் | | |
| वः | உங்களை | | |

देवदेवं ब्रुवाणं तं रक्षाम्बुरुहलोचनम् । शक्त्या विभेदं संक्रुद्धो राक्षसेन्द्रो भुजान्तरे ॥

| | | | |
|-------------------|----------------------------|-----------|--|
| राक्षसेन्द्रः | “ராஷ்டேஸேந்திரன் | देवदेवं | தேவதேவருமாகிய |
| संक्रुद्धः | கோபாவேசம்பூண்ட வனாய் | तं | அவரை |
| ब्रुवाणं | பேசிக்கொண்டிருப்ப வரும் | भुजान्तरे | மார்பில் |
| रक्षाम्बुरुहलोचनं | செந்தாமரைக்கண்ண ரும் | शक्त्या | சக்திஎன்னும் ஓர் ஆ யுதத்தைக்கொண்டு குத்தினான். |
| | | विभेदं | |

माल्यवहुजनिर्मुक्ता शक्तिर्घण्टाकृतस्वना । हरेरुरसि बभ्राज मेघस्थेव शतहृदा ॥ १० ॥

| | | | |
|--------------------------|--|-----------|------------------|
| घण्टाकृतस्वना | “மணிகளா லுண்டான ஒளியுடையதும் | हरेः | ஹ்ரிஹரிபின் |
| माल्यवहुज- निर्मुक्ता | } மால்யவான் கையிலி ருந்து வெளிப்புறப் சக்தி [பட்டதுமான | उरसि | மார்பில் |
| शक्तिः | | मेघस्था | மேகத்திலிருக்கிற |
| | | शतहृदा इव | மின்னலென |
| | | बभ्राज | விளங்கிற்று. |

ततस्तामेव चोत्कृष्य शक्तिं शक्तिधरमियः । माल्यवन्तं समुद्दिश्य चिक्षेपाम्बुरुहक्षणाः ॥

| | | | |
|------------------|--|----------------|----------------|
| ततः | “அப்பொழுது | अम्बुरुहक्षणाः | தாமரைக்கண்ணர் |
| शक्तिधर- मियः | } வல்லயம் பிடித்த படைஞர்களிடத் தில் அன்பு பாராட் டுகிற (அல்லது, கார் த்திகேயரிடமன்பு கொண்ட) | तं | அந்த |
| | | | शक्ति एव |
| | | उत्कृष्य | பிடுங்கி [த்தை |
| | | माल्यवन्तं च | மால்யவானையே |
| | | समुद्दिश्य | குறிவைத்து |
| | | चिक्षेप | விடுத்தார். |

स्कन्दोत्सृष्टेव सा शक्तिर्गोविन्दकरनिःसृता । काङ्क्षन्ती राक्षसं प्रायान्माहेन्द्रीवाञ्जनाचलम् ॥

| | | | |
|-----------------------|--|------------|-------------------|
| गोविन्दकर- निःसृता | } “கோவிந்தருடைய கையினின்றுவெளிப் புறப்பட்ட கார்த்திகேயக்கடவு ளால்விடப்பட்ட | अञ्जनाचलं | ஆஞ்சனமலைக்கு |
| सा | | | काङ्क्षन्ती |
| स्कन्दोत्सृष्टा | அது [புறப்பட்ட கார்த்திகேயக்கடவு ளால்விடப்பட்ட | माहेन्द्री | தேவேந்திரனதுசக்தி |
| शक्तिः | சக்தி | इव | எப்படியோ |
| इव | எப்படியோ அப் படியும் | राक्षसं | அரக்களைநோக்கி |
| | | प्रायात् | சென்றது. |

सा तस्योरसि विस्तीर्णे हारभासाऽवभासिते । अपतद्राक्षसेन्द्रस्य गिरिकूट इवाशनिः ॥

सा “அது
तस्य अந்த
राक्षसेन्द्रस्य ராக்ஷசேந்திரனுடைய
हारभासा ஹாரங்கலின் காந்தி
याல்
अवभासिते மிக்க சோதிபெற்று
விளங்குகிறதும்

विस्तीर्णे விசாரமுடையான
उरभि யார்பில்
गिरिकूटे பார்வதகிகாத்தில்
अशनिः इव அசனி: இவ
अपतत् விழுந்துவிட்டது.

तया भिन्नतनुत्वाणः प्राविशद्विपुलं तमः । माल्यवान्पुनराश्वस्तस्तस्थौ गिरिवाचलः ॥

तया “அதனால்
माल्यवान् மால்யவான்
भिन्नतनुत्वाणः உடையதுபோனகவச
ங்களை யுடையவனாய்
विपुलं எதுவும் தெரியாத
तमः மயக்கத்தை

प्राविशत् அடைந்தான் ;
पुनः அப்படியிருந்தும்
आश्वस्तः ஆயாஸம்நீர்த்தவனாய்
गिरिः इव மலைபோல்
अचलः சலியாமல்
तस्थौ எதிர்த்துநின்றான்.

ततः कार्णायिसं शूलं कण्टकैर्बहुभिर्वृतम् । प्रगृह्याभ्यहनद्देवं स्तनयोरन्तरे दृढम् ॥ १५ ॥

ततः “அச்சமயத்தில்
बहुभिः பல
कण्टकैः முடக்களோடு
वृत्तं அமையப்பெற்றதும்
कार्णायिसं இரும்பால் செய்யப்
பட்டதுமான

शूलं சூலத்தை
प्रगृह्य எடுத்தது
देवं பரமாத்மாவை
स्तनयोः ஸ்தனங்களின்
अन्तरे மத்தியில்
दृढं வலுவாக
अभ्यहनत् குத்தினான்.

तथैव रणरक्तस्तु मुष्टिना वासवानुजम् । ताडयित्वा धनुर्मात्रमपक्रान्तो निशाचरः ॥ १६ ॥

निशाचरः “அரக்கன்
रणरक्तः तु போரில் ஆவேசம்
கொண்டவனாகவே
मुष्टिना முஷ்டியால்
तथा एव அவ்வண்ணமே

वासवानुजं உபேந்திரரை
ताडयित्वा குத்தி
धनुर्मात्रं வில்லளவு
अपक्रान्तः பின்வாங்கினான்.

ततोऽम्बरे महाञ्छब्दः साधु साध्विति चोदितः ।

आहत्य राक्षसो विष्णुं गरुडं चाप्यनाडयत्

॥ १७ ॥

राक्षसः “அரக்கன்
विष्णुं விஷ்ணுவை
आहत्य அடித்துவிட்டு
च பின்னர்
गरुडं अपि கருடரையும்
अताडयत् அறைந்தான்.

ततः அப்பொழுது
अम्बरे ஆகாயத்தில்
साधु साधु ‘என்னதுணிபு’
इति என்கிற
महान् பெரிய
शब्दः च கோஷமும்
उदितः உண்டாயிற்று.

वैनतेयस्ततः क्रुद्धः पक्षवातेन राक्षसम् । व्यपोहद्वलवान्वायुः शुष्कर्णचयं यथा ॥ १८ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------------|--------------|------------------------------|
| ततः | “அப்பொழுது | राक्षसं | அரக்கனை |
| वैनतेयः | வினதையின் புதல்வர் (கருடர்) | बलवान् वायुः | சண்டமாருதம் |
| क्रुद्धः | கோபங்கொண்டவ ராய் | शुष्कर्णचयं | உலர்ந்த சரகுகளின் குவியலை |
| पक्षवातेन | இறகுகளின் காற்றி னால் | यथा | எப்படியோ அப்படி |
| | | व्यपोहत् | பறக்கடித்தார். |

द्विजेन्द्रपक्षवातेन द्रावितं दृश्य पूर्वजम् । सुमाली स्वबलैः सार्धं लङ्कामभिसुखो ययौ ॥

| | | | |
|----------------------|-----------------------------------|---------|-----------------------|
| सुमाली | “ஸுமாலி | स्वबलैः | தன் ஸைன்யங்களு டன் |
| पूर्वजं | தடயனை | सार्धं | கூடினவனாய் |
| द्विजेन्द्रपक्षवातेन | புள்ளரகின் இறகு களின் காற்றால் | लङ्कां | இலங்கையை |
| द्रावितं | விரைந்தோடுகிறவனாய் | अभिसुखः | நோக்கி |
| दृश्य | கண்டு | ययौ | சென்றான். |

पक्षवातबलोद्धूतो माल्यवानपि राक्षसः । स्वबलेन समागम्य ययौ लङ्कां द्विया वृतः ॥

| | | | |
|------------------|---|---------|--------------------|
| माल्यवान् | “மால்யவானென்ற | वृतः | பாதிக்கப்பட்டவனாய் |
| राक्षसः अपि | அரக்கனும் | स्वबलेन | தன் ஸைன்யத்திடன் |
| पक्षवातबलोद्धूतः | { இறகுகளின் காற்றின் கடுமையால் தடுமாறி யவனாய் | समागम्य | கூடி |
| द्विया | வெட்கத்தால் | लङ्कां | இலங்கைக்கு |
| | | ययौ | சென்றான். |

एवं ते राक्षसास्तेन हरिणा कमलेक्षण । बहुशः संयुगे भग्ना हतप्रवरनायकाः ॥ २१ ॥

| | | | |
|----------|------------------|----------|-----------------------------------|
| कमलेक्षण | “ஓ தாமரைக்கண்ணை! | बहुशः | அனேகமாய் |
| ते | அந்த | हतप्रवर- | கொல்லப்பட்ட |
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் | नायकाः | { முதன்மையான ஸேனாவீரர்களை |
| तेन | அந்த | | புடையவர்களாய் |
| हरिणा | ஹரியால் | भग्नाः | தோல்வியடைந்தவர் களாக ஆனார்கள். |
| संयुगे | போரில் | | |
| एवं | மேற்கண்டவண்ணம் | | |

अशक्रुवन्तस्ते विष्णुं प्रतियोद्धुं भयार्दिताः । त्यक्त्वा लङ्कां गता वस्तुं पातालं सहपत्नयः ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------|-----------|------------------------------|
| ते | “அவர்கள் | सहपत्नयः | பத்னிமார்கள் ஸமே தர்களாய் |
| विष्णुं | விஷ்ணுவை | लङ्कां | இலங்கையை |
| प्रतियोद्धुं | திரும்பி எதிர்த்து போர்புரிய | त्यक्त्वा | விட்டு |
| अशक्रुवन्तः | திறமையற்றவர்களாய் | पातालं | பாதாளலோகத்தில் |
| भयार्दिताः | அஞ்சி அகங்குலைந்த வர்களாய் | वस्तुं | வாஸம்செய்ய |
| | | गताः | போய்ச்சேர்ந்தார்கள். |

सुमालिनं समासाद्य राक्षसं रघुसत्तम । स्थिताः प्रख्यातवीर्यास्ते वंशे सालकटङ्कटे ॥

ரஃசுததம
சாலகடங்குடே
வ்ஷே
புஷ்யாதவீர்யா:
“ரஃ ததம!
ஸாலகடங்குட
வம்சத்தில் [என்கிற
பிரஸித்திபெற்ற வீரி
யமுடையவர்களாய்

தே
சுமாலின
ரஃசு
சமாசாடி
ஸ்திதா:
அவர்கள்
ஸுமாலி என்ற
அரக்களை
அண்டி
வாஸஞ்செய்தார்கள்.

ये त्वया निहतास्ते तु पौलस्त्या नाम राक्षसाः ।

सुमाली माल्यवान्माली ये च तेषां पुरःसराः ॥

सर्वे तेभ्यो महाभाग रावणाद्बलवत्तराः

॥ २४ ॥

மஹாபாக
ஸ்யா
நிஹதா:
ரஃசுபா:
யே
தே சர்வே
புலஸ்த்யா
நாந }
“மஹாபாக்யவானே!
தேவீரரால்
ஸம்ஹரிக்கப்பட்ட
அரக்கர்கள்
எவர்களோ,
அவர்கள் எல்லோரும்
புலஸ்தியவம்சத்தில்
உண்டானவர்கள்.
(பெளஸ்தியரெனப்
பெயர் பூண்டவர்கள்.)
ஸுமாலி
ஸுமாலி

மாலயவான்
மாலி என்கிறவர்கள்
எவர்களோ
அவர்கள்,
அவர்களுக்கு
மேம்பட்டவர்கள்.
அவர்களைக்காட்டிலும்
இராவணனைக்காட்டி
லும்கூட
அதிக ஆற்றலுடைய
வர்கள்.

न चान्यो राक्षसान्हन्ता सुरारिन्देवकण्टकान् । ऋते नारायणं देवं शङ्खचक्रगदाधरम् ॥

தேவகண்தகானு
சுராரிநு
ரஃசுசானு
ஹந்தா
ஷங்குசக்ரகதாதரம்
“தேவர்களைத்துன்
புறுத்தும்
தேவசத்ருக்களாகிய
அரக்கர்களை
ஒழிப்பவர்,
சங்குசக்ரகதாதரம்

ஃருதே
நாராயணம்
தேவ
அந்ய: ச
ந
பரமாத்மாவுமாகிய
ஸ்ரீமன்நாராயணனை
தவிர
வேறொருவரும்
இல்லை.

भवान्नारायणो देवश्चतुर्बाहुः सनातनः । राक्षसान्हन्तुमुत्पन्नो ह्यजेयः प्रभुरव्ययः ॥ २६ ॥

ரஃசுசானு
ஹந்து
அபயந:
भवान् हि
सनातनः
चतुर्बाहुः
“அரக்கர்களை
ஸம்ஹரிக்க
அவதரித்தவராகிய
தேவீர்தான்
ஆதியந்தமற்றவரும்,
நான்கு கைகளையுடைய
வரும்,

அஜேய:
புஸு:
தேவ:
அவ்யய:
நாராயண:
யாரா லும் ஜயிக்க
(பூடியாதவரும்,
ஸகல லோகநாயகரும்,
பரமாத்மாவும்,
நிர்விக்கற்புருமாகிய
ஸ்ரீமன்நாராயணன்.”

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे अष्टमः सर्गः



நவம: சரீ:—ஒன்பதாவது ஸர்க்கம். ॥ ௨ ॥

ராகவாணசு:—ராவணன் முதலியவர்களின் உத்பத்தி.

கெனசிவ் காலேன சுமாலி நாம ராக்ஸ: | ரசாதலாந்மர்த்யலோக் சரீ வீ விவசார ஹ ॥

| | | | |
|---------------|----------------|------------|-------------------|
| அய | “அப்பால் | மர்த்யலோக் | மண்ணுலகில் |
| கெனசிவ் காலேன | ஒருஸமயத்தில் | சீவீ வீ | எங்கும் |
| சுமாலி நாம | ஸுமாலி என்கிற | விவசார ஹ | திரிந் துபார்த்து |
| ராக்ஸ: து | அரக்கனும் | | |
| ரசாதலாந் | ரஸாதலமென்கிற | | |
| | உலகத்தை விட்டு | | வந்தான். |

நிலஜிமூதசங்காஸஸ்தபகாஷ்நகுண்டல: | கந்யா டுஹிதர் ஶூஹ விநா பங்மிவ ஶ்ரீயம் ॥2॥
ராக்ஸேந்ர: ச து யடா வ்யசரத்ரீ ஶஹிதலம் | தடாஸபயசு வசுஷ்நத் புஷ்பகேண ஶநேஷ்வரம் ॥

| | | | |
|------------|-----------------|-------------|---------------------|
| நிலஜிமூத-} | “நிலஜேகம்போன்ற | ஹ | போன்றவரும் |
| சங்காஸ: | மேனியுடையவனும் | கந்யா ச | கன்னிகையுமான |
| தஸகாஷ்ந- | பளபளப்பான சுவர் | டுஹிதர் து | குமாரத்தியையும் |
| குண்டல: | ணகுண்டலங்களை | ஶூஹ | கூட அழைத்துக் |
| | அணின்தவனுமான | | கொண்டு |
| ச: | அந்த | வ்யசரத் | திரிந் துகொண்டிருந் |
| ராக்ஸேந்ர: | ராக்ஸேந்ரின் | தடா | அப்பொழுது திராணை; |
| யடா | எப்பொழுது | ஶநேஷ்வர் | சுபேரணை |
| மஶிதல் | பூலோகத்தில் | புஷ்பகேண வீ | புஷ்பகவிமானத்தி; |
| பங் | தாமரைமலரை | | லேறி |
| விநா | விட்டுவந்த | வசுஷ்நத் | போய்க்கொண்டிருந் |
| ஶ்ரீயம் | மஹாலக்ஷ்மியை | அஸ்யத் | கண்டான். [பவனாய் |

த் ட்ரங்ஸரஸங்காஸ ச்வசுஷ்நத் தபநோபமம் | ரசாதல் ப்ரவீஷ்: சந்மர்த்யலோகாத்ஸவீஸ்ய: ॥
ஹிதார்தீ சிந்தயாமாஸ ராக்ஸானா ஶஹாமதி: ॥ ௪ ॥

| | |
|--|--|
| கிக்ரத் ஶ்ரீய இத்யேவ் வர்ஷமஹி கய் வயம் | அதாவ்ரவீஸ்யுதா ரக்ஸ: கீகரீயா நாம நாமத: ॥ |
| மஶாமதி: | “மஹாமேதாஹியாகிய |
| ரக்ஸ: | அரக்கன் |
| த் | அவரை |
| அமரஸங்காஸ | தேவர்களுக்குச்சம |
| | மானவராயும் |
| சுஷ்நத் | ஒருவனுடைய அதிகா |
| | ரத்திற்குட்படாதவ |
| | ராகவும் |
| தபநோபம் | ஸூர்யனுக்குச்சம |
| | மானவராயும் |
| ட்ரங் | கண்டு |
| சவீஸ்ய: | வியப்புற்றவனாய் |
| மர்த்யலோகாத் | மண்ணுலகை விட்டு |
| ரசாதல் | ரஸாதலமென்கிற |
| | லோகத்திற்கு |

| | |
|---------------|--------------------|
| प्रविष्टः इन् | வந்துசேர்க்கவனாய் |
| राक्षसानां | ‘ராக்கூஸர்களுடைய |
| हितायै | லிபத்தின் பொருட்டு |
| श्रेयः | சேஷமத்தை |
| कृतं | விளைவிப்பது |
| किं | எப்படி? |
| वयं | நாம் |
| कथं | எதைச் செய்தால் |
| वधेमहि | தலை எடுப்போம்’ |
| इति | என்று |

पुत्रि प्रदानकालोऽयं यौवनं तेऽनिवर्तते ।

| | |
|------------|-------------------------------------|
| पुत्रि | “ஓ குழந்தாய்! |
| ते | உனக்கு |
| यौवनं | யௌவனம் |
| अतिवर्तते | அதிகமாகக்கூறும். |
| अयं | இது |
| प्रदानकालः | கன்னிகா தானத்திற் கு ஏற்ற காலம். |
| वरैः | தகுந்த வரங்களால் |

त्वत्कृते च वयं सर्वे यन्त्रिता धर्षुद्धयः ।

| | |
|-------------|---|
| पुत्रिके | “ஓ குழந்தாய்! |
| त्वक्कृते | உன் விஷயத்தில் |
| वयं | நாங்கள் |
| सर्वे च | எல்லோருமே |
| धर्मबुद्धयः | உசிதமானவைகளைச் செய்யவேண்டுமென ஸங்கல்பம் கொண் டவர்களாய் |

कन्यापितृत्वं दुःखं हि सर्वेषां मानकाङ्क्षिणाम् ॥ ८ ॥

न ज्ञायते च कः कन्यां वरयेदिति कन्यके ॥ ९ ॥

| | |
|----------------|----------------------------------|
| कन्यके | “கன்னிகையே! |
| मानकाङ्क्षिणां | மானத்தில் கருத் துள்ளவர்கள் |
| सर्वेषां | எல்லோருக்கும் |
| कन्यापितृत्वं | கன்னிகைகளுக்குத் தந்தையாகுதல் |
| दुःखं च | துக்கமெய்யாம். |

| | |
|------------|------------------------------|
| चिन्तयामास | தனக்குள் ஆலோசனை செய்தான். |
| अथ | அதன்மேல் |
| नामतः | பெயரால் |
| कैकसीं | கைகவீ என்று |
| नाम | அழைக்கப்பட்ட |
| सुतां | குமாரத்தியைப் பார்த்து |
| एवं | பின் கண்டபடி. |
| अवधीत् | உரைசெய்தான்: |

प्रत्याख्यानाच्च भीतैस्त्वं न वरैः प्रतिगृह्यसे ॥

| | |
|-----------------|--|
| प्रत्याख्यानात् | தாழ்ந்த ஸ்திதியிலிரு ப்பதால் |
| भीतैः | சங்கைகள் கொண்ட வர்களால் |
| च | இருப்பதைப்பற்றி |
| त्वं | நீ |
| न प्रतिगृह्यसे | { பாணிக்ரஹணம் செய்யப்படாமலிருக் கின்றனை. |

यस्मिन्नाः प्रागुपட்டுக்கொண்டி

| | |
|-------------|-----------------------------------|
| यस्मिन्नाः | பாடுபட்டுக்கொண்டி ருக்கிறோம். |
| त्वं हि | நீயே |
| साक्षात् | பரத்யகூஷமான |
| श्रीः | மஹாலக்ஷ்மி |
| इव | போன்றவளாய் |
| सर्गुणोपेता | ஸர்வகுணங்களும் அமையப்பெற்றவள். |

| | |
|-----------|------------------------|
| हि | ஏனெனில் |
| कन्यां | கன்னிகையை |
| कः | எவன் |
| वरयेत् | பாரையாகக்கொரு வான்? |
| इति | என்கூற்து |
| न ज्ञायते | தெரிவதில்லை. |

मातुः कुलं पितृकुलं यत्र चैव प्रदीयते । कुलत्रयं सदा कन्या संशये स्थाप्य तिष्ठति ॥

| | |
|------------|--------------------------------|
| कन्या | “ ஒருபெண் |
| मातुः | தாயின் |
| कुलं | குலத்தையும் |
| पितृकुलं | தந்தையின் குலத்தை |
| यत्र | எங்கு [யும் |
| प्रदीयते च | வாழ்க்கைப்படுகிற ளோ அதையும் |

| | |
|----------|--------------------|
| एव | இப்படியாகிய |
| कुलत्रयं | மூன்றுகுலங்களையும் |
| सदा | எக்காலத்திலும் |
| संशये | கவலையில் |
| स्थाप्य | இருக்கச்செய்து |
| तिष्ठति | இருக்கின்றாள். |

सा त्वं मुनिवरं श्रेष्ठं प्रजापतिकुलोद्भवं । भज विश्रवसं पुत्रि पौलस्त्यं वरय स्वयम् ॥

| | |
|-------------------|---------------------------------------|
| पुत्रि | “ புதல்வி ! |
| सा | அந்த |
| त्वं | நீ |
| मुनिवरं | முனிவர்களில் சிறந்தவரும் |
| श्रेष्ठं | மஹாபாக்யவானும் |
| प्रजापतिकुलोद्भवं | பிரம்மாவின் குலத் தில் பிறந்தவரும் |

| | |
|-----------|------------------------------|
| पौलस्त्यं | புலஸ்தியரதுபுதல் வருமாகிய |
| विश्रवसं | விசுவஸை |
| भज | சரணாய்ப் பற்று |
| स्वयं | நீயாகவே |
| वरय | கணவனாகப்பெறு. |

ईदृशास्ते भविष्यन्ति पुत्राः पुत्रि न संशयः । तेजसा भास्करसमो यादृशोऽयं धनेश्वरः ॥

| | |
|-----------|--------------------|
| पुत्रि | “ புதல்வி ! |
| अयं | இந்த |
| धनेश्वरः | சுபேரன் |
| तेजसा | தேஜஸால் |
| भास्करसमः | ஸூரியனுக்குநிகராய் |

| | |
|------------|-----------------------------|
| यादृशः | எப்படி. விளங் குகிறானே ; |
| ईदृशाः | அத்தன்மையான |
| पुत्राः | குமாரர்கள் |
| ते | உனக்கு |
| भविष्यन्ति | பிறப்பார்கள் ; |
| संशयः न | இதற்கையமில்லை. |

सा तु तद्वचनं श्रुत्वा कन्यका पितृगौरवात् । तत्रोपागम्य सा तस्यौ विश्रवा यत्र तप्यते ॥

| | |
|-------------|------------------------------------|
| सा कन्यका | “ அந்தக் கன்னிகை |
| तद्वचनं | அவர் வார்த்தைக்கு |
| पितृगौरवात् | தந்தையினிடத்திலுள் ள கௌரவத்தால் |
| तु | அப்போதே |
| श्रुत्वा | உடன்பட்டு |
| विश्रवा | விசுவஸ் |

| | |
|---------|--------------------------------|
| यत्र | எவ்விடத்தில் |
| तप्यते | தவம்புரிந்துகொண் டிருந்தனரோ |
| तत्र | அவ்விடத்திற்கு |
| उपागम्य | சென்று |
| तस्यौ | நேரில் தரிசனம் பண்ணினாள். |

एतस्मिन्नन्तरे राम पुलस्त्यतनयो द्विजः । अग्निहोत्रमुपातिष्ठत्तुर्थ इव पावकः ॥ १४ ॥

| | |
|--------------|-----------------|
| राम | “ ஸ்ரீராம ! |
| एतस्मिन् | இந்த |
| अन्तरे | ஸமயத்தில் |
| पुलस्त्यतनयः | புலஸ்த்யகுமாரான |
| द्विजः | பிரம்மணர் |
| चतुर्थः | நான்காவது |

| | |
|-------------|--------------------------------|
| पावकः | அக்னி |
| इव | போன்றவராய் |
| अग्निहोत्रं | அக்னிறோ தர்மென் கிற கர்மாவை |
| उपातिष्ठत् | செய்துகொண்டி. ருந்தார். |

सा तु तां दास्यां वेलं विचिन्त्य पितृगौरवात् ।
उपसृत्याग्रतस्तस्य चरणाधोमुखी स्थिता ॥
विलिखन्ती मुहुर्भूमिमुद्गुप्रेण भामिनी

॥ १५ ॥

सा “अन्त
भामिनी मங்கை நல்லாளர் ;
तां अन्त
वेलां வேளையை
दास्यां உக்கிரமானதாய்
विचिन्त्य கண்டுக்கொண்டு
तु ஆனபோதிலும்
पितृगौरवात् தந்தையினிடத்திலுள்ள
तस्य अवருக்கு
अग्रतः எதிரில்

उपसृत्याग्रतस्तस्य अணுகி
चरणाधोमुखी { தலைகுனிந்து கால்க
नाभिर्भूमिमुद्गुप्रेण } னைப்பார்த்துக்கொ
स्थिता கண்டிருப்பவளாய்
கால்கட்டை விரல்
अग्रतः அடிக்கடி [துனியினால்
मुहुः பூமியை
भूमिं கீறிக்கொண்டிருப்பவ
विलिखन्ती ளாகவும்
स्थिता கட்டில்நாடும்வண்ண
மாய் நின்றுவிட்டாள்.

स तु तां प्रेक्ष्य सुश्रोणीं पूर्णचन्द्रनिभाननाम् । अववीत्परमोदारो दीप्यमानां स्वतेजसा ॥

स्वतेजसा “தன் கார்தியால்
दीप्यमानां ஒளிவீச்ச்செய்கிறவ
पूर्णचन्द्रनिभाननां முழுமதிபோன்ற
सुश्रोणीं முகமுடையவனும்
तां அழகிய இடையுடைய
அவளை [வளுமான

अववीत् அவர்
प्रेक्ष्य கண்ணுற்று
तु அவள் விஷயத்தில்
परमोदारः பரமகருணைகூர்ந்தவ
राय
अववीत् பின்கண்டபடி
வினாவீனர் :

भद्रे कस्यासि दुहिता कुतो वा त्वमिहागता । किं कार्यं कस्य वा हेतोस्तस्वतो ब्रूहि शोभने ॥

शोभने “வடிவமுகுவாய்ந்த
भद्रे நங்காய்!
एवं நீ
कस्य दुहिता असि யாருடைய பெண் ?
कुतो எங்கிருந்து
कस्य எவருடைய
हेतोः நியமனத்திற்காக

इह இங்கு
आगता வந்தனை ?
कार्यं எண்ணிவந்த கார்யம்
किं என்ன ?
वा நானறிந்துகொள்ள
तस्वतो वा ब्रूहि ‘விருப்புக்கிறேன்.
உள்ளபடியே சொல்.’

एवमुक्ता तु सा कन्या कृताञ्जलिरथाब्रवीत् । आत्मप्रभावेन मुने ज्ञातुमर्हसि मे मतम् ॥

एवं “இவ்வாறு
उक्ता கேட்கப்பட்டவளான
सा अन्त
कन्या கன்னிகை
तु இப்பொழுது
कृताञ्जलिः அஞ்சலிபந்தம் பண்
अथ இப்படி [ணினவளாய்
अब्रवीत् பதிலுரைத்தாள் ;

आत्मप्रभावेन मुने ‘முனிவரே,
आत्मप्रभावेन தங்களது ஸர்வஞான
मे எனது
मतं கருத்தை
ज्ञातुं அறிந்துகொள்ள
अर्हसि தயைபுரியும்.

किं तु मां विद्धि ब्रह्मर्षे शासनात्पितुरागताम् । कैकसी नाम नान्नाऽहं शेषं त्वं ज्ञातुमर्हसि ॥

| | | | |
|------------|----------------|-----------|-----------------------------|
| ब्रह्मर्षे | “ பிராமரிஷே! | कैकसी नाम | கைகவீ என அழைக்கப்படுகிறவள். |
| मां | என்னை | शेषं | சொல்லப்படாமல் எஞ்சியதை |
| पितुः | தந்தையின் | किं तु | எப்படியாகிலும் |
| शासनात् | ஆக்கினையால் | ज्ञातुं | தெரிந்துகொள்ள |
| आगतां | வந்திருப்பவளாக | एवं | தேவரீர் |
| विद्धि | அறியும். | अर्हसि | அருள்புரியும்.’ |
| अहं | நான் | | |
| नान्ना | பெயரால் | | |

स तु गत्वा मुनिर्ध्यानं वाक्यमेतदुवाच ह । विज्ञातं ते मया भद्रे कारणं यन्मनोगतम् ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-----------|------------------------|
| सः मुनिः | “ அந்த முனிவர் | तु | அதன்பயலும் |
| एतत् वाक्यं | இந்த மொழியை | ते | உனது |
| उवाच | சொல்லியருளினார் | मनोगतं | உள்ளத்திலிருக்கின்ற |
| ह | காண்! | कारणं | கருத்து. |
| भद्रे | ‘நங்காய், | यत् | எதுவோ அது |
| ध्यानं | ஞான திருஷ்டியின்றி | मया | என்னால் |
| गत्वा | ஆசிரயித்து [வை | विज्ञातम् | அறிந்துகொள்ளப் பட்டது. |

सुताभिलाषो मत्सस्ते मत्प्रमातङ्गगामिनि । दारुणायां तु वेलायां यस्मात्त्वं मासुपस्थिता ॥
शृणु तस्मात्सुतान्भद्रे यादृशाञ्जनयिष्यसि । दारुणान्दारुणाकारान्दारुणाभिजनप्रियान् ॥
प्रसविष्यसि सुश्रोणि राक्षसान्कूरकर्मणः । सा तु तद्वचनं श्रुत्वा प्रणिपत्याब्रवीद्वचः ॥२३॥

| | | | |
|---------------------------------|--|---------------------------|---|
| मत्प्रमातङ्ग- गामिनि } ते | “மதயானைபோன்ற கமனமுடையவளே! உனக்கு | शृणु | { அதை செரல்வாக என்னிடமிருந்து கவனித்துக்கேள். |
| मत्तः | என்னிடமிருந்து | दारुणा | கொடியவர்களுமும், |
| सुताभिलाषः | புத்திரப்பெருக்கு வேண்டுமென்பது. | दारुणाकारान् | பயங்கரமான உருவம் கொண்டவர்களுமும், |
| तु | ஆனால் | दारुणाभि- जनप्रियान् } | கொடியபரிஜனங் களிடத்தில் அன் புள்ளவர்களுமும், |
| एवं | நீ | कूरकर्मणः | கொடியதொழில்களை புரிபவர்களுமான |
| मां | என்னை | राक्षसान् | அரக்கர்களை |
| दारुणायां | கொடிய | प्रसविष्यसि | பிரஸவிப்பாய்.’ |
| वेलायां | வேளையில் | सा | அவள் |
| उपस्थिता | வந்துசேர்ந்தாய். | तद्वचनं | அவர்மொழியை |
| यस्मात् तस्मात् | இந்தக்காரணத்தினால், | श्रुत्वा तु | கேட்டதும் |
| सुश्रोणि | இடையழகுடைய | प्रणिपत्य | அடிபணியிந்து னே |
| भद्रे | நங்காய், | वचः | பதிலை [வித்து |
| यादृशान् | எத்தன்மையரான | अब्रवीत् | மொழிந்தாள் : |
| सुतान् | புதல்வர்களை | | |
| जनयिष्यसि | பெறப்போகிறாயோ | | |

भगवर्चादृशान्पुत्रांस्त्वत्तोऽहं ब्रह्मवादिनः । नेच्छामि सुदुराचारान्प्रसादं कर्तुमर्हसि ॥२४॥

| | | | |
|--------------|-------------------|-------------|--------------------|
| भगवन् | “பகவானே! | सुदुराचारन् | நீயொழுக்கங்களை |
| ब्रह्मवादिनः | பிரஹ்மவித்தான | पुत्रान् | புதல்வர்களை [யுடைய |
| त्वचः | தேவாரீரிடமிருந்து | न इच्छामि | வாரித்தேனில்லை. |
| अहं | நான் | प्रसादं | கிருபை |
| ईदृशान् | இப்படிப்பட்ட | कर्तुं | செய்ய |
| | | अर्हसि | மனங்கொள்ளும்.’ |

कन्यया त्वेवमुक्तस्तु विश्रवा मुनिपुङ्गवः । उवाच कैकसी भूयः पूर्णेन्दुरिव रोहिणीम् ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|------------|------------------|
| मुनिपुङ्गवः | “முனிச்சீரேஷ்டராகிய | पूर्णन्दुः | பூர்ணசந்திரன் |
| विश्रवाः | விசுவன் | रोहिणीं | ரோஹிணியைப் |
| कन्यया | கன்னிகையினால் | | பார்த்து |
| एवं | மேற்கண்டவண்ணம் | इव च | எப்படியோ, |
| उक्तः | பிரார்த்திக்கப்பட்ட | | அப்படியே |
| तु | அதன்மேல் [வராய் | भूयः | திரும்பவும் |
| कैकसीं | கைகவியைப்பார்த்து | उवाच | சொல்லியருளினார்: |

अथाब्रवीन्मुनिस्तत्र पश्चिमो यस्तवात्मजः । मम वंशानुरूपः स धर्मात्मा च भविष्यति ॥

| | | | |
|----------|------------------|-------------|------------------|
| मुनिः | “முனி | यः | எவனோ |
| तव | இந்தவிஷயத்தில் | सः च | அவன்மட்டும் |
| अथ च | சுபமாயிப்படி | मम | எனது |
| अब्रवीन् | சொல்லியருளினார்: | वंशानुरूपः | குலத்திற்கேற்ற |
| तव | ‘உனக்கு | | வனையும் |
| पश्चिमः | கடைசி | धर्मात्मा च | தருமா த்மாவாயும் |
| आत्मजः | புதல்வன் | भविष्यति | விளங்குவான்.’ |

एवमुक्त्वा तु सा कन्या राम कालेन केनचित् । जनयामास बीभत्सं रक्षोरूपं सुदारुणम् ॥

दशग्रीवं महादंष्ट्रं नीलाञ्जनचयोपमम् । ताम्रोष्ठं विशतिभुजं महास्यं दीप्तमूर्धनम् ॥ २८ ॥

| | | | |
|-------------------------|---------------------------|-------------------------|---|
| राम | “ஸ்ரீராம! | विशतिभुजं | இருபதுகைகளை யுடைய |
| एवं | இவ்விதம் | सुदारुणं | மிகப்பெரிய [யவனும் |
| उक्त्वा | ஆக்ஞாபிக்கப்பட்ட | नीलाञ्जन- } चयोपमं } | அன்பேபேதிக்குவிய லையொத்த மேனிய னும் |
| सा कन्या | அந்தக் கன்னிகை | बीभत्सं | பார்க்க பயங்கரமான |
| केनचित् } कालेन तु } | சிலகாலம் சென்ற பின்னர் | | வனும் |
| दीप्तमूर्धनं | எரிநிறமயிருடையவ | रक्षोरूपं | ராக்ஷஸ உருவமுடைய |
| महादंष्ट्रं | கோரப்பல்லனும்[னும் | | யவனுமான |
| ताम्रोष्ठं | தாமிரநிற உதடு | दशग्रीवं | பத்துத்தலையளை |
| | களையுடையவனும் | | (இராவணனை) |
| महास्यं | மிகப்பெருத்தவாயை | जनयामास | பெற்றான். |
| | யுடையவனும் | | |

तस्मिञ्जाते तु तत्काले सज्वालकबलाः शिवाः । ऋव्यादाश्चापसव्यानि मण्डलानि प्रचक्रमुः॥
ववर्ष रुधिरं देवो मेघाश्च खरनिस्वनाः । न प्रभाति च खे सूर्यो महोल्काश्चापतन्क्षितौ ॥

| | |
|-------------|--|
| तस्मिन् | “அவன் |
| जाते | பிறந்த |
| तत्काले | அந்த வேளையில் |
| शिवाः तु | குள்ள நரிகளும் |
| ऋव्यादाः च | { பச்சையான மாம்பலத் தைத்தின்னும் மிரு கங்களும் |
| सज्वालकबलाः | { வாய்களால் அக்னி யை கக்குகின்றவை களாய் |
| अपसव्यानि | அப்பிரதக்ஷணமாய் |
| मण्डलानि | வட்டமிடுபவைகளாய் |
| प्रचक्रमुः | எங்கும் ஸஞ்சரித்தன. |

| | |
|------------|----------------------------|
| देवः | இந்திரன் |
| रुधिरं | உதிரத்தை |
| ववर्ष | பொழிந்தான். |
| मेघाः च | மேகங்களும் |
| खरनिस्वनाः | பயங்கரமாய்க் கர்ஜித்தன. |
| खे | ஆகாயத்தில்தான் |
| सूर्यः च | சூர்யனும் |
| न प्रभाति | பிரகாசிக்கவில்லை. |
| क्षितौ | பூமியில் |
| महोल्काः च | பெரிய கொள்ளிக் கட்டைகள் |
| आपतन् | வீழ்ந்தன. |

अथ नामाकरोत्तस्य पितामहसमः पिता । दशग्रीवः प्रसूतोऽयं दशग्रीवो भविष्यति ॥

| | |
|-----------|----------------------------|
| पितामहसमः | “பிரம்மாவுக்குச் சமமான |
| पिता | தந்தை |
| अयं | இவன் |
| दशग्रीवः | பத்துத்தலைகளை யுடையவனாக |

| | |
|----------|--------------------|
| प्रसूतः | பிறந்திருக்கிறான், |
| दशग्रीवः | தசகர்வனென |
| भविष्यति | விளங்கப்போகிறான், |
| तस्य | அவனுக்கு [என்று |
| अथ नाम | இதேபெயரை |
| अकरोत् | இட்டார். |

तस्य त्वनन्तरं जातः कुम्भकर्णो महाबलः । प्रमाणाद्यस्य विपुलं प्रमाणं नेह विद्यते ॥

| | |
|-----------|---------------------------|
| यस्य | “எவனுடைய |
| प्रमाणात् | ஆகிருதியைக்காட்டி லும் |
| विपुलं | பெரிய |
| प्रमाणं | ஆகிருதி |
| इह | இவ்வுலகில் |

| | |
|--------------|--------------------------|
| न विद्यते तु | காணப்படவில்லையோ; அந்த |
| महाबलः | மஹாபலிஷ்டனான |
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் |
| तस्य | அவனுக்கு |
| अनन्तरं | நேர்கணிஷ்டனாக |
| जातः | பிறந்தான். |

ततः शूर्पणखा नाम सञ्ज्ञे विकृतानना । विभीषणश्च धर्मात्मा कैकस्याः पश्चिमः सुतः ॥

| | |
|--------------|----------------------|
| ततः | “அவனுக்கப்பால் |
| विकृतानना | கோரமுகமுடையவ ளாய் |
| शूर्पणखा नाम | சூர்ப்பணகை என்ப |
| सञ्ज्ञे | பிறந்தாள். [வள் |

| | |
|-----------|----------------|
| कैकस्याः | கைகலிக்கு |
| धर्मात्मा | தருமாத்மாவாகிய |
| विभीषणः च | விபீஷணர் தான் |
| पश्चिमः | கடைசியான |
| सुतः | ஸந்தானம். |

तौ तु तत्र महारण्ये ववृधाते महोजौ । कुम्भकर्णदशग्रीवो लोकोद्देगकरो तदा ॥ ३४ ॥

தடா “அப்பொழுது
தல அந்த
மஹாரண்யே பெருங்கானில்
கும்பகர்ணதாசிரீவோ கும்பகர்ணன் தசகரீ
வனென்கிற

தौ तु அவ்வீருவர்களும்
महोजौ மஹாபலிஷ்டர்களாய்
लोकोद्देगकरो } உலகங்களை எல்லாம்
அலறச்செய்ய
வர்களாய்
ववृधाते வளர்த்தனர்.

कुम्भकर्णः प्रमत्तस्तु महर्षीन्धर्मवत्सलान् । त्रैलोक्यं भक्षयन्नित्यं संतुष्टो विचचार ह ॥

கும்பகர்ண: து “கும்பகர்ணனே
வெனில்
நிலம் எப்பொழுதும்
धर्मवत्सलान् தருமத்தின்பற்றுள்ள
महर्षीन् மஹரிஷிகளை
भक्षयन् புகித்துக்கொண்டு

सन्तुष्टः ஸந்துஷ்டிகொண்ட
வனாய்
प्रमत्तः மிக்கமதக்கொண்ட
வனாய்
दैलोक्यं ह மூவுலகத்திலுமே
विचचार திரிந்துக்கொண்டி-
ருந்தான்.

विभीषणस्तु धर्मात्मा नित्यं धर्मे व्यवस्थितः । स्वाध्यायनियताहार उवास विजितेन्द्रियः ॥

விभीஷண: து “வபிஷணரோ
வெனில்
धर्मात्मा தருமாத்மாவாய்
नित्यं எந்தவேளையிலும்
विजितेन्द्रियः } இந்திரியங்களை
ஜயித்து மனம் ஒரு
மைப்பட்டவராய்

धर्मे தருமத்தில்
व्यवस्थितः சஞ்சலமற்றபற்-
றுடையவராய்
स्वाध्याय- } வேதமோதுவதிலும்,
नियताहारः } உணவிலும், நியம
முடையவராய்
उवास வாழ்ந்துவந்தார்.

अथ वैश्रवणो देवस्तत्र कालेन केनचित् । आगतः पितरं द्रष्टुं पुष्पकेण धनेश्वरः ॥३७॥

அய “இப்படியிருக்கையில்
केनचित् कालेन ஒருசமயத்தில்
धनेश्वरः தனேச்வரனான
देवः தேவனாகிய
वैश्रवणः குபேரன்

पितरं தந்தையை
द्रष्टुं தரிசிக்க
पुष्पकेण புஷ்பகவிமானத்தி-
லேறிக்கொண்டு
तत्र आगतः அங்குவந்தான்.

तं दृष्ट्वा कैकसी तत्र ज्वलन्तमिव तेजसा । आस्थाय राक्षसीं बुद्धिं दशग्रीवमुवाच ह ॥

கைகசீ “கைகவல்
तल அச்சமயத்தில்
तं அவளை
तेजसा கார்தியால்
ज्वलन्तं அக்கினியை
इव போலிருக்கிறவனாய்

दृष्ट्वा கண்ணுற்று
राक्षसीं பேய்
बुद्धिं आस्थाय எண்ணைத்தைக்கொண்டு
दशग्रीवं ह தசகரீவனையே
उवाच பார்த்து
இப்படிபேசினான்;

पुत्र वैश्रवणं पश्य भ्रातरं तेजसा वृत्तम् । भ्रातृभावे समे चापि पश्यात्मानं त्वमीदृशम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------|-----------|-----------------|
| புத்ர | “குழந்தாய்! | ईदृशं | இப்படி |
| वैश्रवणं | குடோரனை | वृत्तं | விளங்குகின்ற |
| पश्य | பார். | भ्रातरं | ஸஹோதரனையும் |
| भ्रातृभावे | ஸஹோதர பாவத்தில் | आत्मानं च | உன்னையும் |
| समे | ஸமமானவர்கள். | एवं अपि | நீயே |
| तेजसा | காந்தியால் | पश्य | ஆராய்ச்சிசெய்து |
| | | | அறிந்துகொள்ளு. |

दशग्रीव तथा यत्नं कुरुष्वामितविक्रम । यथा त्वमसि मे पुत्र भव वैश्रवणोपमः ॥ ४० ॥

| | | | |
|-------------|------------------|---------|--------------|
| अमितविक्रम | “அளவுக்குமிஞ்சின | भव | ஆகு. |
| | பராக்கிரமங்கொண்ட | यथा | எப்படியானால் |
| दशग्रीव | தசகரீவ! | एवं | நீ |
| मे | என் | तथा | இப்படி. |
| पुत्र | மகனே! | असि | ஆகுவாயோ அந்த |
| वैश्रवणोपमः | வைசுவணனைப் | यत्नं | உபாயத்தை |
| | போலிருப்பவனாய் | कुरुष्व | மேற்கொள்ளு.’ |

मातुस्तद्वचनं श्रुत्वा दशग्रीवः प्रतापवान् । अमर्षमतुलं लेभे प्रतिज्ञां चाकरोत्तदा ॥ ४१ ॥

| | | | |
|------------|----------------|--------------|-------------------|
| प्रतापवान् | “பிரதாபவானாகிய | अतुलं | அளவுக்கு மிஞ்சின |
| दशग्रीवः | தசகரீவன் | अमर्षं | பொறாமைபைய |
| मातुः | தாயினது | लेभे | அடைந்தான். |
| तद्वचनं | அந்தப்பேச்சை | प्रतिज्ञां च | பிரதிக்கீழையையும் |
| श्रुत्वा | கேட்டு | अकरोत् | பின் கண்டபடி |
| तदा | அப்போது | | செய்தான் : |

सत्यं ते प्रतिजानामि भ्रातृतुल्योऽधिकोऽपि वा ।

भविष्याम्यचिरान्मातः सन्तापं त्यज हृद्गतम्

॥ ४२ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|--------------|----------------|
| मातः | “தாயே! | अधिकः अपि वा | மேம்பட்டவனாகவா |
| ते | உம்மிடம் | | வது |
| सत्यं | ஸத்யமாக | भविष्यामि | ஆகவேன். |
| प्रतिजानामि | பிரதிக்கீழை செய்கி | हृद्गतं | மனதில்கொண்ட |
| | றேன். | सन्तापं | குறையை |
| अचिरात् | வெகு சீக்கிரத்தில் | त्यज | இவ்வளவோடு |
| भ्रातृतुल्यः | பிராதாவுக்குச்சமமா | | விட்டுவிடு. |
| | னவனாகவாவது | | |

इत्युक्त्वा मातरं राम दशमीव: सहानुज: । आगच्छदर्थसिद्धयर्थं गोकर्णं नाम पर्वतम् ॥

| | | | |
|---------|--------------------|------------|--------------------|
| ராம | “ஸ்ரீராம! | அசித்தியர் | உத்தேசித்த காரியம் |
| தசமீவ: | தசமீவன் | | கைகூடுவதற்காக |
| மாதர் | தாய்க்கு | கோகர்ணம் | |
| இதி | மேற்கண்டவண்ணம் | நாம | என்கிற |
| उच्चा | வாக்களித்து விட்டு | பரீதம் | பர்வதத்திற்கு |
| सहानुज: | தம்பிரமர்களுடன் | आगच्छ | சென்றான்.” |
| | கூடினவனாய் | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे नवमः सर्गः ॥

भादितः श्लोकाः 21086



युद्धकाण्डे आदितः श्लोकाः 362

தசம: சர்ப:—பத்தாவது ஸர்க்கம் ॥ ௨௦ ॥

रावणादिवरप्राप्तिः—ராவணன் முதலியவர்கள் வரத்தைப் பெறுவது.

अथाब्रवीद्द्विजं रामः कथान्ते भ्रातरौ वने । कीदृशं तु तदा ब्रह्मस्तपथैरुपिहावताः ॥ १ ॥

| | | | |
|----------|--------------------------|-----------|---------------------------------|
| ராம: | ஸ்ரீராமர் | ब्रह्मन् | “வேதன்க்கே, |
| कथान्ते | கதைபின்முடிவில் | महाव्रताः | மஹத்தான பரித் தியாகத்தையுடைய |
| तदा | அப்பொழுது | भ्रातरः | ஸஹோதரர்கள் |
| द्विजं | பிராம்மணரைப் பார்த்து | वने | வனத்தில் |
| तु | இது விஷயத்தில் | कीदृशः | எவ்விதமான |
| अथ | இப்படி | तपः | தவத்தை |
| अब्रवीत् | வினாவினார்: | चेरुः | புரிந்தார்கள்? ” |

अगस्त्यस्त्वब्रवीत्तत्र रामं सुप्रीतमानसम् । तास्तान्धर्मविधीस्तत्र भ्रातरस्ते समाविशन् ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------|------------|------------------|
| अगस्त्यः तु | அகஸ்தியரும் | ते | “அந்த |
| सुप्रीतमानसं | மனஸந் துஷ்டி. கொண்ட | भ्रातरः | ஸஹோதரர்கள் |
| रामं | ஸ்ரீராமருக்கு | तत्र तत्र | அதற்குரிய |
| अब्रवीत् | இப்படி பதில் உரைத் தார்: | तान् तान् | அந்தந்த |
| | | धर्मविधीन् | தருமநியமங்களை |
| | | समाविशन् | மேற்கொண்டார்கள். |

कुम्भकर्णस्ततो यत्तो नित्यं धर्मपथे स्थितः । तताप भ्रैष्मके काले वीरः पञ्चासिमध्यगः ॥

| | | | |
|------------|--|---------------|--|
| ततः | “அப்பொழுது | स्थितः | சலியாமனத்தனாய் |
| वीरः | தைர்யவானாகிய | भ्रैष्मके | கோடை |
| कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் | काले | காலத்தில் |
| यत्तः | { வேண்டிய பிரயாசை எடுத்துக்கொண்ட வனாய் | पञ्चासिमध्याः | { நாற்புறமும் வளர்த்த தீயின் மத்தியிலும், தலைமேல் சூர்யனெ ரியவுமிருப்பவனாய் |
| धर्मपथे | பரித்யாகநெறியில் | तताप | தவம்புரிந்தான். |
| नित्यं | எப்பொழுதும் | | |

मेघाम्बुसिक्तो वर्षासु वीरासनमसेवत । नित्यं च शिशिरे काले जलमध्यप्रतिश्रयः ॥४॥

வாசு "மழைக்காலங்களில்
மேகாம்புஸிக்: மழைஜலங்களால் நனைக்கப்பட்டவனாயும்
சிசிरे குளிர்
காலே च காலத்தினும்
जलमध्यप्रतिश्रयः ஜலத்தினுள் மூழ்கியவனாயும்

नित्यं எப்பொழுதுமே
वीरासनं { வலதுகாலே இடது
தொடையின்மீது
போட்டுக்கொண்டு
உட்கார்ந்தபடியே
த்யானம் செய்தலை
असेवत பற்றியிருந்தான்.

एवं वर्षसहस्राणि दश तस्यातिचक्रमुः । धर्मे प्रयतमानस्य सत्पथे निष्ठितस्य च ॥ ५ ॥

धर्मं "பரித்யாகத்தில்
प्रयतमानस्य இந்நிரியங்களை அடக்கிய மனத்தனும்
सत्पथे வேதநூல்முறையில்
निष्ठितस्य च { குறைவரா தபடி அனுஷ்டித்து வருகின்றவனுமான

तस्य அவனுக்கு
एवं இவ்வண்ணமாய்
दश वर्षसहस्राणि பதினாயிரம் வருஷங்கள்
अतिचक्रमुः கழிந்தன.

विभीषणस्तु धर्मात्मा नित्यं धर्मपरः शुचिः । पञ्च वर्षसहस्राणि पादेनैकेन तस्थिवान् ॥

विभीषणः तु "விபிஷணரோவெனில்
धर्मात्मा தர்மா தமாவாய்
नित्यं எப்பொழுதுமே
धर्मपरः தர்மங்களிலேயே ஆஸக்திகொண்டவராய்
शुचिः பரிசுத்தமான ஹிருதயமுடையவராய்

पञ्च वर्षसहस्राणि ஐயாயிரம் வருஷங்கள்
एकेन ஒற்றை
पादेन காலால்
तस्थिवान् நின்றபடியே த்யானம் செய்தார்.

समाप्ते नियमे तस्य ननुतुश्चाप्सरोगणाः । पपात पुष्पवर्षं च क्षुभिताश्चापि देवताः ॥७॥

तस्य "அவருடைய
नियमे தவம்
समाप्ते முடிந்ததும்
पुष्पवर्षं புஷ்பவருஷம்
पपात பொழிந்தது.
देवताः தேவதைகளும்

क्षुभिताः கலவரமடைந்தவர்களாய்
अपि च இருக்கையிலும்
अप्सरोगणाः च அப்ஸரகணங்களும்
ननुतुः ஆனந்தத்தாண்டவம் செய்தார்கள்.

पञ्च वर्षसहस्राणि सूर्यं चैवाश्ववर्तत । तस्यौ चोर्ध्वशिरोबाहुः स्वाध्यायधृतमानसः ॥८॥

स्वाध्याय- } "வேதமோ துவதிலே
धृतमानसः } யே இடைவிடாது
நாட்டியமனத்தராய்
उर्ध्वशिरोबाहुः { கைகளைத் தலைமேல்
தூக்கிக்கும்பிடுபவராய்
च இன்னும்

पञ्च वर्षसहस्राणि ஐயாயிரம் வருஷங்கள்
तस्यौ நின்றபடியே தவம் செய்தார்.
च அதுவுமன்றி
सूर्य एव சூர்யபகவானையே
अश्ववर्तत த்யானம்பண்ணிப்போற்றினார்.

एवं विभीषणस्यापि स्वर्गस्थस्येव नन्दने । दश वर्षसहस्राणि गतानि नियतात्मनः ॥१॥

| | | | |
|-----------------|--|--------------|----------------------------------|
| नियतात्मनः | { “நியமங்களில் அனு வளவும் பிறழாத ஆத்மாவையுடைய விபீஷணருக்கு இவ்வண்ணமாகவே பதினாயிரம் வருஷங் களும் | स्वर्गस्थस्य | ஸ்வர்க்கத்திலிருக்கிற வனுக்கு |
| विभीषणस्य | | नन्दने | நந்தனவனத்தில் |
| एवं | | इव | எப்படியோ அப்படி யே |
| दश वर्षसहस्राणि | | गतानि | கழிந்தன. |
| अपि | | | |

दश वर्षसहस्राणि निराहारो दशाननः । पूर्णे वर्षसहस्रे तु शिश्राग्रौ जुहाव सः ॥१०॥

| | | | |
|-----------------|--------------------------|------------|--------------------------|
| सः | “அந்த | वर्षसहस्रे | ஓர் ஆயிரம் வருஷங் கள் |
| दशाननः च | தசானனனும் | पूर्णे तु | முடிந்ததும் |
| दश वर्षसहस्राणि | பதினாயிரம் வருஷங் கள் | शिश्रः | ஒரு தலையை |
| निराहारः | ஆஹாரத்தையொ ழித்தவனும் | अश्रौ | அக்கினியில் |
| | | जुहाव | ஓமம் செய்தான். |

एवं वर्षसहस्राणि नव तस्यातिचक्रमुः । शिरांसि नव चाप्यस्य प्रविष्टानि हुताशनम् ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|---------------------|---------------------------------|
| अस्य | “இவனது | तस्य | அவனுக்கு |
| नव शिरांसि च | ஒன்பது தலைகளும் | एवं | இவ்வண்ணமே |
| हुताशनं | அக்கினிக்கு | नव वर्षसहस्राणि अपि | ஒன்பதினாயிரம் வரு அதிசுருமு: |
| प्रविष्टानि | ஸமர்ப்பிக்கப்பட்டன. | | கழிந்தன. [ஷங்களும் |

अथ वर्षसहस्रे तु दशमे दशमं शिरः । छेत्तुकामे दशश्रीवे प्रासस्तत्र पितामहः ॥ १२ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------|------------|------------------------------|
| दशमे | “பத்தாவது | छेत्तुकामे | அறுத்துத்தள்ள எண்ணங்கொண்ட |
| वर्षसहस्रे अथ | ஆயிரம் வருஷங்க ளின் முடிவில் | तु | அச்சமயத்தில் |
| दशश्रीवे | தசகீவன் | तस्य | அங்கு |
| दशमं | பத்தாவது | पितामहः | பிரம்மதேவர் |
| शिरः | தலையை | प्रासः | பிரஸன்னராஹர். |

पितामहस्तु धर्मात्मा सार्धं देवैरुपस्थितः । तात वत्स दशश्रीवे प्रीतोऽस्मीत्यभ्यभाषत ॥१३॥

| | | | |
|--------------|--|--------------|-----------------------------------|
| देवैः सार्धं | “தேவர்களுடன் சேர்ந் து வந்தவரானவரும் | अभ्यभाषत | திருவாய்மலர்ந்தருளி றார் : |
| धर्मात्मा | தர்மாத்மாவும் | तात | ‘என் கருணைக்கு பாதீரனும் |
| उपस्थितः | { நேரில் கட்டிலைகளும் வண்ணம் எழுந்தரு ளியிருக்கிறவருமான | वत्स | என் குடும்பத்தில் பிறந்தவனுமான |
| पितामहः | | दशश्रीव | தசகீவனே, |
| तु इति | பிரம்மதேவர் | प्रीतः अस्मि | நான் ஆனந்தப்பூரி தனைன். |

शीघ्रं वरय धर्मज्ञ वरो यस्तेऽभिकाङ्क्षितः । तं ते कामं करोम्यद्य न वृथा ते परिश्रमः ॥

ते परिश्रमः “உனது பிரயாஸை
 न वृथा வயர் த்தமாக ஆகக்
 கூடாது.
 धर्मज्ञ தர்மமறிந்தவனே,
 ते உன்னுடைய
 अभिकांक्षितः கோரப்பட்டதாகிற
 वरः பிரார்த்தனை
 यः எதுவோ

तं அதை
 शीघ्रं உடனெ
 वरय வெளியிடு.
 ते உனக்கு
 कामं இஷ்டமானதை
 अद्य இப்பொழுது
 करोमि செய்கிறேன்.’

अथाब्रवीद्दशग्रीवः पितामहमुपागतम् । प्रणम्य शिरसा देवं हर्षगद्गदया गिरा ॥ १५ ॥

दशग्रीवः “தசகீவன்
 उपागतं { பிரத்யட்சமாய் எதி
 ரில் எழுந்தருளியிரு
 க்கும்
 देवं தெய்வமாகிய
 पितामहं பிரம்மதேவரை
 शिरसा முடிதாழ்த்தி

प्रणम्य வணங்கி
 हर्षगद्गदया ஆனந்தத்தினால்
 गिरा தழுதழுத்த
 वाक्किனால்
 अद्य இப்படி
 अववीत् விண்ணப்பஞ்செய்
 தான்:

भगवन्प्राणिनां नित्यं नान्यत्र मरणाद्भयम् । नास्ति मृत्युसमः शत्रुमरत्वमहं वृणे ॥ १६ ॥

भगवन् “ஸ்வாமியே !
 प्राणिनां பிராணிகளுக்கும்
 मरणात् மரணமென்பது
 ஒன்றைவிட்டு
 अन्यत् வேறெதிலும்
 नित्यं எக்காலத்திலும்
 भयं பயமென்பது

न अस्ति இல்லை.
 मृत्युसमः மரணத்துக்குச்சும
 शत्रुः வைரி [மரண
 न கிடையாது.
 अहं நான்
 अमरत्वं மரணமின்மையை
 वृणे பிரார்த்திக்கின்றேன்.’

एवमुक्तस्तदा ब्रह्मा दशग्रीवमुवाच ह । नास्ति सर्वाभरत्वं ते वरमन्यं वृणीष्व मे ॥ १७ ॥

एवं “இவ்வண்ணம்
 उक्तः { வேண்டிக்கொள்ளப்
 டட்டதற்குச் செவி
 சாய்த்த
 ब्रह्मा பிரம்மதேவர்
 दशग्रीवं தசகீவனைப்பார்ந்து
 तदा அப்பொழுது இப்படி
 उवाच சொல்லியருளிணர்:

सर्वाभरत्वं ‘எப்பொழுதும் மரண
 மின்மை என்பது
 ते உனக்கும்
 मे ह எனக்கும்கூட
 नास्ति கிடக்காது.
 अन्यं வேறேதாவது ஒரு
 वरं வரத்தை
 वृणीष्व வேண்டிக்கொள்.’

सुपर्णनागयक्षाणां दैत्यदानवरक्षसाम् । अवध्योऽहं प्रजाध्यक्ष देवतानां च शाश्वत ॥ १८ ॥

प्रजाध्यक्ष “பிரஜாநாதரே,
 शाश्वत நித்யரே,
 अहं நான்

सुपर्णनागयक्षाणां { கருடர்கள், நாகர்கள்,
 யக்ஷர்கள், இவர்
 களுக்கும்

தெய்துநவரதர்மம்

{ தைத்தியர்கள், தான
வர்கள், ரக்தர்கள்
இவர்களுக்கும்

தெய்தானம் ச
அவத்ய:

தெய்தர்களுக்கும் கூட
கொல்லமுடியாதவனு
யிருக்கவேண்டும்

न हि चिन्ता ममान्येषु प्राणिष्वमरपूजित । तृणभूता हि ते मन्ये प्राणिनो मानुषादयः ॥

அமரபூஜித

“கேவர்களால் பூஜித்
கப்பட்டவரே!

தே

அந்த

மம ஹி

எனக்கோவெனில்

மானுஷாதய:

மானிடர்முதலான

அந்யேசு

இதர

பிராண:

பிராணிகள்

பிராணிசு

ஐந்துக்கவிடத்தில்

தூணமூத:

திருணைத்திற்கு

சிந்தா ந

விசாரம் இல்லை.

மந்யே

ஸமாளங்களை

ஹி

எனென்றால்

நான் அப்பிராயம்

கொண்டிருக்கிறேன்.”

एवमुक्तस्तु धर्मात्मा दशध्रीवेण रक्षसा । उवाच वचनं देवः सह देवैः पितामहः ॥

தொய்யத்யேவமேததே வதொ ராக்ஷசபுஹ்வ

॥ 20 ॥

தொய்யத்யேவ

“தசக்ரீவ

தேவ:

தேவர்

ரக்ஷசா

அரக்களால்

சு

இப்பொழுது

ஏவ்

இவ்வண்ணம்

ஏதத்

பின்கண்ட

உக:

{ விண்ணப்பஞ்செய்த
தற்குச் செவிசாய்
த்தவரும்

வசந்

உத்திரவை

உவாக

விடுத்தார்:

தேவீ: சஹ

தேய்தர்களுடன் கூடி
வந்திருப்பவரும்

ராக்ஷசபுஹ்வ

“ராக்ஷஸோத்தம,

தே

உனது

வச:

பிரார்த்தனை

தர்மம்மா

தருமாத்தமாவுமான

ஏவ்

இங்கனமே

பிதாமஹ:

பிரம்மம்

தொய்யத்யே

ஆகும்.”

मृणु चापि वचो भूयः प्रीतस्येह शुभं मम

॥ 21 ॥

அபி ச

“அன்றியும்

தூய:

மற்றொரு

ஹஹ

இவ்விஷயத்தில்

சூய்

சேஷமகரமான

பிரீதஸ்ய

பிரீதியுடனிருக்கிற

வச:

வாக்கை

மம

என்னுடைய

மூயு

கவனித்துக்கேள்.

हुतानि यानि शीर्षाणि पूर्वमथौ त्वयाऽनघ । पुनस्तानि भविष्यन्ति तथैव तव राक्षस ॥

அநத

“துயரக்களுக்கிடங்
கொடாத

ஹுதானி

ஓமம்செய்யப்பட்ட

ராக்ஷச

ராக்ஷஸ!

தானி

அவைகள்

த்வயா

உன்னால்

தவ

உனக்கு

பூவ்

எற்கனவே

புன:

திரும்பவும்

யானி

எந்த

தயா ஏவ

அங்கனமே முன்

சிரீர்ஷாணி

தலைகள்

போலவே

அமூ

அக்கினியில்

தொய்யத்யே

உண்டாகக்கடவன.

वितरामीह ते सौम्य वरं चान्यं दुरासदम् ॥ २३ ॥

| | | | |
|-------|-------------------------------|---------|--------------------------------------|
| सौम्य | “சுபமாய்தவத்தை முடித்தவனே, | दुरासदं | பிறர்களுக்குக் கிடைப் பதரிதாக்கிய |
| इह | இப்பொழுது | अन्यं | இன்னுமொரு |
| ते | உனக்கு | वरं च | வரத்தையும் |
| | | वितरामि | கொடுக்கிறேன். |

छन्दस्तव रूपं च मनसा यद्यथेप्सितम् । भविष्यति न संदेहो मद्रात्च राक्षस ॥२४॥

| | | | |
|---------|-------------|----------|------------------|
| राक्षस | “ராக்ஷஸ! | यत् | எதுவோ அது |
| तव | உனது | यथा | எப்படியோ |
| रूपं च | உருவமும் | तव | உனக்கு [அப்படியே |
| मनसा | மனதால் | मद्रात् | எனதுவரத்தால் |
| छन्दतः | இஷ்டப்படி | भविष्यति | உண்டாகும். |
| ईप्सितं | கோரப்பட்டது | न संदेहः | இதற்கையமில்லை. |

एवं पितामहोक्तस्य दशग्रीवस्य रक्षसः । अग्नौ हुतानि शीर्षाणि यानि तान्युत्थितानि वै ॥

| | | | |
|---------------|--|-----------|-----------------------------|
| पितामहोक्तस्य | “பிரம்மதேவரது திருவாக்குக்குச் செவிகாய்த்த | हुतानि | ஓமம்செய்தபோடப் பட்டவைகள் |
| दशग्रीवस्य | தசகிரீவ | यानि | எவைகளோ |
| रक्षसः | அரக்கனது | तानि वै | அவைகள் |
| शीर्षाणि | தலைகள் | एवं | முன்போலவே |
| अग्नौ | அக்கினியில் | उत्थितानि | முளைத்துவிட்டன. |

एवमुक्त्वा तु तं राम दशग्रीवं पितामहः । विभीषणमथोवाच वाक्यं लोकपितामहः ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|---------|-------------------------|
| राम | “ஸ்ரீராம! | अथ | அதன்பிறகு |
| लोकपितामहः | உலகமூதாதையான | विभीषणं | விபிஷணரைப் பார்த்தது |
| पितामहः | பிரம்மதேவர் | तु | இவர்விஷயத்திலிந்த |
| तं दशग्रीवं | அந்த தசகிரீவனுக்கு | वाक्यं | மொழியை |
| एवं | அவ்வண்ணம் | उवाच | சொல்லியருளினார்: |
| उवाच | வாக்களித்துவிட்டு | | |

विभीषण त्वया वत्स धर्मसंहितबुद्धिना । परितुष्टोऽस्मि धर्मात्मन्वरं वरय सुव्रत ॥ २७ ॥

| | | | |
|------------|---|-------------------|---|
| धर्मात्मन् | “தருமாத்மாவாய் எல்லாபிரகாரத் தாலும் உக்கிருஷ்ட மானதவத்தை முடித்தவனும் என்குடும்பத்தில் பிறந்தவனுமான | धर्मसंहितबुद्धिना | { தருமத்திலேயேசெ லுத்தியபுத்தியை யுடைய உன்னால் |
| सुव्रत | | त्वया | பூர்ணதிருப்தியடைந் |
| वत्स | | परितुष्टः | ஆயினேன். [தவனாக |
| विभीषण | விபிஷண! | अस्मि | இஷ்டமானவரத்தை |
| | | वरं | கேட்டுக்கொள். |
| | | वरय | |

विभीषणस्तु धर्मात्मा प्रोवाच प्रणतो वचः । वृषः सर्वगुणैर्नित्यं चन्द्रमा रश्मिभिर्यथा ॥

चन्द्रमा: "சந்திரன்
रश्मिभिः கிரணங்களால்
यथा எப்படியோ
அப்படியே
नित्यं எப்பொழுதுதும்
सर्वगुणैः எல்லாவிதமானதற்
குணங்களாலும்

वृत्तः கிறைந்துள்ள
धर्मात्मा தருமா தமாவாகிய
विभीषणः விபிஷணர்
प्रणतः அடிபணிந்தவராய்
तु இப்பொழுது இந்த
वचः நல்லவாக்கை
प्रोवाच நயமாயுரைசெய்தார்:

भगवन्कृतकृत्योऽहं यन्मे लोकगुहः स्वयम् । प्रीतेन यदि दातव्यो वरो मे शृणु सुव्रत ॥

सुव्रत "சிறந்தவிருதமுடைய
भगवन् பகவானே,
लोकगुहः லோககுரு
स्वयं தேவரீரே.
प्रीतेन பரீதிகொண்ட உம்மால்
दातव्यः வரமளிக்க உரியவன்
यदि என்கிறபடியால்
अहं நான்

कृतकृत्यः கிருதகிருத்ய
मे எனக்கு
वरो: இஷ்டமானவரம்
यत्: எதுவோ அதை
शृणु {புகலுகின்ற எனக்குச்
செவ்சாய்த்தருள்
புரியும்.

परमापद्मस्यापि धर्मे मम मतिर्भवेत् । अशिक्षितं च ब्रह्मास्त्रं भगवन्प्रतिभातु मे ॥३०॥

भगवन् "பகவானே!
मम நான்
परमापद्मस्य பரமஆபத்திற்
காளானவனாய்
अपि இருக்கையிலும்கூட
धर्मे தருமத்திலே
मतिः மனம்

भवेत् நிலைபெற்றிருக்க
वेண்டும்.
च அதுவும் தவிர
ब्रह्मास्त्रं பிரமாஸ்திரமானது
अशिक्षितं சிணைக்கயாகாதபடி
मे எனக்கு
प्रतिभातु விளங்கவேண்டும்.

या या मे जायते बुद्धियेषु येष्वाश्रमेषु च । सा सा भवतु धर्मिष्ठा तं तु धर्मं च पालये ॥

तं "அந்த
धर्मं च தருமமொன்றையே
पालये நான் பற்றிவருகி
றேன்.
तु இன்னமும்
मे எனது
या या எந்த எந்த
बुद्धिः அறிவு

येषु येषु எந்த எந்த
आश्रमेषु அவஸ்தைகளில்
जायते நாடியதாகிறதோ;
सा सा அத்து
च எல்லாமும்
धर्मिष्ठा புண்ணியத்தை நாடி
यதாக
भवतु இருக்கவேண்டும்.

एष मे परमोदार वरः परमको मतः । न हि धर्माभिरक्तानां लोके किञ्चन दुर्लभम् ॥३२॥

परमोदार “பாமதயாளுவே!
 लोके உலகில்
 धर्माभिरक्तानां { தருமத்திலிடைவி
 டாத ஆஸக்தியுடை
 யவர்களுக்கு
 दुर्लभं அடையமுடியாததாகி
 किञ्चन எதொன்றும் [றது

न इलலை,
 हि என்கிறபடியால்
 मे எனக்கு
 परमकः முடிவாய் விரும்பிய
 मतः உத்தேசமாகிறது
 एषः இந்த
 वरः வரம்.’

पुनः प्रजापतिः प्रीतो विभीषणमुवाच ह । धर्मिष्ठस्त्वं यथा वत्स तथा चैतद्भविष्यति ॥

प्रजापतिः “பிரம்மதேவர்
 पुनः முன்னிலுமதிக
 प्रीतः ப்ரீதராகி
 विभीषणं விபீஷணரைப்
 उवाच சொல்லியருளினார் :
 பார்த்து

वत्स ‘குழந்தாய்!
 धर्मिष्ठः ह தருமிஷ்டனாகவே
 त्वं நீ
 यथा तथा எப்படியிருக்கிறாயோ
 अப்படியே
 एतत् च இதுவும்
 भविष्यति ஆகுக.

यस्माद्राक्षसयोर्नौ ते जातस्यामित्रनाशन । नाधर्मं जायते बुद्धिरमरत्वं ददामि ते ॥ ३४ ॥

अमित्रनाशन “சத்ருஸம்ஹாரக!
 राक्षसयोर्नौ ராக்ஷஸயோனியில்
 जातस्य பிறந்த
 ते உனக்கு
 अधर्मं அதர்மத்தில்

बुद्धिः न जायते புத்தி புகாதிருக்கிறது,
 यस्मात् என்கிற காரணத்தால்
 ते உனக்கு
 अमरत्वं சிரஞ்சிவித்தவத்தை
 ददामि கொடுக்கிறேன்.

कुम्भकर्णाय तु वरं प्रयच्छन्तमरिन्दम । प्रजापतिं सुराः सर्वे वाक्यं प्राञ्जलयोऽब्रुवन् ॥

अरिन्दम { “சத்ருக்களை ஸம்ஹா
 ரம் செய்துவிட்டவ
 ரே! (ஸ்ரீராம!)
 सुराः தேவர்கள்
 सर्वे எல்லோரும்
 कुम्भकर्णाय கும்பகர்ணனுக்கு
 वरं வரத்தை
 प्रयच्छन्तं அளிக்கக்கூசித்தமாயி
 ருக்கின்ற

प्रजापतिं பிரம்மதேவரைப்
 பார்க்கு
 तु அச்சமயத்தில்
 प्राञ्जलयः அஞ்சலிஹஸ்தர்
 களாகி
 वाक्यं பின் கண்ட பாஷணை
 யை
 अब्रुवन् புகன்றனர்.

न तावत्कुम्भकर्णाय प्रदातव्यो वरस्त्वया । जानीषे हि यथा लोकांस्त्रासयत्येष दुर्मतिः ॥

कुम्भकर्णाय “கும்பகர்ணனுக்கு
 त्वया தேவரீரால்
 तावत् இவ்வளவுவுபெரிய

वरः வரம்
 प्रदातव्यः न அளித்தல்கூடாது.
 हि ஏனெனில்

एषः இவர்
दुर्मतिः துஷ்டமனத்தனாய்
लोकान् உலகங்களை
यथा எவ்வளவு

वासयति நடுங்கச்செய்கிறான்,
என்பதை
जानीपे தெவரீர் அறிந்திருக்கிறீர்.

नन्दनेऽपसरसः सप्त महेन्द्रानुचरा दश । अनेन भक्षिता ब्रह्मन्नृपयो मानुषादयः ॥३७॥

ब्रह्मन् “பிரம்மதேவரே!
नन्दने இந்திரனது வனமாகிய
सप्त ஏழு [நந்தவனத்தில்
अपसरसः அப்ஸரஸ்களும்
महेन्द्रानुचरा: மஹேந்திரனது பரி
வாரஜனங்கள்

दश பதினமரும்
मानुषादयः மானிடப்பெரியோர்
अपयः ரிஷிகளும் [களும்
अनेन இவனால்
भक्षिता: புகிக்கப்பட்டிருக்கிறார்கள்.

वरव्याजेन मोहो हि दीयतामस्य रक्षसः । लोकानां स्वस्ति चैवं स्याद्भवेदस्य च सम्पतिः॥

अस्य “இந்த
रक्षसः அரக்கனுக்கு
वरव्याजेन { வெளித்தோற்றத்
திற்கு வரம்போலிரு
க்கிறதைக்கொண்டு
मोहः தன்னறிவு சற்று
இழந்திருத்தல்
हि மாத்திரம்

दीयतां கொடுக்கப்பட
एवं இங்ஙனம் [வேண்டும்.
स्यात् ஆகில்
लोकानां च உலகங்களுக்கெல்லா
முமே
स्वस्ति சேஷமம்செய்ததாகும்.
अस्य இவனுக்கு
सम्पतिः च உடன்பாடாகவும்
भवेत् ஆகும்.’

एवमुक्तः सुरैर्ब्रह्मा देवीमेवावचिन्तयत् । चिन्तिता चोपतस्थेऽस्य पार्श्वे देवी सरस्वती ॥

एवं “இவ்வண்ணமாய்
सुरैः தேவர்களால்
उक्तः வேண்டிக்கொள்ளப்
பட்ட
ब्रह्मा பிரம்மதேவர்
देवी பத்தினியை
एव அப்பொழுதே

अवचिन्तयत् சிந்தித்தார்.
चिन्तिता ஸ்மரிக்கப்பட்ட
सरस्वती ஸரஸ்வதி
देवी च அம்மனும்
अस्य இவரது
पार्श्वे பக்கத்தில்
उपतस्थे கண்முன் நின்றார்.

प्राञ्जलिः सा तु पार्श्वस्था प्राह वाक्यं सरस्वती । इयमभ्यागता देव किं कार्यं करवाण्यहम् ॥

पार्श्वस्था “பக்கத்தில் வந்தி
सा அந்த [ருக்கின்ற
सरस्वती ஸரஸ்வதி
प्राञ्जलिः கைகூப்பிக்கொண்டு
वाक्यं இந்த மொழியை
प्राह இயம்பினான்:
देव ‘தேவ!

इयं இதோ
अभ्यागता வந்திருக்கிற
अहं நான்
तु இப்பொழுது
किं என்ன
कार्यं காரியத்தை
करवाणि செய்யவேண்டும்?'

प्रजापतिस्तु तां प्राप्तां प्राह वाक्यं सरस्वतीम् । वाणि त्वं राक्षसेन्द्रास्ये भव या देवतेप्सिता ॥

प्रजापतिः “पिरம்மதேவர்
 प्राप्तां பிரஸன்னமாந
 तां அந்த
 सरस्वतीं तु ஸரஸ்வதியைநோக்கி
 वाक्यं பதிலை
 प्राह சொன்னார்:
 वाणि ‘ஹே வானி!
 तथैयुक्त्वा प्रविष्टा सा प्रजापतिरथाब्रवीत् ।
 सा “அவள்
 तथा इति ‘சரி’ என்று
 उक्त्वा சொல்லிவிட்டு
 प्रविष्टा அமைந்தனள்.
 प्रजापतिः பிரம்மதேவர்
 अथ இப்படி
 अब्रवीत् பேசலுற்றார்:

कुम्भकर्णस्तु तद्वाक्यं श्रुत्वा वचनमब्रवीत् ।

कुम्भकर्णः “கும்பகர்ணனும்
 तद्वाक्यं அவர்மொழியை
 श्रुत्वा கேட்டு
 वचनं பின்கண்ட
 वार्त्तையை
 अब्रवीत् சொன்னார்:

एवमस्त्विति तं चोत्त्वा प्रायाद्ब्रह्मा सुरैः समम् । देवी सरस्वती चैव राक्षसं तं जहौ पुनः ॥

ब्रह्मा “பிரம்மதேவர்
 एवं भस्तु ‘அங்கனமேயாகு’
 इति என்று
 तं அவனுக்கு
 उक्त्वा வாக்களித்துவிட்டு
 सुरैः தேவர்களுடன்
 समं கூடவே

ब्रह्मणा सह देवेषु गतेषु च नभःस्थलम् । विमुक्तोऽसौ सरस्वत्या स्वां संज्ञां च ततो गतः ॥

ब्रह्मणा “பிரம்மதேவருடன்
 सह கூட
 देवेषु च தேவர்களும்
 नभःस्थलं ஆகாயத்தை
 गतेषु வந்தடைந்தளவில்
 ततः அப்பொழுது

देवतेप्सिता { தேவதைகளால்வேண்டிக்கொள்ளப்பட்டவளாய்
 या எந்த எவளாவளோ
 त्वं நீ [அவளாய்
 राक्षसेन्द्रास्ये ராக்ஷஸேந்திரன்
 வாக்கில்
 भव புகுந்துடத்து.
 कुम्भकर्ण महावाहो वरं वरय यो मतः ॥
 महावाहो ‘மஹாபாகுவாகிய
 कुम्भकर्ण கும்பகர்ண!
 यः எது
 मतः மனத்திலிருக்கிறதாக
 ஆகிறதோ அந்த
 वां வரத்தை
 वरय கேட்டுக்கொள்.’

स्वप्तुं वर्षाण्यनेकानि देवदेव ममेप्सितम् ॥

देवैदेव ‘தேவதேவரே,
 अनेकानि அனேக
 वर्षाणि வருஷங்கள்
 स्वप्तुं துயில்கொள்ள
 मम எனது
 ईप्सितम् கருத்து.’

प्रायात् अन्तरं तं तानमात्रं ।

एव च एव च उदनेय
 सरस्वती ஸரஸ்வதி
 देवी च தேவியாரும்
 तं राक्षसं அந்த அரக்கனை
 पुनः விட்டு அப்பால்
 जहौ அகன்றான்.

सरस्वत्या च सरस्वதியாராலும்

विमुक्तः விடுவிக்கப்பட்ட
 असौ இவன்
 स्वां சுய
 संज्ञां நினைவுக்கு
 गतः வந்தான்.

कुम्भकर्णस्तु दुष्टात्मा चिन्तयामास दुःखितः । ईदृशं किमिदं वाक्यं ममाद्य वदनाच्छ्रुतम् ॥

दुष्टात्मा “ஆஷ்டா த்மாவாகிய
कुम्भकर्णः சும்பகர்ணன்
तु இதுணிஷ்டயத்திலு
दुःखितः மனம்நொந்தவனாய்
चिन्तयामास எண்ண ஆற்றான்
अद्य ‘இப்பொழுது

मम எனது
वदनात् வாயினின்றும்
च्युतं வெளிவந்த
इदं वाक्यं இந்த சொல்
किं ஏன்
ईदृशम् இப்படியாயிருக்கிறது?

अहं व्यामोहितो देवैरिति मन्ये तदागतैः । एवं लब्धवराः सर्वे भ्रातरो दीप्ततेजसः ॥
श्लेषमातकवनं गत्वा तत्र ते न्यवसन्सुखम् ॥ ४७ ॥

तदा “அப்பொழுது
आगतैः வந்திருந்த
देवैः தேவர்களால்
अहं நான்
व्यामोहितः உணர்வுழிந்தவனாக
ஆக்கப்பட்டேன்,
इति என்று
मन्ये அறிகிறேன்.
ते அந்த
आतरः பிராதாக்கள்
सर्वे எல்லோரும்

एवं இவ்வண்ணம்
लब्धवराः வாங்களைப்பெற்ற
வர்களாய்
दीप्ततेजसः ஜ்வலிக்கும்தேஜஸு
டனிருப்பவர்களாய்
श्लेषमातकवनं { ச்லேஷ்மாதகமென்
னும் (தந்தையின்)
வனத்தை
गत्वा அடைந்து
तत्र அங்கு
सुखं சுகமாய்
न्यवसन् வஸித்தார்கள்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
उत्तरकाण्डे दशमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 21133

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 409



एकादशः सर्गः—பதினோராவது ஸர்க்கம். ॥ ११ ॥

रावणस्य लङ्काप्राप्तिः—ராவணன் லங்கையையடைவது.

सुमाली वरलब्धास्तु ज्ञात्वा चैतान्निशाचरान् । उदतिष्ठद्भयं त्यक्त्वा सानुगः स रसातलात् ॥

सः “அந்த
सुमाली ஸுமாலி
एतान् அந்த
निशाचरान् அரக்கர்களை
वरलब्धान् மேலானவாங்கள்
ज्ञात्वा பெற்றவர்களாய்
केट्टடறிந்து கொண்டு

तु இப்பொழுது
भयं பயத்தை
त्यक्त्वा ஒழித்து,
रसातलात् ரஸாதலலோகத்
தின்ன்று
सानुगः च இனத்தாருடன்
கூடினவனாகவே
उदतिष्ठत् வெளிக்கிளம்பினான்.

मारीचश्च प्रहस्तश्च विरूपाक्षो महोदरः । उदतिष्ठन्सुसंरब्धाः सचिवास्तस्य रक्षसः ॥२॥

तस्य "अर्न्त
रक्षसः अर्क्कन्नि
सचिवाः मन्त्तिरीमार्क्कन्नु
सुसंरब्धाः சிறந்த ஐக்கியமுடை
யவர்களுமான

मारीचः च मारीசனும்
प्रहस्तः ப்ரஹஸ்தனும்
विरूपाक्षः च விருபாக்ஷனும்
महोदरः மஹோதரனும்
उदतिष्ठन् கிளம்பினார்கள்.

सुमाली संचिवैः सार्धं वृतो राक्षसपुङ्गवैः । अभिगम्य दशग्रीवं परिष्वज्येदपव्रवीत् ॥३॥

राक्षसपुङ्गवैः "ராஷ்சுஷோத்தமர்
களால்
वृतः ஸேவிக்கப்பட்ட
டவனான
सुमाली ஸுமாலி
संचिवैः மந்திரிமர்களுடன்

सार्धं கூடினவனாய்
दशग्रीवं தசகிரீவனை
अभिगम्य அணுகி
परिष्वज्य ஆலிங்கனம்செய்து
इदं பின்வருமாறு
अववीत् சொன்னான்:

दिष्ट्या ते वत्स संप्राप्तश्चिन्तितोऽयं मनोरथः । यस्त्वं त्रिभुवनश्रेष्ठा लब्धवान्वरपुत्रम् ॥

वत्स "குழந்தாய்!
ते உனது
दिष्ट्या பாக்கிய விசேஷத்தால்
इयं நீ
विभुवनश्रेष्ठात् பிரம்மதேவனிட
யிருந்து
उत्तमं உத்தமமான
वरं வரத்தை

लब्धवान् பெற்றுவிட்டாய்,
संप्राप्तः அடையப்பட்டதாகி
यः ஏதுவோ [றது
अयं இது
चिन्तितः மனத்தினுள்ளேயே
யடங்கியிருந்ததும்
मनोरथः மனோபிஷ்டமு
மானது.

यत्कृते च वयं लङ्कां त्यक्त्वा याता रसातलम् । तद्गतं नो महाबाहो महद्विष्णुकृतं भयम् ॥

महाबाहो "மஹாபாகுவே!
वयं நாம்
यत्कृते எதினால்
लङ्कां இலங்கையை
त्यक्त्वा துறந்து,
रसातलं பாதாள லோகத்திற்கு
याता: போய்ச்சேர்ந்தோமோ

नः நமது
तत् அந்த
विष्णुकृतं விஷ்ணுவினாலுண்
டானதும்
महत् च மஹத்தானதுமான
भयं பயம்
गतम् ஒழிந்தது.

असकृच्चन्द्रयाद्भीताः परित्यज्य स्वमालयम् । विदुताः सहिताः सर्वे प्रविष्टाः स्म रसातलम् ॥

तद्गयात् "அவர்மூலமாயுண்
டான பயத்தால்
सर्वे எல்லோரும்
सहिताः ஒன்றுசேர்ந்தவர்
असकृत् அடிக்கடி [களாய்
भीताः ஆபத்திலிருந்தவர்
களாய்

विदुताः கலவரமடைந்தவர்
களாய்
स्वं தனக்குரிய
आलयं இருப்பிடத்தை
परित्यज्य துறந்து
रसातलं ரஸாதலத்தில்
प्रविष्टाः ச குடிக்கொண்டார்கள்.

अस्मदीया च लङ्क्यं नगरीं राक्षसोचिता । निवेशिता तत्र भ्रात्रा धनाध्यक्षेण धीमता ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|-------------|-----------------------|
| लङ्का | “ இலங்கா | இ | இது |
| नगरी | பட்டணம் | तत्र | உனது |
| राक्षसोचिता | ராக்கூலர்களுக்கெதிர்தும் | भ्रात्रा | ஸகோதரனும் |
| अस्मदीया | நம்முடையதுமானது. | धीमता | புத்திமானுமான |
| च | அப்படியிருந்தும் | धनाध्यक्षेण | குபேரனாலே |
| | | निवेशिता | பற்றப்பட்டிருக்கிறது. |

यदि नामात्र शक्यं स्यात्साम्ना दानेन वाऽनघ । तरसा वा महाबाहो प्रत्यानेतुं कृतं भवेत् ॥

| | | | |
|----------|----------------------|--------------|-------------------|
| अनघ | “அபத்தை அடைய முடியாத | प्रत्यानेतुं | திரும்பி மீட்டுக |
| महाबाहो | மஹாபாகுவே! | शक्यं | சாத்தியம் [கொள்ள |
| साम्ना | ஸாமத்தினாலே | स्यात् | என்றால், |
| दानेन वा | தானத்தினாலே | अव | அப்பொழுது |
| तरसा वा | தண்டத்தினாலே | कृतं | யனோதக்கையடிய தாய் |
| यदि नाम | எப்படியாவது | भवेत् | ஆகும். |

त्वं तु लङ्केऽवरस्तात भविष्यसि न संशयः । सर्वेषां नः प्रभुश्चैव भविष्यसि महाबल ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|----------|-----------------|
| महाबल | “ மஹாபலிஷ்டகைய | एव च | அன்றியும் |
| तात | குழந்தாய்! | नः | எங்கள் |
| त्वं तु | நீயும் | सर्वेषां | எல்லோருக்கும் |
| लङ्केऽवरः | இலங்கைக்கு மன்ன | प्रभुः | பிரபுவாகவும் |
| | னாய் | भविष्यसि | ஆகுவாய். |
| भविष्यसि | ஆகுவாய். | संशयः न | இதற்கையிலில்லை. |

अथाब्रवीद्दशग्रीवो मातामहमुपस्थितम् । वितेशो गुरुरस्माकं नाहंसे वक्तुमीदृशम् ॥१०॥

| | | | |
|----------|----------------------|---------|----------------------------|
| दशग्रीवः | “தசகீவன் | अस्माकं | எங்களுக்கு |
| उपस्थितं | நேரில்வந்திருக்கின்ற | गुरुः | பெரியவர். |
| मातामहं | மாதாமகனைப்பார்த்து | ईदृशं | இப்படி |
| अथ | இப்படி | वक्तुं | பேச |
| अब्रवीत् | பதிலுரைத்தான். | न अहंसे | நீ ஏற்பட்டிருக்கக் கூடாது. |
| वितेशः | ‘குபேரன் | | |

साम्नाऽपि राक्षसेन्द्रेण प्रत्याख्यातो गरीयसा ।

किञ्चिन्नाह तदा रक्षो ज्ञात्वा तस्य चिकीर्षितम्

॥ ११ ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------|------------|------------------|
| रक्षः | “அரக்கன் | तस्य | அவனது |
| राक्षसेन्द्रेण | ராக்கூலேந்திரனால் | चिकीर्षितं | மனோபாவத்தை |
| गरीयसा | மூத்தவனோடு | ज्ञात्वा | கண்டுகொண்டு |
| साम्ना अपि | ஸாமத்தாலுங்கூட | तदा | அச்சமயம் |
| प्रत्याख्यातः | கூடாதென்று தகையப்பட்டவனாய் | किञ्चित् | ஒன்றும் |
| | | न आह | பேசாமலிருந்தான். |

कस्यचित्त्वथ कालस्य वसन्तं रावणं ततः । उक्तवन्तं तथा वाक्यं दशग्रीवं निशाचरः ॥
प्रहस्तः प्रश्रितं वाक्यमिदमाह सकारणम् ॥ १२ ॥

| | |
|----------|-------------------------------|
| कस्यचित् | “கிஸ |
| कालस्य | காலத்திற்கு |
| अथ | அப்பால் |
| प्रहस्तः | பிரஹஸ்தனென்கிற |
| निशाचरः | அசுரக்கன் |
| ततः | அங்கேயே |
| वसन्तं | வவளித்துக்கொண்ட ருந்தவனும் |
| तु | இதுவிஷயத்தில் |
| वाक्यं | அபிப்பிராயத்தை |
| तथा | அப்படி |

| | |
|-----------|--------------------------------------|
| उक्तवन्तं | தெரியப்படுத்தியிருந் தவனுமான |
| दशग्रीवं | தசகிரீவனென்கிற |
| रावणं | ராவணனைப்பார்த்து |
| इदं | பின்வரும் |
| प्रश्रितं | தாழ்ந்து உரைசெய் யப்பட்டதாகிறதும் |
| सकारणं | ஏற்ற காரணங்களுட னிருக்கிறதுமான |
| वाक्यं | மொழியை |
| आह | புகன்றான்: |

दशग्रीव महाबाहो नार्हस्त्वं वक्तुमीदृशम् । सौभ्रात्रं नास्ति शूराणां शृणु चेदं वचो मम ॥

| | |
|---------|----------------|
| महाबाहो | “மஹாபாகுவே! |
| दशग्रीव | தசகிரீவ! |
| ईदृशं | இம்மாதிரி |
| वक्तुं | பேசுகிறதற்கு |
| त्वं | நீ |
| अहं: | உரிமையுடையவனாக |
| न | ஆகாய். |

| | |
|------------|---------------|
| शूराणां | சூரர்களுக்கு |
| सौभ्रात्रं | ஸஹோதரவாஞ்சை |
| न अस्ति | இருக்கலாகாது. |
| मम | எனது |
| इदं | பின் கண்ட |
| वचः च | போதனைக்கு |
| शृणु | செவிகொடு. |

अदितिश्च दितिश्चैव भगिन्यौ सहिते हिते । भार्ये परमरूपिण्यौ कश्यपस्य प्रजापतेः ॥

| | |
|-----------|-------------------------------|
| अदितिः | “அதிதியும் |
| दितिः च | திதியும் |
| भगिन्यौ च | ஸஹோதரிகள். |
| हिते | அங்கியோர்ய அன்புள்ளவர்கள். |

| | |
|-------------|-------------------------------|
| परमरूपिण्यौ | மஹாரூபவதிகள். |
| कश्यपस्य | கச்யப |
| प्रजापतेः | பிரஜாபதியனுடைய |
| सहिते | ஒன்றுசேர்ந்திருப் பவர்களான |
| भार्ये एव | பாரியைகளுமே. |

अदितिर्जनयामास देवांस्त्रिभुवनेश्वरान् । दितिस्त्वजनयत्पुत्रान्कश्यपस्यात्मसंभवान् ॥ १५ ॥

| | |
|------------------|-----------------------|
| अदितिः | “அதிதி |
| त्रिभुवनेश्वरान् | திரிலோகாதிபர் களான |
| देवान् | தேவர்களாகிற |
| कश्यपस्य | காச்யபருக்கு |

| | |
|------------|-----------------|
| आमसम्भवान् | ஓளரஸபுதல்வர்களை |
| जनयामास | பெற்றான். |
| दितिः तु | திதியும் |
| पुत्रान् | புதல்வர்களை |
| अजनयत् | பெற்றான். |

दैत्यानां किल धर्मज्ञ पुरीयं सवनार्णवा । सपर्वता मही वीर तेष्वन्यभविष्णवः ॥ १६ ॥

धर्मज्ञ { “அந்தந்தனை திக்குரிய
அனுஷ்டானங்களை
நன்கு அறிந்த
புரணை !
கானகங்களும் கடல்
களுமுள்ளடங்கி
யதும்
மலைகளுடனிருக்கிற
துமான

மஹி பூலோகமும்
निहत्य तांस्तु समरे विष्णुना प्रभविष्णुना ।
प्रभविष्णुना “ஸர்வோத்தமரான
विष्णुना விஷ்ணுவினால்
तान् அவர்களே
समरे போரில்
निहत्य வதைத்து,
इदं இந்த

नैतदैको भवानेव करिष्यति विपर्ययम् । सुरासुरैराचरितं तत्कुरुष्व वचो मम ॥ १७ ॥
भवान् “ஐ
एकः एव ஒருவன் மாதிரும்
एतत् இந்த
विपर्ययं பரிவர்த்தனையை
न करिष्यति செய்யப்போகிறதில்லை.
सुरासुरैः தேவர்களாலும்,
அசுரர்களாலும்

एवमुक्तो दशग्रीवः प्रहृष्टेनान्तरात्मना । चिन्तयित्वा सुहूर्तं वै बादमित्येव सोऽब्रवीत् ॥
सः “அந்த
दशग्रीवः தசகரீவன்
एवं மேற்கண்டபடி
उक्तः சொல்லியதற்குச்
செவியாய்த்தவனாய்
सुहूर्तं वै ஒரு முகூர்த்தகாலம்

स तु तेनैव हर्षेण तस्मिन्नहनि वीर्यवान् । वनं गतो दशग्रीवः सह तैः क्षणदाचरैः ॥ २० ॥
सः “அந்த
वीर्यवान् வீர்யவானாகிய
दशग्रीवः தசகரீவன்
तेन அந்த
हर्षेण एव உற்சாகத்துடனேயே
तैः அந்த

इयं पुरी इந்த நகரமும்
दैत्यानां தீதாண்டிபுதல்வர்களுந்
டையது
किल என்கிறது யாவருக்
ते கும் தெரிந்தவிஷயமே.
प्रभविष्णवः அவர்கள்
மிக்கமகிமைபெற்ற
வர்களாக

अभवन् விளங்கினார்கள்.
शैलोक्यं तु திரிலோக ஆட்சையும்
देवानां தேவர்களின்
अव्ययं சாசுவத
वशं ஆளுகைக்குள்ளான
தாய்

आनीतम् செய்யப்பட்டது.
आचरितं அனுஷ்டிக்கப்
பட்டிருக்கிறது.
तत् ஆதலால்
मम எனது
वचः ஆலோசனையை
कुरुष्व செய்துமுடி.

चिन्तयित्वा तनकुलं गेव बादमित्येव सोऽब्रवीत् ॥
चिन्तयित्वा தனக்குள்ளேயே
ஆலோசனை செய்து,
प्रहृष्टेन திருப்திகொண்ட
अन्तरात्मना एव உள்ளத்துடனேயே
बादं इति “சரி” என்று
अब्रवीत् சொன்னான்.

क्षणदाचरैः அரக்கர்களுடன்
सह கூடவே
तस्मिन् அதே
अहनि तु தினத்திலேயே
वनं வனத்திற்கு
गतः புறப்பட்டுவிட்டான்.

त्रिकूटस्थः स तु तदा दशग्रीवो निशाचरः । प्रेषयामास दूत्येन प्रहस्तं वाक्यकोविदम् ॥

| | | | |
|-------------|--|-------------|--------------------|
| सः | “அந்த | वाक्यकोविदं | பேசுவதில் சா தூர்ய |
| निशाचरः | அரக்கனாகிய | | முடையவனான |
| दशग्रीवः | தசகரீவன் | प्रहस्तं तु | பிரஹஸ்தனையே |
| त्रिकूटस्थः | இலங்கையைச்சார்ந்த, நீரி கூட்டமலைக்கு வந்துசேர்ந்தவனாய் | तदा | அப்பொழுது |
| | | दूत्येन | தூதுகொண்டு |
| | | प्रेषयामास | போகவிடுத்தான். |

प्रहस्त शीघ्रं गच्छ त्वं ब्रूहि नैर्ऋतपुङ्गवम् । वचसा मम वित्तेशं सायपूर्वमिदं वचः ॥२२॥

| | | | |
|----------------|--|----------|----------------|
| प्रहस्त | “பிரஹஸ்தனே! | वित्तेशं | குபேரனிடம் |
| सायपूर्वम् | முதலில் ஸாமோபாயத்தைப்பிரயோகிக்கவேண்டியதால் | मम | எனது |
| | | वचसा | ஆக்கினையைக்கொ |
| | | त्वं | நீ [ண்டு |
| नैर्ऋतपुङ्गवम् | தீயத்தொழில்களில் புகாத நைரீதர் களென்னும் பிசாசர்களுக்கும்பெரியவனாகிய | शीघ्रं | உடனே |
| | | गच्छ | செல். |
| | | वचः | செய்தியை |
| | | इदं | பின்பொல்லியபடி |
| | ब्रूहि | தெரிவி. | |

इयं लङ्कापुरी राजत्राक्षसानां महात्मनाम् । त्वया निवेशिता सौम्य नैतद्युक्तं तवानघ ॥

| | | | |
|------------|------------------------|----------|-----------------------|
| अनघ | “பாபரஹீத! | इयं | இது |
| सौम्य | நல்ல ஒழுக்கமுடைய | त्वया | உன்னால் |
| राजन् | அரசே! | निवेशिता | பற்றப்பட்டிருக்கிறது. |
| लङ्कापुरी | இலங்கைநகரம் | एतत् | இது |
| महात्मनां | மஹாபராக்கிரமசாலிகளாகிய | तव | உனக்கு |
| राक्षसानां | ராக்ஷஸர்களுடையது. | युक्तं | சரியானதாய் |
| | | न | ஆகாது. |

तद्भवान्यदि नो ह्यद्य दद्यादतुलविक्रम । कृता भवेन्मम प्रीतिर्धर्मश्चैवानुपालितः ॥ २४ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------|------------|--------------------|
| अतुलविक्रम | “ஒப்பற்ற பராக்கிரமமுடையவனே! | यदि | இப்படிச்செய்யும் |
| तव | ஆதலால் | धर्मः हि | தருமமே [பட்சத்தில் |
| भवान् | நீ | अनुपालितः | பரிபாவிக்கப்பட்ட |
| अद्य | இப்பொழுது | च | ஆன்றியும் [தாகும். |
| नः | நமக்கு | मम | எனது |
| दद्यात् | திரும்பிக்கொடுத்து | प्रीतिः एव | நட்பும் |
| | விடு. | कृता | பெற்றதாக |
| | | भवेत् | ஏற்படும்'. |

स तु गत्वा पुरीं लङ्कां धनदेन सुरक्षिताम् । अब्रवीत्परमोदारं वित्पालमिदं वचः ॥२५॥

| | | | |
|------------|-----------------------|--------|-------------|
| सः | “அவன் | लङ्कां | இலங்கா |
| धनदेन | குபேரனால் | पुरीं | நகரத்திற்கு |
| सुरक्षितां | நன்குபரிபாவிக்கப்பட்ட | तु | அப்போதே |

ஈரவா சென்று,
 பரமோதார மெச்சுத்தக்க உதார
 குணங்கொண்ட

விசுவாஹ் குபேரனைப்பார்த்த
 வஃ செய்தியை
 ஹ் பின்சண்டபடி
 ஷ்வீத் தெரியப்படுத்தினான்:

प्रेषितोऽहं तव भ्रात्रा दशमीवेण सुव्रत । त्वत्समीपं महाबाहो सर्वशस्त्रभृतां वर ॥ २६ ॥

சர்வசாஸ்த்ரஹ்ருதா "எல்லாசஸ்திரந்த
 ரித்தவர்களில்
 வர சிறந்தோனே!
 மஹாபாகுவே!
 உக்கிருஷ்டவிரு
 சுவத தானுஷ்டானம்
 கொண்டவனே!

அஹ் நான்
 தவ உமது
 ஶ்ராதா திராதாவாகிய
 தசமீவேண தசகீவரால்
 த்வசமீப உம்மிடம்
 ப்ரேஸித: துதனும் அனுப்பப்
 பட்டிருக்கிறேன்.

तच्छूयतां महाप्राज्ञ सर्वशास्त्रविशारद । वचनं मम वित्तेषु यद्वीति दशाननः ॥ २७ ॥

சர்வசாஸ்த்ரவிசாரத "ஸகல சாஸ்திரங்களி
 லும் கைதேர்த்தவனே!
 மஹா பண்டிதனே!
 விதேஷ தனாகிப!
 தசானன: தசகீவர்
 யத் எதை

வ்ரீதி தெரியப்படுத்தச்
 சொல்லியிருக்கிற
 தத் அந்த ரோ;
 மம எனது
 வசனம் அறிவிப்பு
 ஶ்யதாம் கேட்கப்பட்டும்.

इयं किल पुरी रम्या सुमालिप्रसुवैः पुरा ।

விசாலாக்ஷ "அகன்ற கண்களையு
 டையவனே!
 புரா முன்காலத்தில்
 ஹ்ய இந்த
 ரம்யா அழகுவாய்ந்த
 புரி நகரம்
 பீமவிக்ரமீ: மஹாபராக்கிரமசாலி
 களானவர்களும்

भुक्तपूर्वा विशालाक्ष राक्षसैर्भीमविक्रमैः ॥

சுமாலிப்ரஸுவை: { ஸுமாலியின் ஆளு
 கையிலிருந்தவர்க
 ளுமான
 ராக்ஸை: அரக்கர்களால்
 புக்பூர்வா வெகுசாலமனுப
 விக்கப்பட்டது.
 கில இது யாவருக்கும்
 தெரிந்தவிஷயமே.

तेन विज्ञाप्यते सोऽयं सांप्रतं विश्रवात्मज ।

விஸ்ரவாஸ்த்மஜ "விசுவாஸ்தின் புதல்வ!
 தாத பெரியவரே!
 தேன அவரால்
 விஜ்நாப்யதே விண்ணப்பம்செய்து
 கொள்ளப்படுகிறது.
 ச: அந்த
 அய் இது
 சாம்பரம் இப்பொழுது

तदेषा दीयतां तात याचतस्तस्य सामतः ॥

சாமத: ஸாம உபாயமாகிறது.
 தத் ஆதலால்
 யாத: வேண்டிக்கேட்கின்ற
 தஸ்ய அவருக்கு
 ஷ்ய இது
 தீயதாம் திருப்பிக்கொடுத்து
 விடப்பட்டும்.

प्रहस्तादभिसंश्रुत्य देवो वैश्रवणो वचः । प्रत्युवाच प्रहस्तं तं वाक्यं वाक्यविशारदः ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------------|--------------|----------------------------------|
| वाक्यविशारदः | “பேச்சின் துட்பத் தை அறியவல்லவரும் | अभिसंश्रुत्य | நன்றாய் மனதில் வாக்கிக்கொண்டு |
| वैश्रवणः | விசுவரவஸின் புதல்வரு | तं | அந்த |
| देवः | தேவர் [மாகிய | प्रहस्तं | பிரஹஸ்தனைப் பார்த்து |
| प्रहस्तात् | பிரஹஸ்தனிட மிருந்து | वाक्यं | ஒருமொழியை |
| वचः | விஷயத்தை | प्रत्युवाच | பதிலாயுரைத்தார்: |

दत्ता ममेयं पित्रा तु लङ्का शून्या निशाचरैः । निवासिते च मे यक्षैर्दानमानादिभिर्गुणैः ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------------|--------------|--|
| लङ्का | “இலங்கை | इयं | இது |
| निशाचरैः | அரக்கர்களால் | दानमानादिभिः | உதாரணம், கௌர வம் முதலிய |
| शून्या तु | காலிசெய்துவிடப்பட்ட புருந்தது, | गुणैः | பெருங்குணங்கள் வாய்ந்த |
| तु | என்கிற காரணத்தால் | यक्षैः च | யக்ஷர்களாலும் |
| मम | எனது | निवासिते | { வாஸஸ்தலமாக ஆக் கிக்கொள்ளப்பட்ட டது. (ஆர்ஷம்) |
| पित्रा | தந்தையினால் | | |
| मे | எனக்கு | | |
| दत्ता | தந்தருளப்பட்டது. | | |

ब्रूहि गच्छ दशग्रीवं पुरं राज्यं च यन्मम । तवाप्येतन्महाबाहो भुङ्क्ष्व राज्यमकण्टकम् ॥

| | | | |
|-------------|---|------------|--------------------------------|
| दशग्रीवं | “தசகிரீவனிடம் | राज्यं अपि | ராஜ்யத்தை மட்டும் என்றாலும் |
| गच्छ | போய்ச்சேர். | अकण्टकं | பங்காளியின் தொந்தி ரவீன்றி |
| एतत् | பின் கண்டவண்ணம் | भुङ्क्ष्व | அனுபவி. |
| ब्रूहि | சொல்லு: | मम | எனது |
| महाबाहो | ‘மஹாபாகுவே, | पुरं | புரம் |
| मे | எனது | यत् | எதுவோ அதுவும் |
| वसु | செல்வமும் | राज्यं | ராஜ்யம் |
| राज्यं च | ராஜ்யமும் | यत् | எதுவோ அதுவும் |
| एवया सार्धं | உண்டுக்கூட | तव अपि | உன்னுடையதுதான். |
| अविभक्तं च | { அவிபக்தமானதே. (இன்னும் பிரிவினை யாகாததே). | | |

एवमुक्त्वा धनाध्यक्षो जगाम पितुरन्तिकम् ॥ ३३ ॥

| | | | |
|------------|----------------------|---------|------------------|
| धनाध्यक्षः | “குபேரர் | पितुः | தந்தையின் |
| एवं | மேற்கண்டவண்ண மாய் | अन्तिकं | ஸன்னிதானத்திற்கு |
| उक्त्वा | பதில் அளித்துவிட்டு | जगाम | எழுந்தருளிணர். |

अभिवाद्य गुरुं प्राह रावणस्य यदीप्सितम्

॥ ३४ ॥

गुरुं “தந்தையை
अभिवाद्य ஸரவந்தாங்கநமஸ்
காரம் செய்து,
रावणस्य ராவணனது

ईप्सितं மனோபிஷ்டம்
यत् एतुवो अत्தை
இப்படி
प्राह விஞ்ஞாபனம் செய்தார்.

एष तात दशग्रीवो दूतं प्रेषितवान्मम । दीयतां नगरी लङ्का पूर्वं रक्षोगणोपिता ॥३५॥

तात “தந்தையே!
एषः இந்த
दशग्रीवः தசகீவன்
लङ्का இலங்கை
नगरी நகரம்
रक्षोगणोपिता ‘ராக்கூஸகரைங்கரின்
வாஸஸ்தலமாக

पूर्वं முன்னேயிருந்தமை
யால்
दीयतां திரும்பிக்கொடுத்து
விடவேண்டியது
दूतं தூதனை [என்கிற
मम எனக்கு
प्रेषितवान् விடுத்திருக்கிறான்.

मयाऽत्र यदनुष्ठेयं तन्ममाक्ष्व सुव्रत

॥ ३६ ॥

सुव्रत “நல்லவிருதமுடை
யோய்!
अत्र இந்த விஷயத்தில்
मया என்னால்

अनुष्ठेयं செய்யப்படவேண்டி
यत् एतुवो [யது
तत् अत्தை
मम எனக்கு
आक्ष्व விடுத்திருந்.

ब्रह्मर्षिस्त्वेवमुक्तोऽसौ विश्रवा मुनिपुङ्गवः ।

प्राञ्जलिं धनदं प्राह मृगु पुत्र वचो मम ॥

एवं “மேற்கண்டவண்ணம்
उक्तः சொல்லப்பட்டதற்கு
செவிசாய்த்தவரும்
मुनिपुङ्गवः முனிச்சீரேஷ்டரும்
ब्रह्मर्षिः பிரம்மரிஷியுமான
असौ विश्रवाः இந்த விசுவஸ்
प्राञ्जलिं அஞ்சலிஹஸ்தனது
பிடுக்கிற

धनदं குபேரனைப் பார்த்தது
पुत्र இப்பொழுது இப்படி
प्राह சொல்லியருளினார்
पुत्र ‘குழந்தாய்!
मम எனது
वचः ஆக்கிரணையை
मृगु கவனமாய்க் கேள்.

दशग्रीवो महाबाहुस्तवान्मम सन्निधौ । मया निर्भस्सितश्चासीद्बहुशोक्तः सुदुर्मतिः ॥३८॥

महाबाहुः “஁ஹா பலசாலியும்
सुदुर्मतिः அதிமதிகேடனுமாகிய
दशग्रीवः தசகீவன்
मम என்னுடைய
सन्निधौ च எதிரிலையும்
उक्तवान् சொல்லிக்கொண்டான்.

मया என்னால்
बहुशः பலவாறு
उक्तः நல்லபடி சொல்லப்
பட்டவனாகவும்
निर्भस्सितः திட்டியப் பேசப்பட்ட
வனாகவும்
आसीत् இருந்தான்.

स क्रोधेन मया चोक्तो ध्वंसते च पुनः पुनः । श्रेयोऽभियुक्तं धर्म्यं च शृणु पुत्र वचो मम ॥

ச: "அவன்
என்னால்
கோபத்துடன்
எவ்வளவோ
உக்: புத்திமதி சொல்லப்
பட்டவரை
புன: ச இருந்தபோதிலும்
இன்னும்
{ தீயத்தொழிலிலேயே
பற்றுடையவரையி
ருக்கிறான்.

புன குழந்தாய்!
श्रेयोऽभियुक्तं ச்ரேயஸை விளைவிப்
பதும்
धर्म्यं च தருமத்துடன் இசை
ந்ததுமான
मम எனது
वच: च ஆக்கினையே
शृणु கேட்டு அதின்படி நட.

वरप्रदानात्संमूढो मान्यामान्यान्स दुर्मतिः । न वेत्ति मम शापाच्च प्रकृतिं दारुणां गतः ॥

ச: "அவன்
वरप्रदानात् வரப்பிரஸாதத்தினால்
संमूढ: மதிமயக்கங்கொண்ட
வனையும்
दुर्मति: தீயவழியையே நாடுகி
मम எனது [றவனையும்
शापात् சாபத்தால்

न वेत्ति मम शापाच्च प्रकृतिं दारुणां
दार्णாں கொடுமையான
प्रकृतिं பிறவிக்குணத்தை
गत: च அடைந்தவனாகவும்
मान्यामान्यान् பெரியோர்க்களையும்
சிறியோர்க்களையும்
न वेत्ति பகுத்தறியாமலிருக்
கிறான்.

तस्माद्गच्छ महाबाहो कैलासं धरणीधरम् । निवेश्य निवासार्थं त्यक्त्वा लङ्कां सहानुगः ॥

महाबाहो "மஹாபாகுவே!
तस्मात् ஆனதுபற்றி
लङ्कां இலங்கையை
त्यक्त्वा ஒழித்துவிட்டு
गच्छ நீ வெளியில் போய்விடு.

सहानुग: பரிவாரங்களுடன்
கூடினவனும்
निवासार्थं வலிப்பதற்காக
कैलासं கைலாஸ
धरणीधरं பர்வதத்திற்கு
निवेश्य நீ போய்ச்சேர்.

तत्र मन्दाकिनी रम्या नदीनामुत्तमा नदी । काञ्चनैः सूर्यसङ्काशैः पङ्कजैः संवृतोदका ॥

कुमुदैरुत्पलैश्चैव तथाऽन्यैश्च सुगन्धिभिः
तत्र एव "அங்கேதான்
सूर्यसङ्काशैः சூர்யனை நிகர்த்த
பிரகாசமுள்ள
कुमुदै: ஆம்பல்களாலும்
अन्यै: வேறு
सुगन्धिभिः உயர்ந்தவாஸையுள்ள
उत्पलै: च நீலோ த்பலங்களா
லேயும்
तथा அவ்வண்ணமே
काञ्चनै: பொன்றிற

॥ ४२ ॥
पङ्कजै: च தாபரைமலர்களாலும்
रम्या மனோஹரமாயிருக்
கிறதும்
नदीनां நதிகளுக்கெல்லாம்
उत्तमा சிறந்ததும்
{ எப்பொழுதும் ஜலப்
ரவாஹமுடையது
மான
मन्दाकिनी மந்தாகினீ என்கிற
नदी நதி இருக்கிறது.

तत्र देवाः सगन्धर्वाः साप्सरोरगकिन्नराः । विहारशीलाः सततं रमन्ते सर्वदाऽऽश्रिताः ॥

विहारशीलाः “உலாவிப் பொழுது
போக்க எண்ணங்கொ
டுதவர்கள் [ண்ட
சந்தர்வர்களுடன்
கூடினவர்களாகவும்
சாப்சரொர- } அப்ஸரசுகள், உர
கிन्नரா: } கர்கள், கின்னரர்கள்,
இவர்களுடன் கூடின
வர்களாகவும்

तत्र अत्रु
सर्वदा एन्देन्नेरैக்கும்
आश्रिताः वन्तुசேர்ந்தவர்
களாய்
सततं எந்த லேனையிலும்
रमन्ते உல்லாஸமாய் காலங்க
ழிக்கின்றார்கள்.

न हि क्षमं तवानेन वैरं धनद रक्षसा । जानीषे हि यथाऽनेन लब्धः परमको वरः ॥४४॥

अनेन “அவனால்
यथा எப்படியோ
परमरुः वरः பெரிய வரம்
लब्धः அடையப்பட்டிருக்கிற
து என்பதை
जानीषे நீ அறிவாய்.
हि ஆனதால்

धनद குபேரனே!
तव உனக்கு
अनेन இந்த
रक्षसा ராக்ஷஸனோடு
वैरं விரோதம்
क्षमं யோக்கியமானதாக
न இராது.

एवमुक्तो गृहीत्वाऽशु तद्वचः पितृगौरवात् । सदारपुत्रः सामात्यः सवाहनधनो गतः ॥

एवं “இவ்வண்ணம்
उक्तः சொல்லப்பட்ட அவர்
पितृगौरवात् பிதா என்கிற
கௌரவத்தால்
तद्वचः அவரது ஆக்கினையை
गृहीत्वा பெரிதாய்ப்பாராட்டி
मனைविकं, पुत्तिरர்
सदारपुलः { கள், இவர்களோடு
கூடினவராயும்

सामात्यः மந்திரிகளுடன் கூடி
னவராயும்
सवाहनधनः { வாஹனங்களோடும்,
செல்வத்தோடும்,
கூடினவராயும்
आशु உடனேயே
गतः போய்ச்சேர்ந்தார்.

प्रहस्तोऽथ दशग्रीवं गत्वा वचनमब्रवीत् । प्रहृष्टात्मा महात्मानं सहामात्यं सहानुजम् ॥

अथ “அப்போது
प्रहस्तः பிரஹஸ்தன்
प्रहृष्टात्मा மிக்கமகிழ்ச்சி
கொண்டவனாய்
सहानुजं தம்பிமார்களுடன்
னிருப்பவனும்,

सहामात्यं மந்திரிமார்களுடன்
னிருப்பவனும்,
महात्मानं மஹாபலிஷ்டனுமான
दशग्रीवं தசகீர்வனிடம்
गत्वा சென்று
वचनं சமாசாரத்தை
अब्रवीत् இப்படித்தெரி
வித்தான்:

शून्या सा नगरी लङ्का त्यक्तैवैनां धनदो गतः । प्रविश्य तां सहास्राभिः स्वधर्मं प्रतिपालय ॥

| | |
|--------|--------------------------------|
| सा | “ अந்த |
| लङ्का | இலங்கை |
| नगरी | நகர் |
| शून्या | காலிசெய்யப் பட்டிருக்கிறது. |
| धनदः | குபேரன் |
| एनां | இதை |

| | |
|-------------|------------------|
| त्यक्त्वा | ஒழித்துவிட்டு |
| गतः | வெளியில்போய் |
| तां | அதில் [விட்டான். |
| अस्सामिः सह | எங்களுடன் கூட |
| प्रविश्य | புகுந்து |
| स्वधर्मं | குலதருமத்தை |
| प्रतिपालय | பரிபாலி. |

एवमुक्तो दशग्रीवः प्रहस्तेन महाबलः । विवेश नगरीं लङ्कां भ्रातृभिः सवलानुगैः ॥
धनदेन परित्यक्तां सुविभक्तमहापथाम् ॥ ४८ ॥

| | |
|-------------|-------------------------------------|
| प्रहस्तेन | “ பிரஹஸ்தனால் |
| एवं | இவ்வாறு |
| उक्तः | சொல்லப்பட்டதற்கு செவ்சாய்த்த |
| महाबलः | மஹாபலிஷ்டனாகிய |
| दशग्रीवः | தசகீர்வன் |
| धनदेन | குபேரனால் |
| परित्यक्तां | முற்றிலும் ஒழித்து விடப்பட்டதும் |

| | |
|-------------------------|---|
| सुविभक्त- महापथाम् } | அழகாயும், ஒழுங்கா யுமிருக்கின்ற பெரி யவீ திகளையுட |
| लङ्कां नगरीं | இலங்கை [யதுமான நகரத்தின் |
| भ्रातृभिः | ஸகோதரர்கள் ளோடும், |
| सवलानुगैः | ஸைன்யங்களோடும், பரிவாரங்களோடும், |
| विवेश | குடிபுகுந்தான். |

स चाभिषिक्तः क्षणदाचरैस्तदा निवेशयामास पुरीं दशाननः ।

निकामपूर्णा च बभूव सा पुरी निशाचरैर्नीलवलाहकोपमैः ॥ ४९ ॥

| | | |
|------------|----------------|-------------------|
| तदा | “ அப்பொழுது | |
| सः | அந்த | |
| दशाननः | தசானன் | |
| क्षणदाचरैः | ராக்கூஸர்களால் | |
| अभिषिक्तः | { | राज्यायम् पत्ताபி |
| | | क्षेकम्செய்யப் |
| | | பட்டவனால் |
| पुरीं | நகரத்தில் | |

| | |
|---------------|--------------------------------|
| निवेशयामास | ஸ்திரமாயிருந்தான். |
| सा | அந்த |
| पुरीं च | நகரமும் |
| नीलवलाहकोपमैः | கருமேகங்களைப் போலிருக்கின்ற |
| निशाचरैः च | அரக்கர்களாலேயே |
| निकामपूर्णा | ஏராளமாய் நிறம்பி |
| बभूव | விளங்கிற்று. [யதாக |

धनेश्वरस्त्वथ पितृवाक्यगौरवान्नद्यवेश्यच्छशिविमले गिरौ पुरीम् ।

स्वलंकृतैर्भवनवरैर्विभूषितां पुरन्दरस्येव तदाऽमरावतीम् ॥ ५० ॥

धनेश्वरः तु
अथ
पितृवाक्य-
गौरवात् }
तदा
शशिविमले
गिरौ.
पुरंदरस्य

“குபேரனோவெனில்
மற்றப்படி
தந்தைதொல்மிக்க
மந்திரமில்லை என்
கிறவாக்கில் ஆஸக்தி
யுடையதால்
அப்பொழுது
சந்திரன்போன்ற
வெண்ணிறமான
கிரியிலே
இந்திரனது

अमरावर्षी
इव
खलंकृतैः
भवनचरैः
विभूषितां
पुरीं
न्यवेशयत्

பட்டணத்தை
போலிருக்கும்படி.
நன்றாய் அலங்கரிக்கப்
பட்ட
உக்கிருஷ்டமான
மாளிகைகளால்
அழகுபெற்று விளங்
குக்கிறதாய்
ஒரு நகரத்தை
நிருமித்தார்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे एकादशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 21183

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 489



द्वादशः सर्गः—பன்னிரண்டாவது ஸர்க்கம். ॥ १२ ॥

रावणादिविवाहः—ராவணன் முதலியவரது விவாஹம்.

राक्षसेन्द्रोऽभिषिक्तस्तु भ्रातृभ्यां सहितस्तदा ।

ततः प्रदानं राक्षस्या भगिन्याः समचिन्तयत्

॥ १ ॥

तदा
राक्षसेन्द्रः
अभिषिक्तः
तु
ततः

“அப்பொழுது
ராக்ஷஸேனாத்தமன்
பட்டாபிஷேகம்
பெற்றவனாய்
ஆனதும்
அப்போதிலிருந்து

राक्षस्याः
भगिन्याः
प्रदानं
भ्रातृभ्यां
सहितः
र.सचिन्तयत्

அரக்கியாகிற
தங்கையினது
கல்யாணத்தைப்பற்றி
இருவரேறாதார்களளு
கடினவனாய் [டன்
ஆலோசனைசெய்தான்.

स्वसारं कालकेयाय दानवेन्द्राय राक्षसीम् । ददौ शूर्पणखां नाम विद्युजिह्वाय नामतः ॥

स्वसारं
नामतः
शूर्पणखां
नाम
राक्षसीं

“தங்கையாகிற
பெயரால்
சூர்ப்பணகை
என்று அழைக்கப்ப
படுகிற
அரக்கியை

कालकेयाय
दानवेन्द्राय
विद्युजिह्वाय
ददौ

{ ஒருதகூனிள் புதல்வி
யாகிய காலகை என்
பவள் புத்திரனு
தானவச்சேரஷ்டனு
மாகிய
வித்யுஜிஹ்வன்
என்பவனுக்கு
பாணிக்கூறஹணம்
செய்துகொடுத்தான்.

अथ दत्त्वा स्वसारं स मृगयां पर्यटन्नृप

॥ ३ ॥

नृप “சக்கிரவர்த்தியே!
सः அவன்
स्वसारं தங்கைக்கு

दत्त्वा कल्याणத்தை
முடித்துவிட்டு
मृगयां வேட்டையாடுவதற்கு
पर्यटत् वனத்திற்குச்
சென்றான்.

तत्रापश्यत्ततो राम मयं नाम दितेः सुतम्

॥ ४ ॥

राम “ஸ்ரீராம!
तत्र அவ்விடத்தில்
सतः அப்பொழுது
दितेः திடீயின்

सुतं புதல்வனை
मयं மயன்
नाम என்பவனை
अपश्यत् கண்டான்.

कन्यासहायं तं दृष्ट्वा दशश्रीवो निशाचरः । अपृच्छत्को भवानेको निर्मानुष्यमृगे वने ॥
अनया मृगशाबाक्ष्या किमर्थं सह तिष्ठसि ॥ ५ ॥

दशश्रीवः “தசசீவ
निशाचरः அரக்கன்
तं அவனை
कन्यासहायं { ஒரு கண்ணிகையைப்
பக்கலில் வைத்துக்
கொண்டிருப்பவனாய்
दृष्ट्वा கண்டு
अपृच्छत् இப்படி வினாவினான்:
भवान् ‘நீ
कः யார் ?

मृगशाबाक्ष्या { மான்குட்டியின் விழி
போன்ற விழிகளைய
டைய
अनया सह இவளோடு கூட
एकः தனியாய்
निर्मानुष्य- } கண்ணுக்கு எட்டிய
मृगे } வரையில் மனுஷ்ய
மிருகஸஞ்சாரமே
वने காட்டில் [யில்லாத
किमर्थं ஏன்
तिष्ठसि இருக்கிறாய் ?

मयस्त्वथाब्रवीद्राम पृच्छन्तं तं निशाचरम् ।

श्रूयतां सर्वमाख्यास्ये यथावृत्तमिदं मम ॥

राम “ஸ்ரீராம!
मयः மயன்
तु இந்த ஸந்தர்ப்பத்தில்
पृच्छन्तं கேள்விகேட்கின்ற
तं அந்த
निशाचरं அரக்கனைப்பார்ந்து
अथ இப்படி
अब्रवीत् பதில் சொன்னான் :

मम ‘எனது
इदं இந்த
यथावृत्तं நடைபெற்ற விஷயம்
सर्वं எல்லாவற்றையும்
आख्यास्ये சொல்லுகிறேன்.
श्रूयताम् கவனமாய் கேட்கப்
பட்டும்.

हेमा नामाप्सरास्तात श्रुतपूर्वा यदि त्वया । दैवतैर्मम सा दत्ता पौलोमीव शतक्रतोः ॥

| | |
|-------------|---------------------------------|
| तात | “ஐயா! |
| हेमा | ஹேமா |
| नाम | என்ற பெயருள்ள |
| अप्सराः | ஓர் அப்ஸராஸ்தீர் |
| त्वया | தேவரீராலும் |
| श्रुतपूर्वा | வதந்தியால் கேள்விப் பட்டவளாக |
| यदि | இருந்தாலுமிருக்க லார். |

| | |
|----------|-------------------------------------|
| शतक्रतोः | இந்திரனுக்கு |
| पौलोमी | இந்திராணி |
| इव | எப்படியோ அப்படியே |
| दैवतैः | தேவதைகளால் |
| मम | எனக்கு |
| सा | அவள் |
| दत्ता | கல்யாணஞ்செய்து கொடுக்கப்பட்டாள். |

तस्यां सक्तमनास्तात पञ्च वर्षशतान्यहम् । सा च दैवतकार्येण त्रयोदश समा गताः ॥८॥

| | |
|----------------|----------------------------------|
| तात | “ஐயா! |
| पञ्च वर्षशतानि | ஐந்துநூறுண்டுகள் |
| अहं | நான் |
| तस्यां | அவளிடத்தில் |
| सक्तमनाः | ஆஸக்திகொண்ட மனத்தையிருந்தேன். |

| | |
|----------------|-------------------------------------|
| सा | அவள் |
| दैवतकार्येण | தேவதைகளின் காரி யத்தில் புகுந்து |
| त्रयोदश समाः च | பதமூன்று வருஷங் களும் |
| गताः | ஆயின. |

वर्षं चतुर्दशं चैव ततो हेममयं पुरम् । वज्रवैडूर्यचित्रं च मायया निर्मितं मया ॥९॥

| | |
|---------------------|---|
| ततः | “அதன்மேல் |
| चतुर्दशं वर्षं | பதினான்காவது வரு ஷத்தில் |
| वज्रवैडूर्यचित्रं च | வஜ்ரவைடூர்யங்களால் லங்கரிக்கப்பட்டதும் |

| | |
|-----------|--------------------|
| हेममयं एव | பொன்மயமானது |
| पुरं | ஒரு பட்டணம் [மான |
| मया | என்னால் |
| मायया च | மாயையினாலேயே |
| निर्मितम् | நிர்மிக்கப்பட்டது. |

तत्राहमवसं दीनस्तया हीनः सुदुःखितः । तस्मात्पुराद्दुहितरं गृहीत्वा वनमागतः ॥१०॥

| | |
|-----------|-------------------|
| तया | “அவளோடு |
| हीनः | பிரிந்து |
| अहं | நான் |
| सुदुःखितः | மிக்க மனம் நொந்த |
| दीनः | தூர்பலனாய் [வனாய் |
| तव | அதில் |

| | |
|----------|-----------------|
| अवसं | வாஸம்செய்து |
| तस्मात् | அந்த [வந்தேன். |
| पुरात् | பட்டணத்தினின்று |
| दुहितरं | பெண்ணை |
| गृहीत्वा | அழைத்துக்கொண்டு |
| वनं | காட்டுக்கு |
| आगतः | வந்துவிட்டேன். |

इयं ममात्मजा राजस्तत्याः कुक्षौ विवर्धिता । भर्तारिमनया सार्धमस्याः प्राप्तोऽस्मि मार्गितुम् ॥

| | |
|---------------|---------------------|
| राजन् | “ஸ்வாமியே! |
| इयं | இவள் |
| मम आत्मजा | எனது ஓளராஸபுத்திரி. |
| तस्याः कुक्षौ | அவளது வயிற்றில் |
| विवर्धिता | பிறந்தவள். |
| अनया सार्धं | இவளுடன் கூட. |

| | |
|-----------|--------------------------|
| अस्याः | இவளுக்கு |
| भर्तारं | கனவனை |
| मार्गितुं | தேடிக்கண்டுபிடிக்க |
| प्राप्तः | வெளியேபுறப் பட்டவனாய் |
| अस्मि | இங்கேயிருக்கிறேன். |

कन्यापितृत्वं दुःखं हि सर्वेषां मानकाङ्क्षिणाम् ।
कन्या हि द्वे कुले नित्यं संशये स्थाप्य तिष्ठति

॥ १२ ॥

मानकांक्षिणां " 'மானத்தில் கருத்
துள்ளவர்கள்
सर्वेषां எல்லோருக்கும்
कन्यापितृत्वं கண்ணிகைகளுக்கும்
தந்தையாகுதல்
दुःखं हि துக்கமெய்யாம்.
हि ஏனெனில்

कन्या ஒருபெண்
द्वे कुले இரண்டு வம்சங்களோ
नित्यं எப்பொழுதும்
संशये கவலையில்
स्थाप्य நிறுத்திக்கொண்டு
तिष्ठति இருக்கிறார்.

द्वौ सुतौ हि मम त्वस्यां भार्यायां संबभूवतुः । मायावी प्रथमस्तात दुन्दुभिस्तदनन्तरः ॥

तात " 'ஐயா!
अस्यां இந்த
भार्यायां तु பத்தனியினிடத்திலே
யே
मम हि எனக்கே
द्वौ இரண்டு

सुतौ புத்திரர்கள்
संबभूवतुः பிறந்தார்கள்.
प्रथमः மூத்தவன்
मायावी மாயாவி என்பவன்.
तदनन्तरः அவனுக்கடுத்தவன்
दुन्दुभिः துந்துபி என்பவன்.

एवं ते सर्वमाख्यातं यथातत्त्वेन पृच्छतः । त्वामिदानीं कथं तात जानीयां को भवानिति ॥

तात " 'ஐயா!
पृच्छतः வினாவிய
ते தேவரிருக்கு
यथातत्त्वेन நடந்தபடியே
सर्वं எல்லாம்
आख्यातं சொல்லிவிடப்பட்டது.
एवं அவ்வண்ணமே

इदानीं இப்பொழுது
त्वां தேவரீரை
कथं எப்படித்தான்
जानीयां கேட்டு நானறிந்து
को கொள்வேன் ?
इति என்றாலும்
भवान् நீர்
कः யார் ?

एवमुक्तं तु तद्रक्षो विनीतमिदमब्रवीत् । अहं पौलस्त्यतनयो दशग्रीवश्च नामतः ॥

मुनेर्विश्रवसो यस्तु तृतीयो ब्रह्मणोऽभवत्

॥ १५ ॥

एवं " 'மேற்கண்டவிதமாய்
विनीतं வணக்கமாய்
उक्तं तु உரைசெய்த அவனைப்
इदं இப்படி [பார்த்து
अप्र वीन् பேசினான்;
विश्रवसः 'விசுவாவென்கிற
मुनेः ரிஷிக்கு
रक्षः அரக்கனாய்
अभवत् பிறந்தது;

यः तु எவனே
तत्र अहं அந்த நான்
पौलस्त्यतनयः { பெளஸ்தியரின் (அ
தாவது புலஸ்தியரின்
குமாரராகிய விசுவ
வாரின்) புதல்வன்.
दशग्रीवः தசகரீலனென
नामतः பெயரிடப்பட்டவன்.
ब्रह्मणः च பிரம்மதேவருக்கே
तृतीयः பரபொளத்திரன் . ॥

एवमुक्तस्तदा राम राक्षसेन्द्रेण दानवः । महर्षेस्तनयं ज्ञात्वा मयो हर्षमुपागतः ॥
 दातुं दुहितरं तस्मै रोचयमास तत्र वै ॥ १६ ॥

ராம " ஸ்ரீராம!
 ராக்ஷஸமன்னனால்
 பூவ் மேற்கண்டபடி
 உத: சொல்லியதற்குச்
 செவிகாய்த்த
 மய: மயனென்ற
 தானவ: தானவன்
 மஹர்: மஹரிஷியின்
 தனயं புதல்வனாக
 ஜாத்வா தெரிந்துகொண்டு

ஹ்ஃ மனஸந்துஷ்டியை
 உபாகத: அடைந்தவனாய்
 தலவீ அங்கேயே
 ததா அப்பொழுதே
 துஹிதரம் பெண்ணை
 தஸ்மீ அவனுக்கு
 தாது கல்யாணம் செய்து
 கொடுக்க
 ரோசயாமாச இஷ்டப்பட்டான்.

करणे तु करं तस्या ग्राहयित्वा मयस्तदा । प्रहसन्प्राह दैत्येन्द्रो राक्षसेन्द्रमिदं वचः ॥

दैत्येन्द्र: " தைத்தேயந்திரனான
 மய: மயன்
 ப்ரஹஸந் முகமலர்ச்சிகொண்ட
 வனாய்
 ததா அப்பொழுது
 தஸ்யா: அவளுடைய
 கரம் கையை
 கரண கையால்

ப்ரஹயித்வா பிடித்துக்கொள்ளும்
 படிசெய்து,
 ராக்ஷஸேந்ரம் ராக்ஷஸமன்னனைப்
 பார்த்து
 து இந்த விஷயத்தில்
 இவ்ஃ பின்வரும்
 வச: சொல்லி
 ப்ராஹ சொன்னான்:

इयं ममात्मजा राजन्हेमयाऽप्सरासा धृता । कन्या मन्दोदरी नाम पत्न्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ரஜந் " வேந்தே!
 இயம் இந்த
 கந்யா கன்னிகை
 மம ஹ்மஜா எனது ஒளரஸபுத்தரி.
 ஹ்மயா ஹ்மறமா என்ற
 அஃஸரஸா அபஸரஸால்

ஐதா சிட்சிக்கப்பட்டவள்.
 மந்ஹோதரி மந்தோதரி
 நாம என்ற பெயருடைய
 வள்.
 பந்யர்த் தருமபத்தனியாக
 ப்ர:கூஹ்யதாம் பரிக்கிரகிக்கப்பட்டும்.

बाढमित्येव तं राम दशमीवोऽभ्यभाषत। प्रज्वाल्य तत्र चैवाग्निमकरोत्पाणिंसंग्रहम् ॥१७॥

ராம " ஸ்ரீராம!
 தசமீவஸ: தசகீவன்
 த் அவினைப்பார்த்து
 பாட " அங்நாணமே ஆகுத"
 ஹதி என்று
 அஃய்மபாஸத பதிலுரைத்தான்.

தலச அங்கேயே
 அஃதி புவ அக்கினியையும்
 ப்ரஜால்ய ஜ்வலிக்கச்செய்து
 பாணிஸ்ரஹ் புவ கல்யாணச்சடங்கையும்
 அகரோத் செய்துமுடித்தான்.

स हि तस्य मयो राम शापाभिन्नस्तपोधनात् । विदित्वा तेन सा दत्ता तस्य पैतामहं कुलम् ॥

| | |
|---------------|--------------------------------------|
| राम | “ஸ்ரீராம! |
| सः | அந்த |
| मयः | மயன் |
| तस्य | அவனுக்கு |
| तपोधनात् | தபோதனரிடமிருந்து |
| शापाभिन्नः हि | சாபமிருக்கிறதென்று அறிந்தவன்தான். |
| तस्य | அவனுடைய |

| | |
|----------|-------------------------------------|
| पैतामहं | கொள்ளுப்பாட்டனார் (பிரம்மதேவர்) |
| कुलं | குலப்பெருமையை |
| विदित्वा | பாராட்டி, |
| सा | அவள் |
| तेन | அவனால் |
| दत्ता | கல்யாணஞ்செய்து கொடுக்கப்பட்டாள். |

अमोघां तस्य शक्तिं च प्रददौ परमाद्भुताम् । परेण तपसा लब्धां जग्निवाँल्लक्ष्मणं यया ॥

| | |
|-------------|----------------------------------|
| परेण तपसा | “கடும் தவத்தால் |
| लब्धां | அடையப்பட்டதும், |
| अमोघां | அமோகமானதும், |
| परमाद्भुतां | மிக்க அற்புதமாயிருக்கிற துமான |
| शक्तिं | “சக்தி” என்னும் ஓர் ஆயுதத்தை |

| | |
|-----------|-------------------------------|
| तस्य | அவனுக்கு |
| प्रददौ | கல்யாணச்சீராய் கொடுத்தான். |
| यया च | இது எதுவோ அத னால்தான் |
| लक्ष्मणं | இலக்ஷ்மணரை |
| जग्निवान् | மெய்மறக்கச் செய்தான். |

एवं स्वीकृतदारो वै लङ्काया ईश्वरः प्रभुः । गत्वा तु नगरीं भार्यै भ्रातृभ्यां समुपाहरत् ॥

| | |
|-------------|--|
| लङ्कायाः | “இலங்கையின் |
| प्रभुः | பிரபுவாகிய |
| ईश्वरः | மன்னன் |
| एवं | இவ்வண்ணம் |
| स्वीकृतदारः | } தருமபத்னியைக்கூட அழைத்துக்கொண் டு போகிறவனாய் |

| | |
|----------------|---------------------------|
| नगरीं | நகரத்திற்கு |
| गत्वा | வந்துசேர்ந்து, |
| तु | இப்பொழுது |
| भ्रातृभ्यां वै | ஸகோதரர்களிரு வருக்கும் |
| भार्यै | இருபத்னிகளைப்பற்றி |
| समुपाहरत् | விசாரித்தான். |

वैरोचनस्य दौहित्रीं वज्रज्वालेति नामतः । तां भार्यां कुम्भकर्णस्य रावणः समकल्पयत् ॥

| | |
|--------------|-----------------|
| रावणः | “இராவணன் |
| वैरोचनस्य | வைரோசனனுடைய |
| तां | அந்த |
| दौहित्रीं | பெண்ணின் பெண்ணை |
| कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணனுக்கு |

| | |
|------------|-----------------|
| भार्यां | மனைவியாக |
| समकल्पयत् | ஸமர்ப்பித்தான். |
| वज्रज्वाला | வஜ்ஜவாலா |
| इति | என்பது |
| नामतः | இவன் பெயர். |

गन्धर्वराजस्य सुतां शैलूषस्य महात्मनः । सरमां नाम धर्मज्ञां लेभे भार्यां विभीषणः ॥

| | |
|----------|--------------|
| विभीषणः | “விபீஷணர் |
| भार्यां | தருமபத்னியாக |
| महात्मनः | மஹாத்மாவான |
| शैलूषस्य | சைலூஷனென்கிற |

| | |
|---------------|------------------|
| गन्धर्वराजस्य | கந்தர்வராஜனது |
| सुतां | மகளும் |
| धर्मज्ञां | தருமிஷ்டையுமாகிய |
| सरमां नाम | ஸரமை என்பவளை |
| लेभे | பெற்றார். |

तीरे तु सरसो वै तु सञ्ज्ञे मानसस्य हि । सरस्तदा मानसं तु ववृधे जलदागमे ॥२५॥

| | | | |
|---------|-----------------|---------|-------------------|
| मानसस्य | “மானஸ | तु | இந்த ஸமயத்தில் |
| सरसः | ஸரஸ்வின்னது | मानसं | மானஸ |
| तीरे तु | கரையிலேயே | सरः तु | ஸரஸ்-ம் |
| सञ्ज्ञे | பிறந்தாள். | जलदागमे | மழைக்காலத்தில் |
| हि वै | இது பிரஸித்தம். | ववृधे | கரைபுரண்டோடிற்று. |
| तदा | அப்பொழுது | | |

मात्रा तु तस्याः कन्यायाः स्नेहेनाक्रन्दितं वचः । सरो मा वर्धयस्वेति ततः सा सरमाऽभवत् ॥

| | | | |
|-------------|----------------|------------|-------------------|
| तस्याः | “அந்த | इति | என்கிற |
| कन्यायाः | குழந்தையின் | वचः | பிரார்த்தனையானது |
| मात्रा | தாயினால் | आक्रन्दितं | உரத்திக்கூவப்பட்ட |
| स्नेहेन | வாத்ஸல்யத்தால் | ततः | அதினால் [டது. |
| तु | அச்சமயம் | सा | அவள் |
| सरः | ‘ஓ தடாகமே! | सरमा | ‘ஸரமை’ என்ற பெயர் |
| मा वर्धयस्व | கரைபுரண்டு ஓட | | பூண்டவளாய் |
| | வேண்டாம்’. | अभवत् | ஆனால். |

एवं ते कृतदारा वै रेमिरे तत्र राक्षसाः । स्वां स्वां भार्यामुपागम्य गन्धर्वा इव नन्दने ॥

| | | | |
|-------------|--------------|-----------|------------------|
| एवं | “இவ்வண்ணம் | गन्धर्वाः | கந்தர்வர்கள் |
| कृतदाराः | கல்யாணமானவர் | नन्दने | இந்திரனது நந்த |
| ते | அந்த [களான | | வனத்தில் |
| राक्षसाः वै | அரக்கர்களும் | इव | எப்படியோ அப்படி. |
| स्वां स्वां | தம், தம் | तत्र | அங்கு [யே |
| भार्या | பத்னியை | रेमिरे | ஸந்தோஷமாயிருந் |
| उपागम्य | அடைந்து | | தார்கள். |

ततो मन्दोदरी पुत्रं मेघनादमजीजनत् । स एष इन्द्रजिन्नाम युष्माभिरभिधीयते ॥२८॥

| | | | |
|----------|---------------|----------------|-------------------|
| मन्दोदरी | “மந்தோதரி | एषः | இந்த |
| ततः | அவனிடத்தில் | सः | அவன் |
| मेघनादः | மேகநாதனைன்கிற | इन्द्रजित् नाम | இந்திரஜித்தென |
| पुत्रं | ஒரு மகனை | युष्माभिः | உங்களால் |
| अजीजनत् | பெற்றான். | अभिधीयते | வழங்கப்படுகிறான். |

जातमात्रेण हि पुरा तेन रावणसूनुना । रुदता सुमहान्मुक्तो नादो जलधरोपमः ॥२९॥

| | | | |
|---------------|------------|------------|-------------------|
| पुरा | “முன்பு | रावणसूनुना | ராவணன் புதல்வனால் |
| जातमात्रेण हि | பிறந்ததுமே | जलधरोपमः | மேகத்தை ஒத்த |
| रुदता तु | அழும் | सुमहान् | மிகப்பெரிய |
| तेन | அந்த | नादः | நாதம் |
| | | मुक्तः | செய்யப்பட்டது. |

जडीकृता च सा लङ्का तस्य नादेन राघव । पिता तस्याकरोन्नाम मेघनाद इति स्वयम्॥

रावव "ஸ்ரீராகவ !
 तस्य அவனுடைய
 नादेन நாதத்தால்
 सा அந்த
 लङ्का இலங்கை
 जडीकृता மெய்மறந்ததாயிற்று.
 च அதனால்

तस्य அவனது
 पिता தந்தை
 स्वयं தானே
 मेघनादः "மேகநாதன்"
 इति என்கிற
 नाम பெயரை
 अकरोत् இட்டான்.

सोऽवर्धत तदा राम रावणान्तःपुरे शुभे । रक्ष्यमाणो वरस्त्रीभिश्छन्नः काष्ठैरिवानलः ॥

राम "ஸ்ரீராம!
 सः அவன்
 शुभे அழகிய
 रावणान्तःपुरे ராவணனது அந்தப்
 புத்தில்
 वरस्त्रीभिः சிறந்த ஸ்த்ரீகளால்

छन्नः { இதரநேத்திரதோஷ
 த்துக்கு இடங்கொ
 டாதவண்ணமாய்
 போஷிக்கப்பட்டவ
 काष्ठैः கட்டைகளால் [கை
 अनलः நெருப்பு
 इव எப்படியோ அப்படி
 तदा அப்பொழுது
 अवर्धत வளர்ந்துவந்தான்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे द्वादशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 21214

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 490

त्रयोदशः सर्गः—பதின்மூன்றாவது ஸர்க்கம். ॥ ३३ ॥

कुवेरदूतवधः—குவேரனது தூதனைக் கொல்வது.

अथ लोकेश्वरोत्सृष्टा तत्र कालेन केनचित् । निद्रा समभवत्तीव्रा कुम्भकर्णस्य रूपिणी ॥

अथ "இவ்வாறு
 केनचित् சில
 कालेन காலஞ்செல்லுகையில்
 लोकेश्वरोत्सृष्टा பிரம்மதேவரால் அரு
 எப்பட்டதாகிய
 तीव्रा தீவ்ரமான

निद्रा நித்திரை
 रूपिणी குடிக்கொண்ட
 तत्र அந்த
 कुम्भकर्णस्य கும்பகர்ணனுக்கு
 समभवत् உண்டாயிற்று.

ततो भ्रातरमासीत् कुम्भकर्णोऽब्रवीद्वचः । निद्रा मां बाधते राजन्कारयस्व ममालयम् ॥

कुम्भकर्णः "கும்பகர்ணன்
 तः அதனால்
 आसीत् உட்கார்ந்துகொண்டி
 ருந்த
 भ्रातरं தமயனைப்பார்த்து
 वचः இந்தமொழியை
 अब्रवीत् சொன்னான்;

राजन् 'அரசே!
 निद्रा தூக்கம்
 मां बाधते என்னை வருத்துகி
 मम எனக்கு [றது.
 आरयं ஒரு மாளிகையை
 कारयस्व நிருமித்துத்தர
 வேண்டும்.

विनियुक्तास्ततो राज्ञा शिल्पिनो विश्वकर्मावत् । अकुर्वन् कुम्भकर्णस्य कैलाससममालयम् ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|----------------|--|
| ततः | “ அப்பொழுது | கேலாசமம் | } பரமசிவனது வாஸஸ்தலமாகியகைலாஸத்துக்குச்சமமான |
| ராஜா | ராஜனால் | அலயம் | |
| विनियुक्ताः | கட்டளையிடப்பட்ட | विश्वकर्मा इत् | ஒருமாளிகையை |
| शिल्पिनः | சிற்பிகள் | | விச்வகர்மாவே செய் |
| कुम्भकर्णस्य | கும்பகர்ணனுக்கு | अकुर्वन् | ததுபோல் செய்துமுடித்தார்கள். |

विस्तीर्णं योजनं शुभ्रं ततो द्विगुणमायतम् । दर्शनीयं निराबाधं कुम्भकर्णस्य चक्रिरे ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------|------------|-----------------|
| कुम्भकर्णस्य | “கும்பகர்ணனுக்கு | योजनं | ஒருயோஜனை |
| निराबाधं | நிச்சப்தமாயிருக்கும் | विस्तीर्णं | அகலமுள்ளதாயும் |
| | வண்ணமாயும் | ततः | அதைக்காட்டிலும் |
| दर्शनीयं | கண்ணுக்கமுகாயிருக்கிறதாயும் | द्विगुणं | இருமடங்கு |
| | | भायतं | நீளமுடையதாயும் |
| शुभ्रं | ஒளிவீசுகிறதாயும் | चक्रिरे | அமைத்தார்கள். |

स्फाटिकैः काञ्चनैश्चित्रैः स्तम्भैः सर्वत्र शोभितम् । वैदूर्यकृतसोपानं किङ्किणीजालकं तथा ॥

दान्ततोरणविन्यस्तं वज्रस्फटिकवेदिकम् । मनोहरं सर्वसुखं कारयामास राज्ञसः ॥

सर्वत्र सुखदं नित्यं मेरोः पुण्यां गुहापिव ॥ ६ ॥

| | | | |
|------------------|--------------------------------------|--------------|-----------------------------------|
| राक्षसः | “அரக்கன் | दान्ततोरण-} | தந்தத்தால்செய்யப் |
| काञ्चनैः | தங்கத்தாலியற்றப் | विन्यस्तं } | பட்டதோரணவாயல்களையுடையதும் |
| | பட்டனவும் | वज्रस्फटिक-} | வைரக்கற்களால் |
| स्फाटिकैः | படிகக்கற்களாலியற்றப்பட்டனவும் | वेदिकं } | செய்யப்பட்டதிண்ணைகளையுடையதும் |
| चित्रैः | சித்திரங்கள்வரையப்பட்டனவுமான | नित्यं | எப்பொழுதும் |
| स्तम्भैः | ஸ்தம்பங்களால் | सर्वत्र | எல்லாவிடத்திலும் |
| सर्वत्र | எல்லாபக்கங்களிலும் | सुखदं | ஸுகத்தைத்தருகிற |
| शोभितं | அழகாயிருக்கிறதும் | मनोहरं | மனோஹரமாயும் [தும் |
| तथा | அவ்வண்ணமே | सर्वसुखं | எல்லாவிடத்திலும் |
| | வைடுரியங்களாலி | मेरोः | ஸுகமாயிருக்கிறதும் |
| वैदूर्यकृतसोपानं | மேழக்கப்பட்டமேத்தைப்படிகளையுடையதும் | पुण्यां | மேருவின் |
| | | गुहां | ரம்யமான |
| किङ्किणीजालकं | சிறுமணிகள் கட்டிய ஜன்னல்களையுடையதும் | इव | குகையை |
| | | कारयामास | போலிருக்கிறதாயும் செய்துவைத்தான். |

तत्र निद्रासमाविष्टः कुम्भकर्णो महाबलः । बहून्यब्दसहस्राणि शयानो न प्रबुध्यते ॥७॥

| | | | |
|-----------------|--|-------------|-------------------------------|
| तत्र | “அதில் | कुम्भकर्णः | கும்பகர்ணன் |
| निद्रासमाविष्टः | தூக்கத்தினால் மேற் கொள்ளப்பட்டவராய் | बहूनि | பல |
| शयानः | படுத்துக்கொண்ட வனும் | ऋदुसहस्राणि | ஆயிரம் வருஷங்கள் |
| महाबलः | மஹாபலிஷ்டனுமான | न प्रबुध्यो | கண்விழித்துக்கொள் ளவில்லை. |

निद्राभिभूते तु तदा कुम्भकर्णे दशाननः । देवर्षियसगन्धर्वान्सञ्जये हि निरङ्कुशः ॥८॥

| | | | |
|-----------------|--|------------------------------|--|
| तदा | “அப்பொழுது | निरङ्कुशः | எப்படிப்பட்ட கட்டுக் கடங்கா தவறாய் |
| कुम्भकर्णे | கும்பகர்ணன் | देवर्षियस- गन्धर्वान् हि} | தேவர்கள், ரிஷிகள், யக்ஷர்கள், கந்தர்வர்கள் இவர்களுடைய துன்புறுத்தினான். |
| निद्राभिभूते तु | பிரபலமாய் நித்திரை கொண்டிருக்கையிலும் | सञ्जये | |
| दशाननः | தசானனன் | | |

उद्यानानि च चित्राणि नन्दनादीनि यानि च ।

तानि गत्वा सुसंकुद्रो भिनत्ति स्म दशाननः

॥ ९ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------|-------------|-----------------|
| सुसंकुद्रः | “மஹாகொடியனாகிய | उद्यानानि | உத்யானவனங்களும் |
| दशाननः | தசானன் | यानि च | எவைகளோ; |
| नन्दनादीनि च | சிறந்த நந்தவனங் களும் | तानि | அவைகளில் |
| चित्राणि | மிக்க அழகுவாய்ந்த | गत्वा | புகுந்து |
| | | भिनत्ति स्म | உருவழித்தான். |

नर्दी गज इव क्रीडन्तृक्षान्वायुरिव क्षिपन् । नगान्वज्र इवोत्सृष्टो विध्वंसयति राक्षसः ॥

| | | | |
|----------|-----------------------------|------------|-----------------------------|
| राक्षसः | “அரக்கன் | क्षिपन् | வீழ்த்தித்தள்ளுகிறது |
| गजः | யானை | इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமேயும், |
| नर्दी | நதியை | वज्रः | வஜ்ராயுதம் |
| क्रीडन् | விளையாடிக்கலக்கு கிறது | नगान् | பர்வதங்களை |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமேயும்; | उत्सृष्टः | பொடியாக்குகிறது |
| वायुः | வாயு | इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமேயும் |
| वृक्षान् | மரங்களை | विध्वंसयति | நாசஞ்செய்தான். |

तथावृत्तं तु विज्ञाय दशग्रीवं धनेश्वरः । कुलानुरूपं धर्मज्ञो वृत्तं संस्मृत्य चात्मनः ॥११॥
सौभ्रात्रदर्शनार्थं तु दूतं वैश्रवणस्तदा । लङ्कां संप्रेषयामास दशग्रीवस्य वै हितम् ॥१२॥

| | |
|------------|----------------------------------|
| धर्मज्ञः | “ தருமமறிந்தவரும் |
| वैश्रवणः | விசுவாவின புதல் |
| धनेश्वरः | குபேரர் [வருமாகிய |
| तदा | அப்பொழுது |
| तु | இது விஷயமாய் |
| दशमीवं | தசக்ரீவனை |
| तथावृत्तं | அப்படிப்பட்ட நடத் தையுடையவனாக |
| विज्ञाय | கண்டு, |
| आम्भनः | தனது |
| कुलानुरूपं | வம்சப்பெருமைக் கேற்ற |

| | |
|-----------------------------|---|
| वृत्तं च | நல்லொழுக்கத்தை யும் |
| संस्मृत्य | மனதில்கொண்டு |
| दशमीवस्य | தசக்ரீவனது |
| हितं वै | நன்மைக்காகவும் |
| सौभ्रात्र- दर्शनार्थं तु | நல்ல ஸோதரபாவத் தை அறிவிப்பதற் காகவும் |
| लङ्कां | இலங்கைக்கு |
| दूतं | ஒரு தூதனை |
| संप्रेषयामास | அனுப்பினார். |

स गत्वा नगरीं लङ्कामाससाद् विभीषणम् । मानितस्तेन धर्मेण पृथुश्रागमनं प्रति ॥१३॥

| | |
|---------|----------------------|
| सः | “ அவன் |
| लङ्कां | இலங்கை |
| नगरीं | நகரில் |
| गत्वा | புகுந்து, |
| विभीषणं | விபிஷணரை |
| आससाद् | முதலில் தரிசித்தான். |

| | |
|-------------|------------------|
| तेन | அவரால் |
| धर्मेण | தர்மமுறைப்படி |
| मानितः | ஸம்மானிக்கப்பட்ட |
| च | பின்னர் [வளைய |
| आगमनं प्रति | வந்த கார்யத்தை |
| पृष्टः | வினாப்பட்டான். |

पृष्ट्वा च कुशलं राज्ञो ज्ञातीनां च विभीषणः । सभायां दर्शयामास तमासीनं दशाननम् ॥

| | |
|-----------|-------------|
| विभीषणः | “ விபிஷணர் |
| राज्ञः | மன்னரது |
| ज्ञातीनां | ஞாதிக்களின் |
| कुशलं | குசலத்தை |
| पृष्ट्वा | கேட்டு, |
| च | அதன்மேல் |

| | |
|-----------|------------------------------|
| सभायां | சபையில் |
| आसीनं | உட்கார்ந்துக்கொண் டிருந்த |
| दशाननं | தசானனை |
| तं | அவனுக்கு |
| दर्शयामास | காண்பித்தார். |

स दृष्ट्वा तत्र राजानं दीप्यमानं स्वतेजसा । जयेति वाचा संपूज्य तूर्णो समभवत्तदा ॥

| | |
|-----------|---------------------------------|
| सः | “ அவன் |
| तत्र | அங்கு |
| तदा | அப்பொழுது |
| स्वतेजसा | தனது காந்தியினால் |
| दीप्यमानं | ஜ்வலித்துக்கொண்டி. ருக்கின்ற |
| राजानं | ராஜனை |

| | |
|----------|--------------|
| दृष्ट्वा | கண்ணுற்று, |
| जय | ‘ஜயவ்ஜயீபவ |
| इति | என்கிற |
| वाचा | ஸ்துதியால் |
| संपूज्य | போற்றினிட்டு |
| तूर्णो | மொளனமாக |
| समभवत् | இருந்தான். |

तं तत्रोत्तमपर्यङ्के वरास्तरणशोभिते । उपविष्टं दशग्रीवं दूतो वाक्यमथाब्रवीत् ॥ १६ ॥

| | | | |
|----------------|-----------|-----------------------|---------------------------|
| अथ | “அதன்மேல் | उत्तमपर्यङ्के | உயர்ந்த ஆசனத்தின் |
| दूतः | தூதன் | उपविष्टं | வீற்றிருந்த [மீது |
| तत्र | அங்கு | तं | அந்த |
| वरास्तरणशोभिते | { | सिहरन्तविरिप्पுகளால் | தசகரீவனைப்பார்த்து |
| | | மிக்க அழகாயிருக்கின்ற | விண்ணப்பத்தை |
| | | | பின்கண்டபடி தெரிவித்தான்: |

राजन्वदामि ते सर्वं भ्राता तव यदब्रवीत् । उभयोः सदृशं वीर वृत्तस्य च कुलस्य च ॥

| | | | |
|----------|---------------------|------------|-----------------------------------|
| राजन् | “அரசே! | वदामि | நான் விக்யாபனம் |
| तव | தேவரீரது | | செய்கின்றேன்: |
| भ्राता | தமயனார் | वीर | வீரரே! |
| ते | தேவரீருக்கு | उभयोः | இரண்டாகின்ற |
| यत् | எதொன்றை | वृत्तस्य च | நல்ல ஒழுக்கத்திற்கும் |
| अब्रवीत् | சொல்லச்சொன்னாரே; | कुलस्य च | குலத்தின் பெருமைக்கும் |
| सर्वं | அந்த எல்லாவற்றையும் | सदृशम् | தகுந்தபாத்திரமாயிருத்தல்வேண்டும். |

साधु पर्याप्तमेतावत्कृतश्चारित्रसंग्रहः । साधुधर्मं व्यवस्थानं क्रियतां यदि शक्यते ॥१८॥

| | | | |
|----------------|---|------------|-----------------------------------|
| पर्याप्तं | { “மனம்போனபோக்கெல்லாம்செய்து ஸந்துஷ்டியுடன் | शक्यते | நிறுத்தப்படவேண்டியது. |
| एतावत् | இதுவரையில் | यदि | என்கிறப்பட்டதில் |
| कृतः | செய்திருக்கிற | साधुधर्मं | நன்னெறியில் |
| चारित्रसंग्रहः | நடவடிக்கைகளின் மொத்தம் | व्यवस्थानं | சலியா ஆஸக்தியுடனிருத்தல் |
| साधु | போதுமானதாக | क्रियताम् | கைப்பற்றப்பட அருள் புரியவேண்டும். |

दृष्टं मे नन्दनं भग्नमृषयो निहताः श्रुताः । देवतानां समुद्योगस्त्वत्तो राजन्मम श्रुतः ॥

| | | | |
|--------|--------------------|-----------|------------------------|
| राजन् | “அரசே! | श्रुताः | பலர் சொல்லுவகிறார்கள். |
| भग्नं | உருவழிக்கப்பட்ட | स्वत्तः | உம்மிடமிருந்துண்டான |
| नन्दनं | இந்திரனது நந்தவன | | டான |
| मे | எனக்கு [மானது | समुद्योगः | ஆண்மை |
| दृष्टं | காண்பிக்கப்பட்டது. | देवतानां | தேவர்களுக்கும் |
| ऋषयः | ரிஷிகள் | मम | எனக்கும் |
| निहताः | கொல்லப்பட்டார்கள் | श्रुतः | தெரியவந்திருக்கிறது. |

निराकृतश्च बहुशस्त्वयाऽहं राक्षसाधिप । सापराधोऽपि बालो हि रक्षितव्यः स्वबान्धवैः ॥

राक्षसाधिप “राक्षஸர்களின் அதி
 த்வயா உம்மால் [பதியே !
 அஃ ச நானும்
 बहुशः பலவாறு
 निराकृतः निराகரிக்கப்பட்டிருக்கிறேன்.

बालः சிறுவன்
 सापराधः அபராதியாய்
 अपि இருந்தாலும்கூட
 स्वबान्धवैः தன்சகோதரர்களால்
 रक्षितव्यः हि ரக்சிக்கப்படவேண்டியவனே.

अहं तु हिमवत्पृष्ठं गतो धर्ममुपासितुम् । रौद्रं वृत्तं समास्थाय नियतो नियतेन्द्रियः ॥

अहं “நான்
 रौद्रं கேதாரமென்கிற
 वृत्तं விருதத்தை
 समास्थाय தலைமேற்கொண்டு
 धर्मं तु தருமமொன்றையே
 उपासितुं உபாசனைஞ்செய்ய

नियतः ஒரு பட்டமனத்
 तनयं
 नियतेन्द्रियः ஐம்பொறிகளையு
 மடக்கினவனாய்
 हिमवत्पृष्ठं இமயமலைச்சாரலுக்கு
 गतः போயிருந்தேன்.

तत्र देवो मया दृष्टः सह देव्या मया प्रभुः । सव्यं चक्षुर्मया दैवात्तत्र देव्यां निपातितम् ॥
 का न्वियं स्यादिति शुभा न खल्वन्येन हेतुना । रूपं हनुपमं कृत्वा रुद्राणी तत्र तिष्ठति ॥

तत्र “அங்கு
 मया என்னால்
 देवः உபாவிக்கப்பட்ட
 प्रभुः பரமசிவன்
 देव्या सह தேவியுடன் கூடியவ
 मया என்னால் [ராக
 दृष्टः பார்க்கப்பட்டார்.
 तत्र அங்கு
 हनुपमं உவமையற்ற
 रूपं कृत्वा ரூபத்தைக்கொண்டு
 रुद्राणी உமாகேவியார்
 } கண்ணப்பறிக்கும்
 शुभा { சோதி கொண்டவ
 ராய்

तिष्ठति அவர்பக்கத்தில்
 इयं “இவள் [நின்றார்.
 का तु யாராக
 स्यात् இருக்கலாம்? ”
 इति खलु என்றறிய விரும்பிய
 तत्र அப்பொழுது [தால்
 सव्यं चक्षुः இடது கண்
 देव्यां அம்மனிடத்தில்
 दैवात् நானறியாமலே
 मया என்னால்
 निपातितं வீழ்த்தப்பட்டது.
 अन्येन வேறு விபரீத
 हेतुना எண்ணத்தால்
 न हि இல்லவேயில்லை.

देव्या दिव्यप्रभावेन दग्धं सव्यं ममेक्षणम् । रेणुध्वस्तमिव ज्योतिः पिङ्गलत्वमुपागतम् ॥

देव्याः “அம்மனின்
 दिव्यप्रभावेन தைதீவ ஒளியால்
 मम எனது
 ज्योतिः சகந்தாரிந்திரியங்களில்
 सव्यं இடது [ஒன்றாகிற
 ईक्षणं கண்

रेणुध्वस्तं इव புழுதியால் மறைபட்
 डतेन
 दग्धं பார்வைசக்தி ஒழிந்
 ततारक
 पिङ्गलः वं மண்ணிறத்தை
 उपागतम् அடைந்துவிட்டது.

ततोऽहमन्यद्विस्तीर्णं गत्वा तस्य गिरेस्तटम् । तूष्णीं वर्षशतान्यष्टौ समाधारं महाव्रतम् ॥

ततः “अतः
अहं नान्
तस्य गिरेः अन्त मलयின்
अन्यत् மற்றொரு
विस्तीर्णं விசாலமான
तटं சாரலை

गश्वा अடைந்து
तूष्णीं மௌனமாய்
अष्टौ எட்டு
वर्षशतानि நூறுவருஷங்கள்
महाव्रतं ஒரு மஹா விருதத்தை
समाधारम् அனுஷ்டித்தேன்.

समाप्ते नियमे तस्मिन् तत्र देवो महेश्वरः । प्रीतः प्रीतेन मनसा प्राह वाक्यमिदं प्रभुः ॥

तत्र “अत्र
तस्मिन् नियमे அந்த நியமம்
समाप्ते முடிந்தவளவில்
द्वेः பூஜ்யரும்
प्रभुः சாச்வதருமாகிய
महेश्वरः பரமேச்வரர்

प्रीतेन ஸந்துஷ்டிகொண்ட
मनसा மனதால்
प्रीतः அன்புகொண்டவராகி
इदं பின்வரும்
वाक्यं வாக்யத்தை
प्राह சொல்லியருளினார்:

प्रीतोऽस्मि तव धर्मज्ञ तपसा तेन सुव्रत

धर्मज्ञ “தர்மஞாய்
सुव्रत பெரும் விருதம் செய்
तव உனது
உனது துவனே!

॥ २७ ॥
तेन அந்த
तपसा தவத்தால்
प्रीतः ப்ரீதி அடைந்தவனாக
अस्मि நானாகிறேன்.

मया चैतद्व्रतं चीर्णं त्वया चैव धनाधिप । तृतीयः पुरुषो नास्ति यश्चरेद्भ्रतमीदृशम् ॥

व्रतं सुनिश्चयं ह्येतन्मया ह्युत्पादितं पुरा

धनाधिप “குபேர!
एतत् व्रतं இந்த விருதம்
मया च என்னாலும்
त्वया च एव உன்னாலேயும் தான்
चीर्णं அனுஷ்டித்து முடிக்க
ப்பட்டது.

यः எந்த ஒருவன்
ईदृशं இத்தன்மையான
व्रतं விருதத்தை
चरेत् செய்து பூர்த்திசெய்
கறவே

॥ २८ ॥
तृतीयः (அப்பேர்ப்பட்ட)
முன்றாவதாகிற
पुरुषः ஒரு புருஷன்
न अस्ति இல்லை.
पुरा முன்காலத்தில்
मया हि என்னாலேயே
एतत् இந்த
व्रतं விருதமானது
सुनिश्चयं हि கஷ்டசாத்தியமாகவே
उत्पादितम् ஏற்படுத்தப்பட்டது.

तत्सखित्वं मया सौम्य रोचयस्व धनेश्वर

सौम्य “‘ஸௌம்ய!
धनेश्वर குபேர!
तत् ஆதலால்
मया என்னுடன்

॥ २९ ॥
सखित्वं கூட்டாளியாக இருந்த
தலை
रोचयस्व பெற்று விளங்குவா
யாக.

तपसा निर्जितश्चैव सखा मम भवानघ

॥ ३० ॥

अनघ “தோஷா ஹி தனே !
 तपसा தவத்தால்
 निर्जितः உரிமைபெற்றவனாய்

मम च எனது
 सखा एव அன்பனாகவும்
 भव ஆகுவாய்.

देव्या दग्धं प्रभावेन यच्च सव्यं तवेक्षणम् । पैङ्गल्यं यदवाप्तं हि देव्या रूपनिरीक्षणात् ॥
 एकाक्षिपिङ्गलेत्येवं नाम स्थास्यति शाश्वतम् ॥ ३१ ॥

देव्या “தேவியால்
 प्रभावेन பிரபாவத்தால்
 देव्याः தேவியின்
 रूपनिरीक्षणात् ரூபத்தில் கண் விழித்
 தப்பட்டதால்
 तव உனது
 यत् எந்த அந்த
 सव्यं இடது
 ईक्षणं கண்
 दग्धं பார்வைசக்தி ஒழிந்த
 தாக

पैङ्गल्यं च மண்ணிறத்தை
 अवासं அடைந்தது.
 यत् हि எந்த இந்தகாரணத்தி
 னாலேயே
 एवं இனிமேல்
 एकाक्षिपिङ्गलः ‘ஏகாக்ஷிபிங்களன்’
 इति என்ற
 नाम பெயர்
 शाश्वतं சாశ்வதமாய்
 स्थास्यति நிற்கப்போகிறது.’

एवं तेन सखित्वं च प्राप्यानुज्ञां च शङ्करात् । आगतेन मया चायं श्रुतस्ते पापनिश्चयः ॥

एवं “இவ்வாறு
 शङ्करात् சிவபெருமானிடத்தி
 னின்று
 अनुज्ञां च அனுக்கிரகத்தையும்
 तेन च அவரோடேயே
 सखित्वं च கூட்டாளியாக இருத்
 தலையும்

प्राप्य அடைந்து
 आगतेन திரும்பிவந்த
 मया என்னால்
 ते உனது
 अयं இந்த
 पापनिश्चयः தீவினையில் பிரவர்த்தி
 श्रुतः கேட்கப்பட்டது.

तदधर्मिष्ठसंयोगान्निवर्त कुलदूषणात् । चिन्त्यते हि वधोपायः सर्षिसङ्घैः सुरैस्तव ॥३३॥

सर्षिसङ्घैः “‘ரிஷிக்கூட்டங்க
 ளோடும் கூடிய
 सुरैः हि தேவர்களாலேயே
 तव உனது
 वधोपायः மாணத்திற்குபாயமா
 னது
 चिन्त्यते தேடப்படுகிறது.

तत् ஆதலால்
 अधर्मिष्ठसंयोगात् பாபங்களைச் சேர்ப்ப
 தினின்றும்
 कुलदूषणात् { குலத்துக்கு அபகீர்த்
 தி விளைவிப்பதினி
 ன்றும்
 निवर्त இனி விலகுக.’

एवमुक्तो दशमीवः क्रुद्धः संरक्तलोचनः । हस्तौ दन्तांश्च संपीड्य वाक्यमेतदुवाच ह ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-------------|-------------------|
| एवं | “இவ்வண்ணம் | संरक्तलोचनः | சிவந்த கண்களுற்றவ |
| उक्तः | சொல்லியதற்குச் | | னாய் |
| | செனிகாய்த்த | क्रुद्धः | கோபங்கொண்டவ |
| दशमीवः | தசகீவன் | | னாய் |
| दन्तान् च | பற்களையும் | एतत् | பின்வரும் |
| हस्तौ | இருகைகளையும் | वाक्यं | மொழியை |
| संपीड्य | துடிக்கச்செய்து | उवाच ह | மொழிந்தான்: |

विज्ञातं ते मया दूत वाक्यं यस्य प्रभाषसे । नैतत्त्वमसि नैवासौ भ्रात्रा येनासि चोदितः॥

| | | | |
|----------|-----------------|----------|------------------|
| दूत | “தூதனை! | असि | உயிருடனிருக்கிற |
| ते | உனது | | யென்பது |
| वाक्यं | சொல் | न | இனிஇல்லை. |
| यस्य | யாருக்காக | येन | எந்த |
| प्रभाषसे | என்முன் நீ சொன் | भ्रात्रा | ஸகோதரனால் |
| एतत् | இது [இயோ | चोदितः | அனுப்பப்பட்டவனாக |
| मया | என்னால் | असि | நீ ஆகிறயோ, |
| विज्ञातं | கண்டுகொள்ளப் | असौ एव | இவனும் |
| | பட்டது. | न | உயிருடனிருக்கப் |
| एवं | நீ | | போகிறதில்லை. |

हितं नैष भ्रमैतद्धि ब्रवीति धनरक्षकः । महेश्वरसखित्वं तु मूढ आश्रयसे किल ॥३६॥

| | | | |
|----------|---------------------|----------------|-------------------|
| एषः | “இந்த | मूढ किल | ஈ! என்ன அசட்டுத் |
| धनरक्षकः | குபேரன் | | தனம்! |
| ब्रवीति | சொல்லியனுப்பியிருக் | महेश्वरसखित्वं | பரமசிவனிடம்கூட |
| एतत् | அந்த இது [கிறது, | | டாளியாயிருத்தலை |
| मम | எனக்கு | तु | ஒருவிஷயம்போல |
| हितं | யோக்கியமானதாக | आश्रयसे | பெருமையாய்ச் சொல் |
| न हि | இல்லவே இல்லை. | | லிக்கொள்கிறாய்! |

न चेदं क्षमणीयं मे यदेतद्भाषितं त्वया ॥ ३७ ॥

| | | | |
|--------|---------------|--------------|---------------------|
| त्वया | “உன்னால் | इदं | இது |
| यत् | எது | मम | எனக்கு |
| भाषितं | சொல்லப்பட்டதோ | क्षमणीयं न च | பொறுத்திருக்கக்கூடி |
| एतत् | அந்த | | யதாகவே இல்லை. |

न हन्तव्यो गुरुर्घ्येणो ममायमिति मन्यते । तस्य त्विदानीं श्रुत्वा मे वाक्यमेषा कृता मतिः॥
श्रीन्यलोकानपि जेष्यामि बाहुवीर्यमुपाश्रितः ॥ ३८ ॥

| | |
|----------|-------------------------------------|
| अयं | “இவன் |
| मम | எனக்கு |
| ज्येष्ठः | மூத்தவன். |
| गुरुः | அருமையானவன். |
| हस्तव्यः | மேற்கொண்டு வெல்ல ப்படவேண்டியவனாக |
| न | ஆகான் |
| इति | என்று |
| मन्यते | எண்ணப்பட்டிருந்த |
| तस्य | அவனுடைய [து. |
| वाचयं | வார்த்தையை |

| | |
|-------------|---------------------|
| श्रुवा | கேட்டபின்னர் |
| इदानीं तु | இப்பொழுதே |
| मे | என்னுடைய |
| बाहुवीर्यं | பாஹுபலத்தை |
| उपाश्रितः | அனுஸரிக்கின்றவனாய் |
| सौन् | மூன்று |
| लोकान् धापि | உலகங்களையும் |
| जेष्यामि | ஜயிக்கப்போகிறேன். |
| एषा | இந்த |
| मतिः | தீர்மானம் |
| कृता | செய்துவிட்டாயிற்று. |

एतन्मुहूर्तमेवाहं तस्यैकस्य तु वै कृते । चतुरो लोकपालांस्तान्नयिष्यामि यमक्षयम् ॥३९॥

| | |
|------------|----------------|
| एतन् | “இந்த |
| मुहूर्त एव | சூதனைத்திலேயே |
| अहं | நான் |
| तस्य एकस्य | அந்த ஒருவனுடைய |
| कृते तु | செய்கைக்காகவே |

| | |
|--------------|--------------------|
| तान् | அந்த |
| चतुरः | நான்கு |
| लोकपालान् वै | லோகபாலர்களுடையும் |
| यमक्षयं | யமலோகத்திற்கு |
| नयिष्यामि | அனுப்பிவிடுகிறேன். |

एवमुत्त्वा तु लङ्केशो दूतं खड्गेन जघ्निवान् । ददौ भक्षयितुं ह्येनं राक्षसानां दुरात्मनाम् ॥

| | |
|---------|--------------|
| लङ्केशः | “இலங்கேசன் |
| एवं | இவ்வண்ணம் |
| उत्त्वा | சொல்லிவிட்டு |
| तु | தட்சணமே |
| दूतं हि | நூதனையே |
| खड्गेन | கத்தியால் |

| | |
|------------|-------------------|
| जघ्निवान् | வெட்டினான். |
| एनं | இவனை |
| दुरात्मनां | தூராத்மாக்களான |
| राक्षसानां | அரக்கர்களுக்கு |
| भक्षयितुं | தின்ன |
| ददौ | கொடுத்தாவிட்டான். |

एवं कृतस्वस्त्ययनो रथमारुह्य रावणः । त्रैलोक्यविजयाकाङ्क्षी ययौ यत्र धनेश्वरः ॥

| | |
|-------------------------------|--------------------------------|
| रावणः | “ராவணன் |
| एवं | அப்படியே |
| कृतस्वस्त्ययनः | ஸ்வஸ்த்யயனம் பண்ணிக்கொண்டவனாய் |
| त्रैलोक्य- विजयाकाङ्क्षी } | மூன்றுலகங்களையும் |
| | வெல்ல உத்தேசம் |
| | கொண்டவனாக |

| | |
|----------|-------------------|
| रथं | தேரில் |
| आरुह्य | ஏறிக்கொண்டு |
| धनेश्वरः | குபேரர் |
| यत्र | எங்கு இருக்கிறாரோ |
| ययौ | அவ்விடத்திற்கு |
| | புறப்பட்டான். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे त्रयोदशः सर्गः ॥



चतुर्दशः सर्गः—பதிநான்காவது ஸர்க்கம் || 14 ||

यक्षराक्षसयुद्धम्—யக்ஷராக்ஷஸயுத்தம்.

ततस्तु सचिवैः सार्धं षड्भिर्नित्यं बलोद्धतैः । महोदरप्रहस्ताभ्यां मारीचशुकसारणैः ॥
धूम्राक्षेण च वीरेण नित्यं समरगृध्रुना । संवृतः प्रययौ श्रीमान्क्रोधाह्लोकान्दहन्निव ॥

श्रीमन् " मन् नन्
ततः अप्पொழுது
क्रोवात् க்ரோதத்தால்
लोकान् உலகங்களை
दहन् எரிக்கின்றவன்
इव போலாகி
षड्भिः ஆறு
सचिवैः மந்திரிமார்களுடனும்
नित्यं எப்பொழுதுமே
समरगृध्रुना போர்புரிவதில் ஆசை
கொண்ட
वीरेण வீரனாகிய
धूम्राक्षेण च தூம்ராக்ஷனாலும்

बलोद्धतैः பெயர்ப்போன பலிஷ்ட
டர்களான
मारीचशुक- } மாரீசன், சுகன், சார
सारणैः } ணன் என்பவர்களா
லும்,
महोदर- } மஹோதரன், பிரஹு
प्रहस्ताभ्यां तु } ஸ்தன் என்பவர்
களாலும்,
नित्यं எப்பொழுதுமே
सार्धं கூடவே
संवृतः பின்தொடரப்பட்ட
டவனும்
प्रययौ புறப்பட்டான்.

पुराणि स नदीः शैलान्वनान्युपवनानि च । अतिक्रम्य सुहूर्तेन कैलासं गिरिमागमत् ॥

सः " ஆவன்
पुरा ण நகரங்களையும்,
नदीः நதிகளையும்,
शैलान् சைலங்களையும்,
वनानि வனங்களையும்,
उपवनानि உபவனங்களையும்

सुहूर्तेन அதிசீக்கிரத்தில்
अतिक्रम्य கடந்து
कैलासं கைலாஸ
गिरिं கிரிக்கு
आगमत् வந்துசேர்ந்தான்.

सन्निविष्टं गिरौ तस्मिन्नाक्षसेन्द्रं निशम्य तु । युद्धेऽत्यर्थकृतोत्साहं दुरात्वानं समन्विणम् ॥
यक्षा न शेकुः संस्थातुं प्रमुखे तस्य रक्षसः । राज्ञो भ्रातेति विज्ञाय गता यत्र धनेश्वरः ॥

यक्षाः " யக்ஷர்கள்
तस्मिन् அந்த
गिरौ கிரியில்
दुरात्वानं தூராத்மாவான
राक्षसेन्द्रं ராக்ஷஸமன்னனை
युद्धे போரில்
अत्यर्थकृतोत्साहं அதிக உத்ஸாஹத்
துடனிருப்பவனாயும்

सन्निविष्टं மந்திரிமார்களுடன்
கூடினவனாயும்
सन्निविष्टं வந்திருக்கின்றவனாய்
निशम्य கண்டு
तस्य அந்த
रक्षयः ராக்ஷஸ
राज्ञः तु மன்னருக்கும்
धनेश्वरः குபேரர்

| | |
|-----------|----------|
| आता | தமையனார் |
| इति | என்று |
| विज्ञाय | உணர்ந்து |
| प्रमुखे | எதிரில் |
| संस्थातुं | நிற்க |

| | |
|--------|-----------------------------------|
| शोकः न | முடியாதிருந்தார்கள். |
| यत्र | எங்கு இருந்தாரோ அவ்விடத்திற்கு |
| गताः | போய்ச்சேர்ந்தார்கள். |

ते गत्वा सर्वमाचख्युर्भ्रातुस्तस्य चिकीर्षितम् । अनुज्ञाता ययुर्हृष्टा युद्धाय धनदेन ते ॥

| | |
|------------|-----------------------------|
| ते | “அவர்கள் |
| गत्वा | வந்துசேர்ந்து |
| तस्य | அவருடைய |
| आतुः | தம்பியின் |
| चिकीर्षितं | உத்தேசம் |
| सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| आचख्युः | விண்ணப்பம் செய் தார்கள். |

| | |
|------------|----------------------------|
| ते | அவர்கள் |
| धनदेन | சுபேரனால் |
| युद्धाय | போர்புரிய |
| अनुज्ञाताः | அனுமதிபெற்றவர் களாய் |
| हृष्टाः | மகிழ்ச்சிகொண்டவர் களாய் |
| ययुः | திரும்பினார்கள். |

ततो बलानां संक्षोभो व्यवर्धत महोदधेः । तस्य नैर्ऋतराजस्य शैलं सञ्चालयन्निवा ७ ॥

| | | |
|--------------|-----------|-------------------|
| ततः | “அதன்மேல் | |
| नैर्ऋतराजस्य | { | தீதொழிலில் புகாத |
| | | நைர்நிதர்கள் என்ற |
| | | ராக்ஷஸர்களுக்கு |
| | | மன்னனாகிய |
| तस्य | அவருடைய | |
| बलानां | ஸேனையினர் | |

| | |
|-----------|----------------------------|
| संक्षोभः | கொந்தளிப்பு |
| महोदधेः | மஹாலமுத்திரத்தி னுடையது |
| इव | போன்றதாய் |
| शैलं | பர்வதத்தை |
| सञ्चालयन् | நடுங்கச்செய்து |
| व्यवर्धत | கிளம்பிற்று. [கொண்டு |

ततो युद्धं समभवद्यक्षराक्षससंकुलम् । व्यथिताश्चाभवंस्तत्र सचिवा राक्षसस्य ते ॥ ८ ॥

| | | |
|------------------|--------------|---------------------|
| ततः | “அப்பொழுது | |
| यक्षराक्षससंकुलं | { | யக்ஷர்கள், ராக்ஷஸர் |
| | | கள் இவர்களின் |
| | | தாறுபாறான |
| | | போரானது |
| युद्धं | உண்டாயிற்று. | |
| समभवत् | | |

| | |
|------------|---------------------|
| तत | அதில் |
| राक्षसस्य | அரக்கனின் |
| ते | அந்த |
| सचिवाः | மந்திரிமார்கள் |
| व्यथिताः च | துன்புறுத்தப்பட்ட |
| अभवन् | ஆனார்கள். [வர்களாய் |

स दृष्ट्वा तादृशं सैन्यं दशग्रीवो निशाचरः । हर्षनादान्वहून्कृत्वा स क्रोधादाभ्यधावत् ॥

| | |
|----------|-----------------|
| सः | “அந்த |
| निशाचरः | அரக்கனாகிய |
| दशग्रीवः | தசகீவன் |
| सैन्यं | ஸேனையை |
| तादृशं | அத்தன்மையானதாய் |
| दृष्ट्वा | கண்டு |

| | |
|------------|-----------------------------------|
| क्रोधात् | கோபத்தால் |
| सः | அவன் |
| बहून् | பல |
| हर्षनादान् | உத்ஸாஹமுண்டாக் கும் ஆரவாரங்களை |
| कृत्वा | செய்துகொண்டு |
| अभ्यधावत् | உதவ ஓடிவந்தான். |

ये तु ते राक्षसेन्द्रस्य सचिवा घोरविक्रमाः । तेषां सहस्रमेकैकं यक्षाणां समयोधयन् ॥

राक्षसेन्द्रस्य “ राक्षஸர ஜனுடைய
घोरविक्रमाः பயங்கரமான பராக்கி
ரமமுள்ள
सचिवाः மந்திரிமார்கள்
ये எவர்களோ
तेषां அவர்களின்

एकैकं तु ஒவ்வொருவனையும்
ते அந்த
यक्षाणां யக்தர்களின்
सहस्रं ஆயிரங்கள்
समयोधयन् சூழ்ந்துகொண்டு
தாக்கினார்கள்.

ततो गदाभिर्मुसलैरसिभिः शक्तितोमरैः । हन्यमानो दशग्रीवस्तत्सैन्यं समाहात ॥११॥

ततः “ அதன்மேல்
गदाभिः கதைகளாலும்
मुसलैः உலக்கைகளாலும்
असिभिः கத்திகளாலும்

शक्तितोमरैः சக்தி, தோமரம் என்ற
ஆயுதங்களாலும்
हन्यमानः அடியுண்ட
दशग्रीवः தசகரீவன்
तत् सैन्यं அந்ததச்சேனைக்குள்
समाहात புகுந்தான்.

स निरुच्छ्वासावत्तत्र वध्यमानो दशाननः । वर्षद्भिरिव जीमूतैर्धाराभिरवरुध्यत ॥१२॥

तत्र “ அப்பொழுது
सः அந்த
दशाननः தசானன்
वर्षद्भिः பொழியும்
जीमूतैः மேக
धाराभिः தாரைகளால்

इव எப்படியோ அப்படியே
निरुच्छ्वासावत् மூச்சுவீட முடியாத
வலயம்
वध्यमानः சிக்கிக்கொண்டவலயம்
अवरुध्यत தகையப்பட்டான்.

न चकार व्यथां चैव यक्षशस्त्रैः समाहातः । महीधर इवाम्भोर्द्वैर्धाराशतसमुक्षितः ॥ १३ ॥

यक्षशस्त्रैः “ யக்தர்களின் சஸ்திர
ரங்களால்
समाहातः च வலுவாய்ப்புடைக்கப்
பட்டவனாயிருந்தும்
अम्भोर्द्वैः மேகங்களால்

धाराशत- } தாரைகளின்பிரவா
समुक्षितः } ஹத்தால் நனைக்கப்
महीधरः } மலை [பட்ட
इव எப்படியோ
अपपपपप
व्यथा एव மனங்கலங்குதலையும்
न चकार கொள்ளவில்லை. [கூட

स दुरात्मा समुद्यम्य कालदण्डोपमां गदाम् । प्रविशेश ततः सैन्यं नयन्यक्षान्यमक्षयम् ॥

ततः “ அப்பொழுது
सः அந்த
दुरात्मा துராத்தமா
सैन्यं ஸேனையினிடையில்
कालदण्डोपमां யமதண்டத்திற்குச்
சமமான

गदां ஒரு கதையை
समुद्यम्य சுழற்றிக்கொண்டு
यक्षान् யக்தர்களை
यमक्षयं யமலோகத்திற்கு
नयन् அனுப்புகிறவனாய்
प्रविशेश புகுந்தான்.

स कक्षमिव विस्तीर्णं शुष्केन्धनमिवाकुलम् । वातेनाग्निरिवायत्तो यक्षसैन्यं ददाह तत् ॥

ச: “அவன்
வாதென காற்றினால்
அग्னி: இவ அக்னியென
ஆயத்த: தீவிரங்கொண்டவனாகி
விஸ்தீர்ணம் மிகுதியாகச்சேர்ந்த
சுஷ்கேந்யநம் உயர்ந்த விறகை
இவ எவ்வண்ணமோ
அவ்வண்ணமேயும்

கக்ஷம் பட்டுப்போன மரங்
களடர்ந்த காட்டை
இவ எவ்வண்ணமோ
அவ்வண்ணமேயும்
தத் அந்த
யக்ஷசैन्यம் யக்ஷசைன்யத்தை
ஆகுலம் சிதறி ஓடுகிறதாக
ததாஹ துன்புறுத்திவாட்
டினான்.

तैस्तु तत्र महामात्यैर्महोदरशुक्रादिभिः । अल्पावशेषास्ते यक्षाः कृता वातैरिचाम्बुदाः ॥

தவ “அப்பொழுது
தே அந்த
அல்பாவசேஷா: தப்பிப்பிழைத்த
யக்ஷா: து யக்ஷர்களுமும்
தீ: அந்த
மஹோதரசுகாதிभि: மஹோதரன், சுகன்,
முதலிய

महामात्यै: பெரும்மந்திரிகளால்
अम्बुदा: மேகங்கள்
वातै: பெருங்காற்றுக்களால்
इव எவ்வண்ணமோ அவ்
வண்ணமே
कृता: ஒழிக்கப்பட்டார்கள்.

केचित्समाहता भग्नाः पतिताः समरक्षितौ । ओष्ठाश्च दशनैस्तीक्ष्णैरदशन्कुपिता रणे ॥

கேசித் “சிலர்
ரணே போரில்
சமாததா: மிதியுண்டவர்களா
யும்
भग्ना: च கைகாலொடிந்தவர்
களாயும்

ओष्ठाश्च दशनैस्तीक्ष्णैरदशन्कुपिता रणे ॥
कुपिता: பாதையால் துடிப்ப
ओष्ठान् உதடுகளை [வர்களாய்
तीक्ष्णै: दशनै: கூரிய பற்களால்
अदशन् கடித்தார்கள்.
समरक्षितौ போர்க்களத்தில்
पतिता: வீழ்ந்தனர்.

श्रान्ताश्चान्योन्यमालिङ्ग्य भ्रष्टशस्त्रा रणाजिरे । सीदन्ति च तदा यक्षाः कूला इव जलेन हा ॥

ததா “அப்பொழுது
ரணாஜிரே போர்க்களத்தில்
श्रान्ता: களைத்துப்போன
यक्षा: யக்ஷர்கள்
अष्टशस्त्रा: च கைப்படைகளை நழு
வவிட்டவர்களாகியும்

अन्योन्यं ஒருவரையொருவர்
आलिङ्ग्य च தழுவிக்கொண்டும்
कूला: ஆற்றின்கரைகள்
जलेन வெள்ளத்தால்
इव எவ்வண்ணமோ
அவ்வண்ணமே
सीदन्ति நாசமடைந்தார்கள்.

हतानां गच्छतां स्वर्गं युद्धयतां पृथिवीतले । प्रेक्षतामृषिसङ्घानां न वभूवान्तरं दिवि ॥

ஹதானாं “பூப்பிரதேசத்தில்
गच्छतां போர்புரிந்து
युध्यतां இறந்து
हतानां ஸ்வர்க்கத்திற்கு
स्वर्गं போகின்றவர்களுக்
गच्छतां கும்

प्रेक्षतां காட்சி காண வந்த
अृषिसङ्घानां ரிஷிக்கூட்டங்களுக்கு
दिवि ஆகாயத்தில் [கும்
अन्तरं இடம்
न वभूव இல்லை.

एतस्मिन्नन्तरे राम विस्तीर्णबलवाहनः। प्रेषितो न्यपतद्यज्ञो नाम्ना संयोधकण्टकः॥२०॥

ராம " ஸ்ரீராம!
 एतस्मिन् இந்த
 अन्तरे ஸமயத்திலும்
 नाम्ना பெயரால்
 संयोधकण्टकः சம்ப்யோதகண்டக
 यक्षः யக்ஷன் [னென்ற

प्रेषितः ஆக்கினைபெற்றவனாய்
 विस्तीर्णबलवाहनः { பெரும் சைன்யங்க
 एतस्मिन्नन्तरे { னும் வாஹனங்களு
 न्यपतत् { முடையவனாய்
 यक्षः போர்புரிய வந்து
 [नென்ற { சேர்ந்தான்.

तेन चक्रेण मारीचो विष्णुनेव रणे हतः। पातितो भूतले शैलाक्षीणपुण्य इव ग्रहः॥२१॥

रणे " போரில்
 मारीचः மாரீசன்
 तेन அவனால்
 विष्णुना விஷ்ணுவின்
 चक्रेण சக்கிராயுதத்தால்
 इव எவ்வண்ணமோ
 [அவ்வண்ணமே

हतः அடிக்கப்பட்டவனாய்
 क्षीणपुण्यः புண்யமொழிந்த
 ग्रहः நக்ஷத்திரம்
 इव எப்படியாகிறதோ
 [அப்படியே
 शैलात् மலையினின்று
 भूतले பூப்பிரதேசத்தில்
 पातितः தள்ளப்பட்டான்.

ससंज्ञस्तु मुहूर्तेन स विश्रम्य निशाचरः। तं यक्षं योधयामास स च भग्नः प्रदुद्वे॥२२॥

मुहूर्तेन " ஸ்வல்பகாலம்
 सः அந்த
 निशाचरः அரக்கன்
 विश्रम्य இளைப்பாறி
 ससंज्ञः தன் நினைவு
 तं அந்த [வந்தவனாய்

यक्षं तु யக்ஷனுடனேயே
 योधयामास சண்டைபோட்டான்.
 सः च அவனும்
 भग्नः தோல்வியடைந்த
 [வனாகி
 प्रदुद्वे ஓடிப்போய்விட்டான்.

ततः काञ्चनचित्राङ्गं वैडूर्यरजसोक्षितम्। मर्यादां प्रतिहाराणां तोरणान्तरमाविशत्॥२३॥

ततः " அப்பொழுது
 काञ्चनचित्राङ्गं { சுவர்ணத்தினால் விசிட்
 { திரமானவேலைப்
 { பாடுகளுள்ளதும்
 वैडूर्यरजसोक्षितं வைடுரியக்கற்களா
 [விழைக்கப்பட்டதும்

प्रतिहाराणां வாயிற்காப்போர்
 [களுடைய
 मर्यादां எல்லையுமான
 तोरणान्तरं தோரணவாயிலுள்ள
 आविशत् (ராவணன்) நுழைந்
 [தான்.

तं तु राजन्दशग्रीवं प्रविशन्तं निशाचरम्। सूर्यभानुरिति ख्यातो द्वारपालो न्यवारयत् ॥ यदा तु वारितो राम न व्यतिष्ठत्स राक्षसः ॥ २४ ॥

राजन् " சக்கிரவர்த்தியாரே!
 राम ஸ்ரீராம,
 सूर्यभानुः சூரியபானு

इति என்று
 ख्यातः பெயருள்ள
 द्वारपालः வாயில்காப்பவன்

| | |
|---------------|-----------------|
| சு | இப்பொழுது |
| प्रविशन्तं | உள்ளே நுழைகின்ற |
| तं | அந்த |
| दशमीवं निशाचं | தசமீவ அரக்கனை |
| न्यवारयत् | தடுத்தான். |

| | |
|--------------|-------------------|
| वारितः | தடுக்கப்பட்டவனாக |
| यदा तु | இருக்கையிலும் கூட |
| सः | அந்த |
| राक्षसः | அரக்கன் |
| न व्यतिष्ठत् | நிற்கவில்லை. |

ततस्तोरणमुत्पाद्य तेन यक्षेण ताडितः । रुधिरं प्रसवन्भाति शैलो धातुस्रवैरिव ॥२५॥

| | |
|----------|-------------------|
| ततः | “ஆனதால்” |
| तोरणं | வெளிவாயில்களை |
| उत्पाद्य | முறித்தெடுத்து |
| तेन | அதனால் |
| यक्षेण | யக்ஷனால் |
| ताडितः | புடைக்கப்பட்டவனாக |
| शैलः | மலையானது |

| | |
|------------|---------------------|
| धातुस्रवैः | சிவந்த லோஹாதி நீர் |
| | பெருக்குகளால் |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| | வண்ணமே |
| रुधिरं | உதிரத்தை |
| प्रसवन् | பெருகவிட்டுக்கொண்டு |
| भाति | விளங்குகின்ற. |

स शैलशिखराभेण तोरणेन समाहृतः । जगाम न क्षतिं वीरो वरदानात्स्वयंभुवः ॥२६॥

| | |
|-------------|------------------|
| शैलशिखराभेण | “மலையின் சிகரத் |
| | திற்கு நிகரான |
| तोरणेन | வெளிவாயிற்காலால் |
| समाहृतः | அடியுண்ட |
| सः | அந்த |

| | |
|------------|---------------|
| वीरः | வீரன் |
| स्वयम्भुवः | பிரம்மனது |
| वरदानात् | வரதானத்தினால் |
| क्षतिं | துன்பத்தை |
| न जगाम | அடையவில்லை. |

तेनैव तोरणेनाथ यक्षस्तेनाभिताडितः । नादृश्यत तदा यज्ञो भस्मीकृततनुस्तदा ॥२७॥

| | |
|-----------|------------------|
| तेन | “அந்த |
| तोरणेन एव | வெளிவாயிற்காலால் |
| अथ | அப்படியே [லேயே |
| यज्ञः | யக்ஷன் |
| तदा | அப்பொழுது |
| तेन | அவனால் |

| | |
|--------------|--------------------|
| अभिताडितः | நன்றாய்ப்புடைக்கப் |
| | பட்டான். |
| तदा | அப்பொழுது |
| भस्मीकृततनुः | உடம்புவாடியவனாகி |
| नादृश्यत | கண்ணுக்குத் தெரியா |
| | தபடி ஒடிவிட்டான். |

ततः प्रदुद्बुधुः सर्वे दृष्ट्वा रक्षःपराक्रमम् । ततो नदीर्गुहाश्चैव विविशुर्भयपीडिताः ॥ २८ ॥

| | |
|---------------|----------------|
| ततः | “அப்பொழுது |
| सर्वे | எல்லோரும் |
| रक्षःपराक्रमं | அரக்கனது பராக் |
| | கிரமத்தை |
| दृष्ट्वा | கண்டு |
| ततः | அதனால் |

| | |
|--------------|------------------|
| भयपीडिताः | பயத்தால் திகிலடை |
| | ந்தவர்களாய் |
| गुहाः च | குகைகளிலும் |
| विविशुः | புகுந்துகொண்டார் |
| नदीः एव | நதிகளிலும் [கள். |
| प्रदुद्बुधुः | ஒடிவிட்டார்கள். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे चतुर्दशः सर्गः ॥



पञ्चदशः सर्गः—பதினந்தாவது ஸர்க்கம் ॥ १५ ॥

पुष्पकापहरणम्—புஷ்பகவிமானத்தை அபஹரிப்பது.

ततस्तांलक्ष्य वित्रस्तान्यक्षेत्रांश्च सहस्रशः । स्वयमेव धनाध्यक्षो निर्जगाम रणं प्रति ॥१॥

| | | | |
|-------------|--------------------|-------------|----------------|
| ततः | “ அப்பொழுது | वित्रस्तान् | பயந்து ஓடினவர் |
| धनाध्यक्षः | குபேரன் | लक्ष्य | கவனித்து [கனாக |
| तान् | அந்த | स्वयं एव | தானே |
| यक्षेत्रान् | யக்தை ச்ரேஷ்டர்களை | रणं प्रति | போருக்கு |
| सहस्रशः च | ஆயிரமாயிரமாய் | निर्जगाम | பறப்பட்டான். |

तत्र माणिचरो नाम यक्षः परमदुर्जयः । वृत्तो यक्षसहस्रैस्तु चतुर्भिः समयोधयत् ॥ २ ॥

| | | | |
|-------------|---|-------------|-----------------|
| तत्र | “ அவ்விடத்தில் | चतुर्भिः | நான்கு |
| परमदुर्जयः | { என்ன கஷ்டப்பட்டும் ஜபிக்கமுடியா கவனான | यक्षसहस्रैः | ஆயிரயக்தர்களால் |
| माणिचरः नाम | மாணிகரன் என்ற | वृत्तः | குழப்பட்டவனாய் |
| यक्षः | யட்சன் | तु | இப்பொழுது |
| | | समयोधयत् | போர்புரிந்தான். |

ते गदामुसलप्रासैः शक्तितोमरमुद्गरैः । अभिघ्नन्तस्तदा यक्षा राक्षसान्समुपाद्रवन् ॥ ३ ॥

| | | | |
|----------------|---|-------------------|--|
| तदा | “ அப்பொழுது | शक्तितोमरमुद्गरैः | { சக்தி, கோமரம், முக்காம் என்ற ஆயுதங்களாலும் |
| ते | அந்த | राक्षसान् | அரக்கர்களை |
| यक्षाः | யக்தர்கள் | अभिघ्नन्तः | புடைப்பவர்களாய் |
| गदामुसलप्रासैः | { கதை, முசலம், பிரா சம், என்ற ஆயுதங்களாலும் | समुपाद्रवन् | துன்புறுத்தினார்கள். |

यक्षाणां तु प्रहस्तेन सहस्रं निहतं रणे । महोदरेण चानिन्द्यं सहस्रमपरं हतम् ॥ ४ ॥

| | | | |
|-----------|----------------|-----------|------------------|
| तु | “ இச்சமயத்தில் | अनिन्द्यं | குற்றம்செய்யாமல் |
| रणे | போரில் | अपरं | பின்னிருந்த |
| यक्षाणां | யட்சர்களின் | सहस्रं च | ஆயிரமும் |
| सहस्रं | ஆயிரம் | महोदरेण | மஹோதரனால் |
| प्रहस्तेन | பிரஹஸ்தனால் | हतम् | மாய்க்கப்பட்டது. |
| निहतं | கொல்லப்பட்டது. | | |

कुद्देन च तदा राजन्पारीचेन युयुत्सुना । निमेषान्तरमात्रेण द्वे सहस्रे निपातिते ॥ ५ ॥

| | | | |
|------------|----------------------|-------------------|-----------------|
| राजन् | “ சக்கிரவர்த்தியாரே, | माशीचेन च | மாரீசனாலும் |
| तदा | அப்பொழுது | निमेषान्तरमात्रेण | நிமிஷகாலத்தில் |
| कुद्देन | கோபாவேசம் | द्वे | இரண்டு |
| | கொண்டு | सहस्रे | ஆயிரம் |
| युयुत्सुना | போருக்குக்கிளம்பிய | निपातिते | மாய்க்கப்பட்டன. |

धूम्राक्षेण समागम्य माणिभद्रो महारणे । मुसलेनोरसि क्रोधात्ताडितो न च कम्पितः ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------|----------------|--|
| மாணிமத்ர: | “ மாணிசரனென்ற மாணிபத்திரன் | உரசி முசலென | மார்பில் முஸலமென்னும் ஆயுதத்தால் |
| மஹரணே | பெரும்போரில் | தாடித: | மோதப்பட்டான், |
| धूम्राक्षेण | தூம்ராக்ஷணல் | ச | ஆயினும் |
| क्रोवात् | கோபத்தால் | न कम्पितः | சற்றும் சலிக்காமலி நூந்தான். |
| समागम्य | எதிர்த்தோடிவந்து | | |

ततो गदां समाविध्य माणिभद्रेण राक्षसः । धूम्राक्षस्ताडितो मूर्ध्नि विह्वलः स पपात ह ॥

| | | | |
|------------|----------------|----------|---------------------------|
| तत: | “ அப்போது | समाविध्य | கையிலெடுத்துச் சுழற்றி |
| माणिभद्रेण | மாணிபத்திரனால் | मूर्ध्नि | தலையில் |
| स: | அந்த | ताडितः | மோதப்பட்டவனாய் |
| धूम्राक्षः | தூம்ராக்ஷணென்ற | विह्वलः | மூர்ச்சித்தவனாய் |
| राक्षसः | அரக்கன் | पपात ह | மண்மீது வீழ்ந்தான். |
| गदां | கதையை | | |

धूम्राक्षं ताडितं दृष्ट्वा पतितं शोणितोक्षितम् । अभ्यधावत संग्रामे माणिभद्रं दशाननः ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------------|-----------|--------------------------------|
| दशाननः | “ தசானனை | पतितं | மண்ணில் வீழ்ந்திருப் பவனாய் |
| संग्रामे | போரில் | दृष्ट्वा | கண்டு |
| धूम्राक्षं | தூம்ராக்ஷணை | माणिभद्रं | மாணிபத்திரனை |
| ताडितं | உதைபட்டு | अभ्यधावत | எதிர்த்துத் தாக்கி னான். |
| शोणितोक्षितं | உதிர்த்தை பெருகவி ட்டுக்கொண்டு | | |

तं क्रुद्धमभिधावन्तं माणिभद्रो दशाननम् । शक्तिभिस्ताडयामास तिसृभिर्यक्षपुङ्गवः ॥१॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------|----------|------------|
| यक्षपुङ्गवः | “ யக்ஷச்சீரேவ்ஷ்டன | तं | அந்த |
| माणिभद्रः | மாணிபத்திரன் | दशाननं | தசானனை |
| क्रुद्धं | சீற்றங்கொண்டவனாய் | तिसृभिः | மூன்று |
| अभिधावन्तं | எதிர்த்துப்போர் புரியும் | शक्तिभिः | சக்திகளால் |
| | | ताडयामास | அடித்தான். |

ताडितो माणिभद्रस्य मुकुटे प्राहरदणे । तस्य तेन प्रहारेण मुकुटं पार्श्वमागतम् ॥ १० ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|----------|------------|
| रणे | “ போரில் | तेन | அந்த |
| ताडितः | அடிபட்ட அவன் | प्रहारेण | அடியால் |
| माणिभद्रस्य | மாணிபத்திரனுடைய | तस्य | அவனுடைய |
| मुकुटे | கிரீடத்தின்மீது | मुकुटं | கிரீடம் |
| प्राहरत् | ஓங்கியடித்தான். | पार्श्वं | பக்கத்தில் |
| | | आगतम् | வீழ்ந்தது. |

ततः संयुध्यमानेन विष्टव्यो न व्यकम्पत । तदाप्रभृति यक्षोऽसौ पार्श्वमौलिरिति स्मृतः॥

ततः “அப்போது
 संयुध्यमानेन போர்செய்யும்வனுவல்
 विष्टव्यः சலியாமல் நின்றவிட
 த்திலேயே நின்ற
 न व्यकम्पत பின்வாங்காமலிருந்
 தான்.

तदाप्रभृति * அதுமுதல்
 असौ இந்த
 यक्षः யக்சன்
 पार्श्वमौलिः பார்சுவமௌலி
 इति என்று
 स्मृतः அழைக்கப்பட்டான்.

तस्मिन्स्तु विष्टुखे यक्षे घाणिभद्रे महात्मनि । सन्नादः सुमहान्नाजंस्तस्मिञ्छैलेऽभ्यवर्तत ॥

राजन् “சக்கிரவர்த்தியாரே!
 महात्मनि மஹாத்மாவான
 तस्मिन् அந்த
 घाणिभद्रे மாணிபத்திரனென்ற
 यक्षे யக்சன்

विष्टुखे तु பிரதிகூலப்பட்டுநிற்
 तस्मिन् शैले அந்தமலையில் [கையில்
 सुमहान् மிகப்பெரிய
 सन्नादः கோஷமொன்று
 अभ्यवर्तत உண்டாயிற்று.

ततो दूरान्प्रदृशे धनाध्यक्षो गदाधरः । शुक्रमोष्ठपदाभ्यां च पद्मशङ्खसमावृतः ॥ १३ ॥

ततः “அப்பொழுது
 धनाध्यक्षः குபேரன்
 गदाधरः கதாதாராயும்
 शुक्रमोष्ठपदाभ्यां { சுக்ரன், ப்ரோஷ்டப
 தன், என்கிற இரு
 மந்திரிகளாலும்

पद्मशङ्ख- } குபேரனது ஒன்பது
 समावृतः च } நிதிகளில் பத்தமரிதி,
 சங்கநிதி, என்ற இவ்
 வீரண்டு நிதிகளின்
 அபிமானி தேவதை
 களாலும், சூழப்பட்ட
 டவராயும்
 दूरात् தூரத்தினின்று
 प्रदृशे கிட்டிவந்துநின்றார்.

स दृष्ट्वा भ्रातरं सङ्ख्ये शापाद्भिन्नष्टगौरवम् । उवाच वचनं धीमान्युक्तं पैतामहे कुले ॥

सङ्ख्ये “போரில்
 धीमान् நிபுணராகிய
 सः அவர்
 शापात् சாப்த்கால்
 विभ्रष्टगौरवं மானத்தை விட்டொ
 ழித்திருக்கும்

भ्रातरं दृष्ट्वा தம்பியைப் பார்த்து
 पैतामहे பிரம்மதேவர்
 कुले குலப்பெருமைக்கு
 युक्तं ஏற்றதாயிருக்கின்ற
 वचनं புத்திமதியை
 उवाच சொல்லியருளினார்:

यन्मया वार्यमाणस्त्वं नावगच्छसि दुर्मते । पश्चादस्य फलं प्राप्य ज्ञास्यसे निरयं गतः ॥

दुर्मते “ஓபுத்திகெட்டவனே!
 मया என்னால்
 वार्यमाणः { ஹிதவசனத்தைச்
 சொல்லிகேட்கப்
 பட்டவனாகிய
 एवं நீ
 न अवगच्छसि அறிந்துகொள்ள
 வில்லை.

यत् ஆனபோதிலும்
 अस्य இதன்
 फलं பயனை
 निरयं நரகத்தை
 प्राप्य அடைந்து
 पश्चात् கடைசியாய்
 गतः அனுபவிப்பவனாய்
 ज्ञास्यसे உணர்வாய்.

यो हि मोहाद्विपं पीत्वा नात्रगच्छति मानवः । स तस्य परिणामान्ते जानीते कर्मणः फलम् ॥

ய: " எவனோ ஒரு
மனிதன்
மோஹத்தினால்
விஷத்தை
பிழி
பருகி
ந அவரகூதி
நிஸ்ஸந்தேஹமாயி
ச: அவன் [ருக்கிரனோ

தச्य அந்த
கர்மண: காரியத்தின்
फलं பயனை
परिणामान्ते ஜீர்ணமாகும்வேளை
யில்
जानीते हि அனுபவித்தே
திருக்கிரன்.

देवता नाभिनन्दन्ति धर्मयुक्तेन केनचित् । येन त्वमीदृशं भावं नीतः सन्नावबुध्यसे ॥

देवता: " தேவதைகள்
केनचित् ஏதோ ஒரு
धर्मयुक्तेन தருமச் செயலைக்
கொண்டே
न अभिनन्दन्ति திருப்தியடையமாட்
டார்கள்.
येन இதனால்தான்

एवं நீ
ईदृशं இப்படிப்பட்ட
भावं வழிபாட்டில்
नीतः सन् இழுத்துவிடப்பட்ட
டிருக்கின்றாய் ;
न अबबुध्यसे நீ கண்டு கொள்ளாதி
ருக்கின்றாய்.

यो हि मातृपितृभ्रातृनाचार्यं चावमन्यते । स पश्यति फलं तस्य प्रेतराजवशं गतः ॥१८॥

ய: " எவன்
मातृपितृभ्रातृन् தாய், தந்தை, தமயன்
இவர்களுையும்
आचार्यं च ஆசாரியரையும்
अवमन्यते அவமதிக்கிரனோ
स: அவன்

तस्य அதன்
फलं பயனை
प्रेतराजवशं யமனதுவசம்
गतः போய்ச்சேர்ந்தவனாய்
पश्यति हि அனுபவித்தே
திருவான்.

अध्रुवे हि शरीरे यो न करोति तपोर्जनम् । स पश्चात्तप्यते मूढो मृतो दृष्ट्वाऽऽत्मनो गतिम् ॥

शरीरे "சரீரம்
अध्रुवे हि நிலையற்றிருக்கையி
லேயே
तपोर्जनं புண்யசம்பாத்தனையை
य: எந்த
मूढः மூடனொருவன்
न करोति செய்யவில்லையோ

स: அவன்
मृतः पश्चात् இறந்த பின்னர்
आत्मनः தனது
गतिं விதிப்பயனை
दृष्ट्वा பிரத்யக்ஷத்தில் கண்டு
तप्यते தபிக்கிரன்.

कस्यचिन्न हि दुर्बुद्धेः छन्दतो जायते मतिः । यादृशं कुरुते कर्म तादृशं फलमश्नुते ॥

कस्यचिन् " ஒரு
दुर्बुद्धे: துஷ்டனுக்கு
छन्दतो சுயமே (தனக்குத்
मतिः நற்புத்தி [தானே)
जायते வராது.
हे அதனால்

यादृशं எப்படிப்பட்ட
कर्म கர்மத்தை
कुरुते புரிகிரனோ
तादृशं அதற்கேற்றதாகிய
फलं பயனை
अश्नुते அனுபவிப்பான்.

बुद्धिरूपं फलं पुत्राञ्छौर्यं धीरत्वमेव च । प्राप्नुवन्ति नराः सर्वे स्वकृतैः पूर्वकर्मभिः ॥

नराः "माणादர்கள்
सर्वे எல்லோரும்
स्वकृतैः அவரவர்கள் செய்த
पूर्वकर्मभिः एव முன்னென்மத்தின்
கர்மங்களால்தான்
फलं பயனாய்

एवं निरयगामी त्वं यस्य ते मतिरीदृशी । न त्वां समभिभाषिष्ये दुर्वृत्तस्यैव निर्णयः ॥

दुर्वृत्तस्य "அவ்வுடந்தை
கொண்ட
यस्य எந்த
ते உனக்கு
ईदृशी இத்தன்மையான
मतिः தீர்மானமோ
त्वं நீ
एवं இவ்வண்ணமே

बुद्धिरूपं பிறவிக்குணமாய் நற்
புத்தியடைதலையும்
शौर्यं செனாரியத்தையும்
धीरत्वं நன்னடக்கையுடனிய
ருத்தலையும்
पुत्रान् च ஸத்புத்திரர்களையும்
प्राप्नुवन्ति அடைகிறார்கள்.

निरयगामी நரகத்தில் வீழ்ந்து

அனுபவிக்கப்போகி
एषः இது [ஈய்
निर्णयः ஏற்கனவே விதிக்கப்
பட்டிருக்கிறது
त्वां உன்னுடன்
न समभिभाषिष्ये முகங்கொடுத்துப்
பேசேன்."

एनमुक्तस्ततस्तेन तस्यामात्याः समाहिताः । संकुद्धान्राक्षसान्कूराब्जिज्जुः संयुगे तदा ॥

मारीचप्रमुखाः सर्वे विमुखा विप्रदुद्बुधुः

तदा "அப்பொழுது
तेन அவரால்
एवं இவ்வாறு
उक्ताः சொல்லப்பட்டதற்கு
ச்செவியாய்த்த
तस्य அவருடைய
अमात्याः மந்திரிகள்
संयुगे போரில்
समाहिताः ஊக்கங்கொண்டவர்
களாய்
संकुद्धाः கோபாவேசங்கொண்
டவர்களாகி

॥ २३ ॥

कूरान् கொடிய
राक्षसान् அரக்கர்களை
निज्जुः அடித்துத்தன்முறுத்
தினார்கள்.
ततः அதனால்
मारीचप्रमुखाः மாரீசன் முதலியவர்
கள்
सर्वे எல்லோரும்
विमुखाः தோல்வியடைந்தவர்
களாய்
विप्रदुद्बुधुः புறங்காட்டி ஓடிப்
போனார்கள்.

ततस्तेन दशग्रीवो यक्षेत्रेण महात्मना । गदयाऽभिहतो मूर्ध्नि न च स्थानात्प्रकम्पितः ॥

ततः "அப்பொழுது
दशग्रीवः தசகீர்வன்
तेन அந்த
महात्मना மஹாத்மாவான
यक्षेत्रेण யக்ஷமன்னராலே
(குபேரராலே)

गदया ஒரு கதையைக்
मूर्ध्नि தலையில் [கொண்டு
अभिहतः நன்றாய்ப்புடைக்கப்
च என்றாலும் [பட்டான்.
स्थानात् நின்ற இடத்தினின்று
न प्रकम्पितः சற்று 'மசையவில்லை.

ततस्तौ राम निघ्नन्तौ तदाऽन्योन्यं महामृधे । न विह्वलौ न च श्रान्तौ बभूवतु रमर्षणौ ॥

राम “ ஸ்ரீராம!
மகாமூர்த்த
அமர்ஷண
தீ
ததா
அன்பொழுது
அந்யொந்ய
ஒருவரை ஒருவர்

निघ्नन्तौ அடித்துக்கொண்
டார்கள்.
ततः அப்படியிருந்தும்
न श्रान्तौ சோராமலிருந்தார்கள்.
विह्वलौ च துன்பப்படுவார்
களாகக்கூட
न बभूवतुः ஆகவில்லை.

आग्नेयमुखं तस्मै स मुमोच धनदस्तदा । राक्षसेन्द्रो वारुणेन तदस्त्रं प्रत्यवारयत् ॥ २६ ॥

सः “ அந்த
धनदः குபேரர்
तदा அப்பொழுது
तस्मै அவன்மீது
आग्नेयं ஆக்கினையமென்னும்
अस्त्रं அஸ்திரத்தை

मुमोच விடுத்தார்.
राक्षसेन्द्रः ராக்ஷஸமன்னன்
तत् अस्त्रं அந்த அஸ்திரத்தை
वारुणेन வருணாஸ்திரத்தால்
प्रत्यवारयत् அவித்தான்.

ततो मायां प्रविष्टोऽसौ राक्षसीं राक्षसेश्वरः । जघान मूर्ध्नि धनदं व्याधिष्य महतीं गदाम् ॥

ततः “ அதன்மேல்
असौ இந்த
राक्षसेश्वरः ராக்ஷஸமன்னன்
राक्षसीं அரக்கர்களுக்கியற்
मायां மாயையை [கையான
प्रविष्टः பற்றினான்.

जघान मूर्ध्नि धनदं व्याधिष्य महतीं பெரிய
गदाम् கதையை
व्याधिष्य பலமாய்ச் சூழ்ந்
धनदं குபேரனை
मूर्ध्नि தலைமேல்
जघान அடித்தான்.

एवं स तेनाभिहतो विह्वलः शोणितोक्षितः । कृत्तमूल इवाशोको निपपात धनाधिपः ॥

सः “ அந்த
धनाधिपः குபேரர்
एवं இவ்வண்ணம்
तेन அவனால்
अभिहतः அடிபட்டவராய்
शोणितोक्षितः உதிரத்தைப் பெருக்
குதிரவராய்,

विह्वलः சோர்ந்தவராய்
कृत्तमूलः வேர் பறிக்கப்பட்ட
अशोकः इव அசோகமரமென
निपपात பூமியில் படுத்துவிட்
டார்.

ततः पद्मादिभिस्तत्र निधिभिः स तदाऽऽहृतः । धनदो च्छ्वासितस्तैस्तु वनमानीय नन्दनम् ॥

तदा “ அப்பொழுது
सः அந்த
धनदः குபேரர்
तैः அந்த
पद्मादिभिः பத்மம் முதலிய
निधिभिः நிதிதேவதைகளால்
तस्य அந்த

नन्दनं நந்தனமென்கிற
वनं உத்யானவனத்திற்கு
आनीय எடுத்துக்கொண்டு
ततः அவ்விடத்தில் [போய்
आवृतः तु போர்த்தப்பட்டவ
ராயும்
उच्छ्वासितः களை தீர்க்கப்பட்டார்.

निर्जित्य राक्षसेन्द्रस्तं धनदं हृष्टमानसः । पुष्पकं तस्य जग्राह विमानं जयलक्षणम् ॥३०॥

| | | | |
|---------------|-------------------|----------|--------------------|
| राक्षसेन्द्रः | “ राக்ஷஸமன்னன் | जयलक्षणं | வெற்றிக்கு அறிகுறி |
| तं | அந்த | तस्य | அவனுடைய [யாக |
| धनदं | சுபேரனை | पुष्पकं | புஷ்பகமென்கிற |
| निर्जित्य | ஜயித்து | विमानं | விமானத்தை |
| हृष्टमानसः | மனம் திருப்திகொண் | जग्राह | கைப்பற்றிக்கொண் |
| | டவளைய | | டான். |

काञ्चनस्तम्भसंवीतं वैदूर्यमणितोरणम् । मुक्ताजा अतिच्छन्नं सर्वकामफलप्रदम् ॥ ३१ ॥
स तं राजा समारुह्य कामगं वीर्यनिर्जितम् । जित्वा वैश्रवणं देवं कैलासात्समवातरत् ॥

| | | | |
|--------------------|-----------------------|-----------------------|----------------------|
| सः | “ அந்த | मुक्ताजालप्रतिच्छन्नं | முத்தமாலைகளால் |
| राजा | மன்னன் | | லங்கரிக்கப்பெற்றதும் |
| वैश्रवणं देवं | சுபேர தேவரை | सर्वकामफलप्रदं | { எவ்வித கோரிக்கை |
| जित्वा | வென்றுவிட்டு | | { களுக்கும் பயனை |
| | | कामगं | யளிப்பதும் |
| काञ्चनस्तम्भसंवीतं | { சுவர்ணமயமான | वीर्यनिर्जितं | நினைத்தவிடமெல்லாம் |
| | { ஸ்தம்பங்கள் நாட்டப் | तं | செல்லுகிறதும் |
| | { பெற்றதும் | समारुह्य | பெருமையுடன் கிடை |
| वैदूर्यमणितोरणं | { வைரூர்யமணிகளா | कैलासात् | ஏறிக்கொண்டு |
| | { லான வெளிவாயில் | समवातरत् | கைலாஸ மலையினின்று |
| | { களையுடையதும் | | இறங்கினான். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे पञ्चदशः सर्गः

भादितः श्लोकाः 21315



उत्तरकाण्डे भादितः श्लोकाः 591

षोडशः सर्गः—பதினாறுவது ஸர்க்கம் ॥ १६ ॥

रावणनामप्राप्तिः—ராவணன் என்ற பெயரையடைவது.

स जित्वा धनदं राम आतरं राक्षसाधिपः । महासेनप्रसूतिं तद्ययौ शरवणं महत् ॥ १ ॥

| | | | |
|-------------|---------------|----------------|---------------------|
| राम | “ ஸ்ரீராம ! | तत् | அந்த |
| सः | அந்த | महत् | மஹத்தான |
| राक्षसाधिपः | ராக்ஷஸமன்னன் | महासेनप्रसूतिं | சுப்பிரமணியக்கடவுள் |
| आतरं | தமயனான | | உத்பவித்த இடமாகிற |
| धनदं | சுபேரரை | शरवणं | சரவணமென்கிற |
| जित्वा | ஜயித்துவிட்டு | ययौ | நாணற்காட்டிற்சு |
| | | | சென்றான். |

अथापश्यद्दशग्रीवो रौक्मं शरवणं महत् । गभस्तिजालसंघीतं द्वितीयमिव भास्करम् ॥२॥

दशग्रीवः “தசக்ரீவன்
शरवणं சரவணத்ததை
रौक्मं சவர்ணமயமாயிருப்ப
தாயும்
महत् மிகப்பெரியதாயும்
गभस्तिजालसंघीतं கிரணவரிசைகளைவிசும்

द्वितीयं இரண்டாவது
भास्करं சூரியனை
इव போலிருப்பதாயும்
अयः இப்பொழுது
अपश्यत् உற்றுப்பார்த்தான்.

स पर्वतं समारुह्य कश्चिद्रम्यवनान्तरम् । अपश्यत्पुष्पकं तत्र राम विष्टम्भितं तदा ॥ ३ ॥

सः “அவன்
पर्वतं समारुह्य மலையில் ஏறி
कश्चिद् ஒரு
रम्यवनान्तरं ரமணியமான உத்தியா
னவனப்பிரதேசத்தை
अपश्यत् எதிரிலிருக்கக்கண்
டான்.

राम ஸ்ரீராம!
पुष्पकं புஷ்பகவிமானம்
तत्र அங்கு
तदा அப்பொழுது
विष्टम्भितम् அசையாது ஸ்தம்ப
பித்துநின்றறிவிட்டது.

विष्टब्धं पुष्पकं दृष्ट्वा ह्यगमं कामगं कृतम् । अचिन्तयद्राक्षसेन्द्रः सचिवैस्तैः समावृतः ॥४॥

राक्षसेन्द्रः “ராக்கூஸமன்னன்
कामगं நினைத்தவிடமெல்லாம்
செல்லும்
पुष्पकं புஷ்பகவிமானத்தை
अगमं செல்லாமலிருப்ப
தாயும்

विष्टब्धं ஸ்தம்பித்திருப்பதா
कृतं ஆய்விட்டதை [யும்
दृष्ट्वा பார்த்து
तैः அந்த
सचिवैः மந்திரிமார்களால்
समावृतः हि சூழப்பட்டவகைவே
अचिन्तयत् ஆலோசனைசெய்தான்:

किंनिमित्तं चेच्छया मे नेदं गच्छति पुष्पकम् । पर्वतस्योपरिष्ठस्य कर्मेदं कस्यचिन्नवेत् ॥

इदं “இந்த
पुष्पकं புஷ்பகவிமானம்
किंनिमित्तं என்ன காரணத்தால்
मे எனது
इच्छया இஷ்டப்படி
न गच्छति போகா திருக்கிறது.

इदं இது
पर्वतस्य மலையின்
उपरिष्ठस्य மேலிருக்கிற
कस्यचित् யாரோ ஒருவனுடைய
कर्म च வேலையாகத்தான்
भवेत् இருக்கவேண்டும்.

ततोऽब्रवीत्तदा राम मारीचो बुद्धिकोविदः । नेदं निष्कारणं राजन्पुष्पकं यन्न गच्छति ॥

राम “ஸ்ரீராம!
ततः அதன்மேல்
तदा அப்பொழுது
बुद्धिकोविदः புத்திசாலியான
मारीचः மாரீசன்
इदं இப்படி
अब्रवीत् பேசினான்:

राजन् ‘மன்னரே!
पुष्पकं புஷ்பகவிமானம்
गच्छति न போகா திருக்கிறது
यत् எனதுவோ அதை
निष्कारणं காரணமொன்றுமில்
லாததாக
न கொள்ளலாகாது.

सोऽपश्यन्नन्दिनं तत्र देवस्यादूरतः स्थितम् । दीप्तिं शूलमवष्टभ्य द्वितीयमिव शङ्करम् ॥

ச: "அவன்
 தேவசு கைலாஸநாதருக்கு
 அடூரத: சமீபத்தில்
 சூல் சூலத்தை
 அவஸ்தமிய பிடித்து
 சித்ரம் நின்றுகொண்டிருக்கிறவரும்

द्वितीयं இரண்டாவது
 शङ्करं इव சங்கரா மூர்த்தியென
 दीप्तं சோதிகொண்டு விளங்க
 குகின்றவருமான
 नन्दिनं நந்திச்சுவரை
 तत्र அங்கு
 अवश्यत् கண்டான்.

तं दृष्ट्वा वानरमुखवद्वाय स राक्षसः । प्रहासं मुमुचे तत्र सतोय इव तोयदः ॥ १२ ॥

ச: "அந்த
 ராக்ஷச: அரக்கன்
 த் அவரை
 வானரமுகம் வானரமுகத்துடனி
 दृष्ट्वा பார்த்து [ருப்பவராய்
 तत्र அப்பொழுது

अवज्ञाय அலக்ஷ்யம்செய்து
 प्रहासं கேலியாய்
 सतोयः நீருடன் கூடிய
 तोयदः மேகம்
 इव போல்
 मुमुचे உரக்கநகைத்தான்.

तं क्रुद्धो भगवान्बन्दी शङ्करस्यापरा तलुः । अत्रवीक्षत्र तद्रक्षो दशाननमुपस्थितम् ॥ १३ ॥

शङ्करस्य "சங்கரபகவானுடைய
 अपरा மற்றொரு
 तलुः மூர்த்தியாகிய
 नन्दी நந்தி
 भगवान् ஈச்வரர்
 तत् அதனால்
 तत्र அப்பொழுது

क्रुद्धः கோபாவேசங்கொண்டவராய்
 उपस्थितं எதிரில் வந்திருக்கும்
 तं அந்த
 रक्षः அரக்கனாகிய
 दशाननं தசானைப்பார்த்து
 अत्रवीत् இப்படிப்பேசினார்;

यस्माद्धानरमूर्तिं मां दृष्ट्वा राक्षस दुर्मते । मौख्यान्त्वभवजानीषे परिहासं च मुञ्चसि ॥ १४ ॥

दुर्मते "புத்திகெட்ட
 राक्षस ராக்ஷஸ,
 मां என்னை
 वानरमूर्तिं வானர உருவத்துட
 दृष्ट्वा கண்டு [நீருக்கிறதை
 यस्मात् அக்காரணத்தால்

परिहासं च } பரிஹாஸமாய்
 मुञ्चसि } நீ நகைக்கின்றனை.
 मौख्यात् } மூடத்தனத்தால்
 एवं } நீ
 अवजानीषे } அல்பமாய் நினைக்கிறாய்.

तस्मान्मद्रूपसंपन्ना मद्दीर्घसप्ततेजसः । उत्पत्स्यन्ति वधार्थं हि कुलस्य तव वानराः ॥ १५ ॥

तस्मात् "இதுகாரணமாய்
 तव உனது
 कुलस्य हि சூலத்திற்கே
 वधार्थं கருவழிக்க
 मद्रूपसंपन्ना: என்போன்ற உருவங் கொண்டவர்களும்

मद्दीर्घसप्ततेजसः { எனக்குச்சமமான
 வீரியமும் பராக்கிர
 முமுடையவர்களு
 मां } மான
 वानराः } வானரர்கள்
 उत्पत्स्यन्ति } உத்பவிப்பார்கள்.

किं त्विदानीं मया शक्यं हन्तुं त्वां हे निशाचर । न हन्तव्यो हतस्तं हि पूर्वमेव स्वकर्मभिः॥

हे निशाचर “அடே அரக்கனே,
 इदानीं இப்பொழுதே
 मया என்னால்
 त्वां உன்னை
 हन्तुं கொல்வதற்கு
 शक्यं ஸாத்தியமே.
 किं तु அப்படிபுருந்தும்

त्वं நீ
 स्वकर्मभिः உன்னுடைய கரு
 மங்களால்
 हतः கொல்லப்பட்டவனாக
 पूर्व एव हि முன்னமேயே ஏற்
 பட்டிருக்கின்றதால்
 हन्तव्यः கொல்லப்படவேண்
 न இல்லை.’ [டியவனாக

अचिन्तयित्वा स तदा नन्दिवाक्यं निशाचरः । पर्वतं तु समासाद्य वाक्यमेतदुवाच ह ॥

सः “அந்த
 निशाचरः அரக்கன்
 नन्दिवाक्यं நந்திச்வராதுமொ
 ध्रिये

समासाद्य சென்று
 तदा அப்பொழுது
 एतत् பின்வரும்
 वाक्यं வாக்யத்தை
 उवाच சொன்னான்.
 ह कारண்.

अचिन्तयित्वा तु சிந்தையில்கொள்ளா

पर्वतं பர்வதத்திற்கு [மலே

पुष्पकस्य गतिश्छिन्ना यत्कृते मम गच्छतः ।

गोपते “ஓ பசுபதியே,
 मम எனது
 गच्छतः சுவேச்ச்சையாய் சென்
 றுகொண்டிருந்த

तमिमं शैलमुन्मूलं करोमि तत्र गोपते ॥

छिन्ना தடைப்பட்டதோ ;

तं அந்த

इमं இந்த

तत्र உனது

शैलं பர்வதத்தை

उन्मूलं } வேருடன் பெயர் த்
 करोमि } தெறிகிறேன்.

पुष्पकस्य புஷ்பகவிமானத்தின்

गतिः போக்கு

यत्कृते எதுமித்தமாய்

केन प्रभावेन भवो नित्यं क्रीडति राजवत् ।

भवः “சங்கரன்
 भयस्थानं ஆபத்திற்கு ஹேது
 வாய்

विज्ञातव्यं न जानीते भयस्थानमुपस्थितम् ॥

प्रभावेन அமானுஷ்ய சக்தியால்

नित्यं ஸதா

राजवत् ராஜனான

क्रीडति ஸுகமாயிருக்கிற
 உண்பதை

उपस्थितं இப்போது இங்கு
 வந்திருப்பதை

न जानीते கவனியாதிருக்கிறான்.

केन எந்த

विज्ञातव्यम् “ கண்டுகொள்ள
 வேண்டும்.’

न जानीते

केन

एवमुक्त्वा ततो राम भुजान्विक्षिप्य पर्वते ।

राम “ஸ்ரீராம,
 एवं இவ்வண்ணம்
 उक्त्वा சொல்லிவிட்டு
 ततः அதன்மேல்
 पर्वते மலையின்மீட்டில்
 भुजान् கைகளை

तोलयामास तं शैलं समृग्व्यालपादपम् ॥

विक्षिप्य நீட்டிவைத்து
 तं அந்த

समृग्व्यालपादपं } மான்கள், புலிகள்,
 மாங்கள் இவைகளு
 டனிருக்கிற
 शैलं பர்வதத்தை
 तोलयामास குறுக்கினான்.

चालनात्पर्वतस्यैव गणा देवस्य कम्पिताः। चचाल पार्वती चापि तदाऽऽश्लिष्टा महेश्वरम्॥

பரீதசய
 சாலனாத்
 தேவசய
 ரணா: ஂவ
 கர்ப்பிதா:
 “பர்வதத்தின்
 அசைவால்
 பாரசிவனுடைய
 கணங்களுநம்
 நடுக்கங்கொண்டார்
 கள்.

தத
 மஹே
 ஂஸ்திஷ்ட
 பர்வதி அபி ச
 சசால
 அப்பொழுது
 பாமேசுவரருக்கு
 பக்கலிலிருந்த
 பர்வதிதேவியானும்
 கூட
 பயந்துமிரண்டாள்.

ततो राम महादेवो देवानां प्रवरो हरः। पादाङ्गुष्ठेन तं शैलं पीडयामास लीलया ॥२२॥

ராம
 தேவாநர்
 பரவர:
 ஹர:
 மஹாதேவ:
 தத:
 “ஸ்ரீராம!
 தேவர்களுக்குள்
 ச்ரேஷ்டரான
 ஹரனென்ற
 மஹாதேவர்
 அப்பொழுது

த்
 சீலம்
 பாடாங்குஷ்டெந
 லீலயா
 பீடியாமாச
 அந்த
 பர்வதத்தை
 திருவடிப்பெருவிளி
 லால்
 விளையாட்டாக
 அழுத்தினார்.

पीडितास्तु ततस्तस्य शैलस्याधोगता भुजाः। विस्मिताश्चाभवन्स्तत्र सचिवास्तस्य रक्षसः ॥

தத:
 சீலசய
 அஃ:
 ரதா:
 தசய
 பூசா: வு
 பீடிதா:
 “அப்பொழுது
 மலையின்
 அடியில்
 வைக்கப்பட்டிருந்த
 அவனுடைய
 கைகளுநம்
 நசக்குண்டன.

தத
 தசய
 ரக்ஷச:
 சசிவா: ச
 விர்மிதா:
 அஃ:
 அப்பொழுது
 அந்த
 அரக்கனின்
 அமைச்சர்களும்
 ஆச்சர்யங்கொண்ட
 வர்களாய்
 ஆனார்கள்.

तेन रक्षोधिपेनात्र वेदनार्तभुजेन वै। मुक्तो विरावः सुमहान् त्रैलोक्यं येन पूरितम् ॥२४॥

அவ
 வேதனாந்ஃ
 தேந
 ரக்ஷோதிபெந
 “அப்பொழுது
 கைகள் நசக்குண்ட
 தால் அதிகவருத்த
 த்திலிருக்கும்
 அந்த
 இராக்காஸமன்னால்

சுமஹர்
 விராவ:
 முக்த:
 யெந
 த்ரீலோக்யம்
 பூரீதம்
 மிகப்பெரிய
 கூச்சல்
 இடப்பட்டது.
 எந்த அநால்
 மூவுலகமும்
 நிரப்பப்பட்டது.

मेनिरे वज्रनिष्पेपं तस्यामात्या युगक्षये। तदाऽऽसनात्पचलिता देवा इन्द्रपुरोगमाः ॥

தத
 ஂந்ரபுரோரமா:
 தேவா:
 ஂசனாத்
 பசலிதா:
 “அப்பொழுது
 இந்நிரை முன்
 னிட்ட
 தேவர்கள்
 இருப்பிடத்தினின்று
 கலக்கமுற்றார்கள்.

தசய
 அமாத்யா:
 யுராக்ஷயே
 வசுநநிஷ்பே
 மெநீரே
 அவனுடைய
 அமைச்சர்கள்
 பிரளயகாலத்திலுண்
 டாகும்
 இடிமுழுக்கமென
 எண்ணினார்கள்.

समुद्राश्चापि संक्षुब्धाश्चलिताश्चापि पर्वताः । यक्षा विद्याधराः सिद्धाः किमेतदिति चाब्रुवन् ॥

समुद्राः च “सமுத் திரங்களும்
 संक्षुब्धाः கலங்கினை.
 पर्वताः च பர்வதங்களும்
 चलिताः அசைந்தாடின.
 यक्षाः अपि யக்ஷர்களும்
 विद्याधराः अपि வித்யாதர்களும்

सिद्धाः च சித்தர்களும்
 एतत् ‘இது
 किं என்ன’ ?
 इति என்று
 अब्रुवन् சொல்லிக்கொண்டார்
 கள்.

अथ ते मन्त्रिणस्तस्य विक्रोशन्तमथाब्रुवन् । तोषयस्व महादेवं नीलकण्ठमुमापतिम् ॥

अथ “அப்பொழுது
 तस्य அவனது
 ते मन्त्रिणः அந்த மந்திரிகள்
 विक्रोशन्तं வீறிட்டுக்கதறுகின்ற
 அவனைப்பார்த்து
 अथ இவ்வண்ணமாய்

अब्रुवन् விண்ணப்பஞ்செய்து
 கொண்டார்கள்;
 उमापतिं ‘உமாபதியான
 नीलकण्ठं நீலகண்டராகிய
 महादेवं மஹாதேவரை
 तोषयस्व மனங்குளிரச்செய்.

तमुते शरणं नान्यं पश्यामोऽत्र दशानन । स्तुतिभिः प्रणतो भूत्वा तमेव शरणं ब्रज ॥

कृपालुः शङ्करस्तुष्टुः प्रसादं ते विधास्यति
 दशानन “தசானன!
 अत्र இதுவிஷயத்தில்
 तं ऋते அவரைத்தவிர
 अन्यं மற்றொரு
 शरणं புகுமிடத்தை
 न पश्यासः நாங்களறியோம்;
 प्रणतः வணக்கங்கொண்ட
 भूत्वा ஆகி [வளைய்
 स्तुतिभिः ஸ்தோத்திரங்களால்

॥ २८ ॥
 तं एव அவரையே
 शरणं சாணமாக
 ब्रज அடை.
 कृपालुः கிருபாலுவான
 शङ्करः சங்கரர்
 तुष्टुः மனங்குளிர்த்தவராகி
 ते உமக்கு
 प्रसादं அனுக்கிரகத்தை
 विधास्यति புரிவார்.’

एवमुक्तस्तदाऽमात्यैस्तुष्टाव वृषभध्वजम् । सामभिर्विविधैः स्तोत्रैः प्रणम्य स दशाननः ॥

कालो महान्नरश्रेष्ठ स्वतो रक्षसो गतः
 नरश्रेष्ठ “புருஷோத்தம!
 अमात्यैः ‘மந்திரிகளால்
 एवं மேற்கண்டவண்ணம்
 उक्तः சொல்லப்பட்டதற்
 குச் செவிகாய்த்த
 सः அந்த
 दशाननः தசானன்
 तडा அப்பொழுது
 प्रणम्य ஸாஷ்டாங்க நமஸ்கா
 ரஞ்செய்து

॥ २९ ॥
 विविधैः நானாவிதமான
 सामभिः ஸாமகான
 स्तोत्रैः ஸ்தோத்திரங்களால்
 वृषभध्वजं எருதுக்கொடியோனை
 (பரமேச்வரரை)
 तुष्टाव ஏத்தித்தொழுதான்.
 स्वतः கதறிக்கொண்டிருக்
 रक्षसः அரக்கனுக்கு [கிற
 महान् कालः நீண்டகாலம்
 गतः நடைபெற்றது.

ततः प्रीतो महादेवः शैलाग्रे विष्टितः प्रभुः । मुक्त्वा चास्य भुजात्राम प्राह वाक्यं दशाननम्॥

ராம
தத:
பு:
மஹாதேவ:
பிரீத:
அசு
புஜாநு

“ஸ்ரீராம!
அதற்குப்பிறகு
சாச்வதராகிய
மஹாதேவர்
பிரஸன்னராகி
இவனது
கைகளே

मुक्त्वा
शैलाग्रे
विष्टितः
दशाननं च
वाक्यं
प्राह

விடுவித்து
மலைச்சிகரத்தில்
எழுந்தருளியவராய்
தசானனைப்பார்த்து
ஒரு வாக்யத்தை
சொல்லியருளினார்:

प्रीतोऽस्मि तव वीर्यस्य शौण्डीयाच्च दशानन । शैलाक्रान्तेन यो मुक्तस्त्वया रावः सुदारुणः॥

दशानन
तव
वीर्यस्य
शौण्डीयाच्
प्रीतः

“தசானன!
உனது
வீர்யத்தின்
விசேஷத்தால்
திருப்தியடைந்தவ

शैलाक्रान्तेन
त्वया
मुक्तः
रावः
यः च
सुदारुणः

மலையால் நசுக்கப்பட்ட
உன்னால்
இடப்பட்ட
கூச்சல்
எதுவோ அது
ஒப்புயர்வற்ற பேரொ

अस्मि இருக்கிறேன்.

यस्माद्धोकत्रयं चैतद्राघितं भयमागतम् । तस्मात्त्वं रावणो नाम नाम्ना तेन भविष्यसि ॥

तेन
एतत् त्रैलोक्यं
राघितं

“அதனால்
இந்த மூவுலகமும்
சப்திக்கப்பெற்றதாய்
விளங்கிற்று.

यस्मात् तस्मात्
त्वं
नाम्ना
रावणः
नाम
भविष्यसि

ஆனதால்
நீ
பெயரால்
'ராவணன்'
என
இனி விளங்குவாய்.

भयं च
आगतं

திகிலையும்
அடைந்ததாயிற்று.

देवता मानुषा यक्षा ये चान्ये जगतीतले । एवं त्वामभिधास्यन्ति रावणं लोकरावणम् ॥

देवता:
यक्षा:
जगतीतले
मानुषा: च
अन्ये
ये

“தேவர்களும்
யக்ஷர்களும்
பூலோகத்தில்
மனிதர்களும்
வேறு
எவர்களோ அவர்

लोकरावणं
त्वां
एवं
रावणं
अभिधास्यन्ति

மூவுலகத்தைக் கதறச்
செய்த
உன்னை
அவ்வண்ணமே
'இராவணனென்று'
பெயரிட்டு வழங்கு

कण्डम्

गच्छ पौलस्त्य विस्रब्धं पथा येन त्वमिच्छसि । मया चैवाभ्यनुज्ञातो राक्षसाधिप गम्यताम्॥

पौलस्त्य
येन
पथा
एवं
इच्छसि

“பௌஸ்தியனே!
எந்த
வழியாகச்செல்ல
நீ
விரும்புகிறாயோ
(அந்த வழியே)

विस्रब्धं
गच्छ
राक्षसाधिप
मया च
अभ्यनुज्ञातः एव
गम्यताम्

தடைப்படாமல்
போ,
இராக்ஷஸமன்னனே!
என்னாலும்
லோகவிடைபெற்றவ
போகலாம்.' [அகவும்

एवमुक्तस्तु लङ्केशः शंभुना स्वयमब्रवीत् । प्रीतो यदि महादेव वरं मे देहि याचतः ॥३५॥

शम्भुना “ சிவபிரானால்
 एवं இவ்வண்ணம்
 स्वयं நேரில்
 उक्तः சொல்லியருளியதற்
 குச்செவிகாய்த்த
 लङ्केशः இலங்கேசுவரன்
 तु இப்பொழுது இப்படி
 अब्रवीत् வேண்டிக்கொண்

महादेव ‘மஹாதேவரே!
 प्रीतः பிரஸன்னராக
 यदि இருக்கிறீர்களென்
 றால்

याचतः வருந்திக்கேட்கும்
 मे எனக்கு
 वरं ஒரு வரத்தை
 देहि தந்தருளும்.

டான் :

अवध्यत्वं मया प्राप्तं देवगन्धर्वदानवैः । राक्षसैर्गुह्यकैर्नागैर्यै चान्ये बलवत्तराः ॥ ३६ ॥

देवगन्धर्व- } “தேவர்களாலும் கந்
 दानवैः } தர்வர்களாலும் தா
 राक्षसैः அரக்கர்களாலும்
 गुह्यकैः { (குபேரனது அனு
 सूर्यकैः } சூரர்களாகிய குஹ்ய
 कर्कशैः } கர்களாலும்
 नागैः नागர்களாலும்

अन्ये மற்றுமுள்ள
 बलवत्तराः அதிபலிஷ்டர்கள்
 ये च எவர்களோ அவர்
 कर्णा लुम् களாலும்
 अवध्यत्वं மாணமின்மை
 मया என்னால்
 प्राप्तम् சம்பாதிக்கப்பட்டிருக்
 கிறது.

मानुषान् गणे देव स्वल्पास्ते मम संमताः । दीर्घमायुश्च मे प्राप्तं ब्रह्मणस्त्रिपुरान्तक ॥
 वाञ्छितं चायुषः शेषं शस्त्रं त्वं च प्रयच्छ मे ॥ ३७ ॥

विपुरान्तक “ முப்புரமெரித்த
 देव தேவ!
 गणे வரிசையில்
 मानुषाद् च மனுஷ்யனிடத்திலு
 மிருந்து என்று
 न இல்லை.
 ते அவர்கள்
 स्वल्पाः அல்பர்கள் என்று
 मम समताः என்னால் கொள்ளப்
 பட்டார்கள்.
 ब्रह्मणः பிரம்மதேவரிடமிருந்து

दीर्घ आयुः தீர்க்கமான ஆயுள்
 मे எனக்கு
 प्राप्तं கிடைத்திருக்கிறது.
 वाञ्छितं பிரார்த்திக்கப்
 பட்டதாகிற
 शेषं குறையாயிருக்கிற
 आयुषः च ஆயுளையும்
 शस्त्रं च ஒருசஸ்திரத்தையும்
 त्वं தேவரீர்
 मे எனக்கு
 प्रयच्छ தந்தருளவேண்டும்!

एवमुक्तस्ततस्तेन रावणेन स शङ्करः । ददौ खड्गं महादीप्तं चन्द्रहासमिति श्रुतम् ॥

आयुषश्चावशेषं च स्थित्वा भूतपतिस्तदा
 तेन “ அந்த
 रावणेन இராவணனால்
 एवं மேற்கண்டவண்
 ணமாய்

उक्तः பிரார்த்திக்கப்
 பட்டவராகிய
 शङ्करः சங்கரர்
 तदा அப்பொழுது

| | |
|------------|------------------------------|
| श्रुतं | பெயர்போனதாய் |
| महादीप्तं | மஹா தேஜோபய மாய் விளங்கும் |
| चन्द्रहासं | சந்திரஹாஸம் |
| इति | எனப் பெயர்சூண்ட |
| खङ्गं च | கட்கத்தையும் |
| सः | அந்த |

| | |
|------------|-------------------------------|
| भूतपतिः | பூதநாயகர் |
| ततः | இதில் |
| स्थित्वा च | சற்று ஆலோசனை செய்துவவிட்டு |
| आयुषः | ஆயுளின் |
| अवशेषं | குறைவையும் |
| दशौ | தந்தருளினார். |

दक्षोवाच ततः शम्भुर्नावज्ञेयमिदं त्वया । अवज्ञातं यदि हि ते मामेवैष्यत्यसंशयः ॥३९॥

| | |
|------------|---------------------------------|
| शम्भुः | “பரமேசுவரர் |
| दत्त्वा | தந்தருளினார் |
| ततः | அதன்மேல் |
| उवाच | இப்படிச் சொல்லியரு |
| त्वया | ‘உன்னால் [ளினார்: |
| इदं | இது |
| अवज्ञेयं न | அவமரியாதை செய் யத்தக்கதன்று. |

| | |
|--------------|-----------------------------|
| हि | ஏனென்றால் |
| ते | உன்னால் |
| अवज्ञातं यदि | அவமதிக்கப்பட்ட தாக ஆகில் |
| मामेव | என்னிடமே |
| एष्यति | வந்துசேர்ந்துவிடும்; |
| असंशयः | இதற்கையமில்லை.’ |

एवं महेश्वरेणैव कृतनामा स रावणः । अभिवाद्य महादेवमारुरोहाय पुष्पकम् ॥४०॥

| | |
|--------------|--------------------------|
| एवं | “இவ்வண்ணமாய் |
| महेश्वरेण एव | மஹேசுவரராலேயே |
| रावणः | இராவணனை |
| कृतनामा | நாமகரணம் செய்யப் பட்ட |

| | |
|----------|-------------------|
| सः | அவன் |
| अथ | இப்பொழுது |
| महादेवं | மஹாதேவரை |
| अभिवाद्य | தண்டமிட்டு |
| पुष्पकं | புஷ்பகவிமானத்தில் |
| आरुरोह | ஏறிப்போனான். |

ततो महीतले राम परिचक्राम रावणः । क्षत्रियान्मुमहावीर्यान्बाधमान इतस्ततः ॥ ४१ ॥

| | |
|---------------|--------------------------------|
| राम | “ஸ்ரீராம! |
| रावणः | இராவணன் |
| ततः | அவ்விடத்திலிருந்து |
| महीतले | பூமண்டலத்தில் |
| सुमहावीर्यान् | பெயர்போன வீர்ய முடையவர்களான |

| | |
|-------------|----------------------------|
| क्षत्रियान् | கூத்திரியர்களை |
| इतस्ततः | இங்குமங்கும் |
| बाधमानः | துன்புறுத்துகின்ற வனும் |
| परिचक्राम | சுற்றித்திரிந்தான். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे षोडशः सर्गः ॥



சமததச: சரீ:—பதினேழாவது ஸர்க்கம் || 17 ||

வேதவதீசாபம்.

அத ராஜனமாஹாஹுவீசர்நஸ் மஹீதலே | ஹிபவத்சானுமாசாத் பரிசுக்ராம் ராவண: || 1 ||

| | | | |
|---------|---------------------|-------------|---------------------|
| ராஜந் | “சக்கிரவர்த்தியாரே! | விசர்ந் அத | திரிந்துக்கொண்டி |
| மாஹாஹு: | மஹாபலிஷ்டனா | ஹிஸ்வசாஸு | ருந்த காலத்தில் |
| ச: | அந்த | | இமயமலையின் சார |
| ராவண: | இராவணன் | ஆசாத் | லுக்கு |
| மஹீதலே | பூமண்டலத்தில் | பரிசுக்ராம் | போய்ச்சேர்ந்து |
| | | | சுற்றித்திரிந்தான். |

தந்ராபஸ்யதஸ் வஃ கந்யா க்ஷணாஜினஜதாஹராம் | ஆபேண விஹிநா யுக்தா தபந்நா டீவதாமிவ ||

| | | | |
|------------------|--|---------|--------------------|
| தந் | “அவ்விடத்தில் | ஆபேண | ரிஷிகளுக்கூரிய |
| ச: | அவன் | விஹிநா | ரியமத்துடன் [தாகிய |
| க்ஷணாஜினஜதாஹராம் | { கிருஷ்ணஜினமும், ஜடையுத் தரித் திருப்பவனும் | யுக்தா | இருக்கிறவளாய் |
| டீவதாமிவ | தேவதையை | தபந்நா | தவம்புரிந்துகொண் |
| ஹ வஃ | போலிருப்பவனும் | கந்யா | டிருப்பவளுமான |
| | | அபஸ்யத் | ஒரு கன்னிகையை |
| | | | கண்டான். |

ச ட்டுஷா ரூபஸ்பந்நா கந்யா தா சூமஹ்ரதாம் | கா஡மோஹபரிதாதுமா பரசுசு ப்ரஹஸந்நிவ || 3 ||

| | | | |
|------------|--|------------------------|--------------------|
| ச: | “அவன் | ட்டுஷா | பார்த்து |
| சூமஹ்ரதா | { அத்தியந்த கடுமையா ன தவத்தைப்புரிந் துகொண்டிருந்த | கா஡மோஹ- பரிதாதுமா } | காமத்தாலும் மோஹ |
| தா | அந்த | ஹ | த்தாலும் மெய்மறந்த |
| கந்யா | கன்னிகையை | ப்ரஹஸந் | சற்று [வகை |
| ரூபஸ்பந்நா | மஹா சௌந்தரியவதி | | புன்னகைசெய்து |
| | யாயிருப்பவளாய் | பரசுசு | கொண்டு |
| | | | இப்படி வினாவினன்: |

கிமிதம் வர்தசே ஡்ரே விருதம் யூவநஸ்ய தே | ந ஹி யுக்தா தவீதஸ்ய ரூபஸ்ய தபச: க்ரியா ||

| | | | |
|--------|---------------|---------|-------------------|
| ஡்ரே | “ஓ பெண்மணியே! | தே | உனது |
| தவ | உனது | யூவநஸ்ய | யௌவனத்திற்கு |
| புதஸ்ய | இந்த | விருதம் | ஒவ்வாத |
| ரூபஸ்ய | ரூபத்திற்கு | ஹ் | இதை |
| தபச: | தவத்தின் | கி | ஏன் |
| க்ரியா | சீராதண்டம் | வர்தசே | அனுஷ்டித்துக் |
| யுக்தா | ஏற்றதாய் | | கொண்டிருக்கிறாய்? |
| ந ஹி | இல்லவையிலலை. | | |

रूपं तेऽनुपमं भीरु कामोन्मादकरं नृणाम् । न युक्तं तपसि स्थातुं निर्गतो व्लेष निर्णयः ॥

भीरु "பயந்தவளே !
 ते உனது
 अनुपमं ஒப்பற்றதாயிருக்கின்ற
 रूपं हि வடிவழுகோ வெனில்
 नृणां மனிதர்களுக்கு
 कामोन्मादकरं {காமத்தையோங்கி
 வளரச்செய்வதாயிருக்கிறது.

तपसि தவம்புரிவதில்
 स्थातुं இன்னுமிருப்பது
 न युक्तं சரியல்ல.
 एषः இந்த
 निर्णयः தீர்மானமானது
 निर्गतः விட்டொழித்துவிடவேண்டியது.

कस्यासि दुहिता भद्रे को वा भर्ता वरानने । केन संभुज्यसे भीरु स नरः पुण्यभाग्युवि ॥

पृच्छतः शंस मे सर्वं कस्य हेतोः श्रमस्तव

॥ ६ ॥

भीरु "பயந்தவளே !
 भद्रे பெண்மணியே !
 वरानने அமுதுவாய்ந்த முகமண்டலமுடையவளே !
 कस्य யாருடைய
 दुहिता असि பெண் றீ ?
 भर्ता உன் கொழுநன்
 कः वा யார் ?
 केन எவனால்
 संभुज्यसे {சொந்தமாக்கிக்
 கொள்ளப்பட்டிருக்கிறாயோ

सः नरः அந்த மனிதன்
 भुवि பூமியில்
 पुण्यभाक् புண்ணியசாலி.
 कस्य யாது
 हेतोः காரணம்பற்றி
 तव உனக்கு
 श्रमः இந்நிரியரிக்கிரஹம் ?
 पृच्छतः கேட்க்கின்ற
 मे எனக்கு
 सर्वं எல்லாவற்றையும்
 शंस விளங்கக்கூறுவாய்.

एवमुक्त्वा तु सा कन्या रावणेन यशस्विनी । अब्रवीद्विधिवत्कृत्वा तस्यातिथ्यं तपोधना ॥

रावणेन "இராவணனால்
 एवं இவ்வண்ணமாய்
 उक्त्वा சொல்லப்பட்டதற்கு
 செவ்சாய்த்த
 यशस्विनी புகழ்பெற்ற
 तपोधना {உலகவாழ்க்கையின்
 பற்றை முற்றிலும்
 விட்டொழித்துவிட்ட

सा कन्या அந்தக் கன்னிகை
 विधिवत् விதிப்படி
 तस्य அவனுக்கு
 आतिथ्यं அதிதிபூஜையை
 कृत्वा செய்து
 उ இப்பொழுது இப்படி
 अब्रवीत् பதிலுரைத்தார்:

कुशध्वजो मम पिता ब्रह्मर्षिरमितप्रभः । बृहस्पतिसुतः श्रीमान्बुद्ध्या तुल्यो बृहस्पतेः ॥

मम पिता "எனது தந்தை
 कुशध्वजः குசத்வஜரென்ற
 ब्रह्मर्षिः பிரம்மரிஷி.
 अमितप्रभः அளவிலா பிரபாவமுடையவராய்

श्रीमान् பெயர்பெற்றவர்.
 बृहस्पतिसुतः பிரஹஸ்பதியின்
 बुद्ध्या புத்தியில் [புதல்வர்.
 बृहस्पतेः பிரஹஸ்பதிக்கு
 तुल्यः ஒப்பானவர்.

तस्याहं कुर्वतो नित्यं वेदाभ्यासं महात्मनः । संभूता वाङ्मयी कन्या नाम्ना वेदवती स्मृता ॥

नित्यं “இடைவிடாது
 वेदाभ्यासं வேதாப்பியாஸத்தை
 कुर्वतो செய்துக்கொண்
 तस्य अந்த [டிருக்கிற
 महात्मनः மஹாத்மாவினுடைய
 वाङ्मयी வாக்கே உருவங்
 கொண்டதாகிய

कन्या ஒரு பெண்ணாய்
 संभूता உற்பவித்தவள்
 अहं நான்.
 नाम्ना பெயரால்
 वेदवती வேதவதி என்று
 स्मृता அழைக்கப்படுகிறவள்.

ततो देवाः सगन्धर्वा यशराक्षसपन्नगाः । तेषां गत्वा हि पितरं वरणं रोचयन्ति मे ॥

ततः “அப்பொழுது
 ते अந்த
 सगन्धर्वाः கந்தர்வர்களுள் ளிட்ட
 देवाः தேவர்களும்
 यशराक्षस- } யக்ஷர்களும், ராக்ஷ
 पन्नगाः अपि } ஸர்களும், பன்னகர்
 களும்

पितरं हि தந்தையையே
 गत्वा கிட்டி
 मे என்னை
 वरणं கல்லியாணம் செய்து
 கொடுக்க
 रोचयन्ति வேண்டினார்கள்.

न च मां स पिता तेभ्यो दत्तवान् राक्षसर्षभ । कारणं तद्ददियामि निशाचर निशामय ॥

राक्षसर्षभ “ராக்ஷஸராஜனாகிய
 निशाचर அரக்கனே!
 पिता தந்தையாகிய
 सः அவர்
 मां என்னை
 तेभ्यः அவர்களுக்கு

कारणं तद्ददियामि கொடுக்கவில்லை.
 न दत्तवान्
 तत् कारणं च அந்த காரணத்தை
 चदिव्यामि சொல்லுகின்றேன் ;
 निशामय கேளும்.

पितुस्तु मम जामाता विष्णुः किल सुरेश्वरः । अभिप्रेतस्त्रिलोकेशस्तस्मान्नान्यस्य मे पिता ॥

सुरेश्वरः “தேவர்களுக்கும்
 தேவராகிய

अभिप्रेतः மனதில் நிர்ணயிக்கப்
 பட்டவர்.

त्रिलोकेशः த்ரிலோகாதிபதியான
 विष्णुः किल விஷ்ணுவே
 जामाता மருமகளை
 मम எனது
 पितुः தந்தையினுடைய

तस्यात् ஆனதால்
 मे எனது
 पिता தந்தை
 अन्यस्य तु மற்றெவருக்கும்
 न கொடேனென்றார்.

दातुमिच्छति तस्मै तु तच्छ्रुत्वा बलदपितः । शम्भुर्नाम ततो राजा दैत्यानां कुपितोऽभवत् ॥

तस्मै तु “அவருக்கே
 दातुं கல்லியாண்டுசெய்து
 கொடுக்க

राजा அரசனும்
 बलदपितः பலத்தால் செருக்
 குற்றவனுமான
 शशुः नाम சர்பு என்பவன்
 तत् श्रुत्वा அதைக்கேட்டு
 कुपितः கோபங்கொண்டவ
 अभवत् ஆனான். [இருக

इच्छति முயன்றுகொண்டிருந்
 ततः அப்பொழுது [தார்.
 दैत्यानां தைத்தீயர்களுக்கு

तेन रात्रौ शयानो मे पिता पापेन हिंसितः

॥ १४ ॥

रात्रौ “இரவில்
शयानः நித்திரைசெய்து
கொண்டிருந்த
मे எனது

पिता தந்தை
तेन அந்த
पापेन பாபியால்
हिंसितः கொலையுண்டார்.

ततो मे जननी दीना तच्छरीरं पितुर्मम ।

परिष्वज्य महाभागा प्रविष्टा हृद्यवाहनम् ॥

ततः “அப்பொழுது
मे எனது
महाभागा மஹாபாக்கியவதி
याकिय
जननी தாயார்
दीना துக்கத்தில் மூழ்கிய
வளாகி

मम எனது
पितुः தந்தையின்
तत् அந்த
शरीरं பிரேதத்தை
परिष्वज्य கட்டிக்கொண்டு
हृद्यवाहनं அக்கினியில்
प्रविष्टा பிரவேசித்தாள்.

ततो मनोरथं सत्यं पितुर्नारायणं प्रति ।

करोमीति तमेवाहं हृदयेन समुद्धे ॥ १६ ॥

नारायणं प्रति “ஸ்ரீமந் நாராயண
னைப்பற்றியே
पितुः தந்தையின்
मनोरथं மனோரதத்தை
सत्यं நிறைவேற்றிவைப்
பதை
करोमि சங்கல்பம் செய்து
கொண்டிருக்கிறேன்

हृति என்கிறபடியால்
ततः அப்போதிலிருந்து
तं एव அவரையே
हृदयेन மனதால்
अहं நான்
समुद्धे ஸ்திரமாய் வரித்து
இருக்கிறேன்.

इति प्रतिज्ञामारुह्य चरामि विपुलं तपः ।

एतत्ते सर्वमाख्यातं मया राक्षसपुङ्गव ॥ १७ ॥

इति “இப்படிப்பட்ட
प्रतिज्ञां பிரதிக்ஞையை
आरुह्य சர்வமூமாய்க்கொண்டு
विपुलं கடும்
तपः தவத்தை
चरामि புரிகின்றேன்.

राक्षसपुङ्गव ராக்ஷஸர்களுக்குப்
ते உமக்கு [பெரியவரே,
मया என்னால்
एतत् இது
सर्वं எல்லாமும்
आख्यातम् சொல்லிவிடப்பட்டது.

नारायणो मम पतिर्न त्वन्यः पुरुषोत्तमात् ।

आश्रये नियमं घोरं नारायणपरीप्सया ॥

नारायणः तु “ஸ்ரீமந் நாராய
मम எனது [ணரே
पतिः பர்த்தா.
पुरुषोत्तमात् புருஷோத்தமரைத்
தவிர
अन्यः மற்றெவனும்
न ஆகான்.

नारायण- } “ஸ்ரீமந் நாராயண
परीप्सया } னெருவரையே
அடையவேண்டிய
தால்
घोरं கடுமையான
नियमं நியமத்தை
आश्रये பூண்டிருக்கிறேன்.

विज्ञातस्त्वं हि मे राजन्गच्छ पौलस्त्यनन्दन । जानामि तपसा सर्वं त्रैलोक्ये यद्धि वर्तते ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|---|--|
| पौलस्त्यनन्दन | “ பெளஸ்தியரின புதல்வனாகிய | तपसा जानामि मे स्वं विज्ञातः हि | தவத்தின் மகிமை நானறிவேன். [யால் எனக்கு நீர் இன்னொனத்தெரி யும். இதைவிட்டுப்போய் விடும்.’ |
| राजन् | அரசே, | गच्छ | |
| त्रैलोक्ये हि | மூவுலகிலும் | | |
| यत् | எது | | |
| वर्तते | நடைபெறுகிறதோ | | |
| सर्वं | எல்லாவற்றையும் | | |

सोऽब्रवीद्रावणो भूयस्तां कन्यां सुमहाव्रताम् । अवरुह्य विमानाग्रात्कन्दर्पशरपीडितः ॥

| | | | |
|-----------------|--|-------------|---------------------------------|
| सः | “ அந்த | सुमहाव्रतां | உத்கிருஷ்டதவம் |
| रावणः | இராவணன் | तां | சூண்டிருக்கும் |
| कन्दर्पशरपीडितः | { மன்மதபாணங்களால் வெட்கத்தை ஒழித் தவனாகி | कन्यां | அந்த கன்னிகையைப் பார்த்து |
| विमानाग्रात् | தெய்வவிமானத்தி | भूयः | மீளவும் இப்படி. |
| अवरुह्य | இறங்கி [னின்ற | अब्रवीत् | மொழிந்தான்: |

अवलिप्तासि सुभ्रोणि यस्यास्ते मतिरीदृशी । वृद्धानां मृगशाबाक्षि भ्राजते धर्मसंग्रहः ॥

| | | | |
|-------------|------------------------------|-------------|---|
| यस्याः | “ எந்த | भ्राजते | விளங்கும். |
| ते | உனக்கு | सुभ्रोणि | ஸூந்தரி, |
| ईदृशी | இப்படிப்பட்ட | मृगशाबाक्षि | { மான்விழிகளைப்போ ன்ற விழிகளையுடை யவளே! |
| मतिः | கொள்கையோ அந்த | अवलिप्ता | அஹங்காரம் கொண்டவளாய் |
| धर्मसंग्रहः | தவத்தையே பற்றி யிருத்தல் | असि | நீ இருக்கிறாய். |
| वृद्धानां | வயது முதிர்ந்தவர் களுக்கு | | |

त्वं सर्वगुणसम्पन्ना नाहंसे वक्तुमीदृशम् । त्रैलोक्यसुन्दरी भीरु यौवनं तेऽतिवर्तते ॥२२॥

| | | | |
|------------------|--|-----------|-----------------------------|
| सर्वगुणसम्पन्ना | { எல்லா நற்குணங்க ளும் அமையப்பெற் றவளும் | वक्तुं | சொல்ல |
| त्रैलोक्यसुन्दरी | மூவுலகிலும் சிறந்த சொளந்தர்யவதியுமான | न अहंसे | கூடாது. |
| त्वं | நீ | भीरु | பயந்தவளே, |
| ईदृशं | இப்படி | ते | உனது |
| | | यौवनं | யௌவனம் |
| | | अतिवर्तते | வினாய்க்கழிந்துபோ கிறது. |

அஹ் லக்ஷாபதிர்஢்ரே தசுரீரீவ இதி ஶ்ருத: | தசுரீரீ ஢ே ஢வ ஢ாரீர் த்வ் ஶுக்ஷவ ஢ோரீரீயேஶிதாந் ||

஢்ரே “நல்லாய்,
அஹ் நான்
லக்ஷாபதி: இல஢்காபுரத்தாசன்;
தசுரீர்வன்
தசுரீர்வன்
இதி என
ஶ்ருத: ஢ெய்ர்பெற்றவன்;
தசுரீர்வன்
தசுரீர்வன்

஢ே எனக்கு
த்வ் ரீ
஢ாரீர் இல்லாளாக
஢வ ஶ்ருகு;
஢ோரீர் ச஢்பத்தாக்களை
இஶிதாந் யதா வேண்டியவாரே
ஶுக்ஷவ சாந்த஢ாக்கிக்கொள்.

கசுரீரீ தாவதசுரீரீ ய் த்வ் விஷ்ணுரீத்ய஢ி஢ாஶசே | வீரீயேண தபசா சீவ ஢ோரீரீன ச வலேந ச ||
ந ஢யா ச ச஢ோ ஢்ரே ய் த்வ் காமயசேஶ்ரீரீரீ
|| 18 ||

஢்ரே “நல்லாய்,
அஶ்ரீரீரீ சந்தரீரீ,
அசுரீரீ இந்த
த்வ் ரீ
ய் என஢ொருவரீரீரீரீரீ
தாவத் இவ்வளவு அ஢ிக஢ாய்
அ஢ி஢ாஶசே புகழ்ந்து ஢ேசுகின்
த்வ் ரீ [ரூயோ
ய் எவ்஢ொருவரீரீரீரீ
காமயசே { உன் ஢ீரீதிக்குப் ஢ாத்
தீரீரீரீரீரீரீரீரீ
ருக்கீரீரீரீரீரீரீ

விஷ்ணு: அந்த விஷ்ணு
இதி ச என்பவன் தான்
க: யார்?
ச: அவன்
஢யா எனக்கு
வீரீயேண வீரீயத்தாலும்
தபசா ச தவத்தாலும்
஢ோரீரீன ச ஢்பத்தாலும்
வலேந ச ஢லத்தாலும்
ந ச஢: ஢டாகான்.

இதுகுவதி தஸி஢்ஸு ராக்ஷசே வேதவத்ய | ஢ா ஢ீவ஢ிதி சா கந்யா தஸுவாச ஢ிசாசர஢் ||

தஸி஢் “அந்த
ராக்ஷசே அரக்கன்
இதி இப்படி
அஶ்ரீரீரீரீ சா ஶாலலிய஢ொழுது
வேதவதீ என்ற
கந்யா கன்னிகை
த்வ் அந்த

஢ிசாசரீரீ அரக்கரைரீரீரீரீரீ
அத இ஢்஢ொழுது
சு இவ்வியதத்தில்
எவ் இப்படி
஢ா ‘உளராதே
஢ா ஢ிதற்றதே’
இதி என்று
அவாச எசுரீரீரீரீ

ரீரீரீரீரீரீரீரீரீ விஷ்ணு சர்வலோகந஢்ஸுரீரீரீரீ | த்வதே ராக்ஷசேந்ரீரீரீ: கோஶ்வ஢்யேத ஶு஢ி஢ாந் ||

ராக்ஷசேந்ரீ “ராக்ஷஸ஢ன்ன்!
த்வதே உன்஢ொருவரீரீரீரீ
தவிர
ஶு஢ி஢ாந் விவேகவிசுஷ்டன்
அந்ய: வேறு
க: எனன்
ரீரீரீரீரீரீரீரீரீ த்ரீரீரீரீரீரீரீரீரீ

சர்வலோகந஢்ஸுரீரீரீ { எல்லா உலகத்தாரா
லும் ந஢ஸ்கரீரீரீரீ
஢ட்டவரு஢ாந
விஷ்ணு ஶ்ரீ ஢ஹாவிஷ்ணு
வை஢்பற்றி
அவ஢ந்யேத அவ஢ரீயாதையாய்
஢ேசுவான்? }

एवमुक्तस्तया तत्र वेदवत्या निशाचरः । मूर्धजेषु तदा कन्यां कराग्रेण परामृशत् ॥२७॥

| | | | |
|----------|----------------|-----------|--------------|
| तया | “அந்த | निशाचरः | அரக்கன் |
| वेदवत्या | வேதவதியால் | तदा | அப்பொழுது |
| तत्र | அவ்விஷயத்தில் | मूर्धजेषु | கூந்தலில் |
| एवं | இப்படி | कन्यां | கன்னிகையை |
| उक्तः | சொல்லியதற்குச் | कराग्रेण | உள்ளங்கையால் |
| | செவியாய்த்த | परामृशत् | தொட்டான். |

ततो वेदवती क्रुद्धा केशान्हस्तेन साऽच्छिनत् ।

असिभूत्वा करस्तस्याः केशांश्छिन्नांस्तदाऽकरोत्

॥ २८ ॥

| | | | |
|----------|-------------|----------|------------------|
| सा | “அந்த | तदा | அப்பொழுது |
| वेदवती | வேதவதி | तस्याः | அவளுடைய |
| ततः | அதனால் | करः | கை |
| क्रुद्धा | கோபங்கொண்டவ | असिः | கத்தியாக |
| | ளாகி | भूत्वा | ஆகி |
| हस्तेन | கையினால் | केशान् | கூந்தலை |
| केशान् | கூந்தலை | छिन्नान् | சேதிக்கப்பட்டதாக |
| अच्छिनत् | அறுத்தான். | अकरोत् | செய்தது. |

सा ज्वलन्तीव रोषेण दहन्तीव निशाचरम् ।

उवाचार्थि समाधाय मरणाय कृतत्वं ॥

| | | | |
|---------|------------------|------------|---------------------|
| सा | “அவர் | उवलन्ती इव | அக்கினியினுலே எரிக் |
| मरणाय | உடலை ஒழிக்க | | கப்பட்டவள்போலாகி |
| कृतत्वं | அதேசமயத்தில் து | निशाचरं | அரக்கனைப்பார் த்து |
| अर्थिं | தியை [ணிந்தவளாகி | दहन्ती इव | எரிப்பவள்போலாகி |
| समाधाय | வளர் த்துவிட்டு | उवाच | இதைச்சொல்லிய |
| रोषेण | ரோஷத்தால் | | ருளினான்: |

धर्षितायास्त्वयाऽनार्य न मे जीवितमिष्यते । रक्षस्तस्मात्प्रवेक्ष्यामि पश्यतस्ते हुताशनम् ॥

| | | | |
|------------|--------------------|---------------|----------------------|
| अनार्यं | “அடர் பாதக! | न इष्यते | விரும்பப்படவில்லை. |
| रक्षः | அரக்க! | तस्मात् | ஆதலால் |
| त्वया | உன்னால் | ते | உனது |
| धर्षितायाः | நீண்டப்பட்ட | पश्यतः | கண்முன்னேயே |
| मे | எனது | हुताशनं | அக்கினியில் |
| जादितं | உடலை வைத்திருத்தல் | प्रवेक्ष्यामि | புகுந்து விடுகிறேன். |

यस्मात्तु धर्षिता चाहं त्वया पापात्मना वने ।

तस्मात्तव वधार्थं हि समुत्पत्स्ये ह्यहं पुनः ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------|--------------|-----------------|
| ॐ हं | “நான் | तव | உனது |
| पापात्मना | பாபாத்தமாவாகிய | वधार्थं च | மரணத்திற்காகவே |
| त्वया | உன்னால் | अहं हि | நானே |
| वने | காட்டில் | पुनः तु | இன்னொரு தரமும் |
| धर्षिता | கைநீண்டப்பட்டேன். | समुत्पत्स्ये | ஆவிர்ப்பவிக்கப் |
| यस्मात् तस्मात् | அக்காரணத்தால் | | போகிறேன். |

न हि शक्यं स्त्रिया हन्तुं पुरुषः पापनिश्चयः । शपे त्वयि मयोऽसृष्टे तपसश्च व्ययो भवेत् ॥

स्त्रिया “பெண்ணாகிய
மயா என்னால்
त्वयि உன்போரில்
शपे சாபம்
उत्सृष्टे च இடப்பட்டதேயாகில்
तपसः தவப்பெருமைக்கு

व्ययः குறைவு
भवेत् ஏற்படும்.
पापनिश्चयः பாபத்தொழிலே
पुरीयம்
पुरुषः हि புருஷனாகியிருந்தும்
हन्तुं கொன்றுவிட
शक्यं न வித்யில்லை.

यदि त्वस्ति मया किञ्चित्कृतं दत्तं हुतं तथा । तस्मात्त्रयोनिजा साध्वी भवेयं धर्मिणः सुता ॥

तस्मान् “ஆனதால்
मया என்னால்
कृतं तु செய்யப்பட்டபுண்
யங்களின் பலனும்
दत्तं तु கொடுக்கப்பட்டதா
னங்களின் பலனும்
हुतं तथा { செய்யப்பட்டதெய்வ
சமர்ப்பணங்களின்
பலனும்

किञ्चित् கொஞ்சமேனும்
अस्ति यदि இருக்கிறதென்றால்
अयोनिजा { அயோனியையாய்,
(கர்ப்பவழி உண்டாகாதவளாய்)
धर्मिणः ஒரு தருமாத்மாவின்
साध्वी அருமை
सुता பெண்ணாக
भवेयम् விளங்குவேன்.

एवमुक्त्वा प्रविष्टा सा ज्वलितं जातवेदसम् । पपात च दिवो दिव्या पुण्यवृष्टिः समन्ततः ॥

एवं “இவ்வண்ணம்
उक्त्वा சொல்லிவிட்டு
सा அவள்
ज्वलितं ஒங்கி எரிகின்ற
जातवेदसं அக்கணியில்

प्रविष्टा குதித்து விட்டாள்.
दिवः ஆகாசத்தினின்று
दिव्या திவ்யமான
पुण्यवृष्टिः च புஷ்பவருஷமும்
समन्ततः நாற்புறமும்
पपात வருஷித்தது.

सैषा जनकराजस्य प्रसूता तनया प्रभो । त्व भार्या महाबाहो विष्णुस्त्वं हि सनातनः ॥

महाबाहो “மஹாபாஹுவே!
प्रभो பிரபுவே!
सा அந்த
एषा இவள்
जनकराजस्य ஜனகராஜனுக்கு
तनया பெண்ணாக

प्रसूता அவதரித்தவள்.
तव தேவரீருக்கு
भार्या இல்லாள்.
एवं हि தேவரீர்தான்
सनातनः அனாதியாகிய
विष्णुः விஷ்ணுபகவான்.

पूर्वं क्रोधाहितः शत्रुर्याससौ निहतस्तथा । उपाश्रयित्वा शैलाभस्तव वीर्यमामनुषम् ॥

पूर्वं “பூர்வத்தில்
यया எவளால்
क्रोधाहितः { கோபித்துமட்டும்
விட்டு விடப்பட்டா
னே, அவளாலயே
असौ அந்த இந்த
शैलामः மலைபோன்ற

शत्रुः சத்ரு
तया சொன்னபடியே
तव தேவரீரது
अमानुषं அமரலுஷ்யமான
वीर्यं வீர்யத்தை
उपाश्रयित्वा அடைந்து
निहतः கொல்லப்பட்டான்.

एवमेवा महाभागा मत्येषूत्पत्यते पुनः । क्षेत्रे हलमुखोत्कृष्टे वैद्यामशिशिखोपमा ॥३७॥

| | | | |
|---------|-----------------|---------------|-------------------|
| புன: | “அன்றியும் | हलमुखोःकृष्टे | கலப்பைபுதுறியால் |
| एवं | இப்படியாய் | | கிளப்பப்பட்ட |
| एषा | இந்த | क्षेत्रे | மண்பூமியில் |
| महाभागा | மஹா பாக்கியவதீ | अशिशिखोपमा | அக்கினிகைகைபோன் |
| मत्येषु | மதுஷ்யலோகத்தில் | | றவளர்ப் |
| वेद्यां | யாகவேதியில் | उत्पत्यते | ஆவிர்ப்பவித்தார். |

एषा वेदवती नाम पूर्वमासीत्कृते युगे । त्रेतायुगमनुप्राप्य वधार्थं तस्य रक्षसः ॥ ३८ ॥
उत्पन्ना मैथिलकुले जनकस्य महात्मनः । सीतोत्पन्ना तु सीतेति मानुषैः पुनरुच्यते ॥

| | | | |
|------------|------------------|-------------|--------------------|
| एषा | “ இவள் | महात्मनः | மஹாத்மாவான |
| पूर्व | முன் | जनकस्य | ஜனகருடைய |
| कृते | கருத | मैथिलकुले | மைதில் குலத்தில் |
| युगे | யுகத்தில் | उत्पन्ना | அவதரித்தார். |
| वेदवती | வேதவதீ | सीतोत्पन्ना | { கலப்பை படையினின் |
| नाम | என்ற பெயர்கொண்டு | तु | று தோன்றியவளாய் |
| आसीत् | விளங்கினாள். | सीता | ஆவிர்ப்பவித்தார் |
| वेतायुगं | திரேதாயுகத்தை | इति | என்கிறபடியால் |
| अनुप्राप्य | அடைந்து | मानुषैः | “ சிதை ” |
| तस्य | அந்த | पुनः | என்று |
| रक्षसः | அரக்கனுடைய | उच्यते | மானிடர்களால் |
| वधार्थं | கொலைக்காக | | இன்னமும் |
| | | | வழங்கப்படுகிறாள். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे सप्तदशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 21395

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 671



अष्टादशः सर्गः—पतिनेट्टாவது ஸர்க்கம். ॥ १८ ॥

मरुत्तविजयः—மருத்தமஹாராஜனை ஜயிப்பது.

प्रविष्टायां हुताशं तु वेदवत्यां स रावणः । पुष्पकं तु समारुह्य परिचक्राम मेदिनीम् ॥१॥

| | | | |
|-----------------|------------------|------------|---------------------|
| वेदवत्यां | “வேதவதீ | पुष्पकं | புஷ்பகவிமானத்தில் |
| हुताशं | அக்கினியில் | समारुह्य | ஏறிக்கொண்டு |
| प्रविष्टायां तु | பிரவேசித்த பிறகு | मेदिनीं तु | பூமி முழுமையும் |
| सः | அந்த | परिचक्राम | சுற்றித்திரிந்தான். |
| रावणः | இராவணன் | | |

ततो मरुत्तं नृपतिं यजन्तं सह दैवतैः । उशीरबीजमासाद्य ददर्श स तु रावणः ॥ २ ॥

| | | | |
|----------|--|---------|----------------------------------|
| सः | “अந்த | नृपतिं | मன்னனும் |
| रावणः | இராவணன் | दैवतैः | பிரத்யக்ஷதேவர் |
| उशीरबीजं | { முன்காலத்தில் உசீர பீஜமென்று விளங்கி யதும் (இக்காலத்தில் ‘கந்தாஹர்’ என்று விளங்குகிறதான) சேஷத்திரத்திற்கு | सह | இருந்துகொண்டு |
| | | यजन्तं | யாகம்செய்துகொண் முருந்தவருமான |
| | | मरुत्तं | மருத்தரென்பவரை |
| | | तु | அப்பொழுது |
| आसाद्य | சென்று | ददर्श | கண்டான். |
| वतः | அவ்விடத்தில் | | |

संवतो नाम ब्रह्मर्षिः साक्षाद्भ्राता बृहस्पतेः । याजयामास धर्मज्ञः सैवदेवगणैर्वृतः ॥ ३ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------|-------------|--------------------------------|
| सवैः देवाणैः | “சர்வதேவகணங்களா லும் | भ्राता | பிராதாவுமான |
| वृतः | சூழப்பட்டவராயும் | संवर्तः | சம்வர்த்தர் |
| धर्मज्ञः | தர்மக்ஞரும் | नाम | என்கிற |
| बृहस्पतेः | பிரஹஸ்பதிக்கு | ब्रह्मर्षिः | பிரம்மரிஷி |
| साक्षात् | ஸாக்ஷாத் | याजयामास | யாகத்தை செய்வித் துவந்தனர். |

दृष्ट्वा देवास्तु तद्रक्षो वरदानेन दुर्जयम् । तिर्यग्योनिं समाविष्टास्तस्य दर्शनभीरवः ॥४॥

| | | | |
|----------|-----------------------|--------------|--|
| देवाः | “தேவர்கள் | दर्शनभीरवः | தர்சனத்தில் பயர் தவர்களாகி |
| तत् | அந்த | तु | இப்பொழுது |
| रक्षः | அரக்களை | तिर्यग्योनिं | { விலங்குகள், பறவை கள் இவைகளின் உடம்பினுள் |
| वरदानेन | வரங்கள் பெற்றதால். | | |
| दुर्जयं | அஜேயமாகிறவனென் பதை | समाविष्टाः | மறைந்துகொண் டார்கள். |
| दृष्ट्वा | உணர்ந்து | | |
| तस्य | அவனுடைய | | |

इन्द्रो मयूरः संवृत्तो धर्मराजस्तु वायसः । कृकलासो धनाध्यक्षो हंसश्च वरुणोऽभवत् ॥

| | | | |
|----------|----------------|------------|-------------|
| इन्द्रः | “இந்திரன் | धनाध्यक्षः | சுபேரன் |
| मयूरः | பயிலராய் | कृकलासः | ஒணைகையும், |
| संवृत्तः | ஆய்விட்டான். | वरुणः | வருணன் |
| धर्मराजः | தருமராஜன் | हंसः च | ஹம்ஸமாகவும் |
| वायसः तु | காக்கையாகவும், | अभवत् | ஆயினர். |

अन्येष्वपि गतेष्वेवं देवेष्वरिनिषूदन । रावणः प्राविशयज्ञं सारमेय इवाशुचिः ॥ ६ ॥

| | | | |
|------------|----------------|-----------|---------------------------------------|
| अरिनिषूदन | “சத்ருஸம்ஹாரக! | यज्ञं | யாகசாலையில் |
| अन्येषु | மற்ற | अशुचिः | தீட்டாக்கும்; (அப வித்திரமாக்கும்) |
| देवेषु अपि | தேவர்களும் | सारमेयः | நாய் |
| एवं | இப்படி | इव | எவ்வண்ணமோ |
| गतेषु | ஒளிர் துகொண் | | அவ்வண்ணமே |
| | டவளவில் | प्राविशत् | வந்துசேர்ந்தான். |
| रावणः | இராவணன் | | |

तं च राजा समासाद्य रावणो राक्षसाधिपः । प्राह युद्धं प्रयच्छेति निर्जितोऽस्मीति वा वद ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|----------|----------------------------|
| राक्षसाधिपः | “இராக்கூஸாதிபநாகிய | वा | அல்லது |
| रावणः | இராவண | निर्जितः | தோல்வியடைந்தவ |
| राजा | மன்னன் | अस्मि | இருக்கிறேன்; [நாக என்று |
| तं च | அவரையே | इति | சொல்லிவிடு’ |
| समासाद्य | அடைந்து | वद | என்று |
| युद्धं | ‘யுத்தம்செய்ய | इति | அதட்டிப் பேசினான். |
| प्रयच्छ | வா; | प्राह | |

ततो मरुतो नृपतिः को भवानित्युवाच तम् । अपहासं ततो मुक्त्वा रावणो वाक्यमब्रवीत् ॥

| | | | |
|--------|----------------|-----------------|--------------------------------|
| ततः | “அப்பொழுது | उवाच | கேட்டார். |
| मरुतः | மருத்த | रावणः | இராவணன் |
| नृपतिः | மன்னர் | ततः | அதனால் |
| तं | அவனைப்பார்ந்து | अपहासं मुक्त्वा | அசட்டுச்சிரிப்பைச் சிரித்து |
| भवान् | ‘நீ | वाच | இந்த மொழியை |
| कः | யார்?’ | अब्रवीत् | மொழிந்தான்; |
| इति | என்று | | |

अकुतूहलभावेन प्रीतोऽस्मि तव पार्थिव । धनदस्यानुजं यो मां नावगच्छसि रावणम् ॥

| | | | |
|-------------------|---|------------|-------------------------------------|
| पार्थिव | “இராஜனே! | अस्मि | ஆகிறேன். |
| तव | உமது | यः | எந்த இந்த நீ |
| अकुतूहल- भावेन | தெரிந்துக்கொண்டி- ருக்கவேண்டியவை களைத் தெரிந்துக் கொள்ளாமலிருக் கும் அநானத்தினால் திருப்தியடைந்த | मां | என்னை |
| | வனாக | धनदस्य | குபேரனது |
| | | अनुजं | தம்பியாகிய |
| प्रीतः | | रावणं | இராவணனென்பதை |
| | | न अवगच्छसि | தெரிந்துக் கொள் ளாமலிருக்கிறாய். |

त्रिषु लोकेषु कोऽन्योऽस्ति यो न जानाति मे बलम् ।
भ्रातरं येन निर्जित्य विमानमिदमाहृतम्

॥ १० ॥

विषु लोकेषु मे बलं न जानाति यः अन्यः कः
“ மூன்று உலகங்களிலும் எனது வலிமையை உள்ளபடி யறியாதி எந்த [ருக்கிறவன், வேறு எவன்

अस्ति येन भ्रातरं निर्जित्य इदं विमानं आहृतम्
இருக்கிறான்? இந்த அத்தலைத் தமயனை ஜயித்து இந்த புஷ்பகவிமானம் பலாக்காரராய் கொண்டுவரப்பட்டது.

ततो मरुतः स नृपस्तं रावगमथाब्रवीत्

॥ ११ ॥

ततः सः मरुतः नृपः
அதன்மேல் அந்த மருத்த மன்னர்

तं रागं अथ अब्रवीत्
அந்த இராவணனைப் இப்படி [பார்த்து பதினூரைத்தார்:

धन्यः खलु भवान्येन ज्येष्ठो भ्राता रणे जितः ।
न त्वया सदृशः श्लाघ्यस्त्रिषु लोकेषु विद्यते

॥ १२ ॥

येन ज्येष्ठः भ्राता रणे जितः भवान् खलु धन्यः
“ எந்த உன்னால் ஜேஷ்ட ஸுஹோதரர் போரில் ஜயிக்கப்பட்டாரோ; அவனாகிய நீ ஒருவனே மஹா புண்ணியசாலி.

श्लाघ्यः त्वया सदृशः विषु लोकेषु न विद्यते
ச்லாகித்துக்கொண்டாடவேண்டியவன். உன்னோடு சமானன் மூன்று லோகங்களிலும் கிடையாது.

कं त्वं प्राक्खलं धर्मं चरित्वा लब्धवान्वरम् । श्रुतपूर्वं हि न मया भाषसे यादृशं स्वयम् ॥

प्राक् खलं कं धर्मं चरित्वा वरं लब्धवान्
“ முன்பு நீ எதோ ஒரு தவத்தை புரிந்து வரத்தை அடைந்திருக்கிறாய்; என்பது

मया न हि यादृशं केवलं स्वयं भाषसे
என்னால் இதுவரையில் கேட்கப்படாதிருக்கிற அந்த இந்த தவிரப் பிறரெவரும் செய்யாததை நீயே

श्रुतपूर्वं { முன்னமேயே என்னால் கேட்கப்பட்டிருந்தது.

{ இப்பொழுது சொல்லித் தெரியப்படுத்தி விட்டாய்,

तिष्ठेदानीं न मे जीवन्प्रतियास्यसि दुर्मते । अद्य त्वां निशितैर्बाणैः प्रेषयामि यमक्षयम् ॥

துமீதே “அடே மூட!
 ஹ்வானீ இப்பொழுது
 திष्ठ இங்கேயே நில்.
 ஜீவந் உயிருடனிருப்
 பவனாய்
 ந ப்ரத்யாஸ்யஸி நீ தீரும்பிப்போக
 மாட்டாய்.

மே எனது
 நிஸிதீ: கூரிய
 வாகீ: பாணங்களால்
 த்வா உன்னை
 யமக்ஷயம் யமலோகத்திற்கு
 அடிய இப்பொழுதே
 ப்ரேயயாமி அனுப்பி விடுகிறேன்.

ततः शरासनं गृह्य सायकान्श्च नराधिपः । रणाय निर्ययौ क्रुद्धः संवतो भार्गमावृणोत् ॥

நராதிப: “மன்னர்
 தத: உடனேயே
 ஶராஸந் வில்லையும்
 சாயகாந் பாணங்களையும்
 गृह्य கையிலெடுத்துக்
 கொண்டே

क्रुद्ध: கோபங்கொண்டவ
 रणाय புத்தத்திற்கு [ராக
 निर्ययौ கிளம்பினார்.
 संवत: சம்வர்த்தர்
 भार्गं போரும்வழியில்
 आवृणोत् எதிர்த்துநின்று
 தடுத்தார்.

सोऽब्रतीत्स्नेहसंयुक्तं मरुचं तं महानृपिः । श्रोतव्यं यदि मद्वाक्यं संपहारो न ते क्षमः ॥

ஸ: “அந்த
 மஹாந் ஶ்ரபி: மஹரீஷி
 த் அந்த
 மரூத் மருத்தரைப் பார்த்து
 அப்ரவீத் இப்படிச்சொல்லி
 ஶ்நேஹஸ்யுக் 'விச்வாஸத்தோடு
 கூடிய

मद्वाक्यं எனதுசொல்லை
 श्रोतव्यं கேட்டு அதுபடி நடக்
 கிறதாய்
 यदि இருக்கும்பக்கத்தில்
 ते உனக்கு
 संपहार: போர்புரிதல்
 क्षम: இப்போதேற்றது
 न அன்று.

माहेश्वरमिदं सत्रमलपासं कुलं दहेत्

ஹ் “இந்த
 மாஹேஷர் மஹேஷ்வர
 சத்ரம் யாகம்
 பாசம் இதுவரைக்கும்

॥ १७ ॥

अलं போதுமென்று இடை
 யில் நிருத்தப்பட்டால்
 कुलं வம்சத்தை
 दहेत् அழிக்கும்.

दीक्षितस्य कुतो युद्धं क्रोधित्वं दीक्षिते कुतः । संशयश्च जये नित्यं राक्षसश्च सुदुर्जयः ॥

தீக்ஷிதஸ்ய “யாகதீக்ஷைகொண்
 டவனுக்கு
 யுத்தம் போர்புரிதல்
 குத: கூடுமோ?
 தீக்ஷிதே யாகதீக்ஷைகொண்ட
 வனிடத்தில்
 क्रोधित्वं கோபங்கொள்வது

कुत: ஆகுமோ?
 जये வெற்றிபெறும் விஷ
 யத்தில்
 नित्यं எப்பொழுதும்
 संशय: च ஸந்தேஹமே.
 च அன்றியும்
 राक्षस: அரக்கன்
 सुदुर्जय: ஐயிக்கக்கூடாதவன்.

स निवृत्तो गुरोर्वाव्यान्मरुत्तः पृथिवीपतिः । विसृज्य सशरं चापं स्वस्थो मखमुखोऽभवत् ॥

ச: “அந்த
மரூத்
பூதிவீபதி: சக்கிரவர்த்தியார்
குருவினது
வாய்த நியமனத்தால்
சசர் பாணத்துடன் கூடிய
சாப வில்லை

விரூர் விட்டுவிட்டு,
விவூத் திரும்பியவராய்
வவூத் மனம் திருப்திகொண்டவராய்
மவமூத் யாகத்தையே திரும்பி
யுமாரம்பித்தவராய்
அவவூத் இருந்துவிட்டார்.

ततस्तं निर्जितं मत्वा घोषयामास वै शुकः । रावणो जयतीत्युच्चैर्हर्षान्नादं विमुक्तवान् ॥

த: “அப்பொழுது
சூக: சுகன்
த அ்வரை
நிர்ஜிதம் தோற்கடிக்கப்பட்டவ
மவா எண்ணி [ராக
ஹாப்த குதூஹலத்தால்

உச்ச: உரக்க
ராவண: ‘ராவணர்
ஜயதி இதி வெற்றிபெற்றார்’ என்
நாட பெருங்கூச்சலை [கிற
விமூக்தவான் வை இட்டுக்கொண்டு
போய்யாமாச கொண்டாடினான்.

तान्भक्षयित्वा तत्रस्थान्महर्षीन्यज्ञमागतान् । वितृप्तो रुधिरैस्तेषां पुनः सम्प्रययौ महीम् ॥

தான் “அந்த
தலஸ்தான் அங்கே இருந்தவர்
யஜ் யாகத்திற்கு [கனும்
ஆகதான் வந்திருந்தவர்களு
மஹர்ஷீந் மஹரிஷிகளை [மான
பக்சயிதவா புகித்து

விதூப்தோ ருதிரைஸ்தேபா் புன: சம்ப்ரயயோ மஹீம் ॥
தேபா் ருதிரை: அவர்களின் உதிரங்
புன: இன்னமும் [கனால்
விதூப்த: திருப்தியடையாதவ
மஹீ பூமியில் [னாய்
சம்ப்ரயயோ எங்கும் சுற்றித்திரிந்
தான்.

रावणे तु गते देवाः सेन्द्राश्चैव दिवोकसः । ततः स्वां योनिमासाद्य तानि सस्त्वानि चाब्रुवन् ॥

ராவணே “இராவணன்
கதே து போய்விடவே
சேந்திர: இந்திரனுள்ளிட்ட
தேவா: திரு
திரவோகச: ஸு தேவர்களும்
ஸ்வா அவரவர்

யோநி ச உருவத்தையும்
ஆசாடிய அடைந்து
த: அதன்மேல்
தானி அந்த
சவ்வானி ச சிவன்களைப்பார்த்து
அபூவந் இப்படிச் சொல்லியரு
ளினார்கள்:

हर्षात्तदाऽब्रवीदिन्द्रो मयूरं नीलवर्हिणम् । प्रीतोऽस्मि तव धर्मज्ञ उपकाराद्विहङ्गम् ॥२३॥

த: “அப்பொழுது
ஹ்ரு: இந்திரன்
நீலவஹிண் கருகிறமான தோகை
யையுடைய
மயூர் மயிலைப்பார்த்து
ஹாப்த ஸந்தோஷத்தினால்
அவ்ரவீத் இப்படிச் சொல்லி
யருளினான்:

பர்மஜ ‘நருமத்தெரிந்த
விஹ்ரும பறவையே,
தவ உனது
உபகாரத் பேருதவியால்
பிரீத: திருப்தியடைந்த
வகை
அஸிம் இருக்கிறேன்.

मम नेत्रसहस्रं तु यच्चद्दहं भविष्यति । वर्षमाणे मयि मुदं प्राप्स्यसे प्रीतिलक्षणाम् ॥

एवमिन्द्रो वरं प्रादान्मयूरस्य सुरेश्वरः

॥ २४ ॥

மம "எனது
நெடசஹ்ரம் கண்களினனேகம்
யத் து அது, எதுவோ
அதெல்லாமுமே
த்வஹ்ஹே உன் தோகையில்
ஹவிய்யதி விளங்கட்டும்.
மயி நான்
வஶ்மாணே மழை பொழிகையில்

பிரீதிக்கடையாளமாய்
ஆனந்தத்தை
பெற்று விளங்குவாய்.
தேவராஜனை
இந்திரன்
மயிலுக்கு
வாத்தை
இப்படி
தந்தருளினான்.

नीलाः किल पुरा बर्हा मयूराणां नराधिप । सुराधिपाद्वरं प्राप्य गताः सर्वे विचित्रताम् ॥

नराधिप "புருஷோத்தம!
புரா முன்காலத்தில்
மயூராणां மயில்களின்
बर्हाः தோகைகள்
सर्वे எல்லாமும்
नीलाः கருகிறமுடையவைக
ளாக இருந்தன.

சுராधिபாத் தேவராஜனிடமிருந்து
वरं வரத்தை
प्राप्य அடைந்து
किल அக்காரணத்தால்
विचित्रतां பார்க்க அழகுற்ற
தாய்
गताः ஆயின.

धर्मराजोऽब्रवीद्राम प्राग्वंशे वायसं स्थितम् । पक्षिस्तवासि सुप्रीतः प्रीतस्य वचनं शृणु ॥

राम "ஸ்ரீராம!
धर्मराजः தருமராஜர்
प्राग्वंशे எதிரில் ஒரு மூங்கிலில்
स्थितं தங்கியிருந்த
वायसं காக்கையைப்பார்க்கு
अब्रवीत् இப்படிச் சொல்லியரு
ளிணர்.
पक्षिन् 'பறவையே,

तव உன்மீது
सुप्रीतः மிகத் திருப்திகொண்
Lவகை
अरिम இருக்கிறேன்.
प्रीतस्य ப்ரீதிகொண்டிருக்கிற
என்னுடைய
वचनं ஆசீர்வாதத்தை
शृणु கவனமாய்க் கேள்.

यथाऽन्यैर्विविधै रोगैः पीड्यन्ते प्राणिनो मया । ते न ते प्रभविष्यन्ति मयि प्रीते न संशयः ॥

यथा "என்னவெனில்
प्राणिनः சீவன்கள் எல்லாமும்
मया என்னால்
अन्यैः வெவ்வேறான
विविधैः சித்திரவிசித்திரங்
रोगैः நோய்களால் [களான
पीड्यन्ते பீடிக்கப்படுகின்றன.

मयि நான்
प्रीते ப்ரீதிகொண்டிருக்கிற
காரணத்தால்
ते அவைகள்
ते உனக்கு
न प्रभविष्यन्ति உண்டாகாது.
न संशयः இதற்கையமில்லை.

मृत्युतस्ते भयं नास्ति वरानमम विहङ्गम । यावत्त्वां न वधिष्यन्ति नरास्तावद्भविष्यसि ॥

| | | | |
|----------|---------------|--------------|--------------------|
| विहङ्गम | “பறவையே ! | यावत् | எவ்வளவுகாலம் |
| मम | எனது | नराः | மனிதர்கள் |
| वरात् | வரத்தினால் | त्वां | உன்னை |
| ते | உனக்கு | न वधिष्यन्ति | கொல்லாமலிருக்கின்ற |
| मृत्युतः | யமனிடமிருந்து | | றார்களோ |
| भयं | பயம் | तावत् | அவ்வளவுகாலம் |
| न अस्ति | இல்லை. | भविष्यसि | உயிருடன் வாழ்வாய். |

एते मद्दिषयस्या वै मानवाः क्षुद्भयार्दिताः । त्वयि भुक्ते तु तृप्तास्ते भविष्यन्ति सवान्धवाः ॥

| | | | |
|---------------------|---|------------|---|
| एते | “இந்த | भुक्ते वै | புகிப்பாயானால் |
| मद्दिषयस्याः | என்றோடுவா சிகளான | ते | அவர்கள் |
| मानवाः | மானிடர்கள் | सवान्धवाः | பந்துக்களுடன் |
| क्षुद्भयार्दिताः तु | { பசியினால் தன்பழுற் று தவிக்கிறவர்களா யிருக்கையில் | तृप्ताः | கூடினவர்களாய் திருப்தியடைந்தவர் களாய் |
| त्वयि | நீ | भविष्यन्ति | ஆவார்கள். |

वरुणस्त्वब्रवीद्वंसं गङ्गातोयविहारिणम् । श्रूयतां प्रीतिसंयुक्तं वचः पत्ररथेश्वर ॥ ३० ॥

| | | | |
|--|--|----------------|-------------------------------|
| वरुणः | “வருணபகவான் | अब्रवीत् | சொல்லியருளினார் : |
| गङ्गातोयविहारिणं | { கங்காதீர் த்தகத்தில் விஹரித்துக்கொண் டிருந்த | पत्ररथेश्वर | ‘பறவைகளில் சிறந்த தே, |
| हंसं | ஹம்ஸத்தைப் | प्रीतिसंयुक्तं | அனுசூலமாயிருக்கிற |
| तु | பார்த்து இப்பொழுது இப்படி | वचः | ஆக்கினையானது |
| वर्णो मनोहरः सौम्य चन्द्रमण्डलसन्निभः । भविष्यति तवोदग्रः शुद्धफेनसमप्रभः ॥ ३१ ॥ | | श्रूयताम् | கவனமாய்க் கேட்கப் பட்டும். |

वर्णो मनोहरः सौम्य चन्द्रमण्डलसन्निभः । भविष्यति तवोदग्रः शुद्धफेनसमप्रभः ॥ ३१ ॥

| | | | |
|--------------------|-------------------------------|-----------|---|
| सौम्य | “குணவானே ! | शुद्धफेन- | நீர்மலமான வெண் |
| तव | உனது | समप्रभः | மைகிறமுடைய நீரின் துரைபோன்ற |
| वर्णः | உருவம் | मनोहरः | காந்தியுடையதாயும் |
| चन्द्रमण्डलसन्निभः | சந்திரமண்டலத்தை ஒத்ததாயும் | उदग्रः | மனோஹரமாயும் |
| | | भविष्यति | உனக்குமட்டுமுரிய விளங்கட்டும். [தாயும் |

मच्छरीरं समासाद्य कान्तो नित्यं भविष्यसि । प्राप्यसे चातुलं प्रीतिमेतन्मे प्रीतिलक्षणम् ॥

| | | | |
|----------|--|---------------|----------------------|
| मच्छरीरं | “ பஞ்சபூதங்களில் என்னால் ஏற்படுத்த தப்பட்டதாகிய (அ தாவது ஜலத்தை) எப்பொழுதுமே | प्रीतिं | மனச்சந்திஷ்டியை |
| नित्यं | அடைந்து | प्राप्यसे | அடைவாய். |
| समासाद्य | அடைந்து | कान्तः | மிக அழகுவாய்ந்த |
| अतुलं | ஒப்புயர்வில்லாத | भविष्यसि | விளங்குவாய். [தாயும் |
| | | एतत् च | இதுவே |
| | | मे | எனது |
| | | प्रीतिलक्षणम् | அன்பிற்கடையாளம்.” |

हंसानां हि पुरा राम नीलवर्णः सपाण्डुरः । पक्षा नीलाग्रसंवीताः क्रोडाः शष्पाग्रनिर्मलाः॥

| | | | |
|------------|---------------|------------------|---|
| ராம | “ஸ்ரீராம! | நீலா஘்ரஸீவீதா: | கரிய துணிகளையு |
| புரா | பூர்வம் | | டையவைகள். |
| हंसानां हि | ஹம்ஸங்களுக்கோ | क्रोडा: | சிறகுகளினிடைய |
| | வெனில் | | பாகங்கள் |
| सपाण्डुरः | வெண்மை கலந்த | शष्पाग्रनिर्मला: | { உயர்ந்த சுத்தமாகிய பசும்புல்லைப் போ லிருந்தன. |
| नीलवर्णः | நீலவர்ணம். | | |
| पक्षा: | சிறகுகள் | | |

अथाब्रवीद्वैश्रवणः कृकलासं गिरौ स्थितम् । हैरण्यं सम्प्रयच्छामि वर्णं प्रीतस्तवाप्यहम् ॥

| | | | |
|----------|-----------------|--------------|----------------|
| வैश்வண: | “சூப்போர் | प्रीतः | ‘விசுவாச முடைய |
| गिरौ | மலைமீது | अहं अपि | நானும் |
| स्थितं | இருந்த | तव | உனக்கு |
| कृकलासं | ஒணைப்பார்த்து | हैरण्यं | பொன்னிற |
| अथ | இப்படி | वर्णं | நிறத்தை |
| अब्रवीत् | சொல்லியருளிணர்: | संप्रयच्छामि | கொடுக்கிறேன். |

सद्रस्यं च शिरो नित्यं भविष्यति तवाज्ञयम् । एष काञ्चनको वर्णो मत्प्रीत्या ते भविष्यति ॥

| | | | |
|----------|---------------|-------------|-----------------|
| तव | “உனது | मत्प्रीत्या | எனது ப்ரீதிகாரண |
| शिरः च | முடியும் | ते | உனது [மாய் |
| नित्यं | எப்பொழுதும் | एषः | இந்த |
| अज्ञयं | மாறாத | वर्णः | ரூபம் |
| सद्रस्यं | பொன்னிற முடைய | काञ्चनको: | பொன்னிற முடைய |
| | தாய் | | தாய் |
| भविष्यति | விளங்கட்டும். | भविष्यति | விளங்கட்டும். |

एवं दत्त्वा वरांस्तेभ्यस्तस्मिन्प्राप्तस्ये सुराः । निवृत्ताः सह राज्ञा ते पुनः स्वभवनं गताः ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-----------|--|
| तस्मिन् | “அந்த | निवृत्ताः | { வந்தகாரியத்தைப் பூர்த்திசெய்து வைத்தவர்களாய் |
| यज्ञोत्सवे | யாக அருந்தொழிலில் | राज्ञा | |
| ते | அந்த | सह | |
| सुराः | தேவர்கள் | स्वभवनं | அவரவாிருப்பிடத் |
| तेभ्यः | அவைகளுக்கு | | திற்கு |
| एवं | முன்கண்டவண்ண | पुनः | மறுபடியும் |
| | மாய் | गताः | வந்துசேர்ந்தார்கள். |
| वरान् | வரங்களை | | |
| दत्त्वा | தந்தருளி, | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे अष्टादशः सर्गः ॥



एकोर्विंशः सर्गः—பத்தொன்பதாவது ஸர்க்கம். || १९ ||

अनरण्यशापः—அனரண்யன் சபித்தல்.

अथ जित्वा मरुत्तं स प्रययौ राक्षसाधिपः । नगराणि नरेन्द्राणां युद्धकाङ्क्षी दशाननः ॥

| | | | |
|-------------|------------------|---------------|-----------------------|
| ச: | “ அந்த | अथ | பின்னும் |
| राक्षसाधिपः | ராக்காஸமன்னனாகிய | युद्धकाङ्क्षी | போர் புரிய விரும்புந் |
| दशाननः | தசானன். | नरेन्द्राणां | அரசர்களின் [றவனாகி |
| मरुत्तं | மருத்தரை | नगराणि | நகரங்களில் |
| जित्वा | அடக்கிவிட்டு | प्रययौ | சுற்றித் திரிந்தான். |

समासाद्य तु राजेन्द्रान्महेन्द्रवरुणोपमान् । अब्रवीद्राक्षसेन्द्रस्तु युद्धं मे दीयतामिति ॥२॥

| | | | |
|---------------------------|---|----------|----------------------------|
| राक्षसेन्द्रः | “ இராக்காஸமன்னன் | अब्रवीत् | பிரகடனை செய்தான்: |
| महेन्द्रवरुणो- पमान् } | இந்திரன், வருணன், இவர்களுக்கு நிகரான | मे तु | என்னோடே |
| राजेन्द्रान् तु | இராஜோத்தமர் | युद्धं | எதிர்த்து போர் |
| समासाद्य | கண்டு [களையே | दीयताम् | புரிதல் |
| इति | இவ்விதமாய் | | ஏற்றுக்கொள்ளப் பட்டும். |

निर्जिताः स्मेति वा ब्रूत एष मे हि मुनिश्चयः । अन्यथा कुर्वतामेवं मोक्षो नैवोपपद्यते ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------------|------------|----------------------|
| वा | “ அல்லது | मुनिश्चयः | உறுதியான விருதம். |
| निर्जिताः स | தோல்வியடைந்தவர் களாக ஆனோம். | एष | இதற்கு |
| इति | என்று | अन्यथा | விரோதமாக |
| ब्रूत | சொல்லி விடுங்கள். | कुर्वतां | நடப்பவர்களுக்கு |
| एषः हि | இதுதான் | मोक्षः | பிழைத்திருக்கும் வழி |
| मे | எனது | एवं | ஒன்றும் |
| | | न उपपद्यते | இல்லை. |

ततस्त्वभीरवः प्राज्ञाः पार्थिवा धर्मनिश्चयाः । मन्त्रयित्वा ततोऽन्योन्यं राजानः सुमहाबलाः॥

निर्जिताः स्मेत्यभाषन्त ज्ञात्वा वरबलं रिपोः ॥ ४ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------|--------------|--------------------------------|
| राजानः | “ அரசர்களும் | अन्योन्यं | ஒருவரை ஒருவர் |
| पार्थिवाः तु | சக்கிரவர்த்திகளும் | ततः | அது விஷயமாய் |
| धर्मनिश्चयाः | தருமத்தில் ஆஸக்தி புள்ள | मन्त्रयित्वा | கலந்து ஆலோசனை |
| प्राज्ञाः | மஹா புத்திமான் களாகவும் | रिपोः | சத்ருவின் [செய்து, |
| सुमहाबलाः | பெயர்பெற்ற பல வான்களாகவும் | वरबलं | வரங்களின் பயனை |
| अभीरवः | அச்சமற்றவர் களாகவும் | ज्ञात्वा | மனதில்கொண்டு |
| ततः | இருந்தும் | निर्जिताः स | ‘தோல்வியடைந்த வர்களாக ஆனோம் |
| | | इति | என்று |
| | | अभाषन्त | சொல்லிவிட்டார்கள். |

दुष्यन्तः सुरथो गार्धिर्गयो राजा पुरूरवाः । एते सर्वेऽब्रुवन्सतात निर्जिताः स्मेति पार्थिवाः ॥

தாத "அப்ப! |
 पुरूरवाः புரூரவ
 राजा மன்னர்,
 एते இந்த
 दुष्यन्तः துஷ்யந்தன்,
 सुरथः சுரதன்,
 गाधिः காதி,

रायः கயன் என்ற
 पार्थिवाः மன்னவர்கள்
 सर्वे எல்லோரும்
 निर्जिताः स 'தேதல்வியடைந்தவர்
 களாக ஆனோம்'.
 इति என்று
 अब्रुवन् சொல்லிவிட்டார்கள்.

अथायोध्यां समासाद्य रावणो राक्षसाधिपः । सुगुप्तामनरण्येन शक्रेणैवामरावतीम् ॥६॥
 स तं पुरुषशार्दूलं पुरन्दरसमं बले । प्राह राजानमासाद्य युद्धं देहीति रावणः ॥
 निर्जितोऽस्मीति वा ब्रूहि त्वमेवं मम शासनम् ॥ ७ ॥

अथ "அதன்பிறகு
 राक्षसाधिपः இராசுதஸமன்ன
 இசைய
 रावणः இராவணன்
 शक्रेण இந்திரனால்
 अमरावतीं அமராவதியை
 इव எப்படியோ,
 அப்படியே
 अनरण्येन அனரண்யனால்
 सुगुप्तं நன்றாய்ப் பரிபாலனம்
 பண்ணப்பட்ட
 अयोध्यां அயோத்தியா
 நகருக்கு
 समासाद्य போய்ச் சேர்ந்தான்.
 सः அந்த
 रावणः இராவணன்
 बले பலத்தில்
 पुरन्दरसमं இந்திரனுக்கொப்
 பானவனும்

पुरुषशार्दूलं புருஷோ த் கமனு
 மாகிய
 तं அந்த
 राजानां மன்னனை
 आसाद्य அடைந்து
 इति இப்படி
 प्राह சாற்றினான் :
 त्वं 'நீ
 युद्धं देहि போர்புரிய வா ;
 वा அல்லது
 निर्जितः "தேதல்வியடைந்த
 வனாக
 अस्मि ஆய்விட்டேன்"
 इति என்று
 ब्रूहि சொல்லிவிடு.
 एवं இதுதான்
 मम எனது
 शासनम् சங்கல்பம்.

अयोध्याधिपतिस्तस्य श्रुत्वा चावमतं वचः । अनरण्यस्तु संक्रुद्धो राक्षसेन्द्रमथाब्रवीत् ॥

अयोध्याधिपतिः "அயோத்திக்கிறைவ
 अनरण्यः च अनரண்யரும் [ரான
 तस्य அவனுடைய
 अवमतं அவமதிப்பான
 वचः சொல்லை
 श्रुत्वा கேட்டடு

संकुद्धः மிக்ககோபமடைந்தவ
 ராகி
 तु அப்பொழுது
 राक्षसेन्द्रं இராசுதஸேந்திரனைப்
 अथ இப்படி [பார்த்து
 अब्रवीत् பதிலுரைத்தார்.

दीयते इन्द्रयुद्धं ते राक्षसाधिपते मया । सन्तिष्ठ क्षिप्रमायत्तो भव चैवं भवाम्यहम् ॥९॥

| | | | |
|--------------|-----------------------|----------|----------------------|
| राक्षसाधिपते | “இராக்கூஸாதிபதி | सन्तिष्ठ | இந்நேயே நில். |
| मया | என்னால் [யே! | अहं एवं | நான் இதோ |
| ते | உனக்கு | भवामि | சித்தமாயிருக்கிறேன். |
| इन्द्रयुद्धं | கைகலர்ந்து போர்ப்புரி | क्षिप्रं | விரைவில் |
| | தல் | आयत्तः | சித்தமாயிருப்பவகை |
| दीयते | கொடுக்கப்பட்டது. | भव च | நீயுமாகு.’ |

अथ पूर्वं श्रुताथेन निर्जितं सुमहद्वलम् । निष्क्रामत्तन्नरेन्द्रस्य बलं रक्षोवधोद्यतम् ॥१०॥

| | | | |
|-----------|--------------------------------|---------------|-------------------------------------|
| पूर्वं | “முன்னமேயே | नरेन्द्रस्य | புருஷோத்தமருடைய |
| श्रुताथेन | விஷயங்கள் தெரிந்தி | तत् बलं | அந்தஸைனை |
| | நந்தமையால் | अथ | அப்பொழுது |
| सुमहत् | மிகப்பெரிய | रक्षोवधोद्यतं | அரக்கனுடைய வதை யில் ஆசக்திகொண்டதாய் |
| बलं | சேனையானது | | |
| निर्जितं | தயாரித்துவைக்கப் பட்டிருந்தது. | निष्क्रामत् | வெளிப்புறப்பட்டது. |

नागानां दशसाहस्रं वाजिनां नियुतं तथा । रथानां बहुसाहस्रं पत्तीनां च नरोत्तम ॥

महीं सञ्छाद्य निष्क्रान्तं सपदातिरथं रणे

॥ ११ ॥

| | | | |
|------------|------------------|---------------|-------------------|
| नरोत्तम | “புருஷோத்தம! | बहुसाहस्रं | அனேக அயிரமும் |
| नागानां | யானைகளின் | रणे | போர்க்களத்தில் |
| दशसाहस्रं | பத்தாயிரமும், | महीं | பூமியை |
| वाजिनां | குதிரைகளின் | सपदातिरथं | காலாட்களும் இரதங் |
| नियुतं | ஒருலக்ஷமும், | सञ्छाद्य | களுமேபுடையதாக |
| तथा | அவ்வண்ணமே | निष्क्रान्तम् | இடைவெளியின்றி |
| रथानां | இரதங்களுடையவும் | | மறைத்துக்கொண்டு |
| पत्तीनां च | காலாட்களுடையவும் | | சித்தமாயின. |

ततः प्रवृत्तं सुमहद्युद्धं युद्धविशारद । अनरण्यस्य नृपते राक्षसेन्द्रस्य चाद्भुतम् ॥ १२ ॥

| | | | |
|-----------------|--------------|------------|--------------|
| युद्धविशारद | “யுத்தநிபுண! | नृपतेः च | மன்னருக்கும் |
| ततः | அப்பொழுது | सुमहत् | பெரும் |
| राक्षसेन्द्रस्य | இராக்கூஸமன்ன | युद्धं | போர் |
| | னுக்கும் | अद्भुतं | அத்புதமாக |
| अनरण्यस्य | அனரண்ய | प्रवृत्तम् | நடைபெற்றது. |

तद्रावणबलं प्राप्य बलं तस्य महीपतेः । प्राणश्यत तदा सर्वं हव्यं हुतमिवानले ॥ १३ ॥

| | | | |
|---------|----------------|-----------|------------------|
| तस्य | “அந்த | प्राप्य | எதிர்த்து |
| महीपतेः | மன்னரின் | अरले | அக்கினியில் |
| बलं | சையைம் | हुतं | ஓமம்செய்யப்பட்ட |
| तत् | அந்த | हव्यं | ஹவிஸ் |
| रावणबलं | இராவணசையைம் | इव | எப்படியோ அப்படி. |
| सर्वं | எல்லாவற்றையும் | तदा | அப்பொழுது |
| | | प्राणश्यत | நாசமாயிற்று. |

युद्धवा च सुचिरं कालं कृत्वा विक्रममुत्तमम् । प्रज्वलन्तं समासाद्य क्षिप्रमेवावशेषितम् ॥

प्राविशत्सङ्कुलं तत्र शलभा इव पावकम्

॥ १५ ॥

तत्र “ अத்தில்
 अवशेषितं தப்பிமிஞ்சியது
 क्षिप्रं एव உடனேயே
 प्रज्वलन्तं அது கோபாவேசத்
 समासाद्य அடைந்து [தை
 उत्तमं ச்லாகிக்கத்தக்க
 विक्रमं பராக்கிரமத்தை
 कृत्वा வெளியிட்டுக்
 सुचिरं நீண்ட [கொண்டு

कालं காலம்
 युद्धवा அமராடி,
 च பின்னர்
 पावकं அக்கினியில்
 शलभा: விட்டிற்றுச்சிக்கள்
 इव எப்படியோ அப்
 सङ्कुलं படியே உருவழிந்ததாக
 प्राविशत् ஆயிற்று.

सोऽपश्यत्तन्नेन्द्रस्तु नश्यमानं महाबलम् । महार्णवं समासाद्य आपगानां शतं यथा ॥१६॥

स: “ அந்த
 नरेन्द्र: மன்னர்
 तत् அந்த
 महाबलं பெருஞ்சேனையை
 आपगानां நதிகளின்
 शतं அனேகமானது
 महार्णवं பெருங்கடலில்

समासाद्य போய்ச் சேர்ந்து
 விடுவது
 यथा எவ்வண்ணமோ
 அவ்வண்ணமோ
 तु அப்பொழுது
 नश्यमानं நாசமுறுவதாய்
 अपश्यत् கண்டார்.

ततः शक्रधनुःप्रख्यं धनुर्विस्फारयन्स्वयम् । आससाद् नरेन्द्रस्तं रावणं क्रोधमूर्च्छितः ॥

नरेन्द्र: “ மன்னர்
 ततः அதினால்
 क्रोधमूर्च्छितः சகிக்கமுடியாக் கோ
 பங்கொண்டவராகி
 शक्रधनुःप्रख्यं இந்நகர தனுஸுக்
 धनुः வில்லை [கொட்பான

विस्फारयन् நானேசை செய்தது
 तं அந்த [கொண்டு
 रावणं இராவணனை
 स्वयं தானே நேரில்
 आस साद् எதிர்த்துப் போர்புரி
 ந்தார்.

ततो बाणशतान्यष्टौ पातयामास मूर्धनि । तस्य राक्षसराजस्य इक्ष्वाकुकुलनन्दनः ॥१८॥

इक्ष्वाकुकुलनन्दनः “ இக்ஷ்வாகுகுலப்
 பிள்ளையாகிய அவர்
 ततः அப்பொழுது
 अष्टौ எட்டு
 बाणशतानि நூறு பாணங்களை

तस्य அந்த
 राक्षसराजस्य இராக்ஷஸமன்னனது
 मूर्धनि தலையில்
 पातयामास விடுத்தார்.

तस्य बाणाः पतन्तस्ते चक्रिरे न क्षतिं क्वचित् । वारिधारा इवाभ्रेभ्यः पतन्त्यो गिरिमूर्धनि॥

गिरिमूर्धनि “ மலைமுடியீது
 अभ्रेभ्यः மேகங்களினின்று
 पतन्त्यः விழுகின்ற
 वारिधारा: इव மழைத்தாரைகள்
 पतन्त्यः வந்து வீழ்ந்த [போல்

ते बाणाः அந்த பாணங்கள்
 तस्य அவனுக்கு
 क्षतिं துன்பமென்பதை
 क्वचित् இப்பொழுதுதங்கூட
 न चक्रिरे விளைவிக்கவில்லை.

ततो राक्षसराजेन क्रुद्धेन नृपतिस्तदा । तलेनाभिहतो मूर्ध्नि स स्थान्निपपात ह ॥२०॥

नृपतिः “ मன்னர்
तदा அப்பொழுது
राक्षसराजेन இராசுந்நஸ மன்னனால்
क्रुद्धेन கோபங்கொண்ட
तलेन கையால் [வனகி
मूर्ध्नि சிரவில்

अभिहतः அடிக்கப்பட்டார்.
ततः அந்நிலை
सः அவர்
स्थान्निपपात தேரினின்றி
ह किழேழிழ்ந்தார்.
ஐயோ! கஷ்டம்!

स राजा पतितो भूमौ विह्वलाङ्गः प्रवेपितः । वज्रदग्ध इवारण्ये सालो निपतितो महान् ॥

अरण्ये “ காட்டில்
वज्रदग्धः வஜ்ராயுதத்தால்
தகிக்கப்பட்ட
महान् பெரிய
सालः விருகூழம்
निपतितः சாய்ந்து பூமியில்
விழ்ந்தால்

इव எவ்வண்ணாமோ அவ்
सः அந்த [வண்ணாமே
राजा மன்னர்
विह्वलाङ्गः அங்கங்கள் தளர்ந்த
வராய்
प्रवेपितः நடுங்கி
भूमौ தரையில்
पतितः விழ்ந்து விட்டார்.

तं प्रहस्याब्रवीद्रक्ष इक्ष्वाकुं पृथिवीपतिम् । किमिदानीं फलं प्राप्तं त्वया मां प्रतियुध्यता ॥

तत् “ அந்த
रक्षः அரக்கன்
तं அந்த
इक्ष्वाकुं இசுக்ஷ்வாகுவம்சத்து
पृथिवीपतिं சக்கிரவர்த்திபாரைப்
பார்த்து
प्रहस्य பரிஹஸித்து
अब्रवीत् இப்படிச்சொன்னான்:

मां ‘என்னை
प्रतियुध्यता எதிர்த்துப்போர்
புரிந்த
त्वया உன்னால்
इदानीं இப்பொழுது
किं என்ன
फलं பயன்
प्राप्तम् அடையப்பட்டது?

त्रैलोक्ये नास्ति यो द्रुद्धं मम दद्यान्वराधिप । शङ्के प्रसक्तो भोगेषु न मृणोषि बलं मम ॥

नराधिप “ ‘மன்னனே!
मम என்னுடன்
द्रुद्धं யுத்தத்தை
दद्यात् ஒப்புக்கொள்ளுகிறது
यः எவனோ அவன்
त्रैलोक्ये மூவுலகிலும்
नास्ति இல்லை.

भोगेषु போகங்களில்
प्रसक्तः மனதைச் செலுத்தி
मम எனது [விட்டவரைய்
बलं பலத்தைப்பற்றி
न मृणोषि நீ கேட்டிருக்கவில்லை
என்று
शङ्के நான் நினைக்கிறேன்.’

तस्यैवं ब्रुवतो राजा मन्दासुर्वाक्यमब्रवीत् । किं शक्यमिह कर्तुं वै कालो हि दुरतिक्रमः ॥

மந்நாசு: “ குற்றுயிராய் துடித்
துக்கொண்டிருந்த
ராஜா மன்னர்
ஏவ் இவ்விதம்
புருவந: ஆத்மஸ்தோத்திரம்
தத்ய அவனுக்கு [செய்கிற
வாக்ய தருமநியமனத்தை
அபுரீதீ இப்படிச் சொல்லியரு
ளினார்:

इह वै “ இப்பொழுது
कर्तुं செய்கிறதற்கு
किं எனது
शक्यं முடியும்?
कालः காலகதியானது
दुरतिक्रमः ஒருவராலும் தடுக்க
முடியாது.
हि அன்றோ!

न ह्यहं निर्जितो रक्षस्त्वया चात्मप्रशंसिना । कालेनैव विपन्नोऽहं हेतुभूतस्तु मे भवान् ॥

ரக்ஷ: “ அடே ராக்ஷஸ!
ஆ:மபுரஸினா தன்னைத்தானே
புகழ்ந்துகொள்ளுகிற
தவ்யா வ உன்னாலேயே
அஹ் நான்
நிர்ஜித: ஜயிக்கப்பட்டவன்

न இல்லை.
कालेन एव விதிவசத்தாலேயே
अहं நான்
विपन्नः மாணமடைகிறேன்.
भवान् तु நீயோ
मे எனக்கு
हेतुभूतः हि காரணக்கருவிதான்.

किं त्विदानीं मया शक्यं कर्तुं प्राणपरिक्षये । न ह्यहं विमुखो रक्षो युध्यमानस्त्वया हतः ॥

ரக்ஷ: “ அடே அரக்க!
யுவ்யமான: போர் புரிந்து
விசுல: பிரதிகூலமடைந்த
அஹ் நான்
தவ்யா உன்னால்
ஹத: அடித்துத்தள்ளப்பட்ட
கி் து ஆயினும் [டேன்

इदानीं இப்பொழுது
प्राणपरिक्षये உயிர்போகுந்தரு
ணத்தில்
मया என்னால்
कर्तुं பிரதிகாரஞ்செய்ய
शक्यं சாத்தியமானது
न हि ஒன்றும்மில்லை.

इक्ष्वाकुपरिभावित्राद्रुचो वक्ष्यामि राक्षस । यदि दत्तं यदि हुतं यदि मे सुकृतं तपः ॥
यदि गुप्ताः प्रजाः सम्यक्तदा सत्यं वचोऽस्तु मे ॥ २७ ॥

ராஷஸ “ அரக்க!
இக்ஷ்வாகு வம்சத்
भावित्रात् } தை அவமானஞ்
செய்ததால்
वचः விதியை
वक्ष्यामि இப்போதே சூசிப்பித்
து விடுகிறேன்.
मे எனது
प्रजाः பிரஜைகள்

सम्यक्. தருமத்திற்கு குறை
வின்றி
गुप्ताः பரிபாலிக்கப்
பட்டார்கள்
यदि என்கிறபகூத்தில்,
तपः தவபாக்கியமும்
सुकृतं புண்ணியங்களின்
பயனும்
यदि இருக்கும்பகூத்தில்,

| | | | |
|-------|--|---------------------|---------------------------|
| हुतं | { செய்யப்பட்ட தெய்வ சமர்ப்பணங்களின் பயனும் | यदि | இருக்கும் பகைத்தில், |
| यदि | | இருக்கிற பகைத்தில், | அப்பொழுது |
| दत्तं | கொடுக்கப்பட்ட தான ங்களின் பயனும் | मे वचः | எனது வாக்கு |
| | | सयं | அப்படியே நடை |
| | | अस्तु | பெற்றதாக விளங்கட்டும். |

उत्पत्स्यते कुले ह्यसिन्धिक्ष्वाकूणां महात्मनाम् । रामो दाशरथिर्नाम यस्ते प्राणान्हरिष्यति॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------------|-------------|---------------------------|
| महात्मनां | “ மிக்க மேன்மை பெற்றவர்களாகிய | रामः | இராமன் |
| इक्ष्वाकूणां | இசைவா குக்களின் | नाम | எனப் பெயருள்ளவன் |
| अस्मिन् | இந்த | उत्पत्स्यते | அவதரிக்கப் போகின்றான். |
| कुले हि | குலத்திலேயே | यः | எவனோ, அவன் |
| दाशरथिः | தசரதனென்பவ னுக்குப் புதல்வனாய் | ते | உன் |
| | | प्राणान् | உயிரை |
| | | हरिष्यति | ஒழிப்பான்.’ |

ततो जलधरोदग्रस्ताडितो देवदुन्दुभिः । तस्मिन्नुदाहृते शापे पुष्पवृष्टिश्च खाच्युता ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|--------------|---------------------------|
| तस्मिन् | “ அந்த | च | அன்றியும் |
| शापे | சாபம் | ततः | அப்பொழுது |
| उदाहृते | இட்டவளவில் | देवदुन्दुभिः | தேவ தூந்துபி |
| खाच | வானத்தினின்றும் | जलधरोदग्रः | மேகமுழக்கத்துக் கிடாய் |
| पुष्पवृष्टिः | பூமாரி | ताडितः | அடிக்கப்பட்டது. |
| च्युता | பொழிந்தது. | | |

ततः स राजा राजेन्द्र गतः स्थानं त्रिविष्टपम् । स्वर्गते च नृपे तस्मिन्नाक्षसः सोऽपसर्पत ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------|------------|--------------------------|
| राजेन्द्र | “ சக்கிர வரத்தியாரே ! | नृपे | மன்னர் |
| सः | அந்த | स्वर्गते च | சுவர்க்கமடைந்த வளவில் |
| राजा | மன்னர் | सः | அந்த |
| त्रिविष्टपं | சுவர்க்க | राक्षसः | அரக்கன் |
| स्थानं | பதவியை | ततः | அவ்விடத்திலிருந்து |
| गतः | பெற்றார். | अपसर्पत | போய்விட்டான். |
| तस्मिन् | அந்த | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे एकोनविंशः सर्गः ॥



विशः सर्गः—இருபதாவது ஸர்க்கம். || 20 ||

नारदरावणसंवादः—நாரதராவணஸம்வாதம்.

ततो वित्रासयन्मत्यान्पृथिव्यां राक्षसाधिपः । आससाद घने तस्मिन्नारदं मुनिपुङ्गवम् ॥

| | | | |
|-------------|---|-------------|--------------------|
| तवः | “ அனந்தரம் | तस्मिन् | அந்த |
| राक्षसाधिपः | இராசுஷஸராஜன் | घने | ஆகாசத்தில் |
| पृथिव्यां | பூமியில் | मुनिपुङ्गवं | முனிச்சீரேஷ்டராகிய |
| मत्यान् | மாணிடர்களை | नारदं | நாரதரை |
| वित्रासयन् | } பயமுறுத்திக் கொண்டிருந்த பொழுது | आससाद | தற்செயலாய்க் |
| | | | கண்டான். |

तस्याभिवादनं कृत्वा दशग्रीवो निशाचरः । अब्रवीत्कुशलं दृष्ट्वा हेतुमागमनस्य च ॥२॥

| | | | |
|------------|-------------|----------|---------------------------------|
| दशग्रीवः | “ தசகீர்வ | कृत्वा | பண்ணி |
| निशाचरः | அரக்கன் | कुशलं | கேட்பதைதையும் |
| दृष्ट्वा च | கண்டதுமே, | आगमनस्य | அங்கு எழுந்தருளி யிருத்தலின் |
| तस्य | அவருக்கு | हेतुं | காரணத்தையும் |
| अभिवादनं | நமஸ்காரத்தை | अब्रवीत् | வினாவினான்: |

नारदस्तु महातेजा देवर्षिरमितप्रभः । अब्रवीन्मेघपृष्ठस्थो रावणं पुष्पके स्थितम् ॥ ३ ॥

| | | | |
|-----------|------------------------------------|----------------------------|---|
| महातेजाः | “ மஹத்தான தெய்வ சக்திகொண்டவரும் | मेघपृष्ठस्थः तु | ஆகாசப்பிரதேசத்தி லிருந்துகொண்டே |
| अमितप्रभः | அளவில்லாக்கார்தி யுள்ளவரும் | पुष्पके स्थितं रावणं | புஷ்பகவிமானத்தில் விற்பிறுக்கிற இராவணனைப் |
| देवर्षिः | தேவரிஷியுமான | अब्रवीत् | பார்த்து திருவாய்மலர்ந்தரு ளினார்: |
| नारदः | நாரதர் | | |

राक्षसाधिपते सौम्य तिष्ठ विश्रवसः सुत । प्रीतोऽस्म्यभिजनोपेतविक्रमैरुजितैस्तव ॥४॥

| | | | |
|--------------|-----------------|------------------------|--|
| राक्षसाधिपते | “ இராசுஷஸமன்னு! | उजितैः | பிரக்யாகிபெற்றதாக கூய |
| विश्रवसः | விசுவவலின் | अभिजनोपेत- विक्रमैः | } குடும்பத்திற்கு ஆப ரணமெனக்கொண் டாடும்படியான கு ரச்செய்கைகளால் |
| सौम्य | தீவ்யமான | प्रीतः | |
| सुत | புதல்வனே! | अस्मि | ஆகிறேன். |
| तिष्ठ | சற்றுநில். | | |
| तव | உனது | | |

विष्णुना दैत्यघातैश्च तार्क्ष्यस्योरगर्धषणैः । त्वया समं विमर्दैश्च भृशं हि परितोषितः ॥५॥

| | | | |
|--------------|-------------------|-----------|---------------------|
| विष्णुना | “ விஷ்ணுவினால் | समं | சமமாயிருக்கிற |
| दैत्यघातैः च | தைத்யர்களின் | त्वया | உன்னால் போடப் |
| | அடிக்கொண்டும் | विमर्दैः | யுத்தங்களால் [பட்ட |
| तार्क्ष्यस्य | கருடபகவானுடைய | भृशं हि | மிகவும் |
| उरगवर्धणैः च | பாம்புகளின் நாசங் | परितोषितः | வியப்புற்றவனாயிருக் |
| | களொடும் | | கிறேன். |

किञ्चिद्दश्यामि तावत् श्रोतव्यं श्रोष्यसे यदि । तन्मे निगदतस्तात समार्धिं श्रवणे कुरु ॥

| | | | |
|---------------|----------------------|---------------|-----------------|
| तात | “ குழந்தாய்! | किञ्चिद् | சற்று |
| श्रोतव्यं | { தெரிந்துகொள்ள | वक्ष्यामि | சொல்லுகிறேன். |
| | வேண்டியதாயிருக் | तत् | அதை |
| श्रोष्यसे यदि | கிற ஒரு விஷயத்தை | निगदतः | மொழிகிற |
| | நீ கேட்க விரும்புகிற | मे | எனக்கு |
| ते | யென்கிற பக்கத்தில் | श्रवणे | செவியாய்ப்பதில் |
| तावत् | உனக்கு | समार्धिं कुरु | மனதுசெலுத்தப் |
| | ஏதோ | | பட்டதாய்ச்செய். |

किमयं वध्यते तात त्वयाऽवध्येन दैवतैः । हत एव ह्ययं लोको यदा मृत्युवशं गतः ॥७॥

| | | | |
|-----------|------------------|---------|----------------|
| तात | “ குழந்தாய்! | हि | ஆகையால் |
| अयं | இந்த | दैवतैः | தேவதைகளால் |
| लोकः | மானிட உலகம் | अवध्यते | கொல்லப்படுவதற் |
| मृत्युवशं | யமனுடைய அதீ | | கரியானை |
| | னத்தை | त्वया | உன்னால் |
| गतः | அடைந்திருக்கிறது | अयं | இது |
| यदा | எப்பொழுதோ | किं | ஏன் |
| | அப்பொழுதே | वध्यते | துன்புறுத்தப் |
| हतः एव | அழிந்துபோனதே. | | படுகிறது ? |

नित्यं श्रेयसि समूहं महद्भिर्व्यसनैर्वृतम् । हन्यात्कस्तादृशं लोकं जराव्याधिशतैर्युतम् ॥८॥

| | | | |
|---------|-------------------|---------------|--------------------|
| नित्यं | “ எப்பொழுதுமே | व्यसनैः | வியசனங்களால் |
| लोकं | மானிட உலகம் | वृत्तं | நிறைந்துள்ளது. |
| श्रेयसि | { ஹரிதபானவைகள், | जराव्याधिशतैः | மூப்பாலும், அளவற்ற |
| | அஹரிதமானவைகள், | | வியாதிகளாலும் |
| | இவ்விரண்டில் ஹரித | युतं | நிறைந்துள்ளது. |
| | மானவைகளைக் | तादृशं | அப்படிப்பட்டதை |
| | கண்டுகொள்வதில் | कः | ஏவன் |
| समूहं | புத்தியற்றது. | हन्यात् | கொல்லான் ? |
| महद्भिः | மஹத்தான | | |

तैस्तैरनिष्टोपगपैरजसं यत्र कुत्र कः । मतिमान्मानुषे लोके युद्धेन प्रणयी भवेत् ॥ ९ ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------|---------|------------------|
| यत्र कुत्र | “எங்கேகட்பார்ந்தாலும் | लोके | உலகில் |
| तैः तैः | அந்தந்த [அங்கங்கே | युद्धेन | யுத்தத்தோடும் |
| अनिष्टोपगमैः | அனிஷ்டமான அனு பவங்களோடு | प्रणयी | ஆஸக்திகொண்டவ |
| अजसं | எப்பொழுதும்நுக்கிற | मतिमान् | புத்திமான் [றாய் |
| मानुषे | மானிட | कः | எவன் |
| | | भवेत् | ஆவான் ? |

क्षीयमाणं दैवहतं क्षुत्पिपासाजरादिभिः । विषादशोकसंमूढं लोकं त्वं क्षपयस्व मा ॥ १० ॥

| | | | |
|-------------------------------|---|-------------|-----------------------------|
| क्षुत्पिपासा- } जरादिभिः } | “பசி, தாகம், மூப்பு இவை முதலியவை களால் | दैवहतं | விதியினால் அழிபடுவ துமான |
| क्षीयमाणं | அழிந்துகொண்டிருப் பதும் | लोकं | மானிட உலகத்தை |
| विषादशोक- } संमूढं } | ஆசாபங்கங்களாலும் விசாரங்களாலும் தடு மாறிக்கிடக்கிற தும் | त्वं | நீ |
| | | मा क्षपयस्व | அழிக்கவேண்டாம். |

पश्य तावन्महाबाहो राक्षसेश्वर मानुषम् । लोकमेनं विचित्रार्थं यस्य न ज्ञायते गतिः ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|-----------|-------------------------------------|
| महाबाहो | “மஹாவலுக்கொ ண்ட | तावत् | சற்று |
| राक्षसेश्वर | இராக்கூஸமன்னு! | पश्य | ஆலோசனை செய்து |
| एनं | இந்த | यस्य | எந்த அதற்கு [பார். |
| विचित्रार्थं | பலவிதபயன்களைக் | गतिः | எந்த பயணக்கோர வேண்டியதோ அது |
| मानुषं | மானிட [கோரும் | न ज्ञायते | உள்ளபடி அறிந்து கொள்ளப்படவில்லை. |
| लोकं | உலகத்தை | | |

कचिद्वादित्रनुत्यादि सेव्यते मुदितैर्जनैः । रुद्यते चापरैरातैर्धाराश्रुनयनाननैः ॥ १२ ॥

| | | | |
|-----------------|------------------------------------|------------------|---|
| कचित् च | “ஓரிடத்தில் | भतैः | துன்புறும் |
| मुदितैः | மகிழ்ச்சிகொண்ட | अपरैः | “மற்றவர்களால்” |
| जनैः | ஜனங்களால் | धाराश्रुनयनाननैः | { தாரை தாரையாய்க் கண்ணீர்பெருகும் கண்களுற்ற முக மண்டலங்களோடு |
| वादित्रनुत्यादि | வாதியம், நர் த்தனம் இவைமுதலானது | | |
| सेव्यते | அனுபவிக்கப் படுகிறது. | रुद्यते | கதறப்படுகிறது. |

मातापितृसुतस्त्रैर्हैर्भाष्यबन्धुमनोरमैः । मोहितोऽयं जनो ध्वस्तः क्लेशं स्वं नावबुध्यते ॥ १३ ॥

| | | | |
|--------------------|---|-------------|--|
| अयं जनः | “இந்த மானிட உலகம் | ध्वस्तः | மூடப்பட்டதாய் |
| मातापितृसुतस्त्रैः | { தாய், தந்தை, மக்கள், என்ற வாதஸல்யங் களாலும் | मोहितः | மதிமயங்கியதாய் |
| भाष्याबन्धुमनोरमैः | { மனைவிபாகும் உறவு பற்றிபுள்ள ஆசைப் பெருக்குகளாலும் | स्वं क्लेशं | தனது பூலோக வியா பாரத்தை |
| | | न अबुध्यते | { உள்ளபடி அறிந்து கொள்ளாமலிருக் கிறது. |

अलमेनं परिक्रिश्य लोकं मोहनिराकृतम् । जित एव त्वया सौम्य मर्त्यलोको न संशयः ॥

सौम्य “ திவ்யமானவனே !
 मोहनिराकृतं அஞ்ஞானத்தாலழிந்
 एनं இந்த [து கிடக்கம்
 लोकं உலகத்தை
 परिक्रिश्य மீண்டும் துன்புறுத்
 தியது

अलं போதும்.
 त्वया உன்னால்
 मर्त्यलोकः एव மானிடலோக
 மெல்லாமுமே
 जितः ஜயிக்கப்பட்டது.
 न संशयः இதற்கையமில்லை.’

एवमुक्तस्तु लङ्केशो दीप्यमानं स्वतेजसा । अब्रवीन्नारदं तत्र संप्रहस्याभिवाद्य च ॥१५॥

एवं “ இவ்வண்ணம்
 उक्तः तु சொல்லப்பட்ட
 தற்குச் செவியாய்த்த
 लङ्केशः இலங்கேசுவரன்
 स्वतेजसा தன்தேஜஸால்
 दीप्यमानं விளங்கிக்கொண்ட
 ருக்கிற

नारदं நாரதருக்கு
 अभिवाद्य தண்டமிட்டு
 च பின்னர்
 संप्रहस्य குலுங்க நகைத்து
 तत्र அப்போது
 अब्रवीत् இப்படி பதிலுரைத்
 தான்.

महर्षे देवगन्धर्वविहार समरप्रिय । अहं समुद्यतो गन्तुं विजयार्थं रसातलम् ॥ १६ ॥

देवगन्धर्वविहार { “தேவர்கள், கந்தர்வர்
 கள், இவர்களோடு
 ஸத்தகால சேஷபங்க
 னை செய்யும்
 महर्षे மஹரிஷியே!
 समरप्रिय யுத்தப் பிரியரே!
 अहं நான்

रसातलं { ஏழு பாதாளலோகங்
 களில் ரஸாதலமென்
 கிற லோகத்தை
 विजयार्थं வசப்படுத்திக் கொள்
 வதற்காக
 गन्तुं போக
 समुद्यतः பிரயாணமாகின்றேன்.

ततो लोकत्रयं जित्वा स्थाप्य नागान्पुरान्वशे । समुद्रममृतार्थं च मथिष्यामि रसालयम् ॥

लोकत्रयं च “மூவுலகங்களையும்
 जित्वा ஜயித்து
 नागान् நாகர்களையும்
 पुरान् தேவர்களையும்
 वशे அடிமைத்தனத்தில்
 स्थाप्य ஸ்தாபித்துவிட்டு,

ततः அதன்மேல்
 रसालयं எல்லாஜலமும்போய்
 தங்குமிடமாகிய
 समुद्रं சமுத்திரத்தையும்
 अमृतार्थं அமிருதத்தை அடைய
 मथिष्यामि கடையப்போகிறேன்.

अथाब्रवीद्दशग्रीवं नारदो भगवानृषिः । क खल्विदानीं मार्गेण त्वया हन्येन गम्यते ॥

ऋषिः “ ரிஷியாகிய
 नारदः நாரத
 भगवान् பகவான்
 दशग्रीवं தசகரீவீணப்பார்த்து
 अथ இப்படி
 अब्रवीत् திருவாய்மலர்ந்த
 ருளிணர்:

इदानीं ‘இப்பொழுது
 त्वया உன்னால்
 अन्येन हि மற்றெவரும்போகாத
 தாகிய புதிய
 मार्गेण வழியாய்
 गम्यते போகப்படுகிறதே.
 क खलु எங்கேயோ ?

अयं खलु सुदुर्गम्यः प्रेतराजपुरं प्रति । मार्गो गच्छति दुर्धर्षो यमस्यामित्रकर्शन ॥ १९ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|-------------|---|
| अमित्रकर्शन | “ பகைவரை ஒழிப்ப | दुर्धर्षः | பலகஷ்டங்கள் இடை |
| अयं | இந்த [வனே! | | யிடையேயுள்ள தாயும் |
| मार्गः | வழி | | } இதுவரையில் ஒருவ ரா லும் போய்ச் சேரப்படாததாயும் இருக்கிறது. |
| यमस्य खलु | யமனுக்கே உரியதும் | सुदुर्गम्यः | |
| प्रेतराजपुरं | யமலோகத்துக்கு | | |
| प्रति | போகும்வழியாயும், | गच्छति | |

स तु शारदमेघाभं हासं मुक्त्वा दशाननः । उवाच कृतमित्येव वचनं चेदमब्रवीत् ॥२०॥

| | | | |
|------------|----------------|----------|--------------------|
| सः | “ அந்த | कृतं एव | ‘என்னால் முடியும்’ |
| दशाननः | தசானனன் | इति | என்று |
| तु | இப்பொழுது | उवाच | சொன்னான். |
| शारदमेघाभं | சாரத்காலமேகமென | च | அதுவுமன்றி |
| हासं | ஒரு நகைப்பை | इदं | பின்கண்ட |
| मुक्त्वा | நகைத்து, | वचनं | உத்தேசத்தையும் |
| | | अब्रवीत् | அறியப்படுத்தினான்: |

तस्मादेवमहं ब्रह्मन्वैवस्वतवधोद्यतः । गच्छामि दक्षिणामाशां यत्र सूर्यात्मजो वृषः ॥२१॥

| | | | |
|-----------------|----------------------------------|----------|------------------------|
| ब्रह्मन् | “ ஸ்வாமியே! | वृषः | யமதருமராஜன் |
| वैवस्वतवधोद्यतः | யமனைக்கொல்ல நிச்ச யித்துவிட்ட | यत् | எங்கிருக்கிறதோ, அதே |
| अहं | நான் | दक्षिणां | தெற்கு |
| तस्मात् | அக்காரணத்தினால் | आशां एवं | திக்கையேநோக்கி |
| सूर्यात्मजः | சூரியன் புதல்வனாகிய | गच्छामि | போகிறேன். |

मया हि भगवन्क्रोधात्प्रतिज्ञातं रणार्थिना । अवजेष्यामि चतुरो लोकपालानिति प्रभो ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|--------------|---------------------------------------|
| भगवन् | “ பகவானே! | अवजेष्यामि | வெற்றிகொள்வேன் |
| प्रभो | பிரபுவே! | हि | இதுநிச்சயம். |
| रणार्थिना | யுத்தப்பிரியனான | इति | என்றும் |
| मया | என்னால் | क्रोधात् | அஹங்காரத்தால் |
| लोकपालान् | ‘லோகபாலர்கள் | प्रतिज्ञातम् | பிரதிக்கைநு பண்ணப் பட்டிருக்கிறது. |
| चतुरः | நால்வரையும் | | |

तदिह प्रस्थितोऽहं वै प्रेतराजपुरं प्रति । प्राणिसंक्षेपकतारं योजयिष्यामि मृत्युना ॥२३॥

| | | | |
|--------------|--------------------------|----------------|------------------|
| तत् | “ ஆதலால் | प्राणिसंक्षेप- | } பிராணிகளை அதிக |
| इह | இப்பொழுதே | कतारं वै | |
| अहं | நான் | | கின்றவனையே |
| प्रेतराजपुरं | யமலோகத்தை | मृत्युना | } மரணமடைவதால் |
| प्रति | நோக்கி | योजयिष्यामि | |
| प्रस्थितः | பிரயாணமாகிவிட்ட டேன். | | |

एवमुक्त्वा दशग्रीवो मुनिं तमभिवाच्य च । प्रययौ दक्षिणामाशां प्रहृष्टः सह मन्त्रिभिः ॥

தசகிரீவன்
மஹா உத்ஸாஹத்து
டனிரூப்பவனாய்
மேற்கண்டவண்ணம்
சொல்லிவிட்டு,
அந்த
முனிவரை

அभिवाच्य நமஸ்கரித்து,
च அதன்மேல்
दक्षिणां தெற்கு
आशां திக்கை நோக்கி
मन्त्रिभिः மந்திரிகளுடன்
सह கூடினவனாய்
प्रययौ சென்றான்.

नारदस्तु महातेजा मुहूर्तं ध्यानमास्थितः । चिन्तयामास विप्रेन्द्रो विधूम इव पावकः ॥

புகைநீங்கிய
நெருப்பு
போன்ற
மஹா தேஜஸ்வியான
பிராமணைத்தமராகிய
நாரதர்

சுஹூர்த் சற்றுநேரம்
तु இதுவிஷயத்தில்
ध्यानं நானசக்தியில்
आस्थितः மனத்தை நாட்டியவ
ராப்
चिन्तयामास தனக்குள்ளேயே
ஆலோசிக்கலாயினர்.

येन लोकास्त्रयः सेन्द्राः क्लिश्यन्ते सचराचराः ।
क्षीणे चायुषि धर्मेण स कालो हिंस्यते कथम् ॥ २६ ॥

இந்திரனோடுகூடின
வைகளுடம்
ஸ்தாவரங்கள் ஜங்க
மங்களுடன் கூடின
வைகளுமான
மூன்று
உலகங்களுடம்
ஆயுள்
முடிந்ததும்

येन எந்த
धर्मेण தருமராஜனல்
क्लिश्यन्ते துன்புறுத்தப்படுகின்
றனவோ,
सः அந்த
कालः யமன்
कथं எப்படி
हिंस्यते துன்புறுத்தப்படு
வான்?

स्वदत्तकृतसाक्षी यो द्वितीय इव पावकः । लब्धसंज्ञा विजेष्यन्ते लोका यस्य महात्मनः ॥

यस्य नित्यं त्रयो लोका विद्रुन्ति भयार्दिताः ।

तं कथं राक्षसेन्द्रोऽसौ स्वयमेव गमिष्यति

॥ २८ ॥

உலகங்கள்
எந்த
மஹாத்மாவின் து
அனுக்கிரகம் பெற்ற
வைகளாய்
மேன்மைப்பட்ட
விளங்குகின்றனவோ

स्वदत्त- }
कृतसाक्षी } அவரவர் இயற்றிய
கருமங்களையே தா
னே அறிந்துகொள்
ளக்கூடிய
द्वितीयः இரண்டாவது
पावकः அக்கினி
इव போன்றவர்

| | | | |
|--------------|-------------------|---------------|---------------------|
| यः | எவரோ | विद्वन्ति | கூடிணித்துப்போகி |
| वयः | மூன்று | | ன்றனவோ |
| लोकः | உலகங்களும் | तं एव | அவரையே |
| यस्य | எவருக்கு | असौ | இந்த |
| भयार्द्रिताः | பயந்து நடுங்கியவை | राक्षसेन्द्रः | இராக்கூஸைமன்னன் |
| | களாய் | स्वयं | இலேசில் |
| नित्यं | எப்பொழுதுமே | कथं गमिष्यति | எப்படிக்கிட்டுவான்? |

यो विधाता च धाता च सुकृतं दुष्कृतं तथा । त्रैलोक्यं विजितं येन तं कथं तु विजेष्यते ॥

| | | | |
|------------|--------------------|------------|-------------------|
| यः | “எவர் | येन | எவரால் |
| सुकृतं च | புண்ணியகிருத்தியத் | त्रैलोक्यं | மூவுலகும் |
| | தையும் | विजितं | தன்னானுகைக்குட் |
| दुष्कृतं च | பாபகிருத்தியத்தை | | பட்டதாயிருக்கிறதோ |
| विधाता | அளிப்பவரோ, [யும் | तं तु | அவரையே |
| तथा | அவ்வண்ணமே | कथं | எப்படி |
| धाता | { அவை அவைக்குத் | विजेष्यते | மிஞ்சுவான்? |
| | தக்கபடி மேல்நடத் | | |
| | துபவரோ, | | |

अपरं किं तु कृत्वाऽयं विधानं संविधास्यति । कौतूहलसमुत्पन्नो यास्यामि यमसादनम् ॥

| | | | |
|--------|--------------------|--------------|------------------|
| अयं | “இவன் | संविधास्यति | செய்யப்போகிறான்? |
| तु | இதுவிஷயத்தில் | कौतूहल- | விஷயம் தெரிந்து |
| अपरं | புதிய ஒப்புயர்வில் | समुत्पन्नः } | கொள்ளவேண்டு |
| | லாத | | மென்கிற அவாக்க |
| किं | என்ன | यमसादनं | கொண்டவனாய் |
| विधानं | உபாயத்தை | यास्यामि | யமலோகத்திற்கு |
| कृत्वा | பற்றி | | நான் போகப்போகி |
| | | | றேன். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
उत्तरकाण्डे विंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 21491

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 767

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे षड्विंशोऽह्नि वर्तमानकथाप्रसङ्गः ॥

இவ்விதம் ஆதியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமர் ஸந்நிதியில் அச்வமேத யாகசாலையில் கானம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில் இருபத்தாருவது தினத்தில் கானம் பண்ணப்பட்ட கதை முடிவுபெற்றது.



[புரா குशलவாஶ்யாं श्रीरामसन्निधावश्वमेधयज्ञवाटे द्वाविंशति दिनेषु गीते श्रीमद्रामायणे सप्तविंशोऽह्नि उत्तरकाण्डे एकाविंशसर्गमारभ्य चत्वारिंशसर्गपर्यन्तं (21492—22395 श्लोकाः) गीतम् । तस्मिन् दिने गीताः श्लोकाः 904]

[ஆகியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமஸந்நிதியில் அச்வமேதயாகசாலையில் முப்பத்திரண்டு தினங்களில் காணம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில் இருபத்தேழாவது தினத்தில் உத்தரகாண்டத்தில் இருபத்தோராவது ஸர்க்கம்முதல் நரற்பதாவது ஸர்க்கம்வரை (21492—22395) காணம் செய்யப்பட்டது.

அன்று காணம் செய்யப்பட்ட சுலோக சங்கியை 904]

एकाविंशः सर्गः—இருபத்தோராவது ஸர்க்கம். || 21 ||

यमरावणसेनायुद्धम्—யமராவணஸேனைகளின் யுத்தம்.

एवं सञ्चिन्त्य विप्रेन्द्रो जगाम लघुविक्रमः । आख्यातुं तद्यथावृत्तं यमस्य सदनं प्रति ॥

| | | | |
|--------------|---|------------|------------------|
| लघुविक्रमः | “ निனைத்த இடம் பிர யாசையன்றி செல்ல வல்லவராகிய | यमस्य | யமனுக்கு |
| विप्रेन्द्रः | | तत् | அந்த |
| एवं | अन्तணர் பெருமான், | यथावृत्तं | நடந்த வரலாற்றை |
| सञ्चिन्त्य | இவ்வண்ணம் | आख्यातुं | உள்ளபடியறிவிக்க |
| | தீர்க்காலோசனை செய்து, | सदनं प्रति | யமபுரிக்கு |
| | | जगाम | போய் சேர்ந்தனர். |

अपश्यत्स यमं तत्र देवमग्निपुरस्कृतम् । विधानमुपतिष्ठन्तं प्राणिनो यस्य यादृशम् ॥ 2 ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------------|-------------|-----------------------------|
| तत्र | “ அத்தருணத்தில் | यस्य | எந்த |
| सः | அவர் | प्राणिनः | ஜீவனுக்கு |
| यमं | யம | यादृशं | எந்த |
| देवं | தேவரை | विधानं | தண்டனையோ, அதை |
| अग्निपुरस्कृतं | அக்னிபகவான் பக்க விஸிருப்பவராய், | उपतिष्ठन्तं | விதித்துக்கொண்டிருப்பவராய், |
| | | अपश्यत् | கண்டார். |

स तु दृष्ट्वा यमः प्राप्तं महर्षिं तत्र नारदम् । अत्रवीत्सुखमासीनमर्ष्यमावेद्य धर्मतः ॥ 3 ॥

| | | | |
|----------|----------------|----------|-------------------|
| सः | “ அந்த | धर्मतः | முறைப்படி |
| यमः | யமன், | अर्ष्यं | அர்க்கியத்தை |
| तत्र | அப்பொழுது | आवेद्य | ஸமர்ப்பித்து |
| नारदं | நாரத | सुखं | சுகமாக |
| महर्षिं | மஹரிஷியை | आसीनं | வீற்றிருப்பவரைப் |
| प्राप्तं | வந்திருப்பவராக | | பார்த்து |
| दृष्ट्वा | கண்டு, | अत्रवीत् | இப்படி விண்ணப்பம் |
| तु | உடனே | | செய்தார்: |

कच्चिक्षेपं तु देवर्षे कच्चिद्धर्मो न नश्यति । किमागमनकृत्यं ते देवगन्धर्वसेवित ॥ ४ ॥

| | |
|------------------|---------------------------|
| देवर्षे | “தேவரிஷியே! |
| कच्चिव क्षेपं | எல்லாம் கேட்கும் தானா? |
| धर्मः | தருமம் |
| न नश्यति कच्चिद् | நாசமுறாதிருக்கின்ற தா? |

| | |
|-----------------|--|
| देवगन्धर्वसेवित | { தேவர்களா லும், கந்தர்வர்களா லும் சேவிக்கப்பெற்றவரோ, புரஸ்துதம் தேவீரது வந்தகாரியம் என்ன? } |
| तु | |
| ते | |
| आगमनकृत्यं | |
| किम् | |

अब्रवीत्तु तदा वाक्यं नारदो भगवानृषिः । श्रूयतामभिधास्यामि विधानं च विधीयताम् ॥

| | |
|----------|------------------|
| भगवान् | “பகவானுகைய |
| नारदः | நாரத |
| ऋषिः | ரிஷி |
| तु | இப்பொழுது இந்த |
| वाक्यं | பதிலை |
| अब्रवीत् | சொல்லியருளினார்; |

| | |
|-------------|--------------------------------|
| अभिधास्यामि | ‘ஒரு சமாதாரம் சொல்லுகிறேன். |
| श्रूयतां | கவனித்துக் கேட்கப் பட்டும். |
| तदा | அதன்பிறகு |
| विधानं च | ஆகவேண்டியதும் |
| विधीयताम् | விதிக்கப்பட்டும். |

एष नाम्ना दशग्रीवः पितृराज निशाचरः । उपयाति वशं नेतुं विक्रमैस्त्वां सुदुर्जयम् ॥

| | |
|--------------|------------------------------|
| पितृराज | “பித்ருராஜனே! |
| एषः दशग्रीवः | இந்த தசக்ரீவன் |
| नाम्ना | என பெயர்பெற்ற |
| निशाचरः | அரக்கன் |
| सुदुर्जयं | எவராலும் வெல்வதற் கரியானை |

| | |
|----------|-------------------------------|
| त्वां | உன்னை |
| विक्रमैः | பராக்கிரமங்களால் |
| वशं | வசப்பட்டவனாக |
| नेतुं | ஆக்க |
| उपयाति | வந்துக்கொண்டி- ருக்கிறான். |

एतेन कारणेनाहं त्वरितो ह्यागतः प्रभो । दण्डप्रहरणस्याद्य तव किं नु भविष्यति ॥ ७ ॥

| | |
|---------------|-------------------|
| प्रभो | “பிரபுவே! |
| दण्डप्रहरणस्य | தண்டாயுததாரியாகிய |
| तव | உனக்கு |
| अद्य | இப்பொழுது |
| किं | என்ன |
| भविष्यति नु | விளையப்போகிறதோ? |

| | |
|-----------|----------------------|
| एतेन | இந்த |
| कारणेन हि | காரணத்தைக் கொண்டே |
| अहं | நான் |
| त्वं तः | அவரைமாய் |
| आगतः | இவ்விடம் வந்தேன். |

एतस्मिन्नन्तरे दूरादंशुमन्तमिवोदितम् । ददर्श दीप्तमायान्तं विमानं तस्य रक्षसः ॥ ८ ॥

| | |
|-----------|------------|
| एतस्मिन् | “இதே |
| अन्तरे | ஸமயத்தில் |
| तस्य | அந்த |
| रक्षसः | அரக்கனின், |
| उदितं | உதயமாகிற |
| अंशुमन्तं | சூரியனை |

| | |
|---------|---------------------|
| इव | போல் |
| दीप्तं | பிரகாசித்துக்கொண்டு |
| दूरात् | தொலைவில் |
| आयान्तं | வந்துகொண்டிருக்கிற |
| विमानं | விமானத்தை |
| ददर्श | கண்டனார். |

तं देशं प्रभया तस्य पुष्पकस्य महाबलः । कृत्वा वितिमिरं सर्वं समीपं सोऽभ्यवर्तत ॥९॥

| | |
|-----------|------------------|
| महाबलः | “मஹா பஸிஷ்டஹைசிய |
| सः | அவன் |
| तस्य | அந்த |
| पुष्पकस्य | புஷ்பகவிமானத்தி |
| प्रभया | சோதியால் [னது |
| तं | அந்த |

| | |
|-----------|------------------|
| देशं | பிரதேசம் |
| सर्वं | எல்லா வற்றையும் |
| वितिमिरं | சோதிமயமாக |
| कृत्वा | செய்துகொண்டு |
| समीपं | அருகே |
| अभ्यवर्तत | வந்துசேர்ந்தான். |

सोऽपश्यत्सुमहाबाहुर्दशश्रीवस्ततस्ततः । प्राणिनः सुकृतं कर्म भुञ्जानांश्चैव दुष्कृतम् ॥

| | |
|------------|----------------------|
| सः | “அந்த |
| सुमहाबाहुः | பெரும் போர்வீர னைசிய |
| दशश्रीवः | தசசீவன் |
| ततः | அவ்விடத்தில் |
| ततः | அப்பொழுது, |
| प्राणिनः | பிராணிகளை |

| | |
|-------------|------------------------------------|
| सुकृतं च | புண்ணியங்களுக் குரியதும் |
| दुष्कृतं एव | பாபங்களுக் |
| कर्म | பயனை [குரிய துமான |
| भुञ्जानान् | அனுபவித்துக்கொண் டிருக்கிறவர்களாய் |
| अभ्यवर्त | கண்டான். |

अपश्यत्सैनिकांश्चास्य यमस्यानुचरैः सह । यमस्य पुरुषैर्यैर्घोररूपैर्भयानकैः ॥ ११ ॥

| | |
|----------|---------------------------------|
| अस्य | “இந்த |
| यमस्य | யமனுடைய |
| अनुचरैः | அனுசரர்களோடும் |
| भयानकैः | பார்த்தவர்கள் நடுங் கும்படியாய் |
| घोररूपैः | கேரமான உருவங் கொண்டவர்களும் |

| | |
|------------|--|
| उग्रैः | இட்டவேலையை உடனே செய்துமுடிக்கத் தயாராயிருக்கின்ற கிங்கரர்களோடும் சேர்ந்திருக்கின்ற |
| पुरुषैः सह | |
| यमस्य | யமனது |
| सैनिकान् च | ஸேனைகளையும் |
| अपश्यत् | பார்த்தான். |

ददर्श वध्यमानांश्च क्रिश्यमानांश्च देहिनः । क्रोशतश्च महानादं तीव्रनिष्ठनतत्परान् ॥

कृमिभिर्भक्ष्यमाणान्श्च सारमेयैश्च दारुणैः

॥ १२ ॥

| | |
|---------------|--|
| देहिनः | “மானிடர்களை |
| वध्यमानान् | தேகத்தில் துன்புறுத் தப்படுபவர்களாயும் |
| च | அதனால் |
| क्रिश्यमानान् | வேதனைப்படுபவர்களாயும் |
| महानादं | பெருங்கொஷமாய் |
| क्रोशतः | வீறிட்டுக்கதறிக் கொண்டிருக்கிறவர்களாயும் |

| | |
|----------------------------|---|
| तीव्रनिष्ठन- तत्परान् च | கொடுமையான கஷ்டங்களில் தள்ளப் பட்டுக் கிடக்கின்றவர்களாயும் |
| दारुणैः | கொடிய |
| सारमेयैः | நாய்களாலும் |
| कृमिभिः च | புழுக்களாலும் |
| भक्ष्यमाणान् च | கடிக்கப்படுபவர்களாயும் |
| ददर्श | கண்டான். |

श्रोत्रायासकरा वाचो वदतश्च भयावहाः । तार्यमाणान्त्रैतरणीं बहुशः शोषितोदकाम् ॥
 बालुकासु च तप्तासु तप्यमानान्मुहुर्मुहुः । असिपत्रवने चैव भिद्यमानानधार्मिकान् ॥१४॥
 रौरवे क्षारनद्यां च क्षुरधारासु चैव हि । पानीयं याचमानांश्च तृषितान्क्षुधितानपि ॥१५॥
 शवभूतान्कृशान्दीनान्विवर्णान्मुक्तमूर्धजान् । मलयङ्कधरान्मर्त्यान्त्रूक्षांश्च परिधावतः ॥
 ददर्श रावणो मार्गे शतशोऽथ सहस्रशः ॥ १६ ॥

अथ "अपुपोपु तु
 रावणः इरावண்ண
 मार्गे कண்ணुक्केडुकि
 वरையில்
 अधार्मிகान् பாபத்தொழில்களைப்
 புரிந்த
 मर्यान् மாணிடர்களை
 शतशः நூற்றுக்கணக்காகவும்
 सहस्रशः ஆயிரக்கணக்காகவும்
 श्रोत्रायासकराः च கர்ணகடோரமாயிருக்கின்றதும்
 भयावहाः च பயத்தைத்தருகிறது
 मान
 वाचः புலம்பல்களை
 वदतः புலம்பிக்கொண்டிருக்கிறவர்களாகவும்
 शोषितोदकां உதிரத்தையே ஜல
 மாகக்கொண்ட
 त्रैतरणीं வைதரணீந்தியை
 बहुशः அனேகமாய்
 तार्यमाणान् தாண்டுபவர்களாகவும்
 तप्तासु கொதிக்கின்ற
 बालुकासु நொய்மணல்களில்
 मुहुर्मुहुः அடிக்கடி
 तप्यमानान् च புரட்டி வாட்டப்படு
 பவர்களாகவும்
 असिपत्रवने { கத்திகளை விருகூதங்
 களாயிருக்கிற வனத்
 தில்
 क्षुरधारासु கூர்மையான கத்தி
 களால்

भिद्यमानान् च { துண்டுதுண்டாகச்
 சேதிக்கப்படுபவர்
 களாகவும்
 तृषितान् நீர்வேட்கை கொண்ட
 வர்களாய்
 पानीयं குடிக்கத்தண்ணீரை
 क्षारनद्यां एव { யமலோகத்தில் மர
 உப்புத்தண்ணீர்
 रुள்ளा कृशारमं என்ற
 நதியிலேயும்
 क्षुधितान् பசியால் வருந்தியவர்
 களை
 रौरवे हि ரொளரவமென்னும்
 நரகத்திலேயே
 याचमानान् च { வருந்தி வேண்டிக்
 கொண்டிருப்பவர்
 களாகவும்
 कृशान् च மெலிந்தவர்களாயும்
 दीनान् एव பார்க்கக் கோரமாயி
 ருப்பவர்களாயும்
 विवर्णान् च நிறம்மாறியவர்களாய்
 मुक्तमूर्धजान् தலைவிரிகோலமானவர்
 களாய்
 मलयङ्कधरान् { அசுத்தங்களை ஏராள
 மாய்ப் பூசிக்கொண்
 டிருப்பவர்களாய்
 कृशान् अपि அழுக்கடைந்தவர்
 களாயும்
 परिधावतः திரும்பி ஓடுகின்ற
 शवभूतान् च பிணமானவர்களாக
 வும்
 ददर्श கண்டான்.

कांश्चि गृहमुखेषु गीतवादित्रनिखनैः । प्रमोदमानान्द्राक्षीद्रावणः सुकृतैः स्वकैः ॥

रावणः "இராவணன்
कांश्चि च சிலர்களைமாத்திரம்
स्वकैः அவர்களது
सुकृतैः புண்ணியவிசேஷங்க
ளால்

गृहमुखेषु ரேத்தியானவிடு
களில்
गीतवादित्रनिखनैः கீதம், வாத்தியம் இவை
களின் நாதங்களால்
प्रमोदमानान् ஆனந்தப்பட்டாக்கொ
ண்டிருப்பவர்களால்
अद्राक्षीत् கண்டான்.

गोरसं गोप्रदातारो ह्यन्नं चैवान्नदायिनः । गृहांश्च गृहदातारः स्वकर्मफलमश्नतः ॥

सुवर्णमणिमुक्ताभिः प्रमदाभिरलङ्कृतान्

॥ १८ ॥

धार्मिकानपरांस्तत्र दीप्यमानान्स्वतेजसा । ददर्श सुमहाबाहु रावणो राक्षसाधिपः ॥ १९ ॥

सुमहाबाहुः "பெரும்பேர்வீர
னும்

गोरसं हि பசுவின் பாலையும்
अन्नदायिनः அன்னதானஞ்செய்த
வர்கள்

राक्षसाधिपः இராசக்ஷஸமன்னனு
रावणः இராவணன் [ராகிய
धार्मिकान् தர்மம் செய்தவர்
अपरान् வேறுசிலரை [களான
स्वतेजसा அவர்களதுதேஜஸால்
दीप्यमानान् விளங்குகிறவர்களாய்
तत्र அவ்விடத்தில்
स्वकर्मफलं தங்களதுதர்மங்களின்
பயனை

अन्नं एव அன்னத்தையும்
गृहदातारः கிருஹதானஞ்செய்த
வர்கள்

अश्नतः அனுபவிப்பவர்களாய்
गोप्रदातारः கோதானஞ்செய்தவர்
கள்

गृहान् च மாளிகைகளையும்
सुवर्णमणि- } தங்கமணிகளாலும்,
मुक्ताभिः } முத்துகளாலும்
अलङ्कृतान् அலங்கரிக்கப்பட்ட
प्रमदाभिः च தர்மபத்திகளோடே
யே

अलङ्कृतान् அனுபவிப்பவர்களாக
ददर्श कண்டான்.

ततस्तान्भिद्यमानांश्च कर्मभिर्दुःकृतैः स्वकैः । रावणो मोचयामास विक्रमेण बलाद्दली ॥

ततः "அப்பொழுது
बली பலிஷ்டனாகிய
रावणः இராவணன்
स्वकैः அவர்களது
दुःकृतैः துஷ்கிருத்தியங்களுக்
குரியதாகிய

कर्मभिः பயன்களால்
भिद्यमानान् தாக்கப்படுகின்ற
तान् அவர்களை
विक्रमेण பரர்க்கிரமத்தால்
बलात् च பலவந்தமாகவே
मोचयामास விடுவித்தான்.

प्राणिनो मोचितास्तेन दशग्रीवेण रक्षसा । सुखमापुर्णहूर्तं ते ह्यतिक्रान्तमचिन्तितम् ॥ २१ ॥

तेन "அந்த
दशग्रीवेण रक्षसा தசக்ரீவ அரக்கனால்
मोचिताः விடுவிக்கப்பட்ட
ते प्राणिनः அந்த மானிடர்கள்
अचिन्तितं இதுவரையில் நினைக்காததும்

अतिक्रान्तं हि அகஸ்மாத்தாய்ஸம்ப
வித்ததுமான
सुखं சுகத்தை
सुहूर्तं ஒருமுஹூர்த்தத்தகாலம்
आपुः அடைந்தார்கள்.

प्रेतेषु सुच्यमानेषु राक्षसेन महीयसा । प्रेतगोपाः सुसंकुद्धा राक्षसेन्द्रमभिद्रवन् ॥ २२ ॥

प्रेतेषु " பிரேதங்கள்
மஹீயசா பெரும் வலுக்கொண்ட
ராक्षसेन அரக்கனால்
सुच्यमानेषु விடுவிக்கப்பட்ட
பொழுது

प्रेतगोपाः பிரேதங்களின் காவ
லாளர்கள்
सुसंकुद्धा: மிகவும் கோபங்கொ
ண்டவர்களாகி
राक्षसेन्द्रं இராக்கூலமன்னனை
अभिद्रवन् மேல்விழ்ந்து
தாக்கினார்கள்.

ते प्रासैः परिवैः शूलैर्घुंसलैः शक्तितोमरैः । पुष्पकं समवर्षन्त शूराः शतसहस्रशः ॥ २३ ॥

ते " அந்த
शूराः சூரர்கள்
पुष्पकं புஷ்பகவிமானத்தை
முட்கள் புதைத்து
प्रासैः { வீசியெறிபுதைக்க
எறிபடைகளாலும்
परिवैः இரும்புலக்கை
களாலும்
शूलैः சூலங்களாலும்

पुष्पकं समवर्षन्त शूराः शतसहस्रशः ॥ २३ ॥
सुसलैः முஸலங்களாலும்
शक्तितोमरैः ஈட்டிகளாலும்
வேல்களாலும்
शतसहस्रशः நூற்றுக்கணக்காகவும்
ஆயிரக்கணக்காகவும்
सम वर्षन्त நீவிர்மாய் தாக்கினார்
கள்.

तस्यासनानि प्रासादान्वेदिकास्तोरणानि च । पुष्पकस्य बभञ्जुस्ते शीघ्रं मधुकरा इव ॥

ते " அவர்கள்
तस्य அந்த
पुष्पकस्य புஷ்பகவிமானத்தின்
आसनानि ஆஸனங்களையும்
प्रासादान् மேல்பாடினையும்
वेदिका: திண்ணைகளையும்

तोरणानि च வெளிக்கதவுகளையும்
मधुकरा: தேன் ஈக்கள்
इव எவ்வண்ணமோ,
ஆவ்வண்ணமே
शीघ्रं விரைவில்
बभञ्जु: உருவழித்தார்கள்.

देवनिष्ठानभूतं तद्विमानं पुष्पकं मृधे । भज्यमानं तथैवासीदक्षयं ब्रह्मतेजसा ॥ २५ ॥

मृधे " போசில்
भज्यमानं பிளவுண்ட
देवनिष्ठानभूतं தேவநிருமிதமான
तत् அந்த
पुष्पकं विमानं புஷ்பகவிமானம்

ब्रह्मतेजसा பிரம்மதேவனது
மகிமையால்
अक्षयं சேதமுறாததாய்
तथा एव முன்போலவே
आसीत् விளங்கிற்று.

असंख्या सुमहत्यासीत्स्य सेना महात्मनः । शूराणामुग्रयातूणां सहस्राणि शतानि च ॥

महात्मनः " மஹாத்மாவான
तस्य அவரது
सेना சேனையானது
सुमहती மிகப்பெரியதாயும்
असंख्या எண்ணிக்கணக்கிட
முடியாததாயும்
आसीत् இருந்தது.

शूराणामुग्रयातूणां सहस्राणि शतानि च ॥
उग्रयातूणां { உக்கிரமாய் பகை
தீர்த்துக்கொள்ள
வல்லவர்களாகிய
शूराणां சூரர்களின் (சேனைகள்)
शतानि நூற்றுக்கணக்காகவும்
सहस्राणि ஆயிரக்கணக்காகவும்
च அப்படியே இருந்தன.

ततस्ते सचिवास्तस्य यथाकामं यथाबलम् । अयुध्यन्त महावीराः स च राजा दशाननः ।।

ततः “அப்பொழுது
ச: அந்த
தசானன
ராஜா மன்னனும்
தச்ய அவனுடைய
மகாபீரா: மஹாவீரர்களாகிய

தே அந்த
சசிவா: ச மந்திரிகளும்
யதாசாமம் வேண்டியவரையில்
யதாபலம் திறத்தையெல்லாம்
வெளியிட்டுக்கொண்டு
அயுத்யந்த போர்புரிந்தனர்.

ते तु शोणितदिग्धाङ्गाः सर्वशस्त्रसमाहताः ।

राक्षसेन्द्रस्य “இராசுநஸமன்ன
தே அந்த [னுடைய
அமாத்யா: மந்திரிகள்
சர்வசாஸ்த்ர- } எல்லா சஸ்திரங்களா
சமாஹதா: } னும் செம்மையாய்ப்
புடைக்கப்பட்டவர்
களாய்

अमात्या राक्षसेन्द्रस्य चक्रुरायोधनं महत् ॥

शोणितदिग्धाङ्गाः உதிரப்பெருக்கெடுத்த
சரீரமுடையவர்களாய்
து இருக்கையிலும்
மஹத் தான
பாயோதனம் போரை
சக்ரு: செய்தார்கள்.

अन्योन्यं ते महाबाहा जघ्नः प्रहरणैर्भुशम् । यमस्य च महाबाहो रावणस्य च मन्त्रिणः ॥

महाबाहो “மஹாபாஹுவே,
ராவணச்ய இராவணனுடைய
தே அந்த
மन्त्रிண: ச மந்திரிகளும்
யமச்ய யமனுடைய
மகாபாஹா: ச கிரத்தபெற்ற வீரர்
களும்

प्रहरणै: ஆயுதங்களால்
अन्योन्यं ஒருவரை ஒருவர்
भुशं மெத்தவும்
जघ्न: அடித்துக் கொண்
டார்கள்.

अमात्यांस्तांस्तु सन्त्यज्य यमयोधा महाबलाः । तमेव चाभ्यधावन्त शूलवर्षैर्दशाननम् ॥

महाबलाः “மஹாபலிஷ்டர்
களான
யமயோதா: யமனது போர்
தாந் அந்த [வீரர்கள்
அமாத்யாந் மந்திரிகளை
து இத்தஸ்தித்யில்

सन्त्यज्य விட்டு
तं அந்த
दशाननं एव தசானனையே
शूलवर्षै: ச சூலவருஷங்களைக்
கொண்டே
अभ्यधावन्त தாக்கினார்கள்.

ततः शोणितदिग्धाङ्गाः प्रहार्जर्जरीकृतः ।

राक्षसाधिपः “இராசுநஸ மன்னன்
पुष्पके पुष्पकவிமானத்தில்
ततः அப்பொழுது
प्रहार्ज: அடிகளால்
जर्जरीकृतः காயங்கள் பெற்
றவனாய்

फुल्लाशोक इवाभाति पुष्पके राक्षसाधिपः ॥

शोणितदिग्धाङ्गाः { உதிரத்தால் பூசப்
பட்ட சரீரமுடையவனாய்
फुल्लाशोक: நன்றாய்ப்பூத்த
அசோகமரம்
इव போல்
अभाति விளங்கினான்.

स तु शूलगदाप्रासाञ्छक्तिमरसायकान् । मुसलानि शिला वृक्षान्मुमोचास्त्रबलाद्बली॥

| | | | |
|-------------------------|--|-------------|------------------------------|
| बली सः | “ பலிஷ்டனான அவன் | मुसलानि | முஸலமென்ற |
| शूलगदाप्रासाञ् | { சூலங்களையும், கதை களையும், பிராஸ மென்கிற ஆயுதங் களையும், சக்தி என்கிற ஆயு தங்களையும், தோமர மென்கிற ஆயுதங் களையும், பாணங் களையும் | शिलाः | ஆயுதங்களையும் பாறைகளையும் |
| शक्तिमर- } सायकान् } | | वृक्षान् तु | மரங்களையும் |
| | | अस्त्रबलात् | அஸ்திர மகிமையால் |
| | | मुमोच | விடுத்தான். |

तरुणां च शिलानां च शस्त्राणां चातिदारुणम् । यमसैन्येषु तद्वर्ष पपातातिभयङ्करम् ॥

| | | | |
|--|--|---|--|
| तरुणां च शिलानां च शस्त्राणां च तत् वर्षं | “ மரங்களுடையவும் பாறைகளுடையவும் ஆயுதங்களுடையவும் அந்த வருஷமானது | यमसैन्येषु अतिदारुणं अतिभयङ्करं पपात | யமனது சேனைகளில் அதி உக்கிரமாகவும் அதி பயங்கரமாகவும் பபாது |
|--|--|---|--|

तांस्तु सर्वाङ्घ्रिनिर्भिद्य तदस्त्रमपहत्य च । जघ्रस्ते राक्षसं घोरमेकं शतसहस्रशः ॥ ३४ ॥

| | | | |
|--|---|---|---|
| ते तान् सर्वान् विनिर्भिद्य तदस्त्रं च | “ அவர்கள் அவைகள் எல்லாவற்றையும் பொடியாக்கி அவனது அஸ்திரத் தையும் | अग्रहस्य घोरं राक्षसं एकं तु शतसहस्रशः ३३तुः | அழித்து கொடிய இராசூஸன் ஒருவனையே கோடிக்கணக்காக புடைத்தார்கள். |
|--|---|---|---|

परिवार्य च तं सर्वे शैलं मेघोत्करा इव । भिन्दिपालैश्च शूलैश्च निरुच्छ्वासमपोथयन् ॥

| | | | |
|---|---|--|---|
| सर्वे च तं च शैलं मेघोत्कराः इव | “ எல்லோருமாய் அவனொருவனையே ஒரு மலையை மேகக்கூட்டங்கள் எவ்வண்ணமோ, அவ்வண்ணமே | परिवार्यं भिन्दिपालैः शूलैः च निरुच्छ्वासं अपोथयन् | சூழ்ந்துகொண்டு கைவேல்களாலும் சூலங்களாலும் திக்கு முக்காடுபவனாக சாடினார்கள். |
|---|---|--|---|

विमुक्तकवचः क्रुद्धः सिक्तः शोणितविस्त्रवैः । ततः स पुष्पकं त्यक्त्वा पृथिव्यामवतिष्ठत ॥

| | | | |
|---|--|---|---|
| क्रुद्धः सः ततः विमुक्तकवचः शोणितविस्त्रवैः | “ மூர்க்கனான அவன் அப்பொழுது கவச மிழந்தவனாய் உதிரப்பெருக்கு | सिक्तः पुष्पकं त्यक्त्वा पृथिव्यां अवतिष्ठत | நனைக்கப்பட்டவனாய் புஷ்பகவிமானத்தை விட்டு பூமியில் ஸ்தம்பித்து நின்று விட்டான். |
|---|--|---|---|

ततः स कार्मुकी वाणी समरे चाभिवर्तत । लब्धसंज्ञो मुहूर्तेन क्रुद्धस्तस्यौ यथाऽन्तकः ॥

ச: க்ருஃ: “ அந்த மூர்க்கண்
முஹூர்தன ஒரு முஹூர்த் த்த
காலத்தில்
லब्धसंज्ञ: தன் நினைவுகொண்
டவனாகி
तस्यौ சற்று நிகரானித்து
நின்றான்.
तत: அதினமேல்

कार्मुकी வில்லைக் கையில்
கொண்டவனாயும்
वाणी च பாணத்தைக் கையில்
கொண்டவனாயும்
समरे போரில்
अन्तकः यथा யமன்போல்
अभिवर्तत மேல்விழ்ந்து
தாக்கினான்.

ततः पाशुपतं दिव्यमस्त्रं सन्धाय कार्मुके । तिष्ठ तिष्ठेति तानुत्त्वा तच्चापं विचर्षसः ॥

ச: “ அவன்
तत: அப்பொழுது
दिव्यं திவ்யமான
पाशुपतं பாசுபதமென்ற
अस्त्रं அஸ்திரத்தை
कार्मुके வில்லில்
सन्धाय சந்தானஞ்செய்து

तान् அவர்களைப்பார்த்து
तिष्ठ तिष्ठ “நில், நில்”
इति என்று
उच्चवा எச்சரித்து
तत् அந்த
चापं கோதண்டத்தை
विचर्षसः இழுத்துவளைத்தான்.

आकर्णात्स विकृष्याथ चापमिन्द्रारिराहवे । मुमोच तं शरं क्रुद्धस्त्रिपुरे शङ्करो यथा ॥

इन्द्रारि: “ இந்திர சத்ருவான
स: அவன்
आहवे போரில்
क्रुद्ध: கோபங்கொண்ட
வனாகி
तं அந்த
चापं வில்லை
आकर्णात् காதுபர்யந்தம்

विकृष्य இழுத்து
शङ्करो: சங்கரபகவான்
स्त्रिपुरे திரிபுரத்தில்
यथा எவ்வண்ணமோ,
அவ்வண்ணமே
शरं பாணத்தை
अथ இப்பொழுது
मुमोच விடுத்தான்.

तस्य रूपं शरस्यासीद्विधूमञ्ज्वालमण्डलम् । वनं दहियतो घर्मे दावाधेरिव मूर्च्छितः ॥

घर्मे “ கடுங்கோடையில்
वनं காட்டை
मूर्च्छित: சாம்பலாய்
दहियत: எரிக்கும்
दावाधे: காட்டுத்தீயினு
டையது

तस्य அந்த
शरस्य பாணத்தின்
रूपं சக்தி
विधूमञ्ज्वालमण्डलं புகை இன்றி எரிகிறது
அக்கினிஜ்வாலையாக
आसीत् திகழ்ந்தது.

इव { எவ்வண்ணமிருக்கு
மோ, அவ்வண்ண
மே யிருக்கிறதாய்

ज्वालामाली स तु शरः क्रव्यादानुगतो रणे । मुक्तो गुल्मान्द्रुमांश्चापि भस्म कृत्वा प्रधावति ॥

| | | | |
|---------------------------|---|--------------------------------|--|
| रणे | “ போரில் | ज्वालामाली | ஜ்வாலையின் சக்கிர |
| क्रव्यादानुगतः } अपि } | அரக்கனது இஷ்டம் போல் செய்து முடிக்க வல்லதா கியதும் | गुल्मान् द्रुमान् च भस्म | முடையதாய் சிறு மரங்களையும் பெரிய மரங்களையும் சாம்பலாக |
| मुक्तः तु | விடுக்கப்பட்டதுமான | कृत्वा | செய்துகொண்டு |
| सः शरः | அந்தப் பாணம் | प्रधावति | தாண்டிவந்தது. |

ते तस्य तेजसा दग्धा सैन्या वैवस्वतस्य तु । रणे तस्मिन्निपतिता दावदग्धा नगा इव ॥

| | | | |
|------------|-----------|-----------|--|
| तस्मिन् | “ அந்த | तेजसा | வீரயத்தால் |
| रणे | போரில் | दग्धाः | எரிக்கப்பட்டவை |
| तु | இப்பொழுது | दावदग्धाः | களாய் காட்டுத்தீயினால் கொளுத்தப்பட்ட |
| वैवस्वतस्य | யமனுடைய | नगाः इव | மரங்கள்போல் |
| ते | அந்த | निपतिताः | அழிந்தன. |
| सैन्याः | ஸேனைகள் | | |
| तस्य | அதனுடைய | | |

ततस्तु सचिवैः सार्धं राक्षसो भीमविक्रमः । ननाद सुमहानादं कम्पयन्निव मेदिनीम् ॥

| | | | |
|------------|---------------|------------|--------------------------|
| ततः | “ அப்பொழுது | कम्पयन् इव | நடுக்கச்செய்பவன் |
| भीमविक्रमः | அதி பராக்கிரம | सचिवैः | போல் மந்திரிமார்களோடு |
| | சாலியாகிய | सार्धं | கூட |
| राक्षसः | அரக்கன் | सुमहानादं | ஓர் பெரும் கோஷத் |
| मेदिनीं तु | உலகத்தையே | ननाद | முழக்கினான். [தை |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे एकविंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 21534

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 810

द्वाविंशः सर्गः—இருபத்திரண்டாவது ஸர்க்கம். ॥ 22 ॥

यमविजयः—யமனை ஜயிப்பது.

स तस्य तु महानादं श्रुत्वा वैवस्वतो यमः । शत्रुं विजयिन् मेने स्वबलस्य च संक्षयम् ॥

| | | | |
|----------|------------------|-----------|-------------------------------|
| वैवस्वतः | “ சூரியபகவானுடைய | शत्रुं | சத்ருவை |
| सः | அந்த [புதல்வரான | विजयिन् | வெற்றிகொண்டவனு |
| यमः | யமன் | स्वबलस्य | யிருப்பதையும் தனது ஸையத்தி |
| तस्य | அவனுடைய | संक्षयं च | னுடைய |
| महानादं | பெரும் கோஷத்தை | मेने | அழிவையும்பற்றி |
| श्रुत्वा | கேட்டு | | தனக்குள்ளேயே |
| तु | இப்பொழுது | | ஆலோசனை செய்தார். |

स हि योधान्हतान्मत्वा क्रोधसंरक्तोचनः । अवर्षीन्वरितं मृतं रथोऽयमुपनीयताम् ॥२॥

ச: "அவர்
 ஹதாந் கொலையுண்ட
 யோவாந் போர்ஷீர்ஊரை
 மத்வா நினைத்து
 கோபசர்ரக்தோசந: கோபத்தால் சிவந்த
 கண்களுற்றவராய்

சூத் ஸாரதிக்கு
 அய் ரத: ஹி 'இந்த போர்ரதமே
 வ்ரதீந் ஷீராவில்
 உபநீயதாந் கொண்டுவரப்பட்ட
 டும்' என்று
 அவ்ரீந் கட்டளையிட்டார்.

तस्य मृतो रथं दिव्यमुपस्थाप्य महास्वनम् । स्थितः स च महातेजा आरूरोह महारथम् ॥

पाशमुद्गरहस्तश्च मृत्युस्तस्याप्रतः स्थितः

॥ ३ ॥

தச்ய "அவரது
 சூத் ஸாரதி
 மஹாஸ்வநமென்ற
 பேரிகையையுடைய
 திவ்யம் திவ்யமான
 ரதம் போர்ரதத்தை
 உபஸ்தாப்ய எதிரில் கொண்டு
 வந்து நிறுத்தி
 சூத: தயாராய் நின்றான்.
 மஹாஜேஜஸ்வியான

ச: அவர்
 மஹரதம் பஹாரதத்தில்
 ச ச தக்ஷணமே
 ஆரூரஹ ஏறிக்கொண்டார்.
 தச்ய அவருக்கு
 அபரத: எதிரில்
 மூது: மிருத்யுதேவன்
 பாசமும், இரும்பு
 பாசமுட்கரஹ: உலக்கையையும் கை
 யில் கொண்டவராய்
 சூத: நின்றார்.

येन संक्षिप्यते सर्वं त्रैलोक्यमिदमव्ययम् । कालदण्डस्तु पार्श्वस्थो मूर्तिमानस्यन्दनोत्तमे ॥

यमपहरणं दिव्यं प्रदहन्निव तेजसा

॥ ४ ॥

யேந "எந்த அவரால்
 ஹ்ந் இந்
 த்ரீலோக்யம் மூவுலகம்
 சர்வம் எல்லாமும்
 அவ்யயம் சாச்வதமாயுள்ளதும்
 திவ்யம் மிக்க ஆச்சரியகர
 மாயிருக்கிறதான
 யமபஹரணம் யமனழிவுக்குட்பட்
 டதாய்

சங்க்ஷிப்யதே அழிக்கப்படுகிறது.
 காலதண्ड: து காலதண்டமும்
 மூர்தீமான சரீர உருவம்கொண்
 டதாய்
 தேஜஸால்
 த்ரஹ்ந் இவ்விவ்விது
 போன்றதாய்
 ச்யந்நோத்மே உத்தமமான ரதத்தில்
 பாஷ்ஸ்த: பக்கத்தில் நின்றது.

तस्य पार्श्वेषु निच्छिद्राः कालपाशाः प्रतिष्ठिताः । पावकस्पर्शसङ्काशः स्थितो मूर्तिश्च मुद्गरः ॥

தச்ய "அதனுடைய
 பாஷ்ஷே பக்கங்களில்
 காலபாசா: காலபாசங்கள்
 நிச்சித்ரா: இடைவெளியில்லாமல்
 பரதிஸ்திதா: நிலைபெற்றிருந்தன.

பாவகஸ்பர்ஸங்காச: அக்னிஸ்பரிசத்துக்கு
 நிகரான
 மூத்ர: ச முத்தாமெனும்
 மூர்தீ: இரும்புத்தடியும்
 சூத: சரீர உருவம் கொண்
 சூத: நின்றது. [டதாய்

ततो लोकत्रयं क्षुब्धमकम्पन्त दिव्यौकसः । कालं दृष्ट्वा तथा क्रुद्धं सर्वलोकभयावहम् ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------|----------------------|---------------------------------------|
| दिव्यौकसः | “ தேவர்கள் | सर्वलोक- भयावहं } | மூவுலகமும் அஞ்சி நடுங்கும்படி செய் |
| कालं | யமனை | दृष्ट्वा | கண்டு, [பவராயும் |
| तथा | அவ்வண்ணம் | ततः | அப்பொழுது |
| क्रुद्धं | கோபங்கொண்டிருப் பவராயும் | लोकत्रयं | மூவுலகமும் |
| | | क्षुब्धं | கலக்கமுற்றதாக |
| | | अकम्पन्त | நடுங்கினார்கள். |

ततः प्रचोदयन्मृतत्तानश्वान् रुधिरप्रभान् । प्रययौ भीमसन्नादो यत्र रक्षःपतिः स्थितः ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------|-----------|-----------------|
| ततः | “ அப்பொழுது | प्रचोदयन् | உற்சாகப்படுத்தி |
| सूतः | ஸாரதி | | யோட்டிக்கொண்டு |
| रुधिरप्रभान् | ரத்தவர்ணமுள்ள | रक्षःपतिः | அரக்கமன்னன் |
| तान् | அந்த | स्थितः | இருந்தது |
| अश्वान् | குதிரைகளை | यत् | எங்கே அவ்விடம் |
| भीमसन्नादः | பெரும் கூச்சலிடு பனவாய் | प्रययौ | புறப்பட்டான். |

मुहूर्तेन यमं ते तु हया हरिहयोपमाः । प्रापयन्मनसस्तुल्या यत्र तत्प्रस्तुतं रणम् ॥ ८ ॥

| | | | |
|------------|---|-----------|----------------------------------|
| ते | “ அந்த | मुहूर्तेन | ஒருகூணத்தில் |
| हरिहयोपमाः | { இந்திரனது ‘ஹரி’ என்ற குதிரைக ஒருக்குச் சமமான வைகளும் | प्रस्तुतं | உடனே செய்யவேண் |
| मनसः | மனோவைகத்திற்கு | तत् | அந்த [டியதாகிய |
| तुल्याः | நிகரான வேகமுடைய வைகளுமான | रणं | போர் |
| हयाः | குதிரைகள் | यत् तु | எவ்விடத்திலேயோ அவ்விடத்திற்கு |
| | | यमं | யமனை |
| | | प्रापयन् | கொண்டுபோய் சேர்த்தன. |

दृष्ट्वा तथैव विकृतं रथं मृत्युसमन्वितम् । सचिवा राक्षसेन्द्रस्य सहसा विप्रदुद्रुवुः ॥ ९ ॥

| | | | |
|-----------------|---|----------------|--|
| राक्षसेन्द्रस्य | “ அரக்கமன்னனது | रथं | இரத்ததை |
| सचिवाः | மந்திரிமார்கள் | दृष्ट्वा एव | கண்டதுமே |
| मृत्युसमन्वितं | மிருத்புதேவதையுட னிருக்கிறதும் | सहसा | சடக்கென |
| विकृतं | { இதுவரையில் பார்த் திராததாய் அப்புத மாயிருக்கிறதான | तथा | அப்படியே |
| | | विप्रदुद्रुवुः | திடுக்கிட்டுத் திரும்பி நின்றவீட்டார்கள். |

लघुसत्त्वतया ते हि नष्टंज्ञा भयादिताः । वैह वोढुं समर्थाः स इत्युक्त्वा प्रययुर्दिशः ॥

ते हि “ அவர்களோடு வெளில்
लघुसत्त्वतया ஆற்றல் குறைவினால்
भयादिताः பயத்தால் திகிலடை
नष्टंज्ञाः அறிவு அழிந்தவர்
कनायं களாய்

इह वोढुं 'இங்கு
न समर्थाः स போர்புரிய
इति வல்லோ மல்லோம'
उक्त्वा என்று
दिशः சொல்லிவிட்டு
प्रययुः திசைகள்தோறும்
ஒடி விட்டார்கள்.

स त् तादृशं दृष्ट्वा रथं लोकभयावहम् । नानुभूयत दशमीवो न चापि भयमाविशत् ॥

स: “ அந்த
दशमीवः तु தசமீவீடுவெளில்
लोकभयावहं உலகமே நடுங்குமா
रिणुकुक्किन्त

रथं ரதத்தை
दृष्ट्वा கண்டு
भयं च பயமென்பதையே
न आदिशत् அடையவில்லை.
अपि கொஞ்சமேனும்
न अनुभूयत கவறப்படவுமில்லை.

स तु रावणमासाद्य व्यसृजच्छक्तितोमरान् । यमो मर्माणि संक्रुद्रो रावणस्योपकृन्तत् ॥

स: “ அந்த
यमः யமன்
संक्रुद्रः மிக்ககோபங்கொண்ட
वराकि
रावणं இராவணனை
आसाद्य எதிர்த்து

शक्तितोमरान् சக்தி, தோமரமென்ற
ஆயுதங்களை
व्यसृजत् விடுத்தார்.
रावणस्य இராவணனுடைய
मर्माणि तु மர்மஸ்தானங்களி
उपकृन्तत् வேலே
துன்புறுத்தினார்.

मर्मसु छिद्यमानेषु रावणो राक्षसेश्वरः । सहंस्तस्थौ रुजं घोरां भिद्यमान इवाचलः ॥

राक्षसेश्वरः “ ராக்ஷஸமன்னனாகிய
रावणः இராவணன்
मर्मसु மர்மஸ்தானங்கள்
छिद्यमानेषु துன்புறுத்தப்படுகை
पिणुமம்
घोरां அஸஹ்யமான

रुजं நோவை
सहन् பாராட்டாதவனாய்
भिद्यमानः பிளவுண்ட
अचलः மலை
इव போல்
तस्थौ சலிப்புறுத்தினுந்தான்.

रावणस्तु ततः स्वस्थः शरवर्षं मुमोच ह । तस्मिन्वैवस्वतरथे तोयवर्षमिवाभ्युदः ॥१४॥

ततः “ அதன்மேல்
रावणः இராவணன்
स्वस्थः तु சுகமாயிருப்பவனாயே
तस्मिन् அந்த
वैवस्वतरथे யமனது தேரில்
शरवर्षं சரமாரியை

अभ्युदः பேசும்
तोयवर्षं ஜலதாரையை
इव எவ்வண்ணமே
मुमोच அவ்வண்ணமே
ह பொழிந்தான்.
காண்!

शरास्ते वज्रसङ्काशाश्छाद्यन्ति रणे यमम् । यथाऽचलं महाघोरा नानावर्णा वलाहकाः ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------------|-----------|-------------------|
| ते | “இந்த | शराः | சரங்கள் |
| वज्रसङ्काशाः | வஜ்ராயுதத்திற்குச்சு மானமானவைகளும் | रणे | போர்க்களத்தில் |
| महाघोराः | மஹா பயங்கரமான வைகளும் | यमं | யமனை |
| नानावर्णाः | பலவித உருவங்களு டையனவுமான | वलाहकाः | மேகங்கள் |
| | | अचलं | ஒரு மலையை |
| | | यथा | எப்படியோ அப்படியே |
| | | छाद्यन्ति | முடிக்கொண்டன. |

तान्हित्य शरांस्तूर्णं रात्रणस्य यमः स्वयम् । ततः प्रहरणं घोरं मुमोचारिनिषूदनः ॥१६॥

| | | | |
|------------|-----------------|---------|---------------|
| अरिनिषूदनः | “சத்ருஸம்ஹாரகரா | तूर्णं | விரைவில் |
| यमः | யமன் [கிய | निहत्य | ஒழித்து |
| रात्रणस्य | இராவணனது | ततः | அதன்மேல் |
| तान् | அந்த | घोरं | கடுமையான |
| शरान् | சரங்களை | प्रहरणं | துன்பத்தை |
| स्वयं | லக்ச்யமின்றி | मुमोच | விளைவித்தார். |

ततो महाशक्तिशरैः पात्यमानो महोरसि । नाशक्रोत्प्रतिकर्तुं स राक्षसः श्लयपीडितः ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------|-------------|--------------------------------------|
| ततः | “அப்பொழுது | महोरसि | அகன்றமார்பில் |
| सः | அந்த | पात्यमानः | வீட்கப்பட்டவனாயும் |
| राक्षसः | அரக்கன் | श्लयपीडितः | பாணக்கூர்கள் அழிந் திருந்தவனாயும் |
| महाशक्तिशरैः | மஹாசக்திகொண்ட சரங்களால் | प्रतिकर्तुं | பிரதிசெய்ய |
| | | न अशक्नोत् | முடியாதிருந்தான். |

एवं नानाप्रहरणैर्यमेनामित्रकर्शिना । सप्तरात्रं कृतः संख्ये विज्ञो विमुखो रिपुः ॥१८॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------------|--------|------------------------------|
| अमित्रकर्शिना | “சத்ருக்களை அழிப் யானால் [பவராகிய | रिपुः | சத்ரு |
| यमेन | போரில் | विज्ञः | பிரகளை தவறியவன கவும் |
| सप्तरात्रं | ஏழுநாள்வரையில் | विमुखः | பிரதிகூலமேயடைந்த வனாகவும் |
| एवं | இவ்வாறு | कृतः | செய்யப்பட்டான். |
| नानाप्रहरणैः | பலவிதத் துன்பங்க ளால் | | |

तदाऽऽसीत्तुमुलं युद्धं यमराक्षसयोर्द्वयोः । जयमाकाङ्क्षतोर्वीर समरेष्वनिवर्तिनोः ॥ १९ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------|-------------|---------------------|
| वीर | “வீரரே, | यमराक्षसयोः | யமன் ராக்ஷஸனுக்கிய |
| समरेषु | போரில் | द्वयोः | இவ்விருவர்களுக்கும் |
| जयं | ஜயத்தை | तदा | அப்பொழுது |
| आ हांसितोः | விரும்பியவர்களும் | तुमुलं | பயங்கரமான |
| अनिवर्तिनोः | பின்வாங்காதவர்களு மான | युद्धं | போர் |
| | | आसीत् | நடைபெற்றது. |

ततो देवाः सगन्धर्वाः सिद्धाश्च परमर्षयः । प्रजापतिं पुरस्कृत्य समेतास्तद्रणाजिरम् ॥

| | | | |
|------------|--------------------|------------|---------------------|
| ततः | “ அப்பொழுது | प्रजापतिं | பிரம்மதேவரை |
| सगन्धर्वाः | கந்தர்வர்களோடு | पुरस्कृत्य | முன்னிட்டுக்கொண்டு |
| देवाः | தேவர்களும், [கூடிய | तत् | அந்த |
| सिद्धाः | சித்தர்களும் | रणाजिरं | போர்க்களத்திற்கு |
| परमर्षयः च | பரமரிஷிகளும் | समेताः | வந்துசேர்ந்தார்கள். |

संवर्त इव लोकानां क्रुध्यतोरभवत्तदा । राक्षसानां च मुख्यस्य प्रेतानामीश्वरस्य च ॥

| | | | |
|------------|-----------------|---------|--------------|
| राक्षसानां | “ அரக்கர்களின் | लोकानां | உலகங்களுக்கு |
| मुख्यस्य च | தலைவனுக்கும் | संवर्तः | பிரளயகாலம் |
| प्रेतानां | பிரேதங்களுக்கு | इव | போலவே |
| ईश्वरस्य च | நாயகருக்கும் | तदा | அக்காலம் |
| क्रुध्यतः | கோபம்வந்தவளவில் | अभयत् | தோன்றிற்று. |

राक्षसेन्द्रस्ततः क्रुद्धश्चापमாயम्य संयुगे । निरन्तरमिवाकाशं कुर्वन्वाणांस्ततोऽसृजत् ॥२२॥

| | | | |
|---------------|----------------|------------|---------------|
| ततः | “ அனந்தரம் | ततः | அதிலிருந்து |
| राक्षसेन्द्रः | இராக்கூஸமன்னன் | बाणान् | பாணங்களை |
| संयुगे | போரில் | आकाशं | ஆகாசத்தை |
| क्रुद्धः | கோபங்கொண்டவ | निर तरं इव | இடைவெளியேயில் |
| | னாய் | | லாததாய் |
| चापं | வில்லை | कुर्वन् | செய்பவனாய் |
| आयम्य | வளைத்து | असृजत् | விடுத்தான். |

मृत्युं चतुर्भिर्विशिखैः सूतं सप्तभिरद्वेयत् । यमं शतसहस्रेण शीघ्रं मर्मस्वताडयत् ॥ २३ ॥

| | | | |
|----------|-----------------|-----------|------------------|
| मृत्युं | “ மிருத்யுதேவனை | यमं | யமனை |
| चतुर्भिः | நான்கு | ईवं | வேகமாய் |
| सूतं | தேர்ப்பர்களை | मर्मसु | மர்மஸ்தானங்களில் |
| सप्तभिः | ஏழு | शतसहस्रेण | கோடிக்கணக்காய் |
| विशिखैः | பாணங்களால் | अतद्वयत् | தாக்கினான். |
| अद्वेयत् | கலக்கினான். | | |

ततः क्रुद्धस्य सहसा यमत्याभिविनिःसृतः । ज्वालामाली स निश्वासाद्द्रनात्क्रोधपावकः ॥

| | | | |
|------------|-----------------|--------------|-------------------|
| ततः | “ அதனால் | ज्वालामाली | கொழிந்துவிட்டெரி |
| क्रुद्धस्य | கோபங்கொண்ட | | கின்றதாய் |
| यमस्य | யமனது | सहसा | கடுமையாய் |
| सः | அந்த | वदनात् | முகத்தினின்றும் |
| क्रोधपावकः | கோபாக்கினியானது | निश्वासात् | ச்வாசத்தினின்றும் |
| | | अभिविनिःसृतः | வெளிக்கொம்பிற்று. |

ततोऽपश्यंस्तदाश्चर्यं दैत्यदानवराक्षसाः । क्रोधजं पावकं दीप्तं दिग्भ्रान्तं रिपोर्विलम् ॥

ततः
क्रोधजं
पावकं
दीप्तं
रिपोः
वर्णं

“ அப்பொழுது
கோபத்தினாலுண்
டான
அக்கினியை
எரிகிறதாய்
சத்ருவினது
தையத்ததை

दिग्भ्रान्तं
तत्
आश्चर्यं
दैत्यदानवराक्षसाः
तदा
अपश्यन्

பாழாக்குகிறதாய்
அந்த
ஆச்சர்யத்தை
தையர்கள், தானவர்
கள், இராக்ஷஸர்கள்
அப்பொழுது
நேரில் பார்த்தார்கள்.

मृत्युस्तु परमक्रुद्धो वैवस्वतमथाब्रवीत्

मृत्युः
परमक्रुद्धः
तु

“ மிருத்யுதேவன்
அதிகக் கோபங்கொ
ண்டவனாகி
இத்தருணத்தில்

॥ २६ ॥

वैवस्वतं
अथ
अब्रवीत्

யமனிடம்
இப்படி
விண்ணப்பஞ்செய்
தான் :

मुञ्च मां देव शीघ्रं च निहन्मि समरे रिपुम्

देव
मां
मुञ्च
समरे

“ஸ்வாமியே!
எனக்கு
விடைதந்தருளும்.
போரில்

॥ २७ ॥

शिपुं
शीघ्रं च
निहन्मि

சத்ருவை
விரைவிலேயே
நான் கொன்றுவிடுகி
றேன்.

नरकः शम्बरो वृत्रः शम्भुः कार्तिस्वरो बली । वैरोचनश्च नमुचिस्तावुभौ मधुकैटभौ ॥
एते चान्ये च बहवो बलवन्तो दुरासदाः । विनिपन्ना मया दृष्टाः का चिन्ताऽस्मिन्निशाचरे॥

दृष्टाः
बलवन्तः
दुरासदाः च
एते
नरकः
शम्बरः
वृत्रः
शम्भुः
कार्तिस्वरः
बली
दैरोचनः
नमुचिः

“ பெயர்போன
பலிஷ்டர்களும்.
எவராலும் வெல்வதற்
கரியவர்களுமான
இந்த
நரகாசுரன்
சம்பராசுரன்
விருத்திராசுரன்
சம்பு
கார்த்தஸ்வரன்
பலி சக்கிரவர்த்தி
வைரோசனன்
நமுகி

तौ
उभौ
मधुकैटभौ च
अन्ये
बहवः च
मया
विनिपन्नाः
अस्मिन्
निशाचरे
चिन्ता
का

அந்த
இருவர்களாகிய
மதுகைடபர்களும்
இவர்களல்லாத
பலரும்
என்னால்
ஒழிக்கப்பட்டிருக்கி
றார்கள்.
இந்த
அரக்கன் விஷயத்தில்
சிந்தை
ஏன்?

सुञ्च मां साधु धर्मज्ञ यावदेनं निहन्म्यहम् । न हि कश्चिन्मया दृष्टो बलवानपि जीवति ॥

| | | | |
|---------|--------------------|------------|--------------------|
| धर्मज्ञ | “தருமடறிந்தவரே, | यावत् | இதோ |
| साधु | இதுவரையில் நடை | निहन्मि | கொன்றுவிடுகிறேன்; |
| | பெற்றது போதும்; | मया | என்றால் |
| मां | எனக்கு | दृष्टः | தாக்கப்பட்டவன் |
| सुञ्च | கட்டளையிட்டருளும்; | कश्चिन् हि | எவனும் |
| एवं | இவனை | बलवान् अपि | பலிஷ்டனாய் இருந்தா |
| अहं | நான் | न जी रति | உயிருடனிரான். [ஊம் |

बलं मम न खल्वेतन्मर्यादैषा निसर्गतः । स दृष्टो न मया कालं मुहूर्तमपि जीवति ॥३१॥

| | | | |
|---------|-------------------|----------|--------------------|
| एतत् | “இது | निसर्गतः | என் ஸ்வபாவசித்தம்; |
| मम | எனது | सः | அவன் |
| बलं | ஸரமர் த்தியத்தைப் | मया | என்றால் |
| | பற்றி | दृष्टः | தாக்கப்பட்டவன் |
| न खलु | நான் பிரார்த்திக் | अप | என்றால் |
| एषा | இந்த [கிறேனில்லை. | मुहूर्तं | ஒரு முஹூர்த்த |
| मर्यादा | தொன்றுதொட்டு | कालं | காலமும் |
| | வந்த தருமநியமனம் | न जीवति | ஜீவித்திரான்.’ |

तस्यैवं वचनं श्रुत्वा धर्मराजः प्रतापवान् । अब्रवीच्च तं मृत्युं त्वं तिष्ठैनं निहन्म्यहम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------|----------|-------------------|
| प्रतापवान् | “தேஜோமபராகிய | मृत्युं | மிருத்யுதேவனைப் |
| धर्मराजः | தருமராஜன் | त्वं | ‘நீ [பார்த்து |
| तस्य | அவனது | तिष्ठ | சம்பரா இரு; |
| एवं | இந்த | अहं | நான் |
| वचनं | பிரார்த்தனைக்கு | एवं | இவனை |
| श्रुत्वा | செவிசாய்த்து | निहन्मि | கொன்றுவிடுகிறேன்’ |
| तत्र | அதுவிஷயத்தில் | | என்று |
| तं | அந்த | अब्रवीत् | திருகாய்டலர்ந்தரு |
| | | | ளிரான். |

ततः संरक्तनयनः क्रुद्धो वैश्वसतः प्रभुः । कालदण्डमभोधं तु तोलयाभास पाणिना । ३३॥

| | | | |
|------------|------------------|-------------|-------------------|
| ततः | “அதன்மேல் | अमोघं | என்றும், எங்கும், |
| वैश्वसतः | வைவஸ்வத | | வீண்போகாத |
| प्रभुः | ஸ்வாமி | कालदण्डं तु | காலதண்டத்தையே |
| क्रुद्धः | கோபங்கொண்டவ | पाणिना | கையால் |
| | ராய் | तोलयाभास | உயர்த்தூக்கிரார். |
| संरक्तनयनः | சிவந்த கண்களுற்ற | | |
| | வராய் | | |

यस्य पार्श्वेषु निखिलाः कालपाशाः प्रतिष्ठिताः ।

पावकाशनिसङ्काशो मुद्गरो मूर्तिमान्स्थितः

॥ ३४ ॥

| | |
|---|--------------------------------------|
| यस्य | “ எந்த அதுனுடைய |
| पार्श्वेषु | பக்கங்களில் |
| कालपाशाः | காலபாசங்கள் |
| निखिलाः | எல்லாமுமே |
| प्रतिष्ठिताः | வந்து நின்றன. |
| दर्शनादेव यः प्राणान्प्राणिनामपकर्षति । किं | புனஸ்தாடனாஸ்பர்ஷாஸீடனாஹ்ஸபி தேஹிந் ॥ |
| यः | “ எந்த அது |
| प्राणिनां | பிராணிகளின் |
| प्राणान् | உயிர்களை |
| दर्शनात् एव | கண்டமாத்திரத்திலேயே |
| अपकर्षति | ஆகர்ஷித்துவிடுகிறது. |

| | |
|-----------------|-----------------------------------|
| पावकाशनि-ङ्काशः | நெருப்புக்கும், இடிக்கும் நிகரான |
| मुद्गरः | முக்கரமென்ற இரும்புத்தண்டம் |
| मूर्तिमान् | உருவமெடுத்துக் கொண்டதாய் |
| स्थितः | வந்து நின்றது. |
| अपि | இப்படியிருக்கையில் |
| देहिनः | பிராணிகளை |
| स्पर्शात् | தொட்டு |
| ताडनात् वा | அடித்துத் துன்புறுத்துகிறதென்றால் |
| किं पुनः | என்னென்று சொல்லக்கூடும். |

स ज्वालापरिवारस्तु निर्दहन्निव राक्षसम् ।

तेन स्पृष्टो बलवता महाप्रहरणोऽस्फुरत् ॥

| | |
|------------|--------------------|
| बलवता | “ பலிஷ்டரான |
| तेन | அவரால் |
| स्पृष्टः | ஸ்பர்சிக்கப்பட்டதா |
| सः | அந்த [கிய |
| महाप्रहरणः | மஹத்தான ஆபுதம் |
| तु | அத்தருணத்தில் |

| | |
|---------------|---------------------------------------|
| ज्वालापरिवारः | நாற்புறமும் அக்கினி ஜ்வாலையையுடையதாய் |
| राक्षसं | அரக்களை |
| निर्दहन् | கொளுத்திவிடுகிறது |
| इव | போல் |
| अस्फुरत् | மின்னிற்று. |

ततो विदुदुवुः सर्वे तस्मात्तस्ता रणाजिरे । सुराश्च क्षुभिताः सर्वे दृष्ट्वा दण्डोद्यतं यमम् ॥

| | |
|------------|-----------------------------|
| रणाजिरे | “ போர்க்களத்தில் |
| यमं | யமனை |
| दण्डोद्यतं | தண்டத்தைக் கையிலேந்தியவராய் |
| दृष्ट्वा | கண்டு |
| तस्मात् | அதனால் |
| ततः | அப்பொழுது |

| | |
|-----------|-------------------------|
| सर्वे | எல்லோரும் |
| अस्ताः | பயந்து நடுக்கியவர்களாய் |
| विदुदुवुः | ஓடிப்போய்விட்டார் |
| सुराः | தேவர்கள் [கள். |
| सर्वे च | எல்லோருமே |
| क्षुभिताः | கலக்கினார்கள். |

तस्मिन्प्रहृतुकामे तु यमे दण्डेन रावणम् । यमं पितामहः साक्षाद्दर्शयित्वेदमब्रवीत् ॥३८॥

| | |
|-------------|--------------------|
| रावणं | “ ராவணனை |
| दण्डेन | தண்டத்தால் |
| तस्मिन् यमे | அந்த யமன் |
| प्रहृतुकामे | புடைக்கவெண்ணியவ |
| पितामहः | பிரம்மதேவர் [எவின் |
| यमं | யமன் முன் |

| | |
|------------|--------------------------|
| साक्षात् | பிரத்யக்ஷத்தில் |
| दर्शयित्वा | பிரஸன்னராகி |
| तु | இது விஷயத்தில் |
| इदं | இப்படி |
| अब्रवीत् | திருவாய்மலர்ந்தருளினார்: |

वैवस्वत महाबाहो न खल्वमितविक्रम । न हन्तव्यस्त्वया तेन दण्डेनैव निशाचरः ॥३९॥

மஹாஹோ “மஹத்தானபஹு
பலங்கொண்ட,
அமிதவிக்ரம அளவுக்கடங்காத
பராக்கிரமமும்பெற்ற
வீவஸ்வத சூரியனது புத்திரா,
ஶ்வயா உன்னால்

தென அந்த
தண்தென காலதண்டத்தால்
நிசாசர: ஶ்வ அரக்கன் மாதிரம்
ஹந்தவ்ய: கொல்லத்தகுந்தவன்
ந இல்லை.
ந ஶலு கூடவேகூடாது.

वरः खलु मयैतस्मै दत्तस्त्रिदशशुक्लव । स त्वया नानृतः कार्यो यन्मया व्याहृतं वचः ॥

ந்ரிதததுக்ளவ “தேவப்பெருமானே!
ஶதஸ்மீ இவனுக்கு
ச: அந்த
வர: வரமானது
மயா ஶலு என்னாலேயே
தத: கொடுக்கப்பட்டிருக்கி
றது.

மயா என்னால்
வ்யாஹுந் சொல்லப்பட்டதான
வச: ஆக்கினை
யத் ஶதுவோ அது
ஶவ்யா உன்னால்
ஶநூத: பொய்யாக
ந கார்ய: செய்யலாகாது.

यो हि मामनृतं कुर्याद्वैवो वा मानुषोऽपि वा । त्रैलोक्यमनृतं तेन कृतं स्थान्नात्र संशयः ॥

தேவ: வா “ஒரு தேவன் தானான
கட்டும்,
மானுச: வா ஒரு மனிதன் தானாக
ய: ஶவனொருவன் [ட்டும்
மா ஶபி என்னையே
ஶநூத: பொய்யாக
கூர்யாத் செய்கிறானே

தென ஶி அவனாலேயே
தூலூக்யம் மூவுலகத்திற்கும்
ஶநூத: வஞ்சனை
கூத: செய்யப்பட்டதாக
ச்யாத் ஆகும்;
ஶத்ர இதில்
ந சர்ய: ஐயமில்லை.

कुप्रेन विप्रमुक्तोऽयं निर्विशेषं प्रियाप्रिये । प्रजा: संहरते रौद्रो लोकत्रयभयावहः ॥४२॥

கூபுதென “கோபத்துடன்
விப்முக்: பிரயோகித்துவிடப்
ஶயம் இது [பட்ட
ப்ரா: பிராஜைகளை

ரூதூ: கொடியதாய்
ப்ரியாப்ரியே பிரியம் அப்பிரியமென்
னும் விஷயத்தில்

लोकत्रयभयावहः { மூவுலகங்களுக்கும்
அச்சத்தையுண்டாக்
குகிறதாய்

நிர்விசேஷ வேற்றுமையற்றதாய்
சஹர்தெ ஶம்ஹரிக்கிறது.

अमोघो ह्येष सर्वेषां प्राणिनाममितप्रभः । कालदण्डो मया सृष्टः पूर्वं मृत्युपुरस्कृतः ॥४३॥

ஶச: “இந்த
காலதண்ட: காலதண்டம்
மயா ஶி என்னாலேயே
பூர்வ முன்பு
ப்ராணிநா பிராணிகள்
சர்வீசா எல்லாவற்றிற்கும்

மூதூபூரஸூத: மரணத்திற்கென்று
ஶமிதப்ரப: ஶப்படுத்தப்பட்டதாய்
அளவிடலடங்காத சூர
திக்கொண்டதாய்
ஶமூச: எக்காலத்திலும்
வீண்போகாததாய்
சூச: சிருஷ்டிக்கப்பட்டது.

तत्र खल्वेष ते सौम्य पात्यो रावणभूर्धनि । न हस्मिन्नपिते कश्चिन्मुहूर्त्तपि जीवति ॥

तत् “ஆகலால்
 सौम्य ळௌளம்ய!
 एषः இது
 रावणभूर्धनि இராவணன் தலையில்
 ते உனக்கு
 न पात्यः எறியத்தக்கதன்று.

दि एनेनील
 अरिषन् இது
 पति தாக்கியபின்
 कश्चिन् खलु எவனாகட்டும்
 मुहूर्त्त अपि ஒரு நிமிஷம்
 न जीवति ஜீவித்திரான்.

यदि हस्मिन्नपिते न त्रियैष राक्षसः । त्रियते वा दशश्रीवस्तदा ह्युभयतोऽनृतम् ॥

अरिषन् “இது
 निरापिते தாக்கியபின்னர்
 एषः இந்த
 दशश्रीवः राक्षसः தசசீவ அரக்கன்
 त्रियते यदि இறந்தாலும் சரி

न त्रियेत वा இறவா திருந்தான்
 तदा அப்படியானால்
 उभयतः இருவகையிலும்
 अनृत्ति பொய்யாகத்தானாகும்.

तन्निवर्तय लङ्केशं दण्डमेतं समुद्यतम् । सत्यं च मां कुरुष्वान्न लोकांस्तं यद्यवेक्षसे ॥४६॥

तत् “ஆகலால்
 एवं நீ
 लोकान् உலகஸம்பிரதாயங்
 अवेक्षसे அனுஷ்டிக்கின்றாய்
 यदि என்கிற பசுதத்தில்
 एतं இந்த
 लङ्केशं இலங்கேசனுக்காக

समुद्यतं கையிலெடுக்கப்பட்ட
 दण्डं காலதண்டத்தை
 अद्य இந் தசுநைத்திலேயே
 निवर्तय இருந்தவிடத்திற்கே
 अனுப்பிவிடு.
 मां च என்னையும்
 सत्यं ஸத்யவானாக
 कुरुष्वान्न செய்துநவை.

एषमुक्तस्तु धर्मात्मा प्रत्युवाच यमस्त । एष व्यावर्तितो दण्डः प्रसविष्णुर्हि नो भवान् ॥

एष “இவ்வண்ணமாய்
 उक्तः சொல்லியதற்குச்
 धर्मात्मा தருமா த்மாவாகிய
 यमः யமன்
 तु இதுவிஷயத்திலிப்படி
 तदा அப்பொழுது

प्रत्युवाच பதில்சொல்லியரு
 भवान् ‘தேவரீ’ [ஸிரீனார்]
 नः எங்களுக்கு
 प्रसविष्णुः हि யஜமானனன்றோ?
 एषः दण्डः இந்தக் தண்டம்
 व्यावर्तितः திரும்பிப்போய்
 விட்டது.

किं निवदानीं मया शक्यं कर्तुं रणगतेन हि । न मया यद्यं शक्यो हन्तुं वरपुरस्कृतः ॥

वरपुरस्कृतः “வரப்பெருமை
 अयं இவன்
 मया என்னால்
 हन्तुं கொல்ல
 शक्यः அர்ஹன்
 न இல்லை.

यदि என்கிறபடியால்
 इदानीं இப்பொழுது
 रणगते போருக்குவந்த
 मया हि என்னாலேயே
 कर्तुं செய்ய
 शक्यं உசுதமானது
 किं तु என்னதானிருக்கிறது?

एष तस्मात्प्रणय्यामि दर्शनादद्य रक्षसः । इत्युक्त्वा सरथः साश्वस्तत्रैवान्तरधीयत ॥४९॥

तस्मात् “ஆதலால்
 पुपः இந்த நான்
 अथ இந்த
 रक्षसः அரக்கனது
 दर्शनात् எதிரிலிருந்து
 प्रणय्यामि மறைந்து
 போகிறேன்.”

उक्त्वा சொல்லிவிட்டு
 तस एव அந்த கூடிணக்
 सथः தலைவே
 साश्वः தேருடன் கூடிணவரா
 கவும்
 अन्तरधीयत குதிரையுடன் கூடிண
 வராகவும்

इति இவ்விதமாய்

अन्तरधीयत அந்தர்த்தானமாயினார்.

दशमीवस्तु तं जित्वा नाम विश्राव्य चात्मनः । आरुह्य पुष्पकं भूयो निष्क्रान्तो यमसादनात् ॥

दशमीवः “தசகீவன்
 तु விஷய மிப்படியிரு
 ந்தும்
 तं அவரை
 जित्वा च தோற்கடித்து விட்ட
 आत्मनः தனது [தாய்
 नाम பெயரை

भूयः அதிகமாய்
 विश्राव्य பிரதாபப்படுத்தி
 पुष्पकं புஷ்பகவிமானத்தில்
 आरुह्य ஏறிக்கொண்டு
 यमसादनात् யமனிருப்பிடத்
 தினின்று
 निष्क्रान्तः வெளியே சென்றான்.

स तु वैवस्वतो देवैः सह ब्रह्मपुरोगमैः । जगाम त्रिदिवं हृष्टो नारदश्च महामुनिः ॥५१॥

ब्रह्मपुरोगमैः “பிரம்மதேவரை
 முன்னிட்ட
 देवैः தேவர்களோடு
 सह கூடிணவராய்
 सः वैवस्वतः அந்த யமன்
 विदिवं சுவர்க்கத்திற்கு

जगाम போய்ச் சேர்ந்தார்.
 नारदः நாரத
 महामुनिः च மஹரிஷியும்
 तु இதுவிஷயத்தில்
 हृष्टः மனஸந்துஷ்ட.
 கொண்டவரானார்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे द्वाविंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 21585



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 861

त्रयोविंशः सर्गः—இருபத்துமூன்றாவது வர்க்கம். ॥ 23 ॥

वरुणविजयः—வருணனை ஜயிப்பது.

ततो जित्वा दशमीवीो यमं त्रिदशपुङ्गवम् । रावणस्तु रणश्लाघी स्वसहायान्दर्श ह ॥१॥

ततः “அப்போது
 त्रिदशपुङ्गवं தேவசிரேஷ்டராகிய
 यमं ह யமனையே
 जित्वा तु தோற்கடித்து விட்ட
 தாய்

रणश्लाघी போரைப் புகழ்ந்து
 பேசுகின்ற
 दशमीवः தசகீவனாகிய
 रावणः இராவணன்
 स्वसहायात् தனது கூட்டாளிகளை
 ददर्श कண்டான்.

ततो रथिरसिक्ताङ्गं प्रहरैर्जर्जरीकृतम् । रावणं राक्षसा दृष्ट्वा हृष्टवत्समुपागमन् ॥ २ ॥

ततः “अप्यொழுது
 राक्षसाः அரக்கர்கள்
 रावणं இராவணனை
 रथिरसिक्ताङ्गं உதிரம் படிந்திருப்ப
 வகைவும்

प्रहरैः குத்துகளால்
 जर्जरीकृतं துளைக்கப்படிருப்பவ
 दृष्ट्वा கண்டு [குகவும்
 हृष्टवत् சந்தோஷமாய்
 समुपागमन् கிட்டிநின்றார்கள் :

जयेन वर्धयित्वा च मारीचप्रमुखास्ततः । पुष्पकं भेजिरे सर्वे सान्त्विता रावणेन तु ॥

मारीचप्रमुखाः “மாரீசன் முதலாகிய
 सर्वे तु எல்லோருமே
 जयेन ‘ஜயவிஜயிப்பவ’ என்று
 वर्धयित्वा புகழ் கூறிவிட்டு
 ततः அதன்மேல்

रावणेन च இராவணனாலும்
 सान्त्विताः ஆதரித்துப் பேசப்
 பட்டவர்களாய்
 पुष्पकं புஷ்பகவிமானத்தில்
 भेजिरे ஏறிக்கொண்டார்கள்.

ततो रसातलं गच्छन्प्रविष्टः पयसां निधिम् । दैत्योऽरगणाध्युष्टं वरुणेन सुरक्षितम् ॥४॥

ततः “அங்கிருந்து
 रसातलं ரஸாதலமென்கிற பா
 தாளலோகத்திற்கு
 गच्छन् போகிறவனாய்
 दैत्योऽरगणाध्युष्टं { தைத்யகணங்கள்
 உராககணங்களால்
 நிறைந்துள்ளதும்

वरुणेन வருணபகவானால்
 सुरक्षितं நன்கு பரிபாலிக்கப்
 பட்டதுமான
 पयसां निधिं மஹாசமுத்திரத்தில்
 प्रविष्टः புகுந்தான்.

स तु भोगवतीं गत्वा पुरीं वासुकिपालिताम् । कृत्वा नागान्वशे हृष्टो ययौ मणिमयीं पुरीम् ॥

सः “அவன்
 वासुकिपालितां வாசுகியினால் பரிபா
 லிக்கப்பட்ட
 भोगवतीं போகவதி என்று
 पुरीं பட்டணத்திற்கு
 गत्वा போய்ச்சேர்ந்து

नागान् நாகர்களையும்
 वशे தன்வசத்தில்
 कृत्वा நிறுத்திவிட்டு
 हृष्टः களிப்படைந்தவனாய்
 मणिमयीं மணியமயமென்கிற
 पुरीं பட்டணத்திற்கு
 ययौ போய்ச்சேர்ந்தான்.

निवातकवचास्तत्र दैत्या लब्धवराऽवसन् । राक्षसांस्तान्समागम्य युद्धाय समुपाह्वयत् ॥

तत्र “அதில்
 लब्धवराः வரப்பிரஸாதம்பெற்ற
 निवातकवचाः நிவாதகவசர்களென்ற
 दैत्याः தைத்யர்கள்
 अवसन् வாஸஞ்செய்துகொ
 ண்டிருந்தார்கள்.

तान् அந்த
 राक्षसान् தைத்யர்களை
 समागम्य போய்ப்பார்த்து
 युद्धाय அமராடுவதற்கு
 समुपाह्वयत् அழைத்தான்.

ते तु सर्वे सुविक्रान्ता दैतेया बलशालिनः । नानाप्रहरणास्तत्र प्रययुर्दुर्मुदाः ॥ ७ ॥

| | | | |
|----------------|---|---------|----------------------|
| सुविक्रान्ताः | “ मஹா பராக்கிரம சாலிகளும் | ते | அந்த |
| बलशालिनः | மஹா பலசாலிகளும் | दैतेयाः | தைத்தியர்கள் |
| नानाप्रहरणाः | பலவிதமான படைக் கலங்களைப் பெற்ற வர்களும் | सर्वे | எல்லோரும் |
| युद्धदुर्मुदाः | | यु | அப்பொழுது |
| | யுத்தப்பயித்தியம் | तस्य | அதற்கு |
| | பிடித்தவர்களுமான | प्रययुः | போய்ச்சேர்ந்தார்கள். |

तेषां तु युद्धयमानानां सायः संवत्सरो गतः । न चान्यतरयोस्तत्र विजयो वा क्षयोऽपि वा ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------|-------------|---------------------|
| युध्यमानानां | “ போர்புரிந்துக் கொண்டிருந்த | तु | இப்படியிருந்தும் |
| तेषां | அவர்களுக்கு | अन्यतरयोः च | இருவர்களில் எவ்வொ |
| सायः | பூர்ணமாய் | तत्र | அதில் [ருவருக்காவது |
| संवत्सरः | ஓர் ஆண்டு | विजयः वा | வெற்றியாவது |
| गतः | கழிந்தது. | क्षयः वा | தோல்வியாவது |
| | | न | உண்டாகவில்லை. |

ततः पितामहस्तत्र त्रैलोक्यगतिरव्ययः । आजगाम द्रुतं देवो विमानवरमास्थितः ॥ ९ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------------|--------------|------------------|
| ततः | “ அதன்மேல் | पितामहः देवः | பிரம்மதேவர் |
| त्रैलोक्यगतिः | மூவுலகுக்கும் ஆதார மாயிருப்பவரும் | विमानवरं | உத்தமவிமானத்தில் |
| अव्ययः | அமோகமாகிய வரங்க ளையே தருபவருமான | आस्थितः | எழுந்தருளியவராய் |
| | | तस्य | அவ்விடத்திற்கு |
| | | द्रुतं | வேகமாய் |
| | | आजगाम | வந்துசேர்ந்தார். |

निवातकवचानां तु निवार्य रणकर्म तत् । वृद्धः पितामहो वाक्यसुवाच विदितार्थवत् ॥

| | | | |
|--------------|------------------|--------------|----------------------------------|
| वृद्धः | “ மஹா பூஜ்யராகிய | तु | இவ்விஷயத்தில் |
| पितामहः | பிரம்மதேவர் | वाक्यं | ஆக்கிணையை |
| निवातकवचानां | நிவாதகவசங்களின் | विदितार्थवत् | ஸ்பஷ்டமாய்விளங் கும் வண்ணமாய் |
| तत् | அந்த | उवाच | திருவாய்மலர்ந்தரு ளிணர்: |
| रणकर्म | போர்த் தொழிலை | | |
| निवार्यं | தடுத்தது | | |

न ह्ययं रावणो युद्धे शक्यो जेतुं सुरासुरैः । न भवन्तः क्षयं नेतुमपि सामरदानवैः ॥ ११ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------------|----------------|----------------------------------|
| युद्धे | “ ‘போரில் | न शक्यः | முடியாதவன். |
| अयं | இந்த | भवन्तः | நீங்கள் |
| रावणः | இராவணன் | सामरदानवैः अपि | தானவர்களுள்ளிட்ட தேவர்களாலும் |
| सुरासुरैः | தேவர்களாலும், அசுரர்களாலும் | क्षयं नेतुं | நாசத்தைப்பெற |
| जेतुं | ஜயிக்க | न | முடியாது. |

राक्षसस्य सखित्वं च भवद्भिः सह रोचते । अविभक्ताश्च सर्वार्थाः सुहृदां नात्र संशयः ॥

राक्षसस्य “அரக்கனுக்கு
भवद्भिः உங்களோடு
सह கூட
सखित्वं च ஒற்றுமையா
रोचते நல்லதாய்த் தோற்று
கிற து.

सुहृदां ஸ்நேகிதர்களுக்கு
सर्वार्थाः च எல்லா வயவஹாரங்
களின் பயன்களும்
अविभक्ताः வித்தியாஸமின்றி
पिण्डக்கின்றன.
अस இதில்
न संशयः ஐயமில்லை.

ततोऽग्निसाक्षिकं सरख्यं कृतवांस्तत्र रावणः । निवातकवचैः सार्धं प्रीतिमानभवत्तदा ॥

रावणः “இராவணன்
तत्र இதில்
प्रीतिमान् மனமொப்பியவனுய்
तदा அப்பொழுதே
ततः அவ்விடத்திலேயே

अग्निसाक्षिकं அக்கினிஸாக்ஷிகமாக
निवातकवचैः நிவாதகவசர்களோடு
सार्धं கூட
सरख्यं ஒற்றுமையாயிருந்ததலை
कृतवान् செய்துமுடித்தவனாக
अभवत् ஆனான்.

अर्थतस्तैर्यथान्यायं संवत्सरमथोषितः । स्वपुराभिर्विशेषं च प्रियं प्राप्त्वा दशाननः ॥१४॥

अथ “அப்பொழுது
दशाननः தசானன்
तैः அவர்களால்
यथान्यायं கிரமப்படி
निर्विशेषं } யாதொருவித வித்தி
யாஸமில்லாதவண்
ணமாய்
स्वपुरात् தன் நகரைவிட

प्रियं சுகத்தை
प्राप्तः அனுபவிப்பவனுய்ம்
अर्थतः च } ஸர்வப்ரகாரத்தாலும்
கொண்டாடப்பட்ட
வனாயும்
संवत्सरं ஒரு வருஷம்
उषितः வலித்துக்கொண்டி.
நந்தான்.

ततोपधार्य मायानां शतमेकं समाप्तवान् । सलिलेन्द्रपुरान्वेषी भ्रमति स्म रसातलम् ॥

ततः “அக்காலத்தில்
मायानां கபட உபாயங்களில்
एकं शतं ஒருநூற்றை
उपधार्य கைப்பற்றி
समाप्तवान् நிபுணனுனான்.

सलिलेन्द्रपुरान्वेषी { வருணானது நகரத்
தைத் தேடுகின்றவ
னாய்
रसातलं ரஸாதலத்தில்
भ्रमति स्म சுற்றித்திரிந்தான்.

ततोऽश्मनगरं नाम कालकेयूरधिष्ठितम् । गत्वा तु कालकेयांश्च हत्वा तत्र बलोत्कटान् ॥

शूर्पणख्याश्च भर्तारमसिना प्राच्छिनत्तदा । स्यालं च बलवन्तं च विद्युज्जिह्वं बलोत्कटम् ॥
जिह्वया संलिहन्तं च राक्षसं समरे तथा
ततः “அப்பொழுது
कालकेयूरैः காலகேயர்களால்
अधिष्ठितं அதிகாரம் செலுத்தப்
பட்டதாகிய

॥ १७ ॥
अश्मनगरं அசம்நகரம்
नाम என்றதில்
गत्या புகுந்து
तत्र அங்குள்ள

| | |
|-------------|-----------------------------|
| बलोकटान् | மஹாபலசாலிகளா கிய |
| कालकेयान् च | காலகேயர்க்கீளையும் |
| ह्रस्वा तु | கொன்றுவிட்டு |
| जिह्वा | நாளினால் |
| संलिहन्तं | நக்கிப்புசிக்கின்ற வனும் |
| बलवन्तं | ஸ்தூலசரீரமுடையவ னும் |
| बलोःकटं | மஹாபலிஷ்டனும் |

| | |
|----------------|---------------------|
| शूर्गण्याः | சூர்ப்பணகையின் |
| भारं च | கவைவனாபடியால் |
| सालं | தங்கைப்புருஷனுமாகிய |
| विद्युजिह्वं च | வித்யுஜ்ஜிஹ்வனென்ற |
| राक्षसं च | அரக்கனையும் |
| तदा च | அக்காலத்திலேயே |
| तथा | அவ்வண்ணமே |
| समरे | போரில் |
| असिना | கத்தியால் |
| प्राच्छिनत् | வெட்டிக்கொன்றான். |

तं विजित्य मुहूर्तेन जघ्ने दैत्याश्चतुःशतम्

॥ १८ ॥

| | |
|---------|--------------|
| तं | “அவனை |
| विजित्य | கொன்றுவிட்டு |
| चतुःशतं | நானூறு |

| | |
|------------|-----------------|
| दैत्यान् च | தையர்க்கீளையும் |
| मुहूर्तेन | ஒருநிமிஷத்தால் |
| जघ्ने | கொன்றான். |

ततः पाण्डुरमेघाभं कैलासमिव भास्वरम् । वरुणस्यालयं दिव्यमपश्यद्राक्षसाधिपः ॥१९॥

| | |
|---------------|---------------------------|
| ततः | “அதன்மேல் |
| राक्षसाधिपः | இராக்காசமன்னன் |
| पाण्डुरमेघाभं | வெண்மேகங்கள் போன்றதும் |
| कैलासं इव | கைலாஸத்தைபோல் |

| | |
|-------------|--------------------------------|
| भास्वरं | ஜோதிமயமாய் விளங்கு குவதுமான |
| वरुणस्य | வருணனுடைய |
| दिव्यं अलयं | திவ்யமான ஆலயத்தை |
| अपश्यत् | கண்டான். |

क्षरन्तीं च पयस्तत्र सुरभिं गामवस्थिताम् । यस्याः पयोभिनिष्यन्दाक्षीरोदो नाम सागरः॥
ददर्श रावणस्तत्र गोवृषेन्द्रवरारणिम् । यस्माच्चन्द्रः प्रभवति शीतरश्मिः प्रजाहितः ॥२१॥

| | |
|------------------|------------------|
| रावणः | “இராவணன் |
| तल | அவ்விடத்தில் |
| पयः | பாலை |
| क्षरन्तीं | சொரிந்துகொண்டு |
| अवस्थितां च | இருக்கின்றதும் |
| यस्याः | எதினுடைய |
| पयोभिनिष्यन्दात् | பால் பெருகியதால் |
| सागरः | ஸமுத்திரம் |
| क्षीरोदः | பாற்கடல் |
| नाम | என பெயர்பெற்ற |
| यस्मात् | எந்த [மதோ, |
| तल | அதில் |

| | |
|--------------------|--|
| प्रजाहितः | ஜனங்களுக்கினியரும் |
| शीतरश्मिः | சூளிர்ந்தகிரணமுடைய |
| चन्द्रः | சந்திரன் [யவருமான |
| प्रभ रति | உத்பவித்தனோர், அந்த |
| गोवृषेन्द्रवरारणिं | { சிவபெருமானின் உத்தமவிருஷபத் தின் ஸாக்ஷாத் மாதாவுமாகிய |
| सुरभिं | சுரபி என்கிற |
| गां | பசுவை |
| ददर्श | கண்டான், |

यं समाश्रित्य जीवन्ति फेनपाः परमर्षयः । अमृतं यत्र चोत्पन्नं स्वधा च स्वधभोजिनाम् ॥
यां ब्रुवन्ति नरा लोके सुरभिं नाम नामतः । प्रदक्षिणं तु तां कृत्वा रावणः परमाद्भुताम् ॥
प्रविवेश महाघोरं गुप्तं बहुविधैर्बलैः ॥ २३ ॥

| | |
|-------------|--|
| रावणः | “இரா வணன் |
| फेनपाः | ‘பேனபர்’களென்ற |
| परमर्षयः | பரமரிஷிகள் |
| यं | எதை |
| समाश्रित्य | அண்டி |
| जीवन्ति | உயிருடனிருக்கிறார் |
| यत्र | எதில் [களோ, |
| स्वधभोजिनां | ஸ்வதையை, புகிக்கும் பித்ருக்களுக்கு |
| स्वधा च | ‘ஸ்வதை’ என்ற கவ்யமும் |
| अमृतं च | தெய்வஉணவாகிய அமிருதமும் |
| उत्पन्नं | உண்டானதோ, |
| लोके | உலகில் |
| नराः | மர்னிடர்கள் |
| नामतः | பிரஸித்தமாய் |

| | |
|-------------|----------------------------|
| सुरभिं | சுரபி |
| नाम | என்று |
| यां | எதை |
| ब्रुवन्ति | வழங்குகின்றார்கள், |
| परमाद्भुतां | மஹாஅக்புதமாயி ருக்கின்ற |
| तां | அதை |
| तु | இப்பொழுது |
| प्रदक्षिणं | பிரதக்ஷிணம் |
| कृत्वा | செய்து |
| बहुविधैः | பலவித |
| बलैः | ஸேனைகளால் |
| गुप्तं | பாதுகாக்கப்பட்ட தான |
| महाघोरं | மஹாபூஜ்யார்ஹமா னதில் |
| प्रविवेश | புகுந்தான். |

ततो धाराशताकीर्णं शारदाभ्रनिभं तदा । नित्यप्रहृष्टं ददृशे वरुणस्य गृहोत्तमम् ॥२४॥

| | |
|---------------|---|
| ततः | “அவ்விடத்தில் |
| तदा | அப்பொழுது |
| वरुणस्य | வருணனது |
| धाराशताकीर्णं | { நீர்தாரைகளின் பெ ருக்குகளால் சூழப் பட்டதும் |

| | |
|----------------|--|
| शारदाभ्रनिभं | சரத்காலமேகம் போன்றதும் |
| नित्यप्रहृष्टं | { எப்பொழுதுமே ஆனந்தகரமாய் விளங்குகிறதமான |
| गृहोत्तमम् | உத்தமமான மானி கையை |
| दृशे | கண்ணுற்றான். |

ततो हत्वा बलाध्यक्षान्समरे तैश्च ताडितः । अब्रवीच्च ततो योधान्राजा शीर्षं निवेद्यताम् ॥

| | |
|--------------|------------------------|
| ततः | “அவ்விடத்தில் |
| बलाध्यक्षान् | சேனைத்தலைவர்களை |
| समरे | போரில் |
| हत्वा | துன்புறுத்தி |
| तैः च | அவர்களாலும் |
| ताडितः च | புடைக்கப்பட்டவ னும் |

| | |
|-------------|---------------------|
| ततः | அப்பொழுது |
| योधान् | வீரர்களைப்பார்த்து |
| अब्रवीच्च | இப்படி மொழிந்தான்: |
| राजा | ‘அரசன் |
| शीर्षं | விரைவில் |
| निवेद्यताम् | அறிவிக்கப்பட்டும்.’ |

युद्धार्थी रावणः प्राप्तस्तस्य युद्धं प्रदीयताम् ।

वद वा न भयं तेऽस्ति निजितोऽस्मीति साञ्जलिः

॥ २६ ॥

रावणः “இராவணன்
யுத்தார்த்தீ போரில் ஆசை
கொண்டவனாய்
பாசः வந்திருக்கிறான்.
तस्य அவனுக்கு
युद्धं போர்
प्रदीयतां கொடுக்கப்பட்டும்.
वा இல்லையென்றால்

निजितः ‘தோல்வியடைந்தவ
अस्मि अகிழேன்’ [ராய்
इति என்று
साञ्जलिः அஞ்சலிலுறஸ்தனாகி
वद சொல்லிவிடு.
ते உனக்கு
भयं ஆபத்து
न अस्ति வினையாது.’

एतस्मिन्नन्तरे कुट्टा वरुणस्य महात्मनः । पुत्राः पौत्राश्च निष्कामगौश्च पुष्कर एव च ॥

ते तु वीर्यगुणोपेता वलैः परिवृताः स्वकैः । युद्धत्वा रथान्कामगमानुद्यद्वास्वरवचसः ॥

एतस्मिन् “இந்த
अन्तरे समयத்தில்
गौः च ‘கோவனெ’ன்ற சே
उपेतायும்
पुष्करः च ‘புஷ்கரனெ’ன்ற சே
उपेताயும்
महात्मनः மஹாத்மாவாகிய
वरुणस्य வருணனுடைய
वीर्यगुणोपेताः அமிதமான வீர்யமு
டையவர்களும்

पौत्राः च பெளத்திரர்களும்
स्वकैः தங்கதான
वलैः சேனைகளால்
परिवृताः புடைசூழப்பட்டவர்
களாய்
कामगमान् நினைத்தபடியெல்லாம்
செல்லவல்ல
रथान् தேர்களின்மீது
दुक्त्वा சித்தஞ்செய்து
கொண்டு

उद्यद्वास्वरवचसः { உதயமாகிற ஸூர்ய
னை ஒத்த தேஜோ
வான்களுமாகிய

तु இதுவிஷயத்தில்
कुट्टाः கோபாவேசங்கொண்
டவர்களாய்

ते पुत्राः அந்த புத்திரர்களும்

निष्कामन् வெளிப்பட்டார்கள்.

ततो युद्धं समभवद्दारुणं रोमहर्षणम् । सलिलेन्द्रस्य पुत्राणां रावणस्य च धीमतः ॥२९॥

ततः “அப்பொழுது
धीमतः புத்திமானான
रावणस्य இராவணனுக்கும்
सलिलेन्द्रस्य வருணனுடைய

पुत्राणां च புத்திரர்களுக்கும்
युद्धं போர்
दारुणं கடுமையாகவும்
रोमहर्षणं மிகப்பயங்கரமாகவும்
समभवत् நடந்தது.

अमाल्यैश्च महावीर्यैर्दशश्रीवस्य रक्षसः । वारुणं तद्वलं कृत्स्नं क्षणेन विनिपातितम् ॥३०॥

दशश्रीवस्य “தசசீவ
रक्षसः அரக்கனின்
महावीर्यैः மஹாவீர்யசாலிக
अमाल्यैः மந்திரிகளால் [ளான
तत् वारुणं அந்த வருணனது

वलं ஸையம்
कृत्स्नं च எல்லாமும்
क्षणेन ஒரு நொடிப்
विनिपातितम् பொழுதில்
உருவழிக்கப்பட்டது.

समीक्ष्य स्वबलं संख्ये बरुहस्य सुतास्तदा । अर्दिताः शरजालेन निवृत्ता रणकर्मणः ॥

वरुहस्य “ வருணனது
 सुताः குமாரர்கள்
 संख्ये போரில்
 स्वबलं தங்கள் பலத்தை
 तदा அத்தருணத்தில்

समीक्ष्य கவனித்துப்பார்த்து
 शरजालेन பாணஸமுஹங்களால்
 अर्दिताः நொந்தவர்களால்
 रणकर्मणः போர்த்தொழிலி
 निवृत्ता: னின்று
 திரும்பி விட்டார்கள்.

महीतलगतस्ते तु रावणं दृश्य पुष्पके । आकाशमाशु विविशुः स्यन्दनैः शीघ्रगामिभिः ॥

महीतलगताः “ பூமியில்லின்று
 ते கொண்டிருந்த
 पुष्पके அவர்கள்
 रावणं तु புஷ்பக விமானத்தின்
 பீது
 பதைபயம்

दृश्य உணர்ந்து
 शीघ्रगामिभिः விரைவாகச்செல்லும்
 स्यन्दनैः இரதங்களோடு
 आकाशं ஆகாசத்தில்
 आशु விரைவில்
 विविशुः வந்துநின்றார்கள்.

महदासीत्ततस्तेषां तुल्यस्थानमवाप्य तत् । आकाशयुद्धं तुमुलं देवदानवयोरिव ॥ ३३ ॥

तेषां “ அவர்களுக்கு
 तुल्यस्थानं ஏற்றதாயிருக்கின்ற
 இடத்தை
 अवाप्य அடைந்து
 देवदानवयोः தேவதானவர்களு
 दैयतु
 इव போன்றதாய்

तत् அந்த
 आकाशयुद्धं விண்ணில் நடை
 பெற்ற யுத்தம்
 महत् மிக
 तुमुलं கடுமையாய்
 ततः அப்பொழுது
 आसीत् விளைந்தது.

ततस्ते रावणं युद्धे शरैः पावकसन्निभैः । विमुखीकृत्य सन्तुष्टा विनेदुर्विविधानवान् ॥

ते “ அவர்கள்
 युद्धे போரில்
 रावणं இராவணனை
 पावकसन्निभैः அக்கினிக்கொப்பான
 शरैः பாணங்களால்

विमुखीकृत्य புறங்காட்டச்செய்து
 सन्तुष्टा: அதனால்
 स-तुष्टा: மிகக் களித்தவர்
 विविधान् பல [களாகி
 रावन् சத்தங்களை
 विनेदुः செய்தார்கள்.

ततो महोदरः क्रुद्धो राजानं दृश्य धर्षितम् । त्यक्त्वा मृत्युभयं वीरो युद्धकाङ्क्षी व्यलोकयत् ॥

महोदरः “ மஹோதரனென்ற
 वीरः வீரன்
 राजानं மன்னனை
 धर्षितं அவமானமடைந்த
 वक्रक
 दृश्य கண்டு
 ततः அதனால்

क्रुद्धः கோபங்கொண்ட
 व्यलोकयत् வலுகி
 मृत्युभयं மரணபயத்தை
 त्यक्त्वा ஒழித்துவிட்டு
 युद्धकाङ्क्षी யுத்தத்திலே முனை
 न्तवलयम्
 உற்றுநோக்கினான்.

तेन ते दारुणा युद्धे कामगाः पवनोपमाः ।

| | |
|----------|-------------------|
| तेन | “ அந்த |
| மஹோதரேண | மஹோதரனால் |
| யுद्धे | போரில் |
| कामगाः | இஷ்டப்படியெல்லாம் |
| | செய்யவல்லவர்களும் |
| पवनोपमाः | வாய்ப்பகவானுக்கு |
| | நிகரான |

तेषां वरुणपुत्राणां हत्वा योधान्हयाञ्छतान् । सुमोचाशु महानादं विरथान्प्रेक्ष्य तान्स्थितान् ॥

| | |
|---------------|---------------------|
| तेषां | “ அந்த |
| वरुणपुत्राणां | வருணபுத்திரர்களு |
| | டைய |
| योधान् | சேனைத்தலைவர்களை |
| हयान् | குதிரைகளையும் [யும் |
| शतान् | நூற்றுக்கணக்காய் |
| आशु | விரைவில் |

ते तु तेषां रथाः साश्वाः सह सारथिभिर्हितैः ।

| | |
|-------------|--------------------|
| तेषां | “ அவர்களூடைய |
| साश्वाः | குதிரைகளுடன் கூடிய |
| ते | அந்த |
| रथाः | ரதங்கள் |
| हितैः | கொலையுண்ட |
| सारथिभिः सह | ஸாரதிகளுடன் கூட |

ते तु त्यक्त्वा रथान्पुत्रा वरुणस्य महात्मनः ।

आकाशे विष्टिताः शूराः स्वप्रभावान्न विव्यथुः

| | |
|----------|--------------|
| महात्मनः | “ மஹாத்மாவான |
| वारुणस्य | வருணனுடைய |
| ते | அந்த |
| शूराः | சூரர்களாகிய |
| पुत्राः | புதல்வர்கள் |

धनूंषि कृत्वा सज्जानि विनिर्भिद्य महोदरम् ।

| | |
|-----------|-----------------|
| समरे | “ போரில் |
| सहिताः | நிலைகொடாமலிருக் |
| | கிற அவர்கள் |
| क्रुद्धाः | கோபங்கொண்டவர்க |
| | ளாகி |

धनूंषि

விற்களை

महोदरेण गद्या हता वै प्रययुः क्षितिम् ॥

| | |
|------------|---------------------|
| दारुणाः | உக்கிரமுடையவர் |
| ते | அவர்கள் [களுமான |
| गद्या | கதையொன்றைக் |
| | கொண்டு |
| हताः | புடைக்கப்பட்டவர் |
| क्षितिं वै | பூமிக்கே [களாய் |
| प्रययुः | வந்துசேர்ந்தார்கள். |

| | |
|-----------|---------------------|
| हत्वा | கொன்றுவிட்டு |
| तान् | அவர்களை |
| विरथान् | தேர் ஒழிந்தவர்களாய் |
| स्थितान् | பூமியில் நிற்பவர் |
| प्रेक्ष्य | பார்த்து [களாய் |
| महानादं | பெருங்கேரடித்தை |
| सुमोच | இட்டான். |

महोदरेण निहताः पतिताः पृथिवीतले ॥

| | |
|-----------|--------------------|
| महोदरेण | மஹோதரனால் |
| निहताः | நாசஞ்செய்யப்பட்ட |
| | வைகளாய் |
| तु | இப்பொழுது |
| पृथिवीतले | பூமியில் |
| पतिताः | தலைகீழாகக்கிடந்தன. |

| | |
|--------------------|-----------------------|
| रथान् त्यक्त्वा तु | ரதங்களை விட்டுவிட்டு, |
| स्वप्रभावात् | தங்கள் பிரபாவத்தா |
| आकाशे | ஆகாயத்தில் [லேயே |
| विष्टिताः | நிலைகொண்டவர்க |
| न विव्यथुः | சளைக்கவிவலை, [ளாய் |

रावणं समरे क्रुद्धाः सहिताः समभिद्रवन् ॥

| | |
|-------------|----------------------|
| सज्जानि | நானேற்றப்பட்டவை |
| कृत्वा | செய்து [களாய் |
| महोदरं | மஹோதரனை |
| विनिर्भिद्य | பிளந்து தள்ளிவிட்டு |
| रावणं | இராவணனை |
| समभिद्रवन् | மிசுக் கஷ்டப்படுத்தி |

ஞர்கள்.

सायकैश्चापविभ्रष्टैर्ब्रजकल्पैः सुदारुणैः । दारयन्ति स्म संक्रुद्धा मेघा इव महागिरिम् ॥

संक्रुद्धाः “कोपावेषु
कोण्डவர்களாய்
மஹாகிரி
ஒரு பெரும் மலையை
மேகங்கள்
எவ்வண்ணமோ
அவ்வண்ணமே
வஜ்ர கல்பை
வஜ்ராயுதத்தாக்கொப்
பானதும்

सुदारुणैः மிகக்கடுமையானவை
களும்
चापविभ्रष्टैः { சாபங்களினின்றும்
வெளிவந்தவை
களுமான
सायकैः கணைகளால்
दारयन्ति स्म பிளந்தார்கள்.

ततः क्रुद्धो दशग्रीवः कालागिरिव निर्गतः । शरवर्षैर्महाघोरैस्तेषां मर्मस्वताडयत् ॥४२॥

ततः “अतनू
दशग्रीवः தசக்ரீவன்
निर्गतः வெளிக்கிளம்பிவந்த
कालागिः காலாக்கனி
इव என

क्रुद्धः கோபங்கொண்டவ
तेषां அவர்களுடைய [இனி
मर्मसु மாமஸ்தானங்களில்
महाघोरैः மிகக் கொடிய
शरवर्षैः பாணவருஷங்களால்
अताडयत् புடைத்தான்.

ततस्तेनैव सहसा सीदन्ति स्म पदातयः । मुसलानि विचित्राणि ततो भृशतानि च ॥

ततः “अपबो
पदातयः பதா திகளாயிருந்த
அவர்கள்
तेन एव அதனாலேயே
सहसा கடுமையாய்
सीदन्ति स्म வேதனைப்பட்டார்கள்.
दुर्घर्षैः அச்சமுண்டாக்கு
கிறவனாய்
विष्टितः இருக்குமவன்
तेषां அவர்களின்
उपरि மீது
विचित्राणि விசித்திரங்களான
मुसलानि முசலங்களென்ற
ஆயுதங்களையும்

भृशतानि च { பல்லங்களென்ற
ஆயுதங்கள் அனே
கங்களையும்
शक्तिः च சக்தி என்கிற ஆயு
தங்களையும்
पष्टिशान् च பட்டிசு மென்கிற
ஆயுதங்களையும்
शतग्रीवः एव சதக்னி என்கிற
ஆயுதங்களையும்
तथा அவ்வண்ணமே
तो नरान् தோமரமென்கிற
ஆயுதங்களையும்
ततः அப்பொழுது
पातयामास விடுத்தான்.

अपविद्धास्तु ते वीरा विनिष्पेतुः पदातयः । महापङ्कमिवासाद्य कुञ्जराः षष्टिहायनाः ॥

ते “अन्त
पदातयः பதா திகளான
वीराः சூரர்கள்
अपविद्धाः குத்துண்டவர்களாய்
तु அத்தருணத்தில்
षष्टिहायनाः அறுபதுவயது
कुञ्जराः யானைகள் [கொண்ட

महापङ्कमिवासाद्य பெருஞ்சேற்றில்
आसाद्य சிக்கிக்கொண்டு
इव { இருந்தால் எவ்வண்
ணமோ, அவ்வண்
ணமே
विनिष्पेतुः ஓடுக்கிக்கிடந்தார்கள்.

सीदमानान्मुतान्दृष्ट्वा विह्वलान्मुपहौजसः । ननाद रावणो हर्षान्महान्म्बुधरो यथा ॥४६॥

रावणः “ रावணன்
 सुमहौजसः மஹா பலவான்
 सुतान् சிறுவர்களை [களாகிய
 सीदमानान् பெரும் துன்பமனு
 பணிப்பவர்களாய்
 विह्वलान् தம்மறிவு தப்பினவர்
 களாய்

दृष्ट्वा கண்டு
 हर्षान् மனச்சந்துஷ்டியால்
 महान् பெரிய
 अम्बुधरः மேகம்
 यथा போன்றதாய்
 ननाद ஆணந்தகோஷம்
 செய்தான்.

ततो रक्षो महानादान्मुक्त्वा हन्ति स्म वारुणान् । नानाप्रहरणोपेतैर्धारारापातैरिवाम्बुदः ॥

रक्षः “ அரக்கன்
 महानादान् பெருங்கோஷங்களை
 मुक्त्वा இட்டு
 ततः அதன்மேல்
 अम्बुदः மேகமானது
 धारापातैः பெரும்மழைகளால்

इव எவ்வண்ணமே
 அவ்வண்ணமே
 वारुणान् வருணபுத்திரர்களை
 नानाप्रहरणोपेतैः பல ஆயுதங்களால்
 हन्ति स्म தலைகிளம்பமுடியாத
 படி புடைத்தார்கள்.

ततस्ते विमुखाः सर्वे पतिता धरणीतले । रणात्स्वपुरुषैः शीघ्रं गृह्णाण्येव प्रवेशिताः ॥४८॥

ततः “ அப்பொழுது
 विमुखाः பிரதிகூலமடைந்தவர்
 களும்
 धरणीतले பூமியில்
 पतिताः வீழ்ந்துகிடக்கின்ற
 வர்களான
 रे அந்த

सर्वे எல்லோரும்
 स्वपुरुषैः அவர்கள் ஜனங்களால்
 रणात् போர்க்களத்தினின்றும்
 शीघ्रं एव விரைவிலேயே
 गृह्णाणि வீடுகளில்
 प्रवेशिताः கொண்டுபோய் விடப்
 பட்டார்கள்.

तानब्रवीत्ततो रक्षो वरुणाय निवेद्यताम्

ततः “ அப்போது
 रक्षः அரக்கன்
 तान् அவர்களைப்பார்த்து
 वरुणाय ‘வருணனுக்கு

॥ ४९ ॥

निवेद्यतां சொல்லிவிட்டபட்ட
 ८ம்
 अब्रवीत् என்று சொன்னான்.

रावणं त्वब्रवीन्मन्त्री प्रहसो नाम वारुणः । गतः खलु महाराजो ब्रह्मलोकं जलेश्वरः ॥

गान्धर्वं वरुणः श्रोतुं यं त्वमाह्वयसे युधि

॥ ५० ॥

वारुणः “ வருணனது
 मन्त्री மந்திரியாகிய
 प्रहसः பிரஹஸன்
 नाम என்பவன்
 रावणं இராவணனுக்கு

तु இதுவிஷயத்திலிப்
 अब्रवीत् மொழிந்தான்: [படி
 यं ‘எவ்வரை
 रं நீ
 युधि போருக்கு

| | | | |
|-------------|-----------------------|------------|-----------------------------|
| आह्वयः | அழைக்கின்றாயோ அந்த | गान्धर्व | கந்தர்வர்களின் கானத்தை |
| जलेश्वरः | ஜலேச்வரராகிய | श्रोतुं | கேட்க |
| वस्त्रः | வருண | ब्रह्मलोकं | பிரம்மலோகத்திற்கு |
| महाराजः खलु | மஹாராஜனோவெ னில் | गतः | எழுந்தருளியி ருக்கிறார். |

तत्किं तव वृथा वीर परिश्रम्य गते नृपे । ये तु सन्निहिता वीराः कुमारास्ते पराजिताः ॥

| | | | |
|----------------|--------------------|------------|-----------------------------------|
| तव | “ஆதலால் | वीराः | வீரர்களாகிய |
| वीर | சூரனே, | कुमाराः | புத்திரர்கள் |
| नृपे | மன்னர் | सन्निहिताः | இக்கே தற்சமய மிருக்கின்றவர்கள் |
| गो | வெளியிற்சென்றி | ये | எவர்களோ |
| तव | உனக்கு [ருக்கையில் | ते | அவர்கள் |
| किं | என் | पराजिताः | தோல்வியடைந்து விட்டார்கள்.” |
| वृथा परिश्रम्य | வீண் பிரயாசை? | | |
| उ | ஆயினும் | | |

राक्षसेन्द्रस्तु तच्छ्रुत्वा नाम विश्राव्य चात्मनः ।

हर्षान्नादं विमुञ्चन्वै निष्क्रान्तो वरुणालयात् ॥ ५२ ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|--------------|-------------------------|
| राक्षसेन्द्रः | “இராக்கடஸைந்திரன் | हर्षात् | மனச்சந்துஷ்டியால் |
| उ | இப்பொழுது | नादं च | பெருங்கூச்சலையும் |
| तव | அதை | विमुञ्चन् वै | இட்டுக்கொண்டே |
| श्रुत्वा | அறிந்துகொண்டு | वरुणालयात् | வருணலயத்தினின்றி |
| आत्मनः नाम | தனது பெயரை | निष्क्रान्तः | வெளிப்புறப் பட்டான். |
| विश्राव्य | பிரதாபப்படுத்தி | | |

आगतस्तु पथा येन तेनैव विनिवृत्य सः । लङ्कामभिमुखो रक्षो नभःस्थलगतो ययौ ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------------|-----------|--------------|
| सः | “அந்த | उ | இப்போது |
| रक्षः | அரக்கன் | तेन एव | அதிலேயே |
| नभःस्थलगतः | ஆகாயமார்க்கமாகவே செல்லுகின்றவனாய் | विनिवृत्य | திரும்பி |
| येन | எந்த | लङ्कां | இலங்கையை |
| पथा | வழியால் | अभिमुखः | நோக்கியவனாய் |
| आगतः | வந்தானோ | ययौ | சென்றான். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे त्रयोविंशः सर्गः ॥



चतुर्विंशः सर्गः—இருபத்துநாலாவது ஸர்க்கம் || 24 ||

दण्डकायां खरादिनिवासनम्—தண்டகாவனத்தில் கரன் முதலியவர்களை
வளிக்கச்செய்வது.

निवर्तमानः संहृष्टो रावणः सुदुरात्मवान् । जह् पथि नरेन्द्रर्षिदेवगन्धर्वकन्यकाः ॥ १ ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|--|---|
| சंह்ரஃ | “ மிகத் திருப்தி கொண்டு | नरेन्द्रर्षिदेव- } गन्धर्वकन्यकाः } | இராஜ, ரிஷி, தேவா, கந்தர்வ கன்னிகை களை |
| निवर्तमानः | திரும்பிவந்த | सुदुरात्मवान् | துஷ்டபுத்திமேலிட். டவலாய் |
| रावणः | இராவணன் | जह् | அபஹரித்தான். |
| पथि | வழியில் | | |

दर्शनीयां हि रक्षः स कन्यां स्त्रीं वाऽथ पश्यति ।

हत्वा बन्धुजनं तस्या विमाने तां खरोध ह ॥ २ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------|-----------|--------------------------------|
| सः | “ அந்த | पश्यति हि | கண்டுவிட்டானென் |
| रक्षः | அரக்கன் | तस्याः | அவளுடைய [ரூல், |
| कन्यां | கல்யாணமாகாத பெண்ணை | बन्धुजनं | பந்துஜனத்தை |
| अथ वा | அல்லது | हत्वा | கொன்றுவிட்டு |
| स्त्रीं | கல்யாணமான பெண்ணை | तां | அவளை |
| दर्शनीयां | கட்டழகியாய் | विमाने | புஷ்பகவிமானத்தில் |
| | | खरोध | பத்திரமாய் வைத்து விடுவான். |
| | | ह | என்னகஷ்டம்! |

एवं पन्नगकन्याश्च राक्षसासुरमानुषीः । यक्षदानवकन्याश्च विमाने सोऽध्यरोपयत् ॥ ३ ॥

| | | | |
|-------------------|---------------------------------------|------------------|------------------------------|
| सः | “ அவன் | यक्षदानवकन्याः च | யக்ஷ, தானவ ஸ்த்ரீ களையும் |
| एवं | மேற்கண்ட வண்ணமே | विमाने | புஷ்பகவிமானத்தில் |
| पन्नगकन्याः च | நாகஸ்த்ரீகளையும் | अध्यरोपयत् | துக்கி ஏற்றிவைத் தான். |
| राक्षसासुरमानुषीः | இராக்ஷஸ, அசுரா மானிட ஸ்த்ரீகளையும் | | |

ताभिः सर्वान्वद्याभिर्नदीभिरिव सागरः । आपूरितं विमानं तद्भयशोकाशिवाश्रुभिः ॥ ४ ॥

| | | | |
|--------|-------------------------|----------------------------|---|
| सागरः | “ ஸமுத்திரமானது | सर्वान्वद्याभिः | { எப்படிப் பார்த்தா னும் மஹாபதிவிரு தைகளான |
| नदीभिः | நதிகளால் | ताभिः | அவர்களால் |
| इव | எவ்வண்ணமோ, அவ்வண்ணமே | भयशोका- } शिवाश्रुभिः } | கஷ்டத்தின் துயரத் தால் அமங்களமாய் அழுத கண்ணீர் தாரைகளால் |
| तत् | அந்த | आपूरितम् | நிறம்பிவிட்டது. |
| विमानं | புஷ்பகவிமானம் | | |

नागगन्धर्वकन्याश्च महर्षितनयाश्च याः । दैत्यदानवकन्याश्च विमाने शतशोऽरुन् ॥ ५ ॥

याः " எந்த அந்த
 नागगन्धर्वकन्याः च नाக கந்தர்வ ஸ்த்ரீ
 களும்
 महर्षितनयाः च மஹரிஷிப் புதல்வி
 களும்

दैत्यदानवकन्याः च தைத்ய தானவ ஸ்த்ரீ
 களும்
 शतशः நூற்றுக்கணக்காய்
 विमाने புஷ்பகவிமானத்தில்
 अरुन् கண்ணீர் சொரிந்தார்
 கள்.

दीर्घकेश्यः सुचार्वङ्ग्यः पूर्णचन्द्रनिभाननाः । पीनस्तन्यस्तथा वज्रवेदिमध्यसमप्रभाः ॥
 रथकूबरसङ्काशैः श्रोणीदेशैर्मनोहराः । स्त्रियः सुराङ्गनाप्रख्या निष्टसकनकप्रभाः ॥
 शोकदुःखभयत्रस्ता विह्वलाश्च सुमध्यमाः ॥ ७ ॥

स्त्रियः च " ஸ்த்ரீகள், எல்லோ
 ருமே
 दीर्घकेश्यः நீண்ட குழலுடை
 யவர்களாயும்
 सुचार्वङ्ग्यः சுந்தரமான வடிவழகு
 வாய்ந்தவர்களாயும்
 पूर्णचन्द्रनिभाननाः பூர்ணமதிபோன்ற மு
 கமுடையவர்களாயும்
 पीनस्तन्यः { திரண்ட கொங்கை
 - களையுடையவர்
 களாயும்
 वज्रवेदिमध्य-} வஜ்ரத்தையும் யாக
 समप्रभाः } குண்டத்தையும்
 ஒத்த காந்தியுள்
 ளவர்களாயும்
 रथकूबरसङ्काशैः தேர்த்தட்டடை நிகர்த்த

श्रोणीदेशैः பின்தட்டுகளால்
 सुमध्यमाः சிறந்த இடையுடை
 யவர்களாயும்
 मनोहराः மனதைக் கவர்கின்ற
 வர்களாயும்
 निष्टसकनकप्रभाः { உருக்கிவிட்ட
 - சுவர்ண மேனியுடை
 யவர்களாயும்
 सुराङ्गनाप्रख्याः தைவஸ்த்ரீகள்
 போன்றவர்களாயும்
 शोकदुःखभयत्रस्ताः { மனவேதனையால்
 - கஷ்டப்பட்டுப்பயந்து
 நடுங்கியவர்களாய்
 तथा அப்படியே
 विह्वलाः { இன்ன செய்கிறதென்
 - று தெரியாது கலங்
 கிக்கிடந்தார்கள்.

तासां निश्वासवातेन सर्वतः संप्रदीपितम् । अग्निहोत्रमिवाभाति सन्निरुद्धाग्नि पुष्पकम् ॥

तासां " அவர்களுக்கு
 निश्वासवातेन பெருமூச்சுவந்ததால்
 पुष्पकं புஷ்பகவிமான
 மானது
 सर्वतः எங்கும்

सन्निरुद्धाग्नि वயிர் எரியலாகு
 மக்னியுடையதாய்
 संप्रदीपितं நன்றாய் விசிறிஜ்வா
 லையுடன் கூடிய
 अग्निहोत्रं அக்கினிகுண்டம்
 इव போன்றதாய்
 आभाति துலங்கியது.

काचिच्चिन्तयती तत्र किं नु मां भक्षयिष्यति । काचिद्ध्यौ सुदुःखार्ता अपि मां मारयेदयम् ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-------------|--------------------|
| तत्र | “ அப்பொழுது | काचित् | ஒருத்தி, |
| काचित् | ஒருத்தி, | सुदुःखार्ता | மிகக் கேசைப்படுபவ |
| मां | ‘என்னை | अयं | ‘அவன் [எாய் |
| भक्षयिष्यति | நாசம்செய்துவிடுவா | मारयेत् | கொன்றுவிடுவான் ; |
| | னோ | अपि | இப்படி ஆய்விடக் |
| किं नु | என்னமோ’ என்று | दध्यौ | கூடாகா’ |
| चिन्तयती | எண்ணினான். | | என்றும் எண்ணினான். |

इति मातृपितृन्सृत्वा भर्तृन्भ्रातृन्स्तथैव च । दुःखशोकसमाविष्टा विलेपुः सहिताः स्त्रियः ॥

| | | | |
|---------------------|----------------------|------------|--------------------|
| स्त्रियः | “ஸ்திரீகள் | मातृपितृन् | தாய்தந்தையர்களை |
| दुःखशो रुसमाविष्टाः | கஷ்டத்தால் மனவே | | யும் |
| | தனைப்படுபவர்களாய் | भर्तृन् | பர்த்தாக்களையும் |
| इति | இப்படியிருக்கையிலும் | भ्रातृन् | பிராதாக்களையும் |
| सहिताः | பொறுத்துக்கொண் | सृत्वा च | நினைத்து நினைத்து |
| | டவர்களாய் | विलेपुः | கண்ணீர் சொரிந்தார் |
| तथा एव | இருக்கையிலும்கூட | | கள்; |

कथं नु खलु मे पुत्रो भविष्यति मया विना । कथं माता कथं भ्राता निमग्नाः शोकसागरे ॥

| | | | |
|------------|------------------|----------|-----------------------|
| मया | “என்னை | कथं | என்ன பாடுபடு |
| विना | விட்டுப்பிரிந்த, | | வாளோ ? |
| मे | எனது | भ्राता | பிராதா |
| पुत्रः | புதல்வன் | कथं | என்ன பாடுபடுவா |
| कथं नु खलु | எப்படித்தான் | | னோ’? என்று |
| भविष्यति | இருப்பானோ? | शोकसागरे | சோகஸாகரத்தில் |
| माता | தாய் | निमग्नाः | மூழ்கிக்கிடந்தார்கள். |

हा कथं नु करिष्यामि भर्तारं दैवतं विना । मृत्यो प्रसादयामि त्वां नय मां दुःखभागिनीम् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-------------|-------------------|
| दैवतं | “தெய்வமாய்க் | मृत्यो | ஒமிருத்யுதேவனே, |
| | கொண்டாடப்படுகிற | त्वां | தேவீரை |
| भर्तारं | கணவனை | प्रसादयामि | நான் மன்றூடி வேண் |
| विना | விட்டுப்பிரிந்து | | டிக்கொள்ளுகிறேன். |
| कथं नु | எப்படித்தான் | दुःखभागिनीं | ஆபத்தில் சிக்கிக் |
| करिष्यामि | உய்வேன்? | मां | என்னை [கொண்ட |
| हा | ஐயோ! என்ன கஷ்டம்! | नय | கூட்டிக்கொள்ள |
| | | | அருள் புரியும். |

किं नु तद्दुष्कृतं कर्म पुरा देहान्तरे कृतम् । एवं स्म दुःखिताः सर्वाः पतिताः शोकसागरे ॥

पुरा “முன்
देहान्तरे ஜன்மத்தில்
दुष्कृतं பாபமாகிய
कर्म தொழில்
किं नु ஏதொ
कृतं செய்யப்பட்டிருக்க
கிறது’ என்று

एवं இவ்வண்ணம்
सर्वाः எல்லாரும்
तत् அக்காலத்தில்
दुःखिताः வருத்தப்படுபவர்
களாய்
शोकसागरे துயரக்கடலில்
पतिताः स மூழ்கிக்கிடந்தார்கள்.

न खल्विदानीं पश्यामो दुःखस्यास्यान्तमात्मनः ।

अहो धिञ्जानुषं लोकं नास्ति खल्वथमः परः ॥ १४ ॥

इदानीं “இப்பொழுது
आत्मनः எங்களது
अस्य இந்த
दुःखस्य துக்கத்துக்கு
अन्तं முடிவை
न पश्यामः காணமுடியவில்லை.

अहो ஐயோ,
मानुषं लोकं மானிடஉலகம்
धिक् खलु கேடுகெட்டது.
अथमः அகமமானது
परः खलु வேறொதுவும்
न अस्ति இல்லை.

यद्दुर्वला बलवता भर्तारो रावणेन नः । सूर्येणोद्यता काले नक्षत्राणीव नाशिताः ॥ १५ ॥

यत् “ஆகையால்தான்
काले காலையில்
उद्यता உதயமாகின்ற
सूर्येण கதிரவனால்
नक्षत्राणि நக்சத் திரங்கள்
इव போலவே

बलवता பலிஷ்டனாகிய
रावणेन இராவணனால்
नः எங்களது
दुर्वला: வலியற்ற
भर्तारः பத்தாக்கள்
नाशिताः ஒழிக்கப்பட்டார்கள்.

अहो सुबलवद्रक्षो वधोपायेषु युज्यते । अहो दुर्वृत्तामास्थाय नात्मानं वै जुगुप्सते ॥ १६ ॥

अहो “ஐயோ!
रक्षः அரக்கன்
सुबलवन् சிறந்த பராக்கிரமத்
वधोपायेषु वै கொலைபுரியும் வியா
பாரங்களிலேயே

युज्यते (அதை) பிரயோகிக்கி
अहो ஐயோ! [ரூன்.
दुर्वृत्तं தீய ஒழுக்கத்தை
आस्थाय மேற்கொண்டு
आत्मानं தன்னிடத்தில்
न जुगुप्सते ஜுகுப்பவை கொள்ள
வில்லை.

सर्वथा सदृशस्तावद्विक्रमोऽस्य दुरात्मनः । इदं त्वसदृशं कर्म परदारामिर्शनम् ॥ १७ ॥

परदारामिर्शनं { “பிரர் மனைவிகளிடத்
इदं कर्म இந்தக் காரியம்
सर्वथा எப்படிப்பார்த்தாலும்
असदृशं அடாதது.
सु அப்படியிருந்தும்

अस्य இந்த
दुरात्मनः தூரம்மாவுக்கோ
तावत् என்றால்
विक्रमः பலாத்காரமாய் மேல்
सदृशः வீழ்ந்து தாக்குதல்
சரியானதாய் விளங்கு
கிறது.

यस्मादेष परव्यासु रभते राक्षसाधमः । तस्माद्द्वै स्त्रीकृतेनैव प्राप्स्यते दुर्मतिर्वधम् ॥ १८ ॥

एषः “இந்த
दुर्मतिः னுஷ்ட
राक्षसाधमः அரக்கப்பதர்
परव्यासु அயலார் மனைவிகள்
டத்தில்

रसो कामलिकारங்கொள்ளு
यस्यात् तस्यात् ஆசலின் [கிருன்.
स्त्रीकृतेन एव ஒருபெண்மூலமாகவே
वधं वै மரணத்தையும்
प्राप्स्यते அடையப்போகிருன்.

शप्तः स्त्रीभिः स तु समं हतौजा इव निष्प्रभः । पतिव्रताभिः साध्वीभिर्वभूव विमना इव ॥

साध्वीभिः “புண்ணியசரளி
களாகிய
पतिव्रताभिः பதிவ்ரதை
स्त्रीभिः பெண்மணிகளால்
सप्तं { ஒரே காலத்தில் ஒரே
பிரயோஜனமுடைய
தாய்
शप्तः சபிக்கப்பட்ட
सः அவன்

तु இது விஷயத்தில்
इव கொஞ்சமேனும்
निष्प्रभः எனவும் செய்யமுடி
யாதவனாயும்
इव முற்றிலும்
विमना: எண்ணியிருந்ததை
மாற்றிவிட்டவனாகவும்
हतौजा: ஒளிகுன்றியவனாய்
बभूव ஆளுன்.

एवं विलपितं तासां शृण्वन्नाक्षसपुङ्गवः । प्रविवेश पुरीं लङ्कां पूज्यमानो निशाचरैः ॥

राक्षसपुङ्गवः “இராசூஸத்தலைவன்
तासां அவர்களின்
एवं மேற்கண்ட
विलपितं புலம்பலை
शृण्वन् கேட்டுக்கொண்டே

निशाचरैः அரக்கர்களால்
पूज्यमानः கொண்டாடப்படுகிற
लङ्कां இலங்கை [வறைய்
पुरीं பட்டணத்திற்கு
प्रविवेश வந்துசேர்ந்தான்.

एतस्मिन्नन्तरे घोरा राक्षसी कामरूपिणी । सहसा पतिता भूमौ भगिनी रावणस्वसा ॥

एतस्मिन् “இதே
अन्तरे ஸமயத்தில்
कामरूपिणी நினைத்த உருவமெடுக்க
கவல்லவனும்
घोरा மிக்க கொடியவனும்

राक्षसी இராசூஸ
भगिनी ஸ்த்ரியுமான
रावणस्वसा இராவணனது தங்கை
भूमौ தரையில்
सहसा திடீரென்று
पतिता வந்து வீழ்ந்தாள்.

तां स्वसारं समुत्थाप्य रावणः परिसान्त्वयन् । अन्नवीत्किमिदं भद्रे वक्तुकामासि मे द्रुतम् ॥

रावणः “இராவணன்
तां அந்த
स्वसारं தங்கையை
द्रुतं உடனே
समुत्थाप्य தூக்கி எடுத்து
परिसान्त्वयन् ஆசுவாசஞ்செய்து
इदं இப்படி [பவனாய்

अन्नवीत् வினாவினா :
भद्रे ‘என் அன்பிற்குப்
பாதீரமானவனே !
मे என்னுடன்
कि என்ன
वक्तुकामा சொல்லவேணுமாய்
असि இருக்கிறாய் P’

सा बाष्पपरिरुद्धाक्षी रक्ताक्षी वाक्यमब्रवीत् । कृताऽस्मि विधवा राजंस्त्वया बलवता बलात् ॥

| | | | |
|--------------------|--|----------|-------------------|
| सा | “அவள் கண்ணீர் த்தாரைகளா ல் மறைக்கப்பட்ட க ண்களையுடையவளாய் | अब्रवीत् | இப்படிச்சொன்னாள்: |
| बाष्पपरिरुद्धाक्षी | } | राजन् | ‘வேந்தனே! |
| रक्ताक्षी | | बलवता | பலிவ்ந்தனான |
| वाक्यं | சிவந்த கண்களூற் றவளாய் சொல்ல எண்ணியிருந் ததை | ख्याता | உம்மால் |
| | | विधवा | அனியாயமாய் |
| | | कृता | கைம்பெண்ணை |
| | | अस्मि | ஆக்கப்பட்டவளாய் |
| | | | இருக்கிறேன். |

एते राजंस्त्वया वीरा दैत्या विनिहता रणे । कालकेया इति ख्याता महाबलपराक्रमाः ॥

| | | | |
|----------------|-----------------------------------|--------------|--------------------|
| राजन् | “வேந்தே! | कालकेया, इति | காலகேயர்கள் என்ற |
| एतं | இந்த | दैत्याः | தைத்யர்கள் |
| महाबलपराक्रमाः | மஹாபலமும் பராக் கிரமுமுடையவர்க | त्वया | உம்மால் |
| वीराः | சூரர்களாயும் [ளாயும் | रणे | போரில் |
| ख्याताः | கியாதிபெற்ற | विनिहताः | கொல்லப்பட்டார்கள். |

प्राणेभ्योऽपि गरीयान्-मे तत्र भर्ता महाबलः । सोऽपि त्वया हतस्तात रिपुणा भ्रातृगृधुना ॥

| | | | |
|------------|---------------|------------|--|
| तात | “அப்பனே! | महाबलः अपि | மஹாபலசாலியும் |
| तत्र | அப்பொழுது | आतृगृधुना | } உடன்பிறந்ததால் பொருமைகொண்ட வரும் |
| मे | எனது | रिपुणा | |
| प्राणेभ्यः | பிராணனிலும் | ख्याता अपि | உம்மாலேயே |
| गरीयान् | மேம்பட்டவரும் | हतः | கொல்லப்பட்டார். |
| भर्ता | கணவருமான | | |
| सः | அந்த | | |

त्वयाऽस्मि निहता राजन्स्वयमेव हि बन्धुना । राजन्वैधव्यशब्दं च भोक्ष्यामि त्वत्कृते ह्यहम् ॥

| | | | |
|----------|------------------|---------------|----------------|
| राजन् | “வேந்தே! | राजन् | வேந்தே, |
| अहं | நான் | वैधव्यशब्दं च | விதவை என்கிற |
| स्वयं एव | எனக்கே | | பெயரையும் |
| बन्धुना | உடன்பிறந்தவரான | त्वत्कृते हि | உமது செய்கையா |
| त्वया हि | உம்மாலேயே | | லேயே |
| निहता | அழிக்கப்பட்டவளாக | भोक्ष्यामि | பெற்று விளங்கு |
| अस्मि | ஆயினேன். | | கிறேன். |

ननु नाम त्वया रक्ष्यो जामाता समरेष्वपि । स त्वया निहतो युद्धे स्वयमेव न लज्जसे ॥

| | | | |
|------------|-------------------------|----------|------------------|
| समरेषु अपि | “யுத்தங்களிலேயும் | युद्धे | போரில் |
| त्वया | உம்மால் | सः | அவர் |
| जामाता | மருமகன் | त्वया एव | உம்மாலேயே |
| रक्ष्यः | விட்டுவிடவேண்டி யவன் | निहतः | கொல்லப்பட்டார். |
| | | स्वयं | உமதுவரையில் |
| ननु नाम | இல்லையா என்ன? | न लज्जसे | நீர் வெட்கப்படாம |
| | | | விருக்கிறீர்.’ |

एवमुक्तो दशग्रीवो भगिन्या क्रोशमानया । अब्रवीत्सान्त्वयित्वा तां सामपूर्वमिदं वचः ॥

क्रोशमानया “உறக்கக் கதறுகின்ற
 भगिन्या தங்கையால்
 एवं இவ்வண்ணமாய்
 उक्तः பேசியதற்குச் செவி
 சாய்த்த
 दशग्रीवः தசகரீவன்

तां அவளை
 सान्त्वयित्वा சமாதானப்படுத்தி
 इदं இந்த
 वचः ஆக்கினையையும்
 सामपूर्वं நல்லவார்த்தையால்
 अब्रवीत् சொன்னான் :

अलं वत्से रुदित्वा ते न भेतव्यं च सर्वशः । दानमानप्रसादैस्त्वां तोषयिष्यामि यत्रतः ॥

वत्से “குழந்தாய் !
 रुदित्वा அழுதது
 अलं போதும்.
 सर्वशः முற்றிலும்
 भेतव्यं ஏங்கிக்கிடத்தலென்
 பது
 ते உனக்கு
 न வேண்டாம்.

त्वां உன்னை
 यत्रतः च ஆதரவுடனேயே
 दानमान- } கொடைகளாலும், மரி
 प्रसादैः } யாதைகளாலும், கவ
 लैयन्तुवाम् தவதற்கு
 வேண்டியவைகளா
 லும்
 तोषयिष्यामि திருப்தி செய்கிறேன்.

युद्धप्रमत्तो व्याक्षिप्तो जयकाङ्क्षी क्षिपञ्छरान् ।
 नावगच्छामि युद्धेषु स्वान्परान्वाऽप्यहं शुभे

॥ ३० ॥

शुभे “சிறந்தவளே !
 अहं நான்
 युद्धप्रमत्तः யுத்தவெறிகொண்ட
 युद्धेषु போர்களில் [வறைய
 जयकाङ्क्षी ஜயமொன்றையே
 சருதியவறைய
 व्याक्षिप्तः கலவரப்பட்டவறைய

शरान् பாணங்களை
 क्षिपन् விடுகின்றவறையும்
 स्वान् உறவினர்களையும்
 वा அல்லது
 परान् अपि வேண்டாதவர்களையும்
 न अदगच्छामि பகுத்தறிய முடியா
 मलौर्नृन्तेहन्.

तेनासौ निहतः सङ्घे मया भर्ता तव स्वसः ।
 अस्मिन्काले तु यत्प्राप्तं तत्करिष्यामि ते हितम् ॥
 भ्रातुरैश्वर्ययुक्तस्य खरस्य वस पार्श्वतः

॥ ३१ ॥

स्वसः “தங்கையே !
 तेन அதனால்
 संख्ये போரில்
 मया என்னால்
 तव உனது
 भर्ता நாயகனான
 असौ இவன்

निहतः கொல்லப்பட்டான்.
 तु ஆயினும்
 अस्मिन् இந்த
 काले காலத்தில்த
 प्राप्तं பெறக்கூடியதாகிய
 हितं நன்மை
 यत् எதுவோ

| | |
|------------------|-----------------|
| तत् | அதை |
| ते | உனக்கு |
| करिष्यामि | அளிக்கிறேன். |
| प्रेथर्ययुक्तस्य | ஸகல செல்வங்களை |
| | யும்பெற்று வாழ் |
| | கின்றவனும் |

| | |
|----------|----------------------------|
| भ्रातुः | உடன்பிறந்த வருமான |
| खरस्य | கரனுடைய |
| पार्थितः | பக்கலில் |
| वस | சகமாய் காலம் கழித்துவா. |

चतुर्दशानां भ्राता ते सहस्राणां भविष्यति । प्रभुः प्रयाणे दाने च राक्षसानां महाबलः ॥

| | |
|-------------|----------------|
| ते | “உனது |
| महाबलः | மஹாபலிஷ்டனாகிய |
| भ्राता | சகோதரன் |
| चतुर्दशानां | பதின்னான்கு |
| सहस्राणां | ஆயிரம் |
| राक्षसानां | அரக்கர்களுக்கு |

| | |
|----------|---|
| प्रयाणे | படையெடுத்துச் செல் லும் விஷயத்திலும் |
| दाने च | ஸம்ரக்ஷணவிஷயத் திலும் |
| प्रभुः | பிரபுவாய் |
| भविष्यति | ஆகுவான். |

तत्र मातृवसेयस्ते भ्रातास्यं वै खरः प्रभुः । भविष्यति तवादेशं सदा कुर्वन्निशाचरः ॥

| | |
|-----------|----------------------------|
| ते | “உனக்கு |
| मातृवसेयः | தாயின் தங்கைகுமார னாகிய |
| भ्राता | ஸுஹோதரனான |
| अयं | இந்த |
| खरः | கரனென்ற |
| निशाचरः | அரக்கன் |

| | |
|-----------|-----------------|
| तव | அதில் |
| प्रभुः वै | பிரபுவாகவும் |
| तव | உனது |
| देशं | கட்டளையை |
| सदा | எக்காலத்திலும் |
| कुर्वन् | செய்கிறவனாகவும் |
| भविष्यति | இருப்பான். |

शीघ्रं गच्छत्वयं वीरो दण्डकान्परिरक्षितुम् । दूषणोऽस्य बलाध्यक्षो भविष्यति महाबलः ॥

| | |
|----------|--------------------------|
| वीरः | “இந்த வீரன் |
| दण्डकान् | நர்மதாநதிக்கும் கோ |
| | தாவீநதிக்கும் |
| | இடையிலுள்ள |
| | ‘தண்டகை’ என்கிற |
| | பிரதேசத்தின் நாடு களை |

| | |
|-------------|-----------------|
| परिरक्षितुं | தன்வசமாக்கி ஆளு |
| शीघ्रं | இப்போதே [வதற்கு |
| गच्छतु | செல்லட்டும். |
| अस्य | இவனுக்கு |
| बलाध्यक्षः | போர்மந்திரியாக |
| महाबलः | மஹாபலிஷ்டனாகிய |
| दूषणः | தூஷணன் |
| भविष्यति | ஆகுவான். |

स हि शतो वनोद्देशः क्रुद्धेनोशनसा पुरा । राक्षसानामधीवासो भविष्यति महात्मनाम् ।

| | |
|--------------|----------------------------|
| सः | “அந்த |
| वनोद्देशः हि | வனப்பிரதேசந்தான் |
| क्रुद्धेन | கோபங்கொண்ட |
| उशनसा | உசனஸ் என்கிற மஹரிஷியால் |
| महात्मनां | மஹாத்மாக்களாகிய |

| | |
|------------|----------------------------|
| राक्षसानां | அரக்கர்களுக்கு |
| अधीवासः | வாஸஸ்தானமாக |
| भविष्यति | ஆகப்போகிறது |
| पुरा | முன்னமே [என்ற |
| शसः | சபிக்கப்பட்டிருக் கிறது |

तत्र ते वचनं शूरः करिष्यति सदा खरः । रक्षसां कामरूपाणां प्रभुरेष भविष्यति ॥३६॥

| | | | |
|------------|----------------|----------|--------------------|
| शूरः | “சூரனாகிய | एषः | இவன் |
| खरः | கரன் | तत्र | அங்கே |
| कामरूपाणां | காமரூபிகளாகிய | ते | உனது |
| रक्षसां | அரக்கர்களுக்கு | वचनं | கட்டளையை |
| प्रभुः | பிரபுவாய் | सदा | எப்பொழுதும் |
| भविष्यति | விளங்குவான். | करिष्यति | செய்துமுடிப்பான்.’ |

एवमुक्त्वा दशग्रीवः सैन्यमस्यादिदेश हः चतुर्दश सहस्राणि रक्षसां वीर्यशालिनाम् ॥३७॥

| | | | |
|--------------|---------------|------------|--------------|
| दशग्रीवः | “தசகீர்வன் | चतुर्दश | பதின்னஞ் |
| एवं | இவ்வண்ணம் | सहस्राणि ह | ஆயிரங்களையே |
| उक्त्वा | சொல்லிவிட்டு | सस्य | இவனுக்கு |
| वीर्यशालिनां | வீரியசாலிகளான | सैन्यं | சேனையாக |
| रक्षसां | அரக்கர்களின் | आदिदेश | நியமித்தான். |

स तैः परिवृतः सर्वै रक्षसैर्घोरदर्शनैः । अगच्छत्सन्वरः शीघ्रं दण्डकानकुतोभयः ॥३८॥

| | | | |
|------------|-----------------|-------------|-----------------|
| सः | “அந்த | परिवृतः सन् | புடைகுழப்பட்ட |
| खरः | கரன் | | வனைய் |
| घोरदर्शनैः | பயங்கரமான தோற்ற | अकुतोभयः | நிர்ப்பயனய் |
| तैः | அந்த [முடைய | दण्डकान् | தண்டகாராடுகளில் |
| रक्षसैः | அரக்கர்கள் | शीघ्रं | உடனேயே |
| सर्वैः | எல்லாராலும் | अगच्छत् | பிரவேசித்தான். |

स तत्र कारयामास राज्यं निहतकण्टकम् । स च शूर्पणखा तत्र न्यवसदण्डकावने ॥३९॥

| | | | |
|------------|------------------|------------|----------------|
| तत्र | “அங்கு | कारयामास | புரிந்தான். |
| सः | அவன் | सा | அந்த |
| राज्यं | ஆளுகையை | शूर्पणखा च | சூர்ப்பணகையும் |
| निहतकण्टकं | சத்ருபாதையில்லாத | तत्र | அந்த |
| | படி | दण्डकावने | தண்டகாவனத்தில் |
| | | न्यवसत् | வாஸஞ்செய்தான். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे चतुर्विंशः सर्गः ॥



पश्चविंशः सर्गः—இருபத்தைந்தாவது ஸர்க்கம் || 25 ||

मधुसख्यं—மதுசக்யம்.

स तु दत्त्वा दशग्रीवो वनं घोरं खरस्य तत् । भगिनीं च समाश्वस्य हृष्टः स्वस्थतरोऽभवत् ॥

| | | | |
|----------|-----------|-----------|-------------------|
| ச: | “ அந்த | भगिनीं च | தற்கையையும் |
| दशग्रीवः | தசகீவன் | समाश्वस्य | சமாதானப்படுத்தி |
| तत् | அந்த | स्वस्थतरः | மனக்கவலையொழிந்த |
| घोरं | பயங்கரமான | | வனம் |
| वनं | வனத்தை | हृष्टः | மனத்திருப்திகொண்ட |
| खरस्य | கரனுக்கு | तु | இப்பொழுது [வனம் |
| दत्त्वा | கொடுத்தது | अभवत् | இருந்தான். |

ततो निकुम्भिला नाम लङ्कोपवनसुत्तमम् । तद्राक्षसेन्द्रो बलवान्प्रविवेश सहायुगः ॥ २ ॥

| | | | |
|---------------|----------------|-----------|----------------------|
| ततः | “ அதன்பிறகு | नाम | என்கிற |
| बलवान् | பலிஷ்டனாகிய | उत्तमं | சீரெஷ்டமான |
| राक्षसेन्द्रः | ராக்ஷஸமன்னன் | लङ्कोपवनं | { இலங்காபுரியில் ஒரு |
| सहायुगः | கூட்டாளிகளுடனே | | { உத்தியான வனத் |
| तत् | அந்த [கூட | प्रविवेश | { திற்கு |
| निकुम्भिला | நிகும்பிலை | | போனான். |

ततो यूपशताकीर्णं सौम्यचैत्योपशोभितम् । ददर्श विष्टितं यज्ञं श्रिया संप्रज्वलन्निव ॥३॥

| | | | |
|---------------|---------------------|-------------|--------------------|
| ततः | “ அவ்விடத்தில் | श्रिया | ஜோதியால் |
| यूपशताकीर्णं | { அநேக யூபஸ்தம்பங்க | संप्रज्वलन् | கொழுந்துவிட்டு எரி |
| | { ளில் நிறைந்துள்ள | | கிறது |
| | தும் | इव | போலிருக்கும் |
| सौम्यचैत्योप- | { மங்களகரமான யாக | यज्ञं | ஒரு யாகத்தை |
| शोभितं | { வேதிகைகளால் மிக | विष्टितं | நடைபெற்றுக் |
| | அழகுவாய்ந்திருக் | ददर्श | கொண்டிருக்கிறதாய் |
| | கிறதும் | | கண்டான். |

ततः कृष्णाजिनधरं कमण्डलुशिखाध्वजम् । ददर्श स्वसुतं तत्र मेघनादं भयावहम् ॥ ४ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|--------------|----------------|
| ततः | “ அங்கு | कृष्णाजिनधरं | கிருஷ்ணஜினம் |
| स्वसुतं | அப்பொழுது | | தரித்தவனாயும் |
| मेघनादं | தன் புதல்வனான | भयावहं | பயங்கரமான தோற் |
| कमण्डलु- | மேகநாதனை | | றமுடையவனாயும் |
| शिखाध्वजं | { கமண்டலமும், சிகை | ददर्श | கண்டான். |
| | { யும், தண்டமு | | |
| | முடையவனாய் | | |

तं समासाद्य लङ्केशः परिष्वज्याथ बाहुभिः । अब्रवीत्किमिदं वत्स वर्तसे ब्रूहि तवतः ॥

| | | | |
|------------|----------------|--------|-------------------|
| लङ्केशः | “இலங்கை மன்னன் | वत्स | ‘புதல்வ, |
| तं | அவனை | इदं | இது |
| समासाद्य | கிட்டி | किं | என்ன |
| बाहुभिः | கைகளால் | वर्तसे | நீ செய்யத் துணிந் |
| परिष्वज्या | கட்டி அணைத்து | | தாய் ? |
| अथ | இப்படி | तवतः | உள்ளபடி |
| अब्रवीत् | வினாவினான் : | ब्रूहि | சொல்.’ |

उशना त्वब्रवीत्तत्र यज्ञसंपत्समृद्धये । रावणं राक्षसश्रेष्ठं द्विजश्रेष्ठो महातपाः ॥ ६ ॥

| | | | |
|--------------------|---|----------------|--|
| यज्ञसम्पत्समृद्धये | “யாகம் குறையின்றி முடிவுபெறவேண்டிய காரணத்தால் | उशना | { அசுரர்களுக்கு குருவாகிய சக்கிராசாரியர் |
| तत्र | அப்பொழுது | राक्षसश्रेष्ठं | இராக்ஷஸ சிரேஷ்டனான |
| तु | இதுவிஷயத்தில் | रावणं | இராவணனுக்கு |
| महातपाः | மஹாதபஸ்வியும் | अब्रवीत् | பதில்தந்தருளிஞர் : |
| द्विजश्रेष्ठः | பிராமணைத்தமருமாகிய | | |

अहमाख्यामि ते राजञ्छूयतां सर्वमेव तत् । यज्ञास्ते सप्त पुत्रेण प्राप्ताः सुबहुविस्तराः ॥

| | | | |
|---------|----------------|---------------|--------------------------|
| राजन् | “அரசே ! | शूयतां | செவிகொள்க, |
| तत् | அது | ते | உனது |
| सर्वं | எல்லாவற்றையும் | पुत्रेण | புதல்வனால் |
| ते | உனக்கு | सुबहुविस्तराः | கடுமையான பல அம்சங்களுமான |
| अहं एव | நானே | सप्त यज्ञाः | ஏழு யாகங்கள் |
| आख्यामि | உரைசெய்கிறேன். | प्राप्ताः | இயற்றப்பட்டன. |

अग्निष्टोमोऽश्वमेधश्च यज्ञो बहुसुवर्णकः । राजसूयस्तथा यज्ञो गोमेधो वैष्णवस्तथा ॥ ८ ॥

माहेश्वरे प्रवृत्ते तु यज्ञे पुंभिः सुदुर्लभे । वरांस्ते लब्धवान्पुत्रः साक्षात् पशुपतेरिह ॥ ९ ॥

| | | | |
|-------------|------------------------|-----------------|-------------------------------------|
| अग्निष्टोमः | “ அக்னிஷ்டோம மென்ற | तथा | அவ்வண்ணமே |
| यज्ञः | யாகமும் | गोमेधः | கோமேதமென்கிற |
| अश्वमेधः | அச்வமேதமென்கிற யாகமும் | वैष्णवः | வைஷ்ணவமென்கிற யாகமும் |
| बहुसुवर्णकः | பகுசுவர்ணமென்கிற | तथा | அந்தப்பிரகாரமே |
| यज्ञः च | யாகமும் | पुंभिः | மனிதர்களால் |
| राजसूयः | ராஜஸூயமென்கிற யாகமும் | सुदुर्लभे | செய்த முடிப்பதுமிகக் கஷ்டசாத்தியமான |
| | | माहेश्वरे यज्ञे | மஹேசுவரமென்கிற யாகம் |

| | | | |
|-----------|------------------|----------|-------------------|
| प्रयुक्ते | சுறையின்றி நடைபெ | पशुपतेः | பாரசிவனுடைய |
| ते | உனது [றுகையில் | साक्षात् | பிரத்யக்ஷத்தில் |
| पुत्रः | புதல்வன் | वरान् | வரங்களை |
| इह तु | இவ்வுலகில் | खड्गवान् | பெற்றிருக்கிறான். |

कामगं स्यन्दनं दिव्यमन्तरिक्षचरं ध्रुवम् । मायां च तामसीं नाम यया सम्पद्यते तमः ॥
 एतया किल संग्रामे मायया राक्षसेश्वर । प्रयुक्तया गतिः शक्या न हि ज्ञातुं सुरासुरैः ॥
 अक्षयाविषुधी वाणैश्चापं चापि सुदुर्जयम् । अस्त्रं च बलवत्सौम्य शत्रुविध्वंसनं रणे ॥
 एतान्सर्वान्विराल्लब्ध्वा पुत्रस्तेयं दशानन । अद्य यज्ञसमाप्तौ च त्वां दिदृक्षुः स्थितो ह्यहम् ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------------|----------------|-----------------------------------|
| दशानन | “தசானன, | सुरासुरैः अपि | தேவர்களாலும் அசு ரர்களாலும்கூட |
| राक्षसेश्वर | இராக்ஷஸமன்ன, | गतिः | இருக்குமிடம் |
| सौम्य | அன்பனே, | ज्ञातुं | கண்டு கொள்ள |
| ते | உனது | किं हि | எப்படியும் |
| अयं | இந்த | न शक्या | முடியாதோ அந்த |
| पुत्रः | புதல்வன் | तामसीं | தாமஸி |
| एतान् | பின்கண்ட | नाम | என்கிற |
| वरान् | வரங்கள் | मायां च | மாயையையும், |
| सवान् | எல்லாவற்றையும் | अक्षयौ | அக்ஷயமான |
| अद्य | இப்பொழுது | इषुधी च | அம்பராத்தூணிகளி ரண்டையும், |
| खड्वा | பெற்றான்: | वाणैः | பாணங்களால் |
| दिव्यं | தேவநிர்மிதமானதும் | सुदुर्जयं | வெல்வதற்கரிய |
| कामगं | இஷ்டப்படியெல்லாம் செல்லவல்லதும் | चापं च | தனுசையும், |
| अन्तरिक्षचरं | ஆகாயமார்க்கத்தில் செல்லவல்லதும் | रणे | போரில் |
| ध्रुवं | என்றுமழியாதது மன | शत्रुविध्वंसनं | எதிரிகளை ஹதம் செய்யும் |
| स्यन्दनं | ஒரு தேரையும், | बलवत् | எல்லாவற்றிற்கும் |
| यया | எந்த ஒன்றால் | | மேம்பட்டதாகிய |
| तमः | பிரத்யக்ஷத்திலும் கண்களால் | अस्त्रं च | ஒரு அஸ்திரத்தையும் (பெற்றான்.) |
| संपद्यते | உண்டாகிறதோ | यज्ञसमाप्तौ | யாகமுடிவில் |
| संग्रामे | போரில் | त्वां | உன்னை |
| प्रयुक्तया | பிரயோகிக்கப்பட்ட | दिदृक्षुः | காண |
| एतया | இந்த | अहं हि | நானும் |
| मायया | மாயையால் | स्थितः | இருந்தேன். |

ततोऽब्रवीदशश्रीवो न शोभनमिदं कृतम् । पूजिताः शत्रवो यस्माद्भवैरिन्द्रपुरोगमाः ॥१४॥

दशश्रीवः “தசக்ரீவன்
 ततः अस्सम्यत्तில்
 इदं இப்படி
 अब्रवीत् பேசினான் ;
 इत्यै: ‘திரவ்யங்களால்
 शत्रवः சத்ருக்களாகிய

इन्द्रपुरोगमाः இந்திரன் முதலான
 वार्कः வர்கள்
 पूजिताः பூஜிக்கப்பட்டார்கள்
 यस्मात् என்கிற காரணத்தால்
 कृतं முடிவுபெற்ற காரியம்
 न शोभनम् அமங்களமானது.

एहीदानीं कृतं विद्धि सुकृतं तन्न संशयः । आगच्छ सौम्य गच्छामः स्वमेव भवनं प्रति॥

सौम्य “மங்களமானவனே,
 इदानीं இப்பொழுது
 एहि எழுந்தாவருக ;
 स्वं உனது
 भवनं प्रति மாளிகைக்கே
 आगच्छ வா ;

गच्छामः போவோம்.
 तत् कृतं அந்தக் காரியம்
 सुकृतं एव கைக்கூடிவிட்டதாயே
 विद्धि நீ கொள்ளல்
 भवनं प्रति வேண்டும்.
 संशयः न இதற்கையமில்லை.

ततो गत्वा दशश्रीवः सपुत्रः सविभीषणः । स्त्रियोऽवतारयामास सर्वास्ता बाष्पगद्गदाः ॥

ततः “அனந்தரம்
 दशश्रीवः தசக்ரீவன்
 सपुत्रः புதல்வனோடுகூடின
 वनोप्यும்
 सविभीषणः விபிஷணனுடன்
 கூடினவனாயும்
 गत्वा சென்று

बाष्पगद्गदाः { கண்ணும் கண்ணீரு
 माकत् त्विद्धुक्
 கொண்டிருக்கின்ற
 ताः அந்த
 स्त्रियः ஸ்த்ரீகள்
 सर्वाः எல்லோரையும்
 अवतारयामास இறக்கினான்.

लक्ष्मिण्यो रत्नभूताश्च देवदानवरक्षसाम् । नार्यो भूषणसंपन्ना ज्वलन्त्यः स्वेन तेजसा ॥

देवदानवरक्षसां { “தேவர்கள், தானவர்க
 कः, अरक्कः,
 இவர்களுடைய
 नार्यः ஸ்த்ரீகள்
 रत्नभूताः ரத்னம்போன்றவர்க
 களாய்

भूषणसंपन्नाः ஆபரணமணிந்தவர்க
 களாய்
 लक्ष्मिण्यः சர்வாங்க சுந்தரி
 स्वेन தங்களது [களாய்
 तेजसा च பாதிவிருத்தய
 தேஜஸாலே
 ज्वलन्त्यः ஜ்வலித்தார்கள்.

विभीषणस्तु ता नारीर्दृष्ट्वा शोकपरायणाः । तस्य तासु मतिं ज्ञात्वा धर्मात्मा वाक्यमब्रवीत्॥

धर्मात्मा “நருமாத்மாவாகிய
 विभीषणः விபிஷணர்
 ताः அந்த
 नारीः பெண்மணிகளை
 शोकपरायणाः சோகத்திலேயே மூழ்
 கிக்கிடக்கிறவர்களாய்
 दृष्ट्वा கவனித்து

ता तु அவர்களிடத்தில்
 तस्य அவனது
 मतिं உத்தேசத்தை
 ज्ञात्वा அறிந்து
 सु இதுவிஷயத்தில்
 वाक्यं சொல்லவேண்டியதை
 अब्रवीत् சொன்னார்.

ईदृशैस्त्वं समाचारैर्यशोऽर्थकुलनाशनैः । धर्षणं प्राणिनां दत्त्वा स्वमेतन् विचेष्टसे ॥१९॥

| | | | |
|------------------|--|-----------|------------------|
| त्वं | “: நீர் | समाचारैः | நடவடிக்கைகளால் |
| ईदृशैः | இப்படிப்பட்ட | प्राणिनां | பிராணிகளுக்கு |
| यशोऽर्थकुलनाशनैः | { யசனையும், புருஷார் த்தன்களையும், குலப் பெருமையையும் அழிக்கின்ற | धर्षणं | உபத்திரவத்தை |
| | | दत्त्वा | புரிந்து |
| | | स्वमेतन् | உம்மிஷ்டப்படியே |
| | | विचेष्टसे | அல்லாடுகின்றீர். |

ज्ञार्तीस्तान्धर्षयित्वेमास्त्वयाऽऽनीता वराङ्गनाः । त्वामतिक्रम्य मधुना राजकुम्भीनसी हता ॥

| | | | |
|------------|----------------|-----------|---------------------|
| राजन् | “: அரசே! | आनीताः | கொண்டுவரப்பட்டார் |
| हमाः | இந்த | | கள். |
| वराङ्गनाः | ஸ்தீரத்தனங்கள் | कुम्भीनसी | கும்பினஸி என்பவள் |
| तान् | அந்த | मधुना | மதுவென்னும் அரக்க |
| ज्ञातीन् | பிதாக்களையும் | त्वां | உம்மை [னால் |
| धर्षयित्वा | உபத்திரவித்து | अतिक्रम्य | மிஞ்சி |
| त्वया | உம்மால் | हता | அபஹரிக்கப்பட்டாள்.’ |

रावणस्त्वब्रवीद्वाक्यं नावगच्छामि किं न्विदम् ।
कोऽयं यस्तु त्वयाऽऽख्यातो मधुरित्येव नामतः

॥ २१ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|---------|----------------|
| रावणः | “ இராவணன் | त्वया | உன்னால் |
| तु | இவ்விஷயத்தில் | आख्यातः | சொல்லப்பட்ட |
| वाक्यं | அறிந்துகொள்ள | मधुः | மது |
| | வேண்டியதை | इति | என |
| अब्रवीत् | இப்படி வினாவினான்: | नामतः | பெயர் பூண்டவன் |
| इदं | ‘இது | यः तु | எவனோ அந்த |
| किं नु | என்னவென்று | अयं एव | இவன் தான் |
| न अवगच्छामि | நான் தெரிந்துகொள் | कः | யார்?’ |
| | ளாதிருக்கிறேன். | | |

विभीषणस्तु संक्रुद्धो भ्रातरं वाक्यमब्रवीत् । श्रूयतामस्य पापस्य कर्मणः फलमागतम् ॥

| | | | |
|------------|-------------------|----------|----------------------|
| विभीषणः | “ விபீஷணர் | श्रूयतां | ‘விளம்புகிறேன், |
| संक्रुद्धः | மிகவும் கோபங்கொ | अस्य | இந்த [செவிக்கொள்க. |
| | ண்டவராய் | पापस्य | பாப |
| आतरं | அண்ணனைப்பார் த்து | कर्मणः | செயலின் |
| वाक्यं | விஷயத்தை | फलं | பயன் |
| अब्रवीत् | இப்படி தெரியப்ப | तु | இப்போதே |
| | டுத்தினார்: | आगतम् | பிரத்யகூதத்தில் சம்ப |
| | | | வித்து விட்டது. |

मातामहस्य योऽस्माकं ज्येष्ठो भ्राता सुमालिनः ।
माल्यवानिति विख्यातो वृद्धः प्राज्ञो निशाचरः

॥ २३ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-----------|-------------|
| ய: | “ எந்த | ஐதி | என்பவர் |
| निशाचरः | அரக்கர் | अस्माकं | நமது |
| वृद्धः | பெரியவராய் | मातामहस्य | மாதாமஹராகிய |
| प्राज्ञः | பிராஞ்ஞவரன | सुमालिनः | சுமாலியினது |
| विख्यातः | பெயர் பெற்றவரோ | ज्येष्ठः | மூத்த |
| माल्यवान् | மால்யவான் [அந்த | भ्राता | சகோதரர். |

पिता ज्येष्ठो जनन्या नो ह्यस्माकं चार्थकोऽभवत् ।
तस्य कुम्भीनसी नाम दुहितुर्दुहिताऽभवत्

॥ २४ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-----------|----------------|
| नः | “ நமது | अभवत् | ஆகின்றார். |
| जनन्याः | தாயின் | तस्य | அவருடைய |
| ज्येष्ठः | பெரிய | दुहितुः | மகளின் |
| पिता | தந்தை | दुहिता | மகளான |
| हि | ஆனதால் | कुम्भीनसी | கும்பீனஸி |
| अस्माकं च | நம் எல்லோருக்கும் | नाम | என்பவர் |
| आर्थकः | பாட்டனாராக | अभवत् | இங்கிருந்தான். |

मातृष्वसुरथास्माकं सा च कन्याऽनलोद्भवा । भवत्यस्माकमेवैषा भ्रातॄणां धर्मतः स्वसा ॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------|-------------------|
| सा | “ அவள் | अथ | அப்படியிருக்கிற |
| अनलोद्भवा | அனலியின்பெண் ; | एषा | இவர் [படியால் |
| च | ஆதலால் | भ्रातॄणां | சகோதரர்களான |
| अस्माकं | நமது | अस्माकं एव | நம் எல்லோருக்கும் |
| मातृष्वसुः | தாயின் சகோதரியின் | धर्मतः | முறைப்படி |
| कन्या | மகள் ; | स्वसा | சகோதரியாக |
| | | भवति | ஆகிறார். |

सा हता मधुना राजन् राक्षसेन बलीयसा । यज्ञप्रवृत्ते पुत्रे तु मयि चान्तर्जलोषिते ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------|---------------|--|
| राजन् | “ அரசே ! | तु | அதேகாலத்தில் |
| सा | அவள் | मयि च | நானும் |
| बलीयसा | மஹாபலிஷ்டனாகிய | अन्तर्जलोषिते | ஜலத்தினுள் ஸ்தம்பித் துத் தவம்புரிகையில் |
| मधुना | மதுவென்ற | | |
| राक्षसेन | அரக்கனால் | | |
| पुत्रे | குமாரன் | हता | { பலாக்காரமாகத் துக்கிக்கொண்டு போகப்பட்டாள். |
| यज्ञप्रवृत्ते | யாகம்செய்துகொண் டிருக்கையில் | | |

कुम्भकर्णे महाराज निद्रामनुभवत्यथ । निहत्य राक्षसश्रेष्ठानमात्यानिह संमतान् ॥ २७ ॥

महाराज “महाराज्जिने !
कुम्भकर्णे कुम्भकर्णன்
निद्रां துயிலில்
अनुभवति முழுகிக்கிடக்கையில்
अथ எல்லாமிப்படியிருக்கையில்

इह இப்பொழுது
संमतान् பூஜ்யர்களும்தான்
राक्षसश्रेष्ठान् அரக்கோத்தமர்களும்தான்
अमात्यान् மந்திரிமார்களை
निहत्य கொலைபுரிந்தான்.

धर्षयित्वा हता सा तु सुप्ताऽप्यन्तःपुरे तव । श्रुत्वापि तन्महाराज क्षान्तमेव हतो न सः ॥

महाराज “महाराज्जिने !
अन्तःपुरे अந்தப்புரத்தில்
सुप्ता अயர்ந்து துயில்
सा அவள்
धर्षयित्वा உல்லங்கனம் செய்யப்பட்டு
हता தூக்கிக்கொண்டு போகப்பட்டாள்.

अपि அப்படியாயினும்
तत् அதை
श्रुत्वा तु அறிந்து
तव एव உமக்காகவே
क्षान्तं अपि { பொறுத்து அனுபவிக்கவேண்டியதாயிருக்கிறபடியால்
सः அவன்
न हतः கொல்லப்படவில்லை.

यस्माद्वश्यं दातव्या कन्या भर्त्रे हि भ्रातृभिः । तदेतत्कर्मणो ह्यस्य फलं पापस्य दुर्मते ॥

अस्मिन्नेवाभिसम्प्राप्तं लोके विदितमस्तु ते

॥ २९ ॥

भ्रातृभिः “சகோதரர்களால்
कन्या ஒருபெண்
भर्त्रे ஒருகணவனுக்கு
अवश्यं எப்படியும்
दातव्या { கல்யாணஞ்செய்துகொடுக்கப்படவேண்டியவள்.
दुर्मते கெடுமதியுடையாய்,
अस्मिन् एव இதிலேதான்
ते हि உமக்கே
अस्य இந்த

पापस्य कर्मणः பாபச்செயலின்
फलं பயன்
अभिप्राप्तं பிரத்யக்ஷத்தில் சம்பவமாயிருக்கிறதாய்
तत् அந்த
एतत् இது
लोके உலகில்
यस्मात् எந்த இதிலிருந்து
विदितं हि அறிந்துகொள்ளவேண்டிய செய்தியாய்
अस्तु விளங்கும்.

ततोऽब्रवीद्दशमीवः क्रुद्धः संरक्तलोचनः । कल्पयतां मे रथः शीघ्रं शूराः सज्जीभवन्तु नः ॥

दशमीवः “தசகீர்வன்
ततः அப்படி ஆகிவிட்டதில்
क्रुद्धः கோபங்கொண்டவனாய்
संरक्तलोचनः சிவந்த கண்களுற்றவனாய்
अब्रवीत् உரைத்தான்.

शीघ्रं ‘இப்போதே
मे रथः எனது இரதம்
कल्पयतां சித்தமாக்கப்பட்டும்.
नः நமது
शूराः போர்வீரர்கள்
सज्जीभवन्तु போர்க்கோலங்கொள்ளட்டும்.

भ्राता मे कुम्भकर्णश्च ये च मुख्या निशाचराः। वाहनान्यधिरोहन्तु नानाप्रहरणोद्यताः ॥

मे “எனது
 भ्राता சகோதரனான
 कुम्भकर्णः च சும்பகர்ணனும்
 मुख्या: தலைவர்களாகிய
 निशाचराः அரக்கர்கள்

ये च एवர்களோ அவர்களும்
 नानाप्रहरणोद्यताः பற்பல படைக்கலங்
 कर्णायुदयवர்களாய்
 वाहनानि வாஹனங்களில்
 अधिरोहन्तु ஏறிக்கொள்ளட்டும்.

अद्य तं समरे हत्वा मधुं रावणनिर्भयम् । सुरलोकं गमिष्यामि युद्धकाङ्क्षी सुहृद्वृतः ॥

अद्य “இப்பொழுதே
 रावणनिर्भयं இராவணனுக்குப்
 பயப்படாத

युद्धकाङ्क्षी யுத்தத்தையுடைய
 सुहृद्वृतः யவனாய்

तं அந்த
 मधुं மது என்பவனை
 समरे போரில்
 हत्वा கொன்றுவிட்டு

वेण्डियவர்களால்
 पुடைகுழப்பப்
 डவனாய்
 सुरलोकं தேவலோகத்திற்கு
 गमिष्यामि செல்வேன்.

ततो विजित्य त्रिदिवं वशे स्थाप्य पुरन्दरम् । निर्भयो विचरिष्यामि त्रैलोक्यैश्वर्यशोभितः ॥

ततः “அவ்விடத்தில்
 पुरन्दरं இந்திரனை
 वशे அடிமைத்தனத்தில்
 स्थाप्य நிறுத்திவிட்டு
 त्रिदिवं ஸ்வர்க்கலோகத்தை

विजित्य வெசமாக்கி
 निर्भयः கவலை ஒழிந்தவனாய்
 त्रैलोक्यैश्वर्य- } திரிலோகாதிபத்தியம்
 शोभितः } பெற்று விளங்குகிற
 वनாய்
 विचरिष्यामि எங்கும் திரிவேன்.

अक्षौहिणीसहस्राणि चत्वार्यश्याणि रक्षसाम् । नानाप्रहरणान्याशु निर्ययुर्युद्धकाङ्क्षिणाम् ॥

युद्धकाङ्क्षिणां “போர்புரியப்பேராவல்
 கொண்டிருந்த
 रक्षसां அரக்கர்களின்
 अश्याणि உத்தமர்களான
 चत्वारि நான்கு
 अक्षौहिणी- } *ஆயிரம் அகெஷுளஹி
 सहस्राणि } னிகளும்

नानाप्रहरणान्याशु { நாளைவிதமான போரா
 युद्धकाङ्क्षिणाम् } யுத்தங்களையுடையவர்
 कर्णाय
 आशु உடனேயே
 निर्ययुः புறப்பட்டுவிட்டார்
 कर्.

*[21870 இராதங்களும், 21870 யானைகளும், 65610 குதிரைகளும், 109350 காலாட்களும் அடங்கிய படைகளின் ஆயிரம்.]

इन्द्रजित्वग्रतः सैन्यात्सैनिकान्परिगृह्य च । जगाम रावणो मध्ये कुम्भकर्णश्च पृष्ठतः ॥३५॥

सैनिकान् “சேனைகளை
 परिगृह्य பரிபாலித்துக்
 கொண்டு
 रावणः இராவணன்
 मध्ये நடுவில்
 जगाम சென்றான்.

इन्द्रजित् तु இந்திரஜித்தோவெ
 सैन्यात् च சேனைக்கு [னில்
 अग्रतः முதலில் சென்றான்.
 कुम्भकर्णः च சும்பகர்ணனும்
 पृष्ठतः கடைசியாய்ச் சென்
 ருன்.

विभीषणश्च धर्मात्मा लङ्कायां धर्ममाचरत् । शेषाः सर्वे महाभागा ययुर्ध्रुपुरं प्रति ॥३६॥

धर्मात्मा “ தருமா த்மாவாகிய
 विभीषणः च விபீஷணர் மட்டும்
 लङ्कायां இலங்கையில்
 धर्म தருமத்தை
 आचरत् அனுஷ்டித்தார்.

महाभागा: கியாதிபெற்ற
 शेषाः மற்ற
 सर्वे எல்லோரும்
 मधुपुरं प्रति மதுபுரத்திற்கு
 ययुः சென்றார்கள்.

खरैरुष्ट्रैर्हयैर्दक्षिः शिशुमारैर्महोरगैः । राक्षसाः प्रययुः सर्वे कृत्वाऽऽकाशं निरन्तरम् ॥३७॥

राक्षसाः “ அரக்கர்கள்
 सर्वे எல்லோரும்
 खरैः கழுதைகளாலும்
 उष्ट्रैः ஒட்டகங்களாலும்
 वीसैः சுருசுருப்புள்ள
 हयैः குதிரைகளாலும்
 शिशुमारैः சிம்சுமாரமென்கிற
 மிருகங்களாலும்

महोरगैः பெரிய உரகங்களா
 ஆகாயத்தை
 आकाशं இடைவெளியில்லாத
 निरन्तरं தாய்
 कृत्वा செய்துகொண்டு
 प्रययुः நடந்தார்கள்.

दैत्याश्च शतशस्तत्र कृतवैराश्च दैवतैः । रावणं प्रेक्ष्य गच्छन्तमन्वगच्छन् हि पृष्ठतः ॥३८॥

दैवतैः “ தேவர்களுடன்
 कृतवैराः ஏற்கனவே வைரங்
 கொண்டிருந்த
 दैत्याः தைத்யர்கள்
 शतशः च அனேகரும்
 रावणं இராவணனை

तत्र அப்பொழுது
 गच्छन्तं च படை எடுத்துச்
 செல்லுகிறவனாகவே
 प्रेक्ष्य அறிந்து
 पृष्ठतः हि கூடவே
 अन्वगच्छन् பின்தொடர்ந்து
 சென்றார்கள்.

स तु गत्वा मधुपुरं प्रविश्य च दशाननः । न ददर्श मधुं तत्र भगिनीं तत्र दृष्टवान् ॥३९॥

सः “ அந்த
 दशाननः தசானன்
 मधुपुरं மதுபுரத்திற்கு
 गत्वा வந்துசேர்ந்து
 प्रविश्य உட்புகுந்தான்.
 तत्र அப்பொழுது

मधुं மதுவை
 न ददर्श காணவில்லை.
 तु ஆயினும்
 भगिनीं च தங்கையைமட்டும்
 तत्र அவ்விடத்தில்
 दृष्टवान् கண்டான்.

सा च प्रह्लाञ्जलिभूत्वा शिरसा चरणौ गता । तस्य राक्षसराजस्य त्रस्ता कुम्भीनसी तदा ॥

सा “இந்த
 कुम्भीनसी கும்பீனஸி
 तदा அப்பொழுது
 त्रस्ता च திகிலடைந்தவளாயும்
 प्रह्लाञ्जलिः கைகப்பியவளாயும்

भूत्वा இருந்துகொண்டு
 तस्य அந்த
 राक्षसराजस्य அரக்கமன்னனது
 चरणौ பா தங்களில்
 शिरसा முடிதாழ்த்தி
 गता பணிந்துவீழ்ந்தாள்.

तां समुत्थापयामास न भेतव्यमिति ब्रुवन् । रावणो राक्षसश्रेष्ठः किं चापि करवाणि ते॥

| | | | |
|--|--|---|---|
| <p>राक्षसश्रेष्ठः रानणः च भेतव्यं न ते किं</p> | <p>“ राक्षसश्रेष्ठो த்தம சூதிர இராவணனும் ‘அஞ்சதல்வேண்டாம். உனக்கு என்ன</p> | <p>करवाणि इति ब्रुवन् तां अपि समुत्थापयामास</p> | <p>செய்யவேண்டும் என்று சொல்லிக்கொண்டே அவளையும் எழுந்திருக்கச் செய்தான்.</p> |
|--|--|---|---|

साऽब्रवीद्यदि मे राजन् प्रसन्नस्त्वं महाभुज । भर्तारं न ममेहाद्य हन्तुमर्हसि मानद ॥४२॥

| | | | |
|--|---|--|--|
| <p>सा अद्य इह अब्रवीत् मानद महाभुज</p> | <p>“ அவள் இப்பொழுது இப்படி விண்ணப்பம் செய்து கொண்டாள்; ‘பெருமையை யளிக்கும் மஹாபராக்கிரம சாலியாகிய</p> | <p>राजन् स्वं मे प्रसन्नः यदि मम भर्तारं न हन्तुं अर्हसि</p> | <p>அரசே! தேவரீர் என்னிடத்தில் அன்புக்கூர்ந்தவர் என்கிறபக்தத்தில் எனது கணவனை கொல்லாதிருக்க அருள் புரியவேண்டும்.</p> |
|--|---|--|--|

न हीदृशं भयं किञ्चित्कुलस्त्रीणामिहोच्यते । भयानामपि सर्वेषां वैधव्यं व्यसनं महत् ॥

| | | | |
|---|---|--|--|
| <p>हि कुलस्त्रीणां वैधव्यं अपि सर्वेषां भयानां महत्</p> | <p>“ ஏனென்றால் குலஸ் த்ரீகள் எல் லோருக்கும் விதவையாதல் ஒன்றே எல்லாக்கஷ்டங்களி டமஹத்தான [ஆம்</p> | <p>व्यसनं इह किञ्चित् भयं ईदृशं न उच्यते</p> | <p>கஷ்டம். இவ்வுலகில் யாதொரு கஷ்டமும் இதற்கிடானதாய் சொல்லப்படவில்லை.</p> |
|---|---|--|--|

सत्यवाग्भव राजेन्द्र मामवेक्षस्व याचतीम् । त्वयाऽप्युक्तं महाराज न भेतव्यमिति स्वयम्॥

| | | | |
|---|---|---|--|
| <p>महाराज त्वया अपि स्वयं न भेतव्यं इति उक्तं</p> | <p>“ மஹாராஜேரீ! தேவரீராலேயே தேவரீரே இஷ்டப் பட்டு அஞ்சல்வேண்டாம் என்று வாக்களிக்கப்பட்டது.</p> | <p>याचतीं मां अवेक्षस्व राजेन्द्र सत्यवाक् भय</p> | <p>வருந்திப் பிரார்த்திக் என்னை [கும் கடாகூறித்தருளும். இராஜோத்தம, சொன்னசொல்லை பரிபாலிப்பவராய் விளங்கும்.’</p> |
|---|---|---|--|

रावणस्त्वब्रवीद्बृष्टः स्वसारं तत्र संस्थिताम् । क चासौ तव भर्ता वै मम शीघ्रं निवेद्यताम् ॥

| | | | |
|-----------|----------------------------------|-------------|---------------------------|
| रावणः | “ இரா வணன் | तत्र | ‘உனது |
| तव | இப்பொழுது | भर्ता | கணவனாகிய |
| संस्थितां | சகமாய் வாழ்ந்து கொண்டிருக்கிற | असौ वै | இவன் |
| स्वसारं | தங்கையைப்பார்த்து | क च | எங்கேயிருக்கிற னென்பது |
| हृष्टः | நீருப்தியடைந்த வனாய் | मम | எனக்கு |
| तु | இப்பொழுது இப்படி | शीघ्रं | உடனேயே |
| अब्रवीत् | பதிலுரைத்தான்: | निवेद्यताम् | சொல்லிவிடப்பட்ட டும். |

सह तेन गमिष्यामि सुरलोकं जयावहे । तव कारुण्यसौहार्दान्निवृत्तोऽस्मि मयोर्वधात् ॥

| | | | |
|-------------------|-----------------------|-----------|--------------------------------------|
| तव | “உனது | अस्मि | ஆகிவிட்டேன். |
| कारुण्यसौहार्दात् | அன்பின் ஆசையால் | तेन सह | அவனோடுசேர்ந்து |
| मयोः | மதுவின் | सुरलोकं | சுரலோகத்திற்கு |
| वधात् | கொலைபுரிவதின்னறு | गमिष्यामि | போகப்போகிறேன். |
| निवृत्तः | எண்ணம் மாறியவ னாய் | जयावहे | நாங்களிருவருமாய் வெற்றிகொள்வோம்.’ |

इत्युक्त्वा सा समुत्थाप्य प्रसुप्तं तं निशाचरम् । अब्रवीत्संप्रहृष्टेव राक्षसी तु पतिं वचः ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------------|------------|---------------------------------|
| इति | “ இவ்வண்ணமாய் | प्रसुप्तं | நன்றாய் துயில் கொ |
| उक्त्वा | சொல்லப்பட்டதற்குச் செவிகாய்த்த | तं | அந்த [ண்டிருந்த |
| सा राक्षसी | அந்த அரக்கி | पतिं | கணவனாகிய |
| तु | அத்தருணத்தில் | निशाचरं | அரக்கனை |
| इव | அப்படியே | समुत्थाप्य | எழுப்பி |
| संप्रहृष्टा | அதிக உதஸாஹங் கொண்டவராய் | वचः | விஷயத்தை |
| | | अब्रवीत् | இப்படித் தெரியப் படுத்தினள்: |

एष प्राप्तो दशग्रीवो मम भ्राता महाबलः । सुरलोकजयाकाङ्क्षी साहाय्ये त्वां वृणोति च ॥

| | | | |
|--------------------------|---|----------|------------------------------|
| मम | “ எனது | एषः | இதோ |
| भ्राता | அண்ணனும் | प्राप्तः | வந்திருக்கின்றனர். |
| महाबलः | மஹாபலிஷ்டரு | त्वं च | உம்மையும் |
| दशग्रीवः | தசக்ரீவர் [மாகிய | साहाय्ये | ஓத்தாசைபண்ணும் விஷயத்தில் |
| सुरलोक- जया कांक्षी } | ஸுரலோகத்தை வெற்றிகொள்ள எண்ணங்கொண் டவராய் | वृणोति | அபேகூக்கிறார். |

तदस्य त्वं सहायार्थं सवन्धुर्गच्छ राक्षस । स्निग्धस्य भजमानस्य युक्तमर्थाय कल्पितम् ॥

राक्षस “அரக்கரே!
 स्निग्धस्य நட்புக்கு
 भजमानस्य தக்க பாத்திரமாகிய
 अस्य இவரது
 अर्थाय காரியம் கைகூடு
 कल्पितुं வதின் பொருட்டு
 உதவிபுரிய

युक्तं இது ஏற்றசமயம்.
 तत् ஆதலால்
 त्वं தேவரீர்
 सवन्धुः நண்பருடன் கூடினவ
 राय ராய்
 सहायार्थं துணைசெய்தற்
 பொருட்டு
 गच्छ எழுந்துசெல்வீராக்.

तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा तथेत्याह मधुर्वचः

॥ ५० ॥

मधुः “மது
 तस्याः அவளுடைய
 तत् அந்த
 वचनं விண்ணப்பத்திற்கு

श्रुत्वा இணங்கி
 तथा इति ‘இப்படியேயாகுக’ என்
 वचः உறுதியை [கிற
 आह சொல்லிவிட்டுத்தான்.

ददर्श राक्षसश्रेष्ठं यथान्यायमुपेत्य सः । पूजयामास धर्मेण रावणं राक्षसाधिपम् ॥ ५१ ॥

सः “அவன்
 राक्षसश्रेष्ठं இராக்கூஸோத்த
 மனும்
 राक्षसाधिपं ராக்கூஸமன்னனுமா
 रावणं இராவணனிடம் [கிய

यथान्यायं விதிப்படி
 उपेत्य வந்துசேர்ந்து
 ददर्श தர்சித்தான்.
 धर्मेण முறைப்படி
 पूजयामास உபசரித்தான்.

प्राप्य पूजां दशग्रीवो मधुवेशमनि वीर्यवान् ।

तत्र चैकां निशामुष्य गमनायोपचक्रमे ॥

वीर्यवान् “வீர்யவானாகிய
 दशग्रीवः च தசகீவனும்
 मधुवेशमनि மதுவின் பாளிகையில்
 पूजां உபசாரத்தை
 प्राप्य அன்புடனேற்றுக்
 கொண்டு

तत्र அங்கு
 एकं ஒரு
 निशां இரவு
 उप्य தங்கியிருந்து
 गमनाय பாக்கி வழி செல்ல
 उपचक्रमे பிரயாணமானான்.

ततः कैलासमासाद्य शैलं वैश्रवणालयम् । राक्षसेन्द्रो महेन्द्राभः सेनामुपन्यवेशयत् ॥ ५३ ॥

महेन्द्राभः “தேவேந்திரனுக்கு
 நிகரான
 राक्षसेन्द्रः ராக்கூஸசிரேஷ்டன்
 वैश्रवणालयं குபேரனது ஆலயமா
 कैलासं கைலாஸ [கிய

शैलं பர்வதத்திற்கு
 आसाद्य வந்துசேர்ந்து
 तत्र அதில்
 सेनां ஸேனையை
 उपन्यवेशयत् தங்கவைத்தான்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे पञ्चविंशः सर्गः ॥



படிவாசா: சரி:—இருபத்தாறுவது ஸர்க்கம். || 26 ||

நல்கூவரராப:—நளகூபரன் சபித்தல்.

ச து தர தசரிவ: சஹ சேந்யேந விர்யவாந | அஸ்த் ப்ராஹே தினகரே நிவாஸம் சமரோசயத் ||

| | | | |
|--------------|------------------|----------|----------------------|
| விர்யவாந | “விர்யவாஹுண | சேந்யேந | ஸேனையோடு |
| ச: | அந்த | சஹ | கூட |
| தசரிவ: | தசகரீவன் | தத து | அங்கேயே |
| தினகரே | சூரியன் | நிவாஸம் | இரவை போக்குவ |
| அஸ்த் ப்ராஹே | அஸ்தமனம் ஆன தும் | சமரோசயத் | நிச்சயித்தனன். [தாய் |

உதிரே விமலே சந்நே துலயபர்வதர்வசி | ப்ரஸும் சுமஹ்சேந்யம் நானாபஹ்ரணாயுஷம் || 27 ||

| | | | |
|----------------|---------------------------|-----------------|--------------------------|
| துலயபர்வதர்வசி | “மலைக்கு நிகரான ஜோதிகொண்ட | நானாபஹ்ரணாயுஷம் | பலவிதப்போர் படை |
| விமலே | மாசற்ற | சுமஹ் | பெரும் [களையுடைய |
| சந்நே | சந்திரன் | சேந்யம் | ஸேனே |
| உதிரே | உதயமாகவே | ப்ரஸுமம் | நன்றாய் உறக்கம் கொண்டது. |

ராவுணஸ்து மஹாவிர்யோ நிஷண: சைலமூர்ஷினி | ச ததர்ஷ குணாஸ்தத்ர சந்ந்ரபாதுஸுஸோபிதாந் ||

| | | | |
|-------------|-----------------|---------------------------|-------------------------------|
| மஹாவிர்ய: | “மஹாவலுக்கொண்ட | நிஷண: | சுகமாய் உட்கார்ந்திருப்பவனாய் |
| ச: | அந்த | சந்ந்ரபாது- சுஸோபிதாந் | சந்திரக்கிரணங்களுக்கேற்றதாகிய |
| ராவுண: து | இராவணன் மட்டும் | குணாந் | காமவிகாரங்களை |
| சைலமூர்ஷினி | மலைச்சிகரத்தில் | ததர்ஷ | அனுபவித்தான். |
| தத | அப்பொழுது | | |

கர்ணிகாரவநைரீசு: கதம்வகஹநேஸ்தயா | பவ்நினிபிஷ் சுலாபிர்மந்நாக்நியா ஜலேரபி || 28 ||

சம்பகாஸிகபுந்நா஘மந்நாரதரபிஸ்தயா | சூதபாடலலோத்ரேஷ் ச்ரியஹ்வர்ஜுநகேதகை: || 29 ||

தர்ரேநாரிகேலேஷ் ச்ரியாலபநசேஸ்தயா | அரவதேஸ்தமாலேஷ் ச்ரியாலவகூலேரபி || 30 ||

ஏதேரநேஷ் தரபிஹ்ரஹாஸிதவநாந்நரே | கிந்நரா மதநேநார்தா ரக்தா மஹுரகபிந: ||

சம் சம்பஜகுர்யத்ர மனஸ்துஷ்டிவிவர்தனம் || 31 ||

| | | | |
|--------------|--------------------------------|--------------|----------------------------|
| ஏதே: | “இந்த | தயா | அவ்வண்ணமே |
| ரீசு: | பிரகாசமாய் விளங்குகின்ற | சுலாபி: | நன்றாய் விகலித்திருக்கின்ற |
| கர்ணிகாரவநை: | கர்ணிகாரமரங்களாலும் | பவ்நினி: சி: | தாமரைகளாலும் |
| கதம்வகஹநை: | கதம்பங்கள் அடர்ந்த காடுகளாலும் | மந்நாக்நியா: | மந்தாகினி நதியினது |
| | | ஜலே: அபி | ஜலங்களாலும் |
| | | தயா | அவ்வண்ணமே |

| | |
|-----------------------------------|--|
| चम्पकाशोकपुञ्जाग- मन्दारतरुभिः | } சம்பகம், அசோகம், புந்நாகம், மந்தாரம் என்கிற மரங்களா லும், |
| चूतपाटलोपैः च | |
| त्रियङ्गुवर्जुनकेतकैः | } சூதம், பாடலம், லோத்திரமென்கிற மரங்களா லும் |
| तगरैः | |
| नारिकेलैः च | பிரயங்கி, அர்ஜுனம், கேதகமென்கிற மரங்களா லும் |
| मियालपनसैः | தகரமென்கிற மரங்களா லும் |
| तथा | தென்னை மரங்களா லும் |
| आरुधैः | பிரயா லு பனஸ மென் கிற மரங்களா லும் |
| तमालैः च | அவ்வண்ணமே ஆரக்வதமென்கிற மரங்களா லும் |
| | தமாலமென்கிற மரங் களா லும் |

विद्याधरा मदक्षीवा मदरक्तान्तलोचनाः ।

| | |
|------------------|---|
| विद्याधराः | “வித்யாதாரர்கள் |
| मदक्षीवाः | காமவெறிகொண்ட வர்களாய் |
| मदरक्तान्तलोचनाः | } மெய்யலின் அதிகத் தால் அழகுவாய்ந்த கண்களுற்றவர்களாய் |
| योषिद्धिः | |

घण्टानामिव सन्नादः शुश्रुवे मधुरस्वरः । अप्सरोगणसङ्घानां गायतां धनदालये ॥ ९ ॥

| | |
|------------------|---|
| घनदालये | “குபேரனது ஆலயத்தில் |
| गायतां | கானம்செய்து கொண்டிருந்த |
| अप्सरोगणसङ्घानां | } இடைவெளியின் நிக் கும்பலாய்க்கடியி ருந்த அப்ஸரஸ்திரீ களுடைய |

| | |
|--|---|
| प्रियालवकुलैः अपि | } (சிறுபெண்கள் வாயி னின்று மதுவை துப் பியதுமே புஷ்பிக் கும்) பிரயாலபகுள மென்கிற விருகூடங் களா லும் |
| अन्यैः तरुभिः च उद्भासितवनान्तरे | |
| किन्नराः | இவைகளில்லாதவேறு விருகூடங்களா லும் |
| मदनेन आतां | விளங்குகின்ற வனப் பிரதேசத்தில் |
| रक्ताः | கின்னரர்கள் |
| मधुरकण्ठिनः | மன்மதனால் |
| मनः | அடியுண்டவர்களாய் |
| तुष्टिविवर्धनं | காமவிகாரத்தில் முழுகியவர்களாய் |
| यव समं रुम्रजगुः | இனிய சாரீரமுடைய மனதிற்கு [வர்களாய் ஆனந்தத்தை மேல் மேலும் வளர்க்கும் வண்ணமாய் ஏதோ அதேஇடத்தில் எல்லாரும் சேர்ந்து கர்ணாமிருதமாய்ப் பாடினார்கள். |

योषिद्धिः सह संक्रान्ताश्रिक्रीडुर्जहृषुषु वै ॥

| | |
|---------------|-------------------------------|
| सह | கூடியிருந்துகொண்டு |
| संक्रान्ताः च | காலங்கழிப்பவர் களாயும் |
| चिक्रीडुः | வினோதமாக விளையா டினார்கள். |
| जहृषुः वै | ஆனந்தப்பட்டார்கள். |

| | |
|-----------|---------------|
| मधुरस्वरः | மதுரமான த்வனி |
| घण्टानां | மணிகளின் |
| सन्नादः | முழக்கம் |
| इव | போல |
| शुश्रुवे | கேட்டது. |

पुष्पवर्षाणि मुञ्चन्तो नगाः पवनताडिताः । शैलं तं वासयन्तीव मधुमाधवगन्धिनः ॥१०॥

| | | | |
|-----------------|-------------------------------|----------|--------------------|
| மதுமாடவகந்நின்: | “வஸந்த நுதுவின் வாசனையுடைய | சுஜ்ஞ்த: | உதிர்த்துக்கொண்டு |
| நகா: | மரங்கள் | தீ | அந்த |
| பவனதாடிதா: | காற்றில் சேர்ந்தவை | சீலம் | மலையிலே |
| புஷ்ப-வாணி | பூமாரிகளை [களாய் | ஹ | எங்குமே |
| | | வாசயந்தி | நருமணங்கம்முந்தது. |

मधुपुष्परजःपृक्तं गन्धमादाय पुष्कलम् । प्रववौ वर्धयन्कामं रावणस्य सुखोऽनिलः ॥११॥

| | | | |
|-----------------|--|-----------|------------------------|
| அனில: | “காற்று | ஆதாய | கூடவே இழுத்துக் கொண்டு |
| மதுபுஷ்பரஜ:புக் | { வஸந்தகாலப் புஷ்பங் களின் இரேணுக் களோடு சேர்ந்திருக் கிறதும் மிக்க இனிமையாய் மிருக்கின்ற வாசனையை | ராவுஸ்ய | இராவணனுக்கு |
| | | காமம் | காமவேட்கையை |
| | | வர்த்தயந் | வளரச்செய்துக் கொண்டு |
| புஷ்கலம் | மிக்க இனிமையாய் மிருக்கின்ற | சுஃ | மனோஹரமாய் |
| கந் | வாசனையை | பவவौ | விசிற்றும். |

गेयात्पुष्पसमृद्ध्या च शैत्याद्वायोर्गिरेर्गुणात् । प्रवृत्तायां रजन्यां च चन्द्रस्योदयेन च ॥

रावणः सुमहावीर्यः कामस्य वशमागतः । विनिश्वस्य विनिश्वस्य शशिनं समवैक्षत ॥१३॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-----------------|-----------------|
| சுமஹாவிர்ய: | “அதிவீரயவானான | புஷ்பசமூட்டயா ச | புஷ்பங்களின் |
| ராவுண: | இராவணன் | | சுகந்தத்தாலும் |
| வாய: | வாயுவின் | கோவா ச | கானத்தினாலும் |
| சீலயா | குளிமையினாலும் | காமச்ய | மன்மதன் |
| கிரே: | மலையின் | வசம் | வசம் |
| குணா | அழகாலும் | ஆகாத: | ஆனவனாய் |
| பவூட்டாயா | நடைபெறுவது | விநிஷ்வச்ய } | பெருமூச்சு |
| ரஜந்யா | இராக்காலமானதா | விநிஷ்வச்ய } | எறிந்து எறிந்து |
| சந்ரஸ்ய | சந்திரனுடைய [லும் | சாசினம் | சந்திரனை |
| உதயநேன ச | நிலாவெளிச்சத் | சமவீஷத | பார்த்தவண்ணமே |
| | தாலும் | | இருந்தான். |

एतस्मिन्नन्तरे तत्र दिव्याभरणभूषिता । सर्वाप्सरोवरा रम्भा दिव्यपुष्पविभूषिता ॥१४॥

दिव्यचन्दनलिप्ताङ्गी मन्दारकृतमूर्धजा । दिव्योत्सवकृतारम्भा पूर्णचन्द्रनिभानना ॥१५॥

| | | | |
|---------------------|--|-----------------------|---|
| दिव्याभरणभूषिता | “தீவ்யமான ஆபரணங்களணிந்தவளாய் | दिव्यचन्दन-लिप्ताङ्गी | அங்கங்களில் தீவ்யமான சந்தனப் பூச்சுடையவளாய் |
| दिव्यपुष्प-विभूषिता | தீவ்யமான புஷ்பங்களையுடைய களைச் சூடிக்கொண்டிருப்பவளாய் | मन्दारकृत-मूर्धजा | மந்தாரபுஷ்பங்களை வைத்துக்கொண்டிருந்த தலைமயிருடையவளாய் |

पूर्णवन्दनिमानना } முழுமதிபோன்ற
 முகமுடையவளாய்
 दिव्योसव- } தேவோ தஸ்வங்களில்
 कृतारम्भा } முதலிலிருக்க நிய
 மனம் பெற்றவளாய்

सर्परोवरा } அப்பரஸ் தீரீசரீஸ்
 தலைமையான
 रम्भा } ரம்பை என்பவள்
 एतस्मिन् अन्तरे } இதே காலத்தில்
 तत्र } அங்கிருந்தாள்.

चक्षुर्मनोहरं पीनं मेखलादामभूषितम् । समुद्रहन्ती जघनं रतिप्राभृतमुत्तमम् ॥ १६ ॥

मेखलादाम- } “அரை நூல் மலை
 भूषितं } அணிந்ததாய்
 पीनं } பெருத்ததாய்
 रतिप्राभृतं } ரதீதேவியிலேயே
 தந்தருளப்பட்டதெ
 விளங்குவதாய்

चक्षुर्मनोहरं } கண்களையும் மனங்
 களையும் கொள்ளை
 उत्तमं } கொள் ளுகிறதாய்
 जघनं } உன்னதமான
 समुद्रहन्ती } பின்தட்டை
 வறியி த்திருந்தாள்.

कृतैर्विशेषकैरार्द्रैः षड्तुंकुसुमोद्भवैः । वभावन्त्यतमेव श्रीकान्तिद्युतिमतिद्वियाम् ॥

नीलं सतोयमेघाभं वस्त्रं समवकुण्डिता

॥ १७ ॥

आर्द्रैः } “அப்போதே கிள்ளப்பட்ட
 षड्तुंकुसुमोद्भवैः } ஆறு ருதுக்களின்
 புஷ்பங்களிலிருந்து
 உண்டானவைகளும்
 कृतैः } அழகாய்ச் செய்யப்
 பட்டவைகளுமான
 विशेषकैः } அங்கங்களில் வாசனை
 தரவ்யங்களின்
 श्रीकान्तिद्युति- } அழகு, சோபை, மஹ
 मतिद्वियां } த்வம், புத்தி, நாணம்
 இவைகளுடைய

अन्यतमा ह्व } உருவங்கொண்டவள்
 போன்றவளாய்
 बभौ } விளங்கினாள்.
 सतोयमेघाभं } நீருண்டமேகம்
 போன்ற
 नीलं } நீலநிறமுடைய
 वस्त्रं } ஆடையை
 समवकुण्डिता } போர்வையாக
 அணிந்திருந்தாள்.

यस्या वक्तुं शशिनिभं भ्रुवौ चापनिभे शुभे । ऊरु करिकराकारौ करौ पल्लवकोमलौ ॥

सैन्यमध्येन गच्छन्ती रावणेनोपवीक्षिता

॥ १८ ॥

यसाः } “எந்த அவளுடைய
 वक्तुं } முகம்
 शशिनिभं } சந்திரனை ஒத்தது ;
 शुभे } அழகுவாய்ந்த
 भ्रुवौ } புருவங்கள்
 चापनिभे } வில்லைப்பகைத்தன ;
 ऊरु } தொடைகள்
 करिकराकारौ } யானைத்தும்பிக்கைக
 ளைப் போன்றவைகள்.

करौ } கைகள்
 पल्लवकोमलौ } தளிர்போல் யிருது
 வானவைகள்.
 सैन्यमध्येन } னைன்யங்களினிட
 யில்
 गच्छन्ती } போய்க்கொண்டிருப்
 பவளாய்
 रावणेन } இராவணனால்
 उपवीक्षिता } உற்றுப்பார்க்கப்
 பட்டாள்.

तां समुत्थाय गच्छन्तीं कामवाणवशं गतः । करे गृहीत्वा लज्जन्तीं समयमानोऽभ्यभाषत ॥

| | | | |
|-----------|---|---|---|
| காமவாணவன் | “மன்மதபாணம் களுக்கும் வசப்பட்டு தவிக்குமவன் | गच्छन्तीं तां समुत्थाय करे गृहीत्वा | வழியேபோய்க்கொண் அவள்மீது [முருந்த சடக்கெனப்பாய்ந்து கையில் பற்றி இழுத்து தக்கால மனோபாவத் தை வெளியிட்டுச் சொன்னான். |
| गतः | ஆச்சாயங்கொண்ட வனாகி | अभ्यभाषत | |
| समयमानः | நாணத்தால் முகச் சிவப்புடைபவளாய் | | |
| लज्जन्तीं | | | |

क गच्छसि वरारोहे कां सिद्धिं भजसे स्वयम् ।
कस्याभ्युदयकालोऽयं यस्त्वां समुपभोक्ष्यते

॥ २० ॥

| | | | |
|---------|---|---|---|
| वरारोहे | “சந்தரியே, எங்கு நீ போய்க்கொண்ட ருக்கிறாய் ? | भजसे कस्य अयं अभ्युदयकालः यः त्वां समुपभोक्ष्यते | பெறப்போகிறாய் ? எவனுக்கு இது நல்லகாலம், எவன் உன்னை அனுபவிக்கப் போகிறான் ? |
| क | | | |
| गच्छसि | | | |
| स्वयं | உன்னிஷ்டப்படிக்கே எந்த நல்லபிரயோஜனத்தை | | |
| कां | | | |
| सिद्धिं | | | |

त्वदाननरसस्याद्य पद्मोत्पलसुगन्धिनः । सुधामृतरसस्येव कोऽद्य तृप्तिं गमिष्यति ॥२१॥

| | | | |
|--------------------|---|---|--|
| अद्य | “இப்பொழுது பத்மம், உத்பலம், புஷ்பசுமுகந்தின: இவைகளின் நறு மணமுள்ளதும், சுடாமுதிரசய தேவாமிருதத்தின் ருசிக்கு ஈடாயிருக்கிறதுமான | एवम् आननरसस्य तृप्तिं अद्य कः गमिष्यति | உனது அதாமிருதத் தினுடைய திருப்தியை இத்தருணத்தில் எவன் அடையப்போகிறான் ? |
| पद्मोत्पलसुगन्धिनः | | | |
| सुधामृतरसस्य | | | |
| इव | | | |

स्वर्णकुम्भनिभौ पीनौ शुभौ भीरु निरन्तरौ । कस्योरःस्थलसंस्पर्शं दास्यतस्ते कुचाविभौ ॥

| | | | |
|-----------------|--|---|---|
| भीरु | “பயந்தவளே ! உனது இவ்விரண்டு சுவர்ணகலசங்களைய் போன்றவைகளும் இடைவெளியின்றி அழகாய் | पीनौ कुचौ कस्य उरःस्थलसंस्पर्शं दास्यतः | திரண்டுருண்டவை களுமான ஸ்தனங்கள் எவனுடைய மார்புடன் கட்டி அணைத்தலுக்கு பிரயோஜனமாகிவிட்ட டனா? |
| ते | | | |
| इभौ | | | |
| स्वर्णकुम्भनिभौ | | | |
| निरन्तरौ | | | |
| शुभौ | | | |

सुवर्णचक्रप्रतिमं स्वर्णदामचितं पृथु । अध्यारोहति कस्तेऽद्य जघनं स्वर्गरूपिणम् ॥२३॥

| | | | |
|--------------------|---------------------------------------|--------------|---|
| சுவர்ணச்சக்ரபரிமம் | “உனது சுவர்ண சக்கிரம் போன்றதும் | स्वर्गरूपिणं | { சவர்க்கமே உருக்கொண்டுவந்ததுபோலிருக்கிறதுமான |
| स्वर्णदामचितं | { சுவர்ண அரைநூல் மாலை அணியப்பெற்றதும் | जघनं | கடித்தடக்கை |
| पृथु | அகன்று விசாலமாக யிருக்கின்றதும் | कः | எவன் |
| | | अद्य | இப்பொழுது |
| | | अध्यारोहति | பெறப்போகிறான். |

मद्विशिष्टः पुमान्कोऽद्य शक्रो विष्णुरथाश्विनौ ।
मापतीत्य हि यं च त्वं यासि भीरु न शोभनम्

॥ २४ ॥

| | | | |
|--------|-----------------------------|-------------|-----------------|
| மீரூ | “பயந்தவளே! | मद्विशिष्टः | என்னிலும் மேலான |
| अद्य | இப்பொழுது | पुमान् | புருஷன் |
| मां | என்னை | कः | எவன்? |
| अतीत्य | தவிர்த்து | शक्रः | இந்திரன்? |
| यं | யாதோ ஒருவனிடம் | विष्णुः | விஷ்ணுவா? |
| त्वं | நீ | अश्विनौ च | அச்வனிதேவதை |
| यासि | செல்லுகின்றாயோ அப்படிப்பட்ட | अथ हि | யாரிவன்? [கனா? |
| | | शोभनं न | நியாயமில்லை. |

विश्रम त्वं पृथुश्रोणि शिलातलमिदं शुभम्

॥ २५ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------|---------|------------------------|
| पृथुश्रोणि | “பெருத்த பின் தட்டுயடையாய்! | शुभं | அழகாயிருக்கின்ற |
| त्वं | நீ | शिलातलं | கற்பாறைமீது |
| इदं | இந்த | विश्रम | உட்கார்ந்து இளைப்பாறு. |

त्रैलोक्ये यः प्रभुश्चैव मदन्यो नैव विद्यते

॥ २६ ॥

| | | | |
|-------------|------------------------|--------------|-------------|
| शैलोक्ये एव | “மூவுலகத்திலுமே | प्रभुः | பிரபு |
| मदन्यः | என்னிலும் பெருமை பெற்ற | यः च | எவனொருவனும் |
| | | न विद्यते एव | இல்லைவே. |

तदेवं प्राञ्जलिः प्रहो याचते त्वां दशाननः । भर्तुर्भर्ता विधाता च त्रैलोक्यस्य भजस्व माम्॥

| | | | |
|------------|------------------------------|------------|-------------------|
| शैलोक्यस्य | “மூவுலகத்தின் | प्रहः | அதிக ஆசைகொண்ட |
| भर्तुः | பதியின் | एवं | இவ்விதமாய் [வனாய் |
| भर्ता | யஜமானனும் | प्राञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ் தனாய் |
| विधाता च | கேட்டதெல்லாமளிக் கவல்லவனுமான | याचते | வேண்டுகின்றனன். |
| दशाननः | தசானன் | तत् | ஆதலால் |
| त्वां | உன்னை | मां | என்னை |
| | | भजस्व | அங்கீகரி. |

एवमुक्त्वाऽब्रवीद्ब्रम्हा वेपमाना कृताञ्जलिः । प्रसीद नार्हसे वक्तुमीदृशं त्वं हि मे गुरुः ॥
अन्येभ्यो हि त्वया रक्षया प्राप्नुयां धर्षणं यदि । तद्भूतः स्तुषा तेऽहं तत्त्वमेव ब्रवीमि ते ॥

| | |
|------------|------------------------------|
| एवं | “இப்படியாய் |
| उक्त्वा | சொல்லியதைக்கேட்ட |
| ब्रम्हा | ரம்பை |
| वेपमाना | உடல்நடுக்கங் கொண் டவளரகி |
| कृताञ्जलिः | கைகூப்பிக்கொண்டு |
| अब्रवीत् | இப்படி வேண்டிக் கொண்டாள்: |
| ते | “தேவரீருக்கு |
| तरत् एव | விஷயத்தின் உண்மை மையே |
| ब्रवीमि | நான் சொல்லிவிடு கிறேன். |
| धर्मतः | சாஸ்திரநியமனப்படி |
| ते | தேவரீரது |
| स्तुषा | மருமகளாக ஆய்விட் டேன்; |
| हि | என்கிறபடியால் |
| त्वं | தேவரீர் |

| | |
|-------------|---|
| मे | எனக்கு |
| गुरुः | பிதாவாகின்றீர். |
| तत् | ஆகையால் |
| अहं | நான் |
| अन्येभ्यः | பிறரிடமிருந்து |
| धर्षणं | கற்பழித்தலை |
| प्राप्नुयां | பெறுகிறதாய் |
| यदि | இருக்கும்பகூத்தில் |
| रवया | உம்மால் |
| रक्षया | பாதுகாக்கப்பட வேண்டியவள். |
| हि | ஆனபடியால் |
| ईदृशं | இங்ஙனம் |
| वक्तुं | ஆக்ஞாபிக்க |
| न अर्हसे | { தேவரீர் மனங்கொள் ளாமலிருக்கவேண் டும்; |
| प्रसीद | கிருபைசெய்து மன்னியும். |

अथाब्रवीद्दशग्रीवश्चरणाधोमुखीं स्थिताम् । रोमहर्षमनुप्राप्तां दृष्टमात्रेण तां तदा ॥ ३० ॥

| | |
|--------------|--|
| दशग्रीवः | “தசகரீவன் |
| दृष्टमात्रेण | கண்டதுமே |
| रोमहर्षं | மயிர்க்கூச்செறிந்து |
| अनुप्राप्तां | திகிலை அடைந்திருந் தவளாய் |
| चरणाधोमुखीं | { கால்களை தலைகுனி ந்துப் பார்க்கும் வண்ணமே |

| | |
|----------|------------------|
| स्थितां | நின்றகொண்டிருந்த |
| तां | அவளைப்பார்த்து |
| तदा | அப்பொழுது |
| अथ | இப்படி |
| अब्रवीत् | பதில் தந்தான்: |

सुतस्य यदि मे भार्या ततस्त्वं हि स्तुषा भवेः । बाहमित्येव सा रम्भा प्राह रावणमुत्तरम् ॥

| | |
|--------|--------------------------|
| त्वं | “நீ |
| मे | என்னுடைய |
| सुतस्य | மகனுக்கு |
| भार्या | மனைவியாய் |
| भवेः | ஆகுவாய் |
| यदि | ஆனால் |
| ततः हि | அப்போதிலிருந்து அன்றோ |

| | |
|-------------|----------------------------------|
| स्तुषा | மருமகளாகுவாய்?’ |
| सा | அந்த |
| रम्भा | ரம்பை |
| रावणं | ராவணனைப் பார்த்து |
| उत्तरं | இன்னும் விசேஷமாய் |
| प्राह | நிதர்சனம் காட்டினாள்: |
| बाहं इति एव | ‘இது இப்படித்தானி ருக்கிறது.’ |

धर्मतस्ते सुतस्याहं भार्या राक्षसपुङ्गव । पुत्रः प्रियतरः प्राणैर्भ्रातृवैश्रवणस्य ते ॥
विख्यातस्त्रिषु लोकेषु नलकूबर इत्ययम्

राक्षसपुङ्गव “राक्षसஸோத்தமரே!
ते தேவரீரது
भ्रातुः அண்ணராகிய
वैश्रवणस्य குபேரரது
पुत्रः புதல்வரும்
त्रिषु மூன்று
लोकेषु உலகங்களிலும்
विख्यातः பிரஸித்திபெற்றிருப்பவருமான
अयं இந்த

॥ ३२ ॥

नलकूबरः நளகூபரர்
हृति என்பவர்
प्राणैः பிராணனிலும்
प्रियतरः அதிக ஆசைவைக்கப் பட்டவர்.
धर्मतः சாஸ்திரமுறைப்படி
अहं நான்
ते தேவரீரது
सुतस्य குமாரனின்
भार्या மனைவியாகிறேன்.

धर्मतो यो भवेद्विभ्रः क्षत्रियो वीर्यतो भवेत् । क्रोधाद्यश्च भवेदग्निः क्षान्त्या च वसुधासमः॥

यः “எந்த அவர்
धर्मतः தருமத்தில்
विभ्रः பிராமணனாக
भवेत् விளங்குகிறார்;
वीर्यतः வீர்யத்தில்
क्षत्रियः சூத்திரியனாக
भवेत् விளங்குகிறார்;
क्षान्त्या பொறுமையால்

वसुधासमः பூமிதேவிக்கு
क्षान्त्या; ஈடானவர்;
च ஆயினும்
यः எந்த அவர்
क्रोधात् கோபம்வந்தாலோ
अग्निः च அக்கினிபகவர
विभ्रः வெனவே
क्षान्त्या விளங்குவார்.

तस्यास्मि कृतसङ्केता लोकपालसुतस्य वै ।

तस्य “அந்த
लोकपालसुतस्य லோகபாலகரது
पुத்தिराருக்கு
तु இத்தருணத்தில்
कृतसङ्केता वै வரிக்கப்பட்டு ஒப்புக் கொண்டவளாய்
अस्मि ஆகிறேன்.

तमुद्दिश्य तु मे सर्वं विभूषणमिदं कृतम् ॥

मे என்னுடைய
इदं இந்த
विभूषणं அலங்கரித்தல்
सर्वं எல்லாமும்
तं उद्दिश्य அவருக்கென்றே
कृतम् செய்துகொள்ளப் பட்டது.

तथा तस्य हि नान्यस्य भावो मां प्रति तिष्ठति । तेन सत्येन मां राजन्मोक्तुमर्हस्यरिन्दम् ॥

अन्यस्य हि न “வேறொருவனுக்கும்
तथा அவ்வண்ணமே [ல்லை;
तस्य அவரது
भावः கருத்து
मां प्रति எனமீதே
तिष्ठति நிலைபெற்றிருக்கிறது.
अरिन्दम् சத்ருஸம்ஹாரக
राक्य

राजन् மன்னரே,
तेन அந்த
सत्येन தருமநியமத்தையனு
वृद्धि-க்கவேண்டியதால்
मां என்னை
मोक्तुं போகவிட
अर्हसि தேவரீர் அருள்புரிய வேண்டும்.

स हि तिष्ठति धर्मात्मा मां प्रतीक्षन्समुत्सुकः । तत्र विघ्नं सुतस्येह कर्तुं नार्हसि मुञ्च माम् ॥

சஃ “அந்த
 धर्मात्मा தருமா த்மா
 मां என்னை
 प्रतीक्षन् எதிர்பார்த்துக்
 கொண்டே
 समुत्सुकः ஆத்திரத்தானிருப்
 तत्र हि அங்கே [பவராய்
 तिष्ठति காத்துக்கொண்டிருக்
 கிரார்.]

इह இச்சமயம்
 सुतस्य குமரனுக்கு
 विघ्नं இடையூரை
 कर्तुं செய்ய
 न अर्हसि மனம்கொள்ளாமலி
 मां என்னை ரும்.
 मुञ्च போய்விட விடை
 தந்தருளும்.

सद्भिराचरितं मार्गं गच्छ राक्षसपुङ्गव । माननीयो मम त्वं हि पालनीया तथाऽस्मि ते ॥

राक्षसपुङ्गव “இராக்கடனோத்தம!
 सद्भिः நல்லோர்களால்
 आचरितं அனுஷ்டிக்கப்படும்
 मार्गं சன்மார்க்கத்தை
 गच्छ பின்பற்று.
 त्वं தேவீர்

मम எனக்கு
 माननीयः हि பூஜ்யரே!
 तथा அந்தப்ரகாரமே
 ते தேவீருடைய
 पालनीया சம்ரக்ஷணைக்கே உரி
 மையுடையவளாக
 अस्मि ஆகிறேன்.

एवमुक्तो दशग्रीवः प्रत्युवाच विनीतवत् । स्तुषाऽस्मि यदवोचस्त्वमेकपत्नीष्वयं क्रमः ॥

एवं “இவ்வண்ணம்
 उक्तः வேண்டிக்கொள்ளப்
 பட்டவனை
 दशग्रीवः தசகரீவன்
 विनीतवत् வணங்கியவனாய்
 प्रत्युवाच இந்த விடை தந்தான்:
 त्वं ‘நீ
 स्तुषा अस्मि மருமகளாக ஆகிறேன்

अवोचः என்று சொல்லுகிறது
 यत् எதுவோ
 अयं இது
 एकपत्नीषु { ஒரு பர்த்தாவையு
 டைய கற்புடைய
 பெண்டிற்களில்
 क्रमः சம்பிரதாயமாய்
 விளங்கும் நியாயம்.

देवलोकस्थितिरियं सुराणां शाश्वती मता । पतिरप्सरसां नास्ति न चैकस्त्रीपरिग्रहः ॥

अप्सरतां “அப்ஸரஸ்தீர்
 களுக்கு
 पतिः கணவனென்பவன்
 ஒருவன்
 न अस्ति இல்லை.
 एकस्त्री- } ஒரு ஸ்திரீயை தரும
 परिग्रहः च } பதனியர்ய்க் கொண்
 டிருப்பது என்பதும்

न இல்லை.
 इयं இந்த
 सुराणां தேவர்களுடைய
 शाश्वती எக்காலத்திற்கு
 முரியதான
 मता கொள்கையானது
 देवलोकस्थितिः தேவலோகசம்பிர
 தாயம்.

एवमुक्त्वा स तां रक्षो निवेश्य च शिलातले । कामभोगाभिसंसक्तो मैथुनायोपचक्रमे ॥

| | | | |
|---------|--------------|--------------|---------------------|
| ச: | “ அந்த | निवेश्य च | இருக்கச்செய்து |
| ரக்ஷ: | அரக்கன் | காமபொகமொன்றி | காமபொகமொன்றி |
| एवं | இவ்வண்ணமாய் | संसक्तः | வேயே பைத்தியம் |
| उक्त्वा | சொல்லிவிட்டு | | பிடித்தவனாய் |
| तां | அவளை | मैथुनाय | சம்போகத்தின் |
| शिलातले | கற்பாறையில் | | பொருட்டு |
| | | उपचक्रमे | கற்பழித்துவிட்டான். |

सा विमुक्ता ततो रम्भा भ्रष्टमाल्यविभूषणा । गजेन्द्राक्रीडमथिता नदीवाकुलतां गता ॥

| | | | |
|-----------------|------------------------|--------------|-------------------------------|
| சா | “ இந்த | इव | போன்றவளாய் |
| रम्भा | ரம்பை | भ्रष्टमाल्य- | அலங்கோலப்பட்ட |
| ततः | அதிலிருந்து | विभूषणा | மாலைகளும் ஆபரணங்களுமுடையவளாய் |
| विमुक्ता | ஸ்வதந்திரம் பெற்றவளாய் | | |
| गजेन्द्राक्रीड- | பெரும் யானையின் | आकुलतां | மனக்குழப்பத்தை |
| मथिता | விளையாட்டால் கலக்க | गता | அடைந்தவளாயிருந்தாள். |
| नदी | நீரோட்டம் [குண்ட | | |

लुलिताकुलकेशान्ता विधूतकरपल्लवा । पवनेनावधूतेव लता कुसुमशालिनी ॥ ४२ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|---------------|--|
| पवनेन | “ காற்றினால் | विधूतकरपल्लवा | நடுக்கமுற்ற கைவிரல் |
| अवधूता | அலைபயுண்ட | | களையுடையவளாய் |
| कुसुमशालिनी | புஷ்பங்கள் நிறைந்த | लुलिताकुल- | அவிழ்ந்து குலைந்திருக்கின்ற கூந்தலுடையவளாய் இருந்தாள். |
| लता | கொடி | केशान्ता | |
| इव | போன்றதாய் | | |

सा वेपमाना लज्जन्ती भीता करकृताञ्जलिः । नलकूबरमासाद्य पादयोर्निपपात ह ॥ ४३ ॥

| | | | |
|----------|-------------------|--------------|--------------------|
| சா | “ அவள் | नलकूबरं | நளகூபரரிடம் |
| भीता | ஆபத்தில் சிக்கிக் | आसाद्य | வந்துசேர்ந்து |
| | கொண்டிருப்பவளாய் | करकृताञ्जलिः | கைகூப்பிக்கொண்டு |
| वेपमाना | உடல்நடுங்கியவளாய் | पादयोः | கால்களில் |
| लज्जन्ती | வெட்கங்கொண்டவளாய் | निपपात ह | விழ்ந்துபணிந்தனள். |

तदवस्थां च तां दृष्ट्वा महात्मा नलकूबरः । अब्रवीत्किमिदं भद्रे पादयोः पतिताऽसि मे ॥

| | | | |
|----------|--------------------|--------|-----------------------|
| महामा | “ மஹாத்மாவான | भद्रे | ‘ஸ்தீரத்தன்மே ! |
| नलकूबरः | நளகூபரர் | किं | ஏன் |
| तां च | அவளையும் | मे | எனது |
| तदवस्थां | அந்த நிலையிலிருப்ப | पादयोः | பாதங்களில் |
| दृष्ट्वा | கண்டு [பவளாய் | पतिता | விழ்ந்துகிடக்கிறவளாய் |
| इदं | இப்படி | | |
| अब्रवीत् | வினாவினார்: | असि | நீ ஆகிறாய் ?’ |

सा वै निश्वसमाना तु वेपमाना कृताञ्जलिः । तस्मै सर्वं यथातत्त्वमारुह्यातुमुपचक्रमे ॥

| | |
|------------|--------------------------------|
| वेपमाना | “ உடல்நடுங்கிக் கொண்டிருந்த |
| सा | அவள் |
| निश्वसमाना | பெருமூச்சிட்டுக் கொண்டு |
| तस्मै | அவருக்கு |

| | |
|------------|------------------|
| तु | இவ்விஷயத்தில் |
| सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| यथातरवं वै | நடந்தபிரகாரமே |
| आख्यातुं | தெரிவித்துவிட |
| कृताञ्जलिः | கைகூப்பிக்கொண்டு |
| उपचक्रमे | கிடங்கொண்டாள்: |

एष देव दशग्रीवः प्राप्तो गन्तुं त्रिविष्टपम् । तेन सैन्यसहायेन निशेयं परिणामिता ॥४६॥

| | |
|-------------|------------------------------|
| देव | “ தேவ! |
| पृषः | இந்த |
| दशग्रीवः | தசகரீவன் |
| त्रिविष्टपं | தேவலோகம் |
| गन्तुं | செல்ல |
| प्राप्तः | இங்கு வந்திருக் கின்றான். |

| | |
|-------------|-----------------------------------|
| इयं | இந்த |
| निशा | இரவு |
| सैन्यसहायेन | ஸையத்தோடிருக் கிற |
| तेन | அவனால் |
| परिणामिता | இவ்விடத்திலேயே கழிக்கப்பட்டது. |

आयान्ती तेन दृष्टाऽस्मि त्वत्सकाशमरिन्दम् । गृहीत्वा तेन पृष्टाऽस्मि कस्य त्वमिति रक्षसा ॥

| | |
|------------|-------------------------------|
| अरिन्दम् | “ சத்ருஸம்ஹாரக! |
| तेन | அவனால் |
| त्वत्सकाशं | தேவரீரிடம் |
| आयान्ती | வந்துகொண்டிருந்த வளாய் |
| पृष्टा | அகஸ்மாத்தாய் காணப்பட்டவளாக |
| अस्मि | நானானேன். |

| | |
|----------|-------------------------------------|
| तेन | அந்த |
| रक्षसा | அரக்கனால் |
| गृहीत्वा | கையைப்பிடித்து இழுக்கப்பட்டவளாகி |
| एवं | ‘நீ |
| कस्य इति | எவனுக்கு’ என்று |
| पृष्टा | வினாவுப்பட்டவளாக |
| अस्मि | நானானேன். |

मया तु सर्वं यत्सत्यं तस्मै सर्वं निवेदितम् । काममोहाभिभूतात्मा नाश्रौषीचद्रुचो मम ॥

| | |
|----------|-------------------|
| मया | “ என்னால் |
| तु | இதுவிஷயத்தில் |
| सर्वं | எல்லாமும் |
| सत्यं | உள்ளபடியே |
| तस्मै | அவனுக்கு |
| निवेदितं | அறிவிக்கப்பட்டது. |
| मम | எனது |
| वचः | சொல் |

| | |
|-------------|-------------------|
| यत् | எதுவோ |
| तत् | அந்த |
| सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| काममोहाभि- | } காமமோஹத்தின் |
| भूतात्मा | |
| | பைத்தியம் பிடித்த |
| | வனாகி |
| न अश्रौषीत् | செவிகொள்ளவில்லை. |

याच्यमानो मया देव स्तुषा तेऽहमिति प्रभो । तत्सर्वं पृष्ठतः कृत्वा बलात्तेनाऽस्मि धर्षिता ॥

| | |
|-----------|-------------------------------------|
| प्रभो | “ பிரபுவே ! |
| देव | தெய்வமே, |
| मया | என்னால் |
| ते | தேவரீருக்கு |
| स्तुषा | பருமகள் |
| इति | என்று |
| याच्यमानः | மன்றாடி வேண்டிக் கொள்ளப்பட்டான். |
| तत् | அந்த |

| | |
|---------|-------------------------|
| सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| पृष्ठतः | அலகூதியம் |
| कृत्वा | செய்து |
| तेन | அவனால் |
| अहं | நான் |
| बलात् | பலவந்தமாய் |
| धर्षिता | கற்பழிக்கப்பட்டவ ளாக |
| अस्मि | ஆனேன். |

एवं त्वमपराधं मे क्षन्तुमर्हसि सुव्रत । न हि तुल्यबलं सौम्य स्त्रियाश्च पुरुषस्य च ॥५०॥

| | |
|-------------|-----------------------------|
| सुव्रत | “ நல்ல விரதம் பூண்டவரே ! |
| स्त्रियाः च | ஒரு பெண்பிள்ளைக் கும் |
| पुरुषस्य च | ஒரு ஆண்பிள்ளைக் கும் |
| तुल्यबलं | சுடான பலம் |
| न हि | இல்லையன்றோ. |

| | |
|----------|---------------------------------|
| सौम्य | என்னன் பிற்சூரிய |
| मे | எனது [நாதா ! |
| एवं | இப்படிப்பட்டதான |
| अपराधं | நிணையாமல் ஏற்பட்ட தப்பிதத்தை |
| खं | தேவரீர் |
| क्षन्तुं | மன்னிக்க |
| अर्हसि | அருள்புரியவேண்டும்.’ |

एतच्छ्रुत्वा तु संक्रुद्धस्तदा वैश्रवणात्मजः । वर्षणां तां परां श्रुत्वा ध्यानं संप्रविवेश ह ॥

| | |
|---------------|--------------------------|
| वैश्रवणात्मजः | “ வைசுவணனது புதல்வர் |
| एतत् | இதை |
| श्रुत्वा | கேட்டு, |
| तां | அந்த |
| परां | உத்தமியை |
| धर्षणां | கற்பழிக்கப்பட்ட வளாய் |

| | |
|------------|--------------------------|
| श्रुत्वा | அறிந்துகொண்டு |
| तु | இவ்விஷயத்தில் |
| संक्रुद्धः | அதிக்கொபங்கொண்ட வராகி |
| तदा | அச்சமயத்தில் |
| ध्यानं | யோகதிறவுஷ்டியில் |
| संप्रविवेश | முற்றிலும் முனைந்து |
| ह | கூண்! [விட்டார். |

तस्य तत्कर्म विज्ञाय तदा वैश्रवणात्मजः । सुहूर्तात्क्रोधताम्राक्षस्तोयं जग्राह पाणिना ॥

| | |
|---------------|-------------------------|
| वैश्रवणात्मजः | “ வைசுவணனது புதல்வர் |
| तस्य | அவனுடைய |
| तत् | அந்த |
| कर्म | செய்கையை |
| तदा | அப்படியிருந்தபடியால் |
| सुहूर्तात् | கூண்காலத்தில் |

| | |
|-----------------|------------------------------------|
| विज्ञाय | உண்மையெனக் கண்டுகொண்டு |
| क्रोधताम्राक्षः | கோபத்தால் சிவந்த கண்களுற்றவராய் |
| पाणिना | கையில் |
| तोयं | ஐலத்தை |
| जग्राह | கிரகித்துகொண்டார். |

गृहीत्वा सलिलं सर्वसुपस्पृश्य यथाविधि । उत्ससर्ज तदा शापं राक्षसेन्द्राय दारुणम् ॥

तदा “अप्येता
सर्ज एல்லாவற்றையும்
गृहीत्वा மனதினுள் கவனித்
துத்தீர்மானித்து
राक्षसेन्द्राय இராக்கூஸ்மன்ன
னுக்கு

यथाविधि சாஸ்திரோக்தபாய்
सलिलं ஜலத்தை
उस्पृश्य செளித்து
दारुणं பயங்கரமான
शापं ஒருசாபத்தை
उत्ससर्ज இட்டார்.

अकामा तेन यस्माच्चं बलाद्भे प्रधर्षिता । तस्मात्स युवतीमन्यां नाकामामुपयास्यति ॥

भद्रे “என்னன் புக்குரிய
நல்லாய்,
अकामा காதல்கொள்ளாத
एवं நீ
तेन அவனால்
बलात् பலாத்காரமாய்
प्रधर्षिता கற்பழிக்கப்பட்டு
விட்டாய்.

यस्मात् तस्मात् இதுகாரணமாய்
सः அவன்
अकामां ஆசைக்கொள்ளாத
युवतिं சிறுமி
अन्यां எவளொருவளையும்
न उपयास्यति கைதீண்டக்கடவாது.

यदा ह्यकामां कामार्तो धर्षयिष्यति योषितम् । मूर्धा तु सप्तधा तस्य शकलीभविता तदा ॥

कामार्तः “காமாதானாய்
अकामां காதல்கொள்ளாத
योषितं ஒரு பெண்ணை
यदा எப்பொழுதாவது
धर्षयिष्यति உல்லங்கனம் செய்
கின்றான்

तु என்கிறபக்கத்தில்
तदा हि அந்தக்கூண்டே
तस्य அவனது
मूर्धा சிரம்
सप्तधा ஏழுபாகமாய்
शकलीभविता துண்டம் துண்டமாய்
வெடிக்கக்கடவாது.

तस्मिन्नुदाहृते शापे ज्वलिताग्निसमप्रभे । देवदुन्दुभयो नेदुः पुष्पवृष्टिश्च खञ्ज्युता ॥
पितामहसुखाश्चैव सर्वे देवाः प्रहर्षिताः ॥ ५६ ॥

तस्मिन् “அந்த
शापे சாபம்
ज्वलिता- } கொழுந்துவிட்டு
समप्रभे } எரியும் அக்கினிக்
குச்சம்மான வைய
வமுடையதாய்
उदाहृते கொடுக்கப்பட்ட
வளவில்
देवदुन्दुभयः தேவதுந்துபிகள்.

नेदुः முழங்கின;
खत् वானத்தினின்ற
पुष्पवृष्टिः च பூமாரியும்
ख्युता பொழிந்தது.
पितामहसुखाः நான் முகரைத்தலைமை
யாகக்கொண்ட
देवाः தேவர்கள்
सर्वे एव च எல்லோரும்
प्रहर्षिताः பேராணந்தமடைந்தனர்.

ज्ञात्वा लोकगतिं सर्वां तस्य मृत्युं च रक्षसः । ऋषयः पितरश्चैव प्रीतिमापुरनुत्तमाम् ॥

| | | | |
|----------|----------------|-----------|-------------------|
| ऋषयः | “ ரிஷிகளும் | मृत्युं च | மரணத்தையும் |
| पितरः च | பித்ருக்களும் | ज्ञात्वा | ஞானத்திருஷ்டியால் |
| लोकगतिं | லோககதி | | கண்டு |
| सर्वां च | எல்லாவற்றையும் | अनुत्तमां | ஊப்புயர்வில்லாத |
| तस्य | அந்த | प्रीतिं | மனத்திருப்தியை |
| रक्षसः | அரக்கனின் | आपुः | அடைந்தனர். |

श्रुत्वा तु स दशग्रीवस्तं शापं रोमहर्षणम् । नारीषु मैथुने भावं नाकामास्वभ्यरोचयत् ॥

| | | | |
|-----------|---------|-----------------------|------------------|
| सः | “ அந்த | श्रुत्वा | கேள்வியுற்று |
| दशग्रीवः | தசகீவன் | अकामासु | மனங்கொள்ளாத |
| रोमहर्षणं | { | मयिर्क्कृच्छेऽप्यह्यु | ஸ்திரீகளிடத்தில் |
| | | படியாய் பயம் தரு | சம்போகவிஷயத்தில் |
| | | கின்றதாகிய | எண்ணமென்ப |
| तं | அந்த | | தையே |
| शापं | சாபத்தை | न अभ्यरोचयत् | விட்டொழித்தான். |

तेन नीताः स्त्रियः प्रीतिमापुः सर्वाः पतिव्रताः । नलकूबरनिर्मुक्तं शापं श्रुत्वा मनःप्रियम् ॥

| | | | |
|-----------|--------------|-------------------|-------------------|
| तेन | “ அவனால் | नलकूबरनिर्मुक्तं | நளகூபரால் இடப் |
| नीताः | { | पलात्कारमायं को | மனதுக்கு [பட்ட |
| | | ண்டுவரப்பட்டிருக் | இனிமையாயிருக்கின் |
| | | கின்ற | சாபத்தை [றதாகிய |
| पतिव्रताः | பதிவிரதைகளான | श्रुत्वा | கேள்வியுற்று |
| स्त्रियः | ஸ்திரீகள் | प्रीतिं | மனத்திருப்தியை |
| सर्वाः | எல்லோரும் | आपुः | அடைந்தார்கள். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे षड्विंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 21789



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 1065

सप्तविंशः सर्गः—இருபத்தேழாவது ஸர்க்கம். ॥ 27 ॥

सुमालिख्यः—ஸுமாலிவதம்.

कैलासं लङ्घयित्वाऽथ दशग्रीवः स रावणः । आससाद् महातेजा इन्द्रलोकं निशाचरः ॥

| | | | |
|----------|---------------|------------|-------------------|
| अथ | “ அனந்தரம் | रावणः | இராவணன் |
| सः | அந்த | कैलासं | கைலாஸத்தை |
| महातेजाः | மஹாவீர்யவானான | लङ्घयित्वा | கடந்து |
| निशाचरः | அரக்கனாகிய | इन्द्रलोकं | இந்திரலோகத்திற்கு |
| दशग्रीवः | தசகீவனென்ற | आससाद् | வந்துசேர்ந்தான். |

तस्य राक्षससैन्यस्य समन्तादुपयास्यतः । देवलोकं ययौ शब्दो भिद्यमानार्णवोपमः ॥२॥

उपयास्यतः “ वन्तुசேர்ந்த
तस्य अந்த
राक्षससैन्यस्य ராக்கூஸஸைன்யத்
தினுடைய
शब्दः சத்தம்

भिद्यमानार्णवोपमः {
சரைபுரண்டு பொங்
கும் சமுத்திரத்திற்
கிடாய்
देवलोकं தேவலோகத்தில்
समन्तात् எல்லாவிடங்களிலும்
ययौ எட்டிற்று.

श्रुत्वा तु रावणं प्राप्तमिन्द्रश्चलित आसनात् । अब्रवीत्तत्र तान्देवान्सर्वानेव समागतान् ॥

आदित्यान्सवसून्सुहृद्वान्विश्वान्साध्यान्मरुद्गान् । सज्जीभवत् युद्धार्थं रावणस्य दुरात्मनः ॥

तत् “ அப்பொழுது
इन्द्रः இந்திரன்
रावणं ராவணனை
प्राप्तं அங்கு வந்திருப்பவ

दुरात् ருத்திரர்களுக்கும்
विश्वान् விசுவதேவர்களுக்கும்
साध्यान् ஸாத்தியர்களுக்கும்
मरुद्गान् மருத்கணங்களுக்கும்
देवान् தேவர்கள்
सर्वान् एव எல்லோருக்கும்
दुरात्मनः ‘தூரத்தமாவாகிய
रावणस्य ராவணனுடைய
युद्धार्थं போருக்காக
सज्जीभवत् ஆயத்தமாயிருங்கள்’
என்று

श्रुत्वा तु கேட்டதுமே
आसनात् ஆஸனத்தினின்று
चलितः எழுந்தவராய்
समागतान् அவ்விடமிருந்த
तान् அந்த
आदित्यान् ஆதித்யர்களுக்கும்
सवसून् வஸுக்களோடுகூடிய

एवमुक्तास्तु शक्रेण देवाः शक्रसमा युधि । संनह्य सुमहासत्त्वा युद्धश्रद्धासमन्विताः ॥५॥

शक्रसमाः “ தேவேந்திரனுக்கு
இணையான
सुमहासत्त्वाः {
மெச்சத்தக்க அமா
னுஷ்யசக்திகொண்
டவர்களான
देवाः தேவர்கள்
शक्रेण இந்திரனால்
एवं இவ்வண்ணமாய்

अब्रवीत् ஆக்ரூபித்தார்.
उक्ताः ஆக்கிணைபெற்றவர்
तु உடனே [களாய்
सन्नह्य போர்ப்படைகள்
எடுத்துக்கொண்டு
युधि போரில்
युद्धश्रद्धा- } எதிர்க்க சிரத்தையு
समन्विताः } டையவர்களாய்
விளங்கினார்கள்.

स तु दीनः परित्रस्तो महेन्द्रो रावणं प्रति । विष्णोः समीपमागम्य वाक्यमेतदुवाच ह ॥

तु “ ஆயினும்
सः அந்த
महेन्द्रः தேவேந்திரன்
रावणं प्रति இராவணன் விஷயத்
ह வாஸ்தவத்தில் [தில்
दीनः மனோவேதனைப்படு
परित्रस्तः பயந்தவராய் [வராகி

विष्णोः ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணுவி
எனது
समीपं ஸன்னிதானத்திற்கு
आगम्य போய்ச்சேர்ந்து
एतत् பின்வரும்
वाक्यं மொழியை
उवाच விண்ணப்பம் செய்தார்:

विष्णो कथं करिष्यामि महावीर्यपराक्रमः । असौ हि बलवान्रक्षो युद्धार्थमभिवर्तते ॥७॥

| | | | |
|-----------|-----------------|------------|---------------------|
| असौ | “இந்த | युद्धार्थं | அமராத |
| रक्षः | அரக்கன் | अभिवर्तते | கிட்டியிருக்கிறான். |
| बलवान् | சைன்யத்தான் | विष्णो | ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணோ, |
| | கூடினவனாய் | हि | ஆகையால் |
| महावीर्य- | மஹத்தான வீர்ய | करिष्यामि | நான் செய்யவேண்டி |
| पराक्रमः | மடைந்ததால் ஸா | कथम् | யது |
| | ஹஸம் புரிபவனாய் | | என்ன ? |

वरप्रदानाद्बलवान्न खल्वन्येन हेतुना । तत्तु सत्यवचः कार्यं यदुक्तं पद्मयोनिना ॥ ८ ॥

| | | | |
|----------------|------------------|-----------------|--------------------|
| पद्मयोनिना | “தாமரையாஸனரான | वरप्रदानात् खलु | வரத்தைப் |
| | பிரம்மதேவரால் | | பெற்றதால்தான் |
| यत् | யாதொன்று | बलवान् | என்னிலும் மேம்பட்ட |
| उक्तं | வாக்களிக்கப்பட்ட | | டவனாகிறான். |
| तत् तु | அதுவும் [தோ | अन्येन | வேறு எந்த |
| | சொன்னபடி நடை | हेतुना | காரணத்தாலும் |
| सत्यवचः कार्यं | பெறவேண்டியதாயி | न | ஆகான். |
| | ருக்கிறது. | | |

तद्यथा नमुचिर्द्वौ बलिर्नरकशम्भरौ । त्वद्बलं समवष्टभ्य मया दग्धास्तथा कुरु ॥ ९ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-----------|------------------|
| नमुचिः | “நமுசி, | समवष्टभ्य | நன்றாய்ப்பற்றியி |
| द्वौ: | விருத்திரன், | | ருந்த |
| बलिः | பலி, | तत् | அக்காரணத்தாலே |
| नरकशम्भरौ | நரகாசுரன், சம்பரா | यथा | எவ்வண்ணமாக |
| | சுரன் முதலியவர், | दग्धाः | அழிக்கப்பட்டார் |
| मया | என்னால் | | -களோ |
| त्वद्बलं | தேவீருடைய | तथा | அவ்வண்ணமே |
| | உதவியை | कुरु | செய்தருள்வீராக. |

न ह्यन्यो देव देवानामापस्तु सुमहाबलः । गतिः परायणं नास्ति त्वामृते पुरुषोत्तम ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-----------|--------------------|
| देव | “தேவ, | अन्यः | வேறொருவர் |
| पुरुषोत्तम | புருஷோத்தம, | न | இல்லை என்பது |
| देवानां | தேவர்களுடைய | हि | பிரவலித்தம். |
| आपस्तु | கஷ்டங்களில் | त्वां ऋते | தேவீரைவிட்டு |
| | எதற்கும் மேம்பட்ட | गतिः | அடைக்கலம்புகுமிடம் |
| सुमहाबलः | தாகிய வல்லமைகொ | परायणं | மேம்பட்டதாய் |
| | ண்டுவிளங்குகிறவர் | न अस्ति | இல்லை. |

त्वं हि नारायणः श्रीमान्यन्ननाभः सनातनः । त्वय्येमे स्थापिता लोकाः शक्रश्चाहं सुरेश्वरः ॥

ஈஃ ஹி
சனாதன:
பசுநாப:
श्रीमान्
नारायणः
त्वया

“தேவரீர் அன்றே
எப்போதுமிருக்கின்ற
பத்மநாபர் எனப்படு
பவரும்
லக்ஷ்மீஸமேதரு
நாராயணன். [மாகிய
தேவரீரால்

ஹே
லோகா:
சக்:
அஃ
சுரேசுவர: ச
ஸ்தாபிதா:
இந்த
உலகங்களும்கு
இந்திரானுகிய
நான்
தேவர்களுக்கரசனாயும்
ஏற்படுத்தப்பட்ட
டிருக்கின்றன.

तदाचक्ष्व यथातत्त्वं देवदेव मम स्वयम् । अपि चक्रसहायस्त्वं योत्स्यसे रावणं प्रभो ॥

प्रभो
देवदेव
त्वं
स्वयं
चक्रसहायः
रावणं

“சனாதனராகிய
தேவேச,
தேவரீர்
ஸ்வேச்சையாய்
சக்கிரதாரியாய்
இராவணனை

योत्स्यसे अपि
यथातत्त्वं
तत्
मम
आचक्ष्व
போரில் வெற்றிகொள்
ள அருளலாமோ?
திருவுள்ளமெப்படி
அதை [யிருக்கிறதோ
எனக்கு
நியமித்தருள

एवमुक्तः स शक्रेण देवो नारायणः प्रभुः । अब्रवीच्च परित्रासः कार्यस्ते श्रूयतां च मे ॥

शक्रेण
एवं
उक्तः
सः
प्रभुः
नारायणः
देवः

“இந்திரனால்
மேற்கண்டவன்
ணமாய்
பிரார்த்திக்கப்
அந்த [பட்டவராகிய
சர்வேசுவரராகிய
ஸ்ரீமன் நாராயண
கடவுள்

अब्रवीच्च
मे
श्रूयतां
ते
परित्रासः च
कार्यैः
न
இப்படித் திருவாய்
மலர்ந்தருளினார்;
‘எனக்கு
செவ்சாய்க்கப்பட்ட
உனக்கு [ஓம்.
பயமென்பதே
கொள்ளத்தக்கது
இல்லை.

न तावदेष दुष्टात्मा श्वयो दैवतदानवैः । हन्तुं युधि समासाद्य वरदानेन दुर्जयः ॥

एषः दुष्टात्मा
दैवतदानवैः
युधि
समासाद्य हन्तुं
शक्यः

“இந்தத்துஷ்டன்
தேவதைகளாலும்,
தானவர்களாலும்
போரில்
எதிர்த்துக் கொல்ல
உரிமையுடையவரை

वरदानेन
न
तावत्
दुर्जयः
வரப்பிரஸாதத்தால்
ஆகாதிருக்கிறான்.
இதுகாரணத்தா
லிப்போது
அஜேயனாயிருக்க
கிறான்.

सर्वथा तु महत्कर्म करिष्यति बलोत्कटः । राक्षसः पुत्रसहितो दृष्टमेतन्निर्गमः ॥ १५ ॥

राक्षसः
निर्गमः
बलोत्कटः
पुत्रसहितः

“அரக்கன்
ஸ்வபாவமாகவே
மஹாபலிஷ்டன்.
புத்திரனுடனிருக்கு
பிவன்

एतत् तु
सर्वथा
दृष्टं
महत् कर्म
करिष्यति
இந்தப்பிரஸக்தியிலும்
எப்படியும்
நிச்சயிக்கப்பட்டதா
பெரும்தொழிலை [கிய
செய்யவேபோகிறான்.

यत्तु मां त्वमभाषिष्ठा युध्यस्वेति सुरेश्वर । नाहं तं प्रतियोत्स्यामि रावणं राक्षसं युधि ॥

| | | | |
|----------|-----------------|-----------|--|
| சுரேசுவர | “தேவர்க்கரசே ! | ஐதி | என்று |
| த்வம் | நீ | அபாஷிஷ்ட: | வேண்டினாய். |
| மா | என்னை | அஹம் | நான் |
| யத் | இப்படி | சு | இந்தஸமயம் |
| ராவணம் | இராவண | தம் | அவனை |
| ராக்ஷஸம் | அரக்கனை | யுதி | போரில் |
| யுध्यஸ்ய | எதிர்த்துப்போர் | ந் | எதிர்த்து மேல்விழ்ந்து தாக்கமாரட்டேன். |
| | புரியும் | | |

नाहत्वा समरे शत्रुं विष्णुः प्रतिनिवर्तते । दुर्लभश्चैव कामोऽद्य वरगुप्ताद्धि रावणात् ॥१७॥

| | | | |
|-----------------|----------------|--------------|--------------------------|
| विष्णुः | “விஷ்ணு | वरगुप्ताद्धि | வரப்பிரசாதத்தால் ஆ |
| समरे | போரில் | | தரிக்கப்பட்டவனாகிய |
| शत्रुं च | சத்ருவென்பவனெவ | रावणात् | ராவணன் நிமித்தமாய் |
| | னையும் | कामः | கோரியது |
| अहत्वा | கொல்லாமல் | अद्य एव | இப்பொழுது |
| प्रतिनिवर्तते न | திரும்பார் | | மாத்திரம் |
| हि | என்கிறபடியால் | दुर्लभः | செய்துமுடிக்கத்தக்கதல்ல. |

प्रतिजाने च देवेन्द्र त्वत्समीपे शतक्रतो । भविताऽस्मि यथाऽस्याहं रक्षसो मृत्युकारणम् ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------|-------------|-----------------|
| शतक्रतो | “ நூறுயாகஞ்செய்த | अस्य | இந்த |
| देवेन्द्र | தேவேந்திரனே ! | रक्षसः | அரக்கனுடைய |
| यथा | ஆயினும் | मृत्युकारणं | மரணத்திற்கென்றே |
| त्वत्समीपे | நீ இங்கிருக்கும் | अहं च | நானே |
| | போதே | भविता अस्मि | அவதாரம் |
| प्रतिजाने | நான் பிரதிக்களை செய்கின்றேன். | | செய்கிறேன். |

अहमेव निहन्ताऽस्मि रावणं सपुरःसाम् । देवता नन्दयिष्यामि ज्ञात्वा कालमुपागतम् ॥

| | | | |
|----------|-------------------|--------------|--------------------|
| कालं | “ உரியகாலம் | निहन्ता | வேறுக்கிறவனாக |
| उपागतं | வந்துவிட்டதாக | अस्मि | ஆகிறேன். |
| ज्ञात्वा | தெரிந்துகொண்டு | देवताः | தேவதைகளை |
| अहं एव | நானே | नन्दयिष्यामि | திரும்பி செய்விக்க |
| रावणं | இராவணனை | | கிறேன். |
| सपुरःसरं | அவனைச்சேர்ந்தவர் | | |
| | களுடன் கூடினவனாய் | | |

एतस्मिन्नन्तरे नादः शुश्रुवे रजनीक्षये । तस्य रावणसैन्यस्य प्रयुद्धस्य समन्ततः ॥२०॥

| | | | |
|--|--|---|--|
| एतस्मिन् अन्तरे रजनीक्षये तस्य प्रयुद्धस्य | “இதே சமயத்தில் சூர்யோதயகாலத்தில் அந்த பெரும்போர்புரியும் | रावणसैन्यस्य नादः समन्ततः शुश्रुवे | இராவணஸையின் தினுடைய கோஷம் எங்கும் கேட்டது. |
|--|--|---|--|

ते प्रयुद्धा महावीर्या ह्यन्योन्यमभिवीक्ष्य वै । संग्राममेवाभिमुखा ह्यभ्यवर्तन्त हृष्टवत् ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रयुद्धाः महावीर्याः ते संग्रामं एव | “கடும்போர் புரிபவர் களும் மஹாவீர்யமுடைய வர்களுடைய அவர்கள் போரிலேயே | अभिमुखाः हि हृष्टवत् अन्योन्यं वै अभिवीक्ष्य हि अभ्यवर्तन्त | அத்யாசை கொண் டவர்களாதலால் உற்சாகங்கொண்டு ஒருவரை ஒருவர் உற்றுநோக்கிக் கொண்டே வந்துசேர்ந்தார்கள். |
|---|---|---|---|

ततो दैवतसैन्यानां संक्षोभः समजायत । तदक्षयं महासैन्यं दृष्ट्वा समरमूर्धनि ॥ २२ ॥

| | | | |
|--|--|--|---|
| समरमूर्धनि तत् अक्षयं महासैन्यं | “போர்முனையில் அந்த அபரிமிதமாயிருக் கின்ற பெரும்படையை | दृष्ट्वा ततः दैवतसैन्यानां संक्षोभः समजायत | கண்டு அதனால் தேவஸேனைகளுக்கு பெரும்குழப்பம் உண்டாயிற்று. |
|--|--|--|---|

ततो युद्धं समभवद्देवदानवरक्षसाम् । घोरं तुमुलनिर्हादं नानाप्रहरणोद्यतम् ॥ २३ ॥

| | | | |
|---|---|--|--|
| ततः देवदानवरक्षसां युद्धं घोरं | “அக்காலத்தில் தேவர்களுக்கும், தானவர்களுடன் கூடிவந்திருக்கின்ற அரக்கர்களுக்கும், போர் பயங்கரமாய் | नानाप्रहणोद्यतं तुमुलनिर्हादं समभवत् | { பலவித ஆயுதங்கள் பிரயோகிக்கப் பட்டதாய் பெரும்கோஷமுடை யதாய் நடைபெற்றது. |
|---|---|--|--|

एतस्मिन्नन्तरे शूरा राक्षसा घोरदर्शनाः । युद्धार्थं समवर्तन्त सचिवा रावणाज्ञया ॥२४॥

| | | | |
|---|---|--|---|
| एतस्मिन् अन्तरे रावणाज्ञया घोरदर्शनाः राक्षसाः | “இந்த சமயத்தில் இராவணனது கட்டளையால் பார்க்கச்சகியாத இராசூஸை | शूराः सचिवाः युद्धार्थं समवर्तन्त | சூரர்களாகிய பந்திரிகள் போரில் மேல்வீழ்ந்து தாக்க தலைப்பட்டார்கள். |
|---|---|--|---|

மாரிசுத்வ ப்ஹஸ்த்வ மஹாபாஸ்த்மஹோதரௌ । அகம்பனௌ நிகும்த்வ ஶுக்: சாரண ஂவ ச ॥25॥
 சஹ்லாஶௌ ஶூமகேதுத்வ மஹாஶ்ரௌ மஹாஸுக்: । ஜம்புமாலி மஹாஶ்ரௌ விரூபாஸ்த்வ ராஶ்ச: ॥26॥
 சுமத்ரௌ யத்ரகௌபத்வ துர்முக்: தூஷண: ஶர: । த்ரிஸிரா: கரவிராஸ்த்வ சூர்யஸத்ரூத்வ ராஶ்ச: ॥
 மஹாகாயௌஸ்திகாயத்வ ஶேவாந்தகநரான்தகௌ । ஂதௌ: சவீ: ப்ரிஸ்துதௌ மஹாவிரீயௌ மஹாவல்: ॥27॥
 ராவணஸ்யாரீயக்: சௌந்ய் சுமாலி ப்ரிவீஷ ஶ । ச ஶேவதரணாந்ஸர்வாந்நானாப்ஹரணௌ: ஶிதௌ: ॥28॥
 வ்யத்வ்ஸயத்வசுஸ்குத்வௌ வாயுர்ஜல்சரானிவ ॥ 30 ॥

ராவணஸ்ய
 ஆரீயக்: " இராவணனாடைய
 மாதாமஹனும்
 மஹாவல்: மஹத்தான தேக
 பலங்கொண்டவனும்
 மஹாவிரீய்: மஹத்தான வேகங்
 கொண்டவனுமான
 சுமாலி ஸுமாலி என்கிற
 ராஶ்ச: அரக்கன்
 ஂதௌ: இந்த
 மாரிச: ச மாரிசனும்
 ப்ஹஸ்த: ச பிரஹஸ்தனும்
 மஹாபாஸ்த்மஹோதரௌ மஹாபாஸ்த்மனும்,
 மஹோதரனும்
 அகம்பன: அகம்பனனும்
 நிகும்த்வ: ச நிகும்த்மனும்
 ஶுக்: ஂவ சுகனும்
 சாரண: ச சாரணனும்
 சஹ்லாஶ: ஸம்ஹ்லாதனும்
 ஶூமகேது: ச தூமகேதுவும்
 மஹாஶ்ரௌ: ச மஹாதம்ஶ்ரானும்
 மஹாஸுக்: ச மஹாஸுக்னும்
 ஜம்புமாலி சம்புமாலியும்
 மஹாஶ்ரௌ: ச மஹாஶ்ராதனும்
 ராஶ்ச: அரக்கனாகிய
 விரூபாஸ்த்வ: ச விருபாஸ்த்மனும்
 சுமத்ர: ச சும்தக்னனும்
 யத்ரகௌப: ச யக்ரகௌபனும்
 துர்முக்: ச தூர்முக்னும்

தூஷண: தூஷணனும்
 ஶர: கரனும்
 த்ரிஸிரா: த்ரிசிராகும்
 கரவிராஸ்த்வ: கரவிராஸ்த்மனும்
 சூர்யஸத்ரூத்வ: ச சூர்யசத்ரூத்வம்
 மஹாகாய: ச மஹாகாயனும்
 ஶிதௌ: ச அடிகாயனும்
 ஶேவாந்தகநரான்தகௌ ச தேவாந்தகனும் நரான்தக
 தகனுமாகிய
 சவீ: எல்லாரானும்
 ப்ரிஸ்துதௌ: ச புடைசூழப்பட்ட
 வனும்
 சௌந்ய் சௌந்யத்தினுள்
 ப்ரிவீஷ: ச ப்ரிவீஷன்.
 ச: ச அவன்
 சுஸ்குத்வ: ச மிக்ககௌபாவேசங்
 கொண்டவனும்
 ஶிதௌ: ச ஶித
 நானாப்ஹரணௌ: ச பல ஆயுதங்களால்
 ஶேவதரணாந்: ச தைவதகணங்கள்
 சர்வாந்: ச எல்லாராயுடே
 வாயு: ச காற்று
 ஜல்சரான்: ச ஜலத்திலேயே வாஸத்ர
 செய்யும் ஜத்ரக்கலி
 ஶவ: ச எவ்வண்ணமோ அவ்
 வண்ணமே
 வ்யத்வ்ஸயத்வ: ச அதஞ்செய்யலானும்,

| | | | |
|---|--|------------|--------------------------|
| सुमालिभयसन्वस्ताः सुरास्ते सर्वतो दिशि । प्रदुदुर्वुध्यमानाः सिंहस्ता मृगा इव ॥ | | | |
| ते | “அந்த | मृगाः | மிருகங்கள் |
| वध्यमानाः | அடியுண்ட | इव | போன்றவர்களாகி |
| सुराः | தேவர்கள் | सर्वतः | எல்லா |
| सुमालिभय- } सन्वस्ताः } | சுமாலியினது உபநீ வத்தால் நெஞ்சங் கலங்கினவர்களாய் | दिसि | திக்கிலும் |
| सिंहस्ताः | சிம்மத்தைக்கண்டு பயந்தோடும் | प्रदुदुवुः | ஓடத்தலைப்பட்டார் கள். |

एतस्मिन्नन्तरे शूरो वसूनामष्टमो वसुः । सावित्र इति विख्यातः प्रविवेश रणाजिरम् ॥

| | | | |
|----------|---------------|----------|-------------------------|
| एतस्मिन् | “இந்த | इति | என |
| अन्तरे | ஸமயத்தில் | विख्यातः | பெயர் பெற்றவருமா கிய |
| वसूनां | வசுக்களில் | सावित्रः | சாவித்திரர் |
| अष्टमः | எட்டாவது | रणाजिरं | போர்க்களத்துக்கு |
| वसुः | வசுவாகியவரும் | प्रविवेश | வந்துசேர்ந்தார். |
| शूरः | சூர் | | |

सैन्यैः परिवृतो हृष्टो नानाप्रहरणोद्यतैः । त्रासयञ्छत्रुसैन्यानि सिंहः क्षुद्रमृगानिव ॥

| | | | |
|--|--|---------------|--------------------------|
| सैन्यैः परिवृतो हृष्टो नानाप्रहरणोद्यतैः । | “பலவித ஆயுதங் களைத்தரித்த போர்வீரர்களால் | क्षुद्रमृगान् | எளிய மிருகங்களை |
| नानाप्रहरणोद्यतैः | குழப்பப்பட்டவராய் | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமே |
| सैन्यैः | சத்ருவின் போர்வீரர் | तासयन् | பயந்து ஓடச்செய் தார். |
| परिवृतः | சிறக்கம் [களை | हृष्टः | பூரித்தார். |
| शत्रुसैन्यानि | | | |
| सिंहः | | | |

तथाऽऽदित्यौ महावीर्यौ त्वष्टा पूषा च दंशितौ । निर्भयौ सह सैन्येन तदा प्राविशतां रणे ॥

| | | | |
|-----------|----------------------------|-------------|--|
| तदा | “அக்காலத்தில் | दंशितौ | போர்க்கவசங்களை தரித்தவர்களாய் |
| त्वष्टा | த்வஷ்டா என்றவரும் | निर्भयौ | எதற்கும் அஞ்சாத தைர்யசாலிகளாய் |
| पूषा | பூஷா என்றவருமான | तथा | அவ்வண்ணமாகிய |
| महावीर्यौ | மஹா வீர்யசாலிகளா கிய | सैन्येन सह | ஸையத்தோடுகூட |
| आदित्यौ च | இரண்டு ஆதித்தியர் களும் | रणे | போர்க்களத்தில் [வே வந்துசேர்ந்தனர். |
| | | प्राविशताम् | |

ततो युद्धं समभवत्सुराणां सह राक्षसैः । कुद्धानां रक्षसां कीर्तिं समरेष्वनिवर्तिनाम् ॥

| | | | |
|-----------|---|-------------|--------------|
| ततः | “அக்காலத்தில் | अनिवर्तिनां | சலியாதவருமான |
| रक्षसां | அரக்கர்களின் | सुराणां | தேவர்களுக்கு |
| कीर्तिं | படர்ச்சியில் அகன்ற கால்வைத்திருத்தலில் | राक्षसैः | அரக்கர்களோடு |
| कुद्धानां | கோபங்கொண்டவர் | सह | கூட |
| समरेषु | போர்களில் [களும் | युद्धं | பெரும்போர் |
| | | समभवन् | நடைபெற்றது. |

ततस्ते राक्षसाः सर्वे विबुधान्समरे स्थितान् । नानाप्रहरणैर्घोरैर्जघ्नुः शतसहस्रशः ॥३६॥

त : " அச்சமயத்தில்
 ते अर्ந்த
 राक्षसाः राக்ஷஸர்கள்
 सर्वे எல்லோரும்
 समरे போரில்
 स्थितान् எதிர்த்து நிற்கின்ற

विबुधान् தேவர்களை
 घोरैः பயங்கரமான
 नानाप्रहरणैः டல ஆயுதங்களால்
 शतसहस्रशः அனேகவிதமாய்
 जघ्नुः துன்புறுத்தினார்கள்.

देवाश्च राक्षसान्योरान्महाबलपराक्रमान् । समरे विमलैः शस्त्रैरुपनिन्युर्यमक्षयम् ॥ ३७ ॥

देवाः च " தேவர்களும்
 घोरान् பயங்கரர்களுமும்
 महाबल- } மஹாதேகபலமும்
 पराक्रमान् } மனோதைர்யமும்
 படைத்தவர்களான

राक्षसान् அரக்கர்களை
 समरे போரில்
 विमलैः துலக்கமாயிருக்கின்ற
 शस्त्रैः ஆயுதங்களால்
 यमक्षयं யமலோகத்திற்கு
 उपनिन्युः சமர்ப்பித்தார்கள்.

एतस्मिन्नन्तरे राम सुमाली नाम राक्षसः । नानाप्रहरणैः क्रुद्धस्तसैन्यं सोऽभ्यवर्तत ॥

राम " ஸ்ரீராம!
 एतस्मिन् இந்த
 अन्तरे சமயத்தில்
 तत् अர்ந்த
 सैन्यं சைன்யத்தை
 सः அர்ந்த

सुमाली சுமாலி
 नाम என்கிற
 राक्षसः அரக்கன்
 क्रुद्धः சினங்கொண்டவனாய்
 नानाप्रहरणैः பல ஆயுதங்களால்
 अभ्यवर्तत மேல் வீழ்ந்து தாக்கினான்.

स दैवतबलं सर्वं नानाप्रहरणैः शितैः । व्यध्वंसयत संक्रुद्धो वायुर्जलधरं यथा ॥ ३९ ॥

सः " அவன்
 संक्रुद्धः மிகச்சினங்கொண்ட
 दैवतबलं தேவதைகளின்
 सर्वं எல்லாவற்றையும்
 शितैः கூர்மையான

नानाप्रहरणैः பலவித ஆயுதங்களால்
 वायुः காற்று
 जलधरं மேகத்தை
 यथा எவ்வண்ணமோ
 अव्वண்ணமே
 व्यध्वंसयत அதஞ்செய்தான்.

ते महाबाणवर्षैश्च शूलप्रासैः सुदारुणैः । हन्यमानाः सुराः सर्वे न व्यतिष्ठन्त संहताः ॥

ते " அர்ந்த
 सुराः தேவர்கள்
 सर्वे எல்லோரும்
 महाबाणवर्षैः மஹாபாணவருஷங்
 களாலும்
 सुदारुणैः மிக்ககொடிய

शूलप्रासैः च சூலங்களாலும், பிரா
 ஸங்களாலும்
 हन्यमानाः அடியுண்டவர்களாய்
 संहताः மிகக்காயம்பட்டவர்
 களாய்
 न व्यतिष्ठन्त நிற்கமுடியாதவர்
 களாயினர்.

ततो विद्रान्यमाणेषु दैवतेषु सुमालिना । वसूनामष्टमः क्रुद्धः सावित्रो वै व्यवस्थितः ॥

सुमालिना “समालियினால்
दैवतेषु “அமரர்கள்
विद्रान्यमाणेषु वै நிலைகுலைந்து
அஞ்சி ஒடுகையில்
वसूनां வசுக்களில்
अष्टमः எட்டாவதான

सावित्रः ஸாவித்ரர் என்பவர்
ततः அதனால்
क्रुद्धः கோபங்கொண்ட
வராகி
व्यवस्थितः எதிர்த்து முன்
நின்றார்.

संहृतः स्वैरथानीकैः प्रहरन्तं निशाचरम् । विक्रमेण महातेजा वारयामास संयुगे ॥ ४२ ॥

अथ “அப்பொழுது
महातेजाः மஹாகுராகிய அவர்
स्वैः தனது
अनीकैः படைகளால்
संहृतः சூழப்பட்டவராய்
संयुगे போரில்

प्रहरन्तं தாக்கிப்புடைக்க
கின்றவனாகிய
निशाचरं அரக்கனை
विक्रमेण மிக்க தைர்யத்தோடு
वारयामास எதிர்த்தார்:

ततस्तयोर्महायुद्धमभवद्रोमहर्षणम् । सुमालिनो वसोश्चैव समरेष्वनिवर्तिनोः ॥ ४३ ॥

ततः “அனந்தரம்
समरेषु போர்களில்
अनिवर्तिनोः பின்வாங்காதவர்
களாகிய
तयोः அவ்விருவர்களாகிய
सुमालिनः च சமாலிக்கும்

वसोः एव வசவுக்கும்
रोमहर्षणं மயிர்கூச்செறிகிறதாய்
பயங்கரமான
महत् மஹத்தான
युद्धं போர்
अभवत् நடைபெற்றது.

ततस्तस्य महाबाणैर्विसुना सुमहात्मना । निहतः पन्नगरयः क्षणेन विनिपातितः ॥ ४४ ॥

ततः “அந்த சந்தர்பத்தில்
सुमहात्मना மஹாபெயர்பெற்ற
वसुना வசுவால் [வீரராகிய
महाबाणैः மஹாபாணங்களால்
निहतः நன்றாய்ப் புடைக்கப்
பட்டான்.

तस्य அவனது
पन्नगरयः சர்பவாஹனம்
क्षणेन ஒருநொடிப்
பொழுதில்
विनिपातितः சாய்க்கப்பட்டது.

हत्वा तु संयुगे तस्य रथं बाणशतैश्चितम् । गदां तस्य वधार्थाय वसुर्जग्राह पाणिना ॥

वसुः “சாவித்திரர்
तस्य அவனது
रथं தேரை
चितं சின்ன பின்னமாக
बाणशतैः பலபாணங்களால்
हत्वा நொறுக்கடித்து

संयुगे போரில்
तस्य அவனுடைய
वधार्थाय வதத்திற்காக
तु இச்சமயத்தில்
गदां ஒரு கதையை
पाणिना கையினால்
जग्राह பற்றிக்கொண்டார்.

ततः प्रगृह्य दीप्ताग्नां कालदण्डोपमां गदाम् । तां मूर्ध्नि पातयामास सावित्रो वै सुमालिनः॥

ततः “ அச்சமயத்தில்
 சாவித்ர: ஸாவித்திரர்
 दीप्ताग्नां மிக்க ஜ்வலித்துக
 கொண்டிருக்கிறதும்
 காலதண்டோபமாं யமனது காலதண்ட
 த்திற்கிடானதுமான
 तां அந்த

गदां கதையை
 प्रगृह्य वै கெட்டியாய்ப் பிடித்து
 கொண்ட
 सुमालिनः சுமாலியினது
 मूर्ध्नि தலையில்
 पातयामास ஓங்கி ஒரேபோடாய்ப்
 போட்டார்.

सा तस्योपरि चोल्काभा पतन्तीव बभौ गदा । इन्द्रप्रयुक्ता गर्जन्ती गिराविव महाशनिः॥

सा “ அந்த
 गदा च கதையும்
 तस्य அவனது
 उरि தலைமீது
 उल्काभा பிரகாசமாய் எரியும்
 கொள்ளிக்கட்டை
 इव போன்றதாய்
 पतन्ती விழுக்கையில்

इन्द्रप्रयुक्ता தேவேந்திரனால் விடப்
 பட்ட
 गर्जन्ती சத்திக்கின்ற
 महाशनिः பெரிய இடி
 गिरौ மலையில்
 इव எவ்வண்ணமோ
 அவ்வண்ணமே
 बभौ விளங்கிற்று.

तस्य नैवास्थि न शिरो न मांसं ददृशे तदा । गदया भस्मतां नीतं निहतस्य रणाजिरे ॥

रणाजिरे “ போர்க்களத்தில்
 गदया கதையால்
 भस्मतां சாம்பலாக
 नीतं செய்யப்பட்டது.
 तदा அப்பொழுது
 निहतस्य பிணமாய்போன
 तस्य அவனது

मांसं மாம்ஸம்
 न ददृशे தனித்து க்காணப்பட
 கில்லை.
 शिः தலையும்
 न தெரியவில்லை.
 अस्थि एव எனும்புகூட
 न தெரியவில்லை.

तं दृष्ट्वा निहतं सङ्घे राक्षसास्ते समन्ततः । व्यद्रवन्सहिताः सर्वे क्रोशमानाः परस्परम् ॥

संख्ये “ போரில்
 तं அவனை
 निहतं ஒழிந்தவனாக
 दृष्ट्वा கண்டு
 ते அந்த
 राक्षसाः அரக்கர்கள்

सर्वे எல்லோரும்
 परस्परं ஒருவருக்கொருவர்
 क्रोशमानाः அதிகமாய் அலறிக்க
 सहिताः குப்பலாய் [கொண்டு
 समन्ततः நாற்புறமும்
 व्यद्रवन् ஒட்டம்பிடித்தார்கள்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे सप्तविंशः सर्गः ॥



अष्टाविंशः सर्गः—இருபத்தேட்டாவது ஸர்க்கம் || 28 ||

जयन्तापवाहनं इन्द्ररावणयुद्धं च—ஜயந்தனைத் தூக்கிச்செல்வதும்,
இந்திரராவணயுத்தமும்.

सुमालिनं हतं दृष्ट्वा वसुना भस्मसात्कृतम् । स्वसैन्यं विद्रुतं चापि लक्षयित्वाऽर्दितं सुरैः ॥
ततः स बलवान्क्रुद्धो रावणस्य सुतस्तदा । निवर्त्य राक्षसान्सर्वान्मेघनादो व्यवस्थितः ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------|------------|----------------------------|
| तदा | “ அந்தச் சந்தர்ப்பத் தில் | स्वसैन्यं | தனதுசையத்தை |
| रावणस्य | இராவணது | सुरैः | தேவர்களால் |
| सुतः | மகனும் | अर्दितं | துன்புறுத்தப்பட்டதாய் |
| बलवान् | பலவீரனாகிய | विद्रुतं च | தாறுமாறாய் ஒடுகின்றதாகவும் |
| सः | அந்த | लक्षयित्वा | கவனித்துப்பார்த்தது |
| मेघनादः | மேகநாதன் | ततः | அதனால் |
| सुमालिनं | சுமாலினைய | क्रुद्धः | கோபங்கொண்டவனாய் |
| वसुना | சாவித்திரரால் | राक्षसान् | அரக்கர்கள் |
| भस्मसात्कृतं | சாம்பலாக்கப்பட்டவனாய் | सर्वान् | எல்லோரையும் |
| हतं | நசித்துப்போனவனாய் | निवर्त्यं | ஓடாமல் திருப்பி |
| दृष्ट्वा | கண்டு | व्यवस्थितः | முன்றின்றான். |
| अपि | அதுவுமின்றி | | |

सुरथेनाशिवर्णेन कामगेन महारथः । अभिदुद्राव सेनां तां वनान्यग्निरिव ज्वलन् ॥ 3 ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------------|------------|---------------------|
| कामगेन | “ எண்ணியபடியெல்லாம் செல்லவல்லதும் | तां | அந்த |
| अशिवर्णेन | அக்னிவாணமுடையதுமான | सेनां | சேனையை |
| सुरथेन | அழகியதேர்மீதிலிருந்த | ज्वलन् | கொழுந்துவிட்டுடொரி |
| महारथः | பெயர்போன போர்வீரன் | अग्निः | அக்னி [யும் |
| | | वनानि | மரங்களை |
| | | इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| | | अभिदुद्राव | துன்புறுத்தினான். |

ततः प्रविशस्तस्य विविधायुधधारिणः । विद्विद्वुर्दिशः सर्वा दर्शनादेव देवताः ॥ 4 ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------------------|-------------|-------------------------|
| ततः | “ அச்சமயத்தில் | देवताः | தேவதைகள் |
| विविधायुधधारिणः | நானாவித ஆயுதங்களை தரித்தவனாய் | सर्वाः | எல்லோரும் |
| प्रविशतः | இப்போது வந்திருக்க | दिशः | திக்குகளில் |
| तस्य | அவனது கின்ற | विद्विद्वुः | ஒடி ஒளிந்துகொண்டார்கள். |
| दर्शनात् एव | தர்சனத்திலிருந்தே | | |

न वभूव तदा कश्चियुयुत्सोरस्य संमुखे । सर्वांनाविध्य विव्रस्तान्दृष्ट्वा शक्रोऽभ्यभाषत ॥

ததா
யுயுஃஸோ:
அஸ்ய
சंसுஃ
கஷ்சித்
ந வஃபூவ
சாக்ர:
“அந்தச் சமயத்தில்
போர்புரியவந்த
இவனது
எதிரில்
ஒருவரும்
நிற்கமுடியவில்லை.
இந்திரன்

सर्वान्
भाविध्य
विव्रस्तान्
दृष्ट्वा
अभ्यभाषत
எல்லோரையும்
முறிபட்டு
பயர் துகிடக்கிறவர்
களாய்
கண்டு
இப்படி வாக்களித்
தார்:

न भेतव्यं न गन्तव्यं निर्वर्तध्वं रणे सुराः । एष गच्छति पुत्रो मे युद्धार्थमपराजितः ॥ ६ ॥

சுரா:
ந மெ:ஃவ்யம்
ந ஞ்நவ்யம்
ரணே
நிவர்தஃவ்யம்
யுத்தார்த்தம்
“தேவர்களே!
பயப்படவேண்டாம்;
ஓடவேண்டாம்;
போரில்
திரும்பி இருங்கள்;
போருக்காக

मे
अपराजितः
पुत्रः
एषः
गच्छति
எனது
எவனாலும் வெல்ல
முடியாதவனான
புதல்வன்
இதோ
வருகிறான்.

ततः शक्रसुतो देवो जयन्त इति विश्रुतः । रथेनाद्भुतकल्पेन संग्रामे सोऽभ्यवर्तत ॥ ७ ॥

தத:
விசுரூ:
தேவ:
ச:
சாக்ரஸூ:
“இந்தக் கூணத்திலே
யே
பெயர்பெற்ற
அமா னுஷ்யசக்தி
படைத்த
அந்த
இந்திரன் புதல்வனான
கிய

जयन्तः
इति
संग्रामे
अद्भुतकल्पेन
रथेन
अभ्यवर्तत
ஜயந்தன்
என்பவன்
போரில்
அத்புதமாய்ச்செய்யப்
பட்டிருக்கின்றதான
தேர்மீது வறிக்க
கொண்டு
வந்துசேர்ந்தான்.

ततस्ते त्रिदशाः सर्वे परिवार्य शचीसुतम् । रावणस्य सुतं युद्धे समासाद्य प्रजिह्वरे ॥ ८ ॥

தத:
தே விதஸா:
சर्वே
சக்சிஸூ:
பரிவார்யம்
“அனந்தரம்
அந்த தேவர்கள்
எல்லோரும்
இந்திரரணியின்
புதல்வனை
சூழ்ந்துகொண்டு

युद्धे
रावणस्य
सुतं
समासाद्य
प्रजिह्वरे
போரில்
இராவணனது
புதல்வனை
எதிர்த்து
நன்றாய்ப் புடைத்
தார்கள்.

तेषां युद्धं समभवत्सदृशं देवक्षसाम् । महेन्द्रस्य च पुत्रस्य राक्षसेन्द्रसुतस्य च ॥ ९ ॥

மஹேந்த்ரஸ்ய
புத்ரஸ்ய
ராக்ஷஸேந்த்ரஸூ:
தேஸா:
“மஹேந்திரனுடைய
புதல்வனுக்கும்
ராக்ஷஸேந்திரனு
டைய புதல்வனுக்கும்
அந்த

देवक्षसां च
सदृशं
युद्धं
समभवत्
தேவதைகளுக்கும்,
ராக்ஷஸர்களுக்கும்
சரியான
போர்
நடைபெற்றது.

ततो मातलिपुत्रे तु गोमुखे राक्षसात्मजः । सारथौ पातयामास शरान्कनकभूषणान् ॥

ततः “ अச்சந்தர்ப்பத்தில்
 राक्षसात्मजः तु “ அரக்கனின் புதல்வன்
 सारथौ “ சாரதியாகிய
 मातलिपुत्रे { இந்திரனுடைய சாரதி
 “ யான மாதலியின்
 “ புதல்வனான

गोमुखे “ கோமுகனைப்பவன்
 “ மீதே
 कनकभूषणान् “ பொன்னால் அலங்கரிக்கப்பட்டதான
 “
 शरान् “ பாணங்களை
 पातयामास “ பொழிந்தான்.

शचीसुतश्चापि तथा जयन्तस्तस्य सारथिम् । तं चापि रावणिः क्रुद्धः समन्तात्प्रत्यविध्यत् ॥

तस्य “ அவனது
 सारथि “ சாரதியை
 शचीसुतः “ இந்திராணியின் புதல்
 जयन्तः च “ ஜயந்தனும் [வனான
 तथा अपि “ அவ்வண்ணமே செய்தான்.

अपि “ அதன்மேல்
 रावणिः “ ராவணன் மைந்தன்
 क्रुद्धः “ சினங்கொண்டவனாகி
 तं च “ அவரையே
 समन्तात् “ சர்வப்பிரகாரத்தா
 प्रत्यविध्यत् “ பிளந்தான். [லும்

स हि क्रोधसमाविष्टो बली विस्फारितैक्षणः । रावणिः शक्रतनयं शरवर्षैर्वाकिरत् ॥१२॥

सः “ அந்த
 बली “ மஹாபலிஷ்டனாகிய
 रावणिः “ இராவணன் மைந்தன்
 क्रोधसमाविष्टः “ கோபம் தலைக்கேறியவனாய்

विस्फारितैक्षणः “ மலர்ந்த கண்களுற்றவனாய்
 शक्रतनयं हि “ இந்திரனது மைந்தனையே
 शरवर्षैः “ அம்புவருஷங்களால்
 अवाकिरत् “ துன்புறுத்தினான்.

ततः प्रगृह्य शस्त्राणि सारवन्ति महान्ति च । सुरसैन्येषु संक्रुद्धः पातयामास रावणिः ॥

ततः “ அதன்மேல்
 रावणिः “ இராவணன் மைந்தன்
 संक्रुद्धः “ இன்னும் அதிகக் கோபங்கொண்டவனாகி
 सारवन्ति { ஒன்றின் பின் ஒன்றாய்
 “ அமோகமாய் வீளைந்துவருகின்றனவும்

महान्ति च “ பெரும் ஆபத்தைவீளைவிக்கின்றனவான
 शस्त्राणि “ ஆயுதங்களை
 प्रगृह्य “ எய்து
 सुरसैन्येषु “ தேவஸையங்களில்
 पातयामास “ விடுத்தான்.

शतश्रीमुखसलपासगदाखड्गपरश्वधान् । महान्ति गिरिशृङ्गाणि पातयामास रावणिः ॥१३॥

शरणिः “ இராவணன்மைந்தன்
 शतश्रीमुखसलपास- } சதக்னி, முசலம், பிரா
 गदाखड्गपरश्वधान् } சம், கதை, கத்தி, பாசுவதமென்கிற ஆயுதங்களையும்

महान्ति “ மிகப்பெரிய
 गिरिशृङ्गाणि “ மலைமுடிகளையும்
 पातयामास “ விடுத்தான்.

ततः प्रव्यथिता लोकाः सञ्जज्ञे च तमो महत् । तस्य रावणपुत्रस्य शत्रुसैन्यानि निघ्नतः ॥

तस्य "அந்த
रावणपुत्रस्य இரா வண ன னு மைந்
தன்
शत्रुसैन्यानि ச த்ருசேனையின
निघ्नतः சின்னாபின்னமாக
அதஞ்செய்கையில்

महत् மஹத்தான
तमः இருள்
सञ्जज्ञे உண்டாயிற்று,
ततः அதனால்
लोकाः च உலகங்களெல்லாம்
प्रव्यथिता: நடுக்கமுற்றன.

ततस्तदैवतबलं समन्तात् शचीसुतम् । बहुप्रकारमस्वस्थमभवच्छरपीडितम् ॥ १६ ॥

ततः "அக்காலத்தில்
तं அந்த
शचीसुतं இந் திராணி புதல்வனை
समन्तात् நாற்புறமும் சூழ்ந்து
கொண்டிருந்த
तत् அந்த

दैवतबलं தெய்வசேனை
शरपीडितं பாணங்களால் துன்பு
றுத்தப்பட்டதாய்
बहुप्रकारं பலவிதமாய்
अस्वस्थं பாலைப்படுகிறதாய்
अभवत् இருந்தது.

नाभ्यजानन्त चान्योन्यं रक्षो वा देवतास्य वा । तत्र तत्र विपर्यस्तं समन्तात्परिधावति ॥

तत्र तत्र "அங்கங்கேயே
समन्तात् எல்லாப்புறங்களிலும்
परिधावति முறிந்தோடத்தலைப்
பட்டது.

रक्षः वा அரக்கர்களும்
विपर्यस्तं தாறுமாறாய்
अन्योन्यं च இன்னுள்ளினுள்ளென்
பதையும்

अथ அப்பொழுது
देवता वा தேவதைகளும்

न अभ्यजानन्त கண்டுகொள்ள முடி
யாமலிருந்தார்கள்.

एतस्मिन्नन्तरे वीरः पुलोमा नाम वीर्यवान् । दैत्येन्द्रस्तेन संगृह्य शचीपुत्रोऽपवाहितः ॥

दैत्येन्द्रः "தைத்தியர்களுக்கு
மன்னாய்
(இந்திராணியின் பிதா
வாகிய) புலோமா
என்ற

वीर्यवान् வீர்யவானாகிய
शचीपुत्रः இந் திராணியின்
तेन அவரால் [புதல்வன்
संगृह्य ஜாக்கிரதையாய்த் தூக்
கிக்கொண்டு

वीरः ஒரு சூரர் இருந்தார்.
एतस्मिन्नन्तरे இந்தச் சமயத்தில்

अपवाहितः அப்புறப்படுத்தப்
பட்டான்.

संगृह्य तं तु दौहित्रं प्रविष्टः सागरं तदा । मातामहार्यकस्तस्य पौलोमी येन सा शची ॥

येन "எவர்காரணமாய்
सा शची तु அந்த இந் திராணி
தேவியாரும்

तस्य அவனுக்கு
मातामहार्यकः தாயின் தந்தையாகிய
तं அந்த [பாட்டரை

पौलोमी (புலோமனது மகள்)
பெளலோமீ என்கிற
பெயருடையவளாகி
रुहोरा,
तदा அப்படியிருப்பதால்

दौहित्रं மகள்வயிற்றுப்போனை
संगृह्य ஜாக்கிரதையாய்
எடுத்துக்கொண்டு
सागरं சமுத்திரத்துக்குள்
प्रविष्टः போய்ச்சேர்ந்தார்.

ज्ञात्वा प्रणाशं तु तदा जयन्तस्याथ देवताः । अप्रहृष्टास्ततः सर्वा व्यथिताः संप्रदुःख्युः ॥

तदा “अप्यொழுது
 தேவதைகள்
 सर्वाः எல்லோரும்
 जयन्तस्य ஜயந்தனது
 प्रणाशं இருக்குமிடம் தெரி
 யாதிருத்தலை

ततः அதனால்
 अथ முற்றிலும்
 अप्रहृष्टाः உற்சாகமொழிந்த
 வர்களாய்
 व्यथिताः கலவரமடைந்தவர்
 களாய்
 संप्रदुःख्युः இங்குமங்கும்
 ஓடலானார்கள்.

रावणिस्त्वथ संक्रुद्धो बलैः परिवृतः स्वकैः । अभ्यधावत देवांस्तान्मुमोच च महास्वनम् ॥

अथ तु “अप्यொழுது
 रावणिः இராவணனது
 புதல்வன்

संक्रुद्धः கோபாவேசங்கொண்
 तात् அந்த [டவனாய்
 देवान् தேவர்களை
 अभ्यधावत இன்னும் தூர்த்தி
 அடித்தான்.
 महास्वनं च பெருங்கூச்சலையும்
 मुमोच இட்டான்.

स्वकैः தனது
 बलैः சைன்யங்களால்
 परिवृतः சூழப்பட்டவனாய்

दृष्ट्वा प्रणाशं पुत्रस्य रावणेश्रापि विक्रमम् । मातलिं चाह देवेशो रथः समुपनीयताम् ॥

देवेशः ऋषि “தேவேந்திரனே
 पुत्रस्य புதல்வனது
 प्रणाशं च இருக்குமிடம் தெரி
 யாதிருத்தலையும்
 रावणेश्रापि இராவணன் புதல்
 வனது

दृष्ट्वा பார்த்து
 मातलिं தன் சாரதியாகிய
 மாதலியைப்பார்த்து
 रथः தேர்
 समुपनीयां உடனே கொண்டு
 வரப்பட்டும் என்று
 आह கட்டளை யிட்டார்.

विक्रमं च துணியையும்

स तु दिव्यो महाभीमः सज्ज एव महारथः । उरस्थितो मातलिना वाह्यमानो महाजवः ॥

तु “உடனே
 मातलिना மாதலியினால்
 महाभीमः மஹாபயங்கரமான
 தும்
 दिव्यः அபாஹுஷ்யமான தும்
 महाजवः அதிவேகமாய்ச்
 செல்லவல்ல தும்

उरस्थितो எப்பொழுதுமே போ
 रजः एव { ருக்குச் சித்தமாயி
 रुक्कुश् चिद्धमायि
 सः அந்த
 महारथः பஹாரதம்
 वाह्यमानः - கொண்டு வந்து
 उपस्थितः நிறுத்தப்பட்டது.

ततो मेघा रथे तस्मिस्तद्विद्वन्तो महाबलाः । अग्रतो वायुचपला नेदुः परमनिस्वनाः ॥

ततः “अप्यொழுது
 तस्मिन् அந்த
 रथे ரதத்தில்
 अग्रतः முன்னிலையில்
 महाबलाः मेघा: பெரும் மேகங்கள்

तद्विद्वन्तः மின்னலுடன் கூடிய
 வைகளாய்
 वायुचपलाः காற்றால் சலித்தவை
 களாய்
 परमनिस्वनाः ...பேரொலிசெய்து
 नेदुः முழங்கின. [கொண்டு

नानावाद्यान्यवाद्यन्त गन्धर्वाश्च समाहिताः । ननृतुश्चाप्सरःसङ्घा ननिर्याते त्रिदशेश्वरे ॥

त्रिदशेश्वरे “தேவேந்திரன்
நியாதி வெளிப்புறப்பட்ட
போது
गन्धर्वाः च கந்தர்வர்களும்
समाहिताः ஒன்றுகூடி

नानावाद्यानि பலவகை வாத்தியங்க
भवाद्यन्त முழக்கினூர்கள், [களை
अप्सरःसङ्घाः च அப்ஸரர்களின் கூட்
டங்களும்
ननृतुः நர்த்தனஞ்செய்தார்
கள்.

रुद्रैर्वसुभिरादित्यैः साध्यैश्च समरुद्रणैः । वृतो नानाप्रहरणैर्निर्ययौ त्रिदशाधिपः ॥ २६ ॥

त्रिदशाधिपः “தேவேந்திரன்
रुद्रैः நுத்திரர்களாலும்
वसुभिः வஸுக்களாலும்
आदित्यैः ஆதித்தியர்களாலும்
समरुद्रणैः மருத்கணங்களோடு
கூடிய

साध्यैः च சாத்தியர்களாலும்
नानाप्रहरणैः பலவித போர்ப்படை
களாலும்
वृतः பாதுகாக்கப்பட்ட
வராய்
निर्ययौ வெளிப்புறப்பட்டார்.

निर्गच्छतस्तु शक्रस्य परुषं पवनो ववौ । भास्करो निष्प्रभश्चासीन्महोल्काश्च प्रपेदिरे ॥

शक्रस्य “இந்திரன்
निर्गच्छाः तु வெளிப்புறப்பட்ட
पवनः காற்று [போது
परुषं அஸஹ்யாய்
ववौ அடிக்கது.

भास्करः च சூர்யபகவாலும்
निष्प्रभः ஒளிகுன்றியவராய்
आसोत् விளங்கினார்.
महोल्काः च எரிக்கொள்ளிகளும்
प्रपेदिरे விழுந்தன

एतस्मिन्नन्तरे वीरो दशग्रीवः प्रतापवान् । आरुरोह रथं दिव्यं निर्मितं विश्वकर्मणा ॥
पन्नगैस्तु महाभोगैर्वेष्टितं रोमहर्षणैः । तेषां निश्वासावातेन प्रदीप्तमिव संयुगे ॥ २९ ॥

एतस्मिन् “இதே
अन्तरे சமயத்தில்
प्रतापवान् மிகப்பெயர்பெற்ற
वीरः சூரனாகிய
दशग्रीवः தசக்ரீவன்
विश्वकर्मणा விசுவகர்மாவினால்
निर्मितं நிர்மிக்கப்பெட்டதும்
दिव्यं திவ்யமானதும்
रोमहर्षणैः மயிர்க்கூச்செறியும்
படி பயங்கரமான

पन्नगैः பன்னகங்கள் என்கிற
महाभोगैः பெரும்சர்ப்பங்களால்
वेष्टितं சுற்றப்பட்டிருக்க
संयुगे போரில் [கிறதும்
तेषां அவைகளின்
निश्वासावातेन तु மூச்சுக்காற்றினாலேயே
प्रदीप्तं கொளுத்திவிடுகிறது
इव போலிருக்கிறதுமான
रथं தேரில்
आरुरोह ஏறினார்.

दैत्यैर्निशाचरैश्चैव स रथः परिवारितः । समराभिमुखो दैत्यो महेन्द्रं सोऽभ्यवर्तत ॥ ३० ॥

ச: "அந்த
ரய: ரதம்
दैत्यै: च
निशाचरै: एव
परिवारितः

தைத்தியர்களாலும்
அரக்கர்களாலும்
சூழப்பட்டிருந்தது.

स: दैत्यः
स रराभिमुखः
महेन्द्रं
अभ्यवर्तत

அந்த அரக்கன்
டோரில் ஆசக்தியுடையவனும்
மஹேந்திரனை
எதிர்த்துச்சென்றான்.

पुत्रं तं वारयित्वा तु स्वयमेव व्यवस्थितः । सोऽपि युद्धाद्विनिष्क्रम्य रावणिः समुपाविशत् ॥

ச: "அவன்
தம்
புத்
वारयित्वा
स्वयं एव

அவன்
அந்த
புதல்வனை
ஒதுக்கியிருக்கச்
செய்து
தானே

व्यवस्थितः
रावणिः अगि
युद्धात् तु
विनिष्क्रम्य
समुपाविशत्

முன்வந்து எதிர்த்து
நின்றான்.
இராவணன் மைந்த
போரிலிருந்தே [னும்
அப்புறப்பட்டு
தங்கியிருந்தான்.

ततो युद्धं प्रवृत्तं तु सुराणां राक्षसैः सह । शस्त्राणि वर्षतां घोरं मेघानामिव संयुगे ॥

ततः
संयुगे
राक्षसैः
सह
मेघानां
हृद्य

"அப்பொழுது
போரில்
அரக்கர்களோடு
கூட
மேகங்களுக்கு
சடாய்

शस्त्राणि तु
वर्षतां
सुराणां
घोरं
युद्धं
प्रवृत्तम्

பாணங்களையே
பொழிகின்ற
தேவர்களுக்கு
கொடிய
போர்
நடைபெற்றது.

कुम्भकर्णस्तु दुष्टात्मा नानाप्रहरणोद्यतः । नान्नायत तदा युद्धे सह केनाप्ययुध्यत ॥३१॥

तदा
नानाप्रहरणोद्यतः
दुष्टात्मा
कुम्भकर्णः
युद्धे

"அந்த சந்தர்ப்பத்தில்
பலவித போர்படை
களை தரித்தவனும்
துஷ்டாத்மாவுமான
கும்பகர்ணன்
போரில்

केन सह
अपि
अयुध्यत
तु
न अज्ञायत

எவனாவது ஒருவ
னோடு
எப்படியாகிலும்
போர்புரிந்தான்.
இந்த ஸ்திதியில்
தன்னறிவற்றிருந்
தான்.

दन्तैर्भुजाभ्यां पद्भ्यां च शक्तितोमरसायकैः । येन केनैव संरब्धस्ताडयामास वै सुरान् ॥

दन्तैः
भुजाभ्यां
पद्भ्यां
शक्तितोमर-
सायकैः

"பற்களாலும்
இரு கைகளாலும்
இரு கால்களாலும்
சக்திதோமரம், வாள்
என்கிற ஆயுதத்
களாலும்

केन च
येन एव
सुरान् वै
संरब्धः
ताडयामास

ஏதோ ஒரு
எப்படிப்பட்டதாயி
ருக்கிறதோ அதை
லும்
தேவர்களை
கோபவெறிகொண்ட
பிடித்தான். [வரும்

ततो रुद्रैर्महाघोरैः सङ्गम्याथ निशाचरः । प्रयुद्धस्तैश्च संग्रामे क्षतः शङ्खैर्निरन्तरम् ॥३५॥

संग्रामे “போரில்
सङ्गम्य முன்னிட்டுக்கொண்டு
अथ இப்பொழுது
प्रयुद्धः எதிர்த்துநின்று
போர்புரிகின்ற

निशाचरः च அரக்கனும்
ततः அதனால்

महाघोरैः மிக உக்கிரங்கொண்ட
तैः அந்த
रुद्रैः ருத்திரர்களால்
शङ्खैः பாணங்களால்
निस्तत्र தேகமெல்லாமும்
क्षतः காயப்படுத்தப்
பட்டான்.

वभौ शस्त्राचिततनुः कुम्भकर्णः क्षरन्नसृक् । विद्युत्स्तनितनिर्घोषो धारावानिव तोयदः ॥

कुम्भकर्णः “கும்பகர்ணன்
शस्त्राचिततनुः { பாணங்களால் செதுக்
குண்ட தேகமுடை
யவனாய்
असृक् உதிர்த்தை
क्षरन् பெருகவிட்டுக்கொண்
டிருப்பவனாய்

तोयदः மேகம்
विद्युत्स्तनित- } இடி, மின்னலுடன்
निर्घोषः } முழங்குகின்றதாய்
धारावान् மழைபொழிகின்ற
தாய் இருந்தால்
इव எவ்வண்ணமோ
अव்வண்ணमே
बभौ தோற்றினான்.

ततस्तद्राक्षसं सैन्यं त्रिदशैः समरुद्रणैः । रणे विद्रावितं सर्वं नानाप्रहरणैः शितैः ॥३७॥

ततः “அச்சமயத்தில்
रणे போரில்
समरुद्रणैः மருத்கணங்களோடு
கூடிய
विदशैः தேவர்களால்
शितैः கூர்மையான
नानाप्रहरणैः பற்பல போர்ப்படை
களால்

तत् அந்த
राक्षसं அரக்க
सैन्यं சைய்யம்
सर्वं எல்லாமும்
विद्रावितम् தூர்த்தி ஓட்டிவிடப்
பட்டது.

केचिद्विनिहताः कृत्वाश्चेष्टन्ति स्म महीतले । वाहनेष्ववसक्ताश्च स्थिता एवापरे रणे ॥

केचित् “சிலர்
कृत्वा: அறுப்புண்டவர்களாய்
रणे போர்க்களத்தில்
महीतले தரையில்
चेष्टन्ति स्म புரண்டு துடித்தனர்.
अपरे வேறுசிலர்

वाहनेषु एव वाஹனங்களிலேயே
विनिहताः காயம்பட்டுத்தன்னறி
விழந்தவர்களாயும்
अवसक्ताः च தலைகீழாய்த் தொங்கு
பவர்களாயும்
स्थिताः இருந்தார்கள்.

रथान्नागान्खरानुष्टान्पन्नगांस्तुरगानरणे । शिशुमारान्वराहांश्च पिशाचवदनांस्तथा ॥३९॥

तान्समालिङ्ग्य बाहुभ्यां विष्टब्धाः केचिदुच्छ्रिताः ।

देवैस्तु शस्त्रसंभिन्ना मन्त्रिरे च निशाचराः

॥ ४० ॥

| | | | |
|-----------------|---------------|--------------|--------------------|
| रणे | “போரில் | उष्टान् | ஒட்டகங்களையும் |
| देवैः | தேவர்களால் | पन्नगान् | பன்னகங்களையும் |
| शस्त्रसंभिन्नाः | பாணங்களால் | तुरगान् | குதிரைகளையும் |
| केचित् | சில [முறிபட்ட | शिशुमारान् च | சிம்சுமாரங்களையும் |
| उच्छ्रिताः | இறுமாப்புள்ள | वराहान् | வராஹங்களையும் |
| निशाचराः | அரக்கர்கள் | पिशाचवदनान् | பிசாசுவதனமென்ற |
| तु | இச்சமயத்தில் | | மிருகங்களையும் |
| तान् | அந்த | ब हुभ्यां | இரு கைகளால் |
| रथान् | தேர்களையும் | तथा | அப்படியே |
| नागान् | யானைகளையும் | समालिङ्ग्य च | அணைத்துக்கொண்டே |
| खरान् | கோவேறுகழுதை | विष्टब्धाः | அசைவற்றவர்களாய் |
| | களையும் | मन्त्रिरे | மாண்டார்கள். |

चित्रकर्म इवाभाति स तेषां रणसंप्लवः । निहतानां प्रमत्तानां राक्षसानां महीतले ॥४१॥

| | | | |
|-------------|-----------------|--------------|----------------------|
| महीतले | “தரையில் | सः | அந்த |
| प्रमत्तानां | தாறுமாறாய் | रणसंप्लवः | { படுக்கையில் மூடப் |
| निहतानां | கொலையுண்டுகிடக் | | பட்ட போர்க்களமா |
| | கின்ற | चित्रकर्म इव | னது |
| तेषां | அந்த | | சித்ரங்கள் புதைத்தப் |
| राक्षसानां | அரக்கர்களுடைய | भासाति | படமென |
| | | | விளங்கிற்று. |

शोणितोदकनिष्पन्दकङ्कगृध्रसमाकुला । प्रवृत्ता संयुगमुखे शस्त्रग्राहवती नदी ॥ ४२ ॥

| | | | |
|--------------------|-------------------|-----------------|-----------------|
| संयुगमुखे | “போர்பிரதேசத்தில் | शस्त्रग्राहवती | ஆயுதங்களே முதலை |
| शोणितोदक- | } பெரிய கழுஞ்சுள் | | களாயுடைய துமாய் |
| निष्पन्दकङ्कगृध्र- | | சிறிய கழுஞ்சுள் | |
| समाकुला | | இவைகளால் நிறைந் | नदी |
| | து உதிரத்தையே | प्रवृत्ता | உண்டாயிற்று. |
| | ஜலமாயுடையதாயும் | | |

एतस्मिन्नन्तरे क्रुद्धो दशग्रीवः प्रतापवान् । निरीक्ष्य तद्वलं कृत्स्नं दैवतैर्विनिपातितम् ॥

स तं प्रतिविगाह्याशु प्रवृद्धं सैन्यसागरम् । त्रिदशान्समरे निघ्नञ्छक्रमेवाभ्यवर्तत ॥

| | | | |
|----------|------------|------------|----------------|
| समरे | “போரில் | विनिपातिं | அழிக்கப்பட்டதை |
| दैवतैः | தேவர்களால் | प्रतापवान् | பிரதாபசாலியான |
| तत् | அந்த | सः | அந்த |
| बल | ஸேனை | दशग्रीवः | தசகரீவன் |
| कृत्स्नं | எல்லாறும் | निरीक्ष्य | கண்டு |

| | |
|-----------|---------------------|
| एतस्मिन् | இந்த |
| अन्तरे | சமயத்தில்தான் |
| कुद्दः | கோபாவேசங்கொண்டவனாய் |
| तं | அந்த |
| प्रवृद्धं | பழுதுபடாதிருக்கின்ற |

| | |
|--------------|---------------------|
| सैन्यसागरं | சேனாசகரத்தில் |
| प्रतिविगाह्य | எதிர்த்துப்புருந்து |
| विदशान् | தேவர்களை |
| निघ्न एव | வதைசெய்துகொண்ட |
| शक्रं | இந்திரன்மீது [டே |
| आशु | சடக்கென |
| अभ्यवर्तत | பாய்ந்தான். |

आगाच्छक्रो मह्चापं विस्फार्य सुमहास्वनम् । यस्य विस्फारघोषेण स्वनन्ति स्म दिशो दश ॥

| | |
|------------|------------------|
| शक्रः | “இந்திரன் |
| महत् | மஹத்தான |
| चापं | வில்லை |
| सुमहास्वनं | பேரொலி செய்கின்ற |
| विस्फार्य | நானேற்றி [தாய் |
| भागान् | நின்றார். |

| | |
|--------------|------------------|
| यस्य | எந்த அதுனுடைய |
| विस्फारघोषेण | நானேற்றலின் |
| दश | பத்து [கோஷத்தால் |
| दिशः | திசைகளும் |
| स्वनन्ति स्म | சத்திக்கப்பெற்ற |
| | தாயின. |

तद्विक्रम्य मह्चापमिन्द्रो रावणमूर्धनि । निपातयामास शरान्पावकादित्यवर्चसः ॥ ४६ ॥

| | |
|----------|-----------------|
| इन्द्रः | “இந்திரன் |
| तत् | அந்த |
| महत् | மஹத்தான |
| चां | வில்லை |
| विक्रम्य | இழுத்து வளைத்து |

| | |
|------------------------------------|--|
| पावकादित्य- वर्चसः | } அக்கினிக்கும் சூரிய னுக்கும் இணையான உக்கிரமுடையன அம்புகளை [வாக்ய ராவணனது முடி. பொழிந்தார். [கனிவ் |
| शरान् रावणमूर्धनि निपातयामास | |

तथैव च महाबाहुर्दशग्रीवो व्यवस्थितः । शक्रं कार्मुकविभ्रष्टैः शरवर्षैरवाकिरत् ॥ ४७ ॥

| | |
|------------|------------------------|
| महाबाहुः | “மஹாபாகுவாகிய |
| दशग्रीवः च | தசகரீவனும் |
| तथा एव | அவ்வண்ணமே |
| व्यवस्थितः | அசையாது நின்ற வனாய் |

| | |
|-------------------|-----------------------------|
| कार्मुकविभ्रष्टैः | சாபத்தினின்றும் வெளிவந்த |
| शरवर्षैः | சரமாரிகளால் |
| शक्रं | இந்திரனை |
| अवाकिरत् | பொழிந்தான். |

प्रयुध्यतोरथ तयोर्बाणवर्षैः समन्ततः । न ज्ञायते तदा किञ्चित्सर्वं हि तमसा वृतम् ॥

| | |
|-------------|--|
| अथ | “இப்பொழுது |
| प्रयुध्यतोः | ஒருவரை ஒருவர் எதிர்த் த்துப்போர்புகின்ற |
| तयोः | அவ்விருவர்களுடைய |
| बाणवर्षैः | பாணவருஷங்களால் |
| सर्वं हि | எல்லாமும் |

| | |
|-----------|------------------|
| समन्ततः | எங்கும் |
| तमसा | இருளால் |
| वृतं | மறைந்துபோயிற்று. |
| तदा | அந்தச்சமயத்தில் |
| किञ्चित् | எதொன்றும் |
| न ज्ञायते | கட்புலனாகவில்லை. |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे अष्टाविंशः सर्गः ॥



एकोनविंशः सर्गः—இருபத்தொன்பதாவது ஸர்க்கம் || 29 ||

इन्द्रग्रहणम्—இந்திரனைப் பிடிப்பது.

ततस्तमसि सञ्जाते सर्वे ते देवराक्षसाः । अयुध्यन्त बलोन्मत्ताः सूदयन्तः परस्परम् ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------|-------------|----------------------------|
| तमसि | “ இருள் | सर्वे | எல்லோரும் |
| सञ्जाते | உண்டாயிருந்தபோது | बलोन्मत्ताः | யுத்தவெறிகொண்ட வர்களாய் |
| ततः | அக்காலத்திலும் | परस्परं | ஒருவரைஒருவர் |
| ते | அந்த | सूदयन्तः | அடித்துக்கொண்டு |
| देवराक्षसाः | தேவர்கள் அரக்கர் கள் | अयुध्यन्त | போர்புரிந்தார்கள். |

ततस्तु देवसैन्येन राक्षसानां बृहद्वलम् । दशांशं स्थापितं युद्धे शेषं नीतं यमक्षयम् ॥ 2 ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------|------------|--------------------------|
| ततः | “ அப்பொழுது | शेषं तु | பாக்கியோவென்றால் |
| युद्धे | போரில் | देवसैन्येन | தேவசைய்யத்தால் |
| राक्षसानां | அரக்கர்களுடைய | यमक्षयं | யமலோகத்திற்கு |
| बृहद्वलं | பெரும்சேனையில் | नीतम् | அனுப்பிவிடப்பட்ட டது. |
| दशांशं | பத்தில் ஒரு பங்கு | | |
| स्थापितं | தப்பிப்பிழைத்திருந் தது. | | |

तस्मिन्स्तु तामसे युद्धे सर्वे ते देवराक्षसाः । अन्योन्यं नाभ्यजानन्त युध्यमानाः परस्परम् ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------|--------------|---------------------------------|
| तस्मिन् | “ அந்த | परस्परं | ஒருவரோடொருவர் |
| तामसे | அந்தகார | युध्यमानाः | போர்புரிந்துகொண்டு |
| युद्धे | யுத்தத்தில் | तु | இருந்தாலும் |
| ते | அந்த | अन्योन्यं | இன்னொன்றுடன் பதை |
| देवराक्षसाः | தேவர்கள், ராக்கஸர் கள் | न अभ्यजानन्त | கண்டறியமுடியாதி ருந்தார்கள். |
| सर्वे | எல்லோரும் | | |

इन्द्रश्च रावणश्चैव रावणिश्च महाबलः । तस्मिन्स्तमोजालवृते मोहमयुर्न ते त्रयः ॥ ४ ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------------|----------|--------------------------|
| तस्मिन् | “ அது | रावणिः च | ராவணன் புதல்வனு மாகிய |
| तमोजालवृते | பேரிருளால் சூழப் பட்டிருக்கையிலும் | ते | அந்த |
| महाबलः | மஹாபலவானாகிய | त्रयः एव | மூவர்கள் மாத்திரம் |
| इन्द्रः च | இந்திரனும் | मोहं | மனச்சஞ்சலத்தை |
| रावणः च | ராவணனும் | न ईयुः | பெறாதிருந்தார்கள். |

स तु दृष्ट्वा बलं सर्वं निहतं रावणः क्षणात् । क्रोधमभ्यागमत्तीव्रं महानादं च मुक्तवान् ॥

ச: “அந்த
 ராவண: இராவணன்
 क्षणात् ஒருநொடியில்
 बलं சைன்யம்
 सर्वं எல்லாமும்
 निहंतं நாசமாய்விட்டதை
 दृष्ट्वा கண்டு

तु अतः
 तीव्रं உக்கிரமான
 क्रोधं கோபத்தை
 अभ्यागमत् अभயாதான்.
 महानादं च பெருக்கச்செய்யும்
 मुक्तवान् போட்டான்.

क्रोधात्सूतं च दुर्ध्वं: स्यन्दनस्थमुनाच ह ।

दुर्ध्वं: च “அகங்காரங்கொண்ட அவன்
 क्रोधात् ஆக்கிரஹத்தால்
 स्यन्दनस्थं ராதத்தில் வீற்றிருக்கின்ற
 सूतं ஸாரதிக்கு
 उवाच இப்படி கட்டளையிட்டான்:

परसैन्यस्य मध्येन यावदन्तो नयस्व माम् ॥

परसैन्यस्य ‘சத்ருசையத்தனுடைய
 मध्येन நடுவில் புகுந்து
 यावदन्त: ह { எவ்வளவு கிட்டப்
 போகக்கூடுமோ
 அதுபரந்தம்
 मां என்னை
 नयस्व கொண்டுபோய்ச்சேர்.

अद्यैतांस्त्रिदशान्सर्वान्विक्रमैः समरे स्वयम् ।

समरे “போரில்
 एतान् இந்த
 त्रिदशान् தேவர்கள்
 सर्वान् எல்லோரையும்
 विक्रमैः உறுதியான
 महाधौरैः மஹாகொடிய

नानाशस्त्रैर्महाधौरैर्नयामि यमसादनम् ॥ ७ ॥

नानाशस्त्रैः பல ஆயுதங்களால்
 अद्य இதோ
 स्वयं நானே
 यमसादनं யமலோகத்திற்கு
 नयामि அனுப்பிவிடுகிறேன்.

अहमिन्द्रं वधिष्यामि धनदं वरुणं यमम् ।

त्रिदशान्विनिहत्याथ स्वयं स्थास्याम्यथोपरि ॥

विषादो न च कर्तव्यः शीघ्रं वाहय मे रथम् ॥ ८ ॥
 अहं “நான்
 इन्द्रं இக்கிரனையும்
 धनदं குபேரனையும்
 वरुणं வருணனையும்
 यमं யமனையும்
 वधिष्यामि கொலைபுரிவேன்;
 च அத்துடன்
 त्रिदशान् தேவர்களை
 विनिहत्य வேரோடொழித்து
 अथ அதன்மேல்

उपरि எவர்களுக்கும்
 स्वयं நானே [மேலாய்
 स्थास्यामि அரசுபுரிவேன்.
 अथ இப்பொழுது
 विषादः மனத்தளர்ச்சி
 कर्तव्यः செய்யத்தக்கது
 न இல்லை.
 मे எனது
 रथं இரதத்தை
 शीघ्रं वाहय சீக்கிரம் நடத்து.

द्विः खलु त्वां ब्रवीम्यद्य यावदन्तो नयस्व माम् ॥ ९ ॥

| | |
|-------------|---------------------------|
| க்வா | “உனக்கு |
| द्विः | இருதரம் |
| ब्रवीमि खलु | நான் சொல்லுகிறதா என்ன? |
| मां | என்னை |

| | |
|-----------|---|
| अद्य | தக்கூணமே |
| या वदन्तः | { எவ்வளவு கிட்டப் போகக்கூடுமோ அதுபரயந்தம் |
| नयस्व | கொண்டுபோ. |

अयं स नन्दनोद्देशो यत्र वर्तामहे वयम् । नय मामद्य तत्र त्वमुद्यो यत्र पर्वतः ॥ १० ॥

| | |
|--------------|---------------|
| यत् | “எங்கு |
| अद्य | இப்பொழுது |
| वयं | நாம் |
| वर्तामहे | இருக்கின்றோமோ |
| अयं | இது |
| नन्दनोद्देशः | நந்தனவனம். |
| मां | என்னை |

| | |
|--------------|-------------------|
| सः | அந்த |
| उद्यः पर्वतः | உதயபர்வதம் |
| यत् | எங்கிருக்கிறதோ |
| तत्र | அவ்விடத்திற்கு |
| इं | ஈ |
| नय | கொண்டுபோய்ச்சேர். |

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा तुरङ्गान्त मनोजवान् । आदिदेशाथ शत्रूणां मध्येनैव च सारथिः ॥

| | |
|----------|----------------|
| सः | “அந்த |
| सारथिः | தேரோட்டி. |
| तस्य | அவனது |
| तद्वचनं | அந்த ஆக்கிணையை |
| श्रुत्वा | கேட்டு |
| अथ | அதன்மேல் |

| | |
|-----------|-------------------|
| शत्रूणां | சத்துருக்களின் |
| मध्येन एव | நடுவிலேயே |
| मनोजवान् | மனோவேகமுடைய |
| तुरङ्गान् | குதிரைகளையும் |
| आदिदेश | அதட்டி ஒட்டினான். |

तस्य तं निश्चयं ज्ञात्वा शक्रो देवेश्वरस्तदा । रथस्थः समरस्थांस्तान्देवान्वावयमथाब्रवीत् ॥

| | |
|-----------|-------------------|
| देवेश्वरः | “தேவர்களுக்கு மன் |
| शक्रः | இந்திரன் [னனாகிய |
| तस्य | அவனது |
| तं | அந்த |
| निश्चयं | மனோபாவத்தை |
| ज्ञात्वा | அறிந்து |
| तदा | அப்பொழுது |

| | |
|----------|--------------------|
| रथस्थः | தேரிலிருந்துகொண்டே |
| समरस्थां | போருக்குவந்திருந்த |
| तान् | அந்த |
| देवान् | தேவர்களைப்பார்த்து |
| वावयं | ஒரு ஆக்கிணையை |
| अथ | இந்தப்ரகாரம் |
| अब्रवीत् | சொல்லியருளினார்: |

सुराः शृणुत मद्वाक्यं यत्तावन्मम रोचते । जीवन्नेव दशग्रीवः साधु रक्षो निगृह्यताम् ॥

| | |
|-----------|----------------------------|
| सुराः | “தேவர்கள்! |
| मद्वाक्यं | என் ஆக்கிணையை |
| शृणुत | செவிகொடுத்து கேளுங்கள். |
| दशग्रीवः | தசகீர்வ |
| रक्षः | அரக்கன் |
| जीवन् | உயிருடனே |

| | |
|------------|--|
| निगृह्यतां | கைதியாய் பிடித்துக் கொள்ளப்பட்டும். |
| यत् एव | எந்த இதுதான் |
| तावत् | இந்த சந்தர்ப்பத்தில் |
| साधु | நல்லதாய் |
| मम | எனக்கு |
| रोचते | தோன்றுகிறது. |

एष ह्यतिवृत्तः सैन्ये रथेन पवनौजसा । गमिष्यति प्रवृद्धोर्मिः समुद्र इव पर्वणि ॥ १४ ॥

एषः हि “ இவனோ
 पवनौजसा वायु வேகங்கொண்ட
 रथेन தேரிலேறியவனாய்
 समुद्रः கடல்
 पर्वणि பர்வகாலத்தில்
 प्रवृद्धोर्मिः ஓங்கிவிசும் அலைகளு
 டனிருக்கிறது

इव எவ்வண்ணமோ,
 அவ்வண்ணமே
 अतिवृत्तः உக்கிரமானவனுக்
 கொண்டவனாய்
 सैन्ये சேனையில்
 गमिष्यति புகுகின்றான்.

न ह्येष हन्तुं शक्योऽयं वरदानात्सुनिर्भयः । तद्ग्रीष्यामहे रक्षो यत्ता भवत संयुगे ॥ १५ ॥

एषः “ இந்த
 रक्षः அரக்கன்
 वरदानात् வரப்பிரசாதத்தால்
 अद्य இப்பொழுது
 हन्तुं கொல்வதற்கு
 शक्यः உரிமையுடையவனாய்
 न இல்லை.
 हि ஆதலால்

सुनिर्भयः அச்சமென்பதே இல்
 லாமலிருக்கின்றான்
 तत् ஆகையால்
 संयुगे போரில்
 यत्ता { இன்னதுசெய்கிற
 தென்ற நிச்சயங்
 கொண்டவர்களாய்
 भवत இருங்கள்.
 तद्ग्रीष्यामहे கைதியாய்ப் பிடித்துக்
 கொள்வோம்.

यथा बलौ निरुद्धे च त्रैलोक्यं भुज्यते मया । एवमेतस्य पापस्य निरोधो मम रोचते ॥

बलौ “பலி சக்கிரவர்க்கு
 निरुद्धे காலவில்லைத்திருந்த
 मया என்னால் [போது
 त्रैलोक्यं மூவுலகம்
 यथा எவ்வண்ணமாய்
 भुज्यते { உபத்திரவமின்றி
 பரிபாலிக்கப்
 பட்டதோ

एवं அப்படியே
 एतस्य இந்த
 पापस्य துஷ்டனை
 निरोधः च கட்டிக்காவலில் வைப்
 பது ஒன்றுதான்
 मम எனக்கு
 रोचते தோன்றுகிறது.

ततोऽन्यं देशमास्थाय शक्रः सन्त्यज्य रावणम् । अयुध्यत महाराज राक्षसांस्त्रासयन्नणे ॥

महाराज “ சக்கிரவர்த்தியாரே !
 ततः அதன்மேல்
 शक्रः இந்திரன்
 रावणं ராவணனை
 सन्त्यज्य { இருக்குமிடத்தி
 லேயே கவனியாமல்
 விட்டுவிட்டு
 रणे போர்க்களத்தில்

अन्यं மற்றொரு
 देशं பிரதேசத்தை
 भास्याय கிட்டி
 राक्षसान् அரக்கர்களை
 त्रासयन् நடுக்கமுறச்செய்து
 கொண்ட
 अयुध्यत போர்புரிந்தார்.

उत्तरेण दशग्रीवः प्रविवेशानिर्वीरकः । दक्षिणेन तु पार्श्वेन प्रविवेश शतक्रतुः ॥ १८ ॥

| | | | |
|--------------------|----------------|--------------|--------------------|
| शतक्रतुः | “இந்திரன் | शनिवर्तकः तु | திரும்பிவராதவனாகவே |
| दक्षिणेन पार्श्वेन | தென்புறமாக | उत्तरेण | வடபுறமாகவே |
| प्रविवेश | பிரவேசித்தார். | प्रविवेश | போனான். |
| दशग्रीवः | தசகிரீவன் | | |

ततः स योजनशतं प्रविष्टो राक्षसाधिपः । देवतानां बलं सर्वं शरवर्षैरवाकिरत् ॥ १९ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|----------|----------------|
| ततः | “அப்பொழுது | देवतानां | தேவதைகளுடைய |
| सः | அந்த | बलं | சேனை |
| राक्षसाधिपः | ராக்ஷஸமன்னன் | सर्वं | எல்லாவற்றிலும் |
| योजनशतं | நூறு யோஜனை தூரம் | शरवर्षैः | சரமாரிகளால் |
| प्रविष्टः | போய்ச்சேர்ந்தான். | अवाकिरत् | பொழிந்தான். |

ततः शक्रो निरीक्षायथ प्रनष्टं तु स्वकं बलम् । न्यवर्तयदसंभ्रान्तः समावृत्य दशाननम् ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------|-----------------|---|
| अथ | “அப்பொழுது | अ संभ्रान्तः तु | சத்தம் செய்யாமல் |
| शक्रः | இந்திரன் | | சாந்தராகவே |
| स्वकं बलं | தனது சேனை | दशाननं | தசானனை |
| प्रनष्टं | நாசமுறுவதை | समावृत्य | அசையாதவண்ணம் கட்டிப்பிடித்துக் கொண்டு |
| निरीक्षय | கண்டு | | |
| ततः | அப்படியிருக்கையி லும் | | |

एतस्मिन्नन्तरे नादो मुक्तो दानवराक्षसैः । हा हताः स्म इति अस्तं दृष्ट्वा शक्रेण रावणम् ॥

| | | | |
|-----------------|----------------------------------|--------------|----------------|
| शक्रेण | “இந்திரனால் | दानवराक्षसैः | தானவர்களாலும் |
| रावणं | ராவணனை | | அரக்கர்களாலும் |
| अस्तं | பிடித்துக்கட்டிவிட் டிருப்பதை | हा | ‘ஐயோ ! |
| दृष्ट्वा | கண்டு | हताः स्म | அழிந்தோம்’ |
| एतस्मिन् अन्तरे | இந்தசமயத்தில் | इति | என்கிற |
| | | नादः | அழுக்கைக்குரல் |
| | | मुक्तः | சம்பவித்தது. |

ततो रथं समास्थाय रावणिः क्रोधमूर्च्छितः । तत्सैन्यमतिस्क्रुद्धः प्रविवेश सुदारुणम् ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------------------------|----------|-----------------------------------|
| रावणिः | “ராவணனது மைந்தன் | रथं | ரதத்தில் |
| ततः | அதனால் | समास्थाय | ஏறிக்கொண்டு |
| अति-क्रुद्धः | அதிகோபங்கொண்ட வனாய் | तत् | அந்த |
| क्रोधमूर्च्छितः | கோபத்தால் உக்கிரம் அதிகரித்தவனாய் | सुदारुणं | மிக்க கறுசுறுப்புட னிருக்கின்ற |
| | | सैन्यं | சேனையில் |
| | | प्रविवेश | புகுந்தான். |

| | | | |
|--|-------------------------------|---|---|
| तां प्रविश्य महाभायां प्राप्तां गोपतिना पुरा । प्रविवेश सुसंख्यस्तस्मै न्यं समभिद्रवत् ॥ | | | |
| प्रविश्य | “புகுந்து | महामायां | { மஹத்தாகிய (கான் ஒருவர் கண்ணுக்கும் புலப்படாதவனுயி ருக்கும்) மாயையில் விளங்கினான். |
| तत् | அவ்விடத்தில் | प्रविवेश | அதி உக்கிரங்கொ |
| पुरा | முன்பு | सुसंख्यः | சேணையை [நடவனுய் |
| गोपतिना | பரமேச்வரரால் | सैन्यं | துன்புறுத்தி ஓடச் செய்தான். |
| प्राप्तां | கிடைத்திருக்கிறதா கிய | समभिद्रवत् | |
| तां | அந்த | महेन्द्रश्च महातेजा नापश्यच्च सुतं रिपोः ॥ | |
| स सर्वा देवतास्त्यक्त्वा शक्रमेवाभ्यधावत् । | | अभ्यधावत् | பாய்ந்துசென்றான். |
| सः | “அவன் | महातेजाः | மஹாதேஹஸ்வியாகிய |
| देवताः | தேவதைகள் | महेन्द्रः | மஹேந்திரன் |
| सर्वाः च | எல்லேரையும் | रिपोः | சத்ருவினது |
| त्यक्त्वा | அலகூடியமாக விட்டு விட்டு | सुतं च | புதல்வனைமட்டும |
| शक्रं एव | இந்திரன் ஒருவர் மீதே | न अपश्यत् | பார்க்கவில்லை. |
| स मातर्लिं समायान्तं ताडयित्वा शरोत्तमैः । | | महेन्द्रं बाणवर्षेण भूय एवाभ्यवाकिरत् ॥ | |
| सः | “அவன் | ताडयित्वा | அடித்துத்தள்ளி விட்டு |
| समायान्तं | எதிரிலிருக்கின்ற | महेन्द्रं एव | மஹேந்திரர் மீதே |
| मातर्लिं | இந்திரனது ஸாரதி யாகிய மாதலியை | बाणवर्षेण | சரமாரியால் |
| शरोत्तमैः | பெரும்பாணங்களால் | भूयः | அதிகமாய் |
| ततस्त्यक्त्वा रथं शक्रो विससर्ज च सारथिम् । | | अभ्यवाकिरत् | பொழிந்தான். |
| शक्रः | “இந்திரன் | ऐरावतं समारुह्य मृगयापास रावणिम् ॥ | |
| सारथिं | சாரதிக்கு | ऐरावतं | தனது யானையாகிய ஐராவதத்தின்மேல் |
| विससर्जं | போகவிடைதந்தார். | समारुह्य | ஏறிக்கொண்டு |
| ततः | அதன்மேல் | रावणिं | ராவணனது புதல் வனை |
| रथं च | தேரையும் | मृगयापास | தேடிப்பார்த்தார். |
| त्यक्त्वा | விட்டிடுறக்கி | स तत्र मायाबलवानन्द्रशयोऽथान्तरिक्षगः । इन्द्रं मायापरिक्षिप्तं कृत्वा स प्राद्वच्छरैः ॥२७॥ | |
| सः | “அவன் | तत्र | அந்த சமயத்தில் |
| अन्तरिक्षगः | ஆகாயத்திலிருப்பவ னாய் | शरैः | பாணங்களால் |
| मायाबलवान् | மாயாசக்தியுடைய | इन्द्रं | இந்திரனை |
| अथ | இப்பொழுது [வனுய் | मायापरिक्षिप्तं | மாயையால் சிக்கிக் கொண்டவராக |
| अन्द्रशयः | கட்புலனாகாதிருந் | कृत्वा | செய்து |
| सः | அவன் [கான். | प्राद्ववत् | துன்புறுத்தினான். |

स तं यदा परिश्रान्तमिदं जज्ञेऽथ रावणिः । तदैनं मायया बध्वा स्वसैन्यमभितोऽनयत् ॥

| | |
|-------------|-------------------------------|
| अथ | “அப்பொழுது |
| सः | அந்த |
| रावणिः | ராவணனது புதல்வன் |
| तं | அவரை |
| परिश्रान्तं | தன்னறிவு இழந்திருக்கின்றவராய் |
| जज्ञे | கண்டு கொண்டான். |
| यदा | அக்காரணத்தால் |
| नत् | அப்பொழுது |

| | |
|-----------|-------------------------|
| एनं | இவரை |
| मायया | மாயையால் |
| बध्वा | கட்டிக்கைதியாக்கி |
| इदं | இந்த |
| स्वसैन्यं | தனது ஸையத் திற்கு |
| अभितः | எதிரில் |
| अनयत् | கொண்டுவந்து சேர்த்தான். |

तं तु दृष्ट्वा बलात्तेन नीयमानं महारणात् । महेन्द्रममराः सर्वे किं नु स्यादित्यचिन्तयन् ॥
दृश्यते न स मायावी शक्रजित्समितिजयः । विद्यावानपि येनेन्द्रो मायया नीयते बलात् ॥

| | |
|--------------|--------------------------------|
| भमराः | “அமரர்கள் |
| सर्वे | எல்லோரும் |
| तं | அந்த |
| महेन्द्रं तु | இந்திரனையே |
| महारणात् | பெரும்போர்க்களத்திலிருந்து |
| तेन | அவனால் |
| बलात् | வெகுதாய்மாய் |
| नीयमानं | காக்கிக்கொண்டுபோகப்படுகிறவனாக |
| दृष्ट्वा | கண்டு |
| अचिन्तयत् | இம்மாதிரி ஆலோசனை செய்தார்கள் : |
| समितिजयः | போரில் வெற்றிபெற்ற |
| शक्रजित् | இந்திரனை வென்ற |
| सः | ‘அவன் |

| | |
|----------------|---|
| मायावी | { தானிருக்கும்பிடம் ஒருவருக்கும் தெரியாதிருக்கும் மாயையை புரிபவனாய் |
| दृश्यते न | கட்புலனாகாதிருக்க |
| येन | அவனால் [கிறான். |
| मायया | மாயையினால் |
| इन्द्रः | இந்திரன் |
| विद्यावान् अपि | மாயைவித்தைகளில் நியுணையிருந்தும் அவருக்கு மேம்பட்டவனாய் |
| बलात् | எடுத்தாச்செல்லப்படுகிறான். |
| नीयते | என்ன |
| किं | உத்தேசமாய்தான் |
| इति नु | செய்திருக்கிறானோ ? |
| स्यात् | |

एतस्मिन्नन्तरे क्रुद्धाः सर्वे सुरगणास्तदा । रावणं विमुखीकृत्य शरवैर्वाकिरन् ॥३१॥

| | |
|-----------|------------------|
| एतस्मिन् | “இதே |
| अन्तरे | சமயத்தில் |
| सुरगणाः | தேவகணங்கள் |
| सर्वे | எல்லோரும் |
| तदा | ஆகையால் |
| क्रुद्धाः | கோபங்கொண்டவர்கள் |

| | |
|-------------|--------------------------|
| शरवैः | சரமரிகளால் |
| रावणं | ராவணனை |
| विमुखीकृत्य | கொட்டமடங்கூபவனாகச்செய்து |
| अवाकिरन् | பொழிந்தார்கள். |

रावणस्तु समासाद्य आदित्यांश्च वभूस्तथा । न शशाक स सङ्ग्रामे योद्धुं शत्रुभिरर्दितः॥

| | | | |
|-----------|---------------------------------|-----------|-------------------|
| சங்கிராமே | “போரில் | आदित्यान् | ஆதித்யர்களுக்கும் |
| ச: | அந்த | तथा | அவ்வண்ணமே |
| रावणः | ராவணன் | वसून् च | வஸூக்களையும் |
| शत्रुभिः | சத்ருக்களால் | समासाद्य | எதிர்த்து |
| आर्दितः | மிகத்துன்புறுத்தப் பட்டவனாகி | योद्धुं | போர்புரிய |
| तु | இப்பொழுது | न शशाक | முடியவில்லை. |

स तं दृष्ट्वा परिम्लानं प्रहारैर्जर्जरीकृतम् । रावणिः पितरं युद्धेऽदर्शनस्थोऽब्रवीदिदम् ॥

| | | | |
|------------|---------------------------|------------|--|
| ச: | “அந்த | दृष्ट्वा | கண்டு |
| रावणिः | ராவணன் துபுகல்வன் | अदर्शनस्थः | { பிறர் கண்ணுக்கு புலப்படாதவனாக வேயிருந்துகொண்டு |
| युद्धे | போரில் | तं | அவனைப்பார்த்து |
| पितरं | தந்தையை | इदं | பின்கண்டதை |
| प्रहारैः | அடிகளால் | अब्रवीत् | சொன்னான்: |
| जर्जरीकृतं | காயம்பெற்றவனாய் | | |
| परिम्लानं | களைத்துப்போயிருக்கிறவனாய் | | |

आगच्छ तात गच्छामो रणकर्म निर्वर्तताम् । जितं नो विदितं तेऽस्तु स्वस्थो भव गतज्वरः॥

| | | | |
|--------|-------------------------------|------------|----------------------|
| आत | “அப்பா, | निर्वर्तां | நிறுத்தப்பட்டும். |
| नः | நமக்கு | स्वस्थः | ஆயாசம் தீர்த்தவராய் |
| जितं | வெற்றிக்கடைத்திருக்கிறதென்பது | गतज्वरः | மனக்கவலையொழிந்தவராய் |
| ते | தேவரீருடைய | भव | ஆடுக. |
| विदितं | செய்க்கு எட்டியதாய் | गच्छामः | நாம் போவோம். |
| अस्तु | ஆகட்டும். | आगच्छ | கூடவே எழுந்தருளவும். |
| रणकर्म | போர்த்தொழில் | | |

अयं हि सुरसैन्यस्य त्रैलोक्यस्य च यः प्रभुः । स गृहीतो दैवबलान्नमर्दाः सुराः कृताः ॥

| | | | |
|----------------|----------------------|---------|--------------------------------|
| सुरसैन्यस्य | “தேவசேனைக்கும் | गृहीतः | கையில் சிக்கிக்கொண்டுவிட்டான். |
| त्रैलोक्यस्य च | மூன்று லோகத்துக்கும் | हि | ஆகையால் |
| प्रभुः | பிரபு | सुराः | தேவர்கள் |
| यः | எவனோ | भमर्दाः | கொழுப்பு ஒழிந்தவர்களராய் |
| सः | அந்த | कृताः | ஆகிவிட்டார்கள். |
| अयं | இவன் | | |
| दैवबलात् | பாக்கியவிசேஷத்தால் | | |

यथेष्टं भुङ्क्व लोकांस्त्रीन्निगृह्यारातिमोजसा । वृथा किं ते श्रमेणेह युद्धमद्य तु निष्फलम् ॥

अरातिं “சத்ருவை
 ओजसा परாக்கிரமத்தால்
 निगृह्य பிடித்துக்கட்டிவிட்டு
 ते தேவீருக்கு
 श्रमेण தேகபரிசீரமத்தால்
 इह இவ்விஷயத்தில்
 किं என்ன இருக்கிறது ?
 अद्य தற்காலம்

युद्धं போர்புரிதல்
 निष्फलं பயனற்றதாய்
 वृथा அனாவச்யமாகிறது.
 तु ஆதலால்
 वीन् மூன்று
 लोकांश्च உலகங்களை
 यथेष्टं ஸ்வேச்சையாய்
 अद्य ஆளும்.

ततस्ते दैवतगणा निवृत्ता रणकर्मणः । तच्छ्रुत्वा रावणेर्वाक्यं स्वस्थचेता बभूव ह ॥३७॥

रावणे: “ ராவணன் புதல்வ
 னது
 तत् அந்த
 वाक्यं மொழியை
 श्रुत्वा கேட்டு
 तत: அதனால்

स्वस्थचेता: { தன்னிலும் மேம்பட்
 டவன் ஒருவனுமில்
 லை என்கிற எண்ணங்
 கொண்டவனாய்
 बभूव ஆனான்.
 ते அந்த
 दैवतगणा: ह தெய்வகணங்களும்
 रणकर्मणः போர்புரிவது நின்று
 निवृत्ता: அப்புறஞ்சென்றனர்.

अथ रणविगतज्वरः प्रभुर्विजयमवाप्य निशाचराधिपः ।

स्वभवनमथितो जगाम हृष्टः स्वसुतमवाप्य च वाक्यमब्रवीत् ॥ ३८ ॥

अथ “அப்பொழுது
 प्रभुः மஹாபலிஷ்டனாகிய
 निशाचराधिपः ராகூலமன்னன்
 विजयं ஜயத்தை
 अवाप्य பெற்று
 रणविगतज्वरः போரில் கவலையொழிந்
 தவனாய்
 हृष्टः மனத்திருப்தி கொண்
 டவனாய்

स्वभवनं தன் மாளிகையை
 अथितः நோக்கி
 जगाम புறப்பட்டான்.
 स्वसुतं தன் புதல்வனை
 अवाप्य கிட்டி
 वाक्यं च ஒரு வார்த்தையையும்
 अब्रवीत् சொன்னான்.

अतिबलसदृशैः पराक्रमैस्तेषाम् कुलमानविवर्धनं कृतम् ।

यदमरसमविक्रम त्वया वै त्रिदशपतिस्त्रिदशश्च निर्जिताः ॥ ३९ ॥

अमरसमविक्रम “தேவர்க்கு நிகரான
 பராக்கிரமசாலியே!
 त्रिदशपतिः वै தேவேந்திரனும்

त्रिदशाः च தேவர்களும்
 त्वया உன்னால்
 निर्जिताः ஜயிக்கப்பட்டார்கள்.

| | | | |
|-------------|----------------|----------------|--------------------|
| यत् | ஆகையால் | मम | எனது |
| सैः | அந்த | कुलमानविवर्धनं | குலப்புக்கும்பெளரவ |
| अतिवलसदृशैः | என்ற அபானுவ்ய | | மும் அதிகரித்ததாய் |
| | சக்திகளாகிற | | |
| पराक्रमैः | ஸா ஹஸகிருத்யம் | कृतम् | செய்யப்பட்டிருக் |
| | களால் | | கிறது. |

नय रथमधिरोप्य वासवं नगरमितो ब्रज सेनया वृतस्त्वम् ।

अहमपि तव गच्छतो द्रुतं सह सचिवैरनुयामि पृष्ठतः

॥ ४० ॥

| | | | |
|----------|-------------------|---------|-------------------|
| वासवं | “இந்திரனை | द्रुतं | உடனேயே |
| रथं | ரதத்தில் | ब्रज | செல். |
| अधिरोप्य | எற்றிவைத்து | गच्छतः | போய்க்கொண்டிருக் |
| नय | கொண்டுபோய்ச்சேர். | तव | உனது [கின்ற |
| सेनया | சேனையால் | पृष्ठतः | பின்னாலேயே |
| वृतः | புடைசூழப்பட்ட | अहं अपि | நானும் |
| | வனம் | सचिवैः | மந்திரிகளுடன் |
| सह | ஐ | सह | கூடினவனும் |
| इतः | இங்கிருந்து | अनुयामि | பின் வருகின்றேன். |
| नगरं | பட்டணத்திற்கு | | |

अथ स वलवृतः सवाहनस्त्रिदशपतिं परिगृह्य रावणिः ।

स्वभवनमभिगम्य राक्षसो मुदितमना विससर्ज राक्षसान्

॥ ४१ ॥

| | | | |
|----------|----------------|-----------|-------------------|
| सः | “அந்த | परिगृह्य | கட்டிப்பிடித்துக் |
| सवाहनः | வா ஹனங்களுடன் | | கொண்டு |
| | கூடினவனும் | स्वभवनं | தன் மாளிகைக்கு |
| बलवृतः | சேனையால் சூழப் | अभिगम्य | வந்துசேர்ந்து |
| | பட்டவனுமான | मुदितमनाः | திருப்திகொண்ட |
| रावणिः | ராவணனது புதல்வ | अथ | மனத்தனும் |
| | னாகிய | राक्षसान् | அப்பொழுது |
| राक्षसः | அரக்கன் | विससर्ज | அரக்கர்களை |
| विदशपतिं | இந்திரனை | | போகவிடை தந்து |
| | | | அனுப்பிவிட்டான். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे एकोनविंशः सर्गः ॥



त्रिंशः सर्गः—முப்பதாவது ஸர்க்கம் || 30 ||

मेघनादस्य इन्द्रजिज्ञामप्राप्तिः—மேகநாதன் இந்திரஜித் என்ற பெயர் பெறுவது.

जिते महेन्द्रेऽतिबले रावणस्य सुतेन वै । प्रजापतिं सुराः सर्वे गताः परमदुःखिताः ॥ १ ॥

ராவணச्य “இராவணனது
 सुतेन புதல்வனால்
 अतिबले ஒப்புயர்வில்லாத
 வீரனான
 महेन्द्रे वै மஹேந்திரனும்
 जिते அடிமைப்படுத்தப்
 பட்டவள வில்

सुराः தேவர்கள்
 सर्वे எல்லோரும்
 परमदुःखिताः மிக்க துக்கப்படு
 பவர்களாய்
 प्रजापतिं பிரம்மதேவரிடம்
 गताः போய்ச்சேர்ந்தார்கள்.

भगवन्पुरुहूतोऽयं निगृहीतोऽभवद्दरात् । राक्षसेन्द्रं सुरैः सर्वैरवध्यं कृतवानसि ॥ २ ॥

भगवन् “பகவானே !
 सुरैः தேவர்கள்
 सर्वैः எவர்களாலும்
 राक्षसेन्द्रं ராக்ஷஸமன்னனை
 अवध्यं கொல்லமுடியாத
 வண்ணம்

वरात् வரம் தந்ததால்
 कृतवान् असि நீர் செய்தருளினீர்.
 अयं पुरुहूतः இந்த தேவேந்திரன்,
 निगृहीतः { கட்டிப்பிடித்துக்
 கொண்டுபோகப்
 பட்டவனாய்
 अभवत् ஆகிவிட்டான்.

महेश्वरेण पुत्रस्य वा दत्ता दुरात्मनः । किं करोतु सुरेन्द्रस्तं मायया बलवत्तरम् ॥ ३ ॥

महेश्वरेण “மஹேஸ்வரரால்
 दुरात्मनः தூரா த்மாவாகிய
 पुत्रस्य புதல்வனுக்கு
 वराः ஒருவரம்
 दत्ताः தந்தருளப்பட்ட
 விட்டது.

मायया மாயா வித்தையைப்
 பெற்றதால்
 बलवत्तरं { அவனிலும் மேம்பட்ட
 டவனாகச் செய்யப்
 பட்டிருக்கின்ற
 तं அவனை
 किं करोतु என்னசெய்யக்கூடும்?

सुराश्च सर्वे लोकेश न जयन्ति भवद्दरात् । तस्मात्त्वमेव देवेन्द्रं मोचयस्व महाद्युते ॥

अध्यभृति लोकेश स्वविक्रमबलोदितः
 लोकेश “லோகேச !
 सुराः தேவர்கள்
 सर्वे எவர்களும்
 भवद्दरात् च தேவரீரது வரப்ராசா
 தத்தினாலேயே
 न जयन्ति தோற்கடிக்கமுடியா
 திருக்கிறார்கள்.
 महाद्युते எவர்க்கும்மேம்பட்ட
 மஹிமைகொண்ட
 लोकेश लோகேச !

॥ ४ ॥
 तस्मात् अथभृति
 स्वविक्रम- }
 बलोदितः } ஆதலால்
 இதிலிருந்து
 எவ்வபா வசிக்காமாயிரு
 க்கின்ற பரக்கிரமப்
 பெருமையை வெளி
 யிட்டுக்காட்டுகின்
 एवं एव தேவரீரே [றவராகி
 देवेन्द्रं தேவேந்திரனை
 मोचयस्व விடுவித்துத்தந்தருள
 வேண்டும்.

इति विज्ञाप्य भावज्ञाः प्रणिपत्य प्रसाद्य च । प्रजापतिं पुरस्कृत्य ययुर्ऋक्षां सुरास्तदा ॥

| | | | |
|-----------|--|------------------|--|
| तदा | “ ஆப்பொழுது ஸகலவிஷயங்களின் துட்பங்களில் நிபு ணர்களாகிய தேவர்கள் பிரம்மதேவரை புகழ்ந்துபோற்றி நமஸ்கரித்து | इति विज्ञाप्य | இவ்வண்ணமாய் விண்ணப்பஞ்செய்து கிட்டு |
| भावज्ञाः | | पुरस्कृत्य च | { முன்செல்லுகிறவ ராய் அழைத்துக் கொண்டும் |
| सुराः | | ऋक्षां | வங்கைக்கு |
| प्रजापतिं | | ययुः | சென்றார்கள். |
| प्रसाद्य | | | |
| प्रणिपत्य | | | |

तत्र रावणमासाद्य पुत्रभ्रातृभिरावृतम् । अब्रवीद्गणे तिष्ठन्सामपूर्वं प्रजापतिः ॥ ६ ॥

| | | | |
|----------------|--|-----------|------------------------------|
| तत्र | “ ஆவ்விடத்தில் புத்திரர்களாலும் பராதாக்களாலும் | प्रजापतिः | பிரம்மதேவர் |
| पुत्रभ्रातृभिः | | गणे | ஆகாசத்தில் |
| भावृतं | குழப்பட்டவனாயிருக்க | तिष्ठन् | இருந்துகொண்டே |
| रावणं | ராவணனை [கின்ற | सामपूर्वं | நல்வார்த்தையாய் |
| आसाद्य | பார்த்து | अब्रवीत् | இப்படிச்சொல்லியரு ளினார். |

वत्स रावण तुष्टोऽस्मि पुत्रस्य तव संयुगे । अहोऽस्य विक्रमौदार्यं तव तुल्योऽधिकोऽपि वा ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------------|---------------------|--|
| वत्स | “ குழந்தாய்! ராவண! | अस्मि | நான் ஆகிறேன். |
| रावण | | तव | உனக்கும் |
| संयुगे | போலில் | अस्य | இவனுக்கும் |
| तव पुत्रस्य | உனதுபுதல்வனது | तुल्यः | ஏற்றதாயிருக்கிறது. |
| विक्रमौदार्यं | பராக்கிரமத்தின் பெருமையில் | अहो | என்ன ஆச்சர்யம்! |
| तुष्टः | சந்தோஷமடைந்தவ னாக | अधिकः } अपि वा } | உன்னிலும் மேம்பட் டவனென்றே சொல் லலாம். |

जितं हि भवता सर्वं त्रैलोक्यं स्वेन तेजसा । कृता प्रतिज्ञा सफला प्रीतोऽस्मि स्वसुतेन वै ॥

| | | | |
|------------|--------------------------|--------------|---|
| स्वेन | “ எனது | कृता | முன்னமேயேசெய்யப் பட்டதாயுமிருக்கின்ற |
| तेजसा | பராக்கிரமத்தால் | प्रतिज्ञा वै | பிரதிக்கிணையும் |
| त्रैलोक्यं | மூவுலகமும் | स्वसुतेन हि | உன் புதல்வனாலேயே |
| सर्वं | எல்லாமும் | सफला | ஸபலமாகிறது. |
| जितं | ஜயிக்கப்பட்ட தாகிறது. | प्रीतः | மனச்சந்துஷ்ட கொண்டவனாய் |
| भवता | உன்னால் | अस्मि | நானிருக்கிறேன். |

अयं च पुत्रोऽतिबलस्तव रावण वीर्यवान् । जगतीन्द्रजिदित्येव परिख्यातो भविष्यति ॥

रावण " : ராவண !
तव உனது
पुत्रः புதல்வன்
भतिवृत्: ஒப்புயர்வில்லாத
போர்வீரனாயும்
वीर्यवान् மகா சரமர், தீயசரஸி
யாயும்

परियातः பிரசுத்திபெற்று
விட்டான்.
जगति உலகில்
अयं च இவன்
इन्द्रजित् 'இந்திரஜித்தன்'
इति एव என்று
भविष्यति விளங்குவான்.

बलवान्दुर्जयश्चैव भविष्यत्येव राक्षसः । यं समाश्रित्य ते राजन्स्थापितास्त्रिदशा वशे ॥

राजन् " அரசே!
यं எந்த ஒருவனை
समाश्रित्य एव கண்டதுமே
त्रिदशाः च தேவதைகளும்கூட
ते உனது
वशे வசத்தில்

स्थापिताः இருக்கின்றார்களோ,
बलवान् சூரனாகிய [அந்த
राक्षसः அரக்கன்
दुर्जयः एव எவராலும் வெல்வதற்
कரியतकवे
भविष्यति விளங்குவான்.

तन्मुच्यतां महाबाहो महेन्द्रः पाकशासनः । किं चास्य मोक्षणार्थाय प्रयच्छन्तु दिवौकसः ॥

महाबाहो " மஹாபாகுவே!
पाकशासनः பாக்கசாஸனனாகிய
महेन्द्रः மஹேந்திரன்
मुच्यतां ஸ்வதந்திரம் கொடுக்
கப்பட்டும்.
तत् அப்படியாகில்

अस्य இவனது
मोक्षणार्थाय விடுதலையின்
பொருட்டு
दिवौकसः च தேவர்களும்
प्रयच्छन्तु பிரதிசெய்யவேண்டி
किं என்ன ? [யது

अथाब्रवीन्महातेजा इन्द्रजित्समितिञ्जयः । अमरत्वमहं देव वृणे यद्येष मुच्यते ॥ १२ ॥

अथ " அப்பொழுது
महातेजा: மஹாபலிஷ்டனும்
समितिञ्जयः { போரில் எப்பொழுது
மே வெற்றியே பெ
றுகிறவனுமான
इन्द्रजित् இந்திரஜித்தது
देव 'ஹே தேவ!
एष: இவன்
मुच्यते ஸ்வதந்திரம்பெற
வேண்டியது

यदि என்கிறபக்கத்தில்
अमरत्वं என்றைக்கும் மாண
மின்மையொன்றையே
अहं நான்
वृणे வரமாய்ப் பிரார்த்திக்க
கின்றேன்" என்று
अम्रवीव விண்ணப்பம் செய்து
கொண்டான்.

ततोऽब्रवीन्महातेजा मेघनादं प्रजापतिः । नास्ति सर्वांमरत्वं हि कस्यचित्प्राणिनो भुवि ॥
चतुष्पदः पक्षिणश्च भूतानां वा महौजसाम् ॥ १३ ॥

ततः " अक्षற்கு
 महातेजाः மஹாதேஜஸ்வியாகுப
 प्रजापतिः பிரம்மதேவர்தர்,
 मेघनादं மேகநாதனுக்கு
 अववीत् இந் தப்பதிலைச்
 सुवि ' சூழியில்,
 चतुष्यदः நாற்கால்ப் பராணிக்கும்

पक्षिणः பறவைகளுக்கும்
 प्राणिनः च மனிதனுக்கும்
 महोग्नां மஹாகிர்க்கிப்பெற்ற
 श्रुतां वा உபயார்களுக்குத்
 तस्यचित् हि தானுக்கும்
 सशंसरवः எப்போதுமே மான
 न अस्ति மின்மை என்பது
 கிடையாது.

मरणान्तानि सर्वाणि स्थानराणि चराणि च । अपि शुष्कस्य वृक्षस्य पर्णस्य पतनं भवेत् ॥

वृक्षस्य " மரத்தினது
 शुष्कस्य உலர்ந்த
 पर्णस्य अपि சரக்குங்கூட
 पतनं மண்ணில் வீழ்ந்து
 भवेत् மக்கிப்போகுதல்
 உண்டாகிறது.

च वृक्षலால்
 स्थानराणि ஸ்தானவார்களுக்கும்,
 चराणि ஜீவகமங்களுக்கும்
 सर्वाणि எல்லாமும்
 मरणान्तानि மரணத்திற்குள்ளான
 வைகாள்.

श्रुत्वा पितामहेनोक्तमिन्द्रजित्प्रभुणाऽव्ययम् । अथाब्रवीत्स तत्रस्थं मेघनादो महाबलः ॥

श्रूयतां वा भवेत्सिद्धिः शतक्रतुविमोक्षणे
 सः " அந்த
 महाबलः மஹாபலிஷ்டனாகிய
 इन्द्रजित् இந்திரனை ஜயித்த
 मेघनादः மேகநாதன்
 प्रभुणा ஸர்வேச்வரராகிய
 पितामहेन பிரம்மதேவரால்
 उक्तं திருவாய்மலர்ந்தருளி
 श्रुत्वा கேட்டு [யதை
 तत्रस्थं பிரத்யக்ஷமாயிருக்
 கின்ற

॥ १५ ॥
 अथ இப்பொழுது இப்படி
 अत्रोत् விண்ணப்பம் செய்தான்
 शतक्रतुविमोक्षणे 'இந்திரனை விட்டுவிடும்
 सिद्धिः காரியசுத்தி
 भवेत् वा வினாயவேண்டுகொள்
 றால்

अव्ययं { அமோகங்களான வரங்
 களைத்தருபவராகிய
 அவரைப்பார்த்து

श्रूयताम् { என வேண்டுகொளுந்
 குத் திருச்செவ்வாய்
 ப்பிராக.

ममेष्टं नित्यशो ह्यैर्षन्त्रैः संपूज्य पावकम् । सङ्ग्राममवतर्तुं च शत्रुनिर्जयकाङ्क्षिणः ॥
 अश्वयुक्तो रथो महासुचिष्ठेत्तु विभावसोः । तत्स्थस्यामरता स्यान्मे एष मे निश्चयो वरः ॥

शत्रुनिर्जय- } " சத்துருக்களை வெல்ல
 काङ्क्षिणः } வேண்டியவனாய்
 संग्रामं போரை
 अवतर्तुं ஆரம்பிப்பதற்காக

पावकं அக்னிபகவானை
 ह्यैः ஆஹுதிகளாலும்
 मन्त्रैः மந்திரங்களாலும்
 नित्यशः இடையூறின் றி

| | | | |
|-------------|---------------------|---------|----------------------|
| संपूज्य | ஆராதித்துச்செய்யும் | तस्यस्य | அதில்வீற்றிருக்கின்ற |
| मम | எனது | मे | எனக்கு |
| इष्टं | வேள்வியில் | अमरता | மரணமின்மை |
| अश्वयुक्तः | குதிரைகள் பூட்டிய | स्यात् | வேண்டும். |
| रथः | ஒரு ரதம் | एषः च | இதுதான் |
| महं तु | எனக்கென்றே | मे | என்னுடைய |
| उत्तिष्ठेत् | ஆவிர்பவிக்கவேண் | निश्चयः | { தீர்க்காலோசனை செய் |
| | டும். | | { து பிரார்த்திக்கப் |
| विभावसोः | அக்னிபகவானுடைய | वरः | { பட்டதாகிய |
| | தாகிய | | வரம். |

तस्मिन्यद्यसमाप्ते च जप्यहोमे विभावसौ । युध्येयं देव संग्रामे तदा मे स्याद्विनाशनम् ॥

| | | | |
|------------|--------------------|---------------------|----------------------|
| देव | “தேவரே! | तदा | அந்த சந்தர்ப்பத்தில் |
| विभावसौ | அக்கனிபகவானது | संग्रामे | போரில் |
| तस्मिन् | அந்த | युध्येयं | போர்புரியத்தொடந் |
| जप्यहोमे च | } ஐபங்களும் ஆஹூதி | य.दि | ஆகில் [குவேன் |
| असमाप्ते | | } களுமடங்கிய வேள்வி | मे |
| | பரிபூர்ணமாகாதிருக் | विनाशनं | விஞ்சம் |
| | கையில | स्यात् | உண்டாகட்டும். |

सर्वो हि तपसा देव वृणोत्यमरतां पुमान् । विक्रमेण मया त्वेतदमरत्वं प्रवर्तितम् ॥ १९ ॥

| | | | |
|---------|---------------|-------------|--------------------|
| देव | “தேவ! | मया तु | என்னாலோ வென்றால் |
| सर्वः | ஒவ்வொரு | विक्रमेण | பராக்கிரமவிசேஷத் |
| पुमान् | புருஷனும் | | தால் |
| तपसा हि | தவமஹிமையாலேயே | एतत् | அப்படிப்பட்டதாகிய |
| अमरतां | அமரனாகுதலை | अमरत्वं | மரணமின்மை |
| वृणोति | வரமாய்வேண்டு | प्रवर्तितम् | விஞ்ஞாபனம் செய்யப் |
| | கின்றான். | | பட்டிருக்கிறது. |

एवमस्त्विति तं चाह वाक्यं देवः पितामहः । मुक्तयेन्द्रजिता शक्रो गताश्च त्रिदिवं सुराः॥

| | | | |
|--------------|-------------------|------------|----------------------|
| पितामहः देवः | “பிரம்மதேவர் | हन्द्रजिता | இந்திரஜித்தினால் |
| तं | அவனுக்கு | शक्रः च | இந்திரனும் |
| एवं अस्तु | ‘அங்ஙனமேயாகுக’ | च च | தக்கூணமே |
| इति | என்கிற | मुक्तः | ஸவசந்திரம்பெற்று |
| वाक्यं | ஆக்கிணைய | | விளங்கினார். |
| आह | திருவாய்மலர்ந்தரு | सुराः | தேவர்கள் |
| | ளினார். | विदिवं | தேவலோகத்திற்கு |
| | | गताः | போய்ச்சேர்ந்தார்கள். |

एतस्मिन्नन्तरे राम दीनो भ्रष्टामरच्युतिः । इन्द्रश्चिन्तापरीतात्मा ध्यानतत्परतां गतः ॥

ராம "ஸ்ரீராம!
 एतस्मिन् இந்த
 अन्तरे சமயத்தில்
 इन्द्र: இந்திரன்
 भ्रष्टामरच्युति: தெய்வ ஒளிகுன்றி
 யவராய்

चिन्तापरीतात्मा சிந்தைகலங்கியவராய்
 ध्यानतत्परतां } ஆய்விட்டதை நினைத்
 गतः } து நினைத்துச் சிந்திப்
 பவராய்
 दीनः தலைகுனிந்தவராய்
 வருந்தினார்.

तं तु दृष्ट्वा तथाभूतं प्राह देवः प्रजापतिः । शतक्रतो किमु पुरा करोति स सुदुष्कृतम् ॥

प्रजापतिः देवः "பிரம்மதேவர்
 तं அவரை
 तथाभूतं அப்படியிருக்கின்ற
 வராக
 दृष्ट्वा கண்டு
 तु இதுவிஷயத்திலிப்படி
 प्राह ஏசினார்:

शतक्रतो { 'நாறுவேள் கிளர்
 செய்து முடித்த
 இந்திர!
 पुरा முன்பு
 सुदुष्कृतं அடுக்காத செய்கை
 किमु என் [யை
 करोति स செய்தாய்?

अमरेन्द्र मया बहुयः प्रजाः सृष्टास्तदा प्रभो । एकवर्णाः समाभाषा एकरूपाश्च सर्वशः ॥

प्रभो "சக்திவானாகிய
 अमरेन्द्र அமரேந்திரனே!
 तदा ஒருகாலத்தில்
 प्रजाः च மானிடர்களெல்லா
 सर्वशः எல்லாவற்றிலும் [ரும்
 एकरणाः ஓரேவிதமானவர்களை
 முடையவர்களாகவும்

समाभाषा: ஓரேகுரலுடையவர்
 களாகவும்
 एकरूपा: ஓரே உருவங்களுடைய
 யவர்களாகவும்
 बहुयः யதேந்தமாய்
 मया என்னால்
 सृष्टा: சிருஷ்டிக்கப்
 பட்டார்கள்.

तासां नास्ति विशेषो हि दर्शने लक्षणेऽपि वा । ततोऽहमेकाग्रमनास्ताः प्रजाः पर्यचिन्तयाम् ॥

दर्शने वा "உருவமைப்பிலேனும்
 लक्षणे अपि பிறவிக்குணத்தி
 तासां அவர்களில் [லேனும்
 विशेषः हि வித்தியாசமென்பதே
 न अस्ति கிடையாது.
 ततः அதனால்

अहं நான்
 एकाग्रमनाः அதே சிந்தைகொண்
 ता: அந்த [டவனும்
 प्रजा: பிரணைகளைப்பற்றி
 पर्यचिन्तयाम् தீர்க்காலோசனை
 செய்தேன்.

सोऽहं तासां विशेषार्थं स्त्रियमेकां विनिर्ममे । यद्यत्प्रजानां प्रत्यङ्गं विशिष्टं तत्तदुद्धृतम् ॥

तासां "அவர்களுடைய
 विशेषार्थं வித்தியாசத்திற்காக
 एकां स्त्रियं ஒரு பெண்ணை
 स: அந்த
 अहं நான்
 विनिर्ममे படைத்தேன்.
 प्रजानां பிரணைகளுடைய

प्रत्यङ्गं ஒவ்வொரு உறுப்
 பினும்
 विशिष्टं மிக்க உத்தமமாயிருக்
 यत् यत् எது எதுவோ [கிறதும்
 तत् तत् அது அதை
 उद्धृतम् பொறுக்கிஎடுத்து
 அடிமைக்கப்பட்டன.

ततो मया रूपगुणैरहल्या स्त्रीं विनिर्मिता । हलं नामेह वैरूप्यं हल्यं तत्प्रभवं भवेत् ॥२६॥

ततः “अन्तःसन्तर्प्यत्तिल”

मया

என்னால்

रूपगुणैः

{ உருவங்களின் சொள்
நரியகுணங்களைக்
கொண்டு

अहल्या

{ எந்த உருப்பிலும்
எப்படிப்பட்டதாகிய
தோஷமுமில்லாத

स्त्रीं

विनिर्मिता

ஒரு பெண்
சிருஷ்டிக்கப்பட்டாள்.

हह

இவ்விஷயத்தில்

हलं

नाम

वैरूप्यं

तत्प्रभवं

हल्यं

भवेत्

‘ஹலமா’

என்பது

{ ஏதாவது ஒரு உருப்
பில் ஏதாவது ஒரு
குறையிருத்தல்
என்பது

அதிலிருந்து உண்டா
கிறது.

‘அவலக்ஷண’மென்
கிறதாய்

விளங்குகிறது.

यस्मान्न विद्यते हल्यं तेनाहल्येति विद्युता । अहल्येति मया शक्र तस्या नाम प्रकीर्तितम् ॥

शक्र

हल्यं

“இந்திரனே!

அவலக்ஷணமென்

பது

न विद्यते

இல்லை.

यस्मात्

எந்த

तेन

அந்தக்காரணத்தி

னால்

अहल्या

{ எந்த உருப்பிலும்
சொளந்தரியமுடைய
வள்

इति

विद्युता

तस्याः

अहल्या

इति

नाम

मया

प्रकीर्तितम्

என்று

பிரசித்திபெற்று

விளங்கினள்.

அவளுக்கு

“அஹலயை”

என்கிற

பெயர்

என்னால்

நாமகரணம் செய்யப்
பட்டது.

निर्मितायां च देवन्द्र तस्यां नार्यां सुरर्षभ । भविष्यतीति कस्यैषा मम चिन्ता ततोऽभवत् ॥

सुरर्षभ

देवन्द्र

तस्यां नार्यां

निर्मितायां

ततः

एषा

“தேவோத்தமனே!

தேவேந்திரனே!

அந்த சுந்தரி

சிருஷ்டிக்கப்பட்டதும்

அப்போதிலிருந்து

இவள்

कस्य च

भविष्यति

इति

चिन्ता

मम

अभवत्

எவனுக்குத்தான்

வாழ்க்கைப்படுவா

என்கிற [ளோ

சிந்தை

எனக்கு

உண்டாயிற்று.

त्वं तु शक्र तदा नारीं जानीषे मनसा प्रभो । स्थानाधिकतया पत्नी ममैषेति पुरन्दर ॥

प्रभो

पुरन्दर

“சாமர்த்தியசாலியாகிய

சந்தருக்களது நகரங்

கடோக்கைப்பற்றும்

शक्र

இந்திரனே!

त्वं तु

நீயாகவே

स्थानाधिकतया

அமரனுஷ்ய அந்தஸ

கில்

नारीं

तदा

एषा

मम पत्नी इति

मनसा

जानीषे

ஸ்திரபத்தைக்

கொண்டிருந்த அவளை

அப்பொழுது

இவள்

எனது ‘பத்னி’ என்று

மனதில்

நினைத்துவிட்டாய்.

सा मया न्यासभूता तु गौतमस्य महात्मनः । न्यस्ता बहूनि वर्षाणि तेन निर्यातिता च ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|------------|-----------------------|
| सा | “அவள் | तेन च | அவராலும் |
| मया | என்னால் | बहूनि | பல |
| महात्मनः | மஹாத்மாவாள் | वर्षाणि | வருஷங்கள் |
| गौतमस्य | கௌதமருடைய | | பாக்ஷரதையாய்ப் |
| न्यासभूता | { வசத்தில் அடைக்கல | न्यस्ता ह | { பாதுகாக்கப்பட்டவ |
| | { மாக விட்டுவைக்கப் | | { ளாகவே |
| | { பட்டிருந்தாள். | निर्यातिता | { திரும்பிக்கொணர்ந்து |
| तु | அப்படியே | | விடப்பட்டாள். |

ततस्तस्य परिज्ञाय मया स्थैर्यं महामुनेः । ज्ञात्वा तपसि सिद्धिं च पत्न्यर्थं स्पर्शिता तदा ॥

| | | | |
|----------|------------------|------------|---------------------|
| महामुनेः | “மஹாமுனிவரது | सिद्धिं च | தேவரஹிதமாயி |
| स्थैर्यं | சலீரய | ज्ञात्वा | கண்டு [ருந்ததையும் |
| | மனோதிருடத்தை | ततः | அதனால் |
| परिज्ञाय | ஆராய்ந்துணர்ந்து | तदा | அப்பொழுதே |
| तपसि | இந்திரிய நிக்கர | तस्य | அவருக்கே |
| | ஹத்தில் | पत्न्यर्थं | இல்லறத்துணைவியாய் |
| | | मया | என்னால் |
| | | स्पर्शिता | விட்டுவிடப்பட்டாள். |

स तथा सह धर्मात्मा रमते स महामुनिः । आसन्निराशा देवास्तु गौतमे दत्तया तथा ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|------------|--------------------|
| सः धर्मात्मा | “அந்த தருமாத்மா | देवाः | தேவர்கள் |
| | வாகிய | गौतमे | கௌதமரிடத்தில் |
| महामुनिः | மஹாமுனி | दत्तया तथा | ஓப்பித்துவிடப்பட்ட |
| तथा सह | அவளுடன்கூட | | அவளிடத்தில் |
| रमते स | சுகமாய் காலம்கழித் | निराशाः तु | ஆசை ஒழிந்தவர்களா |
| | துவந்தார். | आसन् | இருந்தார்கள். [கவே |

संक्रुद्धस्त्वं हि धर्मात्मन्गत्वा तस्याश्रमं मुनेः । दृष्ट्वांश्च तदा तां स्त्रीं दीप्तामग्निशिखामिव ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|---------------|-----------------|
| धर्मात्मन् | “பிறவிக்குணத்தில் து | तदा | அக்காலத்தில் |
| | ணிவுகொண்டவனே ! | दीप्तां | ஜவலித்துக்கொண் |
| त्वं हि | நீயே | | டிருக்கின்ற |
| संक्रुद्धः | மிக்ககோபங்கொண்ட | अग्निशिखां | அக்னிஜ்வாலையை |
| | வனாகி | इव | போலிருக்கின்ற |
| तस्य | அந்த | तां स्त्रीं च | அந்த பெண்ணையும் |
| मुनेः | முனிவரது | | |
| आश्रमं गत्वा | ஆசிரமத்திற்குச் | दृष्ट्वाञ्च | கண்ணுற்றாய். |
| | சென்று | | |

सा त्वया धर्षिता शक्र कामार्तेन समन्युना । दृष्टुस्त्वं च तदा तेन ह्याश्रमे परमर्षिणा ॥

शक्र “இந்திரனே!
कामार्तेन कामவசப்பட்டவனாய்
समन्युना கோபம் மேலிட்டிருக்கின்ற

परमर्षिणा பரமரிஷியாகிய
तेन அவரால்
आश्रमे ஆசிராமத்தில்
तदा हि அக்காலத்திலேயே
एवं च நீயும்
दृष्टः நேரில் பார்க்கப்பட்டாய்.

ततः क्रुद्धेन तेनासि शप्तः परमतेजसा । गतोऽसि येन देवेन्द्र दशभागविपर्ययम् ॥३५॥

ततः “அவ்விடத்திலேயே
परमतेजसा பாம தேஜோவானாகிய
तेन அவரால்
क्रुद्धेन கோபமுட்டப்பட்டவராய்

देवेन्द्र தேவேந்திரனே!
येन அதனால்
दशभागविपर्ययं விதிப்பயனாய் விளையும் ஆபத்தை

शप्तः சபிக்கப்பட்டவரை
असि ஆனாய்.

गतः அனுபவிப்பவரை
असि ஆனாய்.

यस्मान्मे धर्षिता पत्नी त्वया वासव निर्भयम् । तस्माच्चं समरे राजञ्छत्रुहस्तं गमिष्यसि ॥

वासव “இந்திரனே!
त्वया உன்னால்
मे எனது
पत्नी பத்தினி
निर्भयं நெஞ்சமுத்தமாய்
धर्षिता கற்பழிக்கப்பட்டாள்.

राजन् அரசே!
एवं நீ
समरे போரில்
शत्रुहस्तं { சத்ரு கையில் ஸ்வதர்
திரமிழந்து பிடிபட்ட
டுக்கிடப்பதை

यस्मात् तस्मात् ஆகையால்

गमिष्यसि அனுபவிப்பாய்.

अयं तु भावो दुर्बुद्धे यस्त्वयेह प्रवर्तितः । मानुषेष्वपि लोकेषु भविष्यति न संशयः ॥

दुर्बुद्धे “தர்ப்புத்தியுடையாய்!

तु இப்போதிலிருந்து

भावः यः कामப்பைத்தியம் என்பது எதுவோ அது
इह இப்பொழுது
त्वया உன்னால்
प्रवर्तितः முதலில் கொண்டாடப்பட்டிருக்கிறது.

अपि மனிதர்களிடத்திலேயும்
भविष्यति விளங்கப்போகிறது.
संशयः न இதற்கையமில்லை.

तत्रार्थं तस्य यः कर्ता स्वयर्थं निपतिस्यति । न च ते स्थावरं स्थानं भविष्यति पुरन्दर ॥

पुरन्दर “இந்திரனே!

त्वयि अर्थं உன்னிடத்தில்

तत्र அதில் (பாபத்தில்)

पातियुमाक பாதியுமாக

यः कर्ता எவன் கர்த்தாவோ,

निपतिस्यति வந்தடையக்கடவது.

तस्य अर्थं அவனுக்குப்பாதியும்

ते स्थानं च உனது பதவியும்
स्थावरं நிலையாய்
न भविष्यति இருக்கப்போவதில்லை.

यश्च यश्च सुरेन्द्रः स्याद्ध्रुवः स न भविष्यति ।
एष शापो मया मुक्त इत्यसौ त्वां तदाऽब्रवीत्

॥ ३९ ॥

ய: ய: “எவனெருவன்
சுரேந்தர்: தேவன் திருவாய்
ச்யாத் ஆகிருவே
ச: ச அவனும்
஧ுவ: அழிவற்றவனாய்
ந பவிஷ்யதி இருக்கமாட்டான்.
ஈப: ஶாப: இர்தச் சாபம்

மயா ச முக்த: என்னாலேயே இடப்
஁சௌ இவர் [பட்டது.
ஈவ் உன்னைப்பார்த்து
ததா அக்காலத்தில்
ஈதி மேற்கண்டவண்
ணமாய்
஁வவீர் திருவாய்மலர்ந்தரு
ளிணர்.

तां तु भार्या स निर्भर्त्य सोऽब्रवीत्सुमहातपाः । दुर्विनीते विनिधंस ममाश्रमसमीपतः ॥

சுமஹாஶா: “தபஸ்விகளில்
முதன்மைபராய்
ச: பெயர்பெற்றவரான
ச: அவர்
தா் அந்த
ஶாரீர் பத்தனியைப்பார்த்து
து இவ்விஷயத்தில்
நிர்மத்ய் இகழ்ந்துபேசி

஁வ்வீர் இப்படி விதித்தருளி
ணர்:
துர்வினீதே ‘துஷ்கிருத்தம் செய்த
மம எனது [வளே!
஁஁ரமசமீபத: ஆசராமத்திற்குச்
சமீபத்தில்
விநி஁ஸ { உயிரிழந்து மண்ணில்
புதைந்துகிடைப்
பாயாக.

रूपयौवनसम्पन्ना यस्यात्त्वमनवस्थिता । तस्माद्भूपवती लोके न त्वमेका भविष्यसि ॥४१॥

ஈவ் “நீ ஒருவளே
ரூபயௌவனசம்பந்நா { அழகும் யௌவன
முடும் வாய்ந்தவளாயி
ருக்கின்றாய்
யச்யாத் என்கிற காரணத்
தாலேயே
஁நவஸ்திதா இக்கேடு வினைந்தது.

தச்யாத் ஆனதால்
லுக்கே உலகில்
ரூபவதி ரூபவதி
ஈவ் நீ
ஈகா ஒருவள்தான் என்
பது
ந பவிஷ்யசி வேண்டாம்.

रूपं च ते प्रजाः सर्वा गमिष्यन्ति न संशयः । यत्तदेकं समाश्रित्य विभ्रमोऽयमुपास्थितः ॥

தத் “அந்த
ஈக் அத்தவிதீயமாயிருப்ப
தொன்றை
சமா஁ரஸ்ய ச கொண்டே
஁ய் அந்த
வி஁ரம: காமவேட்கையால்
மனம் சலித்துவிடுதல்
஁பஸ்தித: சம்பவித்தது.

யத் ஆகையால்
புர஁: ப்ர஁ஜைகள்
சர்வா: பலர்
தே உனது
ரூபம் ரூபத்தை
஁மிஷ்யந்தி பெற்று விளங்குவார்
கள்.
சன்சய: ந இதற்கையமில்லை.

तदाप्रभृति भूयिष्ठं प्रजा रूपसमन्विताः । सा तं प्रसादयामास महर्षिं गौतमं तदा ॥४३॥

तदाप्रभृति
रूपसमन्विताः
भूयिष्ठं
प्रजाः
सा

“அதுமுதலாக
சௌந்தர்யமுள்ள
பெண்கள்
ஏராளமாய்
மானிடர்களானார்கள்.
அவள்

तदा
तं
गौतमं महर्षिं
प्रसादयामास

அப்பொழுது
அந்த
கௌதமமஹர்ஷியை
அடிபணிந்து வேண்டி
கொண்டாள்:

अज्ञानाद्धर्षिता नाथ स्वद्रूपेण दिवौकसा । न कामकाराद्विप्रर्षे प्रसादं कर्तुमर्हसि ॥ ४४ ॥

नाथ
विप्रर्षे
कामकारात्
न
अज्ञानात्

“நாதரே!
பிரம்மரிஷியே!
{ தனக்குத்தானே வி
ரும்பியதாய் (ஸ்வேச்
சாபூர்வமாய்)
விளையவில்லை.
மூடந்தனத்தால்
(பத்திஹீனத்தால்)

स्वद्रूपेण
दिवौकसा
धर्षिता
प्रसादं
कर्तुं
अर्हसि

தேவீரது ரூபம்
கொண்டிருந்த
தேவனால்
புத்திசிகழிவிட்டேன்.
அனுக்கிரஹத்தை
புரிய
தயைசெய்த
வேண்டும்.

अहल्यया त्वेवमुक्तः प्रत्युवाच स गौतमः । उत्पत्स्यति महातेजा इक्ष्वाकूणां महारथः ॥

अहल्यया
तु
एवं
उक्तः
सः
गौतमः

“அஹல்யையால்
இதுவிஷயத்தில்
மேற்கண்டவண்
ணமாய்
பிரார்த்திக்கப்பட்ட
அந்த
கௌதமர்

प्रत्युवाच
इक्ष्वाकूणां
महातेजाः
महारथः
उत्पत्स्यति

இந்தப் பதிலைத் திரு
வாய்மலர்ந்தருளிணர்:
‘இக்ஷ்வாகுகுலத்தில்
அமானுஷ்யசக்தி
படைத்தவராய்
தனிப்போர்வீரர்
ஒருவர்
அவதரிக்கப்
போகின்றார்.

रामो नाम श्रुतो लोके वनं चाप्युपयास्यति । ब्राह्मणार्थे महाबाहुर्विष्णुर्मानुषविग्रहः ॥

लोके
रामः
नाम
श्रुतः
महाबाहुः
विष्णुः अपि
मानुषविग्रहः

“மாளிடலகில்
ஸ்ரீராமனென்ற
பெயரால்
கொண்டாடப்படுவார்.
மஹாபாஹுவான
விஷ்ணுபகவானே
மானிடரூபம்
கொண்டவர்.

ब्राह्मणार्थे च
वनं
उपयास्यति

{ தெய்வ ஆராதனை
செய்பவர்களுக்கு
ஸஹாயம் பண்ணு
கிறதற்காகவே
வனத்திற்கு
எழுந்தருளப்
போகின்றார்.

तं द्रक्ष्यसि यदा भद्रे ततः पूता भविष्यसि । स हि पावयितुं शक्तस्त्वया यदुष्कृतं कृतम् ॥

भद्रे “அந்தக்கராணசுத்
தியற்றவளே !
வ்யா உன்னால்
கூதம் செய்யப்பட்டிருக்
துஷ்கூதம் பாவம் [கின்ற
யத் எதுவோ அதை
பாவநிலிர்த்தி செய்
கிறதற்கு

सः अवर्
द्रि उरुवरौ.
तं अवसा
यदा एत्तपोमुता
द्रक्ष्यसि शेषेक्कப்பெறுகிற
யோ

शक्तः इयन्तवर्,

ततः अप्पொழுதே
पूता पाபமொழிந்தவளாய்
भविष्यसि ஆகுவாய்.

तस्यातिथ्यं च कृत्वा वै मत्समीपं गमिष्यसि । वत्स्यसि त्वं मया सार्धं तदा हि वरवर्णिनि ॥

वरवर्णिनि “ஸ்மீயாய்ப் பிறந்த
வளே !

कृत्वा हि செய்தபின்னரை
मत्समीपं என்னிடத்திற்கு
ग म्यसि வந்துசேரலாம்.
च அதுவுமன்றி
मया सार्धं वै என்னோடுகூடவேயும்
वत्स्यसि வாழலாம்’.

एवं நீ
तदा அக்கரலத்தில்
वस्य அவருக்கு
आतिथ्यं அதிதிகூஜை

एवमुक्त्वा स विप्रर्विराजगाम स्वमाश्रमम् । ततश्चचार सुमहत्सा पत्नी ब्रह्मवादिनः ॥४९॥

सः विप्रर्षिः “அந்தப் பிரம்மரிஷி
एवं இப்படி
उत्तवा சபித்துவிட்டு
स्वं தனது
आश्रमं ஆசிரமத்திற்குள்
आजगाम வந்துசேர்ந்தார்.
ब्रह्मवादिनः வேதவித்தனுடைய

पत्नी மனைவியாகிய
सा அவள்
ततः அப்போதிலிருந்து
सुमहत् மஹத்தான தெய்வக்
चचार ஞானமொன்றையே
சர்வமுமாய்க்கொண்டு
காலங்கழித்தாள்.

शापोत्सर्गाद्धि तस्येदं मुनेः सर्वगुणस्थितम् । तत्सर त्वं महाबाहो दुष्कृतं यच्चया कृतम् ॥

तेन त्वं ग्रहणं शत्रोर्योतो नान्येन वासव
महाबाहो “மஹாபாஹோ !
वासव இந்நிரனே !
दुष्कृतं பாவம்
व्या कृतं உன்னால் செய்யப்
यत् एतவோ [பட்டது
तत् அதை
एवं हि நீயே
स्वर நினைத்துப்பார்.
तस्य அந்த
मुनेः முனிவருடைய
शापोत्सर्गात् சாபமிட்டதால்

॥ ५० ॥
इदं सर्वं இந்த எல்லாமும்
उपस्थितं நேர்ந்தது.
तेन அதனால்
एवं நீ
शत्रोः சத்ருவினுடைய
ग्रहणं { கையிலகப்பட்டுக்
कोरुण्डो एवंवतर्त्तिर கொண்டு எவ்வதர்त्तिர்
मिधुन्तதை
यातः அனுபவித்தாய்.
अन्येन வேறு எந்த ஒருகார
न இல்லை. [ணத்தாலும்

शीघ्रं वै यज यज्ञं त्वं वैष्णवं सुसमाहितः । पावितस्नेन यज्ञेन यास्यसे त्रिदिवं ततः ॥
 त्वं “ ६
 शीघ्रं वै இப்பொழுதே
 वैष्णवं வைஷ்ணவமென்கிற
 யज्ञं யாகத்தை
 யஜ புரி.
 த்ன அர்சு
 யज्ञேன யாகத்தால்
 पुत्रश्च तव देवेन्द्र न विनष्टो महारणे । नीतः सन्निहितश्चैव आर्यकेण महोदधौ ॥ ५२ ॥
 देवेन्द्र “ தேவேந்திரனே!
 तव உனது
 पुत्रः च புத்திரனும்
 महारणे பெரும்போரில்
 न विनष्टः மாளவில்லை.
 आर्यकेण एव मातामஹனுலேயே

पावितः பண்ணின பாபமொழிந்தவனாய்
 ततः அதிலிருந்து
 सुसमाहितः சிந்தைநோய் தீர்த்தவனாய்
 विदिवं ஸ்வர்க்கத்திற்கு
 यास्यसे போய்ச்சேருவாய்.
 नीतः தூக்கிக்கொண்டு
 सन्निहितः போகப்பட்டவனாய்
 महोदधौ च கடலிலேயே
 सन्निहितः சுகமே வாழ்ந்து கொண்டிருக்கிறான்.’

एतच्छ्रुत्वा महेन्द्रस्तु यज्ञमिष्ट्वा च वैष्णवम् । पुनस्त्रिदिवमाक्रामदन्वशासच्च देवराट् ॥ ५३ ॥

महेन्द्रः “ தேவேந்திரன்
 एतत् இதற்கு
 श्रुत्वा செவிசாய்த்து
 तु தக்கூண்டுமே
 वैष्णवं வைஷ்ணவமென்கிற
 यज्ञं च इष्ट्वा யாகத்தைச் செய்து
 पुनः மறுபடியும்
 विदिवं தேவருலகத்திற்கு
 आक्रामत् வந்துசேர்ந்தான்.
 देवराट् च தேவராஜ ஆதிபத்யத்தையும்
 अन्वशासत् செலுத்திவந்தான்.

एतदिन्द्रजितो नाम बलं यत्कीर्तितं मया । निर्जितस्तेन देवेन्द्रः प्राणिनोऽन्ये तु किं पुनः ॥

इन्द्रजितः “ இந்திரஜித்து
 नाम என்பவனுடைய
 बलं சக்தி
 यत् எதுவோ
 एतत् அது
 मया என்னால்
 कीर्तितं சொல்லப்பட்டது.
 तेन அவனால்
 देवेन्द्रः தேவேந்திரன்
 निर्जितः तु பிடிக்கப்பட்டானாயின்
 अन्ये சாதாரண
 प्राणिनः மானிடர்களென்றால்
 किं पुनः சேட்கவேண்டுமோ? ”

आश्चर्यमिति रामश्च लक्ष्मणश्चाब्रवीत्तदा । अगस्त्यवचनं श्रुत्वा वानरा राक्षसास्तदा ॥

तदा அக்காலத்தில்
 वानराः वானரர்களும்
 राक्षसाः च இராக்ஷஸர்களும்
 लक्ष्मणः च இலக்ஷ்மணரும்
 अगस्त्यवचनं அகஸ்த்யரது வசனத்
 श्रुत्वा கேட்டார்கள். [தை
 रामः ஸ்ரீராமர்
 तदा அப்படியிருந்தமை யால்
 आश्चर्यं ‘ஆச்சர்யம்தான்’
 इति என்று
 अब्रवीत् கிராமசக்தார்.

विभीषणस्तु रामस्य पार्श्वस्थो वाक्यमब्रवीन् । आश्वर्यं स्मारितोऽस्म्यद्य यत्तद्दृष्टं पुरातनम् ॥

சு அப்பொழுது
 रामस्य ஸ்ரீராமரானு
 पार्श्वस्थः பக்கத்திலிருந்த
 विभीषणः விபிஷணர்
 पुरातनं 'பழையகாலத்தில்
 यत् எனது
 दृष्टं பிரத்யக்ஷத்தில் பார்க்க
 कर्तव्यं கப்பட்டிருந்ததோ

तत् अश्वर्यं अद्य स्मारितः
 तत् அந்த
 आश्वर्यं அபூர்வசங்கதியை
 अद्य இப்பொழுது
 स्मारितः நினைப்பூட்டப்பட்டவை
 अस्मि अश्वर्यं
 वाक्यं अब्रवीत् 'ஆனேன்' என்கிற
 சொல்லைச்சொன்னார்.

अगस्त्यं त्वब्रवीद्रामः सत्यमेतच्छ्रुतं च मे

रामः ஸ்ரீராமர்
 अगस्त्यं அகஸ்தியரைப்
 त्वब्रवीत् பார்த்து
 सत्यं இப்படித்திருவாய்
 मलं च कुरुनिनोः மலர்ந்தருநினார்;
 एतत् "இந்த

॥ ५७ ॥
 सत्यं च ഭേദമുപുர்വമായിരുക
 मे கின்ற நியமனமும்
 तु எனக்கு
 अतस् इत्थं இப்பொழுது
 गतस् விளக்கச்சொல்லியரு
 णं गतस् "என்பட்டது."

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे त्रिंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 21984



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 1260

एकविंशः सर्गः—முப்பத்தொன்றாவது ஸர்க்கம். ॥ 31 ॥

रावणनर्मेदावगाहः—இராவணன் நர்மதயில் ஸ்நானம் பண்ணுவது.

ततो रामो महातेजा विस्मयात्पुनरेव हि । उवाच प्रणतो वाक्यमगस्त्यमुपिसत्तमम् ॥१॥

महातेजाः மஹாதேஜோவா
 रामः ஸ்ரீராமர் [அகைய
 प्रणतः हि மஹாசாமர்த்திய
 ततः ஆகையால் [சாலியும்,
 विस्मयात् { சொல்லிய விஷயத்தில்
 ஒரு சந்தேகமிருந்த
 लयात् } னையால்

अपिसत्तमं நிஷ்சரேஷ்டராக்ய
 अगस्त्यं அகஸ்தியரை
 पुनः एव மறுபடியும்
 वाक्यं இந்த விஷயத்தைப்
 उवाच பற்றி
 इत्थं வினாவினார்:

भगवन्नाक्षसः क्रूरो यदाप्रभृति मेदिनीम् । पर्यटत्किं तदा लोकाः शून्या आसन्दिज्ञोत्तमम् ॥१॥

द्विज्ञोत्तमं "சிராம்மணைத்தம
 भगवन् ஸ்வாமியே!
 क्रूरः கொடியனை
 राक्षसः ஆரக்கன்
 मेदिनीं பூமியில்
 पर्यटन् சுற்றித்திரிந்தது

यदाप्रभृति எனமுதலோ
 तदा அக்காலத்தில்
 लोकाः பிரஜைகள் எல்லோரு
 शून्याः திடனற்றவர்களாய்
 आसन् இருந்தார்களா
 किम् என்ன?

राजा वा राजमात्रो वा किं तदा नात्र कश्चन । धर्षणं यत्र न प्राप्तो रावणो राक्षसेश्वरः ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|---------------|----------------|
| राक्षसेश्वरः | “ राक्षஸமன்னனாகிய | तदा | அக்காலத்தில் |
| रावणः | ராவணன் | राजा | அரசனாவது |
| धर्षणं वा | தோல்வியென்ப | राज मात्रः वा | அரசனுக்கிடானவ |
| | தையே | | னாவது |
| न प्राप्तः | அடையவில்லை. | अव | இல்விஷயத்தில் |
| यत्र | என்றால் | कश्चन | ஒருவனும் |
| | | न किम् | இல்லையா என்ன ? |

उताहो हीनवीर्यास्ते बभूवुः पृथिवीक्षितः । बहिष्कृता वराश्वैव बहवो निर्जिता नृपाः ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|---------------|-------------------|
| ते | “ அந்த | बभूवुः | ஆனார்கள். |
| पृथिवीक्षितः | பூபாலர்கள் | च | என்றால் |
| बहवः | பலரும் | अहो | என்ன ஆச்சர்யம் ? |
| हीनवीर्याः | வீர்யமற்றவர்களாய் | बहिष्कृताः | இவர்களின்றி |
| निर्जिताः | வெல்லப்பட்டவர் | वराः नृपाः एव | மேம்பட்ட அரசர்களே |
| | களாய் | उत | இல்லையா என்ன ? |

राघवस्य वचः श्रुत्वा ह्यगस्त्यो भगवानृषिः । उवाच रामं प्रहसन्पितामह इश्वरम् ॥ ५ ॥

| | | | |
|---------------|---------------|---------|--------------------|
| भगवान् | மஹாபூஜ்யராகிய | ईश्वरं | ஈஸ்வரனிடம் |
| भगस्त्यः ऋषिः | அகஸ்த்யரிஷி | पितामहः | பிரம்மதேவர் |
| राघवस्य | ஸ்ரீராகவரது | इव | எவ்வண்ணமோ, |
| वचः | திருவாக்கை | | அவ்வண்ணமே |
| श्रुत्वा हि | கேட்டதும் | रामं | ஸ்ரீராமஸன்னிதியில் |
| प्रहसन् | அதி உதஸாஹம் | उवाच | இப்படித்திருவாய் |
| | கொண்டவராய் | | மலர்ந்தருளினார் : |

इत्येवं बाधमानस्तु पार्थिवान्पार्थिवर्षभ । चचार रावणो राम पृथिवीं पृथिवीपते ॥ ६ ॥

| | | | |
|-------------|---------------|------------|---------------------|
| पार्थिवर्षभ | “ இராஜோத்தம ! | इति एवं | இவ்வண்ணமே |
| पृथिवीपते | பூபதியே ! | बाधमानः तु | பிடித்துக்கொண்டே |
| राम | ஸ்ரீராம ! | पृथिवीं | பூமியில் |
| रावणः | இராவணன் | चचार | சுற்றித்திரிந்தான். |
| पार्थिवान् | மன்னர்களை | | |

ततो माहिष्मतीं नाम पुरीं स्वर्गपुरीप्रभाम् । संप्राप्तो यत्र सान्निध्यं परमं वसुरेतसः ॥ ७ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------------|-------------------|
| यत्र | “ எவ்விடத்தில் | स्वर्गपुरीप्रभां | அமராவதிபோன்ற |
| वसुरेतसः | அக்னிபகவானுடைய | | ஒளிகொண்ட |
| परमं | சர்வோத்திருஷ்ட | माहिष्मतीं | { (ஹைஹேயமன்னவர் |
| | மான | | களுக்கு ராஜதானி |
| सान्निध्यं | சான்றித்யம்பெற்று | नाम | என்கிற |
| | விளங்குகிறதோ | पुरीं | பட்டணத்திற்கு |
| वतः | அதனால் | संप्राप्तः | பெய்ச்சேர்ந்தான். |

तुल्य आसीन्नृपस्तत्र प्रभावाद्दसुरेतसः । अर्जुनो नाम यस्याग्निः शरकुण्डेशयः सदा ॥८॥

तत्र “அவ்விடத்தில்
சதா எக்காலத்திலும்
அग्னி: அக்னிபகவான்
शरकुण्डेशयः { பாணங்களால் செய்
யப்பட்ட ஒரு வேதி
கையில் திருப்பள்ளி
கொண்டு விளங்கி
னார்.

प्रभावात् பிரபாவத்தால்
यस्य எந்த அந்த
वसुरेतसः அக்னிபகவானுக்கு
तुल्यः சமமானராகிய
अर्जुनः அர்ஜுனன்
नाम எனப்பெயர்கொண்ட
नृपः ஒரு மன்னர்
आसीत् இருந்தார்.

तमेव दिवसं तोय हैहयाधिपतिर्वली । अर्जुनो नर्मदां रन्तुं गतः स्त्रीभिः सहैश्वरः ॥ ९ ॥

तं एव “அதே
दिवसं தினத்தில்
सः அந்த
बली பலிஷ்டனும்
हैहयाधिपतिः ஹேஹயாதேசாதிபதி
யுமான

अर्जुनः ईश्वरः च அர்ஜுனமன்னரும்
स्त्रीभिः सह ஸ்த்ரீகளுடன் கூட
रन्तुं உல்லாசமாய்க் காலம்
कप्लिक्क
नर्मदां நர்மதா நதிக்கு
गतः போயிருந்தார்.

रावणो राक्षसेन्द्रस्तु तस्मिन्प्राप्य दिने पुरीम् । अपश्यन्हैहयेशं तु तस्यामात्यानपृच्छत् ॥

राक्षसेन्द्रः “இராசுதேவமன்னரை
கிய
रावणः இராவணன்
तस्मिन् அந்த
दिने தினத்தில்
पुरीं பட்டணத்திற்கு
प्राप्य வந்துசேர்ந்து

तु அச்சமயத்தில்
हैहयेशं ஹேஹயமன்னரை
अपश्यन् காணுது
तस्य அவனது
अमात्यान् மந்திரிகளை
तु இதுவிஷயத்தில்
अपृच्छत् விசாரித்தான்.

कार्जुनो नृपतिः शीघ्रं सम्यगाख्यातुमर्हथ । रावणोऽहमनुप्राप्तो युद्धेऽसुनृवरेण ह ॥

ममागमनमव्यग्रैर्युष्माभिः सन्निवेद्यताम्
अर्जुनः नृपतिः “அர்ஜுனமன்னன்
क एங்குபோயிருக்கி
றான் ?
शीघ्रं விரைவில்
सम्यक् உள்ளபடி
आख्यातुं பதிவுரைக்க
अर्हथ வேண்டும்.
नृप्रेण மன்னனோடு
युद्धेऽसु: போர்புரிய எண்ணக்
கொண்டவனாய்

॥ ११ ॥
रावणः ராவணன் என்கிற
अहं ह நானே
अनुप्राप्तः இங்கே வந்திருக்கிறேன்.
मम எனது
आगमनं வரவானது
अव्यग्रैः கவனமாய் வேலை
पुनिकின்ற
युष्माभिः உங்களால்
सन्निवेद्यताम् உரைசெய்துவிடப்
பட்டும்.

इत्येवं रावणेनोक्ता येऽमात्याः सुविपश्चितः । अन्नवन्नाक्षसपतिपसान्निध्यं महीपतेः ॥१२॥

रावणेन “இராவணனால்
इति एवं இவ்வண்ணமாய்
उक्ताः சொல்லப்பட்டதற்கு
செவிசாய்த்த
सुविपश्चितः மஹாநானவான்
களாகிய
अमात्याः மந்திரிகள்

ये एवाकंशो, अवर्कंशं
महीपतेः सक्किरवर्त्तियिन्
असान्निध्यं ஊரிலில்லாத சமா
சாரத்தை
राक्षसपति अपसृत्य
अनुवन् தெரிவித்துவிட்டார்
கள்.

श्रुत्वा विश्रवसः पुत्रः पौराणापरजुनं गतम् । अपसृत्यागतो विन्ध्यं हिमवत्सन्निभं गिरिम् ॥

विश्रवसः “விசுவசின்
पुत्रः புதல்வன்
पौराणा நகரவாஸிகளிட
மிருந்து
अजुनं அர்ஜுனனை
गतं வெளியேயேயோயிருப்
பவகை

श्रुत्वा அறிந்துகொண்டு
अपसृत्य அவ்விடம்விட்டுப்
புறப்பட்டு
हिमवत्सन्निभं இமயமலைபோன்ற
विन्ध्यं விந்திய [தாகிய
गिरिं பர்வதத்திற்கு
आगतः வந்துசேர்ந்தான்.

स तमभ्रमिवाविष्टसुद्धान्तमिव मेदिनीम् । अपश्यद्रावणो विन्ध्यमालिखन्तमिवाम्बरम् ॥

सः रावणः “அந்த இராவணன்
अभ्रं इव மேகத்தைப்போன்ற
தாய்
आविष्टं பரவியிருக்கிறதும்
मेदिनी பூமியை
सुद्धान्तं விட்டு உயரக்கிளம்
புவது

इव போலிருக்கிறதும்
अम्बरं ஆகாயத்தை
आलिखन्तं எட்டி உராய்வது
इव போலிருக்கிறதமான
तं विन्ध्यं அந்த விந்திய்பர்வத
अपश्यत् பார்த்தான். [தை

सहस्रशिखरोपेतं सिंहाध्युषितकन्दरम् । प्रपातपतितैः शीतैः साट्टहासमिवाम्बुभिः ॥१५॥

देवदानवगन्धर्वैः साप्सरोगणकिन्नरैः । स्वःस्त्रीभिः क्रीडमानैश्च स्वर्गभूतं महोच्छ्रयम् ॥
नदीभिः स्यन्दमानाभिः स्फाटिकप्रतिभं जलम् । फणाभिश्चलजिह्वाभिरन्तमिव विष्टितम् ॥
उत्क्रामन्तं द्रीवन्तं हिमवत्सन्निभं गिरिम् । पश्यमानस्ततो विन्ध्यं रावणो नर्मदां ययौ ॥
चलोपरजलां पुण्यां पश्चिमोदधिगामिनीम्

रावणः இராவணன்
ततः அப்போது
सहस्रशिलरोपेतं அனேக கொடுமுடி
களையுடையதும்
सिंहाध्युषितकन्दरं சிங்கங்கள் வசிக்கும்
குகைகளையுடையதும்
प्रपातपतितैः மேலிருந்து ஓடிவரு
கின்ற

॥ १८ ॥
शीतैः குளிர்ந்த
अम्बुभिः நீர்த்தாரைகளால்
इव எங்கும்
साट्टहासं பேரொலியுடையதும்
स्वःस्त्रीभिः தனது நாயகிகளுடன்
क्रीडमानैः விளையாட்டில் காலம்
கழிக்கின்ற

| | | | |
|-------------------------|--|----------------------------|--|
| देवदानव- गन्धर्वः | தேவர்கள், தானவர்கள், கந்தர்வர்கள் இவர்களாலும் | अनन्तं इव उक्तामन्तं | ஆதிசேஷனை போலிருக்கிறதும் உயரக்கிளம்பியிருப்பதும் |
| सागरोगणकिन्नरैः | அப்ஸாஸ்தர் கனோடுகூடிய கிண்ணர்களாலும் | दरीवन्तं | கணவாய்கள் உள்ளதும் |
| महोच्छ्रायं | மிகப்பெருமை பெற்று விளங்கியதும் | हिमवसन्निभं च | இமயமலைபோன்றது மாகிய |
| स्वर्गभूतं | ஸ்வர்க்கம்போலிருக்கிறதும் | विन्ध्यं गिरिं | விந்தியமலையை |
| स्फाटिकप्रसिप्तं जलं | பளிங்குக்கற்போன்ற ஜலத்தை | पश्य नानः | கவனித்துப்பார்த்துக் கொண்டே |
| स्यन्दमानाभिः नदीभिः | பெருக்கி ஓடும் நதிகளால் | च शोपलजलं | கற்பாறையீது புரண்டோடுகிற ஜலமுடையதும் |
| चलजिह्वाभिः | ஆசையுண்ட நாயு களையுடைய | पुण्यां | புண்ணியமானதும் |
| फगभिः | படங்களோடு | पश्चिमोऽधिगामिनीं | மேற்குசமுத்திரத்தில் போய்விழுகிறதமான |
| विश्रितं | திரும்பள்ளிகொண்டிருக்கின்ற | नर्मदां | நர்மதாநதிக்கு |
| | | ययौ | போய்ச்சேர்ந்தான். |

महिषैः सृमरैः सिंहैः शार्दूलक्ष्मिणोत्तमैः । उष्णाभितसैस्तृषितैः संक्षोभितजलाशयाम् ॥
 चक्रवाकैः सकारण्डैः सहस्रजलकुक्षुटैः । सारसैश्च सदा मत्तैः सुकूजद्भिः समावृताम् ॥
 फुल्लदुमकृतोत्तसां चक्रवाकयुगस्तनीम् । विस्तीर्णपुलिनश्रोणीं हंसवालिसुमेखलाम् ॥
 पुष्परेण्वनुलिप्ताङ्गीं जलफेनामलांशुकां । जलावगाहसंस्पर्शां फुल्लोत्पलशुभेक्षणाम् ॥
 पुष्पकादवरूहाशु नर्मदां सरितां वराम् । इष्टामिव वरं नारीमवगाह्य दशाननः ॥ २३ ॥
 स तस्याः पुलिने रम्ये नानाकुमुदशोभिते । उपोपविष्टैः सचिवैः सार्धं राक्षसपुङ्गवः ॥
 प्रख्याय नर्मदां चाथ गङ्गेयमिति रावणः । नर्मदादर्शनं हर्षमाप्तवात्राक्षसाधिपः ॥ २५ ॥

| | |
|---------------|--------------------|
| सः | அந்த |
| राक्षसपुङ्गवः | ராக்ஷஸே ததமனும் |
| राक्षसाधिपः | ராக்ஷஸமன்னனும் |
| दशाननः | தசானனனுமாகிய |
| रावणः | ராவணன் |
| अथ | அப்பொழுது |
| नर्मदां | நர்மதாநதியை |
| हतिः | யின்கண்டபடி |
| महिषैः | மஹிஷங்களாலும் |
| सृमरैः | சபரிமிருகங்களாலும் |

| | |
|----------------------------|---|
| विंशैः | சிம்மங்களாலும் |
| शार्दूलक्ष्- मिणोत्तमैः | பெரும்புலி, கரடி, யானை இவைகளாலும் |
| उष्णाभितसैः | அதிக பரபரப்புடைய வைகளாய் |
| तृषितैः | அத்யந்த தாஹ முடையவைகளாய் |
| संक्षोभित- जलाशयां | நன்றாய் கலக்கப்பட்ட மடுக்கள் நிரம்பப் பெற்றதாயும் |

चक्रवाकैः சக்கிரவாகப்பகூறி
களராலும்
स हारण्डैः காரண்டமென்கிற
பகூறிகளோடும்
स ईसजल- } ஹம்ஸங்களோடும்
कुम्कुटैः } நீர்க்கோழிகளுடனும்
கடியவைகளும்
मत्सैः கொழுத்தவைகளும்
सदा சதாகாலமும்
सुकुजङ्गिः இனிமையாய் கூவு
கின்றவைகளுமான
सारसैः च ஸாரஸங்களாலும்
समावृतां நிறைந்துவிளங்கியது.
फुल्लदुम- } மரங்களில் பூத்த புஷ்
कृतोत्सवां } பங்களே சிரோபூஷ
ணமாயுடையதும்
चक्रवाक- } சக்கிரவாகப்பகூறி,
युगस्तीर्णां } பார்யை, பர்த்தாக்
களே இரண்டு கொந்
கைகளாகவும்
विस्तीर्ण- } பருத்து, பரந்த
पुलिनश्रीर्णां } மணல்குன்றங்களே
ஐகணங்களாகவும்
हंशवलि- } ஹம்சங்களுடைய
सुमेखलां } வரிசைகளே ஆரை
நூல் மாலையாயும்
पुररेपवनु लसाङ्गीं பூந்தாதுக்களே சந்
தனப்பூச்சராயும்
जलफेनामलांशुकां நீற்றுரையே வெண்
பட்டாடையாயும்
फुल्लोत्पल- } மலர்ந்த நீலோத்பலக்
शुभेक्षणं } களே அழகுவாய்ந்த
நேத்திரங்களாயும்
ततः सलीलं प्रहसन्नावणो राक्षसाधिपः ।
राक्षसाधिपः “ ராக்ஷஸமன்னனாகிய
राजणः இராவணன்
मारीचशुक्रसारणान् மாரீசன், சுகன், சார
ணன் என்கிற
सखिवान् மந்திரிகளைப்பார்த்து
सख अखंडित्तिं அவ்விடத்தில

जलावगाहसंस्पर्शा ஸ்நானம் செய்வதே
ஆலிங்கனசுகமாயும்
इष्टां மனதிற்கிஷ்டமாயி
ருக்கின்ற
वरं உக்கிருஷ்டமான
वारीं பெண்மணியை
इव போலிருக்கிறதும்
सरितां நதிகளில்
वरं சிறந்ததாயிருக்கிறது
नर्मदां நர்மதையை [மான
इयं ‘இது
गङ्गा च கங்கையே’ என்று
प्रशयाय புகழ்ந்துவிட்டு
अशु उदनेयே உடனேயே
पुष्पकात् புஷ்பகவிமானத்
अवस्था इறங்கி [தினின்று
अवगाह्य முழுமி ஸ்நானம்
செய்து
तस्याः अतिनुदைய
नानाकुसुमशोभिते பற்பல புஷ்பங்களால்
விளங்குவதும்
रग्ये மனோஹரமாயிருக்கிற
துமான
पुलिने மணல்தட்டில்
उपोपविष्टैः சுகமாய் வீற்றிருந்த
सचिवैः மந்திரிகளுடன்
साधं கூடி
नर्मदादर्शजं { நருமதா நதியின்
பிரத்யக்ஷானுபவத்
தில் உண்டாகும்
इष्टं மனச்சந்துஷ்டியை
आसवान् பெற்றான்.

उवाच सचिवांस्तत्र मारीचशुक्रसारणान् ॥

ततः அப்பொழுது
सलीलं வினையாட்டாக
प्रहसन् நையாண்டி பண்ணிக்
கொண்டு
उवाच பின் கண்டபடி
பேசினான் :

एष रश्मिसहस्रेण जगत्कृत्वैव काञ्चनम् । तीक्ष्णतापकरः सूर्यो नभसो मध्यमास्थितः ॥
मामासीनं विदित्वेह चन्द्रायति दिवाकरः ॥ २७ ॥

சூர்ய: “சூரியன்
ரஷிமசஹ்ரேண அளவுக்குமிஞ்சின
கிரணங்களால்
ஜகத் உலகை
காஞ்சந் ஒளிமயமாக
கூத்வா செய்துகொண்டு
நபஸ: ஆகாயத்தினது
மத்யம் எவ் மத்தியத்திலேயே
புஷ: இதோ
அஸ்தித: வந்திருக்கின்றான்.

इह इப்பொழுது
आसीनं உட்கார்ந்துகொண்
டிருக்கின்ற
सं என்னை
विदित्वा நினைத்து
तीक्ष्णतापकरः தீவ்ஷணமான தாபகர
னாகிய
दिवाकरः சூரியன்
चन्द्रायति சந்திரனெனவே
விளங்குகிறான்.

नर्मदाजलशीतश्च सुगन्धिः श्रमनाशनः । मद्रयादनिलोऽप्यत्र वात्येष सुसमाहितः ॥ २८ ॥

अत्र “இப்பொழுது
पुष: இந்த
अनिलः अपि वायुதேவனும்
मद्रयात् च என்னிடமுள்ள
அச்சத்தினாலே
सुसमाहितः மிகச்சிரத்தைகொண்
டவனாய்

नर्मदाजलशीतः நர்மதாஜலத்தின் குளு
மையுடையவனாய்
सुगन्धिः நறுமணம் வீசுவனாய்
श्रमनाशनः ஆயாசத்தை தீர்ப்ப
வனாய்
वाति அசைக்கிறான்.

इयं चापि सरिच्छ्रेष्ठा नर्मदा नर्मवर्धिनी । नक्रमीनविहङ्गोर्मिः सभयैवाङ्गना स्थिता ॥

इयं “இந்த
सरिच्छ्रेष्ठा நதிகளில் சிறந்ததும்
नक्रमीन- } முதலைகள், மச்சங்
विहङ्गोर्मिः } கள், பறவைகள்
அலைகள் இவைகளை
புடையதுமான

नर्मदा च நர்மதாநதியும்
सभया அச்சமுற்றிருக்கும்
अङ्गना इव பெண்மணியோல்
नर्मवर्धिनी अपि { வேடிக்கையாய் பொ
स्थिता { முகையோக்க ஹேது
பூதமாகவே
விளங்குகிறான்.

तद्भवन्तः क्षताः शस्त्रैर्वृषैरिन्द्रसमैर्युधि । चन्दनस्य रसेनेव रुधिरं समुक्षिताः ॥ ३० ॥

तत् “ஆதலால்
युधि போரில்
इन्द्रसमै: இந்திரனுக்கு நிகரான
रुषै: மன்னர்களால்
शस्त्रै: பாணங்களால்
क्षता: காயப்பட்டவர்களாய்
भवन्त: நீங்கள்

रुधिरं உதிரத்தால்
चन्दनस्य சந்தனத்தினுடைய
रसेन குழம்பினால்
इव எப்படியோ அப்ப
समुक्षिता: முசுப்பட்டிருக்கிறீ
ர்கள்.

ते यूयमवगाहृध्वं नर्मदां शर्मदां नृगाम् । महापद्ममुखा मत्ता गङ्गामिव महागजाः ॥
अस्यां स्नात्वा महानद्यां पाप्मानं त्रिप्रमोक्षयथ ॥ ३१ ॥

ते “அந்த
யூய் நீங்கள்
நுளா மனிதர்களுக்கு
சர்மதா சகத்தைத்தரும்
நர்மதா நதியில்
மஹாபத்மம் முதலிய
மதா: மதம்கொண்ட
மஹாஜா: பெரும் யானைகள்

गङ्गा कन्कையில்
इव எவ்வண்ணமோ,
அவ்வண்ணமே
अ गहृध्वं முழுக் ஸ்நானம்
अस्यां இந்த [செய்யுங்கள்.
महानद्यां மஹாநதியில்
स्नात्वा ஸ்நானம்செய்து
पाप्मानं செய்தபாபத்தை
त्रिप्रमोक्षयथ போக்கிவிடுக.

अहमप्यथ पुलिने शरदिन्दुसमप्रभे । पुष्योपहारं शनकैः करिष्यामि कपर्दिनः ॥ ३२ ॥

अहं अपि “நானும்
शरदिन्दुसमप्रभे { சரத்தகாலசந்திரனுக்கு
நிகரான கார்த்தியை
புடைய
पुलिने மணல்தட்டில்

कपर्दिनः சிவபெருமானுக்கு
पुष्योपहारं புஷ்பார்ச்சுணையை
शनकैः ஸ்வேச்சையாய்
अथ இப்பொழுது
करिष्यामि செய்கிறேன்.

रावणेनैवमुक्तास्तु प्रहस्तशुक्सारणाः । समहोदरधूम्राक्षा नर्मदां विजगाहिरे ॥ ३३ ॥

रावणेन “இராவணனால்
एवं இவ்வண்ணமாய்
उक्ताः இயம்பியதைக்கேட்ட
समहोदरधूम्राक्षा: { மஹோதரனோடும்
தூம்ராக்ஷனோடும்
கூடிய

प्रहस्तशुक्सारणाः பிரஹஸ்தனும், சக
னும், சாரணனும்
नर्मदां நர்மதையில்
तु இப்பொழுது
विजगाहिरे முழுக் ஸ்நானம்
செய்தார்கள்.

राक्षसेन्द्रगजैस्तैस्तु क्षोभिता नर्मदा नदी । वामनाञ्जनपद्माद्यैर्गङ्गा इव महागजैः ॥ ३४ ॥

तु “அந்த சந்தர்ப்பத்தில்
नर्मदा नदी நருமதைநதி
तैः அந்த
राक्षसेन्द्रगजैः யானைகளாகிற ராக்ஷ
ஸோத்தமர்களால்
वामनाञ्जनपद्माद्यैः வாமனம், அஞ்ஜனம்,
பத்மம் முதலான

महागजैः திக்கஜங்களால்
गङ्गा கங்காநதி
इव எவ்வண்ணமோ
அவ்வண்ணமே
क्षोभिता கலக்கப்பட்டது.

ततस्ते राक्षसाः स्नात्वा नर्मदायां वरामसि । उत्तीर्य पुष्पाण्याजहर्बुलपर्यं रावणस्य तु ॥

ते राक्षसाः तु “அந்த அரக்கர்களும்
वरामसि சத்தஜலத்தோடு
नर्मदायां நருமதையில் [கூடின
स्नात्वा ஸ்நானம் செய்து
उत्तीर्य கரையேறி

ततः அதன்மேல்
रावणस्य இராவணனுடைய
बुलपर्यं பூணைக்காக
पुष्पाण्याजहर्बुलपर्यं புஷ்பங்களை
आजहुः கொண்டுவந்தார்கள்.

नर्मदापुलिने ह्ये शुभ्राभ्रसदृशप्रभे । राक्षसैस्तु मुहूर्तेन कृतः पुष्पमयो गिरिः ॥ ३६ ॥

हृद्ये "மனோஹரமாயிருக் கிறதும்
சுபூதன் ரு ஒரு நொடிப்பொழுதி லேயே
शुभ्राभ्रसदृशप्रभे வெண்ணீரகம்போன்ற கார்த்தியுடைய தமனை நர்மதாநதியின் மணல் குன்றில்
नर्मदापुलिने

पुष्पेषूपहृतेष्वेवं रावणो राक्षसेश्वरः । अवतीर्णो नदीं स्नातुं गङ्गापिव महागजः ॥ ३७ ॥

राक्षसेश्वरः "ராக்ஷஸேசுவரனாகிய
रावणः இராவணன்
एवं இவ்வண்ணமாய்
पुष्पेषु புஷ்பங்கள்
उपहृतेषु கொண்டுவரப்பட்ட தும்
स्नातुं தேவார்ச்சனைக்கு முந்திய ஸ்நானத்தைச் செய்வ பெருமயானை [செய்ய கற்கையில் எவ்வண்ணமோ அவ்நதியில் [வண்ணமே இறங்கினான்.
महागजः
गङ्गा
इव
नदीं
अवतीर्णः

तत्र स्नात्वा च विधिवज्जप्त्वा जप्यमनुत्तमम् । नर्मदासलिलात्समादुत्तार स रावणः ॥

सः रावणः "அந்தஇராவணன்
तल அதில்
विधिवत् சாஸ்திரமுறைப்படி
स्नात्वा च ஸ்நானம் செய்த பின்னர்
अनुत्तमं ஒப்புயர்வில்லாத
नर्मदासलिलात्समादुत्तार स रावणः ॥
जप्यं மந்திரத்தை
जप्त्वा ஜபித்து
तस्मात् அந்த
नर्मदासलिलात् நர்மதா ஜலத்திலி ருந்து

उत्तार कणायैः ॥

तत्र क्षिप्राम्बरं त्यक्त्वा शुक्रवस्त्रसमावृतम् । रावणं प्राञ्जलिं यान्तमन्वयुः सर्वराक्षसाः ॥

॥ ३९ ॥

सर्वराक्षसाः अरக்கர்கள் எல்லோரும்

तद्गतीवशं अवन् போகும்

आपन्नाः போகின்றவர்களாய்

मूर्तिमन्तः உருவமெடுத்த

अच्छाः इव மலைகளை

अन्वयुः பின்தொடர்ந்து சென்றார்கள்.

यत्र यत्र च याति स रावणो राक्षसेश्वरः । जाम्बूनदमयं लिङ्गं तत्र तत्र स नीयते ॥

राक्षसेश्वरः "ராக்ஷஸமன்னனாகிய
रावणः இராவணன்
यत्र यत्र எவ்வெவ்விடம்
याति स செல்கின்றானே
तत्र तत्र च அவ்வவ்விடத்திற்கும்
जाम्बूनदमयं
लिङ्गं
नीयते स

एवम्बूनदமயம்
एवम्बूनदमयं
लिङ्गं
नीयते स

ஸ்வரணத்தில்
செய்யப்பட்டதாகிய
சுவலிங்கமானது
கூடவே எடுத்தப்
போகப்படுகிறது.


वाल्कावेदिमध्ये तु तल्लिङ्गं स्थाप्य रावणः । अर्चयामास गन्धैश्च पुष्पैश्चामृतगन्धिभिः ॥

| | | | |
|-----------------|------------------|--------------|--------------------|
| रावणः | “रावணன் | अमृतगन्धिभिः | மாறாமணமுடைய |
| तत् लिङ्गं | அந்தலிங்கத்தை | पुष्पैः च | புஷ்பங்களாலும் |
| वाल्कावेदिमध्ये | மணல்மேடயின் | गन्धैः च | வரசனைத் தரவியங்களா |
| | மத்தியில் | तु | அப்பொழுது [லும் |
| स्थाप्य | எழுந்தருளப்பண்ணி | अर्चयामास | பூஜைசெய்தான். |

ततः सतामार्तिहरं परं वरं वरपदं चन्द्रमयूखभूषणम् ।
समर्चयित्वा स निशाचरो जगौ प्रसार्य हस्तान्प्रणनर्त चायतान् ॥ ४२ ॥

| | | | |
|-----------------|---|-------------|---------------------|
| सः निशाचरः | “அந்த அரக்கன் | समर्चयित्वा | நன்றாய் அர்ச்சனை |
| सतां | புண்பா த்மாக்களின் | | செய்து |
| भार्तिहरं | கூட்டங்ளைப் போக்கு | जगौ | புகழ்ந்து பாடினான். |
| | கிறவரும் | ततः | அதன்மேல் |
| वरपदं | வரமளிப்பதை | आयतान् | நீண்ட |
| परं | ஸர்வமுமாய்க் | हस्तान् च | கைகளையும் |
| वरं | உத்தமரும் [கொண்ட | प्रसार्य | பரப்பி |
| चन्द्रमयूखभूषणं | { சந்திரனையே அழகு பூஷணமாய் கொண்ட அவரை | प्रणनर्त | நர்த்தனம்செய்தான். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
उत्तरकाण्डे एकत्रिंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22026  उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 1302

द्वात्रिंशः सर्गः—முப்பத்திரண்டாவது ஸர்க்கம். ॥ 32 ॥

रावणबन्धनम्—ராவணனைக் கட்டிப்பிடிப்பது.

नर्मदापुलिने यत्र राक्षसेन्द्रः सुदारुणः । पुष्पोपहारं कुरुते तस्माद्देशाददूरतः ॥ १ ॥
अर्जुनो जयतां श्रेष्ठो माहिष्मत्याः पतिः प्रभुः । क्रीडते सह नारीभिर्नर्मदातोयमाश्रितः ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|--------------|-------------------|
| सुदारुणः | “மிகக்கொடியான | प्रभुः | மஹாசாமர் திய |
| राक्षोन्द्रः | இரா க்ஷஸமன்னன் | | சாலியும், |
| दत्र | எந்த | माहिष्मत्याः | மாஹிஷ்மதி |
| नर्मदापुलिने | நர்ப்பதையின் மணல் | | புரியினது |
| | தட்டில் | पतिः | மன்னனுமாகிய |
| पुष्पोपहारं | புஷ்பார்ச்சனையை | अर्जुनः | அர்ஜுனன் |
| कुरुते | செய்தானே | नर्मदातोयं | நர்ப்பதா ஜலத்தை |
| तस्मात् | அந்த | आश्रितः | அடைந்தவனாய் |
| देशात् | பிரதேசத்திலிருந்து | नारीभिः | ஸ்திரீகளோடு |
| अदूरतः | சமீபத்தில் | सह | கூட |
| जयतां | ஜயசாலிகளில் | क्रीडते | ஜலக்கீடை செய்துக் |
| श्रेष्ठः | உத்தமனும் | | கொண்டிருந்தான். |

तासां मध्यगतो राजा रराज च तदाऽर्जुनः । करेणूनां सहस्रस्य मध्यस्थ इव कुञ्जरः ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|----------|------------------|
| तासां | “அவர்களுடைய | சுரச்சய | அனேகங்களின் |
| மध्यगतः | இடையிலிருக்கும் | மध्यस्थः | இடையிலிருக்கின்ற |
| अर्जुनः राजा | அர்ஜுன மன்னன் | कुञ्जरः | ஆணயானை |
| तदा | அக்காலத்தில் | इव च | போலவே |
| करणूनां | யானைப்பேடுகளினுடைய | राज | விளங்கினான். |

जिज्ञासुः स तु बाहूनां सहस्रस्योत्तमं बलम् । हरोध नर्मदावेगं बाहुभिर्वहुभिर्वृतः ॥ ४ ॥

| | | | |
|------------|---------------------|------------|---------------------|
| सः | “அவன் | नर्मदावेगं | நர்மதாநதியின் |
| बाहूनां | கைகளின் | बहुभिः | பல [பிரவாஹத்தை |
| सहस्रस्य | ஆயிரத்தினுடைய | बाहुभिः तु | கைகளாலேயே |
| उत्तमं बलं | உத்தமபலத்தை | वृतः | மறைப்பவனாய் |
| जिज्ञासुः | அறிய விரும்பியவனாய் | हरोध | ஓடவிடாது தடுத்தான். |

कार्तवीर्यभुजासक्तं तज्जलं प्राप्य निर्मलम् । कूलोपहारं कुवाणं प्रतिश्रोतः प्रधावति ॥ ५ ॥

| | | | |
|---------------------|----------------|-------------------|--------------------|
| तत् | “அந்த | कूलोपहारं | இரு கரைகளும் புரண் |
| निर्मलं | நிர்மலமான | कुवाणं | பெருகுகிறதாய் [|
| जलं | ஜலம் | प्रतिश्रोतः | பிரவாஹத்திற்கு |
| कार्तवीर्यभुजासक्तं | { | | எதிராய் |
| | | கார்த்தவீர்யனுடைய | |
| | கைகளால் கட்டப் | प्राप्य | ஆகின்றதாய் |
| | பட்டதாய் | प्रधावति | ஓடினது. |

समीननक्रमकरः सपुष्पकुशसंस्तरः । स नर्मदाभसो वेगः प्रावृत्काल इवावभौ ॥ ६ ॥

| | | | |
|-----------------------|-------|---|-------------------|
| सः | “அந்த | नर्मदाभसः | நர்மதாஜலத்தினது |
| समीननक्रमकरः | { | वेगः | வேகம் |
| सपुष्पकुश- संस्तरः | | மீன்கள், முத்தலைகள், சுருமீன்கள் இவை கொடியுடையதும் புஷ்பங்கள், தர்ப்பங் கள், மிதக்குமிலைகள் இவைகளுடன் கூடிய துமான | प्रावृत्काले |
| | | इव | எப்படியோ அப்படியே |
| | | आवभौ | தோன்றிற்று. |

स वेगः कार्तवीर्येण संप्रेषित इवाभसः । पुष्योपहारं सकलं रावणस्य जहार ह ॥ ७ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|----------------|-------------------|
| कार्तवीर्येण | “கார்த்தவீர்யனால் | रावणस्य | ராவணனது |
| संप्रेषितः | எதிர்த்தனுப்பப்பட்ட | पुष्योपहारं इव | அர்ச்சனைப்புஷ்பத் |
| अभसः | ஜலத்தினது | | தையும்கூட |
| सः | அந்த | जहार | அடித்துக்கொண்டு |
| वेगः | வேகம் | | போய்விட்டது. |
| सकलं ह | எல்லாவற்றையும் | | |

रावणोऽर्धसमाप्तं तस्युत्सृज्य नियमं तदा । नर्मदां पश्यते कान्तां प्रतिकूलां यथा प्रियाम् ॥

रावणः " रावணன்
अर्धसमाप्तं பாசி முடிந்திருந்த
तं அந்த
नियमं பூஜையை
उत्सृज्य விட்டெழுந்து
तदा அப்பொழுது
नर्मदां நர்மதையை

प्रियां { எப்போதும் மனோபி
வட்டத்தையே ஒத்து
நடப்பவளும்
प्रतिकूलां ஒருசமயத்தில் மாறுப
ட்டுஒழுக்குவளருமான
कान्तां மனையாட்டியை
यथा எவ்வண்ணமோ
पश्यते அவ்வண்ணமே
உற்றுவிழித்துப்
பார்த்தான்.

पश्चिमेन तु तं दृष्ट्वा सागरोद्धारसन्निभम् । वर्धन्तमम्भसो वेगं पूर्वाभाशां प्रविश्य तु ॥
ततोऽनुभ्रान्तशकुनां स्वभावोपरमे स्थिताम् । निर्विकाराङ्गनाभासापश्यद्रावणो नदीम् ॥

रावणः " रावணன்
निर्विकाराङ्गना- } ஒரேமாதிரியான எவ
भासां } பாவுமுள்ள பெண்
मणरीपोरं न मन्थि-
मैमकोरं न्द
नदीं न्तियை
स्वभावोपरमे இயற்கைக்குமீறி
स्थितां நடக்கிறதில்
ततः அவ்விடத்தில்
अनुभ्रान्त- } தகிலடைந்து ஓடுகின்
शकुनां } ற பறவைகளையுடை
யதாயும்

दृष्ट्वा கண்டு
पश्चिमेन மேற்கிலிருந்து
पूर्वा आशां கிழக்குத்திக்கை
प्रविश्य நோக்கி
सागरोद्धारसन्निभं கடல் பெருக்குக்கு
निकरावनाय
वर्धन्तं பெருக்கெடுத்து வரு
अंभसः ஜலத்தினது [கின்ற
तं அந்த
वेगं तु வெள்ளத்தையும்
तु இப்பொழுது
अपश्यत् கவனித்துப்பார்த்தான்.

सव्येतरकराङ्गुल्या सशब्दं च दशाननः । वेगप्रभवमन्वेष्टुं सोदिशच्छुकसारणौ ॥ ११ ॥

सः " அந்த
दशाननः தசானனை
शुकसारणौ சுகசையும் சாரணை
யும்
वेगप्रभवं பிரவாஹத்தின் கார
अन्वेष्टुं தெரிந்துவர [ணத்தை

सशब्द अर्த்தமாகும்வண்ண
மாய்
सव्येतर- } வலதுகைக் கட்டை
कराङ्गुल्या च } விரலினாலேயே
अदिशत् சமிக்கைஞ்செய்து ஆக்
ராபித்தான்.

तौ तु रावणसन्दिष्टौ भ्रातरौ शुकसारणौ । व्योमान्तरगतौ वीरौ प्रस्थितौ पश्चिमासुखौ ॥

तौ भ्रातरौ " அந்த சகோதரர்க
वीरौ तु சூரர்களுமான [ரும்
शुकसारणौ சுகனும் சாரணனும்
रावणसन्दिष्टौ இராவணனது ஆக்
கினை பெற்றவர்களாய்

व्योमान्तरगतौ { ஆகாமார்க்கமாய்ச்
செல்லுகின்றவர்
களாய்
पश्चिमासुखौ மேற்குக் திசையை
प्रस्थितौ போனார்கள். [நோக்கி

अर्थयोजनमात्रं तु गत्वा तौ रजनीचरौ । पश्येतां पुरुषं तोये क्रीडन्तं सहयोषितम् ॥ १३ ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|-----------|-----------------|
| வீ | “ அந்த | தே | ஜலத்தில் |
| रजनीचरौ | அரக்கர்களிருவரும் | सहयोषितं | ஸ்தீகருடன்கூடின |
| अर्थयोजनमात्रं | அரையோஜனை | | வனம் |
| | தூரம்வரையில் | क्रीडन्तं | ஜலக்கீடை செய்து |
| गत्वा | சென்று | | கொண்டிருக்கின்ற |
| तु | அவ்விடத்தில் | पुरुषं | ஒரு மனிதனை |
| | | पश्येताम् | கண்டார்கள். |

बृहत्सालप्रतीकाशं तोयव्याकुलमूर्धजम् । मद्रक्तान्तनयनं मदव्याकुलतेजसम् ॥ १४ ॥
 नदीं बाहुसहस्रेण रुन्धन्तमरिर्मर्दनम् । गिरिं पादसहस्रेण रुन्धन्तमिव मेदिनीम् ॥ १५ ॥
 बालानां वरनारीणां सहस्रेण समावृतम् । समदानां करेणूनां सहस्रेणैव कुञ्जरम् ॥ १६ ॥
 तमद्भुततमं दृष्ट्वा राक्षसौ शुक्रसारगौ । सन्निवृत्तावुपागम्य रावणं तमथोचतु ॥ १७ ॥

| | | | |
|----------------------------|---|-------------|--|
| शुक्रसारगौ | “ சுகன் சாரணன் | अरिर्मर्दनं | போக்கைத் தடுப்பவ |
| | என்ற | | னம் |
| राक्षसौ | அரக்கர்கள் இருவரும் | रुन्धन्तं | தகைந்துகொண்டிருக் |
| तं | அவனை | | கின்றவனாயும் |
| बृहत्साल- } प्रतीकाशं } | ஒரு பெரிய ஆச்சா மரத்தின் ஆகார முடையவனாகவும் | समदानां | மதம்கொண்ட |
| | ஜலத்தில் அழிந்துகி டக்கும் தலைமயிரு டையவனாகவும் | करेणूनां | யானைப்பேடுகளின் |
| तोयः व्याकुलमूर्धजं } | | सहस्रेण | அனேகங்களால் |
| | | कुञ्जरं | ஒரு ஆண்யானையை |
| | | इव | எவ்வண்ணமோ, அவ்வண்ணமே |
| मद्रक्तान्त- } नयनं } | காமத்தால் சிவந்த கடைக்கண்களையு டையவனாயும் | बालानां | குமாரிகளாகிய |
| | | वरनारीणां | உத்தமஸ்தீகளி னுடைய |
| मदव्याकुल- } तेजसं } | காமவெறியால் அதி உத்ஸாஹத்துடன் இருப்பவனாயும் | सहस्रेण | அனேகங்களால் |
| | | समावृतं | சூழப்பட்டவனாயும் |
| | | अद्भुततमं | மிக்க அற்புதமாய் விளங்குகிறவனாகவும் |
| बाहुसहस्रेण | கைகளினுயிரத்தால் | दृष्ट्वा | கண்டு |
| नदीं | நதியை | सन्निवृत्तौ | திரும்பியவர்களாய் |
| पादसहस्रेण | அடிவாரங்களினுயிரத் தால் | तं | அந்த |
| | | रावणं | இராவணனிடம் |
| मेदिनीं | பூமியை | उपगम्य | வந்துசேர்ந்து |
| रुन्धन्तं | தகையும் | अथ | பின்கண்டபடி |
| गिरिं | பலையை | उचतुः | விண்ணப்பம் செய் தார்கள்; |
| इव | போலவே | | |

बृहत्सालप्रतीकाशः कोऽप्यसौ राक्षसेश्वर । नर्मदां शैलवद्भुवा क्रीडापयति योषितः ॥

राक्षसेश्वर “**வேறு ராக்ஷஸேச்
வரா!**

असौ **இந்த**
बृहत्सालप्रतीकाशः { **ஒரு பெரிய ஆச்சா
மரத்தின் ஆகார
முடையவனாகிய**
कः अपि **எவனோ ஒருவன்**

शैलवद् **மலைபோல்**
नर्मदां **நர்மதையை**
रुद्धा **மறித்துக்கொண்டு**
योषितः **ஸ்திரீகள்**
क्रीडापयति { **விளையாடுகிறதைப்
பார்த்துக்கொண்டு
ருக்கிரான்.**

तेन बाहुसहस्रेण सन्निरुद्धजला नदी । सागरोद्धारसङ्काशानुद्धारान्स्जते मुहुः ॥ १९ ॥

बाहुसहस्रेण “**ஆயிரம் கைகளைக்
கொண்ட**

तेन **அவனாலே**
नदी **நதி**
सन्निरुद्धजला **தடுக்கப்பட்ட ஜலமு
டையதாகி**

सागरोद्धारसङ्काशान् **கடல்பெருக்குக்கு
நிகரான**
उद्धारान् **வெள்ளப்பெருக்கு
களை**
मुहुः **கொஞ்சகாலமாய்**
स्जते **எதிர்த்துச்செலுத்த
துகிறது.”**

इत्येवं भाषमाणौ तौ निशाम्य शुक्रसारणौ । रावणोऽर्जुन इत्युत्त्वा प्रययौ युद्धलालसः ॥

रावणः “**இராவணன்**
इति एं **மேற்கண்டவண்
ணமாய்**

भाषमाणौ **விண்ணப்பம்செய்கின்**
तौ **அந்த [றவர்களாகிய**
शुक्रसारणौ **சகனையும், சாரண
ணையும்**

निशाम्य **பார்த்து**
इति **‘இவன்தான்**
अर्जुनः **அர்ஜுனன்’ என்று**
उत्त्वा **சொல்லிவிட்டு**
युद्धलालसः **போர்புரிய [உடனே**
प्रययौ **அவாக்கொண்டவனாய்
புறப்பட்டான்.**

अर्जुनाभिमुखे तस्मिन्प्रस्थिते राक्षसेश्वरे । संकृदेव कृतो रावः सरक्तः प्रेषितो घनैः ॥ २१ ॥

तस्मिन् “**அந்த**
राक्षसेश्वरे **இராக்ஷஸேச்வரன்**
अर्जुनाभिमुखे **அர்ஜுனனைநோக்கி**
प्रस्थिते **புறப்படும்போது**
घनैः **மேகங்களால்**

रावः **ஒருகோஷம்**
कृतः **உண்டாகியதாய்**
संकृत् एव **கூடவே,**
सरक्तः **குருதிமழை**
प्रेषितः **பொழியப்பட்டது.**

महोदरमहापार्श्वधूम्राक्षशुक्रसारणैः । संवृतो राक्षसेन्द्रस्तु तत्रागाद्यत्र चार्जुनः ॥ २२ ॥

सु “**அப்பொழுது**
राक्षसेन्द्रः **ராக்ஷஸமன்னன்**
महोदरमहापार्श्व- } **மகோதரன், மகா**
धूम्राक्षशुक्रसारणैः } **பார்ச்வன், தூம்ரா
க்ஷன், சுகன், ஸார
ணன் இவர்களால்**

संवृतः **சூழப்பட்டவனாய்**
यत्र **எங்கு**
अर्जुनः च **அர்ஜுனன் இருந்
தானோ**
तत्र **அவ்விடம்**
अगान् **சென்றான்.**

अदीर्घेणैव कालेन स तदा राक्षसो बली । तं नर्मदाहृदं भीममाजगामाञ्जनप्रभः ॥ २३ ॥

सः “ अந்த
 अञ्जनप्रभः मையை ஒத்த ஒளி
 கொண்டவனும்,
 बली பலிவந்த ஹுமான
 राक्षसः राक्षஸன்
 तदा அப்பொழுது

अदीर्घेण कालेन एव उदनेयै
 तं अन्त
 भीमं பயங்கரமாயிருக்கின்ற
 नर्मदाहृदं { நர்மதையின் ஜலமெ
 तीरं त्नु कंकिलकुम्भी
 डत्तिरु
 आजगाम வந்துசேர்ந்தான்.

स तत्र स्त्रीपरिवृतं वाशिताभिरिव द्विपम् । नरेन्द्रं पश्यते राजा राक्षसानां तदाऽर्जुनम् ॥

राक्षसानां “ அரக்கர்களின்
 राजा மன்னனாகிய
 सः அவன்
 तदा அப்பொழுது
 तत्र அவ்விடத்தில்
 नरेन्द्रं மாநிடர்களின்
 மன்னனாகிய

अर्जुनं அர்ஜுனனை
 वाशिताभिः பெண்யானைகளால்
 द्विपं ஒரு ஆண்யானையை
 इव எவ்வண்ணமோ
 स्त्रीपरिवृतं மங்கைகளால் சூழப்
 पश्यते பட்டிருக்கின்றவனாய்
 पार्थिवः பார்த்தான்.

स रोषाद्रक्तनयनो राक्षसेन्द्रो बलोद्धतः । इत्यवर्जुनामात्यानाह गम्भीरया गिरा ॥ २५ ॥

सः “ அந்த
 राक्षसेन्द्रः राक्षஸமன்னன்
 बलोद्धतः பலத்தால் செருக்
 குற்றவறைய்
 रोषात् கோபத்தால்
 रक्तनयनः சிவந்த கண்களுற்ற
 வறைய்

अर्जुनामात्यान् அர்ஜுனனது மந்திரி
 कौशलेण கோக்கி,
 गम्भीरया உரத்த குரலோடிருக்க
 गिरा ஒரு மொழியைக்
 கொண்ட
 इति एवं பின்கண்டவண்ண
 आह விளம்பினான்: [மாய்

अमात्याः क्षिप्रमाख्यात हैहयस्य नृपस्य वै । युद्धार्थी समनुभातो रावणो नाम राक्षसः ॥

अमात्याः “ மந்திரிகளே !
 हैहयस्य ஹேஹய
 नृपस्य மன்னனுக்கு
 क्षिप्रं वै உடனேயே
 रावणः नाम ‘ இராவணன் என்ற

राक्षसः அரக்கன்
 युद्धार्थी யுத்தம்செய்யவேண்டி
 समनुभासः இவ்விடம் வந்திருக்
 கிறான் என்று
 आख्यात தெரிவியுங்கள்.

रावणस्य वचः श्रुत्वा मन्त्रिणोऽथार्जुनस्य ते । उत्तस्युः सायुधास्त्राश्च रावणं वाक्यमब्रुवन् ॥

अर्जुनस्य “ அர்ஜுனனது
 सायुधास्त्राः { ஆயுதங்களையும் அஸ்
 திரங்களையும் தரித்த
 वाक्कलाकिय வர்களாகிய
 ते मन्त्रिणः அந்த மந்திரிகள்
 रावणस्य இராவணனுடைய
 वचः சொல்லை

श्रुत्वा கேட்டு
 उत्तस्युः எழுந்துகின்றார்ர்கள்.
 च அதன்பின்னர்
 रावणं ராவணனைப்பார்த்து
 अथ பின்கண்ட
 वाक्यं பதிலை
 अब्रुवन् சொன்னார்கள்:

युद्धस्य कालो विज्ञातः साधु भोः साधु रावण । यः क्षीवं स्त्रीवृतं चैव योद्धुमुत्सहसे नृपम् ॥

| | | | |
|-------------|--|----------------------|--|
| भोः रावण | “ ஓ! ராவண | யோ உசுசுசு | அமராத |
| क्षीवृतं च | { மங்கையர்களின் இடையிலிருக்கின்ற வர்களும்த | युद्धस्य विज्ञातः | போராடுவதற்கு குறிப்பிட்டதாகிய |
| क्षीवं एव | காமக்குழப்பத்திலி ருக்கின்றவருமாகிய | कालः | காலம் |
| नृपं | மன்னரை | यः साधु साधु | எதுவோ இது வெகு நன்றாயிருக் கிறது ! |

स्त्रीसमक्षं कथं यत्त्रयोद्धुमुत्सहसेऽर्जुनम् । वाशितामध्यगं मत्तं शार्दूल इव कुञ्जरम् ॥२९॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------|--------------|---------------------|
| वाशितामध्यगं | “ பெண்பாணைகளி டையிலிருக்கும் | अर्जुनं | அர்ஜுனனை |
| मत्तं | மதம்பிடித்த | स्त्रीसमक्षं | ஸ்த்ரீகளினெதிரி |
| कुञ्जरं | ஆண்பாணையை | योद्धुं | அமராத [லேயே] |
| शार्दूलः | ஒரு புலி | उत्सहसे | நீர் முயலுகின்றீர். |
| इव | எவ்வண்ணமோ, அவ்வண்ணமே | यत् | எந்த |
| | | तत् | அது |
| | | कथम् | எப்படியாகும்? |

क्षमस्वाद्य दशग्रीव चोष्यतां शर्वरी त्वया । युद्धश्रद्धा तु यद्यस्ति श्वस्तात समरेऽर्जुनम् ॥

| | | | |
|----------|------------------------------------|--------------|-------------------------------------|
| दशग्रीव | “ தசகரீவரோ! | यदि | அப்படியாகில் |
| अद्य | இந்தசமயம் | अर्जुनं | அர்ஜுனமன்னருடன் |
| क्षमस्व | பொறுத்திரும். | समरे | போரில் |
| शर्वरी च | இன்றிரவும் | श्वः तु | நாளையதினமே |
| त्वया | உம்மால் | युद्धश्रद्धा | யுத்தத்தில் அன்றையோ ன்யபரிச்சயம் |
| उष्यतां | இங்கயே தங்கியிருக் கப்படட்டும். | अस्ति | உண்டாகும். |
| तात | குழந்தாய்! | | |

यद्यद्यास्ति मतिर्योद्धुं युद्धतृष्णासमावृता । निहत्यास्मांस्ततो युद्धमर्जुनेनोपयास्यसि ॥

| | | | |
|--------------------|--|-----------|-------------------|
| युद्धतृष्णासमावृता | “ யுத்தவேட்கையில் முழக்கிக்கிடக்கின்ற | अस्मान् | எங்களை |
| मतिः | மனோபாவம் | निहत्य | கொன்றுவிட்டு |
| योद्धुं | போர்புரிய | ततः | அதன்பின்னார் |
| अस्ति यदि | இருக்கிறதினால் | अर्जुनेन | அர்ஜுனரோடு |
| अद्य | இப்பொழுது | युद्धं | போரை |
| | | उपयास्यसि | நீர் தொடுப்பீராக. |

ततस्ते रावणामात्यैरमात्याः पार्थिवस्य तु । सूदिताश्चापि ते युद्धे भक्षिताश्च बुभुक्षितैः ॥

पार्थिवस्य “மன்னருடைய
 તે அமாत्याः அந்த மந்திரிகள்
 रावणामात्यैः तु இராவணனது மந்திரிகளாலேயே

सूदिताः கொல்லப்பட்டார்கள்.
 अपि च அன்றியும்
 ते அவர்கள்
 बुभुक्षितैः பசியால்வாடியவர்

ततः அப்பொழுது
 युद्धे போரில்

भक्षिताः च பகிக்கப்பட்டார்கள்.
 कनारல்

ततो हलहलाशब्दो नर्मदातीर आवभौ । अर्जुनस्यानुयातृणां रावणस्य च मन्त्रिणाम् ॥

ततः “அக்காலத்தில்
 नर्मदातीरे நர்மதையின்கரையில்
 अर्जुनस्य அர்ஜுனனது
 अनुयातृणां பரிவாரங்களுடைய
 वும்

रावणस्य இராவணனுடைய
 मन्त्रिणां च மந்திரிகளுடையவும்
 हलहलाशब्दः கூக்குரல்
 आवभौ உண்டாயிற்று.

इषुभिस्तोमरैः शूलैस्त्रिशूलैर्वज्रकर्षणैः । सरावणानर्दयन्तः समन्तात्समभिद्रुताः ॥ ३४ ॥

सावणान् “இராவணன்கூட
 विरुपबवर्कणै
 इषुभिः பாணங்களாலும்
 तोमरैः தோமரங்களாலும்
 शूलैः சூலங்களாலும்
 त्रिशूलैः த்ரிசூலங்களாலும்

वज्रकर्षणैः குத்தி இழுக்கும் வஜ்
 रायुतங்களாலும்
 समन्तात् எல்லாப்பக்கங்களிலும்
 अर्दयन्तः துன்புறுத்துபவர்
 कनारய்
 समभिद्रुताः அதிகமாய் மேல்வீழ்ந்
 து தாக்கினார்கள்.

हैहयाधिपयोधानां वेग आसीत्सुदारणः । सनक्रमीनमकरसमुद्रस्येव निखनः ॥ ३५ ॥

हैहयाधिप- } “ஹைஹயதேசாதி
 योधानां } “பின் போர்வீரர்
 कणुदைய
 वेगः மும்முறமானது
 सनक्रमीन- } முதலைகள், மச்சங்
 मकरसमुद्रस्य } கள், சுறாமீன்கள்
 இவைகளை யுடைய
 சுமுத்திரத்தின்

निखनः முழக்கம்
 इव போன்றதாய்
 सुदारणः மிக்க பயங்கரமான
 தாய்
 आसीत् இருந்தது.

रावणस्य तु तेऽमात्याः प्रहस्तशुकसारणाः । कार्तिवीर्यबलं क्रुद्धा निर्दहन्ति स्म तेजसा ॥

रावणस्य “இராவணனது
 अमात्याः மந்திரிகளாகிய
 ते அந்த
 प्रहस्तशुक- } பிரஹஸ்தனும், சுக
 सारणाः } னும், சாரணனும்
 क्रुद्धाः கோபங்கொண்டவர்
 कनारய்

कार्तिवीर्यबलं கார்த்தவீரயனுடைய
 சேனையை
 तु இப்பொழுது
 तेजसा யுத்தசௌர்யத்தால்
 निर्दहन्ति स्म ஆயாசப்படுத்தினார்
 கள்.

अर्जुनाय तु तत्कर्म रावणस्य समन्त्रिणः । क्रीडमानाय कथितं पुरुषैर्द्वाररक्षिभिः ॥३७॥
 द्वाररक्षिभिः “வாயில் காப்போர்
 களங்கிய
 சேவகர்களால்
 ஜலகீடை செய்து
 கொண்டிருக்கும்
 அர்ஜுனனுக்கு
 இப்பொழுது
 சேவகர்களால்
 ஜலகீடை செய்து
 கொண்டிருக்கும்
 அர்ஜுனனுக்கு
 இப்பொழுது

पुह्वैः
 क्रीडमानाय
 अर्जुनाय
 तु

समन्त्रिणः
 रावणस्य
 तत्
 कर्म
 कथितम्
 मन्त्रिकगोप्युक्तं
 कின்ற
 इरावणनाथ
 अन्त
 தொழில்
 உரை செய்யப்பட்ட
 டது.

श्रुत्वा न भेतव्यमिति स्त्रीजनं तं ततोऽर्जुनः ।

अर्जुनः
 तं
 ध्रुत्वा
 स्त्रीजनं
 न भेतव्यं
 इति

“அர்ஜுனர்
 அதை
 கேட்டு
 ஸ்திரீஜனத்தைப்
 பார்த்து
 ‘அஞ்சவேண்டாம்’
 என்று சொல்லிவிட்டு

उत्तार जलात्साद्गङ्गातोयादिवाञ्जनः ॥

ततः
 तस्मात् जलात्
 अञ्जनः
 गङ्गातोयात्
 इव
 उत्तार
 அப்படியிருத்தலால்
 அந்த ஜலத்தினின்று
 அஞ்சனமென்கிற
 திக்கெஜம்
 கங்கா ஜலத்தினின்று
 எவ்வண்ணமோ
 அவ்வண்ணமே
 கரையேறினார்.

क्रोधदूषितनैलस्तु स ततोऽर्जुनपावकः । प्रज्वाल महाघोरो युगान्त इव पावकः ॥३९॥

ततः
 सः
 अर्जुनपावकः
 तु
 क्रोधदूषितनेलः

“அப்பொழுது
 அந்த
 அர்ஜுனராகுமக்கனி
 இவ்விஷயத்தில்
 கோபத்தால் கலங்கிய
 கண்களுற்றதாய்

महाघोरः
 युगान्तः
 पावकः इव
 प्रज्वाल
 மஹா பயங்கரமாயி
 ருக்கின்ற
 பிரளயகாலத்திய
 பாவக: இவ
 ஜ்வலித்தது.

स तूर्णतरमादाय वरहेमाङ्गदो गदाम् । अभिदुद्राव रक्षांसि तमांसीव दिवाकरः ॥४०॥

वरहेमाङ्गदः
 सः
 गदां
 तूर्णतरं
 आदाय

“மிகச்சிறந்த சுவர்ண
 தோள்வளைகளைப்
 அவர் [பூண்டிருந்த
 கதையொன்றை
 சடக்கென
 கையில் எடுத்துக்
 கொண்டு

रक्षांसि
 दिवाकरः
 तमांसि
 इव
 अभिदुद्राव
 அரக்கர்களை
 சூரியபகவான்
 இருளை
 எவ்வண்ணமோ,
 அவ்வண்ணமே
 விலக்கினார்.

बाहुविक्षेपकरणां समुद्यम्य महागदाम् । गारुडं वेगमास्थाय चापपातैव सोऽर्जुनः ॥४१॥

सः
 अर्जुनः
 गारुडं
 वेगं
 आस्थाय

“அந்த
 அர்ஜுனன்
 கருடபகவானைப்
 போன்ற
 உக்கிரத்தை
 அடைந்து

बाहुविक्षेपकरणां
 महागदां च
 समुद्यम्य एव
 आपपात
 கையால் சுழற்றிக்
 கொண்டிருக்கின்ற
 பெரும்கதையையே
 உயரத்தூக்கிக்
 கொண்டே
 கிட்டினோக்கினான்.

तस्य मार्गं समाह्वय विन्ध्योऽर्कस्येव पर्वतः ।

स्थितो विन्ध्य इवाकम्प्यः प्रहस्तो मुसलायुधः

॥ ४२ ॥

तस्य " அவரது
மार्గं வழியில்
मुसलायुधः முஸலமென்ற ஆயு
தத்தை யுடையவனும்
विन्ध्यः इव விந்தியமலைபோலவே
अकम्प्यः சலிக்காதவனுமான

प्रहस्तः பிரஹஸ்தன்
अर्कस्य சூர்யபகவானுக்கு
विन्ध्यः पर्वतः விந்தியமலை
इव எவ்வண்ணமோ அவ்
समाह्वय மறித்து [வண்ணமே
स्थितः நின்றான்.

ततोऽस्य मुसलं घोरं लोहबद्धं महोद्धतः ।

प्रहस्तः प्रेषयन्कुदो ररास च यथाऽम्बुदः ॥

प्रहस्तः " பிரஹஸ்தன்
ततः அப்பொழுது
महोद्धतः மஹா உக்கிரமான
कुदः கோபம்கொண்ட
வனாகி
लोहबद्धं கூர்மையான இரும்
புப்பூணிட்ட

घोरं மிகப்பெரியதாகிய
मुसलं முஸலமென்ற ஆயு
अस्य அவர்மீது [தத்தை
प्रेषयन् ஒங்கிப்போட்டான்.
च அதன்மேல்
अम्बुदः यथा அம்புது: யதா
ररास மேகமென
சிக்கலாதம்செய்தான்.

तस्याग्रे मुसलस्याग्निरशोकापीडसन्निभः ।

प्रहस्तकरमुक्तस्य बभूव प्रदहन्निव ॥ ४४ ॥

प्रहस्तकरमुक्तस्य " பிரஹஸ்தனது கை
யால்போடப்பட்ட
तस्य அந்த
मुसलस्य முஸலாயுதத்தினது
अग्रे முனையில்

अशोकापीडसन्निभः அசோகபூம்பமலை
போன்றதாய்
प्रदहन् इव கொளுத்தி எரிக்கிற
தாயுமிருக்கிற
अग्निः நெருப்பு
बभूव உண்டாயிற்று.

आधावमानं मुसलं कार्त्तवीर्यस्तदाजुनः ।

निपुणं वञ्चयामास सगदोऽगदविक्रमः ॥४५॥

अगदविक्रमः " குறையற்ற விக்ரம
சாலியும்
सगदः கதாபாணியுமான
कार्त्तवीर्यः கார்த்தவீர்யர் என்ற
अर्जुनः அர்ஜுனர்

तदा அப்பொழுது
आधावमानं ஒங்கிப்போடப்பட்ட
मुसलं முசலாயுதத்தை
निपुणं வெகுசாமர்த்த்யமாய்
वञ्चयामास மேல்விழாதபடி தப்
பிக்கொண்டார்.

ततस्तमभिदुद्राव प्रहस्तं हैहयाधिपः ।

आमयानो गदां गुर्वी पञ्चबाहुशतोच्छ्रयाम् ॥४६॥

ततः " அதன்மேல்
हैहयाधिपः ஹைஹயமன்னன்
पञ्चबाहुशतोच्छ्रयां { ஐந்துறு காங்களால்
உயரத்தூக்கப்பட்ட
டதும்
गुर्वी அதிக நீண்டதுமான

गदां கதையை
आमयानः சுழற்றிக்கொண்டு
तं அந்த
प्रहस्तं பிரஹஸ்தனை
अभिदुद्राव புடைத்தார்.

तथा हतोऽतिवेगेन प्रहस्तो गदया तदा । निपपात हतः शैलो वज्रिवज्रहतो यथा ॥४७॥

प्रहस्तः " பிரஹஸ்தன்
 अतिवेगेन மிக்க மும்முரமாய்ப்
 போடப்பட்ட
 गदया கதையால்
 हतः அடியுண்டவனாய்
 तदा அப்பொழுது
 वज्रिवज्रहतः இந்திரன் வஜ்ராயுதத்
 தால் அடியுண்டு

हतः உருவழிந்த
 शैलः மலை
 यथा तथा எவ்வண்ணமோ
 அவ்வண்ணமே
 निपपात பூமியில் படுத்து
 விட்டான்.

प्रहस्तं पतितं दृष्ट्वा मारीचशुकसारणाः । समहोदरघृन्नाक्षा ह्यपसृष्टा रणाजिरात् ॥४८॥

समहोदर- } " மஹோதரன், தூம்
 घृन्नाक्षाः } ராசுகன் இவர்களோ
 ठुक
 गदिय
 मारीचशुकसारणाः மாரீசனும், சுகனும்,
 ஸாரணனும்
 प्रहस्तं பிரஹஸ்தனை

पतितं படுத்துக்கிடப்பவ
 ठुक
 दृष्ट्वा கண்டு
 रणाजिरात् हि போர்க்களத்
 திலிருந்தே
 अपसृष्टा: ஓடிப்போயினர்.

अपक्रान्तेष्वमालेषु प्रहस्ते विनिपातिते । रावणोऽभ्यद्रवचूर्णमर्जुनं नृपसत्तमम् ॥ ४९ ॥

रावणः " ராவணன்
 प्रहस्ते பிரஹஸ்தன்
 विनिपातिते தரையில் படுத்துவிட
 अमालेषु அமைச்சர்கள் [வும்
 अपक्रान्तेषु ஓடிவிடவும்

नृपसत्तमं அரசோத்தமராகிய
 अर्जुनं அர்ஜுனரை
 तूर्णं உடனேயே
 अभ्यद्रवत् மேல்விழுந்து
 தாக்கினான்.

सहस्रबाहोस्तद्युद्धं विशद्बाहोश्च दारुणम् । नृपराक्षसयोस्तत्र चारुब्धं रोमहर्षणम् ॥ ५० ॥
 सागराविव संरुब्धौ चलन्मूलाविवाचलौ । तेजोयुक्ताविवादित्यौ प्रदहन्ताविवानलौ ॥
 बलोद्धतौ यथा नागौ वाशितार्थे यथा वृषौ । मेघाविव विनन्दन्तौ सिंहाविव बलोत्कटौ ॥
 रुद्रकालाविव क्रुद्धौ तदा तौ राक्षसार्जुनौ । परस्परं गदाभ्यां तौ ताडयामासतुर्भृशम् ॥

सहस्रबाहोः " ஆரிரம் புஜமுடைய
 வனும்
 विशद्बाहोः च இருபுதுபுஜமுடைய
 வனுமான
 नृपराक्षसयोः च { மாணிடமன்னவனுக்
 கும் அரசுக்களது
 மன்னனுக்கும்
 तत्र அக்காலத்தில்தான்
 आरुब्धं ஆரம்பமாகிய

तत्र அந்த
 रोमहर्षणं மயிர்க்கூச்செறிசிற
 தாய்
 दारुणं மிகபயங்கரமாய்
 மிருக்கின்ற
 युद्धं போரில்
 संरुब्धौ கரைபுரண்டு பொங்
 கும்
 सागरौ இரு சமுத்திரங்கள்

| | |
|----------|--|
| ஐவ | போன் நவர்களும் |
| வலமூலீ | { அடிவாரங்களுடனே பிடுங்கி எடுக்கப் பட்டு சஞ்சரிக்கின்ற |
| அவலீ | மலைகள் |
| ஐவ | போன் நவர்களும் |
| தேஜயுகீ | ஜோதிபெற்று விளங் கும் |
| அதிலீ | இருசூர்யர்கள் |
| ஐவ | போன் நவர்களும் |
| மஹ்நீ | கொழுந் துவிட்டு எரிகின்ற |
| அநலீ | இரண்டு அக்னிகள் |
| ஐவ | போன் நவர்களும் |
| வாரிதாபீ | ஒரு பெண்யானைக் காக |
| வலோஹீ | பலத்தால் செருக் குற்ற |
| நாகீ | இரு ஆண்யானைகள் |
| யथा | போன் நவர்களும் |
| வூபீ | இரண்டு எருதுகள் |

| | |
|------------|-------------------------------|
| யथा | போன் நவர்களும் |
| விநயீ | முழங்குகின்ற |
| மேயீ | இரண்டுமேகங்கள் |
| ஐவ | போன் நவர்களும் |
| வலோஹீ | வலிமிசூந்த |
| சிஹீ | இருசிக்கங்கள் |
| ஐவ | போன் நவர்களும் |
| தீ | அவ்விருவர்களாகிய |
| ரஹ்நீ | ருத்திரனும் காலனும் |
| ஐவ | போன் நவர்களு |
| தீ | அந்த [மாகிய |
| ராக்ஷஸுநீ | ராக்ஷஸமன்னனும், அர்ஜுனனும் |
| கூஹீ | கோபாவேசம்கொண் டவர்களாய் |
| ததா | அதனால் |
| ராதாப்யா | கதைகளினால் |
| பரஸ்பரீ | ஒருவரை ஒருவர் |
| மூசீ | அடிமேலடியாய் |
| தாடியாஸது: | அடித்துக்கொண் டார்கள். |

वज्रप्रहारानचला यथा घोराण्विषेहिरे । गदाप्रहारांस्तौ तत्र सेहते नरराक्षसौ ॥ ५४ ॥

| | |
|------------|---------------------------|
| தல | “ அக்காலத்தில் |
| தீ | அந்த |
| நரராக்ஷசீ | மானிடனும் அரக்க னும் |
| அவலா: | மலைகள் |
| வஜ்ரஹாராந் | வஜ்ராயுதப்பிரஹாரங் களை |
| யथा | எப்படி |

| | |
|------------|--|
| விஹீ | { பொறுத்துத்தாங் கிக்கொண்டனவோ, அவ்வண்ணமே |
| ஹாராந் | கடுமையான |
| ராதாஹாராந் | கதைகளின் பரஹா ரங்களை |
| சேஹீ | அனாயாசமாய் தாங் கிக்கொண்டார்கள். |

यथाऽशनिरवेभ्यस्तु जायतेऽथ प्रतिश्रुतिः । तथा तयोर्गदापोथैर्दिशः सर्वाः प्रतिश्रुताः ॥

| | |
|-------------|-------------------|
| அசநிரவேப்ய: | “ இடிமுழக்கங்களி |
| புதிசுதி: | எதிரொலி [விருந்து |
| யथा | எப்படி |
| ஜாயதே | உண்டாகிறதோ, |
| தथा | அவ்வண்ணமே |
| தயோ: | அவ்விருவர்களுடைய |

| | |
|-----------|-----------------------|
| ரதாபோதே: | கதைகளின் அடிகளால் |
| சர்வா: | எல்லா |
| திச: து | திக்குகளினும் |
| அथ | அப்பொழுது |
| புதிசுதா: | எதிரொலிகள் கேட்டன. |

अर्जुनस्य गदा सा तु पात्यमानाऽहितोरसि । काञ्चनाभं नभश्चक्रे विद्युत्सौदामिनी यथा ॥

| | | | |
|------------------|--------------------|--------------|--------------|
| अर्जुनस्य | “அர்ஜுனரது | पात्यमाना तु | விழுந்ததுமே |
| सा गदा | அந்த கதை | नभः | ஆகாயத்தை |
| अहितोरसि | எதிரியின் மார்பில் | काञ्चनाभं | பொன்நிறமுடைய |
| विद्युत्सौदामिनी | மின்னலுடன் விழும் | | தாய் |
| यथा | போன்றதாய் [இடி | चक्रे | செய்தது. |

तथैव रावणेनापि पात्यमाना मुहुर्मुहुः । अर्जुनोरसि निर्भाति गदोत्केव महागिरौ ॥५७॥

| | | | |
|-------------|--------------------|----------|---------------------|
| तथा एव | “அவ்வண்ணமே | गदा अपि | கதைதயும் |
| रावणेन | இராவணனால் | महागिरौ | மஹாகிரியில் |
| मुहुर्मुहुः | மேல் மேலும் | उत्का इव | பத்தி எரியும் தீயென |
| अर्जुनोरसि | அர்ஜுனரது மார்பில் | निर्भाति | விளங்கிற்று. |
| पात्यमाना | விழ்த்தப்பட்ட | | |

नार्जुनः खेद्मायाति न राक्षसगणेश्वरः । समासीत्तयोर्युद्धं यथा पूर्वं बलीन्द्रयोः ॥५८॥

| | | | |
|-------------|----------------------|----------------|--------------|
| पूर्वं | “முன்காலத்தில் | आसीत् | நடைபெற்றது. |
| बलीन्द्रयोः | பலிக்கும் இந்திரனுக் | अर्जुनः | அர்ஜுனன் |
| | கும் | खेद् | ஆயாசமென்பதை |
| यथा | எப்படியோ அப்படியே | न आयाति | அடையவில்லை. |
| तयोः | அவ்விருவர்களுக்கும் | राक्षसगणेश्वरः | ராட்சஸகணமன்ன |
| युद्धं | போர் | | னும் |
| समं | உயர்வுதாழ்வின்றி | न | அடையவில்லை. |

शृङ्गैरिव वृषा युध्यन्दन्ताग्रैरिव कुञ्जरौ । परस्परं विनिघ्नन्तौ नरराक्षससत्तमौ ॥ ५९ ॥

| | | | |
|------------|------------------|----------------|-----------------|
| शृषा | “இரு விருஷபங்கள் | इव | எவ்வண்ணமோ |
| शृङ्गैः | கொம்புகளால் | | அவ்வண்ணமே |
| युध्यन् | சண்டைபோடுவது | नरराक्षससत्तमौ | புருஷோத்தமனும், |
| इव | எவ்வண்ணமோ | | ராக்ஷஸோத்தமனும் |
| | அவ்வண்ணமே | परस्परं | ஒருவரையொருவர் |
| कुञ्जरौ | இரு யானைகள் | विनिघ्नन्तौ | மோதிக்கொண்டார் |
| दन्ताग्रैः | தந்தங்களால் | | கள். |

ततोऽर्जुनेन क्रुद्धेन सर्वप्राणेन सा गदा । स्तनयोरन्तरे मुक्ता रावणस्य महोरसि ॥६०॥

| | | | |
|-----------|-------------|-------------|-------------------|
| ततः | “அப்பொழுது | सर्वप्राणेन | முழு பலத்தோடு |
| सा | அந்த | रावणस्य | ராவணனது |
| गदा | கதை | स्तनयोः | ஸ்தனைகளுடைய |
| अर्जुनेन | அர்ஜுனரால் | अन्तरे | மத்தியப்ரதேசமாகிய |
| क्रुद्धेन | கோபங்கொண்டவ | महोरसि | அகன்ற மார்பில் |
| | ராய் | मुक्ता | விடுக்கப்பட்டது. |

वरदानकृतत्राणे सा गदा रावणोरसि । दुर्बलेत्र यथावेगं द्विधा भूत्वाऽपतक्षितौ ॥६१॥

सा गदा “அந்த கதை
வரம் பெற்றதால்
वरदानकृतत्राणे { கிடைத்த பழுதுக்
கிடமாகாததான
रावणोरसि राவணனது மார்பில்
यथावेगं எவ்வளவோ பலமு
டையதாயிருந்து

इव मुற்றीलुम्
दुर्बला वलुवற்றதாகி
द्विधा भूत्वा இரண்டாக முறிந்து
क्षितौ மண்மீது
अपतत् வீழ்ந்தது.

स त्वर्जुनप्रमुक्तेन गदापातेन रावणः । अपासर्पद्धनुर्मात्रं निषसाद् च निष्टनन् ॥ ६२ ॥

तु “என்றாலும்
अर्जुनप्रमुक्तेन அர்ஜுனனால் போடப்
பட்ட
गदापातेन கதையின்வீழ்ச்சியால்
रावणः ராவணன்
धनुर्मात्रं ஒரு விற்றகிடை

अपासर्पन् பின் ஒதுக்கினான்.
च அன்றியும்
सः அவன்
निष्टनन् கதறிக்கொண்டு
निषसाद् கிழே விழுந்து விட்டான்.

स विह्वलं तदालक्ष्य दशग्रीवं ततोऽर्जुनः ।

ततः “அந்த சமயத்தில்
सः அந்த
अर्जुनः அர்ஜுனர்
दशग्रीवं தசகீர்வளை
विह्वलं சோர்ந்து வீழ்ந்து
கிடக்கிறவகை
आलक्ष्य தூரத்திலிருந்தே
तत् ஆதலால் [பார்த்து

सहस्रोत्पत्य जग्राह गरुत्वानिव पन्नगम् ॥

गरुत्वान् கருடர்
पन्नगं சர்ப்பத்தின்மீது
इव எவ்வண்ணமோ,
अववண்ணमे अवவண்ணமே
सहसा சடக்கென
उत्पत्य ஒரேபாய்ச்சலாய்ப்
பாய்ந்து
जग्राह பற்றிக்கொண்டார்.

स तं बाहुसहस्रेण बलाद्गृह्य दशाननम् ।

नारायणः “ஸ்ரீமன் நாராயணன்
बलिं பலிசக்கிரவர்த்தியை
यथा எவ்வண்ணமோ, அவ்
सः அந்த [வண்ணமே
बलवान् பலவானான
राजा ராஜன்

बबन्ध बलवात्राजा बलिं नारायणो यथा ॥

तं அந்த
दशाननं தசானனனை
बाहुसहस्रेण ஆயிரம்கைகளால்
गृह्य पिடித்துக்கொண்டு
बलात् இறுக்கி
बबन्ध கட்டிவிட்டார்.

बध्यमाने दशग्रीवे सिद्धचारणदेवताः ।

दशग्रीवे “தசகீர்வன்
बध्यमाने கட்டுண்டவளவில்
सिद्धचारणदेवताः சித்தர்கள், சரரணர்
கள், தேவதைகள்
साधु “சபாஷ்”

साध्वीति वादिनः पुण्यैः किरन्त्यर्जुनमूर्धनि ॥

इति என்று
वादिनः கொண்டாடி,
अर्जुनमूर्धनि அர்ஜுனனது சிரவிலில்
पुण्यैः புஷ்பங்களால்
किरन्ति வருஷித்தார்கள்.

व्याघ्रो मृगमिवादाय मृगराडिव दन्तिनम् । ननाद हैहयो राजा हर्षाद्भुद्वनमुहुः ॥

हैहयः “ ஹைஹயதேச
 राजा மன்னவர்
 व्याघ्रः ஒரு புலி
 मृगं ஒரு மாணை
 इव எவ்வண்ணமோ அவ்
 வண்ணமே,
 मृगराट् ஒரு சிங்கம்
 दन्तिनं ஒரு யானையை

इव எவ்வண்ணமோ அவ்
 வண்ணமே
 आशय தூக்கிக்கொண்டு
 हर्षात् மகிழ்ச்சியால்
 अम्बुदवत् மேகமென
 मुहुः மீண்டும்
 ननाद ஆனந்தகோஷ
 மிட்டார்.

प्रहस्तस्तु समाश्वस्तो दृष्ट्वा बद्धं दशाननम् । सह तै राक्षसैः क्रुद्धश्चाभिदुद्राव पार्थिवम् ॥

प्रहस्तः “ பிரஹஸ்தன்
 समाश्वस्तः களைதெளிந்தவனாய்
 दशाननं தசானனை
 बद्धं பிடிபட்டுக் கட்டப்பட்ட
 दृष्ट्वा கண்டுபிடிக்கிறவனாக
 तु அதனால்

क्रुद्धः கோபங்கொண்டவ
 तैः அந்த [இகி
 राक्षसैः सह அரக்கர்களோடு
 पार्थिवं च மன்னரையே [கூடவே
 अभिदुद्राव மேல்விழ்ந்து தான்
 புறுத்தினான்.

नक्तञ्चराणां वेगस्तु तेषामापततां बभौ । उद्धूत आतपापाये पयोदानामिवाम्बुधौ ॥६८॥

अम्बुधौ “ஸமுத்திரத்தில்
 आतपापाये கோடைகாலமுடிவில்
 पयोदानां மேகங்களின்
 उद्धूतः போய்ச்சேருதல்
 इव எவ்வண்ணமோ அவ்
 வண்ணமே

तेषां அந்த
 आपततां மேல்விழ்ந்து தாக்கு
 கின்ற
 नक्तञ्चराणां அரக்கர்களுடைய
 वेगः तु உக்கிரமும்
 बभौ விளங்கிற்று.

मुञ्च मुञ्चेति भाषन्तस्तिष्ठ तिष्ठेति चासकृत् । मुसलानि सशूलानि सोत्ससर्ज तदाऽर्जुने ॥

तदा “ அப்பொழுது
 मुञ्च ‘ விட்டுவிடுக
 मुञ्च ‘ விட்டுவிடுக’
 इति என்றும்
 तिष्ठ ‘போகாதுநில்’
 तिष्ठ போகாதுநில்’
 इति என்றும்
 असकृत् பலமுறையும்

भाषन्तः உரக்கக்கூவினார்கள்;
 सः च அவனும்
 भर्जुं அர்ஜுனன்மீது
 सशूलानि சூலங்களுடனிருக்
 கின்ற
 मुसलानि முஸலமென்ற ஆயு
 उरससर्ज விடுத்தான். [தங்களை

अप्राप्तान्येव तान्याशु असंभ्रान्तस्तदाऽर्जुनः । आयुधान्यमरारीणां जग्राहारिनिषूदनः ॥

अरिनिषूदनः “ சத்ருசம்ஹாரகரா
 अर्जुनः அர்ஜுனன் [கிய
 तदा அப்பொழுது
 असंभ्रान्तः சற்றேனும் கலவரம்
 दैव्यात्வராய்
 असरारीणां தேவசத்ருக்களுடைய

तानि आयुधानि அந்த ஆயுதங்களை
 इव முற்றிலும்
 अप्राप्तानि பயன்றற்றவைகளாய்
 आशु அப்போதைக்கப்போ
 जग्राह தன்வசமாக்கிக் [தே
 கொண்டார்.

ததஸ்தீரேவ ரக்ஷாஸி துர்ஹே: த்ரவராயுதே: | தித்வா தித்ராவயாதிாஸ வாயுரத்துதரானிவ || ௩1 ||

| | | | |
|------------|--------------|------------------|-----------------|
| வாயு: | “வாயு | த்ரவராயுதே: த்ரவ | அருதையான ஆயுதத் |
| அத்துதரானி | தேகத் தக்ளை | | களாலேயே |
| தீவ | எவ்வண்ணதே | ரக்ஷாஸி | அரக்கர்களை |
| | அவ்வண்ணதே | திரிஷ | சிதற அடித்து |
| தத: | அத்துதராயுத | தித்ராவயாதிாஸ | ஒட்டத்திடிக்கத் |
| தீ: | அந்த | | செய்தார். |
| துர்ஹே: | அசஹயதாயிருத் | | |
| | கின்ற | | |

ராக்ஷாஸ்த்ராவயித்வா து கார்திவீரீயாஸ்துநஸ்ததா | ராவணம் தூஹ நகரம் த்ரவீஷ துஹூத்: || ௩2 ||

| | | | |
|--------------|---------------------|-----------|--------------------|
| ததா | “அத்துதராயுத | ராவணம் து | ராவணதேதத்தும் |
| கார்திவீரீய: | கார்த்தவீரீயர் என்ற | தூஹ | கட்டி இழுத்துத் |
| தூத்ரின: | அர்ஜுநர் | | கொண்டு |
| ராக்ஷாஸ்த்ர | அரக்கர்களை | துஹூத்: | ஆத்தர்களால் துழுத் |
| த்ராவயித்வா | தயந்ததேராதத் | | தட்டவராய் |
| | செய்துவிட்டு | நகரம் | தட்டணத்திற்கு |
| | | த்ரவீஷ | திரும்புதேரானர். |

ஸ கரீயதிாண: துதுதிாஸ்துதூக்ரீத்ரிஜீ: துதரீ: துருஹூதஸந்நித: |

ததாஸ்துந: த்ரத்ரவீஷ தா துரீ த்ரீ திநிதூஹேவ தஹஸ்துலுதன: || ௩3 ||

| | | | |
|----------------|---------------------|----------------|---------------------|
| தஹஸ்துலுதன: | “தேவேந்திரன் | ததா | அத்துதராயுத |
| த்ரீ | தலிசக்கிரவர்த்திதைய | | நகரவாசிகளுடன் |
| திநிதூஹ | திடித்துக்கொண்டு | துதரீ: | சேர்ந்து வந்திருத் |
| | வந்தது, | | கின்ற |
| தீவ | எவ்வண்ணதே, | த்ரிஜீ: | திராணர்களால் |
| | அவ்வண்ணதே | துருஹூதஸந்நித: | திருத்த துஷ்பங்களா |
| துருஹூதஸந்நித: | இந்திரனுக்கு திகரான | | ஹம் தங்களாசுததை |
| ஸ: | அந்த | கரீயதிாண: | களாலும் |
| தூத்ரின: | அர்ஜுநர் | | ஆசீர்வதிக்கத்துதற்ற |
| தா | அந்த | | வராய் |
| துரீ | நகரத்தில் | த்ரத்ரவீஷ | திரவேசித்தார். |

இத்யாஸீ த்ரிதூரதிாணே வால்திதிே ஆதிகாவ்யே

உத்தரகாண்டே தூத்ரிஷ: சரீர்: ||

रावणमोचनम्—ராவணனை விடுவீப்பது.

रावणग्रहणं तत्तु वायुग्रहणसन्निभम् । ततः पुलस्त्यः शुश्राव कथितं दिवि दैवतैः ॥ १ ॥

| | | | | |
|------------|---------------------------------------|---------------------|---|------------------|
| புலஸ்த்ய: | “ புலஸ்த்யர் | वायुग्रहणसन्निभं तु | { | காற்றையே கையில் |
| दिवि | சுவர்க்கலோகத்தில் | | | கட்டிவிட்டது |
| दैवतैः | தேவர்களால் | कथितं | { | போலிருக்கிறதாய் |
| ततः | அப்பொழுது | | | பேசிக்கொள்ளப் |
| तत् | அந்த | | | பட்டதாக |
| रावणग्रहणं | ராவணனைக் கட்டிப் பிடித்திருக்கிறது | शुश्राव | | கேள்விப்பட்டார். |

ततः पुत्रकृतस्नेहात्कम्प्यमानो महाधृतिः । माहिष्मतीपतिं द्रष्टुमाजगाम महामुनिः ॥ २ ॥

| | | | |
|------------------|-------------------|---------------|-----------------|
| ततः | “ அதனால் | कम्प्यमानः | மனக்கலக்கம்கொண் |
| महाधृतिः | மஹாசாமர்த்திய | | டவராய் |
| महामुनिः | மஹரிஷி [சாலியாகிய | माहिष्मतीपतिं | மா ஹிஷ்மதீ |
| पुत्रकृतस्नेहात् | { | द्रष्टुं | நேரில்காண |
| | | | |
| | திவள்ள ஆசைப் | आजगाम | எழுந்தருளினார். |
| | பெருக்கினால் | | |

स वायुमार्गमास्थाय वायुतुल्यगतिर्द्विजः । पुरीं माहिष्मतीं प्राप्नो मनःसंपातविक्रमः ॥ ३ ॥

| | | | | |
|-----------------|---|----------------------|------------|-------------------|
| वायुतुल्यगतिः | { | “வாயுவுக்கு நிகராகிய | सः द्विजः | அந்த பிராமணர் |
| | | போக்கையுடை | वायुमार्गं | ஆகாயமார்க்கமாகவே |
| | | யவரும் | आस्थाय | சென்று |
| मनःसंपातविक्रमः | { | மனதில் எண்ணியதை | माहिष्मतीं | மா ஹிஷ்மதீ |
| | | | | |
| | | தியசாலியுமாகிய | प्राप्तः | போய்ச்சேர்ந்தார். |

सोऽमरावतिसङ्काशां हृष्टपुष्टजनाकुलाम् । प्रविवेश पुरीं ब्रह्मा इन्द्रस्यैवामरावतीम् ॥ ४ ॥

| | | | | |
|-----------|-------------|---------------------------|---|--------------------|
| इन्द्रस्य | “ இந்திரனது | हृष्टपुष्ट- जनाकुलां } | { | சர்வகாமங்களும் கை |
| अमरावतीं | அமராவதியில் | | | கூடப்பெற்று திருப் |
| ब्रह्मा | பிரம்மதேவர் | | | தி கொண்ட ஜனங் |
| इव | எவ்வண்ணமோ | | | களால் நிறைந்துள் |
| | அவ்வண்ணமே | अमरावतिसङ्काशां | | ளதும் |
| सः | அவர் | | | அமராவதிபோலிருக் |
| | | पुरीं | | கிறதமான |
| | | प्रविवेश | | பட்டணத்தில் |
| | | | | பிரவேசித்தார். |

पादचारमिवादित्यं निष्पतन्तं सुदुर्दशम् । ततस्ते प्रत्यभिज्ञाय द्वाःस्था राज्ञे न्यवेदयन् ॥

| | | | |
|------------|------------------------|---------------|--------------------|
| ते | “ அந்த | धादित्यं | ஞாயபகவானை |
| द्वाःस्थाः | வாயில் காப்போர்கள் | इव | போலிருக்கிற அவரை |
| सुदुर्दशं | { பார்க்கக்கண் கூசுகி | प्रत्यभिज्ञाय | இன்னொன்று கேட்க |
| निष्पतन्तं | { ன்ற ஒளியுடன் | | டறிந்துகொண்டு |
| | { விளங்குகிறவரும் | ततः | உடனே |
| | { இடத்தைவிட்டு எழுந் | राज्ञे | மன்னருக்கு |
| | { தருளியவராய் | न्यवेदयन् | தெரியப்படுத்தினார் |
| पादचारं | { பூமியை ஸ்பர்சித்துக் | | கள். |
| | { கால்கடையாய் வரு | | |
| | { கின்ற | | |

पुलस्त्य इति विज्ञाय वचनाद्द्वैहयाधिपः । शिरस्यञ्जलिमाधाय प्रत्युदच्छत्तपस्विनम् ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|---------------|------------------|
| द्वैहयाधिपः | “ ஹைஹயமன்னர் | अर्जलिं | கைகூட்புதலை |
| वचनात् | சொன்னதிலிருந்து | आधाय | செய்துகொண்டு |
| पुलस्त्यः | புலஸ்தியர் | तपस्विनं | தபசியை |
| इति | என்று | प्रत्युदच्छत् | எதிர்கொண்டு சென் |
| विज्ञाय | தெரிந்துகொண்டு | | றார். |
| शिरसि | முடிமேல் | | |

पुरोहितोऽस्य गृह्णार्थं मधुपर्कं तथैव च । पुरस्तात्प्रययौ राज्ञः शक्रस्येव बृहस्पतिः ॥७॥

| | | | |
|-----------|-----------------|------------|-------------------|
| शक्रस्य | “ இந்திரனுக்கு | तथा एव | அவ்வண்ணமே |
| बृहस्पतिः | பிரஹஸ்பதி | मधुपर्कं च | மதுபர்க்கத்தையும் |
| इव | எப்படியோ அப்படி | गृह्य | கையில்கொண்டு |
| अस्य | இவரது [யே | राज्ञः | மன்னனுக்கு |
| पुरोहितः | புரோஹிதர் | पुरस्तात् | முன்னே |
| अर्थं | அர்க்யத்தையும் | प्रययौ | சென்றார். |

ततस्तमृषिमायान्तमुद्यन्तमिव भास्करम् । अर्जुनो दृश्य संभ्रान्तो ववन्देन्द्र इवैश्वरम् ॥

| | | | |
|----------|------------------|------------|------------------|
| अर्जुनः | “ அர்ஜுனர் | दृश्य | பார்த்து |
| उद्यन्तं | உதயமான | ततः | உடனே |
| भास्करं | ஞாயபகவானை | संभ्रान्तः | பரபரப்புடையவராகி |
| इव | போன்ற | ईश्वरं | ஈசுவரனை |
| धायान्तं | எழுந்தருளியிருக் | इन्द्रः | இந்திரன் |
| | கின்ற | इव | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| तं | அந்த | | வண்ணமே |
| ऋषिं | முனிவரை | ववन्द | அடிபணிந்தார். |

स तस्य मधुपर्कं गां पाद्यमर्घ्यं निवेद्य च । पुलस्त्यमाह राजेन्द्रो हर्षगद्गदया गिरा ॥९॥

ச: "அந்த
 ராஜேந்திரத்தமர்
 தச्य அவருக்கு
 அர்க்யத்தையும்
 பாடியத்தையும்
 மதுபர்க் மதுபார்க்கத்தையும்
 கா் ச பசுவின் பாலையும்

निवेद्य சமர்ப்பித்து
 पुरस्सं புலஸ்த்யரைப்
 हर्षगद्गदया ஸந்தோஷத்தால்
 गिरा தழுதழுத்த
 आह ஒருமொழிகொண்டு
 விஞ்ரூபனம் பண்
 னிக்கொண்டார்:

अथैवमपरावत्या तुल्या माहिष्मती कृता । अद्याहं तु द्विजेन्द्र त्वां यस्मात्पश्यामि दुर्दृशम् ॥

द्विजेन्द्र "அந்தணப்
 பெருமானே!
 अद्य तु இப்பொழுதுதான்
 माहिष्मती மாஹிஷ்மதீரகர்
 भमरावत्या அமராவதிக்கு
 तुल्या சமானமானதாக
 कृता விளங்குகிறது.
 यस्मात् ஏனென்றால்

अहं நான்
 अद्य இப்பொழுது
 दुर्दृशं தரிசிப்பதற்கரியவ
 राक्ष्य ராக்ஷ
 एवं இப்படிப்பட்ட
 त्वां தேவரீரை
 पश्यामि பிரத்யக்ஷத்தில்
 दृश्यामि தரிசிக்கப்பெற்றேன்.

अद्य मे कुशलं देव अद्य मे कुशलं व्रतम् । अद्य मे सफलं जन्म अद्य मे सफलं तपः ॥

यस्माद्देवगणैर्वन्द्यौ वन्देऽहं चरणौ तव

॥ ११ ॥

देव "தேவரே!
 अहं நான்
 देवगणैः தேவகணங்களால்
 वन्द्यौ வணங்கப்பெற்ற
 तव தேவரீரது
 चरणौ திருவடிகளை
 वन्दे சேவிக்கப்பெற்றேன்.
 यस्मात् இதனால்
 अद्य இன்றே
 मे அடியேனது
 व्रतं விருதம்
 कुशलं பூர்த்திடாய் விளங்கு
 கிறது.

अद्य இன்றே
 मे அடியேனது
 जन्म ஜன்மம்
 सफलं சபலமாகியது.
 अद्य இன்றே
 मे அடியேனது
 तपः தவம்
 सफलं சபலமாகியது.
 अद्य இன்றே
 मे அடியேனுக்கு
 कुशलम् சர்வமனோபிஷ்டமும்
 கைகடியது.

इदं राज्यमिमे पुत्रा इमे दारा इमे वयम् । ब्रह्मन्किं कुर्मि किं कार्यमाज्ञापयतु नो भवान् ॥

ब्रह्मन् "ஸ்வராமியே!
 किं कुर्मि அடியேன் செய்யவே
 इदं राज्यं இந்த ராஜ்யம்
 इमे पुत्राः இந்த புத்திரர்கள்
 इमे दाराः இந்த மனையாட்டிகள்
 वयं நாங்கள்

इमे காத்துநிரக்கின்றோம்.
 भवान् தேவரீர்
 नः எங்களை
 कार्यं ஆகவேண்டியது
 किं எதுவோ அதை
 आज्ञापयतु ஆஞ்ரூபித்தருள
 வேண்டும்.

तं धर्मोऽग्निषु पुत्रेषु शिवं पृष्ट्वा च पार्थिवम् । पुलस्त्योवाच राजानं हैहयानां तथाऽर्जुनम् ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|----------|-------------------|
| புலஸ்த்ய: | “ புலஸ்த்யர் | अग्निषु | ஊபாசனூக்கனி |
| हैहयानां | ஹேஹயதேசத்திற்கு | पुत्रेषु | விஷயங்களிலும் |
| राजानं | மன்னரான | शिवं | புத்தர்கள் விஷயத் |
| तं | அந்த | केशमத்தை | [திலும் |
| अर्जुनं | அர்ஜுனரென்ற | पृष्ट्वा | விசாரித்து |
| पार्थिवं | சக்கிரவர்த்தியை | च | பின்னர் |
| धर्मं | தருமங்களைப் | तथा | இவ்விதமாய் |
| | பற்றியதிலும் | उवाच | திருவாய்மலர்ந்தரு |
| | | | ளிணர்: |

नरेन्द्राम्बुजपलाक्ष पूर्णचन्द्रनिभानन । अतुलं ते बलं येन दशग्रीवस्त्वया जितः ॥ १४ ॥

| | | | |
|-------------------|--|----------|----------------------------------|
| अम्बुजपलाक्ष | “ தாமரை இதழ் போன்ற நேத்திரங் களை உடையவனே ! | दशग्रीवः | தசகரீவன் |
| पूर्णचन्द्रनिभानन | | जितः | ஸ்வதந்திரமிழந்தி ருக்கின்றான் |
| नरेन्द्र | முழுமதிபோன்ற முகமுடையவனே ! | येन | என்கிறபடியால் |
| त्वया | புருஷோத்தம ! உன்னால் | ते बलं | உனது பராக்கிரமம் |
| | | अतुलम् | அதவிதீயமாய் விளங் குகிறது. |

भयाद्यस्योपतिष्ठेतां निष्पन्दौ सागरानिलौ । सोऽयं मृधे त्वया बद्धः पौत्रो मे रणदुर्जयः ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------|-----------|----------------------------------|
| यस्य | “ எவனுக்கு | मे | எனது |
| भयात् | அஞ்சியதால் | पौत्रः | பெளத்திரன். |
| सागरानिलौ | கடலும், காற்றும் | त्वया | உன்னால் |
| निष्पन्दौ | கட்டுக்குள்பட்டவை களாய் | मृधे | போரில் |
| उपतिष्ठेतां | பணிர் துறடக்கின்றன வோ, | रणदुर्जयः | எவனாலும் வெல்வதற் |
| सः | அவன் | अयं | இவன் [கரியனாகிய |
| | | बद्धः | பிடித்துக்கட்டிவிடப் பட்டான். |

पुत्रकस्य यशः पीतं नाम विश्रावितं त्वया । मद्राक्याद्याच्यमानोऽद्य मुञ्च वत्स दशाननम् ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------|-------------|--------------------------------------|
| वस्य | “ குழந்தாய் ! | अद्य | இப்பொழுது |
| त्वया | உன்னால் | याच्यमानः | என்னால் ஒன்று யாசி க்கப்பட்டவனாய் |
| पुत्रकस्य | பெளத்திரனுடைய | मद्राक्यात् | எனது வேண்டுகோள் |
| विश्रावितं | எங்கும் பரவியிருந்த பட்டது. | दशाननं | தசானனை |
| यशः | புகழானது | मुञ्च | விட்டுவிடு. |
| पीतं | பானம் செய்துவிடப் பட்டது. | | |
| नाम | இது வெகு ஆச்சரிய மே! | | |

पुलस्त्याज्ञां प्रवृहोचे न किञ्चन वचोऽर्जुनः । मुमोच वै पार्थिवेन्द्रो राक्षसेन्द्रं प्रहृष्टवत् ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------|---------------|---------------------------|
| अर्जुनः | “ अर्जुन | ऊचे न | பதிலாய்ச்சொல்ல |
| पार्थिवेन्द्रः | மன்னர் | | வில்லை. |
| पुलस्त्याज्ञां | புலஸ்தீயரது நிய மனத்தை | प्रहृष्टवत् | பரமானந்தம் கொண் டவராகி |
| प्रगृह्य | கொளரவித்து | राक्षसेन्द्रं | ராஷ்டஸமன்னனை |
| किञ्चन | எந்த ஒரு | मुमोच | கட்டினின்று விட்டு |
| वचः वै | வார்த்தையைப் | | விட்டார். |

स तं प्रमुच्य त्रिदशारिर्मर्जुनः प्रपूज्य दिव्याभरणस्त्रगम्बैः ।

अर्हिसकं सख्यमुपेत्य सायिकं प्रणम्य तं ब्रह्मसुतं गृहं ययौ ॥ १८ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|------------|--------------------|
| सः | “ அந்த | अर्हिसकं | நாம் ஒருவரை ஒருவர் |
| अर्जुनः | அர்ஜுனர் | | ஹிம்சைசெய்யாதபடி |
| त्रिदशारिं | தேவசக்ருவான | सख्यं | ஒற்றுமையாயிருத் |
| तं | அவனை | | தலை |
| प्रमुच्य | விடுதலைசெய்து | उपेत्य | செய்துகொண்டு |
| दिव्याभरण- | திவ்யமான ஆபரணங் | ब्रह्मसुतं | பிரம்மாவின் புதல்வ |
| स्त्रगम्बैः | கள், பூமாலிகள், ... | | ரான |
| | வஸ்திரங்கள் இவை | तं | அவரை |
| | களால் | प्रणम्य | ஸரஷ்டாங்கமாய் நம |
| प्रपूज्य | மரியாதை செய்து | | ஸ்காரம் செய்து |
| | கொண்டாடி | गृहं | வீட்டிற்கு |
| सायिकं | அக்கினிசாக்ஷிகமாக | ययौ | சென்றனர். |

पुलस्त्येनापि सन्त्यक्तो राक्षसेन्द्रः प्रतापवान् । परिष्वक्तः कृतातिथ्यो लज्जमानो विनिर्जितः॥

| | | | |
|---------------|-----------------|----------------|-------------------|
| विनिर्जितः | “ அபஜயமடைந்த | कृतातिथ्यः | அதிதிபூஜை பெற்றவ |
| प्रतापवान् | பிரதாபசாலியாகிய | | னாய் |
| राक्षसेन्द्रः | ராஷ்டஸமன்னன் | लज्जमानः | வெட்கத்தலைகுனிந்த |
| | | | வனாய் |
| परिष्वक्तः | தழுவிக்கொள்ளப் | पुलस्त्येन अपि | புலஸ்தியராலும் |
| | பட்டவனாய் | सन्त्यक्तः | போகவிடுக்கப் |
| | | | பட்டான். |

पितामहसुतश्चापि पुलस्त्यो मुनिपुङ्गवः । मोचयित्वा दशश्रीवं ब्रह्मलोकं जगाम ह ॥२०॥

| | | | |
|--------------|---------------------|--------------|-------------------|
| मुनिपुङ्गवः | “ முனிச்சீரேஷ்டரும் | दशश्रीवं अपि | தசக்ரீவனையும்கட |
| पितामहसुतः च | பிரம்மதேவப்புதல் | मोचयित्वा | ஸ்வதந்திரம்பெறச் |
| | வருமாகிய | | செய்து |
| पुलस्त्यः | புலஸ்தியர் | ब्रह्मलोकं | பிரம்மலோகத்திற்கு |
| | | जगाम ह | எழுந்தருளினார். |

एवं स रावणः प्राप्तः कर्त्वीर्यात्प्रव्रणम् । पुलस्त्यवचनाच्चापि पुनर्भुक्तो महाबलः॥२१॥

ச: "அந்த
 மஹாபலிஷ்டனாகிய
 ராவணனும்
 கார்ந்தவீர்பனிடத்
 திரிந்து

प्रवर्षं अवमानत्ते, क
 प्राप्तः பெற்றான்.
 पुनः अपि அப்படியிருந்தும்
 पुलस्त्यவனாत् च புலஸ்த்யவனாது
 நியமனத்தால் தான்
 भुक्तः வெளிப்பட்டான்.

एवं बलिभ्यो बलिनः सन्ति राघवनन्दन । नानृणां हि परे कार्या य इच्छेत्प्रियमात्मनः॥

राघवनन्दन "राकुवட்சத்தில
 பிறந்த பிள்ளாய்!

एवं இப்படித்தான்
 பலிஷ்டனென்று
 बलिभ्यः { கொண்டாடப்படு
 வர்களைக்காட்டும்
 बलिनः பலவான்கள்
 सन्ति இருக்கின்றனர்
 हि என்கிறபடியால்

आत्मनः தனக்கு
 प्रियं நன்மையை
 यः எவன்
 इच्छेत् கருதுகின்றானோ,
 अतः वेत्तु ஒருவனிடத்
 अनृणां அவமதிப்பு [கிலும்
 न कार्या செய்யலாகாது.

ततः स राजा पिशिताशनानां सहस्रबाहोरुपलभ्य मैत्रीम् ।

पुनर्नृपाणां कदनं चकार चचार सर्वां पृथिवीं च दर्पात् ॥ २३ ॥

पिशिताशनानां "அரக்கர்களுக்கு
 राजा மன்னனாகிய
 सः அவன்
 पुनः இப்படி எல்லாமாகி
 सहस्रबाहोः ஆபிரம்கைகளை
 உடையவனுடைய
 मैत्री उलभ्य நட்பைப்பெற்று

ततः च அதன்மேலும்
 दर्पात् செருக்கால்
 पृथिवीं உலகு
 सर्वां முழுமையும்
 चचार திரிந்தான்.
 नृपाणां மன்னவர்களுக்கு
 कदनं நாசத்தை
 चकार விளைவித்தான்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे त्रयविंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22122



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 1398

चतुर्विंशः सर्गः—முப்பத்துநான்காவது ஸர்க்கம் ॥ २३ ॥

वालिरावणसख्यम्—வாலியும் ராவணனும் சினேகம்செய்துகொள்வது.

अर्जुनेन विमुक्तस्तु रावणो राक्षसाधिपः । चचार पृथिवीं सर्वापनिर्विण्णस्तथा कृतः ॥

राक्षसाधिपः "ராக்கூஸமன்ன
 रावणः இராவணன் [னாகிய
 अर्जुनेन அர்ஜுனரால்
 विमुक्तः तु கட்டுண்டுவிடப்பட்ட
 வனாயிருந்தும்
 तथा இன்னும்

अनिर्विण्णः { ததரியத்தில் சேர்
 வை அடையா
 தவனாகவே
 कृतः விளங்கிக்கொண்டு
 पृथिवीं सर्वा பூமிமுழுமையும்
 चचार திரிந்தான்.

राक्षसं वा मनुष्यं वा शृणुते यं बलाधिकम् । रावणस्तं समासाद्य युद्धे ह्यति दर्पितः ॥

| | | | |
|------------|------------------------------------|----------|----------------------------|
| रावणः | “ இராவணன் | बलाधिकं | பலத்தில் மேம்பட்ட |
| यं | எவனாவது ஒருவனை | शृणुते | அறிகிறானே [வனாக |
| राक्षसं वा | ராக்கூஸனாயிருந்தா லும்சரி, | तं | அவனை |
| मनुष्यं वा | அல்லது மானிடனாக இருந்தாலும்சரி, | दर्पितः | கர்வம்கொண்டவனாய் கிட்டி |
| | | समासाद्य | போருக்கு |
| | | युद्धे | அழைப்பான். |
| | | ह्यति | |

ततः कदाचित्किष्किन्धां नगरीं बालिपालिताम् । गत्वा ह्यति युद्धाय बालिनं हेममालिनम् ॥

| | | | |
|-------------|---------------------------------|-----------|-------------------------|
| कदाचित् | “ ஒரு சமயத்தில் | ततः | அவ்விடத்தில் |
| बालिपालितां | வாலியினால் பரிபா லிக்கப்பட்ட | हेममालिनं | பொன்மலை பூண்ட வனாகிய |
| किष्किन्धां | கிஷ்கிந்தா | बालिनं | வாலியை |
| नगरीं | புரிக்கு | युद्धाय | போருக்கு |
| गत्वा | சென்று | ह्यति | அழைத்தான். |

ततस्तु वानरामात्यस्त्वारस्तारापिता प्रभुः । उवाच वानरो वाक्यं युद्धप्रेप्सुमुपागतम् ॥४॥

| | | | |
|-------------|----------------------------|----------------|-------------------------------|
| वानरामात्यः | “ வானரரின் மந்திரி யும் | युद्धप्रेप्सुं | போரில் உத்தேசம் கொண்டவனாய் |
| तारापिता | தாரையின் தந்தையும் | उ रागतं | வந்திருக்கின்ற அவ னுக்கு |
| प्रभुः | மஹாசாமர்த்தியசாலி | तु | இதுவிஷயத்தில் |
| तारः | தாரனென்ற [புமாய | वाक्यं | இந்தபதிலை |
| वानरः | வானரன் | उवाच | சொன்னான்: |
| ततः | அங்கே | | |

राक्षसेन्द्र गतो वाली यस्तै प्रतिबलो भवेत् । कोऽन्यः प्रमुखतः स्थातुं तव शक्तः पुवङ्गमः ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------------|----------|-------------------|
| राक्षसेन्द्र | “ ராக்கூஸமன்னனை ! | तव | உனக்கு |
| ते | உனக்கு | प्रमुखतः | எதிரில் |
| प्रतिबलः | நடான பலிஷ்டர் | स्थातुं | எதிர்த்து நிர்க்க |
| यः | எவர் | शक्तः | ஆற்றலுடைய |
| भवेत् | ஆகுவாரோ அந்த | अन्यः | மற்றொரு |
| वाली गतः | வாலி வெளியில் போயிருக்கின்றார். | पुवङ्गमः | வானரன் |
| | | कः | எங்கிருக்கிறான். |

चतुर्भ्योऽपि समुद्रेभ्यः सन्ध्यामन्वास्य रावण । इदं सुहूर्तमायाति वाली तिष्ठ सुहूर्तकम् ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|------------------|--------------------------------------|
| रावण | “ இராவண ! | इदं सुहूर्तं अपि | இந்த ஒரு முஹூர்த் தந்திற்குள்ளேயே |
| वाली | வாலி | आयाति | திரும்பிவந்துவிடுவார் |
| चतुर्भ्यः | நான்கு | सुहूर्तकं | ஒருமுஹூர்த்தகாலம் |
| समुद्रेभ्यः | சமுத்திரங்களிலும் | तिष्ठ | இங்கேயே தங்கிக் காத்திரு. |
| सन्ध्यां | சந்தியோபாசத்தை | | |
| अन्वास्य | செய்துவிட்டு | | |

एतानस्थिचयान्पश्य य एते शङ्खपाण्डुराः । युद्धार्थिनामिमे राजन्वानराधिपतेजसा ॥७॥

| | |
|------------|---------------------|
| राजन् | “அரசே ! |
| एतान् | இதோ இருக்கின்ற |
| अस्थिचयान् | எனும்புக்குவியல்களை |
| पश्य | கவனித்துப்பார். |
| ये | எப்படிப்பட்டதாய் |
| इमे | கண்முன் இருக்கிற |

| | |
|---------------|------------------|
| एते | இந்த |
| शङ्खपाण्डुराः | வெளுத்த மண்டை. |
| | ஒடுகள் |
| युद्धार्थिनां | போராவேண்டி. |
| | வந்தவர்களுடையது; |
| वानराधिरोजसा | வானரமன்னரது |
| | கொடுமையாலானது. |

यद्वासमृतरसः पीतस्त्वया रावण राक्षस । तदा वालिनमासाद्य तदन्तं तव जीवितम् ॥८॥

| | |
|---------|----------------|
| राक्षस | “ராக்ஷஸ ! |
| रावण | ராவண ! |
| त्वया | உன்னால் |
| अमृतरसः | தேவாமிருதமானது |
| पीतः | பானம்செய்யப் |
| | பட்டது |

| | |
|-----------|---------------------|
| यद्वा | என்கிற பகைத்திலும் |
| तदा | அப்போதும் |
| वालिनं | வாலியை |
| आसाद्य | மேல்விழ்ந்துதாக்கிய |
| तव जीवितं | உனது உயிர் |
| तदन्तम् | அதுமட்டுந்தான். |

पश्येदानीं जगच्चित्रमिमं विश्रवसः सुत । इदं मुहूर्तं तिष्ठस्व दुर्लभं ते भविष्यति ॥ ९ ॥

| | |
|----------|--|
| विश्रवसः | “விசுவசின் |
| सुत | புதல்வனே ! |
| इदं | இந்த |
| मुहूर्तं | முஹூர்த்தகாலம் |
| तिष्ठस्व | பொறுத்திரும். |
| ते | உனக்கு |
| दुर्लभं | { இதுவரையில் அனுப வத்தில்கண்டிராத ஒருவரை |

| | |
|------------|---------------------------------------|
| भविष्यति | நேரில் சந்தித்தல் |
| | வினையும் |
| इदानीं | இப்பொழுது |
| जगच्चित्रं | உலகிலெங்கும் பிரசுத் திபெற்றவராகிய |
| इमं | இவரை |
| पश्य | நேரில் காண்பீர். |

अथ वा त्वरसे मर्तुं गच्छ दक्षिणसागरम् । वालिनं द्रक्ष्यसे तत्र भूमिस्थमिव भास्करम् ॥

| | |
|-------------|-------------------|
| मर्तुं | “மாணமடைய |
| त्वरसे | அவஸரப்படுகின்றாய் |
| अथ वा | என்றால் |
| दक्षिणसागरं | தென்சமுத்திரத் |
| | திற்கு |
| गच्छ | செல்லுக. |

| | |
|------------|-----------------|
| तत्र | அவ்விடத்தில் |
| भूमिस्थं | பூமியில் எழுந்த |
| भास्करं | சூர்யபகவானை |
| इव | போலிருக்கிற |
| वालिनं | வாலியை |
| द्रक्ष्यसे | காணப்பெறுவாய். |

स तु तारं विनिर्भर्त्स्य रावणो लोकरावणः । पुष्पकं तत्समारुह्य प्रययौ दक्षिणार्णवम् ॥

| | |
|----------------|-----------------|
| लोकरावणः | “உலகைக் கதற |
| सः | அந்த [அடிக்கும் |
| रावणः | இராவணன் |
| तारं | தாரனை |
| विनिर्भर्त्स्य | கிட்டுவிட்டு |
| उ | உடனே |

| | |
|--------------|-------------------|
| तत् | அந்த |
| पुष्पकं | புஷ்பகமிமானத்தில் |
| समारुह्य | ஏறிக்கொண்டு |
| दक्षिणार्णवं | தென்சமுத்திரத் |
| | திற்கு |
| प्रययौ | போய்ச்சேர்ந்தான். |

तत्र हेमगिरिप्रख्यं तरुणार्कनिभाननम् । रावणो वालिनं दृष्ट्वा सन्ध्योपासनतत्परम् ॥ १२ ॥

तत्र " अवंவிடத்தில்
 रावणः रावணன்
 वालिनं वालியை
 हेमगिरिप्रख्यं மேருமலைபோலிருக்கிற

तरुणार्क- } பாலகூர்யனைப்
 निभाननं } போன்ற முகமுடையவனாகவும்
 सन्ध्योपासन- } ஸந்த்யோபாசன
 तत्परं } மொன்றிலேயே
 दृष्ट्वा ஆஸக்தியுடனிருப்பகண்டான். [வனாகவும்

पुष्पकादवरुह्याथ रावणोऽञ्जनसन्निभः । प्रहीतुं वालिनं तूर्णं निःशब्दपदमात्रजत् ॥ १३ ॥

अथ " அப்பொழுது
 अञ्जनसन्निभः அஞ்சனமலைபோலிருக்கின்ற
 रावणः இராவணன்
 पुष्पकात् புஷ்பகவிமானத்திலிருந்து
 तूर्णं சீக்கிரமாக

अवरुह्य இறங்கி
 वालिनं वालியை
 प्रहीतुं தெரியாமலே பின்புறமிருந்து பிடிப்பதற்கு
 निःशब्दपदं ஒசைப்படாமல் காலடிவைத்துக்கொண்டு
 मात्रजत् சென்றான்.

यदृच्छया तदा दृष्टो वालिनाऽपि स रावणः । पापामिप्रायवान्दृष्ट्वा चकार न तु संभ्रमम् ॥

वालिना " वालியினால்
 तदा அந்தசமயத்தில்
 रावणः अपि இராவணனும்
 यदृच्छया தெய்வாதீனமாய்
 दृष्टः { இன்னான் இன்னது செய்யப்போகிறானென்று கண்டுகொள்ளப்பட்டவனானான்.

सः அவன்
 पापामिप्रायवान् தீயஎண்ணம் கொண்டவனென
 दृष्ट्वा तु அறிந்திருந்தும்
 संभ्रमं அப்படி இப்படி அசைத்தலை
 न चकार செய்யாதிருந்தான்.

शशमालक्ष्य सिंहो दा पन्नगं गरुडो यथा । न चिन्तयति तं वाली रावणं पापनिश्चयम् ॥

वाली " वाली
 तं அந்த
 रावणं இராவணனை
 पापनिश्चयं { தீங்குசெய்யத்தீர்மானம் கொண்டு வந்திருக்கிறவனாக
 आरुक्ष्य அறிந்து

सिंहः சிங்கம்
 शशं முயலையும்
 गरुडः கருடன்
 पन्नगं वा சர்ப்பத்தையும்
 यथा எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே
 न चिन्तयति லக்ஷ்யம் செய்யவில்லை.

जिघृक्षमाणमायान्तं रावणं पापचेतसम् । कक्षावलम्बितं कृत्वा गमिष्ये त्रीन्महार्णवान् ॥

जिघृक्षमाणं " பிடித்துக்கட்டிவிடவேண்டுமென்கிற
 पापचेतसं துஷ்ட எண்ணங்கொண்டு
 आयान्तं வந்துகொண்டிருக்க
 रावणं இராவணனை [கின்ற

कक्षावलम्बितं கக்கங்களிலே சிக்கிக்கொண்டவனாக
 कृत्वा செய்துகொண்டு
 गमिष्ये மூன்று
 त्रीन्महार्णवान् மஹாசமுத்திரங்களுக்கும்
 गमिष्ये போகப்போகிறேன்.

द्रक्ष्यन्त्यरिं ममाङ्गस्थं संसदृकराम्बरम् । लम्बमानं दशश्रीवं गरुडस्येव पन्नगम् ॥ १७ ॥

| | | | |
|----------|----------------------------|--------------|---|
| அரி | “லோகத்வேஷி | | |
| दशश्रीवं | தசசுரீஷிணை [யாகிய | संसदृकरांबरं | } தொங்கும் தொடை கள், கைகள், வஸ்தா ங்களுடையவனும் |
| गरुडस्य | கருடனுக்கு | | |
| पन्नगं | ஒருபாம்பை | लम्बमानं | } ஊஞ்சலாடிக்கொண் டிருப்பவனாக |
| इव | போன்றவண்ணமே | | |
| म | எனது | | |
| अङ्गस्थं | உடம்பில் கட்டுண்ட வனும் | द्रक्ष्यन्ति | } பலரும்பரத்தயகூத் தில்பார்க்கப்போ கின்றார்கள். |

इत्येवं मतिमास्थाय वाली कर्णमुपाश्रितः । जपन्वै नैगमान्मन्त्रास्तस्थौ पर्वतराडिव ॥ १८ ॥

| | | | |
|-----------|----------------------|-------------------|---|
| पर्वतराड् | “இமயமலை | | |
| इव | போலிருக்கின்ற | कर्ण उाश्रितः | } ச்ரோத்திரத்திரியத் தை மாத்தாம்கொண் டுகவனித்துக்கொ ண்டுருப்பவனாகி |
| वाली | வாலி | | |
| इति एवं | மேற்கண்டவண் ணமாய் | नैगमान् मन्त्रान् | } வேதமந்திரங்களை ஜபம்செய்துகொண்டு கொஞ்சமேனும் அசை யாமலிருந்தான். |
| मतिं | தீர்மானத்தை | जपन् | |
| आस्थाय | இருத்தி | तस्थौ वै | |

तावन्योन्यं जिघृक्षन्तौ हरिराक्षसपार्थिवौ । प्रयत्नवन्तौ तत्कर्म ईहतुर्बलदर्पितौ ॥ १९ ॥

| | | | |
|-------------------|-----------------------------------|--------------|--------------------------------|
| तौ | “அவ்விாண்டு | प्रयत्नवन्तौ | வெகுஜாக்கிரதையு |
| बलदर्पितौ | வலியினால் செருக் குற்ற | | டையவர்களாக |
| हरिराक्षसपार्थिवौ | வானாமன்னனும், ராசூஸமன்னனும் | तत् | அந்த |
| अन्योन्यं | ஒருவரை ஒருவர் கைக்கொள்ளவேண்டு | कर्म | ஒரே முடிவை |
| जिघृक्षन्तौ | } மென்னும் கருத்து டையவர்களாய் | ईहतुः | உத்தேசம்கொண்டி ருந்தார்கள். |

हस्तग्राहं तु तं मत्वा पादशब्देन रावणम् । पराङ्मुखोऽपि जग्राह वाली सर्पमिवाण्डजः ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------------------|--------|---|
| वाली | “வாலி | अण्डजः | கருடன் |
| तं | அந்த | सर्पं | ஒரு பாம்பை |
| रावणं | இராவணனை | इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| पादशब्देन | காலடி ஒசையால் | | |
| हस्तग्राहं | கைக்கெட்டினவனும் | | |
| मत्वा | அறிந்து | | |
| तु | இவ்விஷயத்தின் | जग्राह | } ஸ்வாதீனமிழக்கச் செய்து இறுக்கிப் பிடித்துக்கொண்டு வந்தான். |
| पराङ्मुखः अपि | சற்றேனும் லக்ஷ்யம் செய்யாதவனாகவே | | |

अहीतुकामं तं गृह्य रक्षसामीश्वरं हरिः । खमुत्पपात वेगेन कृत्वा कक्षावल्बिन्म ॥२१॥

| | | | |
|----------------|-------------------------------|--------------|--|
| अहीतुकामं | கட்டிப்பிடித்து விட | कक्षावल्बिन् | { கக்கங்களில் தொங்கிக் கொண்டு ஊஞ்சலாடு கின்றவனாகச் செய்து ஆகாயத்தில் அத்பாணந்தம் கொண்டு |
| तं | உத்தேசம்கொண்டி அந்த [ருந்த | खं | |
| रक्षसां ईश्वरं | அரக்கர்களின் மன் | वेगेन | கொண்டு |
| हरिः | வானான் [னனை | उररात | எழும்பினுன். |
| गृह्य | இறுக்கிப்பிடித்துக் கொண்டு | तु | இருக்கையிலும் |

तं चापीड्यमानं तु वितुदन्तं नखैर्मुहुः । जहार रावणं वाली पवनस्तोयदं यथा ॥ २२ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-------|-----------------------------|
| वाली | “வாலி | तु | இருக்கையிலும் |
| तं | அந்த | पवनः | காற்று |
| रावणं च | ராவணனையும் | तोयदं | மேகத்தை |
| नखैः | நகங்களால் | यथा | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| मुहुः | விட்டுவிட்டு | जहार | தூக்கிக்கொண்டு சென்றான். |
| वितुदन्तं | குத்திவிட்டு | | |
| आपीड्यमानं | துன்புறுத்துபவனாக | | |

अथ ते राक्षसामात्या द्वियमाणं दशाननम् । सुमोक्षयिषवो वालिं रवमाणा अभिद्रुताः ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------------|--------------|-------------------------------|
| अथ | “அக்காலத்தில் | सुमोक्षयिषवः | விடுவிக்கக்கருதியவர் களாய் |
| ते | அந்த | रवमाणाः | கட்சரலிட்டுக்கொண்டு |
| राक्षसामात्याः | ராக்ஷஸனது அமைச்சர்கள் | वालिं | வாலியை |
| द्वियमाणं | தூக்கிக்கொண்டு பேசப்படுகின்ற | अभिद्रुताः | பின்தொடர்ந்து ஓடி ஞர்கள். |
| दशाननं | தசானனை | | |

अन्वीयमानो मेघौघैस्वरस्थ इवांशुमान् ॥ अन्वीयमानो मेघौघैस्वरस्थ इवांशुमान् ॥

| | | | |
|------------|---|------------|------------------------------|
| तैः | “அவர்களால் | मेघौघैः | மேகக்கூட்டங்களால் |
| अन्वीयमानः | பின்தொடரப்பட்டவ னாய் | अन्वीयमानः | பின்தொடரப்பட்ட வராய் |
| अस्वरस्थः | ஆகாயத்தினிடையில் விரைந்துசெல்லு வாலி [கின்றவனான | अशुमान् इव | ஆராய்கவானென விராங்கினான். |

तेऽशक्रुवन्तः संप्राप्तुं वालिनं राक्षसोत्तमाः । तस्य बाहुरूवेगेन परिश्रान्ता व्यवस्थिताः ॥

| | | | |
|---------------|------------------|--------------|--|
| ते | “அந்த | बाहुरूवेगेन | { கைகள், தொடைகள் இவைகளின் சலன வேகத்தால் களைத்தவர்களாகி இடையேதங்கிவின்று விட்டார்கள் |
| राक्षसोत्तराः | ராக்ஷஸோத்தடர்கள் | परिश्रान्ताः | |
| वालिं | வாலியை | व्यवस्थिताः | |
| संप्राप्तुं | அணுக | | |
| अशक्रुवन्तः | முடியாதவர்களாய் | | |
| तस्य | அவனது | | |

वालिमार्गादपाक्रामन्पर्वतेन्द्रो हि गच्छतः । किं पुनर्जीवितप्रेषुर्विभ्रदै मांसशोणितम् ॥

| | | | |
|---------------|-----------------------------|---------------|---------------------------------|
| गच्छतः | “ போய்க்கொண் டிருக்கின்ற | मांसशोणितं वै | மாஸ்ஸ, க்தையுமே ரத்தத்தையுமே |
| वालिमार्गात् | வாலியின் வழியிலி ருந்து | विभ्रत | வவ்விக்கும் |
| पर्वतेन्द्राः | பெரும்மலைகள் | जीवितप्रेषुः | உயிர்ஜீந்துவின் விஷயத்தில் |
| अप क्रामन् | ஒதுங்கிவழிவிட்டன | किं पुनः | சொல்லவும் வேண்டுமோ ! |
| हि | என்றால் | | |

अपक्षिगणसंपातान्वानरेन्द्रो महाजवः । क्रमशः सागरान्सर्वान्सन्ध्याकालमवन्दत ॥२७॥

| | | | |
|------------------|--|-------------|--|
| महाजवः | “ மஹா வேகம்கொண் டவனான | सर्गन् | எல்லாவற்றிலும் |
| वानरेन्द्रः | வானரசர்ரேஷ்டன் | क्रमशः | { விதிமுறை தவறாத வண்ணம் ஒன்றின் பின் ஒன்றாய் |
| अपक्षिगणसंपातान् | { பக்சிகணங்களாலும் பறந்து அணுகமுடி யாதவைகளான | सन्ध्याकालं | சந்தியாகாலத்தை பின்கண்டபடி ஜபம் |
| सागरान् | சமுத்திரங்களை | अवन्दत | { செய்து கொண் டாடினான். |

संपूज्यमानो भूतैस्तु खेचरैः खेचरो हरिः । पश्चिमं सागरं वाली ह्याजगाम सरावणः ॥

| | | | |
|-------------|---|---------|------------------|
| खेचरैः | “ ஆகாசவாசிகளான | खेचरः | ஆகாசத்திலேயே |
| भूतैः | அடியார்களால் | | செல்லுகின்றவனான |
| तु | அவ்விஷயத்தில் | वाली | வாலி என்ற |
| संपूज्यमानः | புகழ்ந்து போற்றப் பட்டவனாய் | हरिः | வானான் |
| सरा-णः हि | { ராவணையும் வறித் துக்கொண்டிருக் கிறவனாய் | पश्चिमं | மேற்கு |
| | | सागरं | சமுத்திரத்திற்கு |
| | | आ जगाम | வந்துசேர்ந்தான். |

तस्मिन्सन्ध्यामुपासित्वा स्नात्वा जप्त्वा च वानरः ।

उत्तरं सागरं प्रायाद्दहमानो दशाननम्

॥ २९ ॥

| | | | |
|----------|-----------------------------|-----------|----------------------------|
| दशाननं | “ தசானனை | सन्ध्यां | சந்தியாவந்தனத்தை |
| वहमानः | வகித்தவண்ணமே பிருக்கின்ற | उपासित्वा | செய்து |
| वानरः | வானான் | जप्त्वा च | ஜபத்தையும்செய்து விட்டு |
| तस्मिन् | அதில் | उत्तरं | வடக்கு |
| स्नात्वा | ஸ்னானம்செய்து | सागरं | சமுத்திரத்திற்கு |
| | | प्रायात् | புறப்பட்டான். |

बहुयोजनसाहस्रं वहमानो महाहरिः । वायुञ्च मनोवञ्च जगाम सह शत्रुगा ॥ ३० ॥

महाहरिः “ मஹாப்ரசித்தி
பெற்ற வானான்
वायुञ्च वाயுவேகம்போன்ற
வனாகவும்
मनोवञ्च மனுவேகம்போன்ற
வனாகவும்

बहुयोजनसाहस्रं அனைகமாயிரம்
யேஜனைகளையும்
शत्रुगा சத்ருவேடு
सह சஹிதமே
वहमानः பறந்துகொண்டு
செல்லுபவனாய்
जगाम வந்துசேர்ந்தான்.

उत्तरे सागरे सन्ध्यामुपासित्वा दशाननम् । वहमानोऽगमद्वाली पूर्वं वै स महोदधिम् ॥

सः वाली அந்த வாலி
दशाननं தசானனை
वहमानः वै வஹித்தவண்ணமே
उत्तरे வடக்கு
सागरे சமுத்திரத்தில்

सन्ध्यां சந்தியாவந்தனத்தை
उपासित्वा செய்துவிட்டு
पूर्वं கிழக்கு
महोदधिं சமுத்திரத்திற்கு
अगमत् வந்துசேர்ந்தான்.

तत्रापि संध्यामन्वास्य वासविः स हरीश्वरः । किष्किन्धामभितो गृह्य रावणं पुनरागमत् ॥

वासविः “ இந்திரன் புதல்வ
னாகிய
सः हरीश्वरः அந்த வானாமன்னன்
रावणं ராவணனை
गृह्य अपि { கைதியாய் பற்றிக்
கொண்டிருக்கும்
வண்ணமே

तत्र அதில்
सन्ध्यां சந்தியாவந்தனத்தை
अन्वास्य செய்து
पुनः திரும்பி
किष्किन्धां கிஷ்கிந்தாநகரத்
अभितः அருகாமையில் [திற்கு
आगमत् வந்துசேர்ந்தான்.

चतुर्थेऽपि समुद्रेषु सन्ध्यामन्वास्य वानरः । रावणोद्दहनश्रान्तः कुतस्त्वमिति चोवाच प्रहसन्रावणं मुहुः ॥

दानरः “ வானான்
रावणोद्दहन- } ராவணனையும் தூக்
श्रान्तः } கிக்கொண்டுபோகி
றதையும் ஒரு விசே
ஷமாய்நினையாத
சாந்தம்கொண்ட
चतुर्थं நான்கு [மனத்தனாய்

समुद्रेषु अपि சமுத்திரங்களிலும்
सन्ध्यां சந்தியாவந்தனத்தை
अन्वास्य வழக்கம்போல்
செய்துவிட்டு
किष्किन्धोवने கிஷ்கிந்தா நகரத்தின்
உத்தியானவனத்தில்
अपतत् இறங்கினான்.

रावणं तु मुमोचाथ स्वकक्षात्कपिसत्तमः । कुतस्त्वमिति चोवाच प्रहसन्रावणं मुहुः ॥

कपिसत्तमः “ வானரச்ரேஷ்டன்
रावणं च ராவணனையும்
अथ இப்பொழுது
स्वकक्षात् தனது கக்சுத்திலி
ருந்து
मुमोच உதறினான்.
तु அவ்விஷயமாய்
मुहुः அந்த சமயத்தில்

प्रहसन् நையாண்டிசெய்து
கொண்டு
रावणं ராவணனைப்பார்த்து
एवं ‘தேவரீர்
कुतः { எவ்விடத்திலிருந்து
இப்பொழுது எழுந்
तनुकृतिहेतो?’
என்று
उवाच விசாரனை செய்தான்.

विस्मयं तु महद्वत्वा श्रमलोलनिरीक्षणः । राक्षसेन्द्रो हरीन्द्रं तमिदं वचनमब्रवीत् ॥ ३५ ॥

राक्षसेन्द्रः “राक्षஸமன்னன்
 श्रमलोल- } பட்டபாட்டால்
 निरीक्षणः } வெருள விழிக்கும்
 கண்களுடையவரைய்
 तु இவ்விஷயத்தில்
 महत् இப்படிப்பட்டது என
 संसोलमुடியாத

विस्मयं ஆச்சரியத்தை
 गवा अடைந்து
 त अந்த
 हरीन्द्रं வானாமன்னனைப்
 பார்த்து
 हद्ं பின்வரும்
 वचनं பதிலை
 अब्रवीत् சொன்னான் :

वानरेन्द्र महेन्द्राभ राक्षसेन्द्रोऽस्मि रावणः । युद्धेऽसुरिह संमाप्तः स चाद्यासादितस्त्वया ॥

महेन्द्राभ “இந்திரனையும் மின்
 சியபுகழ்பெற்ற
 वानरेन्द्र वானாமன்ன !
 रावणः ராவணனென்ற
 राक्षसेन्द्रः राक्षஸமன்னனாகிய
 अस्मि நான்

युद्धेषु: போரில் ஆகை
 கொண்டவரைய்
 अद्य இப்பொழுது
 इह இவ்விடத்திற்கு
 संमाप्तः வந்துசேர்ந்தேன்.
 सः च அதுவும்
 त्वया உன்னால்
 आसादितः சபலமாகியது.

अहो बलमहो वीर्यमहो गाम्भीर्यमेव च । येनाहं पशुवद्बुध भ्रामितश्चतुरोऽर्णवान् ॥ ३७ ॥

अहं “நானும்,
 पशुवत् एव யாகப்பசுவெனவே
 गृह्य சிக்கிக்கொண்டவரைய்
 चतुरः நான்கு
 अर्णवान् च சமுத்திரங்களிலும்

भ्रामितः அலக்கழிக்கப்
 येन என்றால் [பெற்றேன்
 अहो बलं என்பபலம்!
 अहो वीर्यं என்னவீர்யம்!
 अहो गाम्भीर्यम् என்ன காம்பீர்யம்!

एवमश्रान्तवद्वीर शीघ्रमेव महार्णवान् । मां चैवोद्धृहमानस्तु कोऽन्यो वीरः क्रमिष्यति ॥

वीर “தனிவீர !
 एवं இவ்விதம்
 मां च என்னையும்
 उद्धृहमानः तु வஹிக்கூப் வண்ண
 மாகவே
 अश्रान्तवत् एव சிறிதளவும் சேர்வ
 दैयாதவளுகவே

शीघ्र एव விரைவாகவே
 महार्णवान् பெரும்கடல்களை
 अन्यः (வறு
 कः எந்த
 वीः ஒருவீரன்
 क्रमिष्यति கடப்பான் ?

त्रयाणामेव भूतानां गतिरेषा प्रवङ्गम । मनोऽनिलसुपर्णानां तव चात्र न संशयः ॥ ३९ ॥

प्रवङ्गम “வானர !
 एषा இந்த
 गतिः கமனம்
 तव च உணக்கும்
 त्रयाणां மூவர்களாகிய

मनोऽनिलसुपर्णानां மனம், வாயு, கருடன்
 இவர்களாகிய
 भूतानां एव பூதங்களுக்கும்ட்டுமே.
 अस इव்விஷயத்தில்
 संशयः न ஸந்தேஹமில்லை.

सोऽहं दृष्ट्वलस्तुभ्यमिच्छामि हरिपुङ्गव । त्वया सह चिरं सख्यं सुस्निग्धं पावकाग्रतः ॥

हरिपुङ्गव
तुभ्यं
दृष्ट्वलः
सः
अहं
त्वया सह

“வானரோத்தபா!

உன்னிடையத்தில்

{ பலத்தை பிரத்யக்ஷத்
தில் அனுபவித்து
விட்டேன்.

அந்த

நான்

உன்னுடன் கூட

दाराः पुत्राः पुरं राष्ट्रं भोगाच्छादनभोजनम् । सर्वमेवाविभक्तं नौ भविष्यति हरीश्वर ॥

हरीश्वर
पुत्राः
भोगाच्छादन-
भोजनं
पुरं
राष्ट्रं

“வானரமன்னு!

புதல்வர்களும்தம்

{ போகமும், வஸ்திர
மும், போஜனமும்

நகரமும்

நாடும்

ततः प्रज्वालयित्वाऽग्निं तावुभौ हरिराक्षसौ । आतृत्वमुपसंपन्नौ परिव्रज्य परस्परम् ॥४२॥

तौ
उभौ
हरिराक्षसौ
अग्निं
प्रज्वालयित्वा
परस्परं
अन्योन्यं लम्बितकरो ततस्तौ हरिराक्षसौ ।

“அந்த

இருவர்களாகிய

வானரனும், அரக்

அக்கினியை [கனும்

வளர்த்தி

ஒருவரை ஒருவர்

“அங்கிருந்து

அந்த வானரனும்,

அரக்கனும்

ஒருவரோடொருவர்

சந்தோஷமடைந்தவர்

களாய்

स तत्र मासमुषितः सुग्रीव इव रावणः ।

सः
राणः
तत्र
सुग्रीवः
इव
मासं
उषितः

“அந்த

இராவணன்

அங்கே

சுகிரீவன்

போலவே

ஒருமாதகாலம்

வசித்திருந்தான்.

पावकाग्रतः
सुस्निग्धं
चिरं
सख्यं

அக்னிசாக்ஷிகமரக

பிறரால் அழிக்கமுடி

யாததாயிருக்கிறதும்

ஆயுட்பர்யந்தமிருக்

கிறதமாகிய

அன்போன்ற ஸ்நேக

உடம்பாட்டை

इच्छामि

வேண்டுகின்றேன்.

दाराः

பயிர்ப்புகளும்

सर्व एव

எல்லாமுமே

नौ

நம்மிருவருக்கும்

अविभक्तं

பேதமின்றி அனுப

விக்கத்தக்கதாய்

விளங்கட்டும்.

भविष्यति

விளங்கட்டும்.

आतृत्वमुपसंपन्नौ परिव्रज्य परस्परम् ॥४२॥

परिव्रज्य
ततः
आतृत्वं
उपसम्पन्नौ

ஆலிங்கனம்செய்துக்

கொண்டு

அப்போதிலிருந்து

சஹோதரர்கள்போலி

ருப்பதை

நிச்சயித்துக்கொண்

டார்கள்.

किञ्चिन्धां विशतुर्हृष्टौ सिंहौ गिरिगुहामिव ॥

लम्बितकरो
सिंहौ
गिरिगुहां
इव
किञ्चिंहां
विशतुः

சல்லாபமாய்ப் பேசிக்

கொண்டு

இருசிக்கங்கள்

மலைக்குகையில்

எவ்வண்ணமோ,

அவ்வண்ணமே

கிஷ்கிந்தைக்கு

வந்துசேர்ந்தார்கள்.

अमात्यैरागतैर्नीतस्त्रैलोक्योत्सादनार्थिभिः ॥

त्रैलोक्यो-
त्सादनार्थिभिः
आगताः
अमात्यैः
नीतः

மூவுலகங்களையும்

அழிக்க எண்ணம்

கொண்டவர்களாய்

கூடவந்து

மந்திரிகளால்

அழைத்துக்கொண்

டுபோகப்பட்டான்.

एवमेतत्पुरा वृत्तं वालिना रावणः प्रभो । धर्षितश्च कृतश्चापि भ्राता पावकसन्निधौ ॥४५॥

| | | | |
|---------|----------------------|-------------|------------------------------|
| प्रभो | “ பிரபோ ! | धर्षितः | கொட்டமடக்கப் |
| एतत् | இது | अपि | ஆயினும் [பட்டான் |
| पुरा | முன்காலத்தில் | पावकसन्निधौ | அக்கினியின் முன் னிலையில் |
| वृत्तं | நடந்த விநுத்தார்தம். | आता च | ஆப்தஸ்தனே ஹித இகவும் |
| रावणः च | ராவணனும் | कृतः | ஒப்புக்கொள்ளப் பட்டான். |
| वालिना | வாலியினால் | | |
| एवं | மேற்கண்டவண் ணமாய் | | |

बलमप्रतिमं राम वालिनोऽभवदुत्तमम् । सोऽपि त्वया विनिर्दग्धः शलभो वह्निना यथा ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|-------------|-------------------------|
| राम | “ ஸ்ரீராம ! | त्वया | தேவரீரால் |
| वालिनः बलं | வாலியின் பலம் | वह्निना | அக்னியினால் |
| अप्रतिमं | ஒப்புமைமையில்லாத தாயும் | शलभः | விட்டிற் பூச்சி |
| उत्तमं | மிகச் சிறந்ததாயும் | यथा | எவ்வண்ணமோ, அவ்வண்ணமே |
| अभवत् | விளக்கிற்று. | विनिर्दग्धः | கொல்லப்பட்டான். |
| सः अपि | அவனும் | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे चतुस्त्रिंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22168



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 1444

पञ्चत्रिंशः सर्गः—இருபத்தைந்தாவது ஸர்க்கம் ॥ २५ ॥

हनुमदुत्पत्त्यादि—ஹனுமாரின் உத்பத்தி முதலியது.

अपृच्छत तदा रामो दक्षिणाशाश्रयं मुनिम् । प्राञ्जलिर्विनयोपेत इदमाह बचोऽर्थवत् ॥

| | | | |
|----------------|--------------------|-----------|--|
| तदा | அப்பொழுது | आह | திருவாய்மலர்ந்தருளி னார்: |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | विनयोपेतः | விஷயம் தெரியாதவர் போலாகி |
| दक्षिणाशाश्रयं | தென்தேசவாசியாகிய | अर्थवत् | { யாருமறிந்துகொள் ளவேண்டிய விஷய மானபடியால் |
| मुनिं | முனிவரைப்பார் த்து | अपृच्छत् | வினவினார்; |
| प्राञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ்தராகி | | |
| इदं | பின் கண்ட | | |
| वचः | மொழியை | | |

अतुलं बलमेतद्वै वालिनो रावणस्य च । न त्वेताभ्यां हनुमता समं त्विति मतिर्मम ॥ २ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|----------|---------------------|
| वालिनः | “ வாலினுடையவும் | हनुमता | ஹனுமாரேடும் |
| रावणस्य च | இராவணனுடையவும் | एताभ्यां | இவ்விருவர்களோடும் |
| बलं | பலம் | समं | சாதிருச்சயம் என்பது |
| अतुलं वै | மஹத்தானதே; | न तु | இல்லவேயில்லை |
| तु | ஆயினும் | इति | என்பது |
| एतत् | இது | मम मतिः | எனது அபிப்பிராயம். |

शौर्यं दाक्ष्यं बलं धैर्यं प्राज्ञता नयसाधनम् । विक्रमश्च प्रभावश्च हनुमति कृतालयाः ॥३॥

हनूमति च “ஹனுமாதொருவ
னிடத்திலேயே
शौर्यं செளர்யமும்
दाक्ष्यं சாமர்த்தியமும்
बलं பலமும்
धैर्यं தைரியமும்
प्राज्ञता பாண்டித்யமும்

नयसाधनं { ராஜகீதிகளுக்குக்
குறையின்றி காரியங்க
ना विक्रमः விக்கிரமமும்
प्रभावः च பிரபாவமும்
कृतालयाः குடிக்கொண்டிருக்கின்
றன.

दृष्ट्वैव सागरं वीक्ष्य सीदन्तीं कपिवाहिनीम् ।

महाबाहुः “மஹாசக்திவானாகிய
அவன்

कपिवाहिनीं வானரச்சேனையை
सागरं சாகரத்தை
दृष्ट्वा एव பார்த்தமாத் திரத்தி
லேயே
सीदन्तीं ஏங்கிக்கிடக்கிறதாக

समाश्वस्य महाबाहुयोजनानां शतं पुतः ॥

वीक्ष्य கண்டு
समाश्वस्य தைரியம் சொல்லி
விட்டு
योजनानां யோஜனைகளின்
शतं நூற்றை
पुतः ஒரு காண்டாய்
தாண்டினான்.

धर्षयित्वा पुरीं लङ्कां रावणान्तःपुरं तदा । दृष्ट्वा संभाषिता चापि सीता ह्याश्वसिता तथा ॥

तदा “அக்காலத்தில்
रावणान्तःपुरं ராவணர் தப்புரத்தை
दृष्ट्वा च நன்றாய் ஆராய்ந்து
தேடிவிட்டு

आश्वसिता हि தைரியப்படுத்தவும்
பட்டாள்.

अपि அதன்மேல்
सीता வீதை
संभाषिता { நமஸ்காரபூர்வமாய்ச்
சந்தித்துப்பேசப்
பட்டவளாய்

तथा அப்படியே
लङ्का இலங்கை
पुरीं பட்டணத்தையும்
धर्षयित्वा உருவழித்தான்.

सेनाग्र्या मन्त्रिसुताः किङ्करा रावणात्मजः । एते हनुमता तत्र हेकेन विनिपातिताः ॥

तल “அப்பொழுது
हनुमता அனுமான்
एकेन हि ஒருவனலேயே
पुने இந்த
सेनाग्र्याः சேனாதிபதிகளும்

एते हनुमता तत्र हेकेन विनिपातिताः ॥
मन्त्रिसुताः மந்திரிபுதல்வர்களும்
किङ्कराः கிக்கர்களும்
रावणात्मजः रिव ராவணனது புதல்
வனும்
विनिपातिताः சம்ஹரிக்கப்பட்டார்கள்.

भूयो बन्धाद्विमुक्तेन भाषयित्वा दशाननम् । लङ्का भस्मीकृता येन पावकेनेव मेदिनी ॥

बन्धात् “கட்டினின்றி
विमुक्तेन ஸ்வயமாகவேஸ்வ
தந்திரம்பெற்ற
येन எந்த அவனால்
दशाननं தசானனுக்கு
सूयः விஸ்தாரமாய்

भाषयित्वा செய்தி சொல்லிவிட்டு
लङ्का இலங்கை எனும்
मेदिनी பூப்பாதேசம்
पावकेन அக்கினியினால்
इव முற்றிலும்
भस्मीकृता சாம்பலாக்கப்பட்டது.

न कालस्य न शक्रस्य न विष्णोर्वित्तपस्य च । कर्माणि तानि श्रूयन्ते यानि युद्धे हनुमतः ॥

யுद्धே " போரில்
 ஹனுமத: ஹனுமானுடைய
 கர்மாणि கிருத்யங்கள் என்று
 யானி எவைகள்
 श्रूयन्ते வழங்குகின்றனவோ,
 तानि அவைகள்

காலச्य யமனுக்கும்
 न இல்லை.
 शक्रस्य இந் திரனுக்கும்
 न இல்லை.
 वित्तपस्य குபேரனுக்கும்
 विष्णोः च விஷ்ணுவுக்கும்கூட
 न இல்லை.

एतस्य बाहुवीर्येण लङ्का सीता च लक्ष्मणः । प्राप्ता मया जयश्रैव राज्यं मित्राणि बान्धवाः ॥

एतस्य " இவனுடைய
 बाहुवीर्येण एव பாசுவீர்யம் ஒன்றி
 எனலேயே
 मया என்னால்
 जयः च வெற்றி என்பதும்,
 लङ्का இலங்கை என்பதும்,

सीता வலிதையும்,
 लक्ष्मणः லக்ஷ்மணனும்
 मित्राणि மித்திரர்களும்
 बान्धवाः பந்துக்களும்
 राज्यं च இராஜ்யமும்
 प्राप्ताः அடையப்பட்டன.

हनूपान्यदि नो न स्याद्वा नाराधिपतेः सखा । प्रवृत्तिपि को वेत्तुं जानक्याः शक्तिमान्भवेत् ॥

वानराधिपतेः " வானரமன்னனுக்கு
 सखा சகாவாய்
 हनुमान् ஹனுமான்
 यदि न स्यात् இல்லைபென்றால்
 जानक्याः ஜானகியின்
 प्रवृत्ति வர்த்தமானத்தை

नः நமக்கு
 वेत्तुं தெரிவிக்க
 शक्तिमान् சக்தியுடையவன்
 कः अपि வேறு எவன்
 भवेत् இருக்கிறான்?

किमर्थं वाल्यनेनैव सुग्रीवंप्रियकाम्यया । तदा वैरे समुत्पन्ने न दग्धो वीरयो यथा ॥

तदा " அப்படியிருக்கையி
 वैरे வைரம் [லும்
 समुत्पन्ने உண்டாயிருக்கையில்
 सुग्रीवंप्रिय- } ஸுகரீவனுக்கு ஹரி
 काम्यया } தம்செய்ய எண்ணம்
 கொண்டதால்

वाली வாலி
 किमर्थं ஏன்
 वीरयः படர்கொடுக்களை
 यथा எவ்வண்ணமோ
 அவ்வண்ணமே
 न दग्धः எரிக்காமல் விடப்
 பட்டான்?

न हि वेदितवान्मन्ये हनुमानात्मनो बलम् । यद्दृष्टवाङ्गीवितेष्टं क्रिश्यन्तं वानराधिपम् ॥

हनुमान् " ஹனுமான்
 आत्मनः बलं தனது பலத்தை
 न वेदितवान् தெரிந்துகொள்ள
 வில்லை என்று

यद्दृष्टवाङ्गीवितेष्टं क्रिश्यन्तं वानराधिपम् ॥
 वानराधिपं வானரமன்னனை
 क्रिश्यन्तं கஷ்டத்திலிருப்பவ
 னாய்

मन्ये நான் நினைக்கிறேன்.
 यत् ஏனென்றால்
 जीवितेष्टं உயிரினுமினியனை

दृष्टवान् हि { கையாலாகாதவனாய்
 ஸஹானுபவம் மட்
 டும் கொண்டிருந்தா
 னன்றோ!

एतन्मे भगवन्सर्वं हनूमति महामतौ । विस्तरेण यथातत्त्वं कथयामरपूजित ॥ १३ ॥

अमरपूजित “தேவர்களால் கொ
ண்டாடப்பட்ட
भगवन् ஸ்வாமியே!
महामतौ மஹாஞானவானாகிய
हनूरति ஹனுமான் விஷயத்
एतत् இந்த [தில்

सर्वं எல்லாவற்றையும்
यथातरं தத்வமெதுவோ
अतथायुम् அதையும்
विस्तरेण எதையும் விடாமல்
मे कथय எனக்கு சொல்லி
यत्रुणवेண்டும்.” யருளவேண்டும்.”

राघवस्य वचः श्रुत्वा हेतुयुक्तमृषितदा । हनूमतः समक्षं तमिदं वचनमब्रवीत् ॥ १४ ॥

ऋषि. முனிவர்
राघवस्य ஸ்ரீராகவருடைய
हेतुयुक्तं ஏற்றகாரணத்துடனினி
वचः நியமனத்தை [ருந்த
श्रुत्वा சிரமேற்கொண்டு
हनूमतः ஹனுமாரது

समक्षं எதிரிலே
तदा அப்பொழுது
तं அவரைப்பார்த்து
इदं பின்கண்ட
वचनं விருத்தாந்தத்தை
अब्रवीत् பஹிரங்கப்படுத்தினார்:

सत्यमेतद्रघुश्रेष्ठ यद्ब्रवीषि हनूमतः । न बले विद्यते तुल्यो न गतौ न मतौ परः ॥ १५ ॥

रघुश्रेष्ठ “ஹே ரகுத்தம!
यत् எதொன்றை
ब्रवीषि தேவரீர் திருவாய்மலர்
एतत् இது [னீரோ
सत्यं சத்யமே.
हनूमतः ஹனுமாருக்கு

तुल्यः சமானமான
परः வேறொருவன்
बले பலத்தில்
न विद्यते இல்லை.
गतौ न கதியில் இல்லை.
मतौ न மதியில் இல்லை.

अमोघशापैः शापस्तु दत्तोऽस्य ऋषिभिः पुरा । न वेत्ता हि बलं येन बली सन्नरिमर्दनः ॥

अस्य “இவனுக்கு
पुरा முன்காலத்தில்
अमोघशापैः { இட்டசாபங்களிட்ட
படியே பலிக்கும்
பரபாவசாலிகளாகிய
ऋषिभिः முனிவர்களால்
शापः ஒரு சாபம்
दत्तः இடப்பட்டது.

येन இக்காரணத்தால்
अरिमर्दनः சத்ருக்களை சம்ஹ
बली सन् ரிக்கத்தக்க
तु பலிஷ்டனாகவிருந்தும்
बलं न वेत्ता हि அவன்மட்டில்
यामलिरुக்கिरुன். பலத்தை உணரமுடி
யாமலிருக்கிறான்.

वाल्येऽप्येतेन यत्कर्म कृतं राम महाबल । तन्न वर्णयितुं शक्यमिति बालतयाऽस्य ते ॥

महाबल “மஹாபலிஷ்டராகிய
राम ஸ்ரீராம!
एतेन இவனால்
बाल्ये अपि சிறு குழந்தையாபி
रुक्कैयिले ருக்கையிலே
बालतया குழந்தைத்தனைத்
தினால்
कृतं செய்யப்பட்டதையும்

अस्य இவனுடைய
कर्म நடவடிக்கை
यत् எதுவோ
तत् அதையும்
ते தேவரீருக்கு
वर्णयितुं எதையும் விடாமற்
सोवतन्त्रु சொல்வதற்கு
न शक्यम् முடியாது.

यदि वाऽस्ति ह्यभिप्रायस्तच्छ्रोतुं तव राघव । समाधाय मतिं राम निशामय वदाम्यहम् ॥

राघव “ஹே ராகவா !
 राम ஸ்ரீராம !
 अहं நான்
 मतिं हि ஞாபகத்திலிருப்பதை
 समाधाय கொண்டு [மட்டும்
 वदामि இயம்புகிறேன்.

तव தேவரீருக்கு
 तव वा அதையும்
 श्रोतु கேட்க
 अभिप्रायः திருவுள்ளம்
 अस्ति यद् இருக்குமாலை
 निशामय திருச்செவிகாய்ப்பிராக.

सूर्यदत्तवरखर्णः सुमेरुनाम पर्वतः । यत्र राज्यं प्रशास्यस्य केसरी नाम वै पिता ॥१९॥

सूर्यदत्तवरखर्णः { “சூர்யனளித்தவரத்
 தால் சுவர்ணமாய்
 விளங்கும்
 सुमेरुः சுமேரு
 नाम என்கிற
 पर्वतः ஒரு மலையுண்டு.

अस्य இவனது
 पिता தந்தையாகிய
 केसरी नाम கேசரி என்பவன்
 यत्र அந்த இதில்
 राज्यं ராஜ்யபரிபாலனத்தை
 प्रशासति वै செய்துவந்தான்.

तस्य भार्या बभूवैषा ह्यञ्जनेति परिश्रुता । जनयामास तस्यां वै वायुरात्मजमुत्तमम् ॥२०॥

अञ्जना “அஞ்சனை
 हृति என்று
 परिश्रुता பெயர்கொண்ட
 एषा இவள்
 तस्य அவனுக்கு
 भार्या பனைவியாக

बभूव இருந்தாள்.
 तस्यां वै அவளிடத்திலேயே
 वायुः हि வாயுதேவனே
 उत्तमं உத்தமனான
 आत्मजं ஒரு புதல்வனை
 जनयामास உண்டுபண்ணினார்.

शालिशुकनिभाभासं प्रासूतासुं तदाऽञ्जना । फलान्याहर्तुकामा वै निष्क्रान्ता गहनेचरा ॥

तदा “அப்பொழுதே
 शालिशुक- } நெற்கதிர் நிறமுள்
 निभाभासं } எவனாய் விளங்கும்
 असुं वै இவனையே
 अञ्जना प्रासूत अஞ்சனை பெற்றாள்.
 फलानि பழங்களை

आहर्तुकामा { கொண்டுவரவேண்டு
 मेன்கிற எண்ணம்
 निष्क्रान्ता } கொண்டவளாய்
 गहनेचरा விட்டடைவிட்டு வெ
 காட்டிற்குப்
 போயிருந்தாள்.

एष मातृवियोगाच्च क्षुधया च भृशार्दितः । रुरोद शिशुरत्यर्थं शिशुः शरवणे यथा ॥२२॥

एषः “இந்த
 शिशुः குழந்தை
 मातृवियोगात् தாய்ப்பக்கத்திலில்லா
 மையாலும்
 क्षुधया च பசியாலும்
 भृशार्दितः அதிகமாய் வருந்திய
 தாய்

शरवणे சரவணத்தில்
 शिशुः குழந்தை (உண்முகக்
 கடவுள்)
 यथा च எவ்வண்ணமோ,
 அவ்வண்ணமே
 अस्य अधिकமாக
 रुरोद அழுதது.

तदोद्यन्तं विवस्वन्तं जपापुण्ड्रोत्करोपमम् । ददर्श फललोभाच्च ह्युत्पात रविं प्रति ॥ २३ ॥

தத
ஜபாபுஷ்டபங்களின்
குறியலுக்கு நிகராய்
உதயநி
வिवस्वन्तं
சூர்யபகவானே

ददर्श
फललोभाच्च
रविं हि
प्रति
उत्पात
கண்டது.
பழத்திலாசையால்
சூர்யபகவானையே
நோக்கி
பறந்துசென்றது.

बालार्काभिमुखो बालो बालार्कं इव मूर्तिमान् । ग्रहीतुकामो बालार्कं प्लवतेऽम्बरमध्यगः॥

बालार्कः इव
मूर्तिमान्
बालः
बालार्कं
ग्रहीतुकामः
“பாலசூர்யனே
உருவெடுத்தவந்தது
குழந்தை [போன்ற
இளஞ்சூர்யனே
கையில்க்கொள்ள
ஆசைகொண்டதாய்

अम्बरमध्यगः
बाजार्कभिमुखः
प्लवते
ஆகாயமார்க்கத்தில்
செல்லுகிறதாய்
இளஞ்சூர்யன்
இருக்குமிடத்தை
நோக்கி
பறந்துசென்றது.

एतस्मिन्प्लवमाने तु शिशुभावे हनूमति । देवदानवयज्ञाणां विस्मयः सुमहान्भूत् ॥२५॥

शिशुभावे
हनूमति
एतस्मिन्
प्लवमाने तु
“சிறுகுழந்தையா
யிருக்கும்
ஹனுமான்
இப்படி
பறந்துசெல்லுகையில்

देवदानवयज्ञाणां
सुमहान्
विस्मयः
अभूत्
தேவர்களுக்கும்,
தானவர்களுக்கும்,
யக்ஷர்களுக்கும்
அத்யந்த
ஆச்சர்யம்
உண்டாயிற்று.

नापयेवं वेगवान्वायुर्गृहो वा मनस्तथा । यथाऽयं वायुपुत्रस्तु क्रपतेऽम्बरमुत्तमम् ॥२६॥

अयं
वायुपुत्रः
तु
एवं
उत्तमं
अम्बरं
यथा
“இந்த
வாயுபுதல்வன்
இப்பொழுது
இவ்விதமாய்
சிறந்த
ஆகாயத்தில்
எப்படி

क्रपते
तथा
वेगवान्
मनः वा
गृहः
वायुः अपि
न
செல்கின்றனோ
அப்படிப்பட்டதாகிய
வேகமுடையதாக
மனமாவது
கருடனாவது
வாயுவுட்கூட
இல்லை.

यदि तावच्छिशोरस्य त्वीदृशो गतिविक्रमः । यौवनं बलमासाद्य कथं वेगो भविष्यति ॥

अस्य
शिशोः
ईदृशः
गतिविक्रमः
यदि
यौवनं
“இந்த
குழந்தைக்கு
இப்படிப்பட்டதாகிய
கமனசக்தி
இருக்கிறதென்றால்
பெளவன

बलं
आसाद्य
तावत्
वेगः तु
कथं
भविष्यति
பலத்தை
பெற்று
அக்காலத்தில்
கமனசக்திதான்
எத்தன்மையதாய்
இருக்குமோ.

तमनुस्रुवते वायुः पृथन्तं पुत्रमात्मनः । सूर्यदाहभयाद्रक्षंस्तुषारचयशीतलः ॥ २८ ॥

वायुः “ वायुபகவான்
 பறந்துசெல்லுகின்ற
 பூவந்த்
 ஆஃமன: தனது
 த் புவ் அந்தப் புதல்வனை
 சூர்யன் தகித்துவிடு
 வாரோ என்ற
 அச்சத்தால்

तुषारचयशीतलः பனிமலையெனக்
 குளிரந்தவராய்
 रक्षन् காப்பாற்றிக்கொண்டு
 अनुस्रुवते கூடவேபறந்து
 சென்றான்.

बहुयोजनसाहस्रं क्रमत्येष गतोऽम्बरम् । पितृबलाच्च बाल्याच्च भास्कराभ्याशमागतः ॥

एषः “ இவர்
 बहुयोजनसाहस्रं பல ஆயிரம்பயோஜனை
 தூரம்
 क्रमति கிளம்பிச்சென்றார்;
 अस्वरं ஆகாசத்தை
 गतः அடைந்தார்;

बाह्यात् च அறியாத்தன்மை
 யா லும்
 पितुः தந்தையின்
 बलात् च பலத்தாலும்
 भास्कराभ्यां சூர்யனது சமீபம்
 आगतः போய்ச்சேர்ந்தனர்.

शिशुरेष त्वदोषज्ञ इति मत्वा दिनेश्वरः । कार्यं चात्र समायत्तमित्येवं न ददाह सः ॥

सः “ அந்த
 दिनेश्वरः तु சூர்யபகவானும்
 एषः இது
 शिशुः குழந்தை
 इति என்பதையும்
 अदोषज्ञः தோஷம்றியாதது
 इति என்பதையும்

अह इவ்விஷயத்தில்
 एवं இவ்வண்ணமாய்
 समायत्तं நடைபெற்றவேண்டிய
 தாயிருக்கின்ற
 कार्यं च கார்யத்தையும்
 मत्वा எண்ணி
 न ददाह தவிர்ப்பிக்காமலிருந்
 தார்.

यमेव दिवसं ह्येष ग्रहीतुं भास्करं पुतः । तमेव दिवसं राहुर्जिघृक्षति दिवाकरम् ॥ ३१ ॥

एषः “ இவர்
 यं दिवसं எந்த தினத்தில்
 भास्करं சூர்யனை
 ग्रहीतुं பிடிக்க
 पुतः பறந்துவந்தனரோ

तं दिवसं एव அதேதினத்திலேயே
 राहुः हि ராகுவும்
 दिवाकरं एव சூர்யனையே
 जिघृक्षति பற்றுவந்தான்.

अनेन स परामृष्टो राम सूर्यरथोपरि । अपक्रान्तस्ततस्त्रस्तो राहुश्चन्द्रार्कमर्दनः ॥ ३२ ॥

राम “ ஸ்ரீராம!
 चन्द्रार्कमर्दनः { சந்திரனையும் சூரிய
 னையும் தொட வல்
 लवकस्य { லவகைய
 सः राहुः அந்த ராகு
 अनेन இவரால்

सूर्यरथोपरि சூர்யரத்தத்தின் அரு
 परामृष्टः பிடிக்கவந்து [கில்
 ततः அதனால்
 अस्तः பயந்தவனாய்
 अपक्रान्तः திரும்பிப்போய்
 விட்டான்.

स इन्द्रभवनं गत्वा सरोषः सिंहिकासुतः । अब्रवीद्भुक्नुटिं कृत्वा देवं देवगणैर्वृतम् ॥३३॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------|--------------------|--------------------------------------|
| सिंहिकासुतः | “சிம் ஹிகையின் புதல்வனாகிய | इन्द्रभवं गत्वा | இந்திரனது வஸதியில் போய் |
| सः | அவன் | देवगणैः | தேவகணங்களால் |
| सरोषः | கோபத்துடன் கூடினவனாய் | वृतं | சூழப்பட்டு விளங்கும் |
| भुक्नुटिं | புருவத்தை | देवं | இந்திரனை |
| कृत्वा | நெறித்து | अब्रवीत् | இப்படி விண்ணப்பம் செய்துகொண்டான்; |

बुभुक्षापनयं दत्त्वा चन्द्राकौ मम वासव । किमिदं तत्त्वया दत्तमन्यस्य बलवृत्रहन् ॥३४॥

| | | | |
|--------------|--|---------|--------------------------|
| बलवृत्रहन् | “பலாசாரணையும் விரு த்திராசாரணையும் அழித்த இந்திரனை ! எனக்கு பசி தணியுமாறு சந்திரனையும் சூரிய னையும் | दत्त्वा | அளித்துவிட்டு |
| वासव | | स्वया | உன்னால் |
| मम | | अन्यस्य | வேறு யாரோ |
| बुभुक्षापनयं | | तत् | அந்த [ஒருவருக்கு |
| चन्द्राकौ | | इदं | இது |
| | | किं | யாது காரணமாய் |
| | | दत्तम् | அளிக்கப்பட்டிருக்கிறதா ? |

अद्याहं पर्वकाले तु जिघृक्षुः सूर्यमागतः । अथान्यो राहुरासाद्य जग्राह सहसा रविम् ॥

| | | | |
|-----------|------------------------------|---------|--------------------|
| अद्य | “இன்று | अथ तु | அத்சுருணத்திலேயே |
| पर्वकाले | பர்வகாலத்தில் | अन्यः | மற்றொரு |
| सूर्य | சூரியனை | राहुः | ராஹு |
| जिघृक्षुः | பிடிக்க எண்ணங் கொண்டவனாய் | रविं | சூரியனை |
| अहं | நான் | भासाद्य | கிட்டி |
| भारतः | வந்துசேர்ந்தேன். | सहसा | பலாக்காரமாய் |
| | | जग्राह | பற்றியிருக்கிறான். |

स राहोर्वचनं श्रुत्वा वासवः संभ्रमान्वितः । उत्पपातासनं हित्वा चोद्वहन्काञ्चनीं स्रजम् ॥

| | | | |
|----------|--------------|-----------------|---------------------------------|
| काञ्चनीं | “பொன்மயமான | वचनं | விண்ணப்பத்திற்கு |
| स्रजं | மாலையை | श्रुत्वा | செவியாய்த்து, |
| उद्वहन् | அணிந்திருந்த | संभ्रमान्वितः च | விஷயமின்னதென்று தெரியாதவராயே |
| सः | அந்த | भासनं हित्वा | ஆஸனத்தை விட்டு |
| वासवः | இந்திரன் | उत्पपात | எழுந்தனர். |
| राहोः | ராகுவின் | | |

ततः कैलासकूटाभं चतुर्दन्तं मदस्रवम् । शृङ्गारधारिणं प्राशुं स्वर्णघण्टाट्टहासिनम् ॥३७॥
इन्द्रः करीन्द्रमारुह्य राहुं कृत्वा पुरःसरम् । प्रायाद्यत्नाभवत्सूर्यः सहानेन हन्मता ॥३८॥

| | |
|-----------------|--------------------|
| தத: | “ அப்பொழுது |
| ஈந்: | இந்திரன் |
| கௌஸகூடாப் | கைலாஸமலைபோல் |
| | விளங்குகின்றதும் |
| சதுர்ந் | நான்கு தந்தங்களையு |
| | டையதும் |
| மதந்வ் | மதஜலத்தைப் பெருக் |
| | குகின்றதும் |
| ஶ்ரீராரிஷ் | சிருங்காரமாய் அலங் |
| | கரிக்கப்பெற்றதும் |
| பாஸ்து | மிக்க உயரமானதும் |
| ஸ்வரீஷ்டாஹாஸிந் | ஸ்வரீஷ்டமணிகளின் |
| | ஒலிகளால் சப்திக்க |
| | ப்பெற்றதுமான |

| | |
|-----------|--------------------|
| கரிந் | ஐராவதத்தின்மீது |
| ஆரஹ | ஏறிக்கொண்டு |
| ராஹ் | ராகுவை |
| புரஸ்பர் | முன் செல்பவனாக |
| கூ:வா | செய்துகொண்டு |
| அநென | இந்த |
| ஹநூமதா சஹ | ஹனுமாரோடுகூட |
| | யிருக்கின்ற |
| சூர்ய: | சூரியன் |
| யத அமவத் | எவ்விடத்திலிருந்தா |
| | னோ அவ்விடத்திற்கு |
| பாயாத் | சென்றார். |

அதாதிர்ஶசெனாநாந்ராஹுஸ்துஜ்ய வாஸவம் । அநென ச சவீ ஹ: ப்ராவஶ்ச்சுலகூதவத் ॥ 39 ॥

| | |
|-----------|-------------------|
| அத | “ அப்பொழுது |
| ராஹ: | ராகு |
| வாஸவ் | இந்திரனை |
| உஸ்துஜ்ய | பின்னிருக்கவிட்டு |
| அதிர்ஶசென | வெருவேகமாய் |
| ஆராவத் | வந்தார். |

| | |
|-----------|-------------------|
| சுலகூதவத் | பர்வதசிகரம்போல் |
| ப்ராவந் | பாய்ந்துவருகின்ற |
| ச: வீ | அவனும் |
| அநென ச | இவராலேயும் |
| ஹ: | பார்க்கப்பட்டான். |

தத: சூர்ய் சஸுஸ்துஜ்ய ராஹ் ஶலமவேக்ஷய ச । உத்பபாத புநவ்யோம் ஶ்ரீஹிதும் சிஶிகாஸுதம் ॥

| | |
|-------------------|----------------|
| ராஹ் | “ ராகுவை |
| ஶலம் ச | ஒரு கனியெனவே |
| அவேக்ஷய | எண்ணி |
| தத: | அதனால் |
| சூர்ய் சஸுஸ்துஜ்ய | சூரியனை விட்டு |

| | |
|--------------------|----------------------|
| புந: | திரும்பவும் |
| ஸ்யோம | ஆகாயத்தில் |
| சிஶிகாஸுதம் | வலிம்ஹிகையின் |
| | புதல்வனை |
| ஶ்ரீஹிதும் உத்பபாத | பிடிக்க கிளம்பினார். |

உத்பஸ்துஜ்யாக்மிமம் ராம ப்ராவந் த்ரவஶ்ஜமம் । அவேக்ஷயீவ் பராவ்ரத்ய முக்ஷஷ: பராவ்ரத: ॥ 41 ॥

ஈந்ரமாஸ்சமானஸ்து த்ராதாரம் சிஶிகாஸுத: । ஈந்ர ஈந்ரேதி சத்ரானஸுஹுஸூஹுரபாஸத ॥ 42 ॥

| | |
|-----------------|----------------------|
| ராம | “ ஶ்ரீராம! |
| சிஶிகாஸுத: | சிப்பிக்கையின் புதல் |
| முக்ஷஷ: | ராகு [வனாகிய |
| புவ் | இவ்வண்ணமாய் |
| அக் | சூரியனை |
| உத்பஸ்துஜ்ய | விட்டு |
| ப்ராவந் | பாய்ந்துவருகின்ற |
| ஈந்ர ஶ்ரவஶ்ஜமம் | இந்த குரங்கை |
| அவேக்ஷய | பார்த்து |

| | |
|-----------|-------------------|
| பராவ்ரத: | புறங்காட்டியவனாய் |
| பாவ்ரத்ய | திரும்பி |
| ஈந்ர து | இந்திரனையே |
| த்ராதாரம் | அடைக்கலமாக |
| ஆஸ்சமான: | எண்ணியவனாய் |
| ஸந்நாஸாத் | பயத்தால் |
| ஸுஹ: ஶுஹ: | மேல்மேலும் |
| ஈந்ர ஈந்ர | ‘இந்திர, இந்திர’ |
| ஈதி அபாஸத | என்று அலறினார். |

तस्मिन्स्तु पतिते बाले वज्रताडनविह्वले । चुक्रो धेन्द्राय पवनः प्रजानामहिताय सः ॥४८॥

ச: பவன: "அந்த வாயுபகவான்
 तस्मिन् அந்த
 बाले குழந்தை
 वज्रताडनविह्वले வஜ்ராயுதத்தால்
 அடிபட்டுச்சேர்ந்து
 पतिते வீழ்ந்தவளவில்

तु இவ்விஷயமாய்
 प्रजानां பிராணிகளுக்கு
 अहिताय உபத்திரவம் விளை
 விப்பதாய்
 इन्द्राय இந்திரன்மீது
 चुक्रोय சினக்கொண்டார்.

प्रचारं स तु सङ्गृह्य प्रजास्वन्तगतः प्रभुः । गुहां प्रविष्टः स्वसुतं शिशुमादाय मारुतः ॥

ச: "அந்த
 प्रभुः சாமர்த்தியசாலியா
 मारुतः வாயுபகவான் [கிய
 प्रजासु பிரஜைகளிடத்தில்
 अन्तर्गतः உட்சென்றவராய்
 प्रचरं சஞ்சரிப்பதை

सङ्गृह्य நிறுத்திவிட்டு
 स्वसुतं தன் புதல்வனாகிய
 शिशु குழந்தையை
 आदाय எடுத்துக்கொண்டு
 गुहां तु ஒரு குழைமயிலேயே
 प्रविष्टः புகுந்திருந்தார்.

विष्मूत्राशयमावृत्य प्रजानां परमार्तिकृत् । रूोध सर्वभूतानि यथा वर्षाणि वासवः ॥५०॥

सर्वभूतानि "ஸர்வபூதங்களிடத்
 திலும்
 विष्मूत्राशयं மலமூத்திரஸ்தானங்
 களை
 आवृत्य ஸ்தம்பித்துவிட்டு
 प्रजानां பிரஜைகளுக்கு

परमार्तिकृत् மிகத் துன்பத்தை
 விளைவிப்பவராய்
 वासवः இந்திரன்
 वर्षाणि மழைகளை
 यथा எவ்வண்ணமோ
 அவ்வண்ணமே
 रूोध தகைந்துவிட்டார்.

वायुप्रकोपाद्भूतानि निरुच्छ्वासानि सर्वतः । सन्धिभिर्भिद्यमानैश्च काष्ठभूतानि जज्ञिरे ॥

वायुप्रकोपात् "வாயுவினது பெரும்
 கோபத்தால்
 भूतानि च பூதங்களெல்லாம்
 सर्वतः எங்கேபோர்ந்தாலும்
 भिद्यमानैः தளர்ந்துபோன

सन्धिभिः தேகப்பூட்டுகளால்
 निरुच्छ्वासानि மூச்சுவிடமுடியாத
 வைகளாய்
 काष्ठभूतानि காஷ்டங்கள்போன்ற
 जज्ञिरे ஆயின. [வைகளாய்

निस्वाध्यायवषट्कारं निष्क्रियं धर्मवर्जितम् । वायुप्रकोपात्तैलौवयं निरयस्थमिवाभवत् ॥

वायुप्रकोपात् "வாயுவினது பெரும்
 கோபத்தால்
 तैलौवयं மூவுலகும்
 निःस्वाध्यायवषट्कारं அத்யயனம், தேறாமம்
 ஒழிந்ததாய்

निष्क्रियं எப்படிப்பட்ட வியா
 பாரமுமொழிந்ததாய்
 धर्मवर्जितं தர்மமொழிந்ததாய்
 निरयस्थं நரகத்திலிருப்பது
 इव போன்றதாய்
 अभवत् ஆயிற்று.

एतत्प्रजानां श्रुत्वा तु प्रजानाथः प्रजापतिः । कारणादिति चोत्त्वाऽसौ प्रजाः पुनरभाषत ॥

प्रजानाथः “ பிரஜாநாதராகிய !
 असौ प्रजापतिः இந்த பிரம்மதேவர்
 प्रजावां பிரஜைகளுடைய
 एतत् இதற்கு
 श्रुत्वा செவிசாய்த்து
 प्रजाः பிரஜைகளைப்பார்த்து
 तु இவ்விஷயத்தில்

कारणात् च ஒருகாரணத்தால்
 इति என்று [தான்
 उक्त्वा முதலில் சொல்லி
 விட்டு
 पुनः அதன்மேல் விஸ்தார
 मायिப்படி
 अभाषत திருவாய்மலர்ந்தரு
 னினார்.

यस्मिंश्च कारणे वायुश्चுகोथ च रुरोथ च । प्रजाः शृणुध्वं तत्सर्वं श्रोतव्यं चात्मनः क्षमम् ॥

प्रजाः “ பிரஜைகளே,
 आत्मनः உங்களுக்கு
 क्षमं च ஹிதமாயிருக்கிறதும்
 श्रोतव्यं च { கேட்டறிந்துக்கொள்
 { எவேண்டியதாயிருக்
 { கிறதும்,
 वायुः वायुபகவான்

यस्मिन् कारणे எந்தக்காரணத்தால்
 चुकोथ கோபங்கொண்டிருக்
 கின்றனோ
 रुरोथ च தகைந்திருக்கின்றனோ
 तत् सर्वं च அதெல்லாவற்றையும்
 शृणुध्वस् சொல்லுகிறேன்,
 கேளுங்கள்.

पुत्रस्तस्याभरेशेन इन्द्रेणाथ निपातितः । राहोर्विचनमास्थाय ततः स कुपितोऽनिलः ॥

तस्य पुत्रः “ அவனது குழந்தை
 अमरेशेन தேவர்களின் ஈசனாகிய
 इन्द्रेण இந்திரனால்
 राहोः राகுவினது
 वचनं விண்ணப்பத்திற்கு
 आस्थाय இணங்கி

अथ அப்பொழுது
 निपातितः அடித்துத்தள்ளப்
 பட்டிருக்கின்றான்.
 सः अनिलः அந்த வாயுபகவான்
 ततः कुपितः அதனால் கோபங்கொ
 ண்டிருக்கிறான்.

अशरीरः शरीरेषु वायुश्चरति पालयन् । शरीरं हि विना वायुं समतां याति दारुभिः ॥

वायुः “ வாயு
 अशरीरः சரீரமில்லாதவனாய்
 शरीरेषु சரீரங்களில்
 पालयन् புகுந்து பரிபாலிக்
 கிறவனாய்
 चरति சஞ்சரிக்கின்றான்.

शरीरं சரீரமானது
 वायुं विना हि वायுவை விட்டுப்
 பிரிந்ததென்றால்
 दारुभिः கட்டைகளோடு
 समतां சமத்தவத்தை
 याति அடைகிறது.

वायुः प्राणः सुखं वायुर्वायुः सर्वमिदं जगत् । वायुना संपरित्यक्तं न सुखं विन्दते जगत् ॥

वायुः “ வாயு
 प्राणः பிராணதாரன்;
 सुखं சுகத்திற்கு ஆதாரம்
 वायुः வாயு;
 इदं जगत् இந்த உலகு
 सर्वं எல்லாவற்றிற்கும்
 ஆதாரம்

वायुः வாயு.
 वायुना वाயுவினால்
 संपरित्यक्तं கைவிடப்பட்ட
 जगत् உலகம்
 सुखं கஷ்டப்படா
 திருத்தலை
 न विन्दो பெறமுடியாதது.

अथैव च परित्यक्तं वायुना जगदायुषा। अथैव ते निरुच्छ्वासाः काष्ठकुड्योपमाः स्थिताः॥

अथ एव “இப்பொழுதுதான்
जगदायुषा உலகத்திற்குப் பிரா
ணையிருக்கின்ற
वायुना வாயுவினால்
परित्यक्तं கைவிடப்பட்டது.
ते அவர்கள்

अथ एव “இப்பொழுதுதான்
निरुच्छ्वासाः மூச்சில்லாதவர்களாயும்
काष्ठकुड्योपमाः च { கட்டைகள் போன்ற
வர்களாயும் சுவர்கள்
போன்றவைகளாயும்
स्थिताः கிடக்கின்றார்கள்.

तद्यामस्तत्र यत्रास्ते मारुतो रुक्प्रदो हि नः। मा विनाशं गमिष्याम अपसाद्यादितेः सुताः ॥

अदिनेः “அதிதியின்
सुताः புதல்வர்களே,
तत्र ஆதலால்
अपसाद्य வேண்டி கோபத்தை
नः தணிக்காததால்
रुक्प्रदः நமக்கு
मारुतः உபாதையைக்கொடுத்
வாயு [திருக்கின்ற

यत् एங்கு
आस्ते இருக்கிறாரோ
तत्र हि அவ்விடத்திற்கே
यामः செல்வோம்;
विनाशं நாசத்தை
मा गमिष्यामः அடையாமலிருப்
போம்.

ततः प्रजाभिः सहितः प्रजापतिः सदेवगन्धर्वभुजङ्गगुह्यकैः ।

जगाम तत्रास्यति यत्र मारुतः सुतं सुरेन्द्राभिहतं प्रगृह्य सः ॥ ६४ ॥

सः “அந்த
मारुतः வாயு
सुरेन्द्राभिहतं தேவேந்திரனால்
सुतं சிசுவை [அடியுண்ட
प्रगृह्य வைத்துக்கொண்டு
यत् எங்கு
आस्यति இருந்தனரோ
तत्र அவ்விடத்திற்கு

ततः அப்பொழுது
प्रजापतिः பிரம்மதேவர்
सदेवगन्धर्व- } தேவர்கள், கந்தர்வர்
भुजङ्गगुह्यकैः } கள், புஜங்கர்கள்,
குஹ்யர்கள், இவர்
களுடன்
प्रजाभिः பிரஜைகளோடு
सहितः கூடினவராய்
जगाम போய்ச்சேர்ந்தார்.

ततोऽर्कवैश्वानरकाञ्चनप्रभं सुतं ततोऽसङ्गतं सदागतेः ।

चतुर्मुखो वीक्ष्य कृपामथाकरोत्सदेवगन्धर्वविषयक्षराक्षसैः ॥ ६५ ॥

ततः “அவ்விடத்தில்
सदागतेः வாயுபகவானின்
अर्कवैश्वान- } சூர்யன், அக்கினி,
काञ्चनप्रभं } சுவர்ணம் இவைக
ளுக்குகிரான
காந்தியையுடைய
सुतं குழந்தையை
तदा அப்பொழுது
उरसङ्गतं மடியிலே படுக்க
வைக்கப்பட்டவகை

चतुर्मुखः நான் முகக்கடவுள்
सदेवगन्धर्व- } தேவர்கள், கந்தர்வர்
यक्षराक्षसैः } கள், ரிக்ஷிகள், யக்ஷர்
கள், ராக்ஷஸர்கள்,
இவர்களோடுகூட
वीक्ष्य பார்த்து
अथ அதன்மேல்
कृपां மனஉருக்கத்தை
अकरोत् கொண்டார்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे पञ्चत्रिंशः सर्गः ॥

षट्त्रिंशः सर्गः—முப்பத்தாறாவது ஸர்க்கம். || 36 ||

हनुमद्रप्राप्तिः—ஹனுமார் வரம் பெற்றுகொள்வது.

ततः पितामहं दृष्ट्वा वायुः पुत्रवधादितः । शिशुकं तं समादाय उत्तस्यौ चातुरयतः ॥१॥

ततः “ அப்பொழுது

புத்திரன் அடியுண்
டதினால் வருத்த
முற்றிருந்த

वायुः வாயுபகவான்

पितामहं பிரம்மதேவரை

दृष्ट्वा பார்த்து

तं அந்த

शिशुकं கைக்குழந்தையை

समादाय கையிலேந்திக்

கொண்டு

धातुः பிரம்மனது

भग्नतः சன்னிதானத்தில்

उत्तस्यौ எழுந்தநின்றனர்.

चलत्कुण्डलमौलिसूक्तपनीयविभूषणः । पादयोर्न्यपतद्वायुस्तिप्तोपस्थाय वैधसे ॥ 2 ॥

वायुः “ வாயுபகவான்

चलत्कुण्डलमौलि- கிரீடகுண்டலங்கள்,

सूक्तपनीय } பூமாலைகள், சுவர்ண

विभूषणः } ஆபரணங்கள் இவை

கள் அசைய

तिस्रोपस्थाय மூன்றுதரம் வீழ்ந்து,
வீழ்ந்து

वैधसे பிரமதேவருக்கு

पादयोः திருவடிகளில்

न्यपतत् நமஸ்காரஞ்செய்தார்.

तं तु वेदविदातेन लम्बाभरणशोभिना । वायुमुत्थाप्य हस्तेन शिशुं तं परिमृष्टवान् ॥३॥

वेदवित् “ பிரமதேவர்

तं वायुं அந்த வாயுபகவானை

उत्थाप्य எழுந்திருக்கச்செய்து

तं அந்த

शिशुं तु குழந்தையையும்

लम्बाभरण- } பெரும் ஆபரணங்
शोभिना } களால் அழகுபெற்று

आतेन விளங்குகிறதும்

हस्तेन விசாலமுமான

परिमृष्टवान् கையால்

தடவிக்கொடுத்தார்.

सृष्टमात्रस्ततः सोऽथ सलीलं पद्मयोनिना । जलसिक्तं यथा सस्यं पुनर्जीवितमाप्तवान् ॥

सः “ அது

अथ அப்பொழுது

सलीलं மஹாப்ரீதியுடன்

पद्मयोनिना பிரமதேவரால்

सृष्टमात्रः ஸ்பர்சிக்கப்பட்ட

ततः அதனால் [வளவில்

जलसिक्तं நீர்பாய்ச்சப்பெற்ற

सस्यं பயிர்

यथा எவ்வண்ணமோ,
அவ்வண்ணமே

पुनः முன்போலவே

जीवितं ஜீவித்திருப்பதை

आप्तवान् பெற்றுவிளங்கிற்று.

प्राणवन्तमिमं दृष्ट्वा प्राणो गन्धवहो मुदा । चचार सर्वभूतेषु सन्निरुद्धं यथा पुरा ॥ ५ ॥

प्राणः “ பிராணதாரணை

गन्धवहः வாயுதேவர்

सन्निरुद्धं தகைந்துகிடந்த

इमं இதை

प्राणवन्तं உயிருடனிருப்பதாக

दृष्ट्वा கண்டு

मुदा திருப்திகொண்டதால்

सर्वभूतेषु சகல பிராணிகளிடக்

திலேயும்

यथा पुरा முன்போலவே

चचार சஞ்சரிக்கலாற்றார்.

மாலா மலையை
उक्षिप्य கழுற்றிக் கையிலெடுத்த
துக்கொண்டு

हृदं பின்வரும்
वचः ஆக்கினையை
अब्रवीत् ரியமித்தருளினார்:

मत्करोत्सृष्टवज्रेण हनुरस्य यथा हतः । नाम्ना वै कपिशार्दूलो भविता हनुमानिति ॥

कपिशार्दूलः “வானரோத்தமன்

अस्य இவனது

हनुः (ஹனு) தாடை

என்கையினின்று
मत्करो-सृष्टवज्रेण { வீழ்ந்த வஜ்ராயு
தத்தால்

हवः அடியுண்டது

यथा என்கிறகாரணத்தால்

हनुमान् “ஹனுமான்”

इति என்கிற

नाम्ना वै பெயராலேயே

भविता விளங்கட்டும்.

अहमस्य प्रदास्यामि परमं वरमद्भुतम् । इतः प्रभृति वज्रस्य ममावधयो भविष्यति ॥१२॥

अस्य “இவனுக்கு
अहं நான்
अद्भुतं அத்புதமும்
परमं ச்ரோஷ்டமுமான
वरं ஒருவரத்தை
प्रदास्यामि கொடுக்கிறேன்.

इतः प्रभृति இதுமுதல்
मम எனது
वज्रस्य வஜ்ராயுதத்திற்கு
अवध्यः கொல்லமுடியாதவ
भविष्यति விளங்குவான்.’

मार्ताण्डस्त्वब्रवीत्तत्र भगवांस्तिमिरापहः । तेजसोऽस्य मदीयस्य ददामि शक्तिकां कलाम् ॥

तिमिरापहः “இருளை அழிக்கும்

मार्ताण्डः சூர்ய

भगवान् பகவான்

तत्र அப்பொழுது

तु இவ்விஷயத்திலிப்படி

अब्रवीत् ரியமித்தருளினார்:

मदीयस्य ‘எனது

तेजसः தேஜஸின்

शक्तिकां நூற்றிலொரு

कलं கலையை

अस्य இவனுக்கு

ददामि கொடுக்கிறேன்.

यदा तु शास्त्राण्यध्येतुं शक्तिरस्य भविष्यति । तदास्य शास्त्रं दास्यामि येन वाग्मी भविष्यति ॥

न चास्य भविता कश्चित्सदृशः शास्त्रदर्शने

॥ १४ ॥

अस्य “இவனுக்கு
शास्त्राणि சாஸ்திரங்களை
अध्येतुं கற்றுக்கொள்ள
शक्तिः சக்தி
यदा எப்பொழுது
भविष्यति உண்டாகிறதோ
तदा அப்பொழுது
शास्त्रं சாஸ்திரத்தை
दास्यामि च நானே உபதேசிக்க
கிறேன்.

येन எந்த அத்தலை
वाग्मी வாக்கவல்லமையுடையவனாய்
भविष्यति விளங்குவான்.
शास्त्रदर्शने சாஸ்திரஞானத்தில்
अस्य இவனுக்கு
सदृशः இணையானவன்
कश्चित् तु மற்ற எவனொருவனும்
न भविता இருக்கமாட்டான்.’

वरुणश्च वरं प्रादान्नास्य मृत्युर्भविष्यति । वर्षायुतशतेनापि मत्पाशादुदकादपि ॥
यमो दण्डादवध्यत्वमरोगित्वं च नित्यशः ॥ १५ ॥

वरुणः “ वरुணன்
अस्य इवனுக்கு
वर्षायुतशतेनापि ‘ எந்நாளிலும்
मत्पाशात् च எனது பாசத்தாலும்
उदकादपि தண்ணீராலும்
स्युः மரணம்
न भविष्यति உண்டாகா திருக்கக்
கடவது ’ என்கிற

वरं வரத்தை
प्रादात् தந்தருளிணர்.
यमः யமன்
दण्डात् தண்டத்தால்
अवध्यत्वं மரணமில்லாமையை
नित्यशः எந்நாளிலும் [யும்
अरोगित्वं திடகாத்திரத்தையும்
च அப்படியே தந்தரு
ளிணர்.

वरं ददामि सन्तुष्ट अविषादं च संयुगे । गदेयं मामिका चैनं संयुगे न वधिष्यति ॥

इत्येवं वरदः प्राह तदा ह्येकाक्षिपिङ्गलः

तदा “ அப்பொழுது
एकाक्षिपिङ्गलः பிங்கள வர்ணமான
वरदः ஒருகண்ணையுடைய
सन्तुष्टः குபேரன்
एवं மனமகிழ்ந்தவராய்
प्राह இப்படி
मामिका சொல்லியருளிணர்:
इयं ‘ என்னுடையதான
गदा च இந்த
கதையும்

॥ १६ ॥

एवं இவனை
संयुगे போரில்
न वधिष्यति கொல்லமுடியாத
தாயிருக்கும்.
च அன்றியும்
संयुगे போரில்
अविषादं हि சோர்வு அடையாதி
ருத்தலையும்
वरं इति ஒரு வரமாய்
ददामि நானளிக்கிறேன்.’

मत्तो मदायुधानां च न वध्योऽयं भविष्यति ।

अस्य “ இவனுக்கு
शङ्करेण பாமசிவனால்
मत्तः अपि ‘ என்னாலும்
मदायुधानां च எனது ஆயுதங்களா
अयं இவன் [லும்
न वध्यः கொல்லமுடியாதவனாக

इत्येवं शङ्करेणापि दत्तोऽस्य परमो वरः ॥

भविष्यति இருக்கக்கடவது’
इति என்கிற
एवं இப்படிப்பட்ட
परमः உத்திருஷ்டமான
वः वरமானது
दत्तः தந்தருளப்பட்டது.

सर्वेषां ब्रह्मदण्डानामवध्योऽयं भविष्यति ।

ब्रह्मा “ பிரமதேவர்
अयं ‘ இவன்
सर्वेषां சகல
ब्रह्मदण्डानां பிரம்மதண்டங்களுக்
கும்
अवध्यः கொல்லமுடியாதவ
னாகவும்

दीर्घायुश्च महात्मा च इति ब्रह्माऽब्रवीद्द्वचः ॥

महात्मा च மஹானுபாவனாகவும்
दीर्घायुः च தீர்க்காயுடைய
யவனாகவும்
भविष्यति இருக்கக்கடவது’
इति என்கிற
वचः ஆக்கிணையை
अब्रवीत् நியமித்தருளிணர்.

विश्वकर्मा च दृष्ट्वैनं बालसूर्योपमं शिशुम् । शिल्पिनां प्रवरः प्रादाद्वरमस्य महात्मनः ॥
मत्कृतानि च शस्त्राणि यानि दिव्यानि संयुगे । तैरवध्यत्वमापन्नश्चिरञ्जीवी भविष्यति ॥

शिल्पினர் “ சில்பிகளின்
புரவரர் தலைவனான
விசுவகர்மா
என் இந்த
பாலசூர்யோபமம் பாலசூர்யனைப்போல
ருக்கின்ற

சிசு
தூஷா கண்ணுற்று
அவ் இந்த
மஹாத்மன் மஹாத்மாவைக்
மக்தானி என்னால் நிரூபிக்கப்
பட்ட

தீயானி தீயமான
சுத்திரங்கள்
எவைகளோ
அவைகளால்
போரில்
மரணமில்லாமையை
அடைந்தவனாகவும்
சிரஞ்சீவியாகவும்
இருக்கக்கடவது
வரம் வரத்தை
பிரதாத் தந்தருளினார்.

ततः सुराणां तु वरैर्दृष्ट्वा ह्येनमलंकृतम् । चतुर्मुखस्तुष्टमना वायुमाह जगद्गुरुः ॥ २१ ॥

சுரர்களுள் “ ஜகத்குருவாகிய
சுருமுகர் நான் முகக்கடவுள்
தது அப்பொழுது
என் இவனை
சுரர்கள் தேவர்களின்
வரம் வரங்களால்
அலங்கரித்த
அலங்கரிக்கப்பட்டவனாக

தூஷா பார்த்து
சுருமுகர் மனமகிழ்ந்தவராய்
சுரு இவ்விஷயத்தில்
வாயு ஹி வாயுபுகவானையும்
பார்த்து
அஹ இப்படித்திருவாய்
மலர்ந்தருளினார்.

अमित्राणां भयकरो मित्राणामभयङ्करः । अज्ञेयो भविता पुत्रस्तव मारुत मारुतिः ॥

மாருத “ ஹே மாருத!
தவ உனது
புத்திரர் புதல்வனாகிய
மாருதி மாருதி
அஜ்ஜெயர் எவராலும் வெல்வதற்
கரியனாகவும்

அமித்ரணர் சத்ருக்களுக்கு
அபயகர் பயத்தைத்தருபவ
னாகவும்
மித்ரணர் மித்திரர்களுக்கு
அபயத்தைத்தருபவ
னாகவும்
அவிதா விளங்குவான்.

कामरूपः कामचारी कामगः प्लवतां वरः ।

காமரூபம் “ நினைத்த ரூபமெடுக்க
கவல்லவனாகவும்
காமகர் நினைத்த இடம் செல்ல
வல்லவனாகவும்
காமசாரி { நினைத்த இடத்தில்
தடைபட்டாது செல்ல
வல்லவனாகவும்
புல்தா பாய்ந்து செல்லுபவர்களில்

भवत्यव्याहतगतिः कीर्तिमांश्च भविष्यति ॥

வரம் தலைவனாகவும்
அவ்யாஹதகதி { தங்கி இளைப்பாறவே
ணடுமென்கிற அவள்
தை அற்றவனாகவும்
அவதி ஆகிறான்.
கீர்திமாந் கீர்த்திமாகவும்
அவிஷயி விளங்கப்போகிறான்.

रावणोत्सादनार्थानि रामप्रियकराणि च । रोमहर्षकराण्येष कर्ता कर्माणि संयुगे ॥ २४ ॥

एषः च “इवन्तोरुवने
संयुगे போரில்
रावणोःसदनार्थानि ராவணனுடைய அழி
வை விளைவிப்பதும்
रामप्रियकराणि ஸ்ரீராமரை மகிழ்ச்
செய்கிறதமான

रोमहर्षकराणि அரியபெரிய
कर्माणि காரியங்களை
कर्ता செய்துமுடிக்கப்
போகிறான்.”

एवमुक्त्वा तमामन्त्र्य मासूतं त्वमरैः सह । यथागतं ययुः सर्वे पितामहपुरोगमाः ॥ २५ ॥

पितामहपुरोगमाः “पितामहपुरोग
माः”

सर्वे எல்லோரும்
एवं இவ்வண்ணமாய்
उक्तवा கூறிவிட்டு
तं அந்த

मासूतं வாயுவினிடம்
आमन्त्र्य விடைபெற்றுக்
கொண்டு

अमरैः सह தேவர்களோடுகூட
यथागतं तु வந்தவழியே
ययुः சென்றார்கள்.

सोऽपि गन्धवहः पुत्रं प्रगृह्य गृहमानयत् । अञ्जनायास्तमाचख्यौ वरदत्तं विनिर्गतः ॥

सः “அந்த
गन्धवहः வாயுபகவான்
तं அந்த
पुत्रं புதல்வனை
प्रगृह्य எடுத்துக்கொண்டு
गृहं கிருகத்திற்கு
आनयत् கொண்டுவந்தார்.

अञ्जनायाः அஞ்ஜனாதேவிக்கு
वरदत्तं अपि வரங்களைப்பெற்றிருப்
பதையும்
आचख्यौ ஸவிஸ்தாரமாகச்
சொன்னார்.
विनिर्गतः அந்தார் த்தானமாயி
றார்.

प्राप्य राम वरानेष वरदानसमन्वितः । बलेनात्मनि संस्थेन सोऽपूर्यत यथार्णवः ॥ २७ ॥

राम “ஸ்ரீராம!
सः அந்த
एषः இது
वरान् प्राप्य வரங்களைப் பெற்று
वरदानसमन्वितः { வரானுக்கிரங்கள்
பெற்றுவிளங்கு
கிறதாய்

अर्णवः यथा சமுத்திரமென
आमनि தன்னிடத்தில்
संस्थेन குடிக்கொண்டுவிட்ட
बलेन சக்தியால்
अपूर्यत ஸந்தோஷமாயி
றந்தது.

तरसा पूर्यमाणोऽपि तदा वानरपुङ्गवः । आश्रमेषु महर्षीणामपराध्यति निर्भयः ॥ २८ ॥

वानरपुङ्गवः வானரோத்தமன்
महर्षीणां மஹரிஷிகளுடைய
आश्रमेषु ஆசிராமங்களில்
तदा அப்பொழுது
तरसा தேகபலத்தால்

पूर्यमाणः மேல்கொள்ளப்
பட்டவனாய்
निर्भयः अपि பயமென்பதே
இல்லாதவனாயும்
अपराध्यति உபத்திரவம் செய்
தான்.

सुग्भाण्डान्यग्निहोत्रं च वल्कलाजिनसञ्चयान् ।

भग्निविच्छिन्नविध्वस्तान्संशान्तानां करोत्ययम्

॥ २९ ॥

अयं " இவன்
 संशान्तानां பொறுமையே தனமா
 கயுடையவர்களுடைய
 सुग्भाण्डानि { சுருக்குபாண்ட
 மென்கிற வேள்விக்
 கருவிகளையும்
 अग्निहोत्रं च அக்னிறோத்திரத்
 தையும்

वल्कलाजिन- } மாவுரிகள், மாள்
 सञ्चयान् } தேரல்கள் இவைக
 ளின் சூனியல்களையும்
 भग्निविच्छिन्न- } உடைந்தவைகளாக
 विध्वस्तान् } வும், உருமாறியவை
 களாகவும், அங்கு
 மிங்கும்வாரி எறியப்
 பட்டவைகளாகவும்
 करोति செய்கான்.

एवंविधानि कर्माणि प्रावर्तत महाबलः । सर्वेषां ब्रह्मदण्डानामवध्यः शंभुना कृतः ॥३०॥

सर्वेषां " எல்லா
 ब्रह्मदण्डानां பிரமதண்டங்களுக்
 கும்
 अवध्यः மாணமில்லாதவனாக
 शंभुना பிரமதேவரால்
 कृतः செய்யப்பட்டவனான

महाबलः மஹாபலம்கொண்ட
 இவன்
 एवंविधानि இப்படிப்பட்ட
 कर्माणि காரியங்களை
 प्रावर्तत செய்துவந்தான்.

जानन्त ऋषयस्तं वै क्षमन्ते तस्य शक्तिः

॥ ३१ ॥

तस्य " அவரது
 शक्तिः वै சக்திக்காகவே
 तं அவனை

जानन्तः ஞானவான்களாகிய
 ऋषयः ரிஷிகள்
 क्षमन्ते மன்னித்துவந்தார்
 கள்.

यथा केसरिणा त्वेष वायुना सोऽञ्जनासुतः । प्रतिषिद्धोऽपि मर्यादां लङ्घयत्येव वानरः ॥

सः " அந்த
 एषः இந்த
 अञ्जनासुतः அஞ்சனையின் புதல்
 वानरः வானரன் [வனாகிய
 केसरिणा கேசரியாலும்
 वायुना तु வாயுவினாலும்

यथा எவ்வளவோ
 प्रतिषिद्धः अपि தடுக்கப்பட்டவனாக
 யிருந்தும்
 मर्यादां நியாயவழியை
 लङ्घयति एव மீறியே நடந்து
 வந்தான்.

ततो महर्षयः क्रुद्धा भृगुङ्गिरसवंशजाः । शेपुरेन रघुश्रेष्ठ नातिक्रुद्धातिमन्यवः ॥ ३३ ॥

रघुश्रेष्ठ " ரகூத்தம,
 भृगुङ्गिरसवंशजाः { பிருகு, அங்கிரஸ்,
 என்கிற முனிவர்
 களின் வம்சங்களில்
 பிறந்த
 महर्षयः மஹரிஷிகள்

क्रुद्धा: கோபமூட்டப்பட்ட
 ततः ஆயினும் [வர்களாய்
 नातिक्रुद्धाति- } அளவுகடந்த கோப
 मन्यवः } மும் ஆத்தாமுயில்
 லாதவர்களாய்
 एवं இவனை
 शेपुः சபித்தார்கள்:

वाधसे यत्समाश्रित्य बलमस्मान्पुत्रङ्गम । तदीर्घकालं वेत्तासि नास्माकं शापमोहितः ॥
यदा ते स्मार्यते कीर्तिस्तदा ते वर्धते बलम् ॥ ३४ ॥

புறங்கும “ஹே வானரா!
யத் எந்த
பலம் பலத்தை
சமாஸ்திர ஆசிராயித்து
அஸாந் எங்களை
வாபசே உபத்திரஷிக்கிறாயோ
தத் அதை
தீர்ச்சகலம் வெளுகாலம்வரையில்
அஸாக் எங்களது
சாபமோஹித சாபத்தால் மோஹித்
தவனாகி

ந வெத்தாசி நீ அறியாதிருக்கக்
கடவாய்;
யதா எப்பொழுது
தே உனது
கீர்தி: தேஜஸ்
ஸார்யதே நினைப்பு மூட்டப்
படுகிறதோ
ததா அப்பொழுது
தே உனது
பலம் பலம்
வர்த்தே விளங்கும்.

ततः स हृततेजो जा महर्षिवचनौजसा । एषोऽऽश्रमाणि तान्येव मृदुभावं गतोऽचरत् ॥

தத: “அதன்மேல்
ச: பூவ: அந்த இவன்
மஹர்ஷிவசனௌசா முனிவர்களிட்ட சாப
மஹிமையால்
ஹததேஜோ: தேஜஸ்ஸும், பலமும்
அடங்கிக்கிடந்தவனாய்

மூதுபாவ: சார்தருணத்தை
அடைந்தவனாய்
தானி அந்த
அசுரமங்களிலேயே
அசரத் ஸஞ்சரித்துவந்தான்.

अथक्षरजसो राम वालिसुग्रीवयोः पिता । सर्वानराजाऽऽसीत्तेजसा भास्करप्रभः ॥

அத “இப்படியிருக்கையில்
வாலிசுக்ரீவர்களின்
பிதாவும்
தேஜஸால்
பாஸ்கரப: சூரியனுடைய ஜோதி
யுடையவனுமான

ஶக்ஷரஜச: நாம ரிக்ஷாஜஸ் எனப்
பெயர்கொண்டவன்
ஸர்வானராஜா சகல வானரர்களுக்
கும் மன்னனாய்
அஸித் இருந்தான்.

स च राज्यं चिरं कृत्वा वानराणां हरीश्वरः । स च ऋक्षरजा नाम कालधर्मेण सङ्गतः ॥

ஶக்ஷராஜா: “ரிக்ஷாஜஸ்
நாம எனப்பெயருள்ள
ச: அவன்
ஹரிசு: வானரர்களில்
பெரியவன்.
ச: அவன்

வானராணா வானரர்களுடைய
ராஜ்யம் ராஜ்யப்பரிபாலனத்தை
சிரம் செங்காலம்
கூத்வா ச புரிந்துவிட்டு
காலதர்மேண காலகதியை
சங்குத: அடைந்தான்.

तस्मिन्नस्तमिते चाथ मन्त्रिभिर्मन्त्रकोविदैः । पित्र्ये पदे कृतो वाली सुग्रीवो वालिनः पदे॥

अथ “अப்பொழுது
 तस्मिन् अवன்
 अस्मिन्ने மரணமடைந்ததும்
 वाली வாலி
 पित्र्ये பிதாவின்
 पदे ஸ்தானத்தில்
 मन्त्रकोविदैः மந்திராலோசனைகளில்
 நிபுணர்களான

मन्त्रिभिः அமைச்சர்களால்
 कृतः ஸ்தாபிக்கப்பட்டான்.
 सुग्रीवः च சுகரீவனும்
 वालिनः வாலியின்
 पदे ஸ்தானத்தில்
 कृतः ஸ்தாபிக்கப்பட்டான்.

सुग्रीवेण समं त्वस्य अद्वैधं छिद्रवर्जितम् । आबाल्यं सरुष्यमभवदनिलस्याग्निना यथा ॥

अनिलस्य “காற்றுக்கு
 अग्निना அக்னியுடன்
 यथा எவ்வண்ணமோ
 अवண்ணமே
 अस्य तु இவனுக்கும்
 सुग्रीवेण சுகரீவரோடும்

आबाल्यं பால்யம்முகல்
 सरुष्यं ஸ்ரேஹம்
 अद्वैधं மாறுதலற்றதாய்
 छिद्रवर्जितं குறையற்றதாய்
 समं பரிபூர்ணமாய்
 अनवत् இருந்தது.

एष शापवशादेव न वेद बलमात्मनः । वालिसुग्रीवयोर्वैरं यदा राम समुत्थितम् ॥ ४० ॥

राम “ஸ்ரீராம!
 वालिसुग्रीवयोः வாலிக்கும் சுகரீவ
 वैरं வைரம் [னுக்கும்
 यदा எப்பொழுது
 समुत्थितं உண்டாயிற்றோ,
 அப்போது

एषः இவன்
 आत्मनः தனது
 बलं பலத்தை
 शापवशात् एव சர்பானுபவத்தாலே
 न वेद அறியாதிருந்தான்.
 वैरं யே

न ह्येष राम सुग्रीवो आम्यमाणोऽपि वालिना । देव जानाति न ह्येष बलमात्मनि मारुतिः ॥

देव “தேஜோமயராகிய
 राम ஸ்ரீராம!
 एषः இந்த
 मारुतिः हि மாருதிகான்
 आत्मनि தன்னிடத்திலுள்ள
 बलं பலத்தை

न जानाति அறியாதிருந்தான்.
 एषः இந்த
 सुग्रीवः अपि சுகரீவனும்
 वालिना வாலினால்
 आम्यमाणः हि தூரத்தப்பட்டவனாகையால்
 न जानाति அறியாமலிருந்தான்.

ऋषिशापाहृतबलस्तदेष कपिसत्तमः । सिंहः कुञ्जररुद्धो वा आस्थितः सहितो रणे ॥

एषः “இந்த
 कपिसत्तमः வானரோத்தமன்
 रणे போர்க்களத்தில்
 तदा அக்காலத்தில்
 कुञ्जररुद्धः பிடரிமயிரால்மறைக்கப்பட்ட

सिंहः वा சிங்கம்போல்
 ऋषिशापाहृतबलः { ரிஷிசர்பத்தால் பறை
 न्तु अदन्किक्किदन्त
 பலமுடையவனாக
 सहितः பொறுத்துக்கொண்டு
 आस्थितः சும்மாளிருந்தான்.

पराक्रमोत्साहमतिप्रतापसौशील्यमाधुर्यनयानयैश्च ।

गाम्भीर्यचातुर्यसुवीर्यधैर्यैर्हनुमतः कोऽभ्यधिकोऽस्ति लोके

॥ ४३ ॥

| | | | |
|--|--|----------|--------------------------|
| पराक्रमोत्साह- मतिप्रतापसौशील्य माधुर्यनयानयैः | } “पराக்கிரமம், உச்சா ஹம், புத்திப்பிரதாபம், சௌசீல்யம், மாதூர் யம், பிரவிருத்தி, நிவி ருத்தி இவைகளா லும் | लोके | உலகில் |
| | | हनुमतः | அனுமானைக்காட் டி-லும் |
| गाम्भीर्यचातुर्य- सुवीर्यधैर्यैः च | } काम्पूर्यம், சாதூர் யம், மெச்சத்தக்க வீர்யம், தைரியம் இவைகளா லும் | अभ्यधिकः | மேம்பட்டவன் |
| | | कः | எவன் |
| | | अस्ति | இருக்கிறான். |

असौ पुनर्व्याकरणं ग्रहीष्यन्सूर्योन्मुखः प्रष्टुमनाः कपीन्द्रः ।

उद्यद्दिरेरस्तगिरिं जगाम ग्रन्थं महद्धारयनप्रमेयः

॥ ४४ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|--------------|-------------------|
| अप्रमेयः | “அளவிடாமகிமை | धारयन् | நிச்சயங்கொண் |
| असौ | இந்த [யுடைய | | டவனாய் |
| कपीन्द्रः | வானரோத்தமன் | ग्रहीष्यन् | கிரகித்துக்கொள்ள |
| पुनः | எப்படியாகிலும் | | விரும்பியவனாய் |
| महत् | மஹத்தான | सूर्योन्मुखः | சூர்யபகவானையே |
| ग्रन्थं | செல்வமாகிய | | பார்த்தவண்ணமாய் |
| व्याकरणं | வியாகரணசாஸ்திரத் | उद्यद्दिरेः | உதயகிரியிலிருந்து |
| | தை | अस्तगिरिं | அஸ்தகிரிபர்யந்தம் |
| प्रष्टुमनाः | பிரார்த்தித்து உபதே | जगाम | சென்றான். |
| | சமாயடைய | | |

समूत्रवृत्त्यर्थपदं महार्थं ससंग्रहं साध्यति वै कपीन्द्रः ।

न ह्यस्य कश्चित्सदृशोऽस्ति शास्त्रे वैशारदे छन्दगतौ तथैव

॥ ४५ ॥

| | | | |
|---------------------|--------------------|------------|---------------------|
| कपीन्द्रः | “வானரோத்தமன் | छन्दगतौ | சந்தசாஸ்திரத்திலும் |
| समूत्रवृत्त्यर्थपदं | * திகமென்ற உரை | तथा एव | அவ்வண்ணமே |
| | யையும் | शास्त्रे | சாஸ்திரத்திலும் |
| ससंग्रहं महार्थं वै | சங்கிரகத்தோடுகூடிய | अस्य | இவனுக்கு |
| | பூர்பாஷ்யத்தையும் | सदृशः | இணையானவன் |
| साध्यति | பூர்ணமாய்ப் பெற | कश्चित् हि | ஒருவனும் |
| | நிருக்கிறான். | नास्ति | இல்லை. |
| वैशारदे | நியாயசாஸ்திரத் | | |
| | திலும் | | |

[* சூத்திரம், சூத்திரார்த்தத்தை விளவிக்குவதான விருத்தி, ஸ்பஷ்டமாய் சொல்லப்பட்டதையும் சொல்லப்படாததையும் விளக்குவதானவர்.]

सर्वासु विद्यासु तपोविधाने प्रसर्पते यो हि गुरुं सुराणाम् ।

सोऽयं नवव्याकरणार्थवेत्ता ब्रह्मा भविष्यत्यपि ते प्रसादात् ॥ ४६ ॥

| | | | |
|---------------------|---------------|----------------|--------------------|
| ய: | “எவன் | தपोவிதான | இந்திரியநிகரஹ |
| நவவ்யாகரணार्थவேत्ता | { | நவவியாகரணங்களை | அனுஷ்டானத்தினும் |
| | | உள்ளபடி அறிந்த | தேவர்களின் |
| | | வனே | குருவுக்கு |
| ச: | அந்த | பிரசரீதே | இணையாபிருக்கிறான். |
| अयं | இவன் | ते | தேவரீரது |
| सर्वासु | ஸகல | प्रसादात् हि | அனுக்கிரகத்தாலேயே |
| विद्यासु | வித்தைகளினும் | ब्रह्मा अपि | மஹாபரிசுத்தனும். |
| | | भविष्यति | விளங்கப்போகிறான். |

प्रवीविक्षोरिव सागरस्य लोकान्दिक्षोरिव पावकस्य ।

युगक्षये ह्येव यथाऽन्तकस्य हनूमतः स्थास्यति कः पुरस्तात् ॥ ४७ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|-------------------|--------------------|
| युगक्षये | “பிரளயகாலத்தில் | पावकस्य | அக்கினிக்கு |
| प्रवीविक्षोः | { | சர்வத்தையும் முழு | சமமானவனும் |
| | | கப்பண்னுமாறு | யமனுக்கும் |
| | | பொங்கிவரும் | சமமானவனுமான |
| सागरस्य | கடலுக்கு | हनूमतः | அனுமானுக்கு |
| ह्येव | சமமானவனும் | पुरस्तात् | முன்னே |
| लोकान् | உலகங்களை | कः हि | எவனெருவந்தான் |
| दिक्षोः | எரிக்க எண்ணங் | स्थास्यति | எதிர்த்துநிற்கவல்ல |
| | கொண்ட | | வன். |

एषेव चान्ये च महाकपीन्द्राः सुग्रीवमैन्दद्विविदाः सनीलाः ।

सतारतारेयनलाः सरम्भास्त्वत्कारणाद्राम सुरैर्हि सृष्टाः ॥ ४८ ॥

| | | | |
|---------------|------------------|----------------------------|---|
| राम | “ஸ்ரீராமா! | सुग्रीवमैन्द- द्विविदाः | } சுகரீவன், மைந்தன், தவிவிதன், இவர் கள் உள்ளிட்டவர் |
| एषः | இவன் | | |
| ह्येव | எவ்வண்ணமோ | अन्ये | அபூர்வமாயிருக்கிற |
| | அவ்வண்ணமே | महाकपीन्द्राः | பிரஸித்திபெற்ற |
| सरम्भाः | ரம்பனுள்ளிட்ட | | வானரோத்தமர்கள் |
| सतारतारेयनलाः | { | தாரன், அங்கதன், | सुरैः च स्वकारणात् हि सृष्टाः |
| | | நலன் இவர்களுள் | |
| | | ளிட்டவும் | |
| सनीलाः | நீலனுள்ளிட்டவும் | | தேவதைகளாலேயே தேவரீர் பொருட்டே ஸ்ருஷ்டிக்கப்பட்ட டார்கள். |

तदेतत्कथितं सर्वं यन्मां त्वं परिपृच्छसि । हनूमतो बालभावे कर्मैतत्कामं मया ॥ ४९ ॥

| | | | |
|------------|---------------|---------|-------------------|
| எவ் | “தேவரீர் | கயித் | சொல்லப்பட்டது |
| மா | என்னை | हनूमतः | அனுமாருடைய |
| யத் | எதை | बालभावे | பாலயாவஸ்தையில் |
| परिपृच्छसि | கேட்டருளினீரோ | एतन् | இப்படிப்பட்டதாகிய |
| तत् | அந்த | कर्म | ஸாஹஸ்கிருத்திய |
| एतन् | இது | मया | என்னால் [மும் |
| सर्वं | எல்லாம் | कथितम् | சொல்லப்பட்டது.” |

श्रुत्वाऽगस्त्यस्य कथितं रामः सौमित्रिरेव च । विस्मयं परमं जग्मुर्वानरा राक्षसैः सह ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|----------|---------------|
| ராக்ஷஸை: सह | ராக்ஷஸர்களோடு | கயித் | ஸம்பாஷிணைக்கு |
| वानराः | வானரர்களும் [கூடிய | श्रुत्वा | செவியாய்த்து |
| रामः च | ஸ்ரீராமரும் | परमं | அதிக |
| सौमित्रिः एव | லக்ஷ்மணரும் | विस्मयं | ஆச்சரியத்தை |
| अगस्त्यस्य | அகஸ்தியருடைய | जग्मुः | அடைந்தார்கள். |

अगस्त्यस्त्वब्रवीद्रामं सर्वमेतच्छ्रुतं त्वया । दृष्टः संभाषितश्चासि राम गच्छामहे वयम् ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|------------|---|
| अगस्त्यः | அகஸ்தியர் | श्रुतं | சிரத்தையுடன் கேட்டருளப்பட்டது. |
| रामं | ஸ்ரீராமரிடம் | दृष्टः | { பிரத்தியக்ஷத்தில் காட்சித்தந்தருளிய வராயும் |
| तु | இப்பொழுது இப்படி | | |
| अब्रवीत् | விண்ணப்பம்செய்து கொண்டார்: | संभाषितः च | சம்பாஷிணை செய் |
| राम | “ஸ்ரீராமா! | असि | இருக்கிரீர். [தவராயும் |
| त्वया | தேவரீரால் | वयं | நாங்கள் |
| एतत् सर्वं | இது எல்லாம் | गच्छामहे | போய்வருகிறோம்.” |

श्रुत्वाैतद्राघवो वाक्यमगस्त्यस्योद्यतेजसः । प्राञ्जलिः प्रणतश्चापि महर्षिमिदमब्रवीत् ॥५२॥

| | | | |
|------------|---------------|--------------|--------------------|
| राघवः | ஸ்ரீராகவர் | महर्षिं | மஹரிஷியைப்பார்த்து |
| उद्यतेजसः | மஹாதேஜஸ்வியான | इदं | பின்கண்டபடி |
| अगस्त्यस्य | அகஸ்தியருடைய | प्राञ्जलिः च | கைகூப்பிக்கொண்டும் |
| एतत् | இந்த | प्रणतः अपि | வணக்கமாகவும் |
| वाक्यं | சொல்லுக்கு | ब्रवीत् | திருவாய்மலர்ந்தரு |
| श्रुत्वा | செவியாய்த்து | | ளினார்: |

अथ मे देवता हृष्टाः पितरः प्रपितामहाः । युष्माकं दर्शनादेव नित्यं तुष्टाः सवान्धवाः ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|-------------|-------------------|
| युष्माकं | “தேவரீர்களது | पितरः | பித்ருக்களும் |
| दर्शनात् एव | தரிசனத்தினாலேயே | प्रपितामहाः | ப்ரபிதாமஹாக்களும் |
| अथ | இப்பொழுது | नित्यं | என்றென்றைக்கும் |
| मे | எனது | तुष्टाः | திருப்திகொண்டவர் |
| देवताः | தேவதைகளும் | | களாய் |
| सवान्धवाः | மாதாவம்சத்தவர் | हृष्टाः | ஸந்தோஷமடைவார் |
| | களோடுகூடிய | | கள். |

दिज्ञाप्यं तु ममैतद्धि तद्दाम्यागतस्पृहः । तद्भवन्निर्मम कृते कर्तव्यमनुकम्पया ॥ ५४ ॥

आगतस्पृहः “ மனதில் ஓர் அபிலா
ஷையுடையவனாய்
தத் அந்த
ஏதவ் இந்த
மம என்னுடைய
விज्ञाप्यं பிரார்த்தனையை
तु இப்பொழுது

वह्नि विண்ணப்பம்செய்
கிறேன்.
मम कृते எனக்காக
तत् அது
भवद्भिः हि உங்களாலேயே
अनुकम्पया கருணைகொண்டு
कर्तव्यम् செய்யப்படவேண்டும்.

पौरजानपदान्स्थाप्य स्वकार्येष्वहमागतः । ऋतूनेव करिष्यामि प्रभावाद्भवतां सताम् ॥

अहं “ நான்
पौःजानपदान् நகராடுஜனங்களை
स्वकार्येषु அவரவர்களுக்குரிய
காரியங்களில்
स्थाप्य நிலைப்படுத்திவிட்டு
आगतः வருகிறேன்.

सतां பெரியோர்களான
भवतां தேவர்கள்து
प्रभावात् एव மகிமையாலேயே
ऋतून् யாகங்களை
करिष्यामि செய்யப்போகிறேன்.

सदस्या मम यज्ञेषु भवन्तो नित्यमेव तत् । भविष्यथ महावीर्या ममानुग्रहकाङ्क्षिणः ॥

महावीर्याः “ மஹாதேஜோவான்
भवन्तः தேவரீர்கள் [களாகிய
मम எனக்கு
नित्यं एव எப்பொழுதுதமே
अनुग्रहकाङ्क्षिणः அனுக்கிரகம்செய்ய
இஷ்டமுடையவர்கள்

तत् ஆதலால்
मम எனது
यज्ञेषु யாகங்களில்
सदस्याः ஸதஸில் முக்கியஸ்
தர்களாக
भविष्यथ விளங்குங்கள்.

अहं युष्मान्समाश्रित्य तपोनिर्धूतकल्मषान् । अनुग्रहीतः पितृभिर्भविष्यामि सुनिर्वृतः ॥
तदागन्तव्यमनिशं भवद्भिरिह सङ्गतैः ॥ ५७ ॥

तपो निर्धूत- } “ தவந்தால் பாபங்
कल्मषान् } கள் ஒழிந்தவர்களா
கிய
युष्मान् உங்களை
समाश्रित्य போற்றி
पितृभिः अनुग्रहीतः பிதருக்களால் அனுக்
கிரஹம் பெற்றவனாய்
अहं நான்

सुनिर्वृतः மனக்கவலை முற்றி
லும் ஒழிந்தவனாய்
भविष्यामि ஆவேன்.
तत् ஆதலால்
भवद्भिः உங்கள்
सङ्गतैः அணைவராலும்
अनिशं அடிக்கடி
इह இங்கு
आगन्तव्यम् எழுந்தருளல்வேண்டும்.

अगस्त्याद्यास्तु तच्छ्रुत्वा ऋषयः संशितव्रताः । एवमस्त्विति तं चोत्त्वा प्रयातुमुपचक्रमुः ॥

| | | | |
|---------------|---|-----------|--------------------------|
| अगस्त्याद्याः | அகஸ்தியர் முதலிய | तु | இவ்விஷயத்தின் |
| संशितव्रताः | { குறையின் றி செய்து முடித்த விருத முடையவர்களான | एवं | 'இங்ஙனமே |
| ऋषयः | ரிஷிகள் | अस्तु | ஆகுக' |
| तत् | அதை | इति | என |
| श्रुत्वा | சிரமேற்கொண்டு | उत्त्वा | சொல்லிவிட்டு |
| तं च | அவரையும் பார்த்து | प्रयातुं | புறப்பட்டுச்செல்ல |
| | | उपचक्रमुः | வேண்டிக்கொண்டார் கள். |

एवमुक्त्वा गताः सर्वे ऋषयस्ते यथागतम् । राघवश्च तमेवार्थं चिन्तयामास विस्मितः ॥

| | | | |
|---------|------------------------|------------|--------------------------------|
| ते | அந்த | राघवः च | ஸ்ரீராகவரும் |
| ऋषयः | ரிஷிகள் | तत्रैव | அதே |
| सर्वे | எல்லோரும் | अर्थं | விஷயத்தை |
| एवं | இவ்வண்ணமாய் | विस्मितः | ஆச்சரியங்கொண்டவ ராக |
| उत्त्वा | சொல்லிவிட்டு | चिन्तयामास | நினைத்துக்கொண்டி. ருந்தார். |
| यथागतं | வந்தவண்ணமே | | |
| गताः | நீரும்பிச்சென்றார்கள். | | |

ततोऽस्तं भास्करे याते विसृज्य नृपवानरान् । संध्यामुपास्य विधिवत्तदा नरवरोत्तमः ॥
प्रवृत्तायां रज्न्यां तु सोऽन्तःपुरचरोऽभवत् ॥ ६० ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------|-----------------|-------------------------------------|
| सः | அந்த | ततः | அதன்மேல் |
| नरवरोत्तमः | புருஷோத்தமர் | सन्ध्यां | ஸந்த்யாவந்தனத்தை |
| तदा | அப்பொழுது | विधिवत् | முறைப்படி |
| भास्करे | { சூர்யபகவான் அஸ்த | उपास्य | செய்தருளி |
| अस्तं याते | { மனத்தை அடைந்த வளவில் | रज्न्यां | இராப்பொழுது |
| नृपवानरान् | அரசர்களையும் வான ரர்களையும் | प्रवृत्तायां तु | நடக்கும்பொழுது |
| विसृज्य | விடைகொடுத்தனுப்பி விட்டு | अन्तःपुरचः | அந்தப்புரத்தில் எழுந் தருளியவராக |
| | | अभवत् | விளங்கினார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे षट्त्रिंशः सर्गः ॥



सतत्रिंशः सर्गः—முப்பத்தேழாவது ஸர்க்கம். || 37 ||

पौरोपस्थानम्—ப்ரஜைகள் காத்துநிற்பது.

अभिषिक्ते तु काकुत्स्थे धर्मेण विदितात्मनि । व्यतीता या निशा पूर्वा पौराणां हर्षवर्धिनी ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------|-------------|---------------------------------|
| विदिताःमनि | ஸர்வக்ஞரான | पूर्वा निशा | முதல் இரவு |
| काकुत्स्थे | காகுஸ்தர் | पौराणां | பட்டணத்து ஜனங் களுக்கு |
| धर्मेण | தருமநெறிதவராது | हर्षवर्धिनी | ஆனந்தத்தைப் பெரு க்குகிறதாய் |
| अभिषिक्ते तु | மகுடாபிலேசகம் கண்டருளியபோது | व्यतीता | கடந்தது. |
| या | எந்த அந்த | | |

तस्यां रजन्यां व्युष्टायां पुनरेवापरेऽहनि । वन्दिनः पशुपातिष्ठन्सौम्या नृपतिवेश्मनि ॥

| | | | |
|-------------|------------|--------------|-------------------|
| तस्यां | அந்த | सौम्याः | பிராம்மண |
| रजन्यां | இரவு | वन्दिनः | வந்திகள் |
| व्युष्टायां | கழிந்ததும் | नृपतिवेश्मनि | மன்னர்மாளிகையில் |
| अपरे | மறு | पुनः एव | முன்போலவே |
| अहनि | தினத்தில் | पशुपातिष्ठन् | வந்துகூடினார்கள். |

ते रक्तकण्ठिनः सर्वे किन्नरा इव शिक्षिताः । तुष्टुवृत्पतिं सुप्तं यथाकालं प्रहर्षिताः ॥३॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------------|-------------|------------------------------------|
| ते | அவர்கள் | नृपतिं | மன்னரை |
| सर्वे | எல்லோரும் | प्रहर्षिताः | மஹா உதஸாஹங் கொண்டவர்களாய் |
| रक्त कण्ठिनः | மதுரமான குரலு டையவர்கள். | यथाकालं | சரியான காலத்தில் |
| किन्नराः इव | கின்னரர்களபோல | तुष्टुवुः | புகழ்ந்துபாடிப் போற் றினார்கள். |
| शिक्षिताः | சிகைப்பெற்றவர்கள். | | |
| सुप्तं | திருக்கண் வளர்ந்து கொண்டிருந்த | | |

वीर सौम्य प्रबुध्यस्व कौसल्याप्रीतिवर्धन ॥ ४ ॥

| | | | |
|--------------------|--|-------------|--------------------|
| वीर | “வீர! | सौम्य | புண்பாத்தமாவே! |
| कौसल्याप्रीतिवर्धन | கௌசல்யாதேவிக்கு ஆனந்தம்விளைவிக்கும் | प्रबुध्यस्व | பள்ளிஎழுந்தருளாய். |

जगद्धि सर्वं स्वपिति त्वयि सुप्ते नराधिप ॥ ५ ॥

| | | | |
|--------|----------------------|------------|------------------------|
| नराधिप | “புருஷோத்தம! | जगत् | உலகு |
| त्वयि | தேவரீர் | सर्वं | எல்லாம் |
| सुप्ते | திருக்கண் வளர்ந்தால் | स्वपिति हि | துயில்கொள்ளு மன்றோ? |

विक्रपस्ते यथा विष्णो रूपं चैवाश्विनोरिव । बुद्ध्या बृहस्पतेस्तुल्यः प्रजापतिसो ह्यसि ॥

ते “தேவரீரது
विक्रमः पराக்கிரமம்
विष्णोः ஸ்ரீமஹா விஷ்ணு வினு
यथा போன்றது. [டையது
रूपं च ரூபமும்
अश्विनोः அக்ஷினீ தேவர்களு
டையது

इव போன்றது.
बुध्या புத்தியில்
बृहस्पतेः एव बृஹஸ்பதிக்கே
तुल्यः சமமானவர்.
प्रजापतिः यमः हि பிரம்மதேவரைப்
போன்றவராகவும்
असि விளங்குகிறீர்.

क्षमा ते पृथिवीतुल्या तेजसा भास्करोपमः । वेगस्ते वायुना तुल्यो गाम्भीर्यमुद्देरिव ॥

तेजसा “தேஜவலில்
भास्करोपमः சூர்யனுக்கிணையான
गाम्भीर्यं காம்பிரீர்யத்தில் [வர்.
उद्देः கடலுக்கு
एव சமமானவர்.
ते தேவரீரது

क्षमा பொறுமை
पृथिवीतुल्या பூமிக்கிணையானது.
ते தேவரீரது
वेगः வேகம்
वायुना வாயுவோடு
तुल्यः சமமானது.

अप्रकम्प्यो यथा स्थाणुश्चन्द्रे सौम्यत्वमीदृशम् । नृशः पार्थिवाः पूर्वं भवितारो नराधिप ॥

स्थाणुः “பரமசிவன்
यथा போல்
अप्रकम्प्यः எதற்கும் சலியாதவர்.
चन्द्रे சந்திரனொருவனிடத்
இடத்தில்
ईदृशं இப்பேர்ப்பட்ட

सौम्यत्वं அனந்தத்தைப்பெருக்
கும் ஸ்வபாவம்.
नराधिप புருஷோத்தம!
ईदृशः இப்படிப்பட்ட
पार्थिवाः மன்னவர்கள்
पूर्वं இதுவரையில்
भवितारः न இல்லை.

यथा त्वमतिदुर्धर्षो धर्मनित्यः प्रजाहितः । न त्वां जहाति कीर्तिश्च लक्ष्मीश्च पुरुषर्षभ ॥

पुरुषर्षभ “புருஷோத்தம!
त्वं தேவரீர்
अतिदुर्धर्षः எவராலும் வெல்வதற்
கரியவர்.
धर्मनित्यः நிலைகொண்டிருப்பவர்.
यथा அப்படியே

प्रजाहितः பிரஜைகளுக்கு ஹித
த்தையே இயற்றுவவர்.
त्वां தேவரீரை
कीर्तिः च கீர்த்தியும்
लक्ष्मीः च லக்ஷ்மியும்
न जहाति விட்டகலாது.

श्रीश्च धर्मश्च काकुत्स्थ त्वयि नित्यं प्रतिष्ठितौ ॥ १० ॥

काकुत्स्थ “காகுத்த!
श्रीः च திருமகனும்
धर्मः च தருமதேவதையும்

त्वयि தேவரீரிடம்
नित्यं என்றும்
प्रतिष्ठितौ நிலைகொண்டிருக்கின்றன.”

एताश्चान्याश्च मधुरा वन्दिभिः परिकीर्तिताः ॥ ११ ॥

वन्दिभिः वन्दिதகளால்
परिकीर्तितः புகழ்ந்துகூறப்பட்ட
एताः च இவைகளும்

अन्याः च மற்றவைகளும்
मधुराः காதுக்கு இனிமை
याप्यிருந்தன.

सूताश्च संस्तवैर्दिव्यैर्बोधयन्ति स्म राघवम् । स्तुतिभिः स्तूयमानाभिः प्रत्यबुध्यत राघवः॥

सूताः சூதர்கள்
दिव्यैः திவ்யமான
संस्तवैः ஸ்தோத்திரங்களால்
राघवं ஸ்ரீராகவரை
बोधयन्ति स्म தாயிலெழுப்பினார்கள்.

राघवः च ஸ்ரீராகவரும்
स्तूयमानाभिः புகழ்ந்துபாடுகின்ற
स्तुतिभिः ஸ்தோத்திரங்களால்
प्रत्यबुध्यत திருக்கண்மலர்ந்த
ருளினார்.

स तद्विहाय शयनं पाण्डुराच्छादनास्तृतम् । उत्तस्थौ नागशयनाद्दरिर्नारायणो यथा ॥

हरिः ஹரியென்ற
नारायणः ஸ்ரீமன் நாராயணன்
नागशयनात् நாகசயனத்தினின்று
यथा எவ்வண்ணமோ
अव्वண்ணमो
सः அவர்

पाण्डुराच्छादनास्तृतं வெளுத்த மேல்விரிப்
புகள் விரிக்கப்பெற்ற
तत् அந்த
शयनं சயனத்தை
विहाय விட்டு
उत्तस्थौ எழுந்தனர்.

समुत्थितं महात्मानं प्रह्लाः प्राञ्जलयो नराः । सलिलं भाजनैः शुभ्रैरुपतस्थुः सहस्रशः ॥

समुत्थितं தாயிலெழுந்து
வந்திருக்கும்
महात्मानं மஹாதப்பாவை
सहस्रशः அனேக
नराः ஆள்கள்
प्रह्लाः அத்யந்த ஆஸக்தி
கொண்டவர்களாய்

प्राञ्जलयः கைகூப்பிக்கொண்
டவர்களாய்
शुभ्रैः தாவள்ரியமான
भाजनैः பாத்திரங்களோடும்
सलिलं ஜலத்தை
उपतस्थुः கொடுத்துக் காத்து
நின்றனர்.

कृतोदकशुचिर्भूत्वा काले हुतहुताशनः । देवागारं जगामाशु पुण्यमिक्ष्वाकुसेवितम् ॥

கூலே உசிதகாலத்தில்
कृतोदक- } ஸ்நானஸந்தியாவந்த
शुचिः } னாகுகளை செய்து
வைதீகக்கிரியை
களுக்குவேண்டிய
சசியுடையவராயும்
हुतहुताशनः { பிரம்மயக்ளும் ஓளபா
ஸனாகுகளைச் செய்த
வராய்

भूता ஆகி
आशु உடனே
इक्ष्वाकुसेवितं { இசுக்ஷ்வாகுக்களால்
போற்றிக்கொண்டா
டப்பட்டதாகிய
पुण्यं புண்யமான
देवागारं பூஜாகிருகத்திற்கு
जागन சென்றார்.

तत्र देवान्पितृन्विमानर्चयित्वा यथाविधि । बाह्यकक्ष्यान्तरं रामो निर्जगाम जनैर्वृतः ॥१६॥

तत्र अஹ்விடத்தில்
 रामः ஸ்ரீராமர்
 देवाश्च தேவர்களையும்
 पितृन् பித்ருதேவதைகளை
 யும்

विमान् ரிஷிதேவதைகளையும்
 यथाविधि சாஸ்திரப்படி

उपतस्थुर्महात्मानो मन्त्रिणः सपुरोहिताः ।

महात्मानः மஹாத்மாக்களாகிய
 मन्त्रिणः மந்திரிகள்
 सर्वे எல்லோரும்
 अग्रयः इव அக்கினிகளபோல்
 दीप्यमानाः ஜ்வலித்துக்கொண்
 டிருக்கின்ற

अर्चयित्वा பூஜித்துவிட்டு
 जनैः பரிஜனங்களால்
 वृत्तः சூழப்பட்டவராய்
 बाह्यकक्ष्यान्तरं வெளிஅறைப்பிரதே
 சத்திற்கு
 निर्जगाम எழுந்தருளினார்.

वसिष्ठप्रमुखाः सर्वे दीप्यमाना इवाग्रयः ॥

वसिष्ठप्रमुखाः வஸிஷ்டரைத்தலைமை
 யாய்
 सपुरोहिताः புரோஹிதர்களோடு
 கூடியவர்களாய்
 उपतस्थुः காத்துக்கொண்டு
 நின்றார்கள்.

क्षत्रियाश्च महात्मानो नानाजनपदेश्वराः । रामस्योपाविशन्पार्श्वे शक्रस्येव यथामराः ॥१७॥

यथा அவ்வண்ணமே
 रामस्य ஸ்ரீராமரது
 पार्श्वे பக்கலில்
 शक्रस्य இந்திரனுக்கு
 अमराः தேவர்கள்
 इव எவ்வண்ணமோ,
 அவ்வண்ணமே

क्षत्रियाः கூத்திரியர்களும்
 महात्मानः च மஹாத்மாக்களு
 மாகிய
 नानाजनपदेश्वराः பரபலதேச மன்னர்
 கள்
 उपाविशन् காத்திருந்தார்கள்.

भरतो लक्ष्मणश्चात्र शत्रुघ्नश्च महायशः । उपासांचक्रिरे हृष्टा वेदान्त्रय इवाध्वरम् ॥१९॥

अह्न இங்கு
 महायशः மஹாயசஸ்வியான
 भरतः பரதரும்
 लक्ष्मणः च லக்ஷ்மணரும்
 शत्रुघ्नः च சத்ருக்ஷ்ணரும்
 हृष्टा: மகிழ்ச்சிக்கொண்
 டவர்களாய்

हयः மூன்று
 वेदाः வேதங்கள்
 अध्वरं ஒரு யாகத்தை
 इव எவ்வண்ணமோ,
 அவ்வண்ணமே
 उपासांचक्रिरे உபாசித்து நின்றார்
 கள்.

याताः प्राञ्जलयो भूत्वा किङ्करा मुदिताननाः । भृत्याश्च रामपार्श्वस्था बहवः समुपाविशन् ॥

किङ्कराः சேவகர்கள்
 मुदिताननाः முகமலர்ந்தவர்களாய்
 प्राञ्जलयः கைகூப்பியவர்களாய்
 भूत्वा ஆகி
 रामपार्श्वस्थाः ராமரது பக்கலிருப்
 பவர்களாய்

याताः ஸேவித்தார்கள்.
 भृत्याः च குடிகளும்
 बहवः அனேகர்கள்
 समुपाविशन् காத்துக்கொண்டி
 ருந்தார்கள்.

वानराश्च महावीर्या विंशतिः कामरूपिणः । सुग्रीवप्रमुखा राममुपासन्ते महौजसः । २१॥

| | | | |
|------------|-------------------------------------|------------------------------|--|
| महावीर्याः | மஹாவீர்யமுடைய வர்களும் | सुग्रीवप्रमुखाः | { சுக்ரீவனைத் தலைமை யாகக் கொண்ட வர்களும் |
| महौजसः | மஹாதேஜோவான் களும் | विंशतिः | இருபது |
| कामरूपिणः | நினைத்த உருவமெ டுக்கவல்லவர்களும் | वानराः च रामं उपासन्ते | வானரர்களும் ஸ்ரீராமரை போற்றிவணங்கி நின்றார்கள். |

विभीषणश्च रक्षोभिश्चतुर्भिः परिवारितः । उपासते महात्मानं धनेशमिव गुह्यकाः । २२॥

| | | | |
|-----------|------------------------------|---------------------|-------------------------------|
| गुह्यकाः | தனபாலர்களாகிய குறியகர்கள் | चनुभिः | நான்கு |
| महात्मानं | மஹாத்மாவாகிய | रक्षोभिः | அரக்கர்களால் |
| धनेशं | குடேபானை | परिवारितः | குழப்பப்பட்டவராகிய |
| इव | எவ்வண்ணமோ, அவ்வண்ணமே | विभीषणः च उपासते | விபீஷணரும் போற்றிநின்றார். |

तथा निगमवृद्धाश्च कुलीना ये च मानवाः । शिरसा वन्द्य राजानमुपासन्ते विचक्षणाः ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------------|----------------|--|
| तथा | அவ்வண்ணமே | मानवाः | மன்னர் ஆளுகைக் குட்பட்ட குடிகள் |
| कुलीनाः | உத்தமகுலத்தில் பிறந்தவர்களும் | ये च राजानं | எவர்களோ அவர்கள் மன்னரை |
| निगमवृद्धाः | வேதமறிந்த மஹரீயர் களும் | शिरसा वन्द्य | முடிதர முத்திவணங்கி கட்டளையை எதிர்ப்பார் த்துக்கொண்டு காத்துநின்றார். |
| विचक्षणाः च | மஹாசாமர் த்திய சாலிகளுமாகிய | उपासन्ते | |

तथा परिवृतो राजा श्रीमद्भिर्ऋषिसत्तमैः । राजभिश्च महावीर्यैर्वा नरैश्च सराक्षसैः ॥ २४॥

| | | | |
|------------|-------------------------|--------------|--------------------------------|
| राजा | மன்னர் | वानरैः च | வானரங்களாலும் |
| तथा | அப்படியே | राजभिः | மன்னர்களாலும் |
| महावीर्यैः | மஹாவீர்யவான் களாகிய | धीमङ्गिः | ஸ்ரீமாங்களாகிய |
| सराक्षसैः | அரக்கர்களோடுபிறுக்கின்ற | ऋषिसत्तमैः च | மஹரீஷிகளாலும் |
| | | परिवृतः | சேவிக்கப்பட்டு விளங்கினார். |

यथा देवेश्वरो नित्यमृषिभिः समुपास्यते । अधिकस्तेन रूपेण सहस्राक्षाद्दिरोचते । २५॥

| | | | |
|------------|---------------------|--------------|-----------------------|
| देवेश्वरः | இந்திரன் | तेन | அந்த |
| ऋषिभिः | ரிஷிகளால் | रूपेण | அவதாரவிசேஷத் தால் |
| नत्वं | ஸர்வநா | सहस्राक्षात् | இந்திரனைக்காட்டி வும் |
| समुपास्यते | சேவிக்கப்படுகிறான். | अधिकः | மேம்பட்டவராகவும் |
| यथा | அவ்வண்ணமேயும் | विरोचो | விளங்கினார். |

तेषां समुपविष्टानां तास्ताः सुमधुराः कथाः । कथ्यन्ते धर्मसंयुक्ताः पुराणज्ञैर्महात्मभिः ॥

| | | | |
|---------------|----------------|---------------|-------------------|
| समुपविष्टानां | வீற்றிருந்த | धर्मसंयुक्ताः | தர்மங்களை விளக்கு |
| तेषां | அவர்களுக்கு | ताः ताः | அந்தந்த [பனவாகிய |
| पुराणज्ञैः | புராணங்களில் | कथाः | கதைகள் |
| | நிபுணர்களாகிய | सुमधुराः | மிக்க மதுரமாய் |
| महात्मभिः | மஹாத்மாக்களால் | कथ्यन्ते | கதனம்செய்யப்பட்ட |

டன.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
उत्तरकाण्डे सप्तत्रिंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22319



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 1595

अष्टत्रिंशः सर्गः—முப்பத்தேட்டாவது ஸர்க்கம் ॥ 3௨ ॥

जनकादिप्रतिप्रयाणम्—ஜனகாதிர்கள் திரும்பிச்செல்வது.

एवमास्ते महाबाहुर्हहन्यहनि राघवः । प्रशासत्सर्वकार्याणि पौरजानपदेषु च ॥ १ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|----------------|--------------------|
| महाबाहुः | மஹாபாகுவாகிய | सर्वकार्याणि च | ஸகல கார்யங்களையும் |
| राघवः | ஸ்ரீராகவர் | पौरजानपदेषु | நகரநாடுஜனங்களிடத் |
| अहनि अहनि | பாதிதினமும் | | தில் |
| एवं | மேற்கண்டவண்ணமே | प्रशासत् | ஆலோசித்து ஆண்டு |
| आस्ते | கொலுவிருந்தார். | | வந்தார். |

ततः कतिपयाहस्तु वैदेहं मिथिलाधिपम् । राघवः प्राञ्जलिभूत्वा वाक्यमेतदुवाच ह ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|--------------|------------------|
| राघवः | ஸ்ரீராகவர் | प्राञ्जलिः ह | அஞ்சலிஹஸ்தராகவே |
| ततः | அனந்தரம் | भूत्वा | ஆகி |
| कतिपयाहस्तु | சில நாள் கழிந்ததும் | एतत् | பின்வரும் |
| वैदेहं | விதேஹதேசத்து | वाक्यं | சொல்லை |
| | மன்னராகிய | उवाच | சொல்லியருளினார்: |
| मिथिलाधिपं | மிதிலாதிபரை நோக்கி | | |

भवान्ह गतिरव्यग्रा भवता पालिता वयम् । भवतस्तेजसोद्येण रावणो निहतो मया ॥

| | | | |
|----------|-----------------|----------|--------------------|
| भवतः | “தேவரீருடைய | भवता | தேவரீரால் |
| उद्येण | மஹத்தான | वयं | நங்கள் |
| तेजसा हि | தபோபலத்தாலேயே | पालिताः | பாதுகாக்கப்படுகின் |
| मया | என்னால் | भवान् | தேவரீர் [நோம். |
| रावणः | ராவணன் | अव्यग्रा | எப்போதுமிருக்கும் |
| निहतः | கொல்லப்பட்டான். | गतिः | அபயஸ்தானம். |

इक्ष्वाकूणां च सर्वेषां मैथिलानां च सर्वशः । अतुलाः प्रीतयो राजन्संबन्धकपुरोगमाः ॥

राजन् “ மன்னரே !
மீதிலானா் மிதிலா நகரத்தரசர்
களுடைய
இசைவாகு வம்சத்
தரசர்கள்
சर्वेषां எல்லோருக்கும்

सम्बन्धकपुरोगमाः कल्याणसम्बन्धत्
ताल एற்பட்டதாகிய
அனுக்கிரகங்கள்
சுவையற்றவை
களாகவும்
अतुलाः च ஒப்புயர்வில்லாதவை
களாகவுமிருக்கின்றன.

तद्भवान्स्वपुरीं यातु रत्नान्यादाय पार्थिव । भरतश्च सहायार्थं पृष्ठतस्तेऽनुयास्यति ॥ ५ ॥

पार्थिव “ மன்னரே !
तत् ஆதலால்
भवान् தேவரீர்
स्वपुरीं தமது புரிக்கு
यातु எழுந்தருளலாம்.
ते தேவரீருக்கு

सहायार्थं துணையாக
भरतः च பரதனும்
रत्नानि च காணிக்கைகளை
आदाय எடுத்துக்கொண்டு
पृष्ठतः பக்கலில்
अनुयास्यति கூடவருவான்”.

स तथेति नृपः कृत्वा राघवं वाक्यमब्रवीत् । प्रीतोऽस्मि भवतो राजन्दर्शनेन नयेन च ॥

सः அந்த
नृपः மன்னர்
तथा इति அப்படியேயாகுக
என்று
कृत्वा அங்குகரித்து
राघवं ராகவரைப் பார்த்து
वाक्यं இந்தச் சொல்லையும்

भवतो अववीत् சொன்னார் :
प्रीतोऽस्मि “அரசே!
भवतो உனது
दर्शनेन தர்சனத்தாலும்
नयेन च நயத்தாலும்
प्रीतः भस्म ஸந்தோஷமடைந்தவ
னாக ஆயினேன்”.

यान्येतानि तु रत्नानि मर्द्यं संचितानि वै । दुहिते तानि वै राजन्सर्वाण्येव ददामि च ॥

राजन् “ அரசே !
मर्द्यं वै எனக்காக
संचितानि வைக்கப்பட்டதாகிய
रत्नानि காணிக்கைகள்
यानि எவைகளோ
तानि அந்த

एनानि இந்த
सर्वाणे च எல்லாவற்றையும்
तु இப்பொழுது
दुहिते एव புத்திரிக்கே
ददामि वै சீராய்க் கொடுத்து
விடுகிறேன்”.

ततः प्रयाते जनके केकयं मातुलं प्रभुः । राघवः प्राञ्जलिभूत्वा वाक्यमेतदुवाच ह ॥ ८ ॥

जनके ஜனகர்
प्रयाते திருப்பிப்போனதும்
ततः அதன்மேல்
प्रभुः மஹாசாமர்த்திய
சாஸிராகிய
राघवः ஸ்ரீராகவர்
मातुलं மாதுலனாகிய

केकयं யுதாஜித்தைப்
பார்த்து
एतत् பின்வரும்
वाक्यं வாக்கியத்தை
प्राञ्जलिः அஞ்சலிஹஸ்தராய்
भूत्वा ह இருந்துகொண்டே
उवाच சொல்லியருளினார்:

इदं राज्यमहं चैव भरतश्च सलक्ष्मणः । आयत्तं स्वयि नो नाथ गतिश्च पुरुषर्षभ ॥ ९ ॥

| | | | |
|--|---|---|--|
| புருஷர்ஷ இஃ அயத்த ராத் நாத | “ புருஷோத்தம! இந்த சொற்ப்படிநடக்கும் ராஜ்யத்தையும் சொந்தமாயுடைய வரே! | அஃ சலக்ஷ்மண: பரத: ந: சுயி பரி: | நானும் லக்ஷ்மணனும் பரதனும் எங்களுக்கு தேவரிடத்தில்தான் அடைக்கலத்தான். |
|--|---|---|--|

राजापि वृद्धः सन्तापं त्वदर्थमुपयास्यति । तस्माद्गमनमथैव रोचते तव पार्थिव ॥ १० ॥

| | | | |
|--|---|-------------------------------------|---|
| பாதி வூ: ராஜாபி சுதர் சந்தா தாயாஸதி | “ மன்னரே! வயது முதிர்ந்தவரா கிய மன்னரும் உம்மை நினத்து மனக்கவலையை கொண்டிருப்பார். | தஸாத் அத தவ பமர் ரோசுதே | ஆதலால் இப்பொழுதே தேவரிடைய நகரத்துக்குப் புறப் பட்டுப்போவது உசிதமெனத்தோற்று கின்றது. |
|--|---|-------------------------------------|---|

लक्ष्मणेनानुयायेण पृष्टतोऽनुगमिष्यते । धनमादाय त्रिपुलं रत्नानि विविधानि च ॥११॥

| | | | |
|---|---|--|--|
| லக்ஷ்மண விவிதானி ரத்னானி விபுலம் தன் ச | “ லக்ஷ்மணனும் பற்பல காணிக்கைகளையும் வெகு சீரையும் | ஆதாய அநுயாயேண புஸ்த: அநுபமிஸ்யுதே | எடுத்துக்கொண்டு கூடவேவருகிறவகை பக்கலில் பின்பற்றப்படும்”. |
|---|---|--|--|

युवाजित्तु तथेत्याह गमनं प्रति राघवम् । रत्नानि च धनं चैव त्वय्येवाक्षयमस्त्विति ॥

| | | | |
|---|--|---|--|
| யுபாஜித் ராத்வ பமன் பரி ததா ஹி சு ரத்னானி ச | யுதாஜித்து ஸ்ரீராகவரைப்பார்த்து பிரயாணவிஷயத்தில் ‘அப்படியே ஆகுக’ மேலும் [என்றும் ‘காணிக்கைகளும் | தன் சுயி அக்ஷயம் அஸு ஹி ஆஹ | சீரும் உன்னிடத்திலேயே குறையாததாய் ‘இருக்கட்டும்’ என்றும் பதிலுரைத்தார். |
|---|--|---|--|

प्रदक्षिणं स राजानं कृत्वा केकयवर्धनः । रामेण हि कृतः पूर्वमभिवाद्य प्रदक्षिणम् ॥

| | | | |
|---|---|--|--|
| ச: பமேண பூர்ஹி அபிவாத்ய பரிடக்ஷிணம் கூத: | அவர் ஸ்ரீராமரால் ஸம்ப்ரதாயப்ரகாரமே நமஸ்காரபூர்வமாய் பிரதிக்கூறினம் செய்யப்பட்டார். | கேகயவர்தன்: ராஜான் பரிடக்ஷிணம் கூத: | கேகயதேசத்தை பரி பாலிப்பவர் மன்னருக்கு உபசாரமாய்க்கொண் டாடுதலை செய்தார். |
|---|---|--|--|

लक्ष्मणेन सहायेन प्रयातः केकयेश्वरः । हतेऽसुरे यथा वृथे त्रिगुणा सह वासवः ॥१४॥

| | | | |
|-------------|---------------------------|------------|-------------------------|
| வ்வே அசுரே | விருத்திரனென்ற அசுரன் | யथा | எவ்வண்ணமோ அவ் வண்ணமே |
| हते | ஹைரிக்கப்பட்ட | सहायेन | பின்பற்றிவருகின்ற |
| वासवः | இந்திரன் [போது | लक्ष्मणेन | லக்ஷ்மணனினோடு |
| विष्णुना सह | ஸ்ரீமஹா சிஷ்ணு வோடுகூட | केकयेश्वरः | கேகயமன்னர் |
| | | प्रयातः | திரும்பிப்போனார். |

तं त्रिसृज्य ततो रामो वयस्यमकुतोभयम् । प्रतर्दनं काशिपतिं परिष्वज्येदमब्रवीत् ॥१५॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------|-----------|---------------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | प्रतर्दनं | பிரதர்தனனென்ற |
| तं | அவரை | काशिपतिं | காசிராஜனை |
| त्रिसृज्य | விடைகொடுத்தனுப்பி விட்டு | परिष्वज्य | ஆலிங்கனம்செய்து கொண்டு |
| ततः | அனந்தரம் | इदं | இப்படி |
| वयस्यं | பாமமித்திரரும் | अब्रवीत् | சொல்லியருளினார்: |
| अकुतोभयं | எதற்கும் அஞ்சாத வருமாகிய | | |

दक्षिता भवता प्रीतिर्दक्षितं सौहृदं परम् । उद्योगश्च कृतो राजन्भरतेन त्वया सह ॥१६॥

| | | | |
|----------|----------------|----------|---------------------------------|
| राजन् | “அரசே! | प्रीतिः | பிரீதியானது |
| भरतेन सह | பரதனோடுகூட | दक्षिता | பரத்யக்ஷத்தில் விளங்குகிறது. |
| त्वया | தேவரீரால் | परं | பரம் |
| उद्योगः | பிரீதியானது | सौहृदं | விச்வாசமும் |
| कृतः | காட்டப்பட்டது. | दक्षितम् | பரத்யக்ஷத்தில் விளங்குகிறது. |
| च | அதனால் | | |
| भवता | தேவரீரால் | | |

तद्भवानद्य काशिय पुरीं वाराणसीं व्रज । रमणीयां त्वया गुप्तां सुप्रकाशां सुतोरणाम् ॥

| | | | |
|----------|----------------------------|------------|--------------------------------------|
| काशिय | “காசிராஜரே! | सुप्रकाशां | மஹா பரகாசம்கொ ண்டு விளங்குகிறதும் |
| भरान् | தேவரீர் | रमणीयां | மனோஹரமாயிருக்க கிறதமான |
| तत् | ஆதலால் | वाराणसीं | வாராணஸீ என்கிற |
| भद्य | இப்பொழுது | पुरीं | நகருக்கு |
| त्वया | தேவரீரால் | व्रज | எழுந்தருளலாம்.” |
| गुप्तां | பாதுகாக்கப்பட்ட டதும் | | |
| सुतोरणां | அழகான தோரணங் கொண்டயதும் | | |

एतावदुक्त्वा चोत्थाय काकुत्स्थः परमासनात् । पर्यष्वजत धर्मात्मा निरन्तरमुरोगतम् ॥
विसर्जयामास तदा कौसल्यानन्दवर्धनः ॥ १८ ॥

கௌஸல்யாதேவியா
ருக்கு ஆனந்தத்
தைப் பெருக்கும்
தருமா த்மாவாகிய
காகுத்தரும்
மேற்கண்டவண்ணம்
திருவாய்மலர்ந்தரு
ளியிட்டு

பரமஸனாட்
சிறந்த ஆஸனத்
தின்னறு
உத்யாய
எழுந்து
உரோகி
மார்புடன் மார்பு
நிரந்தரம்
இறுக்கி
பர்ஷ்வஜத
கட்டிக்கொண்டார்.
ததா
அப்பால்
விரிசர்யாமாஸ
வழியிட்டனுப்பினார்.

राघवेणाभ्यनुज्ञातः काशीशोऽप्यकुतोभयः । वाराणसीं ययौ तूर्णं राघवेण विसर्जितः ॥

அகூதோபய:
எதற்கும் அஞ்சா
தவராகிய
காசி ஶ: அபி
காசிராஜரும்
ராஶவேண
ஸ்ரீராகவரால்
அப்யநுஜாத:
போகவிடப்பட்ட
டவராய்

ராஶவேண
ஸ்ரீராகவராலேயே
விரிசர்ஜித:
வழியிடப்பட்டவராய்
தூர்ணம்
உடனே
வாராணஸீ
வாராணஸீநகருக்கு
யயௌ
எழுந்தருளினார்.

विस्मृज्य तं काशिपतिं त्रिशतं पृथिवीपतीन् । प्रहसन्नाघवो वाक्यमुवाच मधुराक्षरम् ॥

ராஶவ:
ஸ்ரீராகவர்
தம்
அந்த
காசிபதி
காசிராஜரை
விஸ்மூஜ்ய
விடைகொடுத்தனுப்
பிவிட்டு
திரிசதம்
முன்னூறு
பூதிரிபதீந்
அரசர்களுையும்
பார்த்து

பஶஸந்
மலர்ந்தமுகமுடை
யவராய்
வாக்யம்
ஒரு சொல்லை
மதுராசரம்
சீரோத்திரந்திரியத்
துக்கு சுகமாயிருக்
கும்வண்ணமாய்
உவா
இப்படிச் சொல்லியரு
ளினார்:

भवतां प्रीतिरव्यग्रा तेजसा परिरक्षिता । धर्मश्च नियतो नित्यं सत्यं च भवतां सदा ॥

भवतां
“உங்களது
परिरक्षिता
மனதிலுள்ளேயே
வைத்திருக்கும்
प्रीति:
அன்பானது
अव्यग्रा
குறையற்றதாய்
விளங்குகிறது.
भवतां
உங்களது

தேஜஸா ச
நற்குணவிசேஷத்தா
லேயே
சதா
எக்காலத்திலும்
धर्म:
தர்மம்
नियतः
குறையின்றி விளங்
குகிறது.
सत्यं च
ஸத்யமும்
नित्यम्
அழியாதிருக்கிறது.

युष्माकं चानुभावेन तेजसा च महात्मनाम् । हतो दुरात्मा दुर्बुद्धी रावणो राक्षसाधमः ॥

महाःमनां "மஹா த்மாக்காரான
युष्माकं உங்களது
तेजसा च புண்யவிசேஷத்
காலும்

दुराःमा கெட்ட நடத்தை யுடையவனும்
दुर्बुद्धिः துஷ்ட எண்ண முடையவனும்
राक्षसाधमः ராக்ஷஸ நீசனுமாகிய
रावणः ராவணன்
हतः கொல்லப்பட்டான்.

अनुभावेन च अनुக்கிரகத்தாலும்

हेतुमात्रमहं तत्र भवतां तेजसा हतः । रावणः सगणो युद्धे सपुत्रामात्यवान्धवः ॥ २३ ॥

भवतां "உங்களது
तेजसा புண்யவிசேஷத்தால்
रावणः ராவணன்
सगणः கூட்டத்தாரோடும்
सपुत्रामात्य- } புத்திரர்களோடும்
वान्धवः } மந்திரிகளோடும் பந்
துக்களோடும் கூட

युद्धे போரில்
हतः மாண்டான்.
तत्र அவ்விஷயத்தில்
अहं நான்
हेतुमात्रम् வெளிப்படையான
கருவி.

भवन्तश्च समानीता भरतेन महात्मना । श्रुत्वा जनकराजस्य काननात्तनयां हताम् ॥ २४ ॥

जनकराजस्य "ஜனகமன்னரது
तनयां பெண்ணை
काननात् காட்டினின்றி
हतां அபஹரித்துக்
கொண்டுபோக

श्रुत्वा च கேட்டதுமே
महात्मना மஹா த்மாவாகிய
भरतेन பரதனால்
भवन्तः நீங்கள்
समानीताः அழைத்துக்கொண்டு
வரப்பட்டார்கள்.

उद्युक्तानां च सर्वेषां पार्थिवानां महात्मनाम् । कालो व्यतीतः सुमहान्गमनं रोचयाम्यतः ॥

उद्युक्तानां "மஹாச்ரத்தையுடையவர்களும்
महाःमनां மஹா த்மாக்களு
पार्थिवानां மன்னர்கள் [மாகிய
सर्वेषां च எல்லோருக்கும்
सुमहान् வெகு
நேன்."

कालः காலம்
व्यतीतः கடந்து விட்டது.
अतः இங்கிருந்து
गमनं திரும்பிப்போக
रोचयामि நான் விடைதருகி
நேன்."

प्रयुञ्जुस्तं च राजानो हर्षेण महताऽन्विताः । दिष्ट्या त्वं विजयी राम स्वराज्येऽपि प्रतिष्ठितः ॥

राजानः அரசர்கள்
महता பரம
हर्षेण ஸந்தோஷத்தோடு
अन्विताः விளங்கியவர்களாய்
तं च அவரைப்பார்த்து
प्रयुञ्जुः பதிலுரைத்தார்கள்;
राम 'ஸ்ரீராம!
त्वं தேவரீர்

विजयी ஜயமடைந்தவராய்
स्वराज्ये अपि தேவரீர் ராஜ்யத்தி
लேயே
प्रतिष्ठितः { மகுடாபிஷேகம் பெற
று விளங்குகின்றீர்
என்பது
दिष्ट्या எங்களுடைய பாக்
கியவிசேஷமே.

दिष्ट्या प्रत्याहता सीता दिष्ट्या शत्रुः पराजितः ।

एष नः परमः काम एवा नः प्रीतिरुत्तमा

॥ २७ ॥

| | |
|------------|---|
| सीता | “சதை |
| प्रत्याहता | { சேஷமமாய்த்திரும்பிக் கொண்டு வரப்பட்ட டாள். |
| एषा | இது |
| नः | எங்களுக்கு |
| उत्तमा | எல்லாவற்றிற்கும் பெரியதான |
| प्रीतिः | அனுக்கிரகம். |

| | |
|----------|----------------------------------|
| दिष्ट्या | இதுவும் எங்களு டைய பாக்கியமே. |
| शत्रुः | சத்ரு |
| पराजितः | வெல்லப்பட்டான். |
| एषः | இது |
| नः | எங்களுடைய |
| परमः | எதற்கும் மேம்பட்ட |
| कामः | மனோரதம். [தாகிய |
| दिष्ट्या | இதுவும் எங்களு டைய பாக்கியமே. |

यत्त्वां विजयिनं राम पश्यामो हतशात्रवम् । एतस्वय्युपपन्नं च यदस्मांस्त्वं प्रशंससे ॥२८॥

| | |
|-----------|-----------------------------------|
| राम | “ஸ்ரீராம! |
| त्वां | தேவரீரை |
| यत् | இவ்விதமாய் |
| हतशात्रवं | சத்ருவைக் கொன்ற வரையும் |
| विजयिनं | வெற்றிபெற்றவராக வும் |
| पश्यामः | கண்குளிரப் பார்க்கப் பெற்றோம். |

| | |
|----------|-------------------------------|
| त्वं | தேவரீர் |
| अस्मान् | எங்களை |
| प्रशंससे | புகழ்ந்து கொண்டா |
| यत् | அந்த [டுகின்றீர். |
| एतत् | இது |
| त्वयि च | தேவரீர் ஒருவரிடத் திலேயே |
| उपपन्नम् | ஸ்வாபாவசிக்கத்தமா யுள்ளது. |

प्रशंसाहं न जानीमः प्रशंसां वक्तुमीदृशीम् ।

आपृच्छामो गमिष्यामो हृदिस्यो नः सदा भवान्

॥ २९ ॥

| | |
|-----------------|---|
| प्रशंसाहं | { “எல்லாப்புகழுக்கும் இருப்பிடமாகிய மஹானே! இம்மாதிரியாய் புகழைச் சொல்ல நாங்கள் அறிந்திலோம்; போய்வருகிறேன்; |
| ईदृशीं | இம்மாதிரியாய் |
| प्रशंसां वक्तुं | புகழைச் சொல்ல |
| न जानीमः | நாங்கள் அறிந்திலோம்; |
| गमिष्यामः | போய்வருகிறேன்; |

| | |
|-----------|--|
| आपृच्छामः | விடைகேட்டுக்கொள் |
| भवान् | தேவரீர்! [ளுகிறோம். |
| सदा | எப்பொழுதும் |
| नः | எங்களது |
| हृदिस्यः | { ஹிருதயத்தில் குடி கொண்டிருத்தல் வேண்டும். |

वर्तामहे महाबाहो प्रीत्याऽत्र महता वृताः ।

| | |
|----------|----------------|
| महा बाहो | “மஹாபாகுவே! |
| अत्र | இப்பொழுது |
| महता | மஹத்தான |
| प्रीत्या | ஆஸக்திகொண்டு |
| वृताः | சேவை செய்ப்வர் |

| | |
|----------|-------------------------------|
| वर्तामहे | களாய் வாழ்ந்துவருகின்றோம். |
|----------|-------------------------------|

भवेच्च ते महाराज प्रीतिरस्मासु नित्यदा ॥

| | |
|---------|--------------------|
| महाराज | சக்கிரவர்த்தியாரே! |
| ते च | தேவரீருக்கும் |
| अस्मासु | எங்களிடத்தில் |
| प्रीतिः | ப்ரீதி |
| नित्यदा | எக்காலத்திலும் |
| भवेत् | இருக்கவேண்டும்.” |

बाढमित्येव राजानो हर्षेण परमन्विताः । ऊचुः प्राञ्जलयः सर्वे राघवं गमनोत्सुकाः ॥
पूजिताश्चैव रामेण जग्मुर्देशान्स्वकान्स्वकान् ॥ ३१ ॥

| | |
|------------|-----------------------|
| राजानः | மன்னர்கள் |
| राघवं | ஸ்ரீராகவருக்கு |
| प्राञ्जलयः | அஞ்ஜலிஹஸ்தர் |
| पं | அத்யந்தம் [களாகி |
| हर्षेण | மனஸந்துஷ்டி கொண்டு |
| अन्विताः | விளங்கியவர்களாய் |
| रामेण च | “ஸ்ரீராமராலேயே |
| बाहं एव | மிகவும் |
| पूजिताः | பூஜிக்கப்பட்டோம்” |

| | |
|-----------------|---|
| इति | என்று |
| ऊचुः | ஒருவருக்கொருவர் பேசிக்கொண்டார்கள். |
| सर्वे | எல்லோரும் |
| गमनोःसुकाः एव | { திரும்பிப்போவதில் வருத்தமுறுபவர் களாகவே |
| स्वकान् स्वकान् | தங்கள் தங்களது |
| देशान् | தேசங்களுக்கு |
| जग्मुः | பிரயாணபானார்கள். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
उत्तरकाण्डे अष्टत्रिंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22350

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 1626



एकोनचत्वारिंशः सर्गः—முப்பத்தொன்பதாவது ஸர்க்கம். ॥ ३१ ॥

सुग्रीवादिस्माननम्—ஸுக்ரீவன் முதலியவர்களை வெகுமதிப்பது.

ते प्रयाता महात्मानः पार्थिवाः सर्वतो दिशः । कम्पयन्तो महीं वीराः स्वपुराणि प्रहृष्टवत् ॥

| | |
|-----------|-----------------|
| ते | அந்த |
| वीराः | வீரர்களும் |
| महाःमानः | மஹாத்மாக்களுமான |
| पार्थिवाः | மன்னர்கள் |
| महीं | பூப்பதேசத்தில் |
| सर्वतः | எல்லா |

| | |
|-------------|--------------------------------|
| दिशः | திசைகளையும் |
| प्रहृष्टवत् | மயிர்க்கூச்செறியும் படியாய் |
| कम्पयन्तः | அதிரச்செய்து கொண்டு |
| स्वपुराणि | தங்கள் நகர்களுக்கு |
| प्रयाताः | பிரயாணமானார்கள். |

अक्षौहिणीसहस्रैस्ते समुद्युक्तास्त्वनेकशः ।

| | |
|--------------|---|
| राघवायें | ஸ்ரீராகவருக்கு கைந் கர்யம் செய்வதில் |
| समुद्युक्ताः | அத்யந்த ஆஸக்தி கொண்டவர்களாய் |
| तु | இவ்விஷயத்தில் |
| हृष्टाः | உற்சாஹமுடையவர் களாய் |
| अनेकशः | அனேக |

हृष्टाः प्रतिगताः सर्वे राघवार्यै समागताः ॥

| | |
|------------------|--|
| अक्षौहिणीसहस्रैः | { ஆயிரக்கணக்கான அகௌள ஹிணி ஸைன்யங்களால் |
| समागताः | சூழ்ந்துவந்திருந்தவர் களாகிய |
| ते | அவர்கள் |
| सर्वे | எல்லோரும் |
| प्रतिगताः | திரும்பிச்சென்றார்கள். |

ऊचुस्ते च महीपाला बलदर्पसमन्विताः । न रामरावणं युद्धे पश्यामः पुरतः स्थितम् ॥
भरतेन वयं पश्चात्समानीता निरर्थकम् । हता हि राक्षसाः क्षिप्रं पार्थिवैः स्युर्न संशयः ॥
रामस्य बाहुवीर्येण रक्षिता लक्ष्मणस्य च । सुखं पारे समुद्रस्य युद्धेयम विगतज्वराः ॥

| | |
|-----------------|---|
| ते | அவர்கள் |
| ऊचुः | { இங்கனம் ஒருவருக் கொருவர் பேசிக் கொண்டார்கள் : |
| रामस्य | “ஸ்ரீராமருடையவும் |
| लक्ष्मणस्य च | லக்ஷ்மணருடையவும் |
| बाहुवीर्येण | புஜபராக்கிரமத்தால் |
| समुद्रस्य | சமுத்திரத்தினுடைய |
| पारे | அக்கரையில் |
| रक्षिताः | ரக்ஷிக்கப்பட்டவர் களாய் |
| विगतज्वराः | மனக்கவலையற்றவர் களாய் |
| बलदर्पसमन्विताः | பலமும் ஆத்திரமும் கொண்டுவிளங்கும் |
| महीपालाः | பூலோகமன்னர்களா |
| वयं | நாம் [ஐய |
| सुखं | அனாயாஸமாயே |
| युद्धेयम | போர்புரிந்திருப்போம்; |

| | |
|------------|--|
| राक्षसाः | அரக்கர்கள் |
| पार्थिवैः | மன்னர்களால் |
| क्षिप्रं | விரைவில் |
| हताः | கொல்லப்பட்டு |
| स्युः | இருப்பார்கள். |
| संशयः न | இதற்கையமில்லை. |
| भरतेन | பரதரால் |
| पश्चात् | காரியம் முடிந்த பின்னர் |
| निरर्थकं | பிரயோஜனமில்லாமல் |
| समानीताः | வரவழைக்கப்பட்ட |
| हि | ஆகலால் [டோம். |
| युद्धे | போரில் |
| स्थितं | எதிர்த்துநிற்கும் |
| रामरावणं च | ஸ்ரீராமரையும் ராவண னையும் |
| पुरतः | பிரத்தியக்ஷத்தில் |
| न पश्यामः | பார்க்கும் பாக்கியம் பெறாமல் போனோம்.” |

एताश्चान्याश्च राजानः कथास्तत्र सहस्रशः । कथयन्तः स्वराज्यानि जग्मुर्हर्षसमन्विताः ॥

| | |
|---------------|----------------------------|
| तस्य | அப்பொழுது |
| राजानः | அரசர்கள் |
| हर्षसमन्विताः | ஸந்துஷ்டிகொண்ட வர்களாய் |
| एताः च | இவைகளையும் |
| अन्याः | இதர |

| | |
|-------------|---------------------------|
| सहस्रशः | அனேக |
| कथाः च | கதைகளையும் |
| कथयन्तः | பேசிக்கொண்டு |
| स्वराज्यानि | தங்கள் ராஜ்யங் களுக்கு |
| जग्मुः | யாத்திரைசெய் தார்கள். |

स्वानि राज्यानि मुख्यानि ऋद्धानि मुदितानि च ।

समुद्धनधान्यानि पूर्णानि वसुमन्ति च

॥ ७ ॥

यथा पुराणि ते गत्वा रत्नानि विविधान्यथ । रामस्य प्रियकार्थमुपहारानृपा ददुः ॥८॥

| | |
|-----------------|--|
| ते | ஆந்த |
| नृपाः | மன்னர்கள் |
| समुद्धनधान्यानि | { தனம், தான்யம், இவைகள் நிறையப் பெற்றவைகளும் |

| | |
|------------|---------------------------------|
| ऋद्धानि | ஸமிருத்தியான |
| वसुमन्ति च | செல்வங்களையுடைய வைகளும் |
| पूर्णानि | ஸர்வபாக்கியமும் பெற்றவைகளும் |

| | |
|------------|------------------------------------|
| सु इतानि च | ஸந்துஷ்டி யுடன் விளங்குகிறவைகளுமான |
| स्वानि | தங்களுடைய |
| राज्यानि | ராஜ்யங்களில் |
| पुराणि यथा | பாடலிப்புரங்களென விளங்கும் |
| मुख्यानि | தலைமை நகர்களுக்கு |
| गन्वा | வந்துசேர்ந்து |

| | |
|---------------|---------------------------|
| अथ | அதன் பின்னர் |
| रामस्य | ஸ்ரீராமருடைய |
| त्रियकामार्थं | கைங்கர்யத்தில் ஆஸக்தியால் |
| विविधानि | பற்பல |
| रत्नानि | தீர்வியங்களை |
| उपहारान् यथा | காணிக்கைகளாய் |
| ददुः | அனுப்பினார்கள் : |

अश्वान्यानानि रत्नानि हस्तिनश्च मदोत्कटान् ।
चन्दनानि च मुख्यानि दिव्यान्याभरणानि च
मणिमुक्ताप्रवालांस्तु दास्यो रूपसपन्विताः ।
अजाविकांश्च विविधान् रथांस्तु विविधान्ददुः

॥ ९ ॥

॥ १० ॥

| | |
|------------|------------------|
| अश्वान् | குதிகளைகளையும் |
| यानानि | வாஹனங்களையும் |
| रत्नानि | ரத்தனங்களையும் |
| मदोत्कटान् | மதப்பெருக்குற்ற |
| हस्तिनः च | யானைகளையும் |
| चन्दनानि च | சந்தனங்களையும் |
| मुख्यानि | உக்கிருஷ்டங்களான |
| दिव्यानि | திவ்ய |
| आभरणानि च | ஆபரணங்களையும் |

| | |
|--------------------|---|
| मणिमुक्ताप्रवालान् | { மணிகளையும், முத்தங்களையும், பவழங்களையும் |
| रूपसपन्विताः | |
| दास्यः च | ருபவதிகளான |
| विविधान् | தாதிகளையும் |
| अजाविकांश्च तु | பற்பல |
| विविधान् | வெள்ளாடுகளையும் |
| रथान् तु | பற்பல |
| ददुः | ரதங்களையும் பரிசாய்க் கொடுத்த அனுப்பினார்கள். |

भरतो लक्ष्मणश्चैव शत्रुघ्नश्च महाबलाः । आदाय तानि रत्नानि स्वां पुरीं पुनरागताः ॥

| | |
|--------------|---------------------|
| महाबलाः | மஹாபலிஷ்டர் களான |
| भरतः च | பரதரும் |
| लक्ष्मणः च | லக்ஷ்மணரும் |
| शत्रुघ्नः एव | சத்ருக்ணரும் |
| तानि | அந்த |

| | |
|---------|---------------------|
| रत्नानि | காணிக்கைகளை |
| आदाय | பெற்றுக்கொண்டு |
| स्वां | தமது |
| पुरीं | நகருக்கு |
| पुनः | திரும்பி |
| आगताः | வந்துசேர்ந்தார்கள். |

आगम्य च पुरीं रम्यामयोध्यां पुरुषर्षभाः । ददुः सर्वाणि रत्नानि राघवाय महात्मने ॥

| | |
|-------------|--------------------|
| पुरुषर्षभाः | புருஷோத்தமர்கள் |
| रम्यां | மனோஹரமாயிருக்கின்ற |
| अयोध्यां | அயோத்தியா |
| पुरीं | நகருக்கு |

| | |
|-----------|--------------------|
| आगम्य | திரும்பிவந்து |
| रत्नानि | காணிக்கைகள் |
| सर्वाणि च | எல்லாவற்றையும் |
| महात्मने | மஹாத்மாவாகிய |
| राघवाय | ஸ்ரீராகவருக்கு |
| ददुः | சமர்ப்பித்தார்கள். |

प्रतिगृह्य च तत्सर्वं रामः प्रीतिसमन्वितः । सुग्रीवाय ददौ राज्ञे महात्मा कृतकर्मणे ॥१३॥
विभीषणाय च ददौ तथाऽन्येभ्योऽपि राघवः । राक्षसेभ्यः कपिभ्यश्च यैर्वृतो जयमाप्तवान् ॥

| | |
|------------------|--|
| महा-मा | மஹாத்மாவாகிய |
| रामः | ஸ்ரீராமர் |
| प्रीतिसमन्वितः | ப்ரீதியுடையவராய் |
| तत् | அந்த |
| सर्वं च | எல்லாவற்றையும் |
| प्रतिगृह्य | பெற்றுக்கொண்டு |
| कृतकर्मणे | செய்யவேண்டியகாரி யங்களைசெய்துமு டித்தவனான |
| सुग्रीवाय राज्ञे | சுகரீவமன்னருக்கு |
| ददौ | ஸ்தலில்கொடுக்க வேண்டிய பரிசைத் தந்தருளினார். |

| | |
|-----------------|--|
| तथा | அவ்வண்ணமே |
| राघवः | ஸ்ரீராகவர் |
| विभीषणाय च | விபிஷணருக்கும் |
| यैः | எவர்களால் |
| वृतः | பேருத விசெய்யப் பெற்றவராய் |
| जयं | வெற்றியை |
| आप्तवान् | பெற்றாரோ அந்த |
| अन्येभ्यः | இதர |
| कपिभ्यः च | வானரர்களுக்கும் |
| राक्षसेभ्यः अपि | அரக்கர்களுக்கும் |
| ददौ | ஸ்தலில் கொடுக்க வேண்டிய பரிசுகளை தந்தருளினார். |

ते सर्वे रामदत्तानि रत्नानि कपिराक्षसाः ।

| | |
|-------------|--------------------------------|
| ते | அந்த |
| महाबलाः | மஹாபலிஷ்டர் களான |
| कपिराक्षसाः | வானரர்களும், ராக்ஷ ஸர்களும் |
| सर्वे | எல்லோரும் |

शिशोभिर्धारयामासुर्बाहुभिश्च महाबलाः ॥

| | |
|------------|-------------------------------|
| रामदत्तानि | ஸ்ரீராமரால் அளிக்கப் |
| रत्नानि | பரிசுகளை [பட்ட |
| शिशोभिः | முடிகளாலும் |
| बाहुभिः च | கரங்களாலும் |
| धारयामासुः | ஏந்திவாங்கிக்கொண் டார்கள். |

ते पिबन्तः सुगन्धीनि मधूनि मधुपिङ्गलाः । मांसानि च सुमृष्टानि मूलानि च फलानि च ॥

| | |
|-------------|----------------|
| ते | அந்த |
| मधुपिङ्गलाः | வானரர்கள் |
| मांसानि च | மாம்ஸங்களையும் |
| मूलानि च | கிழங்குகளையும் |

| | |
|------------|----------------------|
| सुमृष्टानि | நன்றாய்ப்பக்வமாயிரு |
| फलानि च | பழங்களையும் [க்கின்ற |
| सुगन्धीनि | நல்லவாஸனையுள்ள |
| मधूनि | மதுக்களையும் |
| पिबन्तः | அருந்தினார்கள். |

एवं तेषां निवसतां मासः साग्नो ययौ तदा । सुहूर्तेषु ते सर्वे राजभक्त्या च मेनिरे ॥

| | |
|---------|--------------------------|
| एवं | இவ்வண்ணம் |
| निवसतां | வஸித்துக்கொண் டிருந்த |
| तेषां | அவர்களுக்கு |
| मासः | ஒருமாஸகாலம் |
| साग्नः | பூர்ணமாக |
| ययौ | நடைபெற்றது. |

| | |
|--------------|------------------------|
| ते | அந்த |
| सर्वे | எல்லோரும் |
| राजभक्त्या | ராஜபக்தியினால் |
| तदा | அக்காலத்தை |
| सुहूर्तेषु च | ஒருநொடிப்பொழு தெனவே |
| मेनिरे | பாராட்டினார்கள். |

राभोऽपि रेमे तैः सार्धं वानरैः कामरूपिभिः । राक्षसैश्च महावीर्यैर्ऋक्षैश्चैव महाबलैः ॥१८॥

ராம: அபி ஸ்ரீராமரும்
 தை: அந்த
 காநரூபிभि: நினைத்த உருவமெ
 6க்க வல்லவர்களும்
 மஹா வீர்யர்களும்
 மஹா பலிஷ்டர்களு
 மான

வானரै: ச வானரர்களோடும்
 ராக்ஷசै: ச ராக்ஷஸர்களோடும்
 ऋक्षै: एव கரடியர்களோடும்
 सार्धं கூடியிருப்பவராய்
 रेमे ஆனந்தமாய் காலங்
 கழித்தார்.

एवं तेषां ययौ मासो द्वितीयः शैशिरः सुखम् । वानराणां प्रहृष्टानां राक्षसानां च सर्वशः ॥

एवं இவ்வண்ணமாய்
 सर्शः ஸர்வப்ரகாரத்தாலும்
 प्रहृष्टानां ஸந்தேரஷ்டமடைந்த
 வர்களாயிருக்கின்ற
 तेषां அந்த
 वानराणां வானரர்களுக்கும்

राक्षसानां च ராக்ஷஸர்களுக்கும்
 द्वितीयः இரண்டாவதாகிய
 शैशिरः मासः பங்குனிமாதம்
 सुखं ஸுகமாய்
 ययौ கடந்தது.

इक्ष्वाकुनगरे रम्ये परां प्रीतिमुपासताम् । रामस्य प्रीतिकरणैः काष्ठस्तेषां सुखं ययौ ॥

रम्ये மனேஹரமான
 इक्ष्वाकुनगरे இக்ஷ்வாகுநகரத்தில்
 रामस्य ஸ்ரீராமருக்கு
 प्रीतिकरणैः உபசாரங்களால்
 परां ஸர்வோத்திருஷ்ட
 மான

प्रीति கைங்கர்யத்தை
 उपासतां செய்துகொண்டிருந்த
 तेषां அவர்களுக்கு
 काष्ठः காலமானது
 सुखं இனிகராய்
 ययौ கழிந்தது.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे एकोनचत्वारिंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22370



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 1646

चत्वारिंशः सर्गः—நாற்பதாவது ஸர்க்கம். ॥ ४० ॥

सुग्रीवादिविसर्जनम्—ஸுகரீவர் முதலியவர்களை போக விடைகொடுப்பது.

तथा स तेषां वसतामृक्षवानररक्षसाम् । राघवस्तु महातेजाः सुग्रीवमिदमब्रवीत् ॥ १ ॥

तेषां அந்த
 ऋक्षवानररक्षसां ரிக்ஷர்களும் வானர
 களும் அரக்கர்களும்
 तथा அவ்வண்ணம்
 वसतां स வலித்துக்கொண்டி
 ருக்கையில்

महातेजाः மஹாதேஜஸ்ஸியாகிய
 राघवः ஸ்ரீராகவர்
 सुग्रीवं சுகரீவரைப்பார்த்து
 तु அவர்விஷயத்தில்
 इदं இங்கனம்
 अब्रवीत् திருவாய்மலர்ந்தருளி
 ளார்:

गम्यतां सौम्य किष्किन्धां दुराधर्षां सुरासुरैः । पालयस्व सहामाल्यो राज्यं निहतकण्टकम् ॥

சௌம்ய “உத்தமமான
ஸூஹிருத்தே!
சுரர்கள், அசுரர்கள்
இவர்களாலும்
துராதர்ஷா புகவும் முடியாத
கிஷ்கிந்தைக்கு

गम्यतां போவாயாக,
सहामाल्यः கீர்த்திகொண்ட மந்
திரிகளையுடையவனும்
राज्यं ராஜ்யத்தை
निहतकण्टकं குறையற்றதாய்
पालयस्व ரக்ஷித்துவரக்கூடவை.

अङ्गदं च महाबाहो प्रीत्या परमया युतः । पश्य त्वं हनुमन्तं च नलं च सुमहाबलम् ॥
सुषेणं श्वशुरं वीरं तारं च बलिनां वरम् । कुमुदं चैव दुर्धर्षं नीलं चैव महाबलम् ॥ ४ ॥
वीरं शतबलिं चैव मैन्दं द्विविदमेव च । पश्य प्रीतिसमायुक्तो गन्धमादनमेव च ॥ ५ ॥
गजं गवाक्षं गवयं शरभं च महाबलम् । ऋक्षराजं च दुर्धर्षं जाम्बवन्तं महाबलम् ॥ ६ ॥

மஹாபாஹோ “ஹே மஹாபாகோ!
எவ் நீ
அங்கதனை
பரமயா ப்ரீத்யா மிக்க ப்ரீதியுடன்
யுத: ச கூடினவனாகவே
பश्य ஆதரித்துவரக்கூடவை.
சுமஹாபல் புகழ்பெற்ற மஹா
சக்திவானாகிய
ஹனும்த் ச ஹனுமானையும்
நலம் ச நலனையும்
श्वशुरं மாமனாரும்
वीरं வீரனுமான
सुषेणं ச ஸூஷேணனையும்
बलिनां பலிஷ்டர்களில்
वरं சிறந்தவனாகிய
तारं ச தாரனையும்
कुमुदं एव குமுதனையும்
दुर्धर्षं च வெல்வதற்கரியனும்
महाबलं மஹாபலிஷ்டனுமாகிய

नीलं एव நீலனையும்
वीरं வீரனாகிய
शतबलिं च சதபலியையும்
मैन्दं एव மைந்தனையும்
द्विविदं एव த்விதனையும்
गन्धमादनं एव கந்தமாதனனையும்
गजं கஜனையும்
गवाक्षं கவாக்ஷனையும்
गवयं கவயனையும்
सहाबलं மஹாபலிஷ்டனாகிய
शरभं சரபனையும்
महाबलं च மஹாபலிஷ்டனும்
दुर्धर्षं च வெல்வதற்கரியனும்
ऋक्षराजं ரிக்ஷமன்னனுமாகிய
जाम्बवन्तं ஜாம்பவானையும்
प्रीतिसमायुक्तः च அன்புகூற்ற்தவ
पश्य ஆதரித்துவரக்
கூடவை.

ये चेमे सुमहात्मानो मर्दये त्वक्तजीविताः । पश्य त्वं प्रीतिसंयुक्तो मा चैषां विभियं कृथाः ॥

ये “எந்த
इमे இவர்கள்
मर्दये च எனக்காகவே
त्वक्तजीविताः உயிரையும்விடத்
துணிந்த
सुमहात्मानः மஹாகீர்த்திபெற்ற
மஹாத்மாக்கள்

एवं च நீயும்
प्रीतिसंयुक्तः அன்புவைத்தவனும்
पश्य ஆதரித்துவரக்கூட
येषां இவர்களுக்கு [வை.
विभियं ஹிதமில்லாதகாரியத்
मा कृथाः செய்யாதே.] [தையும்

एवमुक्त्वा तु सुग्रीवमाश्लिष्य च पुनः पुनः । विभीषणमुवाचथ रामो मधुरया गिरा ॥

| | | | |
|----------|---------------------|----------|------------------|
| ராம: | ஸ்ரீராமர் | விभीஷணம் | விபிஷணரைப் |
| சுமீவ் | சகீர்வரை | | பார்த்து |
| புன:புன: | பலதரம் | மதுரயா | மதுரமாயிருக்கிற |
| ஆश्लिष्य | மார்புறத்தழுவி | கிரா | சொற்கொண்டு |
| एवं | மேற்கண்டவண்ணம் | अथ | இப்படி |
| उक्त्वा | திருவாய்மலர்ந்தருளி | तु | இவர் விஷயத்தில் |
| च | பின்னர் | उवाच | நியமித்தருளிணர்: |

लङ्कां प्रशाधि धर्मेण धर्मज्ञस्त्वं मतो मम । पुरस्य राक्षसानां च भ्रातुर्वैश्रवणस्य च ॥९॥

| | | | |
|------------|-------------------|--------------|------------------|
| त्वं | “ நீ | वैश्रवणस्य च | குபேரனுக்கும் |
| धर्मज्ञः | தர்மக்ஞானியென | मतः | பூஜ்யன் ; |
| मम च | எனக்கும் | धर्मेण | அறநெறி தவறாது |
| पुरस्य | நகரத்தினது | लङ्कां | இலங்கையை |
| राक्षसानां | ராக்ஷஸர்களுக்கும் | प्रशाधि | பரிபாலித்துவருக. |
| भ्रातुः | பிராதாவாகிய | | |

मा च बुद्धिमधमे त्वं कुर्या राजन्कथञ्चन । बुद्धिमन्तो हि राजानो ध्रुवश्चन्ति मेदिनीम् ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------|-------------|-----------------------------------|
| राजन् | “ அரசே! | हि | ஏனென்றால் |
| एवं | நீ | बुद्धिमन्तः | நியாயவழிகளிலேயே ஒழுகும் |
| अधमे | அதர்மத்தில் | राजानः च | மன்னர்கள் தான் |
| बुद्धिं | புத்தியை | मेदिनीं | பூமியில் |
| कथञ्चन | எந்தக் கஷ்டதசையி லும் | ध्रुवं | உள்ளபடி |
| मा कुर्याः | செலுத்தா திருத்தல் வேண்டும். | अश्चन्ति | யஜமானர்களாய் விளங்குகிறார்கள். |

अहं च नित्यशो राजन्सुग्रीवसहितस्त्वया । स्मर्तव्यः परया प्रीत्या गच्छ त्वं विगतस्वरः ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|------------|------------------------------|
| राजन् | “ அரசே! | प्रीत्या च | ப்ரீதியுடனேயே |
| त्वया | உன்னால் | स्मर्तव्यः | நினைக்கப்படவேண்டி |
| नित्यशः | ஸதா | एवं | நீ [யவன். |
| सुग्रीवसहितः | சகீர்வனோடு ஐக்கியம் | विगतस्वरः | மனக்குறை ஏதுமில் லாதவனாய் |
| अहं | நான் [கொண்ட | गच्छ | திரும்பிப்போ.” |
| परया | அதிக | | |

रामस्य भाषितं श्रुत्वा ऋक्षवानरराक्षसाः । साधु साध्विति काकुत्स्थं प्रशंसुः पुनः पुनः ॥

| | | | |
|------------------|---|------------|---------------------------------------|
| रामस्य | ஸ்ரீராமரது | काकुत्स्थं | காகுத்தஸ்தரைப் பார் |
| भाषितं | திருவாக்கை | साधु साधु | ‘நன்று நன்று’ [த்து |
| श्रुत्वा | கேட்ட | इति | எனவும் |
| ऋक्षवानरराक्षसाः | நிக்ஷர்களுமும், வானார் களுமும் ராக்ஷஸர்களுமும் | पुनः पुनः | இன்னும் இப்படியும் |
| | | प्रशंसुः | போற்றிப்புகழ்ந்து கொண்டாடினார்கள். |

तव बुद्धिर्महाबाहो वीर्यमद्भुतमेव च । माधुर्यं परमं राम स्वयंभोरिव नित्यदा ॥ १३ ॥

महाबाहो “महोपाहो,
राम श्रीराम!
तव தேவீருடைய
बुद्धिः துண்ணறிவு
नित्यदा சிவதமாயிருக்
वीर्यं च வீர்யமும் [கிறது.
अद्भुतं அற்புதமானது.

स्वयंभो: பிரம்மதேவருக்கு
इव எவ்வண்ணமோ
माधुर्यं एव அவ்வண்ணமே
परन्म् எல்லாரிடத்திலும்
ஸ்ரீராமாயிருத்தலும்
பூர்ணமாயிருக்
கிறது.”

तेषामेवं ब्रुवाणानां वानराणां च रक्षसाम् । हनूमान्प्रवणो भूत्वा राघवं वाक्यमब्रवीत् ॥

तेषां अन्त
वानराणां वानराர்களும்
रक्षसां च ராக்ஷஸர்களும்
एवं இவ்வண்ணம்
ब्रुवाणानां புகழ்ந்துகொண்டாடு
கையில்

प्रवणः திருவடிகளில் சேவிப்
பவராக
भूत्वा ஆகி
राघवं श्रीராகவரைப்
பார்த்து
वाक्यं ஒரு விண்ணப்பத்தை
अब्रवीत् சொல்லியருளினார்:

हनूमान् स्नेहो मे परमो राजस्त्वयि तिष्ठतु नित्यदा । भक्तिश्च नियता वीर भावो नान्यत्र गच्छतु ॥

राजन् “अரசே!
मे எனக்கு
स्नेहि தேவீரிடத்தில்
ऋहः பற்று
परमः எதற்கும் மேம்பட்ட
तिष्ठतु இருக்கட்டும். [தாக
भक्तिः பக்தி
नित्यदा எக்காலத்திலும்

नियता மாறாததாக
च அப்படியே இருத்தல்
வேண்டும்.
वीर வீரரே!
भावः நினைப்பு
अन्यत्र வேறெதிலும்
न गच्छतु செல்லாதிருத்தல்
வேண்டும்.

यावद्रामकथा वीर चरिष्यति महीतले । तावच्छरीरे वत्स्यन्ति प्राणा मम न संशयः ॥

वीर “वीरரே!
रामकथा श्रीராமகதை
यावत् எவ்வளவுகாலம்
महीतले பூலோகத்தில்
चरिष्यति நிகழ்கின்றதோ

तावत् இதுவரையில்தான்
मम प्राणा: எனது பிராணைகள்
शरीरे சரீரத்தில்
वत्स्यन्ति நிலைகொண்டிருக்கும்;
न संशयः இதற்கையமில்லை.”

एवं ब्रुवाणं रामस्तु हनुमन्तं वरासनात् । उत्थाय सस्वजे स्नेहाद्वाक्यमेतदुवाच ह ॥ १७ ॥

रामः ह श्रीरामரே
वरासनात् சிறந்த ஆணைத்தி
उत्थाय எழுந்து [னின்று
एवं இங்ஙனம்
ब्रुवाणं விண்ணப்பம் செய்து
கொள்ளும்

हनुमन्तं ஹனுமாரை
स्नेहात् ப்ரீதிப்பெருக்காலே
सस्वजे ஆலிங்கனம் செய்து
एतत् இந்த [கொண்டார்.
वाक्यं तु நியமனத்தையும்
उवाच விதித்தருளினார்:

एवमेतत्कपिश्रेष्ठ भविता नात्र संशयः । लोका हि यावत्स्थास्यन्ति तावत्स्थास्यति मे कथा ॥

| | |
|------------|---------------|
| कपिश्रेष्ठ | “வானரோத்தமா ! |
| एतत् | இது |
| एवं | இப்படியே |
| भविता | ஆகக்கடவது. |
| अह | இவ்விஷயத்தில் |
| संशयः | ஸந்தேஹம் |
| न | இல்லை. |

| | |
|-------------|------------------|
| लोकाः | லோகங்கள் |
| यावत् | எவ்வளவுகாலம் |
| स्थास्यन्ति | நீடித்திருக்குமோ |
| तावत् | அவ்வளவுகாலம் |
| मे | எனது |
| कथा हि | கதையும் |
| स्थास्यति | விளங்கும். |

चरिष्यति कथा यावदेषा लोके च मामिका । तावत्ते भविता कीर्तिः शरीरेऽप्यसवस्तथा ॥

| | |
|----------|---------------|
| लोके | “உலகில் |
| यावत् | எவ்வளவுகாலம் |
| मामिका | என்னைப்பற்றிய |
| पथा | இந்த [தாகிய |
| कथा | கதை |
| चरिष्यति | நிகழ்கின்றதோ |

| | |
|---------------|-----------------|
| तावत् | அதுவரையில் |
| ते | உனது |
| कीर्तिः च तथा | புகழும், அவ்வண் |
| शरीरे | சரீரத்தில் [ணமே |
| असवः अपि | பிராணன்களுநம் |
| भविता | இருக்கட்டும்.” |

ततोऽप्य हारं चन्द्राभं मुच्य कण्ठात्स राघवः । वैदूर्यतरलं कण्ठे बबन्ध च हनूमतः ॥

| | |
|-------------|---|
| सः | அந்த |
| राघवः च | ஸ்ரீராகவரே |
| चन्द्राभं | சீதகிரணனது ஒளி யுடையதும் |
| वैदूर्यतरलं | { ஜோதிமயமான வை நீரயக்கற்களால் செய் யப்பட்டதுமான |

| | |
|---------------|-----------------|
| हारं | ஹாரத்தை |
| कण्ठात् मुच्य | கழுத்தினின்று |
| ततः | அப்போது [கழற்றி |
| अस्य | இந்த |
| हनूमतः | ஹனுமாருடைய |
| कण्ठे | கழுத்தில் |
| बबन्ध | அணிந்தனர். |

तेनोरसि निबद्धेन हारेण महता कपिः । राज हेमशैलेन्द्रश्चन्द्रेणाक्रान्तमस्तकः ॥ २१ ॥

| | |
|----------|-----------------------|
| कपिः | வானரர் |
| तेन | அவரால் |
| उरसि | மார்பில் |
| निबद्धेन | போடப்பட்ட |
| महता | ஸர்வோத்திருஷ்ட மான |

| | |
|----------------|----------------------------------|
| हारेण | ஹாரத்தால் |
| चन्द्रेण | சந்திரனால் |
| आक्रान्तमस्तकः | ஒளிவிசப்பெற்ற சிகரங்களை யுடைய |
| हेमशैलेन्द्रः | மேருமலையென |
| राज | விளங்கினார். |

श्रुत्वा तु राघवस्यैतदुत्थायोत्थाय वानराः । प्रणम्य शिरसा पादौ निर्जमुस्तै महाबलाः ॥

| | |
|----------|-----------------|
| ते | அந்த |
| महाबलाः | மஹாபலிஷ்டர் |
| वानराः | வானரர்கள் [களான |
| तु | இவ்விஷயத்தில் |
| एतत् | இதை |
| श्रुत्वा | கவனித்து |

| | |
|---------------|------------------|
| राघवस्य | ஸ்ரீராகவருடைய |
| पादौ | திருவடிகளில் |
| शिरसा | முடிதாழ்த்தி |
| उत्थाय उत्थाय | வீழ்ந்துவீழ்ந்து |
| प्रणम्य | நமஸ்கரித்து |
| निर्जमुः | பிரயாணமாணர்கள். |

सुग्रीवः स च रामेण परिवृक्तो महाबलः । विभीषणश्च धर्मात्मा सर्वे ते बाष्पविकृवाः ॥

| | |
|------------|---------------------------|
| रामेण | ஸ்ரீராமரால் |
| परिवृक्तः | ஆலிங்கனம்செய்யப் பெற்ற |
| महाबलः | மஹாபலிஷ்டனாகிய |
| सः | அந்த |
| सुग्रीवः च | சுகரீவரும் |

| | |
|--------------|--|
| धर्मात्मा | தருமா த்மாவாகிய |
| विभीषणः च | விபிஷணரும் |
| ते | அந்த |
| सर्वे | மற்ற எல்லோரும் |
| बाष्पविकृवाः | { கண்ணீர் பெருக்கிக் கொண்டு துயர மடைந்தார்கள். |

सर्वे च ते बाष्पकलाः साश्रुनेत्रा विचेतसः । समूहा इव दुःखेन त्यजन्तो राघवं तदा ॥

| | |
|---------------|---|
| ते | அந்த |
| सर्वे च | எல்லோரும் |
| साश्रुनेत्राः | { கண்ணீர் பெருக்கும் நேத்திரங்கோடியுடை யவர்களாய் |
| बाष्पकलाः इव | { கண்ணீர்ப்பெருக்கால் வாய்திறந்து பேச முடியாதவர்களாய் |

| | |
|----------|------------------------|
| सम्भवाः | ஸ்தம்பித்தவர்களாய் |
| विचेतसः | மெய்மறந்தவர்களாய் |
| राघवं | ஸ்ரீராகவரை |
| तदा | அப்பொழுது |
| दुःखेन | வருத்தத்தோடு |
| त्यजन्तः | விட்டுப்பிரிந்தார்கள். |

कृतप्रसादास्तेनैव राघवेण महात्मना । जग्मुः स्वं स्वं गृहं सर्वे देही देहमिव त्यजन् ॥

| | |
|-------------|----------------------|
| महात्मना | மஹாத்மாவான |
| तेन | அந்த |
| राघवेण | ஸ்ரீராகவரால் |
| एवं | மேற்கண்டவண்ண மாய் |
| कृतप्रसादाः | அனுகிரகம்பெற்ற |
| सर्वे | எல்லோரும் |

| | |
|-------------|------------------------|
| देहं | உடலை |
| देही त्यजन् | உயிர் விட்டுப்பிரிதல் |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| स्वं स्वं | தமது தமது |
| गृहं | கிருகத்திற்கு |
| जग्मुः | போய்ச்சேர்ந்தார்கள். |

इत्यर्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
उत्तरकाण्डे चत्वारिंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22395

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 1671

इत्यर्षे श्रीमद्रामायणे सप्तविंशोऽह्नि वर्तमानकथाप्रसङ्गः ॥

இவ்விதம் ஆதியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமர் ஸந்நதியில் அச்வமேத யாகசாலையில் கானம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில் இருபத்தேழாவது தினத்தில் கானம் பண்ணப்பட்ட கதை முடிவுபெற்றது.



[புரா குசலவாஶ்யாं श्रीरामसन्निधावश्वमेधयज्ञवाटे द्वात्रिंशति दिनेषु गीते श्रीमद्रामायणे
अष्टाविंशोऽङ्गि उत्तरकाण्डे एकचत्वारिंशसर्गमारभ्य षष्टितमसर्गपर्यन्तं
(22396—22854 श्लोकाः) गीतम् । तस्मिन् दिने गीताः श्लोकाः 459]

[ஆதிரியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமஸந்நிதிரியில் அஸ்வமேதயாகசாலையில்
முப்பத்திரண்டு தினங்களில் கானம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில்
இருபத்தெட்டாவது தினத்தில் உத்தரகாண்டத்தில் நாற்பத்தோராவது
ஸர்க்கம்முதல் அறுபதாவது ஸர்க்கம்வரை (22396—22854)
கானம் செய்யப்பட்டது.

அன்று கானம் செய்யப்பட்ட சுலோக சங்கியை 459]

एकचत्वारिंशः सर्गः—நாற்பத்தோன்றாவது ஸர்க்கம். || 48 ||

पुष्पकविसर्जनम्—புஷ்பகவிமானத்தை அனுப்புவது.

विस्वज्य च महाबाहुर्ऋक्षवानरराक्षसान् । भ्रातृभिः सहितो रामः प्रमुमोद सुखं सुखी ॥

மஹாபாஹு: மகாபாகுவும்
சுஶீ ச பற்றற்ற துறவியு
ராம: ஸ்ரீராமர் [மான
ऋक्षवानरराक्षसान् { ரிக்ஷர்களையும், வான
ரர்களையும் அரக்கர்
களையும்
विस्वज्य விடைகொடுத்தனுப்
பியபின்னர்

भ्रातृभिः பிராதாக்களுடன்
सहितः கூடியிருப்பவராயும்
सुखं { ஆசிரிதர்களின் குறை
களை தீர்த்துவைத்த
தினாலும்
प्रमुमोद மிக்க ஆனந்தங்கொண்
டு விளங்கினார்.

अथापराहसमये भ्रातृभिः सह राघवः । शुश्राव मधुरां वाणीमन्तरिक्षात्यभाषिताम् ॥

आतृभिः सह பிராதாக்களுடன்
இருக்கின்ற
राघवः ஸ்ரீராமர்
अपराहसमये ஒருநாளன் பிற்பகலில்
अन्तरिक्षात् ஆகாயத்தில்
अथ பின்கண்டபடி

मधुरां மதுரமாயும்
प्रभाषितां { பெயரைச்சொல்லி
அழைப்பதோடு
கடியதுமான
वाणी ஒரு பாஷ்ணையை
शुश्राव கேட்டார்.

सौम्य राम निरीक्षस्व सौम्येन वदनेन माम् । कैलासशिखरात्प्राप्तं विद्धि मां पुष्पकं प्रभो ॥

सौम्य “ஹே புண்யாத்மா
प्रभो ஹே பிரபோ! [வே!
राम ஸ்ரீராம!
मां என்னை
कैलासशिखरात् கைலாசசிகரத்தினின்
प्राप्तं திரும்பிவந்த [யு

पुष्पकं புஷ்பகவிமானம்
विद्धि திருவுள்ளங்கொள்
मां என்னை [ளும்
सौम्येन மலர்ந்த
वदनेन திருமுகமண்டலத்தில்
निरीक्षस्व கடாக்ஷித்தருளும்.

॥व शासनमाज्ञाय गतोऽस्मि धनदं प्रति । उपस्थातुं नरश्रेष्ठ स च मां प्रत्यभाषत ॥ ४ ॥

नरश्रेष्ठ "पुत्रुஷோத்தम !
तव தேவரீருடைய
शासनं भाज्ञाय நியமனத்தைப்
धनदं प्रति குபேரருக்கு [பெற்று
उपस्थातुं அமைசெய்ய

गतः अस्मि நான்போய்ச்சேர்ந்
सः அவர் [தேன்.
मां च என்னிடமே
प्रत्यभाषत இப்படிச் சொல்லியரு
ளிணர்:

निर्जितस्त्वं नरेन्द्रेण राघवेण महात्मना । निहत्य युधि दुर्धर्षं रावणं राक्षसेश्वरम् ॥ ५ ॥

महात्मना "மஹாத்மாவான
नरेन्द्रेण पुत्रுஷோத்தமராகிய
राघवेण ஸ்ரீராகவரால்
दुर्धर्षं எவராலும் வெல்வதற்
कரியனாயிருந்த

राघणं ராவணனை
युधि யுத்தத்தில்
निहत्य ஸம்ஹரித்து
त्वं நீ
निर्जितः சொந்தமாகக்கொள்
ளப்பட்டாய்.

ममापि परमा प्रीतिर्हेते तस्मिन्दुरात्मनि । रावणे सगणे चैव सपुत्रे सहबान्धवे ॥ ६ ॥

दुरात्मनि "தூராத்மாவாகிய
तस्मिन् அந்த
रावणे च ராவணன்
सगणे च கணங்களுடனும்
सपुत्रे புத்திரர்களோடும்

सहबान्धवे एव இனத்தாருடனும்
हेते ஸம்ஹரிக்கப்பட்ட
தில்
मम अपि எனக்கும்
परमा प्रीतिः பெரிய உதவி.

स त्वं रामेण लङ्कायां निर्जितः परमात्मना । वह सौम्य तमेव त्वमहमाज्ञापयामि ते ॥

सौम्य "ஹே சௌம்ய !
त्वं நீ
परमात्मना பரமாத்மாவாகிய
रामेण ஸ்ரீராமரால்
लङ्कायां இலங்கையில்
निर्जितः சவாதினம் செய்து
கொள்ளப்பட்டாய்.

सः அந்த
त्वं நீ
तं एव அவருக்கே
वह வாஹனமாகுக.
ते உன்னிடம்
अहं நான்
आज्ञापयामि கட்டினையிடுகிறேன்.

परमो ह्येव मे कामो यत्त्वं राघवनन्दनम् । वहलोकस्य संयानं गच्छस्व विगतज्वरः ॥

३३ "நீ
लोकस्य உலகத்தினுடைய
संयानं ஸம்சாரத்தைப்பூரிந்
திருக்கும்
राघवनन्दनं ஸ்ரீராகவரை
वहः வஹித்துவரவேண்
டும்.
विगतज्वरः மனக்கலேசம் எதுவு
மில்லாதவனாக

गच्छस्व திரும்பிப்போவாயாக.
यत् எந்த
एषः हि இதுதான்
मे என்னுடைய
परमः { என்றைக்கும் எதற்
கும் மேலாய் மன
தில் கொண்டிருந்த
कामः 'மனோதம்.'

सोऽहं शासनमाज्ञाय धनदस्य महात्मनः । त्वत्सकाशमनुमाप्तो निर्विशङ्कः प्रतीक्ष माम् ॥

சு: “அந்த
அஃ நான்
மஹா இயைவரான
தனதசு குபேரனது
சாசனம் நியமனத்தை
அசாய பெற்று
தவசகாசம் தேவரீருடைய
ஸண்ணிதிக்கு

அனுமாசு: வரலானேன்.
மா என்னை
நிர்விசங்கு: { எப்படிப்பட்ட ஆக்கூத
பத்தையும் நினையா
தவராய்
பிரதீக்ச தேவரீர் அங்கீகரித்
தருளும்”.

बाढमित्येव काकुत्स्थः पुष्पकं समपूजयत् । लाजैश्चैव तथा पुष्पैर्धूपैश्चैव सुगन्धिभिः ॥१०॥

காகுதசு: காசுதஸ் தரும்
பாஃ எவ ‘இப்படியா நியமனம்’
ஹித ச என்று முதலில்
புஷ்பகம் கூறிவிட்டு உடனே
புஷ்பகவிமானத்தை

லாஜை: எவ பொரிகளாலும்
ததா அவ்வண்ணமே
புஷ்பை: எவ புஷ்ப்டங்களாலும்
சுபுஷ்பை: ச சுகந்தமான
சமபூஜயத் தூபங்களாலும்
ஏற்றபடி பூஜித்தார்.

गम्यतामिति चोवाच आगच्छ त्वं स्मरे यदा । सिद्धानां च गतौ सौम्य मा विषादेन योजय ॥

கமயதாம் “திரும்பிப்போய்
ஹித ச விடவேண்டியது”
உவாச விடவேண்டியது”
சுமய சித்யம் “ஹே ஸௌம்ய!
சித்தர்களுடைய
கதௌ சார்யத்தில்
யதா எப்பொழுது

சுரே { உன்னை உள்ளத்தில்
நினைக்கிறேனே
அப்பொழுது
எவ் நீ
அகாசு இவ்விடம் திரும்பிவா,
விஷாடென ஆசாபங்கம் பெற
மா யுஜய நீ மனதில்
கொள்ளாதே”.

एवमस्त्विति रामेण पूजयित्वा विसर्जितम् । अभिप्रेतां दिशं तस्मात्प्रायात्तत्पुष्पकं तदा ॥

தவ அந்த
புஷ்பகம் புஷ்பகவிமானம்
ததா அப்பொழுது
ராமேண ஸ்ரீராமரால்
பூஜயிதவா பூஜிக்கப்பட்டு
விசர்ஜிதம் விடைகொடுத்த
தஸவ் அவ்விடத்தினின்று

அபிபிரேதாம் ஆக்ரூபிக்கப்பட்ட
திசம் பிரதேசத்திற்கு
எவ் அஸ்து ‘திருவுள்ளம் எப்படி
யோ அப்படியேயாகுக’
ஹித என்னுகொல்லிவிட்டு
பிராயத் திரும்பிப்போய்விட்
டது.

| | | | |
|---------------|---|-----------|--|
| एते | இந்த | सुखाः | { பஹிரிந்திரியங்க ளுக்குச் சுகமாயிருப் பவைகளாகவும் |
| वाताः च | { எக்காலத்திலும் எத் திசையிலிருந்து வரும் காற்றுக்கள் | शिवाः भवि | { தேச ஆரோக்கியத் தைத் தருப்பவைகளா கவும் |
| स्पर्शयुक्ताः | { த்வகிந்திரியங்களுக் குச் சுகமாயிருப்ப வைகளாகவும் | प्रवान्ति | வீசுகின்றன. |

ईदृशोऽनश्वरो राजा भवेदिति नरेश्वरः । कथयन्ति पुरे राजन्यौरजानपदास्तथा ॥१८॥

| | | | |
|------------|-----------------------------|----------|--|
| राजन् | “ அரேசு ! | नरेश्वरः | ஜனங்களை ஆளுகின்ற வராகவும் |
| पुरे | பட்டணத்தில் | अनश्वरः | சாச்வதமாயிருப்ப வராகவும் |
| पौरजानपदाः | நகரநாடுஜனங்கள் எல்லோரும் | भवेत् | இருக்கவேண்டும் |
| ईदृशः | இப்படிப்பட்டவராகிய | इति | என்று |
| राजा | மன்னர் | कथयन्ति | { ஒருவரோடொருவர் பேசிக்கொள்ளுகிறார் கள்.” |
| तथा | இம்மாதிரியே | | |

एता वाचः सुमधुरा भरतेन समीरिताः। श्रुत्वा रामो मुदा युक्तः प्रमुषोद सुखी सुखम् ॥

| | | | |
|--------|---|----------|--------------------------------------|
| सुखी | பற்றற்றத்தறவியும் | भरतेन | பாதரால் |
| सुखं | { ஆசிரிதர்களின் குறை களைத் தீர்த்துவைத் ததால் | सुमधुराः | மிக்கமதுரமாய் |
| मुदा | மனத்திருப்திகொ ண்டு | समीरिताः | சொல்லப்பட்டவை களான |
| युक्तः | விளங்குகிறவருமான | एताः | இந்த |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | वाचः | மொழிகளை |
| | | श्रुत्वा | கேட்டு |
| | | प्रमुषोद | இன்னுமதிகமாய் திருவுள்ளமுவந்தார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकिये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे एकचत्वारिंशः सर्गः ॥



द्विचत्वारिंशः सर्गः—நாற்பத்திரண்டாவது ஸர்க்கம். ॥ ४२ ॥

सीतया पुनर्गङ्गातीरगमनप्रार्थनम्—ஸீதை மறுபடியும் கங்காதீரம் போக பிரார்த்திப்பது.

स विसृज्य ततो रामः पुष्पकं हेमभूषितम् । प्रविवेश महाबाहुरशोकवनिकां तदा ॥ १ ॥
 चन्दनागरुचूतैश्च तुङ्गकालेयकैरपि । देवदारुवनैश्चापि समन्तादुपशोभिताम् ॥ २ ॥
 चम्पकाशोकपुन्नागमधूकपनसासनैः । शोभितां पारिजातैश्च विधूमज्ज्वलनप्रभैः ॥ ३ ॥
 लोध्रनीपाञ्जुनैर्नगैः सप्तपर्णातिमुक्तकैः । मन्दाटकदलीगुल्मलताजालसमावृताम् ॥ ४ ॥
 मियङ्गुभिः कदम्बैश्च तथा च वकुलैरपि । जम्बुभिर्दाडिमैश्चैव कोविदारैश्च शोभिताम् ॥ ५ ॥
 सर्वदा कुसुमै रम्यैः फलवद्भिर्मनोरमैः । दिव्यगन्धरसोपेतैस्तरुणाङ्गुरपल्लवैः ॥ ६ ॥
 तथैव तहभिर्दिव्यैः शिल्पिभिः परिकल्पितैः । चारुपल्लवपुष्पाढ्यैर्मत्तभ्रमरसङ्कुलैः ॥ ७ ॥
 कोकिलैर्भृङ्गराजैश्च नानावर्णैश्च पक्षिभिः । शोभितां शतशशिञ्जां चूतवृक्षावतंसकैः ॥ ८ ॥

ச: அந்த
 महाबाहु: மஹாபாகுவாகிய
 राम: சூராமர்
 तदा அப்பொழுது
 हेमभूषितं சுவர்ணமயமாய்
 पुष्पकं புஷ்பகவிமானத்தை
 विसृज्य விடைகொடுத்தனுப்
 तत: அதன்பின்னர்
 चन्दनागरुचूतैः च { சந்தனமரங்களாலும்,
 अकरोमरங்களாலும்,
 मारमरங்களாலும்,
 तुङ्गकालेयकैः अपि { தென்னைமரங்களா
 लुम्, कण्टकसन्त
 मरங்களாலும்,
 देवदारुवनैः च தேவதாருவனங்
 कणालும்,
 समन्तात् நாற்புறமும்
 उपशोभितां अपि அழகாய் விளங்குகிற
 ताम्, தாம்,

चम्पकाशोकपुन्नाग- } சண்பகம், அசோகம்,
 मधूकपनसासनैः } புன்குகம், மதுகம்,
 पनसम्, असनम्,
 अल्लता लीलिकम्
 என்கிற விருகக்ஷங்
 कणालும்
 विधूमज्ज्वलनप्रभैः புகையின்றி எரியும்
 தீ ஒளிகொண்ட
 पारिजातैः च பாரிஜாதங்களாலும்
 शोभितां च விளங்குகிறது
 लोध्रनीपाञ्जुनैः { லோத்திரம், நீபம்,
 अर्जुनम् என்கிற
 मरங்களாலும்
 नगैः நாகமரங்களாலும்
 सप्तपर्णातिमुक्तकैः { ஸப்தபர்ணம், அதிமு
 क्तकम् என்கிற
 मरங்களாலும்,
 मन्दाटकदलीगुल्म- } மந்தாரம், கதலி என்
 लताजालसमावृतां } கிற மரங்கள், செடி
 कण இவைகள் ஸமூக
 ङகளாலும், என்கும்
 निरुन्तुள்ளதாம்
 तथा அவ்வண்ணமே

| | |
|----------------------------|---|
| प्रियङ्गुभिः च | பிரயங்குமரங்களா லும் |
| कदम्बैः च | கதம்பமரங்களா லும் |
| वकुलैः च | வகுளமரங்களா லும் |
| जम्बुभिः एव | ஜம்புவிருகூங்களா லும் |
| दाडिमैः अपि | தாடிமவிருகூங்களா லும் |
| कोविदारैः | கோவிதாரகிருகூங் களா லும் |
| शोमितां च | அழகுக்கொண்டு விளங்குகிறதும் |
| तथा | அவ்வண்ணமே |
| शिविपरिः | கோட்டலேலைகளில் நிபுணர்களால் |
| सर्षदा | எக்காலத்திலும் |
| परिकल्पितैः | பக்தியுடன் வளர்க்கப் பட்டவைகளான |
| रथैः | அழகாயிருக்கின்ற |
| कुसुमैः | புஷ்பங்களா லும் |
| मनोरमैः | மனோஹரங்களாயிருக் கின்றவைகளும் |
| दिव्यैः | அத்யந்த ஆச்சர்யங் களாயிருக்கின்றவை களா லும் |
| दिव्यान्ध- } रसोपेतैः } | அமா லுஷ்யமாய் விளங்கும் வாஸனை மையும், ருசியையும் உடையவைகளும் |
| फणवज्रिः | பழங்களைத் தருகின்ற வைகளுமான |

शातकुम्भनिभाः केचित्केचिदग्निशिखोपमाः । नीलाञ्जननिभाश्चान्ये भान्ति तत्रत्यपादाः ॥
सुरभीणि च पुष्पाणि माल्यानि विविधानि च ॥ ९ ॥

| | |
|---------------|------------------------------------|
| केचिच्च | சில |
| तत्रत्यपादाः | அவ்விடத்தில் உண் டான மரங்கள் |
| शातकुम्भनिभाः | சுவர்ணமயமான சோ நியையுடையனவை |
| केचिच्च | சில [களாகவும் |
| अग्निशिखोपमाः | அக்னிஜ்வாலையைப் போன்றவைகளாகவும் |
| अन्ये | சில |

| | |
|-------------------------------|---|
| तरभिः एव | மரங்களா லும் |
| मत्तभ्रमर- } संकुलैः } | மதித்தா நீங்காரம் செய்யும் வண்டுஸழ ஹங்களுடனிருக் கின்ற |
| चास्यल्लव- } पुष्पाड्यैः } | ஏராளமான அழகு வாய்ந்த தளிர்களா லும் புஷ்பங்களா லும் |
| तरुणाङ्कुर- } पल्लवैः } | புதிதுபுதிதாய் துளுக் கும் முளைகளா லும் தளிர்களா லும் |
| कोकिलैः च | கோகிலவிருகூங்க ளா லும் |
| शृङ्गाराजैः | பெரும் கருவண்டு களால் |
| चूतवृक्षावतंसकैः | மாமரங்களுக்கு கண் டமாலையென விளங் குக்கின்றவைகளும் |
| शोमितां च | மிக்க அழகான வையும் |
| नानावर्णैः | பலவண்ணங்களைபு டையவைகளும் |
| शतराः | நூற்றுக்கணக்கான |
| पक्षिभिः | பகூழிகளா லும் |
| चिवां च | அழகாயிருக்கிறதா மான |
| अशोकवनिकां | அசோக உத்யான வனத்திற்கு |
| प्रविशे श | எழுந்தருளினார். |

| | |
|-----------------|--|
| नीलाञ्जननिभाः च | மைபோன்றவைகளா விளங்கின. [கவும் |
| भान्ति | நானுவிதமான |
| विविधानि | புஷ்பங்கள் |
| पुष्पाणि | மாலையைக்கேற்றவை களாயும் |
| माल्यानि च | மிக்க கமழ்தல்கொண் டவைகளாயும் விளங்கின. |
| सुरभीणि च | |

दीर्घिका विविधाकाराः पूर्णाः परमवारिणा । माणिक्यकृतसोपानाः स्फटिकान्तरकुट्टिमाः॥

| | | | |
|------------------------|---|---------------------------|---|
| दीर्घिकाः | வாவிசள் | स्फटिकान्तर- कुट्टिमाः | படித்துறைகளின் தளங்கள் படிக்கக் களால் செய்யப்பட்ட டவைகளாய் |
| विविधाकाराः | { வெவ்வேறான பரிமா ணங்கள் உடையவை களாய் | परमवारिणा | மஹா சீரேஷ்டமான ஜலத்தால் |
| माणिक्यकृत- सोपानाः | { மாணிக்கக்கற்களால் செய்யப்பட்ட படித் துறைகளையுடைய வைகளாய் | पूर्णाः | நிறைந்திருந்தன. |

फुल्लपद्मोत्पलवनाश्रक्रवाकोपशोभिताः । दात्यूहशुकसंघुष्टा हंससारसनादिताः ॥ ११ ॥

| | | | |
|-------------------------|--|--------------------------|--|
| फुल्लपद्मोत्प- लवनाः | { நன்றாய் விகளித்த தா மரைகளும், கருநெய்த புஷ்பங்களும் நிறைந் த ஜலங்களையுடைய வைகள். | दात्यूहशुक- संघुष्टाः | { நீர்க்காக்கைகளும் கிளி களும் ஏராளமாய் ஸஞ்சரிக்கப்பெற்று விளங்கின. |
| चक्रवाकोप- शोभिताः | { சக்கிரவாகங்களால் அழகாய் விளங்கு கின்றவைகள். | हंससारस- नादिताः | { ஹம்ஸங்களும் ஸார ஸங்களும் கூவிக்களி த்து விளையாடின. |

तरुभिः पुष्पवद्भिश्च तीरजैरुपशोभिताः । प्राकारैर्विविधाकारैः शोभिताश्च शिलातलैः ॥

| | | | |
|-----------|--|---------------|---|
| तीः(जैः) | { கரையோரங்களில் வைக்கப்பட்டிருந்த வைகளும், | पुष्पवद्भिः च | புஷ்பங்களோடிருக் கின்றவைகளுமான |
| तरुभिः | விருக்தங்களால் | उपशोभिताः | மிக்க அழகுபெற்று விளங்கின. |
| प्राकारैः | பற்பல கற்பனைகளா யிருக்கின்ற | शिलातलैः च | { மரங்களின் நிழலில் கட்டப்பட்டிருந்த கல்மேடைகளாலும் |
| शोभिताः | அழகுபெற்று விளங்கின. | | |

तत्रैव च वनोद्देशे वैडूर्यमणिसन्निभैः । शाद्वलैः परमोपेतां पुष्पितद्रुमकाननाम् ॥ १३ ॥
तत्र सङ्घर्षजातानां वृक्षाणां पुष्पशालिनाम् । प्रस्ताराः पुष्पशबला नभस्तारागणैरिव ॥
नन्दनं हि यथेन्द्रस्य बाह्यं चैत्ररथं यथा । तथाभूतं हि रामस्य काननं सन्निवेशनम् ॥
बहासनगृहोपेतां लतागृहसमावृताम् । अशोकवनिकां स्फीतां प्रविश्य रघुनन्दनः ॥१६॥
आसनं च शुभाकारं पुष्पकरभूषितं । कुथास्तरणसंवीते रामः सन्निषसाद ह ॥१७॥

| | | | |
|-------------------------|--|-----------|-------------------------------|
| रघुनन्दनः | ஸ்ரீரகுந்தனர் | शाद्वलैः | பசும்புற்களால் |
| वैडूर्यमणि- सन्निभैः | { பச்சைக்கற்கள் அமைக்கப்பெற்றது போல் விளங்கும் | परमोपेतां | மிக்க அழகாய் விளங் கியதும் |

| | |
|-------------------------------------|--|
| पुष्पितद्रुम- काननां } | அடர்ந்த புஷ்பங்களையு யுடைய மரங்களையு டையதும் |
| वृक्षाणां सङ्घर्षजातानां | மரங்களினுடைய அசைவதால் உண்டா கும் |
| पुष्पशालिनां | அதிக புஷ்பங்களினு டைய |
| पुष्पशबलाः | விசித்தரமான வர்ணங் களுடைய புஷ்பங்க ளான |
| प्रस्ताराः | பள்ளிகள் |
| नभः | ஆகாசம் |
| तारागणैः | நகரத்திரகணங்களால் |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| तल्ल | அவ்விடத்திலிருந் கிறதும் |
| वनोद्देशे | வனத்தில் ஓரிடத்தில் |
| इन्द्रस्य नन्दनं | இந்திரனுடைய நந்தவனம் |
| यथा | போன்றதாயும் |
| चैलरथं | குபேரனது உத்யான வனமாகிய சைத்ர ரதம் |
| यथा | போன்றதாய் |
| तथाभूतं | அவ்வண்ணமேயிருந் கின்றதாயும் |
| रामस्य सन्निवेशं | ஸ்ரீராமருக்கு இளைப்பாறுவதற்கு உரியதாயும் |
| सीतामादाय हस्तेन मधु मैरेयकं शुचि । | |
| काकुत्स्थः | காகுதஸ்தர் |
| पुरन्दरः | இந்திரன் |
| शर्ची | இந்திராணியை |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே |
| सीतां | சீதையை |
| हस्तेन | கையால் |

| | |
|---------------------------------------|---|
| ब्राह्मं हि | தெய்வத்வமுள்ள வருக்கு ஏற்றது மான |
| काननं | சோலை |
| तल्ल हि | அத்திலேயேயிருக்கிற தும் |
| बह्वासन- गृहोपेतां च } | பல ஆஸனங்களோ டும் மண்டபங்களோ டும் விளங்குகிறதும் |
| लतागृहसमावृतां | லதாகிருக்கங்கள் அமை ந்து விளங்குகிறதும் |
| स्फीतां एव | மிக்க ஆனந்தகரமாயி ருக்கிறதாமான |
| भशोकवनिकां | அசோக உத்யான வனத்தில் |
| प्रविश्य | புகுந்து |
| रामः | ஸ்ரீராமர் |
| शुभाकारे | மிக்க அழகுவாய்ந்து விளங்குகிறதும் |
| पुष्पमकरमूषिते | புஷ்பங்களின் குவியல் களால் அலங்காரமா யிருக்கிறதும் |
| कुथास्तरण- संवीते च } | ரத்தனகம்பளங்களும், பஞ்சவைத்துத் தை த்த நல்ல மெத்தை களும் விரிக்கப்பட்ட டதுமான |
| आसने | ஒரு ஆஸனத்தில் |
| सन्निषसाद् ह | விற்றிருந்தார். |
| पाययामास काकुत्स्थः शचीमिव पुरन्दरः ॥ | |
| भादाय शुचि | பற்றிக்கொண்டு புண்ணியம் தருகிற தும் |
| मधु | இளைப்பாபிருக்கிறது மான |
| मैरेयकं | மைரேயகமென்னும் மதுவை |
| पाययामास | பருகச்செய்தார். |

मांसानि च समृष्टानि फलानि विविधानि च । रामस्याभ्यवहारार्थं किङ्करास्तूर्णमाहरन् ॥

किङ्काः: சேவகர்கள்
रामस्य ஸ்ரீராமருக்கும்
अभ्यवहारार्थं அமுதுசெய்வதற்காக
समृष्टानि ருசிகரமாய் பாகம்
 செய்யப்பட்ட

मांसानि च மாம்ஸங்களையும்
विविधानि அனேகவிதமான
फलानि च பழங்களையும்
तूर्णं சிக்கிரமாய்
आहरन् கொண்டு வந்தார்கள்.

उपानृत्यंश्च राजानं वृत्तगीतविशारदाः । बालाश्च रूपवत्यश्च स्त्रियः पानवशानुगाः ॥२०॥

वृत्तगीत- ஆடல் பாடல்களில்
विशारदाः च } நிபுணர்களும்
रुचवस्यः அழகுவாய்ந்தவர்
 களும்
बालाः யுவதிகளும்

पान- ஸர்வரகூசுகர் ஸன்னி
वशानुगाः च } தியிலிருக்க யோக்கி
 யதையுடையவர்களு
स्त्रियः பெண்கள் [மான
राजां च மன்னரின் முன்
उपानृत्यन् ஆடிப்பாடினார்கள்.

एवं रामो मुदा युक्तः सीतां सुरसुतोपमाम् । रमयामास वैदेहीमहन्यहनि देववत् ॥२१॥

देववत् தெய்வஅவதாரமாயி
 ருக்கின்ற
रामः ஸ்ரீராமர்
एवं இவ்வண்ணம்
मुदा ஸந்தோஷத்தோடு
युक्तः விளங்குகிறவராய்

वैदेहीं விதேஹதேசத்து
 மன்னரின் புதல்வியும்
सुरसुतोपमां தெய்வப்பெண்ணாய்
सीतां வீதையை [விளங்கும்
अहनि अहनि நாள்தோறும்
रमयामास உத்ஸாஹமடைவித்
 தார்.

तथा तु रममाणस्य तस्यैवं शैशिरः शुभः । अत्यक्रामचरेन्द्रस्य राघवस्य महात्मनः ॥२२॥

एवं இவ்வண்ணமாய்
रममाणस्य விநோதமாய்ப்பொ
 முதுபோக்கிவந்த
महात्मनः மஹாத்மாவாகிய
चरेन्द्रस्य புருஷோத்தமரான

तस्य அந்த
राघवस्य तु ஸ்ரீராகவருக்கும்
तथा அப்படியே
शुभः சுபமான
शैशिरः சுகிரருது
अत्यक्रामत् கழிந்தது.

पूर्वाङ्गे पौरकुल्यानि कृत्वा धर्मेण धर्मवित् । शेषं दिवसभागार्थमन्तःपुरगतोऽभवत् ॥२३॥

धर्मवित् தருமவித்தாகிய அவர்
धर्मेण நீதிமுறை தவறாது
पूर्वाङ्गे பிரதீதினம் முற்பக
 லில்
पौरकुल्यानि ராஜாங்கசம்பந்தமான
 கார்பங்களே
कृत्वा செய்துவிட்டு
शेषं கடைசியாகிற

दिवसभागार्थं { ஒருநாளின் இரண்டா
 வது பாகத்தின் அப
 ரபாகத்தில் (இரவு
 ஒருமணிக்குமேல்
 சூர்யோதயம் வரை
 யில்)
अन्तःपुरगतः அந்தப்புரத்தில்
 எழுந்தருளியிருந்து
अभवत् காலம் கழித்தார்.

सीताऽपि देवकार्याणि कृत्वा पौर्वाङ्गिकानि वै । श्वश्रूणामकरोत्पूजां सर्वासामविशेषतः ॥

| | | | |
|----------------|----------------------------------|-------------|-----------------------|
| सीता अपि | வீதையம் | श्वश्रूणां | மாமியர்கள் |
| पौर्वाङ्गिकानि | முன்பகலில் செய்ய வேண்டியதாகிய | सर्वाणां | எல்லோருக்கும் |
| देवकार्याणि | தெய்வபுணைகளை | अविशेषतः वै | ஒருவரையும் மறவாமலே |
| कृत्वा | செய்து | पूजां | நமஸ்காரத்தை |
| | | अश्रोत् | செய்துவந்தாள். |

अभ्यगच्छत्तो रामं विचित्राभरणाभ्वरा । त्रिविष्टपे सहस्राक्षमुपविष्टं यथा शची ॥२५॥

| | | | |
|-------------|------------------|-------------------|---|
| तरः | அதன்பேல் | विचित्राभरणाभ्वरा | அழகிய ஆபரணங் களையும் ஆடை களையும் அணிந்த அவள் |
| शची | இந்திராணீதேவி | | |
| त्रिविष्टपे | தேவலோகத்தில் | रमं | பூதிராமரை |
| उपविष्टं | எழுந்தருளியிருக் | अभ्यगच्छत् | ஏதிர்கொண்டு அழைத்துவந்தாள். |
| सहस्राक्षं | இந்திரனை [கின்ற | | |
| यथा | எவ்வண்ணமோ | | |
| | அவ்வண்ணமே | | |

दृष्ट्वा तु राघवः पत्नीं कल्याणेन समन्विताम् । प्रहर्षमतुलं लेभे साधु साध्विति चाब्रवीत् ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------|----------|---------------------------------|
| राघवः | பூதிராகவர் | च | அன்றியும் |
| पत्नीं | பத்னியை | साधु | “உனக்கு ஒன்று பார்க்கிறது ; |
| कल्याणेन | அலங்காரம்செய்து கொண்டு | साधु | எனக்கு ஏற்ற தாயிருக்கிறது ;” |
| समन्वितां | விளங்குகிறவளாக | इति | என்றும் |
| दृष्ट्वा | பார்த்து | तु | இந்த ஸமயத்தில் |
| अतुलं प्रहर्षं | அதிகஸந்தோஷத்தை | अब्रवीत् | சொல்லியருளினார். |
| लेभे | அடைந்தார். | | |

अपत्यलाभो वैदेहि मयां समुपस्थितः । किमिच्छसि वरारोहे कामः किं क्रियतां तव ॥

| | | | |
|------------|--------------------------|-----------|-------------------------------------|
| वरारोहे | “ஸர்வாங்கசந்தரி யாகிய | किं | எதையாவது |
| वैदेहि | வேற வைதேஹி ! | इच्छसि | நீ விரும்புகின்ற |
| मम | எனக்கு | तव | உன்னுடைய [நையா ? |
| अयं | இப்பொழுது | कामः | மனோதம் |
| अरत्यलाभः | புத்திரபாக்கியம் | किं | என்ன ? |
| समुपस्थितः | கிட்டியிருக்கிறது. | क्रियताम् | அது பூர்த்திசெய்விக்க கப்படும்”. |

स्मितं कृत्वा तु वैदेही रामं वाक्यमथाब्रवीत् । तपोवनानि पुण्यानि द्रष्टुमिच्छामि राघव ॥
गङ्गातीरोपविष्टानामृषीणामुग्रतेजसाम् । फलमूलाशिनां देव पादमूलेषु वर्तितुम् ॥ २९ ॥

| | |
|--------------|---------------------|
| வீதேஹி | வைதேதஹி |
| तु | இவ்விஷயத்தில் |
| स्मितं | சிறிது புண்ணகை |
| कृत्वा | கொண்டு |
| रामं | ஸ்ரீராமரைப்பார்த்து |
| अथ | இந்த |
| वाचयं अबवीत् | சொல்லலைக் கூறினான்: |
| राघः | “ஹே ராகவ! |
| देव | ஹே நாதா! |
| पुत्रानि | புண்ணையி |
| तपोवनानि | ஆச்சரமங்களை |
| द्रष्टुं | பார்க்கவும் |

एष मे परमः कामो यन्मूलफलभोजिनाम् ।

| | |
|-----------------------|--|
| काकुत्स्थ | “ஹே காருத்தர்! |
| मूलफल- } भोजिनां } | கிழங்குகளையும் கனி களையுமே ஆஹார மாயுடையவர்களு டைய |

| | |
|-------------|------------------|
| तपोवने | ஆச்சரமத்தில் |
| एकार्षे अपि | ஓர் இரவு மட்டும் |

तथेति च प्रतिज्ञातं रामेणाक्लिष्टकर्मणा ।

| | |
|----------------|---|
| अक्लिष्टकर्मणा | எதையும் சிரமமின்றி முடிக்கவல்லவராகிய |
| रामेण | ஸ்ரீராமரால் |
| तथा | இவ்வண்ணமாய் |
| वैदेहि | “ஹே வைதஹி! |
| असंशयं | ரிச்சயமாய் |

एवमुत्त्वा तु काकुत्स्थो मैथिलीं जनकात्मजाम् ।

| | |
|------------|--------------------------|
| काकुत्स्थः | காருத்தர் |
| जनकात्मजां | ஜனகரின் திருமகளா |
| मैथिलीं | மைதிலிக்கு [கிய |
| तु | இவ்விஷயத்தில் |
| एवं | இவ்வண்ணமாய் |
| उत्त्वा | அனுமதி அளித்து விட்டு |

| | |
|---------------------|---|
| फलमूलाशिनां | { கனிகளையும் கிழங்கு களையுமே உண வாய்க்கொண்ட |
| उग्रतेजसां | மஹாதேஜோவரான் களான |
| गङ्गातीरोपविष्टानां | கங்கைக்கரைவாவலி களாகிய |
| ऋषीणां | ரிஷிகளுடைய |
| पादमूलेषु | திருவடிகளில் |
| वसितुं | பணியவும் |
| इच्छामि | நான் ஆசைப்படுகி றேன். |

अप्येकरात्रं काकुत्स्थ निवसेयं तपोवने ॥

| | |
|---------|------------------------------------|
| निवसेयं | நான் தங்கியிருக்க வேண்டுகிறேன். |
| यत् | எந்த |
| एषः | இது |
| मे | என்னுடைய |
| परमः | விசேஷமான |
| कामः | பிரார்த்தனை. |

विस्त्वा भव वैदेहि श्वो गमिष्यस्यसंशयम् ॥

| | |
|-----------------|-------------------------------|
| श्वः च गमिष्यसि | நாளையே போகலாம். |
| विस्त्वा | ஆசைதீர்த்துக்கொ |
| भव | ஆகுக.” [ண்டவளாய் |
| इति | என்று |
| प्रतिज्ञातम् | அனுக்கிரஹித்தரு ளப்பட்டது. |

मध्यकक्ष्यान्तरं रामो निर्जगाम सुहृदतः ॥

| | |
|------------------|---|
| मध्यकक्ष्यान्तरं | நடுக்கட்டின் பிரதே சத்திற்கு |
| निर्जगाम | எழுந்தருளினார். |
| रामः | ஸ்ரீராமர் |
| सुहृदतः | { புண்ணியாத்மாக் களால் ஸேவிக்கப் பட்டு விளங்கினார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे द्विचत्वारिंशः सर्गः ॥

त्रिचत्वारिंशः सर्गः—நாற்பத்துமூன்றாவது ஸர்க்கம். ॥ ४३ ॥

पौरजनकुत्सननिवेदनम्—பட்டணத்துணைங்கள் சிந்திப்பதை தெரிவிப்பது.

तत्रोपविष्टं राजानमुपासन्ते विचक्षणाः । कथानां बहुरूपाणां हास्यकाराः समन्ततः ॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------|--|
| तत्र | அவ்விடத்தில் | समन्ततः | ஸகல |
| उपविष्टं | எழுந்தருளியிருந்த | विचक्षणाः | நுட்பங்களையும் அறிந்த |
| राजानं | மன்னரை | हास्यकाराः | ஆசியக்காரர்கள் |
| बहुरूपाणां | பற்பல | उपासन्ते | அடிபணிந்துகொண்டு கொண்டிருந்தார்கள். |
| कथानां | கதைகளின் | | |

विजयो मधुमत्तश्च काश्यपः पिङ्गलः कुटः । सुराजः कालियो भद्रो दन्तवक्त्रः सुमागधः ॥

एते कथा बहुविधाः परिहाससमन्विताः । कथयन्ति स्म संहृष्टा राघवस्य महात्मनः ॥

| | | | |
|-------------|----------------|-----------------|----------------------------------|
| विजयः | விஜயன் | एते च | இவர்கள் எல்லோரும் |
| मधुमत्तः | மதுமத்தன் | संहृष्टाः | அதிக மனஸ்துஷ்டி கொண்டவர்களாய் |
| काश्यपः | காச்யபன் | महात्मनः | மஹாத்மாவாகிய |
| पिङ्गलः | பிங்கலன் | राघवस्य | ஸ்ரீராகவருக்கு |
| कूटः | கூடன் | परिहाससमन्विताः | ஆனந்தத்தை விளை விக்கும் |
| सुराजः | சுராஜன் | बहुविधाः | பல |
| कालियः | காலியன் | कथाः | கதைகள் |
| भद्रः | பத்திரன் | कथयन्ति स्म | சொல்லிக்கொண்டிருந்தார்கள். |
| दन्तवक्त्रः | தந்தவத்திரன் | | |
| सुमागधः | சுமாகதன், ஆகிய | | |

ततः कथायां कस्याश्चिद्राघवः समभाषत । काः कथा नगरे भद्र वर्तन्ते विषयेषु च ॥४॥

| | | | |
|------------|----------------------------|-----------|----------------|
| राघवः | ஸ்ரீராகவர் | भद्र | “ஹே பத்திர, |
| कस्यांचित् | எதோ ஒரு | नगरे | நகரத்திலும் |
| कथायां | கதையின் முடிவில் | विषयेषु च | நாடுகளிலும் |
| ततः | அப்போது | काः | எவ்விதமான |
| समभाषत | இப்படிக்கேட்டரு ளினார்: | कथाः | ஸம்பாஷணைகள் |
| | | वर्तन्ते | நடைபெறுகின்றன? |

मामाश्रितानि कान्याहुः पौरजानपदा जनाः ।

किं च सीतां समाश्रित्य भरतं किं च लक्ष्मणम्

॥ ५ ॥

| | | | |
|---------------|------------------------|------------|--------------------|
| पौरजानपदाः | “நகரநாடுவாசிகளாகிய | सीतां | சீதையை |
| जनाः | ஜனங்கள் | समाश्रित्य | குறித்து |
| मां आश्रितानि | என்னைப்பற்றி | किं | என்ன? |
| कानि | எவைகளை | भरतं च | பரதனையும் |
| आहुः | பேசிக்கொள்ளுகிறார்கள்? | लक्ष्मणं च | லக்ஷ்மணனையும்பற்றி |
| | | किम् | என்ன? |

किं नु शत्रुघ्नमुद्दिश्य कैकेयीं किं नु मातरम् । वक्तव्यतां च राजानो वरे राज्ये व्रजन्ति च ॥

शत्रुघ्नं च “சத்ருக்ணனைப்பற்றி
किं नु என்ன?
मातरं தாயாராகிய
कैकेयीं च கைகேயியையும்
उद्दिश्य பற்றி
किं नु என்ன?

राजानः அரசர்கள்
वरे அருமையான
राज्ये ராஜ்யத்தில்
वक्तव्यतां உலகநிந்தனைக்கு
व्रजन्ते பாத்திரமாவார்கள்.”

एवमुक्ते तु रामेण भद्रः प्राञ्जलिरब्रवीत् । स्थिताः कथाः शुभा राजन्वर्तन्ते पुरवासिनाम् ॥

रामेण ஸ்ரீராமரால்
एवं இவ்வண்ணமாய்
तु இவ்விஷயத்தில்
उक्ते வினாவப்பட்டதும்
भद्रः பத்திரன்
प्राञ्जलिः அஞ்சலிஹஸ்தனாகி
अब्रवीत् பதிலுரைத்தான்:

राजन् “அரசே!
पुरवासिनां நகரவாசிகளுடைய
कथाः பேச்சுகள்
शुभा: அனுகூலமானவை
களாகவும்
स्थिताः நல்லவைகளாகவும்
वर्तन्ते இருக்கின்றன.

अमुं तु विजयं सौम्य दशग्रीववधाजितम् । भूयिष्ठं स्वपुरे पौरैः कथ्यन्ते पुरुषर्षभ ॥ ८ ॥

पुरुषर्षभ “புருஷோத்தம!
सौम्य புண்பாத்தமா!
पौरैः பட்டணத்து ஜனங்
களால்
स्वपुरे அவர் நகரத்தில்

दशग्रीववधाजितं தசகரீவனைக்கொன்ற
தால் ஏற்பட்ட
अमुं विजयं இந்த வெற்றியை
भूयिष्ठं तु மிகப்பெரியதாய்
कथ्यन्ते பேசிக்கொண்டாடப்
படுகின்றன.”

एवमुक्तस्तु भद्रेण राघवो वाक्यमब्रवीत् । कथयस्व यथातत्त्वं सर्वं निरवशेषतः ॥ ९ ॥

भद्रेण பத்திரனால்
एवं இங்ஙனம்
उक्तः சொல்லப்பட்டதற்
குச் செவ்சாய்த்த
राघवः ஸ்ரீராகவர்
तु இவ்விஷயத்தில்
वाक्यं இந்த ஆக்கிணையை

अब्रवीत् நியமித்தருளிணர்:
सर्वं “எல்லாவற்றையும்
यथातत्त्वं உள்ளது உள்ளபடியே
निरवशेषतः ஏதொன்றையும்
ஒளிக்காமல்
कथयस्व நீ சொல்லவேண்டும்.

शुभाशुभानि वाक्यानि यान्याहुः पुरवासिनः । श्रुत्वेदानीं शुभं कुर्यां न कुर्यामशुभानि च ॥

पुरवासिनः “நகரவாசிகள்
शुभाशुभानि च { புகழாயிருந்தாலும்
சரி, நிந்தனைகளாயி
ருந்தாலும்சரி

यानि எந்த
वाक्यानि வார்த்தைகளை
इदानीं இப்பொழுது

| | |
|----------|--|
| ஹது: | { ஒருவருக்கொருவர் பேசிக்கொள்ளுகிற றர்களோ |
| தானி | அவைகளை |
| श्रुत्वा | கேட்டறிந்துகொண்டு |

| | |
|-----------------------|---|
| शुभं कुर्यां | புகழை நான் பெரிதாய்ப் பாராட்டுவேன். |
| अशुभाभि न कुर्याम् | நிந்தனைகளை நிமிருத்திசெய்து விடுவேன். |

कथयस्व च विस्वभ्यो निर्भयं विगतज्वरः । कथयन्ति यथा पौराः पापा जनपदेषु च ॥

| | |
|------------------|--|
| पौराः जनपदेषु | “ நகரவாசிகள் நாட்டார்களில் |
| पापाः च | { வரும் திங்கைமுன்ன மேயேகண்டுசொல் லுபவர்களும் |
| यथा | எப்படி. |
| कथयन्ति | { ஒருவருக்கொருவர் பேசிக்கொள்ளுகிற களோ அப்படியே |

| | |
|-----------|---|
| निर्भयं | சற்றும் கூசாமல் |
| विगतज्वरः | மனவேதனை எதுவு மில்லாதவனாய் |
| विस्वभ्यः | எதைபும் மறக்காதவ னாகி |
| कथयस्व च | நீ எல்லாவற்றையும் தெரிவிக்கவேண்டும். |

राधवेणोवशुक्तस्तु भद्रः सुरचिरं वचः । प्रत्युवाच महाबाहुं प्राञ्जलिः सुसमाहितः ॥१२॥

| | |
|-----------|---------------------------|
| राधवेण | ஸ்ரீராகவரால் |
| एवं | இவ்வண்ணம் |
| उक्तः | நியமனம்பெற்ற |
| भद्रः | பத்திரன் |
| तु | இவ்விஷயத்தில் |
| सुसमाहितः | திக்காலோசனை செய்தவனாகி |

| | |
|------------|---------------------------------|
| सुरचिरं | தேஜோமயமாய்விள ங்கும் |
| महाबाहुं | மஹாபாஹு-வைப் பார்த்து |
| प्राञ्जलिः | அஞ்ஜலிஹந்தனாகி |
| वचः | இந்தச் சொல்லை |
| प्रत्युवाच | பதிலாய் விண்ணப்பம் செய்தான்: |

शृणु राजन्यथा पौराः कथयन्ति शुभाशुभम् । चत्वारपणरथ्यासु वनेषूपवनेषु च ॥१३॥

| | |
|-----------------|--------------------------------------|
| राजन् | “ அரசே! |
| शृणु | திருச்செவிராய்த் தருளும். |
| चत्वारपणरथ्यासु | தெருச்சந்திகளிலும் கடைவீதிகளிலும் |
| वनेषु | வனங்களிலும் |
| उपवनेषु च | உபவனங்களிலும் |

| | |
|----------|--|
| पौराः | நகரவாசிகள் |
| शुभाशुभं | புகழாயும், நிந்தனையா யும் |
| यथा | அப்படி. |
| कथयन्ति | { ஒருவருக்கொருவர் பேசிக்கொள்ளுகிற கள். |

दुष्करं कृतवान् रामः समुद्रे सेतुबन्धनम् । अश्रुतं पूर्वकैः कैश्चिदैवैरपि सदानवैः ॥ १४ ॥

| | |
|-----------|------------------------|
| रामः | “ஸ்ரீராமர் |
| समुद्रे | சமுத்திரத்தில் |
| पूर्वकैः | முன்னோர்களாலும் |
| सदानवैः | தானவர்கள் உள் ளிட்ட |
| कैश्चि | எப்படிப்பட்ட |
| दैवैः अपि | தேவர்களாலும்கூட |

| | |
|-----------|---|
| अश्रुतं | காதிலும்கேட்டிரா ததும் |
| दुष्करं | { மற்றவர் எவராலும் செய்யமுடியாதது மான |
| सेतुबन्धं | அணை கட்டுதலை |
| कृतवान् | செய்தருளினார். |

रावणश्च दुराधर्षी हतः सबलवाहनः । वानराश्च वशं नीता ऋक्षाश्च सह राक्षसैः ॥१५॥

दुराधर्षी: " 'எவருக்கும் அசாத்
தியனான
रावणः இராவணன்
सबलवाहनः च படைகளோடுகடின
வனாகவே
हतः கொல்லப்பட்டான்.

राक्षसैः அரக்கர்களோடு
सह கூடவே
वानराः च வானரர்களும்
ऋक्षाः च கரடிகளும்
वशं அடிமைத்தனத்தில்
नीताः சேவித்தார்கள்.

हत्वा च रावणं संख्ये सीतामाहृत्य राघवः । अमर्षं पृष्ठतः कृत्वा स्ववेदम पुनरानयत् ॥

राघवः " 'ஸ்ரீராகவர்
संख्ये போரில்
रावणं हत्वा ராவணனைக்கொன்று
सीतां च சீதையையும்
आहृत्य சிறைமீட்டு

अमर्षं புண்ணியத்திலேயே
நிலைகொண்ட சித்த
पृष्ठतः कृत्वा மாறாய் [த்திற்கு
पुनः மீள்வும்
स्ववेदम தன் விட்டிற்கு
आनयत् அழைத்துவந்திருக்கிறார்.

कीदृशं हृदये तस्य सीतासम्भोगजं सुखम् । अङ्गमारोप्य तु पुरा रावणेन बलाद्धताम् ॥

पुरा " 'முன்னரே
रावणेन இராவணனால்
बलात् பலாத்காரமாய்
अङ्गं மடிமீது
आरोप्य ஏற்றி
हतां च கொண்டுபோகப்
பட்டவளையே

तस्य இவருடைய
हृदये மனதில்
सीतासंभोगजं { சீதை தன்னுடைய
வள் என்பதால்
உண்டாகும்
सुखं ஒப்பியிருத்தல்
कीदृशम् என்ன நியாயம்?

लङ्कामपि पुरा नीतामशोकवनिकां गताम् । रक्षसां वशमापन्नां कथं रामो न कुत्सते ॥

रामः " 'ஸ்ரீராமர்
पुरा முன்னர்
लङ्कां இலங்கைக்கு
नीतां தூக்கிக்கொண்டு
போகப்பட்டவளும்
अशोकवनिकां அசோகவனத்தில்

गतां இருந்தவளும்
रक्षसां அரக்கர்களுடைய
वशं வசத்தில்
आपन्नां अपि இருந்தவளுமான
कथं ஏனோ [அவளை
न कुत्सते நிஷேத்யாமலிருக்கிறார்?

अस्माकमपि दारेषु सहनीयं भविष्यति । यथा हि कुरुते राजा प्रजा तमनुवर्तते ॥१६॥

अस्माकं अपि " 'நமக்கும்
दारेषु பதனிகளிடத்தில்
सहनीयं பொறுத்துக்கொண்
டிருக்கவேண்டியதாய்
भविष्यति ஏற்படுகிறது.
हि ஏனென்றால்

राजा அரசன்
यथा எப்படி
कुरुते நடக்கிறானோ ;
प्रजा பிரஜை
तं அதை
अनुवर्तते அனுஷ்டிக்கும்.

एवं बहुविधा वाचो वदन्ति पुरवासिनः । नगरेषु च सर्वेषु राजञ्जनपदेषु च ॥ २० ॥

राजन् " அரசே!
 पुरवासिनः நகரவாசிகள்
 नगरेषु च நகரங்களிலும்
 सर्वेषु எல்லா
 जनपदेषु च நாடுகளிலேயும்

एवं அப்படி
 बहुविधा: இதைப்போன்ற
 वाचः பேச்சுக்களை
 वदन्ति பேசிக்கொள்
 (நகரர்கள்).

तस्यैवं भाषितं श्रुत्वा राघवः परमार्तवत् । उवाच सुहृदः सर्वान्कथमेतन्निवेद्यताम् ॥ २१ ॥

राघवः ஸ்ரீராகவர்
 तस्य அவனுடைய
 एवं இவ்வண்ணமான
 भाषितं மொழிக்கு
 श्रुत्वा செவ்சாய்த்து
 परं அதனால்
 आर्तवत् விசனமுற்றவராகி
 सुहृदः ஸுஹிருத்துக்கள்

सर्वान् எல்லோரையும்
 उवाच இப்படிச் சொல்லி
 एतत् "இதில் [அருளினார் :
 कथं எது
 निवेद्यताम् { அபிப்பிராயமோ
 அது தெரிவிக்கப்
 படட்டும்".

सर्वे तु शिरसा भूमावभिवाद्य प्रणम्य च । प्रत्यूचू राघवं दीनमेवमेतन्न संशयः ॥ २२ ॥

सर्वे எல்லோரும்
 दीनं விசனமுற்றுக்
 கொண்டு
 राघवं ஸ்ரீராகவருக்கு
 शिरसा முடிதாழ்த்தி
 अभिवाद्य வணங்கி
 भूमौ பூமியில் வீழ்ந்து

प्रणम्य ஸாஷ்டாங்கமாய் நம
 ஸ்காரஞ்செய்து
 च பின்னர்
 एवं இப்படி
 प्रत्यूचू: மறுமொழிகுறினர்
 एतत् "இதில் [கள் :
 संशयः அவநம்பிக்கை
 न तु எங்களுக்கில்லை."

श्रुत्वा तु वाक्यं काकुत्स्थः सर्वेषां समुदीरितम् । विसर्जयामास तदा वयस्याञ्छत्रसूदनः ॥

शत्रुसूदनः சத்ருக்களுக்கு
 ஹிதத்தையேபுரியும்
 काकुत्स्थः காகுத்தர்
 तु இவ்விஷயத்தில்
 सर्वेषां எல்லாருடைய
 समुदीरितं தீர்மானமெனக் கூறப்
 பட்ட

वाक्यं மொழிக்கு
 श्रुत्वा திருச்செவ்சாய்த்து
 तदा அதன்மேல்
 वयस्यान् சபையோர்களை
 विसर्जयामास விடைகொடுத்தனுப்
 பினர்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकिये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे त्रिचत्वारिंशः सर्गः ॥



चतुश्चत्वारिंशः सर्गः—நாற்பத்துநாலாவது ஸர்க்கம். ॥ ४४ ॥

लक्ष्मणाद्यानयनम्—லக்ஷ்மணர் முதலியவர்களை வரவழைப்பது.

विसृज्य तु सुहृद्रीं बुद्ध्या निश्चित्य राघवः । समीपे द्वाःस्थमासीनमिदं वचनमब्रवीत् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------|-----------|-------------------------------|
| राघवः | ஸ்ரீராகவர் | निश्चित्य | ஒருதீர்மானத்தைச் செய்துகொண்டு |
| सुहृद्रीं | அடியார்கூட்டத்தை | समीपे | அருகாமையில் |
| विसृज्य | விடைகொடுத்தனுப்பிவிட்டு | आसीं | இருக்கின்ற |
| | | द्वाःस्थं | வாயிற்காப்போனுக்கு |
| बुद्ध्या | கலவரமற்ற மனதைக் கொண்டு | इदं | இந்த |
| | | वचनं | ஆக்கினையை |
| तु | இவ்விஷயத்தில் | अब्रवीत् | நியமித்தருளினார் : |

शीघ्रमानय सौमित्रिं लक्ष्मणं शुभलक्षणम् । भरतं च महाभागं शत्रुघ्नमपराजितम् ॥ २ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------|-------------|----------------|
| सौमित्रिं | “ஸ=மித்ரையின் புதல்வனாகிய | भरतं | பரதனையும் |
| लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணனையும் | अपराजितं | அஜய்புனை |
| महाभागं | மஹாப்பிரசுத்தனும் | शत्रुघ्नं च | சத்ருக்ளனையும் |
| शुभलक्षणं | புண்பசாலியுமாகிய | शीघ्रं | உடனே |
| | | आनय | அழைத்து வா ”. |

रामस्य वचनं श्रुत्वा द्वाःस्थो मूर्ध्नि कृताञ्जलिः । लक्ष्मणस्य गृहं गत्वा प्रविशेशनिवारितः ॥

| | | | |
|------------|------------------|------------|-----------------------|
| द्वाःस्थः | வாயிற்காப்போன் | गत्वा | புறப்பட்டு |
| मूर्ध्नि | தலைமேல் | लक्ष्मणस्य | லக்ஷ்மணருடைய |
| कृताञ्जलिः | கைகூப்பிக்கொண்டு | गृहं | மாளிகையினுள் |
| रामस्य | ஸ்ரீராமருடைய | अनिवारितः | தடுப்பவரொருவரு மின்றி |
| वचनं | கட்டளையை | प्रविशेश | போய்ச்சேர்ந்தான். |
| श्रुत्वा | சிரமேற்கொண்டு | | |

उवाच सुमहात्मानं वर्धयित्वा कृताञ्जलिः । द्रष्टुमिच्छति राजा त्वां गम्यतां तत्र मा चिरम् ॥

| | | | |
|-------------|--|----------|--------------------------------|
| सुमहात्मानं | { எவராலும் கொண் டாடப்பட்ட சித்தி பெற்றவரிடம் } | त्वां | தேவரீரை |
| कृताञ्जलिः | | द्रष्टुं | பார்க்க |
| वर्धयित्वा | { அஞ்சலிஹஸ்தனாகி ‘ஜயவிஜயிபவ’ என்று முதலில் கூறிவிட்டு } | इच्छति | திருவுள்ளங்கொண்டிருக்கிறார். |
| उवाच | இப்படி விண்ணப்பம் செய்தான் : | तत्र | இதில் |
| राजा | “மன்னர் | मा चिरं | காலதாமதம் செய்யத் தக்கதில்லை ; |
| | | गम्यताम् | எழுந்தருள வேண்டும் ”. |

வாடம்த்யேவ சௌம்திரி: ஶ்ருத்வா ரா஑வசாசனம் | ஶாட்வத்ரதயாருஹ ரா஑வஸ்ய நிவేశனம் || ௫ ||

| | | | |
|-------------|----------------------|----------|--------------------|
| சௌம்திரி: | லக்ஷ்மணர் | ஹி | என்று சொல்லிவிட்டு |
| ரா஑வசாசனம் | ஸ்ரீராகவரது சாஸனத்தை | ரயம் | ரதத்தில் |
| | | ஶரூஹ | ஏறிக்கொண்டு |
| ஶ்ருத்வா எவ | கேட்ட சூக்ஷணமே | ரா஑வஸ்ய | ஸ்ரீராகவருடைய |
| வாடம் | 'ஸரி ; நீ போ' | நிவేశனம் | மாளிகைக்கு |
| | | ஶாட்வத் | விரைந்துசென்றார். |

ஶயான்த் லக்ஷ்மணம் ஹ்ருவா ட்வா:ஸ்த்யௌ ஶரதமந்திகாத்த | உவாச ஶரதத் தத்ர வர்஑யித்வா க்ருதாஶ்ஜலி: ||
 விநயாவநதௌ ஶ்ருத்வா ராஜா த்வா் ட்ரஶ்டுமிசுசுதி | ஶரதஸ்து வச: ஶ்ருத்வா ட்வா:ஸ்த்யாட்வாமஸமீரி 3ம் ||
 உத்யஶாடாஸநாதூர்ணீ ஶட்வா஑மேவ யயௌ வலி | ஹ்ருவா ஶயான்த் ஶரதத் த்வரமாண: க்ருதாஶ்ஜலி: ||
 ஶந்ரு஑்ரஶவநம் ஑த்வா ததௌ வாக்யமதுவாச ஹ | ஶஹ்ராகசுசு ர஑ுஸ்த்ரேஶ்ட ராஜா த்வா் ட்ரஶ்டுமிசுசுதி || 9 ||
 ஑தௌ ஹி லக்ஷ்மண: ஶூர்வ ஶரதசுசு ஶஹாயசா: | ஶ்ருத்வா து வசநம் தஸ்ய ஶந்ரு஑்ர: ஶரமாஸநாத் ||
 ஶிரஸா ஑ரணீ ஶ்ராய ஶ்ரயயௌ யத்ர ரா஑வ: || 10 ||

| | | | |
|--------------------|---------------------------------------|--------------|-----------------------------|
| ட்வா:ஸ்த்ய: | வாயிந்காப்போன் | வச: | நியமனத்தை |
| லக்ஷ்மணம் | லக்ஷ்மணரை | ட்வா:ஸ்த்யத் | வாயிந் காப்போனிடமிருந்து |
| ஶயான்தம் | புறப்பட்டுப்போய் விட்டவராக | ஶ்ருத்வா து | கேட்டசூக்ஷணமே |
| ஹ்ருவா | கண்டு | ஶாஸநாத் | ஶூஸனத்தினின்று |
| ஶரதம் | பரதனின் | உத்யஶாத் | எழுந்திருந்தார். |
| ஶந்திகாத் | ஸந்நிதிக்கு வந்து சேர்ந்து | ஶட்வாய் எவ | கால்நடையாகவே |
| தஹ | அவ்விடத்தில் | தூர் | வேகமாய் |
| ஶரதம் | பரதரை | யயௌ | நடந்துசென்றார். |
| க்ருதாஶ்ஜலி: | கைகடப்பிக்கொண்டு | வலி | சேவகன் |
| வர்஑யித்வா | 'ஶ்யவிஶ்யயீபவ' என்று முதலில் வாழ்த்தி | ஶரதம் | பரதரை |
| விநயாவநத: ஶ்ருத்வா | மரியாதையுடன் நமஸ் காரம் செய்பவனாக | ஶயான்தம் | புறப்பட்டுப்போய் விட்டவராக |
| உவாச | இப்படி விண்ணப்பம் செய்தான்: | ஹ்ருவா | கண்டு |
| ராஜா | "மன்னர் | த்வரமாண: | அதிவேகமாய் நடப்பவனாய் |
| த்வா் | தேவரீரை | தத: | உடனே |
| ஶ்ரு஑் | பார்க்க | ஶஹு஑்ரஶவநம் | சத்ருக்களனது மாளிகைக்கு |
| ஶசுசுதி | திருவுள்ளங்கொண்டிருக்கார்." | ராஜா | வந்துசேர்ந்து |
| ஶரத: | பரதர் | வாக்யம் | விஷயத்தை |
| ராமஸமீரிதம் | ஸ்ரீராமனால் சொல்லியனுப்பப்பட்ட | க்ருதாஶ்ஜலி: | அஞ்சலிஹஸ்தனாகி |
| | | உவாச | இப்படி விண்ணப்பம் செய்தான்: |

| | |
|-------------|--------------------------|
| रघुश्रेष्ठ | “ரகூத்தம! |
| राजा | மன்னர் |
| त्वां | தேவரீரை |
| द्रष्टुं | பார்க்க |
| इच्छति | திருவுள்ளங்கொண்டி |
| एहि | புறப்படும். [ருக்கிரூர். |
| आगच्छ | போய்ச்சேரும். |
| पूर्वं | முதலில் |
| लक्ष्मणः हि | லக்ஷ்மணரும் |
| च | பின்னர் |
| महायशाः | மஹாயசஸ்வியாகிய |
| भरतः | பரதரும் |
| गतः | போய் இருக்கிரூர்கள்.” |

| | |
|-------------|-----------------------------------|
| शत्रुघ्नः | சத்ருக்ஞர் |
| तस्य | அவனது |
| वचनं | சொல்லை |
| श्रुत्वा तु | கேட்டசூக்ஷணமே |
| राघवः | பூரீராகவர் |
| यत्न ह | எவ்விடத்திலேர் அவ் விடத்திற்கே |
| परमासनाव | சிறந்த ஆஸனத்தை விட்டெழுந்து |
| धरणीं | பூமியில் |
| शिरसा | முடிதாழ்த்தி |
| प्राप्य | நமஸ்கரித்து |
| प्रययौ | சென்றார். |

कुमाराणागताञ्छ्रुत्वा चिन्ताव्याकुलितेन्द्रियः । अवाञ्छुखो दीनमना द्वाःस्थं वचनमब्रवीत् ॥

प्रवेश्य कुमारान्स्वं मत्समीपं त्वरान्वितः ।

एतेषु जीवितं महामेते प्राणाः प्रिया मम ॥

दीनमनाः कवलेषु मन्त्रं
தராய்

विद्याः अर्पणमायि
கின்றன”

अवाङ्मुखः { तल्लையத்தொங்கப்
போட்டுக்கொண்டி
ருக்குமவர்

चिन्ता-
व्याकुलितेन्द्रियः } என்று மனோபாவத்
தால் ஒடுக்கிக்கிடக்
கும் கருமேந்திரியங்
களையுடையவராகி

कुमारान् मङ्कलैः
आगतान् वन्तु वीट्टवर्कणाक
शुत्वा कवनीत्तु
एतेषु “இவர்களிடத்தில்
मम एतनु
जीवितं உயிரிருக்கிறது.
एते இவர்கள்
प्राणाः உயிர்கள்
महं என்பொருட்டே

द्वाःस्थं वायिल्काப்போனுக்கு
वचनं ஒரு உத்திரவை
अब्रवीत् இப்படி நியமித்தருளி
त्वं “நீ [ஊர்
त्वरान्वितः உடனேசென்றவனாய்
मत्समीपं என்னிடம்
कुमारान् மக்களை
प्रवेश्य அனுப்பிவிடு.”

आज्ञास्तु नरेन्द्रेण कुमाराः शुक्वाससः । प्रह्लाः प्राञ्जलयो भूत्वा विविशुस्ते समाहिताः ॥

शुक्वाससः பரிசுத்தமான வஸ்தி
ரதாரிகளும்
प्रह्लाः சொன்னசொல் மீறி
நடவாதவர்களும்
समाहिताः பக்திமான்களுமாகிய
ते அந்த
कुमाराः இளவரசுகள்
नरेन्द्रेण புருஷோத்தமரால்

तु இவ்விஷயத்தில்
आज्ञाः நியமனம்பெற்றவர்
களாய்
प्राञ्जलयः அஞ்ஜலிஹஸ்தர்
களாய்
भूत्वा ஆகி
विविशुः உள்ளேவந்துசேர்
ந்தார்கள்.

ते तु दृष्ट्वा मुखं तस्य सप्रहं शशिनं यथा । सन्ध्यागतमिवादित्यं प्रभया परिवर्जितम् ॥

| | | | |
|--------|----------------------|------------|-------------------|
| ते | அவர்கள் | सन्ध्यागतं | சந்தியாகாலத்திய |
| तस्य | அவருடைய | प्रभया | ஒளி |
| मुखं | திருமுகமண்டலத்தை | परिवर्जितं | இழந்திருக்கும் |
| तु | இப்பொழுது | आदित्यं | சூர்யனை |
| सप्रहं | ராசுவினால் பிடிக்கப் | इव | போலிருக்கிறதாயும் |
| शशिनं | சந்திரனை [பட்ட | दृष्ट्वा | கவனமாய்பார்த்தார் |
| यथा | போலிருப்பதாயும் | | கள். |

बाष्पपूर्णे च नयने दृष्ट्वा रामस्य धीमतः । हतशोभं यथा पद्मं मुखं वीक्ष्य च तस्य ते ॥

| | | | |
|--------|--------------|---------------|--|
| ते | அவர்கள் | तस्य | அவருடைய |
| धीमतः | திமாலகைய | मुखं च | முகமண்டலத்தையே |
| रामस्य | ஸ்ரீராமருடைய | वीक्ष्य | பார்த்துக்கொண்டு |
| नयने | திருக்கண்களை | बाष्पपूर्णे च | { கண்ணீர் நிறைந்து கலக்கமுற்றிருக்கிற வைகளாகவும் |
| हतशोभं | சோதியிழந்த | | |
| पद्मं | தாமரைமலரை | दृष्ट्वा | கவனித்தார்கள். |
| यथा | போன்ற | | |

ततोऽभिवाद्य त्वरिताः पादौ रामस्य मूर्धभिः । तस्थुः समाहिताः सर्वे रामस्त्वश्रूण्यवर्तयत् ॥

| | | | |
|------------|---|----------|---|
| सर्वे | எல்லோரும் | ततः | அதன்மேல் |
| स्वरिताः | { தாமதத்திற்கு இது ஸமயமில்லையென்று அறிந்தவர்களாய் | समाहिताः | { என்னசொல்லப்போ கிருரோ என்று எதிர் பார்த்துக்கொண்டு |
| | | | |
| रामस्य | ஸ்ரீராமருடைய | रामः तु | ஸ்ரீராமரோவெனில் |
| पादौ | திருவடிகளில் | अश्रूणि | கண்ணீரை |
| मूर्धभिः | முடிதாழ்த்தி நமஸ்கரித்து | अवर्तयत् | பெருக்கினார். |
| अभिवाद्य } | | | |

तान्परिष्वज्य बाहुभ्यामुत्थाय च महाबलः । आसनेष्वासतेत्युत्त्वा ततो वाक्यं जगाद ह ॥

| | | | |
|-----------|------------------------------------|----------|-----------------------------|
| महाबलः | மஹாதைர்யசாலியா கிய அவர் | आसनेषु | ‘ஆஸனங்களில் |
| उत्थाय | எழுந்திருந்து | आसत | உட்காருங்கள்’ |
| तान् | அவர்களை | इति | என்று |
| बाहुभ्यां | இருகைகளாலும் | उक्त्वा | அனுமதி அளித்து விட்டு |
| परिष्वज्य | அணைத்து ஆலிங்க னம் செய்துகொண்டு | ततः | அதன்மேல் |
| च | அதன்மேல் | वाक्यं ह | விஷயத்தையும் |
| | | जगाद | இப்படித் தெரிவித் தார் : |

सर्वे शृणुत भद्रं वो मा कुरुध्वं मनोऽन्यथा । पौराणां मम सीतायां यादृशी वर्तते कथा ॥

| | | | |
|---------|-------------------|----------|--------------------|
| வ: | “உங்களுக்கு | வர்தை | நடைபெறுகிறது என் |
| भद्रं | மங்கள முண்டாகட் | சர்வே | பதை |
| | டும். | மன: | எல்லோரும் |
| पौराणां | பட்டணத்து ஜனங் | कुरुध्वं | மனதில் |
| | களுடைய | अन्यथा | வாங்கிக்கொள்ளும் |
| मम | எண்ணப்பற்றியதும் | मा | கள். |
| सीतायां | சீதைமையப்பற்றியது | शृणुत | வேறுவிஷயத்தில் |
| | மான | | செலுத்தாதிருங்கள். |
| कथा | பேச்சு | | சாவதானமாய்க் |
| यादृशी | என்ன | | கேளுங்கள். |

पौरापवादः सुमहांस्तथा जनपदस्य च । वर्तते मयि वीभत्सा सा मे मर्माणि कुन्तति ॥

| | | | |
|-----------|----------------------|---------|-----------------|
| मयि | “என் விஷயத்தில் | वीभत्सा | காணகடோரமாயிருக் |
| जनपदस्य | ஜனத்தினுடைய | | கின்ற |
| पौरापवादः | லோகாபவாதம் | सा | அது |
| तथा च | நிச்சயமாயே | मे | எனது |
| सुमहान् | மிகப் பிரபலமாய் | मर्माणि | மர்மஸ்தானங்களை |
| वर्तते | சம்பவித்திருக்கிறது. | कुन्तति | அறுக்கின்றது. |

अहं किल कुले जात इक्ष्वाकूणां महात्मनाम् । सीताऽपि सत्कुले जाता जनकानां महात्मनाम् ॥

| | | | |
|--------------|----------------|----------|------------------|
| अहं किल | “நானேவென்றால் | सीता अपि | சீதையோ |
| महामनां | மஹானுபாவர்களான | महामनां | மஹாத்மாக்களான |
| इक्ष्वाकूणां | இக்ஷ்வாகூராக் | जनकानां | ஜனகர் என்பவரின் |
| | களின் | | வம்சத்தார்களுடைய |
| कुठे | குலத்தில் | सत्कुले | புண்ணியபூமியில் |
| जातः | பிறந்தவன்; | जाता | உதித்தவள். |

जानासि त्वं यथा सौम्य दण्डके विजने वने । रावणेन हता सीता स च विध्वंसितो मया ॥
 तत्र मे बुद्धिरुत्पन्ना जनकस्य सुतां प्रति । अत्रोषितामिमां सीतामानयेयं कथं पुरीम् ॥
 प्रत्ययार्थं ततः सीता विवेश ज्वलनं तदा । प्रत्यक्षं तव सौमित्रे देवानां हव्यवाहनः ॥
 अपापां मैथिलीमाह वायुश्चाकाशगोचरः ॥ ७ ॥
 चन्द्रादित्यौ च शंसेते सुराणां सन्निधौ पुरा । ऋषीणां चैव सर्वेषामपापां जनकात्मजाम् ॥
 एवं शुद्धसमाचारा देवगन्धर्वसन्निधौ । लङ्काद्वीपे महेन्द्रेण मम हस्ते निवेशिता ॥ ९ ॥

सौम्य “ அன்புவாய்ந்த
 सौमिले இலக்ஷ்மண,
 एवं நீ
 प्रत्यक्षं பிரத்யக்ஷமாய்
 सीता சிதை
 विजने ஜனஸஞ்சாரமில்லாத
 दण्डके தண்டகமென்கிற
 वने காட்டில்
 रावणेन இராவணனால்
 हता தூக்கிக்கொண்டுபோ
 कப்பட்டார்கள்
 यथा என்பதையும்,
 सः அவன்
 मया என்னால்
 विध्वंसितः च கொல்லப்பட்டா
 नென்பதையும்,
 जनकस्य ஜனகருடைய
 सुतां பெண்ணும்
 भव अव्वிடத்தில்
 उचितां சிலகாலம் வாசம்
 செய்தவளுமான
 इमां இந்த
 सीतां சிதையை
 पुरीं பட்டணத்திற்கு
 कथं எப்படி
 आनयेयं நானழைத்துக்கொ
 ण்டுப்போகலாம் ?
 प्रति என்கிறதான
 बुद्धिः ஆலோசனை
 मे எனக்கு
 तव அப்பொழுது
 शरणा उண்டாயிற்று என்ப
 ततः தையும்,
 सीता அந்தச்சமயத்தில்
 प्रत्ययाथं சிதை
 யாவருக்கும் மெய்ப்
 படுமாறு

उवनं அக்கினியில்
 विवेश பிரவேசித்தாள் என்ப
 தையும்,
 तदा அக்காலத்தில்
 देवानां தேவர்களுக்கு
 हव्यवाहनः { ஹவீஸுகளைக்கொ
 ण்டுபோகும் அக்
 णிபகவானும்
 मैथिली மைதிலியை
 भरापां நிர்நோஷியென
 भाह கொண்டாடினார் என
 பதையும்,
 आकाशगोचरः ஆகாசவாசியாகிய
 वायुः च வாயுபகவான் அப்படி
 த்தானென்றதையும்,
 सुराणां च தேவர்களுடையவும்
 ऋषीणां एव எல்லா ரிஷிகளுடைய
 வும்
 सन्निधौ முன்னிலையில்
 जन भ्रातृणां ஜனகரின் திருமகளை
 भपापां நிர்நோஷியென
 चन्द्रादिस्यै च சந்திரனும் சூரியனும்
 शंसते புகழ்ந்துகொண்டாடி
 ணர்கள் என்பதையும்,
 लङ्काश्रीपे லங்கைத்தீவில்
 पुरा இவைகளைத்தவிர
 मम எனக்கும்
 तव உனக்கும்
 हस्ते மெய்ப்பிக்கும் விஷ
 யத்தில்
 देवगर्भस्यै च देवौ தேவகந்தர்வர்கள்
 முன்னிலையில்
 महन्द्रेण மஹேந்திரனால்
 एवं இப்படி
 शुद्ध 1माचारा களங்கமில்லாத கற்
 புடையவளாய்
 निवेशिता निरூபிக்கப்பட்டா
 ளென்பதையும்
 जानाति அறிவாய்.

अन्तरात्मा च मे वेत्ति सीतां शुद्धां यशस्विनीम् । ततो गृहीत्वा वैदेहीमगो ध्यामहमागतः ॥

मे अन्तरात्मा " எனது உள்ளம்
सीतां சீதையை
यशस्विनीं ஸர்வோத்திருந்த
மாண
शुद्धां புண்பாத்தமாவென
वेत्ति அறியும்.

अयं तु मे महान्वादः शोकश्च हृति वर्तते । पौरापवादः सुमहांस्तथा जनपदस्य च ॥११॥

जनपदस्य " ஜனத்தினுடைய
पौरापवादः च லோகாபவாதமோ
सुमहान् மிகப் பிரபலமாயிருக்கிறது.
तथा च அப்படியிருப்பதால்
தான்

मे எனது

अकीर्तिर्यस्य गीयेत लोके भूतस्य कस्यचित् । पतत्येवाधमाँल्लोकान्यावच्छब्दः प्रकीर्त्यते ॥

यस्य " எந்த
कस्य चित् ஒரு
भूतस्य மாணிடனைப்பற்றி
अकीर्तिः शब्दः வசைச் சொல்
गीयेत சொல்லப்படுகிறதோ
लोके உலகில்

अकीर्तिर्निन्यते देवैः कीर्तिलोकेषु पूज्यते । कीर्त्यं तु समारम्भः सर्वेषां सुमहात्मनाम् ॥

अकीर्तिः " அபகீர்த்தியானது
निन्यते இகழப்படுகின்றது.
कीर्तिः கீர்த்தி
देवैः तु தேவர்களாலும்
पूज्यते புகழ்ந்து கொண்டாடப்படுகிறது.

अप्यहं जीवितं जह्यां युष्मान्वा पुरुषर्षभाः । अपवादभयाञ्जीतः किं पुनर्जनकात्मजाम् ॥

पुरुषर्षभाः " புருஷோத்தமர்களை !

अपवादभयात् { அபவாதத்தால்வரும்
केतु தெரிந்திருக்கின்றமையால்

भीतः अपि கேடுக்குப் பாத்திரவா
अहं எனக்கிட்டேனென்றால்
நான்

ततः च ஆனதுபற்றியே
वैदेहीं வைத்தேறியை
गृहीत्वा அழைத்துக்கொண்டு
अयोध्यां அயோத்திக்கு
अहं நான்
आगतः வந்தேன்.

हृदि மனதில்
अयं இந்த
वादः வதந்தி
महान् எல்லைற்ற
शो ङः च வருத்தமுண்டாக்
कुवाप
वर्तते பாதிக்கிறது.

प्रकीर्त्यते வழங்கத்தலைப்படு
सः அவன் [கிறதோ
यावत् एव இதே காரணமாய்
अधमान् நீச
लोकान् உலகங்களில்
पतति விழுந்துவிடுகிறான்.

लोकेषु உலகங்களில்
सर्वेषां ஸகல
सुमहात्मनां நல்ல மஹாத்மாக்களு
समारम्भः பிரவிருத்தி [டைய
कीर्त्यैस् புகழ் பெறுவதற்கே
யாம்.

जीवितं वा உயிரை என்றாலும்
युष्मान् वा உங்களையுங்கட
जह्यां ஒழித்துவிடுவேன்.
जनकात्मजां ஜனகரின் புதல்வி

किं पुनः விடையத்தில்
योसिक्कவேண்டியது
என்னவிருக்கிறது ?

तस्माद्भवन्तः पश्यन्तु पतितं शोकसागरे । न हि पश्याम्यहं भूतं किञ्चिद्दुःखमतोऽधिकम् ॥

| | | | |
|----------|--------------------|----------|-----------------|
| तस्मात् | “ஆதலால் | भूतं | இப்பொழுது உண் |
| शोकसागरे | துயர்க்கடலில் | पतितं | டாயிருக்கிற |
| अहं | நான் | दुःखं | கொடிய |
| पश्यामि | விழுந்துபடுகிறேன். | अतः | துக்கத்தை |
| हि | ஆகையால் | अधिकं | காட்டிலும் |
| भवन्तः | நீங்கள் | किञ्चित् | அதிகமானதும் |
| पश्यन्तु | உள்ளபடி அறிவீர் | न | எதொன்றும் |
| | களாக. | | உண்டாகமாட்டாது. |

श्वस्त्वं प्रभाते सौमित्रे सुपन्नाधिष्ठितं रथम् । आरुह्य सीतामारोप्य विषयान्ते समुत्सृज ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------|-----------|---------------------|
| सौमित्रे | “இலக்சுத்மண, | आरुह्य | ஏறிக்கொண்டு |
| त्वं | நீ | सीतां | சீதையை |
| श्वः | நாவளை | आरोप्य | ஏற்றிவைத்துக் |
| प्रभाते | உதயகாலத்தில் | | கொண்டு |
| सुपन्नाधिष्ठितं | சுமந்திரரை சாரதியர் | विषयान्ते | ராஜ்யத்தின் எல்லை |
| | கக்கொண்ட | | ஓரத்தில் |
| रथं | ரதத்தில் | समुत्सृज | தனியாய் விட்டுவிடு. |

गङ्गायास्तु परे पारे वाल्मीकेस्तु महात्मनः । आश्रमो दिव्यसङ्काशस्तमसातीरमाश्रितः ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|-------------|---------------|
| महात्मनः | “மஹாத்மாவாகிய | गङ्गायाः | கங்காநதியினது |
| वाल्मीकेः | வால்மீகிமுனிவரது | परे | அப்புறத்திய |
| दिव्यसङ्काशाः | சுவர்க்கம்போலிருக் | पारे तु | கரையிலும் |
| | கிறதான | तमसातीरं तु | தமஸாநதியின் |
| आश्रमः | ஆசிரமமானது | आश्रितः | தீரத்திலும் |
| | | | இருக்கிறது. |

तत्रैनां विजने देशे विसृज्य रघुनन्दन । शीघ्रमागच्छ सौमित्रे कुरुष्व वचनं मम ॥ १८ ॥

| | | | |
|----------|----------------------|---------|------------------|
| रघुनन्दन | “ரகுவம்சத்தில் பிறந் | विसृज्य | விட்டுவிட்டு |
| | த பிள்ளையாகிய | शीघ्रं | உடனேயே |
| सौमित्रे | லக்சுத்மண! | आगच्छ | நீ திரும்பிவருக. |
| तत्र | அதில் | मम | எனது |
| एनां | இவ்வளை | वचनं | நியமனத்தை |
| विजने | ஜனஸஞ்சாரமில்லாத | कुरुष्व | செய்துமுடி. |
| देशे | பிரதேசத்தில் | | |

न चास्मि प्रतिवक्तव्यः सीतां प्रति कथञ्चन ।
तस्माच्च गच्छ सौमित्रे नात्र कार्या विचारणा

॥ १९ ॥

| | |
|--|----------------------------------|
| अत्र | “இந்த |
| कार्या | காரியமானது |
| न विचारणा | ஆலோசிக்கவேண்டிய தாயில்லை. |
| सीतां प्रति | சீதையைப்பற்றி |
| कथञ्चन | எதுவாரிருந்தாலும் |
| अप्रीतिर्हि परा मङ्गं त्वयैतत्प्रतिवारिते । शापिता हि मया यूयं शुजाभ्यां जीवितेन च ॥ | |
| मया | “என்னால் |
| त्वया | உன்மேலும் |
| शुजाभ्यां | புஜங்கள்மேலும் |
| जीवितेन च | உயிர்மேலும் |
| यूयं | நீங்கள் |
| शापिताः हि | ஆணையிட்டு சொல்லப் பட்டார்கள். |

ये मां वाक्यान्तरे ब्रूयुरनुनेतुं कथञ्चन ।

| | |
|-------------|--------------------------------------|
| वाक्यान्तरे | “இந்த ஆக்கினை |
| मां | என்னை [விஷயத்தில் |
| ये | எவர்கள் |
| कथञ्चन | எப்படியாவது |
| अनुनेतुं | நல்லார் தைதெசொல்லி சமாதானப்படுத்த |

मानयन्तु भवन्तो मां यदि मच्छासने स्थिताः । इतोऽथ नीयतां सीता कुहूष्व वचनं मम ॥

| | |
|----------|-------------------|
| भवन्तः | “நீங்கள் |
| मच्छासने | என்னுக்கினையில் |
| स्थिताः | பக்தியுடையவர்கள் |
| यदि | என்கிறபகூதத்தில் |
| मां | என்னை |
| मानयन्तु | பெருமைப்படுத்துங் |
| सीता | சீதை [கள்; |

पूर्वमुक्तोऽहमनया गङ्गातीरेऽहमाश्रमान् । पश्येमिति तस्याश्च

| | |
|-----------|----------------------|
| अहं | “நான் |
| पूर्वं | ஏற்கனவே |
| अनया | இவளால் |
| इति | இப்படி |
| उक्तः | பிரார்த்திக்கப்பட்டி |
| अहं | ‘நான் [ருக்கின்றேன்; |
| गङ्गातीरे | கங்கைக்கரையில் |

| | |
|-----------------|---|
| प्रतिवक्तव्यः च | மறுமொழிக்குச்செனி கொடுக்கிறவனாகவும் நானில்லை. |
| न अस्मि | லகூழ்மண, |
| सौमित्रे | ஆகையால் |
| तस्मात् | நீ |
| एवं | சொன்னபடி முடி. |
| गच्छ | |
| एतत् | இப்பொழுது |
| प्रिवारिते | மறுத்து எதையும் மொழியும்பகூதத்தில் |
| मङ्गं हि | எனக்கே |
| परा | அளவுகடந்த |
| अप्रीतिः | பிரதிகூலம் செய்த தாரும. |

अहिता नाम ते नित्यं मदभीष्टविधातनात् ॥

| | |
|------------------|--------------------------------------|
| ब्रूयुः | மன்றாடத்தலைப்படு |
| ते | அவர்கள் [கிறார்களோ |
| मदभीष्टविधातनात् | என் மனோதத்திற்கு இடையூறுசெய்வதால் |
| नित्यं | சாசுவதமான |
| अहिताः नाम | பகைவர்களே. |

| | |
|---------|----------------------------------|
| अथ | இப்பொழுதே |
| इतः | இங்கிருந்து |
| नीयतां | அழைத்துக்கொண் டுபோகப்பட்டும். |
| मम | எனது |
| वचनं | நியமனத்தை |
| कुहूष्व | செய்துமுடி. |

कामः संवर्यतामयम् ॥

| | |
|------------|---------------------------------|
| आश्रमान् | ஆசிராமங்களை |
| पश्येयं | பார்க்கவேண்டு |
| तस्याः | அவளது [கிறேன்; |
| अयं | இந்த |
| कामः | மனோதபானது |
| संवर्यताम् | பூர்த்திசெய்துவிடப் பட்டும். |

एवमुक्त्वा तु काकुत्स्थो बाष्पेग पिहिताननः । प्रविवेश स धर्मात्मा भ्रातृभिः परिवारितः ॥

| | | | |
|------------|---------------|-----------|----------------------|
| ச: | அந்த | परिवारितः | சூழ்ந்திருப்பவராய் |
| धर्मात्मा | தருமா த்மாவான | तु | இவ்விஷயத்தில் |
| काकुत्स्थः | காகுத்தர் | बाष्पेण | கண்ணீரால் |
| एवं | இவ்வண்ணமாய் | रिहिताननः | நனைந்திருக்கும் திரு |
| उक्त्वा | நியமித்தருளி | | முகமுடையவராய் |
| भ्रातृभिः | ஸகோதரர்களோடு | प्रवेश | விளங்கினார். |

इत्यर्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे पञ्चत्वारिंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22513



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 1789

षट्चत्वारिंशः सर्गः—நாற்பத்தாறாவது ஸர்க்கம். ॥ ४६ ॥

सीताया गङ्गातीरनयनम्—ஸீதையை கங்கக்கரைக்கு அழைத்துச்செல்வது.

ततो रजन्यां व्युष्टायां लक्ष्मणो दीनचेतनः । सुमन्त्रमब्रवीद्वाक्यं मुखेन परिशुष्यता ॥१॥

| | | | |
|-------------|-----------------|------------|--------------------|
| ततः | அப்பொழுது | परिशुष्यता | வாடிய |
| रजन्यां | இரவு | मुखेन | முகத்தோடு |
| व्युष्टायां | கழிந்ததும் | सुमन्त्रं | சுமந்திருக்கு |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | वाक्यं | இந்த ஆக்கினையை |
| दीनचेतनः | விசனமடைந்தவராய் | अब्रवीत् | நியமித்தருளினார் : |

सारथे तुरगाञ्छीघ्रं योजयस्व रथोत्तमे । स्वास्तीर्णं राजभवनात्सीतायाश्चासनं कुरु ॥

| | | | |
|----------------|------------------|--------------|----------------------|
| सारथे | “ஹே சாரதே! | राजभवनात् | அரசரது அரண்மனை |
| रथोत्तमे | சிறந்த ரதத்தில் | | யிவிரந்து |
| तुरगान् | குதிரைகளை | स्वास्तीर्णं | நன்றாய் அலங்கரிக்கப் |
| शीघ्रं योजयस्व | உடனெ பூட்டித் | | பட்டதாயிருக்கின்ற |
| | தயார்செய்யும்; | आसनं च | ஒரு ஆசனத்தையும் |
| सीतायाः | சீதாதேவியாருக்கு | कुरु | எடுத்துவைக்கும். |

सीता हि राजवचनादाश्रमं पुण्यकर्मणाम् । मया नेया महर्षीणां शीघ्रमानीयतां रथः ॥

| | | | |
|--------------|------------------|----------|---------------------|
| पुण्यकर्मणां | “புண்யாத்மாக்களா | मया | என்னால் |
| | கிய | नेया | அழைத்துக்கொண் |
| महर्षीणां | மஹர்ஷிகளுடைய | | டுப்போகப்படுகிறார். |
| आश्रमं | ஆசிரமத்திற்கு | रथः | இரதமானது |
| राजवचनात् हि | மன்னரது ஆக்கினை | शीघ्रं | சீக்கிரமாகவே |
| | யாலேயே | आनीयताम् | கொண்டுவரப்பட்ட |
| सीता | சீதாபிராட்டியார் | | டும். |

सुमन्त्रस्तु तथेत्युक्त्वा युक्तं परमवाजिभिः । रथं सुरचिरप्रख्यं स्वास्तीर्णं सुखशययया ॥
आनीयोवाच सौमित्रिं मित्राणां मानवर्धनम् । रथोऽयं समनुप्राप्तो यत्कार्यं क्रियतां प्रभो ॥

| | | | |
|---------------------------------------|--|-------------------------------------|--|
| सुमन्त्रः तु तथा | சுமந்திரரும் “சரி, அப்படியே செட்கிறேன்” | आनीय मित्राणां मानवर्धनं | கொண்டு வந்து நிறுத்தி மித்திரர்களுடைய இஷ்டப்படியே நடக்கும் |
| इति उक्त्वा | என்று சொல்லிவிட்டு | सौमित्रिं उवाच | லக்த்மணரிடம் இப்படித்தொழிவித் தார்: |
| परमवाजिभिः युक्तं सुरचिरप्रख्यं | சிறந்த குதிரைகளால் பூட்டப்பெற்றதும் மிக அழகு வாய்ந்த தும் | प्रभो अयं रथः समनुप्राप्तः | “பிரபுவே! இதோ ரதமானது சித்தமாய் வந்திருக் கின்றது. |
| सुखशययया | மிருதுவான படுக்கை யால் | कार्यं यत् क्रियताम् | திருவுள்ளம் எதுவோ அப்படியே செய்யலாம்.” |
| स्वास्तीर्णं | மிக்க அழகாய் அலன் கரிக்கப்பட்டு விளங் குகிறதமான ரதத்தை | | |
| रथं | | | |

एवमुक्तः सुमन्त्रेण राजवेश्मनि लक्ष्मणः । प्रविश्य सीतामासाद्य व्याजहार नरर्षभः ॥

| | | | |
|----------------------------|--|---|--|
| सुमन्त्रेण एवं उक्तः | சுமந்திரரால் இவ்வண்ணமாய் சொல்லியதற்குச் செவிசாய்த்த | राजवेश्मनि प्रविश्य सीतां आसाद्य व्याजहार | மன்னரது அரண்ம புகுந்து [னையில் சீதாதேவியாரை கண்டு இப்படி விண்ணப்பம் செய்தார்: |
| नरर्षभः लक्ष्मणः | புருஷோத்தமாகிய லக்த்மணர் | | |

त्वया किलैष नृपतिर्वै वै याचितः प्रभुः । नृपेण च प्रतिज्ञातमाज्ञप्तश्चाश्रमं प्रति ॥ ७ ॥

| | | | |
|--|--|--|--|
| एषः प्रभुः नृपतिः त्वया आश्रमं प्रति वरं | “இந்த சர்வேசுவரராகிய மன்னர் தேவரீரால் ஆசிரமத்திற்கு போகும்விஷயத்தில்தான் மனோரதத்தை | आज्ञप्तः वै याचितः च नृपेण प्रतिज्ञातं च किल | அறிவிக்கப்பட்டவரா கவும் வேண்டிக்கொள்ளப் பட்டவராகவும் ஆகி மன்னரால் [றார். அனுமதித்தந்தருளப் பட்டதாகவும் தெரியவருகிறது. |
|--|--|--|--|

गङ्गातीरे मया देवी ऋषीणामाश्रमाञ्छुभान्। शीघ्रं गत्वा तु वैदेहि शासनात्पार्थिवस्य नः॥
अरण्ये मुनिभिर्जुष्टे अवनेया भविष्यसि ॥ ८ ॥

வெஹி தேவியாரே, இவ்விஷயத்தில் நமது மன்னவரது நியமனத்தால் கங்கைக்கரையில் ரிஷிகளுடைய புண்ணிய ஆசிராமங்களுக்கு

மயா ஶீघ्रं गत्वा मुनिभिः जुष्टे अरण्ये अवनेया भविष्यसि என்தோடு இப்பொழுது எழுந்தருளி, முனிவர்களால் வலிக்கப்பட்ட அரண்யத்தினுள் அழைத்துக்கொண்டு போகப்பட்டவராக ஆகுவீராக."

एवमुक्त्वा तु वैदेही लक्ष्मणेन महात्मना । प्रहर्षमतुलं लेभे गमनं चाप्यरोचयत् ॥ ९ ॥

மஹாத்மவாகிய லக்ஷ்மணரால் இவ்வண்ணமாய் சொல்லப்பட்டதற்கு திருச்செவியாய்த் த வைதேஹியார் அத்தயந்த

प्रहर्षं लेभे भपि तु गमनं च अरोचयत् ஸந்தோஷத்தை அடைந்தார். அன்றியும் உடனேயே பிரயாணமாகவும் திருவுள்ளங்கொண்டார்.

वासांसि च महार्हाणि रत्नानि विविधानि च । गृहीत्वा तानि वैदेही गमनायोपचक्रमे ॥

வெஹி தான் விவிதானி மஹர்ஹாணி ரத்னானி ச ஆபரணங்களையும்

वासांसि च गृहीत्वा गमनाय उपचक्रमे ஆடைகளையும் எடுத்துக்கொண்டு பிரயாணத்திற்கு உபசகரம்.

इमानि मुनिपत्नीनां दास्याम्याभरणान्यहम् । वस्त्राणि च महार्हाणि धनानि विविधानि च ॥
सौमित्रिस्तु तथेत्युत्त्वा रथमारोप्य मैथिलीम् । प्रययौ शीघ्रतुरगै रामस्याज्ञामनुस्मरन् ॥

ராமசு ஶ்ரீராமபிரானது நியமனத்தையே நினைத்துக்கொண்டிருக்கும் இலக்ஷ்மணர் இவ்விஷயத்தில் "நான்

इमानि विविधानि महार्हाणि आभरणानि धनानि वस्त्राणि च मुनिपत्नीनां இந்த விவிதானி மஹர்ஹாணி அபரணங்களையும் பரிசுகளையும் ஆடைகளையும் முனிபத்திகளுக்கு

| | | | |
|----------|----------------------------------|-------------|--|
| दास्यामि | தானம் செய்யப்போகிறேன்” என்பதற்கு | शीघ्रतुरगैः | வேகமாய்ச் செல்லும் |
| तथा इति | ‘திருவுள்ளப்படி செய்க’ என்று | रथं | குதிரைகள் பூட்டிய |
| उक्त्वा | சொல்லிவிட்டு | आरोप्य | ரதத்தில் |
| मैथिलीं | மைதிலியாரை | प्रययौ | எழுந்தருளப்பண்ணிக்கொண்டு பிரயாணமானார். |

अब्रवीच्च तदा सीता लक्ष्मणं लक्ष्मिवर्धनम् । अशुभानि बहून्वेव पश्यामि रघुनन्दन ॥

| | | | |
|---------------|-----------------------------------|--------------|---------------------|
| तदा | அந்தப் பிரஸக்தியில் | अबवीच | இப்படி அறிவித்தாள்: |
| सीता | சிதாபிராட்டியார் | रघु नन्दन | “ரகுந்தன, |
| लक्ष्मिवर्धनं | லக்ஷ்மியின் ஆதரவு பெற்றுவிளங்கும் | बहूनि | பல |
| लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரைப் பார்த்து | अशुमानि एव च | அபசகுனங்களுடைய |
| | | पश्यामि | நான் காண்கின்றேன். |

नयनं मे स्फुरत्यद्य गात्रोत्कम्पश्च जायते । हृदयं चैव सौमित्रे अस्वस्थमिव लक्षये ॥

| | | | |
|-----------------|-------------------------|-------------|----------------------|
| सौमित्रे | “ஹே செளமீத்ரே! | जाये | இருக்கின்றது. |
| अद्य | இப்பொழுது | हृदयं एव | உள்ளமும் |
| मे | எனது | अस्वस्थं इव | { நிலைகொள்ளாமல் |
| नयनं च | வலது கண்ணும் | लक्षये | { கலக்கமுற்றிருக்கிற |
| स्फुरति | துடிக்கின்றது. | | { தாகவே |
| गात्रोत्कम्पः च | உடல் நடுக்கமுற்ற தாயும் | | காண்கிறேன். |

औत्सुक्यं परमं चापि अधृतिश्च परा मम । शून्यामेव च पश्यामि पृथिवीं पृथुलोचन ॥

| | | | |
|-------------|--|------------|----------------------------------|
| पृथुलोचन | { “புத்திசாதூர்யத்தால் விளங்கச்சொல்லக் கூடியவரே, | अधृतिः च | க்லேசமும் |
| मम | எனக்கு | परः | அதிக்கமாயிருக்கிறது. |
| औत्सुक्यं च | ஆசையும் | अपि | அன்றியும் |
| परमं | அதிக்கமாயிருக்கிறது. | पृथिवीं च | பூமியையும் |
| | | शून्यां एव | துன்பப்பட்டுக்கொண்டிருக்கிறதாகவே |
| | | प.यामि | நான் எண்ணுகிறேன். |

अपि स्वस्ति भवेत्तस्य भ्रातृस्ते भ्रातृवत्सल । श्वश्रूणां चैव मे वीर सर्वासामविशेषतः ॥ पुरे जनपदे चैव कुशलं प्राणिनामपि । इत्यञ्जलिकृता सीता देवता अभययाचत ॥१७॥

| | | | |
|-------------|--------------------|---------|---|
| भ्रातृवत्सल | “பிராதாவால் கொண்டு | स्वस्ति | { யாதொரு வியாதியு |
| | டாடப்பட்ட | भवेत् | { மில்லாத தேஹ |
| वीर | வீரரே! | इति | { சொல்க்கியம் |
| ते | உமக்கு | | { இருத்தல் வேண்டும்” என்று சொல்லிவிட்டு |

| | |
|--------------------|--------------------|
| சீதாபிராட்டியார் | சீதாபிராட்டியார் |
| கைகூப்பிக்கொண்ட | கைகூப்பிக்கொண்ட |
| தேவதைகளை [வளாகி | தேவதைகளை [வளாகி |
| இப்படி யாசித்து வே | இப்படி யாசித்து வே |
| ண்டிக்கொண்டாள்: | ண்டிக்கொண்டாள்: |
| “ அவரது | “ அவரது |
| தமையனாருக்கும் | தமையனாருக்கும் |
| எனது | எனது |

| | |
|------------------|------------------|
| மாமியார்கள் | மாமியார்கள் |
| எல்லோருக்கும் | எல்லோருக்கும் |
| நகரத்திலும் | நகரத்திலும் |
| நாட்டிலும் | நாட்டிலும் |
| ஸகல | ஸகல |
| பிரானிகளுக்கும் | பிரானிகளுக்கும் |
| குறையில்லாதிருத் | குறையில்லாதிருத் |
| தல்வேண்டும்.” | தல்வேண்டும்.” |

लक्ष्मणोऽर्थं तु तं श्रुत्वा शिरसाऽऽवन्ध मैथिलीम् । शिवमित्यब्रवीद्दृष्टो हृदयेन विशुष्यता ॥

| | |
|-----------|--------------------|
| லக்ஷ்மண: | லக்ஷ்மணர் |
| விசுஷ்யதா | விசாரத்தால் தவித் |
| | துக்கொண்டிருக்கும் |
| ஹ்ருதயேந | உள்ளத்தோடு |
| தீ | அந்த |
| அர்த்தம் | மனோபாவத்தை |
| சுரவா | அறிந்து |
| சு | இவ்விஷயத்தில் |

| | |
|----------|--------------------|
| हृष्टः | ஹ்ருதயத்துஷ்டிகொண் |
| | வராகி |
| मैथिलीं | மைதிலியாரை |
| शिरसा | முடிதாழ்த்தி |
| भावन्ध | நமஸ்கரித்து |
| शिवं | ‘தைவானுக்கிரகம் |
| इति | என்று [பெறுவீராக’ |
| अब्रवीत् | சொன்னார். |

ततो वासमुपागम्य गोमतीतीर आश्रमे । प्रभाते पुनरुत्थाय सौमितिः सूतपत्रवीत् ॥१९॥

| | |
|-----------|-----------------|
| சௌமிதி: | சௌமித்திரி |
| கோமதிதீரே | கோமதிதீரத்தில் |
| ஆசிரமே | ஒரு ஆசிரமத்தில் |
| வாசம் | தங்கியிருத்தலை |
| உபாசமய | செய்துவிட்டு |
| பிராந்தே | உதயத்தில் |

| | |
|----------|-------------------|
| पुनः | திரும்பி |
| उत्थाय | எழுந்து |
| ततः | அதன்மேல் |
| सूतं | சாரதிக்கு |
| अब्रवीत् | இப்படி நியமித்தரு |
| | ளினார்: |

योजयस्व रथं शीघ्रपद्य भागीरथीजलम् । शिरसा धारयिष्यामि त्र्यम्बकः पर्वते यथा ॥

| | |
|---------|-------------------|
| உ.உ | “இப்பொழுதே |
| ரதம் | இரதத்தை |
| சீகிரம் | சீக்கிரம் |
| யோஜயஸ்வ | தயார்செய்யும். |
| பர்வதே | ஹிமவத்பர்வதத்தில் |

| | |
|-------------|--------------------|
| त्र्यम्बकः | முக்கண்ணர் |
| यथा | எவ்வண்ணமோ அவ் |
| शिरसा | முடியில் [வண்ணமே |
| भागीरथीजलं | கங்காஜலத்தை |
| धारयिष्यामि | தரிக்கப்போகிறேன்.” |

सोऽश्वान्रज्ज्वाऽथ चतुरो रथे युङ्क्त्वा मनोजवान् ।

आरोहस्वेति वैदेहीं सूतः प्राञ्जलिरब्रवीत्

॥ २१ ॥

| | |
|----------|-------------------|
| चतुरः | மஹாசாமர் த்யசாலி |
| सः सूतः | அந்த சாரதி [யாகிய |
| रथे | இரதத்தில் |
| रज्ज्वा | கயிற்றால் |
| मनोजवान् | மனோவேகமாய்ச் |
| | செல்லவெல்ல |

| | |
|--------------------|--------------------|
| अश्वान् युङ्क्त्वा | குதிரைகளைப் பூட்டி |
| वैदेहीं | வைதேஹியாருக்கு |
| आरोहस्व | ‘ஏறியருளலாம்’ |
| इति | என்று |
| प्राञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ்தாயம் |
| अब्रवीत् | அறிவித்தனர். |

सा तु सूतस्य वचनादारोह रथोत्तमम् । सीता सौमित्रिणा सार्धं सुमन्त्रेण च धीमता ॥
 आससाद् विशालाक्षी गङ्गां पापविनाशिनीम् । अथार्धदिवसं गत्वा भागीरथ्या जलाशयम् ॥
 निरीक्ष्य लक्ष्मणो दीनः प्ररुद महास्वनः ॥ २४ ॥

| | |
|--------------|------------------------------|
| सूतस्य | சாரதியினுடைய |
| वचनाद् तु | சொல்லுகேட்ட உடனே |
| सा | அந்த |
| विशा अक्षी | ஸாசுதா தம்ஹா லக்ஷ்மியாகிய |
| सीता | சீதை |
| धीमता | தீமானான |
| सौमित्रिणा | சௌமித்ரியோடும் |
| सुमन्त्रेण च | சுமந்திராரோடும் |
| सार्धं | கூடவே |
| रथोत्तमं | சிறந்தாதத்தில் |
| आरुह | ஏறிக்கொண்டார். |
| अर्धदिवसं | காலைப்பொழுதில் |

| | |
|--------------|-----------------------------------|
| गत्वा | யாத்திரைசெய்து |
| पापविनाशिनीं | ஸகலபாபங்களையும் போக்கவல்லதாகிய |
| गङ्गां | கங்கைக்கு |
| आससाद् | வந்துசேர்ந்தாள். |
| अथ | அப்பொழுது |
| लक्ष्मणः | இலக்ஷ்மணர் |
| भागीरथ्याः | கங்கையினுடைய |
| जलाशयं | ஜலப்பெருக்கை |
| निरीक्ष्य | கண்ணுற்று |
| दीनः | துயரத்தை உள்ளடக் கமுடியாதவராய் |
| महास्वनः | உரத்தகுரலுடன் |
| प्ररुद | சுதறி அழுதார். |

सीता तु परमायत्ता दृष्ट्वा लक्ष्मणमातुरम् । उवाच वाक्यं धर्मज्ञा किमिदं रयते त्वया ॥

| | |
|-----------|-----------------------------|
| धर्मज्ञा | சகலதருமங்களையு மறிந்த |
| सीता | சீதாபிராட்டியார் |
| लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரை |
| आतुरं | துக்கப்பட்டு அழுகிறவராய் |
| दृष्ट्वा | பார்த்து |
| परमायत्ता | அதிகநயிச்சியமுடைய யவராகி |

| | |
|--------|----------------------------------|
| तु | இதுவிஷயத்தில் |
| वाक्यं | பின் கண்டசொல்லை |
| उवाच | திருவாய்மலர்ந்தரு ளினார்: |
| त्वया | “உம்மால் |
| इदं | இப்பொழுது |
| किं | ஏன் |
| रयते | வாய்விட்டுகதறி அழுப்படுகிறதா? |

जाह्नवीतीरमासाद्य चिराभिलषितं मम । हर्षकाले किमर्थं मां विषादयसि लक्ष्मण ॥२६॥

| | |
|-------------|--------------------------------|
| लक्ष्मण | “ஹே லக்ஷ்மண! |
| मम | என்னால் |
| चिराभिलषितं | வெகுநாளாகக் கோரப்பட்டிருந்த |
| जाह्नवीतीरं | கங்கைக்கரைக்கு |
| आसाद्य | வந்துசேர்ந்து |

| | |
|----------|------------------------------------|
| हर्षकाले | ஸந்துஷ்டியாயிருக் கும்ஸமயத்தில் |
| मां | எனக்கு |
| किमर्थं | ஏன் |
| विषादयसि | விசனத்தை வினாவிக்க கிறீர்? |

नित्यं त्वं रामपाश्वेषु वर्तसे पुरुषर्षभ । कञ्चिद्दिनाकृतस्तेन द्विरात्रं शोकमागतः ॥ २७ ॥

புருஷர்ஷம
உன்
நித்யம்
ராமபாஷ்வேஷு
வர்தசே

“புருஷோத்தம!
நீர்
எப்பொழுதும்
ஸ்ரீராமர் பக்கத்தில்
இருந்துக்கொண்டிரு
ந்தீர்.

द्विरात्रं
विनाकृतः
तेन
शोकं
आगतः
कञ्चित्

இரண்டிரவு
பிருந்திருக்கீர்.
அதனால்
வருத்தத்தை
அடைந்திருக்கிறீரா?
என்ன?

ममापि दयितो रामो जीवितादपि लक्ष्मण । न चाहमेवं शोचामि मैवं त्वं बालिशो भव ॥

லக்ஷ்மண
ராம:
மம ச
ஜீவிதாது அபி
தயித:
அரி
அஹ்

“லக்ஷ்மண!
ஸ்ரீராமர்
எனக்கும்
பிராணனிலும்
பிரியமானவர்.
ஆயினும்
நான்

एव
न शोचामि
त्वं
एवं
बालिशः
मा भव

இப்படி
விசனமுறுகின்றே
னில்லை.
நீர்
இப்படி
குழந்தையாய்
இருக்கலாகாது.

तारयस्व च मां गङ्गां दर्शयस्व च तापसान् ।

ततो मुनिभ्यो दास्यामि वासांस्याभरणानि च

॥ २९ ॥

மா
காங்கா
தாரயஸ்வ
தாபசாந் ச
தர்ஷயஸ்வ

“என்னை
கங்காநதியின்
அக்கரையில் சேர்ப்பி
முனிவர்களுக்கும் [யும்].
தர்சிக்கச்செய்யும்.

ततः
मुनिभ्यः
वासांसि च
आभरणानि च
दास्यामि

அவ்விடத்தில்
நிஷிகளுக்கும்
ஆடைகளையும்
ஆபரணங்களையும்
தானம் செய்கிறேன்.

ततः कृत्वा महर्षीणां यथावदभिवादनम् । तत्र चैकां निशामुष्य यास्यामस्तां पुरीं पुनः ॥

தந
மஹர்ஷீணா
யதாவத்
அபிவாதந்
கூர்வா
புரா

“அவ்விடத்தில்
பஹரிஷிகளுக்கு
விதிமுறைப்படி
நமஸ்காரத்தை
செய்த விட்டு
ஒரு

निशां
उष्य च
ततः
तां
पुरीं
पुनः यास्यामः

இரவு
வஸித்திருந்து
பிறகு
அந்த
நகருக்கு
திரும்பிப்போவோம்.”

तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा प्रमृज्य नयने शुभे । नाधिकानाहयामास लक्ष्मणः परवीरहा ॥

इयं च सज्जा नोश्चेति दाशाः प्राञ्जलयोऽश्रुवन् ॥ ३१ ॥

பரவீரஹ
லக்ஷ்மண:
தஸ்யா:

விஷ்ணுவின்
அம்சமாகிய
லக்ஷ்மணர்
அவளது

तत् वचनं
श्रुत्वा
नयने
शुभे

அந்தத் திருவாக்கை
சிரமேற்கொண்டு
இருகண்களை
துலக்கமாய்

ततस्तीरमुपागम्य भागीरथ्याः स लक्ष्मणः । उवाच मैथिलीं वाक्यं प्राञ्जलिर्बाष्पसंप्लुतः ॥

ச: அந்த
 லக்ஷ்மண: லக்ஷ்மணர்
 भागीरथ्या: கங்கையின் து
 तत: எதிர்
 तीरं கரையை
 उपागम्य அடைந்து

मैथिली மைதிலியாரைப்
 वाक्यं பார்ந்து
 प्राञ्जलि: கண்களில் நீர் ததும்ப
 वाक्यं கைகூப்பிக்கொண்டு
 उवाच பின்கண்ட சொல்லை
 मोழित्तारः மொழிந்தார் :

हृदतं मे महच्छल्यं यस्मादार्येण धीमता ।

अस्मिन्निमित्ते वैदेहि लोकस्य वचनीकृतः

॥ ४ ॥

श्रेयो हि मरणं मेऽद्य मृत्युर्वा यत्परं भवेत् ।

न चास्मिन्नीदृशे कार्ये नियोज्यो लोकनिन्दिते

॥ ५ ॥

वैदेहि “வைதேஹியாரே !
 महत् மஹா கஷ்டமாயிருக்
 किन्तु கின்ற
 शल्यं { மனதை விடாது குக்
 திகொண்டிருக்கும்
 செய்தி
 मे என்னுடைய
 हृदतं { உள்ளத்தில் ஒளித்து
 வைக்கப்பட்டிருக்
 किरतु. கிறது.
 मे எனக்கு
 अद्य இப்பொழுது
 मरणं மரணம்
 श्रेयः वा பெரும் பாக்கியம்
 अल्लवा
 यत् என்கிற பக்ஷத்தில்
 मृत्युः च मரணமும்

परं முடிவாய்
 न भवेत् ஆகாது.
 हि ஏனென்றால்
 धीमता ஸர்வக்ஞராகிய
 आर्येण பூஜ்யரால்
 अस्मिन् இந்த
 ईदृशे இப்படிப்பட்டதாகிய
 लोकनिन्दिते உலகநிந்திதமாகிற
 कार्ये கார்யத்தில்
 नियोज्यः ஆளாக்கப்பட்டிருக்
 यस्मात् அதனால் [கிறேன்.
 अस्मिन् இந்த
 निमित्ते விஷயத்தில்
 लोकस्य உலகத்தாருடைய
 वचनीकृतः { சாச்வதமாயிருக்கும்
 நிந்தனைக்குப் பாத்
 திரையிருக்கிறேன்.

प्रसीद् च न मे पापं कर्तुमर्हसि शोभने । इत्यञ्जलिकृतो भूमौ निवपात स लक्ष्मणः ॥

शोभने “பதிவிறுதாகிரோ
 மணியே !

इति என்று சொல்லிவிட்டு

मे என்னுடைய
 पापं குறையாக
 कर्तुं न अर्हसि திருவுள்ளத்தில்
 கொள்ளலாகாது.
 प्रसीद् என்னை அனுக்
 किराणीत्तनुन्तम्”

स: அந்த
 लक्ष्मणः லக்ஷ்மணர்
 अञ्जलिकृतः च கைகூப்பியவண்ணமே
 भूमौ பூமியில்
 निवपात விழுந்து விட்டார்.

रदन्तं प्राज्ञलिं दृष्ट्वा काङ्क्षन्तं मृत्युमात्मनः । मैथिली भृशसंविशा लक्ष्मणं वाक्यमब्रवीत् ॥

மேதிலி மைதிலியார்
 லக்ஷ்மணரை லக்ஷ்மணரை
 ஆமன: அவருக்கு
 மூய் மரணத்தை
 காங்குஷ்ண்த் கோரியவராய்
 பிராஜ்ஜலி கைகூப்பியவராய்

रदन्तं அழுதுகொண்டிருக்
 दृष्ट्वा பார்ந்து [கிறவராய்
 भृशसंविशा மிகப்பதைக்கும்
 மனத்தனளாகி
 वाक्यं பின்கண்ட சொல்லை
 अब्रवीत् சொன்னார்:

किमिदं नावगच्छामि ब्रूहि तत्त्वेन लक्ष्मण । पश्यामि त्वां न च स्वस्थमपि क्षेमं महीपते: ॥

लक्ष्मण “ஹே லக்ஷ்மண!
 त्वां உம்மை
 स्वयं न च { ஸ்வாநீனத்துடனி
 { ருக்கின்றவராயில்லை
 { யென்பதைமாத்நிரம்
 { நானறிவேன்
 पश्यामि வேறெதுவும் நானறி
 नावगच्छामि யாமலிருக்கிறேன்.

इदं किं இது என்ன?
 महीपते: பஹாராஜருக்கு
 क्षेमं अपि குறையொன்று
 மில்லையே?
 तत्त्वेन உள்ளது உள்ள
 ब्रूहि இயம்புக.

शापितोऽसि नरेन्द्रेण यत्त्वं सन्तापमागतः । तहूया: सन्निधौ मह्यमहमाज्ञापयामि ते । ९ ॥

श्वं “நீர்
 सन्तापं அதிகத்துயரத்தில்
 आगतः முழுக்கிடக்கிரீர்
 यत् என்கிறபடியாலும்
 सन्निधौ { முன்பின் நடந்த விஷ
 { யங்களை யோசிக்
 { கையிலும்
 नरेन्द्रेण புருஷோத்தமரால்
 मह्यं என்னைப்பற்றி

शापितः असि ஆணையிட்டுச் சொல்ல
 ப்பட்டிருக்கின்றீர்.
 तत् அதை
 ब्रूया: விளங்கச் சொல்லிவிட
 ते உமக்கு
 अहं நான்
 आज्ञापयामि இப்பொழுது ஆஞ்
 ஞாபிக்கிறேன்.”

वैदेह्या चोद्यमानस्तु लक्ष्मणो दीनचेतनः । अवाङ्मुखो वाष्पकलं वाक्यमेतदुवाच ह ॥

लक्ष्मण: “லக்ஷ்மணர்
 वैदेह्या வைதேஹியால்
 तु இவ்விஷயத்தில்
 चोद्यमानः மன்றமுடிவேண்டிக்கொ
 எள்பட்டவராய்
 दीनचेतनः சிந்தைகலங்கியவராய்
 कण्ठोत्तरं कर्त्तव्यं கண்ணீர்ப்பெருக்கால்
 वाष्पकलं { வாய்திறந்துபேச
 { முடியாதவராய்

अवाङ्मुखः தலைகுனிந்தவண்ண
 பேயிருந்துகொண்டு
 ह மஹாகஷ்டத்துடன்
 वाक्यं சமாதாரத்தை
 एतत् பின்கண்டவண்ண
 पाय
 उवाच தெரிவித்தார்:

श्रुत्वा परिषदो मध्ये ह्यपवादं सुदारुणम् । पुरे जनपदे चैव त्वत्कृते जनकात्मजे ॥
रामः सन्तप्तहृदयो मां निवेद्य गृहं गतः ॥ ११ ॥

जनकात्मजे “ ஜனகாரின் திரு
மகளே !
त्वत्कृते உம்மைப்பற்றி
पुरे நகரிலும்
जनपदे च நாட்டிலும்
सुदारुणं கர்ணகடோரமான
अपवादं அபவாதச்சொல்
-ஆக்கு
परिषदः சபையின்
मध्ये நடுவில்

श्रुत्वा திருச்செவியாய்த்த
रामः ஸ்ரீராமர்
सन्तप्तहृदयः பற்றி எரியும் உள்ள
முடையவரானார்.
एव தத்க்ஷணமே
मां என்னை
निवेद्य { எல்லாவற்றிற்கும்
பொறுப்புக்காட்டி
விட்டு
गृहं हि மாளிகையிலேயே
गतः இருந்துவிட்டார்.

न तानि वचनीयानि मया देवि तवाग्रतः । यानि राज्ञा हृदि न्यस्तान्यमर्षात्पृष्ठतः कृतः ॥

अमर्षात् “ துக்கம் ஸஹிக்க
முடியாமல்
पृष्ठतः அவ்விடத்திலேயே
कृतः தங்கிவிட்டார்.
राज्ञा மன்னரால்
हृदि என் ஹிருதயத்தில்
न्यस्तानि சொல்லிப்போடப்
பட்டவைகள்

यानि எவைகளோ
तानि அவைகள்
देवि ஹே தேவி!
तत्र தேவரீரது
अग्रतः முன்னிலையில்
मया என்னால்
न वचनीयानि சொல்லத்தக்கவைகள்
அல்ல.

सा त्वं त्यक्त्वा नृपतिना निर्दोषा मम सन्निधौ । पौरापवादभीतेन ग्राह्यं देवि न तेऽन्यथा ॥

देवि “ தேவியாரே!
निर्दोषा நிர்தோஷியாகிய
सा त्वं பிரச்சயக்ஷ மஹாலக்ஷ்
மியாகிய தேவரீர்
नृपतिना மன்னரால்
पौरापवाद- } லோகாபவாதத்துக்கு
भीतेन } இடங்கொடுக்கக்கூட
டாதென்கிற ஒரு
காரணத்தாலேயே

त्यक्त्वा துறக்கப்பட்டார்
என்று
ते தேவரீருக்கு
ग्राह्यं { திருவுள்ளத்தில் எப்
பொழுதுமிருத்தல்
வேண்டும்.
मम எனக்கு
सन्निधौ தெரிந்தமட்டில்
अन्यथा न வேறெதுவுமில்லை.

आश्रमान्तेषु च मया त्यक्तव्या त्वं भविष्यसि । राज्ञः शासनमाज्ञाय तवेदं किल दौर्हृदम् ॥

त्वं “ தேவரீர்
मया என்னால்
राज्ञः மன்னரது
शासनं - नियमனத்தை

आज्ञाय பெற்றுக்கொண்டு
आश्रमान्तेषु ஆசிராமங்களின்
ஆருகே

अष्टत्वारिंशः सर्गः—நாற்பத்தெட்டாவது ஸர்க்கம். ॥ ४८ ॥

सीतापरित्यागः—சீதாபரித்யாகம்.

लक्ष्मणस्य वचः श्रुत्वा दारुणं जनकात्मजा । परं विषादमागम्य वैदेही निपात ह ॥१॥

जनकात्मजा ஜனகரின் திருமக
ளாகிய
वैदेही வைதேஹியார்
लक्ष्मणस्य லக்ஷ்மணரது
दारुणं கொஞ்சை அறுக்கும்
वचः சொல்லை

श्रुत्वा கேட்டு
परं மஹா
विषादं விசனத்தை
आगम्य அடைந்து
निपात சீழே விழுந்தனர் ;
ह என்ன கஷ்டம்!

सा सुहृतेमिवासंज्ञा वाष्पपर्याकुलेक्षणा । लक्ष्मणं दीनया वाचा उवाच जनकात्मजा ॥

जनकात्मजा ஜனகரின் திருமகளா
கிய

असंज्ञा மூர்ச்சித்தாக்கிடர்
தவளாய் பின்னர்

सा अवन्
कண்ணिरालं कलक्क
वाष्पपर्याकुलेक्षणा { முற்ற கண்களையுடைய
யவளாகி

लक्ष्मणं லக்ஷ்மணரைப்
பார்த்து
दीनया மனதிலிருக்கும் வியா
குலத்தைக் காட்டும்

सुहृत्ं ஒரு முறையிற்
इव மட்டும் [காலம்]

वाचा மொழிகொண்டு
उवाच நியமித்தருளினான் :

मामिकेयं तत्र नूनं सृष्टा दुःखाय लक्ष्मण । धात्रा यस्यास्तथा मेऽद्य दुःखमूर्तिः प्रदृश्यते ॥

लक्ष्मण “லக்ஷ்மணா!
यस्याः எந்த
मे என்னுடைய
इयं அந்த
मामि ध मிக ஆசையுடன் போ
வறித்து வளர்க்கப்
तनुः தேஹம் [பட்ட
दुःखमूर्तिः துக்கமே-வடிவெடுத்த
து வந்ததென

अद्य இப்பொழுது
प्रदृश्यते காணப்படுகின்றது.
तथा ஆனபடியால்
नूनं நிச்சயமாய்
धात्रा பிரம்மதேவரால்
दुःखःய துக்கத்துக்கென்றே
सृष्टा சிருஷ்டிக்கப்பட்ட
டிருக்கிறேன்.

किं नु पापं कृतं पूर्वं को वा दारैर्वियोजितः । याऽहं शुद्धसमाचारा त्यक्त्वा नृपतिना सती ॥

या எந்த
शुद्ध- } எப்படிப்பட்ட ஒரு
समाचारा } பாபத்தையும் சிந்தை
யிலுமறியாத
सती நிர்நோஷியான
अहं } நான்
नृपतिना } மன்னரால்
त्यक्त्वा } துறக்கப்பட்டுவிட்டேன்.
पूर्वं } பூர்வஜன்மத்தில்

किं नु என்ன
पापं பாபம்
कृतं செய்யப்பட்டதோ ?
दारैः ஸம்ஸாரத்தோடு
कः யாரோ ஒருவன்
என்னால் சேரவொட்ட
டாமல் பிரித்துவைக்க
ப்பட்டானோ,
वियोजितः वा } என்னமோ ?

पुराहमाश्रमे वासं रामपादानुवर्तिनी । अनुसूयापि सौमित्रे दुःखे च परिवर्तिनी ॥ ५ ॥

| | | | |
|------------------|--|------------|----------------------------------|
| சௌமீசெ | “ லக்ஷ்மண ! | வா த் | வாசத்தை |
| புரா | முன்பு | அநுசூய | அனுபவித்துவிட்டு |
| அஹ் | நான் | அபி ச | இப்போதோ |
| ஆசிரமே | ஆசிரமத்தில் | து:செ | பெருங்கஷ்டத்தில் |
| ராமபாடானுவர்तिनी | ஸ்ரீராமரது திருவடி களைச் சேவிப்பவளாய் | பரிவर्तिनी | தன் ளிவிடப்பட்டிருக்க கிறேன். |

सा कथं ह्याश्रमे सौम्य वत्स्यामि विजनीकृता ।

आख्यास्यामि च कस्याहं दुःखं दुःखपरायणा

॥ ६ ॥

| | | | |
|--------------------|---|-----------|--------------------------|
| சௌம்ய விஜனீகृता | “ புண்யா த்மாவே ! ஏகாந்தமாய் தள்ளி விடப்பட்டவளாய் | து:சுக் | துக்கத்தை |
| து:ஸபராயணா | துக்கமொன்றையே துணையாகக்கொண்ட | ஆசிரமே | ஆசிரமத்தில் |
| சா அஹ் | அந்த நான் | கய் ஹி | எப்படித்தான் |
| கஸ்ய ச | யாருடன் | வत्स्यामि | காலங்கழித்துவரு வேன்? |

किं नु वक्ष्यामि मुनिषु कर्म वा सत्कृतं च किम् । कस्मिंश्चित्कारणे त्यक्त्वा राघवेण महात्मना ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-----------|------------------------------------|
| महात्मना | “ மஹாத்மாவாகிய | किं | எந்த |
| राघवेण च | ஸ்ரீராகவராலேயே | संस्कृतं | ஆகரவுடன் ஏற்றுக் கொள்ளுகிறதாகிய |
| कारिंश्चित् | ஏதோ ஒரு | कर्म | கார்யத்தில் |
| कारणे | காரணத்தைப்பற்றி | किं नु वा | என்னதான் |
| त्यक्त्वा | கைவிடப்பட்டேன். | वक्ष्यामि | நான் சொல்லவிருக்கிறதா? |
| मुनिषु | முனிவர்களிடத்தில் | | |

न खल्वयैव सौमित्रे जीवितं जाह्नवीतले । त्यजेयं राजवंशस्तु भर्तुर्मे परिहास्यते ॥ ८ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------|--------------------------|
| சௌமீத்ரே | “ லக்ஷ்மண ! | भर्तुः | பர்த்தாவினது |
| जीवितं | உயிரை | राजःशः | ராஜவம்சமானது |
| जाह्नवीतले | கங்காபிரதேசத்தில் | परिहास्यते | நிந்திக்கப்படும் |
| अद्य एव | இப்பொழுதே | तु | என்கிறபடியால் |
| त्यजेयं | நான் ஒழித்துவிட | न खलु | நான் அதுசெய்யலா காது. |
| मे | எனது [ராம். | | |

यथाज्ञं कुरु सौमित्रे त्यज मां दुःखभागिनीम् । निदेशे स्थीयतां राज्ञः शृणु चेदं वचो मम ॥

| | | | |
|----------|------------------------------------|-------------|------------------------------|
| சௌமீசெ | “ லக்ஷ்மண ! | दु:खभागिनीं | துக்கத்திற்கே பிறந்த |
| राज्ञः | மன்னரது | मां च | என்னையும் |
| निदेशे | சாஸனத்தில் | त्यज | ஒழித்துவிடும். |
| स्थीयतां | யாரும் ஈடுபட்டுநடக் கவேண்டியது. | मम | என்னுடைய |
| यथाज्ञं | நியமனமெப்படியோ அப்படியே | इदं | இந்த |
| कुरु | நீர்செய்துமுடியும். | वचः | வேண்டுகோளை |
| | | शृणु | சற்றுக்கவனித்துக் கேளும். |

श्वश्रूणामविशेषेण प्राञ्जलिप्रग्रहेण च । शिरसाऽऽवन्ध चरणौ कुशलं ब्रूहि पार्थिवम् ॥

श्वश्रूणां " மாமிபார்
 अविशेषेण எல்லோருக்கும்
 कुशलं च குசலம்வினவிய
 தாகவும்
 पार्थिवं மன்னருக்கு
 चरणौ திருவடிகளில்

शिरसा முடிதாழ்த்தி
 आवन्ध நமஸ்கரித்து
 प्राञ्जलिप्रग्रहेण கைகூப்பிக்கொண்டு
 மிகவணக்கத்துடன்
 ब्रूहि நான் சொல்லுகிறபடி
 சொல்லும்:

जानासि च यथा शुद्धा सीता तत्त्वेन राघव । भक्त्या च परया युक्ता हिता च तव नित्यशः॥

राघव " 'ஸ்ரீராகவ!
 सीता உழவுபூமியினின்றும்
 உத்பலித்தவளாய்
 शुद्धा च அந்தக்கரணசத்தி
 யுள்ளவளாயும்
 परया ஸர்வோக்கிருஷ்ட
 भक्त्या பக்தியினால் [மாகிய
 युक्ता தியானம்செய்பவ
 ளாய்

तव தேவீருக்கு
 नित्यशः எக்காலத்திலும்
 हिता च சேஷம்தத்தையே பிரார
 த்திக்கின்றவளாய்
 तत्त्वेन यथा உள்ளபடியே
 जानासि { தேவீர் உள்ளத்தில்
 நன்றாய்த் தெரிந்தி
 ருக்கும்.

अहं त्यक्ता त्वया वीर अयशोभीरुणा जने मया हि परिहर्तव्यं त्वं हि मे परमा गतिः । यच्च ते वचनीयं स्यादपवादसमुत्थितम् ॥ १२ ॥

वीर " 'மஹா உத்தமரே!
 त्वया தேவீரரால்
 जने பிரஜைகளிடத்தில்
 अयशोभीरुणा அபகீர்த்திக்கு அஞ்
 अहं நான் [சியதால்
 त्यक्ता கைவிடப்பட்டேன்.
 यत् ஏதேனும்
 ते தேவீருக்கு
 अवाद्समुत्थितं லோகாபவாதத்தால்

वचनीयं தோஷம்
 स्यात् உண்டாகுமாயின்,
 मया च என்னாலும் [அது
 परिहर्तव्यं தீர்த்துவிடப்பட
 வேண்டியதுதான்;
 मे எனக்கு
 एवं हि தேவீரனரே
 परमा பாமமாகும்
 गतिः கதி.

वक्तव्यश्चेति नृपतिर्धर्मेण सुसमाहितः । यथा भ्रातृषु वर्तेथास्तथा पौरेषु नित्यदा ॥१३॥

नृपतिः " 'மன்னர்
 नित्यशः எப்பொழுதும்
 धर्मेण அறநெறியில்
 सुसमाहितः மாறா ஆஸக்திகொண்
 டிருக்கின்றவர்
 इति என்று
 वक्तव्यः { எல்லாராலும்சொல்லி
 க்கொண்டாடப்பட
 வேண்டியது.

भ्रातृषु பிராநாக்களிடத்தில்
 यथा எவ்வண்ணமோ
 तथा அவ்வண்ணமே
 पौरेषु च பிரஜைகளிடத்திலும்
 वर्तेथाः தேவீர் நடந்துகொள்
 ளவேண்டும்.

परमो ह्येष धर्मस्ते तस्मात्कीर्तिरनुत्तमा । यत्तु पौरजनो राजन्यर्मेण समवाप्नुयात् ॥ १४ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------|----------|--------------------|
| राजन् | “ஹே அரசே! | तस्मात् | அகனாலுண்டாகும் |
| पौरजनः | பட்டணத்தார் | कीर्तिः | கீர்த்தி |
| धर्मेण | நீதிநெறிக்கு தோஷம் வாராதபடி | अनुत्तमा | ஒப்புயர்வில்லாதது. |
| यत् तु | எனதையும் | ते | தேவீருக்கு |
| समवाप्नुयात् | அடையவேண்டியதே. | एषः | இந்த |
| | | धर्मः हि | தருடம்தான் |
| | | परमः | எதற்கும் மேலானது. |

अहं तु नानुशोचामि स्वशरीरं नरर्षभ । यथाऽपवादं पौराणां तथैव रघुनन्दन ॥ १५ ॥

| | | | |
|----------|---------------------|-------------|--------------------------|
| रघुनन्दन | “ஹே ரகுநந்தன! | अपवादं | அபவாதத்திற்கு |
| नरर्षभ | ஹே புருஷோத்தமர்! | यथा | எவ்வளவோ |
| अहं एव | நானும் | तथा | அவ்வளவு |
| तु | இப்பொழுது | स्वशरीरं | எனது சரீரத்தைப் பற்றி |
| पौराणां | பட்டணவாலிகளு டைய | न अनुशोचामि | விசனப்படவில்லை. |

पतिर्हि देवता नार्याः पतिर्वन्धुः पतिर्गुरुः । प्राणैरपि प्रियं तस्माद्भर्तुः कार्यं विशेषतः ॥

| | | | |
|-------------|----------------|------------|-------------|
| नार्याः | “ஸ்த்ரீகளுக்கு | भर्तुः | கணவனது |
| पतिः | கணவனே | कार्यं हि | கார்யந்தான் |
| देवता | தெய்வம். | प्राणै अपि | பிராணனிலும் |
| पतिः बन्धुः | கணவனே பந்து. | विशेषतः | அதிகமான |
| पतिः गुरुः | கணவனே குரு. | प्रियम् | அருமையானது. |
| तस्मात् | ஆதலின் | | |

इति मद्रचनाद्रामो वक्तव्यो मम संग्रहः

॥ १७ ॥

| | | | |
|---------|--|-----------|--------------------------------|
| मम | “எனது | मद्रचनात् | எனது விண்ணப்ப மாயிருப்பதால் |
| संग्रहः | { ஸம்யோகம், (அதாவ து உடலிரண்டாயிரு ந்தும் ஒரே அபிப்பி ராயமுடைய இருவர் களில் ஒருவராகிய) | इति | பின் சொல்லியவண் ணமே |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | वक्तव्यः | சொல்லிவிடப்பட்ட டும். |

निरीक्ष्य माऽद्य गच्छ त्वमृतकालातिवर्तिनीम् ॥ १८ ॥

| | | | |
|------|-----------|--------------------|-----------------------------|
| खं | “நீர் | अमृतकालातिवर्तिनीं | கருவுற்றிருக்கின்றவ ளாய் |
| मा | என்னை | निरीक्ष्य | தெரிந்துகொண்டு |
| अद्य | இப்பொழுது | गच्छ | செல்லும்.” |

एवं ब्रुवन्त्यां सीतायां लक्ष्मणो दीनचेतनः । शिरसाऽऽवन्ध धरणीं व्याहृतं न शशाक ह ॥

| | | |
|--------------|--------------------|---------------------|
| எவ் | இவ்வாறு | தறையில் |
| सीतायां | சிதாப்பிராட்டியார் | ஸாவட்டாங்கமாய் விழு |
| ब्रुवन्त्यां | புகன்றதும் | ந்து நமஸ்கரித்து |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | வ்யாஹ்ரு |
| दीनचेतनः | மனம் நொந்தவராகி | பேசவும் |
| शिरसा | முடிதாழ்த்தி | கஷ்டத்தால் |
| | | न शशाक |
| | | முடியாமலிருந்தார். |

प्रदक्षिणं च तां कृत्वा रुदन्नेव महास्वनः । ध्यात्वा मुहूर्तं तामाह किं मां वदसि शोभने ॥

| | | | |
|------------|-------------------|----------|-------------------|
| तां | அவளுக்கு | ध्यात्वा | தியானம்செய்து |
| प्रदक्षिणं | பிரதக்ஷிணத்தை | शोभने | “பதிவிருதாசிரோ |
| कृत्वा | செய்துவிட்டு | | மணியீய, |
| महास्वनः | பெரும்சூரலில் | मां | அடியேனுக்கு |
| रुदन् एव | வாய்விட்டு அழகின் | वदसि | தேவீர் ரியமித்தரு |
| | றவராகவே | | ளுகிறது |
| तां | அவளைப்பார்த்து | किं च | என்ன?” என்று |
| सुहूर्तं | ஒரு நொடிப்பொழுது | आह | விண்ணப்பம் |
| | | | செய்தார். |

दृष्टपूर्वं न ते रूपं पादौ दृष्टौ तवानघे । कथमत्र हि पश्यामि रामेण रहितां वने ॥ २? ॥

| | | | |
|---------------|--|---------|---|
| ते | “தேவீரது | अनघे | நிர்தோஷியே! |
| रूपं | திருமேனியானது | रामेण | ஸ்ரீராமரால் |
| न दृष्टपूर्वं | இதற்குமுன் கண்ணை ஆம் பார்க்கப்பட்ட தில்லை. | वने | காட்டில் |
| तत्र | | தேவீரது | रहितां |
| पादौ हि | திருவடிகள் மாத்திரம் | अथ | இவ்விஷயத்தில் |
| दृष्टौ | ஸேவித்துவரப்பட்ட | कथं | } நான் விசாரித்து அறி ந்துகொள்வது எப் படி ரியாயமாகும்?” |
| | டன. | पश्यामि | |

इत्युक्त्वा तां नमस्कृत्य पुनर्नावसुपारुहत् । आरुह्य च पुनर्नावं नाविकं चाभ्यचोदयत् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|------------|------------------|
| इति | இப்படி | उपारुहत् | கிட்டினார். |
| उक्तवा | விண்ணப்பம் செய்து | नावं | படகில் |
| | விட்டு | आरुह्य | ஏறி |
| पुनः | திரும்பவும் | च च | தக்கூணமே |
| तां | அவரை | नाविकं | படகோட்டியை |
| नमस्कृत्य | நமஸ்கரித்து | पुनः | திரும்பி |
| नावं | படகை | अभ्यचोदयत् | நடத்தச்சொன்னார். |

स गत्वा चोत्तरं तीरं शोकभारसमन्वितः । समूढ इव दुःखेन रथमध्याहृद्भ्रुतम् ॥ २३ ॥

शोकभारसमन्वितः { சோகத்தின் அதிகக்
தால் தவித்துக்கொ
ண்டிருக்கும்
ச: அவர்
उत्तरं तीरं வடகரைக்கு
गत्वा வந்துசேர்ந்து

समूढः மெய்மறந்தவராய்
इव च இருந்தபடியால்
दुःखेन மிகக்கஷ்டப்பட்ட
दुतं சடக்கென
रथं இரத்தத்தில்
अध्याहृत्य ஏறிக்கொண்டார்.

मुहुर्मुहुः परावृत्य दृष्ट्वा सीतामनाथवत् । चेष्टतीं परतीरस्थां लक्ष्मणः प्रयावथ ॥ २४ ॥

अथ அப்பொழுது
लक्ष्मणः லக்ஷ்மணர்
परतीरस्थां அக்கரையிலிருக்கும்
सीतां சீதாபிராட்டியாரை
अनाथवत् தஞ்சமாவவரொருவ
ரையும்காணாமல்

चेष्टतीं படுத்துப்புரண்டுகொ
ண்டிருக்கிறவளாய்
मुहुः मुहुः திருப்பித் திரும்பி
परावृत्य முகத்தைதிருப்பி
दृष्ट्वा பார்த்துக்கொண்டே
प्रयावथ பிரயாணமாறார்.

दूरस्थं रथमालोक्य लक्ष्मणं च मुहुर्मुहुः । निरीक्षमाणां तृद्धिमां सीतां शोकः समाविशत् ॥

दूरस्थं தூரத்தில்சென்று
விட்ட
लक्ष्मणं லக்ஷ்மணரையும்
रथं च தேரையும்
आलोक्य கவனித்த
सीतां சீதாபிராட்டியை
मुहुः मुहुः மென்மேலும்

निरीक्षमाणां தற்காலிலைமையை
சின்திக்கின்றவளாய்
उद्धिमां திகிலடைந்தவளாய்
शोकः तु துக்கம் மாத்திரம்
समाविशत् கூடவே குடிக்கொண்டி
ருந்தது.

सा दुःखभारावनता यशस्विनी यशोधना नाथमपश्यती सती ॥

रुरोद सा बर्हिणनादिते वने महास्वनं दुःखपरायणा सती ॥ २६ ॥

यशस्विनी மஹாபிரசுத்தியாய்
यशोधना யசஸ் ஒன்றையே பா
க்கியமாய்க்கொண்ட
सा மஹாலக்ஷ்மியாகிய
सा सती அந்தப் பதிவீரதை
बर्हिणनादिते மயில்கள் கூவும்
वने காட்டில்
दुःखपरायणा { துக்கமொன்றையே
துணையாய்க் கொண்
டவளாய்

नाथ ஆதரிப்பவரொருவ
ரையும்
अपश्यती காணாதவளாய்
दुःखभारावनता { துக்கத்தின் அதிகக்
தால் திடீர்நிழந்த
வளாய்
महास्वनं பெருங்குரல்பாய்ச்சி
रुरोद வாய்விட்டு அழுதாள்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे अष्टचत्वारिंशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22589

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 1865



दृष्टाऽस्माभिः प्रहृदिता दृढं शोकपरायणा । अनर्हा दुःखशोकाभ्यामेका दीना ह्यनाथवत् ॥

| | | | |
|---------------|---------------------------------------|---------|----------------------------|
| अस्माभिः | “எங்களால் | अनर्हा | தகாதவளாயும் |
| प्रहृदिता | புலம்பி அழுதுகொண்டிருக்கிறவளாயும் | अनाथवत् | அனாதைபோல் |
| दृढं | அதிக | दीना | பரிதாபநிலையிலிருப்பவளாயும் |
| शोकपरायणा | { மனவேதனைப்பட்டுக் கொண்டிருப்பவளாயும் | एका हि | தான்மட்டுமிருப்பவளாயும் |
| दुःखशोकाभ्यां | இரு கண்களுக்கும் மனவேதனைகளுக்கும் | दृष्टा | கவனிக்கப்பட்டாள். |

न ह्येनां मानुषीं विभ्रः सत्क्रियाऽस्याः प्रयुज्यताम् ।

आश्रमस्याविदूरे च त्वामियं शरणं गता ॥

त्रातारमिच्छते साध्वी भगवंस्त्रातुमर्हसि

॥ ६ ॥

| | | | |
|----------|----------------------------------|--------------|-----------------------------|
| एनां | “இவளை | त्वां हि | தேவரீரைத்தான் |
| मानुषीं | மானிடப்பெண்ணை | व्रातारं | தஞ்சமாக |
| न विभ्रः | நாங்கள் எண்ணவில்லை. | इच्छते | நினைத்துக்கொண்டிருக்கிறாள். |
| इयं | இந்த | भगवन् | ஸ்வாமி! |
| साध्वी | ஸௌந்தரியவதி | त्रातुं | ஹானியிலிருந்து |
| आश्रमस्य | ஆசிரமத்திற்கு | | தப்புவிக்க |
| अविदूरे | அருகில் | अर्हसि | திருவுள்ளாங்கொள்ளும். |
| शरणं | மிருகங்கள் வளிக்கும் ஓரிடத்தில் | अस्याः | இவளுக்கு |
| गता | விழுந்து படுத்துக் கிடக்கின்றாள் | सत्क्रिया | ஸக்காரமானது |
| च | என்கிறபடியால் | प्रयुज्यताम् | ஆக்ரூபிக்கப்பட்டும். |

तेषां तु वचनं श्रुत्वा बुद्ध्या निश्चित्य धर्मवित् । तपसा लब्धचक्षुष्मान्नाद्रवद्यत्र मैथिली ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------------|-----------|---|
| तरसा | தவமஹிமையால் | निश्चित्य | { நடந்த விஷயங்களை அறிந்து செய்யவேண்டியவைகளை நிச்சயித்துக்கொண்டு |
| लब्धचक्षुष्मान् | பெற்ற தேஜோமயரா முனிவர் [ன | मैथिली | மைதிலியார் |
| धर्मवित् | அவர்களுடைய மொழிக்கு | यत् | எங்கிருந்தாலோ |
| तेषां | செவிசாய்த்து | प्रद्ववत् | அவ்விடத்திற்கு |
| वचनं | ஞான திருஷ்டியால் | | அதிவேகமாய்ப் புறப்பட்டார். |
| श्रुत्वा | இவ்விஷயத்தில் | | |

तं तु देशमभिप्रेत्य किञ्चित्पद्भ्यां महामतिः । अर्घ्यमादाय रुचिरं जाह्नवीतीरमागमत् ॥
ददर्श राघवस्येष्टां सीतां पत्नीमनाथवत् ॥ ८ ॥

महामतिः பெரும் புத்தியுள்ள
அவர்
किञ्चित् கொஞ்சம்
रुचिरं கனையைத் தீர்க்க
अर्घ्यं அர்க்கியத்தை
आदाय எடுத்துக்கொண்டு
पद्भ्यां காலநடையாகவே
जाह्नवीतीरं கங்கைக்கரையை
अभिप्रेत्य நோக்கிக் சென்று

तं अந்த
देशं तु பிரதேசத்திற்கு
२ आगमत् வந்துசேர்ந்தார்.
राघवस्य ஸ்ரீராகவருக்கு
इष्टां மனங்கொணுது நடக்
पत्नीं பத்னியாகிய [கும்
सीतां சீதாபிராட்டியாரை
अनाथवत् அனாதையாய்
ददर्श कண்ணுற்றார்.

विलपन्तीं सुशोकातीं वाल्मीकिर्मुनिपुङ्गवः । उवाच मधुरां वाणीं ह्लादयन्निव तेजसा ॥

वाल्मीकिः வால்மீகி
मुनिपुङ्गवः மஹரிஷி
तेजसा इव தேஜனினையே
ह्लादयन् சாந்தகரமுர்த்தியாய்
விளங்கிக்கொண்டு
सुशोकातीं அசுஹ்யமான சோகத்
தால்தவித்துகொண்டு

विलपन्तीं வீறிட்டுக் கதறிக்கொ
ண்டிருக்கும் அவளை
ப்பார்த்து
मधुरां மனச்சாந்தியைத்தரு
கிறதாகிய
वाणीं இனிவரும் மொழியை
उवाच சொல்லியருளினார்:

स्तुषा दशरथस्य त्वं रामस्य महषी प्रिया । जनकस्य सुता राज्ञः स्वागतं ते पतिव्रते ॥

त्वं “நீர்
जनकस्य राज्ञः ஜனகராஜரின்
सुता திருமகள் ;
दशरथस्य தசரதருடைய
स्तुषा மருமகள் ;
रामस्य ஸ்ரீராமருக்கு

प्रिया ஹிதத்தையேகோரும்
महिषी சகவாசிக் ;
पतिव्रते மஹாபக்திவிரதாசிரோ
ते உம்மை [மணியே !
स्वागतम् உபசரித்து ஏற்றுக்
கொள்ளுகிறோம்.

आयान्ती चासि विज्ञाता मया धर्मसमाधिना । कारणं चैव सर्वं मे हृदयेनोपलक्षितम् ॥

आयान्ती असि “இங்குவந்திருக்கிறீர்
என்று
मया என்னால்
विज्ञाता தெரிந்துகொள்ளப்
பட்டார்.
च च தகூதணமே
मे எனது
हृदयेन ஹிருதயத்தில்

धर्मसमाधिना யோகத்திருஷ்டியினால்
कारणं வாலாரும்
सर्वं एव { நடைபெற்றவைகளும்
நடக்கப்போகிறவைக
ளுமான, எல்லாமும்.
उपलक्षितम् ஸ்பஷ்டமாய்க் கண்டு
கொள்ளப்பட்டது.

तत्र चैव महाभागे विदितं मप तच्चतः । सर्वं च विदितं मह्यं त्रैलोक्ये यद्धि वर्तते ॥१२॥

त्रैலोक்யे
यत् च
वर्तते
सर्वं एव
मह्यं
विदितं

“ மூவுலகிலும்
எது எது
நடக்கின்றதோ
அது எல்லாமும்
எனக்கு
நன்றாகத்தெரியும்;

हि
महाभागे
तत्र
विदितं च
मम
तत्रतः

ஆகையால்
மஹாபுண்யவாதியே,
உமது
கிர்ந்தி எல்லாமும்
எனக்கு
உள்ளபடி தெரியும்.

अपापां वेद्मि सीते त्वां तपोलब्धेन चक्षुषा । विस्त्रब्धा भव वैदेहि सांप्रतं मयि वर्तसे ॥

वैदेहि
सीते
तपोलब्धेन
चक्षुषा
त्वां
अपापां

“ விதேகராஜரின் திரு
மகளாகிய
ஹே லீதே!
தபோபலத்தினுற்
பெற்ற
ஞான திருஷ்டியால்
உம்மை
பாபரஹிதையாக

वेद्मि
सांप्रतं
मयि
वर्तसे
विस्त्रब्धा
भव

நான்கண்டிருக்கி
இப்பொழுது [நேன்;
என்னிடத்தில்
வந்துசேர்ந்திருக்கிறீர்;
சோகந்தெளிந்து மன
ந்தேறியவளாய்
ஆகுக.

आश्रमस्याविदूरे मे तापस्यस्तपसि स्थिताः ।

तास्त्वां वत्से यथा वत्सं पालयिष्यन्ति नित्यशः

॥ १४ ॥

वत्से
मे
आश्रमस्य
अविदूरे
तपसि
स्थिताः
ताः
तापस्यः

“ ஹே வத்ஸே!
எனது
ஆசிராமத்திற்கு
அருகில்
தவமொன்றிலேயே
ஆஸக்தியுள்ள
அந்த
துறவிப்பெண்கள்

त्वां
नित्यशः
वत्सं
यथा
पालयिष्यन्ति

உம்மை
எப்பொழுதும்
(தங்கள்) குழந்தையை
எப்படியோ அப்
படியே
பாதுகாத்துவரு
வார்கள்

इदमर्घ्यं प्रतीच्छ त्वं विस्त्रब्धा विगतञ्ज्वरा । यथा स्वगृहमभ्येत्य विषादं चैव मा कृथाः ॥

इदं
अर्घ्यं
प्रतीच्छ
त्वं
स्वगृहं
यथा

“ இந்த
அர்க்கியத்தை
நீர் கைக்கொள்ளும்.
நீர்
உமது சொந்த
மாளிகையில்
எவ்வண்ணமோ
அவ்வண்ணமே

अभ्येत्य
विगतञ्ज्वरा
विस्त्रब्धा एव
विषादं च
मा कृथाः

இருந்துகொண்டு
சோகம் ஒழிந்த
வளாயும்
உபசமனமான
மனத்துடனணுகி
மனஸ்தாபத்தை
மா க்ரூதா:

श्रुत्वा तु भाषितं सीता मुनेः परममद्भुतम् । शिरसा वन्द्य चरणौ तथेत्याह कृताञ्जलिः ॥

| | |
|----------|-------------------------------------|
| सीता | வலீதாபிராட்டியார் |
| मुनेः | முனிவரது |
| परमं | ஸமயத்திற்கேற்ற தாயும் |
| अद्भुतं | எதிர்பாராத ஸம்பவ மாயுயிருக்கின்ற |
| भाषितं | வார்த்தையை |
| श्रुत्वा | கட்டளையென பாராட்டி |

| | |
|------------|------------------------------------|
| तु | உடனே |
| कृताञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ்தை யாகி |
| चरणौ | திருவடிகளில் |
| शिरसा | முடிதாழ்த்தி |
| वन्द्य | வணங்கி |
| तथा हति | 'நியமனப்படியே செய்கிறேன்' என்று |
| आह | விடைதந்தனர். |

तं प्रयान्तं मुनिं सीता प्राञ्जलिः पृष्ठतोऽन्वगात् ॥ १७ ॥

| | |
|-----------|-----------------------------|
| सीता | வலீதாபிராட்டியார் |
| प्रयान्तं | திரும்பி நடந்து செல்லும் |
| तं | அந்த |

| | |
|------------|------------------|
| मुनिं | முனிவரை |
| प्राञ्जलिः | கைகூப்பிக்கொண்டே |
| पृष्ठतः | பின்பற்றி |
| अन्वगात् | சென்றனர். |

तं दृष्ट्वा मुनिमायान्तं वैदेह्या मुनिपत्नयः । उपाजग्मुर्मुदा युक्ता वचनं चेदमब्रुवन् ॥१८॥

| | |
|------------|--------------------------|
| मुनिपत्नयः | முனிபத்தனிகள் |
| वैदेह्या | வைதேஹியாரோடு |
| आयान्तं | வந்துகொண்டிருக் கின்ற |
| तं | அந்த |
| मुनिं | முனிவரை |
| दृष्ट्वा | கண்டு |
| मुदा | மனச்சந்துஷ்டியால் |

| | |
|-----------|-----------------------------------|
| युक्ताः | சுறுசுறுப்புடையவர் களாகி |
| उपाजग्मुः | எதிர்த்துக்கொண்டு சென்றார்கள். |
| वचनं च | மனோபாவத்தையும் |
| इदं | இப்படி |
| अब्रुवन् | விண்ணப்பம் செய்தார்கள்: |

स्वागतं ते मुनिश्रेष्ठ चिरस्यागमनं च ते । अभिवाद्यामस्त्वां सर्वा उच्यतां किं च कुर्महे ॥

| | |
|-------------|---|
| मुनिश्रेष्ठ | “ஹே முனிபுங்கவரே! |
| ते | தேவரீருக்கு ஸ்வாகதம். (தேவரீர் இங்கு வந்ததை மிகக் கொண்டாடு கிறோம்.) |
| स्वागतं | |
| ते | தேவரீர் |
| आगमनं | இவ்விடம்எழுந்தருளி |
| चित्स च | பலநாள் கடந்து விட்டன. |

| | |
|-------------|--|
| एवां | தேவரீரை |
| सर्वाः च | அனைவோரும் |
| अभिवाद्यामः | நமஸ்கரிக்கின்றோம். |
| किं | { செய்யவேண்டிய காரி யம் ஏதேனும் உண் டானால் அது |
| उच्यतां | நியமித்தருளப்பட்ட டும். |
| कुर्महे | நாங்கள் செய்ய காத்திருக்கின்றோம்.” |

तासां तद्वचनं श्रुत्वा वाल्मीकिरिदमब्रवीत् । सीतेयं समनुप्राप्ता पत्नी रामस्य धीमतः ॥

वाल्मीकिः
तासां
तत् वचनं
शुःश
इदं
अब्रवीत्
समनुप्राप्ता

வால்மீகிமுனிவர்
அவர்களுடைய
அந்த மொழிக்கு
செவியாய்த் து
இப்படி
நியமித்தருளினார்:
“கூட வந்திருக்கும்

इयं
धीमतः
रामस्य
पत्नी
सीता

இவள்
சிபானை
புரீராமருடைய
மனைவி;
சீதையென பெயர்
பூண்டவள்.

स्तुषा दशरथस्यैषा जनकस्य सुता सती । अपापा पतिना त्यक्ता परिपालया मया सदा ॥

पतिना
त्यक्ता
एषा
जनकस्य
सुता
दशरथस्य
स्तुषा

“பர்த்தானில்
கைவிடப்பட்ட
இவள்
ஜனகமஹாராஜனது
திருமகள்;
தசரதசக்கிரவர்த்தி
யினது
மருமகள்;

अपापा
सती
मया
सदा
परिपालया

எவ்வித பாபத்திற்கு
மிடங்கொடாத
மஹாபதிவிருதை.
என்னால்
என்றென்றைக்கும்
ஆதரவுடன் பரிபா
லிக்கப்படவேண்டிய
வள்.

इमां भवन्त्यः पश्यन्तु स्नेहेन परमेण हि । गौरवान्मम वाक्याच्च पूज्या वोऽस्तु विशेषतः ॥

वः च
विशेषतः
पूज्या
मम
वाक्यात्
अस्तु

“உங்கள் எல்லோருக்
பிரதானமாய் [கும்
புனைக்குத்தக்க பாத்
திரமாகிய இவள்
எனது
ஆக்கினையால்
இங்கு வரஸம் செய்
யட்டும்.

गौ(वात् हि
इमां
भवन्त्यः
परमेण
स्नेहेन
पश्यन्तु

மகத்துவத்திற்காக
வே
இவளை
நீங்கள்
அத்யந்த
உள்ளன்புகொண்டு
காத்துகின்ற ஆத
ரித்துவாருங்கள்.”

मुहुर्मुहुश्च वैदेहीं प्रणिधाय महायशाः । स्वमाश्रमं शिष्यवृत्तः पुनरायान्महातपाः ॥ २३ ॥

पुनः
महायशाः
महातपाः
वैदेहीं
सुहुः सुहुः

அதன்மேல்
மிக்க புகழ்பூண்ட
மஹரீஷி
வைகேஹியாரை
மேன்மேலும்

प्रणिधाय च
शिष्यवृत्तः
स्वं
अश्रमं
आयात्

தியாவித்துக்கொண்
சீடர்களுடன் [டே
தமது
ஆசிராமத்திற்கு
எழுந்தருளினார்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे एकोनपञ्चाशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22612

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 1888



दुर्वासोवचनानुवादचोदना—தூர்வாஸஸ் சொன்னதைச் சொல்லத்தூண்வேது.

दृष्ट्वा तु मैथिलीं सीतामाश्रमे संपवेशिताम् । सन्तापमगमद्दोरं लक्ष्मणो दीनचेतनः ॥ १ ॥

दीनचेतनः சிந்தை நொந்து
கிடந்த
लक्ष्मणः லக்ஷ்மணர்
मैथिली மிதிலைதேசத்தில்
ஆவிர்பவித்த
सीता சீதாபிராட்டியை
आश्रमे ஆசிரமத்தில்

संपवेशितां { உள்ளே அழைத்துக்
கொண்டுபோகப்பட்ட
டவளாய்
दृष्ट्वा கண்டுகொண்டு
तु ஆயினும்
दोरं ஸஹிக்கமுடியாத
सन्तापं துக்கத்தை
अगमत् அடைந்தார்.

अब्रवीच्च महातेजाः सुमन्त्रं मन्त्रसारथिम् । सीतासन्तापजं दुःखं पश्य रामस्य सारथे ॥

महातेजाः च பஹுதைரியசாஸி
யாகிய
मन्त्रसारथि மந்திரியும், ஸாரதியு
மான
सुमन्त्रं ஸுமந்திரரைப்
பார்த்து
अब्रवीत् கூறினார்:

सारथे “ஹே ஸாரதி!
रामस्य ஸ்ரீராமருடைய
सीतासन्तापजं சீதாதேவியாரின் கஷ்ட
டத்தால் தான்படும்
दुःखं துக்கக்கடுமையை
पश्य நீர் நினைத்துப்பாரும்.

ततो दुःखतरं किं नु राघवस्य भविष्यति । पर्वां शुद्धसमाचारां विसृज्य जनकात्मजाम् ॥

राघवस्य “ஸ்ரீராகவருக்கு
जनकात्मजां ஜனகரின் திருமகளுடன்
शुद्धसमाचारां { பஹுபுண்யமான
ஒழுக்கமுடையவ
ளுமான
पर्वां தருமபத்தனியை

विसृज्य துறந்து
ततः அதைவிட
दुःखतरं அதிகமான கஷ்டம்
किं नु எதுதான்
भविष्यति ஆகும்?

व्यक्तं दैवादहं मन्ये राघवस्य विनाभवम् ।

सारथे “ஹே ஸாரதி!
दैवं தலை எழுத்தை
नित्यं எக்காலத்திலும்
दुरतिक्रमं யாவராலும் மாற்ற
முடியாது.

वैदेह्या सारथे नित्यं दैवं हि दुरतिक्रमम् ॥

विनाभवं பிரிந்து தனியாயிருத்
தலைன்பது
दैवात् हि { ஜன்மாந்திரபாபத்திற்
காக விதிக்கப்பட்ட
துதானென்று
अहं நான்
व्यक्तं நிஸ்ஸந்தேகமாய்
मन्ये இப்பொழுது அறி
ந்துகொண்டேன்

राघवस्य स्त्रीराकवருக்கு
वैदेह्या வைதேஹியாரோடு

यो हि देवान्सगन्धर्वांनमुरानसह राक्षसैः । निहन्याद्राघवः क्रुद्धः स दैवं पर्युपासते ॥५॥

ய: "எந்த
ராஃவ: ஸ்ரீராகவர்
கருட: ஹி கோபமூட்டப்பட்டவ
ராக ஆகில்
சாந்஢்வாந் கந்தர்வர்களுள் றிட்ட
தேவாந் தேவர்களையும்
ராஷ்சு: அரக்கர்களோடு
சஹ கூடிய

ஃஸுரானு அஸுரர்களையும்
நிஹ்ந்யாந் ஸம்ஹரிக்கவல்லவ
ராகுரூரோ
ச: அவர்
தீவ் விதிக்கப்பட்ட தைவ
நியமனத்தை
பர்யுபாசதே கௌவிக்கு அணு
பவிக்கிறார்.

पुरा रामः पितृवाक्याहण्डके विजने वने । उपित्वा नव वर्षाणि पञ्च चैव महावने ॥६॥

ராம: "ஸ்ரீராமர்
புரா முன்னம்
பிடு: தந்தையின்
வாக்யாந் நியமனத்தால்
விஜனே நிர்மானுவ்யமான

ஃபுஷ்கே மஹாவநே தண்டகமஹாவனத்
நவ ச ஒன்பதோடு [தில்
பஞ்஢்வாணி புவ ஐந்து ஆண்டுகளையும்
வநே வனவாசத்தில்
உபித்வா கழித்தார்.

ततो दुःखतरं भूयः सीताया विप्रवासनम् । पौराणां वचनं श्रुत्वा नृशंसं प्रतिभाति मे ॥

புரானா "பட்டணத்தார்
நுசாஸ் துஷ்ட [களுடைய
வசனத்திற்கு
ஸுரவா உட்பட்டு
சிதாபாராட்டியாருக்கு

விபவாசந் தேசபிரஷ்டமானது
தத: அதைக்காட்டி லும்
பூய: ஃது:ஸ்தரம் அதிகதுக்ககரமான
மே எனக்கு [தரக
பரிபாதி தோற்றுக்கின்றது.

को नु धर्माश्रयः सूत कर्मण्यस्मिन्यशोहरे । मैथिलीं प्रति संप्राप्तः पौरैर्हीनार्थवादिभिः ॥

சுந "ஹே சாரதி!
மேதிலியாரை
பற்றி
புரீ: பட்டணங்களில் நடை
பெறும்

யசுஹரே அபகிர்த்திக்கூடமா
கிய
ஃஸிந் இந்த
கர்மணி விஷயத்தில்
ஃர்மாஸ்ய: புண்யபுருஷளுக்கும்

हीनार्थवादिभिः அற்பத்தனமான பித
ற்றல்களைக்கொண்டு

க: சு எவன்தான்
ஸ்ப்ராஸ: உடன்படுவான்?"

एता वाचो बहुविधाः श्रुत्वा लक्ष्मणभाषिताः । सुमन्तः श्रद्धया प्राज्ञो वाक्यमेतदुवाच ह ॥

ஃ஢்஢்யா {வேதாந்த சாஸ்திரங்
களில் முழுநம்பிக்
கையுடன்
பிராக்ரூராகிய
சுமந் திரர்
ஹ கஷ்டப்பட்டு
லக்ஷ்மணபாசிதா: லக்ஷ்மணரால் சொல்
லப்பட்ட

ஃ஢்஢்விதா: பலவிஷயங்கள் அடங்
புதா: இந்த [கிய
வாச: ஃபூவா மொழிகளைகேட்ட
புதந் இந்த [பிறகு
வாசய் மறுமொழியை
உவாச கூறினார்:

न सन्तापस्त्रया कार्यः सौमित्रे मैथिलीं प्रति । दृष्टमेतत्पुरा विप्रैः पितुस्ते लक्ष्मणाग्रतः ॥

சௌமிஷே "சமீத்திராதேவியார்
பெற்ற செல்வனை
லக்ஷ்மண ஹே லக்ஷ்மண!
தே உமது
பிது: தந்தையினது
அபரத: ஸன்னிதானத்தில்
மேயிஷீ ப்ரதி மைதிலியாரைப்பற்றி
யதாகிய

புரா முன்னமேயே
விபீ: முனிவர்களால்
தீர்க்கதரிசனமாய்க்
கண்டு சொல்லப்பட்ட
டது.
வ்யா உம்மால்
சந்தாப: மனதைப் புண்ணுக்
கிக்கொள்ளல்

एतत् भविष्यति दृढं रामो दुःखप्रायोऽव्यभारग्वान् । प्राप्स्यते च महाबाहुर्विप्रयोगं प्रियैर्ध्रुवम् ॥

மஹாபாஹு: "மஹாபாருவாகிய
ராம: ஸ்ரீராமர்
அவ்யபாரக்வானு { ஒரு காரணத்தால்
விதிக்குவசப்பட்ட
வராகி
தூத்

न कार्यः பிரயோஜனமற்றது.
दुःखप्राय: துன்பப்படுபவராய்
भविष्यति ஆகப்போகிறார்.
प्रियै: இஷ்டஜனங்களோடு
विप्रयोगं च வியோகத்தையும்
ध्रुवं நிச்சயமாய்
प्राप्स्यते அடையப்போகிறார்.

त्वां चैव मैथिलीं चैव शत्रुघ्नभरतावुभौ । सन्यजिष्यति धर्मात्मा कालेन महता महान् ॥

மஹான் "மஹான்
அர்மாசு தருமா த்மாவும்
த்வா எவ உம்மையும்
மேயிஷீ ச மைதிலியாரையும்
சுத்ருக்னன், பரதர்
ஆகிய

उभौ एव இருவர்களையும்
महता எதோ ஒரு
कालेन அந்தக்குரியகாலத்தில்
संयजिष्यति விட்டுப்பிரிந்திருக்கப்
போகிறார்.

इदं त्वयि न वक्तव्यं सौमित्रे भरतेऽपि वा । राज्ञा वो व्याहृतं वाक्यं दुर्वासा यदुवाच ह ॥

சௌமிஷே "ஹே செளமித்திரே!
துர்வாஸமுனிவர்
வ: உங்களைப்பற்றி
வ்யாஹ்ன் விண்ணப்பத்திற்கு
யத் எந்த ஒரு [பதிலாய்
வாகர் தருமவிதியை
உவாசு சொன்னாரோ

इदं இது
त्वयि உம்மிடத்தில்தானாகட்
டும்
भरते वा பரதரிடத்தில் தானாகட்
டும்
राज्ञा ह अपि மன்னராலும்
न वक्तव्यम् சொல்லக்கூடியதில்லை.

महाजनसमीपे च मम चैव नरर्षभ । ऋषिणा व्याहृतं वाक्यं वसिष्ठस्य च सन्धियौ ॥

நர்ஷம் "ஹே புருஷோத்
க்ஷிணா எவ ரிஷியாலேயே [தமா!
மம ச என்னுடையவும்
வசிஸ்தச்ய ச வலிஷ்டருடையவும்
சந்நிதௌ முன்னிலையில்

महाजनसमीपे च சக்கிரவர்த்தியினிடத்
திலேயே
वाक्यं அந்த தருமநிபமமா
னது
व्याहृतम् சொல்லியருளப்
பட்டது.

ऋषेस्तु वचनं श्रुत्वा मामाह पुरुषर्षभः । सूत न क्वचिदेवं ते वक्तव्यं जनसन्निधौ ॥१५॥

| | | | |
|-------------|--------------------|------------|---------------------|
| புரூபர்ஷம்: | “சக்கிரவர்த்தியார் | சூ | ஐவ்ளிஷயத்திலிப்படி |
| ऋषे: | அந்த ரிஷியினுடைய | आह | சொன்னார். |
| एवं | இப்படிப்பட்டதாகிய | सूत | ‘ஹே சாரதி! |
| वचनं | திருவாக்கை | कचित् | ஓரிடத்திலும் |
| श्रुत्वा | மனதில் வாங்கிக் | जनसन्निधौ | முன்னராவது மனிதன் |
| | கொண்டு | | முன்னிலையில் |
| मां | என்னைப்பார்த்து | ते | உம்மால் |
| | | वक्तव्यं न | சொல்லத்தகுந்ததல்ல.’ |

तस्याहं लोकपालस्य वाक्यं तत्सुसमाहितम् । नैव जात्वनृतं कार्यमिति मे सौम्य दर्शनम् ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------|---------|---|
| सौम्य | “ஹே ஸௌம்ய! | जातु | ஏதோ ஒருகாலத்தில் |
| तस्य | அவருடையவன் | कार्यं | { ஏதோ ஒருகாரணத் தால் அனுபவிக்க வேண்டிய பலன் |
| अहं | நான். | | |
| लोकपालस्य | லோகநாதருடைய | अनृतं न | அனுபவிக்காமல் முடி |
| तत् | அந்த | इति | என்கிறது [யாது |
| वाक्यं | நியமனமானது | मे | எனக்கு |
| सुसमाहितं एव | பாராட்டப்படவேண் டியதே. | दर्शनम् | பிரத்யக்ஷத்தில் ருஜு வாகிவிட்டது. |

सर्वथैव न वक्तव्यं मया सौम्य तवाग्रतः । यदि ते श्रवणे श्रद्धा श्रूयतां रघुनन्दन ॥१७॥

| | | | |
|-----------|----------------|-------------|---------------------|
| सौम्य | “புண்யாத்மாவான | वक्तव्यं न | சொல்லலாகாது. |
| रघुनन्दन | ரகுமகனே, | ते | உமக்கு |
| मया | என்னால் | श्रवणे | சாஸ்திரவாக்கில் |
| सर्वथा एव | எல்லாமும் | श्रद्धा यदि | நம்பிக்கை இருந்தால் |
| तव | உமது | श्रूयताम् | சொல்லுகிறதைக் |
| अग्रतः | முன்னிலையில் | | கேளும். |

यद्यप्यहं नरेन्द्रेण रहस्यं श्रावितः पुरा । तथाऽप्युदाहरिष्यामि दैवं हि दुरतिक्रमम् ॥१८॥

| | | | |
|------------|-------------------------|----------------|---|
| पुरा | “முன் ஒருகாலத்தில் | दैवं | தலை எழுத்து |
| नरेन्द्रेण | சக்கிரவர்த்தியாரோடு | तथा हि | எப்படியானாலும் |
| रहस्यं यदि | ஏகாந்தமாயிருந்த போது | दुरतिक्रमं अपि | { யாவராலும் மாற்றமு டியாதென்கிறதை மட்டும் |
| श्रावितः | சொல்லியதைக் கேட் | उदाहरिष्यामि | உதாஹரணத்துடன் |
| अहं | நான் [டறிந்த | | சொல்லுகிறேன். ॥ |

येनेदमाद्दृशं प्राप्तं दुःखं शोकसमन्वितम् । तच्छ्रुत्वा भाषितं तस्य गम्भीरार्थपदं महत् ॥
तथ्यं ब्रूहीति सौमित्रिः सूतं वाक्यमथाऽब्रवीत् ॥ १९ ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|---------------|--------------------|
| सौमित्रिः | லக்ஷ்மணர் | गम्भीरार्थपदं | மர்மங்களின் உட்கரு |
| तस्य | அவருடைய | | த்தை காட்டுகிறதும் |
| भाषितं | வாக்காகிறதும் | तथ्यं | உண்மையானதுமான |
| येन | ஏதுகாரணமாய் | वाक्यं | தருமவிதிக்கு |
| इदं | இந்த | श्रुत्वा | செவியாய்த்து |
| ईदृशं | இப்படிப்பட்ட | अथ | இப்பொழுது |
| शोकसमन्वितं | சோகத்தைவிடவித் | सूतं | சாரதியைப்பார்த்து |
| दुःखं | கஷ்டம் [திருக்கின்ற | ब्रूहि | 'சொல்லும்' |
| प्राप्तं | சம்பவித்திருக்கிறதோ | इति | என்று |
| तव | அந்த | अब्रवीत् | மறுமொழித்தந்தார். |
| महत् | மஹத்தான | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकिये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे पञ्चाशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22631

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 1907



एकपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்தொன்றாவது ஸர்க்கம். ॥ ५१ ॥

भृशुरापः—பிருகுமஹர்ஷியின் சாபம்.

तथा सञ्चोदितः सूतो लक्ष्मणेन महात्मना । तद्वाक्यमृषिणा प्रोक्तं व्याहृतमुपचक्रमे ॥

| | | | |
|----------------|----------------|-----------|------------------|
| महामना | மஹாத்மாவான | प्रोक्तं | முன்னம் மொழியப் |
| लक्ष्मणेन | லக்ஷ்மணரால் | | பட்ட |
| तथा | இவ்வண்ணம் | तव वाक्यं | அந்த வரலாற்றை |
| सञ्चोदितः सूतः | ஏவப்பட்ட ஸாரதி | व्याहृतं | விரித்துரைக்க |
| ऋषिणा | ரிஷியால் | उपचक्रमे | ஒப்புக்கொண்டார். |

पुरा नाम्ना हि दुर्वासा अत्रेः पुत्रो महामुनिः । वसिष्ठस्याश्रमे पुण्ये वार्षिक्यं समुवास ह ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|------------|-------------------|
| पुरा | “பூர்வம் | वरिष्ठस्य | வலிஷ்டருடைய |
| अत्रेः | அத்ரிமஹர்ஷியின் | पुण्ये | புண்ய |
| पुत्रः हि | புதல்வராகிய | आश्रमे ह | ஆசிரமத்திலேயே |
| दुर्वासाः | தூர்வாஸர் | वार्षिक्यं | வார்ஷிகத்திற்காக* |
| नाम्ना | என்ற | समुवास | வவலித்துக்கொண் |
| महामुनिः | மஹாமுனி | | டிருந்தார். |

[* முனிவர்கள் தக்ஷிணியனம் முதல் நான்கு பக்ஷங்களையும் ஒரே இடத்தில் இருப்பதாய் சங்கற்பித்துக்கொண்டு அந்நாளமே செய்வது சாதூர்மாஸியம் அல்லது வார்ஷிக்யமென்பது.]

तथाश्रमं महातेजाः पिता ते सुमहायशाः । पुरोहितं महात्मानं दिदृक्षुरगमत्स्वयम् ॥ ३ ॥

ते “உமது
மஹாதேஜோவா
என்ற
சுமஹாயசா: மஹாப்பிரஸித்தி
பெற்ற
பிதா தந்தை
த் அந்த

आश्रमं ஆசிரமத்திற்கு
महामानं மஹாத்மாவான
पुरोहितं புரோஹிதரை
स्वयं நேரில்
दिदृक्षु: தரிசிக்க எண்ணம்
கொண்டவராய்
आमत् போய்ச்சேர்த்தார்.

स दृष्ट्वा सूर्यसङ्काशं ज्वलन्तमिव तेजसा । उपविष्टं वसिष्ठस्य सव्यपार्श्वे महामुनिम् ॥ ४ ॥
तौ मुनी तापसश्रेष्ठौ विनीतो ह्यभिवादयत् । स ताभ्यां पूजितो राजा स्वागतेनासनेन च ॥
पाथेन फलमूलैश्च उवास मुनिभिः सह ॥ ५ ॥

ச: “அவர்
वसिष्ठस्य வஸிஷ்டருடைய
सव्यपार्श्वे இடதுபார்சுவத்தில்
तेजसा தேஜஸால்
सूर्यसङ्काशं इव சூர்யனெனவே
ज्वलन्तं ஜவலித்துக்கொண்டு
उपविष्टं வீற்றிருந்த
महामुनिं மஹாமுனிவரை
दृष्ट्वा கண்ணுற்று
राजा हि மன்னரும்
तापसश्रेष्ठौ தொண்டர்களில் உத்
तौ அவ்விரண்டு
தமர்களாகிய

मुनी முனிவர்களை
विनीतः வினயத்தூடன்கூடிய
வராய்
अभिवादयत् அபிவாதனம் செய்
स: அவர் [தார்.
मुनिभिः च ரிஷிகளாலும்
स्व गतेन வீருந்தோம்புகையோ
आसनेन ஆஸனத்தோடும் [டும்
पाथेन பாதையத்தோடும்
फलमूलैः च பலமூலை திகளோடும்
पूजितः உபசரிக்கப்பட்டவ
ताभ्यां அவர்களோடு [ராய்
सह கூட
उवास தங்கியிருந்தார்.

तेषां तत्रोपविष्टानां तास्ताः सुमधुराः कथाः । बभूवुः परमर्षीणां मध्यादित्यगतेऽहनि ॥

तत्र “அவ்விடத்தில்
अहनि ஒருநாள்தான்
मध्यादित्यगते மத்தியானத்திற்கு
तेषां அந்த [மேல்
परमर्षीणां மஹரிஷிகள்

उपविष्टानां வீற்றிருக்கையில்
ताः ताः பற்பல
सुमधुराः மிக மதுரமான
कथाः கதைகள்
बभूवुः நிகழ்ந்தன.

ततः कथायां कस्याञ्चित्प्राञ्जलिः प्रग्रहो नृपः । उवाच तं महात्मानमत्रैः पुत्रं तपोधनम् ॥

ततः “அப்பொழுது
कस्याञ्चित् ஏதோ ஒரு
कथायां கதையின் முடிவில்
नृपः மன்னர்
प्रग्रहः வணக்கத்துடன்
प्राञ्जलिः கைகூப்பிக்கொண்டு

अत्रैः அந்ரிமஹரிஷயின்
पुत्रं புத்திரரும்
तपोधनं தபோதனரும்
महामानं மஹாத்மாவான
तं அவரை
उवाच இப்படி வினாவினார் :

भगवन्किप्रमाणेन मम वंशो भविष्यति । किमायुश्च हि मे रामः पुत्राश्चान्ये किमायुषः ॥

भगवन् “‘**ஹே பகவன் !**
 मम **அடியேனது**
 वंशः **வம்சம்**
 किप्रमाणेन **எவ்வளவு காலம்**
 भविष्यति **விளங்கும்.**
 रामः **ராமன்**

किमायुः **எவ்வளவு ஆயுளுள்**
 எள்வன்.
 मे **அடியேனது**
 अन्ये पुत्राः **இதர புத்திரர்களும்**
 किमायुषः च **எவ்வளவு ஆயுளுள்**
 எவர்கள்?

रामस्य च सुता ये स्युस्तेषामायुः कियद्भवेत् । काम्यया भगवन्ब्रूहि वंशस्यास्य गतिं मम ॥

रामस्य “‘**ராமனுக்கு**
 सुताः **புதல்வர்கள்**
 ये स्युः **எத்தனையோ ?**
 तेषां च **அவர்களுக்கு**
 कियत् **எவ்வளவு**
 आयुः **ஆயுள்**
 भवेत् **உண்டு ?**
 भगवन् **ஹே பகவன் !**

अस्य **இந்த**
 वंशस्य **வம்சத்தினுடைய**
 गतिं **தசையைப்பற்றி**
 मम **எனது**
 काम्यया **விண்ணப்பத்தை ஏற்**
 ब्रूहि **றுக்கொண்டு**
 தேவரீர் **பதில் அளிக்**
 कवेण्डुम्. **கவேண்டும்.**

तच्छ्रुत्वा व्याहृतं वाक्यं राज्ञो दशरथस्य च । दुर्वासाः सुमहातेजा व्याहर्तुमुपचक्रमे ॥

सुमहातेजाः “**மஹாதேஜோவா**
 वाक्यं **கூகிய**
 दुर्वासाः **தூர்வாசமஹிரிஷி**
 व्याहृतं **சொல்லப்பட்ட**
 तत् **அந்த**
 वाक्यं **வாக்கியத்திற்கு**

श्रुत्वा **செவியாய்ந்து**
 दशरथस्य **தசரத**
 राज्ञः च **மன்னருக்கு மாத்**
 व्याहृतं **சொல்ல**
 उपचक्रमे **உடன்பட்டார்;**
 திரம்

शृणु राजन्युराहृत् तदा दैवासुरे युधि । दैत्याः सुरैर्भर्त्स्यमाना भृगुपत्नीं समाश्रिताः ॥

राजन् “‘**ஹே ராஜன் !**
 पुराहृत् **பூர்வம் நடந்தவிருத்**
 तदा **தார்தமொன்றை**
 दैवासुरे **சொல்லுகிறேன் கே**
 युधि **ஒரு காலத்தில் [னும்.**
 தேவாசுர
 புத்தத்தில்

दैत्याः **அசுரர்கள்**
 सुरैः **தேவர்களால்**
 भर्त्स्यमानाः **அடித்தோட்டப்பட்ட**
 भृगुपत्नीं **வர்களாய்**
 समाश्रिताः **பிரகுமுனிவரது மனை**
 யானை
 அடைக்கலம் **புகு**
 ந்தார்கள்.

तथा दत्ताभयास्तत्र न्यवसन्नभयास्तदा

तदा “‘**அப்படியான**
 तथा **அவளால் [படியால்**
 दत्ताभयाः **அபயம்புகொடுக்கப்**
 பட்டவர்களாய்

॥ १२ ॥

अभयाः **அச்சமொழிந்தவர்**
 களாய்
 तदा **அவ்விடத்திலேயே**
 न्यवसन् **வஸித்துவந்தார்கள்.**

तया परिगृहीतांस्तान्द्रष्टुं क्रुद्धः सुरेश्वरः । चक्रेण शिवधारेण भृगुपत्न्याः शिरोऽहरत् ॥

सुरेश्वरः “**தேவநாதர்**
ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணு
தான் அவர்களை
தயா அவளால்
பரிగृहीतान् அனுக்கரகிக்கப்ப
பட்டவர்களாய்
दृष्ट्वा கண்டு

क्रुद्धः கோபங்கொண்டவராய்
शिवधारेण அதி கூர்மையான
चक्रेण சக்ராயுதத்தால்
भृगुपत्न्याः பிரகுமுனிவரது பத்
தினியினுடைய
शिरः தலையை
अहरत् அறுத்துத்தள்ளினார்.

ततस्तां निहतां दृष्ट्वा पत्नीं भृगुकुलोद्बहः । शशाप सहसा क्रुद्धो विष्णुं रिपुकुलोदनम् ॥

भृगुकुलोद्बहः { “**எவரால் அவர்வழிசு**
மானது அவர்பெய
ராலே வழக்கத்தலை
ப்பட்டதோ அந்த
பிரகு மஹரிஷி
தான் அந்த
பत्नी தருடபத்னியை
निहतां கொலையுண்டவளாக
दृष्ट्वा பார்த்து

ततः அதனால்
क्रुद्धः கோபங்கொண்டவராகி
सहसा முன்பின் ஆலோசியாமலே
रिपुकुलोदने சத்ருகுலஸம்ஹாரகராகிய
विष्णुं ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணுவை
शशाप இப்படி சாபமிட்டார்.

यस्मादवध्यां मे पत्नीमवधीः क्रोधमूर्च्छितः । तस्मात्त्वं मानुषे लोके जनिष्यसि जनार्दन ॥

तत्र पत्नीवियोगं त्वं प्राप्स्यसे बहुवार्षिकम्

जनार्दन “**வேற ஜனூர்த்தன!**
त्वं நீ
क्रोधमूर्च्छितः கோபத்தால் மெய்
மறந்தவனாகி
अवध्यां கொல்லத்தகாதவ
मे எனது [என
पत्नी பத்னியை
अवधीः கொன்றனை.

॥ १५ ॥

यस्मात् तस्मात् ஆதலின்
मानुषे लोके மாணிட உலகில்
जनिष्यसि நீ பிறக்கக்கடவாய்;
तत्र அவ்விடத்திலே
त्वं நீ
बहुवार्षिकं பலவாண்டளவு
पत्नीवियोगं பத்தினிவியோகத்தை
प्राप्स्यसे அடையக்கடவாய்.

एवं शापं भृगुर्दत्त्वा विष्णोः स्मृत्वा च वैभवम् ।

शापाभिहतचेताः स स्वात्मना भावितोऽभवत्

॥ १६ ॥

सः “**அந்த**
भृगुः பிரகுமஹரிஷி
एवं இவ்வண்ணமாய்
शापं சாபத்தை
दत्त्वा இட்டுவிட்டு
स्वात्मना தனது பிறளிப்பெ
ரும்தன்மையால்
विष्णोः ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணுவி
னுடய

वैभवं மஹிமையை
स्मृत्वा நினைத்து
शापाभिहतचेताः சபித்ததில் பச்சாத்
தாபமடைந்தவராகி
भावितः च { இனி என்ன செய்ய
லாமென சிந்திப்பவ
ராகவும்
अभवत् ஆனார்.

पुनरेव ययो तापमृषिर्दुर्मददुर्मदः । विष्णुशक्तिमविद्वान्स प्रपेदे शापमूढताम् ॥ १७ ॥

| | | | |
|--------------|--|---------------|--------------------|
| सः | “ अந்த | शापमूढतां | சாபத்தால் விளையும் |
| ऋषिः एव | ரிஷியும் | | அசட்டுத்தனத்திற்கு |
| विष्णुशक्तिं | ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணுவின் | प्रपेदे | ஆளானார். |
| | வந்து சக்தியை | दुर्मददुर्मदः | பைத்தியக்காரனைப் |
| अविद्वान् | { உள்ளபடி மனதில் வாங்கிக்கொள்ளாத வராய் | पुनः | இன்னும் [போலாகி |
| | | तां | தாபத்தை |
| | | ययौ | அடைந்தார். |

चिरकालमसंज्ञोऽभूच्छापापान्धतमसा वृतः । दृष्ट्वा सप्तर्षयश्चैवं कृपां चक्षुश्च भक्तितः ॥ १८ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-----------|--------------------|
| चिरकालं | “ வெகுகாலம் | दृष्ट्वा | உணர்ந்து |
| असंज्ञः च | தன் அறிவு இழந்தவ | भक्तितः च | விசுவாசத்தாலேயே |
| अमूत् | இருந்தார். [ராகவே | सप्तर्षयः | சப்தரிஷிகள் |
| एवं | இப்படி | कृपां | கிருபை செய்வதற் |
| शापान्धतमसा | சாபஇருளால் | | காக |
| वृतः | பற்றப்பட்டவராய் | चक्षुः | நேரில் வந்தார்கள். |

त्यक्तशापः पुरस्तस्थौ मन्दं भृगुरथाब्रवीत् । रक्षध्वं मां मुनिश्रेष्ठः शापान्मत्पुरतः स्थिताः ॥

| | | | |
|------------|------------------|--------------|--------------------|
| भृगुः | “ பிரகுமஹரிஷி | मुनिश्रेष्ठः | ‘ஹே மஹரிஷிகளே! |
| पुरः | எதிரில் | मत्पुरतः | என் பக்கலில் இருந் |
| स्थौ | எழுந்துநின்றார். | | துகொண்டு |
| त्यक्तशापः | சாபத்தை கொடுத்து | स्थिताः | உதவிபுரிபவர்களாய் |
| | விட்ட அவர் | मां | என்னை |
| मन्दं | தாழ்ந்த குரலில் | शापत् | சாபத்திலிருந்து |
| अथ | இப்படி | रक्षध्वम् | காப்பாற்றவேண்டும். |
| अब्रवीत् | விண்ணப்பம் செய் | | |
| | தார்: | | |

श्रुत्वा तु भृगुवाक्यं तमाहुश्च परमर्षयः

| | | | |
|------------|------------------|--------|--------------------|
| परमर्षयः च | “ மஹரிஷிகளும் | ॥ २० ॥ | |
| भृगुवाक्यं | பிரகுமஹரிஷியின் | त् | அவரைப் பார்த்து |
| | விண்ணப்பத்திற்கு | तु | இவ்விஷயத்தில் |
| श्रुत्वा | செவியாய்த்து | | இப்படி |
| | | आहुः | பதிலுரைத்தார்கள் : |

स्तुत्यैर्ब्रह्मेशशक्राद्यैः स्तूयमानमहर्निशम् । नारायणं प्रपद्यस्व स्तोत्रैरेव सुव्रत ॥ २१ ॥

| | | | |
|--------------------|------------------------|-------------|--------------------|
| सुव्रत | “ நல்ல விரதம் | नारायणं एव | ஸ்ரீமன் நாராயண |
| | பூண்டவரே! | | னையே |
| स्तुत्यैः | யாவராலும் ஒப்புக் | अहर्निशं | பகலிலும் இரவிலும் |
| | கொள்ளப்பட்ட | स्तोत्रैः च | இடைவிடாது ஸ்தோ |
| ब्रह्मेशशक्राद्यैः | பிரம்ம, ருத்திர, சக்ரா | | ஸ்தோத்திரங்களா |
| | திகளான தேவர்களால் | | லேயே |
| स्तूयमानं | போற்றிப்புகழ் சரியா | प्रपद्यस्व | நீர் சரணமடைவீராக். |
| | ன பாத்திரராகிய | | |

एवमुक्तस्तु ऋषिभिर्विष्णुपूजां चकार सः ॥ २२ ॥

ऋषिभिः “ரிஷிகளால்
 एवं இவ்வண்ணமாய்
 उक्तः சொல்லப்பட்ட

सः ஆவர்
 विष्णुपूजां तु ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணு
 चकार பூஜை ஒன்றையே
 செய்துவந்தார்.

भृगुणाऽऽराधितो विष्णुरागतः प्राह तं भृगुम् । मा भैर्भृगोऽनृतं वाक्यं न भविष्यति ते द्विज ॥
 समोचयसि पापान्मामहमेनें गृहीतवान् ॥ २३ ॥

भृगुणा “ப்ருகுமஹர்ஷியால்
 आराधितः ஆராதிக்கப்பட்ட
 विष्णुः ஸ்ரீவிஷ்ணுபகவான்
 तं ஆவருக்கு
 आगतः பிரத்யகூமரானர்.
 भृगुं பிருகுமஹர்ஷியை
 प्राह பார்த்து
 திருவாய்மலர்ந்தருளி
 னார் :
 द्विज ‘பிராம்மணனாகிய
 भृगो ஹே பிருகோ!
 ते உனது

वाक्यं மொழி
 अनृतं வீணைதாக
 न भविष्यति ஆகப்போகிறதில்லை.
 अहं நான்
 एवं இதற்கு
 गृहीतवान् உடன்படுகிறேன்.
 मां என்னைப்பற்றியதான
 पापात् பாபத்திலிருந்து
 समोचयसि நீ விடுவிக்கப்படுவாய்
 मा मैः இனி சிந்தையுறுதல்
 வேண்டாம்.’

अर्चयामास तं देवं भृगुः शापेन पीडितः ॥ २४ ॥

भृगुः “பிருகுமஹரிஷி
 शापेन சாபத்தினால்
 पीडितः { கண்முன்நடக்கும்
 விஷயங்களை அறியா
 தவராய்

तं அந்த
 देवं தேவர் ஒருவரையே
 अर्चयामास அர்ச்சித்தவண்ணமே
 யிருந்தார்.

तपसाऽऽराधितो देवो ह्यब्रवीद्भक्तवत्सलः । लोकानां स हितार्थं तु तं शापं ग्राह्यमुक्तवान् ॥

तपसा “இந்திரியநிக்கிரஹ
 த்தோடு
 आराधितः ஆராதிக்கப்பட்ட
 भक्तवत्सलः பக்தவதஸலராகிய
 सः அந்த
 देवः தேவர்
 तु இவ்விஷயத்தில்
 இன்னும்
 उक्तवान् விளங்கச்சொல்
 பவராகி
 तं அவரிடம்

अब्रवीत् சொல்லியருளினார் :
 शापं ‘சத்தியமாய்ச்சொல்லி
 விடப்பட்ட வர்க்கை
 लोकानां உலகங்களுடைய
 हितार्थं உபகாரத்தின்பொ
 ருட்டு
 हि நிச்சயமாய்
 ग्राह्यम् { என்னால் ஏற்றுக்
 கொள்ளப்படவேண்
 டியதே.’

इति शप्तो महातेजा भृगुणा पूर्वजन्मनि । इहागतो हि पुत्रत्वं तव पार्थिवसत्तम ॥ २६ ॥

பாதிவசத்தம் “சக்கிரவர்த்தியே !
 மஹாஜை: ஹி மஹாதேஜன்மனியும்
 பூர்வஜன்மத்தில்
 ஹி இப்படி
 ப்ரகுமஹரிஷியல்

शप्तः { சொல்லிவிட்டப்பட்ட
 வாக்கைப் பரிபாலிப்
 பவராய்
 इह இவ்வலகில்
 तव पुत्रः தேவரீரது புதல்வராக
 आगतः அவதரித்திருக்கிறார்.

राम इत्यभिविख्यातस्त्रिषु लोकेषु मानद । तत्फलं प्राप्स्यते चापि भृगुशापकृतं महत् ॥

मानद “மரியாதைக்கு
 त्रिषु மூன்று [உரியவரை !
 लोकेषु உலகங்களிலும்
 रामः ஸ்ரீராமர்
 इति என்று
 अभिविख्यातः } அழைத்துகொண்டா
 अपि } டப்பட்டவராயி
 ருந்தும்

भृगुशापकृतं பிரகுசாபத்தால்
 विनाशितं விளைந்த
 तत् அந்த
 महत् மஹத்தான
 फलं च பயனும்
 प्राप्स्यते அனுபவிக்கப்பட்ட
 போகிறது.

अयोध्यायाः पती रामो दीर्घकालं भविष्यति । सुखिनश्च समृद्धाश्च भविष्यन्त्यस्य येऽजुगाः ॥

रामः “ஸ்ரீராமர்
 अयोध्यायाः அயோத்தியாபுரிக்கு
 पतिः அரசராய்
 दीर्घकालं வெகுகாலம்
 भविष्यति விளங்குவார்.
 अस्य இவருடைய

अजुगाः தொண்டர்கள்
 ये எவர்களோ, அவர்கள்
 सुखिनः च நிச்சிந்தையாயும்
 समृद्धाः च ஸ்ரீநாபாக்கியம்
 பெற்றவர்களாயும்
 भविष्यन्ति இருப்பார்கள்.

दश वर्षसहस्राणि दश वर्षशतानि च । रामो राज्यमुपासित्वा ब्रह्मलोकं गमिष्यति ॥

रामः “ஸ்ரீராமர்
 दश वर्षसहस्राणि च பத்து ஆயிரவருஷங்
 कर्णोऽपि களோடு
 दश वर्षशतानि பத்து நூறுவருஷங்
 कर्णः கள்

राज्यं ராஜ்யபரிபாலனத்தை
 उपासित्वा செய்துவிட்டபிறகு
 ब्रह्मलोकं பிரம்மலோகத்திற்கு
 गमिष्यति செல்வார்.

समृद्धैश्चाश्वमेधैश्च इष्ट्वा परमदुर्जयः । राजवंशांश्च बहुशो बहूनसंस्थापयिष्यति ॥ ३० ॥

परमदुर्जयः “எவராலும் வெவ்வ
 தற்கரியராகிய அவர்
 बहुशः பல
 समृद्धैः ஸகல பாக்கியங்களு
 டன் விளங்கும்

अश्वमेधैः च அச்வமேதங்களையும்
 इष्ट्वा च இயற்றி
 बहून् அனேக
 राजवंशान् च ராஜவம்சங்களையும்
 संस्थापयिष्यति ஸ்தாபிப்பார்.

द्वौ पुत्रौ तु भविष्येते सीतायां राघवस्य तु । अन्यत्र न त्वयोध्यायां सत्यमेतन्न संशयः ॥

राघवस्य तु “ஸ்ரீராகவருக்கு
 சீதையினிடத்தில்து
 சீதாபுராட்டியாரின்
 இரட்டைக்குமாரர்
 கள்
 அயோத்தியைக்கு
 அயோத்தியைக்கு

न
 अन्यत्र तु
 भविष्येते
 एतत्
 सत्यं
 न संशयः
 வெளியே
 வேறொரு இடத்திலேயே
 ஜனிப்பார்கள்.
 இது
 உத்தியம்.
 உண்மையிலே.

सीतायाश्च ततः पुत्रावभिषेक्ष्यति राघवः

राघवः च “ஸ்ரீராகவரே!
 சீதாபுராட்டியாரின்
 புதல்வர்களை

॥ ३२ ॥

ततः
 अभिषेक्ष्यति
 பிறகு
 மகுடாபிஷேகம்
 செய்வார்.

स सर्वमखिलं राज्ञो वंशस्याह गतागतम् । आख्याय सुमहातेजास्तूष्णीमासीन्महासुनिः ॥

सुमहातेजाः “மஹா சாமர்த்திய
 சாலியாகிய
 सः அந்த
 महासुनिः மஹரிஷி
 राज्ञः மன்னருக்கு
 वंशस्य வம்சத்தினுடைய
 गतागतं வரலாறை

अखिलं
 सर्वं
 आह
 आख्याय
 तूष्णीं
 भासीत्
 எனதையும் விடாமல்
 எல்லாவற்றையும்
 இவ்வாறு சொன்னார்.
 சொல்லிமுடித்த
 பிறகு
 மௌனமாக
 ஆயினார்.

तूष्णींभूते तदा तस्मिन् राजा दशरथो मुनौ । अभिवाद्य महात्मानौ पुनरायात्पुरोत्तमम् ॥

तदा “அப்பொழுது
 दशरथः தசரத
 राजा மன்னர்
 तस्मिन् அவர்
 तूष्णीं भूते மௌனமாக இருந்து
 விட்டதன்மேல்

महात्मानौ
 मुनौ
 अभिवाद्य
 पुरोत्तमं
 पुनः
 आयात्
 மஹா தமாக்களான
 ரிஷிகளிருவர்க்கும்
 நமஸ்கரித்து விட்டு
 உத்தமருக்கு
 திரும்பி
 போய்ச்சேர்ந்தார்.

एतद्दृचो मया तत्र मुनिना व्याहृतं पुरा । श्रुतं हृदि च निक्षिप्तं नान्यथा तद्भविष्यति ॥

पुरा “முன்னம்
 मुनिना ரிஷியால்
 एतत् वचः இந்த வகிதி
 व्याहृतं எடுத்துரைக்கப்
 பட்டது.
 तस्य அப்பொழுது
 मया च என்னலும்

श्रुतं
 हृदि
 निक्षिप्तं
 तत्
 अन्यथा न
 भविष्यति
 கேட்டறியப்பட்டது
 மனதில்
 வெளியிடாமல் வைக்
 கப்பட்டிருந்தது.
 அது
 அவ்வாறேதான்
 நடந்துதீரும்.

एवं गते न सन्तापं कर्तुमर्हसि राघव । सीतार्थे राघवार्थे वा दृढो भव नरोत्तम ॥३६॥

| | | | |
|-----------------|---|---|---|
| नरोत्तम | “ஹே புருஷோத் தம! | राघवार्थे वा सन्तापं कर्तुं न अर्हसि | ஸ்ரீராகவர் விஷயத் ஸந்தாபத்தை [திலும் கொள்ள நீர் மனதைச்செலுத் தலாகாது. |
| राघव एवं गते | ஹே லக்ஷ்மண! விஷயமிப்படி இருப் பதால் | दृढः भव | மன உறுதிகொண்ட நீர் ஆகும்.” [வராக |
| सीतार्थे | சீதாபிராட்டி விஷயத் திலும் | | |

श्रुत्वा तु व्याहृतं वाक्यं सूतस्य परमाद्भुतम् । प्रहर्षमतुलं लेभे साधु साध्वित् चान्रवीत् ॥

| | | | |
|--------------------|--|---|---|
| सूतस्य व्याहृतं | சாரதியினுடைய தான் நேரிலே கேட்டதும் | तु अनुक्तं प्रहर्षं लेभे साधु साधु | இப்பொழுது ஒப்புயர்வில்லாத மனத்திருப்தியை அடைந்தார். ' நன்று நன்று' |
| परमाद्भुतं | { சரியாய் அறியமுடி யாத ரஹஸ்யங்களை அடங்கியதுமான | इति च अत्रवीत् | என்றும் புகன்றார். |
| वाक्यं श्रुत्वा | மொழியைக் கேட்டு | | |

ततः संवदतोरेवं सूतलक्ष्मणयोः पथि । अस्तमर्के गते वासं गोमत्यां तावथोषतुः ॥३८॥

| | | | |
|--|---|---|--|
| सूतलक्ष्मणयोः एवं संवदतोः पथि गोमत्यां | ஸாரதியும் லக்ஷ்மண இவ்விதமாக [ரும் ஸம்பாஷணை செய் துகொண்டு செல் லுகையில் மார்க்கத்தில் கோமதிதீரத்தில் | अर्के अस्तं गते अथ ततः तौ वासं उषतुः | ஸூர்யன் அஸ்தமயமானபின்பு அப்பொழுது அவ்விடத்திலேயே அவ்விருவர்களும் இராப்பொழுதைக் கழித்தார்கள். |
|--|---|---|--|

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे एकपञ्चाशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22669



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 1945

द्विपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்திரண்டாவது ஸர்க்கம். ॥ ५२ ॥

श्रीरामसमाधानम्—ஸ்ரீராமரை ஸமாதானிப்பது.

तत्र तां रजनीमुख्य गोमत्यां रघुनन्दनः । प्रभाते पुनरुत्थाय लक्ष्मणः प्रययौ तदा ॥१॥

| | | | |
|--|--|---|--|
| रघुनन्दनः लक्ष्मणः तदा तां रजनीं तस्य | ரகுவம்சத்தவராகிய லக்ஷ்மணர் அப்பொழுது அந்த இரவை அந்த | गोमत्यां उष्य प्रभाते उत्थाय पुनः प्रययौ | கோமதிதீரத்தில் கழித்து மறுநாள் எழுந்து மறுபடி பிரயாணமானார். |
|--|--|---|--|

ततोऽर्धदिवसे प्राप्ते प्रविवेश महारथः । अयोध्यां रत्नसम्पूर्णां हृष्टपुष्टजनावृताम् ॥ २ ॥

महाराथः मஹாரதராகிய அவர்
 ततः அவ்வீடத்திலிருந்து
 अर्धदिवसे प्राप्ते மத்யாஹ்நன ஸபயத்
 தில்

रत्नसम्पूर्णां { எல்லாச் செல்வமும்
 பெற்றுள்ளனக்குகிற
 தும்

हृष्टपु- } மனத் திருப்திகொ
 जनावृतां } ண்ட மஹான்களால்
 நிறைந்துள்ள துமான

अयोध्यां அயோத்திக்கு
 प्रविवेश வந்துசேர்ந்தார்.

सौमित्रिस्तु परं दैन्यं जगाम सुमहामतिः । रामपादौ समासाद्य वक्ष्यामि किमहं गतः ॥

सुमहामतिः பிரஸித்திபெற்ற
 புத்திராலியாகிய

सौमित्रिः லக்ஷ்மணர்

गतः திரும்பிவந்துசேர்ந்து

अहं "நான்

रामपादौ ஸ்ரீராமரது திருவடி
 களை

समासाद्य அணுகி

तु திதானிஷ்டயத்தில்

किं யாதா

वक्ष्यामि விண்ணப்பம் செய்
 வேன்" என்று

परं அதிக

दैन्यं மனத்தளர்ச்சிகைய

जगाम அடைந்தார்.

तस्यैवं चिन्तयानस्य भवनं शशिसन्निभम् । रामस्य परमोदारं पुरस्तात्समदृश्यत ॥ ४ ॥

पूर्वं இப்படி
 चिन्तयानस्य விசாரமுற்றவராய்

सस्य சென்றுகொண்டிருந்த

पुरस्तात् அவருக்கு

रामस्य கண்முன்

भवनं ஸ்ரீராமருடைய

शशिसन्निभं சந்திரனைப்போன்ற
 தாய்

परमोदारं மிக்க அழகுவாய்ந்த

भवनं மாளிகை

समदृश्यत தோற்றிற்று.

राज्ञस्तु भवनद्वारि सोऽवतीर्थं रथोत्तमात् । अवाङ्मुखो दीनमनाः प्रविवेशानिवारितः ॥

सः அவர்

राज्ञः மன்னரது

भवनद्वारि மாளிகைவாயிலில்

रथोत्तमात् சிறந்த தேரினின்று

अवतीर्थं இறங்கி

अवाङ्मुखः தலைகுனிந்துகொண்டு

दीनमनाः மனம்நொந்தவராய்

अनिवारितः தடையின்றி

तु இப்பொழுது

प्रविवेश உள்ளே போனார்.

स दृष्ट्वा राघवं दीनमासीनं परमासने । नेत्राभ्यापश्रुपूर्णाभ्यां ददर्शाग्रजमग्रतः ॥ ६ ॥

सः அவர்

राघवं ஸ்ரீராகவரை

दृष्ट्वा கண்டு

अग्रजं தமயனரை

नेत्राभ्यां இருகண்களிருந்து

अश्रुपूर्णाभ्यां கண்ணீரைப்பிரவாஹ
 மாய் விட்டுக்கொண்டு

दीनं சந்தை நொந்தவராய்

परमासने சிறந்த ஆஸனத்தில்

आसीनं உட்கார்ந்துகொண்டி
 ருப்பவராய்

अग्रतः முதலில்

ददर्श कவனித்து மனதில்
 வாங்கிக்கொண்டார்.

जमाह चरणौ तस्य लक्ष्मणो दीनचेतनः । उवाच दीनया वाचा प्राञ्जलिः सुसमाहितः ॥

सुसमाहितः कार्यத்தை சரியாய்
முடித்து விட்ட
लक्ष्मणः லக்ஷ்மணர்
तस्य அவரது
चरणौ திருவடிகளில்
जमाह தண்டன் ஸமர்ப்பித்
தார்.

प्राञ्जलिः கைகூப்பிக்கொண்டு
दीनचेतनः சிந்தை நொந்தவராய்
दीनया சிந்தையின் துயரத்
தை விளக்கும்
वावा சொற்கொண்டு
उवाच இப்படி விண்ணப்பம்
செய்தார் :

आर्यस्याज्ञां पुरस्कृत्य विसृज्य जनकात्मजाम् । गङ्गातीरे यथोद्दिष्टे वाल्मीकेराश्रमे शुचौ ॥

पुनरप्यागतो वीर पादमूलमुपासितुम्

॥ ८ ॥

वीर " மஹா தைரியசாலி
யே !
आर्यस्य ஆரியரது
आज्ञा ஆக்களுயை
पुरस्कृत्य சிறமேற்கொண்டு
जनकात्मजां अपि ஜனகரின் திருமகளை
யும்
गङ्गातीरे கங்காதிர் தத்தில்
यथोद्दिष्टे குறிப்பிட்டவிட
மாகிய

वाल्मीकेः வால்மீகிமஹரிஷி
யினது
शुचौ புண்ப
आश्रमे ஆசிரமத்தில்
विसृज्य விட்டு
पादमूलं திருவடிவாரத்தில்
उपासितुं காத்துப் பணிவிடை
செய்ய
पुनः திரும்பி
आगतः வந்துசேர்ந்தேன்.

मा शुचः पुरुषव्याघ्र कालस्य गतिरीदृशी । त्वद्विधा न हि शोचन्ति बुद्धिमन्तो मनस्विनः ॥

पुरुषव्याघ्र " புருஷச் சீரேஷ்ட !
मा शुचः சிந்தைகலங்கி சோகிக்
கலாகரது.
कालस्य கால
गतिः கதி
ईदृशी இத்தன்மையானது ;

त्वद्विधाः தேவரீரைப்போன்ற
बुद्धिमन्तः புத்திமார்களான
मनस्विनः மஹான்கள்
शोचन्ति न செய்ததற்கு பச்சாத்
தாபப்படார்கள்.

सर्वे क्षयान्ता निचयाः पतनान्ताः समुच्छ्रयाः ।

संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं च जीवितम्

॥ १० ॥

सर्वे " எல்லா
निचयाः சேர்த்துவைக்கப்பட்ட
ட ஐச்வரியங்கள்
क्षयान्ताः அழிவுக்குட்பட்ட
வைகள்.
समुच्छ्रयाः பெரும்பதவிகள்
पतनान्ताः கீழேவிழுதலுக்குட்
பட்டவைகள்.

संयोगाः ஸம்யோகங்கள்
विप्रयोगान्ताः வியோகங்களுக்குட்
பட்டவைகள்.
जीवितं च உயிர்வாழ்க்கையும்
मरणान्तम् மாணத்திற்குட்
பட்டது.

तस्मात्पुत्रेषु दारेषु मित्रेषु च धनेषु च । नातिप्रसङ्गः कर्तव्यो विप्रयोगो हि तैर्ध्रुवम् ॥

| | | | |
|------------|-----------------|-------------|---------------------|
| तस्मात् | “ஆதலின் | धनेषु च | தனங்கள் விஷயத் |
| पुत्रेषु | புத்திரர்களிடத் | | நிலும் |
| | திலும் | अतिप्रसङ्गः | அதிகமான மனப் |
| दारेषु | களத்திரக்களிடத் | कर्तव्यः न | வைக்கலாகாது. [பற்று |
| | திலும் | तैः | அவைகளோடு |
| मित्रेषु च | மித்திரர்களிடத் | विप्रयोगः | வியோகம் |
| | திலும் | ध्रुवं हि | நிச்சயமே. |

शक्तस्त्वमात्मनाऽऽत्मानं विनेतुं मनसैव हि । लोकान्सर्वांश्च काकुत्स्थ किं पुनः शोकमात्मनः ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|----------|------------------|
| काकुत्स्थ | “காகுத்தரே ! | शक्तः | வல்லவர். |
| स्वं हि | தேவரீர் ஒருவரே | आत्मनः | தேவரீருடைய |
| आत्मना | தெய்வசக்தியால் | आत्मानं | மானிடப்பிரகிருதி |
| सर्वान् | எல்லா | | ஸம்பவமான |
| लोकान् च | உலகங்களையும் | शोकं | மனக்கவலையைப் |
| मनसा एव | இச்சித்தமாத் திரத் | | பற்றி |
| | திலேயே | किं पुनः | ஒருபெரியகாரியமர |
| विनेतुं | அளிக்கவும், அடக்கி | | என்ன ? |
| | ஆளவும் அழிக்கவும் | | |

नेदृशेषु विमुह्यन्ति त्वद्विधाः पुरुषर्षभाः । अपवादः स किल ते पुनरेष्यति राघव ॥१३॥

| | | | |
|---------------|--------------------|--------|-----------------|
| राघव | “வேறே ஸ்ரீராகவ ! | किल | அப்படியிரா திரு |
| त्वद्विधाः | தேவரீரைப்போன்ற | | ந்தால் |
| पुरुषर्षभाः | புருஷோத்தமர்கள் | ते | தேவரீருக்கு |
| ईदृशेषु | இவ்விதமான விஷய | सः | அந்த |
| | ங்களில் | अपवादः | அபவாதம் |
| विमुह्यन्ति न | மனநிலைகலங்கார்கள். | पुनः | புதிதாய் |
| | | एष्यति | உண்டாகும். |

यदर्थं मैथिली त्यक्त्वा अपवादभयान्नृप । सोऽपवादः पुरे राजन्भविष्यति न संशयः ॥

| | | | |
|------------|---------------------|-----------|-----------------|
| राजन् | “கூதத்திரிய | त्यक्त्वा | தூறக்கப்பட்டாள் |
| नृप | சக்கிரவர்த்தியாரே ! | | என்கிற |
| अपवादभयात् | அபவாதத்தின்பயம் | सः | அந்த |
| यदर्थं | என்னும் காரணத் | अपवादः | அபவாதம் |
| | திற்காகத்தான் | पुरे | நகரில் |
| मैथिली | மைதிலியார் | भविष्यति | உண்டாகும். |
| | | संशयः न | இதற்கையமில்லை. |

स त्वं पुरुषशार्दूल धैर्येण सुसमाहितः । त्यजैनां दुर्वलां बुद्धिं सन्तापं मा कुरुष्व ह ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|------------|-------------------|
| புரஷஸார்டூல் | “ ஹே புருஷோத் | दुर्वलां | தளர்ச்சியான |
| सः | अन्त [தம! | बुद्धिं | சித்தவிகாரத்தை |
| त्वं | தேவரீர் | त्यज | தேவரீர் ஒழித்தருள |
| धैर्येण | தைரியத்தைக்கொ | | வேண்டும். |
| सुसमाहितः | நன்றாய் மனச் [ண்டு | सन्तापं ह | ஸந்தாபத்திற்கே |
| | சாந்தமுடையவராசி | मा कुरुष्व | தேவரீர் இடங்கொடா |
| एनां | இந்த | | கிருக்கவேண்டும்.” |

एवमुक्तः स काकुत्स्थो लक्ष्मणेन महात्मना । उवाच परया प्रीत्या सौमित्रिं मित्रवत्सलः ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|-----------|----------------------|
| मित्रवत्सलः | அடியார்களிடத்தில் | प्रीत्या | அன்பால் |
| | வா தஸல்யமுள்ள | एवं | இப்படி |
| सः काकुत्स्थः | அந்த காகுத்தர் | उक्तः | சொல்லியதற்குத் |
| महात्मना | மஹாத்மாவான | | திருச்செவிகாயத்து |
| लक्ष्मणेन | லக்ஷ்மணரால் | सौमित्रिं | லக்ஷ்மணருக்கு |
| परया | அளவுகடந்த | उवाच | இந்தப் பதிலை அருளிச் |
| | | | செய்தார். |

एवमेतन्नरश्रेष्ठ यथा वदसि लक्ष्मण । परितोषश्च मे वीर मम कार्यानुशासने ॥ १७ ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|-----------|----------------|
| नरश्रेष्ठ | “ புருஷோத்தமா ! | परितोषः च | அதிகஸந்தோஷந் |
| वीर | வீரனாகிய | | தான். |
| लक्ष्मण | ஹே லக்ஷ்மண ! | वदसि | நீ சொல்லுகிறது |
| मम | எனது | यथा | எதோ |
| कार्यानुशासने | ஆக்கிரணையைச் செய்து | एतत् | இது |
| मे | எனக்கு [முடித்ததில் | एवम् | உண்மையே. |

निर्वृतिश्चागता सौम्य सन्तापश्च निराकृतः । भवद्वाक्यैः सुहचिरैरनुनीतोऽसि लक्ष्मण ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|-------------|------------------|
| सौम्य | “ மஹா புண்யசாலி | अनुनीतः | மனந்தேறியவனாய் |
| | யாகிய | अस्मि | நான் ஆயினேன். |
| लक्ष्मण | ஹே லக்ஷ்மண ! | सन्तापः च | ஸந்தாபமும் |
| सुहचिरैः | அதிக அனுசலமாயி | निराकृतः | ஒழிந்தது. |
| | ருக்கின்ற | निर्वृतिः च | மனத்திருப்தியும் |
| भवद्वाक्यैः | உன் பிரமாணங்களால் | आगता | உண்டாயிற்று.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे द्विपञ्चाशः सर्गः ॥



त्रिपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்துமுன்றாவது ஸர்க்கம். || 43 ||

नृगशापः—நிருகமஹாராஜாவின் சாபம்.

लक्ष्मणस्य तु तद्वाक्यं निशम्य परमाद्भुतम् । सुप्रीतश्चाभवद्भ्रामो वाक्यमेतदुवाच ह ॥ १ ॥

ராம: ஸ்ரீராமர்
 लक्ष्मणस्य லக்ஷ்மணருடைய
 परमाद्भुतं அதிஅற்புதமான
 तत् वाक्यं அந்த வாக்கியத்திற்கு
 निशम्य திருச்செவ்சாய்த்து
 च அதனால்

सुप्रीतः ஸ்ரீராமர் திருப்பதி
 கொண்டவராகவே
 भभवत् ஆயினார்.
 तु அதன்மேல்
 एतत् वाक्यं இந்த வாக்கியத்தை
 उवाच நியமித்தருளினார்;

चत्वारो दिवसाः सौम्य कार्यं पौरजनस्य वै । अकुर्वाणस्य सौमित्रे तन्मे मर्माणि कृन्तति ॥

சௌம்ய “மஹா ஆபத்தாகிய
 सौमित्रे ஹே லக்ஷ்மண!
 चत्वारः நான்கு
 दिवसाः தினங்களாக
 पौरजनस्य நகரத்தாருடைய

अकुर्वाणस्य सौमित्रे तन्मे मर्माणि कृन्तति ॥
 कार्यं वै கார்யமொன்றையும்
 अकुर्वाणस्य செய்யாதிருக்கிற
 मे मर्माणि எனது உயிர்நிலைகளை
 तत् அது
 कृन्तति துளைக்கிறது.

आहूयन्तां प्रकृतयः पुरोधा मन्त्रिणस्तथा । कार्यार्थिनश्च पुरुषाः स्त्रियश्च पुरुषर्षभ ॥३॥

புஷ்பம் “ஹே புருஷோத்தம!
 प्रकृतयः அன்பர்களும்
 पुरोधा: புரோகிதர்களும்
 मन्त्रिणः மந்திரிகளும்
 तथा அப்படியே

कार्यार्थिनः நேரில் மனுச்செய்ய
 வந்திருக்கும்
 पुरुषाः च புருஷர்களும்
 स्त्रियः च ஸ்த்ரீகளும்
 आहूयन्ताम् அழைக்கப்பட்டும்.

पौरकार्याणि यो राजा न करोति दिने दिने । संवृते नरके घोरे पतितो नात्र संशयः ॥

ய: “எந்த
 राजा அரசன்
 दिने दिने பிரதிதினமும்
 पौरकार्याणि பிரஜைகளுடைய
 करोति न கவனியாமலிருக்க
 கிறானே, அவன்

संवृते தனிப்பட்ட
 घोरे கோரமான
 नरके நரகத்தில்
 पतितः வீழ்ந்து தவிப்பான்.
 अत्र இதில்
 संशयः न ஸந்தேஹம்வேண்டாம்.
 டாம்.

श्रूयते हि पुरा राजा नृगो नाम महायशाः । बभूव पृथिवीपालो ब्रह्मण्यः सत्यवाक् शुचिः॥

श्रूयते हि { “திருஷ்டார்த்தம் கூறு
 கின்றேன். கேட்கப்
 பட்டும்.
 पुरा ஸ்ரீவத்தில்
 नृगः नाम நிருகன் என்ற
 राजा ஒரு ராஜன்

पृथिवीपालः பூபதியெனவும்
 ब्रह्मण्यः வேதவித்தெனவும்
 सत्यवाक् ஸத்தியம் தவறா
 தவனெனவும்
 शुचिः சுத்தனெனவும்
 महायशाः மஹா புகழ்பெற்ற
 बभूव இருந்தான். [வனும்

स कदाचिद्वां कोटीः सवत्साः स्वर्णभूषिताः । नृदेवो भूमिदेवेभ्यः पुष्करेषु ददौ नृपः ॥

ச: "அந்த
 நூப: சக்கிரவர்த்தியாகிய
 நூதேவ: பார்த்திவன்
 கதாசிவ: ஒருகால்
 பூமிதேவைய: பிராமணர்களுக்கு
 புஷ்கரேசு புஷ்கரசேஷத்திரங்கலில்

स्वर्णभूषिता: { பொன்னுபரணங்க
 ளால் அலங்கரிக்கப்
 பட்ட
 सवत्सा: கன்றுகளுடனேகூடிய
 कोटी: கோடிக்கணக்கான
 गवां பசுக்களை
 ददौ தானஞ்செய்தான்.

ततः सङ्गाद्गता धेनुः सवत्सा स्पर्शिताऽनघ । ब्राह्मणस्याहिताग्नेश्च दरिद्रस्योञ्छवर्तिनः ॥

अनघ "ஹே புண்யாந்தமா!
 दरिद्रस्य தரித்திரனும்
 उञ्छवर्तिनः உஞ்சவ்ருத்தியால்
 ஜீவிப்பவனும்
 आहिताग्ने: ஆஹிதாக்கனியுமான
 ब्राह्मणस्य ஒரு அந்தனனுடைய
 सवत्सा கன்றோடுகூடிய
 धेनु: ஒருபசு

सङ्गात् { போஷித்துவளர்த்து
 வந்தவரிடத்திலி
 ருந்து
 तत: அவ்விடத்திற்கு
 गता தப்பிவந்திருந்தது.
 स्पर्शिता च { அதுவும் தானமாய்
 கொடுத்துவிடப்
 பட்டது.

स नष्टां गां क्षुधार्ता वा अन्विष्यंस्तत्र तत्र च । नापश्यत्सर्वराज्येषु संवत्सरगणान्वहून् ॥

क्षुधार्त: "பசிசால் துன்புறும்
 स: அவன்
 नष्टां காணாமற்போன
 गां பசுவை
 तत्र तत्र அங்கங்கு
 सर्वराज्येषु च எல்லாதேசங்களிலும்

बहून् பல
 संवत्सरगणान् वै ஆண்டுகளாயும்
 अन्विष्यन् தேடினான்.
 न अपश्यत् அவன் காணாமலிருந்தான்.

ततः कनखलं गत्वा जीर्णवत्सां निरामयाम् । ददर्श गां स्वकां धेनुं ब्राह्मणस्य निवेशने ॥

तत: "இந்தஸ்திதியில்
 कनखलं கனகலமென்னும் ஒரு
 'கிராமத்திற்கு
 गत्वा வந்துசேர்ந்து
 ब्राह्मणस्य ஒருவேதியனது
 निवेशने வீட்டில்

स्वकां தனது
 धेनुं பசுவை
 जीर्णवत्सां கன்று இளைத்திருக்க
 गां தாயை [வும்
 निरामयां ஆரோக்கியமாயிருக்க
 ददर्श கண்டான். [வும்

अथ तां नामधेयेन स्वकेनोवाच स द्विजः । आगच्छ शबलेत्येवं सा तु शुश्राव गौः स्वरम् ॥

स: "அந்த
 द्विज: பிராம்மணன்
 अथ அப்பொழுது
 तां அதைப்பார்த்து

स्वकेन தானிட்டதான்
 शबला சபலா (காமதேனு)
 नामधेयेन என்ற பெயரால்
 इति கூவி

| | | | |
|--------|---------------|-------|-----------------|
| ஆகாஷ்ட | வா, என்று | ஏவ் | இப்படிப்பட்ட |
| உவாச | கூப்பிட்டான். | ஸ்வரீ | சூரலை |
| சா | அந்த | சுபாவ | செவிகொடுத்து கவ |
| சு: து | பசுவும் | | னித்தது. |

தஸ்ய து ஸ்ரமஜ்ஞாய ஶுதார்தஸ்ய த்வீஜஸ்ய வீ | அந்வகாதுபூத: சா சூரீகக்ஷந்தீ பாவகூபமம் ||

| | | | |
|------------|---------------|-------------|--------------------|
| சா | “ அந்த | து | அதனால |
| சு: | பசு | பாவகூபம் | அக்னிபூன்ற தே |
| சுதார்தஸ்ய | பசியால் வடிய | | ஜோமயனாய் |
| தஸ்ய | அந்த | கக்ஷந்தீ வீ | தீரும்பிச்செல்லும் |
| த்வீஜஸ்ய | வேதியனது | | அவனையே |
| ஸ்வரீ | சூரலை | பூத: | பின் |
| அஜ்ஞாய | அழிந்துகொண்டு | அந்வகா | தொடர்ந்துசென்றது. |

யூஸ்பி பாலயதே விபு: சூஸ்பி காமந்வகாதுதம் | கதவா தமூபிமாசுதம் மம சூரீரீதி சத்வரம் ||
ஸ்பீரீதா ராசீரீதேன மம ததா நூகே ன | தயூபூரீகக்ஷணயூவாது மகானாசூரீதிபதீதூ: || 1 3 ||

| | | | |
|---------|--------------------|------------|---------------------|
| ய: | “ எந்த | ராசீரீதேன | ராஜோத்தமாரான |
| விபு: | பிராம்மணன் | நூகே | நிருகரால் |
| பாலயதே | பூவதித்துவந்தானே | மம | எனக்கு |
| ஸ: அபி | அவனும் | ஸ்பீரீதா | தானமாய் |
| சா | பசுவை | ததா | கூடுக்கப்பட்டது. |
| தூதீ | வேகமாய் | ன | இது என்ன கஷ்டம் |
| அந்வகா | பின்பற்றி ஓடினான். | னுதி | என்று |
| தீ | அந்த | அசுத | மன்றடினான். |
| க்ஷீ | நிஷியை | விபதீதூ: | மஹா ஞானிகளாகிய |
| சத்வரீ | தூரிதமாய் | தயூ: | அவ்நிரு |
| கதவா | அடைந்து | பூகக்ஷணயூ: | பிராம்மணர்களுக்கும் |
| மம | என்னுடைய | மகானூ வதூ: | பெரிய விவாதம் |
| சு: அபி | பசுதான். | அசூரீ | உண்டாயிற்று. |

விவதநூ தூஸூந்யூ தாதாரமபிஜமது: | தூ ராசீரீதேன ந பூரூரூ நூகக்ஷணயூ ||

| | | | |
|-----------|----------------|-----------|----------------------|
| தத: | “ அப்பொழுது | அபிஜமது: | பூய்ச்சேர்த்தார்கள். |
| விவதநூ | பூரூரூய | ராசீரீதேன | ராஜமாளிகையிலி |
| தூ | இருவர்களும் | நூகக்ஷணயூ | நிருகனது அனுமதி |
| அந்யூந்யூ | பரஸ்பரமூபூபூ | | யை |
| தாதாரீ | தானம் கூடுத்தவ | ந பூரூரூ | பெறவில்லை. |
| | ரீடம் | | |

अहोरात्राप्यनेकानि वसन्तौ क्रोधमीयतुः । ऊचतुश्च महात्मानो तावुभौ द्विजसत्तमौ ॥
 क्रुद्धौ परमसन्तप्तौ वावयं घोराभिसंहितम् ॥ १५ ॥

अनेकानि “ பல
 अहोरात्राणि பகலும், இரவும்
 वसन्तौ காத்துக்கொண்டிருந்த
 तौ उभौ அந்த இரண்டு
 द्विजसत्तमौ பிராமணுத்தமர்கள்
 क्रोधं கோபத்தை
 ईयतुः அடைந்தார்கள்.

क्रुद्धौ கோபங்கொண்ட
 वरंकराय வர்களாய்
 परमसन्तप्तौ அதிகமான வேதனை
 ययुदयைய யையுடைய
 महाःमानौ च மஹாத்மாக்கள்
 घोराभिसंहितं மிக்ககடுமையான
 वावयं சரபத்தை
 ऊचतुः இட்டார்கள்.

अर्थिनां कार्यसिद्ध्यर्थं यस्मात्त्वं नैषि दर्शनम् । अदृश्यः सर्वभूतानां कृकलासो भविष्यसि ॥

कार्यसिद्ध्यर्थं “ ஒருகாரியத்தை
 வேண்டி.
 यत्नं யாசித்துக் காத்துக்
 கொண்டிருக்கிறவர்
 कर्तुं களுக்கு
 त्वं நீ
 दर्शनं தரிசனம்

न एषि கொடுக்காதிருக்கிறாய்
 यस्मात् என்கிற காரணத்தால்
 सर्वभूतानां எல்லாப் பிராணிக
 ऋक्कुम् ணுக்கும்
 अदृश्यः கண்களுக்கு தோற்
 कृकलासः ஒணைய [ருத்
 भविष्यसि ஆக்ககடவாய்.

बहुवर्षसहस्राणि बहुवर्षशतानि च । श्वभ्रेऽस्मिन्कृकलासो वै दीर्घकालं वसिष्यसि ॥

श्वभ्रे “ ஒருகுழியில்
 कृकलासः ஒணைகி
 अस्मिन् वै அதிலேயே
 बहुवर्षसहस्राणि அனேகமாயிரம் ஆண்
 ऋக்ரும்

बहुवर्षशतानि च அனேகநூறு ஆண்டு
 कर्णुमान என்கிற
 दीर्घकालं தீர்க்ககாலம்
 वसिष्यसि வலித்திருப்பாயாக.

उत्पत्स्यते हि लोकेऽस्मिन्यदूनां कीर्तिवर्धनः । वासुदेव इति ख्यातो लोके पुरुषविग्रहः ॥

पुरुषविग्रहः “ மானிட உருவங்
 கொண்டவராய்
 यदूनां யாதவர்களின்
 कीर्तिवर्धनः கீர்த்திக்குக் காரண
 प्रुत्तरாய்
 लोके உலகில்

वासुदेवः வாஸு-தேவர்
 इति என்று
 ख्यातः हि பெயருடையவராயும்
 अस्मिन् இந்த
 लोके லோகத்தில்
 उत्पत्स्यते அவதரிப்பார்.

स ते मोक्षयिता राजंस्तस्माच्छापाद्भविष्यति ।
 कृता च तेन कालेन निष्कृतिस्ते भविष्यति ॥ १९ ॥

सः “**ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணு**
 तेन कालेन **அகற்குரியகாலத்தீல்**
 भविष्यति **அவதரிப்பார்.**
 राजन् **அரசே!**
 ते **உன்னுடைய**
 तस्मात् **அந்த**

शरात् **சாபத்திலிருந்து**
 मोक्षयिता **விடுமாசனம்செய்வார்.**
 ते **உனக்கு**
 निष्कृतिः च **பூர்வஸ்திதியும்**
 कृता भविष्यति **உண்டுபண்ணப்படும்.**

एवं तौ शापमुत्सृज्य ब्राह्मणौ विगतज्वरौ । तां गां हि दुर्बलां वृद्धां ददतुब्राह्मणाय वै ॥

एवं स राजा तं शापमुपभुङ्क्ते सुदारुणम्

॥ २० ॥

तौ “**அவ்விரு**
 ब्राह्मणौ वै **பிராமணர்களும்**
 शापं **சாபத்தை**
 एवं **இப்படி**
 उत्सृज्य **கொடுத்துவிட்டு**
 विगतज्वरौ **விவாதமொழிந்தவர்**

तां **அந்த**
 गां हि **பசுவையும்**
 ददतुः **தானையை கொடுத்து**
 सः **அந்த [விட்டார்கள்.**
 राजा **அரசன்**
 एवं **இப்படி**
 सुदारुणं **மிகக்கொடியதாகிய**

कलारुणि

ब्राह्मणाय **ஒரு பிராமணனுக்கு**

दुर्बलां **இளைத்துப்போன**

वृद्धां **தும்**

कार्याथिनां विमर्दो हि राज्ञां दोषाय कल्पते । तच्छीघ्रं दर्शनं महामभिवर्तन्तु कार्यिणः ॥

कार्याथिनां “**காரியமாய் வந்தவர்**

विमर्दः **அபசாரமானது**

राज्ञां हि **அரசர்களுக்கும்**

दोषाय **பாதகத்திற்கு**

कल्पते **ஹேதுவாகிறது.**

तत् **ஆகையால்**

तां **அந்த**

गां हि **பசுவையும்**

ददतुः **தானையை கொடுத்து**

सः **அந்த [விட்டார்கள்.**

राजा **அரசன்**

एवं **இப்படி**

सुदारुणं **மிகக்கொடியதாகிய**

तं **அந்த**

शापं **சாபத்தை**

उपभुङ्क्ते **அனுபவித்துக்கொ**

णाय वै **ண்டிருக்கிறான்.**

कलारुणि

ब्राह्मणाय **ஒரு பிராமணனுக்கு**

दुर्बलां **இளைத்துப்போன**

वृद्धां **தும்**

कार्याथिनां विमर्दो हि राज्ञां दोषाय कल्पते । तच्छीघ्रं दर्शनं महामभिवर्तन्तु कार्यिणः ॥

कार्याथिनां “**காரியமாய் வந்தவர்**

विमर्दः **அபசாரமானது**

राज्ञां हि **அரசர்களுக்கும்**

दोषाय **பாதகத்திற்கு**

कल्पते **ஹேதுவாகிறது.**

तत् **ஆகையால்**

तां **அந்த**

गां हि **பசுவையும்**

ददतुः **தானையை கொடுத்து**

सः **அந்த [விட்டார்கள்.**

राजा **அரசன்**

एवं **இப்படி**

सुदारुणं **மிகக்கொடியதாகிய**

तं **அந்த**

शापं **சாபத்தை**

उपभुङ्क्ते **அனுபவித்துக்கொ**

णाय वै **ண்டிருக்கிறான்.**

चतुःपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்துநான்காவது ஸர்க்கம். || ५४ ||

नृगस्य कृकलासत्वप्राप्तिः—நிருகர் ஓணுணுருவத்தையடைவது.

रामस्य भाषितं श्रुत्वा लक्ष्मणः परमार्थवित् । उवाच प्राञ्जलिर्वाक्यं राघवं दीप्ततेजसम् ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------|------------|-------------------------|
| परमार्थवित् | மஹா தத்வக்ஞானி யாக்ய | दीप्ततेजसं | தேஜோமயமாய் விளங்கும் |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | राघवं | ஸ்ரீராகவரைப்பார் த்து |
| रामस्य | ஸ்ரீராமரது | प्राञ्जलिः | கைகூப்பிக்கொண்டு |
| भाषितं | திருவராக்ஞக்கு | वाक्यं | இந்த விண்ணப்பத் |
| श्रुत्वा | செவிகாய்த்து | उवाच | செய்தருளிணர்: [தை |

अल्पापराधे काकुत्स्थ द्विजाभ्यां शाप ईदृशः । महानृगस्य राजर्षेयमदण्ड इवापरः ॥२॥

| | | | |
|-----------------|--------------------------------|---------|-------------------|
| काकुत्स्थ | “ஹே காசுத்தரே! | ईदृशः | இப்படிப்பட்டதாகிய |
| नृगस्य राजर्षेः | நிருகராஜரிஷியினது | शापः | சாபம் |
| अपराधे | அபராதம் அற்பமாயி ருக்கையில் | महान् | பெரிதாய் |
| द्विजाभ्यां | இரு பிராம்மணர் களுடைய | अरः | மற்றொரு |
| | | यमदण्डः | யமதண்டம் |
| | | इव | போலிருக்கிறது. |

श्रुत्वा तु पापसंयुक्तमात्मानं पुरुषर्षभ । किमुवाच नृगो राजा द्विजौ क्रोधसमन्वितौ ॥३॥

| | | | |
|-------------|-----------------|---------------|------------------------|
| पुरुषर्षभ | “ஹே புருஷோத்தம! | क्रोधसमन्वितौ | கோபாவேசங்கொ ண்ட |
| नृगः | நிருக | द्विजौ | இருபிராமணர் களுக்கு |
| राजा | மன்னர் | तु | இதுவிஷயமாய் |
| आत्मानं | தனக்கு | किं | என்ன |
| पापसंयुक्तं | இடப்பட்டவிபத்தை | उवाच | பதிலைச் சொன்னார் ३ |
| श्रुत्वा | கேட்டு | | |

लक्ष्मणेनैवमुक्तस्तु राघवः पुनरब्रवीत् । शृणु सौम्य यथापूर्वं स राजा शापविक्षतः ॥४॥

| | | | |
|-----------|-------------------------------------|------------|---------------------------|
| लक्ष्मणेन | இலக்ஷ்மணரால் | सौम्य | “ஹே ஸௌமய, |
| एवं | இங்ஙனம் | सः | அந்த |
| उक्तः | வினாவியதற்கு திருச் செவிகாய்த்து | राजा | ராஜன் |
| राघवः | ஸ்ரீராகவர் | शापविक्षतः | சாபசிகைக்கூபெற்ற வனாய் |
| तु | இவ்விஷயத்திலிப்படி | यथापूर्वं | பூர்வம் நடந்தவா லாற்றை |
| पुनः | விஸ்தாரமாய் | शृणु | சொல்லுகிறேன் கேள். |
| अब्रवीत् | பதில்சொல்லியரு ளிணர்: | | |

अथाध्वनि गतौ विप्रौ विज्ञाय स नृगस्तदा । आहूय मन्त्रिणः सर्वाङ्गैर्गभानसपुरोवसः ॥
तानुवाच नृगो राजा सवाश्व प्रकृतीस्तथा । दुःखेन सुसमाविष्टः श्रूयतां मे समाहितैः ॥

சு: “அந்த
நூ: நிருகன்
விப்ரோ இருபிராமணர்களை
ததா அப்பொழுது [யும்
அத்வனி தொழையிஸ்
கதூ போய்விட்டவர்களாய்
விஜ்நாய அறிந்து
அத தன்மேல்
சபுரூவச: புரூகிகர்களோடு
சமீந் எல்லா [கூடிய
மந்ரிண: மந்திரிகளையும்
நீராமந் நூடு நகரத்தார்களை
யும்

சுநமாவிஸ்த: மிகவருந்திக்கொண்
நூ: நிருக [மருந்த
ராஜா ராஜன்
தானு அந்த
பகூரி: ஆலோசனைசபை
யோர்கள்
சரூ: ச எல்லாரையும்பார்க்குது
ததா இப்படி
உவாச விசித்தான்:
{ மனங்களை வேறுவிஷ
யங்களில் செலுத்தா
மலிருந்துகொண்டு
எனக்கு
சுரூயதாமு காதுகொடுத்துக்
கேட்கப்பட்டும்.

नारदः पर्वतशैव मम दत्त्वा महद्भयम् । गतौ त्रिभुवनं भद्रौ वायुभूतावनिन्दितौ ॥ ७ ॥

அநிந்நிதூ “தோஷாஹித
பதூ புண்யவான்களாகிய
நாரதர் என்பவரும்
பரீத: ச பர்வதர் என்பவரும்
மம எனக்கு
மஹ் பெரும்

மய் ஆபத்தை
தூவா விளைவித்துவிட்டு
விபுவந் தேவலோகத்திற்கு
வாயுபூதூ வாயுவேகங்கொண்ட
வர்களாய்
கதூ போய்விட்டார்கள்.

कुमारोऽयं वसुनीम स देवोऽद्याभिषिच्यताम् । श्वभ्रं च यत्सुखस्पर्शं क्रियतां शिल्पिभिर्ममा ॥ ८ ॥
यत्राहं संक्षयिष्यामि शापं ब्राह्मणनिःसृतम्

வசு: “வஸு
நாம என்ற
கூமார: இளவரசு
அய் இதோ இருக்கிறான்.
ச: அவன்
அத இப்பொழுது
தூவ: அரசாசக
அபிஷிச்யதா மருடாபிஷேகம் செய்
துவைக்கப்பட்டும்.
மம எனக்கு
சுஹ்ஸ்பர்சு சுகமாய்விடுப்பதற்
கேற்ற

சுஹ் ஒரு குகை
யத் ச எது ஆகுமோ அது
சிஸ்பிகளால்
கூரிதா நிருமிக்கப்பட்டும்.
யத அந்த இதில்
அஹ் நான்
பூஹ்ணனிஸூத் பிராம்மணர்களா
விடப்பட்ட
சாபம் சாபத்தை
சுக்ஷயிஷ்யாமி அனுபவித்துக் காலங்
கழிக்கிறேன்.

वर्षघ्नमेकं श्वभ्रं तु हिमघ्नमपरं तथा । ग्रीष्मघ्नं तु सुखस्पर्शमेकं कुर्वन्तु शिलिपिनः ॥ ९ ॥

शिलिपिनः “‘சிற்பிகள்
सुखस्पर्शं सुகமாய்வசுப்பதற்
एकं ஒரு [கேற்றதாய்
श्वभ्रं குகையை
वर्षघ्नं { மழைக்கால அலௌள
கர்யங்களுக்கு இட
மகாததாயும்
तथा அப்படியே
अपरं இன்னுமொன்றை

हिमघ्नं { பனிகால அலௌளகர்
யங்களுக்கிடமாகாத
தாயும்
तु இன்னும்
एकं ஒன்றை
ग्रीष्मघ्नं { வெயிற்சீரகால அலௌள
கர்யங்களுக்கிடமா
காததாயும்
तु இப்பொழுதே
कुर्वन्तु निरुமிக்கக்கடவார்
கள்.

फलवन्तश्च ये वृक्षाः पुष्पवत्यश्च या लताः । विरोप्यन्तां बहुविधाश्छायावन्तश्च गुलिमिनः ॥

बहुविधाः “‘நாநா விதமான
फलवन्तः பழங்களைத்தரும்
वृक्षाः மரக்கள்
ये च எவைகளோ அவை
களும்
पुष्पवत्यः புஷ்பங்களைத்தரும்

लताः கொடிகள், செடிகள்
याः च எவைகளோ, அவை
छायावन्तः நிழல்தரும் [களும்
गुलिमिनः च மரப்புதர்களும்
विरोप्यन्ताम् வைத்துகாப்பாற்றப்
படவேண்டும்.

क्रियतां रमणीयं च श्वभ्राणां सर्वतो दिशम् । सुखमत्र वसिष्यामि यावत्कालस्य पर्ययः ॥

श्वभ्राणां “‘குகைகளில்
सर्वतो दिशं च எல்லாப் புறமும்
रमणीयं ரமணீயமாயிருக்கு
மாறு
क्रियतां செய்யப்பட்டும்,
अस्र இவ்விடத்தில்

सुखं சுகமாக
कालस्य கெட்டகாலத்தினது
पर्ययः மாறுதல்
यावत् வரையில்
वसिष्यामि நான் வாசம்செய்கின்
றேன்.

पुष्पाणि च सुगन्धीनि क्रियन्तां तेषु नित्यशः । परिवार्य यथा मे स्युरर्ध्वं योजनं तथा ॥

सुगन्धीनि “‘நறுமண
पुष्पाणि च புஷ்பங்களுக்கும்
क्रियन्तां வைக்கப்பட்டும்,
तेषु இவ்விடங்களில்
अर्ध्वं योजनं அரையோஜனை தூரம்

मे எனக்கு
यथा எப்படியானால்
नित्यशः எப்பொழுதும்
परिवार्य ஒளிவிடமாருமோ
तथा அப்படியே
स्युः இருக்கவேண்டும்.

एवं कृत्वा विधानं स सन्दिदेश वसुं तदा । धर्मनित्यः प्रजाः पुत्र क्षत्रधर्मेण पालय ॥

तदा “‘அப்பொழுது
सः அவன்
एवं இந்தவிதமான
विधानं ஏற்பாட்டை
कृत्वा செய்துவிட்டு
वसुं வசுவைப்பார்த்து

सन्दिदेश இப்படி நியமித்தருளி
पुत्र 'ஹே புத்ர! [ஊன்:
धर्मनित्यः தருமத்திலேயே
प्रजाः ஆஸக்தியுடையவகை
क्षत्रधर्मेण பிரஜைகளை
पालय राजநீதி தவறாது
பரிபாலித்துவா.

प्रत्यक्षं ते यथा शापो द्विजाभ्यां मयि पातितः । नरश्रेष्ठ सरोषाभ्यामपराधेऽपि तादृशे ॥

नरश्रेष्ठ “ஹே புருஷோத்தம!
अपराधे अपि निனையாமல் செய்யப்
பட்ட குற்றமாயினும்
तादृशे அப்படிப்பட்ட
मयि என் விஷயத்தில்
सरोषाभ्यां கோபங்கொண்ட

द्विजाभ्यां இருபிராம்மணர்களு
शापः சாயம் [டைய
पातिरः சம்பவித்திருக்கிறது
यथा என்பது
ते உனக்கு
प्रत्यक्षम् பிரத்தியக்ஷப் பிரமா
ணமாகிறது.

मा कृथास्तनुसन्तापं मत्कृतेऽपि नरर्षभ । कृतान्तः कुशलः पुत्र येनास्मि व्यसनीकृतः ॥

नरर्षभ “ஹே புருஷோத்தம!
पुत्र ஹே குழந்தாய்!
कृतान्तः { பூர்வஜன்மக்கிரியை
களால் தப்பாது
நேரிடும் பயன்
कुशलः விதி
येन என்கிறபடியால்

व्यसनीकृतः கஷ்டத்திற்குப் பாத்
திராகை
अस्मि ஆயிருக்கிறேன்.
अपि ஆனபடியால்
मत्कृते எண்ணப்பற்றி
तनु-न्तापं मा कृथाः மனவேதனைப்பட்ட
வேண்டாம்.

प्राप्तव्यान्येव प्राप्नोति गन्तव्यान्येव गच्छति । लब्धव्यान्येव लभते दुःखानि च सुखानि च ॥
पूर्वे जात्यन्तरे वत्स मा विषादं कुरुष्व ह ॥ १६ ॥

वत्स “புத்திர!
पूर्वे जात्यन्तरे பூர்வஜன்மத்திலுள்ள
सुखानि சுகங்களை
प्राप्तव्यानि एव { புண்ணியங்களுக்கு
ஏற்பப்பெறத்தக்க
கவைகளையே
प्राप्नोति ह பெறுகிறான்.
दुःखानि துக்கங்களை
लब्धव्यानि } பாபங்களுக்கு ஏற்ப
एव { अनुपविच्छेत् தீர
வேண்டியவைகளையே

लभते அடைகிறான்.
च ஆகையால்
गन्तव्यानि च एव { இப்படி விதிவசப்
பட்டதாகிய காரியங்
களையே
गच्छति அனுஷ்டிக்கிறான்.
विषादं துக்கத்தை
मा कुरुष्व நீ அடையலாகாது.

एवमुक्त्वा नृपस्त्रज सुतं राजा महायशाः । श्वश्रं जगाम सुकृतं वासाय पुरुषर्षभ ॥१७॥

पुरुषर्षभ “புருஷோத்தம!
नृपः சக்கிரவர்த்தியென
महायशाः மஹா பிரஸித்தி
राजा ராஜன் [பெற்ற
तल அப்பொழுது
एवं இப்படி
सुतं மைந்தனுக்கு

उत्तवा புத்திமதிசொல்லி
விட்டு
सुकृतं நன்றாய் நிருமிக்கப்
श्वश्रं குகைக்கு [பட்ட
वासाय வஸிப்பதற்காக
जगाम போய்ச்சேர்ந்தான்.

एवं प्रविश्यैव नृपस्तदानीं श्वभ्रं महारत्रविभूषितं तत् ।

सम्पादयामास तदा महात्मा शापं द्विजाभ्यां हि रुषाविमुक्तम् ॥ १८ ॥

| | | | |
|----------------------|--|-------------|--------------------|
| तत् | “ ஆகையால் | प्रविश्य | வஸித்துக்கொண்டு |
| महात्मा | மஹாத்மாவாகிய | तदानीं | அக்காலத்தில் |
| नृपः एव | சக்கிரவர்த்தியும் | द्विजाभ्यां | பிராம்மணர்களிருவர் |
| तदा | அப்பொழுது | | களால் |
| महारत्र- विभूषितं | சிறந்த ரத்தினங்களி ழைத்து அழகாய் நிருமிக்கப்பட்ட | रुषा | கோபத்தால் |
| | | विमुक्तं | இடப்பட்ட |
| | | शापं हि | சாபத்தையே |
| श्वभ्रं | குகையில் | संपादयामास | இன்னுமனுபவித்துக் |
| एवं | இப்படி | | கொண்டிருக்கிறார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे चतुःपञ्चाशः सर्गः ॥

भादितः श्लोकाः 22727



उत्तरकाण्डे भादितः श्लोकाः 2003

पञ्चपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்தைந்தாவது ஸர்க்கம். ॥ ५५ ॥

निमिषसिष्टयोः परस्परं शापः—நிமிஷம் வஸிஷ்டரும் ஒன்றுக்கொன்று
சாபமிட்டக்கொள்வது.

एष ते नृगशापस्य विस्तरोऽभिहितो मया । यद्यस्ति श्रवणे श्रद्धा शृणुष्वेहापरां कथाम् ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------------|------------|---|
| मया | “என்றால் | | |
| ते | உனக்கு | | |
| नृगशापस्य | நிருகனுடைய சாபத் தைப்பற்றிய | श्रवणे | { இன்னும் தெரிந்து கொள்ளவேண்டு மென்கிற விஷயத் தில் |
| एषः | இந்த (கதை) | श्रद्धा | சிரத்தை |
| विस्तरः | விஸ்தாரமாய் | असि यद्दि | இருக்கிறதானால் |
| अभिहितः | சொல்லிமுடிக்கப் பட்டது. | इह | இவ்விஷயமாய் |
| | | अपरां कथां | வேறொரு கதையை |
| | | शृणुष्व | கூறுகின்றேன் கேள்.” |

एवमुक्तस्तु रामेण सौमित्रिः पुनरब्रवीत् । तृप्तिराश्चर्यभूतानां कथानां नास्ति मे नृप ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------------|----------------|-------------------|
| रामेण | ஸ்ரீராமரால் | अब्रवीत् | பதில் கூறினார்: |
| एवं | இவ்வண்ணம் | नृप | “சக்கிரவர்த்தியே! |
| उक्तः | சொல்லப்பட்டதற்கு செவியாய்த்த | मे | எனக்கு |
| सौमित्रिः | லக்ஷ்மணர் | आश्चर्यभूतानां | ஆச்சர்யமான |
| पुनः | திரும்பவும் | कथानां | கதைகளுக்கு |
| वृ | அப்பொழுது இப்படி | तृप्तिः | தெவிட்டல் |
| | | न अस्ति | கிடையாது.” |

लक्ष्मणेनैवमुक्तस्तु राम इक्ष्वाकुनन्दनः । कथां परमधर्मिणां व्याहर्तुमुपचक्रमे ॥ ३ ॥

लक्ष्मणेन
 एरं
 उक्तः
 इक्ष्वाकुनन्दनः

லக்ஷ்மணனால்
 இப்படி
 சொல்லப்பட்டதற்கு
 செவ்சிராய்த்த
 இக்ஷ்வாகுவம்சப்
 பிள்ளையாகிய

रामः
 तु
 परमधर्मिणं
 कथां
 व्याहर्तुं
 उपचक्रमे

ஸ்ரீராமர்
 இப்பொழுது
 பாம்புண்ணியத்தை
 கதையை [அளிக்கும்
 சொல்ல
 திருவுள்ளமுவந்தார்:

आसीद्राजा निमिर्नाम इक्ष्वाकूणां महात्मनाम् । पुत्रो द्वादशमो वीर्यं धर्मे च परिनिष्ठितः ॥

महात्मनां
 इक्ष्वाकूणां
 द्वादशमः
 पुत्रः
 वीर्यं

“மஹாத்மாக்களான
 இக்ஷ்வாகுவம்சத்த
 வர்களுடைய
 பன்னிரண்டாவது
 பிள்ளையாய்
 வீர்யத்திலும்

धर्मं च
 परिनिष्ठितः
 निमिः
 नाम
 राजा
 आसीत्

தர்மத்திலும்
 பாம்பிபுண்ணாய்
 நிமி
 என்ற
 மன்னர்
 இருந்தார்.

स राजा वीर्यसम्पन्नः पुंरं देवपुरोपमम् । निवेशयामास तदा अभ्याशे गौतमस्य तु ॥ ५ ॥

वीर्यसम्पन्नः
 सः राजा
 तदा
 गौतमस्य

“மஹாவீர்யவானாகிய
 அந்த மன்னர்
 ஒருகாலத்தில்
 கௌதமமுனிவரு
 டைய

अभ्याशे तु
 देवपुरोपमं
 पुंरं
 निवेशयामास

அருகிலேயே
 அமராவதிப்பட்டணத்
 திற்குகிரான
 ஒரு நகரை
 நிர்மிக்கச்செய்தார்.

पुरस्य सुकृतं नाम वैजयन्तमिति श्रुतम् । निवेशं यत्र राजर्षिर्निमिश्चक्रे महायशाः ॥ ६ ॥

पुरस्य
 वैजयन्तं
 इति
 नाम

“நகருக்கு
 வைஜயந்தம், (இந்திர
 னது அரண்மனை
 யின் பெயர்)
 என்று
 பெயர்கொடுக்கப்
 பட்டது.

सुकृतं
 श्रुतं
 यत्र
 राजर्षिः
 महायशाः
 निमिः
 निवेशं चक्रे

அதிக அழகுவாய்ந்த
 தாய்
 பெயர்பெற்றது.
 அதில்
 ராஜரிஷியென
 பெயர்பெற்ற
 நிமி
 வாஸஞ்செய்து
 வந்தார்.

तस्य बुद्धिः समुत्पन्ना निवेश्य सुमहापुरम् । यजेयं दीर्घसत्रेण पितुः प्रह्लादयन्मनः ॥

सुमहापुरं
 निवेश्य
 पितुः
 मनः
 प्रह्लादयन्

“மிகப்பிரவிரித்தி
 பெற்ற பட்டணத்தில்
 வாஸஞ்செய்து
 தந்தையின் [கொண்டு
 மனதை
 ஆனந்திக்கச்செய்து
 கொண்டு

यजेयं दीर्घसत्रेण
 यजेयं
 बुद्धिः
 तस्य
 समुत्पन्ना

தீர்க்கத்திரமென்
 கிற யாகத்தை
 செய்யவேண்டும்
 என்னும்
 விருப்பம்
 அவருக்கு
 உண்டாயிற்று.

ततः पितरमामन्त्र्य इक्ष्वाकुं हि मनोः सुतम् । वसिष्ठं वरयामास पूर्वं ब्रह्मर्षिसत्तमम् ॥
अनन्तरं स राजर्षिर्निर्मिरिक्ष्वाकुनन्दनः । अत्रिमङ्गिरसं चैव भृगुं चैव तपोधनम् ॥ ९ ॥

ततः “அப்பொழுது
இக்ஷ்வாகுகுலப்பிள்
னையும்
ராஜர்ஷியுமான
அந்த நிமி
முதலில்
தற்கையையும்
மனோ:
வைவஸ்வதமனுவிள்
சுதம்
குமாரரான
இக்ஷ்வாகுவையும்
பிரம்மரிஷிகளில்
ஜேஷ்டராகிய

வசிஸ்த்ஹி வலிஷ்டரையும்
அனந்தர் கூடவே
தபோதனராகிய
அதிர்மஹரிஷியை
யும்
அங்கிரஸ்மஹரிஷி
யையும்
புருகுமஹரிஷியையும்
அமந்ய வரவழைத்து
வரயாமாச அனுமதிக்கவேண்டிக்
கொண்டார்.

तमुवाच वसिष्ठस्तु निर्मि राजर्षिसत्तमम् । वृतोऽहं पूर्वमिन्द्रेणानन्तरं प्रतिपादय ॥ १० ॥

வசிஸ்த: “வலிஷ்டர்
ராஜர்ஷிசத்மம் ராஜரிஷிகளில் உத்த
தம் அந்த [மராகிய
நிர்மி நிமியைப்பார்த்து
ஸ இவ்விஷயத்திலிப்படி
ஸவாச சொன்னார்:

பூவ் ‘இதற்கு முன்னமே
ஈந்த்ரேண இந்திரனால்
அஹ் நான்
வூத: வரிக்கப்பட்டு ஒப்புக்
கொண்டுவிட்டேன்
அனந்தர் அது முடிந்தபின்னர்
புதிபாடிய நீ ஆரம்பிக்கலாம்.’

अनन्तरं महाविप्रो गौतमः प्रत्यपूरयत् । वसिष्ठोऽपि महातेजा इन्द्रयज्ञमथाकरोत् ॥ ११ ॥

அனந்தர் “அதன்மேல்
மஹாவிப: பிரசித்திபெற்ற அந்த
ணராகிய
கௌதமர்
புத்யபூரயத் இதைச் செய்துமுடி
க்க ஒப்புக்கொண்டார்.

அய அப்பொழுது
மஹாதேஜஸ்வியாகிய
வசிஸ்த: அபி வலிஷ்டரும்
ஈந்த்யஜ் இந்திரனது யாகத்
தை
அகரோத் நடத்தினார்.

निमिस्तु राजा विप्रांस्तान्समानीय नराधिपः । अयजद्विमवत्पार्श्वे स्वपुरस्य समीपतः ॥

பஹ் வர்ஷசஹ்ஸாணி ராஜா டிஷாமுபாஹமத்
நிமி: ராஜா “நிமிமன்னர்
பஹ் வர்ஷசஹ்ஸாணி ஐய்யாயிரமாண்டுகள்
ஷிஷா தீகைஷயை
ஸபாஹமத் வகித்தார்.
நராதிப: புருஷோத்தமராகிய
ராஜா மன்னர்
ஸ அப்பொழுது

॥ १२ ॥
தான் அந்த
விபிரான் அந்தணர்களை
சமானிய வரவழைத்து
ஸ்வபுரஸ்ய தன் நகரத்திற்கு
சமீபத: அருகே
ஹிமவர்பாஷ்ஹே இமயமலைச்சாரலில்
அயஜத் யாகத்தைச் செய்தார்.

इन्द्रयज्ञावसाने तु वसिष्ठो भगवानृषिः । सकाशमागतो राज्ञो हौतं कर्तुमनिन्दितः ॥१३॥

அநிந்நன: “தோஷர, வறித
 ऋषि: ரிஷியாகிய
 वसिष्ठ: வஸிஷ்ட
 भगवान् பகவான்
 इन्द्रयज्ञावसाने तु இந், திரனது யாகம்
 முடிந்ததும்

राज्ञः அரசரது
 हौतं யாக ஹௌதர்
 पारत्तதை
 कर्तुं வறிக்க
 सकाशं அவரிடம்
 आगतः எழுந்தருளினார்.

तदन्तरमथापश्यद्भौतमेनाभिपूरितम् । कोपेन महताऽऽविष्टो वसिष्ठो ब्रह्मणः सुतः ॥१४॥

ब्रह्मणः “பிரம்மாவின்
 सुतः புத்திரரான
 वसिष्ठः வஸிஷ்டர்
 अथ அப்பொழுது
 गौतमेन கொள, தமஹரிஷி
 யால்

अभिपूरितं முடிக்கப்பட்டுவிட்ட
 अपश्यत् கண்டார். [தாய்
 तत् ஆகையால்
 अनन्तरं உடனேயே
 महता பெரும்
 कोपेन கோபத்தால்
 आविष्टः மெய்மறந்தவராயினார்.

स राज्ञो दर्शनाकाङ्क्षी सुहूर्तं समुपाविशत् । तस्मिन्नहनि राजर्षिर्निद्रयाऽपहृतो भृशम् ॥

स: “அவர்
 राज्ञः மன்னரது
 दर्शनाकांक्षी தர்சனத்தைக்கருதி
 सुहूर्तं ஒரு முகூர்த்தகாலம்
 समुपाविशत् காத்திருந்தார்,
 तस्मिन् அந்த

अहनि தினத்தில்
 राजर्षिः ராஜரிஷி
 निद्रया நித்திரையால்
 भृशं காடமாய்
 अपहृतः மெய்மறந்து தூங்கி
 ளார்.

ततो मन्युर्वसिष्ठस्य प्रादुरासीन्महात्मनः । अदर्शनेन राजर्षेर्व्याहर्तुमुपचक्रमे ॥ १६ ॥

राजर्षेः “ராஜரிஷியின்
 अदर्शनेन தரிசனம் கிடைக்கா
 மையால்
 महारमनः மஹாத்மாவான
 वसिष्ठस्य வஸிஷ்டருக்கு

मन्युः கோபம்
 प्रादुरासीन् அதிகரித்தது.
 ततः அதனால்
 ५हाहर्तुं சாபநிட
 उपचक्रमे ஏற்பட்டார்.

यस्मात्त्वमन्यं वृत्वान्माभवज्ञाय पार्थिव । चेतनेन विनाभूतो देहस्तव भविष्यति ॥ १७ ॥

पार्थिव “அரசனே!
 मां என்னை
 अवज्ञाय அவமதித்து
 एवं நீ
 अन्यं வேறொருவரை
 वृत्वान् வரித்தாய்

यस्मात् என்கிறகாரணத்தால்
 तव உனது
 देहः உடல்
 चेतनेन உயிரை
 विनाभूतः விட்டுப்பிரிந்ததாய்
 भविष्यति ஆகக்கூடவது.”

ततः प्रबुद्धो राजर्षिः श्रुत्वा शापमुदाहृतम् । ब्रह्मयोनिमथोवाच संरम्भात्क्रोधमूर्च्छितः ॥

| | | | |
|-----------|---------------|-----------------|----------------------|
| राजर्षिः | “राஜரீஷி | क्रोधमूर्च्छितः | கோபத்தால் மெய் |
| प्रबुद्धः | தாயிலெழுந்தது | संरम्भात् | மறந்தவராய் |
| उशब्दः | இடப்பட்ட | ब्रह्मयोनिं | மனம்கொத்தளித்த |
| शापं | சாபத்தை | अथ | தால் |
| श्रुत्वा | உணர்ந்து | उवाच | பிரம்மபுத்திரருக்கு, |
| ततः | அதனால் | | (வனிஷ்டருக்கு) |

अजानतः शयानस्य क्रोधेन कलुषीकृतः । सुक्तवान्मयि शापाग्निं यमदण्डमिवापरम् ॥

| | | | |
|-----------|------------------|-----------|--------------|
| अजानतः | “உடம்புதெரியாமல் | यमदण्डं | யமதண்டத்தை |
| शयानस्य | தாயிலுமளவில் | इव | போன்றதும் |
| क्रोधेन | சினத்தினால் | अपरं | முடிவானதுமான |
| कलुषीकृतः | அபசாரத்துக்களாகி | शापाग्निं | சாபத்தீயை |
| मयि | என்மீது | सुक्तवान् | விடுத்தீர். |

तस्मात्तवापि ब्रह्मर्षे चेतनेन विनाकृतः । देहः सुरुचिरप्रख्यो भविष्यति न संशयः ॥

| | | | |
|---------------|----------------|-----------|--------------------|
| ब्रह्मर्षे | “ஹே பிரம்மரீஷி | देहः अपि | உடலும் |
| तस्मात् | ஆகையால் [யே! | चेतनेन | உயிரை |
| तव | உம்முடைய | विनाकृतः | விட்டு நீக்கியதாய் |
| सुरुचिप्रख्यः | தேஜோமயமாய் | भाविष्यति | ஆகக்கடவது. |
| | விளங்கும் | न संशयः | இதற்கையமில்லை.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे पञ्चपञ्चाशः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22747



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2023

पट्पञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்தாறுவது ஸர்க்கம். ॥ ௫௩ ॥

उर्वशीशापः—உர்வசீசாபம்.

रामस्य भाषितं श्रुत्वा लक्ष्मणः परवीरहा । उवाच प्राञ्जलिर्वानियं राघवं दीप्ततेजसम् ॥

| | | | |
|----------|----------------|------------|-----------------|
| रामस्य | ஸ்ரீராமருடைய | प्राञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ்தராய் |
| भाषितं | திருவாக்குக்கு | दीप्ततेजसं | தேஜோமயமாய் |
| श्रुत्वा | செவ்சாய்த்த | राघवं | விளங்கும் |
| परवीरहा | மற்றொரு விஷ்ணு | वाक्यं | ஸ்ரீராகவரைப் |
| | அம்சமாகிய | उवाच | பார்த்து |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | | ஒருவிண்ணப்பத்தை |
| | | | செய்தார். |

निसिप्तदेहो काकुत्स्थ कथं तौ द्विजपार्थिवौ । पुनर्देहेन संयोगं जग्मतुर्देवसंमतौ ॥ २ ॥

காகுத்திய
 தேவசம்மதௌ
 தௌ
 திவ்ஜபார்த்திவௌ
 “ நேர காகுத்தி!
 தேவர்களாலும் கொ
 ண்டாடப்பட்ட
 அவ்விரு
 பிரம்மணனும்
 அரசனும்

நிசிப்ததேஹௌ
 புன:
 கதம்
 தேஹ
 சங்க்யௌ
 ஜகமது:
 உடலொழிந்தவர
 மறுத்து [கனாய
 எவ்விதமீத
 சீர்த்துடன்
 இருந்தலை
 பெற்றார்கள்?”

लक्ष्मणेनैवमुक्तस्तु रामश्चेद्वाकुनन्दनः । प्रत्युवाच महातेजा लक्ष्मणं पुरुषर्षभः ॥ ३ ॥

லக்ஷ்மண
 பூர்வ
 வக்த:
 புருஷர்ஷப:
 மஹாதேஜ:
 லக்ஷ்மணரால்
 இவ்வண்ணமாய்
 வினாவிகற்கு திருச்
 செவிராய்த்த
 புருஷோத்தமரும்
 மஹார்த்தஜேவானும்

இக்ஷ்வாகுரு
 பிரன்ஜாயுமாகிய
 ராம:
 லக்ஷ்மணம்
 து
 ப்ரத்யுவாக
 இக்ஷ்வாகுரு
 பிள்ளையுமாகிய
 ஸ்ரீராமர்
 லக்ஷ்மணருக்கு
 இது விஷயத்திலே, த
 பதிலை அருளிச்செய்
 தார்:

तौ परस्परशापेन देहावुत्सृज्य धार्मिकौ । अभूतां नृपविप्रर्षी वायुभूतौ तपोधनौ ॥ ४ ॥

தார்த்திகௌ
 தபௌதனௌ
 தௌ
 ந்ரபவிப்ரீர்ஷி
 “ தருமிஷ்டர்களும
 தபோதனர்களுமாகிய
 அவ்விரு
 மன்னரும், பிரம்ம
 ிஷியும்

பரஸர்ஷபென
 தேஹௌ
 வாயுபூதௌ
 அபூதம்
 ஒருவருக்கொருவர்
 சாபமிட்டதனால்
 உடல்களை நீத்து
 வாயுவடிவம் கொண்
 டவர்களாய்
 ஆனார்கள்.

अशरीरः शरीरस्य कृतेऽन्यस्य महामुनिः । वसिष्ठः सुमहातेजा जगाम पितुरन्तिकम् ॥

சுமஹாதேஜ:
 வசிஷ்ட:
 மஹாமுனி:
 அசரீர:
 “ பிரசித்திபெற்ற ம
 ஹாதேஜேவானாகிய
 வளிஷ்ட
 மஹரிஷி
 சரீரமொழிந்தவராய்

அந்யச்ய
 சரீரச்ய
 ரிது:
 அந்திகம்
 ஜகாம
 வேறொரு
 சரீரத்திற்காக
 தந்தையின்
 ஸன்னிதிக்கு
 எழுந்தருளினார்.

सोऽभिवाद्य ततः पादौ देवदेवस्य धर्मवित् । पितामहमथोवाच वायुभूत इदं वचः ॥ ६ ॥

தர்மவீத்
 ச:
 வாயுபூத:
 தேவதேவச்ய
 பாடௌ
 அபிவாத்ய
 “ தருமவித்தாகிய
 அவர்
 வாயுவடிவமாகவே
 இருந்துகொண்டு
 பிரம்மனுடைய
 திருவடிகளில்
 விழுந்து நமஸ்கரித்து

தத:
 பிதாமஹம்
 அத
 வத:
 இஃ
 உவாத
 அதன்மேல்
 பிரம்மாவினிடம்
 இப்பொழுது
 பிரார்த்தனையை
 இவ்வண்ணமாய்
 விண்ணப்பம் செய்
 தார்:

भगवन्निमिशापेन विदेहोऽस्मि कृतः प्रभो । देहस्यान्यस्य सद्भावे प्रसादं कर्तुमर्हसि ॥७॥

| | | | |
|------------|----------------------|---------|---------------------|
| प्रभो | “எனதையும் செய்ய | शरीरस्य | சரீரத்திற்கு |
| भगवन् | பகவானே ! [வல்ல | सद्भावे | உயிர் புகும் விஷயத் |
| निमिशापेन | நிமியின து சாபத்தால் | | தில் |
| विदेहः | உடலைவிட்டு உயிர் | प्रसादं | அனுக்கிரகத்தை |
| | பிரிந்ததாய் | कर्तुं | செய்ய |
| कृतः अस्मि | நான் ஆயினேன். | अर्हसि | தேவரீர் திருவுள்ளம் |
| अप्यस्य | வேறொரு | | கொள்ளவேண்டும்.’ |

तमुवाच ततो ब्रह्मा स्वयम्भूरमितप्रभः । मित्रावरुणजं तेजः प्रविश त्वं महायशः ॥ ८ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|--------------|----------------------|
| महायशः | * மஹாயசஸ்வியும் | उवाच | இங்ஙனம் அனுக்கிர |
| अनितप्रभः | அமிதமான தேஜோ | त्वं | ‘நீ [கித்தருளினார்: |
| | மயரும் | मित्रावरुणजं | { மித்திரன், வருணன், |
| ब्रह्मा | ஸ்ருஷ்டிகர்ந்தாவு | | என்னும் தேவர்க |
| स्वयम्भूः | பிரம்மதேவர் [மாகிய | तेजः | ளால் எற்பட்ட |
| ततः | அப்பொழுது | प्रविश | வீரியத்தில் |
| | | | பிரவேசிப்பாயாக. |

अयोनिजस्त्वं भविता तत्रापि द्विजसत्तम । धर्मेण महता युक्तः पुनरेष्यसि मे वशम् ॥९॥

| | | | |
|-------------|---------------------|--------|-----------------|
| द्विजसत्तम | “பிராம்மணச்சீரஷ்ட ! | महता | மஹா |
| त्वं | நீ | धर्मेण | தர்மநெறியோடு |
| अयोनिजः अपि | { அயோநிஜனாகவே(ஒரு | युक्तः | விளங்குகிறவராய் |
| | சரீரத்தின்வழியாகப் | पुनः | திரும்பவும் |
| भविता | பிறவாதவனாகவே) | मे | எனது |
| तत्र | விளங்குவாய். | वशं | அதனைத்திற்கு |
| | அப்பொழுது | एष्यसि | ஆளாகுவாய்.’ |

एवमुक्तस्तु देवेन चाभिवाद्य प्रदक्षिणम् । कृत्वा पितामहं तूर्णं प्रययौ वरुणालयम् ॥१०॥

| | | | |
|------------|-------------------|----------|-------------------|
| देवेन | “பிரம்மனினால் | च | அதன்மேல் |
| एवं | இவ்விதமாய் | अभिवाद्य | நாமம் சொல்லி நமஸ் |
| तु | இவ்விஷயத்தில் | | கரித்துவிட்டு |
| उक्तः | நியமனம்பெற்ற அவர் | वरुणालयं | வருணனது ஆலயத் |
| पितामहं | பிரம்மதேவரை | | திற்கு |
| प्रदक्षिणं | பிரதிக்ஷிணம் | तूर्णं | விரைவாக |
| कृत्वा | செய்து | प्रययौ | எழுந்தருளினார். |

तमेव कालं मित्रोऽपि वरुणत्वमकारयत् । क्षीरोदेन सहोपेतः पूज्यमानः सुरोत्तमैः ॥११॥

| | | | |
|------------|----------------------|----------------|--------------------|
| तं कालं एव | “அதேகாலத்தில் | सुरोत्तमैः अपि | தேவோத்தமர் |
| मित्रः | { மித்திரனென்னும் | | களாலும் |
| | ஒரு தேவன் (வருண | पूज्यमानः | கொண்டாடப்பட்ட |
| क्षीरोदेन | னது தோழன்) | वरुणत्वं | வரைய் |
| सहोपेतः | க்ஷீராவமுத்திரத்தில் | | வருணனது அதிகா |
| | இருந்துகொண்டு | कारयत् | ரத்தை |
| | | | செய்துத்திவந்தான். |

एतस्मिन्नेव काले तु उर्वशी परमाप्सराः । यदृच्छया समुद्रेशमाययो सखिभिवृता ॥१२॥

एतस्मिन् एव काले
परमाप्सराः
उर्वशी तु
सखिभिः

“அதேதஸமயத்தில்
அப்ஸரஸ்க்கீகநிள்மு
தன்மையானவளான
உள்வசியும்
தோழிமார்களால்

वृता
यदृच्छा
समुद्रेशं
आययौ

சூழப்பெற்றவளாய்
தற்செயலாய்
கடற்கரைக்கு
வந்தார்.

तां दृष्ट्वा रूपसम्पन्नां क्रीडन्तीं वरुणालये । आविशत्परमो हर्षो वरुणं चोर्वशीकृते ॥१३॥

रूपसम्पन्नां
वरुणालये
क्रीडन्तीं
तां

“அழகுவாய்ந்த
வருணலயத்தில்
உல்லாசமாய்ப்பொழு
தைப்போக்கிக்கொ
ண்டிருந்த
அவளை

दृष्ट्वा च
उर्वशीकृते
वरुणं
परमः
हर्षः
आविशत्

கண்ணுற்றதால்
உள்வசியீது
வருணனுக்கு
பரம:
ஹர்ஷ:
ஆவிசத்

स तां पद्मपलाशाक्षीं पूर्णचन्द्रनिभाननाम् । वरुणो वरयामास मैथुनायाः पुरोवराम् ॥१४॥

सः वरुणः
पद्मपलाशाक्षीं
पूर्णचन्द्रनिभाननां

“அந்த வருணன்
செந்தாமரைபிதழ்
போன்ற கண்களுந்
றவனும்
முழுமதிபோன்ற
முகமுடையவனும்

अपरोवरां
तां
मैथुनाय
वरयामास

அப்ஸரோத்தமியு
மான
அவளை
சம்போகத்திற்கு
வேண்டினன்.

प्रसुवाच ततः सा तु वरुणं प्राञ्जलिः स्थिता । मित्रेणाहं वृता साक्षात्पूर्वमेव सुरेश्वर ॥

सा
प्राञ्जलिः
वरुणं
ततः
प्रसुवाच
सुरेश्वर

“அவள்
கைகூப்பிக்கொண்டு
வருணனைநோக்கி
அப்பொழுது
இங்ஙனம் பதினு
ரைத்தாள் :

पूर्वं तु
अहं
मित्रेण
साक्षात्
वृता
स्थिता एव

முன்னமேயே
நான்
மித்ரனால்
நேராக
வரிக்கப்பட்ட
ஏற்றுக்கொண்டவ
ளாயும் இருக்கிறேன்.

वरुणस्त्वब्रवीद्वाक्यं कन्दर्पशरपीडितः । इदं तेजः समुत्सृज्ये कुम्भेऽस्मिन्देवनिर्मिते ॥

वरुणः
कन्दर्पशर-
पीडितः तु
वाक्यं
अभ्रवीत्

“வருணன்
அனங்கனது அம்பு
களால் மெய்மறந்து
இருந்ததால்
இந்த வாக்கியத்தை
சொன்னான் :

अस्मिन्
देवनिर्मिते
कुम्भे
इदं
तेजः
समुत्सृज्ये

‘இந்த
தெய்வஸ்ருஷ்டியாகிய
கும்பத்தில்
இந்த
வீர்யத்தை
விட்டுவைக்கிறேன்.

एवमुत्सृज्य सुश्रोणि त्वय्यहं वरवर्णिनि । कृतकामो भविष्यामि यदि नेच्छसि सङ्गमम् ॥

सुश्रोणि "अमुद्रुवாய்ந்த
ஜகன ங்கனையுடைய
वरवर्णिनि பெண்மணியே!
सङ्गमं புணர்ச்சிக்கு
हृच्छसि न நீ சம்மதிக்கவில்லை
यदि என்கிறதால்

अहं நான்
एवं இப்படி
उत्सृज्य ஸ்கலிதமாக்கிவிட்டு
त्वयि உன்னிடத்தில்
कृतकामः ஆசையைத்தீர்த்துக்
कोண்டவனுய்
भविष्यामि ஆகுவேன்.

तस्य तल्लोकपालस्य वरुणस्य सुभाषितम् । उर्वशी परमप्रीता श्रुत्वा वावयुवाच ह ॥

तस्य "அந்த
लोकपालस्य திக்பாலகனான
वरुणस्य வருணனானது
तत् अந்த
सुभाषितं ஸரஸமானமொழியை
श्रुत्वा கேட்டு

उर्वशी ह ஊர்வசியும்
परमप्रीता அதிகஸந்தஷ்டி
कोண்டவளாகி
वाक्यं இம்மொழியை
उवाच பதிலாய் உரைத்தாள்:

काममेतद्भवत्वेवं हृदयं मे त्वयि स्थितम् । भावश्चाभ्यधिकस्तुभ्यं देहो मित्रस्य तु प्रभो ॥

प्रभो "ஸ்வாமி!
देहः तु சரீரமொன்று மாத்
तिरம்
मित्रस्य மித்திரனுக்கு அதீன
मायிருக்கின்றது.
मे हृदयं என் காதல்
त्वयि தேவரீரிடத்தில்

स्थितं நாடியிருக்கிறது.
तुभ्यं च தேவரீருக்கும்
भावः காதல்
अभ्यधिकः அதிகமே;
एतत् இப்பொழுது
कामं एवं திருவுள்ளப்பகாரமே
भवतु நடைபெறட்டும்.

उर्वश्या एवमुक्तस्तु रेतस्तन्महद्भ्रुतम् । ज्वलदग्निशिखाप्रख्यं तस्मिन्कुम्भे ह्यपासृजत् ॥

उर्वश्या "ஊர்வசியால்
एवं இவ்வாறு
उक्तः சொல்லியதற்குச்
सेविसாய்த்த அவன்
तु அப்பொழுது
महत् மஹிமைபொருந்தி
यतும்
अद्भुतं அற்புதமானதும்

उलत् எரிகின்ற
अग्निशिखाप्रख्यं हि அக்னிஜ்வாலையோன்
ரதுமான
तत् அந்த
रेतः வீர்யத்தை
तस्मिन् அந்த
कुम्भे கும்பத்தில்
अपासृजत् விட்டுவிட்டான்.

उर्वशी त्वगमत्तत्र मित्रो वै यत्र देवता । तां तु मित्रः सुसंक्रम्य उर्वशीमिदमब्रवीत् ॥२१॥

देवता "தைவத்தன்மை
கொண்ட
उर्वशी तु ஊர்வசியும்

मित्रः மித்திரதேவன்
यत्र எவ்விடத்திலிருந்
நாளே

| | | | |
|-------|--------------------|---------|----------------|
| தந வு | அவ்விடத்திற்கு | சுசீகரய | கூரில் கண்டு |
| அரமந | புயச்சீசூர்ந்தாள். | தா | அவளைப்பார்ந்து |
| மித: | மித்திரகேவன் | சு | இதுவிஷயத்தில் |
| தவீரீ | ஊர்வசியை | இதீ | இப்படி |
| | | அவ்வீ | கூறினார்: |

मया निमन्त्रिता पूर्वं कस्माच्चमवसर्जिता । पतिमन्यं वृतवती तस्माच्चं दुष्टचारिणी ॥२२॥

| | | | |
|-----------|--------------------|------------|-------------------|
| புவு | “முதலில் | அந்ய | மற்றொருவனை |
| மயா | என்னால் | பதி | கணவனாக |
| நிமந்நிதா | வரிக்கப்பட்டு சம்ம | வூதவதீ | மனமொப்பிக்கொண் |
| | தித்திருந்த | | டவளாகின்றபுயோ |
| தவ் | ரீ | தஸ்யாத் | அதனால் |
| கஸ்யாத் | எதனால் | தவ் | ரீ |
| அவஸர்ஜிதா | உதறிகள் எரிவிட்டு | துஷ்டாரிணீ | கற்பழிந்தவளாயினை. |

अनेन दुष्कृतेन त्वं मत्क्रोधकलुषीकृता । मनुष्यलोकमास्थाय कश्चित्कालं निवत्स्यसि ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------|------------|-------------------|
| அநெந | “இந்த | மநுஷ்யலுக் | மனுஷ்யலுலாகத்தில் |
| துஷ்டூநெந | சுற்றத்தினால் | ஆஸ்யாய | இருந்துகொண்டு |
| மக்ரூதகலுஷீகூதா | எனது கோபத்திற் | கஷித் | சில |
| | சுப்பாத்திரமாயினை. | காலம் | காலம் |
| தவ் | ரீ | நிவத்ஸ்யஸி | வளிக்கக்கடவாய். |

बुधस्य पुत्रो राजर्षिः काशिराजः पुरूरवाः । तमद्य गच्छ दुर्बुद्धे स ते भर्ता भविष्यति ॥

| | | | |
|----------|--------------------|---------|--------------|
| துபுதே | “மதிகெட்ட மாதே! | அத | இப்பொழுது |
| புரூரவா: | புரூரவன் என்னும் | தீ | அவனிடம் |
| ராஜர்ஷி: | ராஜரிஷி | கஷ்ட | புயச்சீசூர். |
| சுபஸ்ய | புதனது | ச: | அவன் |
| புல: | புத்திரன். | தே | உனக்கு |
| காசிராஜ: | { காசிராஜனாக விளங் | மதா | கணவனாக |
| | கிக்கொண்டிருக்கின் | மவிஷயதி | ஆகு வான். |
| | றான். | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे षट्षाशः सर्गः ॥



सप्तपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்தேழாவது ஸர்க்கம். || 49 ||

वसिष्ठस्य मैत्रावरुणित्वेनोपपत्तिः—வஸிஷ்டர் மித்திராவருணர்களுக்கு
பத்திராக ஜனிப்பது.

तां श्रुत्वा दिव्यसङ्काशां कथामद्भुतदर्शनाम् । लक्ष्मणः परमप्रीतो राघवं वाक्यमब्रवीत् ॥

| | | | |
|---------------|--|-----------|---------------------------|
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | श्रुत्वा | செவியுற்று |
| दिव्यसङ्काशां | { அமா னுஷ்யசக்தி படைத்தவர்களுக்கு ஒத்ததும் | परमप्रीतः | அதிக ஸந்தோஷ மடைந்தவராக |
| अद्भुतदर्शनां | | राघवं | ஸ்ரீராகவரைப் பார்த்து |
| तां | அந்த | वाक्यं | இந்த விண்ணப்பத் தை |
| कथां | விருத்தார்தை | अब्रवीत् | அருளிச்செய்தார்: |

निक्षिप्तदेहौ काकुत्स्थ कथं तौ द्विजपार्थिवौ । पुनर्देहेन संयोगं जग्मतुर्देवसंमतौ ॥ 2 ॥

| | | | |
|---------------|--------------------------------------|---------------|----------------|
| काकुत्स्थ | “காகுத்தரே! | निक्षिप्तदेहौ | உடலொழிந்தவர் |
| देवसंमतौ | தேவர்களாலும் | पुनः | மறுத்து [களாய் |
| तौ | கொண்டாடப்பட்ட | कथं | எவ்விதமாக |
| द्विजपार्थिवौ | அவ்விரு பிராமம்மணரும் மன்னரும் | देहेन | சரீரத்துடன் |
| | | संयोगं | இருத்தலை |
| | | जग्मतुः | பெற்றார்கள்?’ |

तस्य तद्भाषितं श्रुत्वा रामः सत्यपराक्रमः । तां कथां कथयामास वसिष्ठस्य महात्मनः ॥

| | | | |
|--------------|------------------|-----------|---------------------------|
| तस्य | அவருடைய | वसिष्ठस्य | வஸிஷ்டருடைய |
| तत् भाषितं | அந்த மொழிக்கு | तां | அந்த |
| श्रुत्वा | செவியசாய்த்த | कथां | கதையை |
| सत्यपराक्रमः | ஸத்யபராக்கரமாகிய | कथयामास | விவரமாகக்கூறலாயி னார்: |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | | |
| महात्मनः | மஹானுபாவரான | | |

यस्तु कुम्भो रघुश्रेष्ठ तेजःपूर्णो महात्मनोः । तस्मिंस्तेजोमयौ विप्रौ सम्भूतावृषिसत्तमौ ॥

| | | | |
|---------------|--|-----------|------------------|
| रघुश्रेष्ठ | “ஹே ரகுத்தம! | तस्मिन् | அதினின்றும் |
| यः | எந்த | तेजोमयौ | தேஜோமயமான |
| कुम्भः | கும்பம் | विप्रौ | இரு பிராமம்மண |
| महात्मनोः | இரு மஹானுபாவர் களுடைய | ऋषिसत्तमौ | மஹரிஷிகள் |
| तेजःपूर्णः तु | வீர்யங்களால் பரிபூர் ணமாகி இருந்ததோ | सम्भूतौ | உற்பலித்தனர்கள். |

पूर्व समभवत्तत्र ह्यगस्त्यो भगवानृषिः । नाहं सुतस्तपेत्युक्त्वा मित्रं तस्मादपाकमत् ॥५॥

| | |
|----------|------------------|
| पूर्व | முதலில் |
| तत्र | அதில் |
| भगवान् | பகவானாகிய |
| अगस्त्यः | அகஸ்திய |
| ऋषिः हि | ரிஷியே |
| समभवत् | தேற்றினார். |
| मित्रं | மித்திரனை நோக்கி |
| अहं | ‘நான் |

| | |
|---------|------------------------------------|
| तत्र | உடன்து |
| सुतः | புத்திரன் |
| न | அல்லன் |
| इति | என்று |
| उक्त्वा | சாற்றிவிட்டு |
| तस्मात् | அவ்விடத்திலிருந்து |
| अपाकमत् | விவளியே புறப்பட்டுப் போய்விட்டார். |

तद्धि तेजस्तु मित्रस्य उर्वश्याः पूर्वमाहितम् । तस्मिन्समभवत्कुम्भे तत्तेजो यत्र वारुणम् ॥

| | |
|-------------|--------------------|
| हि | “ஏனெனில் |
| यत्र कुम्भे | எந்தக் கும்பத்தில் |
| पूर्व | முதலில் |
| मित्रस्य | மித்திரனது |
| तत् | அந்த |
| तेजः | வீர்யமிருந்ததே |
| तस्मिन् तु | அதிலேயே |

| | |
|-----------|-------------------------|
| तत् | அந்த |
| उर्वश्याः | உள்வசியின் |
| आहितं | அபகாரத்தால் வீளைந்ததும் |
| वारुणं | வருணனதுபாகிய |
| तेज. | வீர்யம் |
| समभवत् | கலக்கப்பட்டது. |

कस्यचित्स्वथ कालस्य मित्रावरुणसम्भवः । वसिष्ठस्तेजसा युक्तो जज्ञे चैश्वाकुदैवतम् ॥

तमिक्ष्वाकुर्महातेजा जातमात्रमनिन्दितम् । वत्रे पुरोहितं सौम्य वंशस्यास्य भवाय नः ॥

| | |
|--------------------|-------------------------------|
| सौम्य | “ஹே செளம்ய! |
| अथ | அதன்பின்னர் |
| कस्यचित् कालस्य तु | கிலகாலஞ்சென்று |
| मित्रावरुणसम्भवः | மித்திரனும் வருணனும் ஹேதுவாய் |

| | |
|-------------|---------------------|
| जातमात्रं | பிறப்புடைய |
| तं | அவரை |
| अस्य वंशस्य | இந்தக் குலத்திற்கு |
| नः | நமது |
| भवाय च | சேஷமத்தின் பொருட்டே |

| | |
|------------|------------------|
| तेजसा | தேஜஸால் |
| युक्तः | விளங்கும் |
| वसिष्ठः | வஸிஷ்டர் |
| जज्ञे | உற்பவித்தனர். |
| महातेजाः | மஹாதேஜோவானாகிய |
| इक्ष्वाकुः | இக்ஷ்வாகுமஹாராஜா |
| अनिन्दितं | கல்மஷமற்ற |

| | |
|----------------|--|
| इक्ष्वाकुदैवतं | { இக்ஷ்வாகுகுலத்தவர் களால் தைவமென பூஜிக்க உரிய |
| पुरोहितं | புரோஹிதராக |
| वत्रे | ஆராய்ந்ததெடுத்து வரித்தார். |

एवं त्वपूर्वदेहस्य वसिष्ठस्य महात्मनः । कथितो निर्गमः सौम्य निमिः शृणु यथाऽभवत् ॥

| | |
|--------------|-----------------------|
| सौम्य | “ஹே செளம்ய! |
| महात्मनः | மஹாத்மாவான |
| वसिष्ठस्य | வஸிஷ்டருக்கு |
| एवं | இப்படி |
| अपूर्वदेहस्य | அபூர்வமான சரீரத்தினது |
| कथितः | கூறலாறு கூறினேன். |

| | |
|-----------|------------------------------|
| निमिः | நிமியின் |
| निर्गमः | உயிர்வியோகமானது |
| यथा अभवत् | எவ்விதம் முடிந்ததோ அதை |
| शृणु | இப்பொழுது கூறுகின்றேன் கேள். |

हृष्टा विदेहं राजानमृषयः सर्व एव ते । तं ततो योजयामासुर्यागदीक्षां मनीषिणः ॥१०॥

| | | | |
|---------|-------------------------|------------|----------------------------------|
| मनीषिणः | “ மஹா பாண்டித்திய முள்ள | विदेहं | சரீரமற்றவராய் |
| ते | அந்த | हृष्टा एव | கண்டும் |
| ऋषयः | ரிஷிகள் | ततः | அப்படியிருக்கையி லும் |
| सर्वे | எல்லோரும் | यागदीक्षां | யாகதீசைசூயை |
| तं | அந்த | योजयामासुः | பூர்த்திசெய்ய நிச்ச யித்தார்கள். |
| राजानं | மன்னரை | | |

तं च देहं नरेन्द्रस्य रक्षन्ति स्म द्विजोत्तमाः । गन्धैर्माल्यैश्च वस्त्रैश्च पौरमृत्युसमन्विताः ॥

| | | | |
|-----------------------------|--|--------------|------------------------------------|
| पौरमृत्यु- } समन्विताः } | “ பட்டணத்து ஜனங் களோடும், மந்திரி மார்களுடன் கூடிய பிராமணைத்தமர்கள் மன்னரை து அந்த | देहं | உடலை |
| द्विजोत्तमाः | | गन्धैः च | கந்தங்களாலும் |
| नरेन्द्रस्य | | माल्यैः च | புஷ்பங்களாலும் |
| तं | | वस्त्रैः च | வஸ்திரங்களாலும் |
| | | रक्षन्ति स्म | அழியாதவண்ணம் காப்பாற்றிவந்தார்கள். |

ततो यज्ञे समाप्ते तु भृगुस्तदेदमब्रवीत् । आनयिष्यामि ते चेतस्तुष्टोऽस्मि तव पार्थिव ॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------|-------------------|
| तव | “ அப்பொழுது | तव | உன்விஷயத்தில்தான் |
| यज्ञे | யஞ்ஞம் | तुष्टः | அகமகிழ்ந்தவனாய் |
| समाप्ते तु | முடிந்ததும் | अस्मि | ஆயினேன். |
| भृगुः | பிரகு மஹரிஷி | ते | உன்னுடைய |
| इदं | இப்படி | चेतः | ஜீவாத்மாவை |
| अब्रवीत् | திருவாய்மலர்ந்தரு | ततः | மீளவும் |
| पार्थिव | ‘ராஜனே’ [எரினார்] | आनयिष्यामि | உண்டாக்குகிறேன்.’ |

सुभीताश्च सुराः सर्वे निमेष्येत्तस्तथाऽब्रुवन् । वरं वरय राजर्षे क ते चेतो निरूप्यताम् ॥

| | | | |
|----------|--------------------------|------------|-------------------------------|
| सुराः | “ தேவர்கள் | राजर्षे | ‘அரசர்பெருமானே, |
| सर्वे च | எல்லோரும் | ते चेतः | உனது ஜீவாத்மா |
| सुभीताः | அதிகப்பீதிவைத்தவர் களாகி | क | எங்கிருக்கவேண்டாமோ, அது |
| निमेषः | நிமியினது | निरूप्यतां | உன்னால் நிச்சயிக் கப்பட்டும்; |
| चेतः | ஜீவாத்மாவைப் பார்த்து | वरं | விருப்பமான வரத்தை |
| तथा | இப்படி | वरय | வேண்டுக’. |
| अब्रुवन् | சொல்லியருளினார்கள்; | | |

एवमुक्तः सुरैः सर्वैर्निमेष्वेतस्तदाऽब्रवीत् । नेत्रेषु सर्वभूतानां वसेयं सुरसत्तमाः ॥ १४ ॥

| | | | |
|--------|--------------|-------------|--------------------|
| சுரே: | “தேவர்கள் | பாவந் | இப்படிப்பதினூரைத் |
| சर्वै: | எல்லோராலும் | புரவத்தமா: | தது: |
| एवं | இவ்வண்ணம் | सर्वभूतानां | ‘தேவ தேவோத் |
| उक्तः | நியமனம்பெற்ற | | தமர்களே! |
| निमेष: | நிமியினது | नेत्रेषु | எல்லா பிரானிக |
| वसेयम् | ஜீவாத்மா | वसेयम् | எருடைய |
| तदा | அப்பொழுது | | நேத்திரங்களில் |
| | | | நான் வசிக்கிறுக்க |
| | | | வேண்டுக்கின்றேன்.’ |

बाढमित्येव विबुधा निमेष्वेतस्तदाऽब्रुवन् । नेत्रेषु सर्वभूतानां वायुभूतश्चरित्यसि ॥ १५ ॥

| | | | |
|----------|-----------------------|-------------|---------------------|
| तदा | “அப்பொழுது | बाढं पुव | ‘அங்கனமேயாகுக. |
| विबुधा: | அமரர்கள் | वायुभूतः | வாயுவடிவமாகி |
| निमेष: | நிமியினது | सर्वभूतानां | எல்லாப் பிரானிக |
| वसेयम् | ஜீவாத்மாவைப் | | எருடைய |
| इति | இப்படி [பார் தது | नेत्रेषु | நேத்திரங்களில் |
| अब्रुवन् | நியமித்தருளினார்கள் : | चरित्यसि | நீ ஸஞ்சரிக்கக்கடவை. |

त्वत्कृते च निमिष्यन्ति क्षक्ष्षि पृथिवीपते । वायुभूतेन चरता विश्रमार्थं सुहुसुहुः ॥१६॥

| | | | |
|-----------|-----------------|---------------|------------------|
| त्वत्कृते | “தேவ பார் ததிவ! | विश्रमार्थं च | இளைப்பாறுதற் |
| पृथिवीपते | | सुहुः सुहुः | அடிக்கடி. [காகவே |
| वायुभूतेन | வாயுவடிவமாக | क्षक्ष्षि | கண்களை |
| चरता | ஸஞ்சரிப்பதால் | निमिष्यन्ति | இமைகொட்டுவார் |
| इत्युक्ते | உன்றிமித்தமாய் | | கள்.’ |

एवमुक्त्वा तु विबुधाः सर्वे जग्मुर्यथागतम् । ऋषयोऽपि महात्मानो निमिर्देहं समाहरन् ॥

| | | | |
|------------|----------------------|-----------|--------------------|
| विबुधा: | “அமரர்கள் | महात्मानः | மஹாத்மாக்களான |
| सर्वे | எல்லோரும் | ऋषयः अपि | ரிஷிகளும் |
| एवं | இங்ஙனம் | निमेषः | நிமியினது |
| उक्त्वा तु | நியமித்தருளியிட்ட | देहं | உடலை |
| यथागतं | வந்தவண்ணமே | समाहरन् | எடுத்துவந்தார்கள். |
| जग्मुः | திரும்பிப்போனார்கள். | | |

अरणिं तत्र निक्षिप्य पथनं चक्रुरोजसा । मन्त्रहोमैर्निहात्मनः पुत्रहेतोर्निमेषस्तदा ॥ १८ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-------------|------------------|
| महा मनः | “மஹாத்மாவான | तत्र | அந்த |
| निमेषः | நிமிக்கு | अरणिं | அரணிக்ககட்டையால் |
| तदा | அப்பொழுது | निक्षिप्य | வைத்து |
| पुत्रहेतोः | புத்திரனுண்டாவதன் | ओजसा | ஆண்மையால் |
| | பொருட்டு | मन्त्रहोमैः | மந்திரஜபங்களோடு |
| | | मथनं चक्रुः | கடைந்தார்கள், |

अरण्यां मध्यमानायां प्रादुर्भूतो महातपाः । मथनान्मिथिरित्याहुर्जननाज्जनकोऽभवत् ॥
यस्माद्विदेहात्सम्भूतो वैदेहस्तु ततः स्मृतः ॥ १९ ॥

अरण्यां " अரணிகட்டை
मध्यमानायां கடையப்பட்டவளவில்
महातपाः மஹாதேஜோமய
प्रादुर्भूतः ஒரு புருஷன் [ராகிய
உற்பலித்தனன்.
मथनात् மதனம் செய்து
मिथिः மிதி [உண்டானதால்
इति என்று
आहुः உலகத்தார்கள் வழங்கினார்கள்.

जननात् ஜனிக்கதனால்
जनकः ஜனகரெனவும்
अभवत् விளங்கினார்.
तः அதுவும் தனிர
विदेहात् உயிர் பிரிந்த உடலிலி
ருந்து
सम्भूतः பிறந்தவர்
यस्मात् ஆனபடியால்
वैदेहः तु வைதேஹரெனவும்
स्मृतः அழைக்கப்பட்டலானார்.

एवं विदेहराजश्च जनकः पूर्वकोऽभवत् । मिथिर्नाम महातेजास्तेनायं मैथिलोऽभवत् ॥ २० ॥

एवं " இப்படி.
महातेजाः மஹாதேஜோவான
கிய
मिथिः மிதி
नाम என்பவர்
पूर्वकः குலத்தலைவரான
முதல்
विदेहराजः விதேஹராஜனால்

अभवत् ஆனார்.
तेन च அவராலேதான்
अयं இக்காலத்திய
जनकः ஜனகர்
मैथिलः { மைதிலர் (மிதியின்
குலத்தில் தோன்றிய
வர்) என்ற
अभवत् நாமதேயம் பெற்றார்."

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे सप्तपञ्चाशः सर्गः ॥

आदितः श्लो-सः 22791



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2067

अष्टपञ्चाशः सर्गः—ஐம்பத்தேட்டாவது ஸர்க்கம் ॥ ५८ ॥

ययातिचरितम्—யயாதிமஹாராஜனின் சரிதம்.

एवं ब्रुवति रामे तु लक्ष्मणः परवीरहा । प्रत्युवाच महात्मानं ऋचन्तमिव तेजसा ॥ १ ॥

एवं இவ்வாறு
रामे ஸ்ரீராமர்
ब्रुवति तु சொல்லியபின்னர்
परवीरहा இன்னொரு விஷ்ணு
அம்சமாகிய
लक्ष्मणः லக்ஷ்மணர்
तेजसा தேஜஸால்

ऋचन्तं கொழுந்துவிட்டு எரி
யும் தீயை
इव போன்ற
महात्मानं மஹாத்மாவான அவ
ரைப் பார்த்து
प्रत्युवाच மீளவும் இங்ஙனம்
வினாவினார்:

महदद्भुतमाश्चर्यं विदेहस्य पुरातनम् । निवृत्तं राजशर्दूल वसिष्ठस्य निमेषः सह ॥ २ ॥

ராஜசாடூல் "வேற ராஜோத்தம!
வசிஸ்த வலிவந்தரைப்பற்றிய
நிமே: நியைப்பற்றியதும்
சுஹ ஒரேகாலத்தில்
நிவ்ருத்தம் நடைபெற்றதும்

விடேஹஸ்ய விடேஹராஜனைப்
பற்றியதுமான
புராதனம் பூர்வசரித்திரம்
மஹத் மகவும்
அஃப்யுத் அற்புதமாயும்
அசுச்சர்யகரமாயு
மிருக்கிறது.

निमिस्तु क्षत्रियः शूरो विशेषेण च दीक्षितः । न क्षमां कृतवात्राजा वसिष्ठस्य महात्मनः॥

क्षत्रियः "கூத்திரியரும்
சூர: சூரரும்
विशेषेण முக்கியமாக
दीक्षितः च யாகதீசைக்கொண்டி
ருந்தவருமான

निमि: நிமி
राजा तु மன்னர்கூட
महात्मनः மஹாத்மாவான
वसिष्ठस्य வலிவந்தாரிடத்தில்
क्षमां மன்னிப்பை
न कृतवान् எனோ புரியவில்லை? "

एवमुक्तस्तु तेनायं श्रीमान्क्षत्रियपुङ्गवः । उवाच लक्ष्मणं वाक्यं सर्वशास्त्रविशारदम् ॥

रामो रमयतां श्रेष्ठो भ्रातरं दीप्ततेजसम्

॥ ४ ॥

तेन अवரால்
एवं இவ்வாறு
उक्तः { வினுவப்பட்டதற்கு
திருச்செனிசாய்த்த
வராகிய
अयं இந்த
श्रीमान् பூரிமானும்
क्षत्रियपुङ्गवः ராஜோத்தமரும்
रमयतां { பக்தியுடன் கொண்
டாடப்படுபவர்களுக்
குள்

श्रेष्ठः तु முதன்மையருமான
रामः பூரிமார்
सर्वशास्त्र- } ஸகல சாஸ்திரங்களி
विशारदं } லும் நிபுணராய்
दीप्ततेजसं } தேஜஸால் ஜ்வலித்
தூக்கொண்டிருக்கின்ற
भ्रातरं தம்பியாகிய
लक्ष्मणं லக்ஷ்மணரைப்
वाक्यं பார்த்து
उवाच இந் தமறுமொழியை
சொல்லியருளினார் :

सौमित्रे दुःसहो रोषो यथा क्षान्तो ययातिना । सचं गुणं पुरस्कृत्य तं निबोध समाहितः ॥

सौमित्रे "ஹே லக்ஷ்மண!
रोषः கோபமென்பது
दुःसहः அளவுக்குள்ளடங்கி
யிருப்பது அருமை.
ययातिना யயாதியால்
सचं ஸத்தவ
गुणं குணத்தையே

पुरस्कृत्य பாராட்டி
क्षान्तः பொறுமையானது
समाहितः அனுஷ்டிக்கப்பட்ட
यथा எப்படியோ
तं அதை
निबोध சொல்லுகிறேன்,
கேள்.

नहुषस्य सुतो राजा ययातिः पौरवर्धनः । तस्य भार्याद्वयं सौम्य रूपेणाप्रतिमं भुवि ॥

சௌமய "ஹே செளமய!
 நஹுஷர ௧ருஷ்டமஹாராஜாவின்
 சுத: புத்திரராய்
 பौरवर्धनः { ஜனங்களுக்கு ஸகல
 நன்மைகளையுமளிப்பவராய்
 ययातिः யயாதி யென

ராஜா ஒரு மன்னரிருந்தார்.
 तस्य அவருக்கு
 भुवि உலகில்
 रूपेण அழகில்
 अप्रतिमं ஒப்புயர்வில்லாத
 भार्याद्वयम् இரண்டு மனைவிகளு

एका तु तस्य राजर्षेर्नाहुषस्य पुरस्कृता । शर्मिष्ठा नाम दैतेयी दुहिता वृषपर्षणः ॥ ७ ॥

நாஹுஷ்ய "நருஷ்டனின் புதல்வ
 ரான
 तस्य அந்த
 राजर्षेः ராஜர்ஷிக்கு
 एका तु ஒருத்தியோ
 दैतेयी அசுராஜா திப்பெண்.

शर्मिष्ठा नाम சர்மிஷ்டை எனப்
 பெயர்ப்பூண்டவள்.
 वृषपर्षणः दुहिता விருஷ்பர்வனென்ற
 அசுரராஜனது மகள்.
 पुस्कृता ப்ரீதியுடன் கொண்டா
 டப்பட்டவள்.

सुता तृशनसः पत्नी ययातेः पुरुषर्षभ । न तु सा दयिता राज्ञो देवयानी सुमध्यमा ॥८॥

புருஷர்ஷம "புருஷோத்தம!
 राज्ञः மன்னருக்கு
 पत्नी तु மற்றொருபத்தினியோ
 उशनसः சுக்கிராசாரியருடைய
 सुता புதல்வி.
 देवयानी தேவயானீ யெனப்
 பெயர்ப்பூண்டவள்.

सुमध्यमा நிகரற்ற ஸௌந்தரிய
 முடையவள்.
 तु அப்படியிருந்தும்
 सा அவள்
 ययातेः யயாதி யெனது
 दयिता न ப்ரீதிபெற்றவளில்லை.

तयोः पुत्रौ तु सम्भूतौ रूपवन्तौ समाहितौ । शर्मिष्ठाऽजनयत्पूरं देवयानी यदुं तदा ॥९॥

तयोः "அவர்களிருவரிடத்
 समाहितौ குறையற்ற [தினும்
 रूपवन्तौ வடிவமுகுள்ளவர்
 कनार्य
 पुत्रौ இரண்டு குமாரர்கள்
 तदा அக்காலத்தில்

सम्भूौ பிறந்தனர்.
 शर्मिष्ठा சர்மிஷ்டை
 पूरं பூரு என்பவனையும்
 देवयानी தேவயானி
 यदुं तु யது என்பவனையும்
 अजनयत् பெற்றார்.

पूरस्तु दयितो राज्ञो गुणैर्मातृकृतेन च । ततो दुःखसमाविष्टो यदुर्मातरमब्रवीत् ॥ १० ॥

பூர்: तु "பூருவோவெனில்
 गुणैः சிறந்த சற்குணம்
 कनार्य
 मातृकृतेन च தாயினிடமுள்ள அன்
 பின்மிகுதியானும்
 राज्ञः மன்னரது

दयितः ப்ரீதிக்குப் பாத்திரன
 ततः அதனால் [னன்.
 यदुः யது
 दुःखसमाविष्टः துக்கம் அதிகரித்தவ
 मातरं மாதாவிடம் [னகி
 अब्रवीत् இப்படி முறையிட்
 டான்:

भार्गवस्य कुले जाता देवस्याऋष्टिकर्मणः । सहसे हृदतं दुःखमवमानं च दुःसहम् ॥११॥

| | | | |
|--------------|--|---------|--|
| अऋष्टिकर्मणः | “ஏதையும் அனாயாஸ மாய் முடிக்கவல்ல தேவத்தன்மை கொண்ட | दुःसहं | பொறுத்ததற்கரிய தான் |
| देवस्य | | अवमानं | அவமானமாகிற |
| भार्गवस्य | { பிரகுவின் புதல்வரு டைய (சுக்கிராசாரி யருடைய) | दुःखं च | கஷ்டத்தையும் |
| कुले | | हृदतं | மனதினுள்ளேயே |
| जाता | குலத்தில் பிறந்த நீ | सहसे | இருத்திக்கொண்டு சகித்திருக்கின்றனை. |

आवां च सहितौ देवि प्रविशाव हुताशनम् । राजा तु रमतां सार्धं दैत्यपुत्र्या बहुक्षपाः ॥

| | | | |
|----------|--------------------|---------------|----------------------------|
| देवि | “அம்மா! | राजा | மன்னர் |
| आवां च | நாமிருவரும் | दैत्यपुत्र्या | அசுரர் மகள் ஒருவ ளோடேயே |
| सहितौ | ஒன்றுகூடி | सार्धं | கூடி |
| तु | இப்பொழுது | बहुक्षपाः | வெகுகாலம் |
| हुताशनं | அக்கினியில் | रमताम् | மகிழ்ந்துவாழட்டும். |
| प्रविशाव | விழுந்து இறப்போம். | | |

यदि वा सहनीयं ते मामनुज्ञातुमर्हसि । क्षम त्वं न क्षमिष्येऽहं परिष्यामि न संशयः ॥

| | | | |
|---------------|---|------------|--|
| ते | “தேவரீருக்கு | मरिष्यामि | உயிரையொழித்து விடுகிறேன். |
| सहनीयं वा यदि | { பொறுத்துக்கொள்ள வேண்டியதுதான் என்கிற பகஷத்தில் தேவரீர் | न संशयः | இதற்கு சந்தேஹ மில்லை. |
| त्वं | | मां | எனக்கு |
| क्षम | அடங்கிக்கடவும். | अनुज्ञातुं | அனுமதியளிக்க |
| अहं | நான் | अर्हसि | தேவரீர் திருவுள்ளம் கொள்ளவேண்டும்.” |
| क्षमिष्ये न | பொறுத்திரேன். | | |

पुत्रस्य भाषितं श्रुत्वा परमार्तस्य रोदतः । देवयानी तु संकुद्धा सस्मार पितरं तदा ॥

| | | | |
|------------|--------------------|----------|---------------------------|
| परमार्तस्य | “மிகவுப் நொந்து | तु | இவ்விஷயத்தில் |
| रोदतः | அழுதுகொண்டிருக்கிற | संकुद्धा | மிகச்சினம் கொண்ட வளாகி |
| पुत्रस्य | புத்திரனது | तदा | அச்சமயத்தில் |
| भाषितं | மொழிக்கு | पितरं | தந்தையை |
| श्रुत्वा | செவிசாய்த்த | सस्मार | மனதில் நினைத்தாள். |
| देवयानी | தேவயானி | | |

इङ्गितं तदभिज्ञाय दुहितुर्भागिवस्तदा । आगतस्वरितं तत्र देवयानी तु यत्र सा ॥ १५ ॥

भागिवः “பிருகுவிண் புத்தி
ரர் (சக்கிராசாரியர்)
दुहितुः புதல்விபிணது
तत् அந்த
इङ्गितं மனோபாவத்தை
तदा அத்தருணத்தில்
अभिज्ञाय அறிந்து

तु உடனே
सा அந்த
देवयानी தேவயானி
यत्र எங்கிருந்தனளோ
तत्र அவ்விடத்திற்கு
स्वरितं விரைந்து
आगतः வந்துசேர்ந்தனர்.

दृष्ट्वा चाप्रकृतित्स्यां तामप्रहृष्टामचेतनाम् । पिता दुहितरं वाक्यं किमेतदिति चाब्रवीत् ॥

पिता “தந்தை
दुहितरं च பெண்ணையும்
अप्र हृतिस्यां ஸ்வபாவத்திற்கு
माण्यं
अप्रहृष्टा உற்சாகமின்றி
अचेतनां च மெய்மறந்திருப்பவ
ளாயும்

दृष्ट्वा கண்டு
तां அவளைப்பார்த்து
पुतत् இது
कि யாதுகாரணம்
इति என்கிற
वाक्यं கேள்வியை
अब्रवीत् கேட்டார்.

पृच्छन्तमसकृत्तं वै भार्गवं दीप्ततेजसम् । देवयानी तु संक्रुद्धा पितरं वाक्यमब्रवीत् ॥ १७ ॥

संक्रुद्धा “பிக்ச்சினங்கொண்டி
देवयानी तु தேவயானியும் [ருந்த
असकृत् பலதரம்
पृच्छन्तं வினாவுகின்ற
तं அந்த
दीप्ततेजसं தேஜோமயரும்

पितरं वै தந்தையுமாகிய
भार्गवं சக்கிராசாரியரைப்
वाक्यं விஷயத்தை [பார்த்து
अब्रवीत् இம்மனம் தெரிவித்
तनள்:

अहमग्निं विषं तीक्ष्णमपो वा मुनिसत्तम । भक्षयिष्ये प्रवेक्ष्यामि न तु शक्ष्यामि जीवितुम् ॥

मुनिसत्तम “ஹே மஹரிஷியே!
अहं நான்
तीक्ष्णं தீக்ச்ணமான
विषं விஷத்தை
भक्षयिष्ये அருந்திவிடப்போகி
वा அல்லது [நேன்.

अग्निं நெருப்பிலாவது
अपः ஜலத்திலாவது
प्रवेक्ष्यामि குதித்துவிடப்போகி
तु இனியும் [நேன்.
जीवितुं உயிரைவைத்திருக்க
शक्ष्यामि न மாட்டேன்.

न मां त्वमवजानीषे दुःखितामवमानिताम् । वृक्षस्यावज्ञया ब्रह्मंश्छद्यन्ते वृक्षजीविनः ॥

ब्रह्मन् “ஹே வேதவித்தே!
खं தேவரீர்
मां என்னை
अवमानितां அவமானமடைந்து
दुःखितां { துக்கத்தை அனுப
வித்துக்கொண்டி
रुत्पववराक
अवजानीषे न கவனியா திருக்கிறீர்.

वृक्षस्य மூலவிருகூத்தினிட
முள்ள
अवज्ञया அலகூதத்தினால்
वृक्षजीविनः { விருகூத்தின் ஸா
ராம்சங்கள் (அதாவ
து இலைகள், காய்
கனிகள்)
छिद्यन्ते அழிகின்றன.

अवज्ञया च राजर्षिः परिभूय च भार्गव । मय्यवज्ञां प्रयुञ्जे हि न च मां बहु मन्यते ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|-------------|--------------------|
| भार्गव | “ பிருகு மஹரிஷியின் | मां | என்னை |
| राजर्षिः | ராஜரிஷி [புத்திராரே ! | बहुमन्यते न | மேலாக மதியா திருக் |
| अवज्ञया हि | அலக்ஷ்யத்தினு | च | அன்றியும் [கிறார். |
| | லன்றே | मयि | என்னிடத்தில் |
| परिभूय च | வெட்கப்படுதற்பொ | अवज्ञां च | அலக்ஷ்யத்தையும் |
| | ருட்டே | प्रयुञ्जे | காட்டுகிறார். |

तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा कोपेनाभिपरिप्लुतः । व्याहर्तुमुपचक्राम भार्गवो नहुषात्मजम् ॥२१॥

| | | | |
|----------|---------------------|--------------|-------------------|
| तस्याः | “ அவளது | कोपेन | கோபத்தால் |
| तत् | அந்த | अनिपरिप्लुतः | மெய்மறந்தவராகி |
| वचनं | மொழிக்கரு | नहुषात्मजं | நகுஷரின் புதல்வனை |
| श्रुत्वा | செவிசாய்த்த | | (யயாதியை) |
| भार्गवः | பார்க்கவர் (சக்கிரா | व्याहर्तुं | இந்நனம் சபிக்க |
| | சாரியர்) | उपचक्राम | தலைப்பட்டார். |

यस्मान्नामवजानीषे नाहुष त्वं दुरात्मवान् । जरया परया जीर्णः शैथिल्यमुपास्यसि ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|----------|--------------------|
| नाहुष | “ அரே நகுஷபுத்திரா! | पराया | மிக்க |
| त्वं | நீ | जरया | ஜராவஸ்தைகொண்டு |
| दुरात्मवान् | கெட்ட மதியுடையோ | जीर्णः | விருத்தாப்பியனாகி! |
| मां | என்னை [னாகி | शैथिल्यं | வார்த்திக் கடினத் |
| अवजानीषे | அலக்ஷ்யம் பண்ணு | | தை (துர்பலத்தை) |
| | கூறும் | उपास्यसि | அடையக்கடவாய். |
| यस्मात् | என்கிற காரணத்தால் | | |

एवमुक्त्वा दुहितरं समाश्वस्य च भार्गवः । पुनर्जगाम ब्रह्मर्षिर्भवनं स्वं महायशाः ॥२३॥

| | | | |
|-------------|----------------|-----------|-------------------|
| महायशाः | “ மஹாபுகழ் | दुहितरं च | புத்திரியையும் |
| | படைத்த | समाश्वस्य | சமாதானப்படுத்தி |
| ब्रह्मर्षिः | பிரபரிஷியாகிய | स्वं | தனது |
| भार्गवः | சக்கிராசாரியர் | भवनं | இருப்பிடத்திற்கு |
| एवं | இப்படி | पुनः | திரும்பி |
| उत्त्वा | சபித்துவிட்டு | जगाम | போய்ச்சேர்ந்தார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
उत्तरकाण्डे अष्टपञ्चाशः सर्गः ॥



एकोनषष्टितमः सर्गः—ஐம்பத்தொன்பதாவது ஸர்க்கம். || 42 ||

पूरो राज्याभिषेकः—பூருவின் ராஜ்யாபிஷேகம்.

श्रुत्वा तूशनसं क्रुद्धं तदातो नहुषात्मजः । जरां परमिकां प्राप्य यदुं वचनमब्रवीत् ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|----------|-----------------------------|
| नहुषात्मजः तु | “ நகுஷரின் புதல்வரும் | जरां | ஜராவஸ்தையை |
| उशनसं | சுக்கிராசாரியரால் | प्राप्य | அடைந்து |
| | வினோந்த | तदातैः | அதனால் மிகவருத்த முற்றவராகி |
| क्रुद्धं | குரூரகாரியத்திற்கு | यदुं | யதுவை அழைத்து |
| श्रुत्वा | உடன்பட்டு | वचनं | இந்த ஆக்கினையை |
| परमिकां | மிக்க | अब्रवीत् | சொன்னார்; |

यतस्त्वमसि धर्मज्ञो मदर्थं प्रतिगृह्यताम् । जरां परमिकां पुत्र भोगै रंस्ये महायशाः ॥ 2 ॥
न तावत्कृतकृत्योऽस्मि विषयेषु नरर्षभ । अनुभूय तथा कामं ततः प्राप्स्याम्यहं जराम् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------------|---------------|-----------------------------|
| नरर्षभ | “ ஹே புருஷோத்தம! மகனே! | जरां | மூப்பை |
| पुत्र | நீ | मदर्थं | எனக்காக |
| त्वं | தருமங்களை உணர்ந்த வனென | प्रतिगृह्यतां | நீ வாங்கிக்கொள்ள வேண்டும்; |
| धर्मज्ञः | மிகப் பிரசித்திபெற்ற வனாய் | भोगैः | இன்பங்களால் |
| महायशाः | விளங்குகின்றனை. | रंस्ये | திருப்தியடைகிறேன். |
| असि | சுற்றின்பங்களில் | तथा | அவ்வண்ணமாய் |
| विषयेषु | இன்னாய் | कामं | மனோபிஷ்டத்தை |
| तावत् | ஆசையொழிந்தவனாய் | अनुभूय | அனுபவித்து விட்டு |
| कृतकृत्यः | நான் ஆகவில்லை. | अहं | நான் |
| अस्मि न | ஆகையால் | जरां | மூப்பை |
| यः | அதிக | ततः | மீளவும் |
| परमिकां | | प्राप्स्यामि | பெற்றுக்கொண்டு விடுகிறேன்.” |

यदुस्तद्वचनं श्रुत्वा प्रत्युवाच नरर्षभम् । पुत्रस्ते दयितः पूरुः प्रतिगृह्णातु वै जराम् ॥४॥

| | | | |
|------------|-------------------------|---------------|-----------------------|
| तद्वचनं | “ அவரது மொழிக்கு | ते | ‘உமக்கு |
| श्रुत्वा | செவிசாய்த்த | दयितः | மிக்க அருமையான |
| यदुः | யது | पुत्रः | புத்திரனாகிய |
| नरर्षभं | மன்னரைப்பார்த்து | पूरुः | பூரு |
| प्रत्युवाच | இப்படி பதில்சொன்னான்: | जरां वै | கிழத்தனத்தையும் |
| | | प्रतिगृह्णातु | வாங்கிக்கொள்ள ட்டும். |

बहिष्कृतोऽहमर्थेषु सन्निकर्षाच्च पार्थिव । प्रतिगृह्णातु वै राजन्कः सहाश्राति भोजनम् ॥

பாதிவ “சக்கரவர்த்தியாகிய
 ராஜந் மன்னரே!
 அஹ் ச நாளை
 அर्थேषு ப்ரமேயங்களில்
 சन्निकर्षात् பந்துத்துவத்திலி
 ருந்து

बहिष्कृतः பகஷ்கரிக்கப்பட்ட
 ருக்கிறேன்.
 कः எவனெருவன்
 भोजनं वै ஸர்வபாக்யத்தையும்
 सह आश्राति கூடவிருந்து அனுப
 விக்கிறதே அவன்
 प्रतिगृह्णातु ஏற்றுக்கொள்ளட்டும்.”

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राजा पूरुमथाब्रवीत् । इयं जरा महाबाहो मदर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ६ ॥

तस्य “அவனது
 तद्वचनं அம்மொழிக்கு
 श्रुत्वा अथ செவிசாய்த்த
 राजा மன்னர்
 पूरुं பூருவைப்பார்த்து
 अब्रवीत् இங்ஙனம் நியமித்த
 ருளிணர்:

महाबाहो “தேறமஹாபாதேஹா!
 इयं இந்த
 जरा கிழத்தனமானது
 मदर्थं எனக்காக
 प्रतिगृह्यताम् உன்னால் வாங்கிக்கொ
 ள்ளப்படவேண்டும்.”

नाहुषेणैवमुक्तस्तु पूरुः प्राञ्जलिरब्रवीत् ।

धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि शासनेऽस्मि तव स्थितः

॥ ७ ॥

नाहुषेण “நகுஷ்ணது புதல்வ
 एवं இங்ஙனம் [ரால்
 उक्तः சொல்லியதற்குச்
 செவிசாய்த்த
 पूरुः तु பூருவோவென்றால்
 प्राञ्जलिः அஞ்சலீஹஸ்தனாய்
 अब्रवीत् இப்படி பதில் உரைத்
 தான்.

धन्यः अस्मि “தன்னியன் ஆயினேன்.
 अनुगृहीतः அனுக்கிரகிக்கப்
 பெற்றவன்
 अस्मि ஆயினேன்.
 तव தேவரீரது
 शासने நியமனத்தில்
 स्थितः अस्मि சலியா பக்தியுடைய
 வன்.”

पूरोर्वचनमाज्ञाय नाहुषः परया मुदा । प्रहर्षमतुलं लेभे जरां संक्रामयच्च ताम् ॥ ८ ॥

नाहुषः “நகுஷ்ணின் புதல்வன்
 पूरोः பூருவின்
 वचनं அங்கிகாரத்தை
 आज्ञाय ஏற்றுக்கொண்டு
 परया பரிபூர்ண
 मुदा மனஸந்துஷ்டியால்
 अतुलं அளவற்ற

प्रहर्षं ஆனந்தத்தை
 लेभे அடைந்தான்.
 तां அந்த
 जरां च மூப்பையும்
 संक्रामयत् மாற்றி ஒப்புவித்
 தான்.

ततः स राजा तस्मिन् प्राप्य यज्ञान्दृष्ट्वाशः । बहुवर्षसहस्राणि पालयामास मेदिनीम् ॥

| | | | |
|---------|-----------------------|----------------------|--------------------------------|
| तः | “அதன்மேல் | प्राप्य | செய்து |
| सः राजा | அந்த மன்னன் | बहुवर्ष- सहस्राणि | அனேக ஆயிரவருஷங் கள் வரையில் |
| तस्मिन् | யௌவனம் பெற்றவ னாய் | | |
| सहस्राः | ஆயிரக்கணக்காக | मेदिनीं | பூமியை |
| यज्ञान् | யாகங்களை | पालयामास | பரிபாலித்துவந்த னன். |

अथ दीर्घस्य कालस्य राजा पूरुषयाब्रवीत् । आनयस्व जरां पुत्र न्यासं निर्यातयस्व मे ॥

| | | | |
|-----------------|----------------------------|-------------|-----------------------------|
| अथ | “இப்படி | पुत्र | ‘வதஸ் ! |
| दीर्घस्य कालस्य | வெகுகாலம் சென்ற பின்னர் | जरां | ஜரையை |
| राजा | மன்னன் | आनयस्व | மாற்றிவிடு. |
| पूरं | பூருவைப் பார்த்து | न्यासं | வைப்பாக வைத்திருப்ப |
| अथ | இப்படி | मे | எனக்கு [பதை |
| ब्रवीत् | கூறினான்: | निर्यातयस्व | திரும்பிக்கொடுத்து விடு. |

न्यासभूता मया पुत्र त्वयि संक्रामिता जरा ।

तस्मात्प्रतिगृहीष्यामि तां जरां मा व्यथां कृथाः

॥ ११ ॥

| | | | |
|-----------|--|-----------------|-----------------------------------|
| पुत्र | “வதஸ் ! | संक्रामिता | ஒப்புவிக்கப்பட்டிருந் |
| जरा | மூப்பு | तस्मात् | ஆதலால் [தது. |
| मया | என்னால் | तां जरां | அந்த ஜரையை |
| त्वयि | உன்றிடத்தில் | प्रतिगृहीष्यामि | திரும்பிப்பெற்றுக் கொள்கிறேன். |
| न्यासभूता | { மறுபடி பெற்றுக்கொ ள்ளவேண்டியவைப் பாக | व्यथां | மனச்சஞ்சலத்திற்கு |
| | | मा कृथाः | இடங்கொடாதே. |

प्रीतश्चास्मि महाबाहो शासनस्य प्रतिग्रहात् । त्वां चाहमभिषेक्ष्यामि प्रीतियुक्तो नराधिपम् ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------|---------------|--------------------------------------|
| महाबाहो | “ஹே மஹாபாகுவே! | प्रीतियुक्तः | அனுக்கிரகிக்கவேண் நானே [டியவனாகிய |
| शासनस्य | சாஸனத்திற்கு | अहं च | உன்னை மாத்திரம் |
| प्रतिग्रहात् | கண்யம் வைத்த கார ணத்தால் | त्वां च | அரசனாக |
| प्रीतः अस्मि | திரும்பி அடைந்தேன். | अभिषेक्ष्यामि | அபிஷேகஞ்செய்விக்க கிறேன். |

एवमुक्त्वा सुतं पूरं ययातिर्नहुषात्मजः । देवयानीसुतं क्रुद्धो राजा वाक्यमुवाच ॥ १२ ॥

| | | | |
|------------|----------------|-------------|-------------------------------------|
| नहुषात्मजः | “நஹுஷனது குமார | उक्त्वा | சொல்லிவிட்டு |
| ययातिः | யயாதி [னா | देवयानीसुतं | தேவயானியின் புத்தி ரனைப்பார்த்து |
| राजा | மன்னன் | क्रुद्धः ह | மிகக்கோபங்கொண்ட வனாகி |
| पूरं | பூருவென்ற | वाक्यं | இந்த மொழியை |
| सुतं | புதல்வனுக்கு | उवाच | கூறினான்: |
| एवं | இங்ஙனம் | | |

राक्षसस्त्वं मया जातः क्षत्ररूपो दुरासदः । प्रतिहंसि ममाज्ञां यत्प्रजार्थे विफलो भव ॥

| | | | |
|------------|----------------|-----------|-------------------|
| त्वं | “ நீ | ஆஜ் | ஆக்களுயை |
| दुरासदः | துஸ்ஸஹமான | புதிஹ்ஸி | ஆலக்ஷ்யஞ்செய்தனை. |
| राक्षसः | பேய். | யத் | ஆதலின் |
| मया | என்னால் | प्रजार्थे | ஸந்ததிவிஷயத்தில் |
| क्षत्ररूपः | க்ஷத்திரியரூப் | विफलः | சூன்றியனாக |
| जातः | பிறந்தனை. | भव | ஆகக்கடவாய். |
| मम | எனது | | |

पितरं गुरुभूतं मां यस्मात्प्रव्रमन्त्यसे । राक्षसान्यातुधानांस्त्वं जनविष्यसि दारुणान् ॥

| | | | |
|----------|------------|------------|--------------------|
| त्वं | “ நீ | त्वं | நீ |
| गुरुभूतं | குருவும் | दारुणान् | மிகக்கொடியவர்களும் |
| पितरं | பிதாவுமான | यातुधानान् | பேய்போன்றவர்களு |
| मां | என்னை | | மான |
| अवमन्यसे | இகழ்க்கனை. | राक्षसान् | ராக்ஷஸர்களை |
| यस्मात् | ஆதலின் | जनविष्यसि | பெறுவாய். |

न तु सोमकुलोत्पन्ने वंशे स्थास्यति दुर्मतेः । वंशोऽपि भवतस्तुस्यो दुर्विनीतो भविष्यति ॥

| | | | |
|------------|--------------------|----------------|--------------------|
| दुर्मतेः | “ துவட்டனாகிய உனது | भविष्यति | ஆகும். |
| वंशः अपि | வம்சமோவென்றால் | सोमकुलोत्पन्ने | சந்திரகுலத்தொடர்ச் |
| भवतः तु | உனக்கே | | சியாகிய |
| गुह्यः | நிகரானதாய் | वंशे | வம்சத்தில் |
| दुर्विनीतः | பொல்லாததாய் | न स्थास्यति | இராது. |

तमेवमुक्त्वा राजर्षिः पूरं राज्यविवर्धनम् । अभिषेकेण सम्पूज्य आश्रमं प्रविवेश ह ॥१७॥

| | | | |
|---------------|------------------|----------|------------------|
| राजर्षिः | “ ராஜரிஷி | अभिषेकेण | பட்டாபிஷேகம் |
| तं | அவனை | | செய்வதால் |
| एवं | இங்ஙனம் | संपूज्य | கொளரவித்துவிட்டு |
| उक्त्वा | சபித்துவிட்டு | आश्रमं | வான்பிரஸ்தாச்கிர |
| पूरं | பூருவை | | மத்தை |
| राज्यविवर्धनं | ராஜ்யபரிபாலனத்தை | प्रविवेश | பெற்றார். |
| | வளர்க்கின்றவரூய் | ह | காண்! |

ततः कालेन महता दिष्टान्तमुपजग्मिवान् । त्रिदिवं सङ्गतो राजा ययातिर्नहुषात्मजः ॥

| | | | |
|------------|--------------------|-------------|---------------|
| नहुषात्मजः | “ நகுஷபுத்திரராகிய | ततः | பின்னர் |
| ययातिः | யயாதி | दिष्टान्तं | ஆயுள் முடிவை |
| राजा | மன்னர் | उपजग्मिवान् | அறிந்துகொண்டு |
| | | त्रिदिवं | தேவலோகத்தை |
| महता कालेन | வெகுகாலங்கடந்த | सङ्गतः | அடைந்தார். |

पूरुश्चकार तद्राज्यं धर्मेण महता वृतः । प्रतिष्ठाने पुरवरे काशिराज्ये महायशाः ॥ १९ ॥

| | | | |
|-------------|------------------------|------------|-----------------|
| महा-शाः | “महोऽकीर्त्ततिवाऽऽ | महा | महत्तान |
| पूरुः | भ्रू [क्रिय | धर्मेण | தருமநெறியால் |
| का शिराज्ये | काशिराज्यத்தில் | वृतः | பாதுகாக்கப்பட்ட |
| प्रतिष्ठाने | பிரதிஸ்தானமென் னும் | तत् राज्यं | அந்த அரசாட்சியை |
| पुरवरे | சிறந்த பட்டணத்தில் | चकार | செய்துவந்தனன். |

यदुस्तु जनयामास यातुधानान्सहस्रशः । पुरे क्रौञ्चवने दुर्गे राजवंशबहिष्कृतः ॥ २० ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------------------------|------------|------------|
| राजवंशबहिष्कृतः | “இராஜவம்சத்தினின் று விலக்கப்பட்ட | पुरे | நகரத்தில் |
| यदुः तु | யதுவென்பவனின | सहस्रशः | அநேக |
| दुर्गे | தூர்க்கமான | यातुधानान् | அரக்கர்களை |
| क्रौञ्चवने | கிரௌஞ்சவனமென்ற | जनयामास | பெற்றான். |

एष तूशनसा मुक्तः शापोत्सर्गो ययातिना । धारितः क्षत्रधर्मेण यं निमिश्च न चक्षमे ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------------|----------|---|
| उशनसा | “சக்கிராசாரியாரால் | धारितः | பொறுத்துக்கொள் ளப்பட்டது. |
| मुक्तः | கொடுக்கப்பட்ட | निमिः च | நிமியோ |
| एषः | இந்த | यं | அப்படிப்பட்டது |
| शापोत्सर्गः तु | சாபமொழியும் | न चक्षमे | எதுவோ அதை பொறுத்துக்கொள்ள வில்லை. |
| ययातिना | யயாதியால் | | |
| क्षत्रधर्मेण | கூத்திரியதருமத்தை மேற்கொண்டு | | |

एतत्ते सर्वमाख्यातं दर्शनं सर्वकारिणाम् । अनुवर्तामहे सौम्य दोषो न स्याद्यथा नृगे ॥

| | | | |
|---------|---------------------------|--------------|--|
| सौम्य | “ஹே சௌம்ய! | यथा | எப்படிப்பட்டதோ, அப்படிப்பட்டதான |
| दर्शनं | பிரத்யக்ஷபிரமாண | दोषः | குற்றமானது |
| एतत् | இது [மான | न स्यात् | ஏற்படவேண்டாம். |
| सर्वं | எல்லாமும் | सर्वं ारिणां | கார்யமாய் வந்தவர் கள் எல்லோருக்கும் |
| ते | உனக்கு | अनुवर्तामहे | செவிகொடுத்து விசாரிப்போம்.” |
| आख्यातं | விபரமாகக்கூறப் பட்டது. | | |
| नृगे | நிருகராஜன் விஷயத் தில் | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे एकौनषष्टितमः सर्गः ॥



षष्टितमः सर्गः—அறுபதாவது ஸர்க்கம். || 60 ||

महर्षिसमागमः—மஹரிஷிகள் வருவது.

तयोः संवदतोरेवं रामलक्ष्मणयोस्तदा । वासन्तिकी निशा प्राप्ता न शीता न च घर्षदा ॥

तदा
तयोः
रामलक्ष्मणयोः
एवं
संवदतोः

அப்பொழுது
அந்த
சூராமரும், லக்ஷ்ம
ணரும்
இப்படி
ஸம்பாஷித்துக்கொ
ண்டிருக்கையில்

शीता न
घर्षदा न
वासन्तिकी च
निशा
प्राप्ता

அதிகக் குளிர்ச்சி இல்
லாததும்
அதிக வெப்பமில்லாத
தும்
வஸந்தகாலத்தியது
மான
இராப்பொழுது
நடைபெற்றது.

ततः प्रभाते विमले कृत्वा पौर्वाह्निकीं क्रियाम् । अभिचक्राम काकुत्स्थो दर्शनं पौरकार्यवित् ॥

ततः
विमले
प्रभाते
पौरकार्यवित्
काकुत्स्थः

அப்பொழுது
நிர்மலமான
பிராதக்காலத்தில்
ராஜ்யவிவஹாரங்க
ளில் நிகுணராகிய
காகுத்தர்

अभिचक्राम
पौर्वाह्निकीं
क्रियां
कृत्वा
दर्शनं

பிராதக்காலத்தில்
செய்யவேண்டிய
கரியையை
செய்துமுடித்து
விசாரித்தற்பொ
ருட்டு
எழுந்தருளிநீர்.

ततः सुमन्त्रस्त्वागम्य राघवं वाक्यमब्रवीत् । एते निवारिता राजन्द्वारि तिष्ठन्ति तापसाः ॥

ततः
सुमन्त्रः
राघवं
आगम्य
वाक्यं तु
अब्रवीत्

அப்பொழுது
சுமந்திரர்
சூராகவரிடம்
வந்துசேர்ந்து
இந்த மொழியை
மொழிந்தார் :

राजन्
द्वारि
तापसाः
तिष्ठन्ति
एते
निवारिताः

“சக்கிரவர்த்தியாரே!
வாசலில்
தவசிகள்
வந்திருக்கிறார்கள்.
இவர்கள்
ஒதுங்கி நின்றுகொ
ண்டிருக்கிறார்கள்.

भार्गवच्यवनें चैव पुरस्कृत्य महर्षयः । दर्शनं ते महाराज्ञश्चोदयन्ति कृतस्वराः ॥

प्रीयमाणा नरव्याघ्र यमुनातीरवासिनः
नरव्याघ्र
यमुनातीरवासिनः
ते
महर्षयः
भार्गव-
च्यवनें }
पुरस्कृत्य

“ஹே புருஷோத்தம!
யமுநாதிக்கரையில்
வாஸம் செய்கின்ற
அந்த
மஹரிஷிகள்
பிரசுபுத்திரரான
ச்யவன முனிவரை
முன்னிட்டுவந்து

॥ 8 ॥
प्रीयमाणाः च
कृतस्वराः एव
महाराज्ञः
दर्शनं
चोदयन्ति

விசுவாஸத்தைக் காட்
டுபவர்களாயும்
அவஸரப்படுபவர்
களாயும்
மஹாராஜரின்
தரிசனத்தை
பிரார்த்திக்கின்
றார்கள்.”

तस्य तद्वचः श्रुत्वा रामः प्रोवाच धर्मवित् । प्रवेश्यन्तां महाभागा भार्गवप्रसुखा द्विजाः ॥

धर्मवित् தருமவித்தாகிய
ராமः ஸ்ரீராமர்
तस्य அவரது
तद्वचनं அவ்வார்த்தையை
श्रुत्वा செவியுற்று
महाभागा: “மஹாபுண்யாத்து
மாக்களும்

भार्गवप्रसुखा: பார்க்கவருடன் வந்தி
ருக்கின் நவர்களுமான
द्विजाः பிரம்மகுலத்தவர்கள்
प्रवेश्यन्तां உள்ளே அழைத்து
வரப்பட்டும்” என்று
शोवाच நியமித்தருளினார்.

राज्ञस्त्वाज्ञां पुरस्कृत्य द्वाःस्थो मूर्ध्नि कृताञ्जलिः । प्रवेशयामास तदा तापसान्सुदुरासदान् ॥

द्वाःस्थः வாயிலோன்
राज्ञः ராஜரது
आज्ञां சாஸனத்தை
पुरस्कृत्य சிரமேற்கொண்டு
तु உடனே
मूर्ध्नि முடிமேல்

कृताञ्जलिः அஞ்சலிஹஸ்தரைய்
तदा அப்பொழுது
सुदुरासदान् மிக்க ஒளிபெற்று
तापसान् தவசிகளை [விளங்கும்
प्रवेशयामास உள்ளே செல்லவிடுத்
தனை.

शतं समधिकं तत्र दीप्यमानं स्वतेजसा । प्रविष्टं राजभवनं तापसानां महात्मनाम् ॥ ७ ॥

तत्र அப்பொழுது
महात्मनां மஹாத்மாக்களான
तापसानां தவசிகளின்
शतं நூறு

स्वतेजसा அவர்கள் தேஜஸால்
समाधिकं மிக்கவும்
दीप्यमानं ஜ்வலித்துக்கொண்டு
राजभवनं ராஜமாளிகையில்
प्रविष्टम् வந்துசேர்ந்தது.

ते द्विजाः पूर्णकलशैः सर्वतीर्थाम्बुसत्कृतैः । गृहीत्वा फलमूलं च रामस्याभ्याहरन्वहु ॥

ते द्विजाः அந்த பிரம்மகுலத்
தவர்கள்
सर्वतीर्थाम्बु- } ஸகல புண்ணிய தீர்த்
सत्कृतैः } தங்களால், பந்திரங்
கள் ஜபிக்கப்பட்ட
पूर्णकलशैः பூர்ணகும்பங்களோடு

बहु பற்பல
फलमूलं च கனிகளையும், கிழங்கு
களையும்
गृहीत्वा கொண்டுவந்து
रामस्य ஸ்ரீராமருக்கு
अभ्याहरन् ஸமர்ப்பித்தார்கள்.

प्रतिगृह्य तु तत्सर्वं रामः प्रीतिपुरस्कृतः । तीर्थोदकानि सर्वाणि फलानि विविधानि च ॥

रामः ஸ்ரீராமர்
प्रीतिपुरस्कृतः பேருவகை பூண்ட
सर्वाणि எல்லா [வராகி
तीर्थोदकानि புண்ணிய தீர்த்தங்கள
ளையும்

विविधानि பலவகை
फलानि च பழங்களையும்
तत् அந்த
सर्वं तु எல்லாவற்றையும்
प्रतिगृह्य பெற்றுக்கொண்டார்.

उवाच च महाबाहुः सर्वानेव महासुनीन् । इमान्यासनमुख्यानि यथार्हमुपविश्यताम् ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|------------|------------------|
| महाबाहुः | மஹாபாஹு | यथाहं च | ஏற்றவாறே |
| महासुनीन् | மஹாமுனிவர்கள் | उपविश्यतां | உட்காரப்பட்டும்" |
| सर्वान् एव | எல்லோரையும் | | என்று |
| इमानि | "இந்த பார்த்து | उवाच | திருவாய்மலர்ந்த |
| आसनमुख्यानि | சிறந்த ஆஸனங்களில் | | ருளினார்: |

रामस्य भाषितं श्रुत्वा सर्व एव महर्षयः । वृषीषु रुचिराख्यासु निषेदुः काञ्चनीषु ते ॥

| | | | |
|------------|----------------|--------------|------------------|
| रामस्य | ஸ்ரீராமரது | काञ्चनीषु | பொன்மயமான |
| भाषितं | திருவாக்குக்கு | रुचिराख्यासु | அதிக அழகுவாய்ந்த |
| श्रुत्वा | செவ்சாய்த்த | वृषीषु | ஆஸனங்களில் |
| ते महर्षयः | அந்த மஹரிஷிகள் | निषेदुः | உட்கார்ந்துகொண் |
| सर्वे एव | எல்லோருமே | | டார்கள். |

उपविष्टानृषींस्तत्र दृष्ट्वा परपुरञ्जयः । प्रयतः प्राञ्जलिभूत्वा राघवो वाक्यमब्रवीत् ॥१२॥

| | | | |
|-------------------|-----------------------------------|------------|------------------------------|
| परपुरञ्जयः | மஹாபராக்கிரம சாலியாகிய | उपविष्टान् | வீற்றிருந்த |
| राघवः | ஸ்ரீராகவர் | ऋषीन् | ரிஷிகளை |
| तत्र | அப்பொழுது | दृष्ट्वा | பார்த்து |
| प्रयतः | வணக்கமும், ஒடுக்க முமுடையவராய் | वाक्यं | இந்த மொழியை |
| प्राञ्जलिः भूत्वा | அஞ்சலிஹஸ்தராகி | अब्रवीत् | திருவாய்மலர்ந்தரு ளினார்: |

किमागमनकार्यं वः किं करोमि समाहितः । आज्ञाप्योऽहं महर्षीणां सर्वकामकरः सुखम् ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------------|------------|--|
| आगमनं कार्यं | "எழுந்தருளியிருக் கும் காரியம் | सर्वकामकरः | { ஸகல மனோதங்களை யும் பூர்த்திசெய்ய வேண்டியவனாகிய |
| किं | என்ன? | अहं | நான் |
| महर्षीणां | மஹரிஷிகளுக்கு | वः | உங்களுக்கு |
| आज्ञाप्यः | ஆஞ்ஞாபிக்கப்பட்ட வனாய் | करोमि | இப்பொழுது செய்து முடிக்கவேண்டியது |
| सुखं | குதூகலத்துடனும் | किम् | என்ன? |
| समाहितः | பக்தியுடையவ னாகவும் | | |

इदं राज्यं च सकलं जीवितं च हृदि स्थितम् । सर्वमेतद्द्विजार्थं मे सत्यमेतद्ब्रवीमि वः ॥

| | | | |
|------------|-------------------|---------|---------------------------------------|
| इदं राज्यं | * இந்த ராஜ்யமும் | एतत् | இது |
| सकलं | ஒவ்வொன்றும் | स्थितं | ஸ்திரமாய் நாட்டப் பெற்றிருக்கிறது. |
| सर्वं | எல்லாமும் | एतत् | இது |
| जीवितं च | உயிரும் | सत्यं च | ஸத்யமென்றே |
| द्विजार्थं | அந்தணர்களின் ஸ்வா | वः | உங்களுக்கு |
| मे | எனது [மீயும் | ब्रवीमि | வாக்களிக்கிறேன். " |
| हृदि | ஹிருதயத்தில் | | |

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा साधुकारो महानभूत् । ऋषीणामुद्यतपसां यमुनातीरवासिनाम् ॥

तस्य अवराது
तद्वचनं திருவாக்குக்கு
श्रुत्वा செவிசாய்த்தவளவில்
उद्यतपसां மஹா வைராக்கிய
முடையவர்களும்
यमुनाती(-) யமுநாதிக்ககரையில்
वासिनां } வாஸஞ்செய்கின்ற
வர்களான

ऋषीणां ரிஷிகளுடைய
महान् பெரிய
साधुकारः 'நன்று', 'நன்று'
என்றகொண்டாட்டம்
अभूत् ஏற்பட்டது.

उचुश्च ते महात्मानो हर्षेण महाऽऽवृताः । उपपन्नं नरश्रेष्ठ तवैव भुवि नान्यतः ॥ १६ ॥

ते महात्मानः அந்த மஹாத்மாக்கள்
महता அதி
हर्षेण ஸந்தோஷத்தால்
आवृताः மனம் பொங்கியவர்
களாகி

नरश्रेष्ठ “ஹே புருஷோத்தம!
तव एव தேவரீர் ஒருவருக்கே
उपपन्नं சாத்தியமானது.
भुवि இப்புளியில்
अन्यतः च மற்றெவர்க்கும்
न முடியாது.

उचुः இப்படி பேசினார்கள்:

बहवः पार्थिवा राज्ञत्तिक्रान्ता महाबलाः । कार्यस्य गौरवं मत्वा प्रतिज्ञां नाभ्यरोचयन् ॥

राजन् “சக்கிரவர்த்தியாரே!
अतिक्रान्ताः இதுவரையிலுள்ளவர்
களும்
महाबलाः அதிபலிஷ்டர்களோடு
बहवः அனேக [மான
पार्थिवाः பூபதிகள்

कार्यस्य கார்யத்தின்
गौरवं முடிவு அசாத்திய
मत्वा எண்ணி [மென்பதை
प्रतिज्ञां உடன்படுவதற்கு
न अभ्यरोचयन् இஷ்டப்படவில்லை.

त्वया पुनर्ब्राह्मणगौरवादियं कृता प्रतिज्ञा ह्यनवेक्ष्य कारणम् ।

ततश्च कर्ता ह्यसि नात्र संशयो महाभयात्तूतृपूर्वीस्त्वमर्हसि ॥ १८ ॥

त्वया पुनः “தேவரீரால் மாத்
कारणं உத்தேசத்தை [திரம்
अनवेक्ष्य च விசாரித்தறியாமலும்
ब्राह्मणगौरवात् பிராமணர்களிடமு
ள்ள அகலாவத்தாலே
इयं प्रतिज्ञा இந்த பிரதிக்கை
कृता தந்தருளப்பட்டது.
ततः ஆகலால்
कर्ता காரியத்தைச் செய்து மு
டிக்கவேண்டியவராய்

असि ஆகிரீர்.
अत्र இதில்
संशयः न ஸம்சயமில்லை.
एवं हि தேவரீரே
ऋषीन् முனிவர்களை
महाभयात् பேராபத்திலிருந்து
ह्यस्तु பாதுகாத்தருள
अर्हसि திருவுள்ளங்கொள்ள
வேண்டும்”.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे षष्ठितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22854

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2130

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे अष्टाविंशोऽह्नि वर्तमानकथाप्रसङ्गः ॥

இவ்விதம் ஆதியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமர் ஸந்தியில் அச்வமேத யாகசாலையில் கானம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில் இருபத்தெட்டாவது தினத்தில் கானம் பண்ணப்பட்ட கதை முடிவுபெற்றது.

[புரா குசலவாஶ்யாं श्रीरामसन्निधावश्वमेधयज्ञवाटे द्वात्रिंशति दिनेषु गीते श्रीमद्रामायणे
एकोर्नात्रिशोऽङ्गि उत्तरकाण्डे एकषष्टितमसर्गमारभ्य अशीतितमसर्गपर्यन्तं
(22855—23334 श्लोकाः) गीतम् । तस्मिन् दिने गीताः श्लोकाः 480]

[ஆதியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமஸந்நிதியில் அச்வமேதயாகசாலையில்
முப்பத்திரண்டு தினங்களில் காணம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில்
இருபத்தொன்பதாவது தினத்தில் உத்தரகாண்டத்தில் அறுபத்தேராவது
ஸர்க்கம்முதல் எண்பதாவது ஸர்க்கம்வரை (22855—23334)
காணம் செய்யப்பட்டது.

அன்று காணம் செய்யப்பட்ட சுலோக சங்கியை 480]

एकषष्टितमः सर्गः—அறுபத்தேராவது ஸர்க்கம். || ௨௩ ||

लवणपीडानिवेदनम्—லவணஸூரனுடைய உபத்திரவத்தை தெரிவித்தல்.

एवं ब्रुवद्भिर्ऋषिभिः काकुत्स्थो वाक्यमब्रवीत् । किं कार्यं ब्रूत मुनयो भयं तावदपैतु वः ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|---------|-----------------------|
| காகுஸ்த்: | காகுத்ஸ்தர் | கார்யம் | செய்யவேண்டிய |
| ऋषिभिः | முனிவர்களால் | கார்யம் | கார்யம் |
| एवं | இப்படி | किं | என்ன ? |
| ब्रुवद्भिः | சொல்லப்பட்டவள வில் | ब्रूत | நீங்கள் ஆருளிச்செய்க. |
| वाक्यं | இந்த வாக்யத்தை | वः | உங்களுடைய |
| अब्रवीत् | சொல்லி ஆருளிநீர்: | भयं | அச்சத்தை |
| मुनयः | “முனிகளாள் ! | तावत् | இவ்வளவோடு |
| | | अपैतु | ஒழித்துவிடுக.” |

तथा ब्रुवति काकुत्स्थे भार्गवो वाक्यमब्रवीत् । भयानां शृणु यन्मूलं देशस्य च नरेश्वर ॥

| | | | |
|----------|-----------------|----------|----------------------------|
| காகுஸ்த் | காகுத்ஸ்தர் | नरेश्वर | “புருஷோத்தம ! |
| तथा | அவ்வாறு | देशस्य च | தேசத்திற்கே |
| ब्रुवति | கூறியதும் | भयानां | விபத்துக்களுக்கு |
| भार्गवः | பார்க்கவமுனிவர் | यत् | எது |
| वाक्यं | இந்த மொழியை | मूलं | மூலமோ அதை |
| अब्रवीत् | கூறினார்: | शृणु | உரைக்கின்றேன் கேளும்த். |

पूर्व कृतयुगे राजन्दैतैः सुमहाबलः । लोलापुत्रोऽभवज्ज्येष्ठो मधुर्नाम महासुरः ॥ ३ ॥
ब्रह्मण्यश्च शरण्यश्च बुद्ध्या च परिनिष्ठितः । सुरैश्च परमोदारैः प्रीतिस्तस्यातुलाऽभवत् ॥

| | | |
|----------|----------------------------------|--|
| ராஜந் | “சக்கிரவர்த்தியாரே ! | } பிரம்மக்ஞானமுடைய வரெனவும் (அல்லது பிராம்மணர்களிடத் தில் பக்தியுள்ளவ னெனவும்) |
| पूर्वं | பூர்வம் | |
| कृतयुगे | கிருதயுகத்திலே | |
| सुमहाबलः | மஹாபலிஷ்டனென கியாதிபெற்றவனாய் | |
| | | |

| | | | |
|---------------|---|-----------|-----------------------|
| शरण्यः च | { அடைக்கலம் புகுந் தோரையாதரிக்கும் இயல்புடையோனெ னவும் | उष्टेः | ஜேஷ்டனும் |
| बुद्ध्या | தர்மபுத்தியால் | मधुः | மதுவென |
| परिनिष्ठितः च | மிகத்தேர்ச்சியடைந் தவெனெனவும் | नाम च | பெயர் பூண்டவனு பான |
| महापुरः | { மனிதஸ்வபாவங்களு க்கு மிஞ்சினவெனெ ப்பெயர்பெற்றவனுய் | दैतेयः | ழர் ஆரக்கன் |
| खोलापुत्रः | லோலையென்பவளின் புதல்வனும் | अभवत् | இருந்தனன். |
| | | तस्य | அவனுக்கு |
| | | परमोदारैः | மஹான்களான |
| | | सुरैः | தேவர்களாலும் |
| | | अतुष्टा | மஹத்தான |
| | | प्रीतिः | அனுக்கிரகம் |
| | | अभवत् | ஏற்பட்டது. |

स मधुर्वीर्यसम्पन्नो धर्मो च सुसमाहितः । बहुमानाच्च ख्रेण दत्तस्तस्याद्भुतो वरः ॥ ५ ॥

| | | | |
|---------------|-----------------|-----------|------------------|
| सः | “அந்த | तस्य | அவனுக்கு |
| मधुः | மதுவானவன் | ख्रेण च | ருத்திரதேவராலேயே |
| वीर्यसम्पन्नः | வீரியசம்பன்னன். | बहुमानात् | அபிமானத்தால் |
| च | அன்றியும் | अद्भुतः | அற்புதமான |
| धर्मो | தருமத்தில் | वरः | வரமொன்று |
| सुसमाहितः | ஊக்கங்கொண்டவன். | दत्तः | தந்தருளப்பட்டது. |

शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य महावीर्यं महाप्रभम् । दशौ महात्मा सुप्रीतो वाक्यं चैतदुवाच ह ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------------|-------------|---------------------|
| महात्मा | “மஹாத்மாவாகிய இவர் | शूलं | சூலமொன்றை |
| सुप्रीतः | உபகாரகுணமுடை யவராகி | विनिष्कृष्य | பிரித்தெடுத்து |
| शूलात् | (சிலாயுதமாகிய) சூலத்திலிருந்து | दशौ | சம்மானமாய் ஈந்தனர். |
| महावीर्यं | சிறந்தவீரியமுடை யதும் | च | அன்றியும் |
| महाप्रभं | சிறந்தசோதியுடை யதுமான | एतत् | இந்த |
| | | वाक्यं | வாக்கியத்தையும் |
| | | उवाच | திருவாய்மலர்ந்தரு |
| | | ह | காண்! [ளிஞர். |

त्वयाऽयमतुलो धर्मो मत्प्रसादात्कृतः शुभः । प्रीत्या परमया युक्तो ददाभ्यायुधमुत्तमम् ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------------|----------|--------------------------------|
| त्वया | “உன்றால் | परमया | அத்தியந்த |
| अयं | இந் | प्रीत्या | அபிமானத்தால் |
| धर्मः | தருமமானது | युक्तः | அனுக்கிரகஞ்செய்ய வேண்டியவகை |
| अतुलः | அதவிதீயமாய் அனு ஷ்டிக்கப்பட்டது. | उत्तमं | உத்தமமான |
| मत्प्रसादात् | என் அனுக்கிரகத்தால் | आयुधं | ஆயுதத்தை |
| शुभः | பாக்கியம் பெற்றதாய் | ददामि | சம்மானமாய் அளிக் கின்றேன். |
| कृतः | ஏற்பட்டுவிட்டது. | | |

यावत्सुरैश्च विप्रैश्च न विरुध्यैर्महासुर । तावच्छूलं तवेदं स्यादन्यथा नाशमेष्यति ॥ ८ ॥

| | | | |
|---|---------------------------|--------|-------------------------------|
| महासुर | “‘ஹே மஹா அஸு ரனே ! | इदं | இந்த |
| सुरैः च | தேவர்களுடனும் | शूलं | சூலம் |
| विप्रैः च | பிராம்மணர்களுட னும் | तव | உன்னுடையதாய் |
| यावत् | எவ்வளவுகாலம் | स्यात् | விளங்கும். |
| न विरुध्येः | விரோதம் ஏற்படவில் லையோ | अन्यथा | அப்படி இல்லாத பட்சத்தில் |
| तावत् | அதுவரை | नाशं | கண்ணுக்குப் புலப் படாததாய் |
| यश्च त्वामभियुञ्जीत युद्धाय विगतज्वरः । तं शूलो भस्मसात्कृत्वा पुनरेष्यति ते करम् ॥ | | एष्यति | ம்றைந்துவிடும். |

यश्च त्वामभियुञ्जीत युद्धाय विगतज्वरः । तं शूलो भस्मसात्कृत्वा पुनरेष्यति ते करम् ॥

| | | | |
|------------|---------------------|----------------|---------------|
| यः च | “‘எவனேனும் | शूलः | சூலமானது |
| युद्धाय | யுத்தத்திற்கு | भस्मसात्कृत्वा | சாம்பலாக்கி |
| विगतज्वरः | பயமின்றி | ते | உனது |
| ऽतं | உன்னை | करं | கையில் |
| अभियुञ्जीत | மேல்விழுந்து தாக்கி | पुनः | மறுபடியும் |
| तं | அவனை [னால் | एष्यति | வந்துசேரும்.’ |

एवं रुद्राद्वरं लब्ध्वा भूय एव महासुरः । प्रणिपत्य महादेवं वाक्यमेतदुवाच ह ॥ १० ॥

| | | | |
|----------|--------------------------|-----------|--------------------|
| महासुरः | “‘மஹா அஸுரன் | सूयः एव | மறுபடியும் |
| रुद्रात् | சிவபெருமானிட மிருந்து | महादेवं | மஹாதேவனை |
| एवं | இவ்வாறு | प्रणिपत्य | பக்தியுடனடிபணிந்து |
| वरं | வரத்தை | एतत् | இந்த [நமஸ்கரித்து |
| लब्ध्वा | பெற்றபின்னர் | वाक्यं ह | வாக்யத்தையும் |
| | | उवाच | மொழிந்தான்: |

भगवन्मम वंशस्य शूलमेतदनुत्तमम् । भवेत्तु सततं देव सुराणाम् श्वरो ह्यसि ॥ ११ ॥

| | | | |
|------------|------------------|--------|---------------------------------|
| सुराणां तु | “‘தேவர்களுக்கும் | शूलं | சூலமானது |
| ईश्वरः | தேவராய் | सततं | எப்பொழுதும் |
| असि | இருக்கிறீர். | मम | எனது |
| हि | என்கிறபடியால் | वंशस्य | வம்சத்துக்குரியதாய் |
| भगवन् | ஹே பகவானே! | भवेत् | இருக்க அணுகிரகிக் கவண்டும்.’ |
| एतत् | இந்த | | |
| अनुत्तमं | இணையில்லாத | | |

तं ब्रुवाणं मयुं देवः सर्वभूतपतिः शिवः । प्रत्युवाच महातेजा नैतदेवं भविष्यति ॥ १२ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------------|------------|-------------------|
| महातेजाः | “‘மஹாதேஜோவானும் | तं मयुं | உந்த மதுவுக்கு |
| सर्वभूतपतिः | ஸர்வபூதங்களுக்கும் பதியுமாகிய | प्रयुवाच | இந்த பதிலை சொல்லி |
| शिवः देवः | சிவபெருமான் | एतत् | ‘இது [யருளிணர்: |
| ब्रुवाणं | பிரார்த்திக்கும் | एवं | இங்ஙனம் |
| | | न भविष्यति | இருக்கமுடியாது. |

मा भूत्ते विफला वाणी मत्प्रसादकृता शुभा । भवतः पुत्रमेकं तु शूलमेतद्भविष्यते ॥

பு
தே
ம:பா சா:கூதா
சுபா
வாணி
விபலா

“ ஆனபோதிலும்
உன்னுடைய
என் அனுக்கிரகத்
தால் விளைந்ததும்
சிறந்ததுமான
வேண்டுகோள்
விண்ணதாய்

மா பூத்
மவத:
ஏக்
புத்
புத்
சூல்
மநிஷ்யதே

ஆகவேண்டாம்.
உனது
ஒரு
புதல்வனை
இந்த
சூலமானது
காத்துக்கிடக்கும்.

यावत्करस्यः शूलोऽयं भविष्यति सुतस्य ते । अवध्यः सर्वभूतानां शूलहस्तो भविष्यति॥

அய்
சூல்:
தே
சுதஸ்ய
கரஸ்ய:
மவிஷ்யதி

“ இந்த
சூலமானது
உனது
ஒரு குமாரனுக்கு
கையிலிருப்பதாய்
இருக்கும்.

சூல்ஹஸ்த:
யாவத்
சர்வபூதானா
அவத்ய:
மவிஷ்யதி

சூலத்தைக் கையிலே
தியவனாய்
எதுவரையில் இருக்கி
ரானே அதுவரையில்
எப்படிப்பட்ட பிரா
ணிகளுக்கும்
கொல்லமுடியாதவனாய்
இருப்பான்.

एवं मधुर्वरं लब्ध्वा देवात्सुमहद्द्रुतम् । भवनं सोऽसुरश्रेष्ठः कारयामास सुप्रभम् ॥१५॥

ச:
அசுர:சுரே:ஸ்ட:
மது:
தேவாத்
ஏவ்
சுமஹத்

“ அந்த
அஸுரோ த்தமனாகிய
மது
தேவரிடமிருந்து
இப்படிப்பட்ட
அதிமஹத்தானதும்

அஹுத்
வர் லக்ஷ்வா
சுபுரம
மவந்
காரயாமாச

அற்புதமுமான
வரத்தைப் பெற்று
மிகச்சிறந்த
மாளிகையொன்றை
நிருமாணம் செய்து
கொண்டான்.

तस्य पत्नी महाभागा प्रिया कुम्भीनसीति या । तस्याः पुत्रो महावीर्यो लवणो नाम दारुणः॥
बाल्यात्प्रभृति दुष्टात्मा पापान्येव समाचरत् ॥ १६ ॥

கும்பினசீ
ஹதி
யா
தஸ்ய
பிரியா
பனி
மஹாபா
தஸ்யா:
புல:

“ கும்பினஸீ
என்பவள்
எவளோ அவள்
அவனது
மனதிற்கினிய
மணியாள் ;
மஹா தர்மபுத்தியுடை
அவளுடைய [யவள்.
புத்திரன்

லவண:
நாம
மஹாவீரய:
தாருண:
பால்யாத்
புஸ்தி
துஸ்தாமா
பாபானி ஏவ
சமாசுரத்

லவணன்
என்பவன்.
மஹா வீரயசாலி:
கொடியவன்.
சிறு பிராயம்
முதற்கொண்டு
துஷ்டனாய்
பாவங்களோடே
புரிந்துவந்தான்.

तं पुत्रं दुर्विनीतं तु दृष्ट्वा दुःखसमन्वितः । मधुः स शोकमापेदे न चैनं किञ्चिदब्रवीत् ॥

மது: "மது
 த் அந்த
 புத் திரணை
 दुर्विनीतं துர்மார்க்கத்தில் வி
 முந் துபோனவனாக

दृष्ट्वा கண்டு
 तु இதுவிஷயத்தில்

स विहाय त्विमं लोकं प्रविष्टो वरुणालयम् ।

ச: "அவன்
 लवणे லவணனிடத்தில்
 शूलं சூலத்தை
 निवेश्य ஒப்புவித்துவிட்டு
 तस्मै அவனுக்கு
 वरं வரத்தைப்பற்றி

स प्रभावेन शूलस्य दौरात्म्येनात्मनस्तथा । सन्तापयति लोकांस्त्रीन्विशेषेण च तापसान् ॥

ச: "அவன்
 तथा அப்படிப்பட்டதான
 आःस्य: தனது
 दौराःस्येन துர்குணத்தினாலும்
 शूलस्य சூலத்தின்
 प्रभावेन மஹிமையாலும்

एवंप्रभावो लवणः शूलं चैव तथाविधम् । श्रुत्वा प्रमाणं काकुत्स्थ त्वं हि नः परमा गतिः ॥

காகு:ஸ்த் "காகுத்தரே!
 लवणः एव லவணனும்
 एवंप्रभावः இத்தன்மையன்,
 शूलं च சூலமும்
 तथाविधं அத்தன்மையது.
 न: எங்களுக்கு

बहवः पार्थिवा राम भयार्त्रैर्ऋषिभिः पुरा ।

வீர "தனிவீரராகிய
 राम ஹே ராம!
 पुरा இதுகாலம்
 भयार्त्रै: ஏக்கம்பிடித்த
 ऋषिभि: முனிவர்களால்
 बहव: பல
 पार्थिवा: பார்த்திவர்கள்

दुःखसमन्वितः மனம் நொந்தவனாய்

शोकं கஷ்டத்தை

आपेदे அடைந்தான்.

स: அவன்

एवं இவனைப்பார்த்து

किञ्चित् च ஒன்றும்

न अब्रवीत् பேசாமலிருந்தான்.

शूलं निवेश्य लवणे वरं तस्मै न्यवेदयत् ॥

न्यवेदयत् எல்லாவற்றையும் தெ
 ரியச்சொன்னான்.

तु இந்த ஸ்திதியில்

इमं लोकं இந்த உலகத்தை

विहाय விட்டொழித்து

वरुणालयं வருணலயத்தில்

प्रविष्टः போய்த்தங்கிவிட்டான்.

सन्तापयति लोकांस्त्रीन्विशेषेण च तापसान् ॥

वीन् लोकान् மூவுலகங்களையும்
 विशेषेण அவற்றிலும் விசேஷ

मायம்

तापसान् च முனிவர்களையே

सन्तापयति துன்புறுத்திவருகின்

रुन्.

एवंप्रभावो लवणः शूलं चैव तथाविधम् । श्रुत्वा प्रमाणं काकुत्स्थ त्वं हि नः परमा गतिः ॥

त्वं हि தேவரீர்தான்

परमा பரமமான

गतिः கதி.

श्रुत्वा } திருச்செகிசாய்த்த

प्रमाणम् } தேவரீர் திருவுள்ளப்

படி செய்தக.

अभयं याचिता वीर त्रातारं न च विश्वे ॥

अभयं அபயமளிக் குமாறு

याचिता: வேண்டிக்கொள்ளப்

पट्टाङ्कः.

त्रातारं च { அஞ்சேலென்று அபய

मளிப்பவர் ஒருவரை

युम्

विश्वे न காணவில்லை.

ते वयं रावणं श्रुत्वा हतं सबलवाहनम् । त्रातारं विद्महे तात नान्यं भुवि नराधिपम् ॥

| | |
|----------|--------------------------|
| तात | “மஹா பூஜய், |
| ते | அந்த |
| वयं | நாங்கள் |
| रावणं | ராவணனை |
| सबलवाहनं | சேனைகள் வாஹனங் களுடன் |
| हतं | வதையுண்டவனாக |

| | |
|----------|-------------------------|
| श्रुत्वा | அறிந்து |
| त्रातारं | கைகொடுத்து காப்ப வரை |
| विद्महे | கண்டு கொண்டோம். |
| भुवि | உலகில் இப்படிப் |
| अन्यं | மற்றொரு [பட்ட |
| नराधिपं | மன்னனை |
| न | அறிந்திலோம். |

तत्परित्रातुमिच्छामो लवणाद्भयपीडितान्

॥ २३ ॥

| | |
|--------|----------------|
| तत् | “ஆதலின் |
| लवणाद् | லவணனிடமிருந்து |

| | |
|------------|-----------------------|
| भयपीडितान् | அஞ்சித்துண்டபுறப்பவர் |
| परित्रातुं | பாதுகாத்தருள [களை |
| इच्छामः | வேண்டுகின்றோம்.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे एकषष्टितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22877



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2153

द्विषष्टितमः सर्गः—अनुपத்திரண்டாவது ஸர்க்கம். ॥ ६२ ॥

लवणवधार्थं शत्रुघ्नप्रेषणम्—லவணஸூரனை வதைக்க சத்ருக்கினையனுப்புவது.

तयोक्ते तानृषीन्नामः प्रत्युवाच कृताञ्जलिः । किमाहारः किमाचारो लवणः क्व च वर्तते ॥

| | |
|------------|-------------------------------|
| तथा | இங்கனம் |
| उक्ते | பிரார்த்திக்கப்பட்ட வளவில் |
| रामः | ஸ்ரீராமர் |
| कृताञ्जलिः | கைகூப்பிக்கொண்டே |
| तान् | அந்த |
| ऋषीन् | முனிவர்களைப் பார்த்து |

| | |
|------------|----------------------------------|
| प्रत्युवाच | இப்படி வினாவினார்: |
| लवणः च | “லவணன் |
| क्व | எங்கு |
| वर्तते | வளிக்கிறான்? |
| किमाहारः | அவனது ஆஹாரம் எத்தன்மையானது? |
| किमाचारः | அவனது ஆசாரம் எத் தன்மையானது?” |

राधवस्य वचः श्रुत्वा ऋषयः सर्वे एव ते । ततो निवेद्यामासुर्लवणो ववृथे यथा ॥ २ ॥

| | |
|----------|----------------|
| ते | அந்த |
| ऋषयः | ரிஷிகள் |
| सर्वे एव | எல்லோரும் |
| राधवस्य | ஸ்ரீராகவரது |
| वचः | திருவாக்குக்கு |
| श्रुत्वा | செவியாய்த்து |

| | |
|---------------|----------------------------|
| ततः | அதன்மேல் |
| लवणः | லவணன் |
| ववृथे | வளர்ந்து வருகிறது |
| यथा | எப்படியோ அதை இப்படி |
| निवेद्यामासुः | விவரமாய்ச் சொன் றர்கள். |

आहारः सर्वसत्त्वानि विशेषेण च तापसाः । आचारो रौद्रता नित्यं वासो मधुवने तथा ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|-------------|----------------|
| सर्वसत्त्वानि | “ஸகல பிராணிகளும்தம் | नित्यं | என்றும் |
| विशेषेण | முதன்மையாய் | रौद्रता तथा | தினம் செய்தலே |
| तापसाः च | தவசிகளுந்தான் | आचारः | ஆசாரம் |
| आहारः | ஆஹாரம். | मधुवने | மதுவனத்தில்தம் |
| | | वासः | வஸிக்கின்றான். |

हत्वा बहुसहस्राणि सिंहव्याघ्रमृगद्विपान् । मानुषांश्चैव कुरुते नित्यमाहारमाह्निकम् ॥ ४ ॥

| | | | |
|-------------------------------|---|------------|---------------|
| सिंहव्याघ्र- मृगद्विपान् } | “ சிங்கங்களையும் புலிகளையும் மான்களை யும் மதயானைகளையும் | हत्वा | கொண்டு |
| मानुषान् च बहुसहस्राणि | மாணிடர்களையும் ஆயிரமாயிரமாய் | नित्यं | என்றும் |
| | | आह्निकं एव | ஒருநாள் தவராத |
| | | आहारं | ஆகாரமாக |
| | | कुरुते | கொள்கிறான். |

ततोऽन्तराणि सत्त्वानि खादते स महाबलः । संहारे समनुप्राप्ते व्यादितास्य इवान्तकः ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------|--------------|----------------------|
| ततः | “அதுவும் தவிர | अन्तकः इव | யமனெனவே |
| सः | அந்த | संहारे | ஸம்ஹரிப்பதில் |
| महाबलः | மஹாபலிஷ்டன் | समनुप्राप्ते | தலைப்பட்டிருக்கையில் |
| व्यादितास्यः | வாயைத்திறந்து கொண்டு | अन्तराणि | இடையிலுள்ள |
| | | सत्त्वानि | ஸத்வங்களை |
| | | खादते | விழுங்கிவிடுகிறான். |

शूलहस्तो रिपून्सर्वांभिर्दहत्येष दुर्मतिः

॥ ६ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------|-----------|----------------|
| एषः दुर्मतिः | “ இந்த தத்துஷ்டன் | रिपून् | எதிர்ப்பவர்கள் |
| शूलहस्तः | சூலத்தைக் கையிலே ந்தியவனாய் | सर्वांश्च | எவர்களையும் |
| | | निर्दहति | வாட்டுகிறான்.” |

तच्छ्रुत्वा राघवो वाक्यमुवाच स महामुनीन् । घातयिष्यामि तद्रक्षो ह्यपगच्छतु वो भयम् ॥

| | | | |
|-----------|----------------------------|-------------|----------------------------|
| तत् | அதற்கு | तव | “அந்த |
| श्रुत्वा | திருச்செவிகாய்த்த | रक्षः | அரக்களை |
| सः | அந்த | घातयिष्यामि | ஸம்ஹரித்து விடுகி றேன். |
| राघवः | ரூராகவர் | दि | ஆனதால் |
| महामुनीन् | மஹரிஷிகளைப் பார்த்து | वः | உங்களது |
| वाक्यं | இந்த மொழியை | भयं | பயம் |
| उवाच | திருவாய்மலர்ந்தருளி ரை: | अपगच्छतु | ஒழியட்டும்.” |

प्रतिज्ञाय तथा तेषां मुनीनामुग्रतेजसाम् । स भ्रातृन्सहितान्सर्वानुवाच रघुनन्दनः ॥८॥

ச: அந்த
 ரகுநந்தனர்
 தेषா் அந்த
 உபரேஜஸர் உக்கிராதேஜஸ்வி
 முநீநர் ரீஷிகளுக்கும் [கரான
 ததா அவ்வண்ணம்

प्रतिज्ञाय வாக்களித்துவிட்டு
 सहितान् கூடியிருக்கும்
 भ्रातृन् ஸகோதரர்கள்
 सर्वान् எல்லோரையும்
 उवाच இப்படி வினாவினார்:

को हन्ता लवणं वीरः कस्यांशः स विधीयताम् । भरतस्य महाबाहोः शत्रुघ्नस्य च धीमतः ॥

லவண் “லவணனை
 हन्ता வதைக்கும்
 वीरः வீரன்
 कः கவன் ?
 महाबाहो: மஹாபாகுவான
 भरतस्य பரதனுக்கா

धीमतः தீமானை
 शत्रुघ्नस्य च சத்ருக்ஷணுக்கா ?
 कस्यांशः யாரின் அம்சமாய்
 स: அது
 विधीयताम् விதிக்கப்பட்டும்? ”

राघवैणैवमुक्तस्तु भरतो वाक्यमब्रवीत् । अहमेनं वधिष्यामि ममांशः स विधीयताम् ॥

ராவ்வே ஸ்ரீராகவரால்
 एवं இவ்வண்ணம்
 उक्तः வினாவியதற்குச் செவி
 சாய்த்த
 भरतः பரதர்
 तु இவ்விஷயத்தில் இந்த
 वाक्यं மொழியை
 अब्रवीत् சொன்னார்:

एनं “இவனை
 अहं நான்
 वधिष्यामि வதைக்கின்றேன்.
 स: அது
 मम எனது
 अंशः அம்சமாக
 विधीयताम् நியமித்தருளப்பட்ட
 டும்.”

भरतस्य वचः श्रुत्वा धैर्यशौर्यसमन्वितम् । लक्ष्मणावरजस्तस्यो हित्वा सौवर्णमासनम् ॥

भरतस्य } பரதருடைய
 धैर्यशौर्य- } தைர்யமும் செளர்ய
 समन्वितं } மும் ஸ்ரீணமாய்
 நிறைந்துள்ள
 वचः வாக்யம்
 श्रुत्वा செவிப்புற்ற

लक्ष्मणावरजः லக்ஷ்மணருடன் பிறந்
 த சத்ருக்ஷர்
 सौवर्णं சுவர்ணமயபான
 भासनं ஆஸனத்தை
 हित्वा விட்டு
 तस्यौ எழுந்துநின்றார்.

शत्रुघ्नस्त्वब्रवीद्वाक्यं प्रणिपत्य नराधिपम् । कृतकर्मा महाबाहुर्मध्यमो रघुनन्दनः ॥ १२ ॥

शत्रुघ्नः சத்ருக்ஷர்
 नराधिपं புருஷோத்தமரை
 प्रणिपत्य தண்டன் ஸமர்ப்பித்து
 तु இதுவிஷயத்திலிந்த
 वाक्यं வாக்யத்தை
 अब्रवीत् சொன்னார்:

महाबाहुः “மஹாபாகுவும்
 मध्यमः நடுவில் பிறந்தவருமா
 रघुनन्दनः ரகுநந்தனர் (பரதர்)
 कृतकर्मा { ஸ்ரீலோகத்தின் அம்ச
 புருஷார் த்தங்களை
 காணப்பெற்றவர்.

आर्येण हि पुरा शून्या स्वयोध्या रक्षिता पुरी । सन्तापं हृदये कृत्वा आर्यस्यागमनं प्रति ॥

| | | | |
|--------------|---------------|-------------|---------------------|
| पुरा तु | “இதற்குமுன் | आगमनं प्रति | திரும்பிவந்துசேரு |
| स्वया शून्या | தேவரீரில்லாத | | வகை எதிர்பார்த்து |
| अयोध्या पुरी | அயோத்தியாபுரி | सन्तापं हि | குறையையே |
| आर्येण | பெரியவரால் | हृदये | மனதில் |
| आर्यस्य | பெரியவருடைய | कृत्वा | வைத்துக்கொண்டு |
| | | रक्षिता | பரிபாஷிக்கப்பட்டது. |

दुःखानि च बहूनीह ह्यनुभूतानि पार्थिव । शयानो दुःखशय्यासु नन्दिग्रामे महामनाः ॥

| | | | |
|------------|---------------------|-------------|------------------------|
| पार्थिव | “சக்கிரவர்த்தியாரே! | महामनाः | மஹாத்மா (பரதர்) |
| इह | இவ்விடையத்தில் | नन्दिग्रामे | நந்திகிராமத்தில் |
| बहूनि च | பற்பல | दुःखशय्यासु | காடுமுடான படுக்கைகளில் |
| दुःखानि हि | கஷ்டங்களும் | शयानः | படுத்திருந்தார். |
| अनुभूतानि | அனுபவிக்கப்பட்டன. | | |

फलमूलाशनो भूत्वा जटी चीरधरस्तथा । अनुभूयेदं दुःखमेष राघवनन्दनः ।

प्रेष्ये मयि स्थिते राजन् भूयः केशमासुयात् ॥ १५ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------|-------------|------------------|
| तथा | “அவ்வண்ணம் | स्थिते | ஆக்கினையே காத்தி |
| भूत्वा | ஆகி | | ருக்கும்பொழுது |
| जटी | சடைமுடியராய் | एषः | இந்த |
| चीरधरः | மரவுரியராய் | राघवनन्दनः | ஸ்ரீராகவந்தனர் |
| फलमूलाशनः | கனிகாய்களையே உண | ईदं | (பரதர்) |
| | வாய்க்கொண்டார். | दुःखं | இப்படிப்பட்ட |
| राजन् | சக்கிரவர்த்தியாரே! | अनुभूय | கஷ்டத்தை |
| मयि प्रेष्ये | என்னை அனுப்பும் | भूयः | அனுபவித்துவிட்டு |
| | விடியத்தில் | केशं | மீள்வும் |
| | | न आप्नुयात् | கஷ்டத்தை |
| | | | அடையவேண்டாம். |

तथा ब्रुवति शत्रुघ्ने राघवः पुनरब्रवीत् । एवं भवतु काकुत्स्थ क्रियतां मम शासनम् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-----------|-----------------|
| शत्रुघ्ने | “சத்தாருக்கினர் | काकुत्स्थ | ‘சத்தாருக்கினா! |
| तथा | இப்படி. | एवं | அப்படியே |
| ब्रुवति | விண்ணப்பஞ்செய் | भवतु | ஆகட்டும் |
| | கையில் | मम | எனது |
| पुनः | அதன்மேல் | शासनं | சாஸனமானது |
| राघवः | ஸ்ரீராகவர் | क्रियताम् | செய்துமுடிக்கப் |
| अब्रवीत् | இப்படி அருளினார். | | பட்டும்! |

राज्ये त्वामभिक्ष्यामि मधोस्तु नगरे शुभे । निवेशय महाबाहो भानं यद्यक्षसे ॥१७॥

மஹாபாஹோ
மரதன்
அவேக்ஷசே
யதி
ஸ்வா
ஸு

“மஹாபாஹுவே!
பாநனை
பெருமைப்படுத்து
கின்றாய்
என்பதால்
உன்னை
இப்பொழுதே

அभिक्ष्यामि
मधोः
शुभे
नगरे
राज्ये
निवेशय

பட்டாபிஷேகஞ்செய்
மதுவின் [கின்றேன்.
அழகான
நகரத்திலும்
ராஜ்யத்திலும்
ஆஸக்தியுடனிரு
ந்துவா:

शूरस्त्वं कृतविद्यश्च समर्थश्च निवेशने । नगरं यमुनाजुष्टं तथा जनपदाञ्छुभान् ॥ १८ ॥

ஸ்வம்
சூர:
ச
கூர்வித:
யமுனாஜுஷ்டம்

“நீயும்
சூரன்.
அன்றியும்
கற்றறிந்துகேற்றின
வித்பன்னன்.
யமனின் உடன்பிற
ந்தாளாகிய யமுனா
நதியால் ஸேவிக்ஷப்
பெற்ற

नारं हि
तथा
शुभान्
जनपदान्
निवेशने च
समर्थः च

நகரத்தையும்
அப்படியே
நல்ல
ராஜ்யத்தானைக்களை
புதிய நகரங்களை நிர்
மாணிக்கும் விஷய
த்தில்
வேண்டிய ஸாமர்த்
தியமுடையவன்.

यो हि वंशं समुत्पात्य पार्थिवस्य पुनः क्षये । न विधत्ते नृपं तत्र नरकं स हि गच्छति ॥

ய:
பார்थிவஸ்ய
வ்ஷம்
க்ஷயே
ஸமுபாத்ய
தஸ
புன:

“எவனொருவன்
பார்த்திவனது
வம்சத்தை
நாசஞ்செய்வதில்
பிரிந்துவிட்டு
அதற்கு
புதிதாய்

नृपं
न विधत्ते
सः
नरकं
गच्छति
हि

ஒரு ராஜனை
நியமிக்காதிருக்கிற
னோ
அவன்
நரகத்தை
அடைகிறான்;
இது பிரலித்தம்.

स त्वं हत्वा मधुसुतं लवणं पापनिश्चयम् । राज्यं प्रशाधि धर्मेण वाक्यं मे यद्यक्षसे ॥

மே
வாய்
அவேக்ஷசே
யதி
ஸ:
ஸ்வம்
மதுஸுதம்

“எனது
வாக்கை
கொளரவம் செய்கிறாய்
என்றால்
அந்த
நீ
மதுவின் மகனும்

पापनिश्चयं
लवणं
हत्वा
राज्यं
धर्मेण
प्रशाधि

மஹாபாபிபுமான
லவணனை
கொன்று
ராஜ்யத்தை
நீதிமுறை தவறாது
பரிபாலித்துவருவா
யாக.

उत्तरं च न वक्तव्यं शूर वाक्यान्तरे मया । बालेन पूर्वजस्याज्ञा कर्तव्या नात्र संशयः ॥

पूर्वजस्य “ மூத்தவனுடைய
 அज्ञா ஆக்கினையானது
 வாலை இனையவனால்
 கர்வ்யா செய்தே தீர்வேண்டி
 யது.
 அல்ல நன்சங்கையி: இதில் ஐயமில்லை.

च आज्ञा शूरे मम वाक्यान्तरे उत्तरं न वक्तव्यम्
 ஆதலால் ஹே சூரனே!
 எனது வாக்குவிஷயத்தில் மறுவாக்கு சொல்லலாகாது.

अभिषेकं च काकुत्स्थ प्रतीच्छस्व मयोद्यतम् । वसिष्ठप्रमुखैर्विप्रैर्विधिमन्त्रपुरस्कृतम् ॥२२॥

काकुत्स्थ “ ஹே காசூத்தா!
 மயா என்னால்
 உயதம் உத்தேசிக்கப்பட்ட
 தும்

वसिष्ठप्रमुखै: वसिष्ठमन्त्र- }
 विप्रै: पुस्कृतं }
 வேதபிரமாணங்க னோடும் வேதவாக்குகளோடும் முறைப்படி நடைபெறும்

वसिष्ठप्रमुखै: वशिष्ठम्
 विप्रै: अन्तर्द्वारक

अभिषेकं पतीच्छस्व
 பட்டாபிஷேகத்திற்கு ஒப்புக்கொள்ளுக.”

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे द्विषष्टितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22899



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2175

द्विषष्टितमः सर्गः—अथपञ्चमोऽनुवाकः ॥ ६३ ॥

शत्रुघ्नमभिषेकः दिव्यास्त्रदानं च—சத்துரிக்கிணுபிஷேகமும், சிறந்த அஸ்திரம் கோடுப்பதும்.

एवमुक्तस्तु रामेण परां व्रीडांमुपागमत् । शत्रुघ्नो वीर्यसम्पन्नो मन्दं मन्दमुवाच ह ॥ १ ॥

रामेण वृद्धात्मा
 एवं इव्वண்ணमायं
 उक्तः आक्रान्ति
 वीर्यसम्पन्नः वीर्यसम्पन्न
 शत्रुघ्नः सत्तुरा
 परां अथ

व्रीडां व्रीडा
 उरागमत् उरागम
 मन्दं मन्दं ह मन्द
 तु तु
 उवाच उवाच
 நாணத்தை அடைந்தார்.
 மிக்க தாழ்ந்த சூரலி லேயே
 இது விஷயத்திலிப்படி.
 பதிலுரைத்தார்:

अथर्म विद्य काकुत्स्थ ह्यस्मिन्नर्थे नरेश्वर । कथं तिष्ठस्तु ज्येष्ठेषु कनीयानभिषिच्यते ॥

काकुत्स्थ “ கசூத்தவம்சத்திய
 नरेश्वर पुरुषोत्तम!
 ज्येष्ठेषु मूढத்தோர்கள்
 तिष्ठस्तु இருக்கையில்
 कनीयान् இனையோன்
 अभिषिच्यते பட்டாபிஷேகம் செய்
 யப்படுகிறதென்பது

कथं कथं
 अस्मिन् अस्मिन्
 अर्थे अर्थे
 अघमं अघमं
 दिद्य हि दिद्य हि
 எப்படி நியாயமாகும்?
 இந்த
 விஷயத்தில்
 நியாயவிரக்தமென்
 பதை
 நாம் அறிந்திருக்கி
 றோமல்லவா?

अवश्यं करणीयं च शासनं पुरुषर्षभ । तव चैव महाभाग शासनं दुरतिक्रमम् ॥ ३ ॥

महाभाग " पुन्यா த்மாவே!
तव தேவரீருடைய
शासनं च एव नियமனமோ
दुरतिक्रमं அதிக்கிரமிக்கத்தக்க
தில்லை.

पुरुषर्षभ " ஹே புருஷோத்தம!
च ஆனதால்
शासनं உத்தரவானது
अवश्यं அவச்யமாய்
करणीयम् செய்தே தீரவேண்டி
யதாயிருக்கிறது.

त्वत्तो मया श्रुतं वीर श्रुतिभ्यश्च मया श्रुतम् । नोत्तरं हि मया वाच्यं मध्यमे प्रतिजानति ॥

मध्यमे " நடுவிலவர், (பாதர்)
प्रतिजानति { இது விஷயத்தில் ஓர்
விண்ணப்பஞ்செய்திருக்கையில்
उत्तरं அதல்லாத ஒரு பதி
வானது

त्वत्तः தேவரீரிடமிருந்து
मया என்னால்
श्रुतं இது கேட்டறியப்பட்ட
டிருக்கிறது.
मया என்னால்
श्रुतिभ्यः च வேதங்களைக்கொ
ண்டும்
श्रुतम् அறியப்பட்டிருக்கிறது.

मया என்னால்
न वाच्यं हि சொல்லத்தகாததே.
वीर ஹே வீரா!

व्याहृतं दुर्वचो घोरं हन्तास्मि लवणं मृधे । तस्येयं मे दुरुक्तस्य दुर्गतिः पुरुषर्षभ ॥ ५ ॥

मृधे " போரில்
लवणं லவணனை
हन्तास्मि நான் வதைக்கின்
றேன் என்று

पुरुषर्षभ " ஹே புருஷோத்தம!
दुरुक्तस्य சொல்லக்கூடாததை
சொல்லிவிட்ட

व्याहृतं சொல்லியது
दुर्वचः நிரந்தனைக்குரியது.
घोरं விஷமாய் முடிந்தது.

तस्य அந்த
मे எனக்கு
हयं இந்த
दुर्गतिः கஷ்டம் விளைந்தது.

उत्तरं हि न वक्तव्यं ज्येष्ठेनाभिहिते पुनः । अर्धमसहितं चैव परलोकविवर्जितम् ॥ ६ ॥

ज्येष्ठेन " மூத்தவரால்
अभिहिते { அபிப்பிராயம் தெரி
விக்கப்பட்டிருக்கை
யில்
पुनः அதன்மேல்

अर्धमसहितं च अர்தம் சக்தமு
परलोकविवर्जितं एव परलोका क विरुक्तमु
मान
उत्तरं வேறு மொழியானது
न वक्तव्यं हि சொல்லத்தகாததே.

सोऽहं द्वितीयं काकुत्स्थ न वक्ष्यामि तवोत्तरम् । मा द्वितीयेन दण्डो वै निपतेन्मयि मानद ॥

मानद { " அகந்தையை வே
ரோடறுக்கவல்லவ
ராகிய
काकुत्स्थ காருத்த!
सः அந்த
अहं நான்
तव தேவரீருக்கு

द्वितीयं வேறு
उत्तरं பதிலை
न वक्ष्यामि சொல்லப்போகிறதில்
मयि என்விஷயத்தில் [லை.
द्वितीयेन புதிதாய்
दण्डः वै ஒரு தண்டனை
मा निपतेत् ஏற்படவேண்டாம்.

कामकारो ह्यहं राजस्तवास्मि पुरुषर्षभ । अथर्मं जहि काकुत्स्थ मत्कृते रघुनन्दन ॥ ८ ॥

ரஹுந்நடா
காகுஸ்த்ய
ராஜந்
புருஷர்ஷப
அஹ் ஹி
தவ

“ஹே ரகுநந்தன!
ஹே காகுத்தா!
ஹே சக்கிரவர்த்தி
யாரே!
ஹே புருஷோத்தமா!
நானே
தேவரீரது

காமகார:
அரின்
மக்ருதே
அதர்ம்
ஜஹி

மனேபிஷ்டப்படி
நடக்கிறவனாய்
இருக்கிறேன்.
என் விஷயத்தில்
அதருமத்தை
{ நிவாரணஞ்செய்ய
தேவரீர் அருள்புரிய
வேண்டும்.”

एवमुक्तस्तु शूरेण शत्रुघ्नेन महात्मना । उवाच रामः संहृष्टो भरतं लक्ष्मणं तथा ॥ ९ ॥

शूरेण
महामना
शत्रुघ्नेन
तु
एवं
उक्तः
रामः

சூரரும்
மஹாத்மாவமான
சத்துருக்கினரால்
இதுவிஷயத்தில்
இப்படி
விண்ணப்பம் செய்து
கொள்ளப்பட்ட
ஸ்ரீராமர்

சஹ்ரஃ
பரத்
லக்ஷமண்தயா
உவாசு

மனத்திருப்தி
கொண்டவராகி
பரதரையும்
லக்ஷ்மணரையும்
பார்த்து
திருவாய்மலர்ந்தருளி
னார்:

सम्भारानभिषेकस्य आनयध्वं समाहिताः । अथैव पुरुषव्याघ्रमभिषेक्ष्यामि राघवम् ॥
पुरोहितं च काकुत्स्थं नैगमानृत्विजस्तथा । मन्त्रिणश्चैव तान्सर्वानानयध्वं ममाज्ञया ॥१॥

अभिषेकस्य
सम्भारान्
समाहिताः
आनयध्वं
काकुत्स्थं
पुरुषव्याघ्रं
राघवं
अथ एव
अभिषेक्ष्यामि

“அபிஷேகத்திற்குவே
சாமான்களை [ண்டிய
ஆஸக்தியுடையவர்
களாய்
நீங்கள் சேகரியுங்கள்.
காகுத்தனும்
நாசார்த்தாலனுமான
சத்துருக்களைனுக்கு
இன்றே
|| குடாபிஷேகஞ்செய்
விக்கப்போகிறேன்.”

மம
அஜ்நா
புரோஹித
ஶ்ரீவிஜ: தயா
தாந்
சடாந்
நைகமானு
மந்ரிண: எவ
ஆநயதவம்

எனது
ஆக்கினையைக்கொ
ண்டு
புரோஹிதரையும்
ரித்துவிக்குகையும்
அந்த
எல்லா
பட்டணத்திலுள்ள
பிரபுக்களையும்
மந்திரிகளையும்
வரவழையுங்கள்.”

राज्ञः शासनमाज्ञाय तथाऽकुर्वन्महारथाः

॥ १२ ॥

महार्थाः
राज्ञः
शासनं

சூரர்கள்
சக்கிரவர்த்திடாரது
சாஸனத்தை

அஜ்நாய
தயா
அகூர்ந்

சிரமேற்கொண்டு
அங்கனமே
செய்துமுடித்தார்கள்.

अभिषेकसमारम्भं पुरस्कृत्य पुरोधसम् । प्रदिष्टा राजभवनं राजानो ब्राह्मणास्तथा ॥

अभिषेकसमारम्भं मகுடாபிலேகத்தை
ஆரம்பித்த
पुरोधसं புரோஹிதரை
पुरस्कृत्य பின்பற்றி

राजानः राजாக்களும்
ब्राह्मणाः तथा அந்தணர்களும்
राजभवनं இராஜமாளிகைக்கு
प्रदिष्टा: வந்துசேர்ந்தார்கள்.

तथाऽभिषेको ववृधे शत्रुघ्नस्य महात्मनः । सम्प्रहर्षकरः श्रीमात्राघवस्य पुरस्य च ॥१४॥

महात्मनः மஹாத்மாவான
शत्रुघ्नस्य சத்துருக்கினருடைய
अभिषेकः மகுடாபிலேகமானது
राघवस्य ஸ்ரீராகவருக்கும்
पुरस्य च நகருக்கும்

संप्रहर्षकरः அத்தியானந்தத்தை
விளைவிக்கிறதாயும்
श्रीमान् तथा மஹாமங்களகரமாய்
विளங்குகிறதாயும்
ववृधे நடந்தேறியது.

अभिषिक्तस्तु शत्रुघ्नो बभौ चादित्यसन्निभः । अभिषिक्तः पुरा स्कन्दः सेन्द्रैरिव मद्भृगैः ॥

आदित्यसन्निभः சூரியனெனவிளங்கும்
शत्रुघ्नः சத்துருக்கினர்
तु இப்பொழுது
अभिषिक्तः மகுடாபிலேகம் செய்
யப்பெற்றவராய்
पुर முன்னம்

सेन्द्रैः இந்திரனுள்ளிட்ட
मद्भृगैः தேவர்களால்
अभिषिक्तः அபிலேகம் செய்யப்
பெற்ற
स्कन्दः इव च சுப்பிரமணியக்கட
வுள் போலவே
बभौ விளங்கினார்.

अभिषिक्ते तु शत्रुघ्ने रामेणाक्लिष्टकर्मणा । पौराः प्रमुदिताश्चासन्ब्राह्मणाश्च बहुश्रुताः ॥

अक्लिष्टकर्मणा { “எண்ணியதை எண்
ணியபடி முடிக்கவல்
லவராகிய
रामेण ஸ்ரீராமரால்
शत्रुघ्ने சத்துருக்கினர்
अभिषिक्ते तु அபிலேகம்செய்யப்
பெற்றதும்

पौराः च பட்டணத்துணை
களும்
बहुश्रुताः மஹாவேதவித்துக்
களான
ब्राह्मणाः च பிராம்மணர்களும்
प्रमुदिताः மிக்க மகிழ்ச்சிகொண்
டவர்களாய்
आसन् ஆனார்கள்.

कौसल्या च सुमित्रा च मङ्गलं कैकयी तथा । चक्रुस्ता राजभवने याश्चान्या राजयोषितः ॥

कौसल्या च “கோஸலையும்
सुमित्रा च சுமித்திரையும்
कैकयी तथा கைகேயியும்
राजभवने ராஜமாளிகையில்
अन्याः மற்ற

राजयोषितः ராஜஸ்திரீகள்
याः எவர்களோ
ताः च அவர்களும்
मङ्गलं ஆகிரவாதத்தை
चक्रुः செய்தார்கள்.

ऋषयश्च महात्मानो यमुनातीरवासिनः । हतं लवणमाशंसुः शत्रुघ्नस्याभिषेचनात् ॥१८॥

யமுனாதிர்வாசின: யமுனாதிர்வாசினர்

महामानः மஹா மூபாவர்களா

கிய

ऋषयः முனிவர்கள்

शत्रुघ्नस्य சத்ருக்கினருக்கு

अभिषेचनात् च

மகுடாபிஷேகமான

திலிருந்து

लवणं

லவணனை

हतं

ஒழிந்துபோய் விட்ட

தாய்

आशंसुः

எண்ணினார்கள்.

ततोऽभिषिक्तं शत्रुघ्नमङ्कमारोप्य राधवः । उवाच मथुरां वार्णां तेजस्तस्याभिपूरयन् ॥

ततः அப்பொழுது

अभिषिक्तं மகுடஞ்சூடிய

शत्रुघ्नं சத்துருக்கினரை

राधवः ஸ்ரீராகவர்

अङ्कं மடிமீது

आरोप्य உட்காரவைத்துக்

तस्य அவருக்கு [கொண்டு

तेजः

உற்சாகத்தை

अभिरूप्यन्

விருத்திசெய்கின்ற

வராய்

मथुरां

மதுரமாயிருக்கிற

वार्णां

ஒருமொழியை

उवाच

திருவராய்மலர்

தருளினார்;

॥ २० ॥

अयं शरस्त्वमोघस्ते दिव्यः परपुरञ्जयः

अयं “இதோ இருக்கும்

शरः சரமானது

अमोघः ஒருபொழுதும் வீண்

போகாதது.

दिव्यः

தெய்வத்தன்மை

கொண்டது;

तु

இதுவிஷயத்தில்

ते

உனக்கு

प(पुरञ्जयः

சத்ருநகரத்தை

வெல்லவல்லதாகும்.

॥ २१ ॥

अनेन लवणं सौम्य हन्तासि रघुनन्दन

सौम्य “ஹே சௌமிய!

रघुनन्दन ஹே ரகுநந்தன!

अनेन

இதனால்

लवणं

லவணனை

हन्तासि

நீ ஹதஞ்செய்யலாகும்.

सृष्टः शरोऽयं काकुत्स्थ यदा शेते महार्णवे । स्वयम्भूरजितो देवो यं नापश्यन्सुरासुराः ॥

अदृश्यः सर्वभूतानां तेनायं तु शशोत्तमः

॥ २२ ॥

काकुत्स्थ “ஹே காகுத்த!

महार्णवे பெருங்கடலில்

शेते यदा பள்ளிகொண்டிருந்த

अयं இந்த [பொழுது

शरः சரமானது

सृष्टः படைக்கப்பட்டது.

यं அதை

स्वयम्भूः देवः பிரம்மதேவரும்

अजितः சிவனாரும்

सुरासुराः தேவர்களும் அசுரர்

களும்

न अपश्यन्

கண்ணெடுத்துப்

பார்க்கமுடியாது.

तु

இந்த ஸ்திதியில்

तेन

அக்காரணத்தால்

अयं

இந்த

शरोत्तमः

சரோத்தமமானது

सर्वभूतानां

எந்த பிராணிகளுக்கும்

கும்

अदृश्यः

கண்ணுக்குப்புலப்

படாதது.

सृष्टः क्रोधाभिभूतेन विनाशार्थं दुरात्मनोः । मधुकैटभयोर्वीर विधाते वर्तमानयोः ॥

स्रष्टुकामेन लोकांस्त्रीस्तौ चानेन हतौ युधि

॥ २३ ॥

वीर "ஹே வீர!
 विधाते இடையூறு செய்வ தில்
 वर्तमानयोः தலைபிட்டுக்கொண்டிருந்த
 दुरात्मनोः துராத்மாக்களான
 मधुकैटभयोः { மது, கைடபன் என்ற
 இந்த இருவர்களு
 दैवतम् } டைய
 विनाशार्थं ஸம்ஹார நிமித்தம்

क्रोधाभिभूतेन கோபாவேசத்தால்
 सृष्टः படைக்கப்பட்டது.
 श्रीन् மூன்று
 लोकान् உலகங்களை
 स्रष्टुकामेन ஸ்ருஷ்டிக்கவிரும்பிய
 यत्னால்
 युधि இதனால்
 तौ च போரில்
 हतौ அவ்விருவர்களும்
 கொல்லப்பட்டார்கள்.

तौ हत्वा जनभोगार्थं कैटभं तु मधुं तथा ।

अनेन शरमुख्येन ततो लोकांश्चकार सः ॥

सः "மஹாலிஷ்டனு
 तौ அவ்விருவர்களாகிய
 मधुं तथा மதுவென்பவளையும்
 कैटभं तु கைடபனைப்பவளை
 अनेन இந்த [யும்
 शरमुख्येन ஸர்வோத்த்ருஷ்ட
 மான சரத்தால்

जनभोगार्थं ஜனங்களின் நன்மைக்
 काक
 हत्वा கொண்டு
 ततः அதன்மேல்
 लोकांश्चकार உலகங்களை
 चकार சிருஷ்டித்தருளினார்.

नायं मया शरः पूर्वं रावणस्य वधार्थिना । मुक्तः शत्रुघ्न भूतानां महास्त्रासो भवेदिति ॥

शत्रुघ्न "ஹே சத்தருக்கின!
 पूर्वं இதுவரையில்
 रावणस्य ராவணனுடைய
 वधार्थिना வறையில்; அவாக்கொ
 मया என்னால் [ண்ட
 भूतानां பிராணிகளுக்கு
 मदान् மஹத்தான

वासः நடுக்கம்
 भवेत् விளையும்
 इति என்கிற காரணத்தால்
 अयं இந்த
 शः சரமானது
 न मुक्तः பிரயோகிக்கப்பட
 வில்லை.

यच्च तस्य महच्छूलं ऽयम्बकेन महात्मना । दत्तं शत्रुविनाशाय मधोरायुधमुत्तमम् ॥२६॥

स तं निक्षिप्य भवने पूज्यमानं पुनः पुनः । दिशः सर्वाः समासाद्य प्राप्नोत्याहारमुत्तमम् ॥

महात्मना "மஹாத்மாவான
 ऽयम्बकेन முக்கண்ணாரால்
 तस्य அந்த
 मधोः மதுவுக்கு
 शत्रुविनाशाय சத்ருவிராசம் செய்
 வதின்பொருட்டு
 उत्तमं உத்தமமான
 आयुधं ஆயுதமாய்

महत् மஹத்தான
 शूलं சூலமானது
 दत्तं அளிக்கப்பட்டது.
 यत् च இக்காரணத்தினால்
 सः அவன் [லேயே
 तं அதை
 पूज्यमानं பூஜிக்கப்பெற்றதாய்
 भवने வீட்டில்

| | | | |
|-----------|-------------|------------|------------|
| निक्षिप्य | வைத்தவிட்டு | समापद्य | சென்று |
| पुनः पुनः | இடையிடையே | उत्तमं | முக்கியமான |
| सर्वाः | பல | आहारं | உணவை |
| दिशः | திசைகளிலும் | प्राप्नोति | அடைகிறான். |

यदा तु युद्धमाकाङ्क्षन्कश्चिदेनं समाह्वयेत् । तदा शूलं गृहीत्वा तं भस्म कुर्यात्स राक्षसः ॥

| | | | |
|------------|--------------------|---------------|-----------------------------|
| कश्चित् | “எவனே னுமொரு | सः | அந்த |
| युद्धं | போரை [வன் | राक्षसः | அரக்கன் |
| आकांक्षन् | விரும்பியவனாய் | शूलं | சூலத்தை |
| एनं | இவனை | गृहीत्वा | கையில் வைத்துக் |
| समाह्वयेत् | போருக்கு அழைப்பான் | तं | அவனை |
| यदा तु | என்றால் | भस्म कुर्यात् | எடுத்து நீருக்கிவிடுகிறான். |
| तदा | அச்சமயம் | | |

स त्वं पुरुषशार्दूल तमायुधविनाकृतम् । अप्रविष्टं पुरं पूर्वं द्वारि तिष्ठ धृतायुधः ॥ २९ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|---------------|-----------------------------------|
| पुरुषशार्दूल | “ஹே புருஷோத்தம! | आयुर्विनाकृतं | ஆயுதத்தை கையில் வைத்திராதவனுமாகிய |
| सः | அந்த | तं | அவனுக்கு |
| त्वं | நீ | पूर्वं | முந்தியே |
| धृतायुधः | ஆயுதபாணியாய் | द्वारि | வாசலில் |
| पुरं | வீட்டினான் | तिष्ठ | காத்திரு. |
| अप्रविष्टं | இல்லாதவனாய் | | |

अप्रविष्टं च भवनं युद्धाय पुरुषर्षभ । आह्वयेथा महाबाहो ततो हन्तासि राक्षसम् ॥३०॥

| | | | |
|--------------|-----------------|-----------|--------------------|
| पुरुषर्षभ | “ஹே புருஷோத்தம! | आह्वयेथाः | நீ அழைக்கவேண்டும். |
| महाबाहो | ஹே மஹாபாகுவே! | ततः | அப்படி ஆகில் |
| भवनं | அரண்மனைக்குள் | राक्षसं | அரக்கனை |
| अप्रविष्टं च | புகவிடாதபடியே | हन्तासि | கொன்றுவிடுவாய். |
| युद्धाय | போருக்கு | | |

अन्यथा क्रियमाणे तु अवध्यः स भविष्यति । यदि त्वेवं कृते वीर विनाशमुपयास्यति ॥

| | | | |
|--------------|------------------|--------------|---------------------|
| वीर | “ஹே வீர! | अन्यथा | வேறுவிதமாக |
| तु | இதுவிஷயத்தில் | क्रियमाणे तु | செய்யும்பக்கூத்தில் |
| एवं कृते यदि | இப்படிச்செய்தால் | सः | அவன் |
| | தான் | अवध्यः | கொல்லமுடியாதவனாய் |
| विनाश | விசைத்தை | भविष्यति | இருப்பான். |
| उपयास्यति | அடைவான். | | |

एतत्ते सर्वमाख्यातं शूलस्य च विपर्ययः । श्रीमतः शितिकण्ठस्य कृत्यं हि दुरतिक्रमम् ॥

| | | | |
|-------------|----------------|------------|-----------------------------|
| ते | “ உணக்கு | कृत्यं हि | செயலும் |
| श्रीमतः | ஸ்ரீமாணை | विपर्ययः च | பரிஹாரமும் |
| शितिकण्ठस्य | சிவபிரானது | एतत् | இது |
| शूलस्य | சூலத்தின் | सर्वं | எல்லாமும் |
| दुरतिक्रमं | தவிரக்கக்கூடாத | आख्यातम् | விரித்துக்கூறப் பட்டது ” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे त्रिषष्टितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22931



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2207

चतुःषष्टितमः सर्गः—अनुपத்துநாலாவது ஸர்க்கம். ॥ ६४ ॥

शत्रुघ्नप्रस्थानम्—சத்ருக்கன்ன புறப்பவேது

एवमुक्त्वा च काकुत्स्थं प्रशस्य च पुनः पुनः । पुनरेवापरं वाक्यमुवाच रघुनन्दनः ॥

| | | | |
|------------|----------------|---------|------------------------------|
| रघुनन्दनः | ஸ்ரீராமர் | पुनः एव | மீளவும் |
| काकुत्स्थं | சத்துருக்கினனை | अपरं | மற்றொரு |
| पुनः पुनः | பலவாறு | वाक्यं | மொழியை |
| प्रशस्य च | கொண்டாடி | उवाच | திருவாய்மலர்ந்தரு ளினார். |
| एवं | இவ்வண்ணம் | | |
| उक्त्वा च | நியமித்தருளி | | |

इमान्यश्वसहस्राणि चत्वारि पुरुषर्षभ । रथानां द्वे सहस्रे च गजानां शतमुत्तमम् ॥ २ ॥

अन्तरे षण्यवीथ्यश्च नानापण्योपशोभिताः । अनुगच्छन्तु काकुत्स्थं तथैव नटनर्तकाः ॥

| | | | |
|----------------|-----------------------------|---------------|--------------------------------|
| पुरुषर्षभ | “ஹே புருஷோத்தம ! | अन्तरे | இவைகளினிடையில |
| इमानि | இந்த | नानापण्योप-} | பற்பலவிலைப்பண்டங் |
| चत्वारि | நான்கு | शोभिताः } | களால் மிக்க அழகா யிருக்கும் |
| अश्वसहस्राणि च | குதிரைகளினாயிரமும் | पण्यवीथ्यः च | விலைப்பண்டங்களின் கடைகளும் |
| रथानां | ரதங்களின் | नटनर्तकाः तथा | நடிக்காளும் நர்த்தகர் களும் |
| द्वे | இரண்டு | काकुत्स्थं | காகுத்தனை |
| सहस्रे | ஆயிரமும் | अनुगच्छन्तु | அவலம்பிக்கட்டும். |
| गजानां | கஜங்களின் | | |
| शान् उत्तमं एव | உக்கிருஷ்டங்களின் நூறும் | | |

हिरण्यस्य सुवर्णस्य नियुतं पुरुषर्षभ । आदाय गच्छ शत्रुघ्न पर्याप्तधनवाहनः ॥ ४ ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------------|-----------|----------------------------|
| पुरुषर्षभ | “புருஷோத்தம, | सुवर्णस्य | நாணயத்தின் |
| शत्रुघ्न | ஹே சத்துருக்கின ! | नियुतं | பத்தாயிரம் கோடி களையும் |
| पर्याप्त-} | வேண்டியமட்டும் தன ங்களையும் வாஹனங் | आदाय | எடுத்துக்கொண்டு |
| धनवाहनः } | களையுமுடையவரைய் தங்க | गच्छ | போ. |
| हिरण्यस्य | | | |

बलं च सुभृतं वीर हृष्टपुष्टमनुदत्तम् । सम्भाषासम्प्रदानेन रञ्जयस्व नरोत्तम ॥ ५ ॥

வீர "ஹே வீர!
 நரோத்தம ஹே புருஷோத்தம!
 பலம் சேனையை
 சுபூதம் நன்றாய்ப் போஷிக்கப்
 பட்டதாயும்
 சம்பாஷ- } சல்லாப சம்பாஷணை
 சம்பரானே } களை செய்வதால்

अनुदत्तं அடங்கி நடக்கிற
 தாகவும்
 हृष्टपुष्टं च மனத்திருப்தி கொண்
 டதாகவும் தோஷர
 ஹிதமாயிருக்கிற
 தாகவும்
 रञ्जयस्व ஸந்தோஷப்படுத்
 திவா.

न ह्यर्थास्तत्र तिष्ठन्ति न दारा न च बान्धवाः । सुप्रीतो भृत्यवर्गश्च यत्र तिष्ठति राघव ॥

ராவ "ஸூராகவ!
 யவ எவ்விடத்தில்
 தி஠்தி இருக்கிறதோ,
 தவ அவ்விடத்தில்
 அர்தா: ஹி செவ்வங்களும்
 ந தி஠்தி இப்பொழுது இல்லை.

दारा: बान्धवा: च களதர பந்துவர்க்கங்
 न இல்லை. [கனும்
 सुप्रीतः சரிடான பரிதிவைத்
 துள்ள
 भृत्यवर्गः च பிருத்யவர்க்கமும்
 न இல்லை.

ततो हृष्टजनाकीर्णां प्रस्थाप्य महतीं चमूम् । एक एव धनुष्पाणिर्गच्छ त्वं मधुनो वनम् ॥

தத: "ஆகையால்
 மஹ்தி பெரும்
 சமூம் ஸையத்தையும்
 ஹ்ஷ்டஜனாகிர்ணா } திருப்திகொண்ட
 ஜனசமூகத்தையும்
 முன்னிட்டு

प्रस्थाप्य அனுப்பி அருகிலிருக்
 एवं நீ [கச்செய்து
 धनुष्पाणि: ஆயுதபாணியாய்
 एक: एव தனியாகவே
 मधुनो वनं மதுவனத்திற்கு
 गच्छ போய்ச்சேர்.

यथा त्वां न प्रजानाति गच्छन्तं युद्धकाङ्क्षिणम् । लवणस्तु मधोः पुत्रस्तथा गच्छेरशङ्कितम् ॥

மயோ: "மதுவின்
 புல: புத்திரனான
 லவண: லவணன்
 த்வா உன்னை
 அசாங்கிதம் பயபற்றவனாய்
 யுத்தகாங்கிணம் போரைக்கோரியவ

गच्छन्तं வருவதை
 न प्रजानाति முன்னமே தெரியா
 திருக்கிறது
 यथा तु எப்படி ஆனாலாகுபோ
 तथा அவ்வண்ணமே
 गच्छे: நீ போய்ச்சேரவே

ஹம்

ண்டு.

न तस्य मृत्युरन्योऽस्ति कश्चिद्दि पुरुषेभ । दर्शनं योऽभिगच्छेत स वध्यो लवणेन हि ॥

புரூஷேப "ஹே புருஷோத்தம!
 தச்ய அவனுக்கு
 மூயூ: மரணமானது
 வச்ய: மற்றப்படியாய் வேறு
 கசிதந் அஸ்தி ஒன்றும் இல்லை.
 ஹி ஏனெனில்

दर्शनं முன் ஜாக்கிரதை
 யிருக்கையில்
 अभिगच्छेत அவனை அணுகுவது
 य: எவனோ
 स: அவன்
 लवणेन லவணனால்
 वध्य: கொல்லப்படுகிறான்.

स हि श्रीभ्येऽप्याते तु वर्षारात्र उपागते । हन्यास्त्वं लवणं सौम्य स हि कालोऽस्य दुर्मतेः॥

| | | | |
|-------------|---------------|----------|-------------|
| சௌம்ய | “ஹே ஸௌமிய! | லரணம் | வவணனை |
| ச: | அந்த | हन्या: | வதைசெய்க; |
| त्वं | நீ | हि | ஏனெனில் |
| श्रीभ्ये | கோடைக்காலம் | अस्य | இந்த |
| अप्याते | கழிந்து | दुर्मते: | துஷ்டனுக்கு |
| वर्षारात्रे | மாரிகாலம் | स: हि | அதுவே |
| उपागते तु | துவக்கியவுடனே | काल: | ஏற்றசமயம். |

महर्षीस्तु पुरस्कृत्य प्रयान्तु तव सैनिकाः । यथा श्रीभ्मावशेषेण तरेयुर्जाह्नवीजलम् ॥११॥

| | | | |
|------------|---------------|--------------------|-------------------|
| तव सैनिकाः | “உனது சேனைகள் | जाह्नवीजलं | கங்காநதியின் ஜலத் |
| तु | இப்பொழுதே | | தை |
| महर्षीन् | மஹரிஷிகளை | श्रीभ्मावशेषेण यथा | கோடைக்காலம் முடி |
| पुरस्कृत्य | தொடர்ந்து | | யும்முன்னமேயே |
| प्रयान्तु | பிரயாணமாகவே | तरेयुः | கடக்கவேண்டும். |
| | ண்டும். | | |

तत्र स्थाप्य बलं सर्वं नदीतीरे समाहितः । अग्रतो धनुषा सार्धं गच्छ त्वं लघुविक्रमः ॥

| | | | |
|-----------|------------------|--------------|-------------------|
| तत्र | “அந்த | धनुषा सार्धं | வில்லுங்கையுமாய் |
| नदीतीरे | நதிக்கரையில் | समा हितः | மனஞ்சிறுதருதவனாய் |
| सर्वं बलं | எல்லா சேனையையும் | लघुविक्रमः | வேகமாய் நடந்து |
| स्थाप्य | நிறுத்திவிட்டு | अग्रतः | முந்தி |
| त्वं | நீ | गच्छ | போய்ச்சேர்.” |

एवमुक्तस्तु रामेण शत्रुघ्नस्तान्महाबलान् । सेनामुख्यान्समानीय ततो वाक्यमुवाच ह ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|---------------|------------------|
| रामेण | ஸ்ரீராமரால் | तान् महाबलान् | அந்த மஹாபலிஷ்டர் |
| एवं | இங்ஙனம் | | களான |
| उक्तः | நியமித்தருளப்பட்ட | सेनामुख्यान् | சேனைத்தலைவர்களை |
| शत्रुघ्नः | சத்தருக்கரை | समानीय | அழைப்பித்து |
| ततः | அதனால் | वाक्यं ह | இந்த மொழியையும் |
| तु | உடனே | उवाच | சொன்னார்: |

एते वो गणिता वासा यत्र तत्र निवत्स्यथ ।

स्यातव्यं चाविरोधेन यथा बाधा न कस्यचित्

॥ १४ ॥

| | | | |
|--------|---------------------|------------|-----------------------|
| एते | “இவர்கள் | निवत्स्यथ | நீங்கள் தங்கவேண்டும். |
| व: | உங்களுக்கு | अविरोधेन | ஆக்கிணைப்படியும் |
| वासा: | இறங்குமிடங்களாய் | कस्यचित् | ஒருவர்க்கும் |
| यत्र | எந்த இடங்களை | बाधा | இடையூறு |
| गणिता: | விதிக்கின்ற ரூர்களோ | न यथा च | ஆகாதவண்ணமாயும் |
| तत्र | அவ்விடங்களில் | स्यातव्यम् | இருக்க வேண்டியது.” |

तथा तांस्तु समाज्ञाय प्रस्थाप्य च महद्बलम् ।
कौसल्यां च सुमित्रां च कैकेयीं चाभ्यवादायत्

॥ १५ ॥

तान् अवरुக்களை
तथा अव்வண்ணம்
समाज्ञाय நியமித்தருளி
महत् बलं च பெரும் சேனையையும்
प्रस्थाप्य तु பிரயாணப்படுத்தி
அனுப்பிவிட்டு

कौसल्यां च கோஸலையையும்
सुमित्रां च சுமித்திரையையும்
कैकेयीं च கைகேயியையும்
अभ्यवादायत् ஸாஷ்டாங்கமாக
நமஸ்காரஞ்செய்தார்.

रामं प्रदक्षिणीकृत्य शिरसाऽभिप्रणम्य च ।

रामेण चाभ्यनुज्ञातः शत्रुघ्नः शत्रुतापनः ॥

शत्रुतापनः { சத்துருக்களைத்
தவிக்கச்செய்ய வல்ல
வராகிய
शत्रुघ्नः சத்துருக்கினர்
रामं ஸ்ரீராமரை
प्रदक्षिणीकृत्य பிரதிக்ஷணஞ்செய்து

च பின்னர்
शिरसा முடிதாழ்த்தி
अभिप्रणम्य ஸாஷ்டாங்கமாக
நமஸ்கரித்து
रामेण ஸ்ரீராமரால்
अभ्यनुज्ञातः போகண்டைபெற்றார்.

लक्ष्मणं भरतं चैव प्रणिपत्य कृताञ्जलिः । पुरोहितं वसिष्ठं च शत्रुघ्नः प्रयतात्मवान् ॥

प्रदक्षिणमथो कृत्वा निर्जगाम महाबलः

॥ १७ ॥

महाबलः மஹாபலிஷ்டரும்
प्रयतात्मवान् தன்னடக்கமுள்ளவரு
शत्रुघ्नः சத்துருக்கினர் [மான
भरतं பரதரையும்
लक्ष्मणं एव லக்ஷ்மணரையும்
पुरोहितं புரோஹிதரான
वसिष्ठं च வஸிஷ்டரையும்

कृताञ्जलिः அஞ்சலிஹஸ்தராகி
प्रदक्षिणं कृत्वा பிரதிக்ஷணஞ்செய்து
प्रणिपत्य ஸாஷ்டாங்கமாக
நமஸ்கரித்துவிட்டு
अथो அதன்மேல்
निर्जगाम அப்புறப்பட்டார்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे चतुःषष्टितमः सर्गः ॥

भादितः श्लोकाः 22948

उत्तरकाण्डे भादितः श्लोकाः 2224

பञ்ചഘൃതம: சரீர்:—அறுபத்தைந்தாவது ஸர்க்கம். ॥ १५ ॥

சௌதாசுசரிதம்—ஸௌதாஸசரிதம்.

प्रस्थाप्य तु बलं सर्वं मासपत्रोषितः पथि । एक एवाशु शत्रुघ्नो जगाम त्वरितं तदा ॥

शत्रुघ्नः சத்துருக்கினர்
आशु அப்போதே
बलं சேனை
सर्वं तु எல்லாவற்றையும்
प्रस्थाप्य பிரயாணப்படுத்தி
முந்தி அனுப்பிவிட்டு
तदा அப்பொழுது

मासं ஒருமாதகாலம்
अथ அங்கேயே
उषितः தங்கியிருந்தார்.
पथि வழியில்
एकः एव தனியே
त्वरितं லேகமாய்
जगाम பிரயாணஞ்செய்தார்.

द्विरात्रमन्तरे शूर उष्य राघवनन्दनः । वाल्मीकेराश्रमं पुण्यमगच्छद्वासमुत्तमम् ॥ २ ॥

शूरः
राघवनन्दनः
अन्तरे
द्विरात्रं
उष्य

சூரராகிய
ராகவந்தனன், (சத்து
வழியில் [ருக்கினர்)
இரண்டு இராத்திரி
கழித்துவிட்டு
அதன்மேல்

वाल्मीकेः
उत्तमं
वासं
पुण्यं
आश्रमं
अगच्छत्

வால்மீகி முனிவரது
ஸர்வோத்திருஷ்ட
டமான
வசதியாயிருக்கிறதும்
பாவனமுமான
ஆசிரமத்திற்கு
போய்ச்சேர்ந்தார்.

सोऽभिवद्य महात्मानं वाल्मीकिं मुनिसत्तमम् । कृताञ्जलिस्थो भूत्वा वाक्यमेतदुवाच ह ॥

सः
महान्मानं
वाल्मीकिं
मुनिसत्तमं
अभिवद्य
अथो

அவர்
பஹானுபாவரான
வால்மீகி
மஹாமுனிவரை
ஸேவித்து
அதன்மேல்

कृताञ्जलिः ह
भूत्वा
एतन्
वाक्यं
उवाच

அஞ்சலிஹஸ்தரா
கவே
இருந்துகொண்டு
இந்த
ஒரு மொழியை
புகன்றார்:

भगवन्वस्तुमिच्छामि गुरोः कृत्यादिहागतः । श्वः प्रभाते गमिष्यामि प्रतीचीं वारुणीं दिशम् ॥

भगवन्
गुरोः
कृत्यात्
इह आगतः
वस्तुं
इच्छामि

“ஸ்வாமி!
ஐயனது
ஆக்ஷேபினால்
இங்குவந்தேன்.
இரவு தங்கியிருக்க
அனுமதியைப்பிரார்த்த
திக்கிறேன்.

श्वः
प्रभाते
वारुणीं
प्रतीचीं
दिशं
गमिष्यामि

நானே
உதயத்தில்
வருணைநாகிய
மேற்கு
பிரதேசத்திற்கு
புறப்பட்டுப் போகி
றேன்”.

शत्रुघ्नस्य वचः श्रुत्वा प्रहस्य मुनिपुङ्गवः । प्रत्युवाच महात्मानं स्वागतं ते महायशः ॥

मुनिपुङ्गवः
शत्रुघ्नस्य
वचः
श्रुत्वा
महात्मानं

பஹரிஷி
சத்துருக்கனருடைய
வாக்குக்கு
திருச்செவிகாய்த்து
{
பஹாத்மாவைப்
பார்த்து (சத்துருக்
கினரைப்பார்த்து)

प्रहस्य
प्रयुवाच
महायशः
ते स्वागतम्

புன்னகைகொண்டு
இப்படி திருவாய்மலர்
ந்தருளிணர்:
“பெரும் புகழ்பெற்ற
வனே!
நீ இவ்விடம்வந்ததில்
மிகச் சந்தோஷம்.

स्वमाश्रममिदं सौम्य राघवाणां कुलस्य हि । आसनं पाद्यमर्घ्यं च निर्विशङ्कं प्रतीच्छ मे ॥

सौम्य
इदं
आश्रमं
राघवाणां
कुलस्य हि
स्वं

“ஹே ஸௌம்ய!
இந்த
ஆசிரமம்
ராகவர்களின்
குலத்தவருக்கே
சொந்தமானது.

मे
आसनं
पाद्यं
अर्घ्यं च
निर्विशङ्कः
प्रतीच्छ

எனது
ஆஸனத்தையும்
பாத்தியத்தையும்
அர்க்கியத்தையும்
கூச்சமின்றி
பெற்றுக்கொள்”.

प्रतिगृह्य तदा पूजां फलमूलं च भोजनम् । भक्षयामास काकुत्स्थस्तप्तिं च परमां गतः ॥

காகுத்ய : காசூத்தர்
ததா உப்பொழுது
பூஜா பூஜையை
புதிர்ஹ்ய அங்கிகரித்து
புஜா பகல்பயமாயளிக்கப்

பட்ட

புலமூல் ச கனி, கிழங்குகளையும்
பக்சயாமாச புசித்தார்.
பரமா பரம
தூசி ச திருப்தியையும்
பர: அடைந்தார்.

स भुक्त्वा फलमूलं च महर्षिं तमुवाच ह । इयं यज्ञविभूतिस्ते कस्याश्रमसमीपतः ॥ ८ ॥

ச: அஹர்
புலமூல் ச கனிகிழங்குகளையும்
புக்त्வா புசித்துவிட்டு
த அந்த
புஹர்சிஹ்யப்

பார்த்து

उवाच इत्थं विद्वान्:

तत्तस्य भाषितं श्रुत्वा वाल्मीकिर्वाक्यमब्रवीत् । शत्रुघ्न सृणु यस्येदं बभूवायतनं पुरा ॥

வாலுமீகி: வால்மீகி முனிவர்
தத்ய அவரது
தத் பாசித் அந்த வாக்குக்கு
சுத்வா திருச்செவியாய்த்து
வாக்யம் இந்த மொழியை
அபுரீத் திருவாய்மலர்ந்தருளி

னார்:

युष्माकं पूर्वको राजा सुदासस्तस्य भूपतेः । पुत्रो वीरसहो नाम वीर्यवानतिधार्मिकः ॥

யுஷாகம் "உங்களின்
பூர்வக: முன்னோர்களில் ஒரு
சுதாச: சுதாஸரென்று [வராய்
ராஜா ஒரு சக்கிரவர்த்தியி
ருந்தார்.

वीर्यवान् वीर्यवान्

स बाल एव सौदासो मृगयामुपचक्रमे । चञ्चूर्यमाणं ददृशे स शूरो राक्षसद्वयम् ॥११॥

ச: "அந்த
சௌதாச: ஸுதாஸரின் புதல்வர்
(வீரஸஹர்)

பால: புவ யௌவனப்பிராயம்
முதற்கொண்டே

सृगयां வேட்டையாட
उपचक्रमे தலைப்பட்டார்.

தே: "தேவரீரது
அசுரமத்திற்கு ஸமீ
பத்தில்
ஹ்ய இத்தோ காணப்படுகிற
யஜ்விபூதி: செழுமையாய் விளங்
கும் யாகசாலை

कस्य यात्रुण्डयतु ?"

शत्रुघ्न सृणु यस्येदं बभूवायतनं पुरा ॥

சுருஹ் "ஹே சத்ருக்ஷா!
புரா முன்காலத்தில்
ஹ் இந்த
ஆயதனம் யாகசாலை
யச்ய பபூவ யாருடையதாய்
சுரு: இருந்ததோ அதை
சொல்லுகிறேன் கேள்.

पुत्रो वीरसहो नाम वीर्यवानतिधार्मिकः ॥

அதிதாமிக: மஹா தர்மவீரனு
மான்
வீரஸஹ: விரஸஹரென்பவர்
தத்ய அந்த
பூபதே: சக்கிரவர்த்தியினது
புவ: புதல்வர்.

स बाल एव सौदासो मृगयामुपचक्रमे । चञ्चूर्यमाणं ददृशे स शूरो राक्षसद्वयम् ॥११॥

ச: சூர்: அந்தச் சூர்
சஞ்சூர்யமாண் விட்டுவிட்டுப் பாய்ந்
தோடும்

ராஷஸத்யம் பேய்களுள் ஒரு ஜதை
யை

ददृशे ஒருசமயம் கண்டார்.

शार्दूलरूपिणौ घोरो मृगान्वहसहस्रसः । भक्षमाणावसन्तुष्टौ पर्याप्तिं नैव जग्मतुः ॥१२॥

शार्दूलरूपिणौ “வேங்கை வடிவமாய்
घोरो பார்க்கப் பயங்கரமாயி
ருந்த ஜதை
बहुसहस्रसः ஆயிரமாயிரமாய்
मृगान् விலங்குகளை

भक्षमाणौ தின்றுகொண்டும்
असन्तुष्टौ திருப்தியடையாத
पर्याप्तिं ஓய்வு [தாய்
एव என்பதை
न जग्मतुः அடையவில்லை.

स तु तौ राक्षसौ दृष्ट्वा निर्भृगं च बन् कृतम् । क्रोधेन महताऽऽविष्टो जघानैकं महेषुणा ॥

सः “அவர்
तौ அந்த
राक्षसौ तु பேய்களின் ஜதையை
யும்
बन् வனத்தை
निर्भृगं விலங்குகள் ஒழிந்த
தாய்

कृतं च செய்யப்படுகிறதை
दृष्ट्वा பார்த்து [யும்
महता क्रोधेन அதிகக் கோபத்தால்
आविष्टः மெய்மறந்தவராய்
एकं ஜதையிலொன்றை
महेषुणा ஒரு பெரியபாணத்
जघान கொன்றனர். [தால்

विनिपाल्य तमेकं तु सौदासः पुरुषर्षभ । विज्वरो विगतामर्षो हतं रक्षो ह्युदैक्षत ॥ १४ ॥

पुरुषर्षभ “புருஷோத்தம!
सौदासः { லௌதாஸர் (சுதாஸ
ருடைய புத்திரர்
வீரஸஹர்)
तं அந்த
एकं ஜதையிலொன்றை
विनिपाल्य तु கொன்றுவிழ்த்திய
பின்னர்

विगतामर्षः கோபமொழிந்த
வராய்
विज्वरः அமைதிபெற்றவராய்
हतं கொலையுண்டு கிடப்
பதை
रक्षः हि ஓர் அரக்கனது உரு
வருடையதாயும்
उदैक्षत கவனித்தார்.

निरीक्षमाणं तं दृष्ट्वा सहायं तस्य रक्षसः । सन्तापमकरोद्धोरं सौदातं चेदमब्रवीत् ॥ १५ ॥

तस्य “அந்த
राक्षसः மற்றொரு அரக்கனது
सहायं துணைவனுக்கு
निरीक्षमाणं கவனித்துப்பார்த்
துக்கொண்டிருக்கிற
सौदातं லௌதாஸரை
दृष्ट्वा பார்த்து

घोरं தாக்கமுடியாதவண்
ணமாய்
सन्तापं अकरोत् உள்ளங்கொடுத்தது.
तं அவரைப்பார்த்து
इदं च இதையும்
अब्रवीत् புகன்றது:

यस्मादनपराधं त्वं सहायं मम जग्निवान् । तस्मात्तवापि पापिष्ठ प्रदास्यामि प्रतिक्रियाम् ॥

त्वं “நீ
अनपराधं ஒரு அபராதமுள்
செய்யாத
मम எனது
सहायं துணைவனை
जग्निवान् கொலைபுரிந்தனை.

यस्मात् तस्यात् ஆதலால்
पापिष्ठ ஹே பாபி
तव अपि உனக்கும்
प्रतिक्रियां பிரதியபகாரத்தை
प्रदास्यामि இனிச் செய்தே தீரு
வேன்.

एवमुक्त्वा तु तद्रक्षस्तत्रैवान्तरधीयत । कालपर्याययोगेन राजा मित्रसहोऽभवत् ॥ १७ ॥

| | | | |
|--------|--------------|----------------|------------------|
| तत् | “அந்த | अन्तःधीयत | அந்தர் த்தானமாயி |
| रक्षः | அரக்கன் | | னன். |
| तु | இதுஷியத்தில் | मित्रसहः | மித்திரஸஹர் |
| एवं | இப்படி | | (ஹீஸஹர்) |
| उक्तवा | சொல்லிவிட்டு | कालपर्याययोगेन | காலக்கிராமத்தில் |
| तत्र | அவ்விடத்தில் | राजः | அரசராக |
| एव | உடனேயே | अभवत् | ஆயினார். |

राजा तु यज्ञते यज्ञस्याश्रमसमीपतः । अश्वमेधं महायज्ञं तं वसिष्ठोऽभ्यपालयत् ॥ १८ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|------------|-----------------|
| राजा तु | “அரசராய் இருக்கை | तं | அந்த |
| अस्य | இந்த [ரில் | अश्वमेधं | அச்வமேதமென்ற |
| आश्रमसमीपतः | ஆச்சிரமத்திற்கருகில் | महायज्ञं | மஹாயாகத்தை |
| यज्ञं | ஒரு யாகத்தை | वसिष्ठः | வஸிஷ்டர் |
| यज्ञते | இயற்றினார். | अभ्यपालयत् | நடத்திவைத்தார். |

तत्र यज्ञो महानासीद्बहुवर्षगणायुतः । समृद्धः परया लक्ष्म्या देवयज्ञसमोऽभवत् ॥ १९ ॥

| | | | |
|----------------|------------------------------|------------|------------------------|
| तत्र | “அப்பொழுது | परया | அதிக |
| यज्ञः | யாகமானது | लक्ष्म्या | செல்வத்தால் |
| महान् | வெகுப்பெரிதாய் | समृद्धः | செழுமையாய் |
| बहुवर्षगणायुतः | பல்லாண்டளவு நடை பெற்றதாய் | देवयज्ञसमः | தேவர்களது யாகமோ வென |
| आसीत् | விளங்கிற்று. | अभवत् | இருந்தது. |

अथावसाने यज्ञस्य पूर्ववैरमनुस्मरन् । वसिष्ठरूपी राजानमिति होवाच राक्षसः ॥ २० ॥

| | | | |
|-----------|--------------|--------------|---|
| राक्षसः | “அரக்கன் | वसिष्ठरूपी ह | { வஸிஷ்டமுனிவராக வேவேடம் பூண்டவ னப் |
| अथ | அப்பொழுது | राजानं | |
| यज्ञस्य | யாகத்தின் | इति | இப்படி |
| अवसाने | முடிவில் | उवाच | புகன்றான்: |
| पूर्ववैरं | பழைய வைரத்தை | | |
| अनुस्मरन् | எண்ணி | | |

अस्य यज्ञस्य जातोऽन्तो सामिषं भोजनं मम । दीयतामिह शीघ्रं वै नात्र कार्या विचारणा ॥

| | | | |
|-----------|------------------|----------|---------------------------|
| अस्य | “இந்த | सामिषं | மானிட ஊன்மிச்சிர |
| यज्ञस्य | யாகத்திற்கு | भोजनं | உணவானது [மான |
| अन्तः | ஸமாப்தி | दीयतां | அளிக்கப்படவேண் |
| जातः | ஏற்பட்டுவிட்டது. | अत्र | இதில் [டும். |
| इह | ஆகையால் | विचारणा | முன்பின் ஆலோசனை என்பது |
| शीघ्रं वै | இப்போதே | न कार्या | செய்யக்கூடாது. |
| मम | எனக்கு | | |

तच्छ्रुत्वा व्याहृतं वाक्यं रक्षसा ब्रह्मरूपिणा । भक्ष्यसंस्कारकुशलमुवाच पृथिवीपतिः ॥

पृथिवीपतिः “ सக்கிரவர் த்தி
 ब्रह्मरूपिणा பிராம்மணவடிவமெ
 रक्षसा அரக்கனால்
 व्याहृतं சொல்லப்பட்டதாகிய
 तत् अந்த

वाक्यं வாக்கியத்திற்கு
 श्रुत्वा செவிசாய்த்து
 भक्ष्य-संस्कार- } சமையல் வேலையீல்
 कुशलं } சமர் த்தனைப் பார்த்து
 उवाच இப்படி நியமித்தரு
 निःशब्दः

हविष्यं सामिषं स्वादु यथा भवति भोजनम् । तथा कुरुष्व शीघ्रं वै परितुष्येद्यथा गुरुः ॥

गुरुः “ புரோஹிதர்
 परितुष्येत् திருப்தி அடையவே
 यथा என்கிற காரணத்தால்
 हविष्यं நைவேத்யமாகும்
 भोजनं போஜனமானது

स्वादु ருசியாயிருக்கிறதாயும்
 सामिषं நாமாமிசங்கலந்த
 भवति यथा तथा இருக்கும்படியாய்
 शीघ्रं वै சீக்கிரத்திலேயே
 कुरुष्व சித்தஞ்செய்வாயாக.

शासनात्पार्थिवेन्द्रस्य सूदः सन्भ्रान्तमानसः । स राक्षसः पुनस्तत्र सूदवेषमथाकरोत् ॥

स मानुषमथो मांसं पार्थिवाय न्यवेदयत् । इदं स्वादु हविष्यं च सामिषं चान्नमाहृतम् ॥
 तव “ அப்பொழுது
 सन्भ्रान्तमानसः { இஷ்டப்படியெல்லா
 मेन्द्रं च पुत्रकवल्लव
 नोकिय
 सः अந்த
 राक्षसः अரக்கன்
 पुनः மீளவும்
 सूदवेषं சமையற்காரனாகிய
 मातुषேஷத்ததை

मांसं மாமிசத்தைப்பற்றிய
 तव தாகிய
 शासनात् சாஸனத்தைப்பெற்று
 पार्थिवस्य விட்டிருந்தபடியால்
 अथो अரகனுக்கு இப்பொ
 न्यवेदयत् இப்படி [ழுது
 इदं அறிவித்தான் :
 हविष्यं 'இதோ
 अन्नं அற்பணத்திற்கு வே
 सामिषं च போஜனம் [ண்டிய
 स्वादु च मांனிட ஊன்மிசரம்
 आहृतम् செய்யப்பட்டும்
 रुसियायिरुக்கும் வண்
 नாமாயும்
 कोण्डुवराப்பட்டி.
 रुक्किरुது.

अकरोत् பூண்டுகொண்டிரு
 सः அந்த [ந்தான்.
 सूदः சமையற்காரன்
 पार्थिवेन्द्रस्य சக்கிரவர்த்தியினது
 अथ இப்படிப்பட்ட
 मानुषं மாணிட

स भोजनं वसिष्ठाय पत्न्या सार्थिमुपाहरत् । मदन्यत्या नरव्याघ्र सामिषं रक्षसा हृतम् ॥

नरव्याघ्र “ ஹே புருஷோத்தம !
 सः அவர்
 वसिष्ठाय வளிஷ்டருக்கு
 रक्षसा அரக்கனால்
 हृतं கொண்டுவரப்பட்டி
 रुन्त

सामिषं மாணிடமாம்சமிசர்
 भोजनं போஜனத்தை [மாகிய
 पत्न्या பத்தினியான
 मदयन्या மதயந்தியுடன்
 सार्थं கூடவே
 उपाहरत् பரிமாறினான்.

ज्ञात्वा तदामिषं विभ्रो मानुषं भोजनागतम् । क्रोधेन महताऽऽविष्टो व्याहर्तुमुपचक्रमे ॥

विभ्रः “ अन्तணர்
भोजनागतं போஜனமாக கிடைத்
திருக்கும்

तत् अन्त
मानुषं மாநிட
आमिषं ஊனுடனிருப்பதாய்

यस्मात्त्वं भोजनं राजन्मपैतद्दातुमिच्छसि ।

राजन् “ வேற மன்னனே!
त्वं நீ
मम எனக்கு
एतत् भोजनं இந்த போஜனத்தை
दातुं அளிக்க
इच्छसि எண்ணினாய்.

स राजा सह पत्न्या वै प्रणिपत्य मुहुर्मुहुः ।

सः “ அந்த
राजा மன்னவர்
पत्न्या மனையாட்டியோடு
सह वै கூடவே
वसिष्ठं வஸிஷ்டரை
मुहुः मुहुः பலதரம்
प्रणिपत्य வணங்கி

तच्छ्रुत्वा पार्थिवेन्द्रस्य रक्षसा विकृतं च तत् ।

रक्षसा च “ அரக்கனாலேயே
पार्थिवेन्द्रस्य சக்கிரவர்த்தியா
ருக்கு

तत् अन्त
विकृतं அஸம்பாவிதமேற்பட்ட
டிருப்பதை
श्रुत्वा கேட்டறிந்துகொண்டு

मया रोषपरीतेन यदिदं व्याहृतं वचः । नैतच्छक्यं वृथा कर्तुं प्रदास्यामि च ते वरम् ॥

रोषपरीतेन “ கோபாவேசத்திலி
मया என்னால் [ருந்த
इदं वचः இந்த வரக்கானது
व्याहृतं சொல்லிவிடப்பட்ட
यत् எதுவோ [டது
एतत् இது

ज्ञात्वा கண்டு
महता அதிக
क्रोधेन கோபத்தால்
आविष्टः மெய்மறந்தவராகி
व्याहर्तुं இப்படி சபிக்க
उपचक्रमे தலைப்பட்டார்:

तस्माद्भोजनमेतत्ते भविष्यति न संशयः ॥

यस्मात् तस्मात् ஆகலின்
एतत् இது ஒன்றே
ते உனக்கு
भोजनं உணவாய்
भविष्यति இருக்கக்கடவது.
न संशयः இதற்கு ஐயமில்லை.

पुनर्वसिष्ठं प्रोवाच यदुक्तं ब्रह्मरूपिणा ॥

पुनः அதன்மேல்
ब्रह्मरूपिणा பிராம்மணவேஷம்
கொண்டிருந்தவனால்
उक्तं நியமிக்கப்பட்டது
यत् எதுவோ அதை
प्रोवाच விண்ணப்பம்
செட்தார்.

पुनः प्रोवाच राजानं वसिष्ठः पुरुषर्षभम् ॥

वसिष्ठः வஸிஷ்டர்
तत् அதனால்
पुनः மீளவும்
पुरुषर्षभं புருஷோத்தமரான
राजानं மன்னரைப்பார்த்தது
प्रोवाच இப்படித் திருவாய்
மலர்ந்தருளினார்:

वृथा வீணாக
कर्तुं செய்ய
न शक्यं च முடியாதிருந்ததாலும்
ते உனக்கு
वरं ஒரு வரத்தை
प्रदास्यामि அளிக்கின்றேன்.

कालो द्वादश वर्षाणि शापस्यान्तो भविष्यति । मत्प्रसादाच्च राजेन्द्र व्यतीतं न स्मरिष्यसि ॥

| | | | |
|----------------|----------------|--------------|----------------------|
| द्वादश वर्षाणि | “ ‘பன்னீராண்டு | च | அன்றியும் |
| कालः | முடியவும் | राजेन्द्र | அரசர்க்காட்சி, |
| शापस्य | சாபத்திற்கு | मत्प्रसादात् | என் அனுக்கிரகத்தி |
| अन्तः | முடிவு | व्यतीतं | நடந்தேறியதை [னால் |
| भविष्यति | ஏற்படும் ; | न स्मरिष्यसि | நீ நினைக்கமாட்டாய்.’ |

एवं स राजा तं शापमुपशुष्यारिसूदनः । प्रतिलेभे पुना राज्यं प्रजाश्वैवान्वपालयत् ॥३३॥

| | | | |
|----------|-----------------|-------------|--------------------|
| अरिसूदनः | “ சத்துருசம்ஹார | उरमुज्य | அனுபவித்துவிட்டு |
| सः | அந்த [கராகிய | पुनः | மீளவும் |
| राजा | மன்னர் | राज्यं | ராஜ்யபாரத்தை |
| तं | அந்த | प्रतिलेभे | பெற்றார். |
| शापं | சாபத்தை | प्रजाः च एव | பிரஜைகளையும் |
| एवं | இப்படி | अन्वपालयत् | பரிபாலித்துவந்தார் |

तस्य कल्माषपादस्य यज्ञस्यायतनं शुभम् । आश्रमस्य समीपेऽस्य यन्मां पृच्छसि राघव ॥

| | | | |
|----------|-------------------|--------------|---|
| राघव | “ ஹே ராகவ, (சத்து | आयत्नं | சாலையைப்பற்றி |
| | ருக்கின) | मां | என்னை |
| अस्य | அந்த | पृच्छसि | நீ வினவினாயோ அது |
| आश्रमस्य | ஆச்சிரமத்திற்கு | तस्य | அந்த |
| समीपे | ஸமீபத்தில் | कल्माषपादस्य | { கல்மாஷபாதரொன இன்னொரு பெயர் பூண்ட வீரஸஹ ருடையது.” |
| यत् | எந்த | | |
| शुभं | அபூசுவாய்ந்த | | |
| यज्ञस्य | யாக | | |

तस्य तां पार्थिवेन्द्रस्य कथां श्रुत्वा सुदारुणाम् । विवेश पर्णशालायां महर्षिमभिवाद्य च ॥

| | | | |
|------------------|--------------------|-------------|----------------|
| तस्य | அந்த | श्रुत्वा | செவிசாய்த்து |
| पार्थिवेन्द्रस्य | சக்கிரவர்த்தியினது | च | அதன்மேல் |
| सुदारुणां | அதிமனோவேதனை | महर्षिं | மஹரிஷியை |
| | யைத்தருகிறதாகிய | अभिवाद्य | பணரிந்து |
| तां | அந்த | पर्णशालायां | பர்ணசாலைக்குள் |
| कथां | கதைக்கு | विवेश | புகுந்தார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे पञ्चषष्ठितमः सर्गः ॥



पट्टपठितमः सर्गः—अथपत्तारुवतु लोर्ककम्. ॥ ६६ ॥

कुशलवोत्पत्तिः—कुशलवार्कगतु உற்பத்தி.

यामेव रात्रिं शत्रुघ्नः पर्णशालामुपाविशत् । तामेव रात्रिं सीताऽपि प्रसूता दारकद्वयम् ॥

| | | | |
|-----------|------------------|-----------|---------------------|
| शलुघ्न: | சத் துருக்கினர் | தா் எவ | அதே |
| யா் எவ | எந்த ஒரு | ரத் | இரவில் |
| ரத் | இரவில் | சிதா அபி | சீதா பிராட்டியாரும் |
| பர்ணசாலா் | பர்ணசாலையில் | தாரகத்யம் | இரட்டை ஆண்பிள் |
| உபாவிசத் | தங்கியிருந்தனரோ; | பரூதா | பெற்றார். [களை |

ततोऽर्धरात्रसमये बालका मुनिदारकाः । वाल्मीकेः प्रियमाचख्युः सीतायाः प्रसवं शुभम् ॥

| | | | |
|--------------|----------------------|-------------|--------------------|
| तत: | அப்பொழுது | சிதா யா: | சீதா பிராட்டியாரது |
| அர்ஹரத்ரஸமயே | அர்த்தராத்திரியில் | சுபம் பரவம் | ஸுகபிரஸவமாகிற் |
| முனிடாரகா: | முனிகுமாரர்களாகிய | பிரியம் | நல்ல செய்தியை |
| பாலகா: | சீடர்கள் | அாசுயு: | இப்படித் தெரிவித் |
| வால்கீகே: | வால்மீகி முனிவருக்கு | | தாரர்கள். |

भगवन्नामपत्नी सा प्रसूता दारकद्वयम् । ततो रक्षां महातेजः कुरु भूतविनाशिनीम् ॥३॥

| | | | |
|-----------|----------------|-------------|----------------------|
| सहाजेज: | “மஹாதேஜஸ்வியா | பரூதா | பெற்றனர். |
| | கிய | தத: | ஆதலால் |
| பகவந் | ஹே பகவன்! | பூதவிநாசிநீ | பேய்பிசாசுகளுக்கு |
| சா | அந்த | | விசைகரமாகிய |
| ராமபதீ | பூரீராமபிரானது | ரக்ஷா் | ரக்ஷாபந்தத்தை |
| | தருமபத்னியார் | | தேவரீர் செய்யத் திரு |
| தாரகத்யம் | இரட்டை ஆண்பிள் | கुरु | வுள்ளங்கொள்வ |
| | ளைகளை | | வேண்டும்.” |

तेषां तद्वचनं श्रुत्वा महर्षिः समुपागमत् । जगाम तत्र हृष्टात्मा ददर्श च कुमारकौ ॥

भूतघ्नीं चाकरोत्ताभ्यां रक्षां रक्षोविनाशिनीम् ॥ ४ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|----------------|-----------------------|
| महर्षि: | மஹரிஷி | हृष्टरमा | உள்ளம் பூரித்தவராய் |
| தேபா் | அவர்களுடைய | ददर्श | கண்குளிர்க்கடராக்ஷித் |
| तत् | அந்த | | தருளிணர். |
| वचनं | விண்ணப்பத்திற்கு | ताभ्यां च | அவ்விருவர்களுக்கும் |
| शुश्रवा | திருச்செவிசாய்த்து | भूतघ्नीं | பேய்பிசாசுகளை ஒழிக் |
| | அங்கனமே செய்வ | | கிறதாயும் |
| समुपागन्त् | { தாய் ஒப்புக்கொண் | रक्षोविनाशिनीं | ரக்ஷககளுக்கு விசை |
| | டார். | | கரமுமாகிய |
| तत्र | அவ்விடத்திற்கு | रक्षां | ரக்ஷாபந்தத்தை |
| जगाम | எழுந்தருளிணர். | अकरोत् | செய்தருளிணர். |
| कुमारकौ च | இரு ராஜகுமாரர் | | |
| | களையும் | | |

कुशमुष्टिसुपादाय लवं चैव तु स द्विजः । वाल्मीकिः प्रददौ ताभ्यां रक्षां भूतविनाशिनीम्॥

ச: द्विजः அந்த அந்தணராகிய
 वाल्मीकिः வால்மீகிமுனிவர்
 तु அப்பொழுது
 कुशमुष्टिं च { ஒரு முடி அளவு தர்ப்
 பையின் துணிப்பா
 கத்தையும்
 लवं एव அவ்வளவே தர்ப்பை
 யின் அடிப்பாகத்தையும்

उपादाय கையிலெடுத்து
 ताभ्यां அவ்விரண்டிற்கும்
 भूतविनाशिनीं பேய்ப்பிசாசங்களுக்கு
 விஞ்சுகரமாகிய
 रक्षां ரக்ஷாபந்தனத்தை
 प्रददौ இப்படிச்சொல்லிக்
 கொடுத்தார்.

यस्तयोः पूर्वजो जातः स कुशैर्मन्त्रसत्कृतैः । निर्माजनीयस्तु तदा कुश इत्यस्य नाम तत् ॥

तदा “ அப்பொழுது
 तयोः அவ்விருவர்களில்
 पूर्वजः மூத்தவனாய்
 जातः பிறந்தவன்
 यः எவனோ
 सः तु அவன் தான்
 मन्त्रसत्कृतैः மந்திரங்களால் ஐபிக்
 கப்பட்ட

कुशैः துணித்தர்ப்பை
 களால்
 निर्माजनीयः துடைக்கப்படவேண்
 டும்.
 तत् அக்காரணத்தால்
 अस्य இவனுக்கு
 कुशः इति குசன் என்கிற
 नाम பெயரிருக்கட்டும்.

यथावरो भवेत्ताभ्यां लवेन स समाहितः । निर्माजनीयो वृद्धाभिल्व इत्येव नामतः ॥

ताभ्यां “ அவ்விருவர்களில்
 यः எந்த
 समाहितः புண்பாத்தா
 अवरः भवेत् இளையவனோ
 सः அவன்
 वृद्धाभिः கிழவிகளால்

लवेन அடித்தர்ப்பையால்
 निर्माजनीयः துடைக்கப்பட்டும்.
 च ஆகையால்
 लवः லவன்
 इति एव என்கிறதையே
 नामतः பெயராய் பெற்றட்டும்.

एवं कुशलवौ नाम्ना तावुभौ यमजातकौ । मन्कृताभ्यां च नामभ्यां ख्यातियुक्तौ भविष्यतः॥

यमजातकौ “ இரட்டையாய்ப்
 பிறந்த
 तौ அந்த
 उभौ இருவர்களும்
 एवं இப்படியே
 कुशलवौ குசன் லவன் என

नाम्ना பெயர் பூண்டவர்
 களாய்
 मन्कृताभ्यां என்னுலிடப்பட்ட
 नामभ्यां च பெயர்களைக்கொண்
 டே
 ख्यातियुक्तौ பிரசித்திபெற்றவர்க
 भविष्यतः வாழ்வார்கள்.” [நாய்

तां रक्षां जगृहस्ताश्च मुनिहस्तात्समाहिताः । अकुर्वश्च ततो रक्षां तयोर्विगतकल्मषाः ॥

विगतकल्मषाः தோஷரஹிதைகளா
 ताः அந்த ஸ்த்ரீகள் [கய
 मुनिहस्तात् முனிவரது கையி
 तां அந்த [நின்ற
 रक्षां ரகக்ஷையை
 जगृहः கையேந்தி வாங்கிக்
 கொண்டனர்;

अकुर्वश्च அதன்மேல்
 ततो ஆஸக்தியுடையவர்
 समाहिताः च களாகவே
 ரக்ஷாபந்தத்தை
 रक्षां அவ்விருவர்களுக்கும்
 तयोः च செய்தார்கள்.
 अकुर्वन् செய்தார்கள்.

स तत्र मुनिभिः सार्धं भार्गवप्रमुखैर्नृपः । कथाभिरभिख्याभिर्वासं चक्रे महायशः ॥ १५ ॥

| | | | |
|----------------|--------------------------------|------------|----------------------------|
| ச: | அந்த | मुनिभिः | முனிவர்களுடனே |
| महायशः | மஹா யசஸ்வியான | सार्धं | கூடி. |
| नृपः | மன்னர் | अभिख्याभिः | மனோஹரமான |
| तत्र | அவ்விடத்தில் | कथा भः | கதைகளைக்கேட்டுக் கொண்டு |
| भार्गवप्रमुखैः | பார்க்கவரைத் தலை மையாகவுடைய | वासं चक्रे | வாசஞ்செய்தார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकिये आदिकाव्ये
उत्तरकाण्डे षष्ठितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 22998

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2274



सप्तपष्टितमः सर्गः—अथपत्तैतृभावतु षर्ककम्. ॥ ६७ ॥

मान्घातृवधः—मांरतातावावकं कोरंरतु.

अथ रात्र्यां प्रवृत्तायां शत्रुघ्नो भृगुनन्दनम् । पप्रच्छ च्यवनं विप्रं लवणस्य यथा बलम् ॥
शूलस्य च बलं ब्रह्मन्के च पूर्वं विनाशिताः । अनेन शूलमुख्येन द्रुद्रयुद्धमुपागताः ॥ २ ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------------|---------------|---------------------------|
| अथ | அப்பொழுது | यथा | இப்படி |
| रात्र्यां | முதலிரவு | पप्रच्छ | வினாவினார். |
| प्रवृत्तायां | நடைபெறுகையில் | ब्रह्मन् | “ஹே முனிவர் பெரு மானே! |
| शत्रुघ्नः | சத்துருக்கினர் | पूर्वा | இதற்குமுன் |
| भृगुनन्दनं | பிருகுவின் புதல்வ | द्रुद्रयुद्धं | துவந்தவயுத்தத் திற்கு |
| च्यवनं | சுவன [ரான | उपागताः | வந்தவர்களும் |
| विप्रं | முனிவரைப்பார்த்து | अनेन | இந்த |
| लवणस्य | லவணனுடைய | शूलमुख्येन | சூலக்ரோஷ்டத்தால் |
| बलं | சாமர்த்தியத்தைப் பற்றியும் | विनाशिताः च | வதையுண்டவர்களும் |
| शूलस्य बलं च | சூலத்தின் வலிமை யைப்பற்றியும் | के | யாவர்? ” |

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा शत्रुघ्नस्य महात्मनः । प्रत्युवाच महातेजाश्च्यवनो रघुनन्दनम् ॥ ३ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|------------|---------------------------------------|
| महातेजाः | மஹாதேஜஸ்வியாகிய | शुत्रा | செவிசாய்த்து |
| च्यवनः | சுவன முனிவர் | रघुनन्दनं | ரகுநந்தனருக்கு (சத் ருக்கினருக்கு) |
| तस्य | அந்த | प्रत्युवाच | இப்படி பதில் சொல் வியருவினார்: |
| महात्मनः | மஹாத்மாவான | | |
| शत्रुघ्नस्य | சத்துருக்கினருடைய | | |
| तत् वचनं | அந்த வாக்குக்கு | | |

असङ्ख्येयानि कर्माणि यान्यस्य रघुनन्दन । इक्ष्वाकुवंशप्रभवे यद्वृत्तं तच्छृणुष्व मे ॥ ४ ॥

रघुनन्दन

“ வேறு ரகுநந்தன !

इक्ष्वाकुवंशप्रभवे

இக்ஷ்வாகுவம்சத்

अस्य

அவனது

தொருவர் விஷயத்தில்

यानि

எவைகளோ அவை

यत्

எது

असंख्येयानि

கணக்கிட்டுக் கூறமுடிய-

यत्

அதை

मे शृणुष्व

நான் கூறுகின்றேன்

யாது.

கேளுமீ.

अयोध्यायां पुरा राजा युवनाश्वसुतो वली । मान्धातेति स विख्यातः खिषु लोकेषु वीर्यवान् ॥

पुरा

“ பூர்வம்

युवनाश्वसुतः

யுவனாசுவசுரென்பவ

अयोध्यायां

அயோத்தியில்

ரின் புத்திரர்.

मान्धाता

மார்தாதா

वली

அதிசாயர் ததியசாஸி.

इति

என்னும்

वीर्यवान्

வீரியவானென

राजा

மூர் அரசர் இருந்தார்.

खिषु

மூன்று

सः

அவர்

लोकेषु

உலகங்களிலும்

विख्यातः

புகழ்பெற்றவர்.

स कृत्वा पृथिवीं कृत्स्नां शासने पृथिवीपतिः । सुरलोकमितो जेतुमुद्योगमकरोत्पुनः ॥

सः पुनः

“ அந்த மன்னர்

इतः

இம்மண்ணுலகை

पृथिवीं

மண்ணுலகம்

விட்டு

कृत्स्नां

அனைத்தையும்

सुरलोकं

தேவலோகத்தை

शासने

ஆக்கினையில்

जेतुं

வெற்றிக்கொள்ள

कृत्वा

நிறுத்தி

उद्योगं

யத்தினைத்தை

पृथिवीपतिः

பூலோகசக்கிரவர், த்தி

अकरोत्

செய்யலானார்.

யாகி

इन्द्रस्य च भयं तीव्रं सुराणां च महात्मनाम् । मान्धातरि कृतोद्योगे देवलोकजिगीषया ॥

देवलो

“ தேவலோகத்தை

इन्द्रस्य च

இந்திரனுக்கும்

रुजिगीषया

வெற்றிக்கொள்ள எண்ண

महात्मनां

மஹாத்மாக்களான

ணங்கொண்டதால்

सुराणां च

தேவர்களுக்கும்

मान्धातरि

மார்தாதா

तीव्रं

அதிக

कृतोद्योगे

யத்தினைத்தவனவில்

भयम्

மனக்கவலை ஏற்பட்ட

டது.

अर्धासनेन शक्रस्य राज्याथेन च पार्थिवः । वन्धमानः सुरगणैः प्रतिज्ञामधिरोहत् ॥ ८ ॥

शक्रस्य

“ இந்திரனுடைய

वन्धमानः

வணங்கப்படும்

अर्धासनेन

அர்த்தாசனைத்தின

पार्थिवः

மன்னனாகுவேன்

என்றிற

राज्याथेन च

அரசாட்சியின் பாகி

प्रतिज्ञां

பாத்யதையை

सुरगणैः

தேவகணங்களால்

अधिरोहत्

கொடுக்கலாயினான்.

तस्य पापमभिप्रायं विदित्वा पाकशासनः । सान्त्वपूर्वमिदं वाक्यमुवाच युवनाश्वजम् ॥९॥

पाकशासनः “தேவேந்திரர்
 तस्य அவனது
 अभिप्रायं உத்தேசமான
 पापं தீயச்செயலை
 विदित्वा அறிந்து

युनाश्वजं யுனாஸ்வர் புத்திர
 ரிடம்
 सान्त्वपूर्वम् நல்வரர்க்கதையாய்
 इदं இனிவரும்
 वाक्यं மொழியை
 उवाच சொன்னார் :

राजा त्वं मालुषे लोके न तावत्पुरुषवध । अकृत्वा पृथिवीं वश्यां देवराज्यमिहेच्छसि ॥

पुरुषवध “ஹே புருஷோத்தம!
 इदं நீ
 मालुषे மானிட
 लोके உலகில்
 तावत् இன்னும்
 राजा பிரபுவாக
 न ஆகவில்லை.
 पृथिवीं பூமியை

वश्यां வசப்படுத்திக் கொள்
 கிறதை
 अकृत्वा முடிக்காமல்
 इह இப்பொழுதே
 देवराज्यं தேவலோகஸாம்ராஜ்
 யத்திற்கு
 इच्छसि ஆசைப்படுக்கின்ற
 னையே.

यदि वीर समग्रा ते मेदिनी निखिला वशे । देवराज्यं कुरुष्वेह सभृत्यबलवाहनः ॥११॥

वीर “ஹே வீர!
 ते वशे உனது வசத்தில்
 मेदिनी பூலோகம்
 निखिला பாக்கியின்றி
 समग्रा முழுமையும்
 यदि இருக்குமானால்
 इह அப்பொழுது

सभृत्यबलवाहनः {பிருத்தியர்கள், சேனை
 கள், வாஹனங்கள்
 இவைகளோடுகூடி
 எனவனாய்
 देवराज्यं தேவலோக அரசாட்
 சியை
 कुरुष्वेह நீ செலுத்தலாகும்.

इन्द्रमेवं ब्रुवाणं तं मान्धाता वावयमब्रवीत् । क मे शक्र प्रतिहतं शासनं पृथिवीतले ॥१२॥

मान्धाता “மாந்தாதா
 एवं இவ்வண்ணம்
 ब्रुवाणं உரைக்கும்
 तं அந்த
 इन्द्रं இந்திரனைப்பார்த்து
 वाक्यं இந்தமொழியை

अबवीत् மொழிந்தார் :
 शक्र ‘ஹே தேவேந்திர!
 पृथिवीतले பூலோகத்தில்
 मे शासनं எனது ஆக்கரை
 प्रतिहतं செல்லாத இடம்
 क எங்கு உள்ளது?’

तमुवाच सहस्राक्षो लवणो नाम राक्षसः । मधुपुत्रो मधुवने न चाज्ञां कुरुतेऽनघ ॥१३॥

सहस्राक्षः “தேவேந்திரர்
 त अवराक्षु அவருக்கு
 उवाच இப்படி பதிலுரைத்
 தார் :
 अनघ ‘பாபமற்றவனே!
 मधुवने மதுவனத்தில்
 मधुपुत्रः மதுவென்பவனது
 புத்திரனான

लवणः லவணன்
 नाम என்ற
 राक्षसः அரக்கன்
 अज्ञां கட்டளைக்கு
 न कुरुो च கீழ்ப்படிந்து நடக்க
 வில்லையே.’

तच्छ्रुत्वा विप्रियं घोरं सहस्राक्षेण भाषितम् । व्रीडितोऽवाञ्छुखो राजा व्याहृतं न शशाक ह ॥

ராஜா "மன்னவர்
 சஹசாஶேண தேவேந்திரரால்
 பாஷிதம் சொல்லப்பட்ட
 தத் அந்த
 வோர் மிக்க
 விபிரியே அஸஹ்யமான செய்
 தியை

श्रुत्वा கேட்டு
 अवाञ्छुखः தலைகுனிந்து
 व्रीडितः வெட்கி
 व्याहृतं ह வாயைத்திறந்து
 பேசவும்
 न शशाकः முடியவில்லை.

आमन्त्र्य तु सहस्राक्षं हिया किञ्चिदवाञ्छुखः । पुनरेवागमच्छ्रीमानिभं लोकं नरेश्वरः ॥

श्रीमान् "சீமாளான
 नरेश्वरः மன்னர்
 हिया வெட்கத்தினால்
 अवाञ्छुखः தலைகுனிந்தவராய்
 तु இருந்ததாலும்
 सहस्राक्षं இந்திரனிடம்

किञ्चित् ஒருவிதமாய்
 आनन्त्र्यं விடைபெற்று
 पुनः एव மீளவும்
 इभं அந்த
 लोकं உலகத்திற்கு
 आगमत् வந்துசேர்ந்தார்.

स कृत्वा हृदयेऽमर्षं सभृत्यबलवाहनः । आजगाम मधोः पुत्रं वशे कर्तुमरिन्दमः ॥१६॥

अरिन्दमः "சத்துருஸம்ஹார
 கராகிய
 सः அவர்
 हृदये மனதில்
 अमर्षं { உத்தேசிக்கத்ததை
 முடிக்கவேண்டும்
 என்ற தீர்மானத்தை
 कृत्वा செய்துகொண்டு

सभृत्यबलवाहनः { பிருத்தியர்கள், சே
 னைகள், வாஹனங்
 கள் இவைகளோடு
 கூடினவராய்
 वशे ஆளுகைக்குள்
 कर्तुं கொண்டுவர
 मधोः மதுவினைது [திற்கு
 पुत्रं புத்திரனிருக்குமிடத்
 आजगाम வந்துசேர்ந்தார்.

स काङ्क्षमाणो लवणं युद्धाय पुरुषर्षभः । दूतं सम्प्रेषयामास सकाशं लवणस्य हि ॥१७॥

लवणं "லவணனை
 युद्धाय हि போருக்காகவே
 काङ्क्षमाणः எதிர்பார்த்துக் காத்
 துக்கொண்டிருக்கும்
 सः அந்த

पुरुषर्षभः புருஷோத்தமர்
 लवणस्य लवणனுடைய
 सकाशं சமூகத்திற்கு
 दूतं ஒரு தூதனை
 सम्प्रेषयामास அனுப்பினார்.

स गत्वा विप्रियाण्याह बहूनि मधुनः सुतम् । वदन्तमेवं तं दूतं भक्षयामास राक्षसः ॥

सः "அவன்
 मधुनः सुतं மதுவினைது புதல்வனி
 गत्वा போய்ச்சேர்ந்து [டம்
 बहूनि அதிக
 विप्रियाणि மனோபிஷ்டத்திற்கு
 மாறான விஷயங்களை

आह தூதுசொல்லிவிடுத்
 राक्षसः அரக்கன் [தான்.
 एवं बद्धं இப்படிப் பேசிய
 तं दूतं அந்தத் தூதனை
 भक्षयामास புகித்துவிட்டான்.

चिरायमाणे दूते तु राजा क्रोधसमन्वितः । अर्दयामास तद्रक्षः शरवृष्ट्या समन्ततः ॥

ராஜா "மன்னர்
 வூதே தூதன்
 சிராயமாணே து திரும்பிவராததால்
 क्रोधसमन्वितः மிக்க கோபங்கொண்டவராய்

तत् अर्ध
 रक्षः अरक्कणै
 शरवृष्ट्या அம்புமாரியால்
 समन्ततः நாற்புறமும்
 अर्दयामास துன்புறுத்தினார்.

ततः प्रहस्य तद्रक्षः शूलं जग्राह पाणिना । वधाय सानुबन्धस्य मुपोचायुधमुत्तमम् ॥२०॥

तत् "அந்த
 रक्षः அரக்கன்
 ततः அப்போது
 प्रहस्य நகைத்து
 शूलं சூலத்தை
 पाणिना கையில்
 जग्राह எடுத்துக்கொண்டான்.

सानुबन्धस्य தீங்குசெய்துகொண்டிருப்பவருடைய
 वधाय வதையின்பொருட்டு
 उत्तमं உத்தம
 आयुधं ஆயுதத்தை
 मुपोच விடுத்தான்.

तच्छूलं दीप्यमानं तु सभृत्यबलवाहनम् । भस्मीकृत्वा नृपं भूयो लवणस्यागमत्करम् ॥

तत् "அந்த
 शूलं சூலம்
 तु உடனே
 दीप्यमानं கொழுந்துவிட்டு எரி
 सभृत्यबल- } பிருத்தியர்கள், சேனை
 वाहनं } கள் வாஹனங்கள்
 இவைகளோடுகூட

नृपं மன்னரை
 भस्मीकृत्वा சாம்பலாய் எரித்து விட்டு
 भूयो மீளவும்
 लवणस्य लவணனுடைய
 करं கையில்
 आगमत् வந்து சேர்ந்தது.

एवं स राजा सुमहान्तः सबलवाहनः । शूलस्य तु बलं सौम्य अप्रमेयमुत्तमम् ॥२२॥

सुमहान् "மஹாபலிஷ்டனெனப்பெயர்பெற்ற
 सः அந்த
 राजा மன்னர்
 सबलवाहनः तु சேனைகளுடனும் வா
 ஹனங்களளுடனும்
 एवं இப்படி

हन्तः கொல்லப்பட்டார்.
 सौम्य ஹே லௌமிய,
 शूलस्य சூலச்ய
 बलं உக்கிரமானது
 अनुत्तमं ஒப்புயர்வில்லாதது.
 अप्रमेयम् எதையும் செய்யவல்லது.

श्वः प्रभाते तु लवणं वधिष्यसि न संशयः । अगृहीतायुधं क्षिपं ध्रुवो हि विजयस्तव ॥ लोकानां स्वस्ति चैव स्यात्कृते कर्मणि च त्वया ॥ २३ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------------|--------------|-------------------------------------|
| சு | “இப்படி இருந்த போதிலும் | தவ | உணது |
| சு: | நானே | விஜய: | வெற்றியும் |
| பபாதே | காலையில் | பூவ: டி | எவர்க்கும் அசைக்க வும் முடியாதே. |
| லவர்ட் | லவணனை | தவயா | உண்ணல் |
| அகூஹீதாயுத் | கையில் ஆயுதமில்லா திருக்கிறவரைய் | கர்மணி | பெரிய காரியம் |
| கிப்ட் | அப்போதே | கூதே ச | செய்துமுடிக்கப் பட்டதும் |
| வதிவ்யசி | ஈ கொன் றுவிடுவாய். | லோகானா் ச எவ | எல்லா லோகங்களுக் |
| எ சர்சய: | இதற்கையமில்லை. | ஸ்வஸ்தி | நன்மை [கும் |
| | | ஏயாத் | வினே வித்ததாகும்.” |

இத்யாபீ ஶ்ரீமத்ராமாயணே வால்மீகீயே ஆதிகாவ்யே

உத்தரகாண்டே சமஸ்பஷ்டிதம: சர்ட்: ॥

ஆதிர: ஶ்லோகா: 23021



உத்தரகாண்டே ஆதிர: ஶ்லோகா: 2297

அஷ்டிதம: சர்ட்:—அறுபத்தெட்டாவது ஸர்க்கம். ॥ ௨௨ ॥

லவணசாந்ருஶ்ரீவாட:—லவணசத்ருக்கனர்களுது விவாதம்.

| | | | |
|---|-------------------------|---------|------------------------------|
| கத்யா கத்யதா தீபா ஜய் சாகாகூதா த்யுபம் வ்யதீதா ரஜனீ ஶீப்ரீ சந்ருஶ்ரீ மஹாத்மன: ॥ | | | |
| மஹ:மன: | மஹா த்மாவான | கத்யா | ஸம்பா ஷ்ணைய |
| சந்ருஶ்ரீ | சத்துருக்கினருக்கு | ரீபா | அவர்கள் |
| ரஜனீ | இராப்பொழுது | கத்யதா | சொல்லிக்கொண் டிருக்கையில் |
| த்யுபம் | நன்மைசெய்யும் | ஶீப்ரீ | பொழுதுதெரியாத வண்ணம் |
| ஜய் ச | ஐயமொன்றையே | வ்யதீதா | கழிந்தது. |
| அகாகூதா | ஸதா விஷயமாய்க் கொண்ட | | |

தத: பபாதே விமலே க்ரூகர்மா ச ராக்ஷச: | நிரீர்தஸ்து பூராடீரோ மக்ஷ்யாஹாரபசுதிர: ॥2॥

| | | | |
|--|-----------------|--------------|-----------------------------|
| தத: | அப்பொழுது | ராக்ஷச: ஶு | அரக்கனும் |
| விமலே | தெளிவான | மக்ஷ்யாஹார-} | உணவுதேட ஆவல் |
| பபாதே | சூரியோதயமானதும் | பசுதிர: } | கொண்டவருகி |
| க்ரூகர்மா | துன்மாரக்கனும் | பூர: | விட்டிலிருந் து |
| பீர: | தீரனுமாகிய | நிரீர்த: | வெளியேபோயிருந் ந்தான். |
| ச: | அந்த | | |
| எதஸிந்நந்தரே வீர: சந்ருஶ்ரீ யஸுநா நடீரீ தீர்த்வா மபூபூரடீரரி பநுஷ்யாநிரதிஶ்ட ॥3॥ | | | |
| எதஸிந்நந்தரே | இதேசமயத்தில் | மபூபூரடீரரி | மதுவினது விட்டு வாயிலில் |
| வீர: | வீரராகிய | பநுஷ்யாநி: | வில்லும் கையுமாக |
| சந்ருஶ்ரீ | சத்துருக்கினர் | அதிஶ்ட | காத்துக்கொண் டிருந்தார். |
| யஸுநா நடீரீ | யமுறைதரிய | | |
| தீர்த்வா | தாண்டி | | |

ततोऽर्धदिवसे प्राप्ते कृतकर्मा स राक्षसः । आगच्छद्बहुसाहस्रं प्राणिनां भारमुद्बहन् ॥४॥

अर्धदिवसे நடுப்பகல்
 प्राप्ते நடைபெறுகையில்
 कृतकर्मा போனகாரியத்தை
 முடித்துக்கொண்ட
 सः அந்த
 राक्षसः அரக்கன்

बहुसाहस्रं அனேகாயிரம்
 प्राणिनां பிராணிகளுடைய
 भरं மூட்டைய
 उद्बहन् சுடந்துகொண்டு
 ततः அவ்விடத்திற்கு
 आगच्छन् திரும்பிவந்தான்.

ततो ददर्श शत्रुघ्नं स्थितं द्वारि धृतायुधम् । तमुवाच ततो रक्षः किमनेन करिष्यसि ॥५॥

ततः அப்பொழுது
 शत्रुघ्नं சத்துருக்கிணரை
 द्वारि வாயிலில்
 धृतायुधं ஆயுதபாணியாக
 स्थितं நின்றகொண்டிருப்
 ददर्श கண்டான். [பதை
 ततः அதன்மேல்

रक्षः அரக்கன்
 तं அவரைப் பார்த்து
 उवाच இப்படிப் புகன்றான் :
 अनेन “இதனால்
 करिष्यसि நீ செய்யப்போகிற
 किम् என்ன ?

ईदृशानां सहस्राणि सायुधानां नराधम । भक्षितानि मया रोषात्कालमाकाङ्क्षसे नु किम् ॥

नराधम “மாளிடப்பதரே!
 मया என்
 रोषात् ஆக்கிரஹத்தால்
 ईदृशानां இத்தன்மையான
 सायुधानां ஆயுதபாணிகளான
 सहस्राणि பலர்

भक्षितानि விழுக்கிவிடப்பட்ட
 டிருக்கிறார்கள்.
 कालं யமனிடம்
 आकाङ्क्षसे போய்ச்சேர நிச்சயித்
 துவிட்டாயா
 किं नु என்ன ?

आहारश्चाप्यसम्पूर्णो ममायं पुरुषाधम । स्वयं प्रविष्टोऽद्य सुखं कथं यास्यसि दुर्मते ॥७॥

पुरुषाधम “மாளிடப்புழுவே!
 मम अपि எனக்கோ
 अयं இப்பொழுது
 आहारः च ஆஹாரமும்
 असंपूर्णः ஸம்பூர்ணமாகக்கிடை
 கக்வில்லை.

दुर्मते ஹே மூட!
 अद्य இப்பொழுது
 स्वयं நீதானாகவே
 सुखं प्रविष्टः வாயில்விழ
 कथं ஏன்
 यास्यसि வந்திருக்கின்றனா ?”

तस्यैवं भाषमाणस्य हसतश्च मुहुर्मुहुः । शत्रुघ्नो वीर्यसम्पन्नो रोषादश्रूण्यवासृजत् ॥ ८ ॥

वीर्यसम्पन्नः வீரசிகாமணியான
 शत्रुघ्नः சத்துருக்கினர்
 मुहुःमुहुः அடிக்கடி
 तस्य அவன்
 हसतः என்னம்பண்ணுகிற
 வனாய்

एवं இப்படி
 सापमाणस्य च பேசியபொழுது
 रोषात् ரோஷத்தால்
 अश्रूणि கண்ணீரை
 अवासृजत् பெருக்கினார்.

तस्य रोषाभिभूतस्य शत्रुघ्नस्य महात्मनः । तेजोमया मरीच्यस्तु सर्वगात्रैर्विनिष्यतन् ॥९॥

रोषाभिभूतस्य கோபாவேசங்கொண்ட
 महात्मनः மஹாத்மாவான
 तस्य அந்த
 शत्रुघ्नस्य சத்துருக்கினரது
 सर्वगात्रैः तु ஸகல அவயவங்களி
 ளிருந்தும்

तेजोमया: { மாண்ட சீரமாயிருக்
 केष्यिष्यन्तं சோதி
 मयमान
 मरोच्यः கிரணங்கள்
 विनिष्यतन् வெளிப்பட்டன.

उवाच च सुसंकुदः शत्रुघ्नस्तं निशाचरम् । योद्धुमिच्छामि दुर्बुद्धे द्वन्द्वयुद्धं त्वया सह ॥

सुसंकुदः अतिசீற்றங்கொண்ட
 ருந்த
 शत्रुघ्नः சத்துருக்கினர்
 तं அந்த
 निशाचरं அரக்கனைப்பார்த்து
 उवाच இப்படி உரைத்தார்;

दुर्बुद्धे “ஹே துஷ்டா!
 त्वया सह உன்னுடன்
 द्वन्द्वयुद्धं च தொந்தயுத்தத்தையே
 योद्धुं செய்யும்
 इच्छामि தீர்மானத்துடன்
 நான் வந்திருக்கிறேன்.

पुत्रो दशरथस्याहं भ्राता रामस्य धीमतः । शत्रुघ्नो नित्यशत्रुघ्नो वधाकाङ्क्षी तवागतः ॥

नित्यशत्रुघ्नः { “எப்பொழுதும் சத்
 ருக்களை சம்ஹாரம்
 செய்யும்
 शत्रुघ्नः சத்ருக்களெனப்
 अहं நான் [பெயர் பூண்ட
 दशरथस्य தசரதரின்
 पुत्रः புதல்வன்.

धीमतः தீமானான
 रामस्य ஸ்ரீராமபிரானது
 आता சோதான்.
 तव உன்னுடைய
 वधाकाङ्क्षी வதையை உத்தேச
 மாய்க்கொண்டு
 आगतः நான் வந்திருக்கிறேன்.

तस्य मे युद्धकामस्य द्वन्द्वयुद्धं प्रदीयताम् । शत्रुस्त्वं सर्वभूतानां न मे जीवनामिष्यसि ॥

युद्धकामस्य “அமராட ஆவல்
 तस्य அந்த [கொண்ட
 मे எனக்கு
 द्वन्द्वयुद्धं தொந்தயுத்தத்திற்கு
 प्रदीयतां இணங்கிவிடவேண்டி
 யது.
 एवं நீ

सर्वभूतानां ஸகலபிரானிகளுக்
 கும்
 शत्रुः சத்ருவாயிருக்கின்ற
 मे என்னிடமிருந்து [னை.
 जीवन् உயிருடன்
 न गमिष्यसि நீ திரும்பிப்போக
 முடியாது”;

तस्मिंस्तथा ब्रुवाणे तु राक्षसः प्रहसन्निव । प्रत्युवाच नरश्रेष्ठं दिष्ट्या प्राप्तोऽसि दुर्मते ॥

तथा அவ்விதமாக
 तस्मिन् அவர்
 ब्रुवाणे तु பேசியபொழுது
 राक्षसः அரக்கன்
 प्रहसन् इव திரஸ்காரம் செய்து
 கொண்டே

नरश्रेष्ठं புருஷோத்தமரைப்
 பார்த்து
 प्रत्युवाच இப்படிப் பதிலுரைத்
 दुर्मते “ஹே மூடா! [தான்:
 दिष्ट्या தெய்வானைமாக
 प्राप्तः असि நீ இங்கு வந்து
 சேர்ந்தனை.

मम मातृष्वसुभ्रता रावणो राक्षसाधिपः । हतो रामेण दुर्बुद्धे स्त्रीहेतोः पुरुषाधमः ॥१४॥

दुर्बुद्धे "ஹே மூடா!
 पुरुषाधमः ஹே மா னிடப்பதரே!
 राक्षसाधिपः ராக்ஷஸமன்னரும்
 मम எனக்கு
 मातृष्वसु: தாய்வழியாக

भ्राता ஆப்தபந்துவுமாகிய
 रावणः ராவணனார்
 स्त्रीहेतोः ஒருபெண்நிமித்தமாக
 रामेण ராமனென்பவனால்
 हतः கொல்லப்பட்டார்.

तच्च सर्वं मया क्षान्तं रावणस्य कुलक्षयम् । अवज्ञां पुरतः कृत्वा मया यूयं विशेषतः ॥

रावणस्य "ராவணரது
 कुरुक्षयं குல அழிவாகிய
 तत् अது
 सर्वं च எல்லாமும்
 मया என்னால்
 क्षान्तं மன்னித்துவிடப்
 பட்டது.

पुरतः அதன்மேல்
 यूयं } முக்கியமாய்
 विशेषतः } நீங்கள் என்கிறதினாலு
 मया என்னால் [லேயே
 अवज्ञां அலக்ஷியமாய்
 कृत्वा இருந்துவிடப்பட்ட
 டது.

निहताश्च हि मे सर्वे परिभूतास्तृणं यथा । भूताश्चैव भविष्याश्च यूयं च पुरुषाधमः ॥

यूयं च "நீங்களாகும்
 पुरुषाधमः च மா னிடப்பதர்களும்
 भूताः च एव { தெய்வ ஸங்கல்ப்பத்
 தாலுண்டான சேத
 னங்கள் அசேதனங்
 களெல்லாமும்
 तृणं यथा அற்பமென

परिभूताः விட்டுவிடப்பட்டிருக்
 கிறார்கள்.
 भविष्याः கண்முன்கிட்டியவர்
 सर्वे च எல்லோருமே [கள்
 मे निहताः என்னால் கொன்றுவி
 டப்பட்டார்கள்.
 हि இது பிரசித்தம்.

तस्य ते युद्धकामस्य युद्धं दास्यामि दुर्मते । तिष्ठ त्वं च सुहूर्तं तु यावदायुधमानये ॥

दुर्मते "ஹே மூடா!
 युद्धकामस्य யுத்தத்திற்காக வந்தி
 रुக்கும்
 तस्य அந்த
 ते உன்னுடன்
 युद्धं அமராடுவதற்கு
 दास्यामि நான் இணங்குகி
 रेன்.
 आयुधं ஆயுதத்தை
 सुहूर्तं तु ஒரு நொடியிலேயே

॥ १७ ॥
 आनये { இதோ எடுத்துக்
 கொண்டுவந்துவிடுகி
 रेன்.
 त्वं நீ
 यावत् च அதுவரையில்மா த்
 तिष्ठ பொறுத்திரு. [திரம்
 यावत् அதற்குள்
 तुभ्यं உனக்கு
 ईरिसितं இஷ்டமாயிருக்கிற
 आयुधं ஆயுதம்
 यादृन् எதுவாகிறதோ அதை
 सज्जये நீ கைப்பற்று."

तमुवाचाथ शत्रुघ्नः क मे जीवन्गमिष्यसि । शत्रुघ्नच्छया दृष्टो न मोक्तव्यः कृतात्मना ॥

शत्रुघ्नः சத்துருக்கினர்
 अथ अथன்மேல்
 तं அவனைப்பார்ந்து
 उवाच இப்படிப் பேசினார்:
 मे “என்னைத்தாண்டி
 जीवन् உயிரோடு
 गमिष्यसि நீ திரும்பிப்போய்விடு
 क எப்படியாகும்? [வது

कृतात्मना புத்திகாலியான ஒரு
 यदृच्छया தற்செயலாய்
 दृष्टः கண்முன் அகப்
 पட்டுக்கொண்ட
 शत्रुः சத்துரு
 न मोक्तव्यः தப்பி ஒழிவிடச்செய்
 யக்கூடாது.

यो हि विक्रवया बुद्ध्या प्रसरं शत्रवे ददौ । स हतो मन्दबुद्धित्वाद्यथा कारुषस्तथा ॥

कारुषः “பயங்காளி
 यः எவனோ அவன்
 मन्दबुद्धिस्त्वात् மூடபுத்தியால்
 विक्रवया बुद्ध्या அசட்டுத்தனத்தினால்
 शत्रवे சத்துருவுக்கு [அம்

प्रसरं ददौ அவனிஷ்டப்படி வேறி
 दम् செல்லவிடுகிறான்.
 यथा तथा அப்படியாகில்
 सः हि அவனே
 हः மாண்டுபோகிறான் ”

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकिये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे अष्टषष्टितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकः 23040

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकः 2316



एकोनसप्ततितमः सर्गः—अथपत्तोटोन्पतावतु षर्ककम्. ॥ ६९ ॥

लवणवधः—लवणवधम्.

तच्छ्रुत्वा भाषितं तस्य शत्रुघ्नस्य महात्मनः । क्रोधमाहारयचीत्रं तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥

तस्य அந்த
 महात्मनः மஹத்தமாவான
 शत्रुघ्नस्य சத்துருக்கினரின்
 तत् அந்த
 भाषितं சொல்லி
 श्रुत्वा கேட்டு

तीत्रं அடக்கமுடியாத
 क्रोधं கோபத்திற்கு
 आहारयत् ஆளானான்.
 तिष्ठ तिष्ठ நில் நில்
 इति च என்று மாதத்திரம்
 अब्रवीत् சொன்னான்.

पाणौ पाणिं विनिष्पिष्य दन्तान्कटकटाप्य च । लवणो रघुशार्दूलमाह्वयामास चासकृत् ॥

लवणः லவணசாரன்
 असकृत् பலதரம்
 पाणौ கையிற்
 पाणिं கையை
 विनिष्पिष्य च போட்டு அறைந்தும்

दन्तान् பற்களை
 कटकटाप्य च கடகடவெனக் கடித்
 रघुशार्दूलं ரகுசார்தூலரை [தும்
 आह्वयामास போருக்கு அழைத்
 தான்.

तमाह्वयन्तं सौमित्रिर्लवणं घोरदर्शनम् । शत्रुघ्नो देवशत्रुघ्न इदं वचनमब्रवीत् ॥ ३ ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------------|-----------|--------------------------|
| सौमित्रिः | சமித்திரா தேவியின் புதல்வரும் | आह्वयन्तं | போருக்கழைக்கின்ற அந்த |
| देवशत्रुघ्नः | தேவசத்துருக்களின் ஸம்ஹாராகருமாகிய | लवणं | லவணனைப்பார்க்குது |
| शत्रुघ्नः | சத்துருக்கினர் | इदं | இனிவருமாறு |
| घोरदर्शनं | கோரரூபியாய் | वचनं | வசனத்தை |
| | | अब्रवीत् | சொன்னார். |

न शत्रुघ्नस्तथा जातो यथाऽन्ये निर्जितास्त्वया । तद्य बाणाभिहतो व्रज त्वं यमसादनम् ॥

| | | | |
|-----------|------------------------------|-----------|---------------------|
| अन्ये | “சாதாரண மனிதர் | न जातः | பிறந்திருக்கவில்லை. |
| त्वया | உன்னால் [கள் | तत् | ஆகையால் |
| निर्जिताः | தோற்கடிக்கப்பட்ட டார்கள். | अद्य | இப்பொழுது |
| यथा तथा | என்றாலும் அப்பொ ழுது | त्वं | நீ |
| शत्रुघ्नः | சத்துருக்கினனென்ற நான் | बाणाभिहतः | பாணத்தாலடியுண்டு |
| | | यमसादनं | யமனுலகுக்கு |
| | | व्रज | போய்ச்சேர். |

ऋषयोऽप्यथ पापात्मन्मया त्वां निहतं रणे । पश्यन्तु विषा विद्वांसस्त्रिदश इव रावणम् ॥

| | | | |
|-----------|------------|-------------|---------------------------------|
| पापात्मन् | “ஹ பாபி! | रावणं इव | ராவணனை எப்படி யோ அப்படியே, |
| अद्य | இப்பொழுது | ऋषयः | ரிஷிகளும் |
| मया | என்னால் | विद्वांसः | வித்வாம்சர்களாகிய |
| रणे | போரில் | विषाः अत्रि | அந்தணர்களும் |
| निहतं | கொலையுண்ட | पश्यन्तु | பார்த்துக் களிப் படையட்டும். |
| त्वां | உன்னை, | | |
| त्रिदशः | வண்ணவர்கள் | | |

त्वयि मद्राणनिर्दग्धे पतितेऽद्य निशाचर । पुरे जनपदे चापि क्षेममेव भविष्यति ॥ ६ ॥

| | | | |
|-----------------|--------------------------|-----------|------------------|
| निशाचर | “ஹே நிசாசர! | पति | மாண்டுவிழவும் |
| अद्य | இப்பொழுது | पुरं च | நகரத்திலும் |
| त्वयि | நீ | जनपदे अपि | நாட்டிலும் |
| मद्राणनिर्दग्धे | என்பாணத்தாலெறி யுண்டு | क्षेमं एव | சேந்தம் |
| | | भविष्यति | உண்டாகப்போகிறது. |

अद्य मद्राहुनिष्क्रान्तः शरो वज्रनिभाननः । प्रवेक्ष्यते ते हृदयं पद्मंशुरिवार्कजः ॥ ७ ॥

| | | | |
|--------|------------------------|---------------------|---------------------------------|
| अर्कजः | “சூரியனிடமுண்டா கிய | मद्राहुनिष्क्रान्तः | எனது கையினின்று கிளம்பிவரும் |
| अंशुः | கிரணம் | वज्रनिभाननः | வஜ்ராயுதம்போன்ற கூருடைய |
| पद्मं | தாமரைமலரில் | शरः | சரமானது |
| इव | எவ்வண்ணமோ அவ்வண்ணமே | ते | உனது |
| अद्य | இப்பொழுது | हृदयं | இருதயத்தில் |
| | | प्रवेक्ष्यते | புகப்போகிறது.” |

एवमुक्तो महावृक्षं लवणः क्रोधमूर्च्छितः । शत्रुघ्नोरसि चिक्षेप स च तं शतधाऽच्छिनत् ॥

एवं
उक्तः
लवणः
क्रोधमूर्च्छितः
महावृक्षं

இப்படியாய்
சொல்லப்பட்டதைக்
கேட்ட
லவணன்
கோபம் தலைக்கேறிய
வனாகி
மிகப்பெரிய மாமொ
ன்றை

शत्रुघ्नोरसि
चिक्षेप
सः च
तं
शतधा
अच्छिनत्

சத்துருக்கினருடைய
மார்பில்
விடுத்தான்.
அவரோ
அதை
பலதுண்டுகளாய்
பிளந்துதள்ளி
விட்டார்.

तद्दृष्ट्वा विफलं कर्म राक्षसः पुनरेव तु । पादपानसुबहून्गृह्य शत्रुघ्नयासृजद्भ्रूलौ ॥ ९ ॥

बली
राक्षसः
तत्
कर्म
विफलं
दृष्ट्वा

அதிலிஷ்டனாகிய
அரக்கன்
அந்த
செய்த காரியத்தை
நிஷ்ப்ரயோஜனமாகி
விட்டதாய்
கவனித்து

तु
पुनः एव
सुबहून् पादाय
गृह्य
शत्रुघ्नया
असृजत्

இருந்தாலும்
மீளவும்
பல வீருகூங்களை
கையால் பெயர்த்து
டுத்து
சத்துருக்கினன்மீது
தாக்கினான்.

शत्रुघ्नश्चापि तेजस्वी वृक्षानापततो बहून् । त्रिभिश्चतुर्भिरैकैकं चिच्छेद नतपर्वभिः ॥ १० ॥

तेजस्वी
शक्षुन्नः अपि
आसततः
बहून् वृक्षान् च
एकैकं

மஹா சாமர்த்திய
சாலியாகிய
சத்துருக்கினரும்
மேலேவந்து விழுந்து
கொண்டிருக்கும்
பல மரங்களையும்
ஒவ்வொன்றாய்

त्रिभिः
चतुर्भिः
नतपर्वभिः
चिच्छेद

மூன்று
நான்கு
வளைந்த கணுக்
கள் தடையாய்
இசைக்கப்பெற்ற
பகழிகளால்
சேதித்துத்தள்ளினார்.

ततो बाणमयं वर्षं व्यसृजद्राक्षसोरसि । शत्रुघ्नो वीर्यसम्पन्नो विव्यथे न स राक्षसः ॥

वीर्यसम्पन्नः
शत्रुघ्नः
राक्षसोरसि
बाणमयं
वर्षं

வீரசிகாமணியாகிய
சத்துருக்கினர்
அரக்கனது மார்பில்
அம்புமயமான
மாரியை

व्यसृजत्
ततः
सः
राक्षसः
न विव्यथे

பொழிந்தார்.
அப்படியும்
அந்த
அரக்கன்
சற்றும் சளைக்கவில்லை.

ततः प्रहस्य लवणो वृक्षमुत्पाद्य वीर्यवान् । शिरस्यभ्यहनच्छूरं स्रस्ताङ्गः स सुमोह वै ॥

वीर्यवान्
लवणः
प्रहस्य
वृक्षं
उत्पाद्य
शूरं

வீரியவானாகிய
லவணன்
நகைத்து
ஒரு மரத்தை
பெயர்த்தெடுத்து
சூரரை

शिरसि
अभ्यहनत्
ततः
सः वै
स्रस्ताङ्गः
सुमोह

தலையில்
புடைத்தான்.
அதனால்
அவரும்
அங்கத்தளர்த்து
மூர்ச்சை அடைந்தார்.

तस्मिन्निपतिते वीरे हाहाकारो महानभूत् । ऋषीणां देवसङ्घानां गन्धर्वाप्सरसां तथा ॥

तस्मिन् अந்த
वीरे வீரர்
निपतिते கீழேவிழுந்துவிடவும்
ऋषीणां ரிஷிகளுடையவும்
देवसङ्घानां தேவக்கூட்டங்களுடையவும்

गन्धर्वाप्सरसां } கந்தர்வர்களுடைய
तथा } வும் அப்ஸரஸுக
महान् ஒரு பெரிய
हाहाकारः ஹாஹா என்று
अभूत् அழும்கூக்குரல்
உண்டாயிற்று.

तमवज्ञाय तु हतं शत्रुघ्नं भुवि पातितम् । रक्षो लब्धान्तरमपि न विवेश स्वमालयम् ॥
नापि शूलं प्रजग्राह तं दृष्ट्वा भुवि पातितम् । ततो हत इति ज्ञात्वा तान्भक्षान्समुदावहत् ॥

रक्षः அரக்கன்
हतं அடியுண்டு
भुवि தரையில்
पातितं வீழ்ந்து படுத்துக்
तं அந்த [கிடக்கும்
शत्रुघ्नं சத்துருக்கினரை
अवज्ञाय तु ஒரு பொருட்டாய் கொள்ளாததால்
लब्धान्तरं अपि { தக்க அவகாசம்
கிடைத்திருக்கையி
லும்கூட
शूलं குலத்தை
न प्रजग्राह கைக்கொள்ளவில்லை.
स्वं भालयं अपि தனது வீட்டிற் குள்ளேகூட

न विवेश புகவில்லை.
ततः இன்றொருதரம்
भुवि தரையில்
पातितं படுத்திருக்கும்
तं அவரை
दृष्ट्वा உற்றுப்பார்த்து
हतः இறந்துவிட்டார்
इति என்று
ज्ञात्वा நிச்சயித்துக்கொண்டு
तान् அந்த
भक्षान् உணவுகளை
समुदावहत् தூக்கிக்கொண்டு கொண்டான்.

सहूर्ताल्लवसंज्ञस्तु पुनस्तस्यौ धृतायुधः । शत्रुघ्नो वै पुरदारि ऋषिभिः सम्प्रपूजितः ॥

ऋषिभिः वै ரிஷிகளாலும்
तु இதுவிஷயத்தில்
सम्प्रपूजितः ஏற்றவரை ஏற்றுக் கொள்ளப்பட்டவ
शत्रुघ्नः சத்துருக்கினர் [ரான
सहूर्ताय ஒரு முகூர்த்தகாலத்தில்

लवसंज्ञः தன்னறிவுபெற்றவராய்
पुनः மீளவும்
धृतायुधः ஆயுதபாணியாகி
पुरदारि வீட்டின்வாயிலில்
तस्यौ மறித்துநின்றவிட்டார்.

ततो दिव्यममोघं तं जग्राह शरमुत्तमम् । ज्वलन्तं तेजसा घोरं पूरयन्तं दिशो दश ॥१७॥
वज्राननं वज्रवेगं मेरुमन्दरसन्निभम् । नतं पर्वसु सर्वेषु संयुगेष्वपराजितम् ॥ १८ ॥
असृक्चन्दनदिग्धाङ्गं चारुपत्रं पतत्रिणम् । दानवेन्द्राचलेन्द्राणामसुराणां च दारणम् ॥

| | |
|-----------------------------|---|
| सतः | அப்பொழுது |
| असूक्चन्दन- दिग्धाङ्गं } | அங்கமெல்லாம் சிவப்புசந்தனம் பூசபெற்றதும் |
| चारुपत्रं | அழகிய பச்சைக்கள் கட்டப்பட்ட |
| पतस्त्रिणं | பாணமாயும் |
| वज्राननं | { வஜ்ராயுதத்திற்கொப் பானகூர்மையுடை யதும் |
| वज्रवेगं | { வஜ்ராயுதத்திற்கொப் பான ஆற்றலுடை யதும் |
| मेरुमन्दरसन्निभं | { மேருமலை மந்தரமலை இவைகளுக்கொப் பானதும் |
| सर्वेषु पर्वसु | எல்லா கணுக்களிலும் |
| नतं | { வளைத்து தட்டை யாய் இசைக்கப்பட்ட டுள்ளதும் |
| संयुगेषु | யுத்தங்களில் |

| | |
|--------------------------------|---|
| अराजितं | அஜேயமானதும் |
| दानवेन्द्रा- चलेन्द्राणां } | தானவேந்திரர்களாகி ய பருவத ராஜாக்க களுக்கும் |
| असुराणां च दारुणं | அசுரர்களுக்கும் உருவழிக்கவல்லதும் |
| उत्तमं | உச்சிருஷ்டமாய் |
| अमोघं | வீண்போகாததாய் |
| दिव्यं | தெய்வத்தன்மை கொண்டதாய் |
| घोरं | போற்றிவணங்கத்தக் கதுமான |
| तं | அந்த |
| शरं | அம்பை |
| तेजसा | சோதியால் |
| दश | பத்து |
| दिशः | திசைகளிலும் |
| पूयन्तं | பரவியதாய் |
| उवलन्तं | ஜாஜ்வல்யமாய் ஜவலி க்கும்படியாய் |
| जग्राह | கையிலெடுத்தார். |

तं दीप्तमिव कालार्थि युगान्ते समुपस्थिते । दृष्ट्वा सर्वाणि भूतानि परित्रासमुपागमन् ॥

| | |
|--------------|----------------------|
| भूतानि | உயிர்கள் |
| सर्वाणि | எல்லாமும் |
| तं | அதை |
| युगान्ते | ஒரு யுகத்தின் முடிவு |
| समुपस्थिते | வருகையில் |
| कालार्थि ह्व | காலாக்களியென |

| | |
|-----------|----------------------------------|
| दीप्तं | ஜ்வலித்துக்கொண் டிருக்கிறதாய் |
| दृष्ट्वा | கண்ணூற்று |
| परित्रासं | ஏக்கத்தை |
| उपागमन् | அடைந்தார்கள். |

सदेवासुरगन्धर्वं मुनिभिः साप्सरोगणम् । जगद्धि सर्वमस्वस्थं पितामहमुपस्थितम् ॥२१॥

| | |
|-------------------------|--|
| जगत् | உலகம் |
| सर्वं | எல்லாமும் |
| अस्वस्थं | நெஞ்சம் தடுமாறி யதாகி |
| सदेवासुर- गन्धर्वं } | தேவர்கள், அசுரர் கள், கந்தர்வர்கள் இவர்களோடும் |

| | |
|------------|-----------------------|
| साप्सरोगणं | அப்ஸர கணங்களோ டும் |
| मुनिभिः हि | முனிவர்களோடும் |
| पितामहं | பிரம்மதேவரிடம் |
| उपस्थितम् | போய்ச்சேர்ந்தது. |

उवाच देवदेवेशं वरदं प्रपितामहम् । कच्चिल्लोकक्षयो देव सम्प्राप्तो वा युगक्षयः ॥ २२ ॥

| | | | |
|------------|---------------------|------------|-------------------|
| देवदेवेशं | தேவதேவேசரென்ற | देव | “ஹே ஸ்வாமி! |
| वरदं | வரதரான | लोकक्षयः | உலகமழியுங்காலமா ? |
| प्रपितामहं | பிரம்மதேவரைப் | वा | அல்லது |
| | பார்த்து | युगक्षयः | யுகபிரளயகாலம் |
| उवाच | அவர்கள் இப்படி விண் | संप्राप्तः | வந்து விட்டதா |
| | ணப்பஞ்செய்தார்கள்: | कच्चिन् | என்ன ? |

नेदृशं दृष्टपूर्वं च न श्रुतं प्रपितामह । देवानां भयसम्मोहो लोकानां संक्षयं प्रति ॥ २३ ॥

| | | | |
|---------------|------------------|-----------|-----------------------|
| प्रपितामह | “ஹே பிரம்மதேவரே! | संक्षयं | நாசகாலமாயிருப்பதை |
| ईदृशं | இப்படிப்பட்டது | प्रति | உத்தேசித்தது |
| दृष्टपूर्वं न | இதுகாலம் கண்டது | देवानां | தேவர்களுக்கும் |
| | மில்லை. | भयसम्मोहः | யாதும் தோற்றாதது ஏக் |
| श्रुतं च न | கேட்டதுமில்லை. | | கம்பிடித்து விட்டது.” |
| लोकानां | உலகங்களுக்கும் | | |

तेषां तद्वचनं श्रुत्वा ब्रह्मा लोकपितामहः । भयकारणमाचष्ट देवानामभयङ्करः ॥
उवाच मधुरां वाणीं शृणुध्वं सर्वदेवताः ॥ २४ ॥

| | | | |
|------------|---------------------|------------|-----------------------|
| देवानां | தேவர்களுக்கு | आचष्ट | ஞான திருஷ்டியால் |
| अभयङ्करः | அபயமளிக் கும் | | கண்டுகொண்டார். |
| लोकपितामहः | லோகபிதாமஹாகிய | मधुरां | மதுர |
| ब्रह्मा | பிரம்மதேவர் | वाणीं | வாக்காக |
| तेषां | அவர்களுடைய | उवाच | இந்தப் பதிலை திருவாய் |
| तत् वचनं | அந்த விண்ணப்பத் | | ம்மலர்ந்தருளினார்: |
| | திற்கு | सर्वदेवताः | “ஸகல தேவர்களா ! |
| श्रुत्वा | சுருச்செவியாய்த் து | शृणुध्वम् | சொல்லுகின்றேன் |
| भयकारणं | பயத்தின் ஹேதுவை | | செவிக்கொள்க. |

वधाय लवणस्याज्ञौ शरः शत्रुघ्नधारितः । तेजसा तस्य सम्मूढाः सर्वे स्म सुरसत्तमाः ॥

| | | | |
|----------------|------------------------|--------------|--------------------|
| लवणस्य | “லவணகரணது | तस्य | அதன் |
| वधाय | கொலைநிமித்தமாய் | तेजसा | சோதியால் |
| आज्ञौ | விட்டெறிகிற உத்தே | सुरसत्तमाः | தேவோத்தமர்கள் |
| | சத்தில் | सर्वे | எல்லோரும் |
| शरः | ஒரு சரமானது | सम्मूढाः स्म | ஏக்கமாயிருக்கிறார் |
| शत्रुघ्नधारितः | சத்ருக்ளனஞல்கையிலெ | | கள். |
| | டுக்கப்பட்டிருக்கிறது. | | |

एष पूर्वस्य देवस्य लोककर्तुः सनातनः । शरस्तेजोमयो वत्सा येन वै भयमागतम् ॥२६॥

வசா: “ஹே வத்ஸர்களை!
 एष: இந்த
 तेजोमयः தேஜோமயமான தும்
 सनातनः பழமையான துமான
 शरः சரம்
 पूर्वस्य எதற்கும் முந்தியிருந்
 தவரும்

लोककर्तुः லோககர்த்தாவாகிய
 देवस्य பரமாத்மாவினுடையது.
 येन वै இதனால்தான்
 भयं பயம்
 आगतम् ஏற்பட்டது.

एष वै कैटभस्यार्थे मधुनश्च महाशरः । सृष्टो महात्मना तेन वधार्थे दैत्ययोस्तयोः ॥२७॥

तेन “அந்த
 महात्मना பரமாத்மாவினால்
 एष: இந்த
 महाशरः மஹாசரமானது
 अर्थे वै உத்தேசத்தில்
 तयोः அவ்விரண்டு

दैत्ययोः அரக்கர்களாகிய
 कैटभस्य கைடபனென்பவனுடையவும்
 मधुनः च மதுவென்பவனுடைய
 वधार्थे வதைக்காக [வும்
 सृष्टः டடைக்கப்பட்டது.

एक एव प्रजानाति विष्णुस्तेजोमयं शरम् । एषा एव तनुः पूर्वा विष्णोस्तस्य महात्मनः ॥

विष्णुः “விஷ்ணுபகவான்
 एकः एव ஒருவர்மாதிரம்
 तेजोमयं தேஜோமயமாகிய
 शरं சரத்தை
 प्रजानाति உள்ளபடி அறிவார்.

एषा இது
 पूर्वा பூர்வத்தில்
 तस्य அந்த
 महात्मनः பரமாத்மாவாகிய
 विष्णोः விஷ்ணுபகவானது
 तनुः एव சரீரமாயே இருந்தது.

इतो गच्छत पश्यध्वं वध्यमानं महात्मना । रामानुजेन वीरेण लवणं राक्षसोत्तमम् ॥२९॥

इतः “இவ்விடமிருந்து
 गच्छत அவ்விடம் செல்லுக
 कर्.கள்.
 महात्मना மஹாத்மாவும்
 वीरेण வீரருமாகிய

रामानुजेन சத்துருக்கினரால்
 राक्षसोत्तमं ராக்ஷஸத்தலைவனாகிய
 लवणं லவணனை
 वध्यमानं வதைக்கப்படுகிறதை
 पश्यध्वम् நேரில் பாருங்கள்.”

तस्य ते देवदेवस्य निशम्य वचनं सुराः । आजगृम्यत्र युध्येते शत्रुघ्नलवणाबुधौ ॥३०॥

ते அந்த
 सुराः தேவர்கள்
 तस्य அந்த
 देवदेवस्य பிரம்மதேவரது
 वचनं வசனத்தை
 निशम्य கேட்டு,

उभौ இருவர்களாகிய
 शत्रुघ्नलवणौ சத்துருக்கினரும்
 लवणं லவணரும்
 युध्येते சமர்ப்புரிவது
 यत् எவ்விடத்திலோ
 अव्युத்திரு
 आजगृम्यः வந்துசேர்ந்தார்கள்.

तं शरं दिव्यसङ्काशं शत्रुघ्नकरधारितम् । ददृशुः सर्वभूतानि युगान्ताग्निविबोत्थितम् ॥

सर्वभूतानि
शत्रुघ्नकरधारितं
दिव्यसङ्काशं
युगान्ताग्निं
आकाशमावृतं दृष्ट्वा देवैर्हि रघुनन्दनः । सिंहनादं शृशं कृत्वा ददर्श लवणं पुनः ॥३२॥

எல்லா உயிர்களும்
சத்துருக்கினனது
கையிலிருக்கிறதும்
ஜோதிமயமாய் விளங்குகிறதும்
பிரளயகாலர்க்கினியை

इव
उत्थितं
तं शरं
ददृशुः
बुद्ध्वा
शृशं
सिंहनादं कृत्वा
पुनः
लवणं
ददर्श

போலவே
ஜொலித்துக்கொண்
டிருக்கிறதுமான
அந்த சரத்தை
பார் த்தார்கள்.
கவனித்து
உரக்க
ஒரு சிங்கநாதத்தைச்
மீண்டும் [செய்து
லவணனை
விழித்துப்பார்த்தார்.

रघुनन्दनः
देवैः हि
आशं
आवृतं
आहूतश्च पुनस्तेन शत्रुघ्नेन महात्मना । लवणः क्रोधसंयुक्तो युद्धाय समुपस्थितः ॥३३॥

சத்துருக்கினர்
தேவர்களாலேயே
ஆகாசத்தை
இடைவெளியின்றி
நிரம்பியிருக்கிறதாய்

क्रोधसंयुक्तो
युद्धाय च
समुपस्थितः
क्रोधसंयुक्तः
पुनः
युद्धाय च
समुपस्थितः

கோபமதிக்கரித்தவ
மீளவும் [இகி
புத்தத்திற்கே
எதிர்த்துவந்தான்.

तेन महात्मना शत्रुघ्नेन आहूतः लवणः आकर्णात्स विकृष्याथ तदनुर्धन्विनां वरः । तं मुमोच महाबाणं लवणस्य महोरसि ॥

तेन
महात्मना
शत्रुघ्नेन
आहूतः
लवणः
आकर्णात्स विकृष्याथ तदनुर्धन्विनां वरः ।
धन्विनां
वरः
सः
तत्
धनुः
अथ
उरस्तस्य विदीर्याशु प्रविवेश रसातलम्

அந்த
மஹாத்மாவான
சத்துருக்கினரால்
அழைக்கப்பட்ட
லவணன்
விலலாளிகளுக்குள்
சிறந்தவராகிய
அவர்
அந்த
கோதண்டத்தை
அப்பொழுது

तं मुमोच
महाबाणं
लवणस्य
महोरसि
आकर्णात् विकृष्य
तं
महाबाणं
लवणस्य
महोरसि
मुमोच

விழித்துப்பார்த்தார்.
கோபமதிக்கரித்தவ
மீளவும் [இகி
புத்தத்திற்கே
எதிர்த்துவந்தான்.

उरस्तस्य विदीर्याशु प्रविवेश रसातलम् ॥ ३५ ॥

आशु
तस्य
उरः
विदीर्यं
गत्वा रसातलं दिव्यः शरो विबुधपूजितः । पुनरेवागमत्पूर्णमिक्ष्वाकुलनन्दनम् ॥ ३६ ॥

தட்சணமே
அவனது
மார்பை
சேதித்துப்பிளந்து
வீட்டு
நானவர்களால்
புகழப்பெற்றதும்
தெய்வத்தன்மைகொ
சரம் [ண்டதுமான
ரஸாதலத்தை
கிட்டிவீட்டு

रसातलं
प्रविवेश
पुनः एव
पूर्णं
इक्ष्वाकुल-
नन्दनं
आगमत्

காதளவு இழுத்து
அந்த
பஹாபாணத்தை
லவணனது
அகன்ற மார்பில்
விடுத்தார்.
{ (கீழுலகங்களில் நான்
காவது உலகமாகிய)
ரஸாதலத்தில்
புருந்தது.
மீளவும்
சடக்கென
இக்ஷ்வாகுகுலந்தன
ரிடம் (சத்துருக்கின
ரிடம்)
வந்துசேர்ந்தது.

गत्वा रसातलं दिव्यः शरो विबुधपूजितः । पुनरेवागमत्पूर्णमिक्ष्वाकुलनन्दनम् ॥ ३६ ॥

विबुधपूजितः
दिव्यः
शरः
रसातलं
गत्वा

விடு
நானவர்களால்
புகழப்பெற்றதும்
தெய்வத்தன்மைகொ
சரம் [ண்டதுமான
ரஸாதலத்தை
கிட்டிவீட்டு

रसातलं
प्रविवेश
पुनः एव
पूर्णं
इक्ष्वाकुल-
नन्दनं
आगमत्

காதளவு இழுத்து
அந்த
பஹாபாணத்தை
லவணனது
அகன்ற மார்பில்
விடுத்தார்.
{ (கீழுலகங்களில் நான்
காவது உலகமாகிய)
ரஸாதலத்தில்
புருந்தது.
மீளவும்
சடக்கென
இக்ஷ்வாகுகுலந்தன
ரிடம் (சத்துருக்கின
ரிடம்)
வந்துசேர்ந்தது.

गत्वा रसातलं दिव्यः शरो विबुधपूजितः । पुनरेवागमत्पूर्णमिक्ष्वाकुलनन्दनम् ॥ ३६ ॥

विबुधपूजितः
दिव्यः
शरः
रसातलं
गत्वा

விடு
நானவர்களால்
புகழப்பெற்றதும்
தெய்வத்தன்மைகொ
சரம் [ண்டதுமான
ரஸாதலத்தை
கிட்டிவீட்டு

रसातलं
प्रविवेश
पुनः एव
पूर्णं
इक्ष्वाकुल-
नन्दनं
आगमत्

காதளவு இழுத்து
அந்த
பஹாபாணத்தை
லவணனது
அகன்ற மார்பில்
விடுத்தார்.
{ (கீழுலகங்களில் நான்
காவது உலகமாகிய)
ரஸாதலத்தில்
புருந்தது.
மீளவும்
சடக்கென
இக்ஷ்வாகுகுலந்தன
ரிடம் (சத்துருக்கின
ரிடம்)
வந்துசேர்ந்தது.

शत्रुघ्नशरनिर्भिन्नो लवणः स निशाचरः । पपात सहसा भूमौ वज्राहत इवाचलः ॥३७॥

शत्रुघ्नशरनिर्भिन्न. சத்துருக்கினரது
சரத்தால் பிளவுண்ட
ச: அந்த
निशाचा: நிசாசானாகிய
लवण: लவணன்

वज्राहतः வஜ்ராயுதத்தினால்
अचलः इव மலையென [அடியுண்ட
सहसा சடக்கென
भूमौ தரையில்
पपात வீழ்ந்தமாண்டான்.

तच्च शूलं महत्तेन हते लवणराक्षसे । पश्यतां सर्वदेवानां रुद्रस्य वशमन्वगात् ॥ ३८ ॥

तेन அவரால்
लवणराक्षसे लவணசரன்
हते च மரண்டதுமே
तत् அந்த
महत् மஹத்தான
शूलं சூலமானது

सर्वदेवानां தேவர்கள் எல்லோரு
पश्यतां பிரத்தியக்ஷத்தில்
रुद्रस्य சிவபெருமானது
वशं வன்னதிக்கு
अन्वगात् போய்ச்சேர்ந்தது.

एकेषुपातेन भृशं निपात्य लोकत्रयस्यापि रघुपवीरः ।

विनिर्बभावुत्तमचापवाणस्तमः प्रणयेव सहस्ररश्मिः

॥ ३९ ॥

उत्तमचापवाणः உத்தமமான வில்லை
யும் அம்பையுமுடைய
रघुपवीरः ரகுவீரன்
एकेषुपातेन ஒரு பாணத்தைப்பிர
யோகித்ததாலே
भृशं { எதற்கும் மேம்பட்ட
தாயிருக்கும்வண்ண
மாய்

निपात्य கொன்று தள்ளிவிட்டு
लोकत्रयस्य अपि மூவுலகுக்கும்
तमः இருளை
प्रणय्य போக்கிவிடும்
सहस्ररश्मिः इव ஸஹஸ்ரகிரணசூரிய
பகவானென
विनिर्बभौ விளங்கினார்.

ततो हि देवा ऋषिपन्नगाश्च प्रपूजिरे ह्यप्सरसश्च सर्वाः ।

दिष्ट्या जयो दाशरथेरवासो लोकाश्च सर्वे प्रवदन्ति तुष्टाः

॥ ४० ॥

ततः அக்காலத்தில்
देवाः हि தேவர்களும்
ऋषिपन्नगाः च ரிஷிகளும் பன்னகர்
களும்
अप्सरसः च அப்ஸரசுகளுமாகிய
सर्वाः हि எல்லோருமே
प्रपूजिरे { ஒரு நல்லகாரியம்
முடிந்ததென எண்
ணிக்கொண்டார்கள்.

लोकाः உலகத்தவர்கள்
सर्वे च எல்லோருமே
दाशरथे: சத்ருக்களுக்கு
जयः अवाप्तः வெற்றிப் பரப்பதமா
दिष्ट्या பாக்யமென [எனது
तुष्टाः உள்ளங்களித்தவர்
களாய்
प्रवदन्ति ஒருவரோடொருவர்
பேசிக்கொண்டார்கள்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे एकोनसप्ततितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23080

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2356



सप्ततितमः सर्गः—எழுபதாவது ஸர்க்கம். || 70 ||

मधुपुर्यां प्रजापालनम्—மதுபுரியில் அரசாளுவது.

हते तु लवणे देवाः सेन्द्राः साग्निपुरोगमाः । ऊचुः सुमधुरां वाणीं शत्रुघ्नं शत्रुतापनम् ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------------------|------------|---------------------|
| लवणे | லவணை | शत्रुतापनं | சத்ருக்களைக்கதறி |
| हते तु | வதைதுண்டபின்னர் | | அடிக்கும் |
| साग्निपुरोगमाः | அக்னிபகவானைத்தலை மையாயுடையவர்களும் | शत्रुघ्नं | சத்ருக்களைப்பார்க்க |
| सेन्द्राः | இந்திரனோடுருந்தவர் | वाणीं | இந்தமொழியை [து |
| देवाः | தேவர்கள் [களும் | सुमधुरां | மிக்கமதுரமாய் |
| | | ऊचुः | கூறினார்கள்: |

दिष्ट्या ते विजयो वत्स दिष्ट्या लवणराक्षसः । हतः पुरुषशार्दूल वरं वरय सुव्रत ॥ २ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|------------|----------------------|
| सुव्रत | “ஹே புண்யா த்மா ! | लवणराक्षसः | லவணரசர்கள் |
| पुरुषशार्दूल | ஹே புருஷேஷத்தம! | हतः | மாண்டது |
| वः | ஹே வத்ஸ! | दिष्ट्या | எங்கள் பாக்டவிசேஷம். |
| ते | உனக்கு | वरं | வேண்டுமென்கிறவர |
| विजयः | வெற்றி உண்டானது | वरय | கேட்பாயாக, [த்தை |
| दिष्ट्या | தெய்வஸங்கல்பம். | | |

वरदास्तु महाबाहो सर्व एव समागताः । विजयाकाङ्क्षिणस्तुभ्यममोघं दर्शनं हि नः ॥३॥

| | | | |
|----------------|---|----------|-------------------------|
| महाबाहो | “ஹே மஹாபாஹோ! | अमोघं | வீணாய்ப்போகவில்லை |
| तुभ्यं | உனக்கு | हि | என்கிறபடியால் |
| विजयाकांक्षिणः | { வெற்றியைப்பிரார்த்தி த்திக்கொண்டிருந்தோம். | सर्वे एव | நாங்கள் எல்லோரும் |
| नः | எங்களது | तु | இஷ்டவசத்தில் |
| दर्शनं | பிரார்த்தனை | वरदाः | வரமளிக்கிறதாய் |
| | | समागताः | இங்கு வந்திருக்கிறோம்.” |

देवानां भाषितं श्रुत्वा शूरो मूर्ध्नि कृताञ्जलिः । प्रत्युवाच महाबाहुः शत्रुघ्नः प्रयतात्मवान् ॥

| | | | |
|---------------|---|------------|-----------------------------|
| प्रयतात्मवान् | { கொண்ட முயற்சியை கைவிடாது முடிக்க வல்ல | भाषितं | திருவாய்க்குக்கு |
| महाबाहुः | மகாபராக்கிரம | श्रुत्वा | செவிசாய்த்தது |
| शूरः | சூரராகிய | मूर्ध्नि | முடிமீது |
| शत्रुघ्नः | சத்ருக்கினர் | कृताञ्जलिः | கைகூப்பிவைத்துக் கொண்டு |
| देवानां | தேவர்களுடைய | प्रत्युवाच | இப்படிவேண்டிக் கொண்டார்; |

इयं मधुपुरी रम्या मधुरा देवनिर्मिता । निवेशं प्राप्नुयाच्छीघ्रमेव मेऽस्तु वरः परः ॥५॥

மதுரா "மதுரையெனப் பெயர் கொண்டதும்
ரமணீயமாய்
தேவர்களால் நிருமிக்கப்பட்டதுமான
இந்த மதுபுரியானது
இப்போதே

निवेशं ஜனஸஞ்சாரத்தை
प्राप्नुयात् அடையவேண்டும்.
पुषः இந்த
वरः வரமொன்றே
मे எனக்கு
परः ஸர்வமுமாக
अस्तु இருக்கட்டும் "

तं देवाः प्रीतमनसो बाहमित्येव राघवम् । भविष्यति पुरी रम्या शूरसेना न संशयः ॥

தேவர்கள்
மனஸந்தவ்ஷிக்கொண்ட
அந்த [டவர்களாகி
ராகவரை (சத்ருக்கி
னரைப் பார்த்து
"அப்படியே ஆகும்.
புரியானது

शूरसेना சூரசேனா வீரர்களால்
நிறையப்பெற்று
रम्या மனோஹரமாயும்
भविष्यति ஆகும்.
न संशयः இதற்கையமில்லை
इति என்றார்கள்.

ते तथोक्त्वा महात्मानो दिवमारुहस्तदा । शत्रुघ्नोऽपि महातेजास्तां सेनां समुपानयत् ॥

அப்பொழுது
அந்த
மஹாத்மாக்கள்
அவ்வண்ணம்
சொல்லிவிட்டு,
விண்ணுலகத்திற்கு

आरुहः போய்ச்சேர்ந்தார்கள்.
महातेजा: மஹாதேஜஸ்வியான
शत्रुघ्नः अपि சத்ருக்களும்
तां सेनां அந்தச் சேனையை
समुपानयत् வந்துசேர நியமித்த
தருளினார்.

सा सेना शीघ्रमागच्छच्छ्रुत्वा शत्रुघ्नशासनम् । निवेशनं च शत्रुघ्नः श्रावणेन समारभत् ॥

அந்த
சேனை
சத்ருக்களானது ஆக்கி
னையை
சிரமேற்கொண்டு
உடனே

भागच्छत् வந்துசேர்ந்தது.
शत्रुघ्नः சத்ருக்களர்
श्रावणेन சிராவணமாஸத்தில்
निवेशनं च நகரப்பிரவேசத்தை
समारभत् செய்தருளினார்.

सा पुरा दिव्यसङ्काशा वर्षे द्वादशमे शुभे । निविष्टा शूरसेनानां विषयश्चाकुतोभयः ॥

பூர்வம்
பன்னிரண்டு
ஆண்டுகளுக்கு
முன்னர்
பாக்கியவிஷயத்தில்
தெய்வத்தன்மைக்கு
ஸமானமான

सा அது
शूरसेनानां சூரசேனர்களுக்கு
निविष्टा வாஸஸ்தானமான
विषयः च தேசமெல்லாமும்
अकुतोभयः { எப்படிப்பட்ட பயத்திற்கும் நிவாரணமாய் விளங்கிற்று.

क्षेत्राणि सस्ययुक्तानि काले वर्षति वासवः । अरोगवीरपुरुषा शत्रुघ्नभुजपालिता ॥१०॥
अर्धचन्द्रप्रतीकाशा यमुनातीरशोभिता । शोभिता गृहमुख्यैश्च चत्वरापणवीथिकैः ॥

चातुर्वर्ण्यसमायुक्ता नानावाणिज्यशोभिता

॥ ११ ॥

| | |
|---------------------|--|
| क्षेत्राणि | நிலங்கள் |
| सस्ययुक्तानि | தானியப் பெருக்குற்ற தாயின. |
| वासवः | வாஸவன் |
| काले | காலம் தவறாது |
| वर्षति | மழைபொழியச் செய்தான். |
| शत्रुघ्नभुजपालिता | சத்ருக்ஷணால் காப்பா ற்றப்பட்ட நகரம் |
| अरोगवीरपुरुषा | அரோகவீரபுருஷர் களையுடையதாய் |
| अर्धचन्द्रप्रतीकाशा | அர். த். ச. த். திரா. கராமா ய் அமைக்கப்பட்ட |

| | |
|-----------------------|---------------------------------------|
| यमुनातीर-} | யமுனாதிர். த்தில் அழ |
| शोभिता } | குவாய்ந்து விளங்கு கிறதாய் |
| गृहमुख्यैः | பெரும் மாளிகை களாலும் |
| चत्वरापण-} | வீதிகள் சந்திக்குமிட |
| वीथिकैः च } | ங்களாலும் |
| शोभिता | அழகுற்றதாய் |
| चातुर्वर्ण्यसमायुक्ता | வார்ணசாமநிலை தவறாததாய் |
| नानावाणिज्य-} | பற்பல விலைப்பண்டங் |
| शोभिता } | களாலும் அழகுவா ய்ந்து விளங்கிற்று. |

यच्च तेन पुरा शुभ्रं लवणेन कृतं महत् । तच्छोभयति शत्रुघ्नो नानावर्णोपशोभितम् ॥

| | |
|--------|-------------------|
| पुरा | பூர்வம் |
| तेन | அந்த |
| लवणेन | லவணனால் |
| यत् | எது |
| कृतं च | பாழாய்க் கிடந்ததோ |
| तत् | அதை |

| | |
|------------------|-------------------------------------|
| शत्रुघ्नः | சத்ருக்ஷர் |
| महत् शुभ्रं | அதிக் சுப்ரமாயும் |
| नानावर्णोपशोभितं | எல்லாவிதத்திலுமழ குவாய்ந்ததாயும் |
| शोभयति | அமைத்துவைக்கலா ரை. |

आरामैश्च विहारैश्च शोभमानां समन्ततः । शोभितां शोभनीयैश्च तथान्यैर्देवमानुषैः ॥१३॥
तां पुरीं दिव्यसङ्काशां नानावर्ण्योपशोभिताम् । नानादेशागतैश्चापि वणिग्विरुपशोभिताम् ॥
तां समृद्धां समृद्धार्थः शत्रुघ्नो भरतानुजः । निरीक्ष्य परमप्रीतः परं हर्षमुपागमत् ॥१५॥

| | |
|---------------|---------------------------------|
| परमप्रीतः | அத்யந்த ஆஸக்தி யுடன் |
| समृद्धार्थः | செழுமையைக்கோரிக் கொண்டிருந்த |
| भरतानुजः | பரதானுஜரான |
| शत्रुघ्नः | சத்ருக்ஷர் |
| तां | அந்த |
| पुरीं | புரியை |
| तां | அந்த |
| दिव्य-ङ्काशां | தெய்வத்தன்மை போன்றதான |

| | |
|---------------|---------------------------------------|
| समृद्धां | செழுமையாகிய |
| नानावर्ण्यो-} | பல விலைப்பண்டங்க |
| शोभितां अपि } | ளால் அழகுவாய்ந்து விளங்குகிறதாயும் |
| समन्ततः | எங்கும் |
| आरामैः च | சோலைகளாலும் |
| विहारैः च | உத்தியானவனங்க ளாலும் |
| शोभनानां | அழகாய் விளங்குகிற தாயும் |

| | | | |
|--------------|--|--------------|--------------------|
| तथा | அவ்வண்ணமே | नानादेशागतैः | பலதேசங்களிலிருந்து |
| अन्यैः | மற்ற | | வந்து குடியேறிய |
| शोभनीयैः | புண்பாத்தமாக்களாய் | वणिग्भिः च | வியாபாரிகளாலும் |
| देवमानुषैः च | { போற்றிக்கொண்டா டத்தக்க மானிடர் களாலும் | उपशोभितां | மனோஹரமாயிருக்கிற |
| | | निरीक्ष्य | கண்டு [தராயும் |
| | | परं | பரம |
| शोभितां | அழகாயிருக்கிறதாயும் | हर्षं | ஆனந்தத்தை |
| | | उषागामत् | அடைந்தார். |

तस्य बुद्धिः समुत्पन्ना निवेश्य मधुरां पुरीम् । रामपादौ निरीक्षेऽहं वर्षे द्वादश आगते ॥

| | | | |
|---------|------------|------------|------------------|
| मधुरां | மதுர | रामपादौ | ராமராமர திருவடி |
| पुरीं | நகரை | | களை |
| निवेश्य | ஸ்தாபித்து | निरीक्षे | இப்போதே தரிசிக்க |
| द्वादशे | பன்னிரண்டு | | வேண்டுமென்கிற |
| वर्षे | ஆண்டுகள் | बुद्धिः | எண்ணம் |
| आगते | கழியவும் | तस्य | அவருக்கு |
| अहं | ‘நான் | समुत्पन्ना | உண்டாயிற்று. |

इत्याषं श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे सप्ततितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23096

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2372



एकसप्ततितमः सर्गः—எழுபத்தேராவது ஸர்க்கம். ॥ 97 ॥

वाल्मीकिना शबुध्नप्रशंसनम्—வால்மீகிமுனிவர் சத்ருக்கினரை புகழ்வது.

ततो द्वादशमे वर्षे शत्रुघ्नो रामपालिताम् । अयोध्यां चकमे गन्तुमल्पभृत्यबलानुगः ॥१॥

| | | | |
|------------|----------------------------------|-----------|----------------------|
| द्वादशमे | பன்னிரண்டாவது | अयोध्यां | அயோத்திக்கு |
| वर्षे | வதஸரத்திலே | अहरभृत्य- | ஸ்வல்பம் பிருத்தியாக |
| शबुध्नः | சத்ருக்கினர் | बलानुगः | ளையும், சேனையையும் |
| ततः | அங்கிருந்து | | கூட்டிக்கொண்டு |
| रामपालितां | ஸ்ரீராமரால் பரிபா லிக்கப்பட்ட | गन्तुं | போக |
| | | चकमे | யத்தனப்பட்டார். |

ततो मन्त्रिपुरोगांश्च बलमुख्यान्निवर्त्य च । जगाम हयमुख्यैश्च रथानां च शतेन सः ॥२॥

| | | | |
|-------------------|-----------------------------|-------------|---------------------------------|
| सः | அவர் | निवर्त्य | நிறுத்திவிட்டு |
| मन्त्रिपुरोगान् च | மந்திரிப்பிரதானிகளை யும் | हयमुख्यैः च | குதிரைகளில் சிறந்த வைகளோடும் |
| बलमुख्यान् च | சேனைத்தலைவர்களை யும் | रथानां | ரதங்களில் |
| ततः | அவ்விடத்திலேயே | शतेन च | நூறேறும் |
| | | जगाम | பிரயாணமாற்றார். |

स गत्वा गणितान्वासान्सप्ताष्टौ रघुनन्दनः । वाल्मीक्याश्रममागत्य वासं चक्रे महायशाः ॥

ச: அந்த
 महायशाः மஹாயசஸ்வியான
 रघुनन्दनः சத்ருக்கினர்
 गणितान् உத்தேசித்திருந்த
 वண்ணமே
 सप्ताष्टौ ஏழுட்டம்

वासान् இடங்களில்
 ग:वा தங்கவிட்டு
 वाल्मीक्याश्रमं வால்மீகிமுனிவரின்
 आगत्य ஆசிரமத்திற்கு
 वासं चक्रे வந்துசேர்ந்து
 ஒரு இரவு தங்கினார்.

सोऽभिवाद्य ततः पादौ वाल्मीकेः पुरुषर्षभः । पाद्यमर्घ्यं तथाऽऽतिथ्यं जग्राह मुनिहस्ततः ॥

ச: புஷ்பம்: அந்த புருஷோத்தமர்
 ततः அப்பொழுது
 वाल्मीकेः வால்மீகிமுனிவரது
 पादौ திருவடிகளில்
 अभिवाद्य விழுந்து தண்டன்
 षमर्षभत्तु ஸமர்ஷ்பித்து

मुनिहस्ततः முனிவர் கையினின்றும்
 पाद्यं பாத்தியத்தையும்
 अर्घ्यं அர்க்கியத்தையும்
 आतिथ्यं तथा அதிதிபூஜையையும்
 जग्राह பெற்றுக்கொண்டார்.

बहुरूपाः सुमधुराः कथास्तत्र सहस्रशः । कथयामास स मुनिः शत्रुघ्नाय महात्मने ॥ ५ ॥

ச: அந்த
 मुनिः முனிவர்
 महात्मने மஹாத்மாவாகிய
 शत्रुघ्नाय சத்ருக்கினருக்கு
 सहस्रशः அனேக

सुमधुराः இனிய
 बहुरूपाः பலவிஷயங்களைப்
 कथाः கதைகளை [பற்றிய
 तत्र அப்பொழுது
 कथयामास சொன்னார்.

उवाच च मुनिर्वाक्यं लवणस्य वधाश्रितम् । सुदुष्करं कृतं कर्म लवणं निन्नता स्वया ॥

मुनिः முனிவர்
 लवणस्य லவணனுடைய
 वधाश्रितं வதையைப்பற்றிய
 தான
 वाक्यं च இந்த வாக்கியத்தை
 उवाच சொன்னார் : [யும்
 लवणं “லவணனுக்கு

निन्नता மரணமேற்படுத்திய
 स्वया உன்னால்
 सुदुष्करं எவராலும் செய்து
 முடித்தற்கரிய
 कर्म பெரியகாரியமானது
 कृतम् செய்துமுடிக்கப்
 பட்டது.

बहवः पार्थिवाः सौम्य हताः सबलवाहनाः । लवणेन महाबाहो युध्यमाना दुरात्मना ॥

सौम्य “ஹே செளமய!
 महाबाहो ஹே மஹாபாகோ!
 दुरात्मना துராத்தமவான
 लवणेन லவணனுடனே
 युध्यमानाः போர்செய்த

बहवः பல
 पार्थिवाः மன்னர்கள்
 सबलवाहनाः சேனைகளோடும்
 वाहणेन வாஹனங்களோடும்
 हताः மடிந்தார்கள்.

स त्वया निहतः पापो लीलया पुरुषर्षभ । जगतश्च भयं तत्र प्रशान्तं तव तेजसा ॥ ८ ॥

புருஷர்ஷம் "ஹே புருஷோத்தம!
 தவ உனது
 தேஜஸினால்
 த்வயா உன்னால்
 லீலயா விளையாட்டாய்
 ச: அந்த

पापः पापि
 निहतः கொல்லப்பட்டான்.
 तत्र அதிலிருந்தே
 जगतः च உலகுக்கே
 भयं பயம்
 प्रशान्तम् ஒழிந்தது.

रावणस्य वधो घोरो यत्नेन महता कृतः । इदं तु सुमहत्कर्म त्वया कृतमयन्नतः ॥ ९ ॥

ராவணச्य "ராவணனுடைய
 घोरः பார்க்கப் பயங்கரமாயி
 रुन्त
 वधः வதையானது
 महता பெரு
 यत्नेन முயற்சிகொண்டு
 कृतः செய்யப்பட்டது.

सुमहत् मஹா பெரிய
 कर्म காரியமாகும்
 इदं तु இதுவொவென்றால்
 त्वया உன்னால்
 अयन्नतः அலக்ஷயமாய்
 कृतम् செய்துமுடிக்கப்பட்ட
 டது.

प्रीतिश्चास्मिन्परा जाता देवानां लवणे हते । भूतानां चैव सर्वेषां जगतश्च प्रियं कृतम् ॥

अस्मिन् "அந்த
 लवणे लவணன்
 हते கொல்லப்பட்டதில்
 सर्वेषां ஸகல
 भूतानां च एव பூதங்களுக்கும்
 जगतः च உலகுக்கும்

प्रियं कृतं நன்மை விளைந்தது.
 च என்கிறதினால்
 देवानां தேவர்களுக்கு
 परा பரம்
 प्रीतिः திருப்தி
 जाता ஏற்பட்டது.

तच्च युद्धं मया दृष्टं यथावत्पुरुषर्षभ । समायां वासवस्याथ उपविष्टेन राघव ॥ ११ ॥

पुरुषर्षभ "ஹே புருஷோத்தம!
 राघव ஹே சத்ருக்கள்!
 तत् அந்த
 युद्धं யுத்தம்
 यथावत् च முற்றிலும்
 अथ அப்பொழுது

वासवस्य இந்திரனது
 समायां ஸபையில்
 उपविष्टेन தங்கியிருந்த
 मया என்னால்
 दृष्टम् ஞான திருஷ்டியால்
 அறியப்பட்டது.

ममापि परमा प्रीतिर्हृदि शशुन्न वर्तते । उपाग्रास्यामि ते मूर्ध्नि स्नेहस्यैषा परा गतिः ॥

शशुन्न "ஹே சத்ருக்கள்!
 मम अपि எனக்கும்
 हृदि உள்ளத்தில்
 परमा பரம்
 प्रीतिः திருப்தி
 वर्तते உண்டாயிருக்கிறது.
 ते உனது

मूर्ध्नि உச்சியில்
 उपाग्रास्यामि முகருகின்றேன்.
 स्नेहस्य சினேகத்திற்கு
 एषा இது ஒன்றுதான்
 परा ஸர்வோக்கிருஷ்ட
 गतिः மாகிய
 கைம்மாறு."

इत्युत्त्वा मूर्ध्नि शत्रुघ्नमुपाध्याय महासुनिः । आतिथ्यमकरोत्तस्य ये च तस्य पदानुगाः ॥

| | | | |
|-----------|---------------|----------|------------------|
| महासुनिः | மஹரிஷி | तस्य | அவருக்கும் |
| शत्रुघ्नं | சத்ருக்னரிடம் | तस्य | அவரது |
| इति | இவ்வண்ணம் | पदानुगाः | பரீஜனங்கள் |
| उक्तवा | கூறிவிட்டு | ये च | எவர்களோ அவர்களு |
| मूर्ध्नि | உச்சி | आतिथ्यं | அதிகபூஜையைக்கும் |
| उपाध्याय | மோந்து | अकरोत् | செய்தருளினார். |

स भुक्तवान्नश्रेष्ठो गीतमाधुर्यमुत्तमम् । शुश्राव रामचरितं तस्मिन्काले यथाक्रमम् ॥१४॥
तन्त्रीलयसमायुक्तं त्रिस्थानकरणान्वितम् । संस्कृतं लक्षणोपेतं समतालसमन्वितम् ॥

| | | | |
|-------------------------|--|---|--------------------------------|
| तस्मिन् काले | அந்தக் காலத்தில் | समताल- | } தாளத்திற்கேற்றபடி |
| सः | அந்த | समन्वितं | |
| नरश्रेष्ठः | புருஷோத்தமர் | संस्कृतं | ஸம்ஸ்கிருதபாஷை யில் |
| भुक्तवान् | போஜனமானபிறகு | लक्षणोपेतं | ஒரு லக்ஷணம் அமை யப்பெற்றதாயும் |
| यथाक्रमं | { எப்படிப்பட்ட குறைக் கும் இடங்கொடாத தாய் | उत्तमं | ஒப்படியர்வில்லாத |
| तन्त्रीलय- समायुक्तं | | } வீணையின் லயத்துடன் வாசிக்கப்படுகிற தாயும் | रामचरितं |
| विस्थान- करणान्वितं | } பாட்டில் 'தரீஸ்தான' மென்கிற ஸ்வரபேதங்களில் நிபுணத்வம் பெற்று விளங்குகிற தாயும் | | गीतमाधुर्यं |
| | | | शुश्राव |

तान्यक्षराणि सत्यानि यथावृत्तानि पूर्वशः । श्रुत्वा पुरुषशार्दूलो विसंज्ञो बाष्पलोचनः ॥

| | | | |
|---------------|-------------------------------------|------------|-------------------------------|
| पुरुषशार्दूलः | புருஷோத்தமர் | तानि | அந்த |
| पूर्वशः | முன்னடந்த | अक्षराणि | சுவீரகங்களை |
| यथावृत्तानि | விஷயங்களின் விபரங்களை | श्रुत्वा | கேட்டு |
| सत्यानि | உள்ளபடி விளங்கும் வண்ணமாயிருக்கின்ற | विसंज्ञः | மெய்யறந்தவராய் |
| | | बाष्पलोचनः | ஆனந்தபாஷ்பம் பெருக்கலுற்றார். |

स सुहूर्तमिवासंज्ञो विनिश्चस्य सुहृसुहृदुः । तस्मिन्गीते यथावृत्तं वर्तमानमिवाभृणोत् ॥१५॥

| | | | |
|----------------|---------------------------------------|-------------|--|
| तस्मिन् गीते | அந்த பாடல் ஓய்ந்த வள பலதரம் [வில் | असंज्ञः | மயக்கந்தெளிந்தவராகி |
| सुहृः सुहृदुः | பெருமூச்செறிந்து ஒரு முகூர் த்தத்திலே | यथावृत्तं | முன்னடந்ததை |
| विनिश्चस्य | அவர் | वर्तमानं इव | { இப்பொழுது நடை பெறுகிறதுபோலிருக்கிறதாய் |
| सुहूर्तं इव सः | | अभृणोत् | |

पदानुगाथ ये राज्ञस्तां श्रुत्वा गीतिसम्पदम् । अवाञ्छुः खाथ दीनाथ आश्चर्यमिति चाब्रुवन् ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------------|------------|---|
| राज्ञः | மன்னரது | गीतिः | அற்புதமான பாட்டு |
| पदानुगाः | பரிஜனங்கள் | श्रुत्वा | கேட்டு [டை |
| ये च | எவர்களோ அவர்கள் | आश्चर्यं च | } இது ஒரு அமரனுஷ மான சம்பவமாயே இருக்கிறது |
| अवाङ्मुखाः च | தலைகுனிந்தவண்ண மே | इति | |
| दीनाः | மெச்சி அனுபவிக்க கின்றவர்களாகவே | अब्रुवन् | ஒருவரோடொருவர் பேசிக்கொண்டார்கள். |
| तां | அந்த | | |

परस्परं च ये तत्र सैनिकाः सम्बभाषिरे । किमिदं क्व च वर्तामः किमेतत्स्वमदर्शनम् ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------------|------------|----------------------------|
| तत्र | அப்பொழுது | इदं किं | “இது என்ன ? |
| सैनिकाः | ஸேனிகள் | क्व च | எங்கே |
| ये च | எவர்களோ அவர்கள் | वर्तामः | நாமிருக்கின்றோம் ? |
| परस्परं | ஒருவர்க்கொருவர் | एतत् | இது |
| संबभाषिरे | இங்கனம் பேசிக்கொ ண்டார்கள் : | स्वमदर्शनं | தூக்கத்திற் கனவா என்ன ? |
| | | किम् | |

अर्थो यो नः पुरा दृष्टस्तमाश्रमपदे पुनः । शृणुमः किमिदं स्वप्नो गीतबद्धमनुत्तमम् ॥

| | | | |
|----------|--------------------|--------------|----------------------------------|
| अर्थः | “விஷயம் | अनुत्तमं | ஒப்புயர்வில்லாதபடி |
| यः | ஒவ்வொன்றும் | गीतबद्धं | பாட்டாய்ப் புனைக்கப் பட்டதாய் |
| पुरा | முன் | शृणुमः | நாம் இப்பொழுது கேட்கின்றோம். |
| नः | நமக்கு | इदं | இது |
| दृष्टः | கட்புலனாயிருந்தது. | स्वप्नः किम् | ஸ்வப்னமா என்ன ?” |
| आश्रमपदे | ஆசிராமத்தில் | | |
| तं | அதை | | |
| पुनः | மீளவும் | | |

विस्मयं ते परं गत्वा शत्रुप्रमिदमब्रुवन् । साधु पृच्छ नरश्रेष्ठ वाल्मीकिं मुनिपुङ्गवम् ॥२१॥

| | | | |
|---------|-------------------------------------|--------------|---|
| ते | அவர்கள் | अब्रुवन् | விண்ணப்பம் செய்து கொண்டார்கள்: |
| परं | அதிகப்பட்ட | नरश्रेष्ठ | “ஹே புருஷோத்தம! ஹே புண்யாத்மா! வால்மீகி முனிபுங்கவரை |
| विस्मयं | விஷயத்தின் உண்மை தெரியாதநிலைமையை | साधु | } இது விஷயத்தில் பிரசி னைசெய்யத் திருவுள் ளம் கொள்ளவேண் டும்.” |
| गत्वा | அடைந்து | वाल्मीकिं | |
| शत्रुं | சத்ருக்களிடம் | मुनिपुङ्गवम् | |
| इदं | இங்கனம் | पृच्छ | |

शत्रुघ्नस्त्वब्रवीत्सर्वान्कौतूहलसमन्वितान् । सैनिका न क्षमोऽस्माकं परिप्रष्टुमिहेदृशः ॥२२॥

शत्रुघ्नः सத்ருக்கனார்
 तु இதுவிஷயத்தில்
 कौतूहलसमन्वितान् உண்மையை அறிய
 விரும்பிய
 सर्वान् எல்லாரையும்பார்த்து
 अब्रवीत् இப்படிப் பதினூரைத்
 தார்:

सैनिका: "ஸைனிகர்களார்!
 इह இப்பொழுது
 ईदृशः இப்படிப்பட்ட
 தானது
 परिप्रष्टुं கேட்டறிவதற்கு
 अस्माकं நமக்கு
 न क्षमः தகாது.

आश्रयाणि बहूनीह भवन्त्यस्याश्रमे मुनेः । न तु कौतूहलाच्युक्तमन्वेष्टुं तं महासुनिम् ॥

इह "இவ்வுலகில்
 अस्य இந்த
 मुनेः முனிவரது
 आश्रमे ஆசிரமத்தில்
 आश्रयाणि கேட்கக்கூடாத ரஹ
 ஸ்யங்கள்
 बहूनि भवन्ति அனேகம் உண்டு.

कौतूहलाच्यु { நிமித்தமில்லாத விஷ
 यन्कलैः अरिपयवेண்
 ङुमेऽन्किर अवावि
 ञ्णौ
 तु இதுவிஷயமாய்
 तं महासुनि अந்த மஹரிஷியை
 अन्वेष्टुं கேட்டறிவதற்கு
 न युक्तम् இடமில்லை."

एवं तद्वाक्यमुत्त्वा च सैनिकान्प्रपुनन्दनः । अभिवाद्य महर्षिं तं स्वं निवेशं ययौ तदा ॥

रघुनन्दनः ரகுநந்தனார் (சத்ருக்
 तत् அப்பொழுது [னர்)
 सैनिकान् ஸேனைகளுக்கு
 एवं இப்படி
 वाक्यं தர்மநெறியை
 उत्त्वा च புகன்றுவிட்டு

तं महर्षिं அந்த மஹரிஷியை
 अभिवाद्य நமஸ்கரித்துவிட்டு
 तदा அதன்மேல்
 स्वं தனது
 निवेशं ययौ விடுத்திக்கு எழுந்தரு
 ளினார்.

इत्यर्थे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे एकसप्ततितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23120



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2396

द्विसप्ततितमः सर्गः—எழுபத்திரண்டாவது ஸர்க்கம். ॥ 32 ॥

श्रीरामशत्रुघ्नसमागमः—ஸ்ரீராமரும் சத்ருக்கினரும் ஸந்திப்பது.

तं शयानं नरव्याघ्रं निद्रा नाभ्यागमत्तदा । चिन्तयन्तमनेकार्थं रामगीतमनुत्तमम् ॥ १ ॥

शयानं சயனித்துக்கொண்ட
 ருந்தவரும்
 अनुत्तमं ஒப்புயர்வில்லாத
 रामगीतं ஸ்ரீராமகீதத்தை
 अनेकार्थं பலவிஷயங்கள் அடங்
 கியதாய்

चिन्तयन्तं சிந்தனை செய்துகொ
 ண்டிருந்தவருமான
 तं அந்த
 नरव्याघ्रं புருஷோத்தமருக்கு
 तदा அதனால்
 निद्रा न अभ्यागम् நித்திரை வரவில்லை.

तस्य शब्दं सुमधुरं तन्त्रीलयसमन्वितम् । श्रुत्वा रात्रिर्जिगामाशु शत्रुघ्नस्य महात्मनः ॥२॥

तन्त्रीलयसमन्वितं வீணையின் லயத்துட
னிசைந்து
சுமதுர் அதிமனோஹரமாயி
शब्दं கானத்திற்கு [நுந்த
श्रुत्वा செவ்சாய்த்து
तस्य அந்த

महात्मनः மஹாத்மாவான
शत्रुघ्नस्य சத்ருக்கனருக்கு
रात्रिः அர்த்தராத்திரி
भाशु பொழுது தெரியாத
வண்ணம்
जगान கழிந்தது.

तस्यां निशायां व्युष्टायां कृत्वा पौर्वाह्निकक्रमम् ।

उवाच प्राञ्जलिर्वाक्यं शत्रुघ्नो मुनिपुङ्गवम्

॥ ३ ॥

तस्यां அந்த
निशायां இரவுகழிந்து
व्युष्टायां ஞாயோதயமானதும்
शत्रुघ्नः சத்ருக்கினர்
पौर्वाह्निकक्रमं பிராதக்காலநியமத்தை
कृत्वा செய்துமுடித்துவிட்டு

मुनिपुङ्गवं மஹரிஷியைப்
பார்த்து
प्राञ्जलिः அஞ்சலிஹஸ்தராசி
वाक्यं இந்தமொழியை
उवाच சொன்னார்.

भगवन्द्रष्टुमिच्छामि राघवं रघुनन्दनम् । त्वयाऽनुज्ञातुमिच्छामि सहैभिः संशितव्रतैः ॥४॥

भगवन् “ஹே பகவன்!
रघुनन्दनं ரகுநந்தனராகிய
राघवं ஸ்ரீராகவரை
द्रष्टुं தரிசிக்க
इच्छामि விரும்புகின்றேன்.

त्वया தேவரீராலும்
संशितव्रतैः புண்பாத்தமாக்களான
एभिः सह தோழர்களாலும்
अनुज्ञातुं உத்திரவுகொடுக்க
इच्छामि வேண்டுகிறேன்”

इत्येवं वादिनं तं तु शत्रुघ्नं शत्रुतापनम् । वाल्मीकिः सम्परिवृज्य विससर्ज च राघवम् ॥

वाल्मीकिः வாலமீகிமுனிவர்
इति एवं இவ்வண்ணமாய்
वादिनं கேட்ட
तं அந்த
शत्रुतापनं च சத்ருக்களைத்தவிக்கச்
செய்பவரும்

राघवं तु ரகுப்பிள்ளையுமாகிய
शत्रुघ्नं சத்ருக்கனரை
संपरिवृज्य இறுக்கப்பட்டியனைத்து
ஆலிங்கனம்செய்து
विससर्ज போகவிடை தந்தருளி
னார்.

सोऽभिवाद्य मुनिश्रेष्ठं रथमारुह्य सुप्रभम् । अयोध्यामगमत्पूर्णे राघवोऽसुकदर्शनः ॥ ६ ॥

सः அவர்
मुनिश्रेष्ठं மஹரிஷியை
अभिवाद्य வணங்கி நமஸ்கரித்து
விட்டு
सुप्रभं சோதிமயமாகத்துலங்
குகின்ற
रथं ரதத்தில்

आरुह्य ஏறி
राघवोऽसुकदर्शनः { ராகவரை தரிசிப்ப
தையே சிந்திக்கின்ற
வராய்
तूष्णं அதிசிக்கிரமே
अयोध्यां अयोध्याத்தியாபுரிக்கு
अगमत् வந்துசேர்ந்தார்.

स प्रविष्टः पुरीं रम्यां श्रीमानिक्ष्वाकुनन्दनः । प्रविवेश महाबाहुर्व्यत्र रामो महाद्युतिः ॥

ச: அவர்
 ரம्या அழகுபெற்று விளங்க
 புரீ நகரில் [கும்
 ப்விஷ: புகுந்தார்.
 ஶ்ரீமான் சீமரனும்
 ஷ்வாகுந்ந: இக்ஷ்வாகுப்பிள்ளை யும்

महाबाहुः மஹாபாகுயும்
 महाद्युतिः மஹாபிரபாவசாலியு
 மாந
 राम: ஸ்ரீராமர்
 यव எங்கிருந்தனரோ
 அவ்விடத்திற்கு
 प्रविवेश போய்ச்சேர்ந்தார்.

सोऽभिवाद्य महात्मानं ज्वलन्तमिव तेजसा । उवाच प्राञ्जलिर्वाक्यं रामं सत्यपराक्रमम् ॥

ச: அவர்
 तेजसा தேஜஸால்
 ज्वलन्त इव சோக்தமயமாக விளங்க
 குகிறவரும்
 महात्मानं மஹாத்மாவும்
 सत्यपराक्रमं வீணாகாத பரக்கீரம
 சாலியுமான

रामं ஸ்ரீராமருக்கு
 प्राञ्जलिः அஞ்சலிஹஸ்தராகி
 अभिवाद्य சேவித்து
 वाक्यं இந்த மொழியை
 उवाच சொன்னார்:

यथाऽऽज्ञप्तं महाराज सर्वे तत्कृतवानहम् । हतः स लवणः पापः पुरी चास्य निवेशिता ॥

महाराज “மஹாராஜரே!
 अहं நான்
 तत् அந்த
 आज्ञप्तं நியமனம்
 सर्वं எல்லாவற்றையும்
 यथा நியமித்தவாறே
 कृतवान् செய்துமுடித்தேன்

स: पापः அந்த பாபியாகிய
 लवणः லவணன்
 हतः கொல்லப்பட்டான்.
 भस्य இவனது
 पुरी च நகரமும்
 निवेशिता நூதனமாக நிருமாணி
 க்கப்பட்டிருக்கிறது.

द्वादशैते गता वर्षास्त्वां विना रघुनन्दन । नोत्सहेयमहं वस्तुं त्वया विरहितो नृप ॥१०॥

रघुनन्दन “ஹே ரகுநந்தன!
 त्वां विना தேவரீரை விட்டுப்
 பிரிந்து
 एते द्वादश இந்தப் பன்னிரண்டு
 वर्षाः ஆண்டுகள்
 गताः போய்விட்டன.
 नृप ஹே லோகநாத!

अहं நான்
 त्वया தேவரீரால்
 विरहितः தனித்துபிரித்துவைக்க
 கப்பட்டவனாய்
 वस्तुं வளிக்க
 न उःसहेयम् விரும்பேன்.

स मे प्रसादं काकुत्स्थ कुरुष्वापितविक्रम । मातृहीनो यथा वत्सो न चिरं प्रवसाभ्यहम् ॥

मातृहीनः “தாயை விட்டுப்
 பிரிந்த
 वत्सः கன்று
 यथा போலிருக்கும்
 स: அந்த
 अहं நான்
 चिरं வெகுகாலம்

न प्र वामि தனித்துவேறு காட்டி
 ல் வாஸஞ்செய்யேன்;
 असितविक्रम எதையும செய்து
 முடிக்கவல்லவராகிய
 काकुत्स्थ काकुत्स्थ காகுத்தரே!
 मे எனக்கு
 प्रसादं பேருதவியை
 कुरुव न्ரியமித்தருள்க. ”

एवं ब्रुवाणं शत्रुघ्नं परिष्वज्येदमब्रवीत् । मा विषादं कृथाः शूर नैतत्क्षत्रियचेष्टितम् ॥१२॥

एवं इங்ஙனம்
 ब्रुवाणं உரைசெய்த
 शत्रुघ्नं சத்ருக்கிணரை
 परिष्वज्य அணைத்து ஆஸிங்க
 हर्दं இப்படி [னம் செய்து
 अब्रवीत् நியமித்தருளினார் :

शूर "ஹே சூர்!
 विषादं வியாகுலத்திற்கு
 मा कृथाः இடங்கொடாதே.
 एतत् இது
 क्षत्रियचेष्टितं கூத்திரியனது நடவ
 न ஆகாது. [டிக்கை

नावसीदन्ति राजानो विभवासेषु राघव । प्रजा नः परिपालया हि क्षत्रधर्मेण राघव ॥

राघव "ஹே சத்ருக்கின!
 राजानः வேந்தர்கள்
 विभवासेषु { தம்மவரைவிட்டு இதர
 தேசங்களில் வஸித்
 திருக்கவேண்டிய
 காரியங்களில்
 न अवसीदन्ति விசனமுறமாட்டார்
 कर्.

राघव ஹே சத்ருக்கின!
 नः நடமு
 क्षत्रधर्मेण கூத்திரியதர்மத்தை
 மேற்கொண்டு
 प्रजा: பிரஜைகள்
 परिपालयाः हि பரிபாலிக்கப்படவே
 ण्. ण்டியவர்களல்லவா

काले काले तु मां वीर ह्ययोध्यामवलोकितुम् । आगच्छ त्वं नरश्रेष्ठ गन्तासि च पुरं तव ॥

नरश्रेष्ठ "ஹே புருஷோத்தம!
 वीर ஹே வீர்!
 तव உனது
 पुरं நகருக்கு
 गन्तासि हि நீ திரும்பிப்போக
 வேண்டும்.

तु ஆளுனும்
 काले काले அப்போதைக்கப்போ
 मां என்னை [து
 अवलोकितुं பார்க்க
 अयोध्यां च அயோத்தியாபுரிக்கும்
 एवं आगच्छ நீ வரலாம்.

ममापि त्वं सुदयितः प्राणैरपि न संशयः । अवश्यं करणीयं च राज्यस्य परिपालनम् ॥

त्वं च "நீயும்
 मम எனக்கு
 प्राणैः अपि ப்ராணனிலும்
 सुदयितः அதிகப் பிரியமான
 वन्.
 न संशयः இது நக்கையமில்லை.

अपि இருந்தாலும்
 राज्यस्य ராஜ்யத்தினது
 परिपालनं பரிபாலனம்
 अवश्यं அவசியமாய்
 करणीयम् செய்தே தீரவேண்டிய
 करारियம்.

तस्मात्त्वं वस काकुत्स्थ सप्तरात्रं मया सह । ऊर्ध्वं गन्तासि मधुरां सभृत्यबलवाहनः ॥

काकुत्स्थ "ஹே சத்ருக்கன!
 तस्मात् ஆகலின்
 त्वं நீ
 मया सह என்னோடுகூட
 सप्तरात्रं ஏழு இரவு
 वस தங்கியிரு.
 ऊर्ध्वं பிறகு

सभृत्य- பரிஜனங்களோடும்,
 बलवाहनः . னைன்யங்களோடும்
 வாஹனங்களோடும்
 கூடினவனாய்
 मधुरां மதுராபுரிக்கு
 गति நீ திரும்பிச்செல்வா
 யாக."

रामस्यैतद्वचः श्रुत्वा धर्मयुक्तं मनोगतम् । शत्रुघ्नो दीनया वाचा बाढमित्येव चाब्रवीत् ॥

| | |
|--------------|------------------------------|
| शत्रुघ्नः | சத்ருக்கனர் |
| रामस्य | ஸ்ரீராமரது |
| मनोगतं | மனோபிஷ்டமாயும் |
| धर्मयुक्तं च | தர்மானுஸாரமாயு மிருக்கும் |
| एतत् | அந்த |
| वचः | உத்திரவை |

| | |
|-------------|---|
| श्रुत्वा | கிரமேற்கொண்டு |
| दीनया | தழுதழுத்த |
| वाचा | குரலுடன் |
| बाढं इति एव | “திருவாக்குக்கு மறு வாக்குண்டோ” என்று |
| अब्रवीत् | பதிலுரைத்தார். |

सप्तरात्रं च काकुत्स्थो राघवस्य यथाज्ञया । उष्य तत्र महेष्वामो गमनायोपचक्रमे ॥

| | |
|--------------|------------------|
| महेश्वामोः | மஹிபோர்விராகிய |
| काकुत्स्थः | சத்ருக்கனர் |
| राघवस्य | ஸ்ரீராகவரது |
| आज्ञया यथा | ஆக்கனையின்படியே |
| सप्तरात्रं च | ஏழு இரவு மட்டும் |

| | |
|----------|--|
| उष्य | வஸித்துவிட்டு |
| तत्र | அவ்விடத்திற்கு |
| गमनाय | பிரயாணமாகப்போக |
| उपचक्रमे | வேண்டிய முன் ஏற்பா டுகளைச் செய்யலானார். |

आमन्त्र्य तु महात्मानं रामं सत्यपराक्रमम् । भरतं लक्ष्मणं चैव महारथमुपारहत् ॥१९॥

| | |
|--------------|---|
| सत्यपराक्रमं | { எக்காலத்திலும் வீ ணாகாத பராக்கிரமம் படைத்த } |
| महात्मानं | |
| रामं तु | மஹாத்மாவாகிய |
| भरतं च | ஸ்ரீராமரிடத்திலும் பரதரிடத்திலும் |

| | |
|-------------|-------------------------------|
| लक्ष्मणं एव | லக்ஷ்மணரிடத்திலும் |
| आमन्त्र्य | சொல்லி விடைபெற் றுக்கொண்டு |
| महारथं | மஹத்தான ரதத்தின் மீது |
| उपारहत् | ஏறிக்கொண்டார். |

दूरं ताभ्यामनुगतो लक्ष्मणेन महात्मना । भरतेन च शत्रुघ्नो जगामाशु पुरं ततः ॥२०॥

| | |
|-------------|------------------|
| शत्रुघ्नः | சத்ருக்கனர் |
| ताभ्यां | அவ்விருவர்களாகிய |
| महात्मना | மஹாத்மாவான |
| भरतेन | பரதராலும் |
| लक्ष्मणेन च | லக்ஷ்மணராலும் |
| दूरं | வெகுதூரம் |

| | |
|--------|--------------------------------|
| अनुगतः | கூடவந்து வழிவிடப் பட்டவராய் |
| ततः | அவ்விடத்திலிருந்து |
| पुरं | நகருக்கு |
| आशु | சீக்கிரமாய் |
| जगाम | போய்ச்சேர்ந்தார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे द्विसप्ततितमः सर्गः ॥



अल्पैरहोभिर्निधनं गमिष्यामि न संशयः । अहं च जननी चैव तव शोकेन पुत्रक ॥ ६ ॥

புவக "குழந்தாய்!
 தவ உனக்கு
 ஷோகென புலம்பி அழுவதால்
 அல்பை: சில
 அஹோமி: தினங்களில்
 ஶஹ் ச நானும்

निधनं சாவை
 गमिष्यामि அடைவேன்.
 जननी च एव அன்னையும் அப்படி
 யே அடைவான்.

न संशयः இதற்கு ஐயமில்லை.

न स्मराम्यनृतं बुक्तं न च हिंसां स्मराम्यहम् । सर्वेषां प्राणिनां पापं कृतं नैव स्मराम्यहम् ॥

புக்த். ஹி "காரியார் த்தமாகவும்
 சொல்லப்பட்ட
 அநுத் பொய்மொழியை
 ந ஶராமி நான் நினை த்ததில்லை.
 அஹ் நான்
 ஹிஸா ச ஹிம்சைகளில்
 எதையும்

न स्मरामि நினை த்ததில்லை.
 अहं நான்
 सर्वेषां எப்படிப்பட்ட
 प्राणिनां பிராணிகளுக்கும்
 पापं एव திக்கு ஒன்றையும்
 कृतं வினைவித்ததாய்
 न स्मरामि அறியேன்.

केनाद्य दुष्कृतेनायं बाल एव ममात्मजः । अकृत्वा पितृकार्याणि गतो वैवस्वतक्षयम् ॥

கென "யாருடைய
 दुष्कृतेन பாவத்தால்
 मम எனது
 आत्मजः புதல்வனாகிய
 अयं இந்த
 बालः சிசு

पितृकार्याणि { பிதாவுக்கு செய்யவே
 ண்டிய உத்தரக்கிரி
 யைகளை
 अकृत्वा एव செய்யாமலே
 अद्य இப்பொழுதே
 वैवस्वतक्षयं யமலோகத்திற்கு
 गतः போய்விட்டான்?

नेदृशं दृष्टपूर्वं मे श्रुतं वा घोरदर्शनम् । मृत्युरप्राप्तकालानां रामस्य विषये यथा ॥ ९ ॥

ஶ்டுஷ் "இப்படிப்பட்ட
 घोरदर्शनं கோரமான காட்சி
 मे என்னுடைய
 दृष्टपूर्वं அனுபவத்திலாவது
 श्रुतं वा செவிக்கு எட்டின
 தாகவாவது

रामस्य ஶ்ரீராமரது
 विषये ராஜ்யத்தில்
 अप्राप्तकालानां அகாலங்களில் மனிதர்
 कः களுக்கும்
 यथा இப்படிப்பட்டதாய்
 मृत्युः மாணமுண்டாகிறது.

न இல்லை.

रामस्य दुष्कृतं किञ्चिन्महदस्ति न संशयः । यथा हि विषयस्थानां बालानां मृत्युरागतः ॥

विषयस्थानां "ராஜ்யத்திலிருக்கும்
 बालानां சிறுவர்களுக்கு
 यथा இப்படிப்பட்டதாய்
 मृत्युः மாணம்
 आगतः हि உண்டாகின்றமைமால்

रामस्य ஶ்ரீராமருடைய
 दुष्कृतं பாவம்
 किञ्चित् ஏதோ ஒன்று
 महत् மகத்தாய்
 अस्ति இருக்கிறது.
 न संशयः இதற்க்கையமில்லை.

न ह्यन्यविषयस्थानां बालानां मृत्युतो भयम् । त्वं राज्ञीवयस्वैनं बालं मृत्युवशं गतम् ॥

अन्यविषयस्थां “ மற்ற ராஜ்யங்களிலு
 बालानां சிறுவர்களுக்கு [ள்ள
 मृत्युः யமனிடமிருந்து
 न भयं हि தீங்கு உண்டாகாமலி
 ருக்கிறபடியால்

राजन् राज्ञे !
 राजद्वारि मरिष्यामि पत्न्या सार्धमनाथवत् । ब्रह्महत्यां ततो राम समुपेत्य सुखी भव ॥

अनाथवत् “ ரக்பிக்கும் நாதனைப்
 பொறுதவனாய்

पत्न्या सार्धं மனைவியுடன் கூட
 राजद्वारि राज्याग्नிகेवायिल्लि
 मरिष्यामि நான் உயிரைவிடுகின்
 றேன்.

भ्रातृभिः सहितो राजन्दीर्घमायुरवाप्स्यसि । उषिताः स्म सुखं राज्ये तवास्मिन्सुमहाबल ॥

सुमहाबल { “ மஹாபிரசித்திபெ
 ற்ற சாமர் த்தியசாலி
 யாகிய

राजन् சக்கிரவர்த்தியாரே!
 आतृभिः सहितः தப்பிமாரர்களோடுகூட
 दीर्घ आयुः தீர்க்காயுளை

इदं तु पतितं ह्यस्मात्त्व राम वशे स्थिताः । कालस्य वशमापन्नाः स्वल्पं हि न हि नः सुखम् ॥

तु “ இப்பொழுது

इदं இது

पतितं சம்பலித்திருக்கிறது.

अस्मात् இதிலிருந்து

राम ஹே ராம!

तव உமது

वशे ஆளுகையில்

स्थिताः हि இருப்பவர்களும்

संप्रत्यनाथो विषय इक्ष्वाकूणां महात्मनाम् । रामं नाथमिहासाद्य बालान्तकरणं ध्रुवम् ॥

इह “ இவ்வலகில்

महात्मनां மகாத்மாக்களான

इक्ष्वाकूणां இக்சுவாகுவம்சத்த

வர்களுடைய

विषयः ராஜ்யமானது

रामं ராமரை

ध्रुवं நிச்சயமாய்

मृत्युवशं யமன் கையில்
 गतं சிக்கிக்கொண்ட
 एनं இந்த
 बालं சிசுவை
 त्वं நீர்
 जीवयस्व பிழைப்பிக்கவேண்டும்.

राम ஹே ராம!

ततः அதனால்

ब्रह्महत्यां பிரம்மஹத்திதோஷத்

समुपेत्य அடைந்து [தை

सुखी சுகமாக

भव வாழ்ந்திரும்.

उषिताः स्म நீர் அடையும்.

अवस्थसि உமது

तव இந்த

अस्मिन् ராஜ்யத்தின்

राज्ये சுகமாக

सुखं வாழ்ந்தோம்.

उषिताः स्म

कालस्य யமனுடைய

वशं आपन्नाः { ஆளுகையில் துன்பு
 றுபவர்களாயிருக்
 கின்றார்கள்.

नः எங்களுக்கு

सुखं हि சேஷமென்பதே

स्वल्पं हि கொஞ்சமேனும்

न இல்லை.

बालान्तकरणं { சிசுக்களுக்கு மாண
 மேற்பட்டதற்குக்
 காரணபூதரான

नाथं நாதராய்

आसाद्य அடைந்து

संप्रति இப்பொழுது

अनाथः கேவலமாயிருக்கிறது.

राजदोषैर्विपद्यन्ते प्रजा ह्यविधिपालिताः । असद्रुचे तु नृपतावकाले भ्रियते जनः ॥१६॥

| | | | |
|------------------|--|---------------|-----------------------------------|
| नृशौ असद्रुचे | “ ஓர் அரசன் தீயத்தொழில்களை புரியும்பகூற்றில் | अ विधिपालिताः | அதர்மத்துடன் பரி பாஸிக்கப்பட்ட |
| तु | அதனால் | प्रजाः | குடி கள் |
| जनः | துரைத்தனத்திற்கு உட்பட்ட மனிதன் | राजोषैः हि | ராஜாவினது பாபங் களாலேயே |
| अकाले भ्रियते | அகாலத்தில் மரணமடைகிறான். | विपद्यन्ते | விபத்தை அடைகிறார் கள். |

यद्वा पुरेष्वयुक्तानि जना जनपदेषु च । कुर्वते न च रक्षाऽस्ति तदा कालकृतं भयम् ॥

| | | | |
|---|---|--|---|
| यद्वा पुरेषु जनपदेषु च जनाः अयुक्तानि | “ இதில்லையென்றால் நகரங்களிலும் நாடுகளிலும் ஜனங்கள் அசாஸ்திரகிருத்தியங் களை | कुर्वते | செய்யத்தலைப்பட்டு விட்டார்கள். |
| | | रक्षा न अस्ति तदा च कालकृतं भयम् | தடுத்துப்பாதுகாக்கி இல்லை. [மது என்றாலும் யமனால் விளையும் ஆபத்துண்டு. |

सुव्यक्तं राजदोषो हि भविष्यति न संशयः । पुरे जनपदे चापि ततो बालवयो ह्ययम् ॥

| | | | |
|---|--|--|--|
| भयं बालवधः सुव्यक्तं ततः पुरे च | “ இந்த சுசுமரணம் பிரத்தியகூற்றிலேற் பட்டிருக்கிறது. என்கிறதால் நகரிலும் | जनपदे अपि राजदोषः हि भविष्यति न संशयः | நாட்டிலும் இராஜனது பாவம் தான் இப்பொழுது ஸம்ப வித்திருக்கிறது. இதற்கு ஐயமில்லை.” |
|---|--|--|--|

एवं बहुविधैर्वावयैरुपरुध्य मुहुर्मुहुः । राजानं दुःखसंतप्तः सुतं तमुपगृहते ॥ १९ ॥

| | | | |
|--|--|--|--|
| दुःखसन्तप्तः राजानं एवं सुहुः सुहुः बहुविधैः | துயரம் தாங்காதவனா பிருந்த அவன் அரசனை இவ்வாறு மேன்மேலும் பலவித | वावयैः उपरुध्य तं सुतं उपगृहते | சொற்கொண்டு விண்ணப்பம் செய்து அந்த [விட்டு மகனை கட்டியனைத்தவண்ண மேயிருந்தான் |
|--|--|--|--|

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे त्रिसप्ततितमः सर्गः ॥



चतुःसप्ततितमः सर्गः—எழுபத்துநாலாவது ஸர்க்கம். || ७४ ||

नारदवाक्यम्—நாரதவசனம்.

तथा तु करुणं तस्य द्विजस्य परिदेवनम् । शुश्राव राघवः सर्वं दुःखशोकसमन्वितम् ॥

राघवः तथा } श्रीराकவரும்
तस्य } அந்த
द्विजस्य } பிராம்மணனது
दुःखशोक- } சகிக்கமுடியாத துய
समन्वितं } ரத்தால் விளைந்ததும்

करुणं } கருணைக்குரிய துமாண
परिदेवनं } புலம்பல்
सर्वं } எல்லாவற்றையும்
तु } இப்பொழுது
शुश्राव } செனிகொண்டார்.

स दुःखेन च सन्तप्तो मन्त्रिणस्तानुपाह्वयत् । वसिष्ठं वापदेवं च भ्रातरौ सहनैगमान् ॥

सः } அவர்
दुःखेन } துக்கத்தினால்
सन्तप्तः } தவிப்புண்டவராகி
तान् मन्त्रिणः च } அந்த மந்திரிமார்களை
वसिष्ठं च } வலிஷ்டரையும் [யும்

वासदेवं } வாமதேவரையும்
सहनैगमान् } வேதவித்துக்களையும்
भ्रातरौ च } பிராதாக்களையும்
उपाह्वयत् } அழைத்துவரச்
சொன்னார்.

ततो द्विजा वसिष्ठेन सार्धमष्टौ प्रवेशिताः । राजानं देवसङ्काशं वर्धस्वेति ततोऽब्रुवन् ॥३॥

ततः } அதனால்
वसिष्ठेन } வலிஷ்டருடன்
सार्धं } கூட
अष्टौ } எட்டு
द्विजाः } பிராம்மணர்கள்
प्रवेशिताः } வந்துசேர்ந்தார்கள்.

ततः } உடனே
देवसङ्काशं } தெய்வத்தன்மை
राजानं } மன்னரை [படைத்த
वर्धस्व } பல்லாண்டுபல்லாண்டு
इति } என்று
अब्रुवन् } ஆசீர்வதித்தார்கள்.

मार्कण्डेयोऽथ मौद्गल्यो वामदेवश्च काश्यपः । कात्यायनोऽथ जाबालिगौतमो नारदस्तथा ॥

एते द्विजर्षभाः सर्वे आसनेषूपवेशिताः

एते } இந்த
द्विजर्षभाः } தவிஜாத்தமர்களாகிய

॥ ४ ॥

कात्यायनः च } காத்தியாயனரும்
जाबालिः अथ } ஜாபாலியும்
गौतमः } கொதமரும்
नारदः तथा } நாரதருமாகிய
सर्वे } எல்லோரும்
आसनेषु } ஆஸனங்களில்
उपवेशिताः } வீற்றிருந்தார்கள்.

मार्कण्डेयः } மார்க்கண்டேயரும்
मौद्गल्यः अथ } மொளத்கல்யரும்
वामदेवः } வாமதேவரும்
काश्यपः च } காச்யபரும்

महर्षीन्समनुप्राप्तानभिवाद्य कृताञ्जलिः । मन्त्रिणो नैगमांश्चैव यथाहमनुकूलतः ॥ ५ ॥

समनुप्राप्तान् } வந்திருக்கும்
नैगमान् } வேதவித்துக்களான
महर्षीन् एव } மஹரிஷிகளையும்
मन्त्रिणः च } மந்திரிமார்களையும்
कृताञ्जलिः } அஞ்ஜலிஹஸ்தராகி

अभिवाद्य } கொண்டாடி
यथाहं } அவரவர்களுக்கேற்ற
வண்ணம்
अनुकूलतः } அனுகூலமாய்ப்பசரித்
தார்.

तेषां समुपविष्टानां सर्वेषां दीप्ततेजसाम् । राघवः सर्वमाच्छेद्विजोऽयमुपरोधते ॥ ६ ॥

राघवः श्रीराकவர்
 दीप्ततेजसां தேஜோமயமாய் ஜவ
 வித்துக்கொண்டு
 समुपविष्टानां வந்திருந்த
 तेषां அவர்கள்
 सर्वेषां எல்லோருக்கும்

अयं இந்த
 द्विजः பிராம்மணன்
 उपोधो வருந்தி வேண்டிக்
 கொள்ளுகிறான்.
 सर्वं என்ற யாவற்றையும்
 आच्छेद्वे அறிவித்தார்.

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राज्ञो दीनस्य नारदः । प्रत्युवाच शुभं वाक्यमृषीणां सन्निधौ नृपम् ॥

नारदः नாரதமுனிவர்
 दीनस्य வியாசுலமடைந்து
 பரிதவிக்கும்
 तस्य அந்த
 राज्ञः மன்னரது
 तद्वचनं அம்மொழிக்கு
 श्रुत्वा திருச்செவியைச் சந்த

ऋषीणां முனிவர்களது
 सन्निधौ மத்தியில்
 नृपं பன்னரைப்பார்த்தது
 शुभं ஹிதகரமாகிய
 वाक्यं இனிவரும் மொழியை
 प्रत्युवाच பதிலாய் திருவாய்
 மலர்ந்தருளினார்:

शृणु राजन्यथाऽकाले प्राप्नो बालस्य संक्षयः । श्रुत्वा कर्तव्यतां राजन्कुरुष्व रघुनन्दन ॥

राजन् “ஹே ராஜரே!
 बालस्य பாலனுக்கு
 संक्षयः முடிவு
 अकाले அகாலத்தில்
 प्राप्नो நேர்ந்தது.
 यथा ஏன் என்பதை

शृणु கூறுகின்றேன் திருச்
 செவியைச் சந்தருள்க.
 राजन् ஹே ராஜரே!
 रघुनन्दन ஹே ரகுந்தன!
 श्रुत्वा செவியுற்றபின்னர்
 कर्तव्यतां செய்யத்தகுவதை
 कुरुष्व செய்தருள்க.

पुरा कृतयुगे राजन्ब्राह्मणा वै तपस्विनः । अब्राह्मणस्तदा राजन् तपस्वी कथञ्चन ॥९॥

राजन् “ஹே ராஜரே!
 पुरा பூர்வம்
 कृतयुगे கருதயுகத்திலே
 ब्राह्मणाः பிராம்மணர்கள்
 वै மாத்திரமே
 तपस्विनः தவம்புரியும் அதிகார
 முடையவர்கள்.

राजन् ஹே ராஜரே!
 तदा அக்காலத்தில்
 अब्राह्मणः பிராம்மணனில்லாத
 இதராஜாதியான்
 कथञ्चन என்னபாடுபட்டாலும்
 तपस्वी न தவம்புரிய அதிகாரமு
 டையவனாய் ஆகான்.

तस्मिन् युगे प्रज्वलिते ब्रह्मभूते त्वनावृते । अमृत्यवस्तदा सर्वे जज्ञिरे दीर्घदर्शिनः ॥ १० ॥

तस्मिन् युगे அந்த யுகம்
 ब्रह्मभूते பிரம்மத்தை தியா
 னிப்பது ஒன்றையே
 त्वनावृते ஸதா ஸர்வமுமாயி
 ருப்பதாயும்
 अनावृते ஜாதியிச்சர்மில்லாத
 தாயும்
 प्रज्वलिते விளங்குகையில்

तदा அக்காரணத்தால்
 तु அக்காலத்தில்
 सर्वे எல்லோரும்
 दीर्घदर्शिनः பூர்வவிவேகிகளாய்
 अमृत्यवः மரணமில்லாதவர்
 कज्ञिरे களாய்
 விளங்கினார்கள்.

ततस्त्रेतायुगं नाम मानवानां वपुष्मताम् । क्षत्रियास्तत्र जायन्ते पूर्वेण तपसाऽन्विताः ॥

ततः “அதன்பிறகு
வபுஷ்மதா சரீரமுள்ள
மானவாந் ம1னிடர்களுடைய
வேதாயுగம் நாம த்ரேதாயுகம் என்பது.
தவ அதில்
பூர்வே முதலில்

क्षत्रियाः கூத்திரியர்கள்
तपसा தவத்தால்
अन्विताः மேன்மைபெற்றவர்
களாய்
जायन्ते ஒப்புக்கொள்ளப்பட்ட
டார்கள்.

वीर्येण तपसा चैव तेऽधिकाः पूर्वजन्मनि ।

पूर्वजन्मनि “முந்திய யுகப்பிறப்
பில்

ये எந்த
मानवाः மனிதர்கள்
महात्मानः மஹாத்மாக்களோ
ते அவர்கள்
अत्र இந்த

मानवा ये महात्मानस्त्वत्र त्रेतायुगे युगे ॥

त्रेतायुगे த்ரேதாயுகமெனப்
படும்

युगे तु யுகத்திலும்
वीर्येण च தேஜஸாலும்
तपसा एव தவத்தாலும்
अधिकाः மேன்மைபெற்றவர்
கள்.

ब्रह्म क्षत्रं च तत्सर्वं यत्पूर्वमपरं च यत् । युगयोर्हभयोरासीत्समवीर्यसमन्वितम् ॥ १३ ॥

यत् “எதொன்று
ब्रह्म च பிராம்மணனுக்கு
மட்டும்
पूर्वं முதலிலிருந்ததோ
यत् எதொன்று
क्षत्रं च கூத்தரியனுக்கும்
अपरं பின் ஏற்பட்டதோ

तत्सर्वं அதெல்லாமும்
उभयोः இரண்டு
युगयोः யுகங்களிலும்
समवीर्यसमन्वितं சமமான பயனை
தருகின்றதாய்
आसीत् ஆயிற்று.

अपश्यन्तु न ते सर्वे विशेषमधिकं ततः । स्थापनं चक्रिरे तत्र चातुर्वर्ण्यस्य सम्मतम् ॥

ततः “ஆனதால்
तु அப்பொழுது
ते सर्वे அவர்கள் எல்லோரும்
अधिकं அதிகமான
विशेषं வித்தியாஸத்தை
अपश्यन् न காணவில்லை.

तत्र அந்த சந்தர்ப்பத்தில்
चातुर्वर्ण्यस्य நான்கு வர்ணத்தவ
ருக்கும்
सम्मतं ஆசாரபேதத்தை
स्थापनं விதியாய்
चक्रिरे ஏற்படுத்தினார்கள்.

तस्मिन् युगे प्रवृत्तिते धर्मभूते ह्यनादृते । अधर्मः पादमेकं तु पातयत्पृथिवीतले ॥ १५ ॥

तस्मिन् युगे “அந்த யுகம்
धर्मभूते { தர்மம் ஒன்றே ஸதா
ஸர்வமுமாய் இருப்
பதாகவும்
अनादृते ஜாதியிச்சர்மில்லாத
தாயும்
प्रवृत्तिते விளங்குகையில்

हि அக்காரணத்தால்
तु அப்பொழுது
अधर्मः அதர்மமானது
पृथिवीतले பூமியில்
पादं एकं நான்கில் ஒரு பாகத்
पातयत् நாட்டிற்று. [தை

अधर्मेण हि संयुक्तस्तेजो मन्दं भविष्यति

॥ १६ ॥

अधर्मेण "அதர்மத்துடன்
संयुक्तः மிசர்ப்பட்டுவிட்டது
हि என்றால்

तेजः சக்தியானது
मन्दं குறைந்ததாய்
भविष्यति ஆகும்.

आमिषं यच्च पूर्वेषां राजसं च मलं भृशम् । अनृतं नाम तद्भूतं पादेन पृथिवीतले ॥१७॥

पृथिवीतले "பூமியில்
पादेन ஒரு பாதத்தால்
भूतं ஏற்பட்டது
यत् எந்த
अनृतं விவஸாயம்
नाम என்கிற
आमिषं ஜீவனோபாயமோ

त् अது
पूर्वेषां கருதயுகத்தவர்
राजसं च கருக்கு
भृशं ராஜஸ்குணத்தைப்
मलं च மிக்க [பற்றியதாயும்
நனமானதாயுமிருந்
தது.

अनृतं पातयित्वा तु पादमेकमधर्मतः । ततः प्रादुष्कृतं पूर्वमायुषः परिनिष्ठितम् ॥ १८ ॥

अधर्मतः "அதர்மத்தால்
एकं ஒரு
पादं பாதத்தை
पातयित्वा நாட்டிவிட்டு
ततः அதனால்
अनृतं பயிர்ந்தொழில்

प्रादुष्कृतं பிரதயக்ஷமாய் காண
त् ப்பட்டது.
तु அத்துடன்
पूर्वं முதலில்
आयुषः ஆயுசுக்கு
परिनिष्ठितम् தடுமாற்றமடைந்தது.

पतिते त्वनृते तस्मिन्नधर्मे च महीतले । शुभान्येवाचरल्लोकः सत्यधर्मपरायणः ॥ १९ ॥

तस्मिन् "அந்த
महीतले பூமியானது
अधर्मे அதர்மத்தின் பயனாய்
अनृते பயிர்ந்தொழிலில்
पतिते तु கழிந்துகிடக்கையில்

लोकः உலகம்
सत्यधर्म- } ஸத்தியமான தர்மம்
परायणः } ஒன்றை மட்டும் கை
शुभानि एव விடாததாய்
आचत् நன்மைகளையே
நாடிற்று.

त्रेतायुगे च वर्तन्ते ब्राह्मणाः क्षत्रियाश्च ये । तपोऽतप्यन्त ते सर्वे शुश्रूषामपरे जनाः ॥

त्रेतायुगे "தரேதாயுகத்தில்
ब्राह्मणाः च பிராம்மணர்களும்
क्षत्रियाः च கூத்தரியர்களும்
तपः தவம் புரிதலை
अतप्यन्त அனுஷ்டித்தார்கள்.
शुश्रूषां பணிவிடை செய்து
ஆக்கு

अपरे இதராஜாதி
जनाः ஜனங்கள்
ये எவர்களோ
ते அவர்கள்
सर्वे எல்லோரும்
वर्तन्ते இருந்தார்கள்.

स धर्मः परमस्तेषां वैश्यशूद्रं समागमत् । पूजां च सर्ववर्णानां शूद्राश्चक्रुर्विशेषतः ॥ २१ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|----------------|--------------------------|
| तेषां | “அவர்களைய | शूद्राः | சூத்தர்கள் |
| सः | அந்த | विशेषतः | முக்கியமாய் |
| धर्मः | கடையானது | सर्ववर्णानां च | ஸகலவர்களைத்தவர்களுக்கும் |
| वैश्यशूद्रं | வையசியசூத்திரஜாதி | पूजां | ஊழியஞ்செய்தலை |
| परमः | சரியாய் [யாரிடம் | चक्रुः | அனுஷ்டிக்கார்கள். |
| समागमत् | நடைபெற்றது. | | |

एतस्मिन्नन्तरे तेषामधर्मं चानृते च ह । ततः पूर्वं भृशं द्वासमगमन्नृपसत्तम ॥ २२ ॥

| | | | |
|----------|---------------|---------|-----------------------|
| नृपसत्तम | “ஹே ராஜேந்தம! | पूर्व च | பயனானதும் |
| ततः | அதன்மேல் | अनृते ह | பயிர்ந்தொழிலிலும் |
| एतस्मिन् | இதன் | भृशं | அதிக |
| अन्तरे | முடிவிலே | हासं | குறைந்த பலனை |
| तेषां | அவர்களுடைய | अगमन् | அவர்கள் அடைந்தார்கள். |
| अधर्मं च | அதரும்த்தின் | | |

ततः पादमधर्मः स द्वितीयमवतारयत् । ततो द्वापरसंज्ञास्य युगस्य समजायत ॥ २३ ॥

| | | | |
|----------|-------------|--------------|-----------------------|
| ततः | “அப்பொழுது | ततः | அதிலிருந்து |
| सः | அந்த | अस्य | அந்த |
| अधर्मः | அதர்மமானது | युगस्य | யுகத்திற்கு |
| द्वितीयं | இரண்டாவது | द्वापरसंज्ञा | துவாபரயுகமெனும் பெயர் |
| पादं | பாதத்தை | समजायत | பெறும். |
| अवतारयत् | ஊன்றிவிடும் | | |

तस्मिन्द्वापरसंज्ञे तु वर्तमाने युगक्षये । अधर्मश्चानृतं चैव वष्टये पुरुषर्षभ ॥ २४ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|-------------|-----------------|
| पुरुषर्षभ | “ஹே புருஷோத்தம! | वर्तमाने तु | வந்தவளவில் |
| तस्मिन् | அந்த | अधर्मः | அதர்மமாகிய |
| द्वापरसंज्ञे | துவாபரயுகமென்ற | अनृतं च एव | பயிர்ந்தொழிலும் |
| युगक्षये च | யுகமுடிவும் | वष्टये | வளரும். |

तस्मिन्द्वापरसंख्याते तपो वैश्यान्समाविशत् । त्रिभ्यो युगेभ्यस्त्रीन्वर्णान्क्रमाद्वै तप आविशत् ॥

| | | | |
|----------------|--------------------|------------|-----------------------|
| तस्मिन् | “அந்த | युगेभ्यः | யுகங்களிலும் |
| द्वापरसंख्याते | த்வாபரயுகத்தில் | क्रमात् वै | முறையே |
| तपः | தவம்புரிதல் | तपः | தவம்புரிதல் |
| वैश्यान् | வையசியர்களுக்கும் | वीन् | மூன்று |
| समाविशत् | உரியதாய்விடுகிறது. | वर्णान् | வர்களைத்தவர்களுக்கும் |
| त्रिभ्यः | மூன்று | आविशत् | உரியதாய்விடும். |

त्रिभ्यो युगेभ्यस्त्रीन्वर्णान्धर्मश्च परिनिष्ठितः । न शूद्रो लभते धर्मं युगतस्तु नर्षभ ॥२६॥

नर्षभ "ஹே புருஷோத்தம!
 त्रिभ्यः மூன்று
 युगेभ्यः யுகங்களிலும்
 लीन् மூன்று
 वर्णान् च வர்ணத்தவர்களுக்கும்

धर्मः தவம்புரிதல்
 परिनिष्ठितः ஏற்றது.
 युगतः இந்த யுகங்களில்
 शूद्रः तु சூத்திரன் மட்டும்
 धर्मं தவம்புரிய
 न लभते பாத்திரனாகான்.

हीनवर्णो नृपश्रेष्ठ तप्यते सुमहत्तपः

॥ २७ ॥

नृपश्रेष्ठ "ஹே ராஜோத்தம!
 हीनवर्णः கீழ்க்குலத்தவனெரு
 वन् வன்

सुमहत् மிகவும் உக்கிரமான
 तपः தவத்தை
 तप्यते இயற்றுகிறான்.

भविष्यच्छूद्रयोऽन्यां वै तपश्चर्या कलौ युगे । अधर्मः परमो राजन्द्रापरे शूद्रजन्मनः ॥२८॥

राजन् "ஹே மன்னரே!
 कलौ युगे கலியுகத்தில்
 शूद्रयोऽन्यां वै சூத்திரஜாதியில் பிறந்
 तपश्चर्या தவனிடத்திலும்
 तवम्पुரிதல் தவம்புரிதல்

भविष्यत् அனுஷ்டானத்திற்கு
 वरुम्. வரும்.
 शूद्रजन्मनः சூத்திரஜாதியானுக்கு
 द्वापरे த்வாபரயுகத்தில்
 परमः இது பரம
 अधर्मः அதருமம்.

स वै विषयपर्यन्ते तव राजन्महातपाः । अद्य तप्यति दुर्बुद्धिस्तेन बालवधो ह्ययम् ॥२९॥

राजन् "ஹே மன்னரே!
 तव தேவரீரது
 विषयपर्यन्ते वै ராஜ்யத்தின் எல்லையி
 सः அந்த [லேயே
 दुर्बुद्धिः மூடன்
 अद्य. இப்பொழுது

महातपाः பெருந்தவம் புரிந்தவ
 लुकि லுகி
 तप्यति தவமியற்றுகின்றான்.
 तेन हि அக்காரணத்தினு
 अयं இந்த [லேயே
 बालवधः பாலகனது மாணம்.

यो ह्यधर्मकार्यं वा विषये पार्थिवस्य तु । करोति चाश्रीमूलं तत्पुरे वा दुर्मतिर्नरः ॥

क्षिप्रं च नरकं याति स च राजा न संशयः ॥ ३० ॥

यः "எவனேனுமொரு
 दुर्मतिः புத்திவீனனான
 नरः மனிதன்
 अधर्मं तु தருமவிரோதமான
 कारियத்தையேனும்
 अकार्यं वा செய்யத்தகாத செய்
 कையைयேனும்
 पार्थिवस्य ஒரு ராஜனது
 पुरे நகரிலோ
 विषये वा நாட்டிலோ

करोति हि செய்வானுகில்
 तत् च இதுதான்
 क्षिप्रं உடனேயே
 अश्रीमूलं துர்த்தசைகளுக்குக்
 कारणமாகின்றது.
 सः அந்த
 राजा च மன்னனும்
 नरकं च நரகத்தையே
 याति அடைகிறான்.
 न संशयः இதற்கு ஐயமில்லை.

अधीतस्य च तप्तस्य कर्मणः सुकृतस्य च । षष्ठं भजति भागं तु प्रजा धर्मेण पाऽयन् ॥
षड्भागस्य च भोक्ताऽसौ रक्षते न प्रजाः कथम् ॥ ३१ ॥

| | | | |
|-------------|------------------------------|-----------|-------------------------------|
| अधीतस्य च | “வேதாத்தியனத்தி னுடையவும் | भजति | அனுபவிக்கின்றான். |
| तप्तस्य च | தவத்தினுடையவும் | षड्भागस्य | ஆறிலொருபாகத்திற்கு |
| सुकृतस्य तु | ஸுகிருதத்தினுடைய | भोक्ता च | உரிமையுடைய பார்த்திவனாகும் |
| कर्मणः | பலனின் [வும் | ०. सौ | இவன் |
| षष्ठं भागं | ஆறிலொருபாகத்தை | प्रजाः | பிரஜைகளை |
| धर्मेण | அறநெறி தவறாது | रक्षते न | பாதுகாக்காதிருக்கிறது |
| प्रजाः | பிரஜைகளை | कथम् | எங்ஙனமாகும்? |
| पालयन् | பரிபாலிக்கின்றவன் | | |

स त्वं पुरुषशार्दूल मार्गस्व विषयं स्वकम् । दुष्कृतं यत्र पश्येथास्तत्र यन्नं समाचर ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|----------|----------------|
| पुरुषशार्दूल | “ஹே புருஷோத்தம! | दुष्कृतं | பாபச்செயலை |
| सः | இப்படிப்பட்ட | पश्येथाः | நேரில் பாரும். |
| त्वं | தேவரீர் | यत्न | எவ்விடத்திலோ |
| स्वकं | உமது | तत्र | அவ்விடத்தில் |
| विषयं | தேசத்தில் | यत्नं | வேண்டிய வகையை |
| मार्गस्व | தேடும். | समाचर | செய்தருளும். |

एवं चेद्धर्मवृद्धिश्च नृणां चायुर्विवर्धनम् । भविष्यति नरश्रेष्ठ बालस्यास्य च जीवितम् ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|-----------------|-----------------------|
| नरश्रेष्ठ | “ஹே புருஷோத்தம! | आयुर्विवर्धनं च | தீர்க்காயுஸும் |
| एवं | இங்ஙனம் | कस्य | இந்த |
| चेत् | ஆகில் | बालस्य | பாலகனுக்கு |
| धर्मवृद्धिः च | தருமத்தின் ஏற்றமும் | जीवितं च | மறுபடி பிழைத்தெ |
| नृणां | மனிதர்களுக்கு | भविष्यति | விளையும்.” [முடிவதும் |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे चतुःसप्ततितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23192



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2468

பञ்சுசுதததம: சரீ:—எழுபத்தைந்தாவது ஸர்க்கம். ॥ 31 ॥

शूद्रमुन्यन्वेषणम्—சூத்திரமுனியை தேவேது.

नारदस्य तु तद्वाक्यं श्रुत्वाऽमृतमयं तदा । प्रहर्षमतुलं लेभे लक्ष्मणं चेदमब्रवीत् ॥ १ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|----------------|-------------------|
| तदा | அப்பொழுது | अतुलं प्रहर्षं | மிக சந்தோஷத்தை |
| नारदस्य | நாரதருடைய | लेभे | அடைந்தார். |
| अमृतमयं | ஹரிதகரமாகிய | च | உடனே |
| तत् वाक्यं | அம்மொழிக்கு | लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரிடம் |
| श्रुत्वा | கிருச்செவிசாய்த்து | इदं | இங்ஙனம் |
| तु | அதன்மேல் | अब्रवीत् | நியமித்தருளினார்; |

गच्छ सौम्य द्विजश्रेष्ठं समाश्वसय सुव्रतम् । बालस्य तु शरीरं ततैलद्रोण्यां निशपय ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------------|--------------|------------------|
| சௌம்ய | “ஹே நல்லபிள்ளாய்! | बा ३२४ | பாலகனுடைய |
| गच्छ | இவ்விடமிருந்து செல். | तव | அந்த |
| सुव्रतं | தர்மசீலராகிய | शरीरं तु | பிரேதத்தையும் |
| द्विजश्रेष्ठं | பிராம்மணைத்தமரை | तैलद्रोण्यां | எண்ணக்கொப்பரையில |
| समाश्वसय | பொறுத்திருக்கும்படி சமாதானம் செய். | निशपय | அமிழ்த்திவை. |

गन्धैश्च परमोदारैस्तैलैश्चापि सुगन्धिभिः । यथा न क्षीयते बालस्तथा सौम्य विधीयताम् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-------------|------------------|
| சௌம்ய | “ஹே நல்லபிள்ளாய்! | सुगन्धिभिः | மிக வாசனையான |
| बालः | சிறுவன் | तैलैः च अपि | தைலங்களாலும் |
| यथा | எப்படியானால் | क्षीयते न | அழுகிப்போகாமலிரு |
| परमोदारैः | அதிசுகமான | तथा | அப்படியே [ப்பாடு |
| गन्धैः च | சுகந்தங்களாலும் | विधीयताम् | செய்யப்பட்டும். |

यथा शरीरो बालस्य गुप्तः सन् क्लिष्टकर्मणः । विपत्तिः परिभेदो वा न भवेच्च तथा कुरु ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|------------|--------------------|
| क्लिष्टकर्मणः | “வாடிக்கிடக்கும் | विपत्तिः च | தளர்ச்சி அடைந்ததா |
| बालस्य | பாலகனது | परिभेदः वा | கவாவது |
| शरीरः | பிரேதமானது | भवेत् न | வது |
| गुप्तः सन् | ஐக்கிரதையுடன் பா | तथा | ஆகாமலிருக்குமோ |
| यथा | துகாக்கப்பட்டதாய் | कुरु | அப்படியே |
| | எப்படிச்செய்தால் | | நீ செய்யவேண்டும்.” |

एवमादिश्य काकुत्स्थो लक्ष्मणं शुभलक्षणम् । मनसा पुष्पकं दध्यावागच्छेति महायशः ॥

| | | | |
|------------|---------------|------------|----------------------|
| महायशः | மஹாயசஸ்வியான | आदिश्य | நியமித்தருளியபின்னர் |
| काकुत्स्थः | காகுத்தஸ்தர் | पुष्पकं | புஷ்பகவிமானத்தை |
| शुभलक्षणं | மஹாநற்குணசாலி | भागच्छ | ‘இவ்விடம் வா’ |
| | யான | इति | என்று |
| लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணருக்கு | मनसा दध्या | திருவுள்ளத்திற்கருதி |
| पुष्पं | இப்படி | | னார். |

इङ्गितं स तु विज्ञाय पुष्पको हेमभूषितः । आजगाम मुहूर्तेन समीपं राघवस्य वै ॥ ६ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|--------------|------------------|
| हेमभूषितः | சுவர்ணத்தாலலங்கரி | विज्ञाय | சிரமேற்கொண்டு |
| सः | அந்த [க்கப்பட்ட | मुहूर्तेन वै | தகூடணமே |
| पुष्पकः तु | புஷ்பகவிமானமும் | राघवस्य | ஸ்ரீராகவரது |
| इङ्गितं | திருவுள்ளத்தின் | समीपं | ஸன்னிதானத்திற்கு |
| | அபிராயத்தை | आजगाम | வந்துசேர்ந்தது. |

सोऽब्रवीत्प्रणतो भूत्वा अयमस्मि नराधिप । वश्यस्त्व महाबाहो किङ्करः समुपस्थितः ॥

சு: அது
 ப்ரணத: அடிபணிந்து நமஸ்க
 பூவா ஆகி [ரிக்கின்றதாய்
 அப்ரவீத் இப்படி விண்ணப்பம்
 செய்தது:
 மஹாபாஹோ “ஹே மஹாபாகுவே!
 நராधिப ஹே புருஷோத்தம!

तव தேவரீரது
 वश्यः அதிகாரப்படி நடக்கும்
 किङ्करः அடிமையான
 अयं இந்த
 अस्मि நான்
 समुपस्थितः இதோ வந்து காத்தி
 ருக்கின்றேன்.”

भाषितं रुचिरं श्रुत्वा पुष्पकस्य नराधिपः । अभिवाद्य महर्षींस्तान्विमानं सोऽयरोहत् ॥
 धनुर्गृहीत्वा तूणी च खड्गं च रुचिरप्रभम् । निक्षिप्य नगरे वीरौ सौमित्रिभरतावुभौ ॥

சு: அந்த
 நராधिப: புருஷோத்தமர்
 புஷ்பகச்ய புஷ்பகவிமானத்தி
 னுடைய
 ருசிரம் மதூரமாயிருக்கிற
 பாசிரம் விண்ணப்பத்திற்கு
 ஶுத்வா செவியாய்த் துவிட்டு
 தாந் அந்த
 மஹர்ஷீந் மஹரிஷிகளை
 அபிவாடிய வணங்கிவிடைபெற்று
 வீரோ வீரர்களான [விட்டு
 சௌமித்ரிபரதௌ லக்ஷ்மணர் பரதர்
 ஆகிய
 உமௌ ச இவ்விருவரையும்

नगरे நகரத்தில்
 निक्षिप्य தங்கிபிருக்கும்படி
 நியமித்தருளிவிட்டு
 धनुः கோதண்டத்தையும்
 तूणी இரு அம்பரூத்தூணி
 களையும்
 रुचिरप्रभं { கண்கூச்சும்வண்ணம்
 பளபள வென்றிருக்
 கின்ற
 खड्गं च கட்சுத்தையும்
 गृहीत्वा கையிலெடுத்துக்
 கொண்டு
 विमानं புஷ்பகவிமானத்தில்
 अयरोहत् எழுந்தருளினார்.

प्रायात्प्रतीचीं हरितं विचिन्वंश्च ततस्ततः । उत्तरामगमच्छ्रीमान्दिशं हिमवता वृताम् ॥

श्रीमान् பூர்மானாகுமவர்
 प्रायात् வெகுவாய்
 ततः ततः எல்லாவிடங்களிலும்
 हरितं பசுமையான
 प्रतीचीं மேற்றிசையை

विचिन्वन् தேடிப்பார்த்தார்.
 च பின்னர்
 हिमवता ஹிமயமலையால்
 वृतां தடுக்கப்பட்ட
 उत्तरां दिशं வடதிசைக்கு
 अगमत् போய்ச்சேர்ந்தார்.

अपश्यमानस्तत्रापि स्वल्पमप्यथ दुष्कृतम् । पूर्वामपि दिशं सर्वाभयापश्यन्नराधिपः ॥११॥

नराधिपः மன்னர்
 अथ அதன்மேல்
 पूर्वा கிழக்கு
 दिशं திக்கில்
 सर्वा अपि எங்கும்
 अपश्यत् ஆராய்ந்துபார்த்தார்.

अथ அவ்வண்ணமே
 तत्रापि அங்கேபுடும்
 दुष्कृतं அதருமமானதாய்
 स्वल्पं अपि ஏதொன்றையும்
 अपश्यमानः காணவில்லை.

प्रविशुद्धसमाचारामादर्शतलनिर्मलाम् । पुष्पकस्थो महाबाहुस्तदाऽपश्यन्नराधिपः ॥१२॥

| | | | |
|------------|-----------------------------|-------------------|---------------------------------|
| तदा | அப்பொழுது | आदर्शतलनिर्मलं | கண்ணாடிபோல் |
| महाबाहुः | மஹாபாகுவாகிய | | நீர்மலமாயும் |
| नराधिपः | மன்னர் | प्रविशुद्धसमाचारं | குற்றமற்ற நல்லொழுக்கமுடையதாயும் |
| पुष्पकस्थः | புஷ்பககவிமானத்திலிருந்தவாரே | अपश्यत् | கண்டார். |

दक्षिणां दिक्षमाक्रामत्ततो राजर्षिनन्दनः । शैलस्योत्तरे पार्श्वे ददर्श सुमहत्सरः ॥ १३ ॥

| | | | |
|---------------|------------------------------|-----------------|----------------------------|
| राजर्षिनन्दनः | ராஜரிஷியின் புதல்வராகிய அவர் | शैलस्य | ஒரு மலையினது |
| दक्षिणां | தெற்கு | उत्तरे पार्श्वे | வடபாகத்தில் |
| दिशं | திசையில் | सुमहत् च | மிக்க பொலிவுற்று விளங்கும் |
| आक्रामत् | எங்கும் தேடிப்பார்த்த | सरः | ஒரு பொய்கையை |
| ततः | அவ்விடத்தில் [கார். | ददर्श | கண்டார். |

तस्मिन्सरसि तप्यन्तं तापसं सुमहत्तपः । ददर्श राघवः श्रीमालम्बमानमधोमुखम् ॥१४॥

| | | | |
|----------|----------------|----------|------------------------|
| श्रीमान् | ஸ்ரீமானாகிய | तप्यन्तं | இயற்றிக்கொண்டிருக்கும் |
| राघवः | ஸ்ரீராகவர் | तापसं | ஒரு தபஸ்வியை |
| अधोमुखं | தலைகீழாக | तस्मिन् | அந்த |
| लम्बमानं | தொங்கிக்கொண்டு | सरसि | பொய்கையில் |
| सुमहत् | மிக்ககொடிய | ददर्श | கண்டார். |
| तपः | தபத்தை | | |

राघवस्तमुपागम्य तप्यन्तं तप उक्तमम् । उवाच स तदा वाक्यं धन्यस्त्वमसि सुव्रत ॥

कस्यां योन्यां तपोवृद्ध वर्तसे दृढविक्रम । कौतूहलाच्चां पृच्छामि रामो दाशरथिर्बिहम् ॥

कोऽर्थो मनीषितस्तुभ्यं स्वर्गलाभः परोऽथ वा । वराश्रयो यदर्थं त्वं तपस्यसि सुदुष्करम् ॥

यमाश्रित्य तपस्तप्तं श्रोतुमिच्छामि तापस ॥ १७ ॥

ब्राह्मणो वाऽसि भद्रं ते क्षत्रियो वाऽसि दुर्जयः । वैश्यस्तृतीयवर्णो वा शूद्रो वा सत्यवाग्भव ॥

| | | | |
|------------|---------------------------|-----------|---|
| सः | அந்த | रामः | ராமனெனும் |
| राघवः | ஸ்ரீராகவர் | अहं एवं | நான் உம்மை |
| उक्तं तपः | பெரும் தபத்தை | कौतूहलात् | விஷயம் அறிந்து கொள்ளவேண்டுமென்கிற அவாவினால் வினாவுகின்றேன். |
| तप्यन्तं | இயற்றிக்கொண்டிருக்கும் | पृच्छामि | மஹத்தான விருதத்தை அனுஷ்டிக்கின்றேன் |
| तं उपागम्य | அவனை அணுகி [கும் | सुव्रत | நீர் [வரே, |
| तदा | அப்பொழுது | रं | மிக்க மகிமைபெற்றவராய் |
| वाक्यं | இந்த மொழியை | धन्यः | |
| उवाच | திருவாய்மலர்ந்தருளினார் : | | |
| दाशरथिः | “தசரதரின் புதல்வனாகிய | | |

| | |
|----------------|-------------------------|
| அசி | விளங்குகிறீர். |
| ददविक्रम | தாளாண்மையுள்ள |
| तपोबुद्ध | மஹா தபஸ்வியே, |
| कस्यां योन्यां | எந்த வர்ணத்தில் |
| वर्तसे | நீர் பிறந்துவளர்ந்தீர்? |
| तुभ्यं | உமக்கு |
| मनीषितः | மனோபீஷ்டமாகிற |
| अर्थः कः | பயன் யாது? |
| त्वं | நீர் |
| यदर्थं | எதை உத்தேசித்து |
| सुदुष्करं | அரியபெரிய காரியத் |
| तपस्यसि | புரிகின்றீர்? [தை |
| परः | ஸர்வோத்கிருஷ்டமா |
| | கிய |
| स्वर्गलामः ऊध | ஸ்வர்க்கம் புகவா? |
| वराश्रयः वा | வேறுவரத்தை உத் |
| | தேசித்தா என்ன? |

| | |
|--------------------|---------------------|
| यं आश्रित्य | எவரை உத்தேசித்து |
| तपः | தவம் |
| तप्तं | புரியப்பட்டது? |
| ब्राह्मणः वा अस्मि | வேதியராயிருந்தால் |
| ते मद् | நீர் இனிது வாழ்க. |
| क्षत्रियः वा | கூத்திரியனாகில் |
| दुर्जयः अस्मि | வெல்வதற்கரியனாகி |
| तृतीयः | மூன்றாவது [நீர். |
| वर्णः | வர்ணத்தவனை |
| वैश्यः वा | வைச்யனை என்ன? |
| शूद्रः वा | சூத்திரனை என்ன? |
| तापस | தபஸ்வியே |
| सत्यवाक् हि | உள்ளபடி உண்மை |
| भव | இரும் [பேசுபவராயே |
| श्रोतुं | பதினுகுசுபெசவி |
| | கொடுக்க |
| इच्छामि | காத்துநிற்கின்றேன். |

इत्याषै श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे षट्सप्ततितमः सर्गः ॥

अ दितः श्लोकाः 23210



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2486

षट्सप्ततितमः सर्गः—எழுபத்தாறாவது ஸர்க்கம். ॥ ௭௬ ॥

शम्बूकवचः—சம்பூகவதம்.

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा रामस्याक्लिष्टकर्मणः । अवाक्छिरास्तथा भूत्वा वाक्यमेतदुवाच ह ॥

| | |
|-------------------|----------------------|
| अक्लिष्टकर्मणः | { எந்தக் காரியத்தை |
| | யும் சுகமாய் முடிக்க |
| | வல்லவரான |
| सस्य रामस्य | அந்த ஸ்ரீராமரது |
| तत् वचनं श्रुत्वा | அம்மொழியைகேட்டு, |

| | |
|------------|------------------|
| तथा | இன்னும் |
| अवाक्छिराः | தலையை கீழே போட |
| भूत्वा | ஆக, [உவராய் |
| एतत् वाचं | இந்த மொழியை |
| उवाच ह | பதிலாயுரைத்தார்: |

शूद्रयोऽन्यां प्रजातोऽस्मि तप उग्रं समास्थितः । देवत्वं प्रार्थये राम सशरीरो महायशः ॥

| | |
|---------------|------------------|
| राम | “ஹே ஸ்ரீராம! |
| शूद्रयोऽन्यां | சூத்திரஜாதியில் |
| अस्मि प्रजातः | நான் ஜனினத்தவன். |
| उग्रं | உக்கிரமான |
| तपः | தவத்தை |
| समास्थितः | ஸர்வமுமாய் கைப் |
| | பற்றியவனாய் |

| | |
|-----------|-------------------|
| महायशः | அதி ஆகரவுடன் |
| | பாராட்டப்பட்ட |
| सशरीरः | சரீரத்துடன் |
| देवत्वं | தேவபதனியை |
| प्रार्थये | நான் பிரார்த்திக் |
| | கின்றேன். |

न मिथ्याऽहं वदे राम देवलोकजिगीषया । शूद्रं मां विद्धि काकुत्स्थ शम्बूको नाम नामतः ॥

ராம }
 देवलोक- }
 जिगीषया }
 अहं
 मिथ्या
 न वदे
 काकुत्स्थ

“ஸ்ரீராம!
 தேவலோகத்தை அ
 டையவேண்டுகின்
 நான் [றபடியால்
 பொய்
 புகலேன்.
 வேற காருத்த!

मां
 शूद्रं
 विद्धि
 शम्बूकः
 नाम
 नामतः

என்னை
 சூத்திரனுய்
 திருவுள்ளத்தில்
 சம்புகன் [கொள்ளும்.
 என
 பெயர் பெற்றவன்”.

भाषतस्तस्य शूद्रस्य खड्गं सुरचिरप्रभम् । निष्कृष्य कोशाद्विमलं शिरश्चिच्छेद राघवः ॥

राघवः
 शूद्रस्य
 भाषतः
 विमलं
 सुरचिरप्रभं

ஸ்ரீராகவர்
 சூத்திரன்
 இப்படிப் புகன்றதும்
 வெண்மையான
 கண்கூசும்வண்ணம்
 ஒளிகொண்ட

खड्गं
 कोशात्
 निष्कृष्य
 तस्य
 शिरः
 चिच्छेद

கட்கத்தை
 உறையினின்று
 உருவி
 அவனது
 சிரத்தை
 வெட்டித்தள்ளினார்.

तस्मिञ्च्छूद्रे हते देवाः सेन्द्राः सासिपुरोगमाः । साधु साध्विति काकुत्स्थं प्रशशंसुर्मुहुर्मुहुः॥

सेन्द्राः
 सासिपुरोगमाः
 देवाः
 तस्मिन् शूद्रे

இந்திரனோடுகூடி
 யிருப்பவர்களும்
 அக்கனிபகவானுடன்
 கூடியிருப்பவர்களு
 மாள
 தேவர்கள்
 அந்த சூத்திரன்

हते
 साधु
 साधु
 इति
 सुहुः सुहुः
 काकुत्स्थं
 प्रशशंसुः

மாண்டதும்
 ‘நன்று
 நன்று’
 என
 பலவாறு
 காருத்தரை
 கொண்டாடினார்கள்.

पुष्पवृष्टिर्महत्यासीदिव्यानां सुसुगन्धिनाम् । पुष्पाणां वायुसुक्तानां सर्वतः प्रपपात ह ॥

दिव्यानां
 सुसुगन्धिनां
 वायुसुक्तानां

மனோஹராயிருக்
 கின்றனவும்
 அற்புதமான நல்ல
 வாசனையுடையனவும்
 வாய்புகவானுலெடுத்
 துகொண்டுபோகப்
 பட்டனவும்

पुष्पाणां
 पुष्पवृष्टिः
 सर्वतः
 प्रपपात
 सहती
 आसीत्
 ह

புஷ்பங்களுடைய
 பூமாரி
 எங்கு பார்த்தாலும்
 தூவிக்கிடந்தது
 அதியற்புதமாய்
 இருந்தது.
 காண்!

सुप्रीताश्चाब्रुवन्नामं देवाः सत्यपराक्रमम् । सुरकार्यमिदं सौम्य सुकृतं ते महामते ॥ ७ ॥

देवाः
 सुप्रीताः
 सत्यपराक्रमं

விண்ணவர்கள்
 பாம திருப்தி
 கொண்டவர்களாகி
 வீண்போகாத பராக்
 கிரமமுடைய

रामं
 अभुवन्
 महामते
 सौम्य

ஸ்ரீராமரைப் பார்த்து
 இங்கனம் அருளிச்
 செய்தனர்:
 “உதாரகுணமுடைய
 புண்பா தமாவே!

தேவரீருக்கு
அடைந்த பேருதவி
யை மறவாத்தன்மை
யுடையதாய்

सुरकायं च தேவர்களுக்கு ஆக
வேண்டிய காரியம்
इदम् இது.

गृहाण च वरं सौम्य यत्प्रमिच्छस्यरिन्दम । स्वर्गभाङ्गन हि शूद्रोऽयं त्वत्कृते रघुनन्दन ॥

वरिन्दम “எப்பொழுது ஜயம்
பெறும்
रघुनन्दन ரகுப்பிள்ளையாகிய
सौम्य புண்பாத்தமாவே!
एवकृते தேவரீர் செய்தருளி
शूद्रः சூத்திரனாகும் [யதில்
अयं இவன்
स्वर्गभाक् ஸவர்க்கப்புரத்திற்குரி
மையுடையவனாய்

न ஆகவில்லை.
हि ஆனதுபற்றி
एवं தேவரீர்
यत् எதை
इच्छसि திருவுள்ளத்தில் வை
த்திருக்கின்றீரோ
वरं च அந்த அபிப்பிராயத்
தை
गृहाण சொல்லியருள்கு.

देवानां भाषितं श्रुत्वा राघवः सुसमाहितः । उवाच प्राञ्जलिर्वाक्यं सहस्राक्षं पुरन्दरम् ॥

सुसमाहितः மகாபிரசிட்த்திபெற்ற
புண்பாத்தமாவாகிய
राघवः ஸ்ரீராகவர்
देवानां தேவர்களின்
भाषितं மொழிக்கு
श्रुत्वा திருச்செவிகாய்த்து

प्राञ्जलिः அஞ்சலிஹஸ்தராகி
सहस्राक्षं ஆயிரம்கண்ணான
पुरन्दरं இந்திரனைப் பார்த்து
वाक्यं இந்த மொழியை
उवाच திருவாய்மலர்ந்த
ருளினார்:

यदि देवाः प्रसन्ना मे द्विजपुत्रः स जीवतु । दिशन्तु वरमेतन्म ईप्सितं परमं मम ॥१०॥

देवाः “தேவர்கள்
मे எனக்கு
प्रसन्नाः அனுக்கிரஹம் செய்
கிறவர்கள்
यदि ஆகில்
सः அந்த
द्विजपुत्रः அந்தணனது புதல்
வன்

जीवतु பிழைத்தெழுக.
मम எனது
परमं முக்கியமான
ईप्सितं மனோபிஷ்டமாயிருக்
एतत् அந்த [கிறதாகிய
वरं பரிசை
मे எனக்கு
दिशन्तु தந்தருள்க.

ममापचाराद्यातोऽसौ ब्राह्मणस्यैकपुत्रकः । अप्राप्तकालः कालेन नीतो वैवस्वतक्षयम् ॥

ब्राह्मणस्य “அந்தணரது
एकपुत्रः ஏகபுத்திரன்
कालेन யமனால்
वैवस्वतक्षयं யமலோகத்திற்கு
नीतः எடுத்துக்கொண்டு
போய்விடப்பட்டான்.

अप्राप्तकालः குழந்தைப்பருவத்தி
असौ இவன் [வீருக்கும்
मम எனது
अपचारात् அபசாரத்தினால்
यातः இக்கதியை அடைந்த
னன்.

तं जीवयत भद्रं वो नानृतं कर्तुमर्हथ । द्विजस्य संश्रुतोऽर्थो मे जीवयिष्यामि ते सुतम् ॥

தன்
जीवयत
वः
भद्रं
ते
सुतं
जीवयिष्यामि

“அவனை
பிழைப்பூட்டுக.
உங்களுக்கு
இதுவே சாபல்ய
உமது [மாகும்.
மகனை
பிழைப்பூட்டுகிறேன்
என்று

मे
अर्थः
संश्रुतः
द्विजस्य
अनुते
कर्तुं
अर्हथ न

எனது
கடமை
வாக்களிக்கப்பட்டது.
வேதியனுக்கு
புகன்றவாக்கு பொய்
மொழியாவதை
நீங்கள்
செய்யலாகாது.”

राघवस्य तु तद्वाक्यं श्रुत्वा विबुधसत्तमाः । प्रयुञ्चु राघवं प्रीता देवाः प्रीतिसमन्वितम् ॥

विबुधसत्तमाः
देवाः
राघवस्य
तु
प्रीतिसमन्वितं
तत्

மகாஞானிகளாகிய
தேவர்கள்
ஸ்ரீராகவரது
இவ்விஷயத்தில்
பீரீதிகாரணமாய்
உள்ள முருகிவரும்
அந்த

वाक्यं
शुच्वा
प्रीताः
राघवं
प्रयुञ्चुः

திருவாக்குக்கு
திருச்செவியாய்த் து
பிரத்யுபகாரம்செய்யக்
கடமைப்பட்டவர்
களாகி
ஸ்ரீராகவரைப்பார்த்து
இந்தப்பதிலை திருவாய்
மலர்ந்தருளினார்;

निर्वृतो भव काकुत्स्थ सोऽस्मिन्नहनि बालकः । जीवितं प्राप्तवान्भूयः समेतश्चापि बन्धुभिः॥

काकुत्स्थ
सः
बालकः
अस्मिन्
अहनि च
भूयः
जीवितं

“ஹே காசுத்தரே!
அந்த
பாலகன்
இந்த
ஸஹினத்திலேயே
தீரும்பவும்
உயிரை

प्राप्तवान्
बन्धुभिः अपि
समेतः
निर्वृतः
भव

கண்டவனாய்
பந்துக்களோடேயும்
போய்ச்சேர்ந்து
விட்டான்.
மணக்கவலையொழிந்த
வராய்
ஆகும்.

यस्मिन्मुहूर्ते काकुत्स्थ शूद्रोऽयं विनिपातितः । तस्मिन्मुहूर्ते बालोऽसौ जीवेन समयुज्यत ॥

काकुत्स्थ
अयं शूद्रः
यस्मिन्
मुहूर्ते
विनिपातितः

“ஹே காசுத்தரே!
இந்த சூத்திரன்
எந்த
முகூர்த்தத்தில்
ஸம்ஹரிக்கப்பட்டா

तस्मिन्
मुहूर्ते
असौ
बालः
जीवेन
समयुज्यत

அதே
முகூர்த்தத்தில்
இந்த
பாலகன்
உயிருடன்
வாழ்ந்துவருகிறான்.

स्वस्ति प्राप्नुहि भद्रं ते साधु याम नरर्षभ । अगस्त्यस्याश्रमपदं द्रष्टुमिच्छाम राघव ॥

नरर्षभ
राघव
ते

“ஹே புருஷோத்தம!
ஹே ராகவ!
தேவரீருக்கு

साधु
भद्रं

சரியாய்
காரியசுத்தி ஆகி
விட்டது

स्वस्ति
प्राप्नुहि
अगस्त्यस्य
आश्रमपदं
द्रष्टुं

ஸகத்தை
நீர் அனுபவிப்பீராக.
அகஸ்தியரது
தபோவனத்தை
தரிசிக்க

इच्छामः
याम

நாங்கள் எண்ணம்
கொண்டிருக்கின்
றோம்.
நீராய் நாங்கள் அவ்
விடம் செல்லுகின்
றோம்.

तस्य दीक्षा समाप्ता हि ब्रह्मर्षेः सुमहाद्युतेः । द्वादशं हि गतं वर्षं जलशय्यां समासतः ॥

तस्य
सुमहाद्युतेः
ब्रह्मर्षेः
जलशय्यां
द्वादशं
वर्षं

“அந்த
மஹாபிரபாவசாஸி
யாகிய
பிரம்மரிஷிக்கு
ஜலத்திலேயே சயனித்
திருத்தலில்
பன்னிரண்டு
வருஷகாலம்

समासतः हि
गतं
दीक्षा हि
समाप्ता

கழியும் வகையை சற்
றேனுமுணராமலே
கழிந்து விட்டது.
தபலில் காயக்கலேச
த்திற்கு ஸங்கல்பித்
துக்கொண்டிருந்த
காலமும்
முடிவுபெற்றது.

काकुत्स्थ तद्गमिष्यामो मुनिं समभिनन्दितुम् । त्वं चाप्यागच्छ भद्रं ते द्रष्टुं तमृषिसत्तमम् ॥

काकुत्स्थ
मुनिं
समभिनन्दितुं
तत्
गमिष्यामः
एवं च

“ஹே காசுத்தரே!
ரிஷியை
கண்டு போற்றுவ
அவ்விடத்திற்கு[தற்கு
போகிறோம்.
தேவீரும்

तं ऋषिसत्तमं
द्रष्टुं
आगच्छ
ते अपि
भद्रम्

அந்த மஹரிஷியிடம்
தரிசிக்க
கூடவர திருவுள்ளம்
கொள்ளவேண்டும்.
தேவீருக்கும்
நன்மை விளையும்.”

स तथेति प्रतिज्ञाय देवानां रघुनन्दनः । आरुरोह विमानं तं पुष्पकं हेमभूषितम् ॥१९॥

सः
रघुनन्दनः
देवानां
तथा
इति
प्रतिज्ञाय

அந்த
ரகுந்தனர்
தேவர்களுக்கு
அவ்வண்ணமே
செய்வதாகி
உடன்பட்டு

हेमभूषितं
तं
पुष्पकं विमानं
आरुरोह

ஸவரணத்தாலலங்
கரிக்கப்பட்டதான
அந்த
புஷ்பகவிமானத்தில்
ஏறினார்.

ततो देवाः प्रयातास्ते विमानैर्बहुविरैः । रामोऽप्यनुजगामाशु कुम्भयोनेस्तपोवनम् ॥

ते देवाः
बहुविरैः
विमानैः
ततः
कुम्भयोनेः

அந்த விண்ணவர்கள்
பலவகையான
விமானங்களிலேறிக்
கொண்டு
இவ்விடத்திலிருந்து
அகஸ்தியமுனிவரது

तसोवनं
आशु
प्रयाताः
रामः अपि
अनुजगाम

தபோவனத்திற்கு
விரைவில்
சென்றார்கள்.
ஸ்ரீராமரும்
பின்தொடர்ந்து
சென்றார்.

त्वं मे बहुमतो राम गुणैर्बहुभिस्तुमैः । अतिथिः पूजनीयश्च मम नित्यं हृदि स्थितः ॥

| | |
|---------|------------------------------|
| ராம | “ஹே ஸ்ரீராம! |
| बहुभिः | எண்ணிறந்த |
| उत्तमैः | உத்தம |
| गुणैः | குணங்களால் |
| पूजनीयः | பூஜிக்கத்தக்க பெரி யோராய் |
| नित्यं | எப்பொழுதும் |
| मे | எனக்கு |

| | |
|----------|---|
| बहुमतः | ஸர்வமுமாய் |
| मम | எனது |
| हृदि | உள்ளத்தில் |
| स्थितः च | { ஆவாஹனம் செய்து வைக்கப்பட்டிருக் கிறவருமாகிய |
| त्वं | தேவரீர் |
| अतिथिः | அதிதியாய் விளங்கு கிறீர். |

सुरा हि कथयन्ति त्वामागतं शूद्रघातिनम् । ब्राह्मणस्य तु धर्मेण त्वया जीवापितः सुतः ॥

| | |
|-------------|-----------------------------------|
| ब्राह्मणस्य | “பிராம்மணனது |
| सुतः | மகன் |
| त्वया | தேவரீரால் |
| जीवापितः | பிழைப்பூட்டப்பட்ட டான் என்றும் |
| तु | இது விஷயத்தில் |
| धर्मेण | தர்மவிதிப்பிரகாரம் |

| | |
|-------------|-------------------------------------|
| त्वं | தேவரீரை |
| शूद्रघातिनं | குத்திரனைக் கொன் றவராயும் |
| आगतं हि | இங்கு எழுந்தருளி யிருப்பவராகவும் |
| सुराः | தேவர்கள் |
| कथयन्ति | சொன்னார்கள். |

उष्यतां चेह रजनी सकाशे मम राघव । प्रभाते पुष्पकेण त्वं गन्तासि पुरमेव हि ॥२८॥

| | |
|----------|------------------------------|
| राघव | “ஹே ராகவா! |
| इह च | இவ்விடத்திலேயே |
| मम | என் |
| सकाशे हि | அருகேயே |
| रजनी | இன்றிரவு |
| उष्यतां | இருந்து கழிக்கப் பட்டும். |

| | |
|------------|---------------------------------|
| त्वं | தேவரீர் |
| प्रभाते एव | நானைக் காலைபிலேயே |
| पुष्पकेण | புஷ்பகவிமானத் திலேறிக்கொண்டு |
| पुरं | நகரத்திற்கு |
| गन्तासि | எழுந்தருள்க. |

त्वं हि नारायणः श्रीमांस्त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम् । त्वं प्रभुः सर्वभूतानां पुरुषस्त्वं सनातनः ॥

| | |
|-------------|--------------------|
| त्वयि | “தேவரீரிடத்தில் |
| सर्वं | ஸகலமும் |
| प्रतिष्ठितं | அடங்கியிருக்கிறது. |
| सर्वभूतानां | ஸகல பூதங்களுக்கும் |
| त्वं | தேவரீர் |
| प्रभुः | பிரபு. |

| | |
|---------------|----------------------------|
| त्वं | தேவரீர் |
| सनातनः पुरुषः | ஆதிபுருஷன். |
| त्वं | தேவரீர் |
| श्रीमान् | ஸ்ரீயின் பதியான |
| नारायणः हि | ஸ்ரீமந்நாராயண மூர்த்தி. |

इदं चाभरणं सौम्य निर्मितं विश्वकर्मणा । दिव्यं दिव्येन वपुषा दीप्यमानं स्वतेजसा ॥
प्रतिगृह्णीष्व काकुत्स्थ मत्प्रियं कुरु राघव ॥ ३० ॥

சௌம்ய “ஹே புண்யா த்மாவே!
காகுத்ய ஹே காருத்தரே!
விஷ்வகர்மணா விச்வகர்மாவினால்
நிர்மிதம் செய்யப்பட்டதும்
திவ்யேன அற்புதமான
வபுஷா உருவத்தால்
திவ்யம் மிக்க அழகாயிருக்கிறதும்

स्वतेजसा பிறவிக்குணமாகிய தேஜஸால்

दीप्यमानं च ஜ்வலித்துக்கொண்டி
इदं இந்த [ருக்கிரதூமான
आभरणं ஆபரணத்தை
प्रतिगृह्णीष्व தேவரீர் வெகுமதியாய் பற்றுக்கொள்ள வேண்டும்.
राघव ஹே ராகவ!
मत्प्रियं எனக்குபேருதவியாகும் அனுக்கிரகத்தை
कुरु தேவரீர் செய்தருள்க.

दत्तस्य हि पुनर्दाने सुमहत्कलमुच्यते । भरणे हि भवाञ्छक्तः सेन्द्राणां मरुतामपि ॥

दत्तस्य “தானமாய்க் கிடைத்ததற்கு
पुनः புதிதாய்
दाने { வேறிடத்தில் பஹுமானமாய் உரிமை செய்துவிடுவதில்
सुमहत् விசேஷ
फलं புண்யபலமுண்டென

उच्यते हि { தெரிந்தவர்கள் சொல்லியிருக்கின்றார்கள்ன்றோ?
भरणे அணிர்த்துகொள்ளும் விஷயத்தில்
भवान् हि தேவரீரே
सेन्द्राणां இந்திரனுள்ளிட்ட
मरुतां अपि தேவர்களுக்கெல்லாம்
शक्तः ஏற்றவர். [மேலாய்

तस्मात्प्रदास्ये विधिवत्प्रतीच्छ नराधिप ॥ ३२ ॥

तस्मात् “ஆகலின்
विधिवत् விதிமுறைப்படி
प्रदास्ये நான் தானம் செய்து கொடுக்கிறேன்.

नराधिप ஹே புருஷோத்தம!
तत् அதை
प्रतीच्छ பிரதிக்கிரஹம் செய்தருள்க”.

तद्रामः प्रतिजग्राह मुनेस्तस्य महात्मनः । दिव्यमाभरणं चित्रं प्रदीप्तमिव भास्करम् ॥

रामः ஸ்ரீராமர்
तस्य அந்த
महात्मनः மஹாத்மாவான
मुनेः முனிவருடைய
चित्रं அதி அற்புதமாய்
प्रदीप्तं கொழுந்துவிட்டுடெரியும்

भास्करं इव தீயைப்போல்
दिव्यं ஜோதியமாய் விளங்கும்
तत् அந்த
आभरणं ஆபரணத்தை
प्रतिजग्राह கையேந்தி வாங்கிக் கொண்டார்.

प्रतिगृह्य ततो रामस्तदाभरणमुत्तमम् । आगमं तस्य दीप्तस्य प्रष्टुमेवोपचक्रमे ॥ ३४ ॥

ராம: ஸ்ரீராமர்
 उत्तमं உத்தமமான
 तत् अந்த
 आभरणं ஆபரணத்தை
 प्रतिगृह्य பெற்றுக்கொண்டு

ततः एव அதன்பின்னரே
 दीप्तस्य ஜோதிமயமாய்
 तस्य அதின் [கிளங்கும்
 आगमं வரலாற்றை
 प्रष्टुं उपचक्रमे வினவலாயினர்.

अत्यद्भुतमिदं दिव्यं वपुषा युक्तमुत्तमम् । कं भगवता प्राप्तं कुतो वा केन वा हृतम् ॥

வபுஷா “உருவத்தால்
 उत्तमं எதற்கும் மேலாய்
 युक्तं கிளங்குகிறதும்
 अत्यद्भुतं அற்புதமான
 दिव्यं அழகுவாய்ந்து விளங்குகிறதும்
 भगवता தேவீரால்

कुतः वा எவ்வகையிலோ
 केन वा எக்காரணத்தாலோ
 हृतं கையேந்திவாங்கப்பட்ட
 इदं இது
 कथं எங்ஙனம்
 प्राप्तम् அடையப்பட்டது?

कुतूहलितया ब्रह्मन्पृच्छामि त्वां महायज्ञः । आश्चर्याणां बहूनां हि निधिः परमको भवान् ॥

भज्ञान् हि “தேவீரோ
 आश्चर्याणां ஆச்சரிய விஷயங்
 कनिष्ठा
 बहूनां எண்ணிறந்ததற்கு
 परमको ஸர்வோக்கிருஷ்ட
 माक्य
 निधिः சமுத்திரம்.

महायज्ञः மகாயசன்வியாகிய
 ब्रह्मन् மஹரிஷியே,
 कुतूहलितया { விஷயங்களை கேட்ட
 न्ययवेणुमेणुम्
 अवविणुम्
 त्वां தேவீரே
 पृच्छामि நான் வினாவலானேன்.”

एवं ब्रुवति काकुत्स्थे मुनिर्वाक्यमथाब्रवीत् । शृणु राम यथावृत्तं पुरा त्रेतायुगे युगे ॥

காகுத்தே காகுத்தர்
 एवं இங்ஙனம்
 ब्रुवति கேட்டருளியதும்
 मुनिः ரிஷி
 अथ பின்வரும்
 वाक्यं மொழியை
 अभवीत् திருவாய்மலர்ந்தருளி
 राम “ஹே ஸ்ரீராம! [ஊர்:

त्रेतायुगे திரேதாயுகமென்ப
 युगे யுகத்தில்
 पुरा முன்னொருகால்
 यथावृत्तं நடைபெற்ற ஒரு விஷயத்தின் விவரத்தை
 शृणु கேட்பிராக.”

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे षट्सप्ततितमः सर्गः ॥



सप्तसप्ततितमः सर्गः—எழுபத்தேழாவது ஸர்க்கம். || ७७ ||

स्वर्गिप्रश्नः—அகஸ்தியமுனி திவ்வியபுருடனிடத்தில் கேள்ப்பது

पुरा त्रेतायुगे राम हरण्यं बहुविस्तरम् । समन्ताद्योजनशतं निर्मृगं पक्षिवर्जितम् ॥ १ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|-----------------|---------------------|
| ராம | “ஹே ஸ்ரீராம! | யோজনசதம் | நாமயோஜனை தூரம் |
| வேதாயுगे | தீர்தாயுகத்தில் | | வரையில் |
| पुरा | முன்பு | निर्मृगं | மிருகங்கள் யாதுமில் |
| बहु विस्तरं | அதிகவிஸ்தீர்ண | पक्षिवर्जितं हि | லாததாய் |
| | (முள்ளதாய் | अरण्यम् | பறவைகள் யாதுமில் |
| समन्तात् | சுற்றி எல்லாப்பக்கங் | | லாததாயும் |
| | களிலும் | | ஓர் ஆரண்யமாயிருந் |
| | | | தது. |

तस्मिन्निर्मानुषेऽरण्ये कुर्वाणस्तप उत्तमम् । अहमाक्रमितुं सौम्य तदरण्यमुपागमम् ॥ २ ॥

| | | | |
|------------|----------------|------------|-----------------------|
| सौम्य | “ஹே புண்யாத்மா | कुर्वाणः | இயற்றிக்கொண்டி- |
| तस्मिन् | அந்த [வே! | अहं | நான் [ருந்த |
| निर्मानुषे | நிர்மாணுஷ்யமான | आक्रमितुं | சுற்றிப்பார்ப்பதற்கு |
| अरण्ये | அரண்யத்தில் | तत् अरण्यं | அந்த அரண்யத்தில் |
| उत्तमं | ஒரு மிகப்பெரிய | उपागमम् | ஒருகாலத்தில் எங் |
| तपः | தவத்தை | | கும் அலைந்திருந்தேன். |

तस्य रूपमरण्यस्य निर्देष्टुं न शशाक ह । फलमूलैः सुखास्वादैर्बहुरूपैश्च काननैः ॥ ३ ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|---------------|---|
| फलमूलैः च | “பழங்களாலும் கிழங் | अरण्यस्य | அரண்யத்தினுடைய |
| | குகளாலும் | रूपं | அமைப்பை |
| सुखास्वादैः | மனோஹரமாய் | निर्देष्टुं ह | { இத்தன்மையதென மனதில் வாங்கிக் கொள்வதற்கும் |
| बहुरूपैः | பலவகைப்பட்டவை | | |
| | களாயிருக்கும் | न शशाक | அஸாத்தியமாயிருந் |
| काननैः | உபவனங்களால் | | தது. |
| तस्य | அந்த | | |

तस्यारण्यस्य मध्ये तु सरो योजनमायतम् । हंसकारण्डवाकीर्णं चक्रवाकोपशोभितम् ॥

पद्मोत्पलसमाकीर्णं समतिक्रान्तशैवलम् । तदाश्चर्यमिवात्यर्थं सुखास्वादमनुत्तमम् ॥ ५ ॥

अरजस्कं तथाऽक्षोभ्यं श्रीमत्पक्षिणाणायुतम् । समीपे तस्य सरसो महद्भ्रुतमाश्रमम् ॥ ६ ॥

| | | | |
|------------------------|--|-------------------------|---|
| तत् | “அப்பொழுது | चक्रव.क.प- शोभितं | } சக்ரவாகங்களால் அழகுபெற்றதும் |
| तस्य | அந்த | | |
| अरण्यस्य | அரண்யத்தினுடைய | पद्मोत्पल- समाकीर्णं | } தாமரை நெய்தல் இவைகளால் எங்கும் நிறையப்பெற்றதும் |
| मध्ये | மத்தியில் | | |
| योजनं | ஒரு யோஜனை | समतिक्रान्त- शैवलं | } பாசி என்பதையே கண்டிராததும் |
| आयतं | நீளமுள்ளதும் | | |
| हंसकारण्डवा- कीर्णं | { ஹம்ஸங்கள், காரண் டவங்கள் இவைகளால் நிறையப்பெற்றதும் | अनुत्तमं | ஒப்புயர்விலா தபடி |
| | | | अत्यर्थं |

अश्वर्यं इव सुखास्वदं
 अक्षोभं
 श्रीमत्
 पक्षिणायुतं
 तथा

அமானுஷ்யமானதும்
 அதிமனோஹரா
 மானதும்
 பயந்தேகாடவேணுமெ
 னும்மனைக்கவலையின்
 றிமிக்க அழகாய்
 பறவைக்கூட்டங்க
 ளால் நிறையப்பெற்று
 விளங்குகிறதும்
 அப்படியும்

अरजस्कं तु
 सरः
 तस्य
 सरसः समीपे
 महत्
 अद्भुतं
 आश्रमम्

கிரீமலமாயிருக்கிற
 துமான
 ஒரு பெரியபொய்கை
 அந்த [இருந்தது.
 பொய்கைக்கருகில்
 அதிக
 அழகுவாய்ந்த
 ஆசிரமம் ஒன்றி
 ருந்தது

पुराणं पुण्यमत्यर्थं तपस्विजनवर्जितम् । तत्राहमवसं रात्रिं नैदार्थी पुरुषर्षभ ॥ ७ ॥

पुरुषर्षभ
 पुराणं
 अत्यर्थं
 पुण्यं

“ஹே புருஷோத்தம!
 வெகுகாலத்திற்கு
 முன் ஏற்பட்டதாயும்
 அதி
 மனோஹரமானதும்

तपस्विजनवर्जितं
 तत्र
 नैदार्थी
 रात्रिं
 अहं अवसम्

ஒரு தவசியுமில்லாதது
 அவ்விடத்தில் [முகிய
 கோடைக்காலத்திய
 ழுர் இரவை
 நான் கழித்தேன்.

प्रभाते काल्यगुन्थाय सरस्तदुपचक्रमे । अथापश्यं शवं तत्र सुपुष्टमरजः क्वचित् ॥ ८ ॥

प्रभाते
 काल्यं
 उरथाय
 तत् सरः
 उपचक्रमे
 अथ

“சூர்யோதயத்தில்
 விதிப்படி துயிலெழு
 வேண்டியகாலத்தில்
 எழுந்து
 அந்தப் பொய்கைக்கு
 சென்றேன்.
 அப்பொழுது

तत्र
 शवं
 क्वचित्
 सुपुष्टं
 अरजः
 अपश्यम्

அதில்
 ஒரு மனிதப்பிணத்
 அப்போதும் [தை
 புஷ்டியுள்ளதாயும்
 பரிசுத்தமாயிருப்ப
 தாயும்
 நான் கண்டேன்.

पङ्क्तिभेदेन पुष्टाङ्गं समाश्रितसरोवरम् । तिष्ठन्तं परया लक्ष्म्या तस्मिस्तोयाशये नृप ॥ ९ ॥
 तमर्थं चिन्तयानोऽहं सुहूर्तं तत्र राघव । विस्मितोऽस्मि सरस्तीरे किं न्विदं स्यादिति प्रभो ॥

प्रभो
 नृप
 राघव
 तस्मिन्
 तोयाशये
 पुष्टाङ्गं

“ஹே பிரபோ!
 சக்கிரவர்த்தியாரே!
 ராகவ!
 அந்த
 தடாகஜலத்தில்
 புஷ்டியான தேஹ
 முடையதாய்

पङ्क्तिभेदेन }
 तत्र }
 किं नु इदं स्यात् इति
 तं
 अर्थं
 अहं
 सरस्तीरे
 चिन्तयानः
 सुहूर्तं
 विस्मितः अस्मि

போஜனப்பந்தியில்
 செய்யும் பக்ஷபாதந்
 தான் காரணமாயிரு
 ந்தபோதிலும்
 ‘இதென்ன’ என்று
 அதன்
 வாஸ்தவமான
 நான் [காரணத்தை
 பொய்கைக்கரையில்
 சிந்தித்தவாறே
 ஒரு முகூர்த்தகாலம்
 பிரமித்து நின்று
 விட்டேன்.

समाश्रितसरोवरं
 परया
 लक्ष्म्या
 तिष्ठन्तं

பொய்கையே தன்னிட
 மாய்க்கொண்டதாய்
 மிக்க
 சோபையோடு
 மிதக்கின்றதாய்

कस्य स्यादीदृशो भाव आहारो देवसम्मतः । आश्रय्यं वर्धते सौम्य श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥

| | | | |
|-------------|--------------------------------------|-----------|---|
| சௌம்ய | “ஹே புண்யாத்மா ! | கச்ய | யாருக்கு |
| தத்வத: | உண்மையில் | ச்யாத் | ஏற்படும் என்கிற |
| தேவசம்மத: | தேவர்கள் ஒப்புக் கொண்டு | ஆசர்ய்யம் | விஷயம் தெரியாமல் பிரமித்து நிற்கும் |
| भाव: | நிர்ணயிக்கப்பட்டிருக் கிற துமாகிய | वर्धते | வளருகிறது. [நிலைமை |
| ईदृशः आहारः | இப்படிப்பட்ட உணவு | श्रोतुं | திருவாக்கைக் கேட்க காத்து நிற்கின்றேன்.” |
| | | इच्छामि | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे सप्तसप्ततितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23267



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2543

अष्टसप्ततितमः सर्गः—எழுபத்தேட்டாவது ஸர்க்கம். ॥ 32 ॥

श्वेतराजोपाख्यानम्—சுவேதமஹாராஜனின் சரித்திரம்.

श्रुत्वा तु भणितं वाक्यं मम राम शुभाक्षरम् । प्राञ्जलिः प्रत्युवाचेदं स स्वर्गी रघुनन्दन ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|------------|-----------------------------|
| ர஘ுநந்ந | “ஹே ரகுநந்தன ! | प्राञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ்தராசினி |
| राम | ஹே ராம ! | शुभाक्षरं | இனிபமொழியாயிருக் கிற |
| स्वर्गी | ஸ்வர்க்கவாஸியாகிய | | |
| सः | அவர் | इदं | பின்வரும் |
| मम | எனது | वाक्यं | மொழியை |
| भणितं | பேச்சை | प्रत्युवाच | திருவாய்மலர்ந்தருளி ரை : |
| श्रुत्वा तु | கேட்டருளியபின்னர் | | |

शृणु ब्रह्मपुरावृत्तं ममैतत्सुखदुःखयोः । दुरतिक्रमणीयं हि यथा पृच्छसि मां द्विज ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------------|------------------|--|
| द्विज | “ஹே வேதய ! | पृच्छसि | தேவரீர் கேட்டருளி ன்றோ |
| ब्रह्मन् | முனிவரே ! | | |
| मम | எனது | पुरावृत्तं | பூர்வீகத்தில் நடை பெற்றதும் |
| सुखदुःखयोः | சுகம் துக்கம் இவ்விர ண்டையும்பற்றி | दुरतिक्रमणीयं हि | விலக்கமுடியாமலிருக் புத்த |
| यथा | எதை | शृणु | அதை [கிற துமாகிய கூறுகின்றேன், கேளும். |
| मां | என்னை | | |

पुरा वैदर्भको राजा पिता मम महायशाः । सुदेव इति विख्यातस्त्रिषु लोकेषु वीर्यवान् ॥

| | | | |
|---------|----------------|---------------|------------------------------|
| पुरा | “பூர்வத்தில் | वैदर्भकः | விதர்ப்பதேசத்தரசர். |
| मम | எனது | त्रिषु | மூன்று |
| राजा | பிரபுவும் | लोकेषु | உலகங்களிலும் |
| पिता | பிதாவுமாகிய | वीर्यवान् इति | வீர்யவந்தரென |
| सुदेवः | ஸுவேதவரென்பவர் | विख्यातः | மிக்க பிரசித்தி பெற்றவர். |
| महायशाः | மகா புகழ்பெற்ற | | |

तस्य पुत्रद्वयं ब्रह्मन्दाभ्यां स्त्रीभ्यामजायत । अहं श्वेत इति ख्यातो यवीयान्सुरयोऽभवत् ॥

ब्रह्मन् “**ஹே முனிவரே!**
तस्य **அவருக்கு**
द्वाभ्यां **இரண்டு**
स्त्रीभ्यां **மனைவியர்களிடத்தில்**
पुत्रद्वयं **இரண்டு புதல்வர்கள்**
अजायत **பிறந்தார்கள்.**

अः **நான்**
श्वेतः **சுவேதன்**
इति **என்று**
ख्यातः **பெயரிடப்பட்டேன்.**
यवीयान् **தம்பி**
सुरयः **சுரதனென்று**
अभवत् **இருந்தான்.**

ततः पितरि स्वयाति पौरा मामभ्यषेचयन् । तत्राहं कृतवान्नाज्यं धर्म्यं च सुसमाहितः ॥

पितरि “**தந்தை**
स्वयाति ततः **ஸ்வர்க்கமடைந்த**
பின்னர்
पौरा **பட்டணத்துப்பிரஜை**
मां **எனக்கு [கள்]**
अभ्यषेचयन् **பட்டாபிஷேகம்**
செய்துவைத்தார்கள்.

तत्र **அனதால்**
अहं **நான்**
सुसमाहितः **அதிதெய்வபக்தியு**
டையவனுய்
धर्म्यं च **முன்னோர்களின் அனு**
ஷ்டானங்களை யொத்த
राज्यं **பிரஜாபரிபாலனத்தை**
कृतवान् **செய்துவந்தேன்.**

एवं वर्षसहस्राणि समतीतानि सुव्रत । राज्यं कारयतो ब्रह्मन्प्रजा धर्मेण रक्षतः ॥ ६ ॥

सुव्रत “**தருமாத்மாவாகிய**
ब्रह्मन् **ஹே முனிவர் பெரு**
மானே!

प्रजाः **பிரஜைகளை**
धर्मेण **தருமமாக**
रक्षतः **பரிபாலித்துவந்தவனு**
மான எனக்கு

एवं **இவ்வண்ணம்**
राज्यं **அரசாட்சியை**
कारयतः **செய்துவருகிறவனுய்**

वर्षसहस्राणि **ஆயிரமாண்டுகள்**
समतीतानि **கழிந்தன.**

सोऽहं निमित्ते कस्मिंश्चिद्विज्ञातायुर्द्विजोत्तम । कालधर्मं हृदि न्यस्य ततो वनमुपागमम् ॥

द्विजोत्तम “**ஹே பிராம்மணே**
सः **அந்த [த்தமா!]**
अहं **நான்**
कस्मिंश्चित् **ஏதோ ஒரு**
निमित्ते **நிமித்தத்தால்**
विज्ञातायुः **வாணள் இவ்வள**
வெனத்தெரிந்துகொ
ண்டவனுய்

कालधर्मं **மரணகாலத்தை**
हृदि **மனதில்**
न्यस्य **தீர்மானித்துக்கொ**
ततः **அதனால் [ண்டு]**
वनं **தெய்வ ஆராதனையை**
उपागमम् **ஸ்வமுடாய் மனதில்**
கொண்டேன்.

सोऽहं वनमिदं दुर्गं मृगपक्षिविवाजितम् । तपश्चतुर्विधोऽस्मि समीपे सरसः शुभे ॥ ८ ॥

सः अहं “**அந்த நான்**
सरसः **தடாகத்திற்கு**
शुभे **வாய்ந்து விளங்குகிற**
समीपे **அக்கம்பக்கமிருக்கும்**
ஸ்தலத்தில்
तसः **தவத்தை**

चतुर्विधं **புரிவதற்கு**
मृगपक्षिविवाजितम् **மிருகங்கள் பறவை**
கள் இல்லாததும்
दुर्गं **பிறருக்கு புகப்படா**
हृदि **இந்த [ததுமாகிய**
वनं **வனத்திற்கு**
प्रविष्टः अस्मि **வந்துசேர்ந்தேன்.**

भ्रातरं सुरथं राज्ये ह्यभिषिच्य पृथीपतिम् । इदं सरः समासाद्य तपस्तप्तं मया चिरम् ॥

ஆதரம் "தம்பியாகிய
சுரதம் ஹி ஸுரதனையே
ராஜ்யம் ராஜ்யத்தில்
மஹிபதி மஹிபதியாய்
அபிஷிச்ய முடிசூட்டிவிட்டு
இதம் இந்த

சர: தடாகத்தை
சமாஸாடி உடைந்து
மயா என்னால்
சிர் வெகுதூரம் வரைக்
தப: தவம் [கும்
தஸம் புரியப்பட்டது.

सोऽहं वर्षसहस्राणि तपस्वीणि महावने । तप्त्वा सुदुष्करं प्राप्तो ब्रह्मलोकमनुत्तमम् ॥१०॥

ச: "அந்த
அஹ் நான்
மஹாவனே பெருங்காணில்
ஸ்வீணி மூன்று
வर्षसहस्राणि ஆயிரமாண்டளவு
सुदुष्करं மகாபிரயாசையான

தப: தவத்தை
तप्त्वा புரிந்து
अनुत्तमं ஸர்வவாக்கிருஷ்ட
மாகிய
ब्रह्मलोकं பிரம்மலோகத்தை
प्राप्तः அடைந்தேன்.

तस्य मे स्वर्गभूतस्य क्षुत्पिपासे द्विजोत्तम । वाधेते परमोदार ततोऽहं व्यथितेन्द्रियः ॥

गत्वा त्रिभुवनश्रेष्ठं पितामहमुवाच ह

॥ ११ ॥

परमोदार "அதி அன்பு காட்டு
கிற
द्विजोत्तम பிராமணசிகாமணியே,
स्वर्गभूतस्य ஸ்வர்க்கவாஸம்
तस्य अन्त [பெற்ற
मे எனக்கு
क्षुत्पिपासे பசியும் தாகமும்
वाधेते ஓயாததுண்பயிற்
ततः அதனால் [றின.

ஹ ஐயோ
अहं நான்
व्यथितेन्द्रियः இரத்திரியங்களால்
லாம் தளர்ந்தவனாய்
त्रिभुवनश्रेष्ठं மூவுலகங்களுக்கும்
தலைவரான
पितामहं பிரம்மதேவரிடம்
गत्वा சென்று
उवाच இங்ஙனம் விண்ணப்
பம் செய்தேன்:

भगवन्ब्रह्मलोकोऽयं क्षुत्पिपासाविवर्जितः । कस्यायं कर्मणः पाकः क्षुत्पिपासानुगो ह्यहम् ॥

भगवन् "ஸ்வாமி!
अयं இந்த
ब्रह्मलोकः பிரம்மலோகம்
क्षुत्पिपासा- } பசி, தாகங்களுக்கிட
विवर्जितः } மில்லாதது.
अहं हि நாளை

क्षुत्पिपासानुगः { பசிக்கும் தாகத்திற்
கும் அடிமையாயி
ருக்கிறேன்.
अयं पाकः இந்த தலையெழுத்து
कस्य எந்த
कर्मणः பூர்வகருந்தயத்துடை
யது?

आहारः कश्च मे देव तन्मे ब्रूहि पितामह

॥ १३ ॥

पितामह देव "ஹே பிரம்மதேவரே!
मे எனக்கு
आहारः कः च உணவு எது?

मे எனக்கு
तत् அதை
ब्रूहि சொல்லியருள்க.

पितामहस्तु मामाह तवाहारः सुदेवज । स्वादूनि स्वानि मांसानि तानि भक्षय नित्यशः ॥

| | | | |
|---------|--|----------|---------------------------------|
| पितामहः | “ பிரம்மதேவர் இது விஷயத்தில் என்னைப்பார்த்து இப்படி அருளினார். ஸுதேவன் மைந்த அந்த [னே ! உன்னுடையதாயிருக் கிறவைகளும் | स्वाद् न | ருசுகரமாயிருக்கின்ற வைகளுமான |
| तु मां | | मांसानि | சரீரத்தசைகளை |
| आह | | नित्यशः | நாள்தோறும் |
| सुदेवज | | भक्षय | நீ தின்னவேண்டும். |
| तानि | | तव | உனக்கு |
| स्वानि | | वाहारः | உணவிதுவே. |

स्वशरीरं त्वया पुष्टं कुर्वता तप उत्तमम् । अनुसं रोहते श्वेत न कदाचिन्महाते ॥ १५ ॥

| | | | |
|---------|---------------------------|----------|--------------------------------------|
| महाते | “ குஷ்டமபுத்தியு டைய | उत्तं | உத்தமமான |
| श्वेत | ஹே சுவேத ! | तपं | தவத்தை |
| कदाचित् | முன்னமேயே | कुर्वता | புரிந்துகொண்டிருந்த |
| अनुसं | விதைக்காதது | त्वया | உன்னால் |
| रोहते न | இப்பொழுது முளைக் காது. | स्वशरीरं | உனது உடல் |
| | | पुष्टम् | அதி ஆதரவுடன் போ ஷித்துவாப்பட்டது. |

दत्तं न तेऽस्ति सूक्ष्मोऽपि तप एव निषेवसे । तेन स्वर्गगतो वत्स बाध्यसे धृतिपासया ॥

| | | | |
|----------|-------------------------------|---------------|--------------------------|
| वत्स | “ ஹே வத்ஸ ! | दत्तं | சரீரார்ப்பணம் |
| तपः एव | தெய்வத்த்யானத்தை மாத்திரம் | न अस्ति | உண்டாகவில்லை. |
| सूक्ष्मः | நாஜுக்காய்செய்கின் | तप्त | அதனால் |
| निषेवसे | நீ புரிந்தனை. [மவனால் | धृतिपासया | பசிநாகங்களால் |
| ते | உனக்கு | स्वर्गगतः अपि | ஸ்வர்க்கவாலியாகியும் |
| | | बाध्यसे | நீ வாதைப்படுகின் றனை. |

स त्वं सुपुष्टमाहारैः स्वशरीरमनुत्तमम् । भक्षयित्वाऽमृतरसं तेन तृप्तिर्भविष्यति ॥ १७ ॥

| | | | |
|----------|-------------------------------|----------|-------------------------------------|
| सः त्वं | “ அந்த நீ | अमृतरसं | அமிருகமாய் |
| आहारैः | பல உணவுகளால் | भक्षयिचा | தின் றுவிட்டு |
| सुपुष्टं | அதி ஆதரவுடன் போ ஷித்துவந்த | तेन | அதனால் |
| स्वशरीरं | உனது பிரேதத்தை | तृप्तिः | இனி ஆஹாரம் தே வையில்கூட எனும் தெ |
| अनुत्तमं | ஸர்வோ த்கிருஷ்ட மான | भविष्यति | உண்டாகும். [விட்டல் |

यदा तु तद्वनं श्वेत अगस्त्यः सुमहानृषिः । आगमिष्यति दुर्धर्षस्तदा कृच्छ्राद्विमोक्ष्यसे ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------|---------------|---------------------|
| श्वेत | “ ஹே சுவேத ! | सुमहान् | மகா பிரசித்திபெற்றவ |
| तु | இருந்தாலும் | अगस्त्यः ऋषिः | அகஸ்தியரிஷி [ராகிய |
| तत् वनं | அவ்வனத்திற்கு | आगमिष्यति | எழுந்தருளுகிறாரோ |
| यदा | எப்பொழுது | तदा | அப்பொழுது |
| दुर्धर्षः | எவருக்குமேம்பட்ட வரென | कृच्छ्रात् | வாதையிலிருந்து |
| | | विमोक्ष्यसे | விடுவோ சன்மடைவாய். |

स हि तारयितुं सौम्य शक्तः सुरगणानपि । किं पुनस्त्वां महाबाहो क्षुत्पिपासावशं गतम् ॥

சௌம்ய
மகாபாஹோ
ச: ஹி
சுரகாணாந் அபி
தாரயிதும்
சக்த:
“கிதருத
சாமர்த் தியசாலியே!
அவரோ
தேவர்குழாங்களைபும்
தூர்தகைசகளினின்று
விடுவிக்க
கிறமுள்ளவர்.

ஆதிபாசாவசம்
பசியாலும் தாகத்தா
லும் வாதைப்படுபவ
ளாய்
கஷ்டப்பட்டுக்கொண்
டிருக்கிற
உள் விஷயத்தில
கேட்கவேண்டுமோ?

सोऽहं भगवतः श्रुत्वा देवदेवस्य निश्चयम् । आहारं गहितं कुर्मि स्वशरीरं द्विजोत्तम ॥

द्विजोत्तम
स:
अहं
भगवतः
देवदेवस्य
“ஹே த்விஜோத்
தம!
அந்த
நான்
மகாபூஜ்யராகிய
தேவர்களுக்கும் தேவ
ருடைய

निश्चयं
श्रुत्वा
गहितं
स्वशरीरं
आहारं
कुर्मि
தீர்மானத்தை
ஏற்றுக்கொண்டு
நிக்ருஷ்டமான
எனது உடலை
உணவாய்
உட்கொண்டுவருகி
றேன்.

बहून्वर्षगणान्ब्रह्मन्भुज्यमानमिदं मया । क्षयं नाभ्येति ब्रह्मर्षे वृषिश्चापि ममोत्तमा ॥२१॥

बहून्
ब्रह्मर्षे
मया
बहून्
वर्षगणान्
भुज्यमानं
“வேதவித்தாகிய
வேதியமுனிவரே!
என்னால்
அனேக
ஆண்டுகளாய்
புகித்தவரப்படுகிற
தாகிய

इदं
क्षयं च
मम
उत्तमा
वृषिः अपि
न अभ्येति
இதற்கு
இளைத்தலென்பதும்
எனக்கு
மகாப்பெரிதாகிய
போதும் இனி வேண்
டாமெனும் தெவிட்
டலும்
ஏற்படவில்லை.

तस्य मे कृच्छ्रभूतस्य कृच्छ्रादस्माद्विमोचय । अन्येषां न गतिर्हितं कुम्भयोनिमृते द्विजम् ॥

कृच्छ्रभूतस्य
तस्य
मे
अस्मात्
कृच्छ्रात्
विमोचय
हि
“தூர்தகைசபிலிருக்
அந்த [சும்
எனக்கு
இந்த
கஷ்டத்தினின்று
தேவரீர் விடுதலை தந்
தருளவேண்டும்.
ஏனெனில்

अत्र
कुम्भयोनिं
द्विजं
ऋते
अन्येषां
गतिः
न
இது விஷயத்தில்
அகஸ்தியரெனும்
வேதியரை
அன்றி
வேறு எவர்களுக்கும்
அடைக்கலஸ்தான
மாகுமென்பது
முடியாது.

இடமாபரணம் சௌய தாரணாஃ த்ரிஜுததம | த்ரித்யுஃத்ய ஢த் து த்ரிசாத் கத் துமஃதி | || 23 ||

| | | | |
|-----------|------------------------------------|--------------|---|
| சௌய | “ஹு துண்தா த்மா ! | ஢த் | தத்ய்வா ஢ுக்கிஃஹம் விஃத்யும்து. |
| த்ரிஜுததம | வுத்யுத் துத்ரித்யும்து ! | இத் | இதூ இஃருக்கும்து |
| த்ரிசாத் | த்ரித்யுதவியு | ஢ா஢ரணம் | ஢ுத்யுதண்துதத |
| கத் | சுத்யு | தாரணாஃ | { துத் துசுத்யுதின்து வி தூசுதண்துசுத்யுதருதரி த்யுதத் துரு கைம்தும்துருக |
| ஢ஃதி | தூவரித் துத்யுதண்து வுண்தும்து. | | |
| தூ | தூவரிருக்கு | த்ரித்யுத்யு | தூவரித் துத்யுதண்து கூரண்துவுண்தும்து. |

இத் தாவ்துசுத்யுதண்து க துந் துசுத்யுதண்து க த்ரிஜு | ஢த்யுத் துத்யுதண்து க த்ரிஜுத்யு துத்யுதண்துதண்துதண்து க ||

| | | | |
|---------------|--------------------------------|-------------|-----------------------|
| த்ரிஜு | “வூத்யுத்யுருகிய | த்யுதண்து | ஢ுதூகைத்யுதண்து |
| த்யுதண்து | வூதவியுத்யுதண்து தூண்துவூ ! | ஢த்யுத் க | த்யுதண்துதண்துதண்து |
| இத் தாவ்து | இதூவூவூவூவூ | தூத்யுதண்து | தூதூதண்துதண்துதண்து |
| சுத்யுதண்து க | தூண்துதண்து | ஢ா஢ரணாநி க | ஢ுத்யுதண்துதண்துதண்து |
| தண்து க | தூதூதண்து | தூதாநி | ஢ுதூதண்துதண்து. |

சர்வாந்காமாந்துத்யுதண்து தூதூதண்து தூதூதண்து தூதூதண்து தூதூதண்து தூதூதண்து தூதூதண்து || 24 ||

| | | | |
|-------------|----------------------------|-----------|--|
| தூதூதண்து | “ தூதூதண்து தூதூதண்து ! | ஢தூதண்து | தூதூதண்து ! |
| காமாந்து | ஢ுதூதண்துதண்து | தாரண | துத் துசுத்யுதண்து வி தூதூதண்து வித்யுதண்து |
| தூதூதண்து | தூதூதண்துதண்து | தூதூதண்து | தூதூதண்து |
| சர்வாந்து க | தூதூதண்துதண்து | தூதூதண்து | ஢ுதூதண்துதண்து |
| தூதூதண்து | தூதூதண்துதண்து | கத் | சுத்யு |
| | விதூதண்துதண்து. | ஢ஃதி | தூதூதண்துதண்து கூரண்துவுண்தும்து. |

தத்யுதண்து தூதூதண்து தூதூதண்து தூதூதண்து தூதூதண்து தூதூதண்து தூதூதண்து ||

| | | | |
|------------|----------------|-----------|--|
| ஢ஃதூ | “ தூதூதண்து | தூதூதண்து | ஢ுதூதண்து |
| தூதூதண்து: | தூதூதண்துதண்து | தூதூதண்து | தூதூதண்து |
| தத்யு | தூதூதண்து | ஢ா஢ரணம் | ஢ுதூதண்துதண்து |
| தூதூதண்து | தூதூதண்துதண்து | தாரணாஃ | துத் துசுத்யுதண்து வி தூதூதண்துதண்துதண்து |
| தூதூதண்து | தூதூதண்துதண்து | தூதூதண்து | தூதூதண்துதண்து |
| தூதூதண்து | தூதூதண்து | தூதூதண்து | தூதூதண்துதண்து |
| தூதூதண்து | தூதூதண்து | தூதூதண்து | தூதூதண்துதண்து |

यो द्विजाल्लभते ज्ञानं स तं वित्तेन पूजयेत् । अन्यथा ज्ञानदर्शी स्यान्नरकं भवति ध्रुवम् ॥

| | | | |
|----------|---------------|------------|--------------------|
| यः | “ எ வன் | पूजयेत् | ஸன் மரணிக்கவேண் |
| द्विजात् | பிராம்மணனிடமி | | டும். |
| ज्ञानं | உபதேசத்தை | ज्ञानदर्शी | உபதேசம் பெற்றவன் |
| रुभते | பெறுகிறானே | अन्यथा | அப்படிச் செய்தா து |
| सः | அவன் | स्यात् | இருந்தால் |
| तं | அவரை | ध्रुवं | நிச்சயமாய் |
| वित्तेन | திரவ்யத்தால் | नरकं | நரகத்தை |
| | | भवति | அடைகிறான். |

मया प्रतिगृहीते तु तस्मिन्नाभरणे शुभे । मातुषः पूर्वको देहो राजर्षेर्विननाश ह ॥२८॥

| | | | |
|----------------|--------------------|-------------|------------------|
| मया | “ எனனால் | राजर्षेः | ராஜரிஷியினுடைய |
| तस्मिन् | அந்த | पूर्वकः | முன்னிருந்த |
| शुभे | அழகுவாய்ந்த | मातुषः देहः | மாமனிடதேஹம் |
| आभरणे | ஆபரணமானது | विननाश | அழிந்துபோயிற்று. |
| प्रतिगृहीते तु | கையில் வாங்கப்பட்ட | ह | காண். |
| | வளவில் | | |

प्रणष्टे तु शरीरेऽसौ राजर्षिः परया मुदा । तप्तः प्रमुदितो राजा जगाम त्रिदिवं सुखम् ॥

| | | | |
|-------------|-----------------|-----------|-------------------|
| असौ | “ அந்த | प्रमुदितः | உத்ஸாஹங்கொண்ட |
| राजा | சூத்திரியராகும் | | வராய் |
| राजर्षिः | ராஜரிஷி | सुखं | மனக்கவலையொழிந்து |
| शरीरे | உடல் | तप्तः | மனத்திருப்தி |
| प्रणष्टे तु | அழிந்த உடன் | | கொண்டவராய் |
| परया | அளவுகடந்த | त्रिदिवं | ஸ்வர்க்கத்திற்கு |
| मुदा | ஸந்தேதாவுத்தால் | जगाम | போய்ச்சேர்ந்தார். |

तेनेदं शक्तुल्येन दिव्यमाभरणं मम । तस्मिन्निमित्ते काकुत्स्थ दत्तमद्भुतदर्शनम् ॥३०॥

| | | | |
|--------------|---------------------|------------|-------------------|
| काकुत्स्थ | “ ஹே காசுத்தஸ்தரே ! | तस्मिन् | அந்த |
| अद्भुतदर्शनं | தெய்வத்தன்மை | निमित्ते | பிரஸத்தியில் |
| | கொண்டதும் | मम | எனக்கு |
| दिवं । | அழகுவாய்ந்த துமான | शक्तुल्येन | இந்திரனுக்கொப்பான |
| इदं | அந்த | तेन | அவரால் |
| आभरणं | ஆபரணமானது | दत्तम् | பரிசாடலிக்கப்பட்ட |
| | | | து.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे अष्टसप्ततितमः सर्गः ॥



एकोनाशीतितमः सर्गः—எழுபத்தொன்பதாவது ஸர்க்கம். || 32 ||

दण्डराज्यनिवेशकथनम्—தண்டமாஹாராஜன் அரசாண்டதைச் சொல்வது.

तदद्भुततमं वाक्यं श्रुत्वाऽगस्त्यस्य राघवः । गौरवाद्दिस्याच्चैव पुनः प्रष्टुं प्रचक्रमे ॥ 1 ॥

राघवः श्रीराकவர்
 अगस्त्यस्य अகஸ்தியருடைய
 अद्भुततमं அதி ஆச்சர்யகரமான
 तत् அந்த
 वाक्यं மொழிக்கு
 श्रुत्वा திருச்செவிராய்த்து

गौरवात् च விஷயத்தின் மகத்வத் தாலும்
 दिस्यात् एव { தெரிந்த கொள்ளவே
 पुनः प्रष्टुं மீளவும் வினாவ
 प्रचक्रमे திருவுள்ளங்கொண்
 கொண்டார்;

भगवंस्तद्वनं घोरं तपस्तप्यति यत्र सः । श्वेतो वैदर्भको राजा कथं स्यादभृगद्विजम् ॥2॥

भगवन् “ஸ்வாமி!
 यत्र எதில்
 वैदर्भकः விதர்ப்பதேசத்திய
 राजा மன்னராகிய
 सः அந்த
 श्वेतः ச்வேதர்
 तपः தவத்தை

तप्यति புரிந்தாரோ
 तत् அந்த
 वनं வனமானது
 घोरं பயங்கரமாய்
 अभृगद्विजं மிருகங்கள், பகழிகள்
 कथं எப்படி [இல்லாததாய்
 स्यात् ஆயிற்று?

तद्वनं स कथं राजा शून्यं मनुजवर्जितम् । तपश्चर्तुं प्रविष्टः स श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥

सः राजा “அந்த மன்னர்
 तपः चर्तुं தவம்புரிய
 प्रविष्टः புகுந்தார்.
 सः அவர்
 तत् वनं அவ்வனத்தை
 शून्यं யாவராலும் கைவிடப்
 பட்டதாய்

मनुजवर्जितं மனுஷ்யஸஞ்சார
 तपश्चर्तुं மில்லாததாய்
 कथं ஏன் செய்தார்?
 तत्त्वतः சரியாய்
 श्रोतुं அறிய
 इच्छामि ஆவலுடனிருக்கி
 நேன்.”

रामस्य वचनं श्रुत्वा कौतूहलसमन्वितम् । वाक्यं परमतेजस्वी वक्तुमेवोपचक्रमे ॥ 4 ॥

रामस्य श्रीरामருடைய
 कौतूहल- } விஷயம் தெரிந்து
 समन्वितं } கொள்ளவேண்டும்
 என்கிறதை விளக்கக்
 காட்டுகிற
 वचनं திருவாக்குக்கு

परमतेजस्वी மஹாதேஜோவானு
 किय अवर् } கிய அவர்
 श्रु वा திருச்செவிராய்த்து
 वाक्यं वक्तुं பதிலைச் சொல்ல
 उपचक्रमे एव உடனே திருவுள்ளம்
 பற்றினார்.

पुरा कृतयुगे राम मनुईण्डधरः प्रभुः । तस्य पुत्रो महानासीदिक्ष्वाकुः कुलनन्दनः ॥५॥

ராம "ஸ்ரீராம!
புரம் முன்
கூதயுகத்தில் கிருதபுகத்தில்
புது: மஹாசக்திவாகுவிய
மனு: மனுவா'னவர்
தண்டவ: ராஜநீதி தவறாத
மன்னராயிருந்தார்.

तस्य अवराक्तु
कुलनन्दनः कुलவிளக்காய்
महान् महாபெயர் பெற்ற
इक्ष्वाकुः இக்ஷ்வாகுவெனும்
पुत्रः புதல்வர்
आनेत् இருந்தார்.

तं पुत्रं पूर्वकं राज्ये निक्षिप्य भुवि दुर्जयम् । पृथिव्यां राजंशानां भव कर्तैर्युवाच ह ॥

புவி "உலகில்
துர்ஜயம் அஜேயனை
புர்க் புத்ரம் ஜ்யேஷ்ட குமாரனை
தம் அவனை
ராஜ்ய மாராளுகையில்
நிஷிப்ய ஸ்தாபித்து

पृथिव्यां 'உலகில்
राजंशानां ராஜகுலங்களுக்கு
कर्ता காரணபூதனாக
ह நிச்சயமாய்
भव इति நீ ஆகவேண்டும்' என்று
उवाच ஆக்ரூபித்தார்.

तथेति च प्रतिज्ञातं पितुः पुत्रेण राघव । ततः परमसन्तुष्टो मनुः पुत्रमुवाच ह ॥ ७ ॥

राघव "ஸ்ரீராகவ!
पुत्रेण च புத்திரனாலும்
पितुः தந்தைக்கு
तथा 'அங்ஙனமே ஆகிறேன்'
इति என்று
प्रतिज्ञातं வாக்களிக்கப்பட்டது.

तः அதனால்
मनुः மனுவானவர்
परमसन्तुष्टः பரமஸந்துஷ்டராகி
पुत्रं புத்திரனுக்கு
उवाच இப்படி புத்தி போ
ह காண்! [தித்தார்;

प्रीतोऽस्मि परमोदार एवं कर्तासि न संशयः । दण्डेन च प्रजा रक्ष मा च दण्डमकारणे ॥

परमोदार "மெச்சத்தக்க நற்
குணசாலியே!
प्रीतः மனக்கவலை தீர்த்தவ
अस्मि நான் ஆயினேன்.
एवं कर्तासि நீ சொன்னபடி செய்
न संशयः இதற்கு சந்தேகமில்லை.

च என்றுலும்
प्रजाः பிரஜைகளை
दण्डेन தண்டனையோடு
रक्ष நீதி தவறாது சென்
अकारणे கோல் செலுத்து ;
दण्डं தக்க விசாரணையின்றி
मा च தண்டித்தல்
ஆகாது.

अपराधिषु यो दण्डः पात्यते मानवेषु वै । स दण्डो विधिवन्मुक्तः स्वर्गं नयति पार्थिवम् ॥

अपराधिषु "குற்றவாளியாய்
निச்சயிக்கப்பட்ட
मानवेषु वै மாணிடர்களிடத்தில்
यः எந்த
दण्डः தண்டனையானது
पात्यते ஆக்ரூபிக்கப்பட்டு
கிறதோ,

विधिवत् ராஜநீதி தவறாது
मुक्तः அளிக்கப்பட்டதாகிய
सः அந்த
दण्डः தண்டனைய'னது
पार्थिवं வேந்தனை
स्वर्गं சுவர்க்கத்திற்கு
नयति சுமந்துசெல்லும்.

तस्माद्दण्डे महाबाहो यत्रवान्भव पुत्रक । धर्मो हि परमो लोके कुर्वतस्ते भविष्यति ॥

महाबाहो "மஹா சாமர் த்திய
சாலியாகிய
புவக குழந்தாய்!
தஸ்மாத் ஆனதால்
दण्डे தண்டிக்கும் விஷயத்
தில்
यत्रवान् வெகுஜாக்கரதையு
டையவகை

भव இருக்கவேண்டும் ;
हि என்றால்
लोके உலகில்
कुर्वतः அப்படிச்செய்யும்
ते உனக்கு
परमः மேலான
धर्मः தருமமானது
भविष्यति விளையும்.

इति तं बहु सन्दिश्य मनुः पुत्रं समाधिना । जगाम त्रिदिवं हृष्टो ब्रह्मलोकं सनातनम् ॥

मनुः "மனுவானவர்
तं அந்த
पुत्रं புத்திரனுக்கு
इति இப்படி
बहु சாரமாய்
सन्दिश्य உபதேசித்துவிட்டு

हृष्टः உள்ளங்குளிர்ந்தவரா
समाधिना புண்ணியத்தால் [கி
सनातनं அனாதியான
ब्रह्मलोकं பிரம்மலோகமெனும்
त्रिदिवं சுவர்க்கலோகத்திற்கு
जगाम போய்ச்சேர்ந்தார்.

प्रयाते त्रिदिवं तस्मिन्निक्ष्वाकुरमितप्रभः । जनयिष्ये कथं पुत्रानिति चिन्तापरोऽभवत् ॥

तस्मिन् "அவர்
त्रिदिवं சுவர்க்கத்தை
प्रयाते அடைந்தபின்னர்
अमितप्रभः அமித்தேஜோவானு
கிய
इक्ष्वाकुः இக்ஷ்வாகுவானவர்

पुत्रान् புதல்வர்களை
कथं என்னெனம்
जनयिष्ये நான் பெறுவேன்
इति என்று
चिन्तापरोः சிந்தை கொண்டவ
अभवत् இருந்தார். [ராய்

कर्मभिर्बहुरूपैश्च तैस्तैर्मनुसुतः सुतान् । जनयामास धर्मात्मा शतं देवसुतोपमान् ॥ १३ ॥

धर्माःमा "புண்யசாலியாகிய
मनुसुतः மனுசின் புதல்வர்
तैः तैः அந்தந்த
बहुरूपैः பலவகையான
कर्मभिः च வைதீகக்கரியைகளா
லேயே

देवसुतोपमान् தேய்வகுமாரர்களுக்
கொப்பான
शतं நூறு
सुतान् குமாரர்களை
जनयामास பெற்றனர்.

तेषामवरजस्तात सर्वेषां रघुनन्दन । मूढश्चाकृतविद्यश्च न शुश्रूषति पूर्वजान् ॥ १४ ॥

तात "பூஜைக்குரிய
रघुनन्दन ரகுந்தன!
तेषां அவர்கள்
सर्वेषां எல்லோருக்கும்
अवरजः கடைசியில் பிறந்த
புத்திரன்

मूढः च பிறணிழமடையும்
अकृतविद्यः च படிப்பே வராதவளு
யும்
पूर्वजान् மூத்தவர்களுக்கு
न शुश्रूषति அடங்காதிருந்தான்.

नाम तस्य च दण्डेति पिता चक्रेऽल्पमेधसः । अवश्यं दण्डपतनं शरीरेऽस्य भविष्यति ॥

अस्य
शरीरि
दण्डपतनं
अवश्यं
भविष्यति
इति

“ இவனுடைய
தேகபலத்தின்
இறுமாப்பால் வரும்
அவச்சடமாய் [அழிவு]
உண்டாகப்போகிறது
என்கிறபடியால்

अल्पमेधसः
तस्य
पिता च
दण्ड
नाम चक्रे

ஞானகுண்டயனான
அவனுக்கு
தந்தையே
தண்டன் என்ற
பெயரை இட்டார்.

अपश्यमानस्तं देशं घोरं पुत्रस्य राघव । विन्ध्यशैवल्योर्मध्ये राज्यं प्रादादरिन्दम ॥

अरिन्दम
राघव
तं
घोरं
अपश्यमानः

“ அஜேயராகிய
ஹே ராகவ!
அந்த
கொடியவனை
சீர்திருத்த வழி கா
ணாதிருந்த அவர்

विन्ध्यशैवल्योः
मध्ये
देशं
पुत्रस्य
राज्यं
प्रादात्

விந்தியமலைக்கும்
சைவலமலைக்கும்
இடையில்
ஒரு தேசத்தை
புதல்வனுடைய
ஆளுகைக்குள்பட்ட
தந்தருளினார்: [தாய்

स दण्डस्तत्र राजाऽभूदस्ये पर्वतरोधसि । पुरं चाप्रतिमं राम न्यवेशयदनुत्तमम् ॥ १७ ॥

राम
सः
दण्डः
रस्ये
पर्वतरोधसि
अप्रतिमं च

“ ஸ்ரீராம!
அந்த
தண்டன்
மனோஹரமாயிருக்
மலைச்சரிவில் [கின்ற
இணையில்லாததும்

अनुत्तमं
पुरं
न्यवेशयत्
तत्र
राजा
अभूत्

மஹாச்சீரேஷ்டமும்
ஒரு நகரை [மான்
நிர்மாணம் செய்த
அதற்கு [தான்.
அரசனாய்
இருந்தான்.

पुरस्य चाकरोन्नाम मधुमन्तमिति प्रभो । पुरोहितं तूशनसं वरयामास सुव्रतम् ॥ १८ ॥

प्रभो
पुरस्य
मधुमन्तं
इति
नाम च

“ என்றுமுள்ளவரே!
பட்டணத்திற்கு
மதுமந்தம்
என்கிற
பெயரையே

अकरोत्
सुव्रतं
उशनसं तु
पुरोहितं
वरयामास

இட்டான்.
மஹா பெயர்பெற்ற
தருமா த்மாவாகிய
சக்கிராசாரியரையே
குலகுருவாய்
வரித்தான்.

एवं स राजा तद्राज्यमकरोत्सपुरोहितः । प्रहृष्टमनुजाकीर्णं देवराजो यथा दिवि ॥ १९ ॥

एवं
सपुरोहितः
सः राजा
तत् राज्यं
दिवि
देवराजः

“ இப்படி
புரோஹிதருடனிருக்
அந்த மன்னன் [கும்
அந்த ராஜ்யத்தை
விண்ணிலகில்
இந்திரன்

यथा
प्रहृष्टमनुजाकीर्णं
अकरोत्

எவ்வண்ணமோ அவ்
வண்ணமே
ஸந்துஷ்டிகொண்ட
தாய்பரிஜனங்களால்
நிறைந்ததாய்
அரசாண்டுவந்தான்.”

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे एकोनाशीतितमः सर्गः ॥



அரீதீதம: சரீ:—எண்பதாவது ஸர்க்கம். || ௨௦ ||

சுக்கந்யாஹ்ணம்—சக்கிராசாரியரது புதல்வியின் கற்பழிப்பது.

எதடாகூய ராமய ஢ஹ்ரி: கும்பசம்஢வ: | அச்யா஢ேஷாபர் வாக்யம் கதாயாஸுபக்ர஢ே ||

| | | | |
|-------------|------------------|-------------|-----------------|
| கும்பசம்஢வ: | கும்பபுரானியாகூய | அச்யா ஂ | இதே |
| ஢ஹ்ரி: | முனீவர்஡ெரு஢ான் | கதாயா | கதையில |
| ராமய | பூரீராமருக்கு | அர் வாக்யம் | இதாவிஷயத்தை |
| ஂவ | இதை | அபக்ர஢ே | இப்படிச் சொல்லி |
| அஹ்யய | சொல்லியபின்னர் | | முடித்தார்: |

தத: ச ஢்ட: கா஑ூஸ்த்஢ வஹ்ரி஑ணாயுதம் | அகரீதத்ர ஢ான்தாது ராஜ்யம் ஢ஹ்தக஑கம் ||

| | | | |
|-----------|--|--------------|--------------------------------|
| கா஑ூஸ்த்஢ | “ஹே கா஑ூத்தரே! | தத: | அதனால் |
| ச: | அந்த | தத ராஜ்யம் | அந்த ராஜ்யத்தை |
| ஢்ட: | தண்டன் | ஢ஹ்தக஑கம் | எதிரிகளின் உபத்திரவமில்லாததாய் |
| ஢ான்தாது | { சுயபிரயத்தனமில்லா மல் ஑சுவராஜீனமாய் விட்டுவிட்டவராய் | வஹ்ரி஑ணாயுத் | அனேகவருஷகாலம். |
| | | அகரீத் | ஆண்டுவந்தான். |

அத காலே து கர்ஸி஑த்ரி஑ா ஢ார்கவா஑்ர஢ம் | ர஢ணியஸுபாக்ர஢சுதிரே ஢ாசி ஢னஹ்ரே || ௩ ||

| | | | |
|------------------|-------------------------------|-----------|----------------------------------|
| ஢னஹ்ரே | “எவருக்குமின்பம் தருவதாகூய | ராஜா | ஢ன்னன் |
| சுதிரே ஢ாசி | சுத்திர஢ாஸத்தில் | ர஢ணியம் | ர஢ணிய஢ானதும் |
| அத | அ஡்஡ொழுது | ஢ார்கவத் | சக்கிராசாரியருக்கு குடையது஢ான |
| கர்ஸி஑த்ரி஑ காலே | ஒரு காலத்தில் | அ஑்ர஢ம் | ஆசிர஢த்தில் |
| | | அபாக்ர஢த் | உலாவினன். |

தத்ர ஢ார்கவகந்யா ச ரு஑ேணா஑்ரிதா ஢ுவி | விசர்நீர் வனஹ்ரேஷே ஢்ட஑஑஑ய஢நுச஢ா஢ம் | ௪ ||

| | | | |
|----------|--------------------|-------------|----------------------------------|
| ச: ஢்ட: | “அந்த தண்டன் | அநுச஢ா | ஸர்வ஑த்திருஷ்ட ஢ாயிருப்பவர஢ம் |
| தத | அவ்விடத்தில் | விசர்நீர் | உலாவிக்கொண்டு ஢ிருக்கின்ற |
| வனஹ்ரேஷே | ஆசிர஢த்தில் ஓரிடத் | ஢ார்கவகந்யா | சக்கிராசாரியருடைய புதல்வியை |
| ரு஑ேண | அழகால் [தில் | அ஑஑யத் | கண்டான். |
| ஢ுவி | உலகில் | | |
| அ஑்ரிதா | இனையிலலாதவாரயும் | | |

ச ஢்டு தா ஑ு஢ு஢ே஢ா அந஑ுஷர஑ி஢ித: | அ஢ி஑஢்ய ஑ுஸ்வி஑ா கந்யா வசந஢வ்ரீத் | ௫ ||

| | | | |
|--------------|-------------------------------------|----------|---------------------------------|
| ஑ு஢ு஢ே஢ா: | “஢ஹா முடனாகூய | ஑ுஸ்வி஑ா | அதிக஢ாய் ஢டுக்கி கொண்டிருந்த |
| ச: | அவன் | கந்யா | கன்னிகையை |
| தா | அவனே | அ஢ி஑஢்ய | அணுகி |
| ஢்டு | ஢ார்த்து | வசந் | இந்த ஢ொழியை |
| அந஑ுஷர஑ி஢ித: | ஢ன்஢த஢ாணங்கருக் கடி஢஢ப்பட்டவனாகி | அவ்ரீத் | ஢ொழிந்தான்: |

कुतस्त्वमसि सुश्रोणि कस्य वाऽसि सुता शुभे । पीडितोऽहमनङ्गेन गच्छामि त्वां शुभानने॥

सुश्रोणि { “अமுருவாய்ந்த
பின் தட்டுகளை யுடைய
யவளே!
நீ
எங்கிருந்து
வந்தாய்?
ஸ்தீரத்தனமே!
அன்றியும்

कस्य सुरा अत्रि एव रुद्रोऽयं पेण ?
अहं नान्
अनङ्गेन मन्मथेन
पीडितः वाद्विषयं दुःखेण
शुभानने शुभानने
त्वां एतन्ने
गच्छामि सम्बोक्तं स्वयम्
बोधिनेः”

तस्य चैवं ब्रुवाणस्य मोहोन्मत्तस्य कामिनः । भार्गवी प्रत्युवाचेदं वचः सानुनयं नृपम् ॥

मोहोन्मत्तस्य “ஸக்கமத்தினுசை
தலைக்கேறியவனும்
காமின: காமானுமாகிய
तस्य அவன்
पूर्वं இப்படி
ब्रुवाणस्य மொழிகையில்

भार्गवो च सक्किरासारीय रुद्रोऽयं
नृपं मन्मथே
इदं सानुनयं இந்த உசிதமாயிருக்க
वचः மொழியை [கின்ற
प्रत्युवाच पद्वியைச்சொன்னான்:

भार्गवस्य सुतां विद्धि देवस्याऽऽह्विकर्मणः । अरजां नाम राजेन्द्र ज्येष्ठाभाश्रमवासिनीम् ॥

राजेन्द्र “ராஜோத்தம!
अह्विकर्मणः லேசில் எதையும் முடி
க்கவல்லவரும்
देवस्य பூஜ்யருமாகிய
भार्गवस्य சக்கிராசாரியருடைய
ज्येष्ठां மூத்த

सुतां பெண்ணான என்னை
आश्रमवासिनीं ஆசிரமவாஸியென்றும்
अरजां नाम அரஜையென்ப பெயர்
ज्येष्ठां பூண்டவளென்றும்
विद्धि நீர் அறிக.

मा मां स्पृश बलाद्राजन्कन्या पितृवशा ह्यहम् ।
गुरुः पिता मे राजेन्द्र त्वं च शिष्यो महात्मनः ॥
व्यसनं सुमहत्कुदः स ते दद्यान्महातपाः

॥ ९ ॥

राजन् “அரசே!
अहं நான்
पितृवशा பிராவுக்கு அடங்கி
कन्या கன்னிகை [நடக்கும்
राजेन्द्र ராஜோத்தம!
पिता தந்தை
मे எனக்கு
गुरुः அத்தியட்சர்
त्वं च தேவரீரும்
महात्मनः மஹாத்மாவினுடைய
शिष्यः சீடர்.

सः अन्त
महातपाः மஹாதபஸ்வீ
कुदः हि சினங்கொண்டவ
राकिल
ते உடக்கு
सुमहत् தாங்கமுடியாத
व्यसनं துன்பத்தை
दद्यात् விளைவிப்பார்.
बलात् வலியால்
मां என்னை
मा स्पृश தீண்டேல்.

यदि वाऽन्यन्यया कार्यं धर्मदृष्टेन सत्पथा । वरयस्व नृपश्रेष्ठ पितरं मे महाद्युतिम् ॥१०॥

| | | | |
|------------|--------------------|-------------|-------------------|
| नृपश्रेष्ठ | “राஜோத்தம! | महाद्युतिं | மஹாப்ரபாவசாலியா |
| मया | என்னால் | पितरं | தந்தையினிடம் [கிய |
| अन्यत् | மற்றப்படி | धर्मदृष्टेन | தர்மவழியாய் |
| कार्यं | செய்யத்தக்கதாகிறது | सत्पथा | நேர்முறையில் |
| यदि वा | என்கிறபக்கத்தில் | वरयस्व | தேவரீர்யாசித்து அ |
| मे | எனது | | னுமதிபெறவேண்டும். |

अन्यथा तु फलं तुभ्यं भवेद्धोराभिसंहितम् । क्रोधेन हि पिता मेऽसौ त्रैलोक्यमपि निर्दिहेत् ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------|---------------|------------------|
| अन्यथा तु | “அப்படிச் செய்யாத பக்கத்தில் | मे | எனது |
| तुभ्यं | தேவரீருக்கு | पिता | தந்தையாகிய |
| धोराभिसंहितं | மிக்க கொடியதான | असौ | இவர் |
| फलं | பயன் | क्रोधेन हि | கோபங்கொண்டால் |
| भवेत् | விளையும். | लैशोवत्रं अपि | மூவுலகங்களையும் |
| | | निर्दिहेत् | எரித்துவிடுவார். |

दास्यते चानवद्याङ्ग तव मां याचतः पिता ॥ १२ ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------------|---------|---|
| अनवद्याङ्ग | “தோஷாஹிதமாய் உள்ள அங்கங்களை யுடையவரே! | तव च | தேவரீருக்கே |
| पिता | | मां | என்னை |
| याचतः | தந்தை யாசிக்கும் | दास्यते | { பாணிக்ரஹணமாய் கொடுத்தாலும் கொடுக்கலாம். } |

एवं ब्रुवाणामरजां दण्डः कामवशं गतः । प्रत्युवाच मदीन्मत्तः शिरस्याधाय चाञ्जलिम् ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------|------------|------------------------|
| कामवशं गतः | “காமா தூரலும் | अरजां | அரஜையைப்பார்த்து |
| मदीन्मत्तः च | கொழுப்பு தலைக்கேறி யவனுடைய | शिरसि | முடிமீது |
| दण्डः | தண்டன் | अञ्जलिं च | அஞ்சலியை |
| एवं | இங்ஙனம் | आधाय | வைத்து |
| ब्रुवाणं | மொழிந்த | प्रत्युवाच | இப்படி பதிலுரைத் தான்: |

प्रसादं कुरु सुश्रोणि न कालं क्षेमुमर्हसि । त्वत्कृते हि मम प्राणा विदीर्यन्ते वरानने ॥

| | | | |
|----------|-------------------------------|-------------|------------------|
| सुश्रोणि | “அழகிய பிள்தட்டு களையுடையவளே! | अर्हसि न | நீ இஷ்டப்படலா |
| प्रसादं | அபிமானத்தை | हि | ஏனெனில் [காது; |
| कुरु | காட்டுவாயாக. | वरानने | மிக்க சோதிபடைத்த |
| कालं | ஏற்ற இச்சமயத்தை | मम | எனது [மாதே! |
| क्षेमुं | திரஸ்கரித்துத் தள்ளி விட | प्राणाः | பிராணைகள் |
| | | त्वत्कृते | உன்பொருட்டு |
| | | विदीर्यन्ते | பிளந்துபோகின்றன. |

त्वां प्राप्य मे वधो वा स्याच्छायो वा यदि दारुणः ।

भक्तं भजस्व मां भीरु भजमानं सुविह्वलम्

॥ १५ ॥

भीरु “அஞ்சி நடுக்கமுற்றி
ருக்கும் பெண்ணே !
உன்னை
அடைந்த பின்னர்
எனக்கு
மாணந்தானாகட்டும்
இல்லாதபக்கத்தில்
கொடியதாகிய

शापः वा सापந்தானாகட்டும்
स्यात् எது வந்தாலும்
வரட்டும்.
सुविह्वलं முற்றும் மெய்பறந்து
भजमानं भक्तं உள்ளபடி ஆசை
கொண்டுவிட்ட
मां என்னை
भजस्व ஏற்றுக்கொள்க.”

एवमुक्त्वा तु तां कन्यां दोभ्यां गृह्य बलाद्भयान् । विस्फुरन्ती यथाकामं मैथुनायोपचक्रमे ॥

एवं “இங்கனம்
उक्त्वा तु சொல்லியதுமே
बली பலிஷ்டனாகிய அவன்
दोभ्यां இரு கைகளாலும்
कन्यां கன்னிகையை
बलात् வலிய

गृह्य பிடித்து இழுத்து
विस्फुरन्ती நடுங்கி முரண்டிக்கொ
तां அவளை [ண்டிருந்த
यथा कामं தன்னிஷ்டப்படி
मैथुनाय ஸம்போகம்செய்ய
उपचक्रमे தலைப்பட்டுவிட்டான்.

तमनर्थं महाघोरं दण्डः कृत्वा सुदारुणम् । नगरं प्रययावाशु मधुमन्तमनुत्तमम् ॥ १७ ॥

दण्डः “தண்டன்
सुदारुणं அஸஹ்யமானதும்
महाघोरं மிக்க கொடியதுமான
तं அந்த
अनर्थं அபசாரத்தை
कृत्वा செய்துவிட்ட

अनुत्तमं மிகச் சிறந்த
मधुमन्तं மதுமந்தமென்கிற
नगरं நகருக்கு
आशु விரைவில்
प्रथयौ போய்ச்சேர்ந்துவிட்
டான்.

अरजापि रुदन्ती सा आश्रमस्याविदूरतः । प्रतीक्षते स्म सन्त्रस्ता पितरं देवसन्निभम् ॥

सा “அந்த
अरजा अपि அரஜையோ
आश्रमस्य ஆசிரமத்தின்
अविदूरतः அருகில்
सन्त्रस्ता ஏக்கம்பிடித்தவளாய்

रुदन्ती அழுதுகொண்டே
देवसन्निभं தெய்வத்துக்கு
पितरं தந்தையை [கிரான
प्रतीक्षते स्म எதிர்பார்த்துக்கொ
ண்டிருந்தாள்.”

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे अशी तैतमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23334

उत्तरकाण्डे आदिनः श्लोकाः 2610

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे एकोनत्रिंशोऽह्नि वर्तमानकथापसङ्गः ॥

இவ்வீதம் ஆதியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமர் ஸந்நிதியில் அச்வமேத யாகசாலையில் கானம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில் இருபத்தொன்பதாவது தினத்தில் கானம் பண்ணப்பட்ட கதை முடிவுபெற்றது.



[புரா குசலவாஶ்யாं श्रीरामसन्निधावश्वमेधयज्ञवाटे द्वात्रिंशति दिनेषु गीते श्रीमद्रामायणे
त्रिंशेऽह्नि उत्तरकाण्डे एकाशीतितमसर्गमारभ्य अष्टनवतितमसर्गपर्यन्तं
(23335—23739 श्लोकाः) गीतम् । तस्मिन् दिने गीताः श्लोकाः 405]

[ஆதிகில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமஸந்நிதிகில் அஸ்வமேதயாகசாலையில்
முப்பத்திரண்டு தினங்களில் கானம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில்
முப்பதாவது தினத்தில் உத்கரகாண்டத்தில் என்பத்தோராவது
ஸர்க்கம் முடிவல் தொண்ணூற்றெட்டாவது ஸர்க்கம் வரை
(23335—23739) கானம் செய்யப்பட்டது.
அன்று கானம் செய்யப்பட்ட சுலோக சங்கியை 405]

एकाशीतितमः सर्गः—என்பத்தோராவது ஸர்க்கம் || ௧? ||

दण्डशापः—தண்டமஹாராஜனின் சாபம்.

स मुहूर्तादुपश्रुत्य देवर्षिरमितप्रभः । स्वमाश्रमं शिष्यवृतः श्रुधार्तः संन्यवर्तत ॥ १ ॥

| | | | |
|------------|------------------------------------|------------|-----------------------------------|
| अमितप्रभः | “ அமிதமான தேஜோ மயமாய் விளங்கும் | स्वं | தனது |
| सः | அந்த | आश्रमं | ஆசிராமத்திற்கு |
| देवर्षिः | சூஜார்ஹராகிய முனி வர் | शिष्यवृतः | சீடர்களால் புடை சூழப்பட்டவராய் |
| मुहूर्तात् | ஒருமுகூர்த்த காலத் தில் | श्रुधार्तः | பசியால் வாட்டமுற்ற வராய் |
| उपश्रुत्य | விஷயத்தை அறிந்து கொண்டு | संन्यवर्तत | திரும்பி எழுந்தருளி றார் : |

सोऽपश्यदरजां दीनां रजसा समभिप्लुताम् । ज्योत्स्नामिवारुणग्रस्तां प्रत्युषे न विराजतीम् ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------|----------------|--------------------------------|
| सः | “ அவர் | अरुणग्रस्तां | சூர்யபகவானால் மறைக்கப்பட்டு |
| अरजां | அரஜையை | विराजतीं न | ஒளி ஒழிந்த |
| रजसा | தூஷணமான கிருத் யத்தால் | ज्योत्स्नां इव | சந்திரிகையைப்போல் |
| दीनां | துயரமுள்ளவளாய் | समभिप्लुतां | ஒளி ஒழிந்தவளாய் |
| प्रत्युषे | அருளோதயகாலத்தில் | आश्यत् | கண்டார். |

तस्य रोषः समभवत्श्रुधार्तस्य विशेषतः । निर्दहन्निव लोकांस्त्रीञ्छिष्यांश्चैतदुवाच ह ॥

| | | | |
|--------------|---------------------------------|----------|---------------------|
| श्रुधार्तस्य | “ பசியால் வாட்ட மடைந்திருந்த | लोकांश्च | உலகங்களையும் |
| तस्य | அவருக்கு | निर्दहन् | எரித்துவிடுகின்றவர் |
| विशेषतः | அதிகமான | इव | போலாகி |
| रोषः | கோபாவேசம் | शिष्यान् | சீடர்களைப்பார்த்து |
| समभवत् | உண்டாயிற்று. | एतत् | பின்வருவதை |
| चौन् | முன்று | उवाच | மொழிந்தார் |
| | | ह | காண். |

पश्यन् विपरीतस्य दण्डस्याविजितात्मनः । विपत्तिं घोरसङ्काशां क्रुद्धामग्निशिखामिव ॥

अविजितात्मनः “मணப்போக்கை
அடக்காது
विपरीतस्य அதர்மத்தொழிலில்
துணிர்துவிட்ட
दण्डस्य தண்டனுக்கு
क्रुद्धां மஹாகடுமையாய்க்கொ
முந் துவிட்டெரியும்

अग्निशिखां அக்னிஜ்வாலையை
इव போன்ற
घोरसङ्काशां பயங்கரமான
विपत्तिं ஆபத்தை
पश्यन् इतिहासपात्रங்கள்.

क्षयोऽस्य दुर्मतेः प्राप्तः सानुगस्य दुरात्मनः । यः प्रदीप्तां हुताशस्य शिखां वै स्पृष्टुमिच्छति॥

यः “எவன்
हुताशस्य அக்னியினது
प्रदीपां கொழுந்துவிட்டெரி
யும்
शिखां ஜ்வாலையை
स्पृष्टुं கையால் தீண்ட
इच्छते वै துணிர்துவிட்டானோ

दुर्मतेः அப்படிப்பட்ட மூட
दुरात्मनः துஷ்டனும் [னும்
सानुगस्य பரிவாரஜனங்களோட
நிருப்பவனுமான
अस्य அவனுக்கு
क्षयः நாசம்
प्राप्तः கிட்டிவிட்டது.

यस्मात्स कृतवान्पापमीदृशं घोरसंहितम् । तस्मात्प्राप्यति दुर्मेधाः फलं पापस्य कर्मणः ॥

सः “அந்த
दुर्मेधाः மூடன்
ईदृशं இப்படிப்பட்ட
घोरसंहितं அசுஹ்ரயமான
पापं பாபச்செயலை
कृतवान् செய்துவிட்டான்

यस्मात् तस्मात् என்கிறபடியால்
पापस्य பாப
कर्मणः கருத்தியத்தினுடைய
फलं பயனை
प्राप्यति இகா அடையப்
போகிறான்.

सप्तरात्रेण राजासौ सभृत्यबलवाहनः । पापकर्मसमाचारो वधं प्राप्यति दुर्मतिः ॥ ७ ॥

असौ “இந்த
दुर्मतिः மூடனும்
पापकर्मसमाचारः பாபத்தொழிலைப் பு
ரீந் துவிட்டவனுமான
राजा மன்னன்

सभृत्यबल- } பிருத்தியர்கள், சைன்
वाहनः } யங்கள் துவைகளோ
டும் வரவனங்களோ
டும் கூடிவனரையும்
सप्तरात्रेण ஏழு தினங்களுக்குள்
वधं மரணத்தை
प्राप्यति அடைவான்.

समन्ताद्योजनशतं विषयं चास्य दुर्मतेः । धक्षयते पांसुवर्षेण महता पाकशासनः ॥ ८ ॥

पाकशासनः “இந்திரன்
अस्य இந்த
दुर्मतेः துஷ்டனுடைய
विषयं தேசத்தை
समन्तात् எல்லாப்பக்கங்களி
லும்

योजनशतं च நூறுயோஜனை
வரைக்கும்
महता பிரம்மாண்டமான
पांसुवर्षेण மண்மாரியால்
धक्षयते ஆழித்துவிடுவான்.

सर्वसत्वानि यानीह स्थावराणि चराणि च । महता पांसुवर्षेण विलयं सर्वतोऽगमन् ॥

इह
सर्वसत्वानि
चराणि
स्थावराणि च
यानि

“ இவ்விடத்தில்
ஸகலஜீவன்களும்
சரங்களும்
அசரங்களும்
எவைகளோ அவைகள்

महता
पांसुवर्षेण
सर्वतः
विलयं
अगमन्

கொடிய
மண்மாரியால்
முற்றிலும்
நாசத்தை
பெறும்.

दण्डस्य विषयो यावत्तावत्सर्वसमुच्छ्रयम् । पांसुवर्षमिवालक्ष्यं सप्तरात्रं भविष्यति ॥१०॥

दण्डस्य
विषयः
यावत्
तावत्

“ தண்டனது
தேசம்
எவ்வளவோ
அவ்வளவும்தான்

पांसुवर्षं
आलक्ष्यं
सर्वसमुच्छ्रयं इव
सप्तरात्रं
भविष्यति

மண்மாரி
பிரத்யக்ஷமாய்
முழுவிரோதியென
ஏழு ராத்திரி
பொழியும்.

इत्युक्त्वा क्रोधताम्राक्षस्तदाश्रमनिवासिनम् । जनं जनपदान्तेषु स्थीयतामिति चाब्रवीत् ॥

क्रोधताम्राक्षः
इति उक्त्वा
तदाश्रम-
निवासिनं

“ கோபத்தால் சிவந்த
கண்களையுற்றவராயி
ருந்த அவர்
இப்படிச் சபித்து
விட்டு
அந்த ஆசிரமத்தில்
குடிக்கொண்டிருந்த

जनं च
जनपदान्तेषु
स्थीयतां
इति
अब्रवीत्

ஜனத்தையும்பார்த்து
‘தேசத்திற்கு வெளிப்
பிரதேசங்களில்
குடிக்கொண்டுவிட
வேண்டியது’
என்று
விதித்தருளினார்.

श्रुत्वा तूशनसो वाक्यं सोऽश्रमावसथो जनः ।

निष्क्रान्तो विषयात्तस्मात्स्थानं चक्रेऽथ बाह्यतः

॥ १२ ॥

उशनसः
वाक्यं
श्रुत्वा
तु
आश्रमावसथः
सः
जनः

“ சக்ராசாரியருடைய
ஆக்கையை
சிரமேற்கொண்டு
உடனே
ஆசிரமத்தில் குடியி
அந்த [ருந்த
ஜனமானது

तसात्
विषयात्
निष्क्रान्तः
बाह्यतः
अथ
स्थानं
चक्रे

அந்த
தேசத்திலிருந்து
அப்புறப்பட்டதாய்
வெளியில்
அப்பொழுது
தங்குமிடத்தை
செய்துகொண்டது.

स तथोक्त्वा मुनिजनमरजामिदमब्रवीत् । इहैव वस दुर्मेधे आश्रमे सुसमाहिता ॥ १३ ॥

सः
मुनिजनं
तथा
उक्तवा
अरजां
इदं
अब्रवीत्

“ அவர்
முனிஜனத்திற்கு
அவ்வண்ணமாய்
நியமித்தருளிய
பின்னர்
அரஜையப்பார்த்து
இப்படி
சபித்தார்;

दुर्मेधे
आश्रमे
इह एव
सुसमाहिता
वस

‘ஹே மூடீமீ!
ஆசிரமத்தில்
இவ்விடத்திலேயே
ஒன்றுபட்ட மனத்தி
னளாய் செய்வத்
யானமே ஸதா செய்
கின்றவளாய்
நீ இருந்துவா.

इदं योजनपर्यन्तं सरः सुरचिरप्रभम् । अरजे विज्वरा भुङ्क्व काञ्चित्रा प्रतीक्ष्यताम् ॥

| | | | |
|----------|---|----------------|------------------------------|
| अरजे | “ ஹே அரஜையே! | योजन- | } ஒரு யோஜனைக்குள் |
| विज्वरा | வேறுகவலை ஒழிந்த வளாய் | पर्यन्तं च | |
| सुरचिरभं | } அதி இனிமையாய் சோபித்துக்கொண் டிருக்கும் | भुङ्क्व | நீ சொந்தமாய் அனு பவித்துவார; |
| सरः | | பொய்கையையும் | अल |
| इदं | இந்த | काञ्च: | நற்காலமானது |
| | | प्रतीक्ष्यताम् | எதிர்பார்க்கப்பட வேண்டும். |

त्वत्समीपे च ये सत्त्वा वासमेष्यन्ति तां निशाम् ।

अवध्याः पांसुवर्षेण ते भविष्यन्ति नित्यदा

इत्युक्त्वा भार्गवो वासमन्यत्र समकारयत्

॥ १५ ॥

| | | | |
|-------------|----------------------|------------|------------------------|
| पांसुवर्षेण | “ மண்மாரியால் | अवध्याः | துன்புறாதவைகளால் |
| तां निशां च | அந்த இரவிலும் | भविष्यन्ति | இருக்கக்கடவது? |
| निस्वदा | எக்காலத்திலும் | इति | என்று |
| त्वत्समीपे | உன்னருகில் | उत्त्वा | சபித்துவிட்டு |
| ये | எந்த | भार्गवः | சக்கிராசாரியார் |
| सराः | ஜீவன்கள் | अन्यत्र | வேறிடத்தில் |
| वासं | குடியாய் | वातं | வாஸஸ்தானத்தை |
| एष्यन्ति | இருக்கின்றனவோ | समकारयत् | ஏற்படுத்திக் கொண்டனர். |
| ते | அவைகள் | | |

तच्च राज्यं नरेन्द्रस्य सभृत्यबलवाहनम् । सप्ताहाद्ब्रह्मसाद्भूतं यथोक्तं ब्रह्मवादिना ॥

| | | | |
|--------------------------|---|----------------|---------------------|
| नरेन्द्रस्य | “ மன்னவனது | सप्ताहात् | ஏழுநாள்க்குள் |
| तत् राज्यं | அந்த ராஜ்யமானது | ब्रह्मवादिना | பிரம்மவித்தால் |
| सभृत्यबल- } वाहनं च } | பிருத்தியர்கள், சைன் யங்கள், இவர்களோ டும் வாஹனங்களுட னும் கூடியதாய் | यथोक्तं | சபிக்கப்பட்டவண்ண மே |
| | | भस्मसात् भृतम् | பஸ்மமாய்விட்டது. |

तस्यासौ दण्डविषयो विन्ध्यशैवल्योर्नृप । शप्तो ब्रह्मर्षिणा तेन वैधर्म्ये सहिते कृते ॥

| | | | |
|--------------|-----------------|-----------------|---|
| नृप | “ மன்றே! | असौ | இந்த |
| वैधर्म्यं | அக்ரமமான | विन्ध्यशैवल्योः | } விந்தியசைவலமலை களுக்கு மத்தியிலி ருக்கும் |
| कृते | செயல் | | |
| सहिते | ஏற்பட்டவளவில் | | னது |
| तेन | அந்த | शप्तः | சபிக்கப்பட்டது. |
| ब्रह्मर्षिणा | பிரம்மவித்தால் | | |
| तस्य | அந்த (ஆர்ஷம்) | | |

ततःप्रभृति काकुत्स्थ दण्डकारण्यमुच्यते । तपस्विनः स्थिता ह्यत्र जनस्थानमतोऽभवत् ॥

काकुत्स्थ “ஹே காகுத்தரே!
 ततःप्रभृति அன்றுதொட்டு
 दण्डकारण्य ‘தண்டகாரண்ய’
 மென்று
 उच्यते பெயர்வழங்கலாயிற்று;

अत्र இவ்விடத்தில்
 तपस्विनः हि தபஸ்விகளும்
 स्थिताः வாஸம்செய்தார்கள்.
 अत्र: அக்காரணத்தால்
 जनस्थानं ‘ஜனஸ்தான’மென்றும்
 अभवत् பெயர் உண்டாயிற்று.

एतत्ते सर्वमाख्यातं यन्मां पृच्छसि राघव । सन्ध्यामुपासितुं वीर समयो ह्यतिवर्तते ॥

वीर “ஹே வீர!
 राघव ஹே ஸ்ரீராகவ!
 मां என்னை
 यत् எனதை
 पृच्छसि கேட்டருளினீரோ
 ते தேவரீருக்கு
 एतत् இது

सर्वं முற்றும்
 आख्यातं சொல்லப்பட்டுவிட்டது.
 सन्ध्यां ஸந்தியாவந்தனத்தை
 उपासितुं உபாலிக்க
 समयः हि ஏற்றகாலமும்
 अतिवर्तते அதுகிரமித்துவிட்
 டது.

एते महर्षयः सर्वे पूर्णकुम्भाः समन्ततः । कृतोदका नरव्याघ्र आदित्यं पर्युपासते ॥

नरव्याघ्र “ஹே புருஷோத்தம!
 एते இந்த
 महर्षयः மஹரிஷிகள்
 सर्वे எல்லோரும்
 समन्ततः எல்லாப்பக்கங்களி
 லும்

कृतोदका: ஸந்தியாவந்தனங்களை
 முடித்தவர்களாய்
 पूर्णकुम्भाः பூர்ணகும்பமுடைய
 வர்களாய்
 आदित्यं சூர்யபகவானை
 पर्युपासते ஆசக்தியுடன் உபா
 விக்கின்றார்கள்.

स तैर्ब्राह्मणामभ्यस्तं सहितैर्ब्रह्मविच्चमैः । रविरस्तं गतो राम गच्छोदकमुपस्पृश ॥ २१ ॥

राम “ஹே ஸ்ரீராம!
 अभ्यस्तं சூரியாஸ்தமனமாகும்
 வேளையில்
 तैः அந்த
 ब्रह्मविच्चमैः பிரம்மவித்துக்களால்
 सहितैः எல்லாரும் சேர்ந்து
 ब्राह्मणं உபாஸனை புரியப்
 பட்டது.

सः அந்த
 रविः சூரியன்
 अस्तं அஸ்தமனகிரிக்கு
 गतः போய்விட்டார்.
 गच्छ தேவரீரும் எழுந்தரு
 ளாக்.
 उदकं ஸந்தியாவந்தனத்தை
 उपस्पृश செய்யும்”.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे एकाशीतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23355

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2631



अभिवाद्याब्रवीद्रामो महर्षिं कुम्भसम्भवम् । आपृच्छे स्वां पुरीं गन्तुं मामनुज्ञातुर्हसि ।

ராம: ஸ்ரீராமர்
 कुम्भसम्भवं கும்பயோனியாகிய
 महर्षिं முனிவர் பெருமானை
 अभिवाद्य நமஸ்கரித்து அபிவா
 தனஞ்செய்து
 अव वीत् இங்ஙனம் திருவாய்
 மலர்ந்தருளிணர்:
 स्वां “எனது

पुरीं நகரத்திற்கு
 गन्तुं போக
 आपृच्छे நான் அனுமதிபெற இ
 ங்கே வந்திருக்கிறேன்,
 मां என்னை
 अनुज्ञातुं போகவிடைதந்தருள
 अर्हसि தேவரீர் திருவுள்ளம்
 கொள்ளவேண்டும்.

घन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि दर्शनेन महात्मनः । द्रष्टुं चैवागमिष्यामि पावनार्थमिहात्मनः ॥

महात्मनः “மஹாத்மாவினுடைய
 दर्शनेन தர்சனத்தால்
 घन्यः தன்யனாய்
 अस्मि ஆனேன்.
 अनुगृहीतः च கிருதார்த்தனாயும்
 अस्मि ஆனேன்.

आत्मनः एव அடியேனுக்கும்
 पावनार्थं புண்ணியம் ஏற்பட
 வேண்டியதற்காக
 द्रष्टुं ஸேவிக்க
 इह இவ்விடத்திற்கு
 आगमिष्यामि இனியும் வந்துபோகி
 ரேன்.”

तथा वदति काकुत्स्थे वाक्यमद्भुतदर्शनम् । उवाच परमप्रीतो धर्मनेत्रस्तपोधनः ॥ ८ ॥

काकुत्स्थे काசுத்தஸ்தர்
 तथा அவ்வண்ணமாய்
 अद्भुतदर्शनं { அமானுஷ்யமாயிருக்
 கும் நற்குணத்தை
 விளங்கக்காட்டுகிற
 वाक्यं மொழியை
 वदति உரைசெய்யவும்

धर्मनेत्रः தர்மத்தையே கண்க
 ளாயுடையவரும்
 तपोधनः தபோதனருமாகிய
 அவர்
 परमप्रीतः அளவுகடந்த உள்ளம்
 प्रीतिस्तवराकि
 उवाच இப்படிப் பதில்தந்த
 ருளிணர்:

अत्यद्भुतमिदं वाक्यं तव राम शुभाक्षरम् । पावनः सर्वभूतानां त्वमेव रघुनन्दन ॥ ९ ॥

राम “ஹே ஸ்ரீராம!
 तव தேவரீரது
 इदं இந்த
 शुभाक्षरं மேலான தருமத்தை
 விளங்கக்காட்டும்
 वाक्यं மொழியானது

अत्यद्भुतं அதிவிசித்தரமாயிருக்கி
 றது.
 रघुनन्दन ஹே ரகுநந்தன!
 एवं एव தேவரீரொருவரே
 सर्वभूतानां சகல பிராணிகளுக்
 கும்
 पावनः புண்ணியமுளிப்பவர்.

मुहूर्तमपि राम त्वां ये च पश्यन्ति केचन ।

ராம "ஹே ஸ்ரீராமா !
 मुहूर्तं अपि கணப்பொழுதாகிலும்
 त्वां தேவரீரை
 ये எவர்கள்
 केचन எப்படியிருந்தாலும்
 पश्यन्ति தர்சிக்கின்றார்களோ
 ते அவர்கள்

पाविताः स्वर्गभूताश्च पूज्यास्ते सर्वदैवतैः ॥

பாவிதா: ச பரிசுத்தமானவர்கள்
 களாயும்
 स्वर्गभूताः च { சுவர்க்கத்திற்கு
 உரிமையுற்றவர்
 களாகவும்
 सर्वदैवतैः ஸகலதேவர்களாலும்
 पूज्याः கொண்டாடப்படுகி
 ருர்கள்.

ये च त्वां घोरचक्षुभिः पश्यन्ति प्राणिनो भुवि । हतास्ते यमदण्डेन सद्यो निरयगामिनः ॥

भुवि "உலகில்
 ये எந்த
 प्राणिनः ஜீவன்கள்
 त्वां தேவரீரை
 घोरचक्षुभिः விஷக்கண்களால்
 पश्यन्ति தர்சிக்கின்றார்களோ

தே அவர்கள்
 यमदण्डेन யமதண்டத்தால்
 हताः च துன்புறுபவர்களாயே
 सद्यः அப்போதே
 निरयगामिनः நரகத்தை ஸம்பாதிக்கின்றனர்கள்.

ईदृशस्त्वं रघुश्रेष्ठ पावनः सर्वदेहिनाम् । भुवि त्वां कथयन्तोऽपि सिद्धिमेष्यन्ति राघव ॥

रघुश्रेष्ठ "ரகூத்தம !
 सर्वदेहिनां எல்லா உயிர்ஜீவன்
 களையும்
 ईदृशः இப்படி
 पावनः புனிதமாக்குகிறவர்
 त्वं தேவரீர்;
 राघव ஸ்ரீராகவ !

भुवि உலகில்
 त्वां தேவரீரைச்சேர்ந்த
 कथयन्तः अपि { கதைகளை கீர்த்தனம்
 பண்ணுகின்றவர்
 களும்
 सिद्धिं மோகூதத்தை
 पश्यन्ति பெறுவார்கள்.

गच्छ चारिष्ठमव्यग्रः पन्थानमकुतोभयम् । प्रशाधि राज्यं धर्मेण गतिर्हि जगतो भवान् ॥

अव्यग्रः "நிச்சலராய்
 अरिष्टं च சுகமாயும்
 गच्छ எழுந்தருளலாம்.
 पन्थानं வழியில்
 अकुतोभयं அஞ்சலங்களை
 வராமலிருக்கக்கூடவது.

राज्यं ராஜ்யத்தை
 धर्मेण ராஜநீதிப்படி
 प्रशाधि ஆண்டுவருக.
 भवान् हि தேவரீரொருவரே
 जगतः உலகுக்கு
 गतिः கதி."

एवमुक्तस्तु मुनिना प्राञ्जलिः प्रग्रहो वृषः । अभ्यवादयत प्राज्ञस्तमृपि पुण्यशालिनम् ॥

मुनिना முனிவரால்
 वृषु இவ்விஷயத்தில்
 एवं இவ்விதம்
 उक्तः சொல்லியதற்குத்
 திருச்செவிகாய்த்த
 प्राज्ञः பிராக்ஞராகிய
 वृषः மன்னர்

प्रग्रहः அதிபீதியைக்
 காட்டுபவராய்
 प्राञ्जलिः அஞ்சலீஹஸ்தராகி
 पुण्यशालिनं புண்ணியசாலியாகிய
 तं ऋषिं அந்த முனிவரை
 अभ्यवादयत அடிபணிக்
 து
 ஸேவித்தார்.

| | |
|-------------------------|--------------------------------|
| विस्वय | தன்னதீனத்திலிருந்த தைவிட்டு |
| ते | ‘உனக்கு |
| स्वसित | நல்வாழ்வு |
| अस्तु | இருக்கக்கடவது’ |
| इति च | என்றும் |
| गच्छ | ‘நீ போய்விடலாம்’ |
| इति | என்றும் |
| विसर्जयिष्ये | விடைகொடுத்தனுப்பி விட்டு |
| कक्ष्यान्तरविनिक्षिप्तं | நடுக்கட்டுக்காவலா ளாகிய |
| द्वाःस्थं | வாயிலோணப் |
| रामः | ஸ்ரீராமர் [பார்த்து |

| | |
|-------------|---------------------------|
| वचः | இந்த ஆக்ஞையை |
| भववीत् | நியமித்தருளினார் : |
| लघुत्रिकमौ | “வேகசாலிகளாகிய |
| तौ | இவ்விருவர்களான |
| भरतं च | பரதனிடமும் |
| लक्ष्मणं एव | இலட்சுமணனிடமும் |
| गत्वा | சென்று |
| मम | எனது |
| आगमनं | வரவை |
| आख्याय | தெரிபடுத்தி |
| शब्दापयत | அழைத்துவாருங்கள். |
| मा चिरम् | காலதாமதம் வேண்ட டாம்.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकिये आदिकाव्ये
उत्तरकाण्डे द्व्यशीतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23375

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2651



द्व्यशीतितमः सर्गः—எண்பத்திமன்றாவது ஸர்க்கம் ॥ ௨௩ ॥

राजसूयाकरणनिर्धारणम्—ராஜஸூயம் செய்யவேண்டாமென்று நிர்ணயிப்பது.

तच्छ्रुत्वा भाषितं तस्य रामस्याक्षिष्टकर्मणः । द्वाःस्थः कुमारवाहूय राघवाय न्यवेदयत् ॥

| | |
|----------------|--|
| द्वाःस्थः | வாயிற்காப்போன் |
| अक्षिष्टकर्मणः | இஷ்டப்படி எதையும் முடிக்கவல்லவராகிய |
| तस्य | அந்த |
| रामस्य | ஸ்ரீராமருடைய |
| तत् भाषितं | அந்தத் திருவாக்கை |

| | |
|-----------|----------------------------|
| श्रुत्वा | சிரமேற்கொண்டு |
| कुमारौ | இளவரசர்களிருவர் களையும் |
| आहूय | அழைத்துக்கொண்டு |
| राघवाय | ஸ்ரீராமருக்கு [வந்து |
| न्यवेदयत् | தெரியப்படுத்தினார். |

दृष्ट्वा तु राघवः प्राप्तो भियौ भरतलक्ष्मणौ । परिष्वज्य तदा रामो वाक्यमेतदुवाच ह ॥

| | |
|-------------|------------------------------|
| राघवः | ஸ்ரீராமவர் |
| प्राप्तौ | ஸன்னிதியில் வந்திருக்கும் |
| भियौ | அன்பிற்குரியவர்களா கிய |
| भरतलक्ष्मणौ | பரதரையும் லக்ஷ்ம ணரையும் |
| दृष्ट्वा | கண்டு |

| | |
|--------------|------------------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் |
| तदा | அப்பொழுது |
| परिष्वज्य तु | ஆலிங்கனம் செய்து |
| एवम् | இந்த [விட்டு |
| वाक्यं | மொழியை |
| उवाच | திருவாய்மலர்ந்தருளி னார். |
| ह | காண். |

कृतं मया यथा तथ्यं द्विजकार्यमनुत्तमम् । धर्मसेतुमतो भूयः कर्तुमिच्छामि राघवौ ॥ ३ ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-----------|---------------------|
| राघवौ | “ஹே ராகவர்களே! | कृतं | செய்துமுடிக்கப்பட்ட |
| अनुत्तमं | பெரிய | | டது. |
| द्विज नर्यं | வேதியரது கார்யமா | अतः | இதைக்காட்டிலும் |
| | னது | भूयः | பெருதாயிருக்கின்ற |
| मया | என்னால் | धर्मसेतुं | ராஜசூயயாகத்தை |
| तथ्यं यथा | வாக்களித்தவண்ண | कर्तुं | செய்ய |
| | மே | इच्छामि | உத்தேசிக்கின்றேன். |

अक्षय्यश्चाव्ययश्चैव धर्मसेतुर्भतो मम । धर्मप्रसाधकं हेतत्सर्वपापपणाशनम् ॥ ४ ॥

| | | | |
|----------------|-------------------|----------------|---------------------|
| धर्मसेतुः च एव | “ராஜசூயயாக | मतः | துணிபு. |
| | மொன்றுதான் | एतत् हि | இது ஒன்றுதான் |
| अक्षय्यः | சாகவதமான | धर्मप्रसाधकं च | தருமத்தின் பூர்த்தி |
| अव्ययः | புண்ணியபலனை அளிக் | | யாகின்றது. |
| | கவல்லது என்பது | सर्वपापपणाशनम् | எப்படிப்பட்ட பாப |
| मम | எனது | | மும் ஒழிக்கவல்லது. |

युवाभ्यामात्मभूताभ्यां राजसूयमनुत्तमम् । सहितो यष्टुमिच्छामि तत्र धर्मो हि शाश्वतः ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|----------|-------------------|
| आत्मभूताभ्यां | { “என்னிடம் மனப் | राजसूयं | ராஜசூயயாகத்தை |
| | பூர்வமாய் பக்தி | यष्टुं | புரிய |
| | வைத்திருக்கும் | इच्छामि | விரும்புகின்றேன். |
| युवाभ्यां | உங்களிருவர்களோடு | तत्र | அதில் |
| सहितः | சேர்ந்திருந்து | शाश्वतः | சாகவதமான |
| अनुत्तमं | எதற்கும் மேம்பட்ட | धर्मः हि | புண்ணியம் ஏற்படு |
| | தான | | மல்லவா? |

इष्ट्वा तु राजसूयेन मित्रः शत्रुनिवर्हणः । सुहृतेन सुयज्ञेन वरुणत्वमुपागमत् ॥ ६ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|------------|-------------------|
| शत्रुनिवर्हणः | “சத்ருசம்ஹாரகராகிய | राजसूयेन | ராஜசூயயாகத்தை |
| मित्रः | மித்திரனென்பவர் | इष्ट्वा तु | செய்துமுடித்ததால் |
| सुहृतेन | மஹாபெரிய யாகமும் | | லேயே |
| सुयज्ञेन | மஹாபுண்யகிருத்யமு | वरुणः | வருணபதவியை |
| | மான | उपागमत् | பெற்றனர். |

सोमश्च राजसूयेन इष्ट्वा धर्मैण धर्मवित् । प्राप्तश्च सर्वलोकेषु कीर्तिस्थानं च शाश्वतम् ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|--------------|--------------------|
| धर्मवित् | “தருமவித்தாகிய | सर्वलोकेषु च | எல்லா உலகங்களி |
| सोमः च | ஸோமனும் | | லும் |
| धर्मैण | தர்மத்தை அளிக்க | कीर्तिस्थानं | யாரும் விரும்புமிட |
| | வல்லதாகிய | | மாகிய |
| राजसूयेन | ராஜசூயயாகத்தைச் | शाश्वतं | வைகுண்டத்தை |
| इष्ट्वा च | செய்துமுடித்ததால் | प्राप्तः | பெற்றனர். |
| | லேயே | | |

अस्मिन्नहनि यच्छ्रेयश्चिन्त्यतां तन्मया सह । हितं चायतियुक्तं च प्रयतौ कर्तुमर्हथः ॥

यत् "எது
 श्रेयः மோகந்ததை அளிக்க
 तत् अत्त [வல்லதோ
 मया सह என்னுடன்கூட
 अस्मिन् இந்த
 अहनि च சுதினத்திலேயே
 चिन्त्यतां { ஆலோசித்து நிஷ்கர்
 ஷிக்கப்படவேண்டி-
 யது.

हितं च உசிதமானதும்
 आयतियुक्तं மேலான பலனைத்தரு
 வதுமானதையே
 प्रयतौ { தீர்க்காலோசனை செய்
 து ஒரு தீர்மானத்
 திற்குவந்தவர்களாய்
 कर्तुं अर्हथः { நீங்கள் இருவரும் செ
 ய்துமுடிக்கவேண்டி-
 யது."

श्रुत्वा तु राघवस्यैतद्वाक्यं वाक्यविशारदः । भरतः प्राञ्जलिभूत्वा वाक्यमेतदुवाच ह ॥

वाक्यविशारदः { மொழிகளின் துட்
 பங்களை அறிவதில்
 நிபுணராகிய
 भरतः பரதர்
 राघवस्य ஸ்ரீராகவருடைய
 तु இவ்விஷயத்தில்
 एतत् இந்த

वाक्यं திருவாக்கை
 श्रुत्वा கேட்டு
 प्राञ्जलिः அஞ்சலிஹஸ்தராய்
 भूत्वा ஆகி
 एतत् वाक्यं இந்த மொழியை
 उवाच விஞ்ஞாபனம்
 ह காண்! [செய்தார் :

त्वयि धर्मः परः साधो त्वयि सर्वा वसुन्धरा । प्रतिष्ठिता महाबाहो यशश्चामितविक्रम ॥

धर्म- } "இவ்வளவு இத்தன்
 विक्रम } மையதெனக் கண்ட
 नियमुடியாத விக்
 मशाबाहो மஹா சாமர்த்யசாலி
 யாகிய
 साधो ஹிதம்செய்பவரே!
 त्वयि தேவரீரிடத்தில்
 धर्मः புண்புகருத்யங்களின்
 பயனானது

परः முடிவுபெற்றுவிட்டி
 वसुन्धरा உலகம் [ருக்கிறது.
 सर्वा எல்லாமும்
 त्वयि தேவரீரிடத்தில்
 प्रतिष्ठिता ஸ்தாபிக்கப்பட்டிருக்
 கிறது.
 यशः பரத்யுபகாரம் அளிக்
 च கும் தன்மையும்
 அப்படியே ஸ்தாபிக்
 கப்பட்டிருக்கிறது.

महीपालाश्च सर्वे त्वां प्रजापतिमिवामराः । निरीक्षन्ते महात्मानं लोकनाथं यथा वयम् ॥

त्वां "தேவரீரை
 महीपालाः மஹிபாலர்கள்
 सर्वे எல்லோரும்
 अमराः தேவர்கள்
 प्रजापतिं பிரம்மதேவனை
 इव எவ்வண்ணமோ
 அவ்வண்ணமே

लोकनाथं முவுலகிற்கும்
 महात्मानं यथा பரமபுருஷனென்றே
 निरीक्षन्ते அறிந்திருக்கின்றார்கள்.
 वयं च நாங்களுமறிந்திருக்
 கின்றோம்.

புஜாஸ்து பீதுவ்ரூஜந்பஸ்யந்தி த்வா் மஹாவல | பூதீத்யா கதீபூதூஸி பூரூணாமபி ரா஘வ ||

மஹாவல " மஹூபலசாலியாகிய
ரா஘வ ஸூராகவ!
ராஜந் சக்கிரவர்த்தியாரே,
புஜா: பீரணைகள்
த்வா் தேவரீரை
பீதுவத் த பீதாவெனவே

பஸ்யந்தி பாவித்துநடந்து
வருகிறார்கள்.
பூதீத்யா: உலகுக்கும்
பூரூணா் அபி உயிர்த்தீவன்களுக்கும்
கதீபூதூ: சரணம்புகுமிடமாய்
அசி தேவரீர் இருக்கிறீர்.

ஸ த்வமேவ்வித்ய் யஜ்மாஹுதாஸி கத்ய் நூப |

நூப " சக்கிரவர்த்தியாரே!
பூதீத்யா உலகில்
ராஜவ்ஸானா் ராஜவம்சங்களுக்கு
விநாஸ: நாசம்
யஸ எதில்
தூஸ்யதே ஏற்படுகின்றதோ
ஏவ்வித்ய் அப்படிப்பட்டதாகிய

பூதீத்யா் ராஜவ்ஸானா் விநாஸூ யத் தூஸ்யதே ||

யஜ் யாகத்தை
ஸ: ப்ரத்யஸூமஹூவிஷ்
த்வ் தேவரீர் [னுரூவாகிய
ஆஹுதா அசி அனுஷ்டிப்பவராய்
கத்யம் ஆகிறீர் என்பது
எந்நமம் தகுதீயா
கும்?

பூதீத்யா் யே த புரூஷா ராஜந்யூரூஷமாஒதா: | ஸ்வேபா் பவிதா தத் தூஸ்ய: ஸர்வாந்தகூபம: ||

ராஜந் " சக்கிரவர்த்தியாரே!
பூதீத்யா உலகில்
பூரூஷ்ய் மாநிடவீரத்தை
ஆஒதா: விடாது ஆதரிக்கும்
புரூஷா: மாநிடர்கள்
யே த எவர்களுே அவர்கள்

ஸ்வேபா் எல்லோருக்கும்
ஸர்வாந்தகூபம: யமனூல் வினாவது
போன்ற
தூஸ்ய: நாசம்
தத் அதில்
பவிதா சம்பநிக்கும்.

ஸ த்வ் புரூஷாடூல் குபூரீர்துலகிவ்ரூம | பூதீதீவா் நாஹீஸே ன்துந் தூஸூ ஹி தவ வர்ததே || 15 ||

அதூலகிவ்ரூம " விக்கிரமத்தில் இணை
யில்லாதவராகிய
புரூஷாடூல் தூஹே பூருஷூதாதம!
குபூரீ: திருக்கல்யாண குணம்
கனூககூகூண்டு
தவ தூஸூ தேவரீரது வசத்தில்
வர்ததே அடங்கி வருகிறது

ஹி எந்நிறபடியால்
ஸ: அப்படியாயிருக்கும்
த்வ் தேவரீர்
பூதீதீவா் உலகை
ன்துந் நாசப்படுத்த
ந அஹீஸே திருவுள்ளம் கொள்ள
லாகாது."

பரதஸ்ய து ததூவ்ய் ஶ்ருத்வாஸ்மூதமய் ததூ | ப்ரஹ்மதூல் லேபே ராம: ஸத்யபராக்ரூம: || 16 ||

ஸத்யபராக்ரூம: ஸத்யபராக்கிரமான
ராம: ஸூராமர்
ததூ அப்பொழுது
து இவ்விஷயத்தில்
பரதஸ்ய பரதருடைய
அஸ்தமய்ய் அமிர்தமயமாயிருக்
கின்ற

தத் அந்த
வாக்ய் மொழிக்கு
ஶ்ருத்வா திருச்செவிசாய்த்து
அதூல் நிகரற்ற
ப்ரஹ்ம மனத்ருப்தீயை
லேபே பெற்றனர்.

उवाच च शुभं वाक्यं कैकेयानन्दवर्धनम् । प्रीतोऽस्मि परितुष्टोऽस्मि तवाद्य वचनेऽनघा॥

| | | | |
|--------------------------|---|------------------------------------|--|
| கைகேயா- நந்நவ்நம் | கைகேயியின் ஆனந் தத்தை விருத்தி செய்யும் அவரைப் பார்த்து | அநவ அய தவ வசுநே | “நிரபரா தியே! இப்பொழுது உனது மொழியில் |
| शुभं वाक्यं च उवाच | சுபமாயிருக்கின்ற இந்த மொழியையும் திருவாய்மலர்ந்தருளி னார்: | प्रीतः अस्मि परितुष्टः अस्मि | திருப்தியடைந்தவனை னேன். மகிழ்ச்சிக்கொண்டவ ஆயினேன். [னாய்] |

इदं वचनमक्लीवं त्वया धर्मसमाहितम् । व्याहृतं पुरुषव्याघ्र पृथिव्याः परिपालनम् ॥ १८ ॥

| | | | |
|---|--|---------------------------------------|--|
| புருஷவ்யா த்வயா வ்யாஹு தீ இதம் வசு நம் | “ஹே புருஷோ த்தம! உன்னால் மொழியப்பட்ட இந்த வார்த்தை மஹாபிரயோஜனத் தை அளிக்க த்தக்கது. | धर्मसमाहितं पृथिव्याः परिपालनम् | தருமத்திற்கு ஒத்தி ருக்கின்றது. உலகுக்கு நன்மை பயப்பது. |
|---|--|---------------------------------------|--|

एष्यदस्सदभिप्रायाद्राजसूयात्क्रतूत्तमात् । निवर्तयामि धर्मज्ञ तव सुव्याहृतेन च ॥ १९ ॥

| | | | |
|--|---|--|---|
| धर्मज्ञ तव सुव्याहृतेन च एष्यत् | “தருமமறிந்தவனே! உனது நன்மை விளைவிக்கும் மொழியைக்கேட்ட தால் நான் அத்தயாசை வைத்திருந்தாலும் (ஆர்ஷம்) | राजसूयात् क्रतूत्तमात् अस्सदभिप्रायात् निवर्तयामि | ராஜசூயமெனும் பெரியயாகம் செய்ய வேண்டுமென்ற எனது உத்தேசத்தி லிருந்து திரும்பிவிட்டேன். |
|--|---|--|---|

बालानां तु शुभं वाक्यं ग्राह्यं लक्ष्मणपूर्वज । तस्माच्छृणोमि ते वाक्यं साधुयुक्तं महामते॥

| | | | |
|---|---|---|--|
| महामते लक्ष्मणपूर्वज ते वाक्यं बालानां वाक्यं तु | “மஹாபுத்திமானே! லக்ஷ்மணனுக்கு உனது [முத்தவனே! வாக்கியமானது இளையவர்களுடைய மொழியாயிருந்த போதிலும் | साधुयुक्तं शुभं ग्राह्यं तस्मात् शृणोमि | தருமத்தை ஒத்திருக் புது. உசுதமாயிருக்கிறது. ஏற்றுக்கொள்ளவேண் டியதாயிருக்கிறது. அனதால் நீ சொல்லியபடியே நான் செய்கிறேன்.” |
|---|---|---|--|

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे त्र्यशीतितमः सर्गः ॥



चतुरशीतितमः सर्गः—எண்பத்துநான்காவது ஸர்க்கம் || ௨௪ ||

वृत्राख्यानवर्णनम्—விருத்திராஸுரனது சரித்தத்தைச் சொல்லுவது.

तथोक्तवति रामे तु भरते च महात्मनि । लक्ष्मणोऽथ शुभं वाक्यमुवाच रघुनन्दनम् ॥

| | | | |
|----------|-----------------|-----------|------------------|
| ராமே து | ஸ்ரீராமரும் | ர஘ுநந்நம் | ரகுநந்தனரைப்பார் |
| மஹாத்மநி | மஹாத்மாவாகிய | வாக்யம் | ஒரு மொழியை [து |
| பரதே ச | பரதரும் | ஸ்தம் | இப்படி. |
| தथा | அங்ஙனம் | ஸுபம் | மனதைக்கவரும் |
| उक्तवति | ஸம்பாஷிக்கையில் | उवाच | வண்ணமாய் |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | | விண்ணப்பம் செய் |
| | | | தார்: |

अश्वमेधो महायज्ञः पावनः सर्वपापनाम् । पावनस्तव दुर्धर्षो रोचतां रघुनन्दन ॥ २ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|-----------|-----------------|
| ர஘ுநந்நம் | “ரகுநந்தன! | दुर्धर्षः | இணையற்றது. |
| அஷ்வமேத: | அச்வமேதமெனும் | पावनः | சயமே பாபாஹிதமா |
| மஹாயஜ்ந: | மஹாயாகமானது | तव | தேவீருடைய [னது. |
| सर्वपापनां | ஸர்வபாபங்களுக்கும் | रोचताम् | திருவுள்ளத்தில் |
| पावनः | பராயச்சித்தமானது. | | நினைக்கலாமே. |

श्रूयते हि पुरा वृत्तं वासवे सुमहात्मनि । ब्रह्महत्याऽऽवृत्तः शक्रो ह्यमेधेन पावितः ॥३॥

| | | | |
|------------|------------------------|-------------|--------------------|
| சுமஹாத்மநி | “மஹாயசஸ்வியாகிய | ब्रह्महत्या | பிரம்மஹத்திதோஷ |
| वासवे हि | இந்திரன்விஷயமாக | | த்தால் |
| पुरावृत्तं | பழைய கதை [வே | आवृतः | குழப்பப்பட்டிருந்த |
| श्रूयते | சேட்கப்பட்டிருக்கிறது. | शक्रः | இந்திரன் |
| | | ह्यमेधेन | அச்வமேதயாகத்தால் |
| | | पावितः | புனிதனாயினான். |

पुरा किल महाबाहो देवासुरसमागमे । वृत्रो नाम महानासीदैतयो लोकसंमतः ॥ ४ ॥

| | | | |
|------------------------|---|----------|-------------------------------|
| மஹாபாஹோ | “ஹே மஹாபாகுவே! | महान् | ஒரு மஹாத்மா |
| पुरा | முன்பு | आसीत् | இருந்தான். |
| देवासुर- } समागमे } | தேவர்களும், அசுரர்களும் ஒத்துவாழ்கையில் | दैतयः | அசுராஜாதியில் பிறந்த |
| | | किञ्च | இருந்தாலும் [தவன். |
| वृत्रः | விருத்திரன் | लोकसंमतः | { உலகத்தவர்களால் |
| नाम | என்ற | | { புசுழந்து கொண்டாடப்பட்டவன். |

विस्तीर्णो योजनशतमुच्छ्रितस्त्रिगुणं ततः । अनुरागेण लोकांस्त्रिन्नेहात्पश्यति सर्वतः ॥

| | | | |
|------------|-----------------|--------------|--------------------|
| யோஜனசதம் | “நூறு யோஜனை | वीन् लो हान् | மூன்று உலகங்களை |
| विस्तीर्णः | அகலமும் | सर्वतः | முற்றிலும் |
| ततः | அதைக்காட்டிலும் | खे रात् | ஜீவகாருண்யத்தால் |
| त्रिगुणं | மும்மடங்கு | अनुरागेण | விசுவாசத்துடனே |
| उच्छ्रितः | உயரமுமுள்ள அவன் | पश्यति | குளிரப்பார்த்தான், |

धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च बुद्ध्या च परिनिष्ठितः । शशास पृथिवीं स्फीतां धर्मेण सुसमाहितः ॥

धर्मज्ञः च “ தர்மமறிந்தவன் ;
 कृतज्ञः च நன்றி மறவாதவன் ;
 बुद्ध्या च புத்தியாலோ
 परिनिष्ठितः மஹாநிபுணன் ;

सुसमाहितः மஹாபுண்யசாலியாய்
 धर्मेण நீதிமுறைப்படி
 स्फीतां ஏராளமாயிருக்கின்ற
 पृथिवीं உலகை
 शशास ஆண்டுவந்தான்.

तस्मिन्प्रशासति तदा सर्वकामदुघा मही । रसवन्ति प्रसूतानि मूलानि च फलानि च ॥

तस्मिन् “ அவன்
 प्रशासति ஆண்டுவருகையில்
 मही பூமியானது
 { வேண்டியவை யாவற்றையும் அளிக்கிற
 सर्वकामदुघा { தாயிருந்தது.

तदा அக்காலத்தில்
 मूलानि च கிழங்குகளும்
 फलानि च பழங்களும்
 रसवन्ति சுவையுள்ளனவாய்
 प्रसूतानि உண்டாயின.

अकृष्टपच्या पृथिवी सुसंपन्ना महात्मनः । स राज्यं तादृशं भुङ्क्ते स्फीतमद्भुतदर्शनम् ॥

महात्मनः “ மஹாத்மாவின் து
 पृथिवी பூமியானது
 { உழவு முதலான பயிர்
 अकृष्टपच्या { தொழிலின்றி தானே
 { விளைகின்றதாய்
 सुसंपन्ना மிக்க செழிப்பாயி
 सः அவன் [ருந்தது.

तादृशं அப்படிப்பட்ட
 राज्यं ராஜ்யத்தை
 { ஸர்வபாக்கியங்களை
 स्फीतं { பெற்று விளங்குகிற
 { தாய்
 अद्भुतदर्शनं அதிக ஆச்சர்யகரமாய்
 { யிருக்கிறதாயும்
 भुङ्क्ते ஆண்டுவந்தான்.

तस्य बुद्धिः समुत्पन्ना तपः कुर्यात्सुत्तमम् । तपो हि परमं श्रेयः सम्मोहपितरत्सुखम् ॥

तपः “ தவம்
 परमं ஸர்வோத்திருஷ்ட
 பான
 श्रेयः பயனை அளிக்கவல்ல
 इतरत् மற்ற [து.
 सुखं சுகமானது
 सम्मोहं மதமயக்கத்தின்
 கார்யம்

हि என்கிறபடியால்
 अनुत्तमं நிகரற்றதாயிருக்கின்ற
 तपः தவத்தை
 कुर्यां நான் செய்தேதீர்
 வேண்டுபென்ற
 बुद्धिः எண்ணம்
 तस्य அவனுக்கு
 समुत्पन्ना உண்டாயிற்று.

स निक्षिप्य सुतं ज्येष्ठं पौत्रेषु मधुरेश्वरम् । तप उग्रं समातिष्ठत्तापयन्सर्वदेवताः ॥ १० ॥

सः “ அவன்
 ज्येष्ठं सुतं மூத்த குமாரனை
 मधुरेश्वरं மதுராபுரிமன்னராய்
 पौत्रेषु பட்டணத்தாஜனங்க
 { எரிடத்தில்
 निक्षिप्य பொறுப்புச்சாட்டி
 விட்டு

सर्वदेवताः எல்லாதேவதை
 { களையும்
 तपयन् தரிக்கச்செய்கின்ற
 { வரைய்
 उग्रं உக்ரபான
 तपः தவத்தை
 समातिष्ठत् புரிந்துவந்தான்.

तपस्तप्यति वृत्रे तु वासवः परमार्तवत् । विष्णुं समुपसंक्रम्य वाक्यमेतदुवाच ह ॥ ११ ॥

| | | | |
|------------|-----------------|------------|----------------------|
| வூவே | “விருத்திரன் | विष्णुं | ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணுவை |
| तपः | தவத்தை | समुपक्रम्य | போய் நேரில் தாசித்து |
| तप्यति तु | இயற்றிவருகையில் | एवम् | இந்த |
| वासवः | இந்திரன் | वाक्यं | மொழியை |
| परमार्तवत् | அதிக வியாகூல | उवाच | விண்ணப்பம் செய் |
| | மடைந்தவனாய் | ह | காண்! [தான். |

तपस्यता महाबाहो लोका वृत्रेण निर्जिताः । बलवान्स हि धर्मात्मा नैनं शक्यामि शासितुम् ॥

| | | | |
|-----------|-----------------------------------|-------------|-------------------------------------|
| महाबाहो | “ஹே மஹாபாகுவே! | सः हि | அவனே |
| तपस्यता | கடுந்தவம்புரியும் | धर्मात्मा | தருமநெறிதவறாத |
| वृत्रेण | விருத்திரனால் | बलवान् | பலிஷ்டன். |
| लोकाः | உலகங்கள் | एनं शासितुं | இவனை அடக்க |
| निर्जिताः | சுவாதீனமாக்கிக் கொள்ளப்படுகின்றன. | न शक्यामि | நான் உரிமையில்லாதவனாயிருக்கின்றேன். |

यद्यसौ तप आतिष्ठेद्भूय एवासुरेश्वरः । यावल्लोका धरिष्यन्ति तावदस्य वशानुगाः ॥

| | | | |
|------------|-------------------|-------------|-------------------------|
| असौ | “இந்த | लोकाः | உலகங்கள் |
| असुरेश्वरः | அசுரமன்னன் | यावत् तावत् | எவ்வளவோர் அவ்வளவ |
| भूयः एव | இன்னமும் | अस्य | இவனது [வும் |
| तपः | தவத்தை | वशानुगाः | அதீனத்திற்குள்பட்டனவாய் |
| आतिष्ठेत् | புரிந்துவருகிறான் | धरिष्यन्ति | ஏற்பட்டுவிடும். |
| यदि | என்கிறபக்கத்தில் | | |

तं चैनं परमोदारमुपेक्षति महाबलम् । क्षणं हि न भवेद्दृत्रः क्रुद्धे त्वयि सुरेश्वर ॥ १४ ॥

| | | | |
|----------|----------------------------------|-----------|----------------------|
| परमोदारं | “சலியா மனத்தனாய் | सुरेश्वर | தேவர்கள் தொழுந் |
| महाबलं | முரட்டுத்தையியமுடையவனாயிருக்கும் | | தேவரே! |
| तं | அந்த | त्वयि | தேவரீரிடத்தில் |
| एनं च | இவனையும் | क्रुद्धे | கோபம் குடிக்கொண் |
| उपेक्षति | தேவரீர் உபேக்ஷித்து வருகிறீர். | वृत्रः हि | விருத்திரன்கூட்டாரல் |
| | | क्षणं | க்ஷணமேனும் |
| | | न भवेत् | உயிருடனிரான். |

यदा हि प्रीतिसंयोगं त्वया विष्णो समागतः । तदाप्रभृति लोकानां नाथस्त्वमुपलब्धवान् ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------|-------------|----------------------------|
| विष्णो | “ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணுவே! | यदा हि | எப்பொழுதோ |
| त्वया | தேவரீரால் | तदा प्रभृति | அன்றுதொடங்கி |
| प्रीतिसंयोगं | அன்புக்குரியவனாயிருந்தலை | लोकानां | உலகங்களுக்கு |
| | | नाथः | நாதனாயிருத்தலை |
| समागतः | அடைந்தவனாகிறதா | उपलब्धवान् | மனதில் கொண்டிருக்கின்றான். |

स त्वं प्रसादं देवानां कुरुष्व सुप्रमाहितः । त्वत्कृतेन हि सर्वं स्यात्प्रशान्तमरुजं जगत् ॥

ச: த்வம் “அந்தத் தேவரீர்
சுசமாஹித: அருள்புரிய திருவுள்
எம் பற்றியவராய்
தேவர்களுக்கு
அனுக்கிரகத்தை
செய்தருள்க.
உலகு

सर्वा एल्लாமும்
त्वःकृतेन हि தேவரீரின் திருவிளை
யாட்டாலேயே
அரஜம் இடையறு தவண்ண
மாய் மாறுபாடின்றி
प्रशान्तं அடக்கத்துடனிருப்
பதாய்
स्यात् இருந்தவருகிறது.

इमे हि सर्वे विष्णो त्वां निरीक्षन्ते दिवोकसः । वृत्रघातेन महता त्वेषां साह्यं कुरुष्व ह ॥

விஷ்ணு “ஹே மஹாவிஷ்ணு
த்வா் தேவரீரை [வே!
ஹே இந்த
दिवोकसः தேவர்கள்
सर्वे हि எல்லோருடைய
निरीक्षन्ते வேண்டிவந்திருக்கின்
றார்கள்.

महता பெருக்காரியமாகிய
वृत्रघातेन விருத்திரனைக்கொல்வ
தால்
एषां இவர்களுக்கு
तु ह இதுவிஷயத்திலும்
साह्यं கைகொடுத்துகாத்தலை
कुरुष्व தேவரீர் செய்தருள்க.

त्वया हि नित्यशः साह्यं कृतमेषां महात्मनाम् । असह्यमिदमन्येषामगतीनां गतिर्भवान् ॥

ஹ் “இது
अन्येषां இதரர்களுக்கு
असह्यं அஸஹ்யமானது.
भवान् हि தேவரீர் ஒருவரோ
अगतीनां கதியற்றவர்களுக்கு
गतिः கதி.

एषां இந்த
महात्मनां மஹாத்மாக்களுக்கு
नित्यशः எக்காலத்திலும்
साह्यं ஸஹாயமானது
अन्या தேவரீரால்
कृतम् செய்யப்பட்டிருக்கி
றது.”

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे चतुरशीतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23413



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2689

पञ्चाशीतितमः सर्गः—எண்பத்தைந்தாவது ஸர்க்கம் ॥ ௧௩ ॥

वृत्रासुरवधः—விருத்திராஸுரவதம்.

लक्ष्मणस्य तु तद्वाक्यं श्रुत्वा शत्रुनिवर्हणः । वृत्रघातमशेषेण कथयेत्याह सुव्रत ॥ १ ॥

शत्रु निवर्हणः சத்ருக்களை ஜயிக்க
வல்ல அவர்

आह ஆக்ஞாபித்தார்:
सुव्रत “மெச்சத்தக்க

लक्ष्मणस्य லக்ஷ்மணருடைய

वृत्रघातं விருதம்பூண்டவனை!

तत् वाक्यं அம்மொழிக்கு

विशेषेण விருத்திரவதத்தைப்
பற்றியதை

श्रुत्वा திருச்செவியசாய்த்து

अशेषेण எதையும்விடாமல்

इति இங்ஙனம்

कथय விரிவாய் விளம்பு

तु இவ்விஷயத்தில்

वायिक.”

एकांशो वासवं यातु द्वितीयो वज्रमेव तु । तृतीयो भूतलं शक्रस्तदा वृत्रं वधिष्यति ॥

| | | | |
|----------|---------------------|----------|------------------|
| एकांशः | “‘ஒரு அம்சமானது | यातु | பிரவேசித்திருக்க |
| वासवं | இந்திரனிடத்திலும் | | கட்டும். |
| द्वितीयः | இரண்டாவதானது | तदा | பிறகு |
| वज्रं | வஜ்ராயுதத்தினிடத்தி | शक्रः एव | இந்திரனே |
| तृतीयः | மூன்றாவதானது[லும் | वृत्रं | விருத்திரனே |
| भूतलं तु | பூமியினிடத்திலும் | वधिष्यति | வதைக்கமுடியும்.’ |

तथा ब्रुवति देवेशे देवा वाक्यमथान्ब्रुवन् । एवमेतन्न सन्देहो यथा वदसि दैत्यहन् ॥ ८ ॥

| | | | |
|---------|---------------------|-----------|--------------------|
| देवेशे | “தேவதேவர் | ब्रुवन् | சொன்னார்கள். |
| तथा | அவ்விதமாய் | दैत्यहन् | ‘அசுரஸம்ஹாரக! |
| ब्रुवति | திருவாய்மலர்ந்தருளி | यथा वदसि | தேவரீர் நியமித்தது |
| | விட்டபொழுது | | எதுவோ |
| देवाः | தேவர்கள் | एतत् | இது |
| अथ | பின்வரும் | एवं | அந்நனமேயாகட்டும். |
| वाक्यं | மொழியை | सन्देहः न | ஆபத்தது ஒழிந்தது. |

भद्रं तैःस्तु गमिष्यामो वृत्तासुरवधैषिणः । भजस्व परमोदार वासवं स्वेन तेजसा ॥ ९ ॥

| | | | |
|---------|--------------------|------------|----------------------|
| ते | “‘தேவரீருக்கு | वासवं | இந்திரனே |
| भद्रं | (எங்களை) காத்தருளு | स्वेन | தேவரீரது |
| | கிறது என்பது | तेजसा | தேஜஸைக்கொண்டு |
| अस्तु | { எப்பொழுதும் திரு | भजस्व | காத்தருளும். |
| | வுள்ளத்திலிருக்க | वृत्तासुर- | } விருத்திராசுரனுடைய |
| | வேண்டும். | वधैषिणः | |
| परमोदार | { வேண்டியதையெல் | गमिष्यामः | திக்கும் நாங்கள் |
| | லாம் அளிக்கவல்ல | | போகவிடை கொள்ளு |
| | வரே! | | கின்றோம்.’ |

ततः सर्वे महात्मानः सहस्राक्षपुरोगमाः । तदरण्यमुपाक्रामन्यत्र वृत्रो महासुरः ॥ १० ॥

| | | | |
|-------------------|-----------------|------------|----------------------|
| सहस्राक्षपुरोगमाः | “இந்திரனே தலைமை | महासुरः | மஹாசுரனாகிய |
| | யாய்க்கொண்ட | वृत्रः | விருத்திரன் |
| महात्मानः | மஹாத்மாக்கள் | यत्र | எவ்விடத்திலோ |
| सर्वे | எல்லோரும் | तत् अरण्यं | அவ்வரண்யத்திற்கு |
| ततः | அங்கிருந்து | उपाक्रमान् | போய்ச்சேர்ந்தார்கள். |

तेऽपश्यंस्तेजसा भूतं तप्यन्तमसुरोत्तमम् । पिवन्तमिव लोकांस्त्रीभिर्दहन्तमिवाम्बरम् ॥ ११ ॥

| | | | |
|------------|-------------------|---------|--------------------|
| ते | “அவர்கள் | भूतं | உருக்கொண்டவராய் |
| असुरोत्तमं | அசுரோத்தமனை | त्रीन् | மூன்று |
| | கிட்டியனுகவொண் | लोकान् | உலகங்களையும் |
| तेजसा | { னாத நற்குணசக்தி | पिवन्तं | விழுங்கிவிடுகிறவன் |
| | யால் | इव | போலவும் |

| | | | |
|----------|----------------------------------|----------|-----------------------|
| ऋषेः | ஆகாயத்தை | तप्यन्तं | அருந்தவும் புரிபவ |
| निःहन्तं | } கொளுத்திவிடுகிற வன் பாலவும் | |) னாய் கண்டார்கள். |
| इव | | अपश्यन् | |

दृष्ट्वै चासुरश्रेष्ठं देवास्त्रासमुपागमन् । कथमेनं वधिष्यामः कथं न स्यात्पराजयः ॥१२॥

| | | | |
|--------------|--------------------------|-----------|--------------------|
| देवाः च | “ தேவர்கள் | वधिष्यामः | நாம் வதைப்போம்? |
| असुरश्रेष्ठं | அஸ்ரோத்தமனை | पराजयः | அபஜயம் |
| दृष्ट्वा एव | கண்டமாத் திரத்தி லேயே | न स्यात् | உண்டாகாதிருக்கிறது |
| एनं | ‘ இவனை | कथं | எவ்விதம்?’ என்கிற |
| कथं | எங்கனம் | वासं | ஏக்கத்தை |
| | | उपागमन् | அடைந்தார்கள். |

तेषां चिन्तयतां तत्र सहस्राक्षः पुरन्दरः । वज्रं प्रगृह्य पाणिभ्यां प्राहिणोद्वृत्रमूर्धनि ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------------|--------------|----------------------------|
| तेषां | “ அவர்கள் | वज्रं | வஜ்ராயுதத்தை |
| तत्र | அப்பொழுது | पाणिभ्यां | இருகைகளாலும் |
| चिन्तयतां | கவலையில் முழக்கிக் கிடக்கையில் | प्रगृह्य | சேர்த்துத் தூக்கி |
| सहस्राक्षः | ஆயிரம் கண்ணாகிய | वृत्रमूर्धनि | விருத்திராசரன் முடிமீது |
| पुरन्दरः | இந்திரன் | प्राहिणोत् | தாக்கினான். |

कालाग्निनेव घोरेण तप्तेनेव महार्चिषा । पतता वृत्रशिरसा जगत्त्रासमुपागमत् ॥ १४ ॥

| | | | |
|---------------|--|------------|---|
| महार्चिषा | “புகையின்றிக் கொ முந்துவிட்டுடொரியும் | घोरेण | புஜிக்கவேண்டியதும் |
| कालाग्निना इव | பிரளயாக்களி போன்ற தாய் | पतता एव | அடியுண்டு கீழே விழு ந்து கிடப்பதுமான |
| तप्तेन | } தோஷர ஹிதமாய் தவம்புரிந்ததால் விளையும் தேஜோமய மாய்விளங்குவதும் | वृत्रशिरसा | விருத்திரனது சிர ஸால் |
| | | जगत् | உலகமானது |
| | | त्रासं | கவலையை |
| | | उपागमत् | அடைந்தது. |

असम्भाव्यं वधं तस्य वृत्रस्य विबुधाधिपः । चिन्तयानो जगामाशु लोकस्यान्तं महायशसाः ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|------------|---------------------------|
| अशयशसाः | “ மஹாயசஸ்வியாகிய | असम्भाव्यं | அடுக்காத காரியம் என்று |
| विबुधाधिपः | தேவேசன் | चिन्तयानः | ஏக்கம் பிடித்தவனாய் |
| तस्य | அந்த | लोकस्य | உலகத்தின் |
| वृत्रस्य | விருத்திரனுக்கு | अन्तं | எல்லைக்கு |
| वधं | நாசம்விளைவித்து விட்டதை | आशु | விரைவில் |
| | | जगाम | பிரயாணமானான். |

तमिन्द्रं ब्रह्महत्याऽऽशु गच्छन्तमनुगच्छति । अपतच्चास्य गात्रेषु तमिन्द्रं दुःखमाविशत् ॥

ब्रह्महत्या பிரம்மஹத்தியானது
 गच्छन्तं நடந்துகொண்டிருக்க
 तं इन्द्रं அந்த இந்திரனை [கும்
 आशु தக்கூறாமே
 अनुगच्छति கூடச்சென்றது.
 अस्य இவனது

गात्रेषु அவயவங்களில்
 अपतत् ஒட்டிக்கொண்டது.
 च அதனால்
 तं इन्द्रं அந்த இந்திரனை
 दुःखं மூதேவீத்தனமானது
 आविशत् மேற்கொண்டுவிட்டது.

हृत्तारयः प्रणष्टेन्द्रा देवाः साग्निपुरोगमाः । विष्णुं त्रिभुवनेशानं सुहृमुहुरपूजयन् ॥ १७ ॥

साग्निपुरोगमाः “அக்னிபகவானைத் தலைமையாய்க்கொண்ட தேவர்கள்
 देवाः தேவர்கள்
 हृत्तारयः சந்ருக்களின் பாதை ஒழிந்தவர்களாய்
 प्रणष्टेन्द्राः இந்திரனை இழந்தவர்களாய்

त्रिभुवनेशानं த்ரிலோகாதிபதியான
 विष्णुं ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணுவை
 सुहृः सुहृः இன்னும் பலவாராய் இப்படி
 अपूजयन् போற்றிப் புகழ்ந்து பார்த்தித்தாரர்கள்.

त्वं गतिः परमेशान पूर्वजो जगतः पिता । रक्षार्थं सर्वभूतानां विष्णुत्वमुपजग्मिवान् ॥ १८ ॥

परमेशान “உமக்கு மேற்பட்ட வரில்லாத ஈசனே!
 त्वं தேவரீர்
 पूर्वजः அனாதியாயிருப்பவர்;
 जगतः உலகுக்கு
 पिता பிதா;

गतिः கதி;
 सर्वभूतानां ஸர்வ ஜீவன்களுக்கும்
 रक्षार्थं நன்மை புரிவதற்காக
 विष्णुः விஷ்ணுபாவத்தை
 उपजग्मिवान् வெளிப்படையாய் காட்டியருளுகின்றீர்.

हृत्तथायं त्वया वृत्रो ब्रह्महत्या च वासवम् । बाधते सुरशार्दूल मोक्षं तस्या विनिर्दिश ॥

सुरशार्दूल “ஹே தேவோத்தம!
 अयं இந்த
 वृत्रः விருத்திரன்
 त्वया च தேவரீராலேயே
 हतः கொல்லப்பட்டான்.
 च இப்படியிருந்தும்
 वासवं இந்திரனை

ब्रह्महत्या பிரம்மஹத்தியானது
 बाधते வாட்டி வதைக்கின்ற
 तस्याः அதிலிருந்து [து.
 मोक्षं விடுதலைக்கு
 विनिर्दिश { வழிகாட்டத் திருவுள்ளம் கொள்ளவேண்டும்.

तेषां तद्वचनं श्रुत्वा देवानां विष्णुरब्रवीत् । मामेव यजतां शक्रः पावयिष्यामि वज्रिणम् ॥

विष्णुः “ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணு வானவர்
 तेषां அந்த
 देवानां தேவர்களுடைய
 तत् अந்த
 वचनं விண்ணப்பத்திற்கு
 श्रुत्वा செவிகாய்த்து

अब्रवीत् இந்த பதிலைத் திருவாய்மலர்ந்தருளினார்;
 शक्रः ‘இந்திரன்
 मां एव எனனைக்குறித்தே
 यजतां யக்ளும் செய்யட்டும்.
 वज्रिणं இந்திரனை
 पावयिष्यामि நான் புனிதனைக்கு கிறேன்.

पुण्येन ह्यमेधेन मामिष्टा पाकशासनः । पुनरेष्यति देवानामिन्द्रत्वमकुतोभयम् ॥ २१ ॥

| | | | |
|----------|----------------------|------------|-------------------|
| पा शासनः | “இந்திரன் | देवानां | தேவர்களுக்கு |
| मां | என்னை | इन्द्रत्वं | அரசனாயிருக்கும் |
| इष्टा | உபாஸித்து | | பதவியை |
| पुण्येन | புணிகமான | अकुतोभयं | எப்படிப்பட்ட கஷ்ட |
| ह्यमेधेन | அச்வமேதபாகம் | | (மும் இல்லாதபடி |
| पुनः | மீளவும் [செய்வதினால் | एष्यति | பெறுவான்.” |

एवं सन्दिश्य तां वाणीं देवानाममृतोपमाम् । जगाम विष्णुर्देवेशः स्तूयमानस्त्रिविष्टपम् ॥

| | | | |
|-----------|------------------|-------------|---------------------|
| स्तूयमानः | “போற்றிப்புகழும் | अमृतोर्मां | அமிருதத்திற்கு சம |
| | பெற்ற | | மாயிருக்கின்ற |
| देवेशः | தேவர் தேவராகிய | तां वाणीं | அந்த திருவாக்கை |
| विष्णुः | ஸ்ரீ மஹா விஷ்ணு | सन्दिश्य | திருவாய்மலர்ந்தருளி |
| एवं | இவ்வண்ணமாய் | त्रिविष्टपं | விட்டு |
| देवां | தேவர்களுக்கு | जगाम | இந்திரலோகத்திற்கு |
| | | | எழுந்தருளினார்.” |

इत्यर्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकिये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे षष्ठाशीतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23435

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2711



षडशीतितमः सर्गः—எண்பத்தாறுவது ஸர்க்கம். ॥ ८६ ॥

इन्द्रस्य ब्रह्महत्यातरणम्—இந்திரன் பிரம்மஹத்தியிலிருந்து விதேலை பெறுவது.

तदा वृत्रवधं सर्वमखिलेन स लक्ष्मणः । कथयित्वा नरश्रेष्ठः कथाशेषं प्रचक्रमे ॥ १ ॥

| | | | |
|------------|------------------|-----------|-----------------|
| सः | அந்த | कथयित्वा | சொல்லிவிட்டு |
| नरश्रेष्ठः | புருஷோத்தமராகிய | कथाशेषं | கதையின் முடிவை |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| तदा | அப்பொழுது | अखिलेन | எதையும் விடாமல் |
| वृत्रवधं | விருத்திராசுவதத் | प्रचक्रमे | இப்படிச்சொல்லி |
| | தைப்பற்றிடதை | | முடித்தார்: |

ततो हते महावीर्ये वृत्रे देवभयङ्करे । ब्रह्महत्यावृतः शक्रः संज्ञां लेभे न वृत्रहा ॥ २ ॥

| | | | |
|------------|---|-----------------|--------------------|
| देवभयङ्करे | “தேவர்களுக்குப் பய த்தை உண்டுபண்ணி னவனும் | वृत्रहा | விருத்திரனைக்கொன்ற |
| महावीर्यं | | शक्रः | இந்திரன் |
| वृत्रे | மஹாவீர்யமான | ब्रह्महत्यावृतः | பிரம்மஹத்தியால் |
| हते | விருத்திராசுவன் | | சூழப்பட்டவனாகி |
| ततः | கொல்லப்பட்ட | संज्ञां | தன்னறிவை |
| | பின்னர் | न लेभे | பெறாமலிருந்தான். |

सोऽन्तमाश्रित्य लोकानां नष्टसंज्ञो विचेतनः । कालं तत्रावसत्कश्चिद्वेष्टमान इवोरगः ॥३॥

ச: “அவன்
 லோகாந் உலகங்களின்
 அந்ந் எல்லையை
 மாசிர்த்ய அடைந்து
 தல அவ்விடத்தில்
 கசுதிர சில
 காலம் காலம்

நஷ்டச: தன்னறிவு இழந்தவ
 னை
 வேஷமான: அடங்கி, ஒடுங்கி,
 சுருண்டு கிடக்கும்
 உர: இவ பாய்ப்போல்
 விசேதன: { அவயவங்களை ஆட்டி
 அசைக்கமுடியாத
 வனைய
 அவசந் வலித்தான்.

अथ नष्टे सहस्राक्ष उद्विग्नमभवज्जगत् । भूमिश्च ध्वस्तसङ्काशा निस्त्रेहा शुष्ककानना ॥

அத “அப்படி
 சஹசாசு இந்நிரன்
 நஷ்டே கூசினித்துகிடக்கை
 ஜகத் உலகம் [யில்
 உதிசுந் துன்பத்தை அடைந்த
 அஹவந் ஆனது. [தாக

பூமி: ச பூமியும்
 ஢்வஸ்தசங்காசா நாசமடைந்தவண்ண
 மேயிருந்தது.
 நிஸ்ரேஹா ஈரப்பசையற்றதாய்
 சூசுக்கானநா காடுகள் உலர்ந்துகிடந்
 தன.

निस्तोतसद्य ते सर्वे हृदाथ सरितस्तथा । संक्षोभश्चैव सत्त्वानामनावृष्टिकृतोऽभवत् ॥

ஹத: ச “மடுக்களும்
 ருசிட: தயா நதிகளும்
 தே சரீவ் அலையெல்லாம்
 நிஸ்தோதச: ச நீர்வற்றியிருந்தன.
 சத்வானா பிராணிகளுக்கு

சங்க்ஷோம: ச மனக்கலக்கமும்
 உண்டாயிற்று.
 அநாவ்ரூசுத: எவ சூதாமகாலதசையும்
 அஹவந் உண்டாயிற்று.

क्षीयमाणे तु लोकेऽस्मिन्संभ्रान्तमनसः सुराः । यदुक्तं विष्णुना पूर्वं तं यज्ञं समुपानयन् ॥

அசுமிந் “இந்த
 லோகே உலகமானது
 க்ஷீயமாணே து க்ஷீணதசையை
 அடைந்தபோது
 சங்க்ஷாந்தமநச: எக்கம்பிடித்துக்
 கிடந்த
 சூரா: தேவர்கள்

விஷ்ணுநா ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணுவால்
 பூர்வ முன்னமேயே
 உக்த் சொல்லப்பட்டதாகி
 யத் எதுவே [யது
 த் அந்த
 யஜ் யாகத்தை
 சமூபானயந் ஆரம்பித்தார்கள்.

ततः सर्वे सुरगणाः सोपाध्यायाः सहर्षिभिः । तं देशं समुपाजग्मुर्यत्रेन्द्रो भयमोहितः ॥

தத: “அப்பொழுது
 சூர: தேவகணங்கள்
 சரீவ் எல்லோரும்
 சோா஢்யாய: உபாத்தியாயர்
 களோடும்
 சஹர்ஷிபி: ரிஷிகளோடும் கூடின
 வர்களாய்

஢்யமோஹித: டயக்தால், தன்னறிவு
 இழந்துகிடக்கும்
 ஹ்ந்: இந்நிரன்
 யத்: எங்கோ
 த்: அந்த
 தேச: இடத்திற்கு
 சமூபாஜஸு: போய்ச்சேர்ந்தார்கள்.

ते तु दृष्ट्वा सहस्राक्षमावृतं ब्रह्महृष्यया । तं पुरस्कृत्य देवेशमश्वमेधमुपाक्रमन् ॥ ८ ॥

| | | | |
|---------------|--------------------|------------|---------------------|
| ते | “அவர்கள் | देवेशं | தேவசாராகும் ஸ்ரீ |
| ब्रह्महृष्यया | பிரம்மஹந்தியால் | पुरस्कृत्य | மஹாவிஷ்ணுவை |
| आवृत् | சூழப்பட்டிருக்கும் | तु | முதலில் ஆராதித்து |
| सहस्राक्षं | இந்திரனை | अश्वमेध | அதன்பின்னர் [விட்டு |
| दृष्ट्वा | கண்டு | उपाक्रमन् | அச்வமேதயாகத்தை |
| तं | அந்த | | செய்யத்தொடங்கி |

ஞர்கள்.

ततोऽश्वमेधः सुमहान्महेन्द्रस्य महात्मनः । ववृधे ब्रह्महृत्यायाः पावनार्थं नरेश्वर ॥ ९ ॥

| | | | |
|-----------------|------------------|-----------|------------------|
| नरेश्वर | “புருஷோத்தம! | पावनार्थं | புனிதனாக்கும் |
| महात्मनः | மஹா தப்பாவாகிய | | பொருட்டு |
| महेन्द्रस्य | இந்திரனுக்கு | ततः | அப்பொழுது |
| ब्रह्महृत्यायाः | பிரம்மஹந்திகோஷத் | सुमहान् | மஹாமேன்மையான |
| | தீனின்று | अश्वमेधः | அச்வமேதயாகமா |
| | | ववृधे | நடைபெற்றது. [எது |

ततो यज्ञे समाप्ते तु ब्रह्महृत्या महात्मनः । अभिगम्याब्रवीद्वाक्यं क मे स्थानं विधास्यथ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------|----------|--------------------|
| ततः | “அப்போது | अब्रवीत् | சொல்லிற்று: |
| यज्ञे | யாகமானது | मे | ‘எனக்கு |
| समाप्ते तु | முடிவுபெற்றதும் | स्थानं | இருக்குமிடமானது |
| ब्रह्महृत्या | பிரம்மஹந்தியானது | क | எங்கே என்று |
| महात्मनः | தேவர்களை | विधास्यथ | நீங்களே நியமித்தரு |
| अभिगम्य | நேரில்வந்து தர்சித்து | | ளவேண்டும்.’ |
| वाक्यं | இந்த மொழியை | | |

ते तामूचुस्तदा देवास्तुष्टाः प्रीतिसमन्विताः । चतुर्था विभजात्मानमात्मनैव दुरासदे ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------------|-----------|--------------------|
| ते | “அந்த | उचुः | இங்நனம் நியமித்தரு |
| देवाः | தேவர்கள் | | ளிஞர்கள் : |
| प्रीतिसमन्विताः | மனத்திருப்திகொண்டவர்களாய் | दुरासदे | ‘துஸ்ஸஹமான |
| तुष्टाः | மகிழ்ச்சிகொண்டவர் | आत्मना एव | நீயாகவே [மாதே! |
| तां | அவளுக்கு [களாய் | आत्मानं | உன்னை |
| तथा | அப்பொழுது | चतुर्था | நான்கு பகுதிகளாக |
| | | विभज | பகுத்துக்கொள்.’ |

देवानां भाषितं श्रुत्वा ब्रह्महृत्या महात्मनाम् । सन्निधौ स्थानमन्यत्र वरयामास दुर्वसा ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|----------|-------------------|
| महात्मनां | “மஹா தமாக்களான | श्रुत्वा | கிரமேற்கொண்டு |
| देवानां | தேவர்களுடைய | देवानां | தேவர்களுடைய |
| भाषितं | திருவாக்கை | सन्निधौ | ஸன்னிதியில் |
| दुर्वसा | எங்கிருந்தாலுமஸஹ் | अन्यत्र | இதர |
| | யமாயிருக்கும் | स्थानं | வளிக்குமிடத்தை |
| ब्रह्महृत्या | பிரம்மஹந்தியான | वरयामास | தானே ஏற்படுத்திக் |
| | வள் | | கொண்டாள். |

एकेनांशेन वत्स्यामि पूर्णोदासु नदीषु वै । चतुरो वार्षिकान्नासान्दर्पणी कामचारिणी ॥

चतुरः “ நான்கு
 वार्षिकान् மழைகால
 मासान् மாஸங்களில்
 पूर्णोदासु வெள்ளப்பெருக்கெ
 नदीषु நதிகளில்
 एकेन अंशेन वै ஒரு அம்சத்தினால்

भूम्यामहं सर्वकालमेकेनांशेन दुर्वसा । वसिष्यामि न सन्देहः सत्येनैतद्द्वीमि वः ॥१४॥
 दुर्वसा “எங்கிருந்தாலும் அ
 ஸஹ்யமாயிருக்கும்

अहं நான்
 सर्वकालं எக்காலத்திலும்
 एकेन अंशेन ஒரு அம்சத்தால்
 भूयां பூமியில்

योऽयमंशस्तृतीयो मे स्त्रीषु यौवनशालिषु । त्रिरात्रं दर्पपूर्णासु वसिष्ये दर्पघातिनी ॥१५॥
 मे “என்னுடைய
 तृतीयः மூன்றாவது
 अंशः அம்சமானது
 यः எதுவோ
 अयं இதுவும்
 दर्पघातिनी கொட்டத்தை அடக்
 குகிறவளுமான நான்

हन्तारो ब्राह्मणान्ये तु मृषापूवमदूषकान् । तांश्चतुर्थेन भागेन संश्रयिष्ये सुरर्षभाः ॥१६॥
 सुरर्षभाः “தேவோத்தமர்க்காள்!
 चतुर्थेन நான்காவது
 भागेन அம்சத்தால்
 अदूषकान् தூஷணைக்கிடமாத
 ब्राह्मणान् வேதியர்களை
 मृषापूवं நிஷ்காரணமாய்

प्रत्यूचुस्तां ततो देवा यथा वदसि दुर्वसे । तथा भवतु तत्सर्वं साधयस्व यदीप्सितम् ॥
 ततः “அதன்மேல்
 देवाः தேவர்கள்
 तां அவளுக்கு
 प्रत्यूचुः இப்படி பதிலளித்தார்
 कः கள் :

दुर्वसे { ‘எங்கிருந்தாலும்
 அஸஹ்யமாயிருக்
 கும் மாதே!

दर्पणी கொட்டத்தை அடக்
 குகிறவளும
 कामचारिणी { எனக்கு இஷ்டமான
 இடத்தில் வளிக்க
 உரிமையுடையவளு
 मान नान्

वस्यामि வஸிப்பேன்.
 वसिष्यामि வாஸம் செய்வேன்.
 न सन्देहः இடற்கையமில்லை.
 वः உங்களுக்கு
 एतव் இதை
 सत्येन பிரமாமானமாய்
 श्रवीमि சொல்லுகிறேன்.

यौवनशालिषु யௌவனபருவத்தில்
 त्रिरात्रं इरக்கின்றவர்களும்
 दर्पपूर्णासु பூப்படைந்திருக்கின்ற
 வர்களான
 स्त्रीषु ஸ்த்ரீகளிடத்தில்
 त्रिरात्रं மூன்றாவு
 वसिष्ये வஸிப்பேன்.

हन्तारः தன்புறுத்துகிறவர்
 ये च எவர்களோ [கள்
 तान् तु அவர்களிடத்திலேயே
 संश्रयिष्ये நான் குடிக்கொண்டு
 ववषिष्येன்.

यथा எப்படி
 वदसि சொன்னாயோ
 तथा அப்படியே
 भवतु இருக்கட்டும்.
 ईप्सितं உத்தேசம்
 यत् எதுவோ
 तत्सर्वं அதெல்லாவற்றையும்
 साधयस्व நீ செய்தமுடிப்பாயாக.

ततः प्रीत्याऽन्विता देवाः सहस्राक्षं ववन्दिरे । विज्वरः स च पूतात्पा वासवः समपद्यत ॥

ततः “அதன்பிறகு
 प्रीत्या अन्विताः மனத்ருப்திகொண்ட
 வர்களான
 देवाः தேவர்கள்
 सहस्राक्षं இந்திரனை
 ववन्दिरे வணங்குகின்ற ருர்கள்.

सः अर्त
 वासवः च இந்திரனும்
 पूतात्पा பரிசுத்தனை
 विज्वरः கஷ்டநிவீர்த்திபெற்ற
 வனும்
 समपद्यत விவாங்கினான்.

प्रशान्तं च जगत्सर्वं सहस्राक्षे प्रतिष्ठिते । यज्ञं चाद्भुतसङ्काशं तदा शक्रोऽभ्यपूजयत् ॥

सहस्राक्षे “இந்திரன்
 प्रतिष्ठिते च தன்ஸ்தானத்தைப்
 जगत् உலகம் [பெற்றதும்
 सर्वं எல்லாமும்
 प्रशान्तं கஷ்டநிவீருத்தியைக்
 கண்டது.

तदा அப்பொழுது
 शक्रः च இந்திரனும்
 यज्ञं யாகத்தை
 अद्भुतसङ्काशं மஹா ஆச்சர்யகரமா
 யிருக்கிறதாய்
 अभ्यपूजयत् கொண்டாடினான்.

ईदृशो ह्यश्वमेधस्य प्रभावो रघुनन्दन । यजस्व सुमहाभाग हयमेधेन पार्थिव ॥ २० ॥

सुमहाभाग “மஹா பாக்கிய
 சாலியே!
 रघुनन्दन ஹே ரகுந்தன!
 पार्थिव சக்கிரவர்த்தியாரே!
 २.श्वमेधस्य அச்வமேதயாகத்
 திற்கு

प्रभावः பிரபாவமானது
 ईदृशः இத்தன்மையது.
 हि ஆனபடியால்
 हयमेधेन } அச்வமேதயாகத்தைச்
 यजस्व } செய்யத் திருவுள்ளம்
 கொள்ளவேண்டும்.”

इत्यर्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे षडशीतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23455



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2731

सत्ताशीतितमः सर्गः—எண்பத்தேழாவது ஸர்க்கம். ॥ ௨௦ ॥

इलोपाख्यानम्—இலமஹாராஜனின் சரிதம்.

तच्छ्रुत्वा लक्ष्मणेनोक्तं वाक्यं वाक्यविशारदः । प्रत्युवाच महातेजाः प्रहसन्राघवो वचः ॥

महातेजाः மஹா தேஜோவானும்
 वाक्यविशारदः வாக்கியநிபுணரு
 மாகிய
 राघवः ஸ்ரீராகவர்
 लक्ष्मणेन லக்ஷ்மணரால்
 उक्तं சொல்லப்பட்ட
 तत् அந்த

वाक्यं மொழியை
 श्रुत्वा கேட்டு,
 प्रहसन् உதஸாஹக்கொண்
 டவராய்
 वचः பின்வரும் தர்மநியம
 னத்தை
 प्रत्युवाच உத்தரராய் அருளிச்
 செய்தனர்;

एवमेव नरश्रेष्ठ यथा वदसि लक्ष्मण । वृत्रघातमशेषेण वाजिमेषफलं च यत् ॥ २ ॥

नरश्रेष्ठ
लक्ष्मण
वृत्रघातं
वाजिमेषफलं

“ஹே புருஷோத்தம!
லக்ஷ்மண!
விருத்திரானது வதை
யைப்பற்றியதும்
அச்வமேதயாகத்தால்
வினையும் புண்யத்தை
ப்பற்றியதும்

यत् च
यथा वदसि
अशेषेण
एवं एव

எதுவோ அது
நீ சொல்லுகிறபடி
முற்றிலும்
உண்மையே.

श्रूयते हि पुरा सौम्य कर्दमस्य प्रजापतेः । पुत्रो बाह्लीश्वरः श्रीमानिलो नाम सुधार्मिकः ॥

सौम्य
पुरा
श्रूयते हि
प्रजापतेः
कर्दमस्य
इलः
नाम

“ஹே ஸௌம்ய!
இதையும் தவிர
இன்னுமொரு
வதந்தியுண்டு.
பிரஜாபதிகளில் ஒருவ
கர்தமருக்கு [ராகிய
இலன்
எனப் பெயர்கொண்ட

पुत्रः
बाह्लीश्वरः
श्रीमान्
सुधार्मिकः

ஒரு புத்திரனிருந்
தான்.
பாஹ்லீகதேசத்
தாசன்.
ஸர்வபாக்கியங்களை
யும் பெற்றவன்.
மஹா பிரக்யாதி
பெற்ற தர்மவீரன்.

स राजा पृथिवीं सर्वां वशे कृत्वा महायशः । राज्यं चैव नरन्याग्र पुत्रवत्पर्यपालयत् ॥

नरन्याग्र
महायशः
सः राजा
पृथिवीं
सर्वां

“புருஷோத்தம!
மஹாயசஸ்யியாகிய
அந்த மன்னன்
பூமி
முழுவதையும்

वशे
कृत्वा
राज्यं च
पुत्रवत् एव
पर्यपालयत्

வசத்தில்
வைத்துக்கொண்டு
ராஜ்யத்தையும்
புத்திரனைப்போலவே
பரிபாலித்துவந்தான்.

सुरैश्च परमोदारैर्दैतैश्च महाधनैः । नागराक्षसगन्धर्वैर्यक्षैश्च सुमहात्मभिः ॥

पूज्यते नित्यशः सौम्य भयार्ते रघुनन्दन

॥ ५ ॥

सौम्य
रघुनन्दन
परमोदारैः
सुरैः च
महाधनैः
दैतैः च

“ஸௌம்ய!
ரகுநந்தன!
மஹா உதாரகுண
முள்ள
தேவர்களாலும்
மஹா தனவாண்களா
கிய
அஸூரர்களாலும்

भयार्तेः
नागराक्षस-
गन्धर्वैः
सुमहात्मभिः
यक्षैः च
नित्यशः
पूज्यते

உள்ளத்தில் பயம்
கொண்ட
நாகர்கள், ராக்ஷஸர்
கள், கந்தர்வர்கள்
இவர்களாலும்
பிரக்யாதிபெற்ற
யக்ஷர்களாலும்
எக்காலத்திலும்
வணங்கப்பட்டு
வந்தான்.

अविभ्यंश्च त्रयो लोकाः सरोषस्य महात्मनः ॥ ६ ॥

| | | | |
|---------|------------------|----------|-----------------|
| சரோஷ்ய | “கடுஞ்சினங்கொண்ட | லோகா: ச | உலகங்களும் |
| மஹா:மன: | மஹாத்மாவுக்கு | அவிப்யந் | அஞ்சி நடுங்கின. |
| வய: | மூன்று | | |

स राजा तादृशो ह्यासीद्धर्मे वीर्ये च निष्ठितः । बुद्ध्या च परमोदारो बाह्लीकेशो महायशः ॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------|---------------------|
| மஹாயசா: | “மஹாபெயர்பெற்ற | निष्ठितः | லோகப்பிரசித்தி |
| बाह्लीकेशः | பாஹ்லீகதேசத் | | கொண்டவனாயும் |
| स: | அந்த [தாசனான | बुद्ध्या | புத்தியால் |
| राजा | மன்னன் | | { எவருக்கும் மேன்மை |
| तादृशः | அப்படிப்பட்டவனாய் | परमोदारः च | { பெற்று விளங்குகிற |
| धर्मे हि | தருமத்திலும் | | { வனாயும் |
| वीर्ये च | வீர்யத்திலும் | आसीत् | இருந்தான்: |

स प्रक्रे महाबाहुर्भृग्यां रुचिरे वने । चैत्रे मनोरमे मासि सभृत्यबलवाहनः ॥ ८ ॥

| | | | |
|------------|---------------------|---------|---------------|
| மஹாபாஹு: | “மாஹாபாஹுவான | मनोरमे | மனோஹரமாயிருக் |
| स: | அவன் | चैत्रे | சித்திர [கும் |
| सभृत्यबल-} | பிருத்தயர்கள், ஸைன் | मासि | மாஸத்தில் |
| वाहनः } | யங்கள் இவர்களோ | रुचिरे | அழகான |
| | டும் வாஹனங்களோ | वने | வனத்தில் |
| | டும் கூடி | भृग्यां | வேட்டையாட |
| | | प्रक्रे | தலைப்பட்டான். |

प्रजन्ने च नृपोऽरण्ये मृगाञ्छतसहस्रशः । हत्थैव तृप्तिर्नाभूच्च राज्ञस्तस्य महात्मनः ॥ ९ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------|-----------|-------------------|
| नृपः च | “மன்னனும் | राज्ञः | மன்னனுக்கு |
| अरण्ये | அரண்யத்தில் | हत्वा एव | மாய்த்துக் கீழே |
| मृगान् | மிருகங்களை | | தள்ளியும் |
| शतसहस्रशः | நூறாயிரக்கணக்காய் | | { போதும் இனிவேண் |
| प्रजन्ने | சுட்டான். | तृप्तिः | { டாம் என்னும் தெ |
| महात्मनः | மஹாத்மாவாகிய | | { விட்டல் |
| तस्य | அந்த | न अभूत् च | ஏற்படவுமில்லை. |

नानामृगानामयुतं वध्यमानं महात्मना । यत्र जातो महासेनस्तं देशमुपचक्रमे ॥ १० ॥

| | | | |
|-------------|-------------------|----------|------------------|
| மஹாத்மனா | “மஹாத்மாவினால் | जातः | பிறந்தது |
| नानामृगानां | பலவிதமிருகங்களின் | यत्र | எங்கோ |
| अयुतं | அனேகம் | तं | அந்த |
| वध्यमानं | கொல்லப்பட்டது. | देशं | பிரதேசத்தில் |
| महासेनः | சுப்பிரமணியக் | उपचक्रमे | வந்துசேர்ந்தார். |
| | கடவுள் | | |

तस्मिन्देशे देवेशः शैलराजसुतां हरः । रमयामास दुर्धर्षः सर्वैरनुचरैः सह ॥ ११ ॥

तस्मिन् “அந்த
 प्रदेशे ப்ராதேசத்தில்
 दुर्धर्षः அருகே செல்லமுடி
 देवेशः தேவேசனாகும் [யாத
 हरः பாமேச்வார்
 अनुचरैः பரிஜனங்கள்

सर्वैः எல்லோரோடும்
 सह கூட
 शैलराजसुतां இமயமலையின் பெண்
 ணை (பார்வதியை)
 रमयामास உத்சாஹப்படுத்திக்
 கொண்டிருந்தார்.

कृत्वा स्त्रीरूपमात्मानमुमेशो गोपतिध्वजः । देव्याः प्रियचिकीर्षुः संस्तस्मिन्पर्वतनिर्झरे ॥

गोपतिध्वजः “விருஷபத்வஜராகிய
 उमेशः உமாபதி
 आत्मानं தன்னை
 स्त्रीरूपं பெண்ணுருவமாய்
 कृत्वा செய்துகொண்டு
 तस्मिन् அந்த

पर्वतनिर्झरे மலையின் ஒரு நீருற்ற
 பிரதேசத்தில்
 देव्याः மனைவிக்கு
 प्रियचिकीर्षुः सन् ஆனந்தம் விளைவித்
 துக்கொண்டிருந்தார்.

ये तु तत्र वनोद्देशे सत्त्वाः पुरुषवादिनः । यच्च किञ्चन तत्सर्वं नारीसंज्ञं बभूव ह ॥ १२ ॥

तत्र “அந்த
 वनोद्देशे வனப்ராதேசத்தில்
 पुरुषवादिनः ஆண் இனமென
 வழங்கப்படும்
 सत्त्वाः ஜீவன்கள்
 ये तु எவைகளோ அவை
 களும்

किञ्चन இதரமான தும்
 यत् च எதுவோ
 तत् அங்கிருந்த
 सर्वं ह எல்லாமும்
 नारीसंज्ञं பெண்பாலாய்
 बभूव விளங்கின.

एतस्मिन्नन्तरे राजा स इलः कर्दमात्मजः । निघ्नमृगसहस्राणि तं देशमुपचक्रमे ॥ १४ ॥

एतस्मिन् “இதே
 अन्तरे ஸமயத்தில்
 तं அந்த
 देशं பிரதேசத்திற்கு
 कर्दमात्मजः கர் தமப்பிரஜாபதி
 யின் புதல்வனாகிய

सः அந்த
 इलः இலனெனும்
 राजा மன்னன்
 मृगसहस्राणि பலவிலங்குகளை
 निघ्नम् கொன்றுகொண்டே
 उपचक्रमे போய்ச்சேர்ந்தான்.

स दृष्ट्वा स्त्रीकृतं सर्वं सव्यालमृगपक्षिकम् । आत्मानं स्त्रीकृतं चैव सासुगं रघुनन्दन ॥

तस्य दुःखं महत्त्वासीद्दृष्ट्वाऽऽत्मानं तथा गतम् । उमापतिश्च तत्कर्म ज्ञात्वा त्रासमुपागमत् ॥
 रघुनन्दन “ஹே ரகுந்தன!
 सः அவன்
 सव्यालमृगपक्षिकं பாம்புகள், மிருகங்கள்,
 பக்திகள் உள்ளிட்ட
 सर्वं எல்லாமும்
 स्त्रीकृतं च பெண்ணுருவமாயி
 ருப்பதையும்

आत्मानं स्त्रीकृतं चैव सासुगं रघुनन्दन ॥
 उमापतिश्च तत्कर्म ज्ञात्वा त्रासमुपागमत् ॥
 सासुगं பரிஜனங்களுள் எரிட்ட
 आत्मानं தானும்
 स्त्रीकृतं च एव பெண்ணுருவமாய்
 மாறியிருப்பதையும்
 दृष्ट्वा கண்டு
 आत्मानं தனக்கு
 तथा இவ்வண்ணமாய்

గానం ణంపవీత్తువిట్టడత
 { మాற்றிக்கொள்ள తన్
 కృష్ణ { అలకాత కారియ
 { మెన నిశ్చయి త్తుక్
 { కొண்டு
 తస్య అవునుక్కు
 మహత్ సుఖిక్కు అణ్ణత
 దుఃఖం తుక్కుమానతు

आसीत् உண்டாயிற்று.
 उमापते: உமாபதியினுடைய
 कर्म च செய்கைதான்
 तत् இது என்று
 ज्ञात्वा உணர்ந்து
 वासं அச்சத்தை
 उपागामत् அடைந்தான்.

ततो देवं महात्मानं शितिकण्ठं कपर्दिनम् । जगाम शरणं राजा सभृत्यबलवाहनः ॥१७॥

తన: " అతனால்
 రాజా మன்னన్
 సభృత్యబల- } పిరుத்தయీர்களోడం
 వాहन: } సెసన్యంకలొడం
 { వాఱుననంకలొడం
 { కుడినవుయ్

कपर्दिनं సడయణుమ్
 शितिकण्ठं శితికణ్డణుమ్
 महात्मानं మఱూత్మావుమాయి
 देवं தேవரை
 शरणं సఱణమాక
 जगाम అడైన్తాన్.

ततः प्रहस्य वरदः सह देव्या महेश्वरः । प्रजापतिसुतं वाक्यमुवाच वरदः स्वयम् ॥१८॥

తత: " అతన్మేల్
 దేవ్యా మణివిపుడన్
 सह కుడిపిరుత్తవఱాయి
 महेश्वरः మఱేఱుశవఱార్
 वरदः అణుకులమ్ సెయ్య
 { వేణ్ణడియవఱాయి

प्रजापतिसुतं { పిఱజూపతికణ్ణన్ ఒఱ
 { వఱిన్ పుతల్వణుకియ
 { అలణిన్పఱార్త్తు
 प्रहस्य పున్నకై సెయ్యతు
 वाक्यं ఇన్త మొఱ్ఱియై
 उवाच తిఱువాయమలన్తఱు
 स्वयं 'నఱణే [నిఱున్:
 वरदः వఱమ్ కుఱుక్కిఱవ
 { అక ఆక్కిఱేన్.

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ राजर्षे कार्दमेय महाबल । पुरुषत्वमृते सौम्य वरं वरय सुव्रत ॥ १९ ॥

రాజర్షే " : ఱాజుఱిఱయే !
 महाबल మఱూపలవఱణే !
 सुव्रत నల్ల విఱుతమ్ పున్డ
 सौम्य పున్యఱ త్మఱవే !
 कार्दमेय కఱతమఱిన్ పుతల్వణే !
 उत्तिष्ठ ఁఱున్తిఱు.

उत्तिष्ठ ఁఱున్తిఱు.
 पुरुषत्वं పుఱుఱణయ్ ఆయ్విఱు
 { వతై
 ऋते అఱ్ఱియ వేఱు ఁతేణుమ్
 वरं వఱత్తై
 वरय కేఱపఱయఱ.

ततः स राजा दुःखातः प्रत्याख्यातो महात्मना । न च जग्राह स्त्रीभूतो वरमन्यं सुरोत्तमात् ॥

మఱాత్మనఱ " పఱూ త్మఱఱిణుల్
 ప్రత్యాఖ్యాత: { వేణ్ణడియకైక్కు కుఱు
 { క్కుకమఱఱ్ఱేఱెన్ఱు
 { మఱుక్కుపట్టవణయ్
 स्त्रीभूतः పెణ్ణణుఱువమడైన్
 स: అన్త [తిఱున్త
 राजा మన్న్న్

ततः అతణుల్
 दुःखातः తుక్కుకఱక్కిఱఱన్తణయ్
 सुरोत्तमात् தேవశ్ఱేఱ్ఱ్ఱడిఱి
 अन्यं ఇతఱ ఁన్త [ఱున్తు
 वरं च వఱత్తైయమ్
 न जग्राह వేణ్ణడిక్కుకొన్న్
 { ఱిల్ఱే.

ततः शोकैः महता शैलराजसुतां नृपः । प्रणिपत्य ह्युमां देवीं सर्वेणैवान्तरात्मना ॥ २१ ॥

ततः “ अतன்மேல்
 नृपः மன்னன்
 महता ஸஹிக்கமுடியாத
 शोकैः சோகத்தால்
 सर्वेण एव எல்லாப் பிரகாரத்
 தாலும்
 अन्तरात्मना உள்ளமுருகி

शैलराजसुतां இமயமலையின் புதல்
 वियाकिय வியாகிய
 उमा உமா
 देवीं हि தேவியாரையே
 प्रणिपत्य முடிதாழ்த்திவணங்கி
 पंपिरार्त्तिத்தீத்தானः ப்பிரார்த்தித்தீத்தான:

ईशे वराणां वरदे लोकानामसि भामिनी । अमोघदर्शने देवि भज सौम्येन चक्षुषा ॥

ईशे “ எதையும் செய்ய
 வல்ல தேவீ !
 वराणां வரங்களுடைய
 वरदे அளித்தலாகும் பேரு
 தவிப்பிரியும் தேவீ !
 लोकानां உலகங்களுக்கு
 भामिनी } அனுக்கிரஹம் செய்
 अशि } யும் மாதாய் தேவரீர்
 விளங்குகிறீர்.

अमोघदर्शने வீணாகாத தர்சனத்
 तैद्युदைய தையுடைய
 देवि தாயே !
 सौम्येन குவிரீந்த
 चक्षुषा கண்ணால்
 भज கடாகூழித்தருள்க.

हृदतं तस्य राजर्षेर्विज्ञाय हरसन्निधौ । प्रत्युवाच शुभं वाक्यं देवी रुद्रस्य सम्मता ॥२३॥

हरसन्निधौ “ சிவபெருமானது
 ஸன்னிதானத்தில்
 रुद्रस्य சிவபெருமானது
 सस्यता அன்பிற்குப் பாத்
 திரமாகிய
 देवी தேவியார்
 तस्य அந்த
 राजर्षेः ராஜரிஷியினது

हृदतं மனதிற்கொண்ட
 கருத்தை
 विज्ञाय அறிந்துகொண்டு
 हरसन्निधौ பரமசிவனிடத்தில்
 शुभं அனுகூலமாயின
 वाक्यं இந்த மொழியை
 प्रत्युवाच திருவாய்மலர்ந்தருளி
 றார் :

अर्धस्य देवो वरदो वरार्धस्य तव ह्यहम् । तस्मादर्धं गृहाण त्वं स्त्रीपुंसोर्यानिदिच्छसि ॥

देवः “ மஹாதேவர்
 अर्धस्य பாதிக்கு
 वरदः வரமளிக்க உரிமையு
 तव உனக்கு [டையவர்.
 वरार्धस्य हि வரத்தின் பாதிக்கு
 मात्तिरம்
 अहं நான் உரிமையுடைய
 वः வள்.

तस्मात् ஆனபடியால்
 त्वं நீ
 अर्धं பாதியை
 गृहाण பெற்றுக்கொள்.
 स्त्रीपुंसोः ஸ்திரீபுருஷருபங்களி
 रண்டैदयம் ரண்டையும்
 यावत् எவ்வளவுகாலம்
 इच्छसि நீ வேண்டுகின்றனை ?

तद्भुततरं श्रुत्वा देव्या वरमनुत्तमम् । सम्प्रहृष्टमना भूत्वा राजा वाक्यमथाब्रवीत् ॥२५॥

| | | | |
|-----------|-------------------|------------|----------------------|
| ராஜா | “மன்னன் | சூதா | பெரிதாய்ப் பாராட்டி. |
| தேவ்யா: | தேவியாரது | சம்ஹ்ரமனா: | குளிர்ந்த மனத்தனய் |
| अद्भुततरं | மிகஆச்சர்யமானதும் | भूत्वा | ஆகி |
| अनुत्तमं | இணையற்றதுமாகிய | अथ | இந்த |
| तत् वरं | அந்த கைம்மாறை | वाक्यं | விண்ணப்பத்தை |
| | | अब्रवीत् | செய்துகொண்டான்; |

यदि देवि प्रसन्ना मे रूपेणाप्रतिमा भुवि । मासं स्त्रीत्वमुपासित्वा मासं स्यां पुरुषः पुनः ॥

| | | | |
|----------|----------------------|------------|--------------------|
| देवि | “தாயே! | मासं | ஒருமாஸக்காலத்தை |
| मे | எனக்கு | स्त्रीत्वं | பெண்ணுருவமாய் |
| प्रसन्ना | அருள் புரிகின்றவராய் | उपासित्वा | கழித்துவிட்டு |
| यदि | ஆகிறபகூத்தில் | पुनः | மீளவும் |
| भुवि | உலகில் | मासं | ஒருமாஸகாலம் |
| रूपेण | ரூபத்தால் | पुरुषः | ஆணுருவம்கொண்டவனாய் |
| अप्रतिमा | நிகரற்றவண்ணமாய் | स्याम् | நானிருக்கக்கடவேன். |

ईप्सितं तस्य विज्ञाय देवी सुरचिरानना । प्रत्युवाच शुभं वाक्यमेवमेव भविष्यति ॥२७॥

| | | | |
|------------|--|------------|---------------------|
| सुरचिरानना | “மஹாதேஜோமய மாய் விளங்கும் முகமுடைய | विज्ञाय | அறிந்துகொண்டு |
| देवी | தேவியார் | शुभं | ஏற்றபடியிருக்கும் |
| तस्य | அவனது | वाक्यं | இந்தமொழியை |
| ईप्सितं | இஷ்டத்தை | प्रत्युवाच | திருவாய்மலர்ந்தருளி |
| | | एवं एव | ‘அங்ஙனமே [ஊர்: |
| | | भविष्यति | ஆகுக. |

राजन्पुरुषभूतस्त्वं स्त्रीभावं न स्मरिष्यसि । स्त्रीभूतश्च परं मासं न स्मरिष्यसि पौरुषम् ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|--------------|-----------------------|
| राजन् | “ஹே ராஜனே! | परं | மற்றொரு |
| च | ஆயினும் | मासं | மாஸத்தில் |
| पुरुषभूतः | ஆணுருவம்கொண்ட | स्त्रीभूतः | பெண்ணுருவம்கொண்டவனாய் |
| त्वं | நீ | पौरुषं | ஆணுருவத்துடன |
| स्त्रीभावं | பெண்ணாயிருந்ததை | न स्मरिष्यसि | நீ ஸ்மரிக்கமாட்டாய். |
| न स्मरिष्यसि | ஸ்மரிக்கமாட்டாய்; | | |

एवं स राजा पुरुषो मासं भूत्वाऽथ कार्दमिः । त्रैलोक्यसुन्दरी नारी मासमेकमिलाऽभवत् ॥

| | | | |
|----------|--|------------------|-------------------|
| स: राजा | “அந்த மன்னன் | भूत्वा | வாழ்ந்துவிட்டு |
| एवं | இப்படியாய் | अथ | அதன்மேல் |
| मासं | ஒருமாதகாலம் | एकं मासं | ஒருமாதகாலம் |
| कार्दमिः | கர்த்தமப்ராஜாபதியின் புத்திரன் கர்த்தம என்று | त्रैलोक्यसुन्दरी | த்ரீலோகசுந்தரியான |
| पुरुषः | ஆண் உருவம்கொண்டவனாய் | इला | இலா என்னும் |
| | | नारी | பெண்மணியாய் |
| | | अभवत् | விளங்கினான்.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे सप्ताशीतितमः सर्गः ॥

किंपुरुषोत्पत्तिः—கிம்புருஷோத்பத்தி.

तां कथामिलसम्बन्धां रामेण समुदीरिताम् । लक्ष्मणो भरतश्चैव श्रुत्वा परमविस्मितौ ॥

ராமேண
சமூதீரிதாं
ஹலசம்ബந்தாं
தாं
கதாं ஶ்ரு:ய
ஸூராமரால்
சொல்லப்பட்டதும்
இலணைப்பற்றியது
அந்த [மாகிய
கதையைக்கேட்டு,

भरतः च
लक्ष्मणः एव
परमविस्मितौ
பரதரும்
லக்ஷ்மணரும்
மிகவும் கொண்டாடி
னூர்கள்.

तौ रामं प्राञ्जली भूत्वा तस्य राज्ञो महात्मनः । विस्तरं तस्य भावस्य तदा पप्रच्छतुः पुनः ॥

தौ
பாஜ்ஜலி
ஶூத்வா
புன:
ததா
தஸ
அவ்விருவர்களும்
அஞ்சலிஹஸ்தர்
ஆகி [களாய்
மீளவும்
அப்பொழுது
அந்த

महात्मनः
राज्ञः
तस्य
भावस्य
विस्तरं
रामं
पप्रच्छतुः
மஹா த்மாவான
மன்னனுடையவும்
அதன்
உட்கருத்தினுடைய
விஷயத்தை [வும்
ஸூராமரிடத்தில்
இப்படி வினாவினார்கள்;

कथं स राजा स्त्रीभूतो वर्तयामास दुर्गतिः । पुरुषः स यदा भूतः कां वृत्तिं वर्तयत्यसौ ॥

ச:
துர்ஶதி:
ஸ்த்ரீஶூத:
ராஜா
கத்ய
வர்தயாமாச
ச: அஸூ
“அந்த
தூர்தசையடைந்து
பெண்ணுருவங்
மன்னன் [கொண்ட
எப்படி
வாழ்ந்துவந்தான்?
அந்த இவன்

पुरुषः भूतः
यदा
कां
वृत्तिं
वर्तयति
ஆணுருவங்கொண்ட
ருந்தது
எப்பொழுதோ அப்
என்ன [பொழுது
விருத்தியை
அனுஷ்டித்துவந்
தான்? ”

तयोस्तद्भाषितं श्रुत्वा कौतूहलसमन्वितम् । कथयामास काकुत्स्थस्तस्य राज्ञो यथागतम् ॥

காகு:ஸ்த:
தயோ:
கூ:தூ:ஹ:ல-
சமந்விதம் }
தவ
காசுத்ஸ்தர்
அவ்விருவர்களது
விஷயம் தெரிந்துகொ
ள்ளவேண்டுமென்
கிற அவாவை நன்கு
விளக்கக்காட்டுகிற
அந்த

भाषितं
श्रुत्वा
तस्य राज्ञः
यथागतं
कथयामास
விண்ணப்பத்திற்கு
திருச்செவிசாய்த்து
அந்த மன்னனுக்கு
நடைபெற்ற கார்யமெ
துவோ அதை
இப்படி விசுவாய்ச்
சொல்லியருளினார்;

तमेव प्रथमं मासं स्त्रीभूत्वा लोकसुन्दरी । ताभिः परिवृता स्त्रीभिर्ये च पूर्वपदानुगाः ॥५॥

த
புத்யம்
மாஸம்
லோகஸுந்ரீ
ஸ்த்ரீஶூத்வா
“அந்த
முதல்
மாதத்திலேயே
லோகசுந்தரியாக
பெண்ணுருவங்
கொண்டவளாய்

पूर्वपदानुगाः
ये
स्त्रीभिः
ताभिः च
परिवृता
முன்நிலைமையில்
பரிஜனங்களாயிருந்
எவர்களோ [தவர்கள்
பெண்ணுருவம்
கொண்ட
அவர்களாலேயே
சூழப்பட்டுள்ளங்களுள்.

तत्काननं विगाह्याशु विजहे लोकसुन्दरी । द्रुमगुल्मलताकीर्णं पद्भ्यां पद्मदलेक्षणा ॥ ६ ॥

பசுதலேக்ஷணா " தாமரையின் தளம் போன்ற கண்களுற்ற லோகசுந்தரி ஹிருக்ஷங்களா லும், புதர்களா லும், கொடிகளா லும் நிறைந்த உள்ள

तत् काननं आशु पद्भ्यां विगाह्य विजहे अन्त काट्टில் உடனேயே கால்நடையாய் புருந்து உல்லாசமாய் காலம் கழித்தாள்.

वाहनानि च सर्वाणि सा त्यक्त्वा वै समन्ततः । पर्वताभोगविवरे तस्मिन्नेमे इला तदा ॥

ததா " அப்பொழுது அந்த இளை என்பவள் வாஹனங்கள் எல்லாவற்றையும் முற்றி லுமே ஒழித்துவிட்டு

तस्मिन् पर्वताभोग- विवरे रेमे अन्त மலையின் அடிவாரத் தைச் சுற்றியுள்ள பிரதேசத்தில் விளையாட்டாய் காலம் கழித்தாள்.

अथ तस्मिन्वनोद्देशे पर्वतस्याविदूरतः । सरः सुरचिरप्रख्यं नानापक्षिगणैर्युतम् ॥ ८ ॥

அத " அப்பொழுது தரிசுந் வனோद्देशே பர்வதத்திற்கு அவிதூரத: ஸமீபத்தில்

नानापक्षिगणैः युतं सुरचिरप्रख्यं सरः பலவகை பக்சிகளால் ஸேவிக்கப்பெற்றதும் அதிமனோஹரமாய் விளங்குகிறதமான ஒரு பொய்கை இருந்தது.

ददर्श सा त्विला तस्मिन्बुधं सोमसुतं ततः । ज्वलन्तं स्वेन वपुषा पूर्णसोममिवोदितम् ॥

தரிசுந் து " அவ்விடத்திலேயே அந்த இளை என்பவள் அப்பொழுது சந்திரனது புத்திர புத்தனை [னாகும்] தனது ரூபத்தால் அப்போதே உதயமாகும்

तीव्रं दुरासदं यशस्करं तपः तपन्तं तास्ये पर्यवस्थितं कामकरं च ददर्श तीव्रं दुरासदं यशस्करं तपः तपन्तं तास्ये पर्यवस्थितं कामकरं च ददर्श தீவ்ரமாயிருக்கிறதும் இணையில்லாதிருக்கிறதும் மஹத்தான புகழை தரத்தக்கதாயிருக்கிறதமான தவத்தை புரிகின்றவனாயும் யௌவனபருவத்தில் இருக்கின்றவனாகவும் ஆசை கொள்ளத்தக்க வடிவழகு கொள்ளாத தக்கவனாகவும் கண்டாள்.

पूर्णसोमं इव ज्वलन्तं अग्नीमये

பூர்ணசந்திரனைப் போலவே தேஜோமயமாய் விளங்குகிறவனாயும் ஜலத்தின் மத்தியில்

सा तं जलाशयं सर्वं क्षोभयामास विस्मिता । सहगैः पूर्वपुरुषैः स्त्रीभूतै रघुनन्दन ॥११॥

| | | | |
|--------------|--|------------|---|
| रघुनन्दन | “ஹே ரகுநந்தன ! | सा | அவள் |
| पूर्वपुरुषैः | முன்பு ஆணுருவம் | विस्मिता | தோமாற்றமடைந்த |
| | கொண்டிருந்தவர்களுக்கும் | | மனத்தினளாய் |
| स्त्रीभूतैः | } பெண்ணுருவம் கொ ண்டிருப்பவர்களு மான | सर्वं | முற்றிலும் |
| | | जलाशयं | அந்த |
| सहगैः | பரிஜனங்களோடு | क्षोभयामास | அசட்டுத்தனத்தில் சித்தப்பிரமை கொண்ட டுவிட்டாள். |

बुधस्तु तां समीक्ष्यैव कामबाणनिर्षीदितः । नोपलेभे तदाऽऽत्मानं सञ्च चाल तदाऽम्भसि॥

| | | | |
|--------------|--|----------|---|
| बुधः तु | “புதனும் | आत्मानं | முன்பின் ஆலோசிக் கும் அறிவை |
| तां | அவளை | न उपलेभे | பெறவில்லை. |
| समीक्ष्य एव | பார்த்தமாத்திரத் திலேயே | तदा | அதனால் |
| कामबाण- | } காமபாணங்களுக்கு விசப்பட்டு மெய் மறந்தவனாகி | अरभसि | ஜனத்தில் |
| निर्षीदितः } | | संचचाल | } இங்குமங்கும் நடந்த கொண்டிருக்கும் வண்ணமே இருந்து விட்டான். |
| तत् | அந்த | | |

इलां निरीक्षमाणस्तु त्रैलोक्याभ्यधिकं शुभाम् ।

चिन्तां समभ्यतिक्रामत्का न्वियं देवताधिका

॥ १३ ॥

| | | | |
|-----------------|---|----------------|---------------------------------------|
| लैलोक्याभ्यधिकं | “மூவுலகங்களிலும் இணையிலாத | देवताधिका | தேவதைகளிலும்மேல் பட்டவளாயிருக்கும் |
| शुभां | வடிவமுகுவாய்ந்த | इयं | இவள் |
| इलां | இளையை | का तु | யாரோ என்கிற |
| विरीक्षणः तु | } கண்கொட்டாமல் பார்த்தவண்ணமே இருக்கும் அவள் | चिन्तां | சிந்தையில் |
| | | समभ्यतिक्रामत् | मन्त्रैः |

न देवीषु न नागीषु नासुरीष्वप्सरःसु च । दृष्टपूर्वा मया काचिद्रूपेणानेन शोभिता ॥

| | | | |
|-----------|----------------------------|---------------|-----------------------------------|
| देवीषु न | “தேவஸ்த்ரீகளிலாயி னும் | अनेन | இந்த |
| नागीषु न | நாகஸ்த்ரீகளிலாயி னும் | रूपेण | பிறவிக்குணம் கொண்டு |
| असुरीषु | அஸுரஸ்த்ரீகளிலா யினும் | शोभिता | தேஜோமயமாய் |
| अप्सरसु च | அப்ஸரஸ்த்ரீகளிலா யினும் | काचित् | எவனும் [விளங்கும் |
| | | मया | என்னால் |
| | | न दृष्टपूर्वा | இதற்குமுன் பார்க்கப் படவில்லை. |

सहशीयं धम भवेद्यदि नान्यपरिग्रहः । इति बुद्धिं समास्थाय जलात्कूलमुपागमत् ॥१५॥

अन्यपरिग्रहः } “வேறொருவனை பதி
न यदि } याम् अद्वையப்பட
इयं இவள் [த்தில்
मम எனக்கு
सदृशी भवेत् இணையாய் ஆகலாம்’

इति என்கிற
बुद्धिं - எண்ணத்தில்
समास्थाय மனதைச் செலுத்தி
जलात् ஜலத்தினின்றும்
कूलं கரையில்
उपागमत् ஏறினான்.

आश्रमं समुपागम्य ततस्ताः प्रमदोत्तमाः ।

शब्दापयत धर्मात्मा ताश्चैनं च ववन्दिरे ॥

धर्मात्मा “தருமா த்மாவாகும்
அவன்
ततः அவ்விடத்திலிருந்து
आश्रमं ஆசிரமத்திற்கு
समुपागम्य போய்ச் சேர்ந்து
प्रमदोत्तमाः ஸ்தீரத்தினங்களாகும்

ताः च அவர்களை மட்டும்
शब्दापयत கூவியழைத்தான்.
ताः च அவர்களும்
एनं இவனிடம்
ववन्दिरे வந்து வணங்கி
நின்றார்கள்.

स ताः पप्रच्छ धर्मात्मा कस्यैषा लोकसुन्दरी ।

किमर्थमागता चैव सत्यमाख्यात मा चिरम् ॥

धर्मात्मा “தருமா த்மாவாகும்
सः அவன்
ताः அவர்களைப் பார்த்து
पप्रच्छ இப்படி வினாவினான்:
लोकसुन्दरी ‘லோகஸுந்தரியா
एषा இவள் [கும்

कस्य யாருக்குச் சொந்தம்?
आगता இங்குவந்திருக்கிற
किमर्थं யாதுகாரணம்?
सत्यं உண்மையானதை
मा चिरं காலதாமதமின்றி
आख्यात च एव சொல்லலாமோ?’

शुभं तु तस्य तद्वाक्यं मधुरं मधुराक्षरम् । श्रुत्वा स्त्रियश्च ताः सर्वा ऊर्चुर्मधुरया गिरा ॥

ताः स्त्रियः “அந்த ஸ்திரீகள்
सर्वाः च எல்லோரும்
तस्य அவனது
शुभं நல்லதாயும்
मधुरं மதுரமாயும்

तत् वाच्यं அம்மொழியை
श्रुत्वा கேட்டு
मधुरया மதுரமான

मधुराक्षरं तु { संरोत्ரேந்திரியத்
திற்கு ஸுகந்தரு
கிறதாயிருக்கிற

गिरा சொற்கொண்டு
ऊचुः பதிலுரைத்தார்கள்.

अस्माकमेवा सुश्रोणी प्रभुत्वे वर्तते सदा ।

अपतिः काननान्तेषु सहास्माभिश्चरत्यसौ ॥

सदा “எக்காலத்திலும்
सुश्रोणी { யாவரும் கொண்டா
டத்தக்க மார்க்கத்
திலிருக்கிறவனும்
अपतिः இன்னும் மணம் புரி
யாதவளுமாகிய
एषा இவள்
अस्माकं எங்களுடைய

प्रभुत्वे யஜமான த்வத்தில்
वर्तते இருக்கிறான்.
काननान्तेषु வனப்பரதேசங்களில்
अस्माभिः எங்களோடு
सह கூடவே
असौ இவள்
चरति திரிந்து காலங்கழிக்
கின்றான்.

तद्वाक्ययव्यक्तपदं तासां स्त्रीणां निश्चय च । विद्यामावर्तिनीं पुण्यामावर्तयत स द्विजः ॥

| | |
|------------|------------------------------------|
| ச: | “அந்த |
| द्विजः | கூத்திரியன் |
| तासां | அந்த |
| स्त्रीणां | ஸ்த்ரீகளது |
| अव्यक्तपदं | நன்கு விளங்காத பதங் களையுடையதான |
| तत् | அந்த |
| वाक्यं | மொழியை |
| निश्चय | கேட்டு |
| च | அதனால் |

| | | |
|-----------|---|---|
| पुण्यां | { | பயபக்தியுடன் தனக் குள்ளேயே ஜபிக்க வேண்டியதான |
| आवर्तिनीं | | தெரியாத விஷயங் களை ஞானதிருஷ் டிக்குத் தெரியும் வண்ணம் செய்யும் |
| विद्यां | | மஹாஜபத்தை |
| आवर्तयत् | | ஜபிக்கலானால். |

सोऽर्थं विदित्वा सकलं तस्य राज्ञो यथागतम् । सर्वा एव स्त्रियस्ताश्च बभाषे मुनिपुङ्गवः ॥

| | |
|-------------|--------------------------------|
| ச: | “அந்த |
| मुनिपुङ्गवः | முனிவர் பெருமான் |
| तस्य | அந்த |
| राज्ञः | யன்னனது |
| यथागतं | பூர்வவிருத்தார்த்தத் தையும் |
| अर्थं | அதன்காரணத்தையும் |
| सकलं च | முற்றிலும் |

| | |
|-----------|---------------------------|
| विदित्वा | உள்ளபடி அறிந்து கொண்டு |
| ताः | அந்த |
| स्त्रियः | ஸ்த்ரீகள் |
| सर्वाः एव | எல்லோரையும் பார்த்து |
| बभाषे | இப்படி ஆக்ரோசத் தான்: |

यत्र किंपुरुषा भद्रा अवसन्शैलरोधसि । वासं शैलवरे रम्ये यूयं तत्र गमिष्यथ ॥ २२ ॥

| | |
|------------|-----------------------|
| शैलरोधसि | “மலைத்தாழ்வாரத்தில் |
| भद्राः | மஹாபாக்கியசாலிக |
| किंपुरुषाः | கிம்புருஷர்கள் [ளாகிய |
| यत्र | எவ்விடத்தில் |
| अवसन् | வலித்தாரர்களோ |
| तत्र | அதே |

| | |
|---------|------------------------|
| रम्ये | மனோஹரமாயிருக் கின்ற |
| शैलवरे | மலைப்ரதேசத்தில் |
| यूयं | நீங்கள் |
| वातं | குடியாய் |
| गमिष्यथ | போயிருக்கவேண்டும். |

मूलपत्रफलैः सर्वा वर्तयिष्यथ नित्यदा । स्त्रियः किंपुरुषानाम भर्तृन्समुपलप्स्यथ ॥ २३ ॥

| | |
|-------------|--------------------------------|
| सर्वाः | “எல்லோரும் |
| नित्यदा | எப்பொழுதும் |
| स्त्रियः | பெண்ணுருவங்கொ ண்டவர்களாகவே |
| मूलपत्रफलैः | காய், இலை, பழங்களை க்கொண்டே |

| | |
|-------------|----------------------------------|
| वर्तयिष्यथ | நீங்கள் வாழ்ந்துவா வேண்டியது. |
| किंपुरुषान् | கிம்புருஷர்கள் |
| नाम | என்கிற |
| भर्तृन् | பர்த்தாக்களை |
| समुपलप्स्यथ | பெறக்கடவீர்கள் |

तां श्रुत्वा सोमपुत्रस्य वाचं किंपुरुषीकृताः । उपासाञ्चक्रिरे शैलं बध्वस्ता बहुलास्तदा ॥

| | |
|-------------|-------------------------------|
| तदा | “அப்பொழுது |
| ताः | அந்த |
| बध्वः | ஸ்தீர்கள் |
| बहुलाः | பலரும் |
| सोमपुत्रस्य | சந்திரபகவானின் புதல்வனுடைய |
| तां | அந்த |
| वाचं | நியமனத்தை |

| | |
|----------------|--|
| श्रुत्वा | ஏற்றுக்கொண்டு |
| किंपुरुषीकृताः | { கிம்புருஷரென்னும். தேவஜாதிப்பெண்க ளாகி |
| शैलं | மலையில் |
| उपासाञ्चक्रिरे | { தெய்வத்யானத்தில் காலம் கழித்து வந் தார்கள்.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे अष्टाशीतितमः सर्गः ॥

भादितः श्लोकाः 23508



उत्तरकाण्डे भादितः श्लोकाः 2784

एकौनवतितमः सर्गः—எண்பத்தொன்பதாவது ஸர்க்கம். ॥ ௧௨ ॥

पुरुषस उत्पत्तिः—புருவஸ்ஸின் உற்பத்தி.

श्रुत्वा किंपुरुषोत्पत्तिं लक्ष्मणो भरतस्तदा । आश्रयमिति चाब्रूतासुभौ रामं जनेश्वरम् ॥

| | |
|-------------------|------------------|
| तदा | அப்பொழுது |
| किंपुरुषोत्पत्तिं | கிம்புருஷராய் |
| भरतः | பரதரும் [விட்டதை |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணருமாகிய |
| उभौ च | இருவரும் |
| श्रुत्वा | கேட்டு, |

| | |
|-----------|------------------------------------|
| जनेश्वरं | புருஷோத்தமராகிய |
| रामं | ஸ்ரீராமரைப் பார்த்து |
| आश्रयं | ‘இதுவும் ஒருதெய்வா தினனாய்வுமே’ |
| इति | என்று |
| अब्रूताम् | சொன்னார்கள். |

अथ रामः कथामेतां भूय एव महायशाः । कथयामास धर्मात्मा प्रजापतिमुत्स्य वै ॥२॥

| | |
|-----------|---------------|
| अथ | அதன்மேல் |
| धर्मात्मा | தருமா த்மாவென |
| महायशाः | பெயர்பெற்ற |
| रामः | ஸ்ரீராமர் |

| | |
|-------------------------|---|
| प्रजापति- मुत्स्य वै | { பிரஜாபதிகளில் ஒரு வரின் புதல்வரைப் பற்றியதான பாக்கியிருக்கிறதாகிய பின்வரும் கதையை சொல்லியருளிணர் : |
| भूयः एव | பாக்கியிருக்கிறதாகிய |
| एतां कथां | பின்வரும் கதையை |
| कथयामास | சொல்லியருளிணர் : |

सर्वास्ता विदुता दृष्ट्वा किंनरीर्कषिसत्तमः । उवाच रूपसम्पन्नां तां स्त्रियं प्रहसन्निव ॥३॥

| | |
|-----------|-------------------|
| ऋषिसत्तमः | “முனிவர் பெருமான் |
| ताः | அவர்கள் |
| सर्वाः | எல்லோரும் |
| किंनरीः | கிந்நரிகளாய் |
| विदुताः | அப்புறம்போய் விட் |
| दृष्ट्वा | கண்டு, [டவர்களாக |
| इव | சற்று |

| | |
|--------------|--------------------------|
| प्रहसन् | மனோதேரியம் பெற்றவனாகி |
| रूपसम्पन्नां | அழகியாகிய |
| तां | அந்த |
| स्त्रियं | பெண்ணைப் பார்த்து |
| उवाच | இங்ஙனம் மொழிந் தார்: |

सोमस्याहं सुदयितः सुतः सुरचिरानने । भजस्व मां वगरोहे भक्त्या स्त्रिभ्येन चक्षुषा ॥

सुरचिरानने { “अत्पुत्रं ज्ञोतिमय
मायं विनाङ्कुम् मुक
मुள்ள मातே !
வந்திரபகவானது
நான்
சந்திரபகவானது
சுத்யந்த அன்பிற்குப்
பாதிரானகிய

सुतः मकन्.
मां एन्ने
भक्त्या पक्तिपौत्रम्
स्त्रिभ्येन अन्नेपौत्रम्
चक्षुषा உத்யாஹத்தோடும்
भजस्व ஏற்றுக்கொள்க.

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा शून्ये स्वजनवर्जिता । इला सुरचिरप्रख्यं प्रत्युवाच महाग्रहम् । ५॥

स्वजनवर्जिता { “தன்னினத்தார்
ஒருவரையும் காண
திருந்த
இலை என்பவள்
எவருமில்லாத ஏகாந்
தமான இடத்தில்
தச்ய அவரது
சற்று சந்தேகத்திற்கு
இடமில்லாதபடி ஸ்ப
ஷ்டமாய்

तत् वचनं { தன்னிப்பிராயத்திற்
கொத்திருக்கிறதான
அம்மொழியை
श्रुत्वा ஏற்றுக்கொண்டு
महाग्रहं { நவக்கிரஹங்களில்
ஒரு மஹாக்கிரஹ
மாகிய அவரைப்
பார்த்து
प्रत्युवाच பதிவரைத்தான்:

अहं कामचरी सौम्य तवास्मि वशवर्तिनी । प्रशाधि मां सोमसुत यथेच्छसि तथा कुरु ॥

सौम्य “पुण्यात्मावै !
सोमसुत सन्तिरापकवानीन्
पुत्तिरारौ !
என்னிஷ்டம்போல
நடக்க உரிமைகொ
ண்ட
அஹ் நான்
தவ தேவாரூக்கு

वशवर्तिनी திருவுள்ளப்படியே
ஒழுக்குபவளாக
अस्मि ஆகிறேன்.
यथा इच्छसि தேவாரூ திருவுள்ளத்தி
லிறுப்பது ஏதவோ
तथा உவ்வண்ணமே
कुरु செய்தருள்க.
मां என்னை
प्रशाधि அள அருளபுக

तस्यास्तदद्भुतप्रख्यं श्रुत्वा हर्षमुपागतः । स वै कामी सह तथा रमे चन्द्रमसः सुतः ॥ ७ ॥

चन्द्रमसः “सन्तिरापकवானது
सुतः सः புதல்வனாகிய அவன்
तस्याः அவளது
तत् அந்த
अद्भुतप्रख्यं { அத்தப்புதமாய் உள்
ளது உள்ளபடியே
சொல்லியதை
श्रुत्वा கேட்டு

कामी सह तथा रमे चन्द्रमसः सुतः ॥ ७ ॥
हर्षः மகிழ்ச்சியை
उपागतः உடைந்தவனாகி
तथा सह அவ்வாடுகூட
कामी वै { மனைவிபிடத்தில்
ஆதிகப்பற்றுள்ள
கணவனாகி
रमे ஸகமாய் காலங்க
ழித்தான்.

बुधस्य वाचो वासस्तामिच्चं रुचिराननाम् । गतो रमयतोऽत्यर्थं क्षणवत्तस्य कामिनः ॥

रुचिराननाम् “தேஜோமயமாய்
விளங்கும்முகமுடைய
அந்த
இளை என் பவளை
ரமயத: அனு பவித் துக்கொண்
அதிக [டிருக்கும்
காமின்: பாரியாதினனை

तस्य अन्त
बुधस्य पुत्रनुक्त्रु
वाचव: वचकासि
वास: पात्रमानतु
क्षणवत् ஒருநொடிப்பொழு
தாய்
गत: கழிந்தபோயிற்று.

अथ मासे तु सम्पूर्णे पूर्णेन्दुसङ्गाननः । प्रजापतिसुतः श्रीमाञ्छयने प्रत्यबुध्यत ॥९॥

अथ “இப்படியாய்
मासे ஒருமாதம்
संपूर्णे तु பூர்ணமாகியபின்னர்
पूर्णेन्दुसङ्गाननः முழுமதிபோன்ற
முகத்தினனாய்

प्रजापतिसुतः श्रीमाञ्छयने प्रत्यबुध्यत
शयने
प्रत्यबुध्यत
श्रीमान् ஸ்ரீமாளாய்
பிரஜாபதிகளில் ஒரு
வரின் புதல்வனாய்,
டுக்கையில்
கண்விழித்தெழுந்தி
ருந்தான்.

सोऽपश्यत्सोमज्ञं तत्र तपन्तं सलिलाशये । ऊर्ध्वबाहुं निरालम्बं ते राजा प्रत्यभाषत ॥

स: “அவன்
तत्र அவ்விடத்தில்
सलिलाशये ஜலமடுவில்
ऊर्ध्वबाहुं கைகளையெடுத்துக்
கொண்டவனாய்
निरालम्बं நிரரதராமாக நிற்கின்
றவனாய்

तपन्तं तवम्पुரிन्तुकொண்டி
ருக்கும்
सोमज्ञं சந்திரன் புதல்வனை
अपश्यत् கண்டான்.
राजा மன்னன்
तं அவனைப்பார்த்து
प्रत्यभाषत இப்படிப்பேசினான்:

भगवन्पर्वतं दुर्गं प्रविष्टोऽस्मि सहानुगः । न तु पश्यामि तत्सैन्यं क्व नु ते मामका गताः ॥

भगवन् “ஸ்வாமி!
सहानुगः பரிவாரஜனங்களுடன்
கடினவனாய்
दुर्गं புருவது கஷ்டமாபி
पर्वतं பலைக்கு [ருக்கின்ற
प्रविष्ट: अस्मि நான் வந்தேன்.
तत् अन्त

सैन्यं சைன்யத்தை
तु இப்பொழுது
न पश्यामि நான் காணவில்லை.
ते அந்த
मामका: என்னைச் சேர்ந்தவர்
क
क नु गता: எங்கேயிருக்கிறார்கள்?

तच्छ्रुत्वा तस्य राजर्षेर्नष्टसङ्घस्य भाषितम् । प्रत्युवाच शुभं वाक्यं सान्त्वयन्परया गिरा ॥

नष्टसङ्घस्य { “முன் நடந்த விஷயம்
களை நினைவுக்குக்
கொண்டுவரமுடியா
திருந்த
तस्य राजर्षे: அந்த ராஜர்ஷியின்து
तत् அந்த
भाषितं सुखा மொழியைக் கேட்டு

सान्त्वयन् वृथितம்செய்யவேண்
டியவனாகி
परया நடப்புக்குவேரான
गिरा சொற்கொண்டு
शुभं அனுகூலத்தை விளை
விக்கும்
वाक्यं இந்த மொழியை
प्रत्युवाच பதிலாய் உரைத்தான்.

अश्रमवर्षेण महता भृत्यास्ते विनिपातिताः । त्वं चाश्रमपदे सुप्तो वातवर्षभयादितः ॥१३॥

ते “உனது
 भृत्याः இருத்தியர்கள்
 महता अश्रमवर्षेण பெரிய கல்மாரியால்
 विनिपातिताः மாண்டுவிட்டார்கள்.
 त्वं च நீ மரத்திரம்

व.तवर्षभयादितः காற்றுமழைக்குப்பயந்தவனாய்
 आश्रमपदे ஆசிரமத்தின் உள்ளேயே
 सुप्तः எதுவும் தெரியாமல் தூங்கிவிட்டாய்.

समाश्वसिहि भद्रं ते निर्भयो विगतज्वरः ।

वीर “வீர!
 इह இவ்விடத்திலேயே
 विगतज्वरः மனக்கவலையற்றவனாய்
 निर्भयः சங்கடங்கள் எதுவுமில்லாதவனாய்

फलमूलाशनो वीर निवसेह यथासुखम् ॥

फलमूलाशनः { பழங்கனையும் கிழங்குகளையுமே உணவாய்கொண்டவனாய்

यथासुखं யதாசுகமாய்
 निवसे वளித்துவா.
 ते உணக்கு
 भद्रं நல்லகாலம் வரப்போகிறது.
 समाश्वसिहि மனந்தேறி இரு.

स राजा तेन वाक्येन प्रत्याश्वस्तो महामतिः ।

सः “அந்த
 महामतिः மஹாபுத்திமாண
 राजा மன்னன்
 तेन அந்த
 वाक्येन மொழியால்
 प्रत्याश्वस्तः ஒருவாறு துக்கசமனம் பெற்றவனாகி

प्रत्युवाच शुभं वाक्यं दीनो भृत्यक्षयाद्भ्रशम् ॥

भृत्यक्षयात् பிருத்தியர்களின் அழிவாய்
 शुभं மிக்க
 दीनः துக்கப்படுகின்றவனாய்
 शुभं மெச்சத்தக்கதான
 वाक्यं இந்த மொழியை
 प्रत्युवाच பதிலாயுரைத்தான்.

त्यक्षयाम्यहं स्वकं राज्यं नाहं भृत्यैर्विनाकृतः । वर्तयेयं क्षणं ब्रह्मन्समनुज्ञातुमर्हसि ॥१६॥

ब्रह्मन् “முனிவர் பெருமா
 भृत्यैः பரிஜனங்களால் [வே!
 विनाकृतः விட்டுப்பிரிந்த
 अहं நான்
 स्वकं எனது
 राज्यं ராஜ்யத்தை
 त्यक्षयामि துறந்துவிடுகின்றேன்.

अहं நான்
 क्षणं ஒரு நொடிப்பொழுது கூட
 वर्तयेयं न உயிருடனிரேன்.
 समनुज्ञातुं இவ்விடமிருந்து செல்ல அனுமதி தர திருவுள்ளம் கொள்ள வேண்டும்.

सुतो धर्मपरो ब्रह्मञ्ज्येष्ठो मम महायशः । शशबिन्दुरिति ख्यातः स मे राज्यं प्रपत्स्यते ॥

ब्रह्मन् “மஹா புண்யாத்மா
 शशबिन्दुः சசபிந்து [வே!
 इति ख्यातः என்பவன்
 मम எனது
 ज्येष्ठः सुतः மூத்த குமாரன்.
 धर्मपरो தர்மத்தில் ஆஸக்தியுடையவனென

महायशः மஹாயசஸ்ஸுடைய
 सः அவன்
 मे எனது
 राज्यं ராஜ்யத்தை
 प्रपत्स्यते இப்போ திருந்தே ஏற்றுக்கொள்வான்.

न हि शक्ष्याम्यहं हित्वा भृत्यदारान् सुखान्वितान् । प्रतिवक्तुं महातेजः किञ्चिदप्यशुभं वचः ॥

महातेजः “ ‘ஹே மஹாதேஜோ
வானே !
சுखान्विताந் ஹரிதமே புரியும்
भृत्यदारान् ஜனங்களையும் மனைவி
हित्वा हि ஒழிக்கவும் [களையும்
अशुभं திருவுள்ளத்திற்கிசை
யாத

वचः விண்ணப்பத்தை
किञ्चित् अपि எதையும்
प्रतिवक्तुं விண்ணப்பம் செய்வ
अहं நான் [தற்கும்
न शक्ष्यामि முடியாதிருக்கின்
ரேன்.’

तथा ब्रुवति राजेन्द्रे बुधः परममद्भुतम् । सान्त्वपूर्वमथोवाच वासस्त इह रोचताम् ॥१९॥

राजेन्द्रे “ ராஜேர்த்தமன்
तथा அவ்வண்ணம்
ब्रुवति மொழிந்தபோது
बुधः புதன்
परमं பரம
अद्भुतं அத்யத்புதமான
अथ பின்வரும்

सास्त्वपूर्वं துயரத்தைச்சமனம்
செய்கின்ற மொழியை
उवाच சொன்னான் ;
इह ‘ இவ்விடத்திலேயே
रे உன்னுடைய
वासः வாஸமானது
रोचताम् ஏற்றுக்கொள்ளப்
பட்டடும்.

न सन्तापस्त्वया कार्यः कार्दमेय महाबल । संवत्सरोषितस्येह कारयिष्यामि ते हितम् ॥

कार्दमेय “ ‘கர்த்தமப்பிரஜாபதி
யின் புதல்வ !
महाबल மஹா தைரியசாலியே!
सन्तापः பச்சாத்தாபமானது
त्वया உன்னால்
न कार्यः வைத்துக்கொள்ளப்
படவேண்டியதில்லை.
इह இவ்விடத்தில்

संवत्सरोषितस्य { ஒரு வருஷம் வாஸம்
செய்தவனாகிய
(பின்னர்)
ते உனக்கு
हितं { அவச்யமாய் ஆகவே
ண்டியதான பெருங்
காரியத்தை
कारयिष्यामि நான் செய்வேன்.

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा बुधस्याक्लिष्टकर्मणः । वासाय विदधे बुद्धिं यदुक्तं ब्रह्मवादिना ॥

अक्लिष्टकर्मणः “ எதையும் கஷ்ட
மின்றிச் செய்யவல்ல
तस्य அந்த
बुधस्य புதனது
तत् वचनं அந்தநியமனத்தை
श्रुत्वा சிரமேற்கொண்டு

ब्रह्मवादिना வேதவித்தால்
उक्तं நியமித்தருளப்பட்ட
यत् எதோ அந்த [டது
वासाय வாஸத்திற்கு
बुद्धिं நிச்சயத்தை
विदधे செய்துகொண்டான்.

मासं स स्त्री तथा भूत्वा रमयत्यनिशं शुभा । मासं पुरुषभावेन धर्मबुद्धिं चकार सः ॥

सः “ அவன்
मासं ஒருமாதகாலம்
तथा அவ்வண்ணமாய்
शुभा செளந்தர்யவதியாகிய
स्त्री भूत्वा ஸ்திரீயாக ஆகி
अनिशं அக்காலமெல்லாமும்

रमयति இன்புற்றுவாழ்வான்.
सः அவன்
पुरुषभावेन ஆணுருவத்துடனி
मासं மாஸத்தில் [ருக்கும்
धर्मबुद्धिं தருமத்தில் புத்தியை
चकार செலுத்தினான்.

ततः सा नवमे मासि इला सोमसुतात्सुतम् । जनयामास सुश्रोणी पुरुरवसमूर्जितम् ॥

| | | | |
|----------|---|-----------|------------------------------------|
| सा इला | “அந்த இலை என்பவள் மெச்சத்தக்க நல்ல வழியிலேயேயிருந்து வந்தவளாய் | सोमसुतात् | சந்திரபகவானது புதல்வனிடமிருந்து |
| सुश्रोणी | | कर्जितं | திரிலோகப் பிரசித்தி பெற்ற |
| ततः | அப்போதிலிருந்து | पुरुरवसं | புரூரவனென்னும் |
| नवमे | ஒன்பதாவது | सुतं | புதல்வனை |
| मासि | மாஸமுடிவில் | जनयामास | பெற்றான். |

जातमात्रं तु सुश्रोणी पितृहस्ते न्यवेशयत् । बुधस्य समवर्णाभिमिला पुत्रं महाबलम् ॥२४॥

| | | | |
|-------------|---|-----------|-----------------------|
| इला | “இலை என்பவள் மெச்சத்தக்க நல்ல வழியிலேயே ஒருகி யவளாகையால் | महाबलं | மஹாசக்திவானு மாகிய |
| सुश्रोणी तु | | पुत्रं | புதல்வனை |
| बुधस्य | புதனுக்கு | जातमात्रं | பெற்ற உடனேயே |
| समवर्णाभिं | { சமமான வடிவமும் வண்ணமுமுடைய வனும் | पितृहस्ते | தந்தையின் கையில் |
| | | न्यवेशयत् | கொடுத்தான். |

बुधस्तु पुरुषीभूतं समाश्रास्य नराधिपम् । कथाभी रमयामास धर्मयुक्ताभिरात्मवान् ॥

| | | | |
|------------|----------------------------|---------------|---------------------------|
| आश्रयान् | “இந்திரியநிக்கிரஹ முள்ள | धर्मयुक्ताभिः | தருமமான பயன்களை |
| बुधः तु | புதனும் | कथाभिः | கதைகளால் [த்தரும்] |
| पुरुषीभूतं | ஆணுருவங்கொண்ட | समाश्रास्य | மனந்தேறச்செய்து |
| नराधिपं | மன்னனை | रमयामास | காலங்கழித்து வந்தான்.” |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे एकोननवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23533



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2809

नवतितमः सर्गः—தொண்ணூறாவது ஸர்க்கம். ॥ ௨௦ ॥

अश्वमेधेनेलस्य सार्वकालिकपुंस्त्वप्राप्तिः—அச்வமேதயாகத்தால் இலன் எப்போழுதும்
புருஷனாயிருக்கும் தன்மையைடைவது.

तथोक्तवति रामे तु तस्य जन्म तद्द्भुतम् । उवाच लक्ष्मणो भूयो भरतश्च महायशाः ॥

| | | | |
|---------|-----------------|------------|-----------------------------------|
| तस्य | அவனுடைய | उक्तवति तु | சொல்லுகையில் |
| तत् | அந்த | महायशाः | மஹாயசஸ்வியாகிற |
| अद्भुतं | அத்புதமான | भरतः च | பரதரும் |
| जन्म | ஜனனத்ததைப்பற்றி | लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணரும் |
| रामे | ஸ்ரீராமர் | भूयः | மறுபடியும் |
| तथा | அங்ஙனம் | उवाच | இப்படி வினாவின் கள் : (ஆர்ஷம்) |

अयं राजा महाबाहुः कर्दमस्य इलः सुतः । जानीतैनं यथाभूतं श्रेयो ह्यस्य विधीयताम् ॥

| | | | |
|----------|-------------------|-----------|------------------------|
| अयं | “இதோயிருக்கின்ற | यथाभूतं | முன்றடந்த விருத்த |
| राजा | மன்னன் | | தாந்தத்தை |
| इलः | இளனெனப் பெயர் | जानीत | தேவரீர்கள் அறிவீர் |
| | பூண்டவன்; | हि | ஆனபடியால் [கள். |
| महाबाहुः | மஹாவிக்கரமசாலி; | अस्य | இவனுக்கு |
| कर्दमस्य | கர்த்தமப்ராஜாபதி | श्रेयः | நீடித்திருக்கும் |
| सुतः | புதல்வன்; [யினது | | பேருதவி |
| एनं | இவனைப்பற்றியதாகிற | विधीयताम् | செய்தருளப்படவேண்டும்.’ |

तेषां संवदतामेव तमाश्रममुपागमत् । कर्दमस्तु महातेजा द्विजैः सह महात्मभिः ॥ ८ ॥

| | | | |
|------------|--------------------------|------------|----------------------|
| तेषां | “அவர்கள் | द्विजैः सह | பிராம்மணர்களோடு |
| | | | கூட |
| संवदतां एव | { இப்படி ஸம்பாஷணை | महातेजाः | மஹாதேஜோவானாகிய |
| | { செய்துகொண்டிருக்கையில் | कर्दमः तु | கர்த்தமபிராஜாபதியும் |
| महात्मभिः | மஹானுபாவர்களான | तं आश्रमं | அந்த ஆசிரமத்திற்கு |
| | | उपागमत् | வந்துசேர்ந்தார். |

पुलस्त्यश्च क्रतुश्चैव वषट्कारस्तथैव च । ओङ्कारश्च महातेजास्तमाश्रममुपागमत् ॥ ९ ॥

| | | | |
|----------------------|---|----------|---------------------|
| पुलस्त्यः च | { “ பிரம்மாவின்து | महातेजाः | மஹாதேஜோவானாகிய |
| | { மாணவிகபுத்திரராகிய புலஸ்தியரும் | ओंकारः च | ஓங்காரமெனும் |
| ऋतुः च एव | பிராஜாபதிகளில் ஒரு வராகிய கிரதும் | | தெய்வமும்* |
| तथा | அவ்வண்ணமே | तं | அந்த |
| वषट्कारः } च एव } | வஷ்ட் என்கிற மந்திரத்தின் தெய்வமாகிய வஷ்ட்காரரென்பவரும் | आश्रमं | ஆசிரமத்திற்கு |
| | | उपागमत् | வந்துசேர்ந்தார்கள். |
| | | | (ஆர்ஷம்) |

[* ஓம் என்கிற மந்திரம் ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணு, ஸ்ரீமஹாதேவர், பிரம்மதேவர் மூவர்களுக்கும் பிரதிநிதியாயிருந்து ஏற்றுக்கொள்ளும் ஓங்காரமெனும் தெய்வமும்]

ते सर्वे हृष्टमनसः परस्परसमागमे । हितैषिणो वाह्लिपतेः पृथग्वाक्यान्यथाबुवन् ॥ १० ॥

| | | | |
|-----------------------|--------------------------------------|-----------|--------------------------|
| वाह्लिपतेः | “ பாஹ்லிகேசாதி | हृष्टमनसः | கள்கூர்ந்த மனத்தார் |
| | பதிக்கு | | களாகி |
| हितैषिणः | ஹிதத்தை செய்ய | अथ | அப்பொழுது |
| | எண்ணங்கொண்ட | पृथक् | ஒருவரோடொருவர் |
| ते सर्वे | அந்த எல்லோரும் | वाक्यानि | பலமொழிகளை |
| परस्पर- } समागमे } | ஒருவரை ஒருவர் நேரில் கண்டு கொண்டதில் | अबुवन् | பேசிக்கொண்டிருந்தார்கள். |

कर्दमस्त्वब्रवीद्वाक्यं सुतार्थं परमं हितम् । द्विजाः शृणुत मद्वाक्यं यच्छ्रेयः पार्थिवस्य हि ॥

சு
கர்दமः
सुतार्थं
परमं
हितं
वाक्यं
अब्रवीत्
द्विजाः

“ இச்சமயத்தில்
கர்த்தமப்பிரஜாபதி
புதல்வனின் நன்மை
பரம [காரணமாய்
அனுசூலமாயிருக்கிற
இந்த மொழியை
திருவாய்மலர்ந்தருளி
னார் :
'வேதியர்காள் !

पार्थिवस्य
श्रेयः
यत् हि
मद्वाक्यं
शृणुत

மன்னனுக்கு
நீடித்திருக்கும்
பேருதவி
எதொன்றாகுமோ
அதைப்பற்றியதான
அடியேனது விண்ண
ப்பத்திற்கு
திருச்செவி சாய்த்த
ருளவேண்டும்.

नान्यं पश्यामि भैषज्यमन्तरा वृषभध्वजम् । नाश्वमेधात्परो यज्ञः प्रियश्चैव महात्मनः ॥

वृषभध्वजं अन्तरा
अन्यं
भैषज्यं
न पश्यामि
च
अश्वमेधात्

“ ‘மஹாதேவரைத்த
மற்றொருவரை [விரி
இதுவிஷயத்தில் குளி
ற்கும் உரிமையுடை
யவராய்
நானறியேன்.
ஆனதால்
விஷ்ணுபகவானை தலை
மையாய்க்கொண்ட
ஸகல தேவதைகளுந்
கும் திருப்தியைத்த
ரும் அச்வமேதத்
தைத்தவிர

महात्मनः एव
प्रियः
परः
यज्ञः
न

மஹாத்மாவுக்கும்
(சிவபெருமானுக்கும்)
உள்ளங்குளிரச்செய்
கிறதான
இதா
யாகமானது
இல்லை.

तस्माद्यजामहे सर्वे पार्थिवार्थे दुरासदम्

॥ १३ ॥

तस्मात्
पार्थिवार्थे
सर्वे

“ ‘ஆதலால்
மன்னனது சேஷமத்
திற்காக
எல்லோருமாய்

दुरासदं
यजामहे

இணையற்றதாயிருக்
கின்ற
வேள்வியை நாம் இப்
போது இயற்றுவோம்.’

कर्दमेनैवमुक्तास्तु सर्वे एव द्विजर्षभाः । रोचयन्ति स्म तं यज्ञं रुद्रस्याराधनं प्रति ॥१४॥

कर्दमेन
सु
एवं
उक्ताः
द्विजर्षभाः
सर्वे

“ கர்த்தமப்பிரஜாபதி
யால்
இவ்விஷயத்தில்
இவ்விதமாய்
உபதேசிக்கப்பட்ட
தவிஜோத்தமர்கள்
எல்லோரும்

रुद्रस्य
आराधनं प्रति
तं
यज्ञं एव
रोचयन्ति स्म

சிவபெருமானது
கடுமை தணியும் விஷ
யத்தில்
அந்த
யாகத்தையே
ஏற்றுக்கொண்டார்
கள்.

सर्वतस्य तु राजर्षेः शिष्यः परपुरञ्जयः । महत् इति विख्यातस्तं यत्र समुपाहरत् ॥१५॥

राजर्षेः “राज्जिஷ्ययान
सर्वतस्य णம்வர் த்தருடைய
शिष्यः சிஷ்யரும்
परपुरञ्जयः எதிரிகளை அடக்கிவி
ட்டவரென

विख्यातः तु மஹா பிரசித்திபெற்
றவருமான
महत् इति மருத்தர் என்பவர்
तं यत्र அந்த யாகத்தை
समुपाहरत् சரிவர நடத்தியருளி
னார்.

ततो यज्ञो महानासीद्बुधाश्रमसमीपतः । रुद्रश्च परमं तोषं जगाम सुमहायशाः ॥१६॥

बुधाश्रमसमीपतः “புதனது ஆசிராமத்
திற்கருகில்
यज्ञः யாகமானது
महान् கோரிய பயனை
அளிப்பதாய்
आ शीत् நடைபெற்றது.
ततः அதனால்

सुमहायशाः மஹா யசஸ்வியென
கொண்டாடப்படும்
रुद्रः च சிவபெருமானும்
परमं கார்யசித்திக்கு போது
மான அளவு
तोषं மனத்திருப்தியை
जगाम பெற்றார்.

अथ यज्ञे समाप्ते तु प्रीतः परमया मुदा । उमापतिर्द्विजान्सर्वाणुवाच इलसन्निधौ ॥१७॥

यज्ञे “யாகமானது
समाप्ते முடியவும்
उमापतिः உமாபதியார்
इलसन्निधौ இலனது முன்னிலை
யில்
परमया வேண்டிய அளவு
मुदा திருப்திகொண்டு
விட்டதால்

प्रीतः அனுக்கிரகமளிக்கின்
द्विजान् வேதியர்களை. [றவராக
सर्वाण् எல்லோரையும்
பார்த்து
तु இவ் விஷயத்தில்
अथ இவ்வண்ணம்
उवाच திருவாய்மலர்ந்தருளி
னார்.

प्रीतोऽस्मि हयमेधेन भक्त्या च द्विजसत्तमाः । अस्य बाह्लीपतेश्चैव किं करोमि मियं शुभम् ॥

द्विजसत्तमाः “வேதியர் பெருமான்
களை!
हयमेधेन एव அச்வமேதயாகத்தி
भक्त्या च பக்தியாலும் [னாலும்
प्रीतः நான் அனுக்கிரகம் அ
ளிக்கவேண்டியவனாக
अस्मि ஆகிவிட்டேன்.

अस्य இந்த
बाह्लीपतेः च பாஹ்லிதேசா திபதிக்க
शुभं அனுசூலமான [கு
मियं அனுக்கிரகம்
किं என்ன?
करोमि யானதை அளிக்கின்
றேன்.

तथा वदति देवेशे द्विजास्ते सुसमाहिताः । प्रसादयन्ति देवेशं यथा स्यात्पुरुषस्त्विवा ॥

देवेशे “பரமசிவன்
तथा அவ்வண்ணம்
वदति சொல்லியிருளவும்

सुसमाहिताः { மஹா புண்பா த்மாக்க
ளென திரிலோகபிரசி
த்திபெற்றவர்களான

| | |
|---------|---------------------------------------|
| தே | அந்த |
| திரிசா: | வேதியர்கள் |
| தேவீசர் | பரமசிவனை |
| இலா | ‘ஸ் தீர் ஓரூபம் பெறும் இலை என்பவன் |

| | |
|---------------|---|
| புரூப: து | ஆணுருவங்கொண்ட வகைவே |
| யதா ச்யாத் | இருக்கக்கடவது என்று |
| புராசாதய ந்தே | அனுக்கிரகம் செய்யப் பிரார்த்தித்தார்கள். |

தத: ப்ரீதூ மஹாதேவ: புரூஷத்வம் ததூ புன: | இலாயீ ச மஹாதேஜா த்ரவா சான்தரதீயத || 20 ||

| | |
|----------|------------------------------|
| தத: | “அதனால் |
| ச: | அந்த |
| மஹாதேஜா: | மஹாதேஜோவானான கும் |
| மஹாதேவ: | சிவபெருமான் |
| ப்ரீத: | அனுக்கிரகமளிக்கின் றவராகி |

| | |
|----------------------|--|
| இலாயீ | பெண்ணுருவம் பெ றும் இலை என்பவ |
| புன: | இனிமேலாக [னுக்கு |
| புரூஷத்வம்: | ஆணுருவங்கொண்ட ருத்தலை |
| ததூ | அனுக்கிரகித்தருளி னார். |
| த்ரவா ச அந்தரதீயத | தந்தருளியபின்னர் அந்தர்தானமாயினார். |

நிர்வூத்தே ஹயமேதே து கதே சாதர்சீந் ஹே | யதா கதம் திரிசா: சர்வே ஹகஞ்சந் தீர்தீர்சீந: || 21 ||

| | |
|---------------|-------------------------|
| ஹயமேதே | “அச்வமேதயாக மானது |
| நிர்வூத்தே து | முடிவுபெற்றவளவி லும் |
| ஹே | சிவபெருமான் |
| அதர்சீந் | அந்தர்தானமாய் |
| கதே ச | போய்விடவும் |

| | |
|--------------|--------------------------------|
| தீர்தீர்சீந: | மஹாமேதாவிளர கும் |
| திரிசா: | வேதியர்கள் |
| சர்வே ஹி | எல்லோருமே |
| யதா கதம் | வந்தவண்ணமே |
| அகஞ்சந் | திரும்பிப்போய்விட் டார்கள். |

ராஜா து தாஹ்லிசுத்ரஸ்ய மத்யதேசே ஹநுத்தமம் | நிவீசயாமாச புரம் புர்தித்யானே யசக்ரம் ||

| | |
|----------|--------------------|
| ராஜா து | “மன்னனும் |
| தாஹ்லி | பாஹ்லீதேசத்தை |
| ஸ்ய | விட்டு |
| மத்யதேசே | மத்தியபிரதேசத்தில் |
| அநுத்தம் | இணையற்றதாய் |

| | |
|--------------|---------------------------|
| யசக்ரம் ஹி | மஹாதிவ்யமான |
| புர்தித்யானே | பிரதிஷ்டானமென்கிற |
| புரம் | ஒருபட்டணத்தை |
| நிவீசயாமாச | நிருமித்துக்கொண் டான். |

சாசவின்டுஸ்து ராஜர்சிவாஹ்லி பரபுரஸ்ய: | புர்தித்யானே இலோ ராஜா புராபதிஸுதோ த்ரலி || 22 ||

| | |
|---------------|------------------------------|
| சாசவின்டு: து | “சசபிந்துவோவெ னில் |
| தாஹ்லி | பாஹ்லீதேசத்தில் |
| பரபுரஸ்ய: | சந்தருக்களில்லாதவ னாய் |
| ராஜர்சி: | ராஜரிஷியாய் விளங் கினான். |

| | |
|--------------|---------------------------------------|
| புராபதிஸுத: | பிரஜாபதிகளில் ஒரு வரின் புதல்வனும் |
| த்ரலி | பலிஷ்டானமான |
| இல: | இலனென்பவன் |
| புர்தித்யானே | பிரதிஷ்டானத்தில் |
| ராஜா | மன்னனாயிருந்தான். |

स काले प्राप्तवाँल्लोकमिलो ब्राह्ममनुत्तमम् । ऐல: புரூரவா ராஜா ப்ரதிष्ठானமவாஸ்தவான் ॥

ச: “இந்த
இல: இலனென்பவன்
காலே காலக்ரமத்தில்
अनुत्तमं ஸர்வோ த்கிருஷ்ட
மாகிய

मासवान् அடைந்தான்.
पुरूरवा: புரூரவனென்னும்
ऐक: இலனின் புதல்வன்
प्रतिष्ठानं பிரதிஷ்டானமென்
னும் நகரில்

ब्राह्मं लोकं பிரம்மலோகத்தை

राजा மன்னனும்
अवासवान् முடிசூட்டப்பட்டான்.

ईदृशो ह्यश्वमेधस्य प्रभावः पुरुषर्षभौ । स्त्रीभूतः पौरुषं लेभे यच्चान्यदपि दुर्लभम् ॥२५॥

புருஷர்ஷமீ
दुर्लभं च “புருஷோ த்தமர்காள்,
अन्यद् अपि கிடைத்தற்கரியதாயும்
यत् அமானுஷ்யமாயுமிருக்
கிறது
स्त्रीभूतः எதுவோ அப்படிப்
பட்டதான
பெண்ணுருவமாய்
மாறிவிட்டவன்

पौरुषं ஆணுருவங்கொண்ட
ருத்தலை
लेभे பெற்றுவிட்டான்.
हि என்கிறபடியால்
अश्वमेधस्य அசுவமேதத்தினு
प्रभावः சித்தியளிக்கும்[டைய
சக்தியானது
ईदृशः இத்தன்மையானது.”

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये
उत्तरकाण्डे नवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23558



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2834

एकनवतितमः सर्गः—தொண்ணூற்றேராவது ஸர்க்கம். ॥ ௨௧ ॥

श्रीरामस्याश्वमेधसंविधानम्—ஸ்ரீராமருடைய அசுவமேதத்திற்கு
வேண்டியவைகளைச் செய்வது.

एतदाख्याय काकुत्स्थो भ्रातृभ्याममितप्रभः । लक्ष्मणं पुनरेवाह धर्मयुक्तमिदं वचः ॥१॥

अमितप्रभः அளவுகடந்த தேஜோ
மயமாய்ப் பினங்கும்
काकुत्स्थः காகுத்தஸ்தர்
भ्रातृभ्यां ஸஹோ தரர்களிருவ
एतत् இதை [ருக்கும்
आख्याय புகன்றுகிட்டடு

पुनः அதன்மேல்
लक्ष्मणं एव लक्ष்மணரை மட்டும்
इदं பின்வரும் [பார் த்து
धर्मयुक्तं தர்மத்தை ஒத்திருக்
वचः ஆக்கினைய [கும்
आह சொல்லியருளினார்:

वसिष्ठं वामदेवं च जाबालिमथ काश्यपम् । द्विजांश्च सर्वप्रवरानश्वमेधपुरस्कृतान् ॥ २ ॥

एतान्सर्वान्समानीय मन्त्रयित्वा च लक्ष्मण । हयं लक्षणसम्पन्नं विमोक्षयामि समाधिना ॥

लक्ष्मण “ஹே லக்ஷ்மண!
एतान् இந்த
वसिष्ठं வவ்விஷ்டரையும்
वामदेवं வாமதேவரையும்

जाबालिं ஜாபாலியையும்
काश्यपं च காச்யபரையும்
सर्वप्रवरान् எதிலும் பெரியோர்
களும்

अश्वमे- }
 पुस्कृतान् च }
 द्विजान्
 सर्वान् च
 समानीय
 मन्त्रयित्वा च

அச்வமேதத்தில் நிபு
 ணர்களுமான
 பிராம்மணர்கள்
 எல்லோரையும்
 வரவழைத்து
 ஆலோசனைசெய்து
 விட்டு

समाधिना
 अथ
 रुक्षणसम्बन्धं
 हयं
 विभोक्ष्यामि

அனுமதியைத் தலைக்
 கொண்டு
 அதன்மேல்
 சரியான குறிகளைபு
 குதிரையை [டைய
 நான் விடப்போகின்
 றேன். ”

तद्वाच्यं राघवेणोक्तं श्रुत्वा त्वरितविक्रमः । द्विजान्सर्वान्समाहूय दर्शयामास राघवम् ॥ ४ ॥

त्वरित- }
 विक्रमः }
 राघवेण
 उक्तं
 तत् वाच्यं
 श्रुत्वा

எதையும் சீக்கிரமே
 செய்யவல்ல அவர்
 ஸ்ரீராகவரால்
 நியமிக்கப்பட்டதாகிய
 அந்த ஆக்கினியை
 சிரமேற்கொண்டு

द्विजान्
 सर्वान्
 समाहूय
 राघवं
 दर्शयामास

பிராம்மணர்கள்
 எல்லோரையும்
 அழைத்துவந்து
 ஸ்ரீராகவருக்கு
 தர்சனம் செய்வித்
 தார்.

ते दृष्ट्वा देवसङ्काशं कृतपादाभिवन्दनम् । राघवं सुदुराधर्षमाशीर्षिः समपूजयन् ॥ ५ ॥

ते
 देवसङ्काशं
 सुदुराधर्षं

அவர்கள்
 தேவர்கள் போலிருப்
 பவரும்
 எங்கும் இணையற்ற
 வரானவரும்

कृतपादाभि- }
 वन्दनं }
 राघवं दृष्ट्वा
 आशीर्षिः
 समपूजयन्

முடிதாழ்த்தி அடி
 பணிந்து அபிவாத
 னம் செய்துவிட்டு
 நிற்கின்றவருமான
 ஸ்ரீராகவரைப்பார்ந்து
 ஆசீர்வாதமொழி
 களால்
 கொண்டாடினார்கள்.

प्राञ्जलिः स तदा भूत्वा राघवो द्विजसत्तमान् । उवाच धर्मसंयुक्तमश्वमेधाश्रितं वचः ॥ ६ ॥

तदा
 सः राघवः
 प्राञ्जलिः
 सूत्वा
 द्विजसत्तमान्

அப்பொழுது
 அந்த ஸ்ரீராகவர்
 அஞ்சலிஹஸ்தராய்
 ஆகி
 பிராம்மணோத்தமர்
 களிடம்

धर्मसंयुक्तं
 अश्वमेधाश्रितं
 वचः
 उवाच

தரும்த்தோடு இசைந்
 திருக்கின்றதாயும்
 அச்வமேதத்தைப்பற்
 ரியதுமான
 உத்தேசத்தை
 அறிவித்தார்.

ते तु रामस्य तच्छ्रुत्वा नमस्कृत्वा वृषध्वजम् । अश्वमेधं द्विजाः सर्वे पूजयन्ति स्म सर्वशः ॥

ते द्विजाः
 सर्वे
 रामस्य
 तत् श्रुत्वा
 वृषध्वजं
 तु

அந்தப் பிராம்மணர்
 எல்லோரும் [கள்
 ஸ்ரீராமருடைய
 அதைக்கேட்டு
 மஹாபுண்யாத்மா
 வாகும் அவரை
 இவ்விஷயத்தில்

नमस्कृत्वा
 अश्वमेधं
 सर्वशः
 पूजयन्ति स्म

போற்றிப்புகழ்ந்து
 விட்டு
 அச்வமேதத்தை
 எல்லாபாகாரத்தா
 லும்
 ஏற்றிக்கொண்டாடி
 னார்கள்.

स तेषां द्विजमुख्यानां वाक्यमद्भुतदर्शनम् ।

तदा अप்பொழுது
 सः அவர்
 तेषां द्विजमुख्यानां அந்தத் விஜோத்தமர்
 களுடைய
 अद्भुतदर्शनं { அப்புதமாயிருக்கும்
 தெய்வபக்தியை
 நன்கு விளங்கக்காட்
 டுகிறதும்

विज्ञाय कर्म तत्तेषां रामो लक्ष्मणमब्रवीत् ।

रामः ஸ்ரீராமர்
 लक्ष्मणं லக்ஷ்மணரை
 अब्रवीत् இப்படி ஆக்ரோபித்
 தருளினார்:
 महाःमने “மஹாத்மாவாகிய
 सुग्रीवाय சுகரீவனுக்கு
 द्रुतं சீக்கிரத்தில்
 दूतान् தூதர்களை
 प्रेषयस्व இப்படிச்சொல்ல நீ
 अनुப்பவேண்டும்.
 ते ‘உனக்கு
 भद्रं மங்களமுண்டாகுக.
 महस्त्रिः மஹான்களாகிய

विभीषणश्च रक्षोभिः कामगैर्वहुभिद्यैतः ।

अतुलविक्रमः “இணையற்ற ஸாமர்த்
 தியசாலியாகிய
 विभीषणः விபிஷணர்
 कामगैः நினைத்த இடமெல்
 लामं செல்லவல்ல

राजानश्च महाभागा ये मे प्रियचिकीर्षवः ।

मे “எனக்கு
 प्रियचिकीर्षवः நன்மையையே நாடும்
 महाभागाः மஹாபாக்கியசாலி
 களாகிய
 राजानः மன்னர்கள்
 ये च எவர்களோ அவர்
 களும்

अश्वमेधाश्रितं श्रुत्वा भृशं प्रीतोऽभवत्तदा ॥

अश्वमेधाश्रितं அச்வமேதத்தைப்
 பற்றியதுமான
 वाक्यं மொழியை
 श्रुत्वा அங்கீகரித்து
 भृशं மிகவும்
 प्रीतः மனஸந்நுவழிக்கொண்
 டவராய்
 अभवत् ஆனார்.

प्रेषयस्व द्रुतं दूतान्सुग्रीवाय महात्मने ॥ ९ ॥

शीघ्रं महद्भिर्हरिर्बलिभिश्च वनाश्रयैः । सार्धमागच्छ भद्रं ते ह्यनुभोक्तुं महोत्सवम् ॥ १० ॥

हरिभिः வானரர்களாகும்
 बलिभिः பலிஷ்டர்களான
 वनाश्रयैः च வானரர்களோடும்
 तेषां அவர்களுக்கு
 तत् அந்த
 कर्म யாகும் நடக்கப்போகிற
 தென்பதை
 विज्ञाय அறிவித்து
 साधं கூடவே
 महोत्सवं மஹோத்ஸவத்தை
 अनुभोक्तुं கண்டுகளிக்க
 शीघ्रं हि சீக்கிரமே
 आगच्छ நீ வரவேண்டும்.

अश्वमेधं महायज्ञमायात्तुलविक्रमः ॥ ११ ॥

बहुभिः रक्षोभिः च பல அரக்கர்களாலும்
 वृतः சூழப்பெற்றவராய்
 महायज्ञं மஹாயக்ஞமாகிய
 अश्वमेधं அச்வமேதத்திற்கு
 आयातु வந்துசேரவேண்டும்.

सानुगाः क्षिप्रमायान्तु यज्ञं द्रष्टुमनुत्तमम् ॥

सानुगाः பரிவாரஜனங்களுடன்
 கட்டி
 अनुत्तमं இணையற்றதாகிய
 यज्ञं யாகத்தை
 द्रष्टुं கண்டுகளிக்க
 क्षिप्रं விரைவில்
 आयान्तु வந்துசேரவேண்டும்.

देशान्तरगता ये च द्विजा धर्मसमाहिताः । आमन्त्रयस्व तान्सर्वानश्वमेधाय लक्ष्मण ॥

लक्ष्मण “லக்ஷ்மண !
 धर्मसमाहिताः { தரும்த்தின் பயனாய்
 புண்யம்பெற்ற பாக்
 கியசாலிகளாகிய
 द्विजाः பிராம்மணர்கள்
 देशान्तरगताः இதரதேசங்களுக்கும்
 போயிருக்கின்றவர்கள்

ये च एवर्कणो
 तान् अर्त्त
 सर्वान् எல்லோரையும்
 अश्वमेधाय அச்வமேதத்திற்கு
 आमन्त्रयस्व நீ அழைத்துவர
 வேண்டும்.

ऋषयश्च महाबाहो आहूयन्तां तपोधनाः । देशान्तरगताः सर्वे सदाराश्च द्विजातयः ॥

तथैव तालावचरास्तथैव नटनर्तकाः

महाबाहो “ஹே மஹாபாகுவே!
 तपोधनाः தபோதனர்களாகிய
 ऋषयः च ரிஷிகளும்
 देशान्तरगताः இதரதேசங்களுக்கும்
 சென்றிருக்கும்
 द्विजातयः கூந்திரியர்கள்
 सर्वे எல்லோரும்

॥ १५ ॥

सदाराश्च பத்தினிமார்களுடன்
 கூடவே
 तथा அவ்வண்ணமே
 तालावचराः एव தாளத்துடன் பாடு
 பவர்களும்
 तथा அவ்வண்ணமே
 नटनर्तकाः एव நடநர்த்தகர்களும்
 आहूयन्ताम् அழைத்துக்கொண்டு
 வரப்படட்டும்.

यज्ञवाटश्च सुमहान्गोमत्या नैमिशे वने । आज्ञाप्यतां महाबाहो तद्धि पुण्यमनुत्तमम् ॥

महाबाहो “மஹாபாகுவே!
 सुमहान् மஹாபெரியதான
 यज्ञवाटः யாகசாலையானது
 गोमत्याः கோமதீநதியைச்
 சார்ந்த
 नैमिशे நைமிசமென்றும்

वने च अरण्यத்திலேயே
 तत् अர்त्த
 अनुत्तमं பெயர்போன
 पुण्यं हि புண்ணியஸ்தலத்தி
 லேயே
 आज्ञाप्यताम् ஆக்ஞாபிக்கப்பட
 வேண்டும்.

शान्तयश्च महाबाहो प्रवर्त्यन्तां समन्ततः ॥ १७ ॥

महाबाहो “மஹாபாகுவே!
 समन्ततः நாற்புறங்களிலும்

शान्तयः च { ஸ்தலசுத்திக்காக
 முதலில் செய்யும்
 சாந்திகருமங்களும்
 प्रवर्त्यन्ताम् நட்பெற்றவேண்டும்.

शतशशापि धर्मज्ञाः क्रतुमुख्यमनुत्तमम् । अनुभूय महायज्ञं नैमिशे रघुनन्दन ॥ १८ ॥

तुष्टः पुष्टश्च सर्वोऽसौ मानितश्च यथाविधि । प्रतियास्यति धर्मज्ञ शीघ्रमामन्त्रयतां जनः ॥

धर्मज्ञ “தருமமறிந்த
 रघुनन्दन ஹே ரகுநந்தன!
 धर्मज्ञाः தருமமறிந்தவர்களாகிய

शतशः च பலரும்
 अनुत्तमं எதற்கும் மேம்பட்ட
 தாய்

| | |
|------------------|---|
| ऋतुसुख्यं अपि | யாகங்களில் தலைமை பெற்றதாயிருக்கும் |
| महायज्ञं | மஹாயாகத்தை |
| नैमिशे | நைமிசாரண்யத்தில் |
| अनुभूय | மனத்திருப்தியுடன் அனுபவித்துவிட்டு |
| असौ सर्वैः जनः च | இந்த எல்லா ஜனவை |
| यथाविधि | முறைப்படி [முகமும் |
| मानितः | மிக்கமரியாதையுடன் கொண்டாடப்பட்ட டதாய் |

| | |
|--------------|----------------------------|
| पुष्टः च | குறையென்பதே யின்றி |
| पुष्टः | மனத்திருப்திகொண் டதாய் |
| प्रतियास्यति | திரும்பிப்போக வேண்டும். |
| शीघ्रं | சீக்கிரமே |
| आमन्यताम् | அழைத்துவரவேண் டியது. |

शतं वाहसहस्राणां तण्डुलानां वपुष्मताम् । अयुतं तिलमुद्गानां प्रयात्वथे महाबल ॥२०॥
चणकानां कुलत्थानां माषाणां लवणस्य च । अतोऽनुरूपं स्नेहं च गन्धं संक्षिप्तमेव च ॥

| | |
|--------------|-------------------------------------|
| महाबल | “மஹா சரமர்ந்திய சாலியே! |
| वाहसहस्राणां | பல வரிசைவாஹனங் களுடைய |
| शतं | அனேகமும் |
| वपुष्मतां | சிறந்த |
| तण्डुलानां | அரிசி முதலிய தண் டுலங்களுடையவும் |
| तिलमुद्गानां | எள்ளு, பயறு முதலி யவைகளுடையவும் |
| चणकानां | கடலைவகைகளுடை யவும் |

| | |
|-----------------|--------------------------|
| कुलत्थानां | கொள்ளுவகைகளு டையவும் |
| माषाणां | உளுந்துவகைகளு டையவும் |
| लवणस्य च | உப்பினுடையவும் |
| अयुतं | ஏராளமான |
| संक्षिप्तं एव च | குவியல்களும் |
| अतोऽनुरूपं | அதற்குத்தகுந்த அளவு |
| स्नेहं च | எள்ளெண்ணை நெய்யும் |
| गन्धं च | வாஸனை தரவ்யமும் |
| अग्ने | முதலில் |
| प्रयातु | போய்ச்சேரட்டும். |

सुवर्णकोट्यो बहुला हिरण्यस्य शतोत्तराः । अग्रतो भरतः कृत्वा गच्छत्वथे समाधिना ॥

| | |
|--------------|----------------------------------|
| भरतः | “பரதன் |
| बहुलाः | அதிக |
| सुवर्णकोट्यः | தங்கநாணயங்களின் கோடிக்களையும் |
| हिरण्यस्य | நூற்றுக்கணக்காய் |
| शतोत्तराः | எண்ணைவேண்டிய தொகைகளையும் |

| | |
|---------|------------------------|
| अग्रतः | முதலில் |
| कृत्वा | எடுத்துக்கொண்டு |
| अग्ने | முன்னமே |
| समाधिना | வெகுஜாக்கிரதை யுடன் |
| गच्छतु | செல்லட்டும். |

अन्तरा षण्यवीध्यश्च सर्वे च नटनर्तकाः । सूदा नार्यश्च बहवो नित्यं यौवनशालिनः ॥
भरतेन तु सार्धं ते यान्तु सैन्यानि चाग्रतः । नैगमा बालवृद्धश्च द्विजाश्च सुसमाहिताः ॥

| | |
|--------------|----------------------------------|
| ते | “அந்த |
| अन्तरा | நம்பகத்திற்குரிய |
| षण्यवीध्यः च | கடைகள் வைக்கும் வியாபாரிகளும் |

| | |
|-------------|-------------------|
| नटनर्तकाः च | நடநர்ந்தகர்களும், |
| सूदाः | பாசகர்களும் |
| बहवः | அனேகம் |
| नित्यं | அவச்யமாய் |

यौवनशशिनः { पाल्यमायं, வீட்டு
வேலைகள் செம்மை
யாய் செய்யவல்ல
नार्यः च பணிப்பெண்களும்
सैन्यानि சைன்யங்களும்
नैगमाः வேதவித்துக்களும்
सुसमाहिताः மெச்சத்தக்க தர்மா
னுஷ்டரானமுடைய

बालवृद्धाः च { சிறுவயது உள்ளவர்
களும் வயது முதிர்
ந்தவர்களான
द्विजाः च பிராம்மணர்களான
पर्वे எல்லோரும் [கிய
अग्रतः முதலிலேயே
भरतेन साधं तु பரதனோடுகூடவே
यान्तु செல்லட்டும்.

कर्मान्तिकान्वर्धकिनः कोशाध्यक्षांश्च नैगमान् । मम मातृस्तथा सर्वाः कुमारान्तःपुराणि च ॥
काञ्चनीं मम पत्नीं च दीक्षाहीं यज्ञकर्मणि । अग्रतो भरतः कृत्वा गच्छत्वग्रे महायशाः ॥

नैगमान् “ விவேகசாலிகளான
कोशाध्यक्षान् च பொக்கிஷக்காரர்
களையும்
कर्मान्तिकान् { கொற்றன், வர்ணக்கா
ரன், சித்திரக்காரன்
இவர்களையும்
वर्धकिनः கலத்தச்சன், மரத்தச்சன்
இவர்களையும்
तथा அவ்வண்ணமே
मम मातृः எனது தாய்மார்கள்
सर्वाः எல்லோரையும்
कुमारान्तःपुराणि च இளவரசுகளின் அந்
தப்புரஸ்தீர்களையும்

मम எனது
यज्ञकर्मणि யாககிருத்தியத்தில்
दीक्षाहीं தீசைகூடியிலும்.கூடயிரு
க்க உரிமைபெற்ற
काञ्चनीं ஸ்வர்ண
पत्नीं च பத்னியையும்
महायशाः மஹாயசஸ்வியாகிய
भरतः பரதன்
अग्रतः कृत्वा முன்னமேயே அழை
த்துக்கொண்டு
अग्रे முதலில்
गच्छतु செல்லட்டும்.”

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे एकनवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23584



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2860

द्विनवतितमः सर्गः—தொண்ணூற்றிரண்டாவது ஸர்க்கம். ॥ ௯௨ ॥

हयचर्याः—குதிரையை விவேது.

तत्सर्वमखिलेनाशु प्रस्थाप्य भरताग्रजः । हयं लक्षणसम्पन्नं कृष्णसारं सुमोच ह ॥ १ ॥

भरताग्रजः பரதருக்குமுத்தவர்
(ஸ்ரீராமர்)
तत् அந்த
सर्वं எல்லாவற்றையும்
अखिलेन எதையும் விடாமல்
आशु ह தகூண்மே
प्रस्थाप्य பொறுப்புச்சாற்றிவிட்டு

कृष्णसारं கறுப்புவிற்றமுடைய
தும்
लक्षणसम्पन्नं ஸரியான குறிகளையு
டையதுமான
हयं குதிரையை
सुमोच ஸ்வேச்சையாய்ப்
போகவிடுத்தார்.

ऋत्विग्भिर्लक्ष्मणं सार्धमश्वतन्त्रे नियोज्य च ।
ततोऽभ्यगच्छत्काकुत्स्थः सह सैन्येन नैमिशम्

॥ २ ॥

काकुत्स्थः काकुத்தர்
ऋत्विग्भिः ரித்விக்குகனோடும்
सार्धं கூட
लक्ष्मणं च லக்ஷ்மணனைடையே
अश्वतन्त्रे குதிரையின் காவலில்

नियोज्य நியமித்தருளிவிட்டு
ततः அதன்மேல்
सैन्येन सह சைன்யத்தோடுகூட
नैमिशं நைமிசாரணயத்திற்கு
अभ्यगच्छत् அப்யગக்ஷத் வந்தார்.

यज्ञवाटं महाबाहुर्दृष्ट्वा परममद्भुतम् । प्रहर्षमतुलं लेभे श्रीमानिति वचोऽब्रवीत् ॥ ३ ॥

महाबाहुः மஹாபாகுவும்
श्रीमान् ஸ்ரீமானாகிய அவர்
अद्भुतं அமரூபவ்யமாய் அ
மையப்பெற்றிருக்கும்
यज्ञवाटं யாகசரலையை
दृष्ट्वा பார்த்து
अतुलं இணையிலாத

प्रहर्षं மனத்திருப்தியை
लेभे அடைந்தார்.
परमं மிகவும் நன்றாயி
इति என்கிற [ருக்கிறது
वचः சொல்லை
अब्रवीत् திருவாய்மலர்ந்தருளி
னார்.

नैमिशे वसतस्तस्य सर्व एव नराधिपाः । आजगमुः सर्वराष्ट्रेभ्यस्तान्नामः प्रत्यपूजयत् ॥४॥

नैमिशे நைமிசாரணயத்தில்
तस्य அவர்
वसतः எழுந்தருளியிருக்கை
யில்
सर्वराष्ट्रेभ्यः ஸகலதேசங்களிலி
नराधिपाः மன்னவர்கள் [ருந்தும்

सर्वे एव எல்லோரும்
आजगमुः வந்துசேர்ந்தார்கள்.
रामः ஸ்ரீராமர்
तान् அவர்களை
प्रत्यपूजयत् நல்வரவுசொல்விச்
கொண்டாடினார்.

उपकार्या महार्हाश्च पार्थिवानां महात्मनाम् । सानुगानां नरश्रेष्ठो व्यादिदेश महामतिः ॥

महामतिः மஹா மேதாவியாகும்
नरश्रेष्ठः च புருஷோத்தமரே
सानुगानां பரிவாரஜனங்களுடன்
வந்திருக்கும்
महामनां மஹாத்மாக்களாகிய

पार्थिवानां மன்னர்களுக்கு
महार्हाः மஹா விலை உயர்ந்த
उपकार्याः மன்னர்கள் தங்கும்
விடுதிகளை
व्यादिदेश காட்டியருளினார்.

अन्नपानानि वस्त्राणि सानुगानां महात्मनाम् । भरतः सन्ददावाशु शत्रुघ्नसहितस्तदा ॥

तदा அப்பொழுது
आशु தக்ஷணமே
शत्रुघ्नसहितः சத்ருக்ஷ்ணரோடுகூட
अरतः பரதன்
सानुगानां பரிவாரஜனங்களுட
னிருக்கின்ற

महामनां மஹாத்மாக்களுக்கு
अन्नपानानि அன்னபானங்களையும்
वस्त्राणि ஆடைகளையும்
सन्ददौ தந்தருளினார்.

वानराश्च महात्मानः सुग्रीवसहितास्तदा । विप्राणां प्रणताः सर्वे चक्रिरे परिवेषणम् ॥

| | | | |
|---------------|-------------------|-----------|--------------------|
| तदा | அப்பொழுது | विप्राणां | வேதியர்களுக்கு |
| सुग्रीवसहिताः | சுகிரீவருள் ளிட்ட | प्रणताः | வணக்கமுடையவர் |
| महात्मानः | மஹாத்மாக்களாகிய | | களாய் |
| वानराः | வானரர்கள் | परिवेषणं | பரிமாரி உபசரித்தலை |
| सर्वे च | எல்லோரும் | चक्रिरे | செய்தார்கள். |

विभीषणश्च रक्षोभिर्वहुभिः स्रग्विभिर्द्वृतः । ऋषीणामुग्रतपसां पूजां चक्रे महात्मनाम् ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------|-------------|--------------------|
| विभीषणः | விபிஷணர் | उग्रतपसां | உக்கிர தபஸ்விகளும் |
| बहुभिः | பலவகையான | महात्मनां च | மஹாத்மாக்களு |
| स्रग्विभिः | சூமாலைகளைக் கையி லேந்திவந்த | | மாகிய |
| रक्षोभिः | அரக்கர்களால் | ऋषीणां | முனிவர்களுக்கு |
| द्वृतः | சூழப்பெற்றவராய் | पूजां | அதிதிபூஜையை |
| | | चक्रे | செய்துவந்தார். |

एवं सुविहितो यज्ञो ह्यमेधोऽभ्यवर्तत । लक्ष्मणेनाभिगुप्ता च ह्यचर्या प्रवर्तत ॥ ९ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------------------------|------------|-------------------------|
| एवं | இங்ஙனம் | लक्ष्मणेन | லக்ஷ்மணரால் |
| सुविहितः | எல்லாமும் ஆதரத்து டன் செய்யப்பட்ட | अभिगुप्ता | பாதுகாக்கப்பட்டு |
| ह्यमेधः | அச்வமேத | | வரும் |
| यज्ञः | யாகமானது | ह्यचर्या च | அச்வசாரியையும் |
| अभ्यवर्तत | ஒங்கிவளர்ந்துவந்தது. | प्रवर्तत | ஸரிவர நடந்துவந் தது. |

ईदृशं राजसिंहस्य यज्ञप्रवरमुत्तमम् । नान्यः शब्दोऽभवत्तत्र ह्यमेधे महात्मनः ॥ १० ॥
छन्दतो देहि विस्रब्धो यावत्पुण्यन्ति याचकाः । तावत्सर्वाणि दत्तानि क्रतुमध्ये महात्मनः ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------------|------------|-------------------------------|
| राजसिंहस्य | ராஜசிங்கருடைய | शब्दः | ஒரு பேச்சு |
| उत्तमं | உத்தமமான | अभवत् | இருந்தது; |
| यज्ञप्रवरं | மஹாயாகமானது | नान्यः | வேறெதுவுமில்லை. |
| ईदृशं | இத்தன்மையதாயிருந் தது. | महात्मनः | மஹாத்மாவினது |
| महात्मानः | மஹாத்மாவினது | क्रतुमध्ये | யாகம் நடைபெறுகை யில் |
| तत्र | அந்த | याचकाः | யாசகர்கள் |
| ह्यमेधे | அச்வமேதயாகத்தில் | यावत् | எவ்வளவில் |
| विस्रब्धः | உள்ளத்தில் கூச்சமெ ன்பதேயில்லாதபடி | तुष्यन्ति | மனத்திருப்திகொள் ளுவார்களோ |
| छन्दतः | மனம்போனபோக் குப்படியே | सर्वाणि | எல்லாமும் |
| देहि | ‘கொடு’ என்கிற | तावत् | அவ்வளவுவரைக்கும் |
| | | दत्तानि | அளிக்கப்பட்டன. |

न निस्सृतं भवत्योष्टाद्वचनं यावदर्थिनाम् । तावद्धानररक्षोभिर्दत्तमेवाभ्यदृश्यत ॥ १२ ॥

यावत् { எப்பொழுது
எதேனுமொன்றை
தேவையென எண்
ணங்கொண்டவர்
களுடைய
ஆஷ்ட
வचनं வேண்டுகொள்ளாது

निस्सृतं भवति வெளிவருகிறதோ
न இல்லையோ
तावत् தக்கூணமே
वानररक्षोभिः வானரர்களாலும் அர
கர்களாலும்
दत्तं एव கொடுக்கப்பட்டுவிட்ட
अभ्यदृश्यत விளங்கிற்று. [தாகவே

न कश्चिन्मलिनस्तत्र दीनो वाऽप्यथ कश्चित् । तस्मिन्यज्ञवरे राज्ञो हृष्टपुष्टजनावृते ॥ १३ ॥

राज्ञः மன்னரது
तस्मिन् அந்த
हृष्टपुष्टजनावृते { எல்லாப்ரகாரத்தா
லும் முற்றிலும் மன
த்திருப்திகொண்ட
ஜனங்களால் நிறை
யப்பெற்றுள்ள

मलिनः } பாபகிருத்தியத்தை
अपि } யாவது பாபகிரந்தனை
யாவது உடையவளு
வது
दीनः } ஏதேனுமொரு பொ
अथ } ருள் இல்லை என்னும்
எண்ணமுடையவளு
வது
कश्चित् } ஏதேனுமொன்று
वा } நடைபெறவில்லை
என்ற மனக்குறையு
டையவளுவது
न இல்லை.

यज्ञवरे மஹாயாகத்தில்
तस्य அக்காலத்தில்
कश्चित् எவனேனுமொரு

ये च तत्र महात्मानो मुनयश्चिरजीविनः । नास्मरंस्तादृशं यज्ञं दानौघसमलङ्कृतम् ॥ १४ ॥

तत्र அவ்விடத்தில்
चिरजीविनः வயதுமுதிர்ந்த
महाऽमनः மஹாத்மாக்களாகிய
मुनयः முனிவர்கள்
ये च எவர்களோ அவர்
களும்த

दानौघ- } தானப்ரவா ஹங்களா
समलंकृतं } லேயே அழகுபெற்று
விளங்கும்
तादृशं இப்படிப்பட்ட
यज्ञं யாகத்தை
न अस्मरन् கண்டதில்லை என்று
எண்ணினார்கள்.

यः कृत्यवान्मुवर्णेन सुवर्णं लभते सः सः । वित्तार्थी लभते वित्तं रत्नार्थी रत्नमेव च ॥

सुवर्णेन பொன்நாண்யத்தைக்
கொண்டு
कृत्यवान् மனத்திருப்தி பெற
வேண்டியவன்
यः எவனே
सः அவன்
सुवर्णं பொன்நாண்யத்தை

लभते सः பெறுவான்:
वित्तार्थी பொருள் வேண்டிய
வன்
वित्तं च பொருளையே,
रत्नार्थी ரத்னம் வேண்டியவன்
रत्नं एव च ரத்னத்தை
लभते பெறுவான்.

न शक्रस्य धनेशस्य यमस्य वरुणस्य वा । ईदृशो द्रष्टृपूर्वो न एवमूचुस्तपोधनाः ॥१६॥

शक्रस्य “இந்திரனுடையதோ
 धनेशस्य कुபோனுடையதோ
 यमस्य यமனுடையதோ
 वरुणस्य वा அல்லது வருணனு
 டையதோ
 ईदृशः இதற்குச்சமானமான
 न இல்லை. [காய்

द्रष्टृपूर्वः न {இதற்கு முன் இதைப்
 போல் எதொன்றை
 एवं யும் கண்டதுமில்லை”
 तपोधनाः என்று
 ऊचुः தபோதனர்கள்
 பேசிக்கொண்டார்கள்.

सर्वत्र वानरास्तस्थुः सर्वत्रैव च राक्षसाः । वासोधनानामर्थिभ्यः पूर्णहस्ता ददुर्भृशम् ॥

सर्वत्र எங்குபார்த்தாலும்
 सर्वत्र एव ஸதா
 वानराः வானரர்களும்
 राक्षसाः च ராக்ஷஸர்களும்
 तस्थुः நின்று பணிவிடை
 புரிந்துவந்தார்கள்.
 वासोधनानां {வஸ்திரம், தனம், தின்
 பண்டம் இவைகளில்
 எதையும் யுடன்

अर्थिभ्यः கேட்பவர்களுக்கு
 पूर्णहस्ताः கைகள் நிறையக்
 கொண்டவர்களாய்
 भृशं அத்தியந்த ஆஸக்தி
 ददुः கொடுத்தார்கள்.

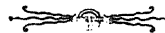
ईदृशो राजसिंहस्य यज्ञः सर्वगुणान्वितः । संवत्सरमथो सायं ववृथे नाभ्यहीयत ॥१८॥

राजसिंहस्य ராஜசிங்கத்தினுடைய
 सर्वगुणान्वितः ஸகலமான பெருமை
 கள் பெற்றுவிளங்கிய
 यज्ञः யாகமானது
 ईदृशः இப்படிப்பட்டதாய்

अथो அப்பொழுது
 सायं ஏறக்குறைய
 संवत्सरं ஒருவருஷகாலம்
 ववृथे ஓங்கி நடந்துவந்தது.
 अभ्यहीयत தெவிட்டல் என்பதே
 न ஏற்படாதிருந்தது.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे द्विनवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23602



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2878

त्रिनवतितमः सर्गः—தொண்ணூற்றுமூன்றாவது ஸர்க்கம். ॥ ९३ ॥

वाल्मीकिना रामायणगाननियोगः—வால்மீகிமுனிவர் ராமாயணத்தை கானம்பண்ணக் கட்டினாய்வேது.

वर्तमाने तथाभूते यज्ञे च परमाद्भुते । सशिष्य आजगामाशु वाल्मीकिर्मुनिपुङ्गवः ॥ १ ॥

तथाभूते அப்படிப்பட்டதாய்
 यज्ञे யாகம்
 परमाद्भुते அதியற்புதமாய்
 वर्तमाने च நடைபெற்றுவருகை
 யில்
 वाल्मीकिः வால்மீகியென்னும்

मुनिपुङ्गवः முனிவர் பெருமான்
 सशिष्यः சிஷ்யர்களோடு கூடிய
 वराय வராய்
 आशु காலதாமதமின்றி
 आजगाम இங்கு எழுந்தருளி
 னார்.

स हृष्टा दिव्यसङ्काशं यज्ञमद्भुतदर्शनम् । एकान्त ऋषिवाटानां चकार उज्जञ्छुभान् ॥

| | | | | |
|--------------|---------|------------|---|-----------------------|
| ச: | அவர் | ऋषिवाटानां | { | ரிகஷிள் தங்குவதற் |
| यज्ञं | யாகத்தை | | | காக ஏற்படுத்தப் |
| दिव्यसङ्काशं | { | एकान्ते | { | பட்டுள்ள சாலை |
| | | | | கொண்டு விளங்கு |
| अद्भुतदर्शनं | { | शुभान् | { | டங்களுடைய |
| | | | | வதாயும் |
| हृष्टा | { | उज्जान् | { | அதி ரம்மமாயிருக்கின்ற |
| | | | | பஹா அத்துமான |
| | | च कार | | இறங்கினார். |
| | | | | |
| | | | | |

शकटांश्च बहून्पूर्णांफलमूलैश्च शोभनान् । वाल्मीकिवाटे रुचिरेऽस्थापयन्नविदूरतः ॥ ३ ॥

| | | | |
|-----------|--------------------|--------------|----------------------|
| फलमूलैः | பழங்களாலும் கிழங் | शकटान् | வண்டிகளை |
| | குளாலும் | रुचिरे | அதிக அழகுவாய்ந்து |
| पूर्णं च | நிறையப்பெற்றள்ள | | விளங்கும் |
| | வைகளும் | वाल्मीकिवाटे | வால்மீகி எழுந்தருளி |
| शोभनान् च | அலங்காரம் செய்யப்ப | | யிருந்த சாலையில் |
| | ட்டுள்ளவைகளுமான | अविदूरतः | வாயிலிலே |
| बहून् | அனேக | अस्थापयन् | நிறுத்திவிட்டார்கள். |

स शिष्यावब्रवीद्दृष्टौ युवां गत्वा समाहितौ । कृत्स्नं रामायणं काव्यं गायेथां परया मुदा ॥
ऋषिवाटेषु पुण्येषु ब्राह्मणावसथेषु च । रथ्यासु राजमार्गेषु पार्थिवानां गृहेषु च ॥ ५ ॥

| | | | |
|-----------------|---------------------|-------------|---------------------|
| सः | அவர் | पार्थिवानां | மன் னர்களுடைய |
| शिष्यौ | சிலையர்களிருவரையும் | गृहेषु च | மாளிகைகளிலும் |
| | பார்த்து | परया | மிக்க |
| अब्रवीत् | நியமித்தருளினார்: | मुदा | உற்சாகத்துடன் |
| युवां | "நீங்களிருவரும் | दृष्टौ | நாணம் என்பதேயில் |
| गत्वा | வெளியில் சென்று | | லாதவர்களாயும் |
| ऋषिवाटेषु | ரிஷிகள் தங்கியிருக் | समाहितौ च | { |
| | கும் சாலைகளிலும் | | அதொன்றிலேயே |
| पुण्येषु | தரும்ச்சாவடிகளிலும் | | ஆசக்தியுடையவர் |
| ब्राह्मणावसथेषु | பிராப்மண அக்கிரஹா | | களாயும் |
| | ரங்களிலும் | रामायणं | ராமாயணமெனும் |
| रथ्यासु | வீதிகள் சந்திக்கு | काव्यं | காவ்யத்தை |
| | மிடங்களிலும் | कृत्स्नं | ஆதிமுதல் அந்தம் |
| राजमार्गेषु | பிரபலமான வீதிகளி | | வரைக்கும் |
| | லும் | गायेथाम् | பாட்டாய்ப்பிரஸங்கம் |
| | | | செய்துவருவீர்களாக. |

रामस्य भवनद्वारि यत्र कर्म प्रवर्तते । ऋत्विजामग्रतश्चैव तत्र गेयं विशेषतः ॥ ६ ॥

यत्र “ எவ்விடத்தில்
யாகமானது
பவ்வீடத்தில்
நடந்துவருகிறதோ
அவ்விடத்தில்
ऋत्विजं ரித்விக்குகளுடைய
அமர்த: ௪:3 ஸன்னிதிகளிலேயும்

रामस्य ऋत्विजाकवारात्
भवनद्वारि च { माणிகையின் வெளி
வாசல் மண்டபத்தி
ஹும்
विशेषतः अत्यन्त உருக்கமாய்
गेयम् பாட்டுடன் ப்ரஸங்
கிக்கவேண்டியது.

इमानि च फलान्यत्र स्वाद्नि विविधानि च । जातानि पर्वताग्रेषु चास्याद्यास्वाद्य गायताम् ॥

अन्न च “ இவ்விடத்திலேயும்
पर्वताग्रेषु மலைகளின் துணி
களில்
जातानि இருக்கின்றவைகளும்
स्वाद्नि மிகநுசுகரமாயிருக்
கின்றவைகளும்
विविधानि பலவகைப்பட்டனவு
மான

इ-नानि இந்த
फलानि च பழங்களையே
आस्याद्य } அப்போதைக்கப்
आस्याद्य च } போது அருந்தி
गायताम् { நீங்களிருவருமாய்க்
கூடிப் பாடவேண்டி
யது.

न यास्यथः श्रमं वत्सौ भक्षयित्वा फलानि वै । मूलानि च सुमृष्टानि नगराद्बहिरास्यथः ॥

वत्सौ { “என் அன்பிற்கு
பாத்திரமாகிய இரு
குமாரர்களே !
सुमृष्टानि மிக்க பரிசுத்தமாயி
ருக்கின்ற
मूलानि वै கிழங்குகளையும்
फलानि च பழங்களையும்

भक्षयित्वा அருந்திவிட்டு
श्रमं களைத்தலென்பதை
न यास्यथः நீங்களிருவரும் அடை
யாதிருக்கவேண்டும்.
नगरात् बहिः ஊருக்குவெளியில்
आस्यथः இவ்விடத்தில்
நீங்களிருவரும் வந்து
தங்கவேண்டும்.

यदि शब्दापयेद्रामः श्रवणाय महीपतिः । ऋषीणामुपविष्टानां ततो गेयं प्रवर्तताम् ॥ ९ ॥

महीपतिः “மஹீபதியாகும்
रामः ஋த்ரிமர்
उपविष्टानां எழுந்தருளியிருக்கும்
ऋषीणां முனிவர்களுடைய
श्रवणाय ச்ரவணர்த்தம்
शब्दापयेत् கூப்பிடுகின்றார்

यदि என்கிறபக்கத்தில்
ततः அவ்விடத்தில்
गेयं பாட்டானது
प्रवर्तताम् இனிமையாய் நடை
பெறவேண்டும்.

दिवसे विंशतिः सर्गा गेया मधुरया गिरा । प्रमाणैर्बहुभिस्तत्र यथोद्दिष्टा मया पुरा ॥

पुरा “முன்
मया என்னால்
बहुभिः பல
प्रमाणैः { சரிவரக்கற்பதற்குவே
ண்டிய வழிகளைக்
கொண்டு
उद्दिष्टा கற்பிக்கப்பட்டது
यथा எதுவோ அந்த

मधुरया கர்ணமிருக்கமான
गिरा ச்லீலாகரூபமாயிருக்
கிறதைக்கொண்டு
तत्र அவ்விடத்தில்
दिवसे நான்றோறும்
विंशतिः இருபது
सर्गाः ஸர்க்கங்களாக
गेया: பாடப்படவேண்டியது.

लोभश्चापि न कर्तव्यः स्वल्पोऽपि धनकाङ्क्षया । किं धनेनाश्रमस्थानां फलमूलोपजीविनाम् ॥

| | | | |
|--------------|--|-------------------------|---|
| स्वल्पः अ.पि | “ துளி அளவு என்ற போதிலும் | न अपि | ஆகவே ஆகாது. |
| धनकांक्षया | ஒரு பொருளில் ஆசை கொண்டு | फलमूलोप- } जीविनां } | பழங்களையும், கிழங்குகளையும் உணவாகக் கொண்டு ஜீவிக்கும் |
| लोभः च | { कामக்ரோதாதிகளில் ஒன்றாகிய லோபமென்பதே | आश्रमस्थानां | பர்ணசாலையாவளி களுக்கு |
| कर्तव्यः | புண்ணியச்செய்கையைக் | धने न किम् | பொருளால் ஆவது என்ன? |

யாக

यदि पृच्छेत्स काकुत्स्थो युवां कस्येति दारकौ ।

आवां वाल्मिकिशिष्यौ स्वो ब्रूतेमेवं नराधिपम्

॥ १२ ॥

| | | | |
|--------------|-------------------|----------------|-------------------------------|
| सः | “ அந்த | नराधिपं | புருஷோத்தமருக்கு |
| काकुत्स्थः | காசுத்தர் | आवां | நாங்களிருவரும் |
| युवां | உங்களிருவரையும் | वाल्मीकिशिष्यौ | வால்மீகிமுனிவரது சிஷ்யர்களாய் |
| | பார்த்து | | |
| कस्य | யாருடைய | स्वः एवं | வளர்ந்துவருகின்ற |
| दारकौ | புதல்வர்கள் | | றோடும் என்கிறமட்டில் |
| इति | என்று | ब्रूतेम् | பதில் சொல்லக்கூட |
| पृच्छेत् यदि | கேட்கும்பகஷத்தில் | | வீர்கள். |

इमास्तन्त्रीः सुमधुराः स्थानं वा पूर्वदर्शनम् । मूर्च्छयित्वा सुमधुरं गायथां विगतज्वरौ ॥

| | | | |
|----------------|---|---------------|---|
| इमाः | “ இந்த | स्थानं | { உயர்ந்த, மத்தியம், தாழ்ந்த என்கிற ஸங்கீதநாதவேற்றுமையில் |
| सुमधुराः | மிக்க அழகாயிருக்கின்ற | मूर्च्छयित्वा | தொடுத்தது |
| तन्त्रीः | யாழின் தந்திகளை | विगतज्वरौ | அவஸரமென்பதே |
| सुमधुरं | அதி இன்பகரமாய் | | யில்லாதவர்களாய் |
| पूर्वदर्शनं वा | { வெகுசாலமாய் ரஸித் துக்கொண்டாடப் பட்டுவருகின்ற | गायेथाम् | { நீங்களிருவரும் பாட்டாய்ப் பிரஸங்கம்செய்துவருவீர்களாக. |

आदिप्रभृति गेयं स्यान्न चावज्ञाय पार्थिवम् । पिता हि सर्वभूतानां राजा भवति धर्मतः ॥

| | | | |
|-------------|---------------------|--------------|------------------------|
| धर्मतः | “ தர்மநூல்பிரகாரம் | पार्थिवं | மன்னரை |
| सर्वभूतानां | ஸகல பிராணிகளுக்கும் | अवज्ञाय न | அனாதரவுசெய்யக் கூடாது. |
| राजा | மன்னன் | | |
| पिता | தந்தையாய் | आदिप्रभृति च | ஆதிதொடங்கி |
| भवति | ஆகிறார் | गेयं | பாட்டானது |
| हि | என்கிறபடியால் | स्यात् | நடைபெறவேண்டும். |

तद्युवां हृष्टमनसौ श्वः प्रभाते समास्थितौ । गायेथां मधुरं गेयं तन्त्रीलयसमन्विनम् ॥१५॥

तत् “ஆகையால்
யுதா நீங்களிருவரும்
சமாஸ்திதௌ நியமனப்படியே நடக்கின்றவர்களாய்
ஹ்ஸ்தமனஸௌ உதஸாஹந்ககொண்ட
ஷ்வ. நானே [டவர்களாய்
புறமோ காலையில்

तन्त्रीलयसमन्विन् यः प्रीतिं तन्त्रिकर्तुः
मधुरं लयतुङ्गं श्रुत्वा
गेयं कान्ठमिन्द्रमप्यिन्द्र
गायेथाम् पाट्टायां प्रीत्यन्तम्
செய்துவருவீர்களாக.”

इति सन्दिश्य बहुशो मुनिः प्राचेतसस्तदा । वाल्मीकिः परमोदारस्तूष्णीमासीन्महायशाः ॥

तदा अप्पொழுது
प्राचेतसः ப்ரசேதஸின் புதல்வரும்
परमोदारः மஹா தருமானுஷ்டானமுடையவரென
महायशाः த்ரீலோகப்ரசித்திபெற்றவருமான

वाल्मीकिः वाल्मीकि
मुनिः முனிவர்
इति இவ்வண்ணமாய்
बहुशः பலவீதமாய்
सन्दिश्य ஆக்ஞாபித்துவிட்டு
तूष्णीं மெளனத்தை
आसीत् அடைந்தார்.

सन्दिष्टौ मुनिना तेन तावुभौ मैथिलीसुतौ । तथैव करवावेति निर्जग्मतुररिन्दमौ ॥१७॥

तेन मुनिना அந்தமுனிவரால்
सन्दिष्टौ நியமனம்பெற்ற
अरिन्दमौ பகைவரை அடக்கு
तौ அந்த [பவர்களாகிய
उभौ இரு
मैथिलीसुतौ மைதிலியாரின் திருக்குமாரர்கள்

तथा एव திருவுள்ளப்படியே
करवाच ‘நாங்களிருவரும்
इति செய்கிறோம்’
என்று சொல்லிவிட்டு
निर्जग्मतुः ஸன்னிதானத்திலிருந்து வெளியே
சென்றார்கள்.

तामद्भुतां तौ हृदये कुमारौ निवेश्य वाणीमृषिभाषितां तदा ।

समुत्सुकौ तौ सममृषतुनिशां यथाऽश्विनौ भार्गवनीतिसंहिताम् ॥ १८ ॥

तदा अप्पொழுது
तौ कुमारौ அவ்விருபாலர்களுள்
ऋषिभाषितां ரிஷியால் சொல்லியருளப்பட்ட
अद्भुतां அப்புதமான
तां அந்த
वाणीं திருவாக்கை
हृदये निवेश्य மனதில் நாட்டி
तौ அவ்விருவர்களும்
अश्विनौ அச்வனிதேவதைகள்

भार्गवनीति- } சுக்கிராசாரியரது நீதி
संहितां } தர்மசாஸ்திரத்தை
यथा எவ்வண்ணமோ
अव्वண்ணமே
समुत्सुकौ { நினைத்துநினைத்துக்
கொண்டாடுபவர்
களாய்
निशां அன்று இராப்பொழு
समं முற்றிலும் [தை
उषतुः சுகமாய்ப் போக்கினார்கள்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाण्डे त्रिनवतितमः सर्गः ॥

चतुर्णवतितमः सर्गः—தோண்ணூற்றுநான்காவது ஸர்க்கம். || ௨௪ ||

कुशलवाभ्यां रामायणगानम्—குசலவர்கள் ராமாயணத்தை கானம் செய்வது.

तौ रजन्यां प्रभातायां स्नातौ हुतहुताशनौ । यथोक्तमृषिणा पूर्वं सर्वं तत्रोपगायताम् ॥

தौ } அவ்விருவர்களும்
 ரজন்யா } இரவுமுடிந்து
 பிரமாதாயா } உதயத்தில்
 ச்னாதौ } ஸ்நானம்செய்தவர்
 களாய்
 हुत- } ஸந்தியாவந்தனம்,
 हुताशनौ } ஸமிதாநானம் இவ்
 விரண்டையும் செய்
 துமுடித்தவர்களாய்
 ऋषिणा } ரிஷியால்

पूर्वं } முன்னம்
 उक्तं } நியமித்தருளப்பட்ட
 டது
 सर्वं } எல்லாவற்றையும்
 यथा } சொல்லியவண்ணமே
 तत्र } அவ்விடத்தில்
 उपगायताम् } எல்லோரும் கேட்கும்
 வண்ணமாய் பாடிப்
 பிரஸங்கித்து
 வந்தார்கள்.

तां स शुश्राव काकुत्स्थः पूर्वाचार्यविनिर्मिताम् । अपूर्वा पाठ्यजातिं च गेयेन समलङ्कृताम् ॥

सः } அந்த
 काकुत्स्थः } காருத்தஸ்தர்
 गेयेन } பாட்டினமுகால்
 समलङ्कृतां } மிக்க மனோஹரமாயி
 ருக்கிறதும்
 पाठ्यजातिं } ஸ்வரங்களுடன் எழு
 தப்படாமல் வாய்
 மொழியாயிருக்கிற
 தும்

अपूर्वा } இதுவரையில் கேள்வி
 க்கு வராததும்
 पूर्वाचार्य- } பூர்வாசார்யரால் உப
 विनिर्मितां } தேசம் செய்யப்பட்
 டதுமான
 तां } அதை
 शुश्राव } ஒருஸமயத்தில் செவி
 சாய்த்து கேட்டார்.

प्रमाणैर्वहुभिर्युक्तां तन्त्रीलयसमन्विताम् । बालाभ्यां राघवः श्रुत्वा कौतूहलपरोऽभवत् ॥

राघवः } ஸ்ரீராகவர்
 बालाभ्यां } இரு பாலர்களிடமிரு
 ந்து
 तन्त्रीलय- } யாழின் தந்திகளின்
 समन्वितां } லயத்தக்கூ ஒத்து
 बहुभिः } பல

प्रमाणैः } பிரமாணங்களைக்
 கொண்டு
 युक्तां } செய்யப்பட்ட ஆதி
 श्रुत्वा } கேட்டு [காவ்யத்தை
 कौतूहलपरः } அதில் பரம ஆஸக்தி
 யுடையவராய்
 अभवत् } விளங்கினார்.

अथ कर्मान्तरे राजा समाहूय महासुनीन् । पार्थिवांश्च नरव्याघ्रः पण्डिताञ्चैगमांस्तथा ॥
 पौराणिकाञ्छब्दविदो ये च वृद्धा द्विजातयः । स्वराणां लक्षणज्ञांश्च उत्सुकान्द्विजसत्तमान्॥

लक्षणज्ञानंश्च गान्धर्वाभैगमांश्च विशेषतः । पादाक्षरसमासज्ञानंश्च छन्दस्सु परिनिष्ठितान् ॥६॥
 कलामात्राविभागज्ञानञ्च्यौतिषे च परं गतान् । क्रियाकल्पविदश्चैव तथा काव्यविदो जनान् ॥
 भाषाज्ञानिङ्गितज्ञानंश्च नैगमांश्चाप्यशेषतः । हेतूपचारकुशलान्वचने चापि हेतुकान् ॥ ८ ॥
 छन्दोविदः पुराणज्ञानैदिकान्दिज्ञसत्तमान् । चित्रज्ञानचमूत्रज्ञानगीतवृत्यविशारदान् ॥
 शास्त्रज्ञान्नीतिनिपुणान्वेदान्तार्थप्रबोधकान् । एतान्सर्वान्समानीय गायन्तौ समचोदयत् ॥

अथ उपबொழுது
 कर्मगुरो यாகத்தினிடையில்
 नख्याम्रः புருஷோத்தமராகிய
 राजा மன்னர்
 महासुनीन् மஹாமுனிவர்களையும்
 पार्थिवान् च பார்த்திவர்களையும்
 पण्डितान् படிப்பபால் ஞானத்தை
 ஆடைந்தவர்களையும்
 तथा அவ்வண்ணமே
 नैगमान् வேதவித்துக்களையும்
 पौराणिकान् புராணங்களில் நிபு
 ணர்களையும்
 शब्दविदः வையாகரணர்களையும்
 द्विजातयः கூத்திரியர்கள்
 वृद्धाः பண்டிதஞானிகளாய்
 ये च எவர்களிருந்தார்
 களோ அவர்களையும்
 स्वराणां ஸங்கீதஸ்வரங்களு
 டைய
 लक्षणज्ञान् च லக்ஷணங்களை அறிந்
 தவர்களையும்
 उरुसुकान् அன்பிற்குப்பாத்திரர்
 களாகும்
 द्विज्ञसत्तमान् பிராமணைத்தமர்களை
 யும்
 लक्षण- } அர்த்தமெழுதவும்
 ज्ञान् च } சரியான வியாக்யா
 नங்கள் செய்யவும்
 வல்லமை கொண்ட
 வர்களையும்

गान्धर्वान् { பாட்டாலேயே ஜீவ
 ஞெபாயம் செய்து
 வருபவர்களையும்
 विशेषतः விசேஷமாய்
 नैगमान् च புராணபிராஞர்
 களையும்
 पादाक्षर- } பாடம், அக்ஷரம்,
 समासज्ञान् } ஸமாஸம், இவைக
 ளில் நிபுணர்களையும்
 छन्दस्सु செய்யுள்களில்
 परिनिष्ठितान् பரிபூர்ணப்பயிற்சி
 பெற்றவர்களையும்
 कलामात्रा- } யாப்பிலக்கணத்தில்
 विभागज्ञान् } ஓரே ஒரு உயிரெ
 முத்தை அடங்கிய
 கலை, அல்லது அசை
 என்பதையும் இவை
 களை எவ்வளவு கா
 லம் வரைக்கும் உச்
 சரிக்கத்தக்கது என்
 றுற கிரமங்களை
 அறிந்தவர்களையும்
 जौतिषे { சித்தாந்த சிரோமணி
 மீமாம்சை முதலிய
 சித்தாந்த கிரந்தங்
 களை
 परं गतान् च பாடங்கதர்களையும்
 क्रिया कल्पविदः } கல்பஸூத்திரமறிந்
 च एव } தவர்களையும்
 तथा அவ்வண்ணமே
 काव्यविदः காவ்யலக்ஷணங்கள்
 அறிந்த

| | | | |
|---------------|---|---------------|--|
| जनान् | ஜனங்களையும் | वृत्त- | ஒவ்வொரு சீலாகக் |
| भाषाज्ञान् | அக்காலத்தில் வழங்கி வரும் ஸம்ஸ்கிருத பாஷையில் நிபுணர் களையும் | सूत्रज्ञान् | களிலும் ஒவ்வொரு பாதத்திலும் எட்டு அல்லது பன்னிரண் டு அசைகளின் விதி களை அறிந்தவர் களையும் |
| इक्षितज्ञान् | பதங்களின்பா வங்களை அறிந்தவர்களையும் | गीतवृत्त- | ஸங்கீதத்திலும் நிருத் |
| अशेषतः अपि | எல்லா காரியங்களி லும் | विशारदान् | யத்திலும் நிபுணர் களையும் |
| नैगमान् च | புத்திரா தூர்யங்கொ ண்டவர்களையும் | शास्त्रज्ञान् | தர்மம், அதர்மம் இ வைகளைப்பற்றிய வேதவாக்குகளை அ றிந்தவர்களையும் |
| हेतूपचार- | யுத்திவாதங்கள் சொ ல்வதிலும் அவைக ளுக்கேற்ற பதில் சொல்வதிலும் நிபு ணர்களையும் | नीतिनिगुणान् | தர்மகிருத்தியங்களுக் குவேண்டிய வேத வாக்குகளில் நிபுணர் களையும் |
| कुशलान् च | கிரந்தத்தினிடையில் ஏதேனுமொரு பா டாந்தரத்தில் | वेदान्ताथि- | வேதாந்தங்களின் |
| वचने | முன்பின வாக்கியங்க ளின் நிலைகளை எடுத் துக்காட்டி நியாயவா தம் செய்பவர்களை யும் | प्रबोधकान् | றுட்பங்களை விளங் கச்சொல்லி அஜ்ஞா னமாகும் இருளைப் போக்கி க்ஞானமா கும் வெளிச்சத்தை அளிக்கின்றவர் களையும் |
| हेतुकान् | வேதவித்துக்களாய் | एतान् | மேற்கண்ட |
| अपि | புராணங்களில் நிபுணர்களாய் | सर्वान् च | எல்லோரையும் |
| छन्दोविदः | வேதவாக்குப்படியே அனுஷ்டானமுடைய பிராமம்ணேத்தமர் களையும் | समाहूय | அழைத்து |
| पुराणज्ञान् | காவ்யங்களின், சப்த சித்திரம், அர்த்தசித் திரம், பெயச்சித்தி ரம் என்ற மூன்று சித்திரங்களை அறிந்த வர்களையும் | समानीय | ஸபைகூட்டி |
| वैदिकान् | | गायन्तौ | பாடகர்களிருவர்களை யும் |
| द्विजसत्तमान् | | समचोदयत् | ஸபைநடுவில் அழைத் துவாச்செய்து நிறுத்தினர். |
| चित्रज्ञान् | | | |

दृष्ट्वा मुनिगणाः सर्वे पार्थिवाश्च महौजसः । पिबन्त इव चक्षुर्भ्यो राजानं गायकौ च तौ ॥
ऊचुः परस्परं चेदं सर्वे एव समन्ततः । उभौ रामस्य सदृशौ बिम्बाद्बिम्बविभोत्थितौ ॥

सृष्टः मஹாதேஜோமயமாய்
விளங்கிய
पुनिगणाः முனிகணங்கள்
सर्वे எல்லோரும்
पार्थिवाः च பார்த்திவர்களும்
समन्ततः அங்கேயிருந்த
सर्वे एव எல்லோருமே
राजानं च மன்னரையும்
तौ அவ்விரண்டு
गायकौ च பாடகர்களையும்
चक्षुर्था இரு கண்களாலும்
विषन्तः इव { கொட்டாமலே விழித்
துறோக்குபவர்
களாகி

दृष्ट्वा பார்த்து
इदं பின்வருகிறபடி
परस्परं ஒருவருக்கொருவர்
ऊचुः பேசிக்கொண்டார்கள்
उभौ “இருவர்களும்
रामस्य ஸ்ரீராமருக்கு
सदृशौ { உவமை சொல்லவே
ண்டியவர்களாயிருக்
கின்றார்கள்.
बिभ्रगत् பிம்பத்தினின்றும்
बिभ्रं பிரதிபிம்பமாய்
उत्थितौ பிரிந்திருக்கிறார்களெ
इव } னவே சொல்லவே
ண்டும்.

जटिलौ यदि न स्यातां न वल्कलधरौ यदि ।
जटिलौ “சடைமுடியர்களாய்
न स्यातां यदि இவ்வாறு இருக்காத
वल्कलधरौ மரவுரி கொண்டவர்
यदि न இல்லாதபக்கத்திலும்
तेषां संवदतामेवं श्रोतॄणां हर्षवर्धनम् । गेयं प्रचक्रतुस्तत्र तावुभौ मुनिदारकौ ॥ १४ ॥
तौ அந்த
उभौ இரு
मुनिदारकौ முனிகுமாரர்கள்
तत्र அப்பொழுது
तेषां அவர்கள்
एवं மேற்கண்டவண்ண
माम्य

विशेषं नाधिगच्छामो गायतो राघवस्य च ॥
गामतोः பாடகர்களிருவருக்
राघवस्य च ஸ்ரீராகவருக்கும் [சும்
विशेषं பேதமின்னதென்
பதை
न अधिगच्छामः நாம் காணமுடியாது.”
संवदतां { ஒருவரோடொருவர்
பேசிக்கொண்டிருக்
கையில்
श्रोतॄणां கேட்பவர்களுக்கு
हर्षवर्धनं ஆனந்தத்தைப் பெரு
गेयं பாட்டை [க்குகின்ற
प्रचक्रतुः பிரஸங்கித்தார்கள்.

ततः प्रवृत्तं मधुरं गान्धर्वमतिमानुषम् । न च वृत्तिं ययुः सर्वे श्रोतारो गानसम्पदा ॥ १५ ॥
ततः அப்பொழுது
श्रोतारः செவிகொடுத்தாக்
कैट्टल सणैयோர்கள்
सर्वे எல்லோரும்
गानसम्पदा பாட்டினதரசியத்தால்
अतिमानुषं { மாணிடர்களின் சக்
திக்கு மேலானதாயி
ருக்கிறதாயும்

गान्धर्वं { தெய்வலோக பாடகர்
களாகிய கந்தர்வர்
களின் பாடல்களை
னவும்
मधुरं அதி இனிப்பாய்
प्रवृत्तं { ஆஸக்தியுடன் அனுப
வித்துக்கொண்டிருப்
பதில்
वृत्तिं च தெவிட்டலென்பதை
ये
न ययुः அடையா திருந்தார்கள்.

प्रवृत्तमादितः पूर्वसर्गं नारददर्शितम् । ततः प्रभृति सर्गांश्च यावद्विशत्यगायताम् ॥ १६

नारददर्शितं श्रीनारायणमुनिवरीन्
 उपदेशसमाहितं
 पूर्वसर्गं मुत्तल्लसர்க்கமாகிற
 தும்
 प्रवृत्तं நூன் முகமாகிற துமா
 आदितः प्रभृति பிரதமதினத்தில் [ன

ततः अतமுதல்கொண்டு
 यावद्विशति } இருபது ஸர்க்கங்கள்
 सर्गांश्च } வரைக்கும்
 आगायताम् பாடிப் பிரஸங்கித்
 தார்கள்.

ततोऽपराहसमये राघवः समभाषत । श्रुत्वा विंशतिसर्गांस्तान्भ्रातरं भ्रातृवत्सलः ॥ १७ ॥

भ्रातृवत्सलः ஸஹோதரவாத்ஸல்ய
 முடைய
 राघवः श्रीராகவர்
 ततः அப்பொழுது
 अपराहसमये மத்தியானன் த்திற்கு
 तान् அந்த [மேல்

विंशतिसर्गान् இருபது ஸர்க்கங்களை
 श्रुत्वा கேட்டருளி
 भ्रातरं ப்ராதாக்களில் ஒருவ
 ரைப்பார்த்து
 समभाषत இங்ஙனம் சொல்லி
 யருளினார்:

अष्टादश सहस्राणि सुवर्णस्य महात्मनोः । प्रयच्छ शीघ्रं काकुत्स्थ यदन्यदभिकाङ्क्षितम् ॥
 ददौ शीघ्रं स काकुत्स्थो बालयोर्वै पृथक्पृथक् ॥ १८ ॥

काकुत्स्थ “ஹே காருத்த!
 महात्मनो: { மஹாபுத்திமாண்களா
 யிருக்கும் இவ்விரு
 வர்களுக்கும்
 सुवर्णस्य தங்க நாணயத்தினு
 டைய
 अष्टादश सहस्राणि பதினெட்டாயிரத்
 தையும்
 अभिकाङ्क्षितं இஷ்டப்பட்டுக்கேட்
 கின்றது
 अन्यत् வேறு

यत् एதுவோ அதையும்
 शीघ्रं இப்போதே
 प्रयच्छ கொண்டுவந்துஸம்பா
 வணையய்க்கொடு.”
 सः அந்த
 काकुत्स्थः காருத்தரும்
 बालयोः वै டாலர்களிருவர்களுக்
 पृथक् पृथक् தனித்தனியே [கும்
 शीघ्रं தட்சணமே
 ददौ ஸமர்ப்பித்தார்:

दीयमानं सुवर्णं तु नागृहीतां कुशीलवौ । उचतुश्च महात्मानौ किमनेनेति विस्मितौ ॥

दीयमानं கைரிட்டிக்கொடுக்கப்
 படுகிறதாயிருக்கின்ற
 सुवर्णं தங்கநாணயத்தை
 कुशीलवौ குசலும் லவனும்
 महात्मानौ மஹா உதாரகுண
 முடையவர்களாய்

न अगृहीतां வாங்கமறுத்துவிட்
 டார்கள்.
 तु இதுவிஷயத்தில்
 इति இவ்வண்ணம்
 उचतुः விண்ணப்பம் செய்
 தார்கள்:

विस्मितौ च { மானஹானிக்கு
 இடங்கொடாதவர்
 களாயுமாகி

अनेन “இதைக்கொண்டு
 किम् என்ன செய்வோம்?

एष्येन फलमूलेन निरतौ वनवासिनौ । सुवर्णेन हिरण्येन किं करिष्यावहे वने ॥२०॥

| | | |
|----------------------|------------|--------------------|
| “காட்டில் | वनवासिनौ | ரிஷிகளான நாங்களி |
| யதேச்சையாய் | | ருவரும் |
| வந்யேன | சுवर्णेन | பொன் நாணயத் |
| { கிடைக்கக்கூடியதா | | தாலும் |
| யிருக்கின்ற | | |
| फलमूलेन | हिरण्येन | பொன் கட்டியாலும் |
| பழங்கனையும் கிழங்கு | | |
| கனையும் கொண்டு | | |
| निरतौ | करिष्यावहे | செய்யக்கூடியது |
| பரிபூர்ண திருப்தி கொ | { | என்ன விருக்கிறது?” |
| ண்டவர்களாயிருக்கும் | किम् | |

तथा तयोः प्रब्रुवतोः कुतूहलसमन्विताः । श्रोतारश्चैव रामश्च सर्व एव सुविस्मिताः ॥२१॥

| | | | |
|-------------|-------------------|--------------|--------------------|
| तथा | अव्वண்ணமாய் | सर्वे एव | எல்லோருமே |
| तयोः | அவ்விருவர்களையும் | कुतूहल- | மிக்க மெச்சிக்கொண் |
| प्रब्रुवतोः | ஸந்தேகமறச்சொல்லி | समन्विताः एव | டாடுகின்றவர்களாக |
| | விடுக்கவும் | | வே |
| रामः च | ஸ்ரீராமரும் | सुविस्मिताः | மிக்க ஆச்சர்யம் |
| श्रोतारः च | செவிகொடுத்துக்கே | | கொண்டார்கள். |
| | ட்ட ஸபையோர்களும் | | |

तस्य चैवागमं रामः काव्यस्य श्रोतुमुत्सुकः । पप्रच्छ तौ महातेजास्तावुभौ मुनिदारकौ ॥

| | | | |
|----------|-------------------|-----------|----------------------|
| महातेजाः | மஹாதேஜஸ்வியாகிய | उभौ च | { ஓரோமாதிரியாய் இரட் |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | | டைகளாயிருக்கின்ற |
| तस्य | அந்த | मुनिदारकौ | வர்களும் |
| काव्यस्य | காவ்யத்தினுடைய | { एव | முனிவேடங்கொண்ட |
| भागमं | வரலாற்றை | | வர்களாய் பால்யவய |
| श्रोतुं | கேட்டறிய | | திலிருக்கின்றவர் |
| उत्सुकः | திருவுள் என்கொண்ட | तौ | களுமான |
| | வராய் | | அவ்விருவர்களையும் |
| तौ | அந்த | पप्रच्छ | பார்த்து |
| | | | இங்கனம் வினாவினார்: |

किंप्रमाणमिदं काव्यं का प्रतिष्ठा महात्मनः । कर्ता काव्यस्य महतः क चासौ मुनिपुङ्गवः ॥

| | | | |
|------------|-----------------|---------------|----------------------|
| इदं | “இந்த | कर्ता | உபதேசம் செய்த |
| काव्यं | காவ்யமானது | असौ | இந்த [ருளிய |
| किंप्रमाणं | எவ்வளவு பிரமாண | मुनिपुङ्गवः च | முனிவர் பெருமானும் |
| | முடையது? | क | எங்கேயிருக்கிறார்?” |
| महतः | அதிசீரலமாய் | मुनिदारकौ | முனிவேடம்பூண்டிரு |
| महात्मनः | மெச்சிக்கொண்டாட | | ந்த பாலர்களிருவரும் |
| काव्यस्य | வேண்டியதாயிருக் | पृच्छन्तं | கேள்விகேட்டருளிய |
| | கின்றதற்கு | राघवं | ஸ்ரீராகவரைப்பார்த்து |
| प्रतिष्ठा | மூலம் | वाक्यं | இந்த பதிலை |
| का | எது? | उच्युतः | சொன்னார்கள்: |

वाल्मीकिर्भगवान्कर्ता संप्राप्तो यज्ञसंविधम् । येनेदं चरितं तुभ्यमशेषं संपदशितम् ॥२६

इदं "இந்த
 तुभ्यं தேவரீரைப்பற்றிய
 चरितं சரித்திரமானது
 अशेषं எல்லாமுடைய
 संपदशितं நன்கு விளக்க உபதே
 சித்தருளப்பட்டது

येन एवरात्रो अन्त
 कर्ता कुत्रवाक्य
 वाल्मीकिः भगवान् बाल्मीकिपकरा
 यज्ञसंविधं याज्ञस्यில் (ஆர்ஷம்)
 संप्राप्तः எழுந்தருளியிருக்கின்
 றார்.

सन्निबद्धं हि श्लोकानां चतुर्विंशत्सहस्रकम् । उपाख्यानशतं चैव भार्गवैण तपस्विना ॥

तपस्विना "தபோதனராகிய
 भार्गवैण பிரகுவம்சத்தவராகிய
 श्लोकानां ச்லோகங்களின்

उपाख्यानशतं चैव भार्गवैण तपस्विना ॥
 चतुर्विंशत्सहस्रकं च இருபத்தநாலாயிரங்க
 एव अनेक उपाख्यानशतं एव अனேக உபகதைகளை
 सन्निबद्धं हि முற்றிலும் முடிக்கப்
 பெற்றிருக்கிறது.

आदिप्रभृति वै राजन्श्च सर्गशतानि च । काण्डानि षट् कृतानिह सोत्तराणि महात्मना ॥

कृतानि गुरुणाऽस्माकमृषिणा चरितं तव
 राजन् "ப்ரபோ!
 इह இப்பொழுதே
 आदिप्रभृति முதலிலிருந்து
 पञ्च सर्गशतानि ஐந்து நூறு ஸர்க்கங்
 षट् काण्डानि च ஆறு காண்டங்கள்
 महात्मना மஹா த்மாவால்
 कृतानि वै செய்தருளப்பட்டிருக்
 अस्माकं எங்களது [கின்றன.
 गुरुणा குருவாகிய
 ऋषिणा ரிஷியால்

॥ २६ ॥
 तव தேவரீரது
 चरितं { முன்னமேயே ஏற்படு
 சரித்திரம் { த்திக்கொண்டிருந்த
 ஸங்கேதத்தைப்பற்
 ரியதாகிய
 सोत्तराणि { அந்தக்காண்டங்களுக்
 சோதரணிகள் { குடும்ப உத்தரமே
 னும் கடைசிக்காண்
 டத்தோடுகடினவை
 कृतानि { களாய்
 கृतானிகள் { செய்து முடிக்கப்பட்ட
 டிருக்கின்றன.

प्रतिष्ठाऽऽजीवितं यावत्तावत्सर्वस्य वसते । यदि बुद्धिः कृता राजञ्छृणुष्व महारथ ॥

कर्मान्तरे क्षणीभूतस्तच्छृणुष्व सहानुजः
 आजीवितं "இவ்வலகிலிருக்கும்
 यावत् ஆயுஷ்காலம்
 तावत् எவ்வளவோ
 सर्वस्य அதற்கும்
 प्रतिष्ठा எல்லாவற்றிற்கும்
 वसते பிரமாணமாய்
 महारथ விளங்குகிறது.
 राजन् மஹாரத!
 श्रवणाय ஹே பிரபோ!
 திருச்செவி சாய்க்க

॥ २७ ॥
 बुद्धिः திருவுள்ளம்
 कृता यदि இருக்கிறபக்கத்தில்
 कर्मान्तरे या ककिरुத்யத்தினி
 क्षणीभूतः டைவேளைகளில்
 सहानुजः அவகாசங்களை ஏற்படு
 तत् த்திக்கொண்டவராய்
 श्रवणाय தம்பிமார்களோடுகடி
 அதை [யிருப்பவராய்
 "ப்ரஸங்கம் செய்யும்
 எங்களிடமிருந்து
 கேட்டருளலாம்."

एाढमित्यब्रवीद्रामस्तौ चानुज्ञाप्य राघवम् । प्रहृष्टौ जग्मतुः स्थानं यत्रास्ते मुनिपुङ्गवः ॥

| | | | |
|------------|------------------------|-------------|---------------------------|
| ராம: | ஸ்ரீராமர் | प्रहृष्टौ | உதலா ஹற்கொண்ட வர்களாகி |
| बाढं इति | அப்படியே செய்க வென | मुनिपुङ्गवः | முனிவர் பெருமான் |
| अब्रवीत् | ஆக்ரூபித்தருளினார். | आसते | எழுந்தருளியிருக்கிறது |
| तौ च | அவ்விருவர்களும் | यत् | எவ்விடமோ |
| राघवं | ஸ்ரீராகவரிடம் | स्थानं | அவ்விடத்திற்கு |
| अनुज्ञाप्य | விடைபெற்றுக் கொண்டு | जग्मतुः | போய்ச்சேர்ந்தார்கள். |

रामोऽपि मुनिभिः सार्धं पार्थिवैश्च महात्मभिः । श्रुत्वा तद्द्वीतिमाधुर्यं कर्मशालामुपागमत् ॥

| | | | |
|-------------|--------------------|--------------|--|
| रामः अपि | ஸ்ரீராமரும் | गीतिमाधुर्यं | { கீதத்தின் காவ்யங்க ளுக்கிருக்கவேண்டிய மூன்று குணங்களி லொன்றாகிய மாதூர் யத்தை |
| महात्मभिः | மஹாத்மாக்களாகிய | शुश्रवा | |
| मुनिभिः | முனிவர்களோடும் | कर्मशालां | யாகசரலைக்குள் |
| पार्थिवैः च | பார்த்திவர்களோடும் | उपागमत् | திரும்பிச்சென்றார். |
| सार्धं | கூடி | | |
| तत् | அந்த | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे चतुर्नवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23649

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2925

पञ्चनवतितमः सर्गः—தொண்ணூற்றைந்தாவது ஸர்க்கம். ॥ ௨௫ ॥

वाल्मीकये दूतप्रेषणम्—வால்மீகிமுனிவருக்கு தூதர்களைனுப்புவது.

रामो बहून्यहान्येवं तद्द्वीतं परमाद्भुतम् । शुश्रवा मुनिभिः सार्धं पार्थिवैः सह वानरैः ॥

| | | | |
|------------|-------------------------|----------------|------------------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | तत् गीतं | அந்த கீதத்தை |
| एवं | இப்படியாய் | मुनिभिः सार्धं | முனிவர்களோடும் |
| बहूनि | பல | पार्थिवैः | பார்த்திவர்களோடும் |
| अहानि | தினங்கள் வரைக்கும் | वानरैः सह | வானரர்களோடும்கூட |
| परमाद्भुतं | பரம அற்புதமாயிருக்கின்ற | शुश्रवा | வேபிருந்து கேட்டருளினார். |

तस्मिन्गीते तु विज्ञाय सीतापुत्रौ कुशीलवौ । तस्याः परिषदो मध्ये रामो वचनमब्रवीत् ॥

दृताच्छुद्धसमाचारानाह्यात्ममनीषया

॥ २ ॥

| | | | |
|---------|--------------------|------------|------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | गीते तु | கீதத்திலிருந்தே |
| कुशीलवौ | குசனையும் லவனையும் | सीतापुत्रौ | வீதாபிராட்டியார் |
| तस्मिन् | அந்த | | புதல்வர்களென |

| | |
|------------|--|
| विज्ञाय | கண்டுகொண்டு |
| तस्याः | அந்த |
| परिवद्: | ஸபையின் |
| मध्ये | நடுவே |
| आत्ममनीषया | { தனக்குத்தானே திரு வுள்ளத்தில் தோ ன்றிவிட்டதினால் |

मद्रुचो ब्रूत गच्छध्वमितो भगवतोऽन्तिकम् । यदि शुद्धसमाचारा यदि वा वीतकल्मषा ॥
करोत्विहात्मनः शुद्धिमनुमान्य महासुनिम्

| | |
|----------|--------------------------|
| इतः | “ இவ்விடமிருந்து |
| भगवतः | பகவானது |
| अन्तिकं | ஸன்னிதிக்ரு |
| गच्छध्वं | நீங்கள் போகவேண் டும். |

| | |
|---------|-----------------------------------|
| मद्रुचः | எனது பின்வரும் விண்ணப்பத்தை |
| ब्रूत | நீங்கள் தெரியப்படுத் துங்கள் : |

| | |
|--------------|--|
| शुद्धसमाचारा | { ‘அவனைப்போல் கற்பு டையவள் வேறொரு வளில்லாதவளாக |
|--------------|--|

यदि இருக்கும்பகஷத்திலும்

छन्दं मुनेश्च विज्ञाय सीतायाश्च मनोगतम् । प्रत्ययं दातुकामायास्ततः शंसत मे लघु ॥
श्वः प्रभाते तु शपथं मैथिली जनकात्मजा । करोतु परिषन्मध्ये शोधनार्थं ममैव च ॥५॥

| | |
|----------------|------------------|
| मम | “ எனது |
| परिषन्मध्ये एव | ஸபையின் நடுவில் |
| जन आत्मजा | ஜனகரின் திருமகளா |
| मैथिली | மைதிலீ [கிய |

| | |
|-----------|---|
| शोधनार्थं | { உள்ளது உள்ளபடி யேயிருக்கும் தீர்மா னத்தைப் பெறவே ண்டியகாரணமாய் |
|-----------|---|

| | |
|------------|---------------------------------|
| शपथं | சபதத்தை |
| श्वः | நரனை |
| प्रभाते तु | காலையிலேயே |
| करोतु | செய்யக்கடவள். |
| प्रत्ययं | பிரமாணம் செய்யும் விஷயத்தில் |

| | |
|----------------|---------------------------------|
| शुद्धसमाचारान् | சொன்னதைக் குற்ற மறச்செய்யும் |
| दूतान् | தூதர்களை |
| आहूय | அழைத்து |
| वचनं | பின்வரும் ஆக்கினை யை |
| अब्रवीत् | நியமித்தருளினார்: |

॥ ३ ॥

| | |
|-----------|---|
| वीतकल्मषा | { மனஸு, வாக்கு, கா யம் இவைகளால் ஏற்படும் எப்படிப் பட்டதாகிய பாபத் திற்கும் இடமாகா தவளாய் |
|-----------|---|

| | |
|----------|---------------------------------|
| यदि वा | இருக்கும்பகஷத்திலும் |
| महासुनिं | முனிவர்பெருமானை |
| अनुमान्य | கேட்டு அனுமதி பெற்றுக்கொண்டு |

| | |
|--------------|---|
| आमनः शुद्धिं | { இப்படி தோஷரஹி தையாயிருத்தலை ருஜூப்படுத்தல் இவ்விடத்தில் செய்யவேண்டும்.’ |
| इह | |
| करोतु | |

मुनेः मुनिवराது

| | |
|-------------|---|
| छन्दं | திருவுள்ளத்தையும் |
| दातुकामायाः | { எவருக்கும் ஹிதமே செய்யும் மனமுடைய வளராகிய |

| | |
|----------|-----------------|
| सीतायाः | வீதையினது |
| मनोगतं च | அபிராரயத்தையும் |
| विज्ञाय | அறிந்து |

| | |
|------|-------------------------------------|
| ततः | அவ்விடத்திலிருந்து |
| लघु | சீக்கிரமாய் திரும்பி |
| मे | எனக்கு [வந்து |
| शंसत | நீங்கள் தெரியப் படுத்தவேண்டும்.’ |

एश्रुत्वा तु राघवस्यैतद्वचः परममद्भुतम् । दूताः सम्प्रययुर्वाटं यत्रास्ते मुनिपुङ्गवः ॥ ६ ॥

| | | | |
|-----------|-----------------|-------------|----------------------|
| श्रुत्वाः | தூதர்கள் | मुनिपुङ्गवः | முனிவர் பெருமான் |
| राघवस्य | ஸ்ரீராகவரது | यत्र | எந்தச் சாவடியில் |
| परमं | மிக்க | आस्ते | எழுந்தருளியிருக்க |
| अद्भुतं | அத்புதமாயிருக்க | | கிறாரோ |
| एतत् | இந்த [கின்ற | वाटं | அதே சாவடிக்கு |
| वचः | நியமனத்தை | तु | அப்போதே |
| श्रुत्वा | சிரமேற்கொண்டு | संप्रययुः | போய்ச்சேர்ந்தார்கள். |

ते प्रणम्य महात्मानं ज्वलन्तममितप्रभम् । ऊचुस्ते रामवाक्यानि मृदूनि मधुराणि च ॥

| | | | |
|-----------|----------------------------------|-------------|---|
| ते | அவர்கள் | मृदूनि | { பச்சாத்தபத்தை நன்குவிளக்கக்காட் டுகின்றவையும் |
| ज्वलन्तं | புகையின்றி எரியும் தீயென | मधुराणि च | மதுரப் பரவாஹமுள்ள வையுமான |
| अमितप्रभं | அமிதமான சோதிமய மாய் விளங்கும் | रामवाक्यानि | ஸ்ரீராமரது திருவாக் |
| महात्मानं | மஹாத்மாவை | ते | அவர்கள் [குகளை |
| प्रणम्य | அடிபணிந்து வணங்கி | ऊचुः | தெரியப்படுத்தினார் கள். |

तेषां तद्दद्याहंतं श्रुत्वा रामस्य च मनोगतम् । विज्ञाय सुमहातेजा मुनिर्वाक्यमथाब्रवीत् ॥

| | | | |
|---------------|--|----------|----------------------------------|
| सुमहातेजाः | { த்ரீலோகயசஸ்பெற்ற மஹாதேஜோவானு கிய | श्रुत्वा | திருச்செவிகாத்தது |
| मुनिः | முனிவர் | रामस्य | ஸ்ரீராமரது |
| तेषां | அவர்களுடைய | मनोगतं च | திருவுள்ளத்தையும் |
| तत् दद्याहंतं | அப்போது சொல்லப் பட்டதற்கு | विज्ञाय | உள்ளது உள்ளபடி தெரிந்துகொண்டு |
| | | अथ | பின்வரும் |
| | | वाक्यं | பதிலை |
| | | अब्रवीत् | சொல்லிவிடுத்தார்; |

एवं भवतु भद्रं वो यथा तुष्यति राघवः । तथा करिष्यते सीता दैवतं हि पतिः स्त्रियाः ॥

| | | | |
|-----------|------------------------------|----------|--------------------------|
| वः | “உங்களுக்கு | दैवतं हि | போற்றவேண்டிய |
| भद्रं | மெச்சாதலே கிடைக்க கும் ! | सीता | தெய்வமன்றோ ? |
| एवं | அங்கனமே | राघवः | ஸ்ரீராகவர் |
| भवतु | ஆகட்டும். | यथा | எதைச்செய்தால் |
| स्त्रियाः | ஸ்த்ரீயாகிய எவளுக்கு கும் | तुष्यति | மனத்திருப்தி அடை வாரோ |
| पतिः | கணவனொருவனே | तथा | அதையே |
| | | करिष्यति | செய்வாள்.” |

तथोक्ता मुनिना सर्वे रामदूता महौजसम् । प्रत्येस्य राघवं क्षिप्रं मुनिवाक्यं बभाषिरे ॥

मुनिना मुனிவரால்
 तथा அவ்வண்ணமாய்
 उक्ता: நியமனம்பெற்ற
 रामदूता: ஸ்ரீராமதூதர்கள்
 सर्वे எல்லோரும்
 महौजसं மஹாபுகழ்படைத்த
 वराक्य वராகிய

राघवं ஸ்ரீராகவரை
 क्षिप्रं விரைவிலேயே
 प्रत्येस्य அடைந்து
 मुनिवाक्यं முனிவர்நியமனத்தை
 बभाषिरे விண்ணப்பம்
 செய்தார்கள்.

ततः प्रहृष्टः काकुत्स्थः श्रुत्वा वाक्यं महात्मनः । ऋषींस्तत्र समेतांश्च राज्ञश्चैवाभ्यभाषत॥

काकुत्स्थः காசூதஸ்தர்
 महात्मनः மஹாத்மாவினது
 वाक्यं நியமனத்தை
 श्रुत्वा திருவுள்ளத்தில்
 ततः அதனால் [கொண்டு
 प्रहृष्टः மிகத்திருப்திகொண்
 डवराकि டவராகி

तत्र அப்பொழுது
 समेतान् கூடியிருந்த
 ऋषीन् च முனிவர்களையும்
 राज्ञः च एव மன்னர்களையும்
 பார்க்து
 अभ्यभाषत இப்படித்திருவாய்
 मलरन्तःतःरुगिः मலர்ந்தருளினார்:

भगवन्तः सशिष्या वै सात्तुगाथ नराधिपाः । पश्यन्तु सीताशपथं यश्चैवान्योऽपि काङ्क्षते॥

सशिष्याः वै “ சிஷ்யர்களோடிருக்
 भवन्तः च தேவரீர்களும் [கும்
 सात्तुगाः பரிஜனங்களோடிருக்
 नराधिपाः च மன்னர்களும் [கும்
 अन्यः பாமரனான
 यः एव எவனெருவன்

कांक्षां अपि காண ஆசைப்படுகிற
 सीताशपथं ளை அவனும்கூட
 वलैते सपःतमःसैस्य
 पश्यन्तु பிரத்தியக்ஷத்தில்
 பார்க்கட்டும்.”

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राघवस्य महात्मनः । सर्वेषामृषिमुख्यानां साधुवादो महानभूत् ॥

तस्य அந்த
 महात्मनः மஹாத்மாவான
 राघवस्य ஸ்ரீராகவருடைய
 तत् वचनं அந்தப் பிரகடனையை
 श्रुत्वा கேட்டு
 ऋषिमुख्यानां ரிஷிச்சீரேஷ்டர்கள்

सर्वेषां அனைவருக்கும் இடை
 महान् } பெரிய ‘நல்லது நல்ல
 साधुवादः } து’ என்கிற திவ்ய
 अमूत् } கோஷமானது
 உண்டாயிற்று.

राजानश्च महात्मानं प्रशंसन्ति सस्य राघवम् । उपपन्नं नरश्रेष्ठ त्वय्येव भुवि नान्यतः ॥

राजानः च மன்னர்களும்
 महात्मानं மஹாத்மாவாகிய
 राघवं ஸ்ரீராகவரை
 प्रशंसन्ति सस्य இங்கனம் கொண்டா
 नरश्रेष्ठ “புருஷோத்தம!

भुवि உலகில்
 त्वयि एव தேவரீரொருவரிடத்
 தில்தான்
 उपपन्नं ஸாத்தியமாகும் இது;
 अन्यतः மற்றொருவருக்கும்
 न முடியாது”.

एवं विनिश्चयं कृत्वा श्वोभूत इति राघवः । विसर्जयामास तदा सर्वास्ताञ्छत्रुसूदनः ॥

| | | | |
|------------|--|-------------|----------------------------|
| शत्रुसूदनः | சத்ருக்களுக்கும்ஹித | इति | இருக்கின் றபடியால் |
| राघवः | ஸ்ரீராகவர் [மேபுரியும் | तदा | அப்பொழுது |
| एवं | இவ்விதமாய் | तान् | அந்த |
| विनिश्चयं | தீர்மானத்தை | सर्वान् | எல்லோரையும் |
| कृत्वा | மனதில்கொண்டு | विसर्जयामास | விடைகொடுத்தனுப் பிரைர். |
| श्वोभूतः | { நாளை காலையிலேயே நடைபெறவேண்டி யதாய் | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकिये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे पञ्चनवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23664



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2940

षण्णवतितमः सर्गः—தொண்ணூற்றூறாவது ஸர்க்கம். ॥ ௨௬ ॥

वाल्मीकिना सीताप्रत्ययदानकथनम्—வால்மீகி ஸீதையின் உண்மை

இன்னதென்பதை வெளியிடுவதைச் சொல்வது.

तस्यां रज्न्यां व्युष्टायां यज्ञवाटगतो नृपः । ऋषीन्सर्वान्महातेजाः शब्दापयति राघवः ॥

| | | | |
|-------------|-----------------------------|------------|-------------------------------------|
| तस्यां | அந்த | यज्ञवाटगतः | யாகசாலையாமண்ட பத்தில் எழுந்தருளி |
| रज्न्यां | இரவு | ऋषीन् | ரிஷிகள் |
| व्युष्टायां | கழிந்து மறுநாள் காலையில் | सर्वान् | எல்லோரையும் |
| महातेजाः | மஹாதேஜோவானு | शब्दापयति | வந்துசேரும்படி செய்தார். |
| नृपः राघवः | ராகவமன்னர் [கும் | | |

वसिष्ठो वामदेवश्च जाबालिरथ काश्यपः । विश्वामित्रो दीर्घतपा दुर्वासाश्च महातपाः ॥ २ ॥

पुलस्त्योऽपि तथा शक्तिर्भागवश्चैव वामनः । मार्कण्डेयश्च दीर्घायुर्मौद्गल्यश्च महायज्ञाः ॥ ३ ॥

गर्गश्च च्यवनश्चैव शतानन्दश्च धर्मवित् । भरद्वाजश्च तेजस्वी ह्यग्निपुत्रश्च सुप्रभः ॥ ४ ॥

नारदः पर्वतश्चैव गौतमश्च महायज्ञाः । कात्यायनः सुयज्ञश्च ह्यगस्त्यस्तपसां निधिः ॥ ५ ॥

एते चान्ये च बहवो मुनयः संशितव्रताः । राजानश्च नरव्याघ्राः सर्वे एव समागताः ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------------|---------------|-------------------|
| एते | பின்கண்டவர்களான | विश्वामित्रः | விச்வாமித்திரரும் |
| वसिष्ठः | வவலிஷ்டரும் | महातपाः | மஹாதபஸ்வியாகிய |
| वामदेवः च | வாமதேவரும் | दुर्वासाः च | தூர்வாஸரும் |
| जाबालिः अथ | ஜாபாலியும் | पुलस्त्यः अपि | புலஸ்தியரும் |
| काश्यपः | காச்யபரும் | शक्तिः तथा | சக்தியென்பவரும் |
| दीर्घतपाः | விடரமுயற்சியுடன் கடுந்தவம்புரிந்த | भार्गवः च | பார்க்கவரும் |
| | | वामनः एव | வாமனரும் |

| | |
|----------------|--------------------|
| वीर्वायुः | சிரஞ்சீவியான |
| साकंभेयः च | மார்க்கண்டேயரும் |
| मशयशाः | பெரும்புகழ் படைத்த |
| सौद्वल्यः च | மெளத்கல்யரும் |
| गर्गः च | கர்க்கரும் |
| श्ववनः च | சுவவனரும் |
| धर्मवित् | தருமவித்தான |
| शतानन्दः च | சதானந்தரும் |
| तेजस्वी | தேஜஸ்வியான |
| भरद्वाजः च | பரத்வாஜரும் |
| अग्निपुत्रः हि | அக்னிபுத்திரராகிய |
| सुप्रभः च | சுப்ரபரென்பவரும் |
| नारदः च | நாரதரும் |
| पर्वतः एव | பர்வதரும் |
| महायशाः | மஹாயசஸ்வியாகிய |

राक्षसाश्च महावीर्या वानराश्च महाबलाः । सर्वे एव समाजगुर्मुर्धात्मानः कुतूहलात् ॥७॥

| | |
|------------|--------------------|
| महावीर्याः | மஹாவீர்யவான்களாகிய |
| राक्षसाः च | ராக்ஷஸர்களும் |
| महाबलाः | மஹாபலிஷ்டர்களாகிய |
| वानराः च | வானரர்களும் |

| | |
|--------------|-------------------------------|
| गौतमः च | கௌதமரும் |
| काल्यायनः एव | கால்யாயனரும் |
| सुयज्ञः च | ஸுயஜரும் |
| तपसां निधिः | தபோநிதியாகும் |
| भगस्यः हि | அகஸ்தியரும் |
| भन्ये च | மற்றுமுள்ள |
| संशितव्रताः | சலியா விருதானுஷ்ட டானமுடைய |
| सुनयः | முனிவர்கள் |
| बहवः च | அவர்களில்லாத வேறு |
| नारदाश्रयः | புருஷோத்தமர்களான |
| राजानः च | அரசர்கள் |
| सर्वे एव | எல்லோரும் |
| समागताः | வந்துகூடினார்கள். |

| | |
|-------------|--|
| सर्वे | எல்லா |
| महाःमानः एव | மஹாத்மாக்களும் |
| कुतूहलात् | நடக்கப்போகிற விஷயத்தின் அதிசயத்தால் |
| समाजगुः | கும்பல் கும்பலாய் வந்துசேர்ந்தார்கள். |

क्षत्रिया ये च शूद्राश्च वैश्याश्चैव सहस्रशः । नानादेशगताश्चैव ब्राह्मणाः संशितव्रताः ॥
ज्ञाननिष्ठाः कर्मनिष्ठा योगनिष्ठास्तथाऽपरे । सीताशपथवांशार्थं सर्वे एव समागताः ॥९॥

| | |
|-----------------|--|
| सहस्रशः | ஆபிரபாயிரமாக |
| क्षत्रियाः च | கூத்திரியர்களும் |
| शूद्राः | சூத்திரர்கள் |
| ये च | எவர்களோ அவர்களும் |
| वैश्याः च | வைசியர்களும் |
| अपरे | மேற்சொல்லப்படாத இதர |
| संशितव्रताः च | { தடுமாறாத வரதானு ஷ்டானமுடையவர் களெனவும் |
| ज्ञाननिष्ठाः एव | தத்வக்ஞானத்தில் நிபுணர்களெனவும் |

| | |
|-------------------------|---|
| कर्मनिष्ठाः एव | வைதீகக்ரீயைகளில் நிபுணர்களெனவும் |
| योगनिष्ठाः } तथा } | மனதை யோகத்திலே யே செலுத்துபவர் களெனவும் |
| नानादेशगताः | { பலதேசங்களிலும் பிரஸித்திபெற்றவர் களாகிய |
| ब्राह्मणाः | பிராம்மணர்கள் |
| सर्वे एव | எல்லோரும் |
| सीताशपथ- वांशार्थं } | வீதை சபதம் செய் கிறதை கட்டபுலனாய்க் காண |
| समागताः | வந்துகூடினார்கள். |

तदा समागतं सर्वपद्मभूतमिवाचलम् । श्रुत्वा मुनिवरस्तूर्णं ससीतः समुपागतम् ॥ १० ॥

मुनिवरः முனிவர் பெருமான்
 ததா அப்பொழுது
 समागतं ஸபைகூடியிருப்பதை
 सर्व எல்லாம் [யும்
 अचलं நிச்சித்தமாய்
 अदमभूतं इव மலைபோலிருப்பதை
 யும்

श्रुत्वा கேட்டறிந் துகொண்டு
 तूर्णं விரைவில்
 ससीतः வீதையையும்கூட
 समुपागतम् அழைத்ததுக்கொண்டு
 தருளினார்.

तमृषिं पृष्ठतः सीता त्वन्वाच्छदवाञ्छुखी । कृताञ्जलिर्वाष्पगला कृत्वा रामं मनोगतम् ॥

सीता வீதை
 तं அந்த
 ऋषिं ரிஷிக்கு
 पृष्ठतः பின்னிடுக்கின்ற
 வளராய்
 अवाञ्छुखी தலைகுனிந்தவளராய்
 कृताञ्जलिः அஞ்சலிஹஸ்தையாய்
 रामं ஸ்ரீராமரை

मनोगतं மனதில் ஸர்வமு
 माय்
 कृत्वा தியானித்துக்கொண்டு
 तु அதனால்
 वाष्पगला ஆனந்தக்கண்ணீர்
 பெருக்குகின்றவளராய்
 अन्वाच्छत् கூடவே வந்துசேர்ந்
 தாள்.

दृष्ट्वा श्रुतिमिवायान्तीं ब्रह्माणमनुगामिनीम् । वालीकेः पृष्ठतः सीतां साधुवादो महानभूतः ॥

ब्रह्माणं பிரம்மதேவனை
 अनुगामिनीं பின்பற்றிக்கூடவேயி
 ருக்கும்
 श्रुतिं इव ச்ருதியைப்போலவே
 वालीकेः வால்மீகிகவானது
 पृष्ठतः பின்புறமாய்

आयान्तीं எழுந்தருளியிருக்கும்
 सीतां दृष्ट्वा வீதையைக் கண்டு
 महात् ஒரு பெரிய
 साधुवादः 'திவ்யம்' என்கிற
 கோஷமானது
 अभूत् உண்டாயிற்று.

ततो हलहलाशब्दः सर्वेषामेवमावभौ

ततः அப்பொழுது
 एवं அப்படியே
 सर्वेषां எல்லாருடையவும்

साधु रामेति केचित्तु साधु सीतेति चापरे ।

तत्र அங்கு
 प्रेक्षकाः விநோதத்தைப்பார்க்க
 வந்திருப்பவர்கள்
 केचित् சிலர்
 राम 'ஸ்ரீராம,
 साधु तु ஆனதுபோதமே'
 इति என்றும்
 अपरे வேறு சிலர்

॥ १३ ॥

हलहलाशब्दः 'கலகலவென' பல
 ரின் பேச்சு
 आवभौ ஏற்பட்டது.

उभावैव च तत्रान्ये प्रेक्षकाः सम्प्रचुकुशुः ॥

सीते 'வீதை,
 साधु च इति ஆனதுபோதமே'
 अन्ये மற்றவர்கள் [என்றும்
 उभौ 'இருவர்களே,
 एव च இதே போதமே'
 என்றும்
 सम्प्रचुकुशुः சொல்லியிகவும் சோக்
 முற்றனர்கள்.

ततो मध्ये जनौघस्य प्रविश्य मुनिपुङ्गवः । सीतासहायो वाल्मीकिरिति होवाच राघवम् ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------|----------|----------------------|
| ततः | அப்பொழுது | प्रविश्य | நேர் முகமாய் வந்து |
| सीतासहायः ह | வீதையை ஆதரித்த வரும் | राघवं | நின்றுகொண்டு |
| मुनिपुङ्गवः | முனிவர் பெருமானு | इति | ஸ்ரீராகவரைப்பார்த்து |
| वाल्मीकिः | வால்மீகி [மாகிய | उवाच | இப்படி |
| जनौघस्य | ஜனக்கூட்டத்தின் | | யாவருக்கும் நன்கு |
| मध्ये | நடுவில் | | விளங்கச்சொன்னார் : |

इयं दाशरथे सीता सुव्रता धर्मचारिणी । अपवादात्परित्यक्ता ममाश्रमसमीपतः ॥ १६ ॥

| | | | |
|------------|---|-------------|---------------------------------|
| दाशरथे | “ஹே தாசரதே! | मम | எனது |
| इयं | இதோயிருக்கும் | आश्रमसमीपतः | ஆசிராமத்திற்கு |
| सीता | சீதாதேவி | | அருகில் |
| सुव्रता | { மகாவிசேஷஉபாசனை யில் மனதாநாட்டிய வள் ; | अपवादात् | பழிச்சொற்களைக் கொண்டு |
| धर्मचारिणी | தருமத்தையே அனு ஷ்டிக்கிறவள். | परित्यक्ता | தனியாய் விட்டுவிடப் பட்டாள். |

लोकापवादभीतस्य तव राम महाव्रत । प्रत्ययं दास्यते सीता तदनुज्ञातुमर्हसि ॥ १७ ॥

| | | | |
|-----------|---|-----------|---------------------------------------|
| महाव्रत | “மஹாதருமானுஷ் டானமுடைய | प्रत्ययं | உன்மை இன்ன தென்பதை |
| राम | ஸ்ரீராம! | सीता | வீதாதேவியார் |
| लोकापवाद- | } லோகாபவாதங்களை யும் செவிக்கொண்டு கவலைப்படும் | दास्यते | இதோ வெளிப்படுத்த தியிருக்கிறாள் |
| भीतस्य | | तव | ஆதலால் செய்ய விடைகொ டுக்க |
| तव | தேவரீருக்கு | अनुज्ञातु | தேவரீர் திருவுள்ளம் கொள்ளவேண்டும். |
| | | अर्हसि | |

इमौ तु जानकीपुत्राबुभौ च यमजातकौ । सुतौ तवैव दुर्धर्षौ सत्यमेतद्वीमि ते ॥ १८ ॥

| | | | |
|---------|---|-----------|--------------------------------|
| इमौ तु | } “இவ்விருவர்களும் ஜானகியாரின் புத்தி ரர்கள். | सुतौ इव | குமாரர்கள். |
| जानकी- | | दुर्धर्षौ | திரஸ்கரிக்க இடமா காதவர்கள். |
| पुत्रौ | | ते | தேவரீருக்கு |
| उभौ च | இருவர்களும் | एतव | இதை |
| यमजातकौ | இரட்டையாய் பிறந்த வர்கள். | सत्यं | பிரமாணமாக |
| तव | தேவரீருடைய | अवीमि | நான் சொல்லுகிறேன். |

प्रचेतसोऽहं दशमः पुत्रो राघवनन्दन । न स्मराम्यनृतं वाक्यमिमौ तु तव पुत्रकौ ॥१९॥

राघवनन्दन "रा. கவநந்தன !
 अहं "நான்
 प्रचेतसः "வருணபகவானுடைய
 दशमः "பத்தாவது
 पुत्रः "புதல்வன்.
 अनृतं वाक्यं "பொய்மொழியை

न स्मरामि "நான் எண்ணியவ
 इमौ तु "இவ்விருவர்களும்
 तव "தேவரீரது
 पुत्रकौ "குமாரர்கள்.

बहुवर्षसहस्राणि तपश्चर्या मया कृता । तस्याः फलमुपाश्रीयामपापा यदि मैथिली ॥२०॥

बहुवर्षसहस्राणि "பல்லாயிரமாண்டுகள்
 मया "என்னால்
 तपश्चर्या "தவானுஷ்டானம்
 कृता "குறையின்றி முடிக்கப்
 "பட்டிருக்கிறது.
 मैथिली "மைதிலீதேவி

अपापा "தே. ஷத்திற்கு இட
 "மாகாதவளாய்
 यदि "இருந்தால்
 तस्याः "அவைகளின்
 फलं "பயனை
 उपाश्रीयाम् "நான் பெறுவேன்.

अहं पञ्चसु भूतेषु मनष्षष्टेषु राघव । विचिन्त्य सीतां शुद्धेति जग्राह वननिर्झरे ॥ २१ ॥

राघव "ஸ்ரீராகவ !
 अहं "நான்
 मनःषष्टेषु "மனதை ஆறுவதாக
 "உடைத்தான
 पञ्चसु भूतेषु "பஞ்சேந்திரிய விசார
 "ணைகளிலும்
 शुद्धा इति "பரிசுத்தையென

विचिन्त्य "ஆராய்ந்துணர்ந்து
 वननिर्झरे "ஆசிரமத்தின் பக்கத்
 "திலிருக்கிற ஆற்றண்
 "டையில்
 सीतां "வீ. தாதேவியை
 जग्राह "கண்டுபிடித்து
 "அழை
 "த்துப்போனேன்.

इयं शुद्धसमाचारा अपापा पतिदेवता । लोकापवादभीतस्य प्रत्ययं तव दास्यति ॥ २२ ॥

इयं "இவள்
 शुद्धसमाचारा { "அவளைப்போல் கற்பு
 "டையவள் வேறொரு
 "வனும்ல்லாதவள் ;
 पतिदेवता "கணவனையே தெய்வ
 "மாய்க்கொண்டவள் ;
 अपापा "அழுக்கில்லாத ஒழுக்
 "கமுடையவள் ;

लोकापवाद- } "லோகாபவாதங்களை
 भीतस्य } "செவிக்கொண்டு கவ
 "லைப்படும்
 तव "தேவரீருக்கு
 प्रत्ययं "உண்மை இன்னதென்
 "பதை
 दास्यति "இதோ அருளிச்செய்
 "வாள்."

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे षण्णवतितमः सर्गः ॥



सप्तमवतितमः सर्गः—தொண்ணூற்றேழாவது ஸர்க்கம். || ௨௩ ||

सीताया रसातलप्रवेशः—ஸீதாதேவி பா தாளத்தில் புதுவது.

वाल्मीकिनैवमुक्तस्तु राघवः प्रत्यभाषत । प्राञ्जलिर्जगतो मध्ये दृष्ट्वा तां वरवर्णिनीम् ॥

| | | | |
|------------|-------------------|------------|---------------------|
| वाल्मीकिना | வால்மீகிமுனிவரால் | मध्ये तु | நீதிநெறி பிறழாது |
| एवं | இவ்வாறு | | நடக்கும் விஷயத்தில் |
| उक्तः | சொல்லப்பட்டதற்கு | तां | அந்த |
| | திருச்செவிசாய்த்த | वरवर्णिनीं | ஸ்தீரத்தனத்தை |
| राघवः | ரூராகவர் | दृष्ट्वा | கடாக்கித்தவண்ணமே |
| प्राञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸதராகி | प्रत्यभाषत | இதை பதிலாய் அரு |
| जगतः | உலகுக்கு | | ளிச்செய்தார்: |

एवमेतन्महाभाग यथा वदसि धर्मवित् । प्रत्ययस्तु मम ब्रह्मंस्तव वाक्पैरकल्मषैः ॥ २ ॥

| | | | |
|----------|--|----------|-------------------------------|
| महाभाग | “ தரீலோகப்பிரவீதம் திபெற்ற | एवं | வாஸ்தவமே. |
| धर्मवित् | தர்மவீத்தே! | तव | தேவரீரது |
| ब्रह्मन् | வேதவீத்தே! | अकल्मषैः | நிஷ்கல்மஷமான |
| वदसि | தேவரீர் திருவாய்மலர் ந்தருளியிருக்கிறது | वाक्पैः | வார்த்தைகளால் |
| यथा | எதுவோ | मम | எனக்கு |
| एतेव | அது | तु | இப்போதே |
| | | प्रत्ययः | நம்பிக்கையுண்டாகி விட்டது. |

प्रत्ययस्तु पुरा वृत्तो वैदेह्याः सुरसन्निधौ । लोकापवादो बलवान्येन त्यक्ता हि मैथिली ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------------|-----------|---|
| पुरा | “ முன்னம் | लोकापवादः | லோகாபவாதமானது |
| सुरसन्निधौ | தேவதைகளுடைய ஸன்னிதானத்தில் | बलवान् | விசேஷமெனப் பாரா ட்டவேண்டியதாயிரு ந்தது. |
| वैदेह्याः | வைதேஹிக்கு | येन हि | அக்காரணமொன்று |
| वृत्तः | நடைபெற்ற காரியமா னது | मैथिली | மைதிலி [லேயே |
| प्रत्ययः | மகா பிரபலமாயிருந் தன்றாலும் [தது. | त्यक्ता | தள்ளிவைக்கப்பட் டாள். |

सेयं लोकभयाद्ब्रह्मन्पापेल्भिजानता । परित्यक्ता मया सीता तद्ब्रवान्शन्तुमर्हति ॥ ४ ॥

| | | | |
|----------|-------------------|--------------------|--------------------------------------|
| ब्रह्मन् | “ஹே ஸ்வாமி! | लोकभयात् | உலகுக்கு வரும் கேட் டைப் பெரிதாய் |
| अपापा | பாபத்திற்கிடமாகாத | | பாராததால் |
| इति | என்று [வள் | परित्यक्ता | கைவிடப்பட்டாள். |
| अभिजावता | நிஸ்ஸந்தேகமாய் | भवान् | தேவரீர் |
| मया | என்னை [அறிந்தும் | तव क्षन्तुं अर्हति | அதைப் பொறுத்தரு ளவேண்டும். |
| सा | அந்த | | |
| इयं सीता | இந்த ஸீதை | | |

जानामि चेमौ पुत्रौ मे यमजातौ कुशीलवौ । शुद्धायां जगतो मध्ये मैथिल्यां प्रीतिरस्तु मे ॥

ஹமீ
குசீலவீ
மே
புத்ரீ
யமஜாதீ ச
ஜானாமி
“இதோ இருக்கின்ற
குசனும் லவனும்
என்னுடைய
புதல்வர்களெனவும்
ஒரே காலத்தில் இரட்
டையாய்ப் பிறந்தவர்
களெனவும்
நான் இப்பொழுது
அறிந்துகொண்டேன்.

மீதில்யா
சுத்தியா
ஜாத:
மய்யே
மே
பிரீதி:
அஸ்து
மைதிலி எப்பொழு
தும்
தர்மசிர்தனை யுடையவ
உலகுக்குள்ளென்பதில்
நீதிநெறி பிறழாது
நடக்கும் விஷயத்தில்
எனக்கு
மனத்ருப்தி
ஏற்படும்.”

अभिप्रायं तु विज्ञाय रामस्य सुरसत्तमाः । पितामहं पुरस्कृत्य सर्वे एव समागताः ॥६॥

சுரசத்தமா:
சर्वे एव
तु
रामस्य
अभिप्रायं
தேவோத்தமர்கள்
எல்லோருமே
இது விஷயத்தில்
ஸ்ரீராமரின்
திருவுள்ளத்தை

विज्ञाय
पितामहं
पुरस्कृत्य
समागताः
உள்ளபடி. ஞானதிரு
ஷ்டியாலறிந்துகொ
பிரம்மதேவரை [ண்டு
முன்னிட்ட
அங்குவந்துசேர்ந்தார்
கள்.

आदित्या वसवो रुद्रा ह्यश्विनौ समरुद्रणाः । गन्धर्वाप्सरसश्चैव सर्वे एव समागताः ॥७॥
साध्याश्च विश्वे देवाश्च सर्वे च परमर्षेयः । नागाः सुपर्णाः सिद्धाश्च ते सर्वे हृष्टमानसाः ॥

ते
आदित्याः
वसवः
रुद्राः
समरुद्रणाः
सर्वे च
अश्विनौ हि
गन्धर्वाप्सरसः
सर्वे एव
साध्याः च
विश्वे देवाः च
अर्ந்த
ஆதித்தியர்கள்
வசுக்கள்
ருத்திரர்கள்
மருத்தகணங்களோடு
எல்லோரும் [கூடிய
இரண்டு அச்வினீதே
வர்கள்
கந்தர்வர்கள் அப்ஸர
எல்லோரும் [ஸூக்கள்
ஸாத்தியதேவர்களும்
விச்வதேவர்களும்

परमर्षेयः
सर्वे एव
नागाः च
सुपर्णाः
सिद्धाः च
सर्वे हि
हृष्टमानसाः
ते सर्वे
समागताः
தேவாரிஷ்டிகளும்
எல்லோரும்
நாகர்களும்
ஸூபர்ணர்களும்
ஸித்தர்களும்
எல்லோருமே
பெரிய காரியத்தை
எண்ணி உடம்பு சிலிர
க்கும்படி நெஞ்சில்
நடுக்கமுற்றவர்களாய்
அவர்கள் எல்லோரும்
அங்கு வந்துகூடியனர்.

दृष्ट्वा देवानृषींश्चैव राघवः पुनरब्रवीत् । प्रत्ययो मे सुरश्रेष्ठा ऋषिवाक्यैरकल्पैः ॥ ९ ॥

ரஹவ:
தேவாந்
ऋषीन् एव
दृष्ट्वा
पुनः
अब्रवीत्
ஸ்ரீராகவர்
தேவர்களையும்
ரிஷிகளையும்
பார்த்து
பின்னுமொருதரம்
இதை மொழிந்தார்:

सुरश्रेष्ठाः
अकल्पैः
ऋषिवाक्यैः
मे
प्रत्ययः
“ஹே தேவோத்தமர்
களே!
நிஷ்கல்மஷ்டமான
முனிவரின் வார்த்தை
எனக்கு [களால்
நம்பிக்கையுண்டாகி
விட்டது.

शुद्धायां जगतो मध्ये वैदेह्यां प्रीतिरस्तु मे

वैदेह्यां “வைதேஹி
எப்பொழுதும் தர்ம
शुद्धायां { சிந்தனையுடையவ
என்பதில்
जगतः உலகுக்கு

॥ १० ॥

मध्ये நீதிநெறி பிறழாத
நடக்கும் விஷயத்தில்
मे எனக்கு
प्रीतिः மனத்திருப்தி
अस्तु ஏற்பட்டடும்.”

ततो वायुः शुभः पुण्यो दिव्यगन्धो मनोरमः । तज्जनौघं सुरश्रेष्ठो ह्लादयामास सर्वतः ॥

सुरश्रेष्ठः தேவோத்தமராகிய
वायुः வாயுதேவர்
ततः அப்பொழுது
शुभः மங்களகரமாய்
पुण्यः பரிசுத்தமாய்
मनोरमः மனோஹரமாய்

दिव्यगन्धः திவ்யமான பரிமளத்
துடனிருக்கிறவராய்
तत् जनौघं அந்த ஜனசங்கத்தை
सर्वतः எல்லா திக்குகளிலும்
ह्लादयामास ஆனந்திக்குமாறு
செய்தனர்.

तद्भ्रुतमिवाचिन्त्यं निरैक्षन्त समागताः । मानवाः सर्वराष्ट्रभ्यः पूर्वं कृतयुगे यथा ॥१२॥

सर्वराष्ट्रभ्यः ஸகல தேசங்களினின்
மும்
समागताः வந்துகூடியிருக்கும்
मानवाः மானிடர்கள்
तत् அதை
पूर्वं பூர்வத்தில்

कृतयुगे கிருதயுகத்தில்
यथा इव போலவே
अद्भुतं அமரானுஷ்யமாயிருப்
பதாயும்
अचिन्त्यं எதிர்பாராதிருக்கிற
தாகவும்
निरैक्षन्त எண்ணினார்கள்.

सर्वान्समागतान्दृष्ट्वा सीता काषायवासिनी । अब्रवीत्प्राञ्जलिर्वाक्यमथोद्विष्टिरवाञ्जुषी ॥

काषायवासिनी { காஷாயச்சேலையை
தரித்துக்கொண்டிரு
ந்தவரும்
अवाङ्मुषी { தலைகுனிந்து
தரையை நோக்கிய
अथोद्विष्टिः { பார்வையுடனிருந்
தவருமாகிய
सीता வீரதாதேவிபார்

समागतान् சபையில் வந்துகூடிய
ருக்கும்
सर्वान् அனைவரையும்
दृष्ट्वा உத்தேசித்து
प्राञ्जलिः அஞ்சலிஹஸ்தராசிக்
वाक्यं இந்த பிரமாணத்தை
अब्रवीत् சாற்றி அருளினார்.

यथाऽहं राघवादन्यं मनसाऽपि न चिन्तये । तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति ॥१४॥

अहं “நான்
मनसा மனச்சாட்சியுடன்
राघवात् பூரீராகவரொருவ
ரைத் தவிர
अन्यं अपि வேறு எதற்கும்
न चिन्तये சிந்தையில் இடம்
கொடாதிருந்தேன்

यथा तथा என்பது ஸத்தியமா
னால்
माधवी देवी மாதவருக்கு பத்னி
யான பூமாதேவி
मे எனக்கு
विवरं दातुं இடத்தைக் கொடுக்க
अर्हति கடவள்.

मनसा कर्मणा वाचा यथा रामं समर्चये । तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति ॥१५॥

| | |
|---------|-------------------------------|
| मनसा | “ மனதா லும் |
| कर्मणा | செய்கையா லும் |
| वाचा | வாக்கா லும் |
| रामं | ஸ்ரீராமரையே |
| समर्चये | எப்போதும் சூஜித்து வந்தேன் |
| यथा तथा | என்பது ஸத்யமா |

| | |
|--------|-------------------------|
| माधवी | மாதவருக்கு பத்னி யான |
| देवी | ஸ்ரீமாதேவி |
| मे | எனக்கு |
| विवरं | இடத்தை |
| दातुं | கொடுக்க |
| अर्हति | கடவள். |

यथैतत्सत्यमुक्तं मे वेद्मि रामात्परं न च । तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति ॥१६॥

| | |
|----------|-----------------------------|
| रामात् | “ ஸ்ரீராமரைக்காட்டி லும் |
| परं च | மேலானதொன்றை யும் |
| वेद्मि न | நான் அறிந்திலேன் |
| एतत् | இந்த [என்ற |
| मे उक्तं | எனது மொழி |

| | |
|--------------|--------------------|
| सत्यं | சத்தியம் |
| यथा तथा | என்கிறபகூத்தில் |
| माधवी देवी | மாதவரின்பத்தனியான |
| मे | எனக்கு [ஸ்ரீமாதேவி |
| विवरं | இடத்தை |
| दातुं अर्हति | கொடுக்கக் கடவள்”. |

तथा शपन्त्यां वैदेह्यां प्रादुरासीत्तद्भ्रुवाम् । भूतलादुत्थितं दिव्यं सिंहासनमनुत्तमम् ॥१७॥
ध्रियमाणं शिरोभिस्तु नागैरमितविक्रमैः । दिव्यं दिव्येन वपुषा दिव्यरत्नविभूषितैः ॥

| | |
|-----------|-------------------------|
| तत् | அப்பொழுது |
| तथा | இவ்வண்ணம் |
| वैदेह्यां | வைதேஹியார் |
| शपन्त्यां | சபதம் செய்தவுடன் |
| अद्भुतं | ஒரு தேவாதீன சம் பவம் |

| | |
|---------|----------------------------|
| नागैः | நாகங்களால் |
| दिव्येन | சோதிமயமான |
| वपुषा | காட்சியால் |
| दिव्यं | கண்களைக்கவரும் வண்ணமாய் |

| | |
|--------------|---|
| प्रादुरासीत् | { யாவரும் பிரத்யகூத் தில் கண்டதாய் உண்டாயிற்று. |
|--------------|---|

| | |
|-----------|-----------------------------|
| ध्रियमाणं | தாங்கப்பெற்றதும் |
| अनुत्तमं | ஒப்புயர்வு இல்லாத தும் |
| दिव्यं | தேவதைகளுக்கே ஏற்றதுமாகிய |

| | |
|---------------------------|---|
| अमितविक्रमैः | அமிதமான ஆற்ற லுள்ளனவும் |
| दिव्यरत्न- विभूषितैः } | திவ்யரத்தினங்களால் அலங்கரிக்கப்பெற்ற |
| शिरोभिः | முடிகளால் |

| | |
|----------|----------------|
| सिंहासनं | சிங்காசனமொன்று |
| भूतलात् | பூமியினின்று |
| तु | இவருக்கென்று |
| उत्थितम् | வெளியப்பட்டது. |

तस्मिन्स्तु धरणी देवी बाहुभ्यां गृह्य मैथिलीम् । स्वागतेनाभिनन्द्यैनामासने चोपवेशयत् ॥

| | |
|--------------|----------------------------|
| धरणी देवी | பூமிதேவி |
| एनां मैथिलीं | இந்த மைதிலியாரை |
| बाहुभ्यां च | இரு திருக்காங்க ளா லும் |
| गृह्य | அணைத்தெடுத்தது |

| | |
|--------------|--------------------------------------|
| स्वागतेन तु | நன்மனத்துடன் ஆத ரித்து அழைப்பதோடு |
| अभिनन्द्य | போற்றிப்புகழ்ந்து |
| तस्मिन् आसने | அந்த சிங்காதனத்தில் |
| उपवेशयत् | உட்காரவைத்தாள். |

तामासनगतां दृष्ट्वा प्रविशन्तीं रसातलम् । पुष्पवृष्टिरविच्छिन्ना दिव्या सीतामवाकिरत् ॥

तां अर्त्त
सीतां वल्लीतारिप्राட்டியாரை
आसनगतां சிங்காதனத்தில் வீற்றிருந்தவளாய்
रसातलं பூகலத்தினுள்

प्रविशन्तीं பிரவேசிக்கின்ற
दृष्ट्वा கண்டதும் [வளாய்
दिव्या மனுவடியா தீதமான
पुष्पवृष्टिः பூமாரி
अविच्छिन्ना ஓயாது
अवाकिरत् பொழிந்தது.

साधुकारश्च सुमहान्देवानां सहस्रोत्थितः । साधु साध्विति वै सीते यस्यास्ते शीलमीदृशम् ॥

सीते “வலீதே!
ते தேவரீருடைய
ईदृशं இப்படிப்பட்டதாகிய
शीलं சீலம்
यस्याः वै வேறு யாருக்குண்டு?
साधु பதிவரதாமகிமைபை
वेवளிப்படுத்தினீர்.
साधु च நன்று

इति இவ்விதமான
देवानां தேவர்களுடைய
सुमहान् மஹா அற்புதமான
साधुकारः புகழ்மொழியானது
सहसा ஏககாலத்தில்
उत्थितः உரத்த த்வனியில்
உண்டாயிற்று.

एवं बहुविधा वाचो ह्यन्तरिक्षगताः सुराः । व्याजहृष्टमनसो दृष्ट्वा सीताप्रवेशनम् ॥२२॥

अन्तरिक्षगताः ஆகாசத்தில் வந்து
கூடியிருந்த
सुराः விண்ணவர்கள்
सीताप्रवेशनं { வலீதாரிபிராட்டியார்
அழைத்துக்கொண்டு
போகப்படுவதை
दृष्ट्वा கண்டு

हृष्टमनसः हि உள்ளம் பூரித்தவர்
களாகி
एवं மேற்கண்டவண்
बहुविधाः பலவாறான [ணமாய்
वाचः மொழிகளை
व्याजहुः உரத்த தொனியில்
கோஷித்தார்கள்.

यज्ञवाटगताश्चापि मुनयः सर्वे एव ते । राजानश्च नरव्याघ्रा विस्मयान्नोपरेमिरे ॥ २३ ॥

अन्तरिक्षे च भूमौ च सर्वे स्थावरजङ्गमाः । दानवाश्च महाकायाः पाताले पन्नगाधिपाः ॥

ते अर्त्त
महाकायाः ஸ்தூலித்த
दानवाः च தானவர்களும்த
पन्नगाधिपाः பன்னகோத்தமர்களும்த
अन्तरिक्षे ஆகாசத்திலும்
भूमौ பூமியிலும்
पाताले च பாதாளத்திலும்
स्थावरजङ्गमाः च ஸ்தாவரங்களும்
ജங்கமங்களும்
सर्वे एव எல்லாமும்

यज्ञवाटगताः யாக்கசாலையில் வந்து
கூடியிருந்த
मुनयः च முனிவர்களும்
राजानः च மன்னவர்களும்
नरव्याघ्राः अपि புருஷோத்தமர்களும்த
सर्वे எல்லோரும்
विस्मयात् யாதும் தோன்றாத
தால்
उपरेमिरे न மன அமைதி பெற
வில்லை.

केचिद्विनेदुः संहृष्टाः केचिद्ध्यानपरायणाः । केचिद्रामं निरीक्षन्ते केचित्सीतामचेतनाः ॥

| | | | |
|--------------|---|-------------|---------------------|
| केचित् | சிலர் | अचेतनाः | மெய்மறந்தவர்களாய் |
| संहृष्टाः | உள்ளம்பூரித்தவர் களாய் | केचित् | சிலர் |
| विनेदुः | ஆனந்தக்கூச்சலிட் | रामं | ஸ்ரீராமரையும் |
| केचित् | சிலர் டனர்; | केचित् | சிலர் |
| ध्यानपरायणाः | { பரமாத்மாவை தியா னிப்பதிலேயே இருந்துவிட்டார்கள்; | सीतां | வீதையையும் |
| | | निरीक्षन्ते | திரானம்செய்தார்கள். |

सीताप्रवेशनं दृष्ट्वा तेषामासीत्समागमः । तन्मुहूर्तेमिवात्यर्थं समं संमोहितं जगत् ॥ २६ ॥

| | | | |
|--------------|--|-------------|-------------------------------|
| सीताप्रवेशनं | { வீதாபிராட்டியார் அழைத்துப்போகப் படுவதை | तत् | அந்த |
| दृष्ट्वा | பார்த்து | जगत् | உலகம் |
| तेषां | அவர்களுக்கு | समं | முழுமையும் |
| समागमः | சரியான ஓரானமா | मुहूर्ते इव | ஒரு முகூர்த்தகாலம் |
| आसीत् | உண்டாயிற்று. [எனது | अत्यर्थं | மிக [வரைக்கும் |
| | | सम्मोहितम् | ஏக்கம்பிடித்துக் கிடந்தது. |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे सप्तनवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23712



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 2988

अष्टनवतितमः सर्गः—தோண்ணூற்றேட்டாவது ஸர்க்கம். ॥ २८ ॥

श्रीरामक्रोधशमनम्—ஸ்ரீராமரது கோபத்தைத் தணியச்செய்வது.

रसातलं प्रविष्टायां वैदेह्यां सर्ववानराः । चुकुशुः साधु साध्वीति मुनयो रामसन्निधौ ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------|------------|--|
| वैदेह्यां | வைதேவியார் | रामसन्निधौ | ஸ்ரீராமரது ஸன்னி தானத்தில் |
| रसातलं | ரஸாதலத்தில் | साध्वी | { 'பதிவரதாமஹிமை கொண்டவர் நீர் ஒரு வரே! |
| प्रविष्टायां | புகுந்த பிறகு | साधु इति | நன்று என்று |
| मुनयः | முனிவர்களுந் | चुकुशुः | கூச்சலிட்டார்கள். |
| सर्ववानराः | வானரர்களெல் லோரும் | | |

दण्डकाष्ठमवष्टभ्य बाष्पव्याकुलितेक्षणः । अवाक्छिरा दीनमना रामो ह्यासीत्सुदुःखितः॥

| | | | |
|------------|---|------------------|---|
| रामः हि | ஸ்ரீராமரும் | बाष्प- | } கண்ணீரால் கலக்க முற்ற கண்களையு டையவராய் |
| दण्डकाष्ठं | { யாகதீகைப்பெற்றவர் வைத்திருக்கும் அத் திமரக்கொம்பை | व्याकुलितेक्षणः) | |
| अवष्टभ्य | பூமியில் ஊன்றி | दीनमनाः | மனம் சோர்ந்து |
| सुदुःखितः | பரமதுக்கப்படுகின்ற வராய் | अवाक्छिराः | பூமியைப்பார்த்தவண் ணமேயிருப்பவராய் |
| | | आसीत् | ஆயினர். |

स रुदित्वा चिरं कालं बहुशो वाष्पमुत्सृजन् । क्रोधशोकसमाविष्टो रामो वचनमब्रवीत् ॥

ராம: ஸ்ரீராமர்
 क्रोधशोक- } கோபமும், சோகமும்
 समाविष्ट: } மேலிட்டவராகி
 बहुश: மிக்க
 वाष्पं கண்ணீரை
 उत्सृजन् பெருக்கினார்.

ச: அவர்
 चिरं कालं வெகுநேரம்
 रुदि:वा அலறி அழுதுவிட்டு
 वचनं இந்த மொழியை
 अब्रवीत् திருவாய்மலர்ந்தருளி
 னார்:

अभूतपूर्वं शोकं मे मनः स्मष्टुमिवेच्छति । पश्यतो मे यथा नष्टा सीता श्रीरिव रूपिणी ॥

श्री: “ மஹாலக்ஷ்மி
 रूपिणी इव ரூபமெடுத்துவந்தது
 போன்ற
 सीता வலீதை
 मे நான்
 पश्यतः பார்த்துக்கொண்டிருக்கும்பொழுதே
 नष्टा மறைந்துவிட்டாள்
 यथा என்பதாலேற்பட்ட

अभूतपूर्वं இதுவரையில் என்று
 முண்டாகாத
 शोकं சோகத்தால்
 मे எனது
 मनः நெஞ்சம்
 इव முற்றிலும்
 स्मष्टुं பாழடைய
 इच्छति ஏற்பட்டுவிட்டது.

साद्दर्शनं पुरा सीता लङ्कापारे महोदधेः । ततश्चापि मया नीता किं पुनर्वसुधातलात् ॥

पुरा “ முன்னம்
 सीता வலீதை
 महोदधे: நெடுங்கடலின்
 लङ्कापारे இலங்கைக் கரையில்
 अदर्शनं தப்பிப்போய்விட
 सा அவள் [நேர்ந்தது.
 मया என்னால்

ततः च அவ்விடத்திலிருந்தே
 नीता மீட்டுக்கொண்டு
 वरப்பட்டாள்.
 अपि அப்படியிருக்க
 वसुधातलात् பூமியினின்று
 என்பது
 किं पुनः ஒரு பெரிய காரியமா?

वसुधे देवि भवति सीता निर्यात्यतां मम । दर्शयिष्यामि वा रोषं यथा मामवगच्छसि ॥

भवति “ பெருமாட்டியாகிய
 वसुधे देवि ஹே பூமாதேவி!
 सीता வலீதை
 मम எனக்கு
 निर्यात्यतां திரும்பிக் கொண்டு வந்து
 விடப்பட்டும்.

वा அப்படியில்லை
 रोषं ரோஷத்தை [என்றால்
 दर्शयिष्यामि நான் வெளியிடுவேன்.
 यथा அப்படியாகில்
 मां என்னை
 अवगच्छसि நீ உள்ளபடி தெரிந்து
 கொள்வாய்.

कामं श्वश्रूममैव त्वं त्वत्सकाशाद्धि मैथिली । कर्षता हलहस्तेन जनकेनोद्धता पुरा ॥७॥

मैथिली “ மைதிலி
 पुरा பூர்வம்
 हलहस्तेन கலப்பையைக் கைக்
 கொண்டு

कर्षता உழுதுகொண்டிருந்த
 जनकेन ஜனகரால்
 त्वत्सकाशात् உன்னிடத்தினின்று

उद्धृता { பிரத்தியேகமரக்கப்
பட்டு அடையப்பட்
டாள்
हि என்கிறபடியால்
त्वं एव நீதான்

मन எனது
शशू: மாயியார் என்று
कामस् { பாவராலும் ஒப்புக்
கொள்ளப்பட்டிருக்
கிறது.

तस्मान्निर्घ्रात्यतां सीता विवरं वा प्रयच्छ मे । पाताले नाकपृष्ठे वा वसेयं सहितस्तथा ॥

तस्मात् “ஆதலால்
सीता வலிதை
निर्घ्रात्यतां திரும்பிக்கொண்டு
मे வந்து விடப்பட்டும்.
विवरं वा எனக்கு
ஒரிடத்தையாவது

प्रयच्छ நீ தந்தருளவேண்டும்.
पाताले பாதாளத்திலோ
नाकपृष्ठे वा ஸ்வர்க்கத்திலோ
तथा அவனோடு
सहित: சேர்ந்திருப்பவனும்
वसेयस् நான் வாஸம் செய்தே
திருவேன்.

आनय त्वं हि तां सीतां मत्तोऽहं मैथिलीकृते । न मे दास्यसि चेत्सीतां यथारूपां महीतले ॥

सपर्वतवनां कृत्स्नां विधमिष्यामि ते स्थितिम् । नाशयिष्याम्यहं भूमिं सर्वमापो भवत्विह ॥

त्वं हि “நீயே
तां सीतां அந்த வலிதையை
आनय கொண்டுவந்து
சேர்த்துவிடு.
मैथिलीकृते மைதிலியின் விஷயத்
अहं நான் [தில்
मत्त: வெறிபிடித்தவன்.
महीतले பூதலத்தில்
यथारूपां { எந்த ரூபத்துடனிரு
ந்தாலோ அதே ரூப
முடையவளாக
सीतां வலிதையை
मे எனக்கு
दास्यसि நீ திருப்பி ஒப்பிவிட்
து விடவேண்டும்;

न चेत् அப்படிச் செய்யா
விட்டால்
ते உனது
स्थितिं நிலையை
विधमिष्यामि குலைத்துவிடுவேன்.
इह இதுவிஷயத்தில்
अहं நான்
सपर्वतवनां பர்வதங்கனையும் வன
ங்கனையுமுள்ளிட்ட
भूमिं பூமி
कृत्स्नां எல்லாவற்றையும்
नाशयिष्यामि அழித்துவிடுவேன்.
सर्वं எல்லாமும்
आप: ஜலமயமாய்
भवतु ஆகிவிட்டும்.”

एवं ब्रुवाणे काकुत्स्थे क्रोधशोकसमन्विते । ब्रह्मा सुरगणैः सार्धमुवाच रघुनन्दनम् ॥११॥

काकुत्स्थे काकुத்தர்
क्रोधशोक- } கோபமும் சோகமும்
समन्विते } மேலிட்டவராய்
एवं இவ்வண்ணம்
ब्रुवाणे மொழிந்ததும்
ब्रह्मा பிரம்மதேவர்

सुरगणैः தேவகணங்களோடும்
सार्धं கூடி
रघुनन्दनं ரகுந்தனரைப்
பார்ந்து
उवाच திருவாய்மலர்ந்தருளி
னார்:

राम राम न सन्तापं कर्तुमर्हसि सुव्रत । स्मर त्वं पूर्वकं भावं मन्त्रं चाभिप्रकर्शन ॥१२॥

| | | | |
|------------|--|-----------|------------------------------------|
| राम | { “ஸகலருக்கும் நேத் ரோத்ஸவமாய் விளங்குகிறவரும் | सन्तापं | கோபத்தை |
| अभिलक्ष्णं | { அபாரதப்பட்டவர் களுக்கு தீயென விளங்குகிறவரும் | कर्तुं | பாராட்ட |
| सुव्रत | { தேவதைகளுக்கு வாக்களித்தவண்ண மே செய்துமுடித்த வருமாகிய | न अर्हसि | திருவுள்ளன்கொள்ள லாகாது. |
| राम | शुक्राणाम्! | त्वं | தேவரீர் |
| | | भावं | பூர்வஸ்வபாவத்தை யும் |
| | | पूर्वकं | முந்தியே |
| | | मन्त्रं च | வாக்களிக்கப்பட்ட ஸங்கேதத்தையும் |
| | | स्मर | நினைத்துக்கொள்க. |

न खलु त्वां महाबाहो स्मारयेयमनुत्तमम् । इमं मुहूर्तं दुर्धर्ष स्मर त्वं जन्म वैष्णवम् ॥

| | | | |
|-----------------|---|--------------|--------------------------|
| दुर्धर्ष | “மனோவாக்குக்கு எட்டாத | इमं | இந்த |
| महाबाहो | ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணுவே! மேம்பட்டவர் எவ ருமில்லாத தேவரீ ருக்கு | मुहूर्तं | சமயத்தில் |
| अनुत्तमं | { நான் நினைப்பூட்ட லாமோ? | त्वं | தேவரீர் |
| स्मारयेयं न खलु | | जन्म वैष्णवं | ஆதிவிஷ்ணு ஸ்வரூ பத்தை |
| | | स्मर | நினைத்துக்கொள்க. |

सीता हि विमला साध्वी तव पूर्वपरायणा । नागलोकं सुखं प्रायात्चदाश्रयतपोबलात् ॥

| | | | |
|-------------|--|--------------------------|-----------------------------------|
| विमला | “மாதில்லாதவரும் நிர்ணயிக்கப்பட்ட அசஞ்சலபக்தியுடை யவரும் | सीता | வீதாபிராட்டியார் |
| पूर्वपरायणा | { தேவரீருடைய தருமபத்தினியுமாகிய | त्वदाश्रय- तपोबलात् } | தேவரீரை ஆசிரயித்த தபோமகிமையால் |
| तव | | नागलोकं | நாகலோகத்திற்கு |
| साध्वी हि | | सुखं | இஷ்டபூர்வமாய் |
| | | प्रायात् | போயிருக்கிறார். |

स्वर्गे ते सङ्गमो भूयो भविष्यति न संशयः । अस्मिस्तु परिषन्मध्ये यद्भूमीमि निबोध तत् ॥

| | | | |
|----------|---|-------------|---------------------|
| भूयः | “இனிமேலும் தேவரீரது | परिषन्मध्ये | சபைநடுவில் |
| ते | சங்கமமானது வைகுண்டத்தில் உண்டாகும். | तु | இப்பொழுது |
| सङ्गमः | | यत् | எதை |
| स्वर्गे | | भूमीमि | விண்ணப்பம் செய் |
| भविष्यति | | तत् | அதற்கு [கிறேனோ |
| न संशयः | | निबोध | திருச்செவி சாய்க்க. |
| अस्मिन् | இந்த [இல்லை. | | |

एतदेव हि काव्यं ते काव्यानामुत्तमं श्रुतम् । सर्वं विस्तरतो राम व्याख्यास्यति न संशयः॥

| | | | |
|-----------------------------|--|--|--|
| काव्यानां उत्तमं | “காவ்யங்களில் ஆதிமானதும் | सर्वं विस्तरतः | எல்லாவற்றையும் எதொன்றையும் |
| श्रुतं एव | { எழுதப்பட்டாமல் வாய் மொழியாக இருக் கிறதான | व्याख्यास्यति | விடாமல் நினைப்பூட்டப்போகி றது ; |
| एतत् काव्यं राम ते हि | | இந்த காவ்யமானது ஸ்ரீராம! தேவரீருக்கும் கூட | न संशयः இதற்குச் சந்தேகம் இல்லை. |

जन्मप्रभृति ते वीर सुखदुःखोपसेवनम् । भविष्यत्युत्तरं चेह सर्वं वाल्मीकिना कृतम् ॥

| | | | |
|--------------------------|--|--|--|
| वीर ते जन्मप्रभृति | “ஸ்ரீமகாவிஷ்ணுவே, தேவரீருடைய சிருவவதாரம் | उत्तरं भविष्यति सर्वं इह च वाल्मीकिना कृतम् | இனிமேல் நடக்கப்போகிறதும் எல்லாமும் இப்போதே வால்மீகிமஹர்ஷியால் வர்ணிக்கப்பட்டிருக் கிறது. |
| सुखदुःखोप- सेवनं | } சுகதுக்கங்களை ஸதா விஷயங்களாயுடை யதும் | | |

आदिकाव्यमिदं राम त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम् । न ह्यन्योऽर्हति काव्यानां यशोभाप्राधवावृते॥

| | | | |
|--|---|--|--|
| काव्यानां यशोभाक् | “காவ்யங்களுடைய புஜாரஹரான நாய கன் | राम इदं आदिकाव्यं सर्वं ऽवयि प्रतिष्ठितम् | ஸ்ரீராம! இந்த ஆதிகாவ்யம் முழுமையும் தேவரீர் விஷயமாய் ஏற்பட்டிருக்கிறது. |
| राघवात् ऋते अन्यः अर्हति न हि | ஸ்ரீராகவரைத்தவிர மற்றெவரும் ஆகமுடியாது என்கிறபடியால் | | |

श्रुतं ते पूर्वमेतद्धि मया सर्वं सुरैः सह । दिव्यमद्भुतरूपं च सत्यवाक्यमनाद्यतम् ॥१९॥

| | | | |
|-------------------------|---|---|---|
| एतत् ते अनाद्युतं | “இது தேவரீரைப்பற்றியது. வித்தைக்குறைவால் விளையும். தேவ ரஹிதமானது. | अद्भुतरूपं हि सर्वं सुरैः सह मया पूर्वं श्रुतम् | உக்கிருஷ்டமானது. என்கிறபடியால் முழுமையும் தேவர்களோடு கூட என்றால் முன்னமேயே கேட்கப்பட்டாய் விட்டது. |
| सत्यवाक्यं दिव्यं च | சத்தியமான மொழி களையுடையது. தெய்வத்தன்மையு டையதாய் | | |

स त्वं पुरुषशार्दूल धर्मेण सुसमाहितः । शेषं भविष्यं काकुत्स्थ काव्यं रामायणं शृणु ॥

| | | | |
|--------------------------------------|--|---------------------|--|
| पुरुषशार्दूल काकुत्स्थ सः त्वं | “ஹே புருஷோத்தம! ஹே காசுத்தன்சு! அந்த தேவரீர் | धर्मेण सुसमाहितः | சரத்தையுடன் ஏகாக்கிருதையுடைய வராய் |
|--------------------------------------|--|---------------------|--|

भविष्यं इनी நடக்கப்போகிற
தைப்பற்றியதும்
शेषं கேட்கப்படாமல் பாக்
கியாயிருக்கிறதும்

काव्यं { புகழ்ந்து கொண்டா
டத்தக்கதாயிருக்க
கின்ற
रामायणं ராமாயணத்தை
शृणु கேட்டருள்க.

उत्तरं नाम काव्यस्य शेषमत्र महायशः । तच्छृणुष्व महातेज ऋषिभिः सार्धमुत्तमम् ॥

महातेजः "மஹாதேஜஸ்வியே!
महायशः மஹா யசஸ்வியே!
काव्यस्य காவ்யத்தினது
उत्तमं { இதரபாகங்ளைக்கா
ட்டிலும் உக்கிருஷ்
டமானதும்
अव இப்பொழுது
शेषं கேட்கப்படாமல் பாக்
கியாயிருக்கிறதமான

उत्तरं உத்தரகாண்டம்
नाम என்பது.
ऋषिभिः ரிஷிகளுடன்
सार्धं கூட
तत् அதை
शृणुष्व தேவரீர் கேட்டருள
வேண்டும்.

न खल्वन्येन काकुत्स्थ श्रोतव्यमिदमुत्तमम् । परमं ऋषिणा वीर त्वयैव रघुनन्दन ॥२२॥

काकुत्स्थ "காகுத்தஸ்தரெனப்
படுகிறவரும்
रघुनन्दन ரகுநந்தனரெனப்படு
பவருமாகிய
वीर ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணுவே!
इदं இது
उत्तमं எல்லா பாகங்களிலுமு
த்திருஷ்டமானதென
ऋषिणा ரிஷியால்

परमं ஒட்டிக்கொள்ளப்பட்ட
டிருக்கிறது.
त्वया एव தேவரீராலேயும்
श्रोतव्यं திருச்செவி சார்த்தத்
தருவது.
अन्येन யாது ரணமனிதன்
ஒருவனாலென்றால்
न खलु சொல்லவும் வேண்டு
மோ?"

एतावदुक्त्वा वचनं ब्रह्मा त्रिभुवनेश्वरः । जगाम त्रिदिवं देवो देवैः सह सवासवैः ॥२३॥

त्रिभुवनेश्वरः த்ரிலோகேச்வரராகிய
ब्रह्मा देवः பிரம்மதேவர்
एतावत् இவ்வளவு பெறாம
वचनं வசனத்தை [வாய்ந்த
उक्त्वा திருவாய்மலர்ந்தருளி
விட்டு

सवासवैः இந்திரனுள்ளிட்ட
देवैः தேவர்களோடு
सह கூட
त्रिदिवं ப்ரம்மலோகத்திற்கு
जगाम திரும்பிப்போனார்.

ये च तत्र महात्मानो ऋषयो ब्राह्मणलौकिकाः । ब्रह्मणा समनुज्ञाता न्यवर्तन्त महौजसः ॥

उत्तरं श्रोतुमनसो भविष्यं यच्च राघवे

॥ २४ ॥

तल अங்கிருந்த
महौजसः மஹாதேஜோவான்
களும்
सहात्मानः மஹா த்மாக்களும்

ब्राह्म- } மானிடர்களாயிருந்து
लौकिकाः } இப்பொழுது பிரம்ம
லோகவாஸிகளாயி
ருக்கின்றவர்களரு
டான

ऋषयः ரிஷிகள்
 ये च எவர்களோர் ஆவர்கள்
 राघवे ஸ்ரீராகவருக்கு
 भविष्यं இனி நடக்கப்போவ
 தைப்பற்றியது
 यत् च எதுவோ அந்த
 उत्तरं ஸமாப்திபாகத்தை

ततो रामः शुभां वार्णीं देवदेवेन भाषिताम् ।
 परमतेजस्वी பரமதேஜோவானாகிய
 रामः ஸ்ரீராமர்
 देवदेवेन பிரம்மதேவரால்
 भाषितां திருவாய்மலர்ந்தரு
 எப்பட்டதும்
 शुभां ஹிதமாயிருக்கிறது
 மாகிய

भगवञ्छ्रोतुमनस ऋषयो ब्राह्मलौकिकाः ।
 भगवन् “ஸ்வாமி!
 मे எனக்கு
 भविष्यत् இனி நடக்கப்போகிற
 தைப் பற்றியதாகிய
 उत्तरं ஸமாப்திபாகத்தை
 ब्राह्मलौकिकाः { மானிடர்களாயிருந்து
 இப்பொழுது பிரம்ம
 லோகவாஸிகளாகிய

एवं विनिश्चयं कृत्वा सम्प्रगृह्य कुशीलवौ ।
 एवं இவ்விதம்
 विनिश्चयं ஏற்பாட்டை
 कृत्वा செய்தருளி
 तं அந்த
 जनौघं ஜனஸமூகத்தை
 विसृज्य விடைகொடுத்தனுப்
 பிவிட்டு

श्रोतुमनसः கேட்கக் காதல்கொண்
 டவர்களாகி
 ब्रह्मणा பிரம்மதேவரால்
 समनुज्ञाताः விடைகொடுக்கப்
 பட்டவர்களாய்
 न्यवतन्त { கூடச்செல்லாமல் தா
 மதித்திருந்து விட்ட
 டார்கள்.

श्रुत्वा परमतेजस्वी वाल्मीकिमिदमब्रवीत् ॥
 वार्णीं திருவாக்குக்கு
 श्रुत्वा திருச்செவ்சாய்த்து
 ततः அதன்பேல்
 वाल्मीकिं வால்மீகிமஹர்ஷியி
 इदं இப்படி. [னிடம்
 अब्रवीत् விண்ணப்பம்
 செய்தார்:

भविष्यदुत्तरं यन्मे श्वोभूते सम्प्रवर्तताम् ॥
 ऋषयः ரிஷிகள்
 श्रोतुमनसः கேட்கக்காதல்கொண்
 டிருக்கின்றார்கள்.
 यत् எதுவோ அது
 श्वोभूते நானே
 सम्प्रवर्तताम् நடைபெறலாம்.”

तं जनौघं विसृज्याथ पर्णशालामुपागमत् ॥
 अथ அதன்பேல்
 कुशीलवौ குசனையும் லவனையும்
 सम्प्रगृह्य கையிப்பிடித்துக்
 கொண்டு
 पर्णशालां பர்ணசாலைக்கு
 उपागमत् எழுந்தருளினார்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकिये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे अष्टनवतितमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23739

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 3015

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे त्रिशोऽह्नि वर्तमानकथाप्रसङ्गः ॥

இவ்விதம் ஆதியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமர் ஸ்நிதியில் அக்ஷேமத்
 யாகசாலையில் காணம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில் முப்பதாவது
 தினத்தில் காணம் பண்ணப்பட்ட கதை முடிவுபெற்றது.



[புரா குசலவாஶ்யாं श्रीरामसन्निधावश्वमेधयज्ञवाटे द्वात्रिंशति दिनेषु गीते श्रीमद्रामायणे
एकत्रिंशोऽह्नि उत्तरकाण्डे एकोनशततमसर्गमारभ्य पञ्चोत्तरशततमसर्गपर्यन्तं
(23740—23872 श्लोकाः) गीतम् । तस्मिन् दिने गीताः श्लोकाः 133]

[ஆதியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமஸந்நிதியில் அச்வமேதயாகசாலையில்
முப்பத்திரண்டு தினங்களில் கானம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில்
முப்பத்தோராவது தினத்தில் உத்தரகாண்டத்தில் தொண்ணூற்றொன்ப
தாவது ஸர்க்கம்முதல் நூற்றைந்தாவது ஸர்க்கம்வரை
(23740—23872) கானம் செய்யப்பட்டது.
அன்று கானம் செய்யப்பட்ட சுலோக சங்கியை 133]

एकोनशततमः सर्गः—தொண்ணூற்றொன்பதாவது ஸர்க்கம். || ௧௩ ||

कौसल्यादि स्वर्गमनम्—கௌஸல்யை முதலியவர்கள் ஸ்வர்க்கமடைவது.

रजन्यां तु प्रमातायां समानीय महामुनीन् । गीयतामविशङ्काभ्यां रामः पुत्रावुवाच ह ॥

| | | | |
|------------|------------------|---------------|-------------------------------------|
| रजन्यां | இராப்பொழுது | पुत्रौ ह | இரு புதல்வர்களையும் |
| तु | கழிந்து | | பார்த்து |
| प्रमातायां | மறநான் உதயத்தில் | अविशङ्काभ्यां | ‘கூச்சமற்றவர்களாய் இருந்துகொண்டு |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | | பாடலில் பிரஸங்கம் |
| महामुनीन् | மகாமுனிவர்களை | गीयतां | { நடைபெறட்டும்’ என்று |
| समानीय | அழைத்து சபை | उवाच | கூட்டளையிட்டார். |
| | கூட்டி | | |

ततः समुपविष्टेषु ब्रह्मर्षिषु महात्मसु । भविष्यदुत्तरं काव्यं जगत्सौ कुशीलवौ ॥ २ ॥

| | | | |
|------------------|-----------------------------------|----------|-----------------------------------|
| महात्मसु | மகாத்மாக்களாகிய | भविष्यत् | இனி நடக்கப்போகிற |
| ब्रह्मर्षिषु | பிரம்மரிஷிகள் | | தைப்பற்றியதும் |
| समुपविष्टेषु ततः | ஆசனங்களில் ஏழுந் தருளியபின்னர் | काव्यं | புகழ்ந்துகொண்டா டத்தக்கதுமான |
| तौ | அந்த | उत्तरं | ஸமாப்தி பாகத்தை |
| कुशीलवौ | குசலவர்கள் | जगत्सुः | பாடலில் பிரஸங்கம் செய்தார்கள். |

प्रविष्टायां तु सीतायां भूतलं सत्यसम्पदा । तस्यावसाने यज्ञस्य रामः परमदुर्भनाः ॥३॥
अपश्यमानो वैदेहीं मेने शून्यमिदं जगत् । शोकेन परमायस्तो न शान्तिं मनसाऽगमत् ॥

| | | | |
|------------|-------------------------|-----------------|----------------|
| तस्य | அந்த | भूतलं | பூதலத்தினுள் |
| यज्ञस्य | யாகத்தினுடைய | प्रविष्टायां तु | புகுந்தபின்னர் |
| अवसाने | ஸமாப்தியில் | रामः | ஸ்ரீராமர் |
| सीतायां | வீதாபிராட்டியார் | वैदेहीं | வைதேகியாரை |
| सत्यसम्पदा | பாதிவிரத்யமகிமை யால் | अपश्यमानः | காணுதவராசி |
| | | शोकेन | சோகத்தால் |

| | |
|-----------|-------------------------------|
| परमहृमनाः | மிக்க புண்பட்ட மனத்தினராய் |
| इदं | இந்த |
| जगत् | உலகத்தை |
| शून्यं | சூன்யமாக |
| मेने | பாவித்தார். |

| | |
|-----------|------------------------------|
| मनसा | நுண்ணறிவைக்கொண்டு |
| परमायस्तः | அடக்கிக்கொள்ளுகிற வராயும் |
| शान्तिं | துக்கக்கடுமையின் தணிவை |
| न आसत् | அடையாமலிருந்தார். |

विमृज्य पार्थिवान्सर्वान् रामो राजीवलोचनः । हृदि कृत्वा तदा सीतामयोध्यां प्रविवेश ह ॥

| | |
|------------|-----------------------------|
| तदा | அப்பொழுது |
| राजीवलोचनः | தாமரைக்கண்ணை |
| रामः | ஸ்ரீராமர் [ராகிய |
| पार्थिवान् | மன்னர்கள் |
| सर्वान् | எல்லோரையும் |
| विमृज्य | விடைகொடுத்தனுப்பி விட்டு |

| | |
|----------|----------------------------------|
| सीतां | வீ தாதேவியாரை |
| हृदि | ஹிருதயத்தில் |
| कृत्वा ह | குடியாய் வைத்துக் கொண்டவண்ணமே |
| अयोध्यां | அயோத்தியநகருக்கு |
| प्रविवेश | போய்ச்சேர்ந்தார். |

न सीतायाः परां भार्यां वव्रे स रघुनन्दनः । यज्ञे यज्ञे च पत्न्यर्थं जानकी काञ्चनी भवत् ॥

| | |
|-----------|------------------------|
| सः | அந்த |
| रघुनन्दनः | ரகுந்தனர் |
| सीतायाः | வீதையைக்காட்டி லும் |
| परां | மற்றொருத்தியை |
| भार्यां | பத்னியாக |

| | |
|---------------|---------------------------|
| न वव्रे | மனமொப்பவில்லை. |
| यज्ञे यज्ञे च | ஒவ்வொரு யாகத்தி திலும் |
| काञ्चनी | பொன் |
| जानकी | ஜானகி |
| पत्न्यर्थं | பத்னியாக |
| भवत् | நின்றனர். |

दशवर्षसहस्राणि वाजिमेधांस्तथाऽकरोत् । वाजपेयान्दशगुणांस्तथा बहुसुवर्णकान् ॥ ७ ॥
अग्निष्टोमातिरात्राभ्यां गोसवैश्च महाधनैः । ईजे ऋतुभिरन्यैश्च स श्रीमान्दक्षिणैः ॥ ८ ॥

| | |
|----------------|--------------------------------------|
| सः | அந்த |
| श्रीमान् | ஸ்ரீமான் |
| अथ | அப்பொழுது |
| वाजिमेधान् | அச் சுவீமதயாக கிருத் தியங்களை |
| अकरोत् | செய்து முடித்தார். |
| दशवर्षसहस्राणि | பதினாயிரம் வருஷந் களில் |
| तथा | அவ்வண்ணமே |
| दशगुणान् | அதைவிடப் பதின் மடங்கு அதிகமாய் |
| वाजपेयान् | வாஜபேயமெனும் யாகங்களையும் |
| बहुसुवर्णकान् | அனேக ஸுவர்ணகம் எனும் யாகங்களையும் |

| | |
|-------------------------------|---|
| अन्यैः | இதர |
| ऋतुभिः च | அந்தந்த காலங்களுக் கேற்றவைகளும் |
| आसदक्षिणैः | { வேண்டிய அளவு தா னங்கள் கொடுக்கப் பட்டனவும் |
| महाधनैः | மிகச் சிறந்தவைகளு மான |
| गोसवैः च | கோவைமென்கிற யாகங்களாலும் |
| अग्निष्टोमाति- रात्राभ्यां | } அக்னிஷ்டோமம், அ ராத்திரமென்கிற யாகங்களாலும் |
| ईजे | ஆராதனை செய்தார். |

एवं स कालः सुमहान् राज्यस्थस्य महात्मनः । धर्मे प्रयतमानस्य व्यतीयाद्राघवस्य तु ॥११॥

| | |
|-------------|-----------------------------------|
| धर्मे | தருமநெறியில் |
| प्रयतमानस्य | அசஞ்சல ஆஸக்தி கொண்டவரும் |
| राज्यस्थस्य | ராஜ்யபரிபாலனம் செய்துவந்தவரும் |

| | |
|--------------|----------------|
| महात्मनः | மஹாத்மாவுமான |
| राघवस्य | ஸ்ரீராகவருக்கு |
| सः | அந்த |
| सुमहान् कालः | வெகுகாலமானது |
| एवं तु | இவ்வண்ணமாய் |
| व्यतीयात् | கழிந்தது. |

अनुरञ्जन्ति राजानमह्नयहनि राघवम् । ऋक्षवानररक्षांसि स्थिता रामस्य शासने ॥१०॥

| | |
|------------------|---|
| रामस्य | ஸ்ரீராமருடைய |
| शासने | அதிகாரத்தில் |
| स्थिताः | இருந்த |
| ऋक्षवानररक्षांसि | காடிகளும், வானரர்களும், ராசூஸர்களும் |

| | |
|-------------|------------------------------|
| अहनि अहनि | நாளுக்குநாள் |
| राजानं | சக்கிரவர்த்தியாகிய |
| राघवं | ஸ்ரீராகவரிடத்தில் |
| अनुरञ्जन्ति | பக்தி அதிகரித்த தாரர்கள். |

काले वर्षति पर्जन्यः सुभिक्षं विमला दिशः । हृष्टपुष्टजनाकीर्णं पुरं जनपदास्तथा ॥११॥
नाकाले म्रियते कश्चिन्न व्याधिः प्राणिनां तथा । नानर्थो विद्यते कश्चिद्रामे राज्यं प्रशासति॥

| | |
|---------------------|--|
| रामे | ஸ்ரீராமர் |
| राज्यं | ராஜ்யத்தை |
| प्रशासति | ஆண்டுவருகையில் |
| पर्जन्यः | இந்திரன் |
| काले | காலம் தவறாது |
| वर्षति | மழைபொழிந்தான். |
| पुरं | நகரும் |
| हृष्टपुष्टजनाकीर्णं | { ஸர்வபிரகாரத்திலும் மனச்சுந்துஷ்டி கொண்டு |
| सुभिक्षं | குறைவின்றி வாழ்ந்து |
| जनपदाः | நாடுகளும் [வந்தது. |

| | |
|-----------|-------------------|
| दिशः तथा | தூரதேசங்களும் |
| विमलाः | நிர்மலமாயிருந்தன. |
| कश्चित् | எவனேனுமொருவன் |
| अकाले | அகாலத்தில் |
| न म्रियते | மரணமடைந்தானில் |
| तथा | அவ்வண்ணமே [லை. |
| प्राणिनां | பிராணிகளுக்கு |
| व्याधिः | வயாதியென்பது |
| न | இல்லை. |
| कश्चित् | எதேனுமொரு |
| अनर्थः | அனர்த்தமென்பது |
| न विद्यते | உண்டாவதில்லை. |

अथ दीर्घस्य कालस्य राममाता यशस्विनी । पुत्रपौत्रैः परिवृता कालधर्ममुपागमत् ॥१३॥

| | |
|-----------------|------------------------------|
| अथ | இப்படியாய் |
| दीर्घस्य कालस्य | வெகுகாலம் கழிந்து |
| यशस्विनी | மஹா கீர்த்திவாய்ந்த வளவான |
| राममाता | ராமனின் தாயார் |

| | |
|--------------|---------------------------------------|
| पुत्रपौत्रैः | புத்திரர்களோடும் பெளத்திரர்களோடும் |
| परिवृता | பக்கலில் இருக்கப் பெற்றவராய் |
| कालधर्मं | பரலோகத்தை |
| उपागमत् | அடைந்தனர். |

अन्वियाय सुमित्रा च कैकेयी च यशस्विनी । धर्मं कृत्वा बहुविधं त्रिदिवे पर्यवस्थिता ॥

सुमित्रा च षुமித்ரா தேவியும்
बहुविधं மஹா பெருமை
பெற்றதான

पर्यवस्थिता இருக்க உரிமைபெற்ற
यशस्विनी புகழ்பெற்ற [வளராய்
कैकेयी च கைகேயிதேவியாரும்

धर्मं தர்மத்தை
कृत्वा செய்து
त्रिदिवे ஸ்வர்க்கத்தில்

अन्वियाय { ஒருவரின் பின் ஒருவ
ராய் போய்ச்சேர்ந்
தார்.

सर्वाः प्रमुदिताः स्वर्गे राज्ञा दशरथेन च ।

महाभागाः मஹா புணியா த்மாக்க
सर्वाः च எல்லோரும் [களாகிய
स्वर्गे ஸ்வர்க்கத்தில்
दशरथेन தசரத
राज्ञा சக்ரவர்த்தியாருடன்

समागता महाभागाः सर्वधर्मं च लेभिरे ॥

समागताः சேர்ந்திருப்பவர்க
प्रमुदिताः மனச்சந்துஷ்டி [ளாய்
கொண்டவர்களாய்
सर्वधर्मं च ஸ்கலநன்மையையும்
लेभिरे பெற்றார்கள்.

तासां रामो महादानं काले काले प्रयच्छति ।

रामः ஸ்ரீராமர்
तासां அந்த
मातृणां தாய்மார்களுக்கு
अविशेषेण ஒரே சீராய் வேற்
றுமையின்றி
काले काले அந்தந்தக் காலத்தில்

मातृणामविशेषेण ब्राह्मणेषु तपस्विषु ॥

तपस्विषु புணியா த்மாக்களாகிய
ब्राह्मणेषु பிராம்மணர்களிடத்
தில்
महादानं மஹா விசேஷமாகிய
सिंहात्तपोऽनन्तதை
प्रयच्छति செய்தருளினார்.

पित्र्याणि बहुरत्नानि यज्ञान्परमदुस्तान् । चकार रामो धर्मात्मा पितृन्देवान्विवर्धयन् ॥

धर्मात्मा தருமா த்மாவாகிய
रामः ஸ்ரீராமர்
पितृन् பித்ரு
देवान् தேவர்களை
विवर्धयन् மேன்மைபடுத்து
கின்றவராய்

बहुरत्नानि மிக உத்தமங்களாகிய
पित्र्याणि பிதாவைச் சேர்ந்த
வைகளையும்
परमदुस्तान् மிக கஷ்டசாத்தியமா
यज्ञान् சிராத்தங்களையும் [ன
चकार செய்தருளினார்.

एवं वर्षसहस्राणि बहून्यथ ययुः सुखं । यज्ञे बहुविधं धर्मं वर्धयानस्य सर्वदा ॥ १८ ॥

अथ அப்பொழுது
सर्वदा எக்காலத்திலும்
एवं இவ்வண்ணமாய்
यज्ञे புண்ணியச்செயலில்
बहुविधं மஹா மேன்மை
பெற்றதாகிய

धर्मं நன்மையை
वर्धयानस्य வளரச்செய்துகொண்
டிருந்த அவருக்கு
बहूनि वर्षसहस्राणि அனேகாயிரம் வரு
सुखं சுகமாய் [ஷங்கள்
ययुः கழிந்தன.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे एकोनशततमः सर्गः ॥



शततमः सर्गः—நூறாவது ஸர்க்கம். || 100 ||

भरतस्य गन्धर्वविजययात्रा—பரதர் கந்தர்வர்களை ஜயிக்கப் புறப்பவேது.

कस्यचिच्चथ कालस्य युधाजित्केकयो नृपः । स्वगुरुं प्रेषयामास राघवाय महात्मने ॥

गार्ग्यमङ्गिरसः पुत्रं ब्रह्मर्षिममितप्रभम् ॥ १ ॥

कस्यचित् कालस्य तु சிறிது காலங்கழிந்து
अथ ஒரு சமயத்தில்
केकयः नृपः கேகயமன்னராகிய
युधाजित् யுதாஜித்து,
महात्मने மகாத்மாவாகிய
राघवाय ஸ்ரீராகவரிடத்திற்கு
स्वगुरुं தமது புரோஹிதரும்

अङ्गिरसः அங்கிரஸ்முனிவரின்
पुत्रं புத்திரரும்,
अमितप्रभं அளவுகடந்து தேஜோ
मयमायं விளங்கும்
ब्रह्मर्षिं பிரம்மரிஷியுமாகிய
गार्ग्यं கார்க்கியமுனிவரை
प्रेषयामास அனுப்பினார்.

॥ २ ॥

दश चाश्वसहस्राणि प्रीतिदानमनुत्तमम् कम्बलानि च रत्नानि चित्रवस्त्रमथोत्तमम् । रामाय प्रददौ राजा शुभान्याभरणानि च ॥

राजा மன்னர்
रामाय ஸ்ரீராமருக்கு
अनुत्तमं ஒப்புயர்வில்லாதபடி
யாய்
प्रीतिदानं அன்பால் கொடுக்கப்
दश பத்து [படும் பரிசாய்
अश्वसहस्राणि च ஆயிரம் குதிரை
களையும்
रत्नानि மிக்க உயர்ந்த

कम्बलानि च கம்பளங்களையும்,
अथ அவ்வண்ணமே
उत्तमं உத்தமமான
चित्रवस्त्रं வினோதமாயிருக்கும்
உடுப்பையும்
शुभानि அற்புதமாயிருக்கின்ற
आभरणानि च ஆபரணங்களையும்
प्रददौ அனுப்பித்தந்தருளி
னார்.

श्रुत्वा तु राघवो धीमान्ब्रह्मर्षिं गार्ग्यमागतम् । मातुलस्याश्वपतिनः प्रहितं तन्महद्दन्म ॥
प्रत्युद्गम्य च काकुत्स्थः क्रोशमात्रं सहानुजः । गार्ग्यं सम्पूजयामास यथा शत्रो बृहस्पतिम् ॥

धी नान् நுண்ணறிவாளராகிய
राघवः ஸ்ரீராகவர்
ब्रह्मर्षिं பிரம்மரிஷியாகிய
गार्ग्यं கார்க்கியரை
आगतं எழுந்தருளியிருப்ப
தாகவும்
मातुलस्य அம்மானாகிய
अश्वपतिनः அசுவபதியினுடைய
तत् அந்த
महत् धनं விசேஷமான பரிசும்
प्रहितं च அனுப்பப்பட்டிருக்
கிறதாயும்
श्रुत्वा तु காதில் விழுந்ததுமே

काकुत्स्थः காசுஸ்தர்
सहानुजः { தம்பிமார்க்களை கூட
அழைத்துக் கொண்
டவராகி
क्रोशमात्रं சமார் இரண்டுமைல்
தூரம்
प्रत्युद्गम्य எதிர்கொண்டுசென்று
शत्रुः இந்திரன்
बृहस्पतिं பிரஹஸ்பதியை
यथा எவ்வண்ணமோ
அவ்வண்ணமே,
गार्ग्यं கார்க்கியமுனிவரை
संपूजयामास மரியாதை செய்தார்.

तथा सम्पूज्य तमृषिं तद्धनं प्रतिगृह्य च । उपविष्टं महाभागं रामः प्रष्टुं प्रचक्रमे ॥ ६ ॥

ராமः ஸ்ரீராமர்
 महाभागं மகாபுண்ணியாத்மா
 तं அந்த [வாக்ய
 ऋषिं ரிஷிக்கு
 उपविष्टं ஆஸனத்தில் எழுந்த
 சூழப்பட்டவராய்
 संपूज्य வந்தனை வழிபாடு
 களைச்செய்துவிட்டு

तत् अन्त
 धनं च धனம்
 तथा अल्लवண்ணமே
 प्रतिगृह्य ஆதரவுடன் பெற்றுக்
 கொண்டு
 प्रष्टुं இப்படி குசலம் வினாவ
 प्रचक्रमे திருவுள்ளங்கொண்
 டார்.

किमाह मातुलो वाक्यं यदर्थं भगवन्निह । प्राप्तो वाक्यविदां श्रेष्ठः साक्षात् इव बृहस्पतिः ॥

मातुलः “அம்மான்
 किं என்ன
 वाक्यं மொழியை
 आह சொல்லியனுப்பி
 यिरुக்கிரார் ?
 भगवन् ஹே பகவானே !
 इह இப்பொழுது
 यदर्थं என்ன காரியமாய்

वाक्यविदां மொழிகளின் துட்பங்
 களை அறிந்தவர்களில்
 श्रेष्ठः உத்தமராகிய
 साक्षात् ஸாக்ஷாத்
 बृहस्पतिः इव ப்ரஹஸ்பதிபோன்ற
 वाराक्यतेवरीர்
 प्राप्तः விஜயம் செய்திருக்
 கின்றீர்?”

रामस्य भाषितं श्रुत्वा महर्षिः कार्यविस्तरम् । वक्तुमद्भुतसङ्काशं राघवायोपचक्रमे ॥ ८ ॥

रामस्य ஸ்ரீராமருடைய
 भाषितं திருவாக்குக்கு
 श्रुत्वा செவியாய்த்த
 महर्षिः மஹரிஷி
 राघवाय ஸ்ரீராகவருக்கு

अद्भुतसङ्काशं அற்புதமான
 कार्यविस्तरं வந்த காரியத்தின்
 विवरात्தை
 वक्तुं இப்படிச் சொல்ல
 उपचक्रमे திருவுள்ளம்
 கொண்டார் :

मातुलस्ते महाबाहो वाक्यमाह नरर्षभ । युधाजित्प्रीतिसंयुक्तं श्रूयतां यदि रोचते ॥ ९ ॥

महाबाहो “ஹே மஹாபாகுவே!
 नरर्षभ ஹே புருஷோத்தம!
 ते தேவீரது
 मातुलः மாதுலராகிய
 युधाजित् யுதாஜித்து
 प्रीतिसंयुक्तं ப்ரீதியால் விளைந்த

वाक्यं ஒரு மொழியை
 आह சொல்லியனுப்பியிருக்
 किरार.
 यदि रोचते திருவுள்ளமிருக்கும்
 பகூத்தில்
 श्रूयताम् திருச்செவி சாற்றப்
 படட்டும்.

अयं गन्धर्वविषयः फलमूलोपशोभितः । सिन्धोरुभयतः पार्श्वे देशः परमशोभनः ॥१०॥

| | | | |
|--------------|--|--------------------|---|
| विन्धोः | “ ஸிந்தூர்தீயின் | फलमूलोप- शोभितः | } பழங்களாலும் கிழங்குகளாலும் அழகு வாய்ந்து விளங்குகிறதும் |
| उभयतः | இருக்கரைகளுக்கும் | परमशोभनः | மஹா புண்யசேஷத் திரமுமாகிய |
| पार्श्वे | அருகாமையில் | देशः | ஒரு தேசம் |
| गन्धर्वविषयः | கந்தர்வர்களைக் குடிக்க ளாய்க் கொண்டதும் | अयम् | இதோ இருக்கிறது. |

तं च रक्षन्ति गन्धर्वाः सायुधा युद्धकोविदाः । शूलषस्य सुता वीर त्रिकोटयो वै महाबलाः ॥

| | | | |
|------------|--------------------|-----------------|---------------------------------|
| वीर | “ஹே வீர! | सायुधाः च | ஆயுதத்தை கையில் கொண்டவர்களாயும் |
| महाबलाः | மஹா பலிஷ்டர்களும் | युद्धकोविदाः वै | யுத்தத்தில் சூர் |
| शूलषस्य | சைலுஷனுடைய | तं | அதை [களாய் |
| सुताः | வம்சத்தவர்களுமாகிய | रक्षन्ति | ஆண்டுவருகிறார்கள். |
| त्रिकोट्यः | மூன்றுகோடி | | |
| गन्धर्वाः | கந்தர்வர்கள் | | |

तान्विनिर्जित्य काकुत्स्थ गन्धर्वनगरं शुभम् । निवेशय महाबाहो स्वपुरे सुसमाहिते ॥

| | | | |
|-------------|------------------|-----------|--------------------------------|
| महाबाहो | “ மஹாபாகுவே! | सुसमाहिते | சகலபாக்கியங்களும் |
| काकुत्स्थ | காகுத்தந்தரே! | | இருக்கப்பெற்றதாகிய |
| तान् | அவர்களை | स्वपुरे | தேவரீரது நகரத்தில் |
| विनिर्जित्य | வென்று | निवेशय | அடங்கியிருக்கச் செய்யவேண்டும். |
| शुभं | புண்யசேஷத்ரமாகிய | | |
| गन्धर्वनगरं | கந்தர்வநகரத்தை | | |

अन्यस्य न गतिस्त्र देशः परमशोभनः । रोचतां ते महाबाहो नाहं त्वामहितं वदे ॥१३॥

| | | | |
|----------|-----------------------------|---------|------------------------|
| तत्र | “ அந்த | महाबाहो | மஹாபாகுவே! |
| देशः | தேசமானது | ते | தேவரீர் |
| परमशोभनः | மஹா புண்யம் வாய்ந்தது. | रोचतां | சம்மதித்தருள வேண்டும். |
| अन्यस्य | சாதாரணமான மனிதனுக்கு | एवं | தேவரீருக்கு |
| गतिः न | போகக்கூடிய இட மாக இல்லை. | अहितं | செய்யத்தகாத காரி |
| | | अहं | நான் [யத்தை |
| | | न वदे | சொல்லேன்.” |

तच्छ्रुत्वा राघवः प्रीतो महर्षेर्मातुलस्य च । उवाच बाढमित्येव भरतं चान्ववैक्षत ॥ १४ ॥

| | | | |
|------------|---------------------|------------|-----------------------|
| मातुलस्य च | அம்மானுடையதாய் | बाढं इति | ‘ அப்படியே ஆகட்டும்’ |
| महर्षेः | மஹர்ஷியினுடைய | एव | என்று |
| तत् | அதற்கு | उवाच | பதிலுரைத்தார். |
| श्रुत्वा | திருக்கேள்விசாற்றிய | च | உடனே |
| राघवः | ஸ்ரீராகவர் | भरतं | பரதனை |
| प्रीतः | மனமிசைந்தவராகி | अन्ववैक्षत | திரும்பிப்பார்த்தார். |

ஸௌவீ஢்ராதவ: ஸ்ரீத: ஸாஞ்ஜலி஢்ரஹௌ ஢்ரீஜ஢் | ங்஢ௌ கு஢ாரௌ த் ஢ேஷ் ஢்ரஹ்ஷே வி஢்ரீ஢்யத: ||
஢ரதஸ்யாத்஢ஜௌ வீரௌ தக்ஷ: ஢ுஷ்஢்ல ஂவ ஢ | ஢ாதலேன ஸு஢ுஸுௌ து ஢்஢்ஷெ ஸுஸ஢ா஢ீதௌ || 116 ||

ஸ: ராதவ: அந்த ஸ்ரீராகவர்
ஸ்ரீத: ஢னஸந்த்ஷட்கொண்டவராய்
ஸாஞ்ஜலி஢்ரஹ்: வணக்க஢ாய் அஞ்சலி
செய்தவராகி
஢்ரீஜ் ஢ிரா஢்஢ணரைப்
஢ார்த்து
அ஢வீத் இ஢்஢டி திருவாய்
஢லர்ந்தருளிணர்:
஢்ரஹ்ஷே "஢ுனிவர்஢ெரு஢ானே!
தக்ஷண஢்
஢ுஷ்஢்ல: ஂவ ஢ுஷ்஢்ல஢ு஢ாகிய
஢ரதஸ்ய ஢ரத஢ுடைய

அ஢஢ஜௌ கு஢ாரர்கள஢்
வீரௌ குரர்கள஢்
ங்஢ௌ இ஢ேதாயிருக்கும்
கு஢ாரௌ இளவராககள்
஢ாதலேன அ஢்஢ானால்
ஸு஢ுஸுௌ ஢ன்கு ஢ாதுகாக்கப்
஢ட்டவர்களாய்
஢்஢்ஷெ து ஢்஢ு஢த்தேர஢்
ஸுஸ஢ா஢ீதௌ ஂ஢்஢ே த஢் ஢டக்கின்
த் அந்த [஢வர்களாய்
஢ேஷ் ஢ேசத்தை
வி஢்ரீ஢்யத: ஆண்டுவரட்ட஢்.

஢ரத் ஢ா஢்ரத: க்ர்தவா கு஢ாரௌ ஸவலா஢ு஢ௌ | ஢ி஢்ய ஢ந்ஷவ்ஸுதா஢்஢ே ஢ுரே வி஢்ரீ஢்யத: || 117 ||

கு஢ாரௌ ஢ "இளவராக இருவர்
கள஢்
ஸவலா஢ு஢ௌ { ஂசன்னியங்களுட
஢ு஢், ஢ரிவாரஞ்ஜன஢்
களுட஢ு஢் கூடி஢வர்
களாய்

அ஢்ரத: ஢க்கலில்
க்ர்தவா வைத்துக்கொண்டு
஢ந்ஷவ்ஸுதா஢்ர
஢ி஢்ய கொண்டு
஢்஢ே ஢ுரே இருநகரங்களாய்
வி஢்ரீ஢்யத: ஢ங்கிட்டுக்கொள்ளு
஢்.

஢ரத் ஢ரதனை
஢ிவேஷ்ய தே ஢ுரவரே அத்஢ுஜௌ ஸ஢்ரீவேஷ்ய ஢் | அ஢ா஢ிஷ்யதி ஢ே ஢ுய: ஸகாஷ஢ிதா஢ி஢ிக: ||

அதிதா஢ி஢ிக: "அதி தர்஢ிஷ்ட஢ாகிய
தே அவ்விரண்டு [஢ரதன்
஢ுரவரே சி஢ந்தீ஢ுரங்களை
஢ிவேஷ்ய ஸ்தா஢ித்த஢ிட்டு
அத்஢ுஜௌ ஢ு஢ாரர்களிருவர்
களையும்

ஸ஢்ரீவேஷ்ய இருக்கச்செய்துவிட்டு
஢ே ஂளது
ஸகாஷ் இடத்திற்கு
ஸுய: ஢ீளவு஢்
அ஢ா஢ிஷ்யதி வருவான்."

஢்ரஹ்ஷி஢ேவஸுத்வா து ஢ரத் ஸவலா஢ு஢஢் | அஞ்ஜா஢யா஢ாஸ தடா கு஢ாரௌ ஢ா஢்யஷே஢்யத் ||

஢ு இவ்ஷிஷ்யத்தில்
஢்ரஹ்ஷி ஢ுனிவர்஢ெரு஢ா
஢ுக்கு
ஂவ இவ்வண்ண஢்
஢்஢்வா ஢தில் தந்தருளிவிட்டு,
஢ரத் ஢ரகளை

ஸவலா஢ு஢் { ஂசன்னியங்களுட஢ு஢்
஢ரிவாரங்களுட஢ு
஢ிருக்கின்றவ஢ு஢்
஢ிய஢ித்தருளிணர்.
அ஢்஢ா஢ு஢ுதே
கு஢ாரௌ இரு கு஢ாரர்கள஢்கு஢்
அ஢்ரீஷேக஢் செய்ஷித்
கருளிணர்.

नक्षत्रेण च सौम्येन पुरस्कृत्याङ्गिरःसुतम् । भरतः सह सैन्येन कुमारभ्यां विनिर्ययो ॥

| | | | |
|---------------|----------------------|------------|--------------------|
| भरतः | பரதர் | पुरस्कृत्य | முன்னிட்டுக்கொண்டு |
| सौम्येन | சைன்யத்தோடும் | सौम्येन | சுபமான |
| कुमाराभ्यां च | இருகுமாரர்களோடும் | नक्षत्रेण | நக்சத் திரத்தின் |
| सह | கூட | विनिर्ययो | பிரயாணமாயினார். |
| अङ्गिरःसुतं | அங்கிரஸின் புத்திரரை | | |

सा सेना शक्रयुक्तेव नगरान्निर्ययावथ । राघवानुगता दूरं दुराघर्षा सुरैरपि ॥ २१ ॥

| | | | |
|------------|-----------------------|------------|--------------------|
| सुषैः अपि | தேவர்களாலும்கூட | शक्रयुक्ता | இந்திரனோடுகூடிய |
| दुराघर्षा | வெல்வதற்கரியதும் | | ருக்கின்றது |
| दूरं | வெகுதூரம்வரைக்கும் | इव | போன்றதாய் |
| राघवानुगता | பரதரை பின்பற்றியதுமான | नगात् | நகரத்தினின்று |
| | | अथ | அப்பொழுது |
| सा सेना | அந்த சேனையானது | निर्ययो | வெளிப்புறப்பட்டது. |

मांसादानि च सत्त्वानि रक्षांसि सुमहान्ति च । अनुजग्मुर्हि भरतं रुधिरस्य पिपासया ॥

भूतग्रामाश्च बहवो मांसभक्षः सुदारुणाः । गन्धर्वपुत्रमांसानि भोक्तुकामाः सहस्रशः ॥

| | | | |
|--------------------------|---------------------------------------|------------------------------|--|
| सहस्रशः | ஆயிரக்கணக்கான | मांसभक्षः | } மாம்ஸத்தையே உண வாகக்கொண்டவை களுமான |
| गन्धर्वपुत्र- मांसानि | } கந்தர்வபுத்திரர்களின் மாம்ஸங்களே | भूतग्रामाः | |
| भोक्तुकामाः हि | | புஜிக்கவிரும்பியவர் களும் | सुमहान्ति |
| रुधिरस्य | உதிரத்தினுடைய | रक्षांसि च | பூதங்களும் |
| पिपासया | பானத்திலாசையால் | मांसादानि च | மாம்ஸபுக்கான |
| सुदारुणाः | மிக்க பயங்கரமான வைகளும் | सर्वानि च | மிருகங்களும் |
| बहवः | பலவகைப்பட்டவை களும் | भरतं | பரதரை |
| | | अनुजग्मुः | பின்தொடர்ந்து சென்றன. |

सिंहव्याघ्रवराहाणां खेचराणां च पक्षिणाम् । बहूनि वै सहस्राणि सेनाया ययुरग्रतः ॥

| | | | |
|---|---|----------|-----------|
| सिंहव्याघ्र- वराहाणां } खेचराणां वै | சிங்கம், புலி, பன்றி இவைகளினுடையவும் ஆகாசபூதங்களுடைய யவும் | बहूनि | பல |
| पक्षिणां च | பறவைகளினுடைய வும் | सहस्राणि | ஆயிரங்கள் |
| | | सेनायाः | சேனைக்கு |
| | | अग्रतः | முந்தி |
| | | ययुः | சென்றன. |

अध्यर्धमासमुषिता पथि सेना निरामया । हृष्टपुष्टजनाकीर्णा केकयं समुपागमत् ॥ २५ ॥

| | | | |
|--------------------------|--|-------------|------------------|
| हृष्टपुष्ट- जनाकीर्णा | } ஸர்வபிரகாரத்திலும் மனத்திருப்திகொண் ட ஜனங்களால் நிறைந்துள்ளதும் | सेना | சேனையானது |
| | | पथि | வழியில் |
| निरामया | } தோஷரஹிதமாயிருக்கின்றதுமான | अध्यर्धमासं | பதினைந்துநாளள் |
| | | उषिता | கழித்து |
| | | केकयं | கேகயதேசத்திற்கு |
| | | समुपागमत् | போய்ச்சேர்ந்தது. |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे शततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23782



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 3058

एकोत्तरशततमः सर्गः—ஊற்றென்றாவது ஸர்க்கம். ॥ २०१ ॥

भरतपुत्रयो राज्याभिषेकः—பரதபுத்திரர்களுக்கு ராஜ்யாபிஷேகம்.

श्रुत्वा सेनापतिं प्राप्तं भरतं केकयाधिपः । युधाजिद्राग्यंसहितं परां प्रीतिमुपागमत् ॥ १ ॥

| | | | |
|-------------|-------------------------------|----------|--------------------|
| केकयाधिपः | கேகயதேசமன்ன ராகிய | भरतं | பரதரை |
| युधाजित् | யுதாஜித்து | प्राप्तं | வந்துசேர்ந்துவிட்ட |
| राग्यंसहितं | கார்க்யமுனிவர் சஹி தராயும் | श्रुत्वा | கேட்டு [தரக |
| सेनापतिं | சேனாபதியாயும், | परां | மிக்க |
| | | प्रीतिं | மனத்திருப்தியை |
| | | उपागमत् | அடைந்தார். |

स निर्ययौ जनौघेन महता केकयाधिपः । त्वरमाणोऽभिचक्राम गन्धर्वाङ्कामरूपिणः ॥२॥

| | | | |
|------------|------------------------------|-----------|---------------------------------|
| केकयाधिपः | கேகயமன்னர் | महता | மஹத்தான |
| कामरूपिणः | காமரூபிகளான | जनौघेन | ஜனக்கூட்டத்தோடு |
| गन्धर्वान् | கந்தர்வர்களை | अभिचक्राम | தயாராயினார். |
| त्वरमाणः | தூண்ட உத்தேசங் கொண்டவராய் | सः | அவர் |
| | | निर्ययौ | ஊர்விரந்துப் பரயான மாயினார். |

भरतश्च युधाजिच्च समेतौ लघुविक्रमौ । गन्धर्वनगरं प्राप्तौ सबलौ सपदानुगौ ॥ ३ ॥

| | | | |
|------------|---|-------------|---------------------------------|
| सबलौ | சைய்யத்தோடிருக்கின்றவர்களும் | भरतः च | பரதரும், |
| सपदानुगौ | பரிவாரஜனங்களுட னிருக்கின்றவர்களும் | युधाजित् च | யுதாஜித்தும், |
| लघुविक्रमौ | } கஷ்டமின்றி மேல்வி ழுந்து தாக்க வல்ல வர்களுமான | समेतौ | கலந்து பேசிக்கொண்ட டவர்களாய் |
| | | गन्धर्वनगरं | கந்தர்வர்களுக்கு |
| | | प्राप्तौ | வந்துசேர்ந்தார்கள். |

श्रुत्वा तु भरतं प्राप्तं गन्धर्वास्ते समागताः । योद्धुकामा महावीर्या व्यनदन्वै समन्ततः ॥

| | | | |
|----------------|--------------------------|-------------|--------------------|
| महावीर्याः | மஹா வீரயசாலி களுமும், | प्राप्तं | வந்திருப்பதாய் |
| योद्धुकामाः वै | போரில் ஆசையுள்ள | श्रुत्वा तु | கேட்டதுமே |
| ते | அந்த [வர்களுமான | समागताः | ஒன்றுகூடி |
| गन्धर्वाः | கந்தர்வர்கள், | समन्ततः | எல்லாப்பக்கங்களி |
| भरतं | பரதரை | | ஆம் |
| | | व्यनदन् | ஆர்ப்பரித்தனர்கள். |

ततः समभवद्युद्धं तुमुलं रोमहर्षणम् । सप्तरात्रं महाभीमं न चान्यतरयोर्जयः ॥ ५ ॥

| | | | |
|------------|----------------------|-------------|-----------------|
| ततः | அப்பொழுது | तुमुलं | மிக்க கடுமையாய் |
| सप्तरात्रं | ஏழுநாள் | समभवत् | நடந்தேறியது. |
| युद्धं | போரானது | अन्यतरयोः च | இரு தரத்தாரில் |
| रोमहर्षणं | மயிர்ச் சிலிர்க்கும் | | ஒருவருக்கும் |
| | வண்ணமாய் | जयः | வெற்றி |
| महाभीमं | மிக்க பயங்கரமாய் | न | உண்டாகவில்லை. |

खड्गशक्तिधनुर्ग्राहा नद्यः शोणितसंस्त्रवाः । वृकलेबरवाहिन्यः प्रवृत्ताः सर्वतो दिशम् ॥

| | | | |
|--------------------------------|---|--------------------------|---|
| खड्गशक्ति- } धनुर्ग्राहाः } | கட்கம், சக்தி, கோத ண்டம், இவைகளே முதலைகளாகவும், | वृकलेबर- } वाहिन्यः } | மானிடப்ரேதங்களே மிதக்கும் வஸ்துக் நதிகள் [களாகவும், |
| शोणितसंस्त्रवाः | ரத்தமே ஜலமாகவும், | नद्यः | எல்லா திக்குகளிலும் |
| | | सर्वतः दिशं | ஓடத்தலைப்பட்டன. |
| | | प्रवृत्ताः | |

ततो रामानुजः क्रुद्धः कालस्यास्त्रं सुदारुणम् । संवर्तं नाम भरतो गन्धर्वेष्वभ्यचोदयत् ॥

| | | | |
|----------|-------------------------------|------------|-------------------------------------|
| ततः | அப்பொழுது | नाम | என்ற பெயருள்ளதும் |
| रामानुजः | ஸ்ரீராமரின் தம்பியா கிய | सुदारुणं | மகா கொடுமையை வி ளை விக்கவல்லதமான |
| भरतः | பரதர் | कालस्य | யமனுடைய |
| क्रुद्धः | மிக்க கோபாவேசம் கொண்டவராகி | अस्त्रं | அஸ்திரத்தை |
| संवर्तं | ஸம்வர்த்தம் | गन्धर्वेषु | கந்தர்வர்களினிமீது |
| | | अभ्यचोदयत् | போட்டார். |

ते बद्धाः कालपाशेन संवर्तेन विदारिताः । क्षणेनाभिहतास्तेन तिस्रः कोट्यो महात्मनाम् ॥

| | | | |
|-----------|------------------------|-----------|--------------------|
| महात्मनां | மகாபிரபாவசாலி களின் | संवर्तेन | சமவர்த்தம் என்கிற |
| विद्यः | மூன்று | कालपाशेन | காலபாசத்தினால் |
| कोट्यः | கோடிக்கணக்கான | बद्धाः | கட்டுண்டவர்களாய் |
| ते | அவர்கள் | विदारिताः | பிளக்கப்பட்டவர் |
| तेन | அந்த | क्षणेन | உடனே [களாக |
| | | अभिहताः | கொல்லப்பட்டார்கள். |

| | |
|---|--|
| तं घातं घोरसङ्काशं न स्मरन्ति दिवौकसः । | निमेषान्तरमात्रेण तादृशानां महात्मनाम् ॥ |
| तादृशानां | அப்புடிப்பட்டதாயி |
| | ருக்கும் |
| महात्मनां | மஹா தைர்யசாலி |
| | களுக்கு |
| निमेषान्तरमात्रेण | கண்முடித் திறப்பதற் |
| | குள்ளேயே |
| घोरसङ्काशं | மஹா கடுமையாயி |
| तं | அந்த [ருக்கின்ற |
| घातं | நாசத்தை |
| दिवौकसः | தேவர்களும் |
| न स्मरन्ति | நினைக்கவில்லை. |

हतेषु तेषु सर्वेषु भरतः कैकयीसुतः । निवेशयामास तदा समृद्धे द्वे पुरोत्तमे ॥ १० ॥
तक्षं तक्षशिलायां तु पुष्कलं पुष्कलावते । गन्धर्वदेशे रुचिरे गान्धारविषये च सः ॥ ११ ॥

| | | | |
|--------------|---------------------|----------------|-------------------|
| कैकयीसुतः | கைகேயிதேவியாரின் | तक्षशिलायां | தக்ஷசிலை என்பதில் |
| | புதல்வராகிய | तक्षं च | தக்ஷணுக்காகவும் |
| सः भरतः | அந்த பரதர் | पुष्कलावते | புஷ்கலாவதமென்கிற |
| तेषु सर्वेषु | அவர்கள் அனைவரும் | | தில் |
| हतेषु | மாண்டபின்னர் | पुष्कलं तु | புஷ்கலனுக்காகவும் |
| गान्धारविषये | காந்தாரதேசமென்ப | समृद्धे | ஸகலபாக்கியங்களா |
| | பெயர்கொண்டதும் | | லும் நிறையப்பெற்ற |
| रुचिरे | மிக்க அழகாயிருக்கிற | द्वे पुरोत्तमे | இரண்டு சீரேஷ்ட |
| | துமாகிய | | மாண நகரங்களை |
| गन्धर्वदेशे | கந்தர்வர்களது | तदा | அப்பொழுது |
| | தேசத்தில் | निवेशयामास | நிருமித்தார். |

धनरत्नौघसम्पूर्णे काननैरुपशोभिते । अन्योन्यसङ्घर्षकृते स्पर्धया गुणविस्तरैः ॥ १२ ॥

उभे सुरचिरप्रख्ये व्यवहारैरैकलिषैः । उद्यानयानसम्पूर्णे सुविभक्तान्तरापणे ॥ १३ ॥

| | | | |
|---------------------|-------------------------|----------------|-----------------------|
| गुणविस्तरैः | சீர் தூக்கிப்பார்க்கும் | उद्यानयान- | } உல்லாசமாய் நடக்கும் |
| | குணவிவரங்களாலும் | संपूर्णे | |
| अकिरिबैषः | கபடமற்ற | | னவனங்களால் |
| व्यवहारैः | நடத்தைகளாலும் | | நிறைந்துவிளங்கின. |
| स्पर्धया | ஸமமாயிருப்பதால் | काननैः | பெரும்மலைச்சேலை |
| उभे | இரண்டும் | | களால் |
| अन्योन्यसङ्घर्षकृते | ஒன்றுக்கொன்று | उपशोभिते | அழகுவாய்ந்த |
| | ஈடாய் விளங்கின. | | விளங்கின. |
| सुरचिरप्रख्ये | மிக்க அழகுவாய்ந்து | धनरत्नौघ- | } தனம், ரத்தினம் |
| | விளங்கின. | संपूर्णे | |
| सुविभक्तान्तर- | } சரியான இடங்களில் | | } ளால் நிறைந்து |
| रापणे | | மையப்பெற்ற கடை | |
| | களையுடையனவாய் | | விளங்கின. |
| | விளங்கின. | | |

उभे पुरवरे रम्ये विस्तरैरुपशोभिते । गृहमुख्यैः सुरचिरैर्विमानसमवर्णिभिः ॥ १४ ॥

शोभिते शोभनीयैश्च देवायतनविस्तरैः । तालैस्तमालैस्तिलकैर्वकुलैरुपशोभिते ॥ १५ ॥

| | | |
|------------|----------------------|--------------------|
| उभे | இரண்டு | |
| पुरवरे | கிரேஷ்டமான நகர் | |
| | களும் | |
| विस्तारैः | விசாலமாயிருக்கின்ற | |
| गृहमुख्यैः | பெரியமாளிகைகளால் | |
| रम्ये | அழகுவாய்து | |
| | விளங்கின. | |
| सुशचिरैः | மிக்க அழகாயிருக் | |
| | கின்ற | |
| विमानसम- | } ஒரேமா திரியாயிருக் | |
| वर्णिभिः | | கும் சகடங்களால் |
| उपशोभिते | | மிக்க அழகுவாய்ந்து |
| | விளங்கின. | |
| शोभनीयैः | அலங்காரங்களுக் | |
| | கேற்றதான | |

| | |
|-----------------|------------------|
| देवायतनविस्तरैः | தேவாலயங்களின் |
| | அனேகங்களால் |
| शोभिते | அழகுவாய்ந்து |
| | விளங்கின. |
| तालैः | தாலமென்கிற வீரு |
| | கூடங்களாலும் |
| तमालैः | தமாலமென்கிற வீரு |
| | கூடங்களாலும் |
| तिरुक्कैः | திலகமென்கிற வீரு |
| | கூடங்களாலும் |
| वकुलैः च | வகுளமென்கிற |
| | வீருகூடங்களாலும் |
| उपशोभिते | அழகுவாய்ந்து |
| | விளங்கின. |

निवेश्य पञ्चभिर्वर्षैर्भरतो राघवानुजः । पुनरायान्महाबाहुरयोध्यां कैकयीसुतः ॥ १६ ॥

| | |
|-----------|--------------------|
| कैकयीसुतः | கைகேயீதேவியாரின் |
| | புதல்வரும் |
| राघवानुजः | ஸ்ரீராகவரின் தம்பி |
| | யாரும் |
| महाबाहुः | மஹாபாகுவமான |
| भरतः | பரதர் |

| | |
|----------------|---------------------|
| पञ्चभिः वर्षैः | ஐந்துவருஷகாலம் |
| निवेश्य | தங்கியிருந்துவிட்டு |
| पुनः | மீளவும் |
| अयोध्यां | அயோத்திக்கு |
| आयात् | திரும்பிவந்து |
| | சேர்ந்தார். |

सोऽभिवाद्य महात्मानं साक्षाद्धर्ममिवापरम् । राघवं भरतः श्रीमान्ब्रह्माणमिव वासवः ॥
शशंस च यथावृत्तं गन्धर्ववधमुत्तमम् । निवेशनं च देशस्य श्रुत्वा प्रीतोऽस्य राघवः ॥

| | |
|-----------|--------------------|
| श्रीमान् | ஸ்ரீமானாகிய |
| सः भरतः | அந்த பரதர் |
| महात्मानं | மஹாத்மாவும் |
| अपरं | இரண்டாவதாகிய |
| साक्षात् | ஸாக்ஷாத் |
| धर्मं इव | தருமதேவதையை |
| | போலிருப்பவருமான |
| राघवं | ஸ்ரீராகவரை |
| वासवः | இந்திரன் |
| ब्रह्माणं | பிரம்மதேவரை |
| इव | எவ்வண்ணமோ |
| | அவ்வண்ணமே |
| अभिवाद्य | வணங்கி, அடிபணிக் |
| | து, திருவுடிதொழுது |

| | |
|--------------|---------------------|
| उत्तमं | மஹாவிசேஷமாயிருக் |
| | கின்ற |
| गन्धर्ववधं च | கந்தர்வர்களின் ஸம் |
| | ஹாரத்தையும், |
| देशस्य | தேசத்தினுடைய |
| निवेशनं च | ஸ்தாபித்தலையும் |
| यथावृत्तं | நடந்தவண்ணமே |
| शशंस | விண்ணப்பம் |
| अस्य | இவருக்கு [செய்தார். |
| श्रुत्वा | திருச்செவிகாய்த்த |
| राघवः | ஸ்ரீராகவர் |
| प्रीतः | திருவுள்ள முவந்தரு |
| | ளிணர். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे एकोत्तरशततमः सर्गः ॥



द्व्युत्तरशततमः सर्गः—நூற்றிரண்டாவது ஸர்க்கம். || १०२ ||

छक्षमणपुत्रयो राज्याभिषेकः—லக்ஷ்மணபுத்திரர்களுக்கு ராஜ்யாபிஷேகம்.

तच्छ्रुत्वा हर्षमापेदे राघवो भ्रातृभिः सह । वाक्यं चाद्भुतसङ्काशं भ्रातृन्मोवाच राघवः ॥

राघवः श्रीराकवर्
भ्रातृभिः सह तम्पिमार्करोरुदुक्ष
तत् अतै
श्रुत्वा अழிந்து
हर्षं மனத்திருப்தியை
भापेदे பெற்றார்.
राघवः च श्रीराकवरो

भ्रातृन् தம்பிமார்களைப்
பார்த்து
भद्भुतसङ्काशं மிக்க ஆச்சரியகரமாயி
ருக்கின்ற
वाक्यं இந்த மொழியை
प्रोवाच திருவாய்மலர்ந்தருளி
னார்:

इमौ कुमारौ सौमित्रे तत्र धर्मविशारदौ । अङ्गदश्वन्द्रकेतुश्च राज्यार्थे दृढविक्रमौ ॥ २ ॥

सौमित्रे “ஹே லக்ஷ்மண!
इमौ இதோயிருக்கும்
तव உனது
कुमारौ புத்திரர்களாகிய
अङ्गदः அங்கதனும்
चन्द्रकेतुः च சந்திரகேதுவும்

धर्मविशारदौ தர்மக்ஞானிகள்.
राज्यार्थे ராஜ்யபரிபாலன
विषयத்தில்
दृढविक्रमौ நம்பத்தக்க சக்தி
படைத்தவர்கள்.

इमौ राज्येऽभिषेक्ष्यामि देशः साधु विधीयताम् । रमणीयो ह्यसम्बाधो रमेतां यत्र धन्विनौ ॥

धन्विनौ குகூடம்புத்தியுடைய
வர்கள்
इमौ இவ்விருவர்களும்
यत्र எவ்விடத்தில்
रमेतां { வாஸம் செய்வார்க
ளோ அப்பேர்ப்பட்
டதும்
साधु நன்றாய்
रमणीयः ரமணீயமாய்

असंबाधः हि அதிக ஜனக்கூட்டமில்
லாததாயுமிருக்கும்
देशः ஒரு தேசமானது
विधीयतां நிஷ்கர்ஷிக்கப்பட்ட
டும்.
राज्ये ராஜ்யஆளுகையில்
अभिषेक्ष्यामि நான் நியமிக்கப்போகி
றேன்.

न राज्ञां यत्र पीडा स्यान्नाश्रमाणां विनाशनम् ।

स देशो दृश्यतां सौम्य नापराध्यामहे यथा

|| ४ ||

सौम्य “ஹே புண்யாத்மாவே!
अपराध्यामहे न நாம் எவர்க்கும் அஹி
தம் செய்யக்கடாது
यथा என்கிறபடியால்
यत्र எனது
राज्ञां ஒரு மன்னனுக்கும்
पीडा ஹிம்சையாய்

न स्यात् ஆகாதோ
आश्रमाणां ஆசிராமங்களுக்கு
विनाशनं அழிவாய்
न ஆகாதோ,
सः देशः அப்படிப்பட்டதாகிய
தேசமானது
दृश्यताम् ஆலோசிக்கப்பட்டடும்.

तथोक्तवति रामे तु भरतः प्रत्युवाच ह । अयं कारुपथो देशो रमणीयो निरामयः ॥५॥

| | | | |
|---------|------------------------------|------------|--------------------|
| तु | இவ்விஷயத்தில்தான் | प्रत्युवाच | இப்படிவிண்ணப்பம் |
| तथा | அவ்வண்ணமாய் | अयं | “இந்த [செய்தார்] : |
| रामे | ஸ்ரீராமர் | कारुपथः | காருபதமென்கிற |
| उक्तवति | திருவாய்மலர்ந்தருளி யதும் | देशः | தேசமானது |
| भरतः ह | பரதர் | रमणीयः | ரமணியமானது. |
| | | निरामयः | தோஷரஹிதமானது. |

निवेश्यतां तत्र पुरमङ्गदस्य महात्मनः । चन्द्रकेतोः सुरुचिरं चन्द्रकान्तं निरामयम् ॥ ६ ॥

| | | | |
|----------|--------------------|--------------|--------------------------------|
| तत्र | “அதில் | अङ्गदस्य | அங்கதனுக்கும் |
| निरामयं | தோஷரஹிதமாய் | चन्द्रकान्तं | சந்திரகாந்தமென்கிற நகரமானது |
| सुरुचिरं | மிக்க அழகுவாய்ந்த | चन्द्रकेतोः | சந்திரகேதுவுக்கும் |
| पुरं | ஓர் நகரமானது [தாய் | निवेश्यताम् | நிருமிக்கப்பட்டலாம்.” |
| महात्मनः | மஹாத்மாவான | | |

तद्वाक्यं भरतेनोक्तं प्रतिजग्राह राघवः । तं च कृत्वा वशे देशमङ्गदस्य न्यवेशयत् ॥ ७ ॥

| | | | |
|--------|------------------|-------------|------------------|
| राघवः | ஸ்ரீராகவர் | प्रतिजग्राह | ஏற்றுக்கொண்டார். |
| भरतेन | பரதரால் | तं देशं च | அந்த தேசத்தையே |
| उक्तं | சொல்லப்பட்டதாகிய | वशे | தன்வசத்தில் |
| तत् | அந்த | कृत्वा | செய்துகொண்டு |
| वाक्यं | மொழியை | अङ्गदस्य | அங்கதனுக்கு |
| | | न्यवेशयत् | உட்படுத்தினார். |

अङ्गदीया पुरी रम्या ह्यङ्गदस्य निवेशिता । रमणीया सुगुप्ता च रामेणाङ्घ्रिष्टकर्मणा ॥

| | | | |
|------------------|--|-------------|---------------------------------------|
| अङ्घ्रिष्टकर्मणा | { மனோபிஷ்டங்களை எல்லாம் கஷ்டமின்றி செய்துமுடிக்கவல்ல வராகிய | रम्या | தேஹாரோக்கியத்திற் கேற்றதும், |
| रामेण | ஸ்ரீராமரால் | सुगुप्ता हि | சத்ருக்களினிடஞ்சலு க்கிடமாகாததுமான |
| अङ्गदस्य | அங்கதனுக்கு | अङ्गदीया | அங்கதீயமெனும் |
| रमणीया च | ரமணியமானதும் | पुरी | ஓர் நகரானது |
| | | निवेशिता | நிருமிக்கப்பட்டது. |

चन्द्रकेतोस्तु मल्लस्य मल्लभूम्यां निवेशिता । चन्द्रकान्तेति विख्याता दिव्या स्वर्गपुरी यथा ॥

| | | | |
|----------------|-----------------------------|------------------|--------------------|
| मल्लस्य | ஸுசீலனாகிய | दिव्या तु | அழகுவாய்ந்ததாய் |
| चन्द्रकेतोः | சந்திரகேதுவுக்கு | चन्द्रकान्ता इति | சந்திரகாந்தையெனும் |
| मल्लभूम्यां | மல்லபூமியெனும் தேசத்தில் | विख्याता | பெயருள்ளது |
| स्वर्गपुरी यथा | தேவகரம்போன்ற தாய் | निवेशिता | நிர்மிக்கப்பட்டது. |

| | |
|--|---------------------|
| ததோ ராம: பரர் பரீதீ லக்ஷ்மணோ பரதஸ்தயா யயுயுதே துராபர்பா அபிபேகம் ச சக்ரிரே | |
| யுதே | போரீல் |
| துராபர்பா: | சலியாதவர்களாகிய |
| ராம: | ஸ்ரீராமரும் |
| பரத: | பரதரும் |
| லக்ஷ்மண: தயா | லக்ஷ்மணரும் |
| அபிபேகம் | அபிபேகத்தை |
| சக்ரிரே | செய்வித்தார்கள். |
| தத: | அதனால் |
| பரர் | அதிக |
| பரீதீ ச | மனஸந் துவட்டியையும் |
| யயு: | அடைந்தார்கள். |

| | |
|--|--------------------------------|
| அபிபிசிய கும்பரோ ச பஸ்யாபயதி ரா஘வ: அங்ஙம் பஸ்யிமாம் பூமி சந்ரகேதுமுதங்ரஸம் | |
| ச: | அந்த |
| ரா஘வ: | ஸ்ரீராகவர் |
| கும்பரோ | கும்பரர்களிருவரும் |
| அபிபிசிய | அபிபேகம் செய்வித்தருளியபின்னர் |
| அங்ஙம் | அங்ஙத்தை |
| பஸ்யிமாம் | மேற்கு |
| பூமி | தேசத்திற்கும் |
| சந்ரகேது | சந்திரகேதுவை |
| முதங்ரஸம் | வடக்குதேசத்திற்கும் |
| பஸ்யாபயதி | பிரயாணப்படுத்தி அனுப்பினார். |

| | |
|--|----------------------|
| அங்ஙம் சாபி சௌமித்ரிலக்ஷ்மணோஸுஜகாம ஹ சந்ரகேதுஸ்து பரத: பாஷ்ணிபாஹோ பஹூவ ஹ | |
| சௌமித்ரி: | சமீதாரதேவியரின் |
| லக்ஷ்மண: ஹ | புதல்வராகிய |
| அங்ஙம் ச | அங்ஙமணரே |
| அங்ஙம் | அங்ஙமணரும் |
| அஸுஜகாம | உதவியாய்ச் சென்றார். |
| பரத: அபி | பரதரும் |
| சந்ரகேது: ஸு | சந்திரகேதுவுக்கும் |
| பாஷ்ணிபாஹ: | உறவுக்கூட்டாளியாக |
| பஹூவ ஹ | ஆயினார். |

லக்ஷ்மணஸ்த்வங்ஙுதீயாயர் சவ்ஸரமயோபித: | பூத்ரே ஸ்திதே துராபர்பே ஹயோஹ்யர் புநராங்மத் || 13 ||

| | | | |
|--------------|---|------------------------|-------------------|
| அங்ஙுதீயாயர் | அங்ஙுதயநகரத்தில் | லக்ஷ்மண: ஸு | லக்ஷ்மணர் |
| அய | அப்பொழுது | சவ்ஸரம் | ஒருவருக்காலம் |
| பூத்ரே | புதல்வன் | ஸ்தித: | வஸித்துவிட்டு |
| துராபர்பே | ஒப்புயர்வில்லாதபடி கொண்டாடத்தக்க வண்ணமாய் | அயோஹ்யர் | அயோத்யாநகருக்கு |
| ஸ்திதே ஹி | | அரக புரிந் துவருகையில் | புந: |
| | | அங்ஙம் | வந் துசேர்ந்தார். |

| | | | |
|--|---------------------|----------|----------------------|
| பரதோஸ்பி தயேவோஸ்ய சவ்ஸரமதோஸ்திகம் அயோஹ்யர் புநராங்மய ராமபாடாஸுபாஸ்த ச: | | | |
| ச: பரத: அபி | அந்த பரதரும் | அயோஹ்யர் | அயோத்யாநகருக்கு |
| தயா | அவ்வண்ணமே | புந: | மீளவும் |
| சவ்ஸரம் | ஒருவருக்காலத்திற்கு | அங்ஙம் | திரும்பிவந்தசேர்ந்து |
| ஹி | சந்திரகேதுவை | ராமபாடோ | ஸ்ரீராமரது திருவடி |
| அதிகம் | அதிகமாய் | | களை |
| ஸ்ய | தக்கியிருந்துவிட்டு | ஸுபாஸ்த | தொழுது காலக்கழித்த |
| பரத: | அவ்விடமிருந்து | | |

उभौ सौमित्रिभरतौ रामपादावनुव्रतौ । कालं गतमपि स्नेहान्न जज्ञातेऽतिधार्मिकौ । १५॥

| | | | |
|--------------|-------------------------|-----------|---|
| अतिधार्मिकौ | மஹா தருமிஷ்டர் களான | अनुव्रतौ | { தருமநெறி தவறாது தொழுதுவந்தவர்க ளாய் |
| सौमित्रिभरतौ | பரதரும் லக்ஷ்மணரு | कालं | காலம் |
| उभौ अपि | இருவர்களும் [மாகிய | गतं | செல்வதை |
| स्नेहात् | அன்பினால் | न जज्ञाते | அறியாமலிருந்தார் கள். |
| रामपादौ | சூராமரது திருவடி களை | | |

एवं वर्षसहस्राणि दश तेषां ययुस्तदा । धर्मे प्रयतमानानां पौरकार्येषु नित्यदा ॥ १६ ॥

| | | | |
|-------------|------------------------------------|--------------|------------------------|
| तदा | அக்காலத்தில் | प्रयतमानानां | அசஞ்சல ஆஸக்தி கொண்ட |
| एवं | இவ்விதமாய் | तेषां | அவர்களுக்கு |
| पौरकार्येषु | பிரணைகளைப் பரிபாலி த்துவருவதில் | दश | பத்து |
| धर्मे | தருமநெறியில் | वर्षसहस्राणि | ஆயிரமாண்டுகள் |
| नित्यदा | ஸர்வகாலமும் | ययुः | கழிந்தன. |

विहृत्य कालं परिपूर्णमानसाः श्रिया वृता धर्मपथे परे स्थिताः ।

त्रयः समिद्धा इव दीप्ततेजसो महाध्वरे साधु हुतास्त्रयोऽथयः ॥ १७ ॥

| | | | |
|----------------|---------------------------------------|------------|------------------------------------|
| परिपूर्णमानसाः | மனதில் குறையென்ப தே இல்லாதவர்களாய் | महाध्वरे | பெரியதொரு யாகத் திலே |
| परे | ஸர்வோத்திருஷ்ட | साधु | நன்றாய் |
| धर्मपथे | தருமநெறியில் [மான | हुताः | ஆஹுதிகள் செய்யப் பட்டு |
| स्थिताः | அசஞ்சல ஆஸக்தி கொண்டவர்களாய் | समिद्धाः | புகையின்றிக்கொழுந் துண்டொரியும் |
| श्रिया | அமானுவத்யசக்தியால் | त्रयः | மூன்று |
| वृताः | எதையும் செய்து முடித்துவர்களுமான | अथयः | அக்கினிகள் |
| सयः | மூவர்களும் | इव | என |
| कालं | காலத்தை | दीप्ततेजसः | தேஜோமயமாய் |
| विहृत्य | கழித்துக்கொண்டு | | ஜ்வலித்தார்கள். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे द्र्युत्तरशततमः सर्गः ॥



ज्युत्तरशततमः सर्गः—நூற்றுமூன்றாவது ஸர்க்கம். || 103 ||

कालंहद्रागमनम्—காலருத்திரன் வருவது.

कस्य चित्त्वथ कालस्य रामे धर्मपथे स्थिते । कालस्तापसरूपेण राजद्वारमुपागमत् ॥१॥

| | | | |
|-----------|---------------------------------------|-----------|--------------------------------|
| रामे | ஸ்ரீராமர் | अथ | பிறகு |
| धर्मपथे | தருமநெறியில் | कालः | காலருத்திரமூர்த்தி |
| स्थिते तु | அசஞ்சல ஆஸக்தியுட னிநந் துவருகையில் | तापसरूपेण | தபசுவேஷத்தை தரித்துக்கொண்டு |
| कस्यचित् | சில | राजद्वारं | அரண்மனை வாயிலில் |
| कालस्य | காலத்திற்கு | उपागमत् | வந்துசேர்ந்தார் |

सौब्रवील्लक्ष्मणं वाक्यं धृतिमन्तं यशस्विनम् । मां निवेदय रामाय संप्राप्तं कार्यगौरवात् ॥
दूतोऽस्म्यतिबलस्याहं महर्षेरमितौजसः । रामं दिदृक्षुरायातः कार्येण हि महाबल ॥ ३ ॥

| | | | |
|-----------|-------------------------------|--------------|----------------------------------|
| सः | அவர் | महर्षेः | பிரம்மதேவருடைய |
| धृतिमन्तं | நிச்சலபுத்தியுடையவ ரென | दूतः | தூதனாய் |
| यशस्विनं | மகாபுகழ்பெற்றவரா கிய | कार्येण | ஒரு காரியமாய் |
| लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரைப் பார்த்து | रामं | ஸ்ரீராமரை |
| वाक्यं | இந்த மொழியை | दिदृक्षुः | நேரில் பார்க்கவேண் டியவனாய் |
| अब्रवीत् | சொன்னார்: | कार्यगौरवात् | காரியத்தின் கௌர வானே [வத்தால் |
| महाबल | “அதிசாமர்த்திய சாலியே! | अहं हि | இங்குவந்திருக் கிறேன். |
| अतिबलस्य | ஸர்வவல்லவரும் | आयातः अस्मि | ராமாய என்னை |
| अमितौजसः | ஸர்வஸருஷ்டிகர்த் தாவுமாகிய | संप्राप्तं | வந்திருக்கிறதாய் |
| | | निवेदय | நீ அறிவி.” |

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा सौमित्रिस्त्वरयाऽन्वितः । न्यवेदयत रामाय तापसं तं समागतम् ॥

| | | | |
|-----------|----------------|----------|-----------------------------|
| सौमित्रिः | லக்ஷ்மணர் | तं | அந்த |
| तस्य | அவரது | तापसं | தவசி |
| तत् वचनं | அம்மொழியை | समागतं | வந்துகாத்திருப்பதை |
| श्रुत्वा | சிரமேற்கொண்டு | रामाय | ஸ்ரீராமரிடம் |
| त्वरया | அவசரகாரியமாய் | न्यवेदयत | இப்படி அறிக்கை செய்தார்: |
| अन्वितः | மனத்திற்கொண்டு | | |

जयस्व राम धर्मेण उभौ लोकौ महाद्युते । दूतस्त्वां द्रष्टुमायातस्तपसा भास्करप्रभः ॥५॥

| | | | |
|-----------|---------------------------------------|-------------|--|
| महाद्युते | “महुरावैववसाली याकिय | तपसा | தவத்தின் மகிமைமால் |
| राम | ஸ்ரீராம! | भास्करप्रभः | { சூரியன்போன்ற ஒளி கொண்டுவிளங்கு கின்ற |
| धर्मेण | தருமத்தையே கடை ப்பிடித்திருப்பதால் | दूतः | ஒரு தூதர் |
| लोकौ | இஹலோகம் பரலோகம் | स्वां | தேவரீரை |
| उभौ | இரண்டிலும் [ஆகிய | द्रष्टुं | தரிசிக்க |
| जयस्व | ‘ஜயவிஜயீபவ.’ | आयातः | வந்திருக்கின்றார்.” |

तद्वाक्यं लक्ष्मणेनोक्तं श्रुत्वा राम उवाच ह । प्रवेश्यतां मुनिस्तात महौजास्तस्य वाक्यधृतम् ॥

| | | | |
|--------------|------------------------------|---------------|--------------------------------|
| लक्ष्मणेन | லக்ஷ்மணரால் | रामः | ஸ்ரீராமர் |
| उक्तं | சொல்லப்பட்ட | उवाच | இப்படி நியமித் தருளினார் : |
| तत् वाक्यं | அம்மொழிக்கு | तात | “குழந்தாய் : |
| श्रुत्वा | திருச்செவியாய்த்து | मुनिः | முனிவர் |
| तस्य | அவருடைய | प्रावेश्यताम् | உள்ளே அழைத் துவரப்பட்டும்.” |
| वाक्यधृतम् ह | விண்ணப்பத்தை அறிந்தவராய், | | |
| महौजाः | மஹாமஹிமை பெற் றவராகிய | | |

सौमित्रिस्तु तथेत्युक्त्वा प्रावेशयत तं मुनिम् । स्वलन्तमिव तेजोभिः प्रदहन्तमिवांशुभिः ॥

| | | | |
|--------------|----------------------------------|------------|--------------------------------------|
| सौमित्रिः | லக்ஷ்மணர் | शंशुभिः | ஒவ்வொரு அவயவங் களின் ஒளிகளால் |
| तथा | “அப்படியே செய் | उरलन्तं इव | சூரியபகவானப் போ லிருக்கின்றவருமான |
| इति | என்று [கிறேன்” | मुनिं | முனிவேஷம் பூண் டிருந்த |
| उक्त्वा | சொல்லிவிட்டு, | तं | அவரை |
| सु | உடனே | प्रावेशयत | உள்ளே எழுந்தருளச் செய்தார். |
| तेजोभिः | தெய்வங்களுக்கூரிய பிரபைகளால் | | |
| प्रदहन्तं इव | அக்னியைப் போலிரு க்கின்றவரும் | | |

सोऽभिगम्य रघुश्रेष्ठं दीप्यमानं स्वतेजसा । ऋषिर्धुरया वाचा वर्षस्वेत्याह राघवम् ॥८॥

| | | | |
|-------------|----------------------------------|-------------|----------------------------------|
| ऋषिः | முனிவேஷம் பூண் | राघवं | ஸ்ரீராகவரை |
| सः | அவர் [டிருந்த | अभिगम्य | தரிசித்து |
| रघुश्रेष्ठं | ராகுசுலதிலகரும் | वर्षस्व इति | “பல்லாண்டு பல்லா ண்டு” என்கிற |
| स्वतेजसा | பிறவிக்குணை தெய்வத் தன்மையால் | मधुरया | மதுரமான |
| दीप्यमानं | தேஜோமயமாய் விளங் குபவருமான | वाचा | சொற்கொண்டு |
| | | आह | வாழ்த்தினார். |

तस्मै रामो महातेजाः पूजामर्घ्यपुरोगमाम् । ददौ कुशलमव्यग्रं प्रष्टुमेवोपचक्रमे ॥ ९ ॥

| | | | |
|----------------|--|----------------|-----------------|
| महातेजाः | மகாதேஜோவானாகிய | பூஜா | வந்தன வழிபாட்டை |
| रामः | ஸ்ரீராமர் | ददौ | செய்தருளினார். |
| तस्मै | அவருக்கு | कुशलं प्रष्टुं | குசலத்தை வினாவ |
| अर्घ्यपुरोगमां | } அர்க்கியம் முதலிய வைகளை முதலில் செய்து | अव्यग्रं एव | எற்ற ஸமயத்தையே |
| | | उपचक्रमे | எதிர்பார்த்துக் |
| | | | காத்தாநின்றனர். |

पृष्टश्च कुशलं तेन रामेण वदतां वरः । आसने काञ्चने दिव्ये निषसाद महायशाः ॥

| | | | |
|---------|---|--------|-----------------|
| वदतां | { தெய்வதேஜஸைப் பெற்று விளங்குகிற வர்களில் | दिव्ये | திவ்யமான |
| वरः | உத்தமரான | आसने | ஓர் ஆஸனத்தில் |
| महायशाः | பிரசித்திபெற்றவரா கிய அவர் | निषसाद | எழுந்தருளினார். |
| काञ्चने | ஸ்வர்க்கத்தாரலியற்றப் பட்ட | च | அதன்பின்னர் |
| | | तेन | அந்த |
| | | रामेण | ஸ்ரீராமரால் |
| | | कुशलं | குசலம் |
| | | पृष्टः | வினாவப்பட்டார். |

तमुवाच ततो रामः स्वागतं ते महामुने । प्रापयस्व च वाक्यानि यतो दूतस्त्वमागतः ॥

| | | | |
|---------|--|------------|-----------------------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | त्वं | தேவரீர் |
| ततः | அப்பொழுது | यतः | எவரிடமிருந்து |
| तं | அவரைப் பார்த்து | दूतः | தூதுகொண்டுவந்த வராய் |
| उवाच | திருவாய்மலர்ந்தருளி னார் : | आगतः | எழுந்தருளியிருக் கின்றீர் ? |
| महामुने | “உள்ளத்திலுள்ளதை அறியும் மஹானே ! | वाक्यानि च | சொல்லியனுப்பிய ஸமாசாரங்களையும் |
| ते | தேவரீர் | प्रापयस्व | நியமித்தருள்க.” |
| स्वागतं | { நன்மனத்துடன்நான் செய்யும் மரியாதை யை ஏற்றுக்கொள்ள வேண்டும். | | |

चोदितो राजसिंहेन मुनिर्वाक्यमभाषत । दन्द्रमेतत्प्रवक्तव्यं हितं वै यद्यवेक्षसे ॥ १२ ॥

| | | | |
|-----------|---------------------------------|--------------|---|
| राजसिंहेन | ராஜோத்தமரால் | अवेक्षसे | தேவரீர் திருவுள்ளத் தில் பற்றியுக்கிறீர் |
| चोदितः | வினாவப்பட்டவராகிய | यदि | என்கிற பகஷத்தில் |
| मुनिः | முனிவேஷம் தரித் திருந்த அவர் | एतत् | இது |
| वाक्यं | இந்த மொழியை | दन्द्रं | நாமிருவரும் தனியே இயக்கையில் |
| अभाषत | திருவாய்மலர்ந் ந்தயுளினார் : | प्रवक्तव्यम् | பிரஸ்தாபிக்கத் தக்கது”. |
| हितं वै | “நன்மை புரிதலையே | | |

यः शृणोति निरीक्षेद्वा स वध्यो भविता तव । भवेद्वै मुनिमुख्यस्य वचनं यद्यपेक्षसे ॥

| | | | |
|--------------|--|---------------|--------------------------------|
| मुनिमुख्यस्य | { “உள்ளத்திலுள்ளதை உள்ளபடி அறிவதில் முதல்வருடைய (பிர ம்மதேவருடைய) | यः | மற்றொவனேனும் ஒருவன் |
| वचनं | விண்ணப்பத்தை | शृणोति | கேட்டாலும் சரி |
| अपेक्षसे | தேவரீர் செவிகொள் ள இஷ்டப்படுகின்றீர் | निरीक्षेत् वा | பார்த்தாலும் சரி |
| यदि | என்கிறபக்கத்தில் | सः | அவன் |
| | | तव | தேவரீரால் |
| | | भविता वध्यः | மரணதண்டனைக்குப் பாத்திரனாய் |
| | | भवेत् | ஆகவேண்டும் ”. |

स तथेति प्रतिज्ञाय रामो लक्ष्मणमब्रवीत् । द्वारि तिष्ठ महाबाहो प्रतिहारं विसर्जय ॥१४॥

| | | | |
|------------|-------------------------|-----------|---------------------|
| सः रामः | அந்த ஸ்ரீராமர் | अब्रवीत् | இப்படி நியமித்தருளி |
| तथा इति | அங்ஙனமே செய்வ தாய் | महाबाहो | “மஹாபாகுவே! [ஸ்ரீ: |
| प्रतिज्ञाय | ஏற்றுக்கொண்டுவிட்டு | प्रतिहारं | வாயிலோனை |
| लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரைப் பார்த்து | विदर्जय | விடைகொடுத்தனுப் |
| | | द्वारि | வாயிலில் [பிவிட்டு |
| | | तिष्ठ | நீ காவல் காத்திரு. |

स मे वध्यः खलु भवेत्कथाद्वन्द्वं समीरितम् । ऋषेर्मम च सौमित्रे पश्येद्वा शृणुयाच्च यः ॥

| | | | |
|--------------|---|------------|--------------------------------|
| सौमित्रे | “லக்ஷ்மண! | यः च | மற்றவனெவனேனு மொருவன் |
| मम च | எனக்கும் | शृणुयात् | கேட்டாலும்சரி |
| ऋषेः | ரிஷிக்கும் | पश्येत् वा | பார்த்தாலும்சரி |
| समीरितं | இப்போது ஏற்பட்டி ருக்கின்றதாகிய | सः | அவன் |
| | | मे | எனது |
| कथाद्वन्द्वं | { நாங்கள் இருவர் மட் டும் இருந்து செய்யும் ஸம்பாஷணையை | वध्यः | மரணதண்டனைக்குப் பாத்திரனாய் |
| | | भवेत् खलु | ஆகியே தீரவேண்டும்.” |

ततो निक्षिप्य काकुत्स्थो लक्ष्मणं द्वारि संग्रहम् । तमुवाच मुने वाचयं कथयस्वेति राघवः ॥

| | | | |
|------------|---------------------------------|--------|-----------------------------|
| काकुत्स्थः | காகுத்ஸ்தர் | राघवः | ஸ்ரீராகவர் |
| लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணனை | तं | அவரைப்பார்த்து |
| द्वारि | வாயிலில் | इति | இப்படி |
| संग्रहं | காவல் காத்திருக்கும் படியாய் | उवाच | திருவாய்மலர்ந்தருளி |
| | | मुने | “முனிவரே! [ஸ்ரீ: |
| निक्षिप्य | பொறுப்புக் காட்டி விட்டு | वाचयं | நியமனத்தை |
| ततः | அதன்மேல் | कथयस्व | தேவரீர் சொல்லியரு ளலாம். |

यत्ते मनीषितं वाक्यं येन वाऽसि समाहितः । कथयस्वाविशङ्कस्त्वं ममापि हृदि वर्तते ॥

ते “அவரது
மனிஷிதம் திருவுள்ளமாகிற
வாக்யம் நியமனமானது
யத் எதுவோ அது
மம அபி என்னுடையவும்
ஹ்ரி இருதயத்தில்
வர்த்தே இருக்கிறது

येन என்கிறபடியால்
अविशङ्कः वा மனதில் எதுவும் ஒளி
समाहितः மனதில் படபடப்பு
असि இல்லாதவராகவும்
कथयस्व ஆகிறீர்.
सोऽल्लियन्तुள் சொல்லியருள்
वीराकः”

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे ऽयुत्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23834



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 3110

चतुस्तरशततमः सर्गः—நூற்றுநாலாவது ஸர்க்கம். ॥ १०४ ॥

ब्रह्मसन्देशकथनम्—பிரம்மாவின்னுடைய ஸந்தேசத்தைத் தெரிவிப்பது.

शृणु राजन्महासच्व यदर्थमहमागतः । पितामहेन देवेन प्रेषितोऽसि महाबल ॥ १ ॥

पितामहेन देवेन “பிரம்மதேவரால்
प्रेषितः இவ்விதம் அனுப்பப்
अरिम நான். [பட்டவன்
महाबल சலியாக
महाऽस्व தர்மநெறியிலேயே
राजन् சக்கிரவர்த்தியாரே!
இருக்கும்

अहं நான்
आगतः இங்கு வந்திருக்கிறது
यदर्थं எந்த கார్యத்திற்கு
कालवो अतः
शृणु { சொல்லும் எனக்குத்
திருச்செவ்வியத்த
ருள்க.

तवाहं पूर्वके भावे पुत्रः परपुरञ्जय । मायासम्भावितो वीर कालः सर्वसमाहरः ॥ २ ॥

परपुरञ्जय “தெய்வசத்ருக்களின்
சம்ஹாரகராகிய
वीर ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணுவே!
पूर्वके முந்திய
भावे ஏற்பாட்டில்
अहं நான்

तव தேவரீரது
पुत्रः புதல்வனாய்
सर्वसमाहरः ஸகலத்தின் ஸம்
ஹாரகர் த்தாவாய்
कालः யமனென
मायासंभावितः தெய்வசக்தியால்
படைக்கப்பட்டவன்.

पितामहश्च भगवानाह लोकपतिः प्रभुः । समयस्ते कृतः सौम्य स्वाँल्लोकान्परिरक्षितुम् ॥

लोकपतिः “ஸகல்லோகஸ்ருஷ்டி
கர்த்தாவும்
प्रभुः மகா சாமர்த்தியசாலி
भगवान् च பகவானுமாகிய [யும்
पितामहः பிரம்மதேவர்
आह இப்படி சொல்லிய
सौम्य னுப்பியிருக்கிறார்:
‘पुण्यात्मावो!

ते தேவரீருக்கு
स्वान् தனது
लोकान् உலகங்களை
परिरक्षितुं நேரில் ஆண்டு பரிபா
समयः லீத்துவருகிறதற்கு
कृतः நிஷ்கர்ஷிக்கப்பட்ட
முடிந்துவிட்டது.
காலமானது

संक्षिप्य हि पुरा लोकान्मायया स्वयमेव हि । महार्णवे शयानोऽप्सु मां त्वं पूर्वमजीजनः॥

| | | | |
|----------|------------------|-----------|-------------------------|
| पुरा | “பூர்வம் | लोकान् हि | லோகங்கள் எல்லாவற்றையும் |
| महार्णवे | பெருங்கடலில் | स्वयं एव | தன் உதரத்துக்குள் |
| अप्सु | ஐலத்தில் | संक्षिप्य | எனையே |
| शयानः | பள்ளிகொண்டிருந்த | मां हि | அடக்கிக்கொண்டு |
| एवं | தேவரீர் | पूर्वं | என்னையே |
| मायया | திவ்யசக்தியால் | अजीजनः | முதலில் |
| | | | ஸ்ருஷ்டித்தருளினீர். |

भोगवन्तं ततो नागमनन्तमुदकेशयम् । मायया जनयित्वा त्वं द्वौ च सखौ महाबलौ ॥
मधुं च कैटभं चैव ययोरस्थिचयैर्वृता । इयं पर्वतसम्बाधा मेदिनी चाभवन्मही ॥ ६ ॥

| | | | |
|-------------------|------------------------------------|--------------|---|
| ततः | “அதன்மேல் | एवं | தேவரீர் |
| उदकेशयं | ஐலத்தில் படுக்துக் கொண்டிருப்பதும் | जनयिःवा | சுருஷ்டித்தருளியபின் |
| भोगवन्तं च अनन्तं | சுகம்தருவதுமாகிய திருவனந்தமெனும் | इयं मही | இந்த உலகானது |
| नागं च महाबलौ | ஆதிசேஷனையும் மகாபலிஷ்டர்களான | ययोः | அந்த இந்த இருவர் களுடைய |
| मधुं च कैटभं एव | மதுவும் கைடபன் எனப்படுகிறவனுமாகிய | अस्थिचयैः | உடம்புகளில் எனும்பு முதலிய சருமங்களால் |
| | | वृता | ஏற்பட்டதாய் |
| | | पर्वतसम्बाधा | பர்வதங்களால் மேடு பள்ளமாகவும் |
| द्वौ | இரண்டு | मेदिनी च | { புல், பூண்டுமுதலிய வைகள் முளைக்கக்கூடிய சமபூமியாகவும் |
| सखौ | அசுரர்களுக்கும் | अभवत् | ஆயிற்று. |
| मायया | திவ்யசக்தியால் | | |

पञ्चे दिव्यैर्ऋक्सङ्काशे नाभ्यामुत्पाद्य मामपि । प्राजापत्यं त्वया कर्म मयि सर्वं निवेशितम् ॥

| | | | |
|---------------|---------------------|-------------|---------------------------------|
| मां अपि | “என்னையும் | त्वया | தேவரீரால் |
| नाभ्यां | நாபியிலிருந்து | प्राजापत्यं | பிராஜபத்திய |
| दिव्ये | திவ்யமாய் | कर्म | தொழில் |
| अर्ऋक्सङ्काशे | ஜோதிமயமாய் விளங்கிய | सर्वं | எல்லாமும் |
| पञ्चे | தாமரை மலரில் | मयि | என்னிடத்தில் |
| उत्पाद्य | ஸ்ருஷ்டித்தருளி | निवेशितम् | பொறுப்புச்சாட்டி வைக்கப்பட்டது. |

सोऽहं संन्यस्तभारो हि त्वामुपासे जगत्पतिम् । रक्षां विधत्स्व भूतेषु मम तेजस्करो भवान्॥

| | | | |
|-----------------|--|----------|-------------|
| संन्यस्तभारः हि | { “பொறுப்புச்சாட்டப் பெற்ற பாரத்தை வகிக்கும் | जगत्पतिं | ஐகத்தியாகிய |
| सः अहं | அந்த நான் | त्वां | தேவரீரை |
| | | भवान् | ‘தேவரீர் |

மம எனக்கு
 तेजस्करः வேண்டிய சக்தியை
 அளிக்கின்றவராகவும்
 सूतेषु { தேவதைகள், மானி
 டர்கள் இவர்கள் விஷ
 யத்திலும் ஸ்தாவரங்
 கள் விஷயத்திலும்,

रक्षां பாதுகாக்கும்
 विघ्नस्व தொழிலை
 उपसे அளிக்கத்திருவுள்ள
 பிரங்கவேண்டுமென
 பரஸமர்ப்பணம் பண்
 ணிப் பார்த்தித்தேன்.

ततस्त्वमपि दुर्धर्षात्साम्राज्ञावात्सनातनात् । रक्षार्थं सर्वभूतानां विष्णुत्वमुपजग्मिवान् ॥९॥

ततः “ஆனதுபற்றி
 त्वं தேவரீர்
 तस्मात् அந்த
 दुर्धर्षात् மனோவாக்குக்கு
 எட்டாததும்
 सनातनात् } காலதேசவஸ்துக்க
 अपि } ளால் அளவிடமுடி
 யாததுமான

भावात् ஆதிஸ்வரூபத்தில்
 நின்று
 सर्वभूतानां { ஸகல தேவதைகளு
 டையவும் மானிடர்
 களுடையவும் ஸ்தா
 வரங்களுடையவும்
 रक्षार्थं பாதுகாப்பிற்காக
 विष्णुत्वं மஹாவிஷ்ணுவாக
 उपजग्मिवान् வந்துதோன்றினீர்.

अदित्यां वीर्यवानुपुत्रो भ्रातृणां वीर्यवर्धनः । समुत्पन्नेषु कृत्येषु तेषां साहाय्य कल्पसे ॥

अदित्यां “அதிதியினிடத்தில்
 वीर्यवान् மஹா வீர்யமுடைய
 पुत्रः புதல்வனாகி
 तेषां அந்த
 भ्रातृणां பிராதாக்களுக்கு
 समुत्पन्नेषु அப்போதைக்கப்
 போது ஸம்பவிக்கும்

इत्येषु கிருத்யங்களில்
 साहाय्य உதவிசெய்ய
 वीर्यवर्धनः வீர்யத்தை வளரச்
 செய்கின்றவராய்
 कल्पसे தேவரீர் காத்தரு
 ளினீர்.

स त्वं विन्नास्यमानासु प्रजासु जगतां वर । रावणस्य वधाकाङ्क्षी मानुषेषु मनोऽदधाः ॥

जगतां “பிரபஞ்சங்களுக்கு
 கெல்லாம்
 वर மேம்பட்டவரே!
 मानुषेषु மனிதர்களும்
 प्रजासु பிரஜைகளும்
 विन्नास्यमानासु அஞ்சி நடுங்கிக்
 கிடக்கையில்

सः त्वं அந்ததேவரீர்
 रावणस्य ராவணனுடைய
 वधाकाङ्क्षी வதத்தை எண்ணின
 வராய்
 मनः திருவுள்ளத்
 திலிருந்ததை
 अदधाः வெளியிட்டருளினீர்.

दश वर्षसहस्राणि दश वर्षशतानि च । कृत्वा वासस्य नियतिं स्वयमेवात्मना पुरा ॥

पुरा “அப்பொழுதே
 आत्मना एव தேவரீராலேயே
 स्वयं தனது அபிப்பிராய
 மாய்
 वासस्य பூலோகத்தில் வலிப்
 दश பத்து [பதற்கு

वर्षसहस्राणि ஆயிரமாண்டுகளும்
 दश பத்து
 वर्षशतानि च நூறு ஆண்டுகளென
 नियतिं कृत्वा { காலநிர்ணயத்தின்
 எல்லை காணப்பட்ட
 டிருக்கிறது.

स त्वं मनोमयः पुत्रः पूर्णायुर्मानुषेष्विह । कालो नरवरश्रेष्ठ समीपमुपवर्तितुम् ॥ १३ ॥

மனோமய: { “ஆத்தமார் த்தமா னா,
உலகிற்கு சம்பந்த
மில்லாத

புத்: புத்திரராகிய
ச: அந்த தேவரீர்
ஐஹ இவ்வுலகில்
மானுஷு மானிடர்களிடத்தில்

यदि भूयो महाराज प्रजा इच्छस्युपासितुम् ।

பிதாமஹ: பிரம்மதேவர்
ஏவ் இப்படியும்
ஆஹ விண்ணப்பம்

செய்தார் :

மஹாராஜ “எல்லோரையுமானும்
வீர ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணுவே!

अथवा विजिगीषा ते सुरलोकाय राघव । सनाथा विष्णुना देवा भवन्तु विगतञ्ज्वराः ॥

ராஹவ “ஹே ராகவ!
வா அல்லது
தேவரீருடைய
சுரலோகாய தேவலோகத்திற்கு
விஜிगीषா அथ தலைமையாபிருக்கத்
திருவுள்ளமென்றால்

श्रुत्वा पितामहेनोक्तं वाक्यं कालसमीरितम् ।

பிதாமஹேந பிரம்மதேவரால்
உக்த் சொல்லியனுப்பப்
பட்டதும்
காலசமீரித் யமனால் கூறப்பட்ட
டதுமான
வாக்யம் விண்ணப்பத்திற்கு
श्रुत्वा திருச்செவியசய்தக
ராஹவ: ஸ்ரீராகவர்

श्रुत्वा मे देवदेवस्य वाक्यं परममद्भुतम् । प्रीतिर्हि महती जाता तवागमनसम्भवा ॥ १७ ॥

தேவதேவச्य “பிரம்மதேவருடைய
பரம் மிக்க
அद्भुतம் உத்தமமான
வாக்யம் மொழியை
श्रुत्वा हि கேட்டதாலும்
तव உனது

पूर्णाया: { வலிக்கவேண்டிய ஆ
புள்ளவு ஸ்ரீநாமாக்கி
விட்டது.

नरवरश्रेष्ठ ஹே புருஷோத்தம!
उपवर्तितुम् திரும்பி எழுந்தருளு
வதற்கு

काल: ஏற்காலமானது
समीपम् நெருங்கிவிட்டது”

वस वा वीर भद्रं त एवमाह पितामहः ॥

தேவரீருக்கு மங்கள
முண்டாகட்டும்.

भूय: இன்னும்
प्रजा: பிராணிகளை

उपासितुं நேரில் பரிபாலிக்க

इच्छसि यदि वा திருவுள்ளமாயின்
वस தங்கியிருக்கலாம்.

देवाः - தேவர்கள்

विष्णुना ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணு
வால்

सनाथा: பாதுகாக்கப்பட்ட
டவர்களாய்

विगतञ्ज्वरा: மனக்கவலையற்றவர்

भवन्तु ஆவார்கள்.” [களாய்

राघवः प्रहसन्वाक्यं सर्वसंहारमब्रवीत् ॥

सर्वसंहारं { ஸர்வஸம்ஹாரகாரப்
பார்த்து (யமனைப்
பார்த்து)
प्रहसन् புன்னகைசெய்தருளி,
वाक्यं இந்த மொழியை
अब्रवीत् திருவாய்மலர்ந்தருளி

आगमनसम्भवा

வரவால் ஏற்பட்டது
மான

प्रीति: ஸந்தோஷமானது

मे எனக்கு

महती அதிகமாய்

जाता உண்டாகியிருக்கிறது.

त्रयाणामपि लोकानां कार्यार्थं मम सम्भवः । भद्रं तेऽस्तु गमिष्यामि यत एवाहमागतः ॥

त्रयाणां “மூன்று
 लोकानां अपि உலகங்களுக்கும்
 कार्यार्थं { ஆகவேண்டிய காரியத்
 தை முடிப்பதின்
 பொருட்டு
 மம சம்பவ: எனது அவதாரம்.

अहं आगतः நான் வந்தது
 यतः एव எவ்விடத்திலிருந்தோ
 गमिष्यामि அவ்விடத்திற்கே
 ते भद्रं अस्तु திரும்பிவருகிறேன்.
 நீ வந்த காரியம் நல்ல
 தாய் முடியட்டும்.

हृद्गतो ह्यसि सम्प्राप्तो न मे तत्र विचारणा । मया हि सर्वकृत्येषु देवानां वशवर्तिना ॥

स्थितव्यं सर्वसंहार यथा ह्याह पितामहः

सर्वसंहार “ஸர்வஸம்ஹாரத்
 தொழிற்குரியவனே!

पितामहः நான் முகன்
 आह சொல்லியனுப்பியிருக்
 கிறது

यथा हि எதுவோ அது அப்
 படியே

संप्राप्तः தருமஸம்பிரதாயத்
 திற்கு ஒத்தவராயும்

मे எனது

हृद्गतः எண்ணத்திலிருப்பவ
 ராகவும்

॥ १९ ॥

हि असि இருக்கிறீர்.
 तव இவ்விஷயத்தில்

विचारणा न ஆலோசனை செய்ய
 வேண்டாம்.

सर्वकृत्येषु எல்லாக்காரியங்களி
 லும்

देवानां தேவதைகளுடைய

वशवर्तिना இஷ்டப்படி நடக்கும்

मया என்னால்

स्थितव्यं हि ஏற்றுக்கொள்ளப்பட
 வேண்டியதே.”

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे चतुस्त्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23853



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 3129

पञ्चोत्तरशततमः सर्गः—நூற்றைந்தாவது ஸர்க்கம். ॥ १०५ ॥

दुर्वासस्समागमः—தூர்வாஸமுனி வருவது.

तथा तयोः संवदतोर्दुर्वासा भगवानृषिः । रामस्य दर्शनाकाङ्क्षी राजद्वारमुपागमत् ॥१॥

तथा அவ்வண்ணம்
 तयोः அவ்விருவர்களும்

संवदतो: ஸம்பாஷணை செய்து
 கொண்டிருக்கையில்

भगवान् மகா பூஜார்ஹராகிய
 दुर्वासा: தூர்வாஸ

ऋषिः முனிவர்
 रामस्य ஸ்ரீராமரது

दर्शनाकांक्षी ஸன்னிதானத்தைக்
 கோரியவராய்

राजद्वारं அரண்மனை வாயிலில்
 उपागमत् வந்துசேர்ந்தார்.

सोऽभिगम्य तु सौमित्रिमुवाच ऋषिसत्तमः ॥ २ ॥

सः அந்த
 ऋषिसत्तमः முனிவர் பெருமான்
 सौमित्रि: ஸுமீத்ராதேவியா

ரின்புதல்வரை

तु அப்பொழுது
 अभिगम्य அங்கிருக்கக்கண்டு
 उवाच இப்படி ஆக்ரூபித்
 தார்:

रामं दर्शय मे शीघ्रं पुरा मेऽर्थोऽतिवर्तते

॥ ३ ॥

मे “எனது
 अर्थः कारியம்
 अतिवर्तते இப்பொழுதே தாமத
 ப்பட்டிருக்கிறது.

पुरा முதலில்
 शीघ्रं உடனே
 रामं ஸ்ரீராமரை
 मे எனக்கு
 दर्शय காட்டுக.”

मुनेस्तु भाषितं श्रुत्वा लक्ष्मणः परवीरहा । अभिवाद्य महात्मानं वाक्यमेतदुवाच ह ॥४॥

परवीरहा மற்றொரு விஷ்ணு
 அவதாரமாகிய
 लक्ष्मणः லக்ஷ்மணர்
 मुनेः முனிவரது
 भाषितं மொழிக்கு
 श्रुत्वा திருச்செவியாய்த்து

तु இப்பொழுது
 महात्मानं ह மஹாத்மாவையே
 பார்த்து
 अभिवाद्य அடிபணிந்து வணங்கி
 एतत् இந்த
 वाक्यं மொழியை
 उवाच புகன்றார்:

किं कार्यं ब्रूहि भगवन्को वाऽर्थः किं करोम्यहम् ।

व्यग्रो हि राघवो ब्रह्मन्मुहूर्तं प्रतिपालयताम्

॥ ५ ॥

ब्रह्मन् “வேறு பிரம்மன்!
 राघवः ஸ்ரீ ராகவர்
 व्यग्रः வேறு ஒரு காரியமாயி
 ருக்கிறார்.
 हि ஆகையால்
 मुहूर्तं ஒரு முகூர் த்தகாலம்
 प्रतिपालयतां தாமதிக்கவேண்டிய
 ருக்கிறது.
 भगवन् ஸ்வாமி!
 कार्यं ஆகவேண்டிய காரியம்

किं என்ன?
 अर्थः விஷயத்தின் பிரபாவம்
 कः எத்தன்மையது?
 वा அல்லது
 अहं அடியேன்
 करोमि இப்பொழுது செய்ய
 த்கருவது
 किं யாதேனுமுளதோ?
 ब्रूहि தேவரீர் ஆக்ரூபித்
 தருள்க.”

तच्छ्रुत्वा ऋषिशार्दूलः क्रोधेन कलुषीकृतः ।

उवाच लक्ष्मणं वाक्यं निर्दहन्निव चक्षुषा ॥

तत्र श्रुत्वा அதற்குச் செவியாய்த்
 து
 ऋषिशार्दूलः முனிவர் பெருமான்
 क्रोधेन கோபத்தினால்
 कलुषीकृतः மெய்மறந்தவராய்

लक्ष्मणं லக்ஷ்மணரைப்
 चक्षुषा கண்ணால் [பார்த்து
 निर्दहन् इव கொளுத்துகின்றவர்
 போலாகி
 वाक्यं இந்த மொழியை
 उवाच மொழிந்தனர்:

अस्मिन्क्षणे मां सौमित्रे रामाय प्रतिवेदय

॥ ७ ॥

सौमित्रे “வேறு வெளயித்தோ!
 अस्मिन् இந்த
 क्षणे நிமிஷமே

रामाय ஸ்ரீராமர் முன்னிலை
 मां என்னை [யில்
 प्रतिवेदय கொண்டுவரப்பெய்தி
 வாயாக

अस्मिन्क्षणे मां सौमित्रे न निवेदयसे यदि । विषयं त्वां पुरं चैव शपिष्ये राघवं तथा ॥
भरतं चैव सौमित्रे युष्माकं या च सन्ततिः ॥ ८ ॥

சௌமீ
அஸிமந்
க்ஷணே
மா
நிவேதயசே ந யதி
சௌமீ
த்வாं ச

“ஹே ஸௌமித்ரே!
இந்த
நிமிஷமே
என்னை
நீ கொண்டுபோய்விடா
என்றால்
ஹே ஸௌமித்ரே!
உன்னையும்

भरतं एव
राघवं तथा
युष्माकं
सन्ततिः
या च
पुरं च
विषयं एव
शपिष्ये

பாதனையும்
ராகவனையும்
உங்களது
ஸந்ததி
எதுவோ அதையும்
நகரையும்
நாட்டையும்
சபித்துவிடுவேன்.

न हि शक्ष्याम्यहं भूयो मन्युं धारयितुं हृदि । तच्छ्रुत्वा घोरसङ्काशं वाक्यं तस्य महात्मनः ॥
चिन्तयामास मनसा तस्य वाक्यस्य निश्चयम् ॥ ९ ॥

ஹி
அஹ்
ஹ்ரி
பூய:
மன்யு
தாரயித்
தக்ஷ்யாமி ந
தஸ்ய

“என்னில்
நான்
எதிலும் முக்கியமா
யுள்ளதில்
அதிகமாயுள்ள
சங்கடத்தை
பொறுத்துக்கொள்ள
முடியாமலிருக்கி
அந்த [மேன்.”

महात्मनः
घोरसङ्काशं
वाक्यं
श्रुत्वा
तत्
तस्य वाक्यस्य
निश्चयं
मनसा
चिन्तयामास

மஹானுபாவரது
கோபமான
மொழிக்கு
செவிசாய்த்து
அப்படியிருப்பதால்
அந்தச் சொல்லின்
கருத்தை
மனத்தில்
ஆலோசனை செய்தார்.

एकस्य मरणं मेऽस्तु मा भूत्सर्वविनाशनम् । इति बुद्ध्या विनिश्चित्य राघवाय न्यवेदयत् ॥

மே
ஔகஸ்ய
மரணம்
அஸ்து
சர்வவிநாசனம்
மா மூத்

‘என்
ஒருவனுக்கு
மாணம்
நேரிடுக.
ஸகலருக்கும்ழிவு
உண்டாகவேண்டாம்’

इति
बुद्ध्या
विनिश्चित्य
राघवाय
न्यवेदयत्

என்று
நுண்ணறிவால்
நிச்சயித்துக்கொண்டு
ராகவாய்
தெரிவித்தார்.

लक्ष्मणस्य वचः श्रुत्वा रामः कालं विसृज्य च । निसृत्य त्वरितं राजा अत्रेः पुत्रं ददर्श ह ॥

லக்ஷ்மணஸ்ய
வச:
श्रुत्वा
राजा
रामः
कालं

லக்ஷ்மணனது
விண்ணப்பத்திற்கு
திருச்செவிசாய்த்து
பிரபுவாகிய
ஸ்ரீராமர்
காலஞ்சாற்றி

विसृज्य च
त्वरितं
निसृत्य
अत्रेः
पुत्रं
ददर्श
ह

விடைகொடுத்தனுப்பி
சடக்கென [விட்டு
வெளியில் ஓடிவந்து
அத்திரியின்
புத்திரரை
கண்டார்
காண்!

सोऽभिवाद्य महात्मानं ज्वलन्तमिव तेजसा । किं कार्यमिति काकुत्स्थः कृताञ्जलिर्भाषत ॥

ச: அந்த
காகுத்த: காசுஸ்தர்
தேஜசா தேஜஸால்
ஜ்வலந்த் இவ அக்கினியென ஜ்வலி
ததுக்கொண்டிருக்கும்
மஹாத்மான் மஹாத்மாவை

அभिवाद्य வணங்கி அபிவாதனை
பண்ணி
कृताञ्जलिः அஞ்சலிஹஸ் தராய்
कार्यं “நியமனம்
किं என்ன?”
इति என்று
अभाषत கேட்டருளிஞர்.

तद्वाक्यं राघवेणोक्तं श्रुत्वा मुनिवरः प्रभुम् । प्रत्याह रामं दुर्वासाः श्रूयतां धर्मवत्सल ॥

ராஃவேண ஸ்ரீராகவரால்
உக்த் மொழியப்பட்டதா
தத் வாக்யம் அம்மொழிக்கு [கிய
श्रुत्वा திருச்செவி சாய்த்த
दुर्वासा: தூர்வாஸ
मुनिवरः முனிவர் பெருமான்
प्रभुं பிரபுவாகிய

रामं ஸ்ரீராமரைப்பார்த்து
प्रत्याह இப்படி பதிலுரைத்
தார்:
धर्मवत्सल “தர்மத்தில் சலியாத
வரே!
श्रूयताम् திருச்செவிசாய்க்க
பட்டும்.

अद्य वर्षसहस्रस्य समाप्तिस्तपसो मम । सोऽहं भोजनमिच्छामि यथासिद्धं तवानघ ॥

மம “எனது
वर्षसहस्रस्य ஆயிரம் வருஷங்களா
ய்ச்செய்துவந்த
तपसः தவத்திற்கு
अघ இப்பொழுது
समाप्तिः முடிவு ஏற்பட்டது.
अनघ புண்ணியாத்மாவே!

ச: அந்த
अहं நான்
तव தேவர்க்கு
यथासिद्धं பாகம்செய்யப்பட்டிரு
க்கிறதெனதுவோ அந்த
भोजनं போஜனத்தை
इच्छामि வேண்டுகின்றேன்.”

तच्छ्रुत्वा वचनं राजा राघवः प्रीतमानसः । भोजनं मुनिमुख्याय यथासिद्धमुपाहरत् ॥

ராஜா பிரபுவாகிய
ராஃவ: ஸ்ரீராகவர்
தத் அந்த
वचनं நியமனத்தை
श्रुत्वा எற்றுக்கொண்டு
प्रीतमानसः உள்ளம் குளிர்ந்தவ
ராகி

यथासिद्धं சமைக்கப்பட்டிருந்
தது எனதுவோ அந்த
भोजनं போஜனத்தை
मुनिमुख्याय முனிவர் பெருமா
னுக்கு
उपाहरत् அளித்தார்.

स तु श्रुत्वा मुनिश्रेष्ठस्तदन्ममृतोपमम् । साधु रामेति सम्भाष्य स्वमाश्रममुपागमत् ॥

ச: அந்த
मुनिश्रेष्ठः முனிவர் பெருமான்
अमृतोपमं அமிருதம்போலிருந்த

तत् அந்த
अन्नं அன்னத்தை
श्रुत्वा அருந்திவிட்டு

சு இப்பொழுது
 ராம “ஹீராம!
 சாசு திருப்புகொண்டேன்”
 இதி என்று

संभाव्य पुकழந்துவிட்டு
 स्वं தனது
 भाश्रमं ஆசிரமத்திற்கு
 उपागमत् எழுந்தருளிணர்.

तस्मिन्नाते मुनिवरे स्वाश्रमं लक्ष्मणाग्रजः । संसृत्य कालवाक्यानि ततो दुःखमुपागमत् ॥

तस्मिन् अந்த
 मुनिवरे முனிவர்பெருமான்
 स्वाश्रमं தமது ஆசிரமத்திற்கு
 गते போனபின்னர்
 लक्ष्मणाग्रजः லக்ஷ்மணனுக்குப்
 பெரியவர்

कालवाक्यानि காலருத்திரனது நிபந்
 தனைகளை
 संसृत्य நினைத்து
 ततः அதனால்
 दुःखं ஆயாசத்தை
 उपागमत् அடைந்தார்.

दुःखेन च सुसन्तप्तः स्मृत्वा तद्वोरदर्शनम् । अवाङ्मुखो दीनमना व्याहृतुं न शशाक ह ॥

तत् அப்படி
 धोरदर्शनं { ஸஹிக்கமுடியாத
 வண்ணமாய் சம்பவித்
 திருப்பதை
 स्मृत्वा நினைத்து
 दुःखेन துயரத்தினால்

दीनमना: மனவேதனைப்படு
 கின்றவராய்
 अवाङ्मुखः च தலைகீழ் நோக்கியவ
 ராயும்
 सुसन्तप्तः மிக்க தவிப்புண்டவ
 ராகி
 व्याहृतुं ह வாய்திறந்துபேசக்கூட
 शशाक न முடியாமலிருந்தார்.

ततो बुद्ध्या विनिश्चित्य कालवाक्यानि राघवः ।

नैतदस्तीति निश्चित्य तूष्णीमासीन्महायशाः ॥ १९ ॥

महायशाः மஹாயசஸ்னியாகிய
 राघवः ஹீராகவர்
 बुद्ध्या நுண்ணறிவைக்
 கொண்டு
 कालवाक्यानि காலருத்ரமூர்த்தியின்
 நிபந்தனைகளை
 विनिश्चित्य தானே முன்பின் ஆ
 லோசனைசெய்து

ततः அதனால்
 एतत् இது (மனவேதனைப்
 अस्ति न ஆகாது [படுவது]
 इति என்று
 निश्चित्य மனதில் உறுதிசெய்
 துகொண்டு
 तूष्णीं மௌனமாய்
 आसीत् இருந்தார்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे पञ्चोत्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23872

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 3148

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे एकत्रिंशोऽह्नि वर्तमानकथाप्रसङ्गः ॥

இவ்விதம் ஆதியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஹீராமர் வந்திரியில் அச்வமேத யாகசாலையில் கானம் செய்யப்பட்ட ஹீமத் ராமாயணத்தில் முப்பத்தோராவது தினத்தில் கானம் பண்ணப்பட்ட கதை முடிவுபெற்றது.



[புரா குராலவாஹ்யாं श्रीरामसन्निधावश्वमेधयज्ञवाटे द्वात्रिंशति दिनेषु गीते श्रीमद्रामायणे
द्वात्रिंशोऽह्नि उत्तरकाण्डे षडुत्तरशततमसर्गमारभ्य दशोत्तरशततमसर्गपर्यन्तं
(23873—24000 श्लोकाः) गीतम् । तस्मिन् दिने गीताः श्लोकाः 128]

[ஆதியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமஸந்நிதியில் அசுவமேதயாகசாலையில்
முப்பத்திரண்டு தினங்களில் கானம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில்
முப்பத்திரண்டாவது தினத்தில் உத்தரகாண்டத்தில் நூற்றாறாவது
ஸர்க்கம் முதல் நூற்றுப்பத்தாவது ஸர்க்கம் முடிய (23873—24000)
கானம் செய்யப்பட்டது. அன்று கானம் செய்யப்பட்ட சுலோக சங்கியை 128]

षडुत्तरशततमः सर्गः—நூற்றாறவது ஸர்க்கம். || १०६ ||

लक्ष्मणत्यागः, लक्ष्मणस्वर्गमनं च—லக்ஷ்மணனை இழப்பதும்
லக்ஷ்மணன் ஸ்வர்க்கமடைவதும்.

अवाञ्छुखमथो दीनं दृष्ट्वा सोममिवाप्युतम् । राघवं लक्ष्मणो वाक्यं हृष्टो मधुरमब्रवीत् ॥

| | | | |
|-----------|--|--|---|
| हृष्टः | { நடைபெற்றதெல்லாம் நியாயமென திரு வுள்ளத்திலுறுதி கொண்டிருந்த | आप्युतं सोमं इव दृष्ट्वा मधुरं | ராகுக்கிரஸ்தனை சந்திரனை போலிருப்பவாய் கண்டு துக்கசாந்தியை விளை விக்கத்தக்கதாகிய மயூர் |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | वाक्यं | இந்த மொழியை |
| अथो | அப்பொழுது | अब्रवीत् | திருவாய்மலர்ந்தருளி ரை : |
| राघवं | ஸ்ரீராகவரை | | |
| अवाङ्मुखं | தலைகுவிந்துகொண்டு | | |
| दीनं | விஷண்ணராய் | | |

न सन्तापं महाबाहो मदर्थं कर्तुमर्हसि । पूर्वनिर्माणवद्वा हि कालस्य गतिरीदृशी ॥ २ ॥

| | | | |
|-------------------|--------------------------|----------|-------------------------------------|
| महाबाहो | “ஹே மஹாபாஹோ! | हि | என்கிறபடியால் |
| कालस्य | காலத்தினுடைய | मदर्थं | அடியேனுக்காக |
| ईदृशी | இத்தன்மையான | सन्तापं | மனவேதனைக்கு |
| गतिः | கதி | कर्तुं | இடங்கொடுக்க |
| पूर्वनिर्माणवद्वा | பூர்வகர்மங்களின் பயன் | अर्हसि न | தேவரீர் திருவுள்ளம் கொள்ளலாகாது. |

जहि मां सौम्य विस्मयं प्रतिज्ञां परिपालय । हीनप्रतिज्ञाः काकुत्स्थ प्रयान्ति नरकं नराः॥

| | | | |
|---------------|---|-----------|--|
| सौम्य | “புண்பாத்தமாவாகிய | नराः | மனிதர்கள் |
| काकुत्स्थ | காகுத்தரே! | नरकं | நரகத்தை |
| प्रतिज्ञां | { வாக்களித்தவண்ண மே எனதையும் எப்ப வும் நிறைவேற்றுகி றதை | प्रयान्ति | அடைகிறார்கள். |
| परिपालय | தேவரீர் பற்றியிருக்க வேண்டும். | मां | என்னை |
| हीनप्रतिज्ञाः | சொன்னசொல்லைத் தவறி நடக்கும் | विस्मयं | திருவுள்ளத்தில் சிறி தும் கலக்கமுறாது |
| | | जहि | தேவரீர் நிவாரணஞ் செய்வீராக. |

यदि प्रीतिर्महाराज यद्यनुग्राहता मयि । जहि मां निर्विशङ्कस्त्वं धर्मं वर्धय राघव ॥ ४ ॥

| | | | |
|------------|-------------------------------|--------------------|-----------------------------------|
| महाराज | “மேலொருவரில்லாத பிரபுவாகிய | यदि निर्विशङ्कः | உண்டெனில், மனோபலமுடைய வராகி |
| राघव | ஸ்ரீராகவ ! | मां | என்னை |
| त्वं | தேவரீர் | जहि | நிவாரணஞ்செய்தருள வேண்டும். |
| मयि | என்னிடத்தில் | धर्मं | அறத்தை |
| प्रीतिः | பிரியம் | वर्धय | ஔக்கிவளரச்செய் வீராக.” |
| यदि | உண்டென்கிற பச்சுத் திலும் | | |
| अनुग्राहता | தமைய புரிதல் | | |

लक्ष्मणेन तथोक्तस्तु रामः प्रचलितेन्द्रियः । मन्त्रिणः समुपानीय तथैव च पुरोधसम् ॥

| | | | |
|-----------|---|------------------|--|
| लक्ष्मणेन | லக்ஷ்மணரால் | रामः | ஸ்ரீராமர் |
| तु | இவ்விஷயத்தில் | प्रचलितेन्द्रियः | { மனதைப் பூர்வநிலைக் குக் கொண்டுவந்தவ ராகி |
| तथा | இவ்வண்ணம் | मन्त्रिणः एव | மந்திரிமார்களையும் |
| उक्तः | { உரைசெய்யப்பட்டத ற்குத் திருச்செவ்விசா ய்த்த | पुरोधसं तथा च | புரோஹிதரையும் |
| | | समुपानीय | வரவழைத்தார். |

अब्रवीच्च तदा वृत्तं तेषां मध्ये स राघवः । दुर्वासोऽभिगमं चैव प्रतिज्ञां तापसस्य च ॥६॥

| | | | |
|--------------|------------------------------------|----------------------------|--|
| सः | அந்த | दुर्वासोऽभिगमं } च एव } | அர்வாஸமுனிவர் வந் ததைப் பற்றியது மான |
| राघवः | ஸ்ரீராகவர் | वृत्तं | நடந்த விருத்தார் தத்தை |
| तेषां | அவர்களுடைய | तदा | அப்பொழுது |
| मध्ये | முன்னிலையில் | अब्रवीत् | சொன்னார். |
| तापसस्य | அடியாரொருவருக்கு | | |
| प्रतिज्ञां च | வாக்களித்திருந்த தைப் பற்றியும் | | |

तच्छ्रुत्वा मन्त्रिणः सर्वे सोपाध्यायाः समागमन् । वसिष्ठस्तु महातेजा वाक्यमेतदुवाच ह ॥

| | | | |
|--------------|---|----------|--------------------|
| सोपाध्यायाः | புரோகிதர்களுட னிநுந்த | तु | அச்சமயத்தில் |
| मन्त्रिणः | மந்திரிமார்கள் | महातेजाः | மஹாதேஜஸ்சியாகிய |
| सर्वे | எல்லோரும் | वसिष्ठः | வலிஷ்டர்மாத் திரம் |
| तत् श्रुत्वा | அதைக் கேட்டு, { ஒருவரோடொருவர் ஆலோசனை செய்து கொண்டிருந்தார்கள். | एतत् | இந்த |
| समागमन् | | वाक्यं | மொழியை |
| | | उवाच ह | சொன்னார்: |

दृष्टमेतन्महाबाहो क्षयं ते रोमहर्षणम् । लक्ष्मणेन वियोगं च तव राम महायशः ॥ ८ ॥

| | | | |
|-----------|---|-----------|------------------|
| महायशः | “மஹா யசஸ்விடாகிய | क्षयं | முடிவு |
| राम | ஸ்ரீராம! | दृष्टं | எனக்குத் தெரிந்த |
| महाबाहो | மஹாபாஹோ! | | விஷயம்; |
| ते | தேவரீருடைய | तव च | தேவரீருக்கும் |
| एतत् | இந்த | लक्ष्मणेन | லக்ஷ்மணருடன் |
| रोमहर्षणं | பக்திபூர்வமான பயத் தை விளக்கக்காட்டும் | वियोगः | வியோகமுண்டு. |

त्यजैनं बलवान्कालो मा प्रतिज्ञां वृथा कृथाः । विनष्टायां प्रतिज्ञायां धर्मोऽपि च लयं व्रजेत् ॥

| | | | |
|---------------|------------------------|---------|----------------------|
| प्रतिज्ञां | வாக்களித்து விட்டதை | लयं | நாசத்தை |
| वृथा मा कृथाः | வீணக்கல்கூடாது ; | व्रजेत् | அடையும். |
| प्रतिज्ञायां | சொன்னசொல்லுக்கு | कालः | விதி |
| विनष्टायां च | தவறு ஏற்படில் | बलवान् | எதிலும் வலியுது; |
| धर्मः अपि | தருமமே | एनं | இவரை |
| | | त्यज | த்யஜித்து விடுவீராக. |

ततो धर्मे विनष्टे तु त्रैलोक्यं सचराचरम् । सदेवर्षिगणं सर्वं विनश्येत् न संशयः ॥ १० ॥

| | | | |
|------------|-----------------------------|-----------------|--|
| धर्मं | “தருமம் | सदेवर्षिगणं तु | { தேவகணங்கள் ரிஷி கணங்களுள் எரிட்ட துமான |
| विनष्टे तु | அழியுமாயின் | त्रैलोक्यं | |
| ततः | அதனால் | सर्वं विनश्येत् | எல்லாமும் அழியும். |
| सचराचरं | சராசரங்களுள் எரிட்ட தும் | न संशयः | இதற்கு ஐயமில்லை. |

स त्वं पुरुषशार्दूल त्रैलोक्यस्याभिपालनात् । लक्ष्मणेन विना चाद्य जगत्स्वस्थं कुरुष्व ह ॥

| | | | |
|--------------|--------------------------------|-----------|----------------------|
| पुरुषशार्दूल | “ஹே புருஷோத்தம! | अद्य | இப்பொழுது |
| त्रैलोक्यस्य | மூவுலகங்களுடைய | लक्ष्मणेन | லக்ஷ்மணனுடன் |
| अभिपालनात् | பாரத்தை வலிக்கு கின்றமையால் | विना च | விட்டுப்பிரிந்தவராய் |
| सः | அந்த | जगत् ह | மானிடலோகத்தையும் |
| इवं | தேவரீர் | स्वस्थं | சேந்தமடைந்ததாய் |
| | | कुरुष्व | செய்தருள்வீராக.” |

तेषां तत्समवेतानां वाक्यं धर्मार्थसंहितम् । श्रुत्वा परिषदो मध्ये रामो लक्ष्मणमब्रवीत् ॥

| | | | |
|----------------|--|----------|-------------------------------|
| समवेतानां | பல்வந்து கூடியிருந்த | तत् | அந்த |
| तेषां | அவர்களுடைய | वाक्यं | மொழிக்கு |
| परिषदः | சபையினது | श्रुत्वा | செவ்சாய்த்த |
| मध्ये | முன்னிலையில் | रामः | ஸ்ரீராமர் |
| धर्मार्थसंहितं | { தருமம் ஒன்றே எதிலும் பிரதானமெ ன்கிறதை நன்கு விளக்கக்காட்டுகிற | लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரைப் |
| | | भब्रवीत् | இப்படி நியமித்தருளி னார் : |

विसर्जये त्वां सौमित्रे मा भूद्धर्मविपर्ययः । त्यागो वधो वा विहितः साधूनां तृभयं समम् ॥

| | | | |
|--------------|-----------------------------------|---------------------|--|
| சௌமீத்ரே | “சுமித்ரா தேவியாரின் புதல்வா ! | சாடூநா விஹித: து | ஸா துக்களுக்கு விதிவசமாயின் |
| த்வாं | உன்னை | त्याಗ: | பெரும் வெகுமான |
| வீசர்ஜயே | நான் இழந்துவிடுகின் றேன். | वध: वा | மாய்த்தானிருக்கட்டும் வதமாய்த்தானிருக் கட்டும் |
| धर्मविपर्ययः | தருமத்திற்கு பங்க மென்பது | उभयं | இரண்டும் |
| மா ஶுத் | கூடாது. | समम् | ஸமமே.” |

रामेण भाषिते वाक्ये वाष्पव्याकुलितेन्द्रियः । लक्ष्मणस्त्वरितं प्रायात्स्वगृहं न विवेश ह ॥

| | | | |
|--------------------|---|-----------|-----------------|
| ராமேண | ஸ்ரீராமரால் | स्वगृहं | தமது மாளிகைக்கு |
| வாக்யே | இந்த மொழி | विवेश न | போகவில்லை. |
| भाषिते | சொல்லப்பட்டதும் | त्वरितं ह | தகூணமே |
| लक्ष्मणः | லக்ஷ்மணர் | प्रायात् | நேராய் வெளியில் |
| वाष्प- | } கண்களில் கண்ணீர் ததும்ப இந்திரியங் கள் கலங்கியவராகி | | போய்விட்டார். |
| व्याकुलितेन्द्रियः | | | |

स गत्वा सरयूतीरमुपस्पृश्य कृताञ्जलिः । निगृह्य सर्वस्रोतांसि निश्वासं न मुमोच ह ॥

| | | | |
|---------------|-----------------------------|----------|--------------------|
| ச: | அவர் | निगृह्य | அதது தொழிலை புரிந் |
| सरयूतीरं | ஸரயூதிக்கு | | தவண்ணமாய் ஒடுக்கி |
| गत्वा | போய்ச் சேர்ந்து | निश्वासं | மூச்சிழுப்பதை |
| उपस्पृश्य | நீராடி | मुमोच न | செய்யாமலிருந்து |
| कृताञ्जलिः | அஞ்சலிஹஸ்தராகி | | விட்டார் |
| सर्वस्रोतांसि | எல்லா இந்திரியங்க ளையும் | ह | காண்! |

अनिश्वसन्तं युक्तं तं सशक्राः साप्सरोगणाः । देवाः सर्षिगणाः सर्वे पुष्यैरभ्यकिरंस्तादा ॥

| | | | |
|-------------|----------------------------------|-------------|-----------------------------|
| சசக்ரா: | இந்திர னுள்ளிட் டவர்களும் | तदा | அப்பொழுது |
| साप्सरोगणाः | அப்ஸரகணங்களுள் ளிட்டவர்களும் | अनिश्वसन्तं | ச்வாஸபந்தம் பண் ணினவராய் |
| सर्षिगणाः | ரிஷிகணங்களுள் ளிட் டவர்களுமான | युक्तं | வாஸுதேவனுயிருக் கிற |
| देवाः | தேவர்கள் | तं | அவர்மீது |
| सर्वे | எல்லோரும் | पुष्यैः | பூமாரி |
| | | अभ्यकिरन् | பொழிந்தனர். |

अदृश्यं सर्वमनुजैः सशरीरं महाबलम् । प्रगृह्य लक्ष्मणं शक्रस्त्रिदिवं संविवेश ह ॥ १७ ॥

| | | | |
|------------|--|-------------------------------|----------------------------------|
| सर्वमनुजैः | மானிடர்கள் எவர்க ளாலும் | लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரை |
| अदृश्यं | பார்க்கமுடியாத வராகி | शक्रः | இந்திரன் |
| सशरीरं | { திருமாலுடைய திரு மேனியையடைந்து விட்ட | प्रगृह्य | எடுத்தணைத்து நல் வரவுகொண்டாடி |
| महाबलं | | महोरा नरामर्त्तय शालियाकिय | शक्रिदिवं संविवेश |
| | | ह | காண். |

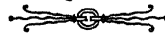
ततो विष्णोश्चतुर्भागमागतं सुरसत्तमाः । हृष्टाः प्रमुदिताः सर्वेऽपूजयन्समहर्षयः ॥ १८ ॥

| | | | |
|------------|--------------------|------------|---|
| समहर्षयः | மஹரிஷிகளுள் ளிட்ட | चतुर्भागं | { அம்சங்களில் நா ளில் ஒருபாகமாகிய அவரை |
| सुरसत्तमाः | தேவோத்தமர்கள் | प्रमुदिताः | |
| सर्वे | எல்லோரும் | | { பக்திபூர்வமான மயிர்ச்சிவிர்ப்பு கொண்டவர்களாகி பூஜித்தார்கள். |
| ततः | அவ்விடத்திற்கு | हृष्टाः | |
| आगतं | வந்துசேர்ந்துவிட்ட | अपूजयन् | |
| विष्णोः | விஷ்ணுவினது | | |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे षडुत्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23890



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 3166

सतोत्तरशततमः सर्गः—ஐற்றேழாவது ஸர்க்கம். ॥ १०७ ॥

कुशलवयोरभिषेकः—குசனுக்கும் லவனுக்கும் முடிசூட்டுவது.

विस्वज्य लक्ष्मणं रामो दुःस्वशोकसमन्वितः । पुरोधसं मन्त्रिणश्च नैगमांश्चेदमब्रवीत् ॥१॥

| | | | |
|-------------|--|-----------|-----------------------------|
| रामः | பூரீராமர் | पुरोधसं च | புரோஹிதரையும் |
| लक्ष्मणं | லக்ஷ்மணரை | मन्त्रिणः | மந்திரிமார்களையும் |
| विस्वज्य | அனுப்பிவிட்டு | नैगमान् च | வேதவித்துக்களையும் |
| दुःस्वशोक-} | ஸவறிக்கமுடியாத சோகத்தில் மூழ்கிய வராகி | इदं | இப்படி [பார்த்து |
| समन्वितः } | | अब्रवीत् | திருவாய்மலர்ந்தருளி ரை : |

अद्य राज्येऽभिषेक्ष्यामि भरतं धर्मवत्सलम् । अयोध्यायाः पतिं वीरं ततो यास्याम्यहं वनम् ॥

| | | | |
|------------|--------------------------------------|---------------|--------------------|
| अद्य | “இப்பொழுது | राज्ये | ராஜ்யபரிபாலனத்தில் |
| अयोध्यायाः | அயோத்திமாநகருக்கு | अभिषेक्ष्यामि | முடிசூட்டிவைக்கின் |
| पतिं | மன்னனாகி | ततः | அதன்பின்னர் [நேன். |
| धर्मवत्सलं | தருமத்தில் சலியாப் பற்றுவைத்தவனென | अहं | நான் |
| वीरं | மஹாபிரசுத்திபெற்ற | वनं | வனவாஸம்செய்ய |
| भरतं | பாதனை [வனான | यास्यामि | போகிறேன். |

प्रवेशयत सम्भारान्मा भूत्कालस्य पर्ययः । अथैवाहं गमिष्यामि लक्ष्मणेन गतां गतिम् ॥

காலச्य पर्ययः “காலதாமஸம்

सा भूत् वेண்டாம்.

सम्भारान् ஸாமக்ரிகளை

प्रवेशयत சேர் த்துக்கொண்டு

வாருங்கள் ;

लक्ष्मणेन லக்ஷ்மணனால்

गतां அடையப்பட்ட

गतिं கதியை

अहं நான்

अथ एव இப்பொழுதே

गमिष्यामि அடையப்போகிறேன்.”

तच्छ्रुत्वा राघवेणोक्तं सर्वाः प्रकृतयो भृशम् । मूर्धभिः प्रणता भूमौ गतसत्त्वा इवाभवन् ॥

राघवेण ஸ்ரீராகவரால்

उक्तं சொல்லப்பட்டதை

श्रुत्वा கேட்ட

प्रकृतयः அன்பர்கள்

सर्वाः எல்லோரும்

तव அப்பொழுது

भृशं அதிவிசேஷமாய்

भूमौ பூமியில்

मूर्धभिः முடிகளைத்தாழ்த்தி

प्रणता: நமஸ்கரிக்கின்றவர்

களாகி

गतसत्त्वा: इव உயிரிழந்தவர்கள்

अभवन् இருந்தார்கள். [போல்

भरतश्च विसंज्ञोऽभूच्छ्रुत्वा रामस्य भाषितम् । राज्यं विगर्हयामास वचनं चेदमब्रवीत् ॥

रामस्य ஸ்ரீராமரது

भाषितं திருவாக்குக்கு

श्रुत्वा திருச்செவியைத்த

भरतः பரதர்

विसंज्ञः { விஷயங்களின் துட்ப

ங்களை உள்ளபடி

அறியாதவாறு

अभूत् இருந்தனர்.

राज्यं ராஜ்யத்தை

विगर्हयामास திருணமாய்ப் பாராட்

इदं பின்வரும் [டினார்.

वचनं விண்ணப்பத்தை

च च தச்சூணமே

अब्रवीत् செய்தருளினார் :

सत्येनाहं शपे राजन्स्वर्गलोके न चैव हि । न कामये यथा राज्यं त्वां विना रघुनन्दन ॥

रघुनन्दन “ஹே ரகுந்தனா!

राजन् சக்கிரவர்த்தியாரே!

त्वां विना தேவரீரின்றி

यथा हि என்கிறதாகில்

राज्यं च அரசாக்கியையும்

न कामये அடியேன் விரும்ப

மாட்டேன்.

स्वर्गलोके एव வைகுண்டத்திலும்

கூட

न இரேன்.

अहं அடியேன்

सत्येन ஸத்யமாய்

शपे சொல்லுகிறேன்.

इमौ कुशलवौ राजन्मभिषिञ्च नराधिप । कोसलेषु कुशं वीरमुत्तरेषु तथा लवम् ॥ ७ ॥

राजन् “சக்கிரவர்த்தியாரே!

नराधिप ஹே புருஷோத்தம!

वीरं புதல்வனாகிய

कुशं குசளை

कोसलेषु கோஸலநாடுகளிலும்

तथा அவ்வண்ணமே

लवं லவனை

उत्तरेषु உத்தரநாடுகளிலும்

इमौ இவ்விரு

कुशलवौ குசலவர்களை,

अभिषिञ्च { மன்னராய் முடிசூட்

டத் திருவுள்ளம்

கொள்ளவேண்டும்:

शत्रुघ्नस्य तु गच्छन्तु दूतास्त्वरितविक्रमाः । इदं गमनमस्माकं स्वर्गायाख्यान्तु मा चिरम् ॥

स्वरितविक्रमाः “சீக்கிரம் செல்லவல்ல
 दूताः தூதர்கள் [வர்களான
 तु இப்பொழுது
 शत्रुघ्नस्य சத்ருக்கனனிடம்
 गच्छन्तु போகட்டும்.
 अस्माकं நம்முடைய
 स्वर्गाय வைகுண்டத்திற்கான

इदं இந்த
 गमनं பிரயாணத்தைப்
 मा चिरं பற்றியும்
 आख्यान्तु காலதாமதமாகாதென்
 कर्तव्यं கிறதையும்
 अस्माकं அவர்கள் தெரிவிக்க
 स्वर्गाय கட்டும்.”

तच्छ्रुत्वा भरतेनोक्तं दृष्ट्वा चापि ह्यधोमुखान् । पौरान्दुःखेन सन्तप्तान्वसिष्ठो वाक्यमब्रवीत् ॥

भरतेन பரதரால்
 उक्तं சொல்லப்பட்டதற்கு
 श्रुत्वा திருச்செவியைத் த
 वसिष्ठः வலிஷ்டர்
 पौरान् நகரவாஸிகளை
 तत् அப்பொழுது
 दुःखेन துயரத்தால்
 सन्तप्तान् மெய்மறந்தவர்களாய்

अधोमुखान् हि { பூமியில் படுத்தவண்
 णामेपि रुक्मिणीं न वारं
 कणाय
 दृष्ट्वा பார்த்து
 अपि च அதன்மேல்
 वाक्यं இந்த மொழியை
 अब्रवीत् திருவாய்மலர்ந்தருளி
 ணர்:

वत्स राम इमाः पश्य धरणीं प्रकृतीर्गताः । ज्ञात्वैषामीप्सितं कार्यं मा चैषां विभियं कृथाः ॥

राम { “எவருக்கும் ஆனந்த
 वःस { த்தையே விளைவிக்க
 धरणीं { கும்
 गताः { அன்பனை!
 इमाः { பூமியில்
 प्रकृतीः { வீழ்ந்துகிடக்கின்ற
 पश्य { இந்த
 { பிரஜைகளை
 { கடாக்கித்தருள்க.

एषां இவர்களுடைய
 ईप्सितं மனோதத்தை
 ज्ञात्वा च தெரிந்துகொண்டு
 कार्यं அனுக்கிரஹித்தருள
 வேண்டியது.
 एषां இவர்களுக்கு
 विभियं மனமுறிதலுக்கு
 मा कृथाः இடங்கொடுக்கலாகா
 து.”

वसिष्ठस्य तु वाक्येन उत्थाप्य प्रकृतीजनम् । किं करोमीति काकुत्स्थः सर्वान्वचनमब्रवीत् ॥

काकुत्स्थः காசுத்தஸ்தர்
 तु இவ்விஷயத்தில்
 वसिष्ठस्य வலிஷ்டருடைய
 वाक्येन நியமனத்தைச் சிரமே
 प्रकृतीजनं ற்கொண்டு
 उत्थाप्य பிரஜைகளின் ஸமூஹ
 { த்தை
 { எழுப்பி

सर्वान् எல்லோரையும்
 करोमि “நான் செய்யவேண்டி
 किं इति என்ன” என்ற
 वचनं திருவாய்க்கை
 अब्रवीत् திருவாய்மலர்ந்தருளி
 ணர்.

ततः सर्वाः प्रकृतयो रामं वचनमब्रुवन् । गच्छन्तमनुगच्छामो यत्र राम गमिष्यसि ॥१२॥

प्रकृतयः பிரஜைகள்
सर्वाः எல்லோரும்
ततः அதன்மேல்
रामं ஸ்ரீராமரிடம்
वचनं இந்த விண்ணப்பத்
अब्रुवन् செய்தார்கள். [தை
राम ஸ்ரீராம!

गमिष्यसि தேவரீர் எழுந்தருளு
கின்றது
यत्र எவ்விடத்திற்கோ
அவ்விடத்திற்கு
गच्छन्तं போகும்தேவரீரை
अनुगच्छामः விடாது பின்தொ
டர்ந்துவருகின்றோம்.

एषा नः परमा प्रीतिरेष नः परमो वरः । हृदता नः सदा प्रीतिस्तवानुगमने नृप ॥१३॥

नृप “சக்கிரவர்த்தியாரே!
तव தேவரீருடைய
अनुगमने { அந்தத்திலும்கூடவே
யிருக்கவேண்டுமென்
பதில்
सदा எக்காலத்திலும்
नः எங்களுடைய
प्रीतिः மனோதமாய்

हृदता உள்ளமுருகிப் பிரார்த்
தித்துவாப்பட்டது.
एषा இது
नः எங்களுக்கு
परमा எதிலும் சிறந்ததாகிய
प्रीतिः மனோதம்;
एषः இது
नः எங்களுக்கு
परमः எதிலும் சிறந்ததாகிய
वरः வரம்.

पौरेषु यदि ते प्रीतिर्यदि स्नेहो ह्यनुत्तमः । सपुत्रदाराः काकुत्स्थ समागच्छाम सत्यथम् ॥

काकुत्स्थ “காகுத்தரே!
पौरेषु பட்டணத்துஜனங்
களிடத்தில்
ते தேவரீருக்கு
अनुत्तमः ஒப்புயர்வில்லாத
स्नेहः கருணை
यदि உண்டென்கிறபக்கத்
திலும்

प्रीतिः அனுக்கிரஹம்
यदि இருக்கும்பக்கத்திலும்
सपुत्रदाराः हि { புத்திரர்களையும் மனை
விமர்களையும் அ
ழைத்துக்கொண்டு
सत्यथं ஸ்வர்க்கமார்க்கத்தில்
समागच्छाम நாங்களும் கூடவே
இருந்துவருவோம்.

तपोवनं वा दुर्गं वा नदीमम्भोनिधिं तथा । वयं ते यदि न त्याज्याः सर्वान्नो नय ईश्वर ॥

ईश्वर “ஆண்டவனே!
तपोवनं वा தபோவனத்திற்குத்
தானாகட்டும்
दुर्गं वा { பிறரால் போகமுடி
யாத இடமாயிருந்
தாலும் சரி
तथा அவ்வண்ணமே
नदीं நதியாயிருந்தாலும்சரி
अम्भोनिधिं கடலாயிருந்தாலும்சரி

ते தேவரீருக்கு
वयं நாங்கள்
न त्याज्याः கைவிடத்தகாதவர்கள்
यदि என்கிறபக்கத்தில்
नः எங்கள்
सर्वान् எல்லோரையும்
नय { கூடவே அழைத்துக்
கொண்டுசெல்ல
வேண்டும்.

पौराणां दृढभक्तिं च बाढमित्येव सोऽब्रवीत् । स्वकृतान्तं चान्ववेक्ष्य तस्मिन्नहनि राघवः ॥

| | | | | |
|-------------|------------------|---------------|---|-----------------------|
| ச: | அந்த | स्वकृतान्तं च | { | தானே கடைசியாய் |
| राघवः | ஸ்ரீராகவர் | | | செய்தருளவேண்டி- |
| पौराणां | பட்டணத் துணை | अन्ववेक्ष्य | { | யதையும் |
| | களுடைய | | | திருவுள்ளத்தில் பற்றி |
| दृढभक्तिं च | திருடமான பக்தியை | बाढं इति एव | { | 'அங்கனமே செய் |
| | யும் | | | கிறே'னென |
| तस्मिन् | அந்த | अब्रवीत् | { | திருவாய்மலர்ந்தருளி |
| अहनि | தினத்தில் | | | னார். |

कोसलेषु कुशं वीरसुत्तरेषु तथा लवम् । अभिषिच्य महात्मानावुभौ रामः कुशीलवौ ॥
सुतौ प्रस्थापयामास धर्मिष्ठौ धर्मवत्सलौ ॥ १७ ॥

| | | | | |
|----------|------------------|---------------|---|------------------|
| रामः | ஸ்ரீராமர் | धर्मवत्सलौ | { | தருமத்தில் சலியா |
| वीरं | மஹாசூரனாகிய | | | ஆஸக்தியுடையவர் |
| कुशं | சூசனை | धर्मिष्ठौ | { | களும் |
| कोसलेषु | கோசலநாடுகளிலும் | | | தருமானுஷ்டானமு |
| तथा | அவ்வண்ணமே | महात्मानौ | { | டையவர் களுமான |
| लवं | லவனை | उभौ | | மஹாத்மாக்களாகிய |
| उत्तरेषु | உத்தரநாடுகளிலும் | सुतौ | { | இரண்டு |
| | சூசன் லவன் என்ற | अभिषिच्य | | குமாரர்களையும் |
| कुशीलवौ | { | | { | மன்னர்களாய் |
| | | பெயர்கொண்டவர் | | प्रस्थापयामास |
| | களும் | | | உதஸாஹப் |
| | | | | படுத்தினார். |

अभिषिक्तौ सुतावङ्के प्रतिष्ठाप्य पुरे ततः । परिष्वज्य महाबाहुर्मूर्ध्न्युपाग्राय चासकृत् ॥

| | | | |
|-----------|---------------------|--------------|----------------|
| ततः | அப்பொழுது | पुरे | சீரத்தில் |
| अभिषिक्तौ | மசூடாபிஷேகம் | अङ्के | துடைமீது |
| | பெற்ற | प्रतिष्ठाप्य | உட்காரவைத்து |
| सुतौ च | குமாரரிருவர்களையும் | असकृत् | பலமுறை |
| महा बाहुः | மஹாபாஹுவாகும் | मूर्ध्नि | உச்சி |
| | அவர் | उपाग्राय | மோந்தருளினார். |
| परिष्वज्य | அணைத்தெடுத்தது | | |

रथानां तु सहस्राणि नागानामयुतानि च । दशायुतानि चाश्वानामेकैकस्य धनं ददौ ॥

| | | | |
|----------|------------------|-------------|-------------------|
| एकैकस्य | ஒவ்வொருவருக்கும் | अयुतानि च | பதினாயிரங்களையும் |
| तु | தனியாய் | अश्वानां | குதிரைளிகன் |
| रथानां | ரதங்களின் | दशायुतानि च | லக்ஷங்களையும் |
| सहस्राणि | ஆயிரங்களையும் | धनं | மூலதனமாக |
| नागानां | யானைகளுடைய | ददौ | தந்தருளினார். |

बहुरत्नौ बहुधनौ हृष्टपुष्टजनावृतौ । अभिषिच्य सुतौ वीरौ प्रतिष्ठाप्य पुरे तदा ॥

दूतान्सम्प्रेषयामास शत्रुघ्नाय महात्मने

॥ २० ॥

वीरौ } குரர்களாகிய
சுதூ } குமாரர்களை
 { எல்லாவற்றிலும்
 { சிறந்தவஸ்துக்களு
 { டையவர்களாயும்
 { மிகச்சம்பத்துடன்
 { கூடியவர்களாயும்
 { ஸர்வபிரகாரத்திலும்
 { மனஸஸ்ந்துஷ்டியு
 { டைய ஜனங்களால்
 { சூழப்பட்டவர்க
 { ளாகவும்

अभिषिच्य } ஸ்தாபித்துவிட்டு
 { தடா } அப்பொழுது
 { புரே } நகரத்தில்
 { प्रतिष्ठाप्य } தங்கியிருக்கச்சொன்
 { } ளார்;
 { महारत्ने } மஹாத்மாவாகிய
 { शत्रुघ्नाय } சத்ருக்ளருக்கு
 { दूतान् } தூதர்களை
 { संप्रेषयामास } அனுப்பினார்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे सप्तोत्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23910

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 3186



अष्टोत्तरशततमः सर्गः—நூற்றெட்டாவது ஸர்க்கம். ॥ २०८ ॥

शत्रुघ्नपुत्रयोरभिषेकः, हनुमदाद्यादेशश्च—சத்ருக்கினருடைய புத்திரர்களுக்கு முடிசூட்டுவதும், ஹனுமான் முதலியவர்களுக்குக் கட்டினாயிடுவதும்.

ते दूता रामवाक्येन चोदिता लघुविक्रमाः । प्रजमुर्मधुरां शीघ्रं च कुर्वांसं च नाध्वनि ॥

ते } அந்த
 { लघुविक्रमाः } விரைவில் செல்லவல்ல
 { दूताः } தூதர்கள்[வர்களாகிய
 { रामवाक्येन } ஸ்ரீராமனுடைய ஆக்
 { } கினை என்கிறபடியால்
 { चोदिताः } அத்தந்தபக்தியுடைய
 { } வர்களாய்

अध्वनि } வழியில்
 { वासं च } இரவுகளில் விடுதிக
 { } ளில் தங்கியிருத்தலை
 { न चक्रुः } செய்யவில்லை.
 { शीघ्रं } தாமத்யாமலை
 { मधुरां } மதுராபுரிக்கு
 { प्रजमुः } வழிநடந்தார்கள்.

ते तु त्रिभिरहोरात्रैः सम्प्राप्य मथुरामथ । शत्रुघ्नाय यथातत्त्वमाचख्युः सर्वमेव तत् ॥२॥

ते } அவர்கள்
 { त्रिभिः } மூன்று
 { अहोरात्रैः अथ } தினங்களுக்குப்பிறகு
 { मथुरां } மதுராபுரிக்கு
 { संप्राप्य } போய்ச்சேர்ந்து
 { शत्रुघ्नाय } சத்ருக்கினருக்கு

तत् } அப்பொழுது
 { यथातरत्वं तु } நடைபெற்றவைகளை
 { } உள்ளபடியே
 { सर्व एव } எல்லாவற்றையும்
 { आचख्युः } தெரியப்படுத்தினார்

लक्ष्मणस्य परित्यागं प्रतिज्ञां राघवस्य च । पुत्रयोरभिषेकं च पौरानुगमनं तथा ॥ ३ ॥
 कुशस्य नगरी रम्या विन्ध्यपर्वतरोधसि । कुशावतीति नाम्ना सा कृता रामेण धीमता ॥
 श्रावस्तीति पुरी रम्या श्राविता च लवस्य च ॥ ४ ॥
 अयोध्यां विजनां चैव भरतं राघवानुगम् । एवं सर्वं निवेद्याशु शत्रुघ्नाय महात्मने ॥
 विरेमुस्ते ततो दूतास्त्वर राजेति चान्ब्रुवन् ॥ ५ ॥

| | |
|--------------|---------------------|
| ततः | அப்பொழுது |
| ते | அந்த |
| दूताः | தூதர்கள் |
| महामने | மஹாத்மாவாகிய |
| शत्रुघ्नाय | சத்ருக்கினருக்கு |
| लक्ष्मणस्य | லக்ஷ்மணரின் |
| परित्यागं | பிரிவையும் |
| राघवस्य | ஸ்ரீராகவரது |
| प्रतिज्ञां च | பிரதிக்கூறையையும் |
| तथा | அவ்வண்ணமே |
| पुत्रयोः | இரு புதல்வர்களு |
| | டைய |
| अभिषेकं च | மகுடாபிஷேகத் |
| | தையும் |
| पौरानुगमनं | { பட்டணத்து ஜனங்கள் |
| | கூடவே செல்லப் |
| | போகிறதையும் |
| अयोध्यां | அயோத்யாபட்டணத் |
| | தை |
| विजनां च | { எவருமில்லாதபடி |
| | சூன்யமாயிருக்கப் |
| | போவதையும் |
| भरतं | பரதர் |
| राघवानुगं एव | { ராகவரையே பின் |
| | பற்றிச் செல்லப் |
| | போகிறதையும் |
| धीमता | தீமானாகிய |
| रामेण | ஸ்ரீராமரால் |
| कुशास्य च | குசனுக்கென்றே |
| सा | அந்த |

| | |
|-------------------|---------------------|
| कुशावती | குசாவதி |
| इति | என்கிற |
| नाम्ना | பெயர்கொண்ட |
| रम्या | அழகுவாய்ந்த |
| नगरी | பட்டணமானது |
| विन्ध्यपर्वतरोधसि | விந்தியமலையின் அரு |
| | காமையிலும் |
| लवस्य च | லவனுக்கென்றே |
| श्रावस्ती | சீராவஸ்தி |
| इति | என்கிற பெயருடன் |
| श्राविता | விளங்கும் |
| रम्या | அழகுவாய்ந்த |
| पुरी | புரியானது |
| कृता | நிர்மிக்கப்பட்டதை |
| | யும் |
| एवं | இப்படியாய் |
| सर्वं | எல்லாவற்றையும் |
| आशु | உடனே |
| निवेद्य | தெரியப்படுத்தி |
| | விட்டு |
| राज | “மன்னரே! |
| स्वर | { தேவரீர் காலதாமதம் |
| | செய்யாது துரிதப் |
| | படவேண்டும்” |
| इति | என்று |
| अब्रुवन् | சொன்னார்கள். |
| च | அதன்பின்னர் |
| विरेमुः | மௌனமாய் காத்து |
| | நின்றார்கள். |

तच्छ्रुत्वा घोरसङ्काशं कुलक्षयमुपस्थितम् । प्रकृतीस्तु समानीय काञ्चनं च पुरोधसम् ॥
 तेषां सर्वं यथावृत्तमाख्याय रघुनन्दनः । आत्मनश्च विपर्याप्तं प्रकृतीनां न्यवेदयत् ॥ ७ ॥

| | |
|-------------|--|
| रघुनन्दनः | சத்ருக்கினர் |
| तत् | அந்த |
| घोरसङ्काशं | பக்திபூர்வகமாயுள்ள பயத்துடன் விளங்கு கிறதும் |
| उपस्थितं तु | அத்யந்த பரிசுத்தமா யிருக்கிற துமான |
| कुलक्षयं | குலத்தினுடைய முடிவை |
| शुखा | கேட்டு |
| पुरोधसं | புரோஹிதராக்ய |
| काञ्चनं | காஞ்சனரென்கிற முனிவரையும் |

| | |
|------------|--|
| प्रह्वीः च | மந்திரிமர்க்களையும் |
| समानीय | வரவழைத்து |
| तेषां | அந்த |
| प्रकृतीनां | அன்பர்களுக்கு |
| यथावृत्तं | நடந்த வரலாறு |
| सर्वं | அனைத்தையும் |
| आख्याय | தெரியப்படுத்தி விட்டு |
| आरमनः | தனது |
| विपयांसं च | தன்னடிச் சேர்திக்கு எழுந்தருளப் போகி றதையும் |
| भ्यवेदयत् | சொல்லியருளினார். |

ततः पुत्रद्वयं वीरः सोऽभ्यषिञ्चन्नराधिपः । सुबाहुर्मधुरां लेभे शत्रुघाती च वैदिशम् ॥८॥

| | |
|-------------|--------------------------------|
| सः | அந்த |
| वीरः | சூரராக்ய |
| नराधिपः | புருஷோத்தமர் |
| ततः | அப்பொழுது |
| पुत्रद्वयं | குமாரர்களிருவருக் கும் |
| अभ्यषिञ्चत् | மகுடாபிஷேகம் செய்தருளினார். |

| | |
|-----------|--------------------------|
| सुबाहुः | ஸுபாஹு என்ப வன் |
| मधुरां च | மதுராபுரியையும் |
| शत्रुघाती | சத்ருகாதி என்பவன் |
| वैदिशं | வைதிசமென்கிற நகரையும் |
| लेभे | பெற்றான். |

द्विधा कृत्वा तु तां सेनां माधुरीं पुत्रयोर्द्वयोः धनधान्यसमायुक्तौ स्थापयामास पार्थिवौ ॥

| | |
|-------------|--------------------|
| तां | அந்த |
| माधुरीं | மதுராபுரியிலிருந்த |
| सेनां | ஸேனையை |
| द्वयोः | இரு |
| पुत्रयोः तु | குமாரர்களுக்கும் |
| द्विधा | இரு சமபாகமாக |

| | |
|-------------------------|--|
| कृत्वा | செய்துகொடுத்து விட்டு |
| धनधान्य- समायुक्तौ } | தனதான்யமெல்லாம் பெற்று விளங்கு கின்ற |
| पार्थिवौ | மன்னர்களாய் |
| स्थापयामास | நியமித்திருத்தினார். |

सुबाहुं मधुरायां च वैदिशे शत्रुघातिनम् । ययौ स्थाप्य तदाऽयोध्यां रथेनैकेन राघवः ॥

| | |
|-------------|--------------------------|
| राघवः | ராகவர் (சத்ருக்கினர்) |
| सुबाहुं | ஸுபாஹுவை |
| मधुरायां | மதுரநகரிலும் |
| शत्रुघातिनं | சத்ருகாதியை |
| वैदिशे च | வைதிசமென்கிற நகரிலும் |

| | |
|----------|---------------------------------|
| स्थाप्य | வாழ்ந்தவர விதித் தருளிவிட்டு |
| तदा | அப்பொழுது |
| रथेन एकै | ரதம் ஒன்றிலேறிக் கொண்டு |
| अयोध्यां | அயோத்தியாபுரிக்கு |
| ययौ | போய்ச்சேர்ந்தார். |

स ददर्श महात्मानं ज्वलन्तमिव पावकम् । सूक्ष्मसौमम्बरधरं मुनिभिः सार्धमस्यैः ॥

ச: அவர்
 महात्मानं மஹாத் தாவை
 पावकं அக்கினியை
 इव போல
 ज्वलन्तं ஜோதிமயமாய் விளங்
 குகிறவராயும்
 अक्षयैः காலக்கிரமப்பழுதுக
 னுக்கிடமாகாத

मुनिभिः பரமாத்மஞானிகளால்
 सार्धं சூழப்பட்டிருக்கிறவ
 ராகவும்
 सूक्ष्म- } மெல்லிய பரிசுத்தமா
 क्षौमम्बरधरं } கிற பட்டாடை அ
 ணிந்திருக்கின்றவ
 ராகவும்
 ददर्श கண்டார்.

सोऽभिवाद्य ततो रामं प्राञ्जलिः प्रयतेन्द्रियः । उवाच वाक्यं धर्मज्ञं धर्ममेवानुचिन्तयन् ॥

ச: அவர்
 धर्मज्ञं { எதையும் தர்மமொன்
 रमं { றையே பிரதானமா
 अभिवाद्य { யக் கொண்டுசெய்த
 { ருளும்
 { ஸ்ரீராமரை
 { திருவடிகளில் நமல்
 { கரித்து அபிவாத
 { னம்செய்து

ततः அதன்பின்னர்
 प्राञ्जलिः அஞ்ஜலிஹஸ்தராகி
 प्रयतेन्द्रियः இந் திரியங்களை ஒடுக்கி
 धर्म एव தர்மமொன்றையே
 अनुचिन्तयन् உள்ள த்தில் ஸர்வமு
 மாய்க்கொண்டு
 वाक्यं இந்த விண்ணப்பத்தை
 उवाच செய்தருளினார்:

कृत्वाऽभिषेकं सुतयोर्युक्तं राघवनन्दन । तवानुगमने राजन्विद्धि मां कृतनिश्चयम् ॥१३॥

राजन् "சக்கிரவர்த்தியாரே!
 राघवनन्दन राகவர்களின் குலதெ
 ய்வமே!
 सुतयोः குமாரர்களிருவருக்
 கும்
 युक्तं சரியானபடியாய்
 अभिषेकं மகுடாபிஷேகத்தை
 कृत्वा செய்துமுடித்துவிட்டு
 मां அடியேனை

तव தேவரீரது
 अनुगमने { தன்னடிச்சோதிக்கு
 { எழுந்தருளும்போது
 { பின்பற்றியே செல்
 { லும் விஷயத்தில்
 कृतनिश्चयं { தேவரீர் மறுக்கமாட்
 { டீர் என்ற நம்பிக்கை
 { யுடனிருப்பவனாக
 विद्धि திருவுள்ளத்தில்
 பற்றவேண்டும்.

न चान्यदपि वक्तव्यं तव वीर न शासनम् । विहन्यमानमिच्छामि मद्विधेन विशेषतः ॥

अन्यत् भापि "இதல்லாத வேறெந்த
 वक्तव्यं च நியமனமும்
 न சொல்லலாகாது.
 वीर ஹே வீர!
 तव தேவரீரது
 शासनं ஆக்கினையை

विशेषतः முக்கியமாய்
 मद्विधेन என்னைப்போன்ற
 வனால்
 विहन्यमानं அதைரவு செய்வ
 தற்கு
 इच्छामि न அடியேன் உடன்பட
 மாட்டேன்.

तस्य तां बुद्धिमहतीबां विज्ञाय रघुनन्दनः । बाढमित्येव शशुघ्नं रामो वाक्यमुवाच ह ॥

रघुनन्दनः रघुநந்தனர்
तस्य அவருடைய
तां அந்த
बुद्धिं தீர்மானத்தை
अह्नीबां அசைக்கமுடியாத
தாய்
विज्ञाय கண்டுகொண்டு

शशुघ्नं சத்ருக்கனரைப்
रामः ஸ்ரீராமர் [பார்த்து
बाढं इति एव 'அப்படியே ஆகுக'
என்கிற
वाक्यं ह ஒரு சொல்லை மாத்
திரம்
उवाच சொல்லியருளினார்.

तस्य वाक्यस्य वाक्यान्ते वानराः कामरूपिणः । ऋक्षराक्षससङ्घाश्च समापेतुरनेकशः ॥

तस्य அந்த
वाक्यस्य ஒரு மொழியினது
वाक्यान्ते முடிவில்
कामरूपिणः காமரூபிகளாகிய
वानराः வானரர்களும்

ऋक्षराक्षससङ्घाः च ऋக்டராக்ஷஸங்஘ா: ச
கரடிகள், ராக்ஷஸர்
களின் கூட்டங்களும்
अनेकशः கும்பல்கும்பலாய்
समापेतुः வந்துசேர்ந்தன.

सुग्रीवं ते पुरस्कृत्य सर्वे एव समागताः । तं रामं द्रष्टुमानसः स्वर्गायाभिमुखं स्थितम् ॥

ते அவர்கள்
सर्वे एव எல்லோரும்
सुग्रीवं சுகீர்வனை
पुरस्कृत्य முன்னிட்டுக்கொண்டு
स्वर्गाय வைகுண்டத்திற்கு
अभिमुखं எழுந்தருளிவிடுவதை

स्थितं தீர்மானித்துவிட்ட
तं அந்த
रामं ஸ்ரீராமரை
द्रष्टुमानसः தார்கிக்க அவர்க்
கொண்டவர்களாய்
समागताः வந்துகூடினார்கள்.

देवपुत्रा ऋषिसुता गन्धर्वाणां सुतास्तथा । रामाभिप्रायमाज्ञाय सर्वे एव समागताः ॥

देवपुत्रा: தேவர்களின் புதல்வர்
களும்
ऋषिसुता: முனிவர்களின் புதல்
வர்களும்

रामाभिप्रायमाज्ञाय सर्वे एव எல்லோரும்
रामाभिप्रायं ஸ்ரீராமரது திருவுள்
ளத்தை
आज्ञाय ஞானதிருஷ்டியால்
கண்டுகொண்டு
समागताः வந்துகூடினார்கள்.

गन्धर्वाणां कन्तर्वाकरुण्डेय
सुता: तथा புத்திரர்களும்

ते राममभिवाचोचुः सर्वे वानरराक्षसाः । तवानुगमने राजनसंप्राप्ताः कृतनिश्चयाः ॥१९॥

ते அந்த
वानरराक्षसाः வானரர்களும் ராக்ஷ
सर्वे எல்லோரும் [ஸர்களும்
रामं ஸ்ரீராமரை
अभिवाद्य அடிபணிந்து

अनुगमने { தன்னடிச்சேர்திக்கு
எழுந்தருளும்போது
பின்பற்றியே செல்
லும் விஷயத்தில்
कृतनिश्चयाः { தேவரீரது அனுக்கிர
ஹம் கிடைக்குமெ
ன்கிற நம்பிக்கை
கொண்டவர்களாய்
இப்போது இவ்விடம்
வந்துசேர்ந்து இருக்க
संप्राप्ताः { கின்றோம்.

ऊचुः இப்படிப் பிரார்த்தித்
தார்கள்.
राजन् "சக்கிரவர்த்தியாரே!
तव தேவரீரது

சுதற்குறிப்பிட்டு
வந்தன.

यदि राम विनाऽस्माभिर्गच्छेत्स्वं पुरुषोत्तम । यमदण्डमिवोद्यम्य त्वया स्म विनिपातिताः॥
 तैरेवमुक्तः काकुत्स्थो वाढमित्यब्रवीत्स्यन् ॥ २० ॥

| | |
|-------------|--|
| राम | “ ஸ்ரீராம! |
| पुरुषोत्तम | புருஷோத்தம! |
| अस्माभिः | எங்களை |
| विना | விட்டு |
| स्वं | தேவரீர் |
| गच्छे: | { எழுந்தருளுகிறதாய் திருவுள்ளத்தில் கொண்டுவிடுகின்றீர் |
| यदि | என்கிறபக்கத்தில் |
| त्वया | தேவரீரால் |
| यमदण्डं | யமதண்டனைக்கு |
| उद्यम्य स्म | ஒப்புவிக்கவிட்டு |

| | |
|----------------|--|
| विनिपातिताः इव | அவமாய் நமடைந்தவர் களாகவே ஆவோம்.” |
| तैः | அவர்களால் |
| एवं | இவ்வண்ணமாய் |
| उक्तः | { விண்ணப்பம் செய்த தற்குத் திருச்செவி சாய்த்தருளிய |
| काकुत्स्थः | காகுத்தீர் |
| स्यन् | புன்னகைசெய்து |
| वाढं इति | அப்படியே செய்யுந் கள் என்று |
| अब्रवीत् | சொல்லியருளினார். |

एतस्मिन्नन्तरे रामं सुग्रीवोऽपि महाबलः । प्रणम्य विधिवद्वीरं विज्ञापयितुमुद्यतः ॥ २१ ॥

| | |
|-----------------|----------------|
| एतस्मिन् अन्तरे | இந்த ஸமயத்தில் |
| महाबलः | மஹாபலிஷ்டனாகிய |
| सुग्रीवः | சுகரீவன் |
| अपि | தனியே |
| वीरं | வீரராகிய |
| रामं | ஸ்ரீராமரை |

| | |
|--------------|---|
| विधिवत् | சாஸ்திரமுறைப்படி. |
| प्रणम्य | திருவடிகளில் முடி தாழ்த்தி நமஸ்கரித்து |
| विज्ञापयितुं | விண்ணப்பம்செய்ய |
| उद्यतः | இப்படி தீர்மானித் தார். |

अभिषिच्याद्दं वीरमागतोऽस्मि नरेश्वर । तवानुगमने राजन्विद्धि मां कृतनिश्चयम् ॥

| | |
|------------|-------------------------------|
| नरेश्वर | “ புருஷோத்தமர்! |
| वीरं | ஔரணகிய |
| अद्भुतं | அங்கதனுக்கு |
| अभिषिच्य | மகுடாபிஷேகம் செய்துவிட்டு |
| आगतः अस्मि | அடியேன் வந்திருக்க கிறேன். |
| राजन् | சக்கிரவர்த்தியாரே! |
| मां | அடியேனை |

| | |
|------------|--|
| तव | தேவரீரது |
| अनुगमने | { தன்னடிச்சோதிக்கு எழுந்தருளும்போது பின்பற்றியே செல் லும் விஷயத்தில் |
| कृतनिश्चयं | { தேவரீர் மறுக்கமாட் டீர் என்ற நம்பிக்கை புடனிருப்பவனாக திருவுள்ளத்தில் |
| विद्धि | பற்றவேண்டும்.” |

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा रामो रमयतां वरः । वानरेन्द्रमथोवाच मैत्रं तस्यानुचिन्तयन् ॥२३॥

| | |
|--------|---|
| रमयतां | { யாசித்தவைகளால் லாம் அளிக்கவல்ல வர்களில் |
| वरः | உத்தமராகிய |
| रामः | ஸ்ரீராமர் |

| | |
|----------|--------------|
| तस्य | அவருடைய |
| तत् | அந்த |
| वचनं | விண்ணப்பத்தை |
| श्रुत्वा | செவிகொண்டு |
| तस्य | அவருடைய |

மீந் ஸ்ரீஹப* வத்தை
 அநுசிந்தயந் பெருமைபாய் மதிக்க
 கின்றவராய்

வானரேந்திரரைப்
 வானரேந்திரரைப்
 இப்படி [பார்த்து
 திருவாய்மலர்ந்தருளி
 னார்:

சரவே ஶ்ருஷ்வ ஶுபீவ ந த்வயாஹ் விநாகுத:

சரவே “ஆப்தஸ்ஸே ஹி தன
 ஶுபீவ ஶகீவ! [கும்
 ஶ்ருஷ்வ நான் சொல்வதைக்
 த்வயா உன்னை [கேள்.
 விநாகுத: விட்டுப்பிரிந்தவனாய்
 அஹ் நான்

ரக்ஷேய் தேவலோகம் வா பரம் வா பதம் மஹ் ||

தேவலோகத்திற்குத்
 தானாகட்டும்
 மஹ் மஹத்தான
 பரம் பதம் வா பரமபதத்திற்குத்தா
 னாகட்டும்
 ரக்ஷேய் ந போகமாட்டேன்.”

விபிஷணமயோவாச மயுர் ஶ்ரக்ஷணயா கிரா |

ராக்ஷசேந்ர மஹவீரீய் லக்ஷாஸ்த்ஸ்வ் ஶ்ரிக்ஷயஸி
 விபிஷணம் விபிஷணரைப்

ஶ்ரக்ஷணயா மிருதுவாயிருக்கின்ற
 கிரா சொற்கொண்டு
 மயுர் ஹிதமாயிருப்பதை
 அய இப்படியாய்
 உவாச ஆக்ரோபித்தருளினார்.
 மஹாசூரனும்
 ராக்ஷசேந்ர திரனுமான

யாவத்யஜா ஶ்ரிக்ஷயஸி தாவத்யவீ விபிஷண ||

|| 25 ||

விபிஷணம் விபிஷண!
 த்யஜா: திரஜைகள்
 யாவத் எதுவரைக்கும்
 ஶ்ரிக்ஷயஸி வாழ்கின்றனரோ
 தாவத் அதுவரைக்கும்
 த்வ் ஶ்ரிக்ஷயஸி நீ வாழ்வாய்.
 த்வ் லக்ஷாஸ்த: நீ இலங்கையிலேயே
 வஸிப்பாயாக.

ஷாஸிதஸ்த்வ் சரிக்ஷிதேந் கரீயீ தீ மம ஶாஸனம் |

ஷாஸித: “என்னால் வேண்டிக்
 கொள்ளப்பட்ட
 த்வ் நீ
 தீ உனக்கும்
 மம எனக்குமுள்ள
 சரிக்ஷிதேந் நட்பின் பெருமையால்
 ஶாஸனம் சொல்லியதை

த்யஜா: சரிக்ஷ தயேந் நோத்ரர் த்யுதமஹிஸி ||

கரீயீ செய்தே தீரவேண்டும்.
 தயேந் அறநெறிதவறாது
 த்யஜா: திரஜைகளை
 சரிக்ஷ பரிபாலித்துவருக.
 நோத்ரர் வேறு உத்திரத்தை
 த்யுத சொல்ல
 ந அஹிஸி நீ எண்ணுதே.

தமேவயுத்வா காகுரஸ்த்யோ ஶ்ருநமந்மதயாப்ரவீத் |

காகுரஸ்த்ய: காகுதஸ்தர்
 த்வ் இவ்வண்ணம்
 த்வ் அவருக்கு
 உத்வா தியமித்தருளிய
 பின்னர்
 ஶ்ருநமந் ஹனுமாரைப்பார்த்து
 அய இப்படி
 அப்ரவீத் திருவாய்மலர்ந்தருளி
 னார்:

தீவீதே க்ருதத்யுதிஸ்த்வம் மா திரிஷா த்வயா த்வயா: ||

த்வம் “நீ
 தீவீதே சிரஞ்சீவியாயிருக்கும்
 விஷயத்தில்
 க்ருதத்யுதி: தீர்மானிக்கப்பட்டிருக்
 கின்றனை.
 திரிஷா: திரதிக்ஷணைய
 த்வயா அழிய
 மா த்வயா: நீ இடங்கொடாதிரு.

मत्कथाः प्रचरिष्यन्ति यावन्नलोके हरीश्वर । तावच्चं धारय प्राणान् प्रतिज्ञामनुपालय ॥

हरीश्वर " वा னரோ த்தம் !
 लोके உலகில்
 यावत् எவ்வளவுகாலம்
 मत्कथाः எனது கதைகள்
 प्रचरिष्यन्ति வழங்குகின்றனவோ
 तावत् அவ்வளவுகாலம்

एवं நீ
 प्राणान् உயிரை
 धारय வகித்துவா.
 प्रतिज्ञां பிரதிக்கொளையே
 अनुपालय பெருமைப்படுத்து."

जाम्बवन्तं तथोक्त्वा तु वृद्धं ब्रह्मसुतं तथा । मैन्दं च द्विविदं चैव पञ्च जाम्बवता सह ॥
 यावत्कलिश्च संप्राप्तस्तावज्जीवत सर्वदा ॥ २९ ॥

तानेवमुक्त्वा काकुत्स्थः सर्वास्तावृक्षवानरान् । उवाच बाढं गच्छध्वं मया सार्धं यथेप्सितम् ॥

काकुत्स्थः काकुத்ஸ்தர்
 तथा அவ்வண்ணம்
 उक्त्वा तु ஆக்ஞாபித்தருளிய
 பின்னர்
 ब्रह्मसुतं பிரம்மதேவரின்
 புதல்வரும்
 वृद्धं तथा வயதுமுதிர்ந்தவருமா
 जाम्बवन्तं च ஜாம்பவானையும் [கிய
 मैन्दं च மைந்தனையும்
 द्विविदं एव த்விவிதனையும்
 जाम्बवता सह ஜாம்பவானோடுகூடிய
 तान् அந்த
 पञ्च ஐவர்களையும்பார்த்து
 एवं இப்படியாய்
 सर्वदा " எக்காலத்திலும்
 कलिः संप्राप्तः கலிகாலம் வருகிறது

यावत् तावत् எப்போதோ அது
 வரைக்கும்
 जीवत { பெருமையாய் வாழ்ந்
 துவருவீர்களாக"
 என்று
 उक्त्वा நியமித்தருளிவிட்டு
 तान् அந்த
 ऋक्षवानरान् கரடிகள், வானரர்கள்
 सर्वांन् எல்லோரையும்
 बाढं " சரி, [பார்த்து
 यथेप्सितं உங்களது மனோரதப்
 पडिये
 मया सार्धं என்னோடுகூடவே
 गच्छध्वं நீங்கள் வந்துசேருங்
 कर्ण" என்று
 उवाच ஆக்ஞாபித்தருளினார்.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये उत्तरकाण्डे अष्टोत्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23941



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 3217

नवोत्तरशततमः सर्गः—ஐற்றொன்பதாவது ஸர்க்கம் ॥ १०९ ॥

श्रीरामस्य महाप्रस्थानम्—ஸ்ரீராமர் வைகுண்டயாத்திரைக்குப்பறப்பவெது.

प्रभातायां तु शर्वर्यां पृथुवक्षा महायशाः । रामः कमलपत्राक्षः पुरोधसमथाब्रवीत् ॥ १ ॥

शर्वर्यां तु இரவு சுழிந்து
 प्रभातायां மறுநாள் விடிந்தவள
 विले
 पृथुवक्षाः அகன்ற மார்புடைய
 வரும்
 कमलपत्राक्षः செந்தாமரைக்கண்
 ணரும்

महायशाः மஹாயசன்வியுமாகிய
 रामः ஸ்ரீராமர்
 पुरोधसं புரோஹிதரைப்
 अथ இப்படி [பார்த்து
 अब्रवीत् சிருவாய்மலர்ந்தருளி
 ணர்:

அரிஹோத்ரம் த்ரஜத்வயே சர்பிர்ஜ்வலிதபாவகம் | தாஜபேயாதபத்ரம் த் சோதமானம் த்ரஹபதே || 2 ||

| | | | |
|--------------------------------|---|-------------------|-------------------------------|
| தாஹபதே | “தன் னாடிச் சோதிக்க சூச்செல்லும் வழியில் முன்னே அக்கினிபகவானை உருக்கிய நெய்கொ ண்டு ஆஹுதிக்கள் செய்யப்பட்டதாய் | சோதமானம் | ஜ்வலித்துக்கொண்டி ருக்கும் |
| அரி சர்பிர்ஜ்வலி- பாவகம் | } | அரிஹோத்ரம் | அக்னிஹோத்ரமும் |
| | | தாஜபேயாதபத்ரம் த் | தாஜபேயத்துடையும் |
| | | த்ரஜது | செல்லட்டும். |

தோ த்ரஸிஸ்துஸ்தேஜஸ்வீ சர்வம் த்ரவசேஷத: | த்ரகார விதீவதர்மம் த்ரஹாபஸ்தானிகம் விதீயம் || 3 ||

| | | | | | |
|--------------------|--------------|---|-----------|--|--|
| தத: | அப்பொழுது | தர்மம் | { | கட்டாயமாய்ச் செய்து தே தீரவேண்டியதா யுமிருக்கும் | |
| தேஜஸ்வீ | தேஜஸ்வியாகிய | விதீயம் | | வைதீகக்கரியை | |
| தர்சுஷ: | வஸிஷ்டர் | சர்வம் | | எல்லாவற்றையும் | |
| தாஹ- பஸ்தானிகம் | } | விதீயத் | | சாஸ்திரமுறைப்படி | |
| | | பரலோகயாத்திரை யின் ஆரம்பத்தில் இவ்வுலகிலேயே செய்யவேண்டியதும் | த்ரவசேஷத: | | சூறையென்பதேயில்லா செய்தருளினார். [மல் |
| | | | த்ரகார | | |

தத: சூக்ஷமாஹ்வரதரோ த்ரஹ சார்வதீயநரம் | சூக்ஷான்யஹீத்வா த்ரபாணித்யாம் த்ரஸத்ய த்ரயயாவத ||

| | | | |
|---------------|---------------------------------|-----------|----------------------------------|
| தத: | அதன்மேல் | த்ரஸத்ய | விரல்களில் இடுக்கிக் கொண்டு |
| அத | அப்பொழுது | த்ரம் | ஸர்வமுமாகிய |
| சூக்ஷமாஹ்வரத: | மெல்லிய வஸ்திரம் தரித்தவராய் | த்ரஹ த் | ஓம் எனும் திரம்மமந் திரத்தையே |
| த்ரபாணித்யாம் | இருகைகளா லும் | அர்வதீயந் | ஜபித்துக்கொண்டு |
| சூக்ஷான் | தர்ப்பைகளை | த்ரயயோ | யாத்திரைக்கு ஸன் ஹுஹமாயினார். |
| ஹீத்வா | எடுத்து | | |

அந்யாஹ்ரந்கசிர்திக்கிநிதீஷ்டோ த்ரநி:சுரவ: த்ரபதி | த்ரநிர்ஜாதம் த்ரஹாத்தஸாஹீத்யமானம் த்ரவாஸுதானம் ||

| | | | | |
|------------------|---|---------------|---|--|
| த்ரவாஸுதானம் த்ர | சூர்யபகவானெனவே தேஜோமயமாய் விளங்குமவர் | நிதீஷ்ட: | { | இந்திரியங்களை அத்து தொழிலிலிருந்து ஓடுக்கியவராயும் |
| த்ரபதி | இப்பொழுது இருக்கவேண்டிய பதத்தில் | நி:சுரவ: | | சிரமபரிஹாரக்கருவி களை துறந்தவராகி |
| த்ரநிர்ஜாதம் த்ர | ஸமிக்கொருசெய்துகூட பேசாதவராகி | தஸாத் | | அந்த |
| | | த்ரஹாத் | | தருமா ளிகையினின்று |
| | | நிர்ஜாதம் த்ர | | திரயாணமாயினார். |

रामस्य दक्षिणे पार्श्वे पद्मा श्रीः सुसमाहिता ।

| | |
|-----------|--|
| दक्षिणे | வலது |
| पार्श्वे | பாரசிவத்தில் |
| सुसमाहिता | { பரமாத்மாவையே த்யானம் செய்து கொண்டிருக்கும் |
| पद्मा | பத்மாவெனவும் விளங்கும் |
| श्रीः | மஹாலக்ஷ்மியும் |

शरा नानाविधाश्चापि धनुरायतमुत्तमम् ।

| | |
|-----------|-------------------|
| नानाविधाः | நானவிதங்களான |
| शराः अपि | பாணங்களும் |
| आयतं | சித்தமாயிருக்கும் |
| उत्तमं | உத்தமமான |
| धनुः च | கோதண்டமும் |

वेदा ब्राह्मणरूपेण गायत्री सर्वरक्षिणी ।

| | |
|-------------|---|
| वेदाः | வேதங்களும் |
| सर्वरक्षिणी | { எப்படிப்பட்டதாகிய தீங்கையும் விலக்க வல்லதாகிய |
| गायत्री | வேதங்களின் மாதா வாகிய காயத்ரியும் |
| अथ | அவ்வண்ணமே |

ऋषयश्च महात्मानः सर्वे एव महीसुराः ।

| | |
|-------------------------|--|
| महात्मानः | மஹாத்மாக்களாகிய |
| ऋषयः च | ரிஷிகளும் |
| महीसुराः | வேதியர்களும் |
| सद्ब्रह्म- दासिकाः } | விருத்தர்களும் யெள வனதசையிலிருப்ப வர்களுமாகிய பணி விடை செய்யும் வேலைக்காரி களோடுகூடவும் |
| सर्वैश्वरकिङ्कराः | பேடிகளோடுகூடவு மிருக்கும் |
| अन्तःपुरचराः | அந்தப்புரவாஸி களாகிய |

सव्ये तु द्वीर्षहादेवी व्यवसायस्तथाग्रतः ॥

| | |
|-----------|-------------------------|
| सव्ये | இடதுபாரசிவத்தில் |
| महादेवी | மஹாதேவியென விளங்கும் |
| ह्रीः | நிலமகளும் |
| तथा | அவ்வண்ணமே |
| व्यवसायः | ஸம்ஹாரசக்தியும் |
| रामस्य तु | ஸ்ரீராமருக்குமாத் |
| अग्रतः | தென்பட்டன. [திராம் |

अनुव्रजन्ति काकुत्स्थं सर्वे पुरुषविग्रहाः ॥ ७ ॥

| | |
|---------------|-----------------------------|
| सर्वे | எல்லாமும் |
| पुरुषविग्रहाः | மானிடரூபம் கொ ண்டவைகளாய் |
| काकुत्स्थं | காகுத்தரை |
| अनुव्रजन्ति | பின்பற்றிச்சென்றன. |

ओंकारोऽथ वष्ट्कारः सर्वे राममनुव्रताः ॥८॥

| | |
|---------------|---------------------------|
| ओंकारः | ஓங்காரமும் |
| वष्ट्कारः | வஷ்ட்காரமும் |
| सर्वे | எல்லாமும் |
| ब्राह्मणरूपेण | ஒருவேதியர் ரூபங்கொண்டு |
| रामं | ஸ்ரீராமரை |
| अनुव्रताः | பின்பொடர்ந்தன. |

अन्वगच्छन्महात्मानं स्वर्गद्वारमपावृतम् ॥ ९ ॥

तं यान्तमनुगच्छन्ति ह्यन्तःपुरचराः स्त्रियः ।

| | |
|--------------|---|
| स्त्रियः हि | ஸ்த்ரீகளும் |
| सर्वे एव | எல்லோருமே |
| स्वर्गद्वारं | சுவர்க்கவாசலின் கதவை |
| अपावृतं | முற்றிலும் திறக்கப் பட்டிருக்கிறதாய் |
| अन्वगच्छन् | அறிந்துகொண்டார் கள். |
| यान्तं | எழுந்தருளிப்போகும் |
| तं | அந்த |
| महात्मानं | மஹாத்மாவை |
| अनुगच्छन्ति | பின்பற்றிச்சென்றார் கள். |

सान्तःपुरश्च भरतः शत्रुघ्नसहितो ययौ । रामं गतिमुपागम्य साग्निहोत्रमनुव्रतः ॥ ११ ॥

ராமம் ஸ்ரீராமரிடம்
 அனுவர்தம் ஒப்புயர்வில்லா த
 பக்திகொண்ட
 भरतः பரதர்
 सान्तःपुरः च { தனது அந்தப்புர
 ஜனங்களை அழைத்
 துக்கொண்டும்

साग्निहोत्रं { தனது அக்கினிஹோ
 த்திரத்தை கூடவே
 எடுத்துக்கொண்டும்
 शत्रुघ्नसहितः சத்ருக்கனரையும்
 கூட்டிக்கொண்டு
 गतिं செல்லும்வழியை
 उपागम्य ययौ பின்பற்றிச் சென்றார்.

ततो विप्रा महात्मानः साग्निहोत्राः समागताः । सपुत्रदाराः काकुत्स्थमन्वगच्छन्महामतिम् ॥

ततः அப்பொழுது
 महात्मानः மஹாத்மாக்களாகிய
 विप्राः அந்தணர்கள்
 साग्निहोत्राः அக்கினிஹோத்ரங்களை
 எடுத்துக்கொண்டு
 सपुत्रदाराः { புத்திரர்களையும்
 பதனிகளையும்
 அழைத்துக்கொண்டு

समागताः எல்லோருமாய்ச்
 சேர்ந்து
 महामतिं அபூர்வபக்திக்குப்
 பாத்திராகிய
 काकुत्स्थं காசுத்தரை
 अन्वगच्छन् பின்பற்றிச்சென்றார்
 கள்.

मन्त्रिणो भृत्यवर्गाश्च सपुत्राः सहबान्धवाः । सर्वे सहानुगा राममन्वगच्छन्महृष्टवत् ॥ १३ ॥

मन्त्रिणः மந்திரிமார்களும்
 भृत्यवर्गाः च பிருத்தியவர்க்களும்
 सर्वे எல்லோரும் [களும்
 महृष्टवत् அத்தயந்த உதஸாஹம்
 கொண்டவர்களாய்
 सपुत्राः புத்திரர்களோடும்

सहबान्धवाः பந்துஜனங்களோடும்
 सहानुगाः பரிவாரஜனங்களோ
 டும்
 रामं ஸ்ரீராமரை
 अन्वगच्छन् பின்பற்றிச்சென்றார்
 கள்.

ततः सर्वाः प्रकृतयो हृष्टपुष्टजनावृताः । गच्छन्तमन्वगच्छंस्तं राघवं गुणरञ्जिताः ॥ १४ ॥

ततः सखीपुमांसस्ते सपक्षिपशुवाहनाः । राघवस्यानुगाः सर्वे हृष्टा विगतकल्मषाः ॥ १५ ॥

स्नाताः प्रमुदिताः सर्वे हृष्टाः पुष्टाश्च वानराः । दृढं किलकिलाशब्दैः सर्वे राममनुव्रतम् ॥

ततः அப்பொழுது
 गुणरञ्जिताः { அவதாரகுணமொன்
 றையே கொண்டாடி
 அண்டி அனுசரித்த
 प्रकृतयः தேசாதிபதிகள்
 सर्वाः எல்லோரும்
 हृष्टपुष्ट- } ஸர்வப்ரகாரத்திலும்
 जनாவृताः } மனஸந்துஷ்டிகொ
 ண்ட ஜனங்களால்
 சூழப்பெற்றவர்
 களாய்

ततः அப்பொழுது
 राघवस्य ஸ்ரீராகவரது
 अनुगाः காலவாசிகளான
 ते அந்த
 सखीपुमांसः ஸ்த்ரீகளும் புருஷர்
 सर्वे எல்லோரும் [களும்
 सपक्षिपशु- } பகஷிகள், பசுக்கள்,
 वाहनाः } வாஹனங்கள்
 இவைகளோடும்
 विगतकल्मषाः பாபரஹிதர்களாகி

| | |
|---------------|---|
| हृष्टाः | மனஸந்தூஷ்டி கொண்டவர்களாய் |
| प्रमुदिताः | ஆனந்தபரிதராய் |
| ज्ञाताः | வேதங்களைக்கற்ற நிந்திருந்த |
| पुष्टाः | மஹாத்மாக்களாகிய |
| वानराः | வானரர்கள் |
| सर्वे | எல்லோரும் |
| किलकिशाशब्दैः | கீச் கீச் எனும் சப்தங் களைச்செய்துகொண்டு |
| हृष्टाः | உதஸாஹற்கொண்ட வர்களாய் |
| सर्वं | எதையும் |

| | |
|------------|--|
| दृष्टं | சலியாது |
| अनुव्रतं | வாக்களித்தவண்ண மே செய்தருளுபவ ராய் |
| रामं च | ஸகலருக்குமானந்த காரும் |
| गच्छन्तं | எழுந்தருளப்போய்க் கொண்டிருப்பவரு மாகிய |
| तं | அந்த |
| राघवं | ஸ்ரீராகவரை |
| अन्वगच्छन् | பின்தொடர்ந்து சென்றார்கள். |

न तत्र कश्चिदीनो वा व्रीडितो वाऽपि दुःखितः । हृष्टं प्रमुदितं सर्वं बभूव परमाद्भुतम् ॥

| | |
|-------------|--------------------------------------|
| तस्य | அக்காலத்தில் |
| दीनः वा | மனதில் குறையுள்ள வந்தான் ஆகட்டும் |
| दुःखितः | துயரமுள்ளவன் தானாகட்டும் |
| व्रीडितः वा | கலவாமடைந்த மனத் தினன் தானாகட்டும் |
| कश्चित् अपि | எவனேனுமொருவன் கூட |

| | |
|------------|-------------------------------------|
| न | இல்லை. |
| सर्वं | எல்லாமும் |
| परमाद्भुतं | அமாநுஷ்டகரமாய் |
| प्रमुदितं | அத்யானந்தம்பெற்று விளங்குகிறதாய் |
| हृष्टं | உதஸாஹர்த்துடனி ருக்கிறதாய் |
| बभूव | விளங்கிற்று. |

द्रष्टुकामोऽथ निर्यान्तं रामं जानपदो जनः । यः प्राप्तः सोऽपि दृष्ट्वैव स्वर्गायानुगतो मुदा ॥

| | |
|-------------|---------------------------|
| अथ | அப்பொழுது |
| जानपदः | கிராமவாஸியாகிய |
| जनः | ஜனஸமூகம் |
| यः | எது |
| रामं | ஸ்ரீராமரை |
| द्रष्टुकामः | தர்சிக்க எண்ணம் கொண்டு |
| प्राप्तः | வந்திருந்ததோ |

| | |
|-------------|------------------------------|
| सः अपि | அதெல்லாமும் |
| दृष्ट्वा एव | விஷயம் தெரிந்து கொண்டதுமே |
| स्वर्गाय | ஸ்வர்க்கத்திற்கு |
| निर्यान्तं | எழுந்தருளுமவரை |
| मुदा | ஸந்தோஷத்துடன் |
| अनुगतः | பின்பற்றிச்சென்றது. |

ऋक्षवानररक्षांसि जनाश्च पुरवासिनः । आगच्छन्परया भक्त्या पृष्टतः सुसमाहिताः ॥

| | |
|------------|------------------------------|
| परया | ஸர்வோக்கிருஷ்ட மாகிய |
| भक्त्या | பக்தியொன்றைக் கொண்டே |
| सुसमाहिताः | மஹா புண்பபாக்கி யம் பெற்ற |

| | |
|------------------|--|
| ऋक्षवानररक्षांसि | கரடிகளும் வானரக் ளும் ராக்ஷஸர்களும் |
| पुरवासिनः | நகரவாஸிகளும் |
| जनाः च | ஜனங்களெல்லாமும் |
| पृष्टतः | கூடவே (பிந்தி) |
| आगच्छन् | சென்றார்கள். |

यानि भूतानि नगरे त्वन्तर्धानगतानि च । राघवं तानुन्ययुः स्वर्गाय समुपस्थितम् ॥

नगरे } नकरத்தில்
 अन्तर्धान- } யாவர் கண்ணிலும்
 गतानि } புலப்படாமல் மூலை
 முடுக்குகளில் மறை
 நஞ்சுகிடந்திருந்த
 भूतानि பூதங்கள்
 यानि எவைகளோ

तानि च } அவைகளைல்லாமும்
 तु இப்பொழுது
 स्वर्गाय வைகுண்டத்திற்கு
 समुपस्थितं எழுந்தருளிப்போகும்
 राघवं ஸ்ரீ ராகவரை
 अनुयुः பின்பற்றிச்சென்றன.

यानि पश्यन्ति काकुत्स्थं स्थावराणि चराणि च । सर्वाणि रामगमने ह्यनुजग्मुर्हितान्यपि ॥

स्थावराणि अपि } ஸ்தாவரங்களும்
 चराणि हि ஜங்கமங்களும்
 काकुत्स्थं காகுத்தஸ்தரை
 पश्यन्ति தற்காலம் கண்முன்
 கண்டது
 यानि எவைகளோ

सर्वाणि च } அவைகளைல்லாமும்
 रामगमने ஸ்ரீராமரெழுந்தருளு
 வதில்
 हितानि நன்மைபெற்றவை
 களாய்
 अनुजग्मुः பின்பற்றிச்சென்றன.

नोच्छ्वसत्तदयोध्यायां सुसूक्ष्ममपि दृश्यते । तिर्यग्योनिगताश्चापि सर्वे राममुव्रताः ॥

तत् } அக்காலத்தில்
 अयोध्यायां } அயோத்தியில்
 सुसूक्ष्मं अपि } மஹா அற்ப உயிர்பி
 ராணிஸமூஹமும்
 न उच्छ्वसत् } பின் தங்கிவிடவில்லை.
 च } என்கிறபடியால்

तिर्यग्योनिगताः अपि } பக்திவர்க்கங்களும்
 सर्वे எல்லாமும்
 रामं } ஸ்ரீராமரிடத்தில்
 अनुव्रताः } அபூர்வபத்திவைத்த
 வைகள் எஸ்கிறது
 दृश्यते } பிரத்தியக்ஷமாய்
 விளங்குகிறது.

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये

उत्तरकाण्डे नवोत्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 23962



उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 3218

दशोत्तरशततमः सर्गः—நூற்றிப்பத்தாவது ஸர்க்கம் ॥ ११० ॥

श्रीरामस्य वैष्णवतेजःप्रवेशः, फलनिरूपणं च—ஸ்ரீராமர் வைஷ்ணவ தேஜஸ்ஸில் பிரவேசிப்பதும் ஸ்ரீராமாணபலச்குதியும்.

अध्यर्धयोजनं गत्वा नदीं पश्चान्मुखाश्रिताम् । सरयूं पुण्यसलिलां ददर्श रघुनन्दनः ॥

रघुनन्दनः } ஸ்ரீரகுந்தனர்
 अध्यर्धयोजनं } ஒன்றரையோஜனை
 தாரம்
 गत्वा } கால்நடையே சென்று
 पश्चान्मुखाश्रितां } மேற்குமுகமாய் ஓடும்

पुण्यसलिलां } மஹாபரிசுத்தமாகிய
 ஜலத்தையுடைய
 सरयूं नदीं } ஸரயூநதிக்கு
 ददर्श } வந்துசேர்ந்தார்.

अथ तस्मिन्मुहूर्ते तु ब्रह्मा लोकपितामहः । सर्वैः परिवृतो देवैर्ऋषिभिश्च महात्मभिः ॥२॥
आययौ यत्र काकुत्स्थः स्वर्गाय समुपस्थितः । विमानशतकोटीभिर्दिव्याभिरभिसंवृतः ॥

काकुत्स्थः का குத்ஸ்தர்
स्वर्गाय வைகுண்டத்திற்கு
समुपस्थितः எழுந்தருளத் திருவு
ள்ளம்பற்றியவராய்
यत्र अथ { வந்துசேர்ந்திருந்தது
எவ்விடத்திற்கோ
அவ்விடத்திற்கே
तरिमन् அதே
मुहूर्ते तु முகூர்த்தத்திலேயே
दिव्याभिः தேவதைகளுக்கே
உரியதான

विमानशत- } நூறு கோடி விமானம்
कोटीभिः } களிலேறிக்கொண்டு
देवैः தேவர்கள் [வந்த
सर्वैः எல்லோராலும்
परिवृतः சூழப்பட்டவராயும்
महात्मभिः மஹாத்மாக்களான
ऋषिभिः च ரிஷிகளாலும்
अभिसंवृतः சூழப்பெற்றவராய்
लोकपितामहः லோகபிதாமஹராகிய
ब्रह्मा பிரம்மதேவர்
आययौ எழுந்தருளினார்.

दिव्यतेजोवृतं व्योम ज्योतिर्भूतमनुत्तमम् । स्वयंप्रभैः स्वतेजोभिः स्वर्गिभिः पुण्यकर्मभिः ॥

व्योम ஆகாசமானது
स्वयंप्रभैः { ஸ்வபாவசித்தமாகிய
திவ்யதேஜையுடைய
யவர்களாலும்
स्वतेजोभिः { சிருஷ்டிக்கப்படும்பொ
ழுதே திவ்யதேஜையு
யுடையவர்களாலும்

पुण्यकर्मभिः புண்யகர்மங்களின்
பயனாலேற்பட்ட
स्वर्गिभिः சுவர்க்கவாஸிகளாலும்
अनुत्तमं ஒப்புயர்வில்லாதபடி
ज्योतिर्भूतं சோதிமயமாய் [யாய்
दिव्यतेजोवृतम् அமரனுஷ்யதேஜோ
மயமாய் விளங்கிற்று.

पुण्या वाता ववुश्चैव गन्धवन्तः सुखप्रदाः । पपात पुष्पवृष्टिश्च देवैर्युक्ता महौघवत् ॥ ५ ॥

वाता: நால்புறங்களிலு
மிருந்துவந்த காற்று
पुण्या: च மஹா பரிசுத்தமாயும்
गन्धवन्तः च பரிமளகந்தமுள்ள
தாகவும்
सुखप्रदाः } அதிகமின்றியும்
एव { குறைவுமில்லாமலும்
சுகத்தைத் தருகிற
தாயும்

ववुः வீசிற்று.
देवैः தேவர்களால்
युक्ता பொழியப்பட்ட
पुष्पवृष्टिः பூமாரியானது
महौघवत् ஒச்சலொழிவின்றி
पपात பொழிந்தது.

तस्मिन्स्तूर्यशतैः कीर्णै गन्धर्वाप्सरसङ्कुले । सरयूसलिलं रामः पद्भ्यां समुपचक्रमे ॥ ६ ॥

रामः ஸ்ரீராமர்
गन्धर्वाप्सरसङ्कुले கந்தர்வகணங்கள்
அப்ஸரகணங்கள்
स्तूर्यशतैः பலதூர்யவராத்யம்
களைக்கொண்டு

कीर्णै { பிரதித்வனி ஒலிக்கும்
வண்ணம் முழங்கிக்
கொண்டிருந்த
तरिमन् அந்த ஸமயத்திலே
पद्भ्यां இரு திருவடிகளாலும்
सरयूसलिलं ஸரயூரதீதீரத்திலே
समुपचक्रमे எழுந்தருளினார்.

ततः पितामहो वाणीमन्तरिक्षादभाषत । आगच्छ विष्णो भद्रं ते दिष्ट्या प्राप्तोऽसि राघव ॥

| | | | |
|--------------|-------------------------------|--------------|--|
| ततः | அந்த பிரஸக்தியில் | विष्णो | ஸ்ரீமந்நாராயணமூர்த் |
| पितामहः | பிரம்மதேவர் | ते | தேவரீருக்கு [தியே! |
| अन्तरिक्षात् | ஆகாயத்தினின்றே | भद्रं | 'பல்லாண்டுபல்லாண்டு'. |
| वाणी | இந்தமொழியை | प्राप्तः असि | தேவரீர் இங்கே எழுந் தருளியிருக்கிறது |
| अभाषत | திருவாய்மலர்ந்தருளி னார் : | दिष्ट्या | என்களது பாக்ய விசேஷம். |
| राघव | “ரகுலசிகாமணி யாய் விளங்கிய | आगच्छ | திரும்பிவந்துசேர திரு வுள்ளம்கொள்வீராக. |

भ्रातृभिः सह देवाभैः प्रविशस्व स्विकां तनुम् ।
यामिच्छसि महाबाहो तां तनुं प्रविश स्विकाम् ॥
वैष्णवीं तां महातेजस्तद्वाऽऽकाशं सनातनम्

॥ ८ ॥

| | | | |
|--------------|--|-----------|---|
| देवाभैः | “தேவாம்ச அவதா ரங்களாகிய | प्रविशस्व | பிரவேசித்தருளலாம். |
| भ्रातृभिः सह | பிராதாக்களோடு கூடவே | इच्छसि वा | { தேவரீர் திருவுள்ளம் அப்படியாயில்லை என்கிறதானால் |
| तां | அந்த | महाबाहो | ஸ்ரீமந்நாராயண மூர்த்தியே! |
| स्विकां | தேவரீராகிய | तत् | அந்த |
| तनुं | திருமேனி | सनातनं | ஆதி ஒன்றில்லாத |
| यां | எதுவோ | महातेजः | மஹாதேஜோமயமாய் விளங்கும் |
| तां | அந்த | आकाशं | வைகுண்டத்திற்கு |
| वैष्णवीं | விஷ்ணுவின் து { தர்சிப்பவர்களுக்கு இனிபோதும் என் னும் தெவிட்டல் உண் டாகாததுமாகிற | प्रविश | இப்படியே எழுந்தரு ளலாம். |
| स्विकां | திருமேனியில் | | |

त्वं हि लोकगतिर्देव न त्वां केचित्प्रजानते । ऋते मायां विशालार्क्षीं तव पूर्वपरिग्रहाम् ॥
त्वामिचिन्त्यं महद्भूतमक्षयं सर्वसंग्रहम् ॥ ९ ॥

| | | | |
|---------|--|-----------------------|---|
| देव | “மஹாவிஷ்ணுவே ! | तव | தேவரீரது |
| लोकगतिः | { ஸகல லோகங்களுக் கும் ப்ராப்யமும் ப்ராபகமும் | पूर्व- परिग्रहां } | கடாக்ஷத்திற்கு பாத் திரமாய் எல்லாவற்றி ற்கும் முதலிலேயே ஸ்வீகரிக்கப்பட்டவ ளாகிய |
| त्वं हि | தேவரீரேயன்றே. | मायां | மகாசக்தியாகிய |
| अक्षयं | பரமாத்மாவாகிய | विशालार्क्षीं | மகாலக்ஷ்மியை |
| त्वां | தேவரீரை | | |

| | |
|-----------|---------------------------------|
| ऋते | தவிர வேறு |
| केचित् | எவனேனுமொருவ னும் |
| अचिन्त्यं | மனோவாக்குகளுக்கக ப்பட்டவரும் |
| महद्भूतं | ஸர்வவ்யாபியாயும் |

यामिच्छसि महातेजस्तां तनुं प्रविश स्वयम्

| | |
|---------|---------------------------------|
| महातेजः | “ மஹாதேஜஸ்வியே ! |
| इच्छसि | தேவரீர் திருவுள்ளமி ருக்கும் |
| तनुं | திருமேனி |
| यां | எதுவோ |

| | |
|-------------|---|
| सर्वसंप्रहं | } எல்லாவற்றையும் தன் னுள் அடக்கி ஆதரித் தருள்புரிபவராயுமி ருக்கும் |
| त्वां | |
| न प्रजानते | தேவரீரை கண்டறிந்ததில்லை. |

॥ १० ॥

| | |
|--------|------------------------------------|
| तां | அதில் |
| स्वयं | திருவுள்ளத்திலிருக் கின்றவண்ணமே |
| प्रविश | ஸேவை ஸாதிக்க அருள்புரிக.” |

पितामहवचः श्रुत्वा विनिश्चित्य महामतिः ।

| | |
|-------------|--|
| पितामहवचः | பிரம்மதேவரது திரு வாக்குக்கு |
| श्रुत्वा | திருச்செவிசாய்த்த |
| महामतिः | கருணைக்கடலாகுமவர் |
| विनिश्चित्य | } திருவுள்ளத்திலேயே தீர்மானத்தைச்செய் துகொண்டு |

विवेश वैष्णवं तेजः सशरीरः सहानुजः ॥

| | |
|---------|-------------------------------------|
| सहानुजः | தம்பிரமர்களையும் ஸ்வீகரித்தவராய் |
| सशरीरः | திருமாலுடைய திரு மேனியைப்பெற்றவ |
| वैष्णवं | வைஷ்ணவ [ராய் |
| तेजः | திருமேனியில் |
| विवेश | விளங்கினார். |

ततो विष्णुमयं देवं पूजयन्ति स देवताः । साध्या मरुद्गणाश्चैव सेन्द्राः साग्निपुरोगमाः ॥
ये च दिव्या ऋषिगणा गन्धर्वाप्सरसश्च याः । सुपर्णनागयक्षाश्च दैत्यदानवराक्षसाः ॥

| | |
|----------------|---|
| सेन्द्राः | இந்திரனுள்ளிட்டவர் களும் |
| साग्निपुरोगमाः | } அக்னியை தலைமையா ய்க்கொண்டவர்களு மான |
| देवताः | |
| साध्याः च | தேவர்களும் |
| मरुद्गणाः एव | ஸாத்தியர்களும் |
| दिव्याः | மருத்கணங்களும் தேவலோகவாஸி களாகிய |
| ऋषिगणाः | ரிஷிகணங்கள் |
| ये च | எவர்களோ அவர் களும் |

| | |
|------------------------|--|
| गन्धर्वाप्सरसः | கந்தர்வர்கள் அப்ஸ ரஸ்கள் |
| याः च | எவர்களோ அவர் களும் |
| सुपर्णनाग- यक्षाः च | } சுபர்ணர்களும் நாகர் களும் யக்ஷர்களும் |
| दैत्यदानव- राक्षसाः | |
| ततः | தைத்தியர்களும் தா னவர்களும் ராக்ஷ ஸர்களும் |
| विष्णुमयं | அப்பொழுது பூநீ மஹாவிஷ்ணுமூர் த்தியாய் விளங்கிய |
| देवं | தேவரை |
| पूजयन्ति स | பூஜித்தார்கள். |

सर्वं पुष्टं प्रसुदितं सुसंपूर्णमनोरथम् । साधु साध्विति तैर्देवैस्त्रिदिवं गतकल्मषम् ॥ १४ ॥

சை: தேவै: அந்த தேவர்களால்
 सर्व एल्लாமும் எல்லாமும்
 पुष्टं ஸர்வப்ரகாரத்திலும் ஸர்வப்ரகாரத்திலும்
 प्रसुदितं ஆனந்தகரமாய் முடி ஆனந்தகரமாய் முடி
 सुसंपूर्ण- } வுபெற்றது. வுபெற்றது.
 मनोरथं } மறோதமெல்லாமும் மறோதமெல்லாமும்
 அப்படியே முற்றி அப்படியே முற்றி
 ஆம் கைகடின். ஆம் கைகடின்.

विदिवं சவர்க்கமானது சவர்க்கமானது
 गतकल्मषं குறையற்றதாகி குறையற்றதாகி
 साधु साधु என்னபெருமை என்னபெருமை
 इति என்று கொண்டாடப் பட்டது. என்று கொண்டாடப் பட்டது.

अथ विष्णुर्महातेजाः पितामहमुवाच ह । एषां लोकं जनौवानां दातुमर्हसि सुव्रत ॥१५॥

अथ அப்பொழுது அப்பொழுது
 महातेजाः மஹாதேஜஸ்வியாகிய மஹாதேஜஸ்வியாகிய
 विष्णुः ह ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணுவும் ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணுவும்
 पितामहं பிரம்மதேவரைப் பிரம்மதேவரைப்
 பார்த்து பார்த்து
 उवाच இப்படி திருவாய் இப்படி திருவாய்
 மலர்ந்தருளிணர்: மலர்ந்தருளிணர்:

सुव्रत “மஹாபுண்யசாலியே! “மஹாபுண்யசாலியே!
 एषां இந்த இந்
 जनौवानां ஜனஸமூகங்களுக்கு ஜனஸமூகங்களுக்கு
 लोकं ஓர் உலகை ஓர் உலகை
 दातुं கொடுக்க கொடுக்க
 अर्हसि திருவுள்ளம்கொள் திருவுள்ளம்கொள்
 னும். னும்.

इमे हि सर्वे स्नेहान्मानुयाता मनस्विनः । भक्ता हि भजितव्याश्च त्यक्तात्मानश्च मत्कृते ॥

इमे “இவர்கள் “இவர்கள்
 सर्वे हि எல்லோருடேம் எல்லோருடேம்
 मत्कृते என்னிடத்தில் என்னிடத்தில்
 भक्ता: பக்திகொண்டவர் பக்திகொண்டவர்
 களாய் களாய்
 मनस्विनः च அந்தக்கரணசத்தி அந்தக்கரணசத்தி
 உடையவர்களாய் உடையவர்களாய்

त्यक्तात्मानः च பாஸமர்ப்பணம் பாஸமர்ப்பணம்
 च पண்ணिनिनवारं பண்ணினவர்கள் பண்ணினவர்கள்
 हि என்கிறபடியால் என்கிறபடியால்
 भजितव्याः ஆதரவுக்குப்பாத்தி ஆதரவுக்குப்பாத்தி
 ர்கள். ர்கள்.
 मां என்னிடத்தில் என்னிடத்தில்
 जेहत् வா த்ஸஸ்யத்தால் வா த்ஸஸ்யத்தால்
 अनुयाता: கூடவே வந்திருக்கின் கூடவே வந்திருக்கின்
 ரர்கள்.” ரர்கள்.”

तच्छ्रुत्वा विष्णुवचनं ब्रह्मा लोकगुरुः प्रभुः ।

लोकान्सान्तानिकान्नाम यास्यन्तीमे समागताः ॥ १७ ॥

यच्च तिर्यगात् किञ्चित्त्वामेवमनुचिन्तयत् ।

प्राणांस्त्यक्ष्यति भक्त्या वै तत्सन्ताने विवत्स्यति ॥

सर्वैर्ब्रह्मगुणैर्युक्ते ब्रह्मलोकादनन्तरे ॥ १८ ॥

वानराश्च स्त्रिकां योनिमृक्षाश्चैव तथा ययुः । येभ्यो विनिःसृताः सर्वे सुरेभ्यः सुरसंभवाः ॥

तेषु प्रविशेशे चैव सुग्रीवः सूर्यमण्डलम् । पश्यतां सर्वदेवानां स्वान्पितृन्प्रतिपेदिरे ॥ २० ॥

लोकगुरुः லோகஸிருஷ்டிகர் த லோகஸிருஷ்டிகர் த
 தாவாய் தாவாய்
 प्रभुः அதிகாரம்பெற்ற அதிகாரம்பெற்ற
 ब्रह्मा பிரம்மதேவர் பிரம்மதேவர்
 तत् அந்த அந்த

विष्णुवचनं ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணுவின் ஸ்ரீமஹாவிஷ்ணுவின்
 ननु திருவுள்ளத்தை திருவுள்ளத்தை
 श्रुत्वा அங்கீகரித்து அங்கீகரித்து
 वानराः “வானரர்களும் “வானரர்களும்
 ऋक्षाः च கரடிகளும் கரடிகளும்

| | |
|----------------|---|
| सुरेभ्यः | தேவர்கள் |
| येभ्यः | எவரெவர்களோ அவர்களிடமிருந்து |
| पश्यतां | நூனவான்களாகிய |
| सर्वदेवानां | ஸகலதேவர்களுக்கும் |
| सुरसंभवाः | தேவர்களின் குமாரர் களாய் |
| विनिस्तृताः | மண்ணுலகிலிருப்ப வர்களாய் |
| ययुः | ஆவிர்பவித்தார்கள். |
| सुधीवः एव | சகீர்வனும் |
| तथा | அவ்வண்ணமே |
| प्रविविशे | ஆவிர்பவித்தான். |
| सर्वे एव | எல்லோருமே |
| तेषु | அவர்களிடத்தில் |
| प्रतिपेदिरे | பக்திகொண்டு பூஜித்துவந்தார்கள். |
| सूर्यमण्डलं | அவன் சூர்யமண்ட |
| सिंकां | அதது [லத்திற்கும் |
| योनिं | வம்சத்தில் |
| स्वान् | அவரவர்களது |
| पितॄन् च | பிதாக்களையடையட்டு மென்றும் |
| समागताः | கூடவந்திருக்கின்ற |
| इमे | இவர்கள் |
| सान्त्वानिकान् | { என்பக்கவிலேயேயி ருக்கின்ற ஸாந்தானி கமென்றுவிளங்கும் |

तथोक्तवति देवेशे गोप्रतारमुपागताः । भेजिरे सरयूं सर्वे हर्षपूर्णाश्रुविक्रवाः ॥ २१ ॥

| | |
|--|------------------------------|
| देवेशे | பிரம்மதேவர் |
| तथा | அவ்வாறு |
| उक्तवति | திருவாய்மலர்ந்தரு ளியஉடன் |
| सर्वे | எல்லாமும் |
| सरयूं | ஸரயூர்தியில் |
| अवगाह्य जलं यो यः प्राणी ह्यासीत्प्रहृष्टवत् । | |
| यः यः | எப்படிப்பட்ட |
| प्राणी हि | பிராணியாயிருந்தா லும் |
| जलं | புண்பதீர்த்தத்தில் |

| | |
|---------------|---|
| लोकान् | உலகங்களில் |
| यास्यन्ति | வாழ்ந்துவாட்டு மென்றும் |
| किञ्चित् | அற்பமான |
| तिथिगात्रं | உயிர்ப்பிராணி |
| यत् च | ஏதாயிருந்தாலும் |
| एवां | தேவரீரை |
| भक्त्या | பக்தியொன்றைக் கொண்டே |
| एवं | இவ்வண்ணமாய் |
| अनुचिन्तयत् | தியானம் செய்கிறதும். |
| प्राणान् | மண்ணுலகவாழ்வை |
| स्यद्ध्यति वै | துறக்கிறதென்றால் |
| तत् च | அதுவும்கூட |
| सर्वैः | எல்லா |
| ब्रह्मगुणैः | பேரின்பத்தைத்தரும் குணங்களால் |
| युक्ते | விளங்குகிறதும் |
| ब्रह्मलोकात् | பிரம்மலோகத்தி னின்றி |
| अनन्तरे | இடைவெளியின்றி ஒ ட்டியேயிருக்கிறதாகிய |
| सन्ताने | ஸந்தானமெனும் உலகில் |
| निवस्यति | இனிதுவாழும் ⁹ |
| नाम | என்று சொன்னார். |

गोप्रतारं उपगताः हर्षपूर्णाश्रुविक्रवाः ॥ २१ ॥

| | |
|---|---|
| गोप्रतारं | { கோபரதாரமெனப்ப டும் புண்யஸ்நான கட்டத்தில் |
| उपागताः | ஒரே கூட்டமாய் இறங் கியவைகளாய் |
| हर्षपूर्णाश्रुविक्रवाः | ஆனந்தபாஷ்பம் பெ ருக்குற்றவைகளாய் ஸ்நானம்செய்தன. |
| भेजिरे | |
| मानुषं देहमुत्सृज्य विमानं सोऽच्यरोहत ॥ | |
| अवगाह्य | ஸ்நானம்செய்து |
| प्रहृष्टवत् | அத்யந்தமனஸந்தூஷ் டிகொண்டதாய் |
| आसीत् | விளங்கிற்று. |

ச: அது
 மானிடலோகத்தில்
 கொண்டிருந்த

देहं தேஹத்தை

तिर्यग्योनिगतानां च शतानि सरयूजलम् ।

दिव्या दिव्येन वपुषा देवा दीप्ता इवाभवन् ।

तिर्यग्योनिगतानां பகதி, நாற்கால்மிருகங்
 களின்

शतानि च பெரும் கூட்டமும்

सरयूजलं ஸரயூர்தியின் புணிய
 தீர்த்தத்தை

संप्राप्य அக்காலத்திலடைந்து

प्रभासुर- } தேஜோமயமாய்விளங்

वपुषि च } கும் தெய்வஉருவங்

கொண்டவைகளாகி

विदिवं சுவர்க்கலோகத்திற்கு

गत्वा तु सरयूतोयं स्थावराणि चराणि च ।

स्थावराणि ஸ்தாவரங்களும்

चराणि சரங்களும்

तु அந்த ஸமயத்தில்

सरयूतोयं ஸரயூஜலத்தை

गत्वा च அடைந்ததும்

तस्मिन्नापि समापन्ना ऋक्षवानरराक्षसाः ।

तेऽपि स्वर्गं प्रविशिशुद्धैर्हान्निक्षिप्य चाम्भसि ॥

समापन्ना: வந்திருந்த

ते அந்த

ऋक्षवानर- } காடிகளும், வானார்க

राक्षसाः अपि } ளும், ராக்ஷஸர்களும்

देहान् மானிடலோகஉருவங்

களை

ततः समागतान्सर्वान्स्थाप्य लोकगुरुर्दिवि ।

जगाम त्रिदशैः सार्धं सदा हृद्यैदिवं महत् ॥

लोकगुरुः பிரம்மதேவர்

समागतान् அங்கு கூடியிருந்த

सर्वान् எல்லோரையும்

दिवि சுவர்க்கத்தில்

सदा எக்காலத்திலும்

स्थाप्य இருக்க நியமித்தருளி

ततः அதன்மேல்

उरुसूय விட்டு

विमानं தெய்வலோகவிமா

अध्यरोहत ஏறிற்று.

संप्राप्य त्रिदिवं जग्मुः प्रभासुरवपुषि च ॥

॥ २३ ॥

जग्मुः போய்ச்சேர்ந்தன.

दीप्ता: தேஜோமயமாய்

दिव्या: விளங்கும்
 தேயலோகவாஸி

दिव्येन தேவதைகளுக்குரிய

वपुषा அழகுடன்

देवा: தேவர்கள்

इव போலவே

अभवन् விளங்கினார்கள்.

प्राप्य तत्तोयविक्रेंदं देवलोकमुपानमन् ॥

तोयविक्रेंदं ஜலத்தாலலைக்கப்படு

வதை

प्राप्य அடையவும்

तत् அப்பொழுதே

देवलोकं தேவலோகத்திற்கு

उपानमन् போய்ச்சேர்ந்தன.

तरिमन् अपि அதே

अम्भसि च ஜலத்திலேயே

निक्षिप्य எறிந்துவிட்டு

स्वर्गं சுவர்க்கத்திற்கு

प्रविशिशुः போய்ச்சேர்ந்தார்கள்.

ततः समागतान्सर्वान्स्थाप्य लोकगुरुर्दिवि ।

जगाम त्रिदशैः सार्धं सदा हृद्यैदिवं महत् ॥

लोकगुरुः பிரம்மதேவர்

समागतान् அங்கு கூடியிருந்த

सर्वान् எல்லோரையும்

दिवि சுவர்க்கத்தில்

सदा எக்காலத்திலும்

स्थाप्य இருக்க நியமித்தருளி

ततः அதன்மேல்

उरुसूय விட்டு

विमानं தெய்வலோகவிமா

अध्यरोहत ஏறிற்று.

संप्राप्य त्रिदिवं जग्मुः प्रभासुरवपुषि च ॥

॥ २३ ॥

जग्मुः போய்ச்சேர்ந்தன.

दीप्ता: தேஜோமயமாய்

दिव्या: விளங்கும்
 தேயலோகவாஸி

दिव्येन தேவதைகளுக்குரிய

वपुषा அழகுடன்

देवा: தேவர்கள்

इव போலவே

अभवन् விளங்கினார்கள்.

प्राप्य அடையவும்

तत् அப்பொழுதே

देवलोकं தேவலோகத்திற்கு

उपानमन् போய்ச்சேர்ந்தன.

तरिमन् अपि அதே

अम्भसि च ஜலத்திலேயே

निक्षिप्य எறிந்துவிட்டு

स्वर्गं சுவர்க்கத்திற்கு

प्रविशिशुः போய்ச்சேர்ந்தார்கள்.

ततः प्रतिष्ठितो विष्णुः स्वर्गलोके यथापुरम् । येन व्याप्तमिदं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥

इदं **இந்த**
सचराचरं **சராசரங்களுள்** ளிட்ட
त्रैलोक्यं **மூவுலகத்திலும்**
सर्वं **எதிலும்**
व्याप्तं **வயாப்தமாயிருக்**

கிறது

येन **எவ்வொருவராலோ**
அந்த
विष्णुः **ஸ்ரீ மஹாவிஷ்ணு**
स्वर्गलोके **வைகுண்டத்தில்**
यथापुरं **முன்போலவே**
ततः **அக்காலத்திலிருந்து**
प्रतिष्ठितः **எழுந்தருளிவிட்டார்.**

एतावदेतदाख्यानं सोत्तरं ब्रह्मपूजितम् । रामायणमिति ख्यातं मुख्यं वाल्मीकिना कृतम् ॥

एतत् **இந்த**
सोत्तरं **உத்திரகாண்டமுள்** ளிட்ட
आख्यानं **ஆக்யானமானது**
रामायणं **ராமாயணம்**
इति **என்கிற**
ख्यातं **பெயர்கொடுக்கப்பட்டு**
वाल्मीकिना **வால்மீகிமஹர்ஷியால்**

कृतं **கூறும்**
இயற்றப்பட்டது.
मुख्यं **வேதபாடத்திற்கு மு**
தலில்கற்றறியவேண்
டியதென
एतावत् **பெருமைபெற்றதாய்**
ब्रह्मपूजितम् **பிரம்மாவினால் மெச்**
சிக்கொண்டாடப்பட
டது.

ततो देवाः सगन्धर्वाः सिद्धाश्च परमर्षयः । नित्यं शृण्वन्ति सन्तुष्टा दिव्यं रामायणं दिवि ॥

दिवि **சுவர்க்கலோகத்தில்**
दिव्यं **தேவரைப் பற்றியதா**
रामायणं **ராமாயணத்தை** [கிய
सगन्धर्वाः **சந்தர்வர்களுள்** ளிட்ட
देवाः **தேவர்களும்**
परमर्षयः **பரமரிஷிகளும்**

सिद्धाः च **சித்தர்களுந்**
ततः **அப்போதிலிருந்து**
नित्यं **எக்காலத்திலும்**
शृण्वन्ति **ஆஸக்தியுடையவர்**
களாய்
शृण्वन्ति **பாராயணம் செய்து**
வருகின்றார்கள்.

इदमाख्यानमायुष्यं सौभाग्यं पापनाशनम् । रामायणं वेदसमं श्राद्धेषु श्रावयेद्बुधः ॥३०॥

इदं **இந்த**
रामायणं **ராமாயணமெனும்**
आख्यानं **ஆக்யானமானது**
आयुष्यं **தீர்க்காயுளைக் கொடுக்**
கவல்லது;
सौभाग्यं **ஸகல பாக்கியங்களை**
யும் அளிக்கவல்லது;
पापनाशनं **எப்படிப்பட்ட பாபங்**
களையும் போக்கவல்
லது.

वेदसमं **வேதத்துக்குச்சமமா**
னது.
बुधः **நூனமுடையவனெ**
வனும்
श्राद्धेषु **சீராத்தகாலங்களில்**
श्रावयेत् **பாராயணம்செய்ய**
வேண்டும்.

अपुत्रो लभते पुत्रमधनो लभते धनम् । सर्वपापैः प्रमुच्येत पदमप्यस्य यः पठेत् ॥ ३१ ॥

अस्य **இதனது**
पदं अपि **கால்கலோகத்தையா**
வது
यः **எவனொருவன்**

पठेत् **படிக்கிறானே** அவன்
सर्वपापैः **எல்லா பாபங்களி**
னின்றும்
प्रमुच्येत **விமோசனமடைகின்**
றன்.

अपुत्रः पुत्रं लभते
 புத்திரபாக்கியமில்லா
 புத்திரனை [தவன்
 பெறுகிறான்.

अधनः धनं लभते
 தனமில்லாதவன்
 தனத்தை
 பெறுகிறான்.

पापान्यपि च यः कुर्यादह्न्यहनि मानवः । पठत्येकमपि श्लोकं पापात्स परिमुच्यते ॥३२॥

यः मानवः अहनि अहनि
 पापानि कुर्वात्
 अपि
 எவனேனுமொரு
 மானிடன்
 பிரதிகைமும்
 பாபங்களை
 விடாது செய்தவன்
 னாமையிருக்கின்றான்
 என்றாலும்

सः च एकं श्लोकं अपि पठति पापात् परिमुच्यते
 அவனும் ஒரு
 ஶ்லோகத்தையாவது
 படிப்பானாகில்
 பாபத்தினின்றும்
 விமோசனமடைகி
 றான்.

एतदाख्यानमायुष्यं पठन्नामायणं नरः । सपुत्रपौत्रो लोकैऽस्मिन्नेत्य चेह महीयते ॥३३॥

एतत् आयुष्यं रामायणं आख्यायन् पठन् नरः अस्मिन् लोकैः
 இந்த
 நோயற்றவாழ்வைத்
 தரவல்லதாகிய
 ராமாயணமென்கிற
 ஆக்யானத்தை
 பாராயணம்செய்யும்
 மனிதன்
 இந்த
 உலகில்

सपुत्रपौत्रः प्रेत्य हह च महीयते
 { புத்திரபெளத்திர
 பாக்கியங்களைப்பெற்
 று விளங்குகின்றான்.
 இறந்தபின்னர்
 இங்கேயும் பரலோகத்
 திலும்
 கௌரவிக்கப்படுகின்
 றான்.

अयोध्याऽपि पुरी रम्या शून्या वर्षगणान्वहून् । ऋषभं प्राप्य राजानं निवासमुपयास्यति ॥

अयोध्या पुरी अहून् वर्षगणान् ऋषभं राजानं
 அயோத்தியபுரியும்
 பல
 வருஷகாலம்
 சூன்யமாயிருக்கும்.
 ரிஷபனைன்கிறவரை
 மன்னராய்

निवासं प्राप्य रम्या उपयास्यति
 வாழ்கிறதை
 அடைகிறது எப்போ
 தோ அப்பொழுது
 அழகுவாழ்ந்ததாய்
 ஆகும்.

एतद्रामायणं यस्तु नादरं कुर्वते नरः । स प्रेत्य रौरवे घोरे पच्यते नात्र संशयः ॥ ३५ ॥

एतत् रा.ायणं नरः नादरं कुर्वते यः तु सः
 இந்த
 ராமாயணத்தை
 ஒரு மனிதன்
 அனாதரனை
 செய்கிறவன்
 எப்படிப்பட்டவனாயி
 ருந்தாலும் சரி
 அவன்

प्रेत्य घोरे रौरवे पच्यते अत्र न संशयः
 மாணமடைந்தபின்னர்
 அஸஹ்யமான
 ரௌரவமென்னும்
 நரகத்தில்
 வாட்டப்படுகின்றான்.
 இதில்
 ஸந்தேஹம் வேண்
 டாம்.

यस्तु पूजयते नित्यं रामायणमिदं नरः । सपुत्रपौत्रो लभते वैकुण्ठे स्थानमक्षयम् ॥३६॥

| | | | |
|---------|----------------------------|--------------|----------------------|
| इदं | இந்த | | புத்திரர்கள் பெளத்தி |
| रामायणं | ராமாயணத்தை | सपुत्रपौत्रः | { ரர்கள் இவர்களை யு |
| नित्यं | பிரதிகினமும் | | டையவனாய் |
| यः | எவனே னுமொரு | वैकुण्ठे | வைகுண்டத்தில் |
| नरः | மனிதன் | अक्षयं | புனர்ஜன் மமில்லா |
| पूजयते | பிறரைப்படிக்கச் செய்கிறான் | स्थानं | நிலைமையை |
| | என்றால் அவன் | लभते | பெறுகிறான். |

यं यं कामयते कामं शृण्वन्नामामयणं नरः । तं तं नियतमाप्नोति राघवस्य प्रसादतः ॥३७॥

| | | | |
|---------|-------------------------------|----------|------------------|
| रामायणं | ராமாயணத்தை | कामयते | விரும்புகின்றானே |
| शृण्वन् | சிரத்தையுடன் பாராயணம்செய்யும் | तं तं | அதையே |
| नरः | மனிதன் | राघवस्य | ஸ்ரீ ராகவரது |
| यं यं | எந்தெந்த | प्रसादतः | அனுக்கிரகத்தால் |
| कामं | மனோதத்தை | नियतं | நிச்சயமாய் |
| | | आप्नोति | பெறுகிறான். |

एतदारख्यानमायुष्यं सभविष्यं सहोत्तरम् । कृतवान् यच्च वाल्मीकिस्तद्ब्रह्मास्पृश्वमोदत ॥

| | | | |
|-----------|--|-------------|-------------------|
| वाल्मीकिः | ஸ்ரீ வால்மீகிகவான் | आख्यानं च | ஆக்யானம் |
| सभविष्यं | இனி வரப்போகிறதை உள்ளிட்டதும் | यत् | எதுவோ |
| | { உத்திரகாண்டத்தை யும் அடங்கியுள்ள தானதும் | एतत् | அதை |
| सहोत्तरं | | कृतवान् | செய்தருளினார். |
| आयुषः | நோயற்ற வாழ்வை அளிக்கத் தக்கதுமான | तत् | அதை |
| | | ब्रह्मा अपि | பிரம்மதேவரும் |
| | | अश्वमोदत | ஆமோதித்தருளினார். |

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये चतुर्विंशत्साहस्रिकायां संहितायां उत्तरकाण्डे दशोत्तरशततमः सर्गः ॥

आदितः श्लोकाः 2400

उत्तरकाण्डे आदितः श्लोकाः 3256

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे द्वाविंशोऽह्नि वर्तमानकथाप्रसङ्गः उत्तरकाण्डः समाप्तः ॥

இவ்வதம் ஆதியில் குசன் லவன் இவர்களால் ஸ்ரீராமர் ஸநிதியில் அச்வமேத யாகசாலையில் கானம் செய்யப்பட்ட ஸ்ரீமத் ராமாயணத்தில் முப்பத்திரண்டாவது தினத்தில் கானம் பண்ணப்பட்ட கதை முடிவு பெற்றது. உத்தரகாண்டம் முடிவுபெற்றது.

श्री गोमतीतीरे नैमिशारण्ये अश्वमेध यज्ञवाटगतमुनीन्द्रद्विजेन्द्रनरेन्द्रकक्षोपुच्छानरेन्द्रराक्षसेन्द्रपरिवृतस्य मुनिवृन्दारकेवृन्दवन्धमानकोरकाकारपादुगलस्य अयोध्यापुराधीशस्य राजाधिराजस्य कृतज्ञस्य सकललोकेशरण्यस्य सकलजाद्रक्षणजागलस्य लोकाभिरामस्य श्रीरामचन्द्रस्य निन्दे गायतोः

श्रीरामात्मजयोः कुशलवयोः आख्याने श्रीमद्रामायणे वर्तमानकथाप्रसङ्गः ॥

मङ्गलं कोसलेन्द्राय महनीयगुणाब्धये । चक्रवर्तितनुजाय सार्वभौमाय मङ्गलम् ॥



